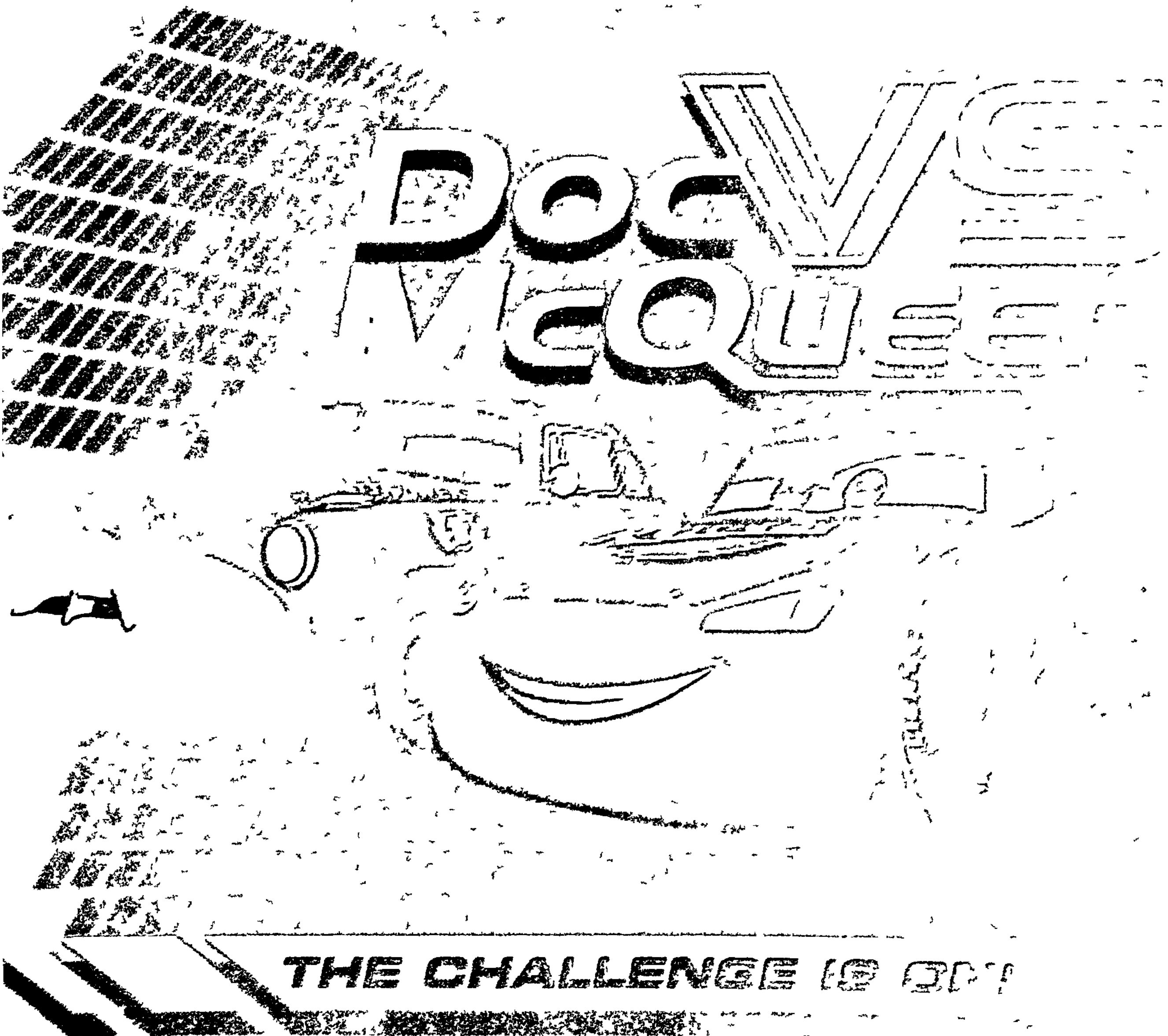
VidhyARTHI

Regd No 1175059



Long Note Book

[illegible] दुर्व्याख्यानि संकलित सूत्र, [तदुपरि सोमप्रभदेव सूरि कृत संस्कृत टीका] और [illegible] भाषा टीका युत

श्री राय धनपतिसिंह बहादुर के आगमसंग्रह भाग [illegible]

अथवा

॥ सूत्रकृतांग सूत्र तृतीयांग ॥

नागोरी लोंकागच्छीय [illegible] श्री [illegible] शिष्य

ऋषि नानकचन्द से संशोधित होके मुद्रित हुआ

बनारस जैन प्रभाकर प्रेस [illegible] । [इस पुस्तक पर रजिस्टरी हुई है] सं० १९[illegible] । [illegible] सन् [illegible] ।

॥ अथ टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीस्थानाख्यं तृतीयाङ्गं प्रारभ्यते ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे छापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

नानकचंदजती

॥ विज्ञापनम् ॥

श्रीमद्दूगडगोत्रजःपृथुयशाःश्रीवीरदासाभिध स्तत्पुत्रोबुधसिंहजर्जितयशास्सूनुस्तदीयोगुणैः ॥ ख्यातःश्रीलप्रतापसिंहविजयीभार्यातुरीयासती तस्य
श्रीमहताबनामविदिताकुक्षेस्तदीयादभूत् ॥ १ ॥ उद्यत्कीर्त्तिरुदारधर्मदृढधीर्दाताकनिष्ठःसुतः श्रीमद्रायबहादुरोधनपतिःसिंहोगुणग्रामणीः ॥ श्रीजैना
गमसम्महंसमकरोल्लोकोपकृत्यैचिरं टीकावार्त्तिकसंयुतंसुलिपिभिःसंमुद्रयित्वाशुभम् ॥ २ ॥ कृत्वापचशतस्थलेषुचपुनस्तावत्यहोपुस्तका गाराख्येषुचपुस्तका
निसकलान्यस्थापयत्सादर ॥ कुर्वंस्त्वागमपाठनचपठनंसत्साधवःश्रावकाः स्थित्यैश्रीजिनशासनस्यचपुनर्विज्ञानधर्मर्द्धये ॥ ३ ॥ भागस्तस्यतृतीयकोऽयमधुनास्था
नांगसूत्राभिधो नानापुस्तकपाठभेदबहुलोलेखप्रमादादपि ॥ दुर्वाच्यःखलुवृत्तिवार्तिकयुतपाठतथाप्राकृतं श्रीमत्पूजितरामचन्द्रगणिभिर्ज्ञातचवुध्यामया । ४
संशोध्यातिपरिश्रमेणनितरां चार्वक्षरैर्मुद्रितं स्यात्तत्रापिचकिंचिदीक्षणगतोन्मादादशुद्धयदि ॥ धांत्वाशोध्यमुदारबुद्धिविभवैर्विज्ञैःकृपाद्दृष्टितो मिथ्यादुष्कृत
मस्तुनम्रवचसासम्प्रार्थयेसज्जनान् ॥ ५ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ विज्ञापनम् ॥



सकल समान धर्मी श्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि दशविध दृष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिससे जुआरी मद्यप चोर और व्यभिचारी इत्यादि दुष्कीर्त्ति और परभव में अंध पंगु कुष्टी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्ति और परभव में धनसपत्ति सुख सुन्दर शरीरआरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्त्तव्य कर्म जाने जाते हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है। यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनो अनादि अनंत है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से

परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध हैं। क्योंकि ज्ञान विना ज्ञानी और ज्ञानी विना ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होनेमे श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन इनका शुद्ध अध्ययन अध्यापन श्रवण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है। ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय में मनुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कंठाग्र रहते थे। अन्य मतमें उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे दुबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य औ उपाध्याय कहलाते हैं। प्रसिद्ध है कि उस समय अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थीं परन्तु ग्रथकंठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समुझते थे। और भी जो प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी तीर्थंकर महाराज के मुख से (उप्पन्ने इवा विगमे इवा धुवे इवा) त्रिपदी सुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और कोई कारण नही समझा जासकता। अधुनातन मनुष्यों को जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रथ और उनका तात्पर्य नही याद रहता है ज्ञानावरणीय के सेवाय कौन कारण कहेंगे। ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नही हुवा किन्तु क्रमसें जौं जौं देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तौं तौं ज्ञानकी

भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से ९८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४। विक्रम स ५१०) वीत जाने पर देवर्द्धि गणिक्षमाश्रमणने सोंचा कि पुस्तक विनलिखे यह स्मरणशक्ति जाती रहेगी इसलिये वल्लभी पुरमें साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही वनानेकी रीति न होने के कारण ताडपत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तकालय स्थापन किए, (यह वात कुछ मेरेही लिखने पर नही हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही वनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रंथ चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि वहुत ग्रंथ लिखाना होय तो वहुत से लेखक चाहियें द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिसमें भी यदि कोई तरह का विघ्न आय पडै कार्य पूर्ण नहो, क्योंकि एकतो श्रेयांसि वहुविघ्नानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहो चिंता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म समाप्ति में है, ग्रंथ संग्रह किये विना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा

नष्ट हो जांयगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रंथ लुप्त होगये, और पीछे से मुसलमानोने नष्ट किये, जो वचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्त्तमान काल में पैंतालीस आगम एक जगह नहीं मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाहरे काल महिमा) इस हेतु वर्त्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेरा मनोरथ (जो के ५०० ठिकाने ४५ आगमकों भंडार करनेका इच्छा है) शीघ्रही सिद्ध होगा लिखने लिखाने के परिश्रम से वचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने को ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुदर पृथ्वीपर इसके सेवाय नही है ग्रंथ छपवाना सुरूकिया। यह कला युरूप देशीय अन्य धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रंथ छपवाने में आशातना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहे कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तक शुभतादिक, महाकार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इसके ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में वडा उपकार पुण्यबंधन है दोष कुछ भी नही है, पक्षपात छोडके ग्रहण करें। यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की ओर देखियेगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप

क्यों पढते हैं? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है बहुतसी आपके परिभोग में आती है, कस्तूरी गोलोचनादि कहां पैदा होता है और किस कामर्में आप खरच करते है? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोडदेना उचित है। इसलिए पुस्तक सुलभता, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नही करना चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्योंने बडे परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रथ बनाये हैं किसीके देखने में न आवें असा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीडे खाजांय और ग्रंथ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे इसके सेवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबंधका हेतु, नही है, वही ग्रंथ छपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्द्वारा वह लोक ज्ञान पावें इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नही है, यही सर्व कारण सोंच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुवा हूं आप लोगभी यथाशक्ति प्रवृत्त होंय कि जिससे पुन जैनमत युवावस्था कों प्राप्त होय इति शम्।

मकसूदाबाद

अजीमगंज

द० राय धनपतसिह बहादुर

भूमिका।

यह ठाणांग तीसरा अंग परमकरुणावत श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीके उपदेशसे धर्मरत्नरक्षक भगवंत गणधर श्रीगौतम स्वामी तथा श्री सुधर्मा स्वामीने चतुर्विध श्रमणसंघ भट्टारक और उनकी संतति के परम उपकारार्थ सूत्ररूपसे संकलित किया, स्थान यह, नाम १ स्थापना २ द्रव्य ३ क्षेत्र ४ अद्धा ५ ऊर्द्धता ६ उपरति ७ वसति ८ सयम ९ प्रग्रह १० योध ११ अचलता १२ गणना १३ सधान १४ और भाव १५ भेदसे पंद्रह प्रकारका होता है, स्थानांग इस पदका समुदायार्थ यह है कि यथावत् स्वरूप कथन करके स्थापित किये हैं एक दो तीन इत्यादि दश सख्या पर्यंत विशेषित आत्मादि पदार्थ जिसमें अथवा स्थान शब्दसे एक दो इत्यादि सख्या का भेद इस ग्रंथमें कहा जाता है, आत्मादि पदार्थोंको एकसे लेके दश तक सख्या और यथायोग्य स्थिति कहने से वसति और गणनास्थान का अधिकार है इससे स्थान ऐसा कहा, वही स्थान क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुषके अंगकी तरह है इससे स्थानाग नाम हुआ, इसमे भाव स्थानका भी अधिकार है, इस स्थानांग

के दस अध्ययन हैं, पहिले अध्ययनमे एक संख्या विशेषित पदार्थ कहे हैं, दूसरे में वही दो संख्या विशेषित इत्यादि दश अध्ययन हैं, इस स्थानांगके पदार्थोंका तात्पर्य शीघ्र ज्ञात होनेके लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ चार अनुयोग अर्थात् सूत्रका अर्थसे संबंध, अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपण रूप क्रिया विशेष, कहे हैं, यही चारों जैसे नगरमें सुखसे प्रवेश करनेमें चार द्वार होते हैं वैसे इस प्रवचनमें प्रवेश करने के यह चार अनुयोग रूप द्वार (प्रवेश मुख) हैं, इन अनुयोग द्वारों से जीवा जीवादि पदार्थ नियमित संख्या विशेषित ज्ञात होने से तत्वज्ञान रूप परम पुरुपार्थ सिद्ध होता है इसलिये इस के पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढनेका अधिकारी वही हे जो कि मोक्ष मार्ग का अभिलाषी गुरूका आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वर्ष जिस्को व्यतीत भया होय । स्थानाग सूत्र देनेका अवसर भी वही है इति शम् ॥

मकसूदाबाद

अजीमगंज

द० राय धनपतसिंह बहादुर

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तके मूल टीका और भाषाटीका सहित पाच२ सौ कापी छपैं और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पाचसौ स्थानमे पुस्तकालय स्थापित हो सो यह अति आनंदकी बातहै परंतु जिन महाशयों को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगो के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो बेचने के वास्ते पाचसौ कापी जैन बुक सुसाइटी की ओर से भी छपवा ली जावे यह पुस्तकें मे अजीमगंज से प्रकाश करुगा अग्रे शुभम् ।

संवत् १८३३ मि० । चै० । शु० । ११

अजीमगंज — द० जैन बुक सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद — कार्यसम्पादक

सुबुद्धिसेठ

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगो के लिये सुसाइटी की ओर से पैंतालिसो जैनागम की पाचसौ पुस्तके छपवा लने की आज्ञा के विषय मे आया सो मै स्वीकार करता हू कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पाच २ सौ पुस्तके बेचने के वास्ते छपवा लेवे, परंतु पाचसौ से अधिक छपनेकी आज्ञा मै नही देता, यदि और कोई छपवाना चाहै तो उचित है कि पहले मुझ से आज्ञा लेलेवे क्यो कि इन ग्रन्थो पर रजस्टरी हुईहै, अग्रे शुभम् ।

स० । १८३३ । मि० । चै० । शु । १३

अजीमगंज — द० रायधनपतिसिंह

शहर मुरसीदाबाद — बहादुर

पत्र	पृष्ठ	स्थानाक	उद्देशाक	ग्रन्थ सङ्ख्याङ्क
३३	१	१	०	११८०
५६	२	२	१	
६३	२	२	२	
८१	२	२	३	
१०८	२	२	४	१६७५
१३७	१	३	१	
१४९	१	३	२	
१७२	२	३	३	
१९८	१	३	४	२०७५
२३२	२	४	१	
२७०	२	४	२	
३१०	२	४	३	
३४३	२	४	४	२८३२

पत्र	पृष्ठ	स्थानाक	उद्देशाक	ग्रथसख्याङ्क
३६४	२	५	१	
३८७	२	५	२	
४०७	१	५	३	१६२५
४३५	२	६	१	७६५
४७४	२	७	१	९५०
५०६	२	८	१	७२०
५३५	२	९	१	७०७
५९५	२	१०	१	१७१४

ग्रन्थसङ्ख्या

मूल सूत्र—३७५०

सस्कृत टीका—१४२५०

भाषा टीका—७०००

सर्वसङ्ख्या २५०००

यह पुस्तक जिसको मोल लेनी हो मकसूदाबाद अजीमगज जैनबुक् सुसाइटी कार्याध्यक्ष सुबुद्धिसेठ को लिखने से मिलेगी——

और राय धनपतिसिह वहादुरकी तरफ से धर्मार्थ जहार की हुई पुस्तकोको अगर कोई वेचे या खरीद करेगा श्रीचौवीसीजी का और श्रीसघका गुनहगार होगा सरकार से कानून मुताविक सजा पावेगा।

ठिकाना राय धनपतसिह वहादुर की कोठी।

फी पुस्तक दाम ३॥)

द० सु० सुबुधिसेठ

॥ श्रीजिनेंद्रायनमः ॥ अर्हं ॥ श्रीवीरंजिननाथं नत्वास्थानांगकतिपयपदानां प्रायोन्यशास्त्रदृष्टं करोम्यहंविवरणंकिंचित् ॥ १ ॥ इहहि श्रमणस्यभगवतः श्री महावीरवर्द्धमानस्वामिन इक्ष्वाकुकुलनन्दनस्य प्रसिद्धसिद्धार्थराजसूनो र्महाराजस्येव परमपुरुषकाराक्रान्तविक्रान्तरागादिशत्रोराज्ञाकरणदक्षक्ष्मापति प्रतसततसेवितपादपद्मस्य सकलपदार्थसार्थसाक्षात्करणदक्षकेवलज्ञानदर्शनरूपप्रधानप्रणिध्यवबुद्धसर्वविषयग्रामस्वभावस्य सकलत्रिभुवनातिशायिपरमसा म्राज्यस्य निखिलनीतिप्रवर्त्तकस्य परमगम्भीरा न्महार्था दुपदेशा न्निपुणबुद्ध्यादिगुणगणमाणिक्यरोहणधरणीकल्पेन भाण्डागारनियुक्तेनेवगणधरेण पूर्वं काले चतुर्वर्णश्रीश्रमणसङ्घभट्टारकस्य तत्सन्तानस्यचो पकाराय निरूपितस्य विविधार्थरत्नसारस्य देवताधिष्ठितस्य विद्याक्रियाबलवतापि पूर्वपुरुषेण केनापि कुतोपि कारणा दनुन्मुद्रितस्या तएवच केषा ञ्चिदनर्थभीरूणा म्मनोरथगोचरातिक्रान्तस्य महानिधानस्येव स्थानाङ्गस्य तथाविधविद्यादिबलविकलै रपि केवलम्भाग्यप्रधानैः स्वपरोपकारायार्थविनियोजनाभिलाषिभि रतएव चावगणितस्वयोग्यतै र्निपुणपूर्वपुरुषप्रयोगा नुपश्रित्य किञ्चित् समत्वो त्प्रेक्ष्य तथा विधवर्त्तमानजना नाप्तृच्छ्यच तदुपायान् द्यूतादिमहाव्यसनोपेतै रिवा स्माभिरुन्मुद्रणमिवा नुयोगः प्रारभ्यत इतिशास्त्रप्रस्तावना। तस्य चानुयोगस्य फला दिद्वारनिरूपणतः प्रवृत्ति र्यतउक्तं तस्सफलजोगमगल समुदायत्थातहेवदाराइं तब्भेयनिरुत्तिक्कम पयोयणाइंचवच्चाइति ॥ १ ॥ तत्र प्रेक्षावतां प्रवृत्तये फल मवश्य म्वाच्य मन्यथा हि निष्प्रयोजनत्वमस्या शङ्कमानाः श्रोतारः कण्टकशाखामर्दनइव नप्रवर्त्तेरन्निति तच्चानन्तरपरम्परभेदात् द्विधा तत्रानन्तर मर्था वगम स्तत्पूर्वकानुष्ठानतस्त्वा पवर्गप्राप्ति र्यासा परम्परप्रयोजनमिति ॥ तथा योग. सम्बन्धः सचयद्युपायोपेयभावलक्षणो यदुतानुयोगउपायो ऽर्थावगमादि श्चोपेयमिति तदा सप्रयोजनाभिधानादेवा भिहित इत्यवसरलक्षणः सम्बन्धो स्यवाच्यः कोस्यदानेसंबन्धो ऽवसर इतिभाव योग्यो वा दाभिश्रस्यकइति तत्र भव्यस्य मोक्षमार्गाभिलाषिणः श्रितगुरूपदेशस्य प्राणिनो अष्टवर्षप्रमाणप्रव्रज्यापर्यायस्येव सूत्रतोपि स्थानाङ्ग देयमिति अयमवसरोयोग्योपिवायमेवेति य

॥ १ ॥

योक्तं तिवरिसपरियागस्स आयारपकप्पणामगज्झयणं चउवरिसस्सागमागो सूयगडंनाम अंगंति ॥ १ ॥ दसाकप्पववहारा संवच्छरपणगदिक्खियस्सेव ठाणं ॥ ३
समवाओविय अंगेते अट्ठवासस्स दिन्न अन्यथादाने स्या आभणाइणो दोषा इति ॥ १ ॥ तथा चेतोभूततया एतत्प्रतिपत्तये तदुपक्रमतया शिष्या नेता भागवींरचि
ति तद्गुणगमाय मङ्गलशपदर्शनीये उक्तं च पुस्तकार्थसंयोगं तेणवायमंगलोवयारेहिं घेतव्वोसोसमहा निच्छिवजंगामच्छाणिजत्ति मङ्गलञ्च शास्त्रस्यादिमध्या
वसानेषु कार्येण शास्त्रार्थंसा निर्विघ्नपरिसमाप्तये तत्रैव शेषेण संवेगा स्यावश्यंतास भवतीति तदुक्तं तंमंगलमाईए मज्झेपज्जंतएयसत्थस्स पढमंसत्थस्सावि
घ्न पारगमणाय निद्दिट्ठं तस्सेवय थिज्जत्थं मज्झिममंतं तिमंपितस्सेव अव्वोच्छित्तिनिमित्तं शिष्यप्रशिष्याद्यंवशाद्वि तत्रादिमंगलं सुयंमेआउसंतेणं भगवयेत्या
दिसूत्रंनन्तरभूतत्वात्पुस्तशब्दस्य भगवत्प्रमानग्रंथस्याभागपात भगवतोत्सनन्दीभगवत्प्रमानगोथांश्चतेषु निगमनेतेनात्ति तन्नेनेति मंगलार्थस्य गुणगणमत्ता
दिति मध्यमङ्गलंपंचमाऽध्ययनस्यादिसूत्रं पंचमहव्वयपन्नत्ता इं अग्गाअतानाभागियादिभावतया मङ्गलता प्रवति स्यिं च्चागित्वादिको भावो मङ्गलं यतउक्तं
मोधागमणोभावो सुविसुद्धोलाभयाउत्ति अन्तमङ्गलमप्यगना दिसूत्रं दसठिताणेहिं सम्मत्ते अणगारे अरहन्तादिसूपकादि अनगारस्य परमेष्ठिपंचकान्त
र्गतत्वेन मङ्गलत्वात् सूत्राभिधेयानां वा गणधरस्थानानां क्षायोपशमिकादिभावरूपतया मंगलत्वादिति अन्यमङ्गलमप दशमाध्ययनस्यान्तसूत्रं दसगुणलु
क्खापोग्गला अणंता पण्णत्ते होंति अन्यशब्दस्य द्वितिशब्दस्य माङ्गल्यत्वादिति सर्वमेव शास्त्रं मंगलं निर्जरार्थत्वात् तपोवत् मङ्गलभूतस्यापि शास्त्रस्य यो मङ्गलत्वा
भुपादः स शिष्यगतिमङ्गलपरिग्रहार्थं मंगलतया हि परिगृहीतं शास्त्रं मांगल्यं स्यात् यथा साधुरित्यतोऽवगच्छेदिति प्रकृत शास्त्रस्य मङ्गलादि निरूपितम
पि तदनुयोगस्य कृष्णं तयोः कारणं दृष्टान्तादिति अथेदानीं समवायार्थं निरूप्यते तत्र सामान्याभिलोयन्नुशास्त्रमात्र नामगं यथार्थादिभेदा त्रिविधं तत्राद्य
यथार्थं मयथार्थं मर्थशून्यंच तत्र यथार्थं माद्योपादि अयथार्थं मात्वाशादि अर्थशून्यं डित्थादि तत्र यथार्थं शास्त्राभिधानं मिष्यते तत्रैव समवायार्थपरिसमा

ते यतएव मत स्तन्निरूप्यते तत्र स्थान मक्कंचेति पद्द्वयं निक्षेपणीय मिति तत्र स्थान न्नाम स्थापनादिभेदात् पंचदशधा यदाह नामठवणादविए खेत्त द्धाउड्ढउवरइवसही सजमपग्गहजोहे अचलगणणंसधणाभावेत्ति तत्र स्थानमिति नामैव नाम स्थानं यस्य वा सचेतनस्या चेतनस्य वा स्थानमिति नामक्रि यते तद्वस्तुनाम्ना स्थानन्नाम स्थानमित्युच्यते तथा स्थाप्यत इति स्थापना ऽच्चादि साच स्थानाभिप्रायेण स्थानमप्यभिधीयते ततः स्थापनैव स्थान तथा द्रव्यं सचित्ताचित्तमिश्रभेद स्थान गुणपर्यायाश्रयत्वा त्ततः कर्म्मधारयइति तथा क्षेत्रमाकाश न्तच तत्स्थान च द्रव्याणामाश्रयत्वात् क्षेत्रस्थानं तथा अडा कालः सच स्थान यतो भवस्थितिः कायस्थिति श्च भवकाल' कायकाल श्चाभिधीयते स्थिति स्थानमेवेति उड्ढत्ति उर्द्धतया स्थान मवस्थानं पुरुषस्यो र्द्धस्थानं कायो त्सर्ग इति इह स्थानशब्द. क्रियावचन एवं निषन्न त्वग्वर्त्तनादिस्थान मपि द्रष्टव्य मूर्द्धशब्दस्योपलक्षणत्वादिति तथा उपरतिर्विरतिः सैव स्थानं विविध गुणाना माश्रयत्वात् विशेषार्थी चेह स्थानशब्द स्ततो विरते स्थानविशेषो विरतिस्थान तच्च देशविरतिः सर्वविरतिश्चेति तथा वसति स्थानमुच्यते स्थीयते तस्मिन्निति कृत्वेति तथा सयमस्य स्थान सयमस्थान मिह स्थानशब्दो भेदार्थः सयमस्य शुद्धिप्रकर्षाप्रकर्षकृतो विशेषः संयमस्थान न्तथा प्रगृह्यते उपादीयते आदेयवचनत्वा द्यः स प्रगृह्यो ग्राह्यवाक्यो नायक इत्यर्थः सच लौकिको लोकोत्तरश्चेति तत्र लौकिको राजयुवराजमहत्तरामात्यकुमाररूपो लोकोत्तरश्चा चार्योपाध्यायप्रवर्त्तकस्थविरगणावच्छेदकरूप इति तस्य स्थान म्पद मग्रहस्थान मिति तथा योधाना स्थान मालीढप्रत्यालीढवैशाखमण्डलसमपादरूप श रीरन्यासविशेषात्मकं योधस्थान न्तथा अचलत्ति अचलतालक्षणोधर्म्मः सादिसपर्यवसितादिरूपः स्थान मचलतास्थानं तथागणणत्ति गणनाविषय स्थानमेका द्यादिशीर्षप्रहेलिकापर्यन्तं गणनास्थान तथा सन्धानन्द्रव्यत श्छिन्नस्य कंचुकादे रच्छिन्नस्य तु पक्ष्मोत्पद्यमानतंत्वादे रिति भावतस्तु च्छिन्नस्य प्रशस्ताप्रशस्तभाव स्य पुनः सन्धान मच्छिन्नस्य त्वपरापरोत्पद्यमानस्य प्रशस्तभावस्य सन्धान न्तदेव स्थान म्वस्तुनः सहतत्वेनावस्थान सन्धानस्थान म्भावेति भावाना मौदयिका

दीनां स्थान मवस्थिति रिति भावस्थान मिति एव मिह स्थानशब्दो ऽनेकार्थः इहच वसतिस्थानेन गणनास्थानेन चाधिकार इति दर्शयिष्यति इदानीं मङ्ग निक्षेप उच्यते तत्र गाथा नामगंठवणागं दव्वंगंचेवहोइभावंग एसोखलुअंगस्स निखेवोचउव्विहोहोइति ॥ १ ॥ तत्र नामस्थापने प्रसिद्धे द्रव्यांगं पुनर्द्रव्यस्य मद्यौषधादे रंग कारण मवयवो वेति द्रव्यांगं भावस्य क्षायोपशमिकादे रेव मेवाग भावांग मिति इहच भावांगेना धिकार इत्यपि दर्शयिष्यते तत्र तिष्ट त्यासते वसन्ति यथा वदभिधेयतयै कत्वादिविशेषिता आत्मादयः पदार्था यस्मि न्स तत्स्थानअथवा स्थानशब्देने हैकादिकः संख्याभेदो भिधीयते तत आत्मा दिपदार्थगताना मेकादिदशाताना स्थानाना मभिधायकत्वेन स्थान माचाराभिधायकत्वा दाचारवदिति स्थानच तत् प्रवचनपुरुषस्य क्षायोपशमिकभाव रूपस्यां गमिवाङ्ग वेति स्थानाङ्गमिति समुदायार्थः तच्च दशाध्ययनानि तेषु प्रथममध्ययनमेकादित्वा त्संख्यया एकसंख्योपेतात्मादिपदार्थप्रतिपादकत्वा दैकस्थान त्तस्यच महापुरुषस्येव चत्वार्यनुयोगद्वाराणि भवन्ति तद्यथो पक्रमो निक्षेपो नुगमो नयश्चेति तत्रानुयोजन मनुयोगः सूत्रस्यार्थेन सहसंबन्धनं अ थवा अनुरूपो ऽनुकूलो वा यो योगो व्यापारः सूत्रस्यार्थप्रतिपादनरूपः सोनुयोगः इत्याहच अणुजोजणमणुजोगो सुयस्सनियएणजमभिधेयेण वावारोवा जोगो जोअणुरूवोअअणुकूलोवेति ॥ १ ॥ अथवा अर्थापेक्षयाअणोर्लघोः पश्चाज्जाततया वा नुशब्दवाच्यस्य सूत्रस्य योभिधेयो योगो व्यापार स्तेन संबन्धो वा सोणुयोगो नुयोगोवेति आहच अहवाजमत्थओथो वपच्छभावेहिंसुयमणुतस्स अभिधेएवावारो जोगोतेणंचसबंधेत्ति ॥ १ ॥ तस्य द्वाराणीव द्वाराणि तत् प्रवेशमुखानि एकस्थानकाध्ययनपुरस्या र्थाधिगमोपाया इत्यर्थः नगरदृष्टान्त श्चात्र यथाह्यकृतद्वार न्नगर मनगर मेव भवति कृतैकद्वारमपि दुरधिगमं का र्यातिपत्तयेच चतुर्मूलद्वारन्तु प्रतिद्वारानुगतं सुखाधिगम कार्यानधिपत्तयेच एव मेकस्थानकाध्ययनपुर मप्यर्थाधिगमोपायद्वारशून्यमशक्याधिगम भवति एकद्वारानुगत मपि च दुर्राधगम सप्रभेदचतुर्द्वारानुगत न्तु सुखाधिगम मित्यतः फलवान् द्वारोपन्यास इति ॥ तानिच द्विचिद्विद्विभेदानि क्रमेण भवन्ती

ष छव्विहनामेभावे खओवसमिएसुयंसमोयरति जंसुयनाणावरणं खओवसमजंतयंसबंति ॥ १ ॥ तथा प्रमाणं द्रव्यादिभेदा च्चतुर्विधं तत्र चायोप शमिकभावरूपत्वा दस्य भावप्रमाणे अवतारो यतआह ॥ दव्वादीचउभेय पमीयतेजेणतपमाणति इणमज्झयणभावो त्तिभावमाणेसमोयरतित्ति ॥ १ ॥ भावप्रमाणञ्च गुणनयसंख्याभेदत स्त्रिधा तत्रास्य गुणप्रमाणसंख्याप्रमाणयो रेवावतारः नयप्रमाणे तु नसम्प्रति यदाह मूढनइयंसुयंकालियंतुननयासमोयर तिइह अपुहत्तेसमोयारो नत्थिपुहत्तेसमोयारोत्ति ॥ १ ॥ गुणप्रमाणन्तु द्विधा जीवगुणप्रमाणमजीवगुणप्रमाणञ्च तत्रास्य जीवोपयोगरूपत्वात् जीवगुणप्रमा णे वतार स्तस्मिन्नपि ज्ञानदर्शनचारित्रभेदा त्र्यात्मके अस्य ज्ञानरूपतया ज्ञानप्रमाणे तत्रापि प्रत्यक्षानुमानोपमानागमात्मके प्रकृताध्ययनस्या सोपदेशरूपत्वा दागमप्रमाणे तत्रापि लौकिकलोकोत्तरभेदे परसगुरुप्रणीतत्वेन लोकोत्तरे सूत्रार्थोभयात्मनि तथाचाह ॥ जीवाणन्नत्तणउ जीवगुणेचोइहभावओनाणे लो उत्तरसुतत्थो भयागमेतस्सभावाओ ॥ १ ॥ तत्राप्यात्मानन्तरपरम्परागमभेदत स्त्रिविधो र्थत स्तीर्थकरगणधरतदन्तेवासिनः सूत्रत स्तु गणधरतच्छिष्यतत्प्रशि ष्यानुपेक्षयथाक्रम मात्मानन्तरपरम्परागमेष्व वतारः संख्याप्रमाण मन्यत्र प्रपञ्चित न्ततएवावधारणीय न्तत्र चास्य परिमाण संख्याया मवतार स्तत्रापि कालिकश्रुतदृष्टिवादश्रुतपरिमाणभेदतो द्विभेदायां कालिकश्रुतपरिमाणसंख्याया कालिकश्रुतत्वा दस्येति तत्रापि शब्दापेक्षया संख्येयाक्षरपदाद्यात्म कतया संख्यातपरिमाणात्मिकाया मर्थापेक्षयात्वनन्तपरिमाणात्मिकाया मपर्यायत्वा दागमस्य तथाचाह ॥ अणतागमा अणतापज्जाया इत्यादि ॥ तथा वक्तव्यता स्वसमयेतरोभयवक्तव्यता भेदा त्रिधा तत्रेद स्वसमयवक्तव्यताया मेवावतरति सर्वाध्ययनाना तद्रूपत्वात् तदुक्तं परससमओउभयम्वा सम्म दिठिस्ससमओजेण तासव्वज्झयणाइं ससमयवत्तव्वनिययाइंति ॥ १ ॥ तथा अर्थाधिकारो वक्तव्यता विशेषएव सचैकत्वविशिष्टात्मादिपदार्थप्ररूपणलक्षण इति तथा समवतारःप्रतिद्वार मधिकृताध्ययनसमवतारणलक्षणः सचानुपूर्व्यादिषु लाघवार्थं सुक्तएवेति नपुन रुच्यते तथाहि ॥ अणुणायसमोयारो जेण

समोयारियंपईदारं एगठाणमणुगओ सोलाववओगपुणवओ ॥ निक्षेपस्त्रिधा ओघनामसूत्रालापकनिष्पन्नभेदात् आहच भन्नइघेप्पइयसुद्दं निक्खेवपयाणुसा

रओसत्थं ओहोनामंसुत्त निखेत्तव्वंतओवस्सं ॥ १ ॥ तत्रौघः सामान्यमध्ययनादिनाम उक्तञ्च ओहोजसामन्नं सुयाभिहाणंचउव्विहंतंच अज्झयणअज्झीणं

आउज्झवणायपत्तेय ॥ नामादिचउभेयं वन्नेऊणंसुयाणुसारेण एगठाणजोज्ज चउसुविकमेणभावेसु ॥ २ ॥ तत्राध्यात्म मन स्तत्रशुभेऽयनङ्गमनमर्यादात्मनो

भवति यस्मात् अध्यात्मशब्दवाच्यस्य वा मनसः शुभस्य आनयन मात्मनियतो भवति बोधादीना श्चाधिक मयन यतो भवति तदज्झयणति प्राकृतशैल्या भ

यतीति आहच जेणसुहप्पज्झयणंअज्झप्पाणयणमहियमयणवा बोहस्ससंजमस्सवमोक्खस्सवतोतमज्झयणति ॥ १ ॥ अधीयते वा पठ्यते आधिक्येनस्मर्यते गम्य

ते वा तदित्यध्ययनमिति ॥ तथा यद्दीयमान न्न चीयतेस्म तदचीण न्तथा ज्ञानादीना मायहेतुत्वा दायः तथा पापानां कर्म्मणां क्षपणहेतुत्वा त्क्षपणेति

आहच अजझीणंदिज्जतं अव्वोच्छित्तिनयइअलोगुव्व आओणाणाईणंज्झवणापावाणखवणंति नामनिष्पन्नेतु निक्षेपे ऽस्यैकस्थानकमितिनाम तत एकशब्दस्य

स्थानशब्दस्यच निक्षेपो वाच्य स्तत्र एकस्य नामादिः सप्तधा तदुक्त नाम १ ठवणा २ दविए ३ माउयपय ४ सगहेक्कएचेव ५ ॥ पज्जव '६ भावेय ७ तहा स

त्तेतेएक्कगाहोंति ॥ १ ॥ तत्रनामैको यस्यैक इति नामस्थापनेकः पुस्तकादिन्यस्तैककान्तः द्रव्यैकः सचित्तादि स्त्रिधा मातृकापदैक स्तु उप्पन्नेइवाविगमेइवाधुवे

इवत्ति एपां मातृकावत्सकलवाङ्मयमूलतया अवस्थितानां मन्यतर द्वियचित अकाराद्यक्षरात्मिकाया वा मातृकाया एकतरो अकारादिः संग्रहैको येनै

केनापि ध्वनिना बहवः सगृह्यन्ते यथा जातिप्राधान्येन व्रीहिरिति पर्यायैकः शिविकादिरेकः पर्यायो भावैक औदयिकादिभावाना मन्यतमो भाव इति

इह भावैकेनाधिकारो यतो गणनानामलक्षणस्थानविषयो य मेको गणनाच सख्या संख्याच गुणो गुणश्च भाव इति स्थानस्यतु निक्षेपउक्त एव तत्रच गण

नास्थाने नेहाधिकार स्तत एकलक्षणं स्थानं संख्याभेदः एकस्थान न्तद्विशिष्टजीवाद्यर्थप्रतिपादनपर मध्ययन मप्येकस्थान मिति ॥ उक्तावोघनामनिष्पन्न

निक्षेपो सम्प्रतिसूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेपः प्राप्तावसरः तत्स्वरूपञ्चेदं सूत्रालापकानां सूत्रपदानां श्रुत मे आयुष त्नित्यादीनां निक्षेपो नामादिन्यास' सचा वसरप्राप्तोपि नोच्यते सतिसूत्रे तस्य सम्भवात् सूत्रञ्च सूत्रानुगमे सचानुगमभेद एवेत्यनुगमएव तावदुपवर्ण्यते द्विविधो नुगमो निर्युक्त्यनुगम सूत्रानुगमश्च तत्राद्यो निक्षेपनिर्युक्त्युपोद्घातनिर्युक्तिसूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमविधानत स्त्रिविधः तत्र च निक्षेपनिर्युक्त्यनुगम' स्थानाङ्गाध्ययनाद्येकशब्दाना निक्षेपप्रतिपाद ना दनुगत एवेति उपोद्घातनिर्युक्त्यनुगमस्तु उद्देसेनिद्देसेयनिग्गमे॰ इत्यादि गाथाद्वयादवसेय इति सूत्रस्पर्शिकानिर्युक्त्यनुगमस्तु संहितादौ षड्विधे व्या ख्यालक्षणे पदार्थपदविग्रहचालनाप्रत्यवस्थानलक्षणव्याख्यानभेदचतुष्टयस्वरूप' सच सूत्रानुगमे संहितापदलक्षणव्याख्यानभेदद्वयलक्षणे सति भवती त्यतः सूत्रानुगम एवोच्यते तत्र चाल्पग्रन्थमहार्थादिसूत्रलक्षणोपेत स्खलितादिदोषवर्जित सूत्र मुच्चारणीय न्तच्चेद ॥ सुयमेइत्यादि ॥ अस्यच व्याख्या संहितादि क्रमेण त्याह च भाष्यकारः सुत्त १ पय २ पयत्थो ३ संभवतोविग्गहो ४ वियारोय ५ चालनेत्यर्थः दूसियसिद्धी ६ नयमय विसेसओनेयमणुसुत्त १ ॥ तत्र सूत्रमिति संहिता साचानुगतैव सूत्रानुगमस्य तद्रूपत्वा दित्याहच होइकयत्थोवोत्तु सपयत्थेयसुयसुयाणुगमोत्ति सूत्रे चास्खलितादिगुणोपेते उच्चारिते केचिदर्था अवगताः प्राज्ञाना भवन्त्यतः संहिता १ व्याख्याभेदो भवति अनधिगतार्थाधिगमाय च पदादयो व्याख्याभेदाः प्रवर्त्तन्त इति तत्र पदानिश्रुत

॥र्दय॥ श्रीअर्हद्भ्यो नमः ॥ सुयमेआउसंतेण भगवयाएवमक्खायं ॥

श्रीमहावीरजिननत्वा । श्रीगुरुचसुदासदा स्थानांगाभिधसूत्रस्य । टबार्थंलिख्यतेमया ॥ १ ॥ श्रीसुधर्मा स्वामी जंबूस्वामीनें कहेछे। जे में साभल्युंछे हे आयूखावत जबू । भगवत श्रीमहावीरें कह्यो एठाणाग सूत्रनो अर्थ तेकहु तुम्हे साभलो ॥ * * * * *

मया आयुष्मन् तेन भगवता एवं व्याख्यात मिति एव मदेषु व्यवस्थापितेषु सूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेपावसर स्तच्चे यं व्यवस्था जत्थउजंजाणेज्जा निक्खेव निक्खिवेनिरवसेस जत्थयिणजाणेज्जा चउक्कयमिनिक्खिवेतत्थत्ति ॥ १ ॥ तत्र नामश्रुत स्थापनाश्रुतञ्च प्रतीत द्रव्यश्रुत मधीयानस्या नुपयुक्तस्य पञ्च कपुस्तकन्यस्त स्वा भावश्रुतन्तु श्रुतोपयुक्तस्येति इहच भावश्रुतेन श्रोत्रेन्द्रियोपयोगलक्षणेना विकार: तथा आउसंति आयुर्जीवित न्तन्नामादिभेदतो दशधा तद्यथा नामठवणा २ दविए ३ ओहे ४ भव ५ तब्भवेय ६ भोगेय ७। सजमे ८ जस ९ कित्ती १० जीवियचतंभन्नईदसहा ॥ १ ॥ तत्र नाम स्थापनेक्षुणे दविएत्ति द्रव्यमेव सचेतनादिभेद ञ्जीवितव्यहेतुत्वा ज्जीवितं द्रव्यजीवित ओघजीवित नारकाद्यविशेषितायु र्द्रव्यमात्र सामान्यजीवित म्भवति नारकादिभवविशिष्टं जीवित भवजीवित न्नारकजीवित मित्यादि ॥ तब्भवेयत्ति तस्यैव पूर्वभवस्य समानजातीयतया सम्बन्धिजीवित न्तद्भवजीवित यथा मनुष्यस्य सतो मानुषत्वेनो त्पन्नस्येति भोगजीवित ञ्चक्रवर्त्यादीनां सयमजीवित साधूनां यशोजीवितं कीर्त्तिजीवितञ्च यथा महावीरस्येति जीवित ञ्चायु रेवेति इहच सयमायुषा यश: कीर्त्यायुषा चाधिकार इति एव शेषपदाना यथा सम्भव न्निक्षेपोवाच्य इति ॥ उक्त. सूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेप: पदार्थ: पु नरेव इहकिल सुधर्मस्वामी पचमोगणधरदेवो जम्बूनामान स्वशिष्य मतिपादयाञ्चकार श्रुत माकर्णित मे मया आयुसति आयु: जीवितं तत्सयमप्रधान तया प्रशस्त मभूतम्वा विद्यते यस्या सा वायुष्मां स्तस्यामन्त्रण हेआयुष्मन् शिष्य तेणति य: सन्निहितव्यवहितमूक्ष्मबादरबाह्याभ्यन्तरसकलपदार्थ प्व्याह तवचनतयाप्तत्वेन जगति प्रतीत: अथवा पूर्वभवोपात्ततीर्थकरनामकर्मादिलक्षणपरमपुण्यप्राग्भारोविलीनानादिकालालीनमिथ्यादर्शनादिवासन: परिहृ तमहाराज्यो दिव्याद्युपसर्गसमर्गाविचलितशुभध्यानमार्गोभास्करइव घनघातिकर्मघनाघनपटलविघटनोल्लसितविमलकेवलभानुमण्डलो विबुधपतिषट्प दपटलजुष्टपदपद्मो मध्यमाभिधानपुरीप्रथमप्रवर्त्तितप्रवचनो जिनो महावीर स्तेन भगवता ष्टमहाप्रातिहार्यरूपसमग्रैश्वर्यादियुक्तेन एव मित्यमुना वक्ष्यमा

णेनै कत्वादिना प्रकारेणा ख्यातमिति आमर्यादया जीवाजीवलक्षणासङ्कीर्णतारूपतया भिविधिना वा समस्तवस्तुविस्तारव्यापनलक्षणेन ख्यातं कथित मा
ख्यात मात्मादिवस्तुजात मितिगम्यते अत्रच श्रुतमित्यनेना वधारणाभिधायिना स्वय मवधारितमेवा न्यस्मै प्रतिपादनीय मित्याह अन्यथा भिधाने मत्यु
तापायसम्भवात् उक्तञ्च किंइत्तोपावयर समत्रणहिगयधम्मसब्भावो अन्नकुदेसणाए कडयरागमिपाडेइत्ति ॥ १ ॥ मयेत्यनेनो पक्रमद्वाराभिहितभावप्रमाण
द्वारगतात्मानन्तरपरम्परभेदभिन्नागमो य स्वच्यमाणो गून्थो ऽर्थतो अनतरागमः सूत्रतस्त्वात्मागम इत्याह आयुष न्नित्यनेनतु कोमलवचोभिः शिष्य
मनः प्रह्लादगता चार्येणो पदेशो देय इत्याह उक्तच धम्ममइएहिअइसु दरेहिंकारणगुणोवणीएहि पल्हायतोयमण सीसचोएइआयरिओत्ति ॥ १ ॥ आयुष
त्वाभिधानचा त्यत मात्हादक माणिना मायुषो त्यतभीष्टत्वाद्यतउच्यते सव्वेपाणापियाउयाअप्पियबहा सुहासयादुक्खपडिकूला सव्वेजीविउकामा सव्वे
सिजीवियपियति तथा तृणायापिनमन्यन्ते पुत्रदारार्थसम्पदः जीवितार्थैनरास्तेन तेषामायुरतिप्रिय मिति ॥ १ ॥ अथवा आयुष्मन्नित्यनेन ग्रहणधारणा
दिगुणवते शिष्याय शास्त्रार्थोदेय इति ज्ञापनार्थ सकलगुणाधारभूतत्वेना शेषगुणोपलक्षणेन चिरायुर्लक्षणगुणेनशिष्यामंत्रणमकारि यतउक्तं वुड्ढेविदोणमेहे
नकाण्हभूमीएलोट्टएउदयं गहणधरणसमत्थेइय देयमच्छित्तकारिम्मि ॥ १ ॥ विपर्ययहेतु दोष इति आहच आयरिएसुत्तम्मिय परिवाओसुत्तअत्थपलिम
थो अन्नेसिपियहाणी पुच्छाविनदुब्बदावंज्झत्ति ॥ १ ॥ तेने त्यनेनतु आप्तत्वादिगुणप्रसिद्धताभिधायकेन प्रस्तुताध्ययनप्रमाण माह वक्तुर्गुणापेक्षत्वाद्वचन
प्रामाण्यस्येति भगवतेत्यनेनतु प्रस्तुताध्ययनस्यो पादेयता माह अतिशयवान् किलो पादेय स्त द्वचनमपि तथेति अथवा तेणति अनेनो पोद्घातनिर्युक्त्यन्त
र्गत निर्गमद्वार माह योहि मिथ्यात्वतमः प्रभृतिभ्यो दोषेभ्यो निर्गतस्ततो निर्गतमिद मध्ययन मेनतो अपापाया कालतो वैशाखशुद्धैकादश्या मूर्वाह्णे
भावे क्षायिके वर्त्तमाना दिति एवच गुरुपर्वक्रमलक्षणः सम्बन्धोस्य प्रदर्शितोभवति तथा तथाविधेनभगवता यदुक्तन्तत्सप्रयोजनमेव भवतीति सामान्य

तः सप्रयोजनता चास्यो क्ता नहि पुरुषार्थानुपयोगिभगवन्तो भाषन्ते भगवत्वहानेः अतएव चास्यो पायोपेयभावलक्षणः सम्बन्धोपि दर्शित इदंहि भग वदाख्यात ग्रन्थरूपापन्न मुपायः पुरुषार्थस्तूपेय इति अतएव चान श्रोतारः श्रवणे प्रवर्तिताः यतः सिद्धार्थसिद्धसम्बन्धं श्रोतुंश्रोताप्रवर्त्तते शास्त्रादौतेनव क्तव्यः सम्बन्धः सप्रयोजनइति ॥ १ ॥ एवमित्यनेनतु भगवद्वचना दात्मवचनस्या नुत्तीर्णता माह ऽतएव स्ववचनस्यप्रामाण्य सर्वज्ञवचनानुवादमात्रत्वा द स्येति अथवा एव मित्येकत्वादिप्रकारो भिधेयतया निर्दिष्टः निरभिधेयताशङ्कया श्रोतॄणा काकदन्तपरिक्षायामिवा प्रवृत्ति रत्र माभूदिति आख्यात मि त्यनेनतु नापौरुषेयवचनरूप मिद न्तस्या सम्भवादित्याह यतउक्तं वेयवयणनमाणं अपोरुसेयंननिम्मियंजेण इदमच्चंतविरुद्धं वयणाचअपोरुसेयंच ॥ १ ॥ जं वुत्तइत्तिवयण पुरिसाभावेउनेवमेवति तातस्सेवाभावो नियमेणअपोरुसेयत्तेइति ॥ १ ॥ अथवा आख्यातभगवतेद न कुड्यादिनिःसृतं यथा कश्चिदभ्युपग म्यते तस्मिन्ध्यानसमापन्ने चिन्तारत्नवदास्थिते निःसरन्तियथाकाम कुड्यादिभ्योपिदेशना ॥ इत्यस्या नेना नभ्युपगममाह ॥ यतः कुड्यादिनिःसृतानान्तु नस्यादाप्तोपदिष्टता विश्वास श्चनतासुस्या त्कोनेमाःकीर्त्तिताइति ॥ १ ॥ समस्तपदसमुदायेन त्वात्मौद्धत्यपरिहारेण गुरुगुणप्रभावनापरै रेव विनेयेभ्यो दे शनाविधेये त्याह ॥ एव हि तेषु भक्तिपरता स्यात् ययाच विद्यादे रपि सफलता स्या दिति यदुक्तं भत्तीएजिणवयण खिज्जतोपुव्वसचियाकम्मा आयरि यनमोक्कारेण विज्जामंतायसिज्झंतित्ति ॥ १ ॥ नमस्कारश्च भक्ति रेवेति अथवा आउसतेणति भगवद्विशेषण आयुष्मता भगवता चिरजीविनेत्यर्थः अनेन भगवद्बहुमानगर्भेण मङ्गलं अभिहितं भगवद्बहुमानस्य मङ्गलत्वा दिति चोक्तमेव यद्वा आयुषतेति पराऽर्थप्रवृत्त्यादिना प्रशस्त मायु र्धारयता नतुमुक्ति मवाप्यापि तीर्थनिकारादिदर्शना त्पुन रिहायातेना ऽभिमानादिभावतो ऽप्रशस्तं यथोच्यते कैश्चित् ज्ञानिनोधर्म्मतीर्थस्य कर्त्तारःपरमम्पद गत्वागच्छंति भूयोपि भवन्तीर्थनिकारतः ॥ १ ॥ एव ह्यनुन्मूलितरागादिदोषत्वा त्तद्वचसो ऽप्रामाण्य मेव स्या न्निःशेषोन्मूलनेहि रागादीनां कुतः पुनरिहागमनसम्भव

इति अथवा आयुषता प्राणधारणधर्म्मवता नतु सदा सुखेन तस्या कारणत्वेना ख्यातत्वासम्भवा दिति यदिवा आवसतेणंति मयेत्यस्य विशेषण त्वेत पा ठिति गुरुदर्शितमर्यादया वसता अनेन तत्वतो गुरुमर्यादावर्तिस्वरूपत्वात् गुरुकुलवासस्य तद्विधान मर्थत उक्तं ज्ञानादिहेतुत्वा त्तस्य उक्तञ्च नाणस्स होइ भागी थिरयरओ दंसणेचरित्तेय धन्नाआवकहाए गुरुकुलवासनमुचंति ॥ १ ॥ गीयावासोरईधम्मे अणाययणवज्जणा निग्गहोयकसायाणं एयंधीरस्ससासण ति ॥ १ ॥ अथवा आउसतेण आमृशता भगवत्पादारविन्द भक्तितः करतलयुगलादिना स्पृशता नेनै तदाह अधिगतसकलशास्त्रेणापि गुरुविश्रामणादि विनयकृत्य नमोक्तव्य मुक्तं हि जहाहिअग्गीजलणंणमंसे णाणाहुतमंतपयाहिसित्तं एवायरीयंउवचिट्ठएज्जा अणंतनाणोवगओविसंतोति ॥ १ ॥ यद्वा ॥ आउसतेणंति आजुषमाणेन श्रवणविधिमर्यादया गुरूनासेवमानेन अनेनाप्येतदाह विधिनै वोचितदेशस्थेन गुरुसकाशा च्छ्रोतव्यं नतु यथाकथंचित् आहच निद्दाविगहापरिव ज्जिएहिंगुत्तेहिंपंजलिउडेहिं भत्तिबहुमाणपुव्वं उवउत्तेहिंसुणेयव्व मित्यादि ॥ १ ॥ एवं सुत्ताः पदार्थः पदविग्रहस्तु सामासिकपद विषयः सचारस्मात मित्यादिषु दर्शित इति ॥ इदानीं चालनाप्रत्यवस्थाने तेच शब्दतो ऽर्थत स तत्र शब्दतः ननु मे इत्यस्य मम मह्यंचेति व्याख्यान मुचितं षष्ठीचतुर्थ्यो रेवै कवचनां तस्य स्मदस्य मे इत्यादेशा दिति अत्रोच्यते मे इत्यय स्त्रिगन्तिप्रतिरूपको व्ययशब्द स्तृतीयैकवचनाताऽस्मच्छब्दार्थे वर्त्ततेइति न दोषः अर्थतस्तु चालना ननु वस्तु नित्य म्वा स्या दनित्य म्वा नित्यचे त्तर्हि नित्यस्या प्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वरूपत्वा द्यो भगवतः सकाशे श्रोतृत्वस्वभावः स एवच कथं शिष्योपदेशकालस्वभाव इति किंच शिष्योपदेशकालत्वस्य पूर्वस्वभावत्यागेयास्यादत्यागेवा यदित्यागे हत हत म्वस्तुनो नित्यत्व वस्तुनः स्वभावात्यति रिक्तत्वेन तत्त्यागेतत्त्वते रिति अपरित्याग इतिचे न्न विरुद्धयोः स्वभावयो र्युगपदसम्भवा दिति अथवा नित्यमितिपक्ष स्तदपि न निरन्वयनाशेहि श्रोतुः श्र वणकाल एव विनष्टत्वा त्कथनावसरे ऽन्यस्यैवोत्पन्नत्वा दकथनप्रसङ्गः यज्ञदत्तसुतस्य देवदत्ताकथनव दिति ॥ अभसमाधि नैगमतेनेति नयद्वारमवतरति

तत्र नैगमसंग्रहव्यवहारऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूतानया स्तत्राद्या स्त्रयो द्रव्य मेवार्थो स्तीति वादितया द्रव्यार्थिके ऽवतरन्ति इतरेतु पर्याय एवार्थो स्ती ति वादितया पर्यायार्थिकनये तदेव मुभयमताश्रयणे द्रव्यार्थितयानित्य वस्तु पर्यायार्थितयात्वनित्य मितिनित्यानित्य म्वस्त्विति प्रत्येकपक्षोक्तदोषाभावो गुड नागरादिव दिति एव मेवच सकलव्यवहारप्रवृत्ति रिति उक्तंच सव्वंचियपइसमय उप्पज्जतिनासएयनिच्चं एवचियसुहदुक्ख बंधमोक्खादिसब्भावोत्ति ॥ १ उक्तः सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगम स्तदेव मधिकृतसूत्र माश्रित्य सूत्रानुगमसूत्रालापकनिक्षेपसूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमतयाऽपदर्शिता आराधितंच सक्रम मा ष्यकारवचन मंतद्यथा सुत्तसुत्ताणुगमो सुत्तालावगकओयनिक्खेवो सुत्तफासियनिज्जुत्ति नयायसमगतुवच्चंतित्ति ॥ १ ॥ एतेषा ञ्चाय म्विषय उक्तो भाष्य कारेण होइकयत्थोवोत्तु सपयच्छेयंसुयंसुयाणुगमो सुत्तालावगनासो नामाइन्नासविनियोगं॥ सुत्तप्फासियनिज्जुत्ति नियोगोसेसओपयत्थाइ पायंसोचियने गम नयाइमयगोयरोहोइत्ति ॥ २ ॥ एव मतिसूत्रं स्वय मनुसरणीय वयन्तु संक्षेपार्थं क्वचि त्किंचिदेव भणिष्याम इति यदाख्यात मभगवता तदधुनो च्यते तत्र सकलपदार्थानां सम्यग्मिथ्याज्ञानश्रद्धानानुष्ठाने विषयीकरणेनो पयोगनयना दात्मनः सर्वपदार्थप्राधान्य मत स्तद्विचारं तावदादावाह ॥ एगेआया एको न द्व्यादिरूप आत्मा जीव. कथञ्चि दितिगम्यते तत्र अतति सतत मवगच्छति अतसातत्यगमन इतिवचना दतधातो र्गत्यर्थत्वा द्गत्यर्थानांच ज्ञाना र्थत्वा दनवरत ञ्ज्ञानातीति निपातना दात्मा जीव उपयोगलक्षणत्वा दस्य सिद्धसंसार्यवस्थाद्वये प्युपयोगभावेन सततावबोधभावात् सततावबोधाभावे चा

॥ एगेआया ॥

जीव एकछेज्ञानदर्शन चारित्ररूप अथवा चेतनालक्षणजीव ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

जीवत्वप्रसङ्गात् अजीवस्यच पुन र्जीवत्वाभावात् भावेचा काशादीना मपि तथात्वप्रसंगात् एवंच जीवानादित्वाभ्युपगमाभावप्रसङ्ग इति अथवा अततिस ततं गच्छति स्वकीयान् ज्ञानादिपर्याया नित्यात्मा नन्वेवमाकाशादीना मप्यात्मशब्दव्यपदेशप्रसग स्तेषामपि स्वपर्यायेषु सततगमना दन्यथा अपरिणा मित्वेना वस्तुत्व प्रसङ्गा दिति नैव व्युत्पत्तिमात्रनिमित्तत्वा दस्य उपयोगस्यै वच प्रवृत्तिनिमित्तत्वा ज्जीवएवात्मा नाकाशादि रिति यद्वा संसार्यपेक्षया नानागतिषु सततगमना न्मुक्तापेक्षया च भूततद्भावत्वा दात्मेति तस्य चैकत्व कथचिदेव तथाहि द्रव्यार्थितयै कत्व मेकद्रव्यत्वा दात्मनः प्रदेशार्थतया त्वनेक त्व मसख्येयप्रदेशात्मकत्वा त्तस्येति तत्र द्रव्यच तदर्थश्चेति द्रव्यार्थ स्तस्तभावो द्रव्यार्थता प्रदेशगुणपर्यायाधारता अवयविद्रव्यते तियावत् तथा प्रकृष्टो देशः प्रदेशो निरवयवोंऽशः सचासावर्थश्चेति प्रदेशार्थ स्तस्य भावः प्रदेशार्थता गुणपर्यायाधारावयवलक्षणार्थते तियावत् नन्ववयविद्रव्य मेव नास्ति विकल्पद्वयेन तस्या युज्यमानत्वात् खरविषाणव त्तथा हि अवयविद्रव्य मवयवेभ्यो भिन्न मभिन्न वा स्या न्न ताव दभिन्न मभेदेहि अवयविद्रव्यव दवयवाना मेकत्व स्या द वयवव द्वा ऽवयविद्रव्यस्या प्यनेकत्वं स्या दन्यथा भेदएव स्या द्विरुद्धधर्माध्यासस्य भेदनिबन्धनत्वादिति भिन्नंचे त्त त्तेभ्यः तदा किं मवयवि द्रव्य प्रत्येका मव यवेषु सर्वात्मना समवैति देशतो वेति यदि सर्वात्मना तदा वयवसंख्य मवयविद्रव्यम् स्यात् कथ मेकत्व न्तस्य अथ देशैः समवैति ततो ये देंशे रवयवेषु तद्व र्त्तते तेष्वपि देशेषु तत्कथ प्रवर्त्तते देशतः सर्वतोवा सर्वत से त्तदेवदूषण देशतश्चे त्तेष्वपि देशेषु कथ मित्यादि रनवस्था स्या दित्यत्रो च्यते यदुक्ता म्विकल्पद्वयेन तस्या युज्यमानत्वा दिति तदयुक्त मेकान्तेन भेदाभेदयो रनभ्युपगमात् अवयवा एवहि तथाविधैकपरिणामतया अवयविद्रव्यतया व्यपदिश्यन्ते त एव च तथाविधविचित्रपरिणामापेक्षया अवयवा इति अवयविद्रव्याभावेतु एते घटावयवा एतेच पटावयवा इत्येव मसङ्कीर्णावयवव्यवस्था न स्या त्तथाच प्रति नियतकार्यार्थिनां प्रतिनियतवस्तूपादानं नस्या त्तथाच सर्वं मसमञ्जस मापनीपद्येत सन्निवेशविशेषा द्धटाद्यवयवाना प्रतिनियतता भविष्यतीति चेत् स

त्य केवलं सएव सन्निवेशविशेषो ऽवयविद्रव्य मिति यच्चोच्यते विरुद्धधर्माध्यासोभेदनिबन्धन मिति तदपि न सत् प्रत्यक्षसंवेदनस्य परमार्थापेक्षया भ्रांतत्वेन सव्यवहारापेक्षयात्वभ्रांतत्वेना भ्युपगमादिति यदिनामभ्रान्तत्वमभ्रांतत्व कथ मित्येव मनापि वक्तु शक्यत्वा दिति किंच विद्यते अवयविद्रव्य मव्यभिचा रितया तथैव प्रतिभासमानत्वा दवयववन्नीलव द्वा नचाय मसिद्धो हेतु स्तथा प्रतिभासस्यानुभूयमानत्वा न्नाप्यनैकांतिकत्वविरुद्धत्वे सर्ववस्तुव्यवस्थाया: प्र तिभासाधीनत्वा दन्यथा नकिञ्चनापि वस्तु सिद्धे दिति॥ भवतुनामा वयविद्रव्य केवल मात्मा न विद्यते तस्य प्रत्यक्षादिभि रनुपलभ्यमानत्वा दिति तथा हि नप्रत्यक्षग्राह्योसा वतीन्द्रियत्वात् नाप्यनुमानग्राह्यो ऽनुमानस्य लिङ्गलिङ्गिनो: साक्षा त्सम्बन्धदर्शनेन प्रवृत्ते रिति आगमगम्योपि नासा वागमाना म न्योन्यविसम्वादा दित्यत्रोच्यते केय मनुपलभ्यमानता किमेकपुरुषाश्रिता सकलपुरुषाश्रितावा यदिएकपुरुषाश्रिता न तया त्माभाव: सिद्ध्यति सत्यपि वस्तुनि तस्या सम्भवात् नहिकस्यचित्पुरुषविशेषस्य घटाद्यर्थग्राहकं प्रमाणं न प्रवृत्त मिति सर्वत्र सर्वदा तदभावो निर्णेतु शक्य इति नहि प्रमाणनिवृत्तौ प्रमेय विनिवर्त्तते प्रमेयकार्यत्वात् प्रमाणस्य नच कार्याभावेकारणाभावोदृष्ट इत्यनैकान्तिकतानुपलम्भहेतो: सकलपुरुषाश्रितानुपलम्भस्त्वसिद्ध इत्यसिद्धो हेत् र्नह्यसर्वज्ञेन सर्वे पुरुषा: सर्वदा सर्वत्रात्मान न्नपश्यन्तीति वक्तुशक्य मिति किञ्च विद्यते आत्मा प्रत्यक्षादिभिरुपलभ्यमानत्वात् घटव दिति नचाय मसिद्धो हेतु यतो ऽस्मदादिप्रत्यक्षेणाप्यात्मा तावद्गम्यत एव आत्माहि ज्ञानाद नन्य आत्मधर्मत्वात् ज्ञानस्य तस्यच स्वसम्विदितरूपत्वात् स्वसंविदितत्व श्च ज्ञानस्य नीलज्ञान मुत्पन्न मासी दित्यादिस्मृतिदर्शनात् नह्य स्वसंविदिते ज्ञाने स्मृतिप्रभवो युज्यते प्रमान्तरज्ञानस्यापि स्मृतिगोचरत्वप्रसङ्गा दिति त देव न्तदव्यतिरिक्तज्ञानगुणप्रत्यक्षत्वे आत्मा गुणी प्रत्यक्ष एव रूपगुणप्रत्यक्षत्वे घटगुणिप्रत्यक्षव दिति उक्तञ्च गुणपच्चक्खत्तणओ गुणीविजाओ घडोव्वपच्चक्खो घडउव्वघिप्पइगुणी गुणमित्तगहणओजम्हा ॥ १ ॥ तथा अन्नोणण्णोत्वगुणी होज्जगुणेहिंजइणामसोणन्नो णणुगुणमेत्तगहणे घेप्पइजीवोगुणीसक्खं ॥ १ ॥

अहअसीतोएवं गुणिगोनघडादयोविग्रहत्ता गुणमेत्तगहणाओजोयंमिकुतोवियारोयंति ॥ २ ॥ येतुसकलपदार्थसार्थस्वरूपाविर्भावनसमर्थज्ञानवंत स्तेषां
सर्वात्मनैव प्रत्यक्ष इति तथा ऽनुमानगम्यो प्यात्मा तथाहि विद्यमानकर्तृक मिदं शरीर भोग्यत्वा दोदनादिव व्योमकुसुमं विपक्षः सच कर्ता जीव इति
नत्वोदनकर्तृवन्मूर्त्त आत्मा सिद्धातीति साध्यविरुद्धोहेतु रिति नैव संसारिणो मूर्त्तत्वेना प्यभ्युपगमा दाहच जोकत्तासोजीवो सक्षविरुद्धोत्तितेमइंभोत्ता
मोत्ताइपसंगाओ तत्तोससारिणोदोसोत्ति ॥ १ ॥ नचाय मेकान्तो यदुत लिंग्यविनाभूतलिङ्गोपलम्भव्यतिरेकेणा नुमानस्यै कान्ततो ऽप्रवृत्ति रिति हसिता
दिलिङ्गविशेषस्य गृहाख्यलिंग्यविनाभावग्रहणमन्तरेणापि गृहगमकत्वदर्शनात् नच देहएव गृही येनान्यदेहे दर्शनमविनाभावग्रहणनियामकं भवतीति उ
क्तञ्च सोनेगंतोजम्हा लिंगेहिंसमंअदिठ्ठपुव्वोवि गहलिंगदरिसणाओ गहाणुमेओसरीरमिति ॥ १ ॥ आगमगम्यत्वंत्वात्मन एगेआया अतएववचना न चा
स्यागमान्तरे विसंवादः सम्भावनीयः सुनिश्चितास प्रणीतत्वा दस्येति वक्तुव्यताव्यमन तत्तु स्थानांतरादवसेयमिति किं चा त्मभावे जातिस्मरणादय स्तथा
प्रेतीभूतपितृपितामहादिकृतानुग्रहो यथा तौ च न प्राप्नुयुरिति आत्मनश्च सप्रदेशत्वमवश्यमभ्युपगन्तव्यं ॥ निरवयवत्वे तु हस्ताद्यवयवानामेकत्व प्रसङ्गः
प्रत्यवयव स्पर्शाद्यनुपलब्धिप्रसङ्ग श्चेति सप्रदेश आत्मा प्रत्यवयव चैतन्यलक्षणतद्गुणोपलम्भात् प्रतिग्रीवाद्यवयवोपलब्धरूपगुणघटवदिति स्थापित मेत
द्रव्यार्थतयैक आत्मेति अथवा एक आत्मा कथंचि दिति प्रतिक्षण सम्भव दपरापरकालकृतकुमारतरुणनरनारकत्वादिपर्याये रुत्पादविनाशयोगेपि द्र
व्यार्थतयैकत्वा दस्य यद्यपि हि कालकृतपर्यायै रुत्पद्यते नश्यति च वस्तु तथापि स्वपरपर्यायरूपानन्तधर्मात्मकत्वा त्तस्य न सर्वथानाशोयुक्त इति आहच
नहि सव्वहाविणासो अद्धपज्जायमित्तनासंमि सपरपज्जायाणंत धम्मणोवत्थुणोजुत्तोत्ति १ किंच प्रतिक्षण क्षयिणो भावा इत्येतस्मा द्वचना त्प्रतिपाद्यस्य यत्
क्षणभंगविज्ञान मुपजायते तदसंख्यातसमयैरेव वाक्यार्थग्रहणपरिणामा ज्जायते नतु प्रतिपत्तुः प्रतिसमयं विनाशेसति यत एकैक मप्यक्षरं पदसत्कं सं

ख्यातीतसमयसभूतं संख्यातानि चाक्षराणि पदं संख्यातपदं च वाक्यं तदर्थग्रहणपरिणामा च सर्वं क्षणभंगुरमितिसंविज्ञानं भवे त्तच्चायुक्तं समयनष्टस्येति
आहच वाहवासव्वं खणियं विन्नायजइमईसुयाश्रोत्ति तदसखसमयसुत्तत्थ गहणपरिणामभोजुत्तं ॥ १ ॥ नउपइसमयविणासे ज्जेणेक्केक्कक्खरंपियपयस्स
सखाइ यसमाइयसखेज्जाइंपयताइं ॥ २ ॥ सखेज्जपयवक्क तदत्थगहणपरिणामश्रोहोज्जा सव्वक्खणभंगप्पा णतदजुत्तंसमयनट्ठस्सत्ति ॥ ३ ॥ तथा सर्वथो
च्छेदे तृष्णादयो न घटंते पूर्वसंस्कारानुवृत्तावेव तेषां युज्यमानत्वा दाहच तेत्तीसमोकिलामोसारिक्खविपक्खपच्चयाईणि अज्झयणज्झाणभावणा यकासच्च
नाससञ्चनासंमिन्ति १ ॥ तत्र तृप्ति र्प्रोणिः श्रमो ऽध्वादिखेदः क्लमो ग्लानिः साद्दृश्य साधर्म्यं विपक्षो वैधर्म्यं प्रत्ययो ऽवबोधः शेषपदानि प्रतीतानि इ
त्यादि बहुवक्तव्यं तत्तु स्थानांतरादवसेय मिति तदेव आत्मा स्थितिभवनभंगरूपापेक्षया नित्यो नित्यत्वाच्चैको भवनभंगरूपापेक्षया त्वनित्यो ऽनित्यत्वा च्चा
नेक इति आहच जमणतपज्जयमयवत्थुभवणंविचित्तपरिणामं ठिइविभवभंगरूव णिच्चाणिच्चाइतोभिमयति ॥ १ ॥ एवच सुहदुक्खबंधमोक्खो उभयनयमया
णुवत्तिणोजुत्ता एगयरपरिच्चाए सव्वव्ववहारवोच्छित्तित्ति ॥ १ ॥ अथवा एकआत्मा कथचिदेवेति यतो जैनानां नहि सर्वथा किंचिद्वस्तु एकमनेकं
चास्ति सामान्यविशेषरूपत्वाद्वस्तुनः अथ ब्रूया द्विशेषरूप मेव वस्तु सामान्यस्यविशेषेभ्यो भेदाभेदाभ्या चिंत्यमानस्या योगा त्तथाहि सामान्यं विशेषेभ्यो
भिन्न मभिन्न वा स्यान्नभिन्न मुपलंभाभावा न्नचा नुपलभ्यमानमपि सत्तया व्यवहर्तुं शक्यं खरविषाणस्यापि तथाप्रसगात् अथाभिन्नमितिपक्ष स्तयाच
सामान्यमात्र वा स्या द्विशेषमात्र च्चेति नह्येकस्मिन् सामान्य मेकं विशेषा स्त्वनेकारूपा इत्यसंकीर्णा वस्तुव्यवस्था स्यादिति अत्रोच्यते नह्यस्माभिः सामान्य
विशेषयो रेकान्तेन भेदो ऽभेदोवा भ्युपगम्यते अपितु विशेषा एव प्रधानीकृता. तुल्यरूपा उपसर्जनीकृततुल्यरूपाः विषसतया प्रज्ञायमानाविशेषा व्य
पदिश्यन्ते तएवच विशेषा उपसर्जनीकृताः तुल्यरूपाः प्रधानीकृततुल्यरूपा. समतया प्रज्ञायमानाः सामान्य मिति व्यपदिश्यन्तइति आहच निर्विशेष

ग्टहीताश्च भेदा:सामान्यमुच्यते ततोविशेषात्सामान्यं विशिष्टत्वनयुज्यते ॥ १ ॥ वैधर्म्यसमभावेन ज्ञायमानाद्दमेकिल प्रकल्पयन्तिसामान्य विशेषस्थिति मात्मनीति ॥ २ ॥ तद्देव सामान्यरूपेणात्मा एको विशेषरूपेण त्वनेको नचात्मनान्तुल्य रूपन्नास्ति एकात्मव्यतिरेकेण शेषात्मना मनात्मत्वप्रसगा दिति तुल्यश्चरूप मुपयोग उपयोगलक्षणोजीवइतिवचना त्तद्देव मुपयोगरूपैकलक्षणत्वा त्सर्व एवात्मान: एकरूपा. एवञ्च एकलक्षणत्वा देक आत्मेति ॥ अथवा जन्ममरणसुखदु'खादिसंवेदने ष्वसहायत्वा देक आत्मेति भावनीय मिति इह सर्वसूत्रेषु कथचिदि त्यनुस्मरणीय कथचिद्वादस्या विरोधे सर्ववस्तु व्यवस्थानिबन्धनत्वात् उक्तंच स्याद्वादायनमस्तस्मै यविनासकला:क्रिया लोकद्वितयभाविन्यो नैवसागत्यमासते ॥ १ ॥ तथा नयास्तवस्यात्पदसत्वलांछि ता रसोपविद्धाइवलोहधातव: भवंत्यभिप्रेतफलायतस्ततो भवन्तमार्या'प्रणताहितैषिण इति ॥ २ ॥ आत्मन एकत्व मुक्तान्यायतो भ्युपगच्छद्भि रपि कैश्चि न्निष्क्रियत्व तस्या भ्युपगत मत स्तन्निराकरणाय तस्य क्रियावत्व मभिधित्सु: क्रियाया: कारणभूत न्दण्डस्वरूपं प्रथमं ताव दभिधातुमाह एगेदण्डे एको वि वक्षितविशेषत्वात् दण्ड्यते ज्ञानाद्यैश्वर्यापहारतो ऽसारीक्रियते आत्मा नेनेति दण्ड: सच द्रव्यतो भावतश्च द्रव्यतो यष्टि र्भावतो दु:प्रयुक्त ्मन:प्रभृति ॥ तेन चा त्मा क्रिया करोतीति तामाह एगाकिरिया एका अविवक्षितविशेषतया करणमात्रविवक्षणात् करणक्रिया कायिक्यादिकेति अथवा एगेदण्डे एगा किरियत्ति सूत्रद्वयेना त्मनो ऽक्रियत्वनिरासेन सक्रियत्व माह यतो दण्डक्रियाशब्दाभ्यां त्रयोदश क्रियास्थानानि प्रतिपादितानि तत्रार्थदण्डानर्थदण्डहिंसा

॥ एगेदंडे एगाकिरिया ॥

माठें मने बचने कायायें दंडीये ते एकदंड १। एक क्रियाछे काया प्रमुखथी पापलागे ते क्रिया १ ॥

दंडकमादंडदृष्टिविपर्यासदंडरूपः पंचविंशतिः परमाधार्मिकदेवरचयत्री दंडयन्तिनरकान् [illegible] हिंसाक्रिया इति क्रियाभेदेनतु

इत्यादिरूपप्रत्यया अध्यात्मिकी मानप्रत्यया मित्रद्वेषप्रत्यया मायाप्रत्यया लोभप्रत्यया ईर्यापथिकीति षड्विधा क्रियोक्ता तदेवमत्र करणमात्रतामात्रा

ति दंडक्रियायाः स्वरूपविशेष मुपरिष्टात् व्याख्यानएव वक्ष्याम इति अक्रियावत्वनिरासपरा स्मन एवं यैः क्रिया क्रियावत्व मभ्युपगत मात्मन स्तै भोक्तृत्व

मभ्युपगत मतोभुजिक्रियानिर्वर्त्तनसामर्थ्यंसति भोक्तृत्व मुपपद्यते तदेवच क्रियावत्वं नास्तीति यच प्रकृतिः करोति पुरुषस्तु भुंक्ते प्रतिबिंबमात्रेणेति

तदयुक्तम् सर्वथैवक्रियावत्वमंतरेण प्रकृत्युपधानयोगेपि प्रतिबिंबभावानुपपत्तेः प्रतिबिम्बस्य रूपान्तरपरिणमनरूपत्वात् अथ प्रकृतिविकाररूपायाः बुद्धेरेव

सुखाद्यर्थप्रतिबिंबनं नात्मन स्तर्हि नात्मभोग स्तद् वस्थता तस्येति आयापि वस्तुतस्त्व न्यत्तु स्थानांतरादवसेय मिति ॥ उक्तरूपस्या त्मन आ

धारस्वरूपनिरूपणायाह एगेलोएत्ति एको अविवक्षितासंख्यप्रदेश अधस्तिर्यगादिदिग्भेदतया लोक्यते दृश्यते केवलालोकेने तिलोकः धर्मास्तिकायादि

द्रव्याधारभूत आकाशविशेष स्तदुक्तम् धर्मादीनां वृत्ति र्द्रव्याणां भवति यत्र तत् क्षेत्रं तै र्द्रव्यैः सह लोक स्तद्विपरीतं ह्यलोकाख्यमिति अथवा लोको ना

मादि रष्टधा आहच नामठवणादविए खेत्तेकालेभवेयभावेय पज्जवलोएयतहा अट्ठविहोलोयनिक्खेवोत्ति ॥ १ ॥ नामस्थापने सुज्ञाते द्रव्यतो लोको

जीवाजीवद्रव्यरूपः क्षेत्रतोलोक अथवाऽऽकाशमात्र मनंतप्रदेशात्मकम् काललोकः समयावलिकादिः भवलोको नारकादय स्तस्मिन् २ भवे वर्त्तमाना यथाम

॥ एगेलोए ॥

१४ राजरूप एकलोक षट्द्रव्यनूं थानक १ ॥

॥ २ ॥ आत्माच लोकाकृति र्धर्म्माधर्म्मास्तिकायोपगृहीतः सदङ्गः सक्रियश्च कार्म्मणायच्यत इति बन्धनिरूपणायाह [एगेबंधे] बन्धनम्बन्धः सकषायत्वात् जीवः कर्म्मणो योग्यान् पुद्गलाना दत्ते यत् स बन्धइतिभावः सच प्रकृतिस्थितिप्रदेशानुभावभेदात् चतुर्विधोपि बन्धसामान्या देकः मुक्तस्यसतः पुनर्बन्धा भावाद्वा एको बन्धइति अथवा द्रव्यतोबन्धो निगडादिभि र्भावतः कर्म्मणा तयोश्च बन्धनसामान्या देकोबन्ध इति ननु बन्धो जीवकर्म्मणोः संयोगो ऽभि मेतः सचक्या दिमा नादिरहितोवा स्या दितिकल्पनात्रयं तत्र यद्या दिमा निति पक्ष स्तदा किं पूर्वमात्मा पश्चात् कर्म्म अथ पूर्वं कर्म्म पश्चादात्मा उत यु गपत्कर्म्मात्मानो सम्भवेतामिति पक्षोविकल्पाः तत्र नताव त्पूर्वमात्मसम्भूतिः सम्भाव्यते निर्हेतुकत्वात् खरविषाणवत् अकारणप्रसूतस्य वा ऽकारणत एवो परमः स्या दृष्टा नादिरिया त्मा तथाप्यकारणत्वा न्नास्य कर्म्मणो योग उपपद्यते नभोवत् अथाकारणेपि कर्म्मणो योग स्या त्तर्हि स मुक्तस्यापि स्यादिति अथवा सा वात्मा नित्य मुक्तएव तर्हि किं मोक्षजिज्ञासया बन्धाभावेच मुक्तव्यपदेशाभाव एवा काशवदिति नापि कर्म्मणः प्राक् प्रभूति रिति द्वितीयोवि कल्पः सङ्गच्छते कर्त्तुरभावात् नच क्रियमाणस्य कर्म्मव्यपदेशो ऽभिमतः अकारणप्रसूते र्वा कारणत एवोपरमः स्यादिति युगपदुत्पत्तिलक्षणतृतीयपक्षोपि नक्षमो ऽकारणत्वादेव नच युगपदुत्पत्तौ सत्या मय कर्त्ता कर्म्मेद मितिव्यपदेशो युक्तरूपः सव्येतर गोविषाणवदिति अथा दिरहितो जीवकर्म्मयोग इति पक्ष स्तदा नादित्वादेव नात्मकर्म्मवियोगः स्या दात्माकाशसंयोगवदिति अत्रोच्यते आदिमत्संयोगपक्षदोषाः अनभ्युपगमादेवनिरस्ताः यश्चादिरहितजीव

॥ एगेबंधे ॥

बंध एकछे कर्मरूपकपासथी बंधाये ॥

कर्म्मयोगो ऽभिधीयते अनादित्वा दात्मकर्म्मवियोगा इति तदयुक्त मनादित्वेपि संयोगस्यवियोगोपलब्धेः कांचनोपलयोरिवे ति यदाह जहवेहकंचणोवल सजोगोणादिसतइगओवि वोच्छिज्जइवोवायं तहजोगोजीवकम्माणति ॥ १ ॥ तथा अनादेरपिसन्तानस्य विनाशो दृष्टो बीजांकुरसन्तानवत् आहच अ न्नतरमणिव्वत्तिय कज्जंबीयंतराणिजविहियं तत्थहओसताणोकुक्कुडिअंडाइयाणवत्ति ॥ १ ॥ अनादिबन्धसद्भावेपि भव्यात्मनः कस्यचि न्मोचो भवतीति मो चस्वरूपमाह ॥ [एगेमोक्खे] मोचन कर्म्मपाशवियोजन मात्मनो मोचः आहच कृत्स्नकर्म्मचयान्मोचः । सचैको ज्ञानावरणादिकर्म्मापेचया ऽष्टविधोपि मोच नसामान्यात् मुक्तस्यवा पुन र्मोचाभावात् ईषत्प्राग्भाराख्यचेत्रलचणोवा द्रव्यार्थतयैकः अथवा द्रव्यतो मोचो निगडादिती भावतः कर्म्मत स्तयोश्च मोच नसामान्या देकोमोच इति नन्वपर्यवसानो जीवकर्म्मसंयोगो नादित्वा ज्जीवाकाशसंयोगव दिति कथ न्मोचसम्भव कर्म्मवियोगरूपत्वा दस्या नोच्यते अनादि त्वादित्यनैकांतिको हेतुः धातुकांचनसंयोगो ह्यनादिः सच सपर्यवसानो दृष्टः क्रियाविशेषादेवमय मपि जीवकर्म्मयोगः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रैः सपर्यवसा नो भविष्यति जीवकर्म्मवियोगश्च मोच उच्यत इति ननु नारकादिपर्यायस्वभावः संसारो नान्यः तेभ्यश्च नारकत्वादिपर्यायेभ्यो भिन्नो नाम नकश्चि ज्जीवो नारकादयएव पर्याया जीवाः तदनर्थान्तरत्वा दिति ससाराभावे जीवाभावएव नारकादिपर्यायस्वरूपव दित्यसत् पदार्थो मोच इति आहच जंनारगा दिभावो ससारोनारगाइभिन्नोय कोजीवोतमनसि तस्सासेजीवनासोत्ति ॥ १ ॥ अत्र प्रतिविधीयते यदुक्तं नारकादिपर्यायससाराभावे सर्वथा जीवा

॥ एगेमोरके ॥

एक मोचछे सकल कर्मचयरूप ॥

भावएवा नर्थान्तरत्वा न्नारकादिपर्यायस्वरूपवं दिति अय मनैकांतिकोहेतुः हेम्नो मुद्रिकायाश्वा नर्थान्तरत्वंसिद्ध नच मुद्रिकाकारविनाशे हेमविनाश इति तद्वन्नारकादिपर्यायमात्रनाशे सर्वथा जीवनाशो नभविष्यतीति आहच नहिनारकादिपज्जायमेत्तनासमिसव्वहानासो जीवदव्वस्समओ मुद्दानासेव्वहेम स्सत्ति ॥ १ ॥ अपिच कम्मकओससारो तन्नासेतस्सजुज्जएनासो जीवत्तमकम्मकय तन्नासेतस्सकोनासोत्ति ॥ १ ॥ मोचश्च पुण्यपापचयाद्भवतीति पुण्यपा पयोः स्वरूप वाच्य न्तत्रापि मोचस्य पुण्यस्यच शुभस्वरूपसाधर्म्यात् पुण्यं तावदाह [एगेपुण्णे] पुणशुभे इतिवचनात् पुणतिशुभीकरोति पुनातिवा पवित्री करोत्यात्मानमिति पुण्य शुभकर्म्मसद्वेद्यादिद्विचत्वारिंशद्विध यथोक्त सायं १ उच्चागोय २ नरतिरिदेवाउ ५ नामएयाउ मणुयदुगं ७ देवदुग ९ पंचिंदियजाइ १० तणुपणग १५ ॥ १ ॥ अगोवंगतियपिय १८ सघयणंवज्जरिसहनाराय १० पढमचियसठाणं वन्नाइचउक्कसुपसत्थ २४ ॥ २ ॥ अगुरुलहु २५ पराघाय २६ उस्सास २७ आयवच २८ उज्जोयं २९ सुपसत्थाविहयगई ३० तसाइदसगच ४० णिम्माण ४१ ॥ ३ ॥ तित्थयरेणसहिया वायालापुन्नपगईओत्ति ॥ ४ ॥ एव हिचत्वारिंश द्विधमपि अथवा पुण्यानुवन्धिपापानुवन्धिभेदेन द्विविधमपि अथवा प्रतिप्राणिविचित्रत्वा दनन्तभेदमपि पुण्यसामान्यादेकमिति अथ कर्म्मैव नविद्यते प्र माणगोचरातिक्रान्तत्वात् शशविषाणवदिति कुतः पुण्यकर्म्मसत्तेति असत्य मेत द्यतो नुमानसिद्ध कर्म्म तथाहि सुखदुःखानुभूते र्हेतु रस्ति कार्यत्वा दङ्कुरस्येव वीज यस्य हेतुत्व न्तत्कर्म्म तस्मादस्तिकर्म्मेति स्यान्मतिः सुखदुःखानुभूते र्दृष्टएव हेतु रिष्टानिष्टविषयप्राप्तिमयो भविष्यति किमिह कर्म्मपरिकल्पनया नहि

॥ एगेपुण्णे ॥

पुन्य एकछे शुभकर्म ४२ प्रकृति रूप ॥

दृष्टं निमित्तमपास्य निमित्तान्तरान्वेषणं युक्तरूप मिति नैवव्यभिचारात् इह योहि द्वयो रिष्टशब्दादिविषयसुखसाधनसमेतयोरेकस्य तत्फलेविशेषो दुः
खानुभूतिमयो यश्चा निष्टसाधनसमेतयोरेकस्य तत्फलेविशेषः सुखानुभूतिमयो नासौहेतुमंतरेण सम्भाव्यते नच तद्धेतुक एवा सौ युक्तः साधनानां विपर्या
सादिति पारिशेष्या द्विशिष्टहेतुमानसौ कार्यत्वा द्घटवत् यश्च समानसाधनसमेतयो स्तत्फलविशेषहेतुस्तत्कर्म्म तस्मा दस्तिकर्मेति आहच जोतुल्लसाहणा
ण फलेविसेसोनसोविणाहेउ कज्जत्तणओगोयम घडोव्वहेऊयसेकम्मति ॥ १ ॥ किंच अन्यदेहपूर्वक मिदं बालशरीर इन्द्रियादिमत्वात् यदि हेंद्रियादिम
त्तदन्यदेहपूर्वकं दृष्टं यथा बालदेहपूर्वकं युवशरीरमिन्द्रियादिमच्चेद बालशरीरकं तस्मादन्यशरीरपूर्वकं यच्छरीरपूर्वकं चेद् बालकशरीरं तत्कर्म्म तस्मा द
स्ति कर्म्मेति आहच बालसरीरंदेह तरपुव्वइंदियाइमत्ताओ जहबालदेहपुव्वो जुवदेहोपुव्वमिहकम्मति ॥ १ ॥ ननुकर्म्मसद्भावेपि पापमेवैकं विद्यते
पदार्थो नपुण्यनामास्तियत्तुपुण्यफलं सुखमुच्यते तत्पापस्यैव तरतमयोगादपकृष्टस्य फलं यतः पापस्यपरमोत्कर्षे त्यताधमफलता तस्यैव तरतमयोगा पकर्ष
भिन्नस्य मात्रापरिहृद्धिहान्या यावत् प्रकृष्टापकर्ष स्तत्र या काचित् पापमात्रा अवतिष्ठते तस्या मत्यतशुभफलता पापापकर्षा त्तस्यैव पापस्य सर्वात्मना
क्षयो मोक्षः यथा त्यंतापथ्याहारसेवना दनारोग्यं तस्यैवापथ्यस्य किंचित्किंचिदपकर्षाद्यावत् स्तोकापथ्याहारत्व मारोग्यकरं सर्वाहारपरित्यागाच्च प्राण
मोक्षइति आहच पावुक्करिसेधमया तरतमजोगावकरिसवोसुभया तस्सेवखएमोक्खो अपत्थभत्तोवमाणाओत्ति ॥ १ ॥ अत्रोच्यते यदुक्तं मत्यंतापचितात्
पापात् सुखप्रकर्ष इति तदयुक्तं यतो येयं सुखप्रकर्षानुभूतिः सा स्वानुरूपकर्मप्रकर्षजनिता प्रकर्षानुभूतित्वात् दुःखप्रकर्षानुभूतिवत् यथाहि दुःखप्रकर्षा
नुभूतिः स्वानुरूपपापकर्म्मप्रकर्षजनिते तित्वया भ्युपगम्यते तथेयमपि सुखप्रकर्षानुभूतिरिति स्वानुरूपपुण्यकर्मप्रकर्षजनिता भविष्यतीति प्रमाणफलमिति
पुण्यप्रतिपक्षभूत पापमिति तत्स्वरूपमाह [एगेपावे] पाशयतिगुडयत्यात्मानपातयति चात्मन आनन्दरसशोषयति क्षपयतीति पापं तच्च ज्ञानावरणादिद्वा

शीतिभेदं यदाह नाणंतरायदसगं १० दंसणणव १९ मोहनीयछब्बीसं ४५ अस्सायं ४६ निरयाउ ४७ नीयागोएणअडयाला ४८ ॥ १ ॥ निरयदुग २ तिरियदुग ४ जाइचउक्कंच ८ पचसघयणा १३ सठाणावियपचउ १५ वन्नाइचउक्कमएसत्थ २२ ॥ २ ॥ उवघाय २३ कुविहयगई २४ थावरदसगेणहोंतिचोत्तीस ३४ सब्बावोमिलियाओ बासीईपावपगईओ ८२ ॥ ३ ॥ तदेव ह्यशीतिभेदमपि पुण्यानुबन्धिभेदा द्विभेदमपिवा अनन्तसत्वाश्रितत्वादनन्तमपि वा ऽशुभसामान्यादेक मिति ननु कर्मसत्वेपि पुण्यमेवैक कर्मनतत्प्रतिपक्षभूत म्पाप कर्मास्ति शुभाशुभफलाना पुण्यादेव सिद्धे रिति तथाहि यत्परमप्रकृष्टं शुभफल मेतत्पुण्योत्कर्षस्य कार्यं यत्पुन स्तस्मादवकृष्ट मवकृष्टतर मवकृष्टतमञ्च तत्पुण्यस्यैव तरतमयोगापकर्षभिन्नस्य यावत्परमप्रकर्षहानिः परमप्रकर्षहीनस्य च पुण्यस्य परमावकृष्टतमं शुभफल या काचित् शुभमात्रेत्यर्थः दुःखप्रकर्षइति तात्पर्यं न्तस्यैवच परमावकृष्टपुण्यस्य सर्वात्मना क्षये पुण्यात्मकबन्धाभावा न्मोक्षइति यथा त्यतपथ्याहारसेवनात्पुसःपरमारोग्यसुखं तस्यैवच किञ्चित् २ पथ्याहारविवर्ज्जना दपथ्याहारपरिवृद्धे रारोग्यसुखहानिः सर्व्वथैवाहारपरिवर्जना न्माणमोक्ष इति पथ्याहारोपमानचेह पुण्यमिति अनोच्यते येय दुःखप्रकर्षानुभूतिः सा स्वानुरूपकर्म्मप्रकर्षजनिता प्रकर्षानुभूतित्वा त्सौख्यप्रकर्षानुभूतिवत् यथाहि सौख्यप्रकर्षानुभूतिः स्वानुरूपपुण्यकर्म्मप्रकर्षजनितेति त्वया भ्युपगम्यते तथेयमपि दुःखप्रकर्षानुभूतिः स्वानुरूपपापकर्म्मप्रकर्षजनिता भविष्यतीति प्रमाणफल मिति आहच कम्मप्पगरिसजणिय तदवस्सपगरिसाणुभूईओ सोक्खप्पगरिसभूइ जहपुन्नपगरिसप्पभवत्ति ॥ १ ॥ तदिति दुःखमिति ॥ इ

॥ एगेपावे ॥

पाप एकछे अशुभ ८२ कर्म प्रकृति रूप ॥

दानी मनन्तरोक्तयोः पुण्यपापकर्म्मणो र्बन्धकारणनिरूपणायाह [एगेश्रासवे] आस्रवन्ति प्रविसति येन कर्म्माण्यात्मनीति आस्रव. कर्म्मबन्धहेतु रितिभावः सचेन्द्रियकषाया ऽव्रतक्रियायोगरूपक्रमेण पञ्च चतुः पच पचविंशति त्रि भेद' उक्तञ्च इंदिय ५ कसाय ४ अव्वय ५ किरिया २५ पणचउअपचपणवीसा जोगातिण्णेवभवे आसवभेयाउआयालत्ति ॥ १ ॥ तदेव मय द्विचत्वारिंशद्विधो अथवा द्विविधो द्रव्यभावभेदा त्तत्र द्रव्यास्रवो यज्जलांतर्गतनावादौ तथा विधपरिणामेनच्छिद्रै र्जलप्रवेशन भावास्रव स्तु यज्जीवानाम्पञ्चेन्द्रियादिच्छिद्रत. कर्म्मजलसञ्चय इति सत्वास्रवसामान्या देकएवेति ॥ अथास्रवप्रतिपचभूत सवरस्वरूपमाह [एगेसवरे] सव्रियते कर्म्म कारण प्राणातिपातादिनिरुध्यते येन परिणामेन स सवरः आस्रवनिरोध इत्यर्थ. सच समितिगुप्तिधर्म्मानुप्रेचा परीषहचारित्र रूपः क्रमेण पंच त्रि दश द्वादश द्वाविंशति पच भेदः आहच समिई ५ गुत्ती ३ धम्मो १० अणुपेह १२ परीसहा २२ चरित्तच ५ सत्ता वन्नभेया पणतिगभेयाइसंवरणेत्ति ॥ १ ॥ अथवा यद्विधा द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जलमध्यगतनावादे रनवरतप्रविशज्जलानां छिद्राणा न्तथाविधद्रव्ये ण स्थगन संवरः भावतस्तु जीवद्रोण्या मास्रवत्कर्म्मजलाना मिन्द्रियादिच्छिद्राणा समित्यादिना निरोधन सवर इति सच द्विविधोपि सवरसामान्या देक इति सम्वरविशेषेवा योग्यवस्थारूपे ,कर्म्मणा स्वेदनैव भवति नतन्य इति वेदनानरूपमाह [एगावेयणा] वेदनवेदना स्वभावेनो दीरणाकरणेन चोदया वलिकाप्रविष्टस्य कर्म्मणो अनुभवन मितिभावः साचज्ञानावरणीयादिकर्म्मापेचया अष्टविधापि विपाकोदयप्रदेशोदयापेचया द्विविधापि अभ्युपगमिक्वो

॥ एगेआसवे एगेसंवरे एगावेयणा ॥

एक आस्रव जेणे कर्म बधाये ते ४२ भेदेछे नव तत्व मांछे । एक संवरछे जेणे पापथी रूधीये ५७ भदेछे । एक वेदना छे आठ कर्मनु भोगववो जीवनें ॥

शिरोलोचादिका औपक्रमिकी रोगादिजनिते त्येवञ्च द्विविधापि वेदना सामान्यादेकैवेति अनुभूतरसकर्म्म प्रदेशेभ्यः परिशटतीति वेदनानन्तरं कर्म्मप रिशटनरूपा निर्जरां निरूपयन्नाह [एगाणिज्जरा] निर्जरणनिर्जरा विशरण परिशटनमित्यर्थः साचाष्टविधकर्म्मापेक्षया ऽष्टविधापि द्वादशविधतपोज नितत्वेनच द्वादशविधापि अकामक्षुत्पिपासाशीतातपदंशमशकसहनब्रह्मचर्यधारणाद्यनेकविधकारणजनितत्वेना ऽनेकविधापि द्रव्यतो वस्त्रादे र्भवत. कर्म्मणा मेव द्विविधापि वा निर्जरा सामान्या देकैवेति ननु निर्जरामोक्षयोः कः प्रतिविशेष उच्यते देशत. कर्म्मक्षयोनिर्जरा सर्वतस्तु मोक्ष इति इहच जीवो विशिष्टनिर्जराभाजन म्प्रत्येकशरीरावस्थाया मेव भवति नसाधारणशरीरावस्थाया मतः प्रत्येकशरीरावस्थस्य जीवस्य स्वरूपनिरूपणायाह [एगेजीवे इत्यादि] अथवा उक्ताः सामान्यतः प्रस्तुतशास्त्रव्युत्पादनीया जीवादयो नव पदार्थाः साम्प्रत जीवपदार्थ म्विशेषेण प्ररूपयन्नाह ॥ [एगेजीवेपाडिक्कएणस रीरएण] एकः केवलः जीवितवान् जीवति जीविष्यति चेति जीवः प्राणधारणधर्मा त्मेत्यर्थः एक जीव म्प्रतिगत यच्छरीर म्प्रत्येकशरीरनामकर्म्मोदया त्तत्प्र त्येक न्तदेवप्रत्येकक दीर्घत्वादिप्राकृतत्वा त्तेनप्रत्येककेन शीर्यत इति शरीर न्देह स्तदेवानुकम्पितादिधर्म्मोपेत शरीरक न्तेन लक्षित' तदाश्रित्य एको जीव इत्यर्थः अथवा णकारो वाक्यालङ्कारार्थौ तत एको जीवः प्रत्येकके शरीरे वर्त्तत इतिवाक्यार्थ. स्यादिति इहच पाडिलक्खएण क्वचित्पाठोदृश्यते सच नव्या ख्यातो ऽनवबोधा दिहच वाचनाना मनियतत्वात् सर्वासा व्याख्यातु मशक्यत्वा त्काचिदेव वाचना व्याख्यास्याम इति इह बन्धमोक्षादय आत्मधर्म्मा अन

॥ एगाणिज्जरा एगेजीवे पाडिक्कएणं सरीरएणं ॥

एक निर्जरा कर्मनो सोधविवो १२ भेदे तपे करीने । एक जीव प्राणधारी प्रत्येकशरीरनो धरणहार । इहा साधारणशरीरी जीव न लेवो कार्म निर्जरा

त्तर मुक्तास्तत स्तदधिकाराद्वा तःपर मात्मधर्म्मान् एगाजीवाणमित्यादिना एगेचरित्ते इत्येतदन्तेन ग्रन्थेनाह ॥ एगाजीवाण अपरियाइत्ताविगुव्वणा ॥ एगाजीवाणति प्रतीतं अपरियाइत्तत्ति अपर्यादाय परितःसमन्ता दगृहीत्वा वैक्रियसमुद्घातेन बाह्यान् पुद्गलान् या विकुर्वणा भवधारणीयवैक्रियशरीर रचनालक्षणा स्वस्मिस्वस्मिन्नुत्पत्तिस्थाने जीवैः क्रियते साएकैव प्रत्येक मेकत्वा द्भवधारणीयस्येति सकलवैक्रियशरीरापेक्षयावा भवधारणीयस्यै कलक्षणत्वात् कथचिदिति या पुन र्वाह्यपुद्गलपर्यादानपूर्विका सोत्तरवैक्रियरचनलक्षणा साच चित्रा निप्रायपूर्वकत्व। द्वैक्रियलब्धिमत स्वाश्राविधशक्तिमत्वा च्चैकजीवस्था प्यनेकास्या दिति पर्यवसित मथ बाह्यपुद्गलोपादानएवो त्तरवैक्रिय भवतीति कुतोऽवसीयते येनेह सूत्रे अपरियाइत्ता इत्यनेन तद्विकुर्वणा व्यवच्छिद्यते इतिचे दुच्यते भगवतीवचना त्तथाहि देवेणभंतेमहड्ढिए जाव महाणुभागे बाहिरएपुग्गले अपरियाइत्ता पभूएगवन्नएगरूव विउव्वित्तए गो० नोइणमट्ठेस मट्ठे देवेणभते बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभूहतापभूत्ति इहहिउत्तरवैक्रिय वाह्यपुद्गला दानाद्भवतीति शिवचितमिति ॥ एगेमणेत्ति ॥ मननमनः औ दारिकादिशरीरव्यापाराहृतमनोद्रव्यसमूहसाचिव्याज्जीवव्यापारो मनोयोग इतिभावः मन्यतेवा अनेनेति मनो मनोद्रव्यमात्र मेवेति तच्च सत्यादिभेदा दनेक मपि सञ्ज्ञिना वा असख्यातभेद मप्येकम्मननलक्षणत्वेन सर्वमनसा मेकत्वादिति ॥ एगावयीत्ति॥ वचनम्वाक् औदारिकवैक्रियाहारकशरीरव्यापारा हृतवाग्द्रव्यसमूहसाचिव्याज्जीवव्यापारो वाग्योग इतिभावः इयच सत्यादिभेदादनेका प्येकैव सर्ववाचा वचनसासान्येनातिभावादिति। एगेकायवायामेत्ति

॥ एगाजीवाणं अपरिआइत्ताविगुव्वणा एगेमणे एगावयी एगेकायवायामे ॥

जीवनें विकुर्वणा एकछे। देवता आश्री बाह्यपुद्गल ग्रह्या विना देवता भवधारणीय बांधे ते प्रत्येकें एकज बांधे घणांनथी । मनरूपयोग एकछे । वचन यो

॥ २५ ॥

कायतद्व्रतिक्रय: शरीर न्तस्य व्यायामो व्यापार: कायव्यायाम: औदारिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो वीर्यपरिणाविशेष इतिभाव:स पुन रौदारिकादिभे
देन सप्तप्रकारोपि जीवानन्तत्वेनानन्तभेदोपि वा एकएव कायव्यायामसामान्यादिति यच्चे कस्येवादा मन: प्रभृतीना मेकत्व न्तत् सूत्रएव विशेषेण वदाति
एगेमणेदेवासुरे ॥ त्यादिनेति सामान्याश्रय मेवेहैकत्वं व्याख्यात मिति ॥ उप्पत्ति ॥ प्राक्षतत्वादुत्पाद: सचैकसमये एकपर्यायापेक्षया नहि तस्ययुगपदुत्पा
दद्वयादि रस्ति अनपेक्षिततद्विशेषकपदार्थतया चैको सावेति ॥ वियइत्ति ॥ विगति र्विगत: साचैका उत्पादवदिति विकृति र्वितति रित्यादिव्याख्यांत
रमप्युचित मायोज्य मस्माभिस्सू त्पादसूत्रानुगुणतोव्याख्यात मिति ॥ वियच्चत्ति॥ विगतै: प्रागुक्तत्वा दिहविगतस्य विगमवतो जीवस्य मृतस्येत्यर्थ: अर्चा
शरीर म्विगतार्चा प्राकृतत्वादिति विचर्चाजा विशिष्टोपपत्ति पद्धति र्विशिष्टभूषावा साचैका सामान्यादिति ॥ गइत्ति॥ मरणानतरं मनुजत्वादे: सकाशा
न्नारकत्वादौजीवस्य गमन ङ्गति: साचेवादेकस्यैकैव नटज्वादिका नरकागत्यादिका वा पुद्गलस्यवा स्थितिवैलक्षण्यमात्रतया चैकातयैकस्वरूपा सर्वजीवपुद्गलाना
मिति ॥ आगइत्ति ॥ आगमनमागति र्नारकत्वादेरेव प्रतिनिवृत्ति: तदेकत्व गतेरिवेति ॥ चयणेत्ति ॥ च्युतिश्च्यवन वैमानिकज्योतिष्काणा म्मरण न्तदेक

एगाउप्पा एगावियती एगावियच्चा एगागती एगाआगती एगेचयणे एगेउववाए एगातक्का एगासन्ना ए

ग एकछे। कायानो व्यापार एकछे यद्यपि औदारिकादि ७ भेदछे पणि सर्वते काया शब्दमा आव्या। उपजवो एकछे एक समये एकज। विगति ते वि
नाश एकछे। जीवनो शरीर एकछे पर भवें उपजतां वैक्रिय तथा औदारिक। गती एकछे मनुष्यमाथी नरकादिके जावानो। एक आगतिछे नरका

मेकजीवापेक्षया नानाजीवापेक्षयाच पूर्ववदिति ॥ उववाएत्ति ॥ उपपतनमुपपातो देवनारकाणां जन्म सचैकं च्यवनवदिति ॥ तक्कत्ति ॥ तर्कणतर्कोवि मर्शः अपायात्पूर्व्वा ईहायाउत्तराःप्रायः शिरःकण्डूयनादयः पुरुषधर्म्मा इहघटन्तइति सम्प्रत्ययरूपा इहचैकत्वन्तु प्राग्विवेति ॥ सन्नत्ति ॥ सञ्ज्ञानसञ्ज्ञा व्यञ्जनाव ग्रहोत्तरकालभवो मतिविशेषः आहारभयाद्युपाधिका वा ऽचेतनासंज्ञा ॥ अभिधान ग्वा सन्नेति ॥ मन्नत्ति ॥ प्राकृतत्वा न्मननम्मतिः कथचिदर्थपरिच्छित्तावपि सूक्ष्मधर्म्मालोचनरूपा बुद्धिरितियावत् आलोचनमितिकेचित् अथवा मन्नामन्नियव्व अभ्युपगमइत्यर्थः सूत्रद्वयेपि सामान्यत एकत्वमिति ॥ एगाविन्नुत्ति ॥ विद्वान् विज्ञोवा तुल्यबोधत्वादेकइति स्त्रीलिंगत्वचप्राकृतत्वात् उत्पाद उप्पावत् लुपभावप्रत्ययत्वाद्वा एकाविद्वत्ता विज्ञताचेत्यर्थः ॥ वेयणत्ति ॥ प्राग्वेदनासामान्यकर्मानुभवलक्षणोक्ता इहतुपीडालक्षणैव साचसामान्यत एकैवेति ॥ अस्याएव कारणविशेषनिरूपणायाह ॥ छेयणेत्ति ॥ छेदन शरी रस्यान्यस्यवाखड्गादिनेति ॥ भेयणेत्ति ॥ भेदन कुंतादिना अथवा छेदन कर्म्मणः स्थितिघातः भेदनंतु रसघातः इत्येकताच विशेषाविवक्षणादिति वेदनादि भ्यश्च मरण मत स्तद्विशेषमाह ॥ एगेमरणेत्यादि ॥ मृतिर्मरण अंतेभव मंतिम चरम तच्च तच्छरीरचे त्यंतिमशरीर तत्र भवाअंतिमशारीरिका उत्तरपद वृद्धि स्तद्वा तेषामस्तीति अंतिमशारीरिका दीर्घत्वंच प्राकृतशैल्या तेषा चरमदेहानां मरणैकताच सिद्धत्वे पुन मरणाभावादिति ॥ अंतिमशरीरस्य

गामन्ना एगाविन्नू एगावेयणा एगेछेयणे एगेभेयणे एगेमरणे अंतिमसारीरियाणं एगेसंसुद्धे अहाभूते पत्ते

दिकमांथी मनुष्यमां आविवी । एक च्यवनछे देवतानो मरण । एक उपपातछे देवता नारकीनो जन्म। एक वितर्कछे। एक सञ्ज्ञाछे । एक मति छे सूक्ष्मअर्थ विचारवानी बुद्धि। एक पंडित पणोछे। १ पीडा प्रमुख वेदनाछे। १ छेदनछे खड्गादिके शरीरनो। १ भेदनछे भालादिके करी। मरण एकछे

स्नातकोभूत्वा म्रियते ऽत एतमाह ॥ एगेसंसुद्धेइत्यादि ॥ एकःसंशुद्धो ऽशयलचरणो ऽकषायत्वात् यथाभूत स्तात्विकः पात्रमिवपात्र मतिशयवत् ज्ञाना दिगुणरत्नानांप्राप्तो वा गुणप्रकर्षमितिगम्यते ॥ एगेदुक्खे ॥ एक मेयांतिमभवग्रहणसम्भवं दुःखं यस्यस एकदुःख एगेअक्खेत्ति पाठांतरे त्वेकधैवा ख्या संशुद्धा दि व्यपदेशो यस्य नत्वसंशुद्ध संशुद्धासंशुद्धइत्यादिकोपि व्यपदेशांतरनिमित्तस्य कषायादे रभावादिति समवत्वेकधाख्य एकधा ऽर्चोया जीवो यस्यस तथेति जीवानां प्राणिना मेकभूत एकद्रवात्मोपम इत्यर्थः एकांतहितप्रवृत्तित्वा देकत्व चास्य बहूनामपि समस्वभावत्वा दिति अथवा ॥ पत्तेइत्यादिसूत्रान्तरं॥ उक्तरूपसंशुद्धादन्येषांस्वरूपप्रतिपादनापर तत्र प्राकृतत्वात् प्रत्येक मेक दुःख प्रत्येकैकदुःख जीवानां स्वकृतकर्म्मफल भोगित्वात् किंभूतं तदित्याह ए कभूत मनन्यतयाव्यवस्थित प्राणिषु नसांख्यानामिव बाह्य मिति ॥ दुःखपुन रधर्माभिनिवेशा दिति तत्स्वरूपमाह ॥ एगाअहमेत्यादि ॥ धारयति दुर्ग तौ प्रपततो जीवान् धारयतिसुगतौ वा तान्स्थापयतीति धर्म्मः उक्तंच दुर्गतिप्रसृतान्जन्तून् यस्माधारयतेततः धत्तेचैतान् शुभेस्थाने तस्माद्धर्म्मइतिस्मृ तः ॥ १ ॥ सचश्रुतचारित्रलक्षण स्तत्प्रतिपक्ष स्त्वधर्म्मस्तद्विषया प्रतिमा प्रतिज्ञा अधर्मप्रधानंशरीरंवा अधर्मप्रतिमा साचैकासर्वस्याः परिक्लेशकारणत यैकरूपत्वा दतएवाह ॥ जसेइत्यादि ॥ यत् यस्मात् से तस्याः स्वाम्यात्मा जीवो अथवा सेति सो ऽधर्म्मप्रतिमावाना त्मा परिक्लिश्यते रोगादिभि र्बाध्यते

एगेदुक्खेजीवाणं एगेभूते एगाअहम्मपडिमा जंसेआयापरिकिलेसति एगाधम्मपडिमा जंसेआयापज्जवज्जाए

छेहला शरीरनो मुंकवो तेभवेजमोक्ष । १ शुद्ध चारित्रियो तत्वनो जाण केवली तीर्थंकर । तेहीज उत्तम पात्र । एक दुःखछे छेहला शरीरी जीवने तेही भवे मोक्ष जाय तेमाटे । सर्वजीवनो आत्मरूपस्वभाव १ छे । पापरूप अधर्मनो करणहार शरीर १ छे । जे अधर्मथी आत्मा क्लेश पावे दुःख भोगे ।

सक्लिश्यत इत्यर्थः जंसीतिपाठान्तरम्वा ततश्च प्राकृतत्वेन लिङ्गव्यत्ययात् यस्या मधर्म्मप्रतिमायां सत्यात्मा परिक्लिश्यते सा एकैवेति एतद्विपर्ययमाह एगाधम्मेत्यादि ॥ प्राग्व श्चवर म्पर्यवा ज्ञानादिविशेषा जाता यस्यस पर्यवजाती भवतीतिशेषः विशुद्ध्यतीत्यर्थः आहिताग्न्यादित्वाच्च जातशब्दस्योत्तरपद त्वमिति अथवा पर्यवान् पर्यवेषु वा यातः प्राप्तः पर्यवयाती ऽथवा पर्यवः परिरचा परिज्ञान म्वा शेषन्तथैवेति धर्म्माधर्म्मप्रतिमेच योगत्रयाद्भवत इति त त्स्वरूपमाह ॥ एगेमणेइत्यादिसूत्रत्रय ॥ तत्र मनइति मनोयोगः तच्च यस्मिन्यस्मिन्समये विचार्यते तस्मिन् २ समये कालविशेषे एकमेव वीप्सानिर्द्देशेन न क्वचनापिसमये तत्‌द्व्यादिसख्यसम्भवतीत्याह एकत्वश्च तस्यै कोपयोगत्वात् जोवानां स्यादेतत् नैकोपयोगो जीवानां युगपच्छीतोष्णस्पर्शविषयसवेदनद्वयद र्शना त्तथाविधभिन्नविषयोपयोगपुरुषद्वयवत् अत्रोच्यते यदिद शीतोष्णोपयोगद्वय तत्स्वरूपेण भिन्नकालमपि समयमनसो रतिसूक्ष्मतया युगपदिव प्रती यते नपुन स्तद्युगपदेवेति आहच समयातिसुहुमयाओ मन्नसिजुगवंचभिन्नकालपि उप्पलदलसयवेह व्वजहवनमलाइचक्कव्वत्ति ॥ १ ॥ यदिपुन रेकत्वो पयुक्त मनो ऽर्थान्तरमपि सवेदयति तदा कि मन्यत्र गतचेताः पुरोवस्थितं हस्तिनमपि नविषयीकरोतीति आहच अन्नहणिउत्तमन्न विणिओगलहद्दज इमणोतेण हत्थिपिठियपुरओ किमन्नचित्तोनलक्खेइ ॥ १ ॥ इह बहुवक्तव्यमस्ति तत्तुस्थानान्तरादवसेयमिति अथवा सत्यासत्योभयस्वभावानुभयरूपा

एगेमणे देवासुरमणुआणं तंसितंसिसमयंसि एगावयी देवासुरमणुआणं तंसितंसिसमयंसि एगेकायववायामे ॥

धर्मनो शरीर १ छे जेणें शरीरे धर्म करिये ते। जेणे धर्मे आत्मा ज्ञानादिगुण पामें सुखी थाय। १ मननो योगछे शुभ तथा अशुभ। देवता विमानवा सी असुर भवनपती व्यंतर ने मनुष्यने होय। तेणे तेणे समये। १ वचनयोग देवता असुर मनुष्यने। १ समये बे भाषान बोलाये १ भाषा बोलाये। तेणे ॥

णां चतुर्णां मनोयोगाना मन्यतरएव भव त्येकदा ह्यादीना विरोधेनासभवा दिति कोपामित्याह ॥ देवासुरमणुयाणति ॥ तत्र दीव्यतीति देवा वैमा
निकज्योतिष्का स्तेच न सुराअसुरा भवनपतिव्यंतरा स्तेच मनोर्जाता मनुजा मनुष्या स्तेच देवासुरमनुजा स्तेषां तथा ॥ वागिति ॥ वाग्योगः सचैषा मेक
दा एकएव तथाविधमनोयोगपूर्व्वकत्वा त्तथाविधवाग्योगस्य सत्यादीना मन्यतरभावा द्वा वच्यतिच छहिठाणेहिंणत्थि जीवाण इड्ढीइवाजावपरिक्कमेइवा
त जीवंवाअजीव करणयाए अजीववाजीवकरणयाए एग समएण दोभासाओ भासत्तिएत्ति तथा कायव्यायामः काययोग' सचैपा मेकदा एकएव स
प्तानां काययोगानामेकदा एकतरस्यैव भावात् ननु यदाहारकप्रयोक्ता भवति तदौ दारिकस्या वस्थितस्य श्रूयमाणत्वात् कथ मेकदा न काययोगद्वय मि
त्यत्रोच्यते सतो प्यौदारिकस्य व्यायामाभावा दाहारकस्यैव च तत्र व्याप्रियमाणत्वा दप्यौदारिक मपिव्याप्रियते तर्हिमिश्रयोगता भविष्यति केवलि
समुद्घाते सप्तमषष्ठद्वितीयसमये ष्वौदारिकमिश्रव त्तथा चाहारकप्रयोक्ता नलभ्येतैवच सप्तविधकाययोगप्रतिपादन मनर्थक स्या दित्येकएव कायव्या
याम इत्येव कृतवैक्रियशरीरस्य चक्रवर्त्यादे रप्यौदारिक निर्व्यापारमेव व्यापारवत्वाच्चे दुभयस्य व्यापारवत्वे केवलिसमुद्घातव न्मिश्रयोगते त्येव मप्येकयो
गत्व मव्याहत मेवेति तथाकाययोगस्या प्यौदारिकतया वैक्रियतयाच क्रमेण व्याप्रियमाणत्वे आशुवृत्तितया मनोयोगव द्युगपद्यस्याति: स्यात्तदाको
दोष इति एवच काययोगैकत्वे सत्यौदारिकादिकाययोगाहृतमनोद्रव्यवाग्द्रव्यसाचिव्यजातजीवव्यापाररूपत्वा न्मनोयोग वाग्योगयो रेककाययोगपूर्वकत
यापि प्रागुक्तमेकत्व मवसेयमिति अथचेदमेव वचनमात्रप्रमाण माज्ञाग्राह्यत्वादस्य यतः आणागभ्भोअत्थो आणाएचेवसोकहेयव्वो दिट्ठतादिट्ठतिय क
हणविहिविराहणाइयरत्ति ॥ १ ॥ दृष्टात दार्ष्टांतिकोऽर्थइत्यर्थः ननुसामान्याश्रयैकत्वे नैव सूत्रगमक भविष्यतीति किमनेन विशेषव्याख्यानेनेति उ
तेणे समये कायानो व्यापार १ छे देवता असुर मनुष्यने। तेणे तेणेसमये देवता असुर मनुष्यने उत्थान चेष्टा विशेष कर्म भ्रमणादि क्रिया बल शरीर सा

च्यते नैव सामान्यैकत्वे ऽस्य पूर्वसूत्रैरेवा भिहितत्वा दस्य पुनरुक्तत्वप्रसंगा द्देवादिग्रहणं समयग्रहणयोश्च वैयर्थ्यप्रसंगान्नेति इहच देवादिग्रहणं विशिष्टवै
क्रियलब्धिसंपन्नतयैषा मनेकशरीररचने सत्येकदा मनोयोगादीना मनेकत्वं शरीरवद्भविष्यतीति प्रतिपत्तिनिरासार्थं ननु तिर्यग्नारकाणा व्यवच्छेदार्थं
ननु तिर्यग्नारकाअपि वैक्रियलब्धिमत स्तेषामपि विक्रियाया शरीरानेकत्वेन मनः प्रभृतीना मनेकत्वप्रतिपत्तिः संभाव्यत एवेति तद्ग्रहणमपि न्याय्य
मिति सत्य किंतु देवादीना विशिष्टतरलब्धितया शरीराणा मल्पतानेकतेति तद्ग्रहण तथा प्रधानग्रहणे इतरग्रहण भवतीति न्यायाददोष नारकादिभ्यश्च
देवादीना प्रधानत्व प्रतीत मेवेति एतेषांच मनः प्रभृतीना यथाप्राधान्यकृत क्रमः प्रधानत्वंच बह्वल्पाल्पतरकर्म्मक्षयोपशमप्रभवत्वाभकृत मिति ॥ कायव्या
यामस्यैव भेदाना मेकतामाह ॥ एगेउट्ठाणेइत्यादि ॥ उत्थानच चेष्टाविशेषः कर्मच भ्रमणादि क्रिया बलच शरीरसामर्थ्य वीर्यच जीवप्रभव पुरुषकारश्चा
भिमानविशेषः पराक्रमश्च पुरुषकारएव निष्पादितस्वविषयइतिविग्रहे द्वंद्वैकवद्भाव एतेच वीर्यान्तरायक्षयक्षयोपशमसमनुगाजीवपरिणामविशेषा एतेषु प्रत्ये
कशब्दो योजनीयो वीर्यान्तरायक्षयक्षयोपशमवैचित्र्यत प्रत्येक जघन्यादिभेदै रनेकत्वे प्येषा मेकजीवस्यैकदा क्षयक्षयोपशमसात्राया एकविधत्वा देक
एव जघन्यादि रेतद्विशेषो भवति कारणमात्राधीनत्वा त्कार्यमात्राया इति सूत्रभावार्थः शेषस्माग्वदिति ॥ पराक्रमादेव ज्ञानादिमोक्षमार्गो ऽवाप्यते यत
आह अब्भुट्ठाणेविणए परक्कमेसाहुसेवणाएय सम्मद्दंसणलंभो विरयाविरईएविरईएत्ति ॥ १ ॥ अतो ज्ञानादीना निरूपणार्थ माह । एगेनाणेइत्यादि । अ

देवासुरमणुयाण तंसि तंसिसमयंसि एगेउट्ठाणकम्मबल वीरियपुरिसक्कारपरक्कमे देवासुरमणुयाणं तंसितंसि

म र्थ्य वीर्य जीवप्रभव पुरुषात्कार अहं कार विशेष पराक्रम अहंकारथी उपनो स्वविषय एतला १ छे एकें समये थाय । १ ज्ञानछे केवल ज्ञानावरणना

॥

थवा धर्मप्रतिमाप्रागुदिता साच ज्ञानादिस्वभावेति ज्ञानादीन्निरूपयन्नाह । एगेनाणेइत्यादि। सूत्रत्रयं ज्ञायन्ते परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेनास्मिन्नस्माद्वेति ज्ञानं ज्ञानदर्शनावरणयोः क्षयः क्षयोपशमोवा ज्ञाति र्वा ज्ञान मावरणद्वयक्षयाद्याविर्भूत आत्मपर्यायविशेषः सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि विशेषांशग्रहणप्रवणः सामान्यांशग्राहकश्च ज्ञानपञ्चकाज्ञानत्रयदर्शनचतुष्टयरूप स्तच्चानेकमप्यत्रबोधसामान्यादेक मुपयोगापेक्षया वा तथाहि लब्धितो बहूना म्बोधविशेषाणा मेकदास्य भवे प्युपयोगत एकएव सम्भव त्येकोपयोगत्वात् जीवानामिति ननु दर्शनस्य ज्ञानव्यपदेश्यत्वमयुक्त म्विषयभेदा दुक्तञ्च जंसामन्नगहणं दंसणमेयंविसेसियंणा णंति अत्रोच्यत ईहावग्रहौहि दर्शनं सामान्यग्राहकत्वा दपायधारणेच ज्ञान म्विशेषग्राहकत्वा दथवो भयमपि ज्ञानग्रहणेन गृहीत मागमे आभिणिबो हियनाणे अट्ठावीसइवतिपयडीओत्ति वचना त्तस्मा दवबोधसामान्या द्दर्शनस्यापि ज्ञानव्यपदेश्यत्व मविरुद्ध मिति ननु दर्शनपृथगेवोपात्तमुत्तरसूत्रे तत्किमिह ज्ञानशब्देन दर्शनमपि व्यपदिष्ट मित्यत्रोच्यते तत्रहि दर्शनं श्रद्धान विवक्षित ज्ञानादित्रयस्य सम्यक्शब्दलाञ्छितत्वे सति मोक्षमार्गत्वेन विवक्षितत्वात् मोक्षमार्गभूतं चैतत्त्वश्रद्धानपर्यायेणैव दर्शनेनसहेति । दंसणेत्ति । दृश्यन्ते श्रद्धीयते पदार्था अनेनास्मादस्मिन्वेतिदर्शनं दर्शनमोहनीयस्य क्षयः क्षयोपशमो वा दृष्टिर्वा दर्शनं न्दर्शनमोहनीयक्षयाद्याविर्भूत स्तत्वश्रद्धानरूप आत्मपरिणाम स्तच्चोपाधिभेदा दनेकविधमपि श्रद्धानसाम्यादेक एकजीवस्य चैकदा एकस्यैव भावादिति नन्ववबोधसामान्यात् ज्ञानसम्यक्तयोः कः प्रतिविशेष उच्यते रुचिः सम्यक्तं रुचिकारणन्तु ज्ञानं यथोक्तं नाणमवायधिईयो द ॥

॥ समयंसि एगेनाणे एगेदंसणे ॥

अर्थ ।सामान्य आणि ते दर्शन १ छे केवल दर्शनावरणनाक्षयथी ॥

सणमिउजह्योगहिहाओ तहतत्तरुईसम्मं रीतिज्जइजेणतंनाणं॥ १ ॥ चरित्तेत्ति॥ चर्य्यतेमुमुक्षुभि रासेव्यते तदिति चर्य्यतेवा गम्यते अनेन निर्वृत्ताविति चारित्रं अथवा चयस्य कर्म्मणा रिक्तीकरणा च्चरित्र निरुक्तन्यायाद् दिति चारित्रमोहनीयक्षयाद्याविर्भूत आत्मनो विरतिरूपः परिणाम इति तदेक वक्ष्यमाणाना सामायिकादितद्भेदाना विरतिसामान्यातर्भावा देकस्य चैकदा भावादेति एतेषाञ्च ज्ञानादीना मयमेवक्रमो यतो नाज्ञात श्रद्धीयते नाश्रद्धित सम्यगनुष्ठी यत इति ज्ञानादीनिह्युत्पत्तिविगतिस्थितिमति स्थितिश्च समयादिकेति समयप्ररूपयन्नाह । एगेसमये । समयः परमनिकृष्टकाल उत्पलपत्रशतव्यतिभेदद्द ष्टान्ताज्जरत्पटशाटिकापाटनदृष्टान्ताद्वा समयप्रसिद्धा दवबोद्धव्यः सचैकएव वर्त्तमानस्वरूपो तीतानागतयो विंनष्टानुत्पन्नत्वेना भावात् अथवा सावेकः स्वरूपेण निरंशत्वा दिति निरंशवस्त्वधिकारा देवेद सूत्रद्वयमाह ॥ एगेपएसे ॥ एगेपरमाणू ॥ प्रकृष्टो निरंशो धर्म्माधर्म्माकाशजीवानां देशो ऽवयवविशे षः प्रदेशः सचैकः स्वरूपतः सद्वितीयत्वादौ देशव्यपदेशत्वेन प्रदेशत्वाभावप्रसङ्गादिति ॥ परमाणुत्ति ॥ परमश्चासा वात्यन्तिको ऽणुश्च सूक्ष्मः परमाणुः द्व्यणुकादिस्कन्धानां कारणभूतः आहच कारणमेवतदन्त्य सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः एकरसवर्णगन्धो द्विस्पर्शःकार्यलिङ्गश्चेति ॥ १ ॥ सच स्वरूपतः एकएवा न्यथा परमाणुरेवासौ नस्यादिति अथवा समयादीना मप्येकमनन्ताना मपि तुल्यरूपापेक्षयैकत्वमिति ॥ यथा परमाणो स्तथाविधैकत्वपरिणा

॥ एगेचरित्ते एगेसमए एगेपएसे एगेपरमाणु ॥

सामान्यवोले १ चारित्रछे सर्वविरति देशविरति रूप । समय कालविशेष एक एहमा वीजोभेदनथो समयथी सूक्ष्म कालमान नथी । धर्मास्तिकायादि कनो अवयवते प्रदेश एकछे तेनो बीजोभाग नथाय । १ परमाणु पुद्गल १ नां बे भाग न थाय ॥ ॥ ॥

मविशेषा देकत्व भवति ततएव अनन्ताणुमयस्कंधस्यापि स्या दितिदर्शयन् सकलबादरस्कन्धप्रधानभूत मीषत्प्राग्भाराभिधानपृथ्वीस्कंधं प्ररूपयन्नाह ॥ ॥ ८
एगासिद्धी ॥ सिद्ध्यन्ति कृतार्था भवन्ति यस्यांसा सिद्धिःसाच यद्यपि लोकाग्रं यतप्राह इहबुदींचइत्ताण तत्थगंतूणसिज्झइत्ति तथापि तत् प्रत्यासत्त्येषत्
प्राग्भारापि तथाव्यपदिश्यते आहच बारसहिंजोयणेहिं सिद्धीसव्वट्ठसिद्धाओत्ति यद्दिवा लोकाग्रमेव सिद्धिः स्या त्तदा कथमेतदनन्तरमुक्तं निम्मलदग
रयवन्ना तुसारगोक्खीरहारसरिवन्ने त्यादि तत्स्वरूपवर्णनं घटते लोकाग्रस्या मूर्त्तत्वादिति तस्मा दीषत्प्राग्भारासिद्धि रिहोच्यते साचैका द्रव्यार्थतया पञ्च
चत्वारिंश द्योजनलक्षप्रमाणस्कन्धस्यैकपरिमाणत्वा त्पर्यायार्थतयात्वनन्ता अथवा कृतकृत्यत्वं लोकाग्रमणिमादिकावा सिद्धिरेकत्वञ्च सामान्यत इति ॥
सिद्धे रनतर सिद्धिमतमाह ॥ एगेसिद्धे ॥ सिद्धातिस्म कृतकृत्योभवेत् सेधतिवा स्माऽगच्छ दपुनरावृत्या लोकाग्र मितिसिद्ध सितं वा बद्धंकर्म्म ध्मात दग्ध य
स्य स निरुक्तात्सिद्धः कर्म्मप्रपचनिर्मुक्तः सचैको द्रव्यार्थतया पर्यायार्थत स्त्वनंतपर्याय इति अथवा सिद्धाना मनंतत्वेपि तत्कालगता देकत्वं अथवा कर्म्मशिल्प
विद्यामंत्रयोगागमार्थयात्राबुद्धितपः कर्म्मक्षयभेदेना नेकत्वे प्यस्यैकत्व सिद्धशब्दाभिधेयत्वसाम्यादिति ॥ कर्म्मक्षयसिद्धस्यच परिनिर्वाणधर्म्मोभवतीति तदा
॥ एगेपरिनिव्वाणे ॥ परिसमता न्निर्वातीति निर्वाण सकलकर्म्मकृतविकारनिराकरणतः स्वस्थीभवन परिनिर्वाणं तदेकमेकदा तस्य संभवे पुनरभावा दि
ति ॥ परिनिर्वाणधर्म्मयोगात् सएवकर्म्मक्षयसिद्धः परिनिर्वृत उच्यते इति तद्दर्शनायाह ॥ एगेपरिनिव्वुए ॥ परिनिर्वृतः सर्वतः शारीरमानसास्वास्थ्यविरहित

॥ एगासिद्धी एगेसिद्धे एगेपरिनिव्वाणे एगेपरिनिव्वुए ॥

१ सिद्धशिला ४५ लाखयोजन प्रमाणे छे । एक सिद्धछे सहुसरीखा माटे । सकल दुःखनाक्षयथी सुखनो थावो वली दुःख न आवे तेमाटे १ छे

इतिभावः तदेकत्वं सिद्धस्येव भावनीयमिति ॥ तदेतावता ग्रंथेनैते प्रायो जीवधर्म्माएकतयानिरूपिताः इदानीं जीवोपग्राहकत्वा त्पुद्गलानां तल्लक्षणा जीवधर्म्मा ॥ एगेसद्देइत्यादिना जाव लुक्खे इत्येतदतेन ग्रन्थेनैकतयैव दृश्यंते ॥ पुद्गलानांतु सत्ता केषांचिदनुमानतो ऽवसीयते घटादिकार्योपलब्धेः केषांचि त्सांव्यवहारिकप्रत्यक्षत इति तत्र शब्दादिसूत्राणि सुगमानि नवरं शब्द्यते अभिधीयतेनेनेति शब्दो ध्वनिः श्रोत्रेंद्रिय विषयः । रूप्यते अवलोक्यत इति रूप माकार श्चक्षुर्विषयः । घ्रायते सिंघ्यते इति गंधो घ्राण विषयः । रस्यते आस्वाद्यत इति रसः रसनेंद्रियविषयः स्पृश्यते छुप्यत इतिस्पर्शः स्पर्शनकरणविष यः । शब्दादीनां चैकत्व सामान्यतः सजातीयविजातीयव्यावृत्तरूपापेक्षयावा भावनीय शब्दभेदावाह सुब्भिसद्देत्ति ॥ शुभशब्दो मनोज्ञइत्यर्थः ॥ दुब्भि त्ति॥ अशुभः मनोज्ञो यो न भवतोति एवच शब्दान्त र मन्तान्तर्भूत मवसेय मेव रूपव्याख्यानेपि सुरूपादयश्चतुर्द्दश शुक्लान्ता रूपभेदा स्तत्र सुरूप मनोज्ञरूप मितर द्दूरूपमिति दीर्घमायत ह्रस्वन्तदितर वृत्तादयः पचस्त्वथसस्थानभेदा स्तत्र वृत्तसस्थानमोदकवत् तच्चघनप्रतरभेदाद्विधा पुनः प्रत्येक समविषमप्रदेशावगाढ मितिचतुर्द्धा एवशेषाण्यपि ॥ तसेत्ति॥ तिस्रो स्रयः कोटयो यस्मिं स्तत्'त्र्यस्र त्रिकोणं ॥ चउरंसेत्ति ॥ चतस्रो स्रयो यस्य तत्तथा चतुष्कोण मित्यर्थः ॥ तथा

एगेसद्दे एगेरूवे एगेगंधे एगेरसे एगेफासे एगेसुब्भिसद्दे एगेदुब्भिसद्दे एगेसुरूवे एगेदुरूवे एगेदीहे एगेरहस्से

सर्वं प्रकारे शारीर मानसीदुखनो रहित पणुं ते मोक्षएकछे । शब्द काननो विषयते एकछे । नेत्रनो विषयरूप शरीरनो आकार तेएकछे । नासिकानो पिषय गन्ध तेएकछे । जीभनो विषय रसते एकछे । फरस एकछे आठे भली नामथी कायानो विषय । एक भलो शब्द । एक खोटो कठिनशब्द । एक भ लोरूप । एक खोटोरूप । एक दीर्घ संस्थान । एक लघु सस्थान । एक वृत संस्थान लाडुवा जेहवो । एक त्रिखूणियो सिंघाडाने आकारें । एक चोखूणियो

पिहुलेत्ति॥ पृथुलंविस्तीर्णं मन्यत्र पुन रिहस्थाने आयत मभिधीयते तदेवचेहदीर्घंह्रस्वपृथुनशब्दे विंभज्योक्तमायतधर्म्मला देषां तचायत प्रतरघनश्रेणिभेदा त्रिधा पुन रेकैकं समविषमप्रदेश मिति षोढा यथा यतभेदयो रपि ह्रस्वदीर्घयो रादा वभिधान तद्वृत्तादिषु संस्थानेष्वायतस्यप्रायो वृत्तिदर्शनार्थं तथाहि दीर्घायत: स्तभो वृत्त स्तास्र चतुरस्र शैलादिभावनीय विचित्रत्वा द्वा सूत्रगतेरेवमुपन्यास इति ॥परिमंडलेत्ति॥ परिमंडलसंस्थान वलयाकार प्रतरघनभे दा द्विविध मिति रूपभेदो वर्णः सचकृष्णादि'पंचधा प्रतीतएव नवर हारिद्र: पीत' कपिशादयस्तु ससर्गजा इति नतेषामुपन्यास. ॥ गधोद्वेधा सुरभिश्च दुरभिश्च तत्र सौमुख्यकृत्सुरभि र्वैमुख्यकृद्दुरभि: साधारणपरिणामो ऽस्येष्टो दुर्यहइति ससर्गजत्वादेवनोक्त: रस. पञ्चधा तत्र श्लेष्मनाशकृत्तिक्त: १ ॥ वैशद्य च्छेदनकृत्कटुका: २ ॥ अन्नरुचिस्तम्भनकृ त्कषाय: ३ ॥ आश्रवणक्लेदनकृ दम्ल. ४ ॥ ह्लादनबृंहणकृ न्मधुर: ५ ॥ ससर्गजो लवणइति नोक्त इति स्पर्शोऽ ष्टविध स्तत्र कर्कश: काठिनो ऽनमनलक्षण: । १ । यावत्कारणात् मृद्वादन: षडन्ये तत्र मृदु: सन्नतिलक्षण: । २ । गुरु रधोगमनहेतु' । ३ । लघु. प्रायस्ति र्यगूर्ध्वगमनहेतु: । ४ । शीतो वैशद्यकृत् स्तम्भनस्वभाव: । ५ । उष्णो मार्दवपाककृत् । ६ । स्निग्ध सयोगेसति सयोगिना बन्धकारण । ७ । रूक्ष स्तथैवाबन्ध

एगेवट्टे एगेतंसे एगेचउरंसे एगेपिहुले एगेपरिमंडले एगेकिण्हे एगेनीले एगेलोहिए एगेहालिद्दे एगेसुक्कि ले एगेसुब्भिगंधे एगेदुब्भिगंधे एगेतित्ते एगेकडुए एगेकसाए एगेअंबिले एगेमहुरे एगेकक्खडे जावलुक्खे

एक पृथुल संस्थान विस्तारवंत । एक परिमंडल संस्थान वलयाकारे छाघनी चूडीसरीखो । एक कालोवर्ण । एक नीलोवर्ण । एक रातीवर्ण । एक पी लोवर्ण । एक सपेदवर्ण । अन्य जेवर्णान्तरछे तेससर्गजछे । एक सुगन्धछे । एक दुर्गन्धछे । १ तीखो रसछे । १ कटुक रसछे । १ कषाय रस छे । १ खाटो

कारण मिति। ८। उक्ता: पुद्गलधर्म्माणा मेकते दानींपुद्गलालिङ्गितजीव।प्रशस्तधर्माणा मष्टादशाना मपस्थानकाभिधानानां ॥ एगेपाणाइवाएइत्यादिना ग्रयेन दसणसत्ते इत्येतदंतेन तामेवाह ॥ तत्र प्राणा उच्छ्वासादय: तेषा मतिपातन मायवतासह वियोजन मागातिपातो हिंसेत्यर्थ. उक्तञ्च पञ्चेन्द्रि याणिचिविधवलञ्च। उच्छ्वासनि:श्वासमथान्यदायु: ॥ प्राणादशैतेभगवद्भिरुक्ता। स्तेषांवियोजीकरणन्तुहिंसेति ॥ १ ॥ सच प्राणातिपातो द्रव्यभावभेदा द्विविधो विनाशपरितापसङ्क्लेशभेदात् त्रिविधोवा आहच तप्पज्जायविणासो दुक्खुप्पाओयसकिलेसोय एसवहोजिणभणिओ वज्जेयव्वोपयत्तेणति ॥ १ ॥ अथवा मनोवाक्कायै: करणकारणानुमतिभेदा न्नवधा पुन: सक्रोधादिभेदात् षड्त्रिंशद्विधोवेति । १ । तथामृषा मिथ्या वदन वादो मृषावाद' सच द्रव्यभा वभेदाद्विधा अभूतोद्भावनादिभि श्चतुर्द्धा वा तथाहि अभूतोद्भावनं यथा सर्वगत' आत्मा। भूतनिह्नवो यथा नास्त्यात्मा। दस्त्वन्तरन्यासो यथा गौरयिसश्व श्वोयमिति। निन्दाच यथा कुष्टीत्वमसीति। २। तथा अदत्तस्य स्वामिजीवतीर्थंकरगुरुभि रवितोर्णस्या ननुज्ञातस्य सचित्ताचित्तमिश्रभेदस्य वस्तुन: आदा नं ग्रहण मदत्तादान चौर्यमित्यर्थ: तच्च विविधोपाधिवशा दनेकविध मिति। ३। तथा मिथुनस्य स्त्रीपुंसलक्षणस्य कर्म्म मैथुन मब्रह्म तन्मनोवाक्कायाना कृतकारितानुमतिभि रौदारिकवैक्रियशरीरविषयाभि रष्टादशधा विविधोपाधितो बहुविधतरञ्चेति। ४। तथा परिगृह्यते स्वीक्रियते इतिपरिग्रह: बा ह्याभ्यन्तरभेदा द्विधा तत्र बाह्यो धर्मसाधनव्यतिरेकेण धनधान्यादि रनेकधा आभ्यन्तरस्तु मिथ्यात्वाविरतिकषायप्रमादादि रनेकधा परिगृहण वा

॥ एगेपाणातिवाए जावएगेपरिग्गहे ॥

रसछे। १ मींठो रसछे। १ कठिन फरसछे । यावत् १ लूखो फरसछे। १ प्राणातिपात हिंसाछे। यावत् १ परिग्रहछे। १ क्रोध १ मान १ मायाकपट

परिग्रहो मूर्छेत्यर्थः । ५ । तथा क्रोधमानमायालोभाः कषायाःमोहनीयकर्मपुद्गलोदयसम्पाद्यजीवपरिणामा इति एतेचानंतानुबन्धादिभेदतो ऽसंख्याता ध्यवसायस्थानभेदतो वा बहुविधाः । ८ । तथा ॥ पेज्जत्ति॥ प्रियस्य भावः कर्मवा प्रेम तच्चानभिव्यक्तमायालोभलक्षणभेदस्वभाव मभिष्वङ्गमात्रमिति । १० । तथा ॥ दोसोत्ति ॥ द्वेषणद्वेषः दूषणवा दोषः सचानभिव्यक्तक्रोधमानलक्षणभेदस्वभावो ऽप्रीतिमात्रमिति । ११ । जावत्ति । कलहेऽभक्खाणे पेसुन्ने इत्यर्थः तत्र कलहो राटी । १२ । अभ्याख्यानं प्रकट मसद्दोषारोपणं । १३ । पैशून्य म्पिशुनकर्म प्रच्छन्नसदसद्दोषाविर्भावनं । १४ । परेषां परिवादः पर परिवादो विकत्थन मित्यर्थः । १५ । अरतिश्च तन्मोहनीयोदयज श्चित्तविकार उद्वेगलक्षणो रतिश्च तथाविधानन्दरूपा अ[illegible]तिरत्येकमेव विवक्षित यतः क्वचनविषये या रति स्तामेव विषयान्तरापेक्षया अरतिं व्यपदिशन्त्येव मरतिमेव रतिमित्यौपचारिक मेकत्व मनयो रस्तीति । १६ । तथामायामोसत्ति । मायाच निकृति र्मृषाच मिथ्यावादो माययावा सह मृषा मायामृषा प्राकृतत्वा न्मायामोसं दोषद्वययोगः इदञ्च मानमृषादिसंयोगदोषोपलक्षणं वेषान्त रकारणेन लोकप्रतारणमित्यन्ये प्रेमादीनिच बहुविधानि विषयभेदेना ध्यवसायस्थानभेदतो वा । १७ । मिथ्यादर्शनं विपर्यस्ता दृष्टि स्तदेवतोमरादिशल्य मिव शल्यं दुःखहेतुत्वात् मिथ्यादर्शनशल्यमिति मिथ्यादर्शनस्य पञ्चधा आभिग्राहिकानाभिग्राहिकाभिनिवेशिकानाभोगिकसांशयिकभेदा दुपाधिभेदतो

एगेकोहे जावलोभे एगेपेज्जे एगेदोसे जावएगेपरपरिवाए एगाअरतिरति एगेमायामोसे एगेमिच्छादंसण

यावत् १ लोभछे। १ रागछे प्रेम । १ दोषछे द्वेष । यावत् शब्दे कलह अभ्याख्यान खोटो आल पैशून्य चाडी परपरिवाद निंदाछे। १ अरति ते उद्वेग १ १ रति ते आनन्द हर्षछे। १ मायामृषा जे कपट खोटो बोलवो। १ मिथ्यात्व दर्शन शल्यनी परें दुखदायी मिथ्यात्वछे ते १८ पापस्थानक । १ जीव

बहुतरभेदंचेति । १८ । एतेषाञ्च प्राणातिपातादीना मुक्तक्रमेणा नेकविधत्वेपि वधादिसाम्या देकत्व मवगन्तव्य मिति उक्ता न्यष्टादश पापस्थानानी दा नीं तद्विपचाणा मेव ॥ एगेपाणाइवायवेरमणेइत्यादिभि ॥ रष्टादशभि' सूत्रै रेकतामाह सुगमानिचैतानि नवर विरमण विरति स्तथा विवेकस्त्याग इति उक्तं सपुद्गलजीवद्रव्यधर्माणा मेकत्व मिदानीं कालस्य स्थितिरूपत्वेन तद्धर्मत्वात्तद्विशेषाणां ॥ एगाओसप्पिणीत्यादिना सुसमसुसमेत्येतदंतेनै तदेवा ह ॥ अथ कालएव कथ मवसीयत इतिचे दुच्यते बकुलचम्पकाशोकादिपुष्पप्रदानस्यनियमेन दर्शनात् नियामकश्च कालइति तत्र ॥ ओसप्पिणित्ति ॥ अवस र्पति हीयमानारकतया अवसर्प्पयतिवा ऽऽयुष्कशरीरादिभावान् हापयती त्यवसर्प्पिणी सागरोपमकोटाकोटी दशकप्रमाण: कालविशेष: सुष्टुसमा सुसमा अत्यन्तं सुसमा सुसमसुसमा अत्यन्तसुखस्वरूपा अस्याएव प्रथमारकइति एकत्वचावसर्प्पिण्या: स्वरूपेणै कत्वा देव सर्वत्र यावदिति सीमोपदर्शनार्थस्त तश्च सुसमसुसमेत्यादिसूत्र स्थानान्तरप्रसिद्धं तावदध्येय मिह ॥ जावदूसमदूसमेत्ति ॥ पदमित्यतिदेशो ऽयच सूत्रलाघवार्थं मित्येवं सर्वत्र यावदितिव्याख्येय

सव्वे एगेपाणाइवायवेरमणे जावपरिग्गहवेरमणे एगेकोहविवेगे जाव मि
च्छादसणसल्लविवेगे एगाउसप्पिणी एगासुसमसुसमा जावएगादुसमदुसमा

हिंसाथी विरमवो हिंसानो छांडिवो । यावत् मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रहनो छांडिवो। १ क्रोधनो त्याग यावत्एमज १८ बोल लेवा । मिथ्यात्व त्याग ते सम्यक्त । १ उत्सर्प्पिणी काल जिहा आऊखा प्रमुखभाव चढता होय । वली जिहां हीन भाव होय ते अवसर्पिणी काल । एकेकनामे १ सुसमसु समाकाल पहिलो आरो । १ दुसमदसमाकाल छठो आरो । १ नारकीनो वर्गणा । ७ नरकगत जीवने नारकी कहिये एतले नारकीनो समुदाय । एम १

मतिदेशलव्यानि च पदान्ये कमव्दोपपदान्येतानि॥ एगासुसमा एगासुसमदुसमा एगादुसमसुसमा एगादुसमा एगादुसमदुसमेति ॥ आसां स्वरूप शब्दा नुसारतो ज्ञेय प्रमाण पुन राद्यानां तिसृणा समाना क्रमेण सागरोपमकोटीकोट्य चतु स्त्रि द्वि सख्या चतुर्थ्यास्त्वेका द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्रोना अंत्ययोस्तु प्रत्येक वर्षसहस्राण्येकविंशतिरिति तथाऽवसर्पति वर्द्धते अरकापेक्षया उत्सर्पयति वा भावाना शुभादोन्वर्द्धयतोति उत्सर्पिणी सवसर्पिणीप्रमाणा सुष्टुसमा सुसमा दुःसमाः दुःखरूपा अत्यंतदुःसमादुसमदुसमायावत्करणा देगादुसमा एगादुसमसुसमा एगासुसमदुसमा एगासुसमसुसमेतिद्दृश्य एतत्प्रमाणच पूर्वो क्तमेव नवर विपर्यासादिति कृताजीवपुद्गलकालत्तणद्रव्यविविधधर्म्मविशेषाणा मेकत्वप्ररूपणा ऽधुना ससारिमुक्तजीवपुद्गलद्रव्यविशेषाणां नारकपरमा ण्वादीनां समुदायलक्षणवर्म्मस्य ॥ एगानेरइयाणवग्गणेत्यादिना एगा अजहन्नुक्कोसगुणलक्खाण पोग्गलाण वग्गणे ॥ त्येतदंतेन ग्रथेन तामेवाह । तत्र नेरइया णति निर्गत मविद्यमान अय मिष्टफल कर्म्म येभ्य स्ते निरया स्तेषु भवा नेरयिकाः क्लिष्टसत्वविशेषा स्तेच पृथ्वीप्रस्तटनरकावासस्थितिभव्यत्वादिभेदा द नेकविधा स्तेरा सर्वेषा वर्गणा वर्गः समुदाय स्तस्याश्चैकत्वं सर्वत्र नारकत्वादि पर्यायसाम्यादिति तथा असुराश्च ते नवयोवनतया कुमारा श्चेत्यसुरकुमारा स्तेषा मेकावर्गणेति ॥ चउवीसदंडउत्ति ॥ चतुर्विंशतिपदप्रतिबद्धो दण्डको वाक्यपद्धति श्चतुर्विंशतिदण्डकः सइह वाच्यइतिशेषः सचाय ॥ नेरइया १ असु राई १० पुढवाई ५ वेइन्द्रियादओचेव ४ नर १ वतर १ जोतिसिया १ वेमाणिय १ दंडओएव ॥ १ ॥ भवनपतयो दशधा असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीय

एगाणेरइयाणंवग्गणा एगाअसुरकुमाराणंवग्गणा चउवीसदंडए

असुरकुमार भवनपती १० नी वर्ग्गणा । एम पृथिवी पाणी ५ वेइन्द्रियादि ४ तिर्यंच मनुष्य व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक एम २४ दंडकनी वर्गणा ।

द्दीवउदहीय दिसिपवणथणियनामा दसहाएएभवणवासित्ति ॥ १॥ एतदनुसारेण सूत्राणि वाच्यानि यावच्चतुर्विंशतितम॥ एगाविमाणियाणवग्गणत्ति एष सामान्यदण्डक: ननु नारकसत्तैवदुरुपपादा आस्ता तद्धर्मभूताया वर्गणाया एकत्व मनेकत्व चेति तथाहि नसन्ति नारका स्तत्साधकप्रमाणाभावात् व्योमकुसुमवत् अत्रोच्यते प्रमाणाभावादित्यसिद्धोहेतु स्तत्साधकानुमानसद्भावा त्तथाहि विद्यमानभोक्तृक प्रकृष्टपापकर्म्मफल कर्म्मफलत्वात् पुण्यकर्म्मफलवत् नच तिर्यग्नराएव प्रकृष्टपापफलभुज स्तस्यौदारिकशरीरवता वेदयितु मशक्यत्वा द्विशिष्टसुरजन्मनिवन्धनप्रकृष्टपुण्यफलवत् आहच पावफलस्स पगिठ्ठ स्सभोइणोकम्मओवसेसव्वं सतिधुवंतेभिमया नेरइयाअहमईहोज्जा ॥ १ ॥ अच्चत्थदुक्खियाजे तिरियनरानारगत्तितंभिमया तनजओसुरसोक्ख प्पगरिससरिसनतदुक्खति ॥ २ ॥ ओवसेसव्वत्ति ॥ यथा नारकेभ्यो अन्ये तिर्यग्नरा इत्यर्थ अथ सुराणामपि विवादास्पदीभूतत्वा द्विशिष्टस्रजन्मनिवन्धनप्रकृष्टपुण्यफलत्व दित्यसिद्धोदृष्टान्त: अत्रोच्यते देवइति सार्थकम्पद व्युत्पत्तिम च्छुद्धपदत्वात् घटाभिधानव दिति तत: सन्ति देवा इतिप्रत्येतव्य मथ मनुष्ये ए गुणर्द्धि सम्पन्नेना र्थवद्भविष्यति देवपदमिति न विवक्षितदेवसिद्धि रिति अत्रोच्यते यदिद नरविशेषे देवत्व न्तदौपचारिक मुपचारश्चा र्थसिद्धौ सत्या भवति यथा निरुपचरितसिंहसद्भावे माणवके सिंहोपचार इति आहच देवत्तिसत्थयमिद सुद्धत्तणओघडाभिहाणच अहवमईमणुओच्चिय देवोगुणरिद्धिसपन्नो ॥ १ ॥ तन्नजओतच्चत्थे सिद्धेउवयारओमयासिद्धी तच्चत्थसीहसिद्धे माणवसीहोवयारोव्वत्ति ॥ २ ॥ अपिच देवेसुनसदेहो जुत्तोजंजोइसास

जावएगावेमाणियाणंवग्गणा एगाभवसिद्धियाणवग्गणा एगाअभवसिद्धियाणंवग्गणा एगाभवसिद्धियाणंणे

वैमानिक देवतालगे नामथी एकेक बोलजाणिवो । एकनामें घणानो समुदाय ते वर्गणा । एक भव्यजीवनी वर्गणाछे । जे अनंतभवे पणिमोक्षजास्ये

पच्चक्खं दीसंतितक्कयाचिय उववायाणुग्गहोजगओ ॥ १ ॥ आलयमेत्तंचमई पुरंचतव्वासिणीतहविसिद्धा जेतेदेवत्तिमया नयनिलयानिच्चपडिसुन्ना ॥२॥
कोजाणइ्वकिमेय तिह्योज्जनिस्संसयाविमाणाइं रयणमयनभोगमणा दिहजहविज्जाहराईणं ॥ १ ॥ तेषा मसुरादिविशेषः पुन राप्तवचना दवसेयइति
अथपृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायिकाः कथमिवजोवत्वेन प्रतिपत्तव्या उच्छ्वासादिप्राणिधर्म्माणा तेष्वप्रतोयमानत्वा दित्यत्रोच्यते आप्तवचनादनुमानतश्च
तत्राप्तवचन मिदमेवा नुमानत्विद वनस्पतयो विद्रुमलवणोपलादयश्च स्वाश्रये वर्त्तमानाः सात्मकाः समानजातीयांकुरसद्भावादर्शोविकाराङ्कुरवत्
आहच मंसङ्कुरुव्वसमाण जाईरूवंकुरोवलभाओ तरुगणविद्दुमलवणो वलादयोसासयावत्थुत्ति ॥ १ ॥ इह समानजातिगृहण शृङ्गाङ्कुरव्यवच्छेदार्थं सह्निन
समानजातीयोभवतीति ॥ तथा सात्मक मभो भोम भूमिखनने स्वाभाविकसभवा द्दर्दुरवत् अथवा सात्मक मतरीचोदक स्वभावतो व्योमसभूतस्यपातात्
मत्स्यवत् आहच भूमिक्खयसाभाविय सभववोदद्दुरोव्वजलमुत्त [सात्मकत्वेनेति] अहवामच्छोव्वसहा ववोमसभूयपायाओत्ति ॥ १ ॥ तथा सात्मको
वायु रपरप्रेरित तिर्यगनियमितदिग्गतित्वा द्गोवत् ॥ इहषा परप्रेरित गृहणेन लेष्टादिना व्यभिचारः परिहृतः एव तिर्यग्गृहणेनो र्द्धगतिना धूमेन अनि
यमितगृहणेनच नियतगतिना परमाणुनेति तथा तेजः सात्मक माहारोपादाना त्तद्दृद्धिविशेषोपलब्धेः तद्विकारदर्शनाच्च पुरुषव दाहच अपरप्पेरिय
तिरिया नियमियदिग्गमणओनिलोगोव्व अनलोआहाराओ विद्धिविगारोवलभावोत्ति ॥ १ ॥ अथवा पृथिव्यप्तेजोवायवो जोवशरोराणि अभ्रविकार
वर्जित मूर्त्त जातीयत्वात् गवादि शरीर वदिति अभ्रादिविकारोहि मूर्त्तजातीयत्वे सत्यपि न जीवतनव स्तेन तत्परिहारो हेतुविशेषणमाह तणवोप
भाइविगा रसुत्तजाइत्तऊणिलताइं [भूतानीतिप्रक्रमः] सत्यासत्थहयाउणि जीवसजोवरूवावोत्ति ॥ १ ॥ वनस्पतीनां विशेषेण सचेतनत्व भाष्यगाथाभि
रभिधीयते जम्मजराजीवणमरण रोहणाहारदोहलामयवो रोगतिगिच्छाईहिय गोरिव्वसचेयणातरवो ॥ १ ॥ छिक्कप्परोइयाछिक्क मेत्तसकोयवोकुलिंगिव्व

आसयसंचाराओ वियत्तवल्लीवियाणाइं २ ॥ वियत्तत्ति॥ गणधरामंत्रण मिति सम्मादयोवसप्पा यबोहसंकोयणादियोभिमया वउलादयोयसद्दा इविसयका लोवलभावोत्ति ॥ सम्मादयोत्ति शम्यादय: विसयकालोवलभावोत्ति विषयानां गीतसुरागडूषकामिनीचरणताडनादीनां कालोवसतादिरिति ॥ एगाभव सिद्धिइत्यादि ॥ भविष्यतीति भवा भावना सा सिद्धिर्निर्वृत्ति र्येषातेभवसिद्धिका भव्यास्तद्विपरीतास्त्वभवसिद्धिका अभव्या इत्यर्थ: ननुजीवत्वे समानेसति को भव्याभव्ययो र्विशेष उच्यते स्वभावक्ततो द्रव्यत्वेन समानयो र्जीवनभसो र्विवाहच दव्वाइत्तेतुल्ले जीवणभाणसभाववी भेओ जीवाजीवाइमयोजहत हभव्वेयरविसेसोत्ति ॥ १ ॥ आभ्यांविशेषितो न्यो दडक. २ ॥ एगासम्मदिट्ठियाणमित्यादि॥ सम्यगविपरीताद्दष्टि र्दर्शनरुचि स्तत्वानिप्रति येषाते सम्यग्द

रइयाणंवग्गणा एगाअभवसिद्धियाणं णेरइआणंवग्गणा एवंजाव एगाभवसिद्धियाणं वेमाणियाण वग्गणा एगाअभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा एगासम्मदिट्ठियाणं वग्गणा एगामिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा एगा

ते भव सिद्धिया जीवनो समुदाय एक कहिये । एक अभव सिद्धिया जीवनी वर्गणा छे । जे अनंत भवे मोक्ष नही जास्ये ते अभवसिद्धिया कहिये । एक भवसिद्धिया नारकीनी वर्गणाछे । जेनरकमां भव्यजीवछे तेहनो समुदाय । एक अभव्यनारकीनी वर्गणाछे एम जावचोवीस दंडक कहिवा । एक भवसिद्धिया वैमानिक देवतानी वर्गणाछे । एक अभव्य वैमानिक देवतानी वर्गणाछे । जे मोक्ष नथी पामे तेहने अभव्य कहिये । एक सम्यग् दृष्टी जीव नी वर्गणाछे जे मिथ्यात्वमोहनी कर्मना क्षयोपशमथी भगवानना वचन सांचाकरी जाणे छे ते सम्यग् दृष्टी कहिवा । एक मिथ्यादृष्टी जीवनी वर्ग णाछे जे भगवंतना वचनथी विपरीत करणीना करनार । एक सम्यग्दृष्टी जीवनी वर्गणा जेहने भगवंतना वचन ऊपरि रागपणि नथी द्वेषपणि न

ष्टिका स्तेच मिथ्यात्व मोहनीयचयक्षयोपशमेभ्यो भवंति तथा मिथ्याविपर्यासवती जिनाभिहितार्थसार्थाश्रद्धानवती दृष्टि दर्शनं श्रद्धानं येषांते मिथ्यादृ
ष्टिका' मिथ्यात्वमोहनीयकर्म्मोदया दरुचितजिनवचना इतिभाव उक्तञ्च सूत्रोक्तस्यैकस्या प्यरोचनादक्षरस्यभवतिनरः मिथ्यादृष्टिःसूत्रं हिनः प्रमाणं
जिनाभिहितमिति ॥१॥ तथा सम्यक्मिथ्याचदृष्टि येषांते सम्यग्मिथ्यादृष्टिका जिनोक्तभावान् प्रत्युदासीनाः इहच गभीरभवोदधिमध्यविपरिवर्त्ती जतु
रनाभोगनिर्वर्त्तितेन गिरिसरिदुपलघोलनकल्पेन यथा प्रवृत्ति करणेन सपादितातः सागरोपम कोटाकोटीस्थितिकस्य मिथ्यात्ववेदनीयस्य कर्म्मणः स्थिते
रन्तर्मुहूर्त्त मुदयक्षणादुपर्यतिक्रम्या पूर्वकरणानिवृत्तिकरणसंज्ञिताभ्या विशुद्धि विशेषाभ्या मन्तर्मुहूर्त्तकालप्रमाण मन्तरकरण करोति तस्मिन् कृते तस्य
कर्म्मणः स्थितिद्वयं भवति अंतरकरणा दधस्तनी प्रथमस्थिति रंतर्मुहूर्त्तमात्रा तस्मादेवोपरितनी शेषा तत्र प्रथमस्थितौ मिथ्यात्वदलिक वेदना दसौमिथ्या
दृष्टि रतर्मुहूर्त्तेनतु तस्या मपगतायामन्तरकरणप्रथमसमय एवौपशमिकसम्यक्त्व माप्नोति मिथ्यात्वदलिकवेदनाभावा यथाहि दवानल. पूर्वदग्धेंधनमूष
र वा देशमवाप्यविध्यायति तथा मिथ्यात्ववेदनाग्नि रंतरकरण मवाप्य विध्यायतीति तदेवसम्यक्त्व मौषधविशेषकल्पमासाद्य मदनकोद्रवस्थानीय दर्शन
मोहनीय मशुद्ध कर्म्मत्रिधाभवति अशुद्ध मर्द्धविशुद्ध विशुद्ध श्चेति ३ त्रयाणातेषा पुञ्जानामध्ये यदार्द्ध विशुद्ध. पुञ्जउदेति तदा तदुदयवशा दर्द्ध विशुद्ध
मर्हद्दृष्टतत्वश्रद्धान भवति जीवस्य तेन तदा सौ सम्यग्मिथ्यादृष्टि र्भवति अन्तर्मुहूर्त्त यावत् तत ऊर्द्ध सम्यक्त्वपुञ्ज म्मिथ्यात्वपुञ्जम्वा गच्छतीति सम्यग्मि

सम्मामिच्छदिठियाणंवग्गणा एगासम्मादिठियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगामिच्छादिठियाणं णेरइयाणं वग्ग

यी । एक सम्यग् दृष्टी नारकीनी वर्गणा केतला एक नारकीने धर्म ऊपरि श्रद्धाछे । एक मिथ्याती नारकी नी वर्गणा छे । एक सम्यग् मिथ्याती

थ्यादृष्टि: मिश्रविशेषितो न्योदण्डक स्तत्रच नारकादिष्वेकादशसु पदेषु दर्शनत्रय मस्ति अतउक्त मेव ॥ जावथणिएत्यादि ॥ पृथिव्यादीनां मिथ्यात्व मेवा त स्तेषां तेनैव व्यपदेश: उक्तञ्च ॥ चोद्दसतससेससयामिच्छत्ति ॥ चतुर्दशगुणस्थानवन्त स्त्रसा: स्थावरास्तु मिथ्यादृष्टय एवेत्यर्थ. द्वीन्द्रियादीना मिश्रन्ना स्ति सज्ञिनामेव तद्भावात् तत स्तेषु सम्यग्दृष्टिमिथ्यादृष्टितयैव व्यपदेश: एव ॥ तेइंदियाणविचउरिंदियाणवित्ति ॥ द्वीन्द्रियव द्व्यपदेशद्वयेन वर्गणैकत्व वाच्य पञ्चेंद्रियतिर्यगादीना दर्शनत्रय मप्यस्ति तत स्त्रिधापि तद्व्यपदेशो त एवोक्त ॥ सेसाजहानेरइयत्ति ॥ तथावाच्या इतिशेष. दण्डकपर्यन्तसूत्र पुनरिद ॥

णा एगासम्मामिच्छदिठियाणं णेरइयाणं वग्गणा एवंजावथणियकुमाराणय एगामिच्छदिठियाणं पुढविका इयाणं वग्गणा एवंजाववणस्सइकाइयाणं एगासम्मदिठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा एगामिच्छदिठियाणं वेइंदियाणं वग्गणा एवंतेइंदियाणवि चउरिंदियाणवि सेसा जहानेरइया जाव एगासम्मामिच्छदिठियाणं

नारकीनी वर्गणाछे । एह त्रिण भेद नारकीमा छे । एम जाव स्तनितकुमार लगे दश भवनपती मा एकेक वर्गणा कहिवी । एक मिथ्यादृष्टी पृथि वी कायना जीवनी वर्गणाछे । इम अप तेऊ वायु वनसपती नी एकेक वर्गणा एपाच थावरमा एक मिथ्यातछे । एक सम्यग्दृष्टी बेइंद्रीनी वर्गणा समकित वमतो वेइंद्रीमां आवे । तिवारे उपजती वेला सास्वादन गुणठाणो छ आवली प्रमाणे होय तेसम्यक्त कहिये । एक मिथ्या दृष्टी वेइंद्री नी वर्गणा वेइंद्री मां मिश्रपणो न होय समकित वमीने मिथ्याती थायछे । एम तेइंद्री नी वर्गणा समकितीनी मिथ्यात्वीनी एम चौरिंद्रीनी एक व र्गणा । वोजा जिम नारकी कहिआव्या तिम जाणिवा । समकित मिथ्यात्व मिश्र ए तीन भेदनी एकेकी वर्गणा जाणजो । गर्भज तिर्यच मनुष्य व्यं

एगासम्मदिट्ठियाणवेमाणियाणवग्गणा एवंमिच्छदिट्ठियाण एव सम्ममिच्छदिट्ठियाणं एतत्पर्यन्तमाह जावएगासम्ममिच्छेत्यादि ॥ एगाकिण्हपक्खियाण इत्यादि ॥ कृष्णपाक्षिकेतरयो लक्षण ॥ जेसिमवड्ढोपोग्गल परियट्टोसेसओउससारो ॥ तेसुक्कपक्खियाखलु अहिएपुणकिण्हपक्खिओत्ति ॥ १ ॥ एतद्विशेषितो ऽन्यो दण्डक: ४ ॥ एगाकिण्हलेसाणमित्यादि ॥ लिश्यते प्राणी कर्मणा यया सा लेश्या यदाह श्लेषद्रववर्णबन्धस्य कर्मबन्धस्थितिविधात्य: तथा कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात् परिणामोयआत्मन: ॥ स्फटिकस्येवतत्राय लेश्याशब्द:प्रयुज्यतेइति ॥ १ ॥ इयञ्च शरीरनामकर्मपरिणतिरूपा योगपरिणतिरूपत्वात् योगस्यच शरीरनामकर्मपरिणतिविशेषत्वात् यतउक्त ॥ प्रज्ञापनावृत्तिकृता ॥ योगपरिणामो लेश्या: कथपुनर्योगपरिणामो लेश्या यस्मात् सयोगिकेवली

वेमाणियाणं वग्गणा एगाकण्हपक्खियाणं वग्गणा एगासुक्कपक्खियाणं वग्गणा एगाकण्हपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगासुक्कपक्खियाण णेरइयाण वग्गणा एवंचउवीसदण्डउ भाणियव्वो एगाकण्हलेस्साणं व

तर जोतिषी जाव वैमानिक देवता लगे ए सर्वमा दर्शनना तीन भेद छे। सम्यक् मिथ्या मिश्र एक कृष्ण पक्षिया जीवनी वर्गणा। जेहने अर्ध पुदगल परावर्त थी अधिको संसार होय ते कृष्णपाखिया। एक शुकल पाखिया जीवनी वर्गणा छे। जेहने अर्ध पुदगल संसार वाकी छे। ते जीव सुकलपाखिया। अनंता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल जाय तिवारे एक पुदगल परावर्त होय तेहनो अर्ध। एक कृष्ण पाखिया नारकीनी वर्गणा। जेनारकीने घणो संसार फरवोछे। एक सुकलपाखिया नारकीनी वर्गणा। जेहने अर्ध पुदगल संसार छे। एम चौवीसे दंडके जाणिवा। नारकी असुरकुमार दश दडक पृथिवी प्रमुख वेइंद्री प्रमुख तिर्यंच मनुष्य व्यंतर जोतिषी वैमानिक एव चौवीस। एक कृष्णलेश्या नी वर्गणा। मनना अशुभ

शुक्ललेश्यापरिणामेन विहृत्या न्तर्मुहूर्त्ते शेषे योगनिरोध ङ्करोति ततो अयोगित्व मलेश्यत्व ञ्च प्राप्नोत्यतो ऽवगम्यते योगपरिणामो लेश्येति स पुन र्योगः श रीरनामकर्म्मपरिणतिविशेषः यस्मादुक्तं ॥ कर्म्मंहि कार्म्मणस्य कारण मन्येषां ञ्च शरीराणामिति तस्मादौदारिकादिशरीरयुक्तस्या त्मनो वीर्यपरिणति विशेषः काययोगः । १ । तथौदारिकवैक्रियाहारकशरीरव्यापाराहृतवाक् द्रव्यसमूहसाचिव्या ज्जीवव्यापारोयः स वाग्योगः । २ । तथौदारिकादि शरीरव्यापाराहृतमनोद्रव्यसमूहसाचिव्याज्जीवव्यापारो यः स मनोयोग इति । ३ । ततो यथैव कायादिकरणयुक्तस्यात्मनो वीर्यपरिणति र्योगउच्यते तथैव लेश्यापीति ॥ अन्येतु व्याचक्षते कर्म्मनिष्यन्दो लेश्येति ॥ साच द्रव्यभावभेदा द्विधा तत्र द्रव्यतोलेश्या कृष्णादिद्रव्याण्येव भावलेश्या तज्जन्योजीवप रिणामइति इयञ्च षट्प्रकारा जम्बूफलखादकपुरुषषट्कदृष्टान्ता द्ग्रामघातकचौरपुरुषषट्कदृष्टान्ताद्वा आगमप्रसिद्धा इवसेयेति तत्सूत्राणिसुगमानि न वरं कृष्णवर्णद्रव्यसाचिव्यात् जाता ऽशुभपरिणामरूपा कृष्णा सालेश्या येषाते तथा एव शेषाण्यपि पदानि नवरं नीलाईषत्सुन्दररूपा एवमित्यने नैव क्रमेण याव त्करणात् ॥ एगाकावोयलेसाणमित्यादिसूत्रत्रयद्दृश्य न्तत्र कपोतस्य पक्षिविशेषस्य वर्णेन तुल्यानि यानि द्रव्याणि धूम्राणीत्यर्थः तत्साहाय्या ज्जाता कापोतलेश्या मनाक् शुभतरा सा लेश्या येषान्ते तथा तेजो अग्निज्वाला तद्वर्णानि यानि द्रव्याणि लोहितानीत्यर्थः । तत्साचिव्याज्जाता तेजोलेश्या

ग्गणा एगाणीललेस्साणं वग्गणा एवंजावसुक्कलेस्साणं वग्गणा एगाकण्हलेस्साणं नेरइयाणं वग्गणा जाव

परिणाम विशेष । एक नीललेश्या नी वर्गणा कांइक कृष्णथी भलेरी जंबूवृक्षने दृष्टांते छ लेश्या । इम कापोतलेश्या नी वर्गणा एक । एक तेजोले श्या नी वर्गणा । एक पदम लेश्या नी वर्गणा । एम एक सुकल लेश्यानी वर्गणा । एम प्रत्येकें पुदगल आश्री छ लेश्या कही । हिवे जीव आश्री

श्या शुभस्वभावा पद्मगर्भवर्णानियानि द्रव्याणि पीतानीत्यर्थः तस्याश्चिव्याज्जाता पद्मलेश्या शुभतरा शुक्लवर्णद्रव्यजनिता शुक्ला अत्यंतशुभेति एतासांचविशेष

त' स्वरूपलेश्याध्ययनादवसेयमिति ॥ एव जस्सजइत्ति ॥ नारकाणामिव यस्य सुरादे र्या यावत्यो लेश्या स्तदुद्देशेनतद्वर्गणैकत्व वाच्य॥ भवणेत्यादिना तल्ले

श्यापरिमाणमाह अत्र संग्रहणी काऊनीलाकिण्हा लेस्साओतिन्निहोंतिनरएसु तइयाएकाऊनीला [पृथिव्यामित्यर्थः] नीलाकिण्हायरिट्ठाए ॥ १ ॥ [पञ्च

म्यामित्यर्थः] किण्हानीलाकाऊ तेऊलेसायभवणवतरिया जोइससोहम्मोसा णेतेऊलेसामुणेयव्वा ॥ २ ॥ कप्पेसणकुमारे माहिंदेचेवबंभलोएय एएसुपम्हले

॥ टीका

काउलेस्साणं नेरइयाणं वग्गणा एवंजस्सजतिलेस्साउ भवणवइवाण मंतर पुढवि आउ वणस्सइकाइयाणं चत्तारिलेस्साउ तेऊ वाउबेंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणं तिन्निलेवेइस्साउ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साणं छलेस्साउ जोइसियाणं एगातेउलेस्सा वेमाणियाणं तिन्निउवरिमलेस्साउ एगाकण्हलेस्साण भवसि

कहेछे । एक कृष्णलेश्या ना नारकीनी वर्गणा एम जाव कापोतलेश्या ना नारकी वर्गणा । नारकी मां तीन पहिली लेश्याछे । एम जेह दंडकमां

हि जेतली लेश्या होय तेतली एकेक नामे वर्गणा जाणवी । भवनपति व्यंतर पृथिवी पाणी वनस्पती कायमा छ ठेकाणे चारलेश्या होय । तेऊकाय

वायुकाय वेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्री एतला माहे त्रिण लेश्या छे । पचेंद्री तिर्यंचने मनुष्यने छ लेश्या छे । जोतिषी चंद्र सूर्य गृह नक्षत्र तरा एहनेएक

तेजोलेश्या । वैमानिक मा ऊपरली त्रिण लेश्या होय । सौधर्म ईशान देवलोके एक तेजोलेश्या । ती जे चौथे पांचमै देवलोके एक पद्मलेश्या ।

छठा देवलोकथी अनुत्तरबिमान लगे सुकललेश्या होय । एक कृष्णलेश्या नां भव्यजीव नी बर्गणा । एक कृष्णलेश्या नां अभव्य जीवनी बर्गणा चो

॥ २

सा तेणपरसुक्कलेसाओ ॥ २ ॥ पुढवीआउवणस्सइ बायरपत्तेयलेसचत्तारि गब्भितिरियनरेसुं छल्लेसातिन्निसेसाणं ॥ ४ ॥ अयं सामान्यो लेश्यादण्डकः अयमेवभव्याभव्यविशेषादन्यः ॥ एगाकण्हलेसाणभवसिद्धियाणवग्गणेत्यादि ॥ एवमिति कृष्णलेश्याया मिव ॥ छसुविति ॥ कृष्णयासह षट्सु अन्यया अ न्याः पञ्चैवा तिदेश्या भवन्तीति द्वेद्वे पदे प्रतिलेश्य भव्या ऽभव्यलक्षणे वाच्ये यथा ॥ एगानीललेसाणभवसिद्धियाणवग्गणेत्यादि ॥ ६ ॥ लेश्यादण्डकएवद र्शनत्रयविशेषितोऽन्यः ॥ एगाकण्हलेसाणसम्मद्दिट्ठियाणमित्यादि जेसिजइदिट्ठिओत्ति ॥ येषा नारकादीनां या यावन्त्यो दृष्टयः सम्यक्त्वाद्या स्तेषा ता वाच्या इति तत्र एकेन्द्रियाणा म्मिथ्यात्वमेव विकलेद्रियाणा सम्यक्त्वमिथ्यात्वे शेषाणांतिस्रोपि दृष्टय इति ॥ ७॥ लेश्यादण्डकएव कृष्णशुक्लपक्षविशिष्टो न्यः एगाकि

ट्ठियाणं वग्गणा एगाकण्हलेस्साणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा एवंछसुवि लेस्सासुदोदोपयाणिभाणियव्वाणि एगाकण्हलेस्साणं भवसिद्धियाणं नेरइयाण वग्गणा एगाकण्हलेस्साण अभवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा एवंजस्सजतिलेस्साउ तस्सततियाभाणियव्वाउ जाववेमाणियाणं एगाकण्हलेस्साण सम्मदिट्ठियाणं वग्गणा

देराजलोक प्रमाण संसारमां छै । इम छ लेश्यानें विषे बेबे पद भव्य अभव्य ना जाणिवा । एकेकी वर्गणा कहिवी । हिवे चोवीस दंडके लेश्या कहैछे ॥ एक कृष्णलेश्या नां भवसिद्धिया नारकी नी वर्गणा । एक कृष्णलेश्या ना अभवसिद्धिया नारकी नी वर्गणा । एतले अभव्य नारकी । एम जे दडक मा जेतली लेश्या होय तेतली वर्गणा कहवी । एक भव्यनी एक अभव्यनी । एम जाव वेमानिक देवताना दंडकलगे वर्गणाछे । एक कृष्ण लेश्याना सम्यग् दृष्टी नी वर्गणा संसारमे केतलाईक भव्य जीवछे । एक कृष्ण लेश्याना मिथ्यात्वी नी वर्गणा ससार मां केतलाईक अभव्य जीवछे

ण्हलेसाणं किण्हपक्खियाणमित्यादि ॥ ८ ॥ एते अट्ठचउवीसदंडयत्ति ॥ए तेचैवं १ ॥ भव्वाईहिंविसेसिओ ।२। दंसणेहिं। ३ । पक्खेहिं । ४। लेसा हिं ।५। भव्व ।६। दंसणे ।७। पक्खेहि ।८। विसिट्ठलेसाहिंति॥ इत' सिद्धवर्गणा अभिधीयते तत्र सिद्धा द्विधा अनन्तरसिद्धपरम्परसिद्धभेदात् तत्रानतरसिद्धा पञ्च दशविधा: तद्वर्गणैकत्व माह ॥ एगातित्थेत्यादिना॥ तत्र तीर्यते ऽनेनेति तीर्थं न्द्रव्यतो नद्यादीनां समो नपायश्च भूभागो भौतादिप्रवचन स्वा तत्र द्रव्यतो र्थतात्वस्याप्रधानत्वाद् प्रधानत्वञ्च भावत स्तरणीयस्य ससारसागरस्य तेन ततुं मशक्यत्वा त्सावद्यत्वा दस्येति भावतीर्थन्तु सङ्घो यतो ज्ञानादिभावेन तद्धि

एगाकण्हलेस्साणं मिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा एगाकण्हलेस्साणंसम्मामिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा एसुवंछविलेसासु जाववेमाणियाणं जेसिंजहिंदिट्ठीउ एगाकण्हलेसाणं कण्हपक्खियाणं वग्गणा एगाकण्हलेसाणं सुक्कपक्खि याण वग्गणा जाववेमाणियाण जस्सजतिलेसाउ एएअट्ठचउवीसदंडया एगातित्थसिद्धाणं वग्गणा एवंजा

एक कृष्ण लेश्याना सम्यग् मिथ्यादृष्टी नी वर्गणा छे । एम नील कापोत तेज पदम सुकल लेश्याने विषे चोवीस दंडक वैमानिक लगे दर्शन तीन नी वर्गणा कहवी जेहने जेतली दृष्टी होय तेहने तेतली वर्गणा एकेंद्री पांचने मिथ्या दृष्टी । बेइंद्री तेइंद्री चोरिंद्रीने बे दृष्टी मिथ्या दृष्टि अने सम्यग् दृष्टी बीजा सर्वजीवने त्रिण दृष्टी । कृष्ण लेश्याना कृष्णपाखिया जीव ते बहुल ससारी जीव तेहनी वर्गणा छे । सर्व ए जाति जीवनो स मुदाय कहेछे । एक समुदाय ससार मां वली कृष्ण लेश्याना सुकलपाखिया जीवनो छे एकवर्गणा एम जाव वैमानिक ना दंडकलगे जाणवुं । जेदं डके जेतली लेश्याहोय तेतली एकेकी वर्गणा ए आठबोल चौवीस दंडके जाणवा । एक तीर्थ सिद्धनी वर्गणा संघ थापना कीधांपछे मुक्ति गया

पञ्चादज्ञानादितो भवाच्च भावभूतात् तारयतीत्याहच ॥ जनाणदसणचरित्त भावओतव्विवक्खभावाओ भवभावओयतारेई तेणउभावाओतित्थति ॥ १ ॥ त्रि षुवा क्रोधाग्निदाहोपशमलोभतृष्णानिरासककर्ममलापनयनलक्षणेषु ज्ञानादिलक्षणेषुवा अर्थेषु तिष्ठतीति त्रिस्थ प्राकृतत्वात्तित्थ आहच दाहोवसमादि सुवा जतिसुवियमहवदसणाईसु तोतितित्थसघोच्चिय उभयचविसेसणविसेसति ॥ १ ॥ विशेषणविशेष्यमिति तीर्थं सङ्घइति सङ्घोवातीर्थमिति त्रयोवा क्रोधा ग्निदाहोपशमादयो ऽर्था फलानि यस्य तत्त्र्यर्थ तित्यन्ति पूर्ववत् आहच कोहग्गिदाहसमणा दओवतेचेवतिन्निजस्सत्था ॥ होइतियत्थतितत्थं तमत्थसदोफ लत्थोय ॥ १ ॥ अथवा त्रयो ज्ञानादयो ऽर्था वस्तूनि यस्य तत्त्र्यर्थ आहच अहवासम्मइसणनाणचरित्ताइतिन्निजस्सत्था ततित्थपुव्वोदियमिहमत्थोवत्थुप ज्जाओत्ति ॥ १ ॥ तन्नतीर्थे सति सिद्धा निर्वृत्ता स्तीर्थसिद्धा ऋषभसेनगणधरादिवत् तेषा वर्गणेति । १ । तथा अतीर्थेतीर्थान्तरे साधुव्यवच्छेदे जातिस्मर णादिना प्राप्तापवर्गमार्गा मरुदेवीवत् सिद्धा अतीर्थसिद्धा स्तेषा ॥ २ ॥ एवकरणात् एगातित्थगरसिद्धाण वग्गणेत्यादि दृश्य । तीर्थमुक्तलक्षण तत् कुर्वन्त्या नुलोम्येन हेतुत्वेन तच्छीलतयाचेति तीर्थकरा: आहच अणुलोमहेउतस्सो लयायजेभावतित्थमेयतु ॥ कुव्वतिपगासति तेओतित्थगराहियत्थकरत्ति ॥ १ ॥ तीर्थकरा: सतो ये सिद्धा स्ते तीर्थकरसिद्धा: ऋषभादिवत् तेषा । ३ । अतीर्थकरसिद्धा: सामान्यकेवलिन: संतो ये सिद्धा: गौतमादिव त्तेषा । ४ । तथा स्वय मात्मबुद्धा स्तत्वज्ञातवत. स्वयबुद्धा स्ते सतो ये सिद्धा स्तेतृथा तेषा । ५ । तथा प्रतीत्यैक किञ्चित् वृषभादिक अनित्यतादि भावनाकारण वस्तु बुद्धा: बुद्धवन्त: परमार्थमिति प्रत्येकबुद्धा स्तेसन्तो ये सिद्धा स्ते तथा तेषां । ६ । स्वयबुद्धप्रत्येकबुद्धानाच बोध्युपधिश्रुतलिङ्गकृतोविशेष: तथाहि स्वयबुद्धाना बाह्यनिमित्तमन्त

ते पुंडरीकादि गणधर । एक अतीर्थ सिद्धनी वर्गणा तीर्थ थाप्या विना जाति स्मरणादिक ग्यान पामी मोक्ष गया मरुदेवी आदिक । इम तीर्थं कर भगवंत सिद्धनी एक वर्गणा । अतीर्थकर सामान्य केवली सिद्धनी गौतमादिक नी वर्गणा । स्वयंबुद्ध पोतानी मेले तत्वग्यान पाम्यां । प्रत्येक

रुपाद बोधिः प्रत्येकबुद्धानान्तु तदपेक्षया करकण्ड्वादीनां भिवेति उपधिः स्वयंबुद्धानां भावादिद्वादशविधः तद्यथा पत्तं । १ । पत्ताबंधो । २ । पायट्ठवणंच ३ । पायकेसरिया । ४ । पडलाइं । ५ । पत्ताणं । ६ । गोच्छगो । ७ पायनिज्जोगो ॥ १ ॥ तिन्नेवयपच्छागा रयहरणं । ११ । चेवहोतिमुहपोत्तित्ति १२ ॥ २ ॥ प्र त्येकबुद्धानान्तु नवविधः प्रावरणवर्जं इति स्वयंबुद्धानां पूर्वाधीतं श्रुतेन नियमः प्रत्येकबुद्धानान्तु नियमतो भवत्येव लिङ्गप्रतिपत्तिः स्वयंबुद्धानामाचार्यसन्निधावपि भवति प्रत्येकबुद्धानांतु देवताप्रयच्छतीति बुद्धबोधिता आचार्यादिबोधिताः संतोये सिद्धा स्तेबुद्धबोधितसिद्धा स्तेषां ७ एतेषामेव स्त्रीलिंग सिद्धानां ८ पुलिंगसिद्धानां ९ नपुंसकलिंगसिद्धानां १० स्वलिंगसिद्धानां रजोहरणाद्यपेक्षया ११ अन्यलिंगसिद्धानां परिव्राजकादिलिंगसिद्धानां १२ गृहिलिंगसिद्धानां मरुदेवीप्रभृतीनां १३ एकसिद्धानामेकैकस्मिन् समये एकैकसिद्धानां १४ अनेकसिद्धानामेकसमये प्रादीनां अष्टशतांतानां सिद्धानामेकावर्गणेति १५ त थानेकसमयसिद्धानां प्ररूपणा गाथा बत्तीसाअडयाला सट्ठीबावत्तरीयबोधव्वा चुलसीईछन्नउई दुरहियअट्ठोत्तरसयंच एतद्विवरणं यदा एक समयेन ए

व एगाएक्कसिद्धाणं वग्गणा एगाअणेक्कसिद्धाणं वग्गणा एगापढमसमयसिद्धाणं वग्गणा एवंजाव अणंत

बुद्ध वस्तु वृषभादिक देखी तत्व ग्यान पाम्या । गुरुनां प्रतिबोधथी ग्यानपाम्या ते बुद्धबोधितसिद्ध । स्त्रीलिंग सिद्ध । नपुंसकलिंग सिद्ध । पुरुष लिंग सिद्ध । स्वलिंग सिद्ध । ओघा मुंहपती सहित सीधाते । अन्यलिंग तापस वेसें वलकलचीरी ने परें सीधा । गृहिलिंगसिद्ध मरुदेवी नी परें । एकसमयें एकज सीधा ते एकसिद्ध । एक समयें एकसोआठ सीधा ते अनेकसिद्ध । तेहनी एक वर्गणा । इम सब ठिकाणे जाणिवो । एक प्रथम समये सीधा तेहनी वर्गणा जावबीजे समये त्रीजें समयें चोथें समयें जाव संख्याते समयें असंख्याते समये अनंते समयें सीधा ते । सब ठिकाणें ए

कादयउत्कर्षेण द्वात्रिंशत्सिद्ध्यति तदा द्वितीयेऽपि समये द्वात्रिंशदेवनैरंतर्येण अष्टौ समयान्याव द्वात्रिंशत्सिद्ध्यति ततऊर्द्धमवश्यमेवांतर भवतीति यदा पुन स्त्रयस्त्रिंशादारभ्य अष्टचत्वारिंशदंता' एकसमयेनसिद्ध्यति तदानिरंतरं सप्तसमया न्यावत् सिद्धन्ति ततो ऽवश्यमेवांतरभवतीति एव यदा एकोनप चाशतमादिंकृत्वा यावत् षष्टिरेकसमयेन सिध्यति तदा निरंतरंषट्समयान् सिद्धंति तदुपरिअंतरसमयादिर्भवति एवमन्यत्रापि योज्य यावत् अष्ट शतमेकसमयेन यदा सिद्ध्यन्ति तदावश्यमेवसमयाद्यन्तर भवतीति ॥ अन्येतु व्याचक्ष्यते अष्टौ समयान् यदा नैरंतर्येण सिद्ध स्तदाप्रथमसमये जघन्येनैकः सिद्धत्यु त्कृष्टतो द्वात्रिंशदिति ॥ द्वितीयसमयेजघन्येनैकः । उत्कृष्टतो ऽष्टचत्वारिंशत्तदेव सर्वत्र जघन्येनैकः समय उत्कृष्टतो गाथार्थोय भावनीयः वत्तीसे त्यादि एत्र मनंतर सिद्धाना तीर्थाविनाभूतभावेन प्रत्यासत्तिव्यपदेशत्वेन पंचदशविधाना वर्गणैकत्व मुक्त मिदानीं परंपरसिद्धानामुच्यते तत्र अपढमसम यसिद्धाणमित्यादि त्रयोदशसूत्री नप्रथमसमय सिद्धाः सिद्धत्वद्वितीयसमयवर्त्तिनः तेषामेवजावत्तिकरणात् ॥ दुसमयसिद्धाणंति ॥ चउपंचछसत्तठ न वदसंसखेज्जसमयसिद्धाणमितिदृश्यं तत्र सिद्धत्वस्य तृतीयादिषु समयेषु द्विसमयसिद्धादय. प्रोच्यन्ते यद्वा सामान्येना प्रथमसमयाभिधान विशेषतो द्विस मयाद्यभिधानमिति अत स्तेषां वर्गणा क्वचित् ॥ पढमसमयसिद्धाणंति पाठ' ॥ तत्रअनन्तरपरंपरसमयसिद्धलक्षणभेदमकृत्वा प्रथमसमयसिद्धअनंत रसिद्धाएवज्ञातव्याः द्व्यादिसमयसिद्धा स्तु यथा श्रुता एवेति ॥ इतो द्रव्यक्षेत्रकालभावाना श्रित्य पुद्गलवर्गणैकत्व चिंत्यते ॥ एगापरसेत्यादि ॥ पूरणग

समयसिद्धाणं वग्गणा एगापरमाणुपोग्गलाणं वग्गणा एवंजावएगाणंतपएसियाणंखंधाणं वग्गणा एगा

केकी वर्गणा जाणवी । एक पुदगल परमाणु जे चक्षु दृष्टीये न देखिये तेहनी वर्गणा । इस वे परमाणु ना खंधनी वर्गणा । बे परमाणु मलियां थी खंध कहिवायछे । इम तीन परमाणु चार परमाणु पांच परमाणु छ परमाणु सात परमाणु आठ परमाणु नव परमाणु दश परमाणु जाव सं

नन्तधर्माण: पुद्गला स्ते च स्कधा अपि स्यु रिति विशेषयति परमाणवो निः प्रदेशा स्ते च ते पुद्गला श्चेति विगह स्तेषां एव करणात् ॥ दुपएसियाणं खं धाणति चउपंचछसत्तठनवदससंखेज्जपएसियाणअसखेज्जपएसियाणमिति द्रष्टव्यमिति ॥ छता द्रव्यत: पुद्गलचिता अत' चेत्रत: क्रियते ॥ एगाएगपएसेत्या दि ॥ एकस्मिन्प्रदेशेचेत्रेऽवगाढाअवस्थिता एकप्रदेशावगाढास्ते च परमाण्वादयो नतप्रदेशिकस्कधान्ता: स्यु रचिन्त्यत्वात् द्रव्यपरिणामस्य यथा पारदस्यै कैनकर्षेण चारिता: सुवर्णस्य ते सप्ता प्येकीभवति पुनर्द्धामिता: प्रयोगत: सप्तैव तद्वति ॥ जावएगाअसखेज्जपएसोगाढाणति ॥ अनतप्रदेशावगाहित्व तु ना स्ति पुद्गलानालोकलक्षणस्यावगाहक्षेत्रस्या प्यसंखेयप्रदेशत्वादिति कालतआह ॥ एगाएगसमएत्यादि ॥ एक समय यावत्स्थिति: परमाणु त्वादिना एक प्रदेशावगाढादित्वेन एकगुणकालादित्वेना वस्थान येषांते एकसमयस्थितिकास्तेषामिति इहच अनतसमयस्थिते: पुद्गलाना मभावा दसंखेज्जसमयठितिया

एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगाअसंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाण वग्गणा एगाएगसमय ठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव असंखेज्जसमयठितिआणपोग्गलाणंवग्गणा एगा एगगुणकालयाणंपो

ख्याता असंख्याता प्रदेशना खधनी एक वर्गणा । एम अनता प्रदेशना खधनी वर्गणा जाणवी । हिवे क्षेत्रथी कहे छे । क्षेत्रनां एक प्रदेश अवगा हीने रहिया एहवा पुदगल तेहनी वर्गणा । इम बे क्षेत्रना प्रदेशावगाढ तीन क्षेत्रना प्रदेशावगाढ यावत् असंख्यात प्रदेश क्षेत्रने आश्री रहिया तेहनी एकेकी वर्गणा कहिवी । पणि अनंत प्रदेशावगाढ नथी । जेमाटे चौदे राजलोक प्रमाण क्षेत्रना असख्यात प्रदेश छे । अनंत प्रदेश नथी । हिवे कालथी कहे छे । परमाणु पणे तथा एक क्षेत्र प्रदेशाश्रितपणे एक समयनी स्थिति छे जेहनी तेहनी एक वर्गणा इम यावत् असंख्यात स

ण मित्युक्त मिति ॥ भावतः पुद्गलानाह ॥ एगाएगगुणेत्यादि ॥ एकेन गुणने गुणन ताडन यस्यस एकगुणः कालो वर्णो येषां ते एकगुणकालकास्तारत स्येनकृष्णतरकृष्णतमादीनां येभ्य' आरभ्य प्रथममुत्कर्षवृत्ति र्भवतीति भाव स्तेषामेव सर्वाण्यपि भावसूत्राणि षष्ठ्याधिकद्विशतप्रमाणानि वाच्यानि २६० विंश तेः कृष्णादि भावानां त्रयोदशभिर्गुणनादिति । सांप्रतभग्यतरेण द्रव्यादिविशेषितानां जघन्यादिभेदभिन्नानांवर्ग्गणैकत्वमाह ॥ एगाजहन्नपएसियाणमि त्यादि ॥ जघन्याः सर्वाल्पाः प्रदेशाः परमाणवस्तेसति येषांते जघन्यप्रदेशिकाः द्व्यणुकादय इत्यर्थः स्कंधा अणुसमुदया स्तेषां उत्कर्षन्तीत्युत्कर्षाः उत्कर्षवं तः उत्कृष्टसंख्याः परमानन्ताः प्रदेशा अणव स्तेसति येषाते उत्कर्षप्रदेशिका स्तेषा जघन्याश्च उत्कर्षाश्चजघन्योत्कर्षा नतया येते अजघन्योत्कर्षा मध्यमा इ त्यर्थः ते प्रदेशा. सति येषांते अजघन्योत्कर्षप्रदेशिका स्तेषा मेतेषाचानतवर्ग्गणत्वे प्यजघन्योत्कर्षशब्दव्यपदेश्यत्वादेकवर्ग्गणत्व मिति ॥ जहन्नोगाहणगाणं

ग्गलाणंवग्गणा जाव एगा असंखेज्ज एगाअणंतगुणकालयाणंपोग्गलाणंवग्गणा एवं वण्णगंधरसफासाभाणिय व्वा जावएगाअणंतगुणलुक्खाणपोग्गलाणंवग्गणा एगाजहन्नपएसियाणंखधाणंवग्गणा एगाउक्कोसपएसिया

मयनी स्थितिना । अनंत समय स्थिति नो अभाव छे । एक गुण काला पुदगलनी वर्गणा । इम यावत् असंख्यातगुण काला पुदगलनी एक वर्गणा इम अनंतगुण काला पुदगल नी एक वर्गणा । एम पांचे वर्णनी वर्गणा कहिवी । एहज रीते पाच वर्ण दोय गंध छ रस आठ फरस नी एकेक वर्गणा कहिवी । जिहांलगे अनंत गुण लूखा पुदगलनी एक वर्गणा छे । जघन्य प्रदेशनी एक वर्गणा । जेहमां परमाणुआ थोडा छे । ते दो परमाणु आदिकना खंध जाणिवा । एक उत्कृष्ट प्रदेशना खंधनी वर्गणा । जेहमां अनंता परमाणु प्रदेश छे उत्कृष्ट प्रदेशनो खंध कहिये । एक न

ति॥ ॥वगाहंते आसते यस्यांसा वगाहना क्षेत्रप्रदेशरूपा साजघन्यायेषांते स्वार्थिकाप्रत्ययाज्जघन्यावगाहनकास्तेषा मेकप्रदेशावगाढानामित्यर्थः उत्कर्षा वगाहनकाना मसख्यातप्रदेशावगाढाना मित्यर्थः अजघन्योत्कर्षावगाहनकानां संख्येयासख्येयप्रदेशावगाढाना मित्यर्थः जघन्याजघन्यसंख्या समयापेक्ष या स्थितिर्येषाते जघन्यस्थितिका एकसमयस्थितिका इत्यर्थः तेषांउ त्कर्षा उत्कर्षेणरसख्यासमयापेक्षया स्थिति येषांते तथा तेषा मसंख्यातसमयस्थि तिकाना मित्यर्थः तृतीय काव्य जघन्येन जघन्यसख्याविशेषेणैकेने त्यर्थः गुणोगुणनंताडन यस्यस तथाविधः कालो वर्णो येषाते जघन्यगुणकालका स्ते षा मेव मुत्कर्षगुणकाना मनतगुणकालकाना मित्यर्थः तृतीयं काव्यं एव भाव सूत्राणि सर्व्वाख्यपिप ष्टि र्भावयानीति सामान्यस्कंधवर्गणेकत्वाधिकारा

णंखंधाणं वग्गणा एगाउअजहन्नुक्कोसपएसियाणखंधाणं वग्गणा एवं जहन्नोगाहणगाण उक्कोसोगाहणगाणं अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं जहन्नठितियाणं उक्कोसठितियाणं अजहन्नुक्कोसठितियाणं जहन्नगुणकालगाणं उक्कोसगुणकालगाणं अजहन्नुक्कोसगुणकालगाणं एव वस्त्रगंधरसफासाणंवग्गणाउभाणियव्वा जावएगाउअज

थी जघन्य नथी उत्कृष्ट एहवा प्रदेशना खधनी वर्गणा ते मध्यमप्रदेश खधनी वर्गणा कहिये। एम जघन्य अवगाहना ना खंधनी उत्कृष्ट अवगाहना ना खधनी वर्गणा। एक नथी जघन्य नथी उत्कृष्ट एहवी अवगाहना ना खधनी वर्गणा। ते मध्यम प्रदेशावगाढ खधनी वर्गणा कहिये। कालथी जघन्य एक समय स्थितिना खधनी एक वर्गणा। उत्कृष्टी असख्यात समय स्थितिना खंधनी वर्गणा। एक मध्यस्थितिना खधनी वर्गणा। एम जघन्य एकगुणकाला प्रदेश परमाणु नी वर्गणा। एक उत्कृष्ट अनतगुण काला पुदगल नी वर्गणा। एक मध्यमगुण काला प्रदेश नी वर्गणा। एम

वा जघन्योत्कर्ष प्रदेशकास्या ऽजघन्योत्कर्षप्रदेशावगाढस्य स्कंधविशेषस्यैकत्व माह ॥ एगेजंबूद्दीवेत्यादि ॥ जंब्वा वृक्षविशेषेणो पलक्षितो द्वीप. जबूद्वीप इ ति नाम द्वीपइति सामान्य यावत्ग्रहणा देवसूत्र द्रष्टव्य सव्वभंतरएसव्वखुड्डाएवट्टे तेल्लापूएसठाणसठिए एगजोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण तिन्निजो यणसयसहस्साइं सोलसहस्साइं दोन्निसयाइं सत्तावीसाइं तिन्निकोसा अट्ठावीसंधणुसय तेरसअगुलाइ अद्धगुलच किंचिविसेसाहिया ए परिक्खेवेणन्ति सु गममेतत् उक्तविशेषणश्च जबूद्वीप एकएव अन्यथा अनेकेपिते सतीति । अनतरं जबूद्वीप उक्तः इति तत्प्ररूपकस्य भगवतो महावीरस्यैकता माह ॥ एगे समणेत्यादि ॥ एगोअसहायो अस्यचसिद्धइत्यादिनासम्बधः श्राम्यति तपस्यतीति श्रमणः भज्यत इतिभगः समग्रैश्वर्यादिलक्षणः उक्तवऐश्वर्यस्यसमग्रस्य रूपस्ययशसःश्रिय. धर्मस्यार्थप्रयत्नस्य षसांभगइतींगनेति ॥ १ ॥ स विद्यते यस्येति भगवान् तथा विशेषेणे रयतिमोक्षप्रति गच्छति गमयतिवा प्राणिनः

हन्नुक्कोसगुण लुक्काणं पोग्गलाणं वग्गणा एगेजंबूद्दीवेसव्वदीवसमुद्दाणं जावऋद्धंगुलगंचकिंचिविसेसेहिं प रिक्केवेणं एगेसमणेन्नगवंमहावीरे इमीसेउसप्पिणीए चउवीसाएतित्थगराणं चरिमतित्थयरेसिद्धे बुद्धे मुत्ते

वर्ण गंध रस फरस एहनी एकेक वर्गणा जाणवी । जिहांलगे मध्यम लूखा पुदगलनी एक वर्गणा होय । एक जंबूद्वीप नामा द्वीप सर्वद्वीप समुद्र ना मध्यभागे छे । जंबू शासतो वृक्ष तेसहित सर्वद्वीपथी नान्हो वाटलो फ्रांफेरो परिधीये एहवो जबूद्वीप एकज छे । वीजा जंबूद्वीप घणा छे पिण एहमाने नथी । तेलना पूआने आकारे एकलाख योजन लांबो पिहुलो त्रिण लाख सोले हजार विसे सत्तवीस योजन त्रिण गाऊ एकसोअठाईस धनुष तेरे अंगुल ऊपर आधी अंगुल । एक श्रमण भगवंत श्रीमहावीर एणी अव सर्पिणी काले आदि नाथादिक चौवीस तीर्थंकर मांहि छेहला

प्रेरयतिवाकर्म्माणि निराकरोति वीरयतिवा रागादिशत्रून्प्रति पराक्रमयतीति वीर' निरुक्तितोवा वीरो यदाह विदारयतियत्कर्म्म तपसाचविराजते
तपोवीर्य्येणयुक्तश्च तस्माद्वीरइतिस्मृत' ॥१॥ इतरवीरापेक्षया महांश्चासौ वीरश्चेति महावीरः भाष्योक्तंतु तिहुयणविक्खायजसो महाजसोनामओमहावी
रो विक्कंतोयकसायाइ सत्तुसेन्नप्पराजयओ ॥१॥ ईरेइविसेसेणच खिवइकम्माइगमयइसिवंवा गच्छइयतेणवीरो समहवीरोमहावीरोत्ति ॥ २ ॥ अस्यामवस
र्प्पिण्यां चतुर्विंशतेः तीर्थंकराणामध्ये चरमतीर्थंकरः सिद्धः कृतार्थोजातः बुद्ध' केवलज्ञानेन बुद्धवान् बोध्य मुक्त.कर्म्मभि र्यावत्करणात् अंतकडे अंतो भवस्य
कृतो येन सोतकृतः परिनिव्वुडे परिनिर्वृतः कर्म्मकृतविकारविरहात् स्वस्थीभूतः किमुक्तम्भवति ॥ सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ सर्वाणि शारीरादीनि दुःखानि प्र
क्षीणानिप्रहीणानिवा यस्यस सर्वदुःखप्रहीणोवा सर्वत्र बहुव्रीहौ क्तातस्य यः परनिपातः स आहिताग्न्यादिदर्शना दिति इहच तीर्थंकरेष्वेतस्यैवै काल मोक्ष
गमने नतु ऋषभादीना दशसहस्रादिपरिवृतत्वेन तेषांसिद्धत्वा दुक्तञ्च एगोभगववीरो तेत्तीसाएसहनिव्वुओपासो। छत्तीसएहिपचहि सएहिंनेमीउसि
द्धिगओ इत्यादि ॥ १ ॥ एकाकी वीरो निर्वृत इत्युक्त निर्वृतिक्षेत्रासन्नानि चानुत्तरविमानानीति तन्निवासिदेवदेहमानमाह ॥ अनुत्तरेत्यादि ॥ अनुत्तर
त्वा दनुत्तराणि विजयादिविमानानि तेषु य उपपातो जन्म सविद्यते येषान्ते नुत्तरोपपातिका स्ते णङ्कारो वाक्यालङ्कारे देवाः सुराः ॥ एगारयणित्ति ॥
हस्तयावत् क्रोश कौटिल्येन नदीतिवदिहद्वितीया ॥ उड्डुउच्चत्तेणति ॥ वस्तुनो ह्यनेकधोच्चत्व मूर्द्धस्थितस्यैक मपर न्तिर्यक्स्थितस्या ऽन्यत् गुणोन्नतिरूपं तत्रेत

जावसव्वदुक्खप्पहीणे अणुत्तरोववाइयाणं देवाणंएगारयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता। अणुहानक्खत्ते एगतारे

तीर्थंकर सिद्ध थया कृतार्थ थया केवलथी संसारना भाव पदार्थ जाण्या कर्मथी रहित थया यावत् सर्वदुःखथी प्रक्षीण थया एक लाहीज मोक्ष
गया। अनुत्तर विमान विजय। वैजयंत। जयंत। अपराजि त। सर्वार्थसिद्ध। एह पाच अनुत्तर विमान ना देवतानी कायानो ऊंचपणो एकहाथ

रापोहेनो देस्थितस्य यदुच्चत्व तदूर्द्धोच्चत्व मित्यागमे रूढ मिति तेनो र्द्धोच्चत्वेना नुस्वारः प्राकृतत्वात् प्रज्ञप्ताः प्ररूपिताः सर्वविद्भि रिति अथवा अनुत्तरोप पातिकानां देवाना मूर्द्धोच्चत्वेन प्रमाण मितिशेषः एकारत्निः प्रज्ञप्तेति व्याख्येय मिति ॥ देवाधिकारादेव नक्षत्रदेवानां ॥ अद्दानक्खत्तेइत्यादि ॥ कण्ठ्येन सूत्रत्रयेण तारैकत्वमुक्तं ताराच ज्योतिर्विमानरूपेति कृतिकादिषुच नक्षत्रेष्विद न्ताराप्रमाण छ ६ । पंच । ५ । तिन्नि । ३ । एग । १ । चउ । ४ तिगं । ३ । रस । ६ । वेय । ४ । जुयल । २ । जुयलंच । २ । इंदिय । ५ । एग । १ । एगं विसय । ५ । गिउसमुद्द । ४ । बारसग । १२ ॥ १ ॥ चउरो । ४ । तिय ३ । तिय । ३ । पच । ५ । सत्त । ७ । बेबे । २ । भवेतियातिन्नि । ३ । ३ ॥ रिक्खेतारपमाण जइतिहितुल्लइयकज्जति ॥ १ ॥ इह चैकस्थानकानुरोधा न्नक्ष त्रत्रयस्य ताराप्रमाण मुक्तं शेषनक्षत्राणान्तु प्रायो ऽप्येतनाध्ययनेषु तदच्यति यत्तु क्वचिद्विसम्वाद स्ताराप्रमाणस्य तथाविधप्रयोजनेषु तिथिविशेषस्य नक्षत्र विशेषयुक्तस्या शुभत्वसूचनार्थत्वेनो क्तगाथयो र्मतान्तरभूतत्वा न्नबाधक इति ॥ तारापुद्गलरूपेति पुद्गलस्वरूप मभिधातु माह ॥ एगप्पएसोवगाढेत्यादि ॥ सुगम न्नवर मेकत्र प्रदेशे क्षेत्रस्यांशविशेषे अवगाढा आश्रिता एकप्रदेशावगाढाः तेंच परमाणुरूपाः स्कन्धरूपा श्चेति एवं वर्ण ५ । गन्ध २ । रस ५ । स्प र्श ८ । भेदविशिष्टाः पुद्गला वाच्याः अतएवोक्त ॥ जावएगगुणलुक्खेत्यादि ॥ तदेवं मनुगमोभिहितो ऽधुना कथञ्चि त्प्रत्यवस्थानावसरे भणितमपि नयद्वार

पन्नत्ते चित्तानक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते सातिणक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते एगपएसोगाढा पोग्गला अणंता पन्नत्ता एवमेगसमयठितिया एगगुणकालगा पोग्गलाअणंता पन्नत्ता जावएगगुणलुक्खापुग्गलाअणंता पन्नत्ता ।

नो छे । आर्द्रा नक्षत्रनो एकतारो छे । चित्रा नक्षत्रनो एक तारोछे । स्वाति नक्षत्रनो एकतारो छे । एक क्षेत्र प्रदेशने आश्री रहिआ एहवा परमा णु रूप स्कंधरूप पुदगल अनंता छे । इम एक स्थितिनां पुदगल । एक गुण काल पुदगल अनंता भगवंते कहिया छे । जाव एक गुण लूखा पुदगल

मनुयोगद्वारक्रमायात मिति पुन र्विशेषेणोच्यते तत्र नैगमादयः सप्त नया स्तेष ज्ञाननये क्रियानये चान्त र्भवन्तीति ताभ्या मध्ययन मिदं विचार्यते तत्र ज्ञानावरणा त्मकी श्चिन्नध्ययने ज्ञाननयो ज्ञानमेव प्रधान मिच्छति ज्ञानाधीनत्वा त्सकलपुरुषार्थसिद्धे र्यतः ॥ विज्ञप्तिःफलदापुंसां नक्रियाफलदामता ॥ मिथ्याज्ञानात्प्रवृत्तस्य फलप्राप्तेरसम्भवात् ॥ इत्यतः ऐहिकामुष्मिकफलार्थिना ज्ञानएव यत्नो विधेय इति क्रियानयस्तु क्रियामेवेच्छति तस्याएव पुरुषार्थसिद्धा वुपयुज्यमानत्वात् १ तथाचोक्तं ॥ क्रियैवफलदापुंसा नज्ञानफलदंमत ॥ यतस्त्रीभक्ष्यभोगज्ञो नज्ञानात्सुखितो भवे दित्यत ऐहिकामुष्मिकफलार्थिना क्रियैव कार्येति जिनमतेतु नानयोः प्रत्येक मुरुषार्थसाधनता यतउक्तं ॥ हयनाणंकियाहीणं हयाअन्नाणिणोकिया ॥ पासतोपंगुलोदड्ढो धावमाणोयअंधओत्ति ॥ १ ॥ संयोगएव चानयोः फलसाधकत्व यतउक्तं ॥ सजोगसिद्धीयफलवयंति नहुएगचक्केणरहोपयाइ ॥ अंधोयपंगूयवणेसमिच्चा तेसंपउत्तानगरंपविठ्ठत्ति ॥ १ ॥ भाष्यकृताप्युक्त ॥ नाणाहीणंसव्वं नाणेणओभणतिकिंचिकिरियाए किरियाएकरणतओ तदुभयगाहोयसमत्तंति ॥ १ ॥ अथवा सप्तापिनैगमादयः सामान्यनये विशेषनये चान्तर्भवन्ति तत्र सामान्यनयः प्रकान्ताध्ययनोक्तः नामाद्यादिपदार्थाना मेकत्वमेवा भिमन्यते सामान्यवादित्वा त्तस्य सहि ब्रूते एकंनित्य निरवयव निष्क्रियं सर्वगंच सामान्यमेवास्ति नविशेषो निःसामान्यत्वात् इह यन्निःसामान्य तन्नास्ति यथाखरविषाण यच्चास्ति न तन्निःसामान्य यथाघटइति तथा सामान्यादन्ये नन्येवा विशेषाः प्रतिपद्येरन् यद्यन्ये तत्तूष्णामसन्त स्ते निःसामान्यत्वात् खपुष्पवत् अथानन्येन तदा सामान्यमात्रमेव चत वा विशेषोपचारः नचोपचारेणार्थतत्व श्चिन्त्यत इति आहच एकंनिच्चनिरवयव मक्कियंसव्वगचसामन्नं ॥ निस्सामन्नत्ताओ नत्थिविसेसोखपुप्फव ॥ २ ॥ तथा सामन्नओविसेसो अन्नोनन्नोव्वहोज्जजइअनन्नो ॥ सोनत्थिखपुप्फपिव नन्नोसामन्नमेवतयंति ॥ १ ॥ तदेव सामान्यनयाभिप्रायेणात्मादीना मेकत्वमेव विशेषनयमतेनतु तेषा मनेकत्वमेव सहिब्रूते विशेषेभ्यः सामान्य भिन्नमभिन्नवा स्यात् नभिन्न मत्यन्तानुपलम्भात् खपुष्पवत् तथा न सामान्यम्विशेषेभ्यो

भिन्नमस्ति दाहपाकस्नानपानावगाहवाहदोहादिसर्वसव्यवहाराभावात् खरविषाणवत् यथा भिन्नत्वाद्वा विशेषमात्रवत् न नाम सामान्यमस्ति तेषु नाना
सामान्यमारोपचार इति नत्वोपचारेणार्थतत्त्वं चिन्त्यते यतश्च नातिसमत्वतत्त्वभूयमग्निमाणवकमात्रव्यवहारो ॥ उक्तनयद्वयद्वारा आचार्याणां ग्रिमा(?)त्ति
१ ॥ तदेवमात्मादीनामनेकत्वमेवेति ननु पक्षद्वयेऽपि युक्तिसम्भवात् किन्तावत्प्रतिपत्तव्यमिति उच्यते तत् स्यादेकत्वं स्यादनेकत्वमिति ॥ तथाहि ॥
समविषमरूपत्वाद्वस्तुनः समरूपापेक्षया एकत्वं विषमरूपापेक्षया त्वनेकत्वमिति उक्तञ्च । वस्तुन एव समानः परिणामो यः स एव सामान्यं । विपरीतास्तु
विशेषा वस्त्वेकमनेकरूपन्तदिति ॥ १ ॥ इति श्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाङ्गटीकाविवरणे प्रथममध्ययनमेकस्थानकाभिधानं समाप्तमिति ॥

॥ प्रथम मध्ययन समाप्तम् ॥ ग्रन्थसंख्या ११८७ ॥

व्याख्यातमेकस्थानकाख्यं प्रथममध्ययनमतः संख्याक्रमसम्बद्धमेव द्विस्थानकाख्यं द्वितीयमध्ययनमारभ्यते । अस्य चायं विशेषसम्बन्धः इह जैनानां सामान्य
विशेषात्मकं वस्तु तत्र सामान्यमाश्रित्य प्रथमाध्ययने आत्मादिवस्त्वेकत्वेन प्ररूपितमिदं तु विशेषाश्रयणात्तदेव द्विविधत्वेन प्ररूप्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायात
स्यास्याध्ययनस्य चत्वार्यनुयोगद्वाराण्युपक्रमादीनि भवन्ति तानि च प्रथमाध्ययनवद्द्रष्टव्यानि यच्च विशेषः स स्वबुद्ध्यावगन्तव्यः केवलमस्य चतुरुद्दे
शकात्मकस्याध्ययनस्य सूत्रानुगमे प्रथमोद्देशकादिसूत्रमिदमुच्चारणीयं ॥ जदत्थिणमित्यादि ॥ अस्य च पूर्वसूत्रेण सहायं सम्बन्धः पूर्वं पुद्गलगुणरूपाः पु

इतिश्री प्रथमं ठाणं सम्मत्तं ॥ प्रथमं अज्झयणं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अनंता कहिया छे । इतिश्री टब्बार्थ ठाणांग सूत्रनो प्रथम अध्ययनरूप एक ठाणो पूर्णथयो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

द्गला अनन्ता स्तत्र किमनेकगुणरूक्षा: अपि पुद्गलाभवंति येन ते एकगुणरूक्षतया विशिष्यंत इति उच्यते भवंत्येव यतो यदत्थीत्यादिपरम्परसूत्रं सम्बंधस्तु श्रुत मया युष्मता भगवतैव माख्यात मेकआत्मेत्यादि तथेद मपरमाख्यातं ॥ जदत्थीत्यादि ॥ संहितादि: पूर्ववत् यज्जीवादिकवस्तु अस्ति विद्यते णमित्य लंकारे क्वचित्पाठो जदत्थिचणंति तत्रानुस्वारआगमिक श्चशब्द' पुनरर्थे एवंचास्य प्रयोग: अस्त्यात्मादिवस्तु पूर्वाध्ययनप्ररूपितत्वा द्यच्चास्ति लोके पञ्चास्ति कायात्मके लोक्यते प्रमीयते इति लोक इतिव्युत्पत्त्या लोकालोकरूपेवा तत्सर्वं निरवशेष द्वयो' पदयो. स्थानयो: पक्षयो र्विवक्षितवस्तु तद्विपर्ययलक्षणयो र वतारो यस्यतत् द्विपदावतार मिति ॥ दुपडोयारंति ॥ क्वचित्पठ्यते तत्र द्वयो: प्रत्यवतारोयस्य तत् द्विप्रत्यवतार मिति स्वरूपवत् प्रतिपक्षव च्चेत्यर्थ: तद्यथे त्युदाहरणोपन्यासे ॥ जोवच्चेव अजीवच्चेवत्ति ॥ जीवाश्चैव अजोवाश्चैव प्राकृतत्वात् सयुक्तपरत्वेनह्रस्व. चकारौसमुच्चयार्थौ एवकारावधारणे तेनच राश्यन्त रापोहमाह ॥ नोजीवाख्यराश्यन्तरमस्तीति चेन्नैव सर्वनिषेधकत्वे नोशब्दस्य नोजीवशब्देना जीवएव प्रतीयते देशनिषेधकत्वे तु जीवदेश एव प्रतीयते नच देशो देशिनो त्यतव्यतिरिक्त इति जीवएवासा विति चेयइतिवा एवकारार्थ: चियच्चेयएवार्थे इतिवचनात् ततश्च जीवा एवेति विवक्षितवस्त्व जीवा एवे तिच तत्प्रतिपक्ष इति एव सर्वत्र अथवा यद स्तीति यत् सन्मात्र यदित्यर्थ. तत् द्विपदावतार द्विविध जोवाजीवभेदा दिति शेष तथैवच अथ त्रसेत्यादि

जदत्थि णलोगे तं० सव्वं दुपडोयारं तं० जीवच्चेव अजीवच्चेव तसच्चेव थावरच्चेव सजोणियच्चेव अजोणि

श्रीसुधर्मास्वमी जंबू स्वामीनें कहै छे जे आलोकने विषे । जीवादि पदार्थ छे तेसर्व बेप्रकारे छै । ते कहै छे । एक चेतना लक्षण जीवछे । वीजो अजीव चेतना रहित छे । जीवना बेभेद त्रस बे इंद्रियादिक । थावर पांच एकेंद्री पृथिवी आदिक । एक योनिसहित जीव संसारी चोरासी लाख

नवसूत्र्या जीवतत्वस्येव भेदान् सप्रतिपक्षा नुपदर्शयति तत्र त्रसनामकर्मोदयत स्त्रस्यंतीति त्रसाः द्वींद्रियादयः स्थावरनामकर्म्मोदया त्तिष्ठंती त्येवं शीलाः स्थावराः पृथिव्यादयः सह योन्योत्पत्तिस्थानेन सयोनिकाः ससारिण स्तद्विपर्यासभूताः अयोनिकाःसिद्धाः सहायुषा वर्त्तंत इति सायुष स्तदन्ये नायुषाः सिद्धाः एवसेंद्रियाः ससारिणः अनिन्द्रियाः सिद्धादयः सवेदका स्त्रीवेदाद्युदयवंतः अवेदकाः सिद्धादयः सहरूपेण मूर्त्त्या वर्त्तंत इति समासांते इन्प्रत्यये सति सरूपिणः सस्थानवर्णादिमतः सशरीराद्इत्यर्थः न रूपिणो अरूपिणो मुक्ता सपुद्गलाः कर्म्मादिपुद्गलवतो जीवाः अपुद्गलाःसिद्धाः संसारंभवंसमापन्नकाः आश्रिताः ससारसमापन्नकाःससारिण स्तदितरे सिद्धाः शाश्वताः सिद्धाः जन्ममरणादिरहितत्वा दशाश्वताः संसारिण स्तद्युक्तत्वादिति । एवंजीवतत्वस्य द्विपदावतारन्निरूप्या जीवतत्वस्य तन्निरूपयन्नाह ॥ आगासेत्यादि ॥ आकाशं व्योम नोआकाश तदन्य द्धर्म्मास्तिकायादि धर्म्मो धर्म्मास्तिकायो गत्युपष्टंभ

अञ्चेव साउयच्चेव अणाउयच्चेव सइंदियच्चेव अणिंदियच्चेव सवेयगच्चेव अवेयगच्चेव सरूविच्चेव अरूविच्चेव सप्पोग्गलच्चेव अपोग्गलच्चेव संसारसमावन्नगच्चेव असंसारसमावन्नगच्चेव सासयचेव असासयचेव आ

जीवा योनिना । अयोनि योनिरहित जीव सिद्ध । आऊखा सहित जीव संसारी । आयु रहित सिद्ध । इंद्रीसहित संसारी जीव । इंद्रिय रहित असंसारी जीव । वेदसहित संसारी जीव । वेद रहित असंसारी जीव । शरीर सहित संसारी जीव । शरीर रहित असंसारी जीव । कर्म पुदग ल सहित ससारी जीव । कर्म पुदगल रहित असंसारी जीव संसारमे त्रसें ते संसारी जीव । संसार रहित मोक्ष गया ते जीव । एक शासता जीव जनम मरण रहित ते असंसारी जीव एक अशास्वता संसारी जीव जनम मरण करवाथी । एहजीव बे प्रकारे देखाया । हिवे अजीवना बेभेद देखाडे

गुण स्तदन्यो ऽधर्मोधर्मास्तिकायः स्थित्युपष्टम्भगुणः सविपक्षबधादितत्वसूत्राणि चत्वारिप्राग्वदिति बंधादयश्च क्रियायांसत्यामात्मनो भवतीति क्रियानि रूपणायाह ॥ दोकिरियेत्यादि ॥ सूत्राणि षट्त्रिंशत् करणक्रिया क्रियत इतिवा क्रियेति तेच द्वे प्रज्ञप्ते प्ररूपिते जिनै स्तत्र जीवस्य क्रिया व्यापारो जीव क्रिया तथा जीवस्य पुद्गलसमुदायस्य यत्कर्मैर्यापथ तयापरिणमन सा अजीवक्रियेति इहचेयशब्दस्य चेवशब्दस्यच पाठांतरे प्राकृतत्वा द्विर्भाव इतिचेवेत्यय च समुच्चयमात्रएवप्रतीयते अपिचेत्यादिवदिति ॥ जीवकिरियेत्यादि ॥ सम्यक्त्व तत्वश्रद्धान तदेवजीवव्यापारत्वात्क्रिया सम्यक्त्वक्रिया एवं मिथ्यात्वक्रियापि न वर मिथ्यात्वमतत्वश्रद्धान तदपि जीवव्यापारएवेति अथवा सम्यग्दर्शनमिथ्यात्वयोःसतो र्यैभवतः तेसम्यक्त्वमिथ्यात्वक्रिये इति ॥ अजीवकिर्ि येत्यादि ॥ तत्र

गासेचेव नोआगासेचेव धम्मेचेव अधम्मेचेव बंधेचेव मोक्खेचेव पुन्नेचेव पावेचेव आसवेचेव सवरेचेव वेयणाचेव णिज्जराचेव दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा जीवकिरिआचेव अजीवकिरियाचेव जीवकिरिआ ॥

छे । आकाश ते व्योम । नथी आकाश ते धर्मास्तिकाय प्रमुख पांच । धर्मास्तिकाय चालता जीवने आधार आपें । अथवा विरति रूप धर्म । अधर्मास्ति काय जे थिरराखे । अथवा पाप ते अधर्म । कर्मनो आश्रव द्वारे करी सबध ते बध । मोक्ष ते सकल कर्मथी छूटवुं । पुण्यते दानादि करवुं पापतेजी वहिंसा । कर्म आविवानो मार्ग ते आश्रव । कर्म आविवाना मार्ग ने रोकवो ते संवर । वेदना जे दुखादि के करी पीडा । कर्मनो सोधवुं तेनिर्जरा करिये तेक्रिया कहिये तेहने भगवंते बेप्रकारनी कहीछे । तेकहेछे जिहां जीवनो व्यापारछे तेजीव क्रियाकहिये । अजीव तेपुदल तेनो कर्म पणे प रिणमवो ते अजीवक्रिया जीवनी क्रिया बे प्रकारे कही भगवते तेकहे छे । एक.सम्यक्त्व क्रिया साचातत्वने सरदहनरूप व्यापार विशेष । एक

ईरियावहियत्ति ईरणमिर्या गमनं तद्विशिष्टः पंथा ईर्यापथ स्तत्र भवा ऐर्यापथिकी व्युत्पत्तिमात्र मिदं प्रवृत्तिनिमित्तत सु यत्केवलयोगप्रत्यय मुपशात
मोहादित्रयस्य सातवेदनीयकर्मतया अजोवस्य पुद्गलराशे भवनं सा ऐर्यापथिको क्रिया इह जोवव्यापारे प्यजीवप्रधानत्वविवक्षया जोवक्रियेय मुक्ता क
र्मविशेषो वेर्यापथिकीक्रियोच्यते यतोभिहित ईरियावहियाकिरियादुविहा वज्झमाणावेइज्जमाणाय जापढमसमयेवद्धा बीयसमये वेइया सावद्धा पुट्ठा
वेइयाणिज्जित्ता सेयकालेअकम्मवाविभवईति तथासम्पराया. कषायास्तेषु भवा साम्परायिकी साह्यजीवस्य पुद्गलराशे. कर्मतापरिणतिरूपा जीवव्यापार
स्या विवक्षणा दजीवक्रियेति साच सूक्ष्मसम्परायान्ताना गुणस्थानकवता भवतीति । २ । पुनरन्यथा द्वे दोकिरियेत्यादि । काइयाचेवत्ति । कायेन निर्वृत्ता
कायिको कायव्यापार स्तथा । आहिगरणियाचेवत्ति । अधिक्रियते आत्मा नरकादिपु येन तदधिकरण मनुष्ठानं वाह्य वा वस्तु इहच वाह्य विवक्षित ख

दुविहा पन्नत्ता तंजहा सम्मत्तकिरिआचेव मिच्छत्तकिरियाचेव अजीवकिरियादुविहा पन्नत्ता तंजहा ईरिआवहिआचेव संपराइयाचेव दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा काइयाचेव आहिगरणियाचेव काइया

मिथ्यात्वक्रिया खोटा तत्वनें सरदहवुं जीवनो व्यापार । अजीव क्रिया बे प्रकारेकही जगवते तेकहे छे । मार्ग चालवा नी क्रिया ते ईर्यापथिकी
क्रिया चालता कर्म बंधाये ते कर्म अजीव छे । चालवुं जीवनो व्यापारछे तो पणि अजीवनुं प्रधान पणुं इहां कहिवो । तेमाटे ए अजीव क्रिया इम
सव ठेकाणे जाणवुं । संजलन कषाय थी उपजी क्रिया अजीव कर्म पुदगलनी राशि ते सातमा दशमा गुणस्थाने होय । वली बे क्रियाछे तेकहेछे ।
कायाना व्यापारथी लागे ते कायिकी क्रिया । हल ऊखल खडगादिके करी लागे ते अधिकरणिकी क्रिया ।कायिकी बेप्रकारे छे तेकहेछे । पापथी

आदि तत्र भवाधिकरणिकीति । ४ । कायिकी द्विधा । अणुवरयकायकिरियाचेवत्ति । अनुपरतस्या विरतस्य सावद्यात् मिथ्यादृष्टे सम्यग्दृष्टे र्वा कायक्रि योत्क्षेपादिलक्षणा कर्मबन्धनिबन्धन मनुपरतकायक्रिया तथा । दुप्पउत्तकायकिरियाचेवत्ति । दुःप्रयुक्तस्य दुष्टप्रयोगवतो दुरणिहितस्यें द्रियाण्याश्रि त्ये ष्टानिष्टविषयप्राप्तौ मनाग् संवेदनिर्वेदगमनेन तथा निंद्रियमाश्रित्या ऽशुभमनःसंकल्पद्वारेणा पवर्गमार्गं प्रति दुर्व्यवस्थितस्य प्रमत्तसंयतस्ये त्यर्थः कायक्रिया दुःप्रयुक्तकायक्रियेति । ५ । आधिकरणिकी द्विधा तत्र । संजोयणाहिगरणियाचेवत्ति । यत्पूर्वनिर्वर्त्तितयोः खड्गतन्मुष्ट्यादिकयो रर्थयोः संयोजनं क्रियते सा संयोजनाधिकरणिकी । तथा । णिव्वत्तणाहिगरणियाचेवत्ति । यगादित स्तयोः निर्वर्त्तनं सा निर्वर्त्तनाधिकरणिकीति । ६ । पुन र न्यथा द्वे ॥ पाउसियाचेवत्ति ॥ प्रद्वेषोमत्सर स्तेन निर्वृत्ता प्राद्वेषिकी तथा ॥ पारियावणियाचेवत्ति ॥ परितापन न्ताडनादिदुःखविशेषलक्षण न्तेन

किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा अणुवरयकायकिरियाचेव दुपउत्तकायकिरियाचेव आहिगरणिया कि रिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा संजोयणाहिगरणियाचेव णिव्वत्तणाहिगरणियाचेव दोकिरियाउ पन्नत्ता

निवर्त्यों नथी अविरती मिथ्यात्वी अथवा सम्यग् दृष्टीनें काया हलावते चलावते पापलागे ते अनुपरतकायिकी क्रिया । पांचू इंद्री आश्रीनें इष्ट अनिष्ट वस्तुथी दुख सुख उपजे ते अथवा मांठे मनना संकल्पे करे ते प्रमत्त साधुनें दुप्रयुक्त कायिकी क्रिया । अधिकरणकी क्रिया । कायानी क्रिया ते बेप्र कारे कही भगवते ते कहे छे । एक संयोजनाधिकरणिकी जे खडगने मुष्टिने जोडवी पालीने हाथानो संयोग करवो इत्यादिक । बीजी निवर्त्तनाधि करणिकी जे खडगादि अधिकरणकरावी राखवा घरटी मूसल हलादिक सजकारी राखे । वली ये क्रिया कही भगवते अजीवपुदगलथी ते कहे छे ।

निर्वृत्ता पारितापनिकी । ७। आद्याद्विधा ॥ जीवपाउसियाचेवत्ति ॥ जीवे प्रद्वेषा ज्जीवप्राद्वेषिकी तथा ॥ अजीवपाउसियाचेवत्ति ॥ अजीवे पाषा णादौ स्खलितस्य प्रद्वेषा दजीवप्राद्वेषिकीति । ८ । द्वितीयापि द्विधा ॥ सहत्थपारियावणियाचेवत्ति ॥ स्वहस्तेन स्वदेहस्य परदेहस्य वा परितापन कुर्वतः स्वहस्तपारितापनिकी तथा ॥ परहत्थपारियावणियाचेवत्ति ॥ परहस्तेन तथैव तत्कारयतः परहस्तपारितापनिकीति । ८ । अन्यथा द्वे ॥ पा णाइवायकिरियाचेवत्ति ॥ प्रतीता तथा ॥ अपच्चक्खाणकिरियाचेवत्ति ॥ अप्रत्याख्यान अविरति स्तन्निमित्तकर्मबन्धो ऽप्रत्याख्यानक्रिया सा चाविरताना

तंजहा पाउसिआचेव पारियावणियाचेव पाउसियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीवपाउसियाचेव अजीवपाउसियाचेव पारियावणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सहत्थपारियावणियाचेव परहत्थ पारियावणियाचेव दोकिरिआउ पन्नत्ता तंजहा पाणाइवायकिरियाचेव अपच्चक्खाणकिरियाचेव पा

प्रद्वेषिकी क्रिया जेकोई नो मत्सर अदेखाई करे ते । ताडनादि करी कोईने दुख दीये तेपरितापनिकी । प्रद्वेषिकी बेप्रकारे कही भगवंते ते कहेछे। एक जीव प्रद्वेषिकी जेकोई जीवथी द्वेषकरिवो । बीजी अजीव प्रद्वेषिकीजीते थांभे पाषाणे अघडाये तिवारे ते थांभा प्रमुख ऊपरि द्वेषनो उपजि वो । परितापनिकी नां बे भेदछे ते कहेछे । पोताने हाथे पोताना शरीरने तथा परना शरीरने दुखनो करिवो ते स्वहस्तपारियावणियाक्रिया । परहाथें पोतानें परनें परिताप करिवो ते परहस्तपारितापनिकी । वली क्रिया बे प्रकारे कही भगवंते ते कहे छे । प्राणातिपातिकी जे जीव हिंसाथी पापकर्म बंधायें। अविरतिथी पापकर्म बंधाये ते प्रत्याख्यानकी क्रिया अविरतिपातिकी क्रिया । प्राणातिपातकी क्रिया बे प्रकारे

भवतीति ॥ १० ॥ प्रादातिषा ॥ सहत्थपाणाइवायकिरियाचेवत्ति ॥ स्वहस्तेन स्वप्राणा निर्वेदादिना परप्राणा त्वा क्रोधादिना तिपातयतः स्वहस्तप्रा णातिपातक्रिया तथा ॥ परहत्थपाणाइवायकिरियाचेवत्ति ॥ परहस्तेन तथैव परहस्तप्राणातिपातक्रियेति । ११ । द्वितीयापि द्विधा ॥ जीवअपच क्खाणकिरियाचेवत्ति ॥ जीवविषये प्रत्याख्यानाभावेन यो बन्धादि व्यापारः सा जीवाप्रत्याख्यानक्रिया तथा ॥ अजीवापच्चक्खाणकिरियाचेवत्ति ॥ यद जीवेषु मद्यादिष्व प्रत्याख्यानात् कर्मबन्धनं सा अजीवाप्रत्याख्यानक्रियेति । १२ । पुन रन्यथा द्वे ॥ आरंभियाचेवत्ति ॥ आरम्भणमारम्भ स्तत्रभवा आर म्भिकी तथा ॥ पारिग्गहियाचेवत्ति ॥ परिग्रहे भवा पारिग्रहिकीति । १३ । आद्या द्वेधा ॥ जीवआरंभियाचेवत्ति ॥ यज्जीवाना रभमाणस्यो पमर्दतः ॥

णाइवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सहत्थपाणाइवायकिरियाचेव परहत्थपाणाइवायकिरियाचेव अप पच्चक्खाणकिरिआ दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीवपच्चक्खाणकिरियाचेव अजीवपच्चक्खाणकिरियाचेव दोकि रियाउ पन्नत्ता तंजहा आरंभियाचेव पारिग्गहिआचेव आरंभियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीवआ

कही ते कहे छे । पोताने हाथे पोतानां प्राणने अथवा क्रोधथी पर प्राणने हणें ते स्वहस्तप्राणातिपातकी क्रिया । इमज परहाथें पोतानां प्राण हणें ते परहस्तप्राणातिपातकी क्रिया । अप्रत्याख्यानकी क्रिया बे प्रकारे छे ते कहे छे । जे वनस्पति सचित्त जीव सहितनें विषें पचखाणविना कर्म बंधायें ते अपचखाणकी क्रिया । मदिरादि अजीवनें विषे पचखाण नही ते अविरति थी कर्मबंध ते अजीव अपचखाणकी क्रिया । वली बे क्रिया कही भगवते ते कहे छे । एक आरंभिकी । बीजी परिगृहिकी आरंभिकी बे प्रकारें कही भगवंते ते कहेछे । जे सचित्त माटी प्रमुखना आरंभणी

कर्म्मबन्धन सा जीवारम्भिकी तथा ॥ अजीवारंभियाचेवत्ति ॥ यच्चाजीवान् जीव कलेवराणि पिष्टादिमयजीवाकृतींश्च वस्त्रादीन्वारभमाणस्य सा अजीवारंभिकीति । १४ । एवपरिग्गहियाचेवत्ति ॥ आरम्भिकीवद्द्विविधे त्यर्थः जोवाजीव परिग्रहप्रभवत्वा त्तस्या इतिभावः । १५ । पुनरन्यथाद्वे ॥ मायावतियाचेवत्ति ॥ माया शाठ्य प्रत्ययो निमित्तंयस्याः कर्म्मबधक्रियाया व्यापारस्य सा तथा ॥ मिच्छादंसणवत्तियाचेवत्ति ॥ मिथ्यादर्शन मिथ्यात्व प्रत्ययो यस्याः सा तथेति । १६ । आद्या द्वेधा ॥ आयभाववकणयाचेवत्ति ॥ आत्मभावस्या प्रशस्तस्य वक्रनता वक्रीकरण प्रशस्ततत्वोपदर्शनतात्मभाववंकनता वक्रनानाच्च बहुलविवक्षाया भ्भावप्रत्ययो नविरुद्धः साच क्रिया व्यापारत्वात् तथा परभाववंकणयाचेवत्ति ॥ परभावस्य वङ्कनता वञ्चनता याकूटलेखक

रंभिआचेव अजीवआरंभियाचेव एवंपारिग्गहियावि दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा मायावत्तिआचेव मिच्छादंसणवत्तिआचेव मायावत्तिआकिरिआ दुविहा पन्नत्ता तंजहा आयभाववंकणयाचेव परभाववकणयाचेव

कर्म बंधायें ते जीव आरंभिकी क्रिया । जीव रहित कलेवरनें अग्नि संस्कार तथा वस्त्रादि वणवानो आरंभ तेथी कर्म बंधायें ते अजीवआरंभिकी किरिया । एम परिगृहिकीनां बे भेद जीव परिगृहिकी मनुष्यादिकनी अजीव परिग्गहिया सुवर्ण गृहादिकनी । वली किरिया बेप्रकारे कही भगवंतें ते कहे छे । मायाप्रत्ययिकी जे कपट करिवाथीलागे । मिथ्यात्वदर्शनकी मिथ्याकरणीकरे तेथीकर्म बंधाये अदेवादिके देवादि बुद्धिनो धारवो ते मिथ्यात । माया प्रत्ययिकी नां बे भेदछे ते कहेछे । आतमपरिणाम अभ्यंतर वांका बाहिर रूडाकरी देखाडे ते आतमभाव वक्रनता । कूटलेखादिके करी परनें बंचीये ते परभावबंकनता । मिथ्यादर्शन क्रिया बेप्रकारेछे ते कहेछे । पोताना शरीर प्रमाणथी जीवने ओछो अथवा अधिकोकरी

रणादिभिः सा परभाववंकनतेति यतीव्वव्याख्येयं ॥ तंतंभायमायरइ जेणपरोवंचिज्जइकूडलेहकरणाईहिति ॥ १७ ॥ द्वितीयापिद्वेधा ॥ ऊणाइरित्त मिच्छादंसणवत्तियाचेवत्ति ॥ ऊनं स्वप्रमाणाद्धीन मतिरिक्तं ततोधिक मात्मादिवस्तु तद्विषय मिथ्यादर्शनं तदेवप्रत्ययो यस्याः सा ऊनातिरिक्तमिथ्यादर्शन प्रत्ययेति । तथाहि । कोपिमिथ्यादृष्टि रात्मान शरीर व्यापकमपि । अङ्गुष्टपर्वमात्रं यवमात्र श्यामाकतंदुलमात्रं चेति हीनतया चेति । तथान्यः पचध नुः शतिक सर्वव्यापकं चेत्यधिकतया भिमन्यते । तथा तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तियाचेवत्ति । तस्मादूनातिरिक्तमिथ्यादर्शना द्व्यतिरिक्ता मिथ्यादर्शन नास्त्येवा त्मे त्यादिमतरूप प्रत्ययो यस्याः सा तथेति । १८ । पुन रन्यथा द्वे दिठ्ठियाचेवत्ति । दृष्टे र्जाता दृष्टिजा अथवा दृष्टं दर्शनवस्तुवानिमित्ततयाय

मिच्छादंसणवत्तिआकिरिआ दुविहा पन्नत्ता तंजहा ऊणाइरित्तमिच्छादंसणवत्तियाचेव तव्वइरित्तमिच्छा दंसणवत्तियाचेव दोकिरियाचेव पन्नत्ता तं० दिठियाचेव पुठिआचेव दिठियाकिरिया दुविहा प० तं०

मानें ते ऊनातिरिक्त मिथ्यादर्शन क्रिया जिमकोईक मिथ्याती शरीर प्रमाण आत्माने कहे जे अगूठाना पर्वमात्र यव जेवडो सांजलिये धान्यकण जेवडो आतमाछे । कोईकहे पांचसे धनुषथी पणि जीव तेहथी मोटोछे एह मिथ्यात्व बचन भगवंते जेहनूं जेवडो शरीर तेहनें तेवडो जीव मान कहिवो हाथीनें हाथीना शरीर प्रमाणें अनें कुंथुआने कुंथुआना शरीरप्रमाणे जीवछे । वली केतलाई मिथ्याती कहेछे जे हीणो तथा अधिको आतमा अथवा जीव होजनथी पंचभूत और जीव मिल्याछे ते तदव्यतिरिक्त मिथ्यादर्शन क्रिया । वली बे क्रिया ते कहे छे । दृष्टि जोवाथी कर्म बंधायें जवाई प्रमुख जोतां ते दृष्टिकी । पापनूं प्रश्न पूछिवानी तथा फरसवूं तेहनी । दृष्टीनी क्रिया बेप्रकारेकही ते कहे छे । जीव देखवानी

स्यामस्तिसाद्दष्टिका दर्शनार्थं या गतिक्रिया दर्शना द्दा यत्कर्मेति सा दृष्टिजा दृष्टिका वा । तथा पुट्ठियाचेवत्ति । पृष्टिः पृच्छा ततो जाता पृष्टिजाप्रश्न जनितो व्यापारः । अथवा पृष्ट प्रश्नःवस्तु वा तदस्तिकारणत्वेन यस्यां सा पृष्टिकेति । अथवा स्पृष्टिस्पर्शन ततोजातास्पृष्टिजातथैवस्पृष्टिकापीति । १९ । आद्याद्विधा । जीवदिट्ठियाचेवत्ति । या अश्वादिदर्शनार्थंगच्छतः । तथा अजीवदिट्ठियाचेवत्ति । अजीवानां चित्रकर्मादीनां दर्शनार्थं गच्छतो या सा अजी वदृष्टिकेति २० । एवपुट्ठियाचेवत्ति । एवमितिजीवाजीवभेदेनद्विधैव । तथाहि । जीवमजीव वा रागद्वेषाभ्यां पृच्छतः स्पृशतो वा या सा जीवपृष्टिका जीव स्पृष्टिका वा अजीवपृष्टिका अजीवस्पृष्टिकावेति । २१ । पुन रन्यथाद्वे पाडुच्चियाचेवत्ति । बाह्यवस्तु प्रतीत्याश्रित्य भवा सा प्रातीतिका तथा सामतोवणि वाइयाचेवत्ति समतात्सर्वतः उपनिपातो जनमीलक स्तस्मिन् भवा सामतोपनिपातिकीति । २२ । आद्या द्विधा जीवपाडुच्चियाचेवत्ति । जीव प्रतीत्य यः क र्मबंधः सा तथा । तथा अजीवपाडुच्चियाचेवत्ति ॥ अजीवंप्रतीत्य योरागद्वेषोद्भव स्तज्जो योबधः सा अजीवप्रातीतिकीति । २३ । द्वितीयापिद्विधैवे त्यतिदिश न्नाह

जीवदिट्ठियाचेव अजीवदिट्ठियाचेव एवंपुट्ठियावि दोकिरियाउ प० तं० पाडुच्चियाचेव सामंतोवणिवाइया चेव पाडुच्चियाकिरिआदुविहा प० तं० जीवपाडुच्चिआचेव अजीवपाडुच्चिआचेव एवं सामंतोवणिवाइया

क्रिया जे हाथी घोडा जोवा जातां कर्म लागे । चित्रामण प्रमुख जोवा जातां पापबंधे ते अजीव दृष्टिका । इमज जीव आश्री स्पर्शकीक्रिया रागद्वेषे जीव अजीवनो प्रश्नपूछे तथा फरसतै । वली बे क्रिया छे ते कहै छे बाहिरनी वस्तु आश्रीने होय ते प्राणातिपातिकी । सर्व प्रकारे जनना मेलावाथी ऊपनी ते सामंतोपनिपातिकी । प्रातीतिकी बे प्रकारे छे ते कहै छे । जीव आश्री कर्म बधे ते जीव प्रातीतिकी अजीव आश्री राग

एवं सामन्तोवणिवाइयत्ति ॥ तथाहि कस्यापि षंढो रूपवानस्ति तं च जनो यथायथाप्रलोकयति प्रशंसयतिच तथा तथा तत्स्वामीहृष्यतीति जीवसामंतो प
निपातिकी तथा रथादौ तथैवहृष्यतः । अजीवसामतोपनिपातिकीति । २४ । अन्यथा दे साहत्थियाचेवत्ति । स्वहस्तेननिर्वृत्तास्वाहस्तिकी । तथा णेसत्थि
याचेवत्ति । निसर्ज्जननिसृष्ट क्षेपणमित्यर्थः । तत्रभवा नैसृष्टिकी निसृजतो यः कर्मबन्धइत्यर्थः निसर्गएवचेति । २५ । तत्राद्याद्विधा । जीवसाहत्थिया
चेवत्ति । यत्स्वहस्तगृहीतेन जीव मारयति सा जोवस्वाहस्तिकी । तथाअजीवसाहत्थियाचेवत्ति । यत्स्वहस्तगृहीतेनैवा जीवेन खड्गादिनाजीव मार
यति सा अजीवस्वाहस्तिकीति । अथवा स्वहस्तेनजीवताडयत एका । अजीव ताडयतोन्येति । २६ । द्वितीयापि जीवाजीवभेदैवेत्यतिदिशन्नाह । एव
णेसत्थियाचेवत्ति । तथाहि । राजादिसमादेशाद्युदकस्य यन्त्रादिभि निंसर्जन साजीवनैसृष्टिकीति । यत्तुकाण्डादीनाधनुरादिभि. सा अजीवनैसृष्टिकी

वि दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा साहत्थियाचेव णेसत्थियाचेव साहत्थियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा
जीवसाहत्थियाचेव ऋजीवसाहत्थियाचेव एवंणेसत्थियावि दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा ऋाणवणियाचेव

द्वेषथी ऊपनी जेते अजीव प्रातीतिकी । सामंतोपनिपातिकी बे प्रकारे । कोई एक वलद रूपवंत देखी लोक वखाणे तेहनी शोभा वर्णवे तिमतिम
ते वैलनो धणी सुख पामे ते जीव सामतोपनिपातिकी । इमज अजीव सामंतोपनिपातिकी कहिवी । बे क्रिया कही भगवंत ते कहेछे । पोताने
हाथथी ऊपनी ते स्वहस्तिकी । पाखाणादिक नांखवाथी ऊपनी ते नैसस्त्रिकी । स्वहस्तिकी क्रिया बे प्रकारें कही ते कहे छे। पोताना हाथे जाली
जीवें करी जीवने हणे ते जीव स्वहस्तिकी पोतानां हाथें अजीव खडगादिके अजीवने हणे ते अजीव स्वहस्तिकी । इम राजादिकनी आग्याये यन्त्रने

ति । अथवागुर्वादी जीव शिष्यंपुत्रं वा निसृजती ददत एका अजीव पुन रेषणीय भक्तपानादिका निसृजती ददतोन्येति । २७ । पुनरन्यथाद्वे आणवणिया चेवत्ति । आज्ञापनस्या देशनस्येय माज्ञापन मेवेत्याज्ञापनी सैवाज्ञापनिका तज्जः कर्मबन्ध. आदेशनमेववेति । आनायनवा आनायनी । तथावेयारणि याचेवत्ति । विदारणविचारणवितारण वा स्वार्थिकप्रत्ययोपादाना द्वैदारणेत्यादिवाच्यमिति । २८ । एतेचद्वेअपिद्विधाजीवाजीवभेदादितिे । तथाहि । जीवमाज्ञापयतअनायतोवा परेणजीवाज्ञापनी जीवानायनीवा एवमेवाजीवविषया अजीवाज्ञापनी अजीवानायनी वेति । २९ । तथावेयारणियत्ति । जीवमजीववाविदारयतिस्फोटयतीति अथवा । जीवमजीववा असमानभागेषु यो विक्रीणाति द्वैभाषिकोविचारयति । परियत्यावेइत्तिभणितहोत्ति । अथवा जीवपुरुषवितारयतिप्रतारयति वञ्चयतीत्यर्थोऽसद्गुणैरेताद्दशस्ताद्दशस्त्वमिति पुरुषादिवितारणबुद्ध्यवा जीवभणत्येताद्दशमेतदिति यत्सा । जीववेयारणिया अजीववेयारणियावत्ति । एतत्सर्वमतिदेशेनाह । जहेवणेसत्थियत्ति । ३० । अथवा द्वेअणाभोगवत्तियाचेवत्ति अनाभोगोज्ञानादि अज्ञान प्रत्ययो निमित्त य

वेयारणियाचेव जहेव णेसत्थिया दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा अणाभोगवत्तियाचेव अणवकंखवत्तियाचेव अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा अणाउत्तआयणयाचेव अणाउत्तपमज्जणयाचेव अण

विषे पाणी नाखवुं । बे क्रिया कही भगवंते ते कहे छे । स्वामीनी आग्यायी कर्म बंधाये ते आग्यापनी । विदारवुं छेदवुं तेहथी कर्म बंधे ते वि दारिकी । नैसत्थिकीनी परे बे प्रकारे कही । वली बे प्रकारे क्रिया कही ते कहे छे । उपयोगविना कर्म बंधे ते अणाभोगवत्तिया । पोतानां शरी रनी अपेक्षा विना क्रिया लागे ते अनवकांक्षा । अणाभोगवत्तिया बे प्रकारे ते कहे छे । उपयोग विनां वस्त्रादिकनो लेवुं । उपयोग विना पुंजवुं

स्याःसा तथा अणवकंखवत्तियाचेवत्ति। अनाकांक्षा स्वशरीराद्यनपेक्षत्वं सैव प्रत्ययो यस्याःसा नवकांक्षाप्रत्ययेति। २१। आयाद्विधा। अणाउत्तआइय याचेत्ति। अनायुक्तअनाभोगवाननुपयुक्तइत्यर्थः तस्यादानता वस्त्रादिविषये गहणता अनायुक्तादानता॥ तथा अणाउत्तपमज्जणयाचेवत्ति अनायुक्तस्यैव पात्रादिविषयाप्रमार्जनता अनायुक्तप्रमार्जनता एकचताप्रत्ययः स्वार्थिकः प्राकृतत्वेन आदानादीनां भावविवक्षयावेति। २२। द्वितीयापिद्विधा आयसरीरे त्यादि तत्रात्मशरीरा नवकांक्षाप्रत्यया सा स्वशरीरक्षतिकारिकर्माणिकुर्वतः तथापरशरीरक्षतिकर्माणितुकुर्वतोद्वितीयेति। २३। दोकिरियेत्यादिनीणि सूत्राणिकाख्यानि नवरं प्रेमरागोमायालोभलक्षणःद्वेषः क्रोधमानलक्षणइति। २४। यदन्नव्याख्यातंतत्सुगमत्वादिति एताश्चक्रियाःप्रायोगर्हणीयाइति गर्हा

वकंखवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता आयसरीरअणवकंखवत्तियाचेव परसरीरअणवकंखवत्तियाचेव दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा पेज्जवत्तिआचेव दोसवत्तिआचेव पेज्जवत्तियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा मायावत्तियाचेव लोभवत्तियाचेव दोसवत्तियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा कोहेचेव माणेचेव दुविहा

प्रमार्जवुं तेथी कर्म बंध। अणवकांक्षा क्रिया बे प्रकारे ते कहे छे। पोताना शरीरथी पापलागे तेहवा कर्म करेते। परनां शरीरथी पापकरतां किरिया लागे ते परशरीर अणवकंखवत्तिया। वली बे क्रिया कही ते कहे छे। प्रेम स्नेहनी क्रिया द्वेष कोपनी क्रिया। प्रेमनी क्रिया बे प्रकारे कही ते कहे छे। लोभघणो करवो ते लोभनी राग क्रिया लोभथी रागधरे। द्वेषनी किरिया बे प्रकारेछे ते कहे छे। क्रोधथी कर्म बंधायें मानथी कर्म बंधाये जेम कोणिक राजायें विशाला नगरी भाजी। एसर्व क्रिया गर्हणीय छे एहथी तेगर्हणा ते कहे छे। पापनी निंदा तेगर्हणा। एकमने

माह ॥ दुविहागरिहेत्यादि॥ विधानविधा द्वेविधेभेदोयस्याःसाद्विविधागर्हणंगर्हा दुश्चरितं प्रतिकुत्सासाचस्वपरविषयत्वेनद्विविधा सापिमिथ्यादृष्टेरनुपयुक्त सम्यग्दृष्टेश्च द्रव्यगर्हाअप्रधानगर्हेत्यर्थः द्रव्यशब्दस्याप्रधानार्थत्वादुक्तंच अप्पाहन्नेविदृहकत्थइदिट्ठोहुद्दुचसद्दोत्ति अगारमद्दओजहदव्वायरिओसयाभव्वोत्ति १ ॥ सम्यग्दृष्टेस्तूपयुक्तस्यभावगर्हेतिचतुर्द्धागर्हणीयभेदाद्बहुप्रकारावासाचेहकरणापेक्षया द्विविधोक्ता तथाचाह ॥ मणसावेगेगरिहइत्ति॥ मनसाचेतसा वा शब्दोविकल्पार्थोऽवधारणार्थोवा ततोमनसैवनवाचेत्यर्थ. कायोत्सर्गस्थोदुर्मुखसुनुखाभिधानपुरुषद्वयनिंदिता भिष्टुतस्तद्वचनोपलब्धसामतपरिभूतस्वतन यराजवार्त्तोमनसासमारब्धपुत्रपरिभवकारिसामतसंग्रामो वैकल्पिकप्रहरणक्षये स्वतीर्थकग्रहणार्थव्यापारितहस्तसस्पृष्टलुठितमस्तक स्ततःसमुपजातपश्चा त्तापानलज्वालाकलापदन्दह्यमानसकलकर्मेन्धनोराजर्षिप्रसन्नचन्द्रइवएकः कोपिसाध्वादिर्गर्हितंजुगुप्सितंगर्हमितिगम्यते तथा वचसावा वाचा अथवा वचसैवनमनसाभावतो दुःश्चरितादिरक्तत्वाज्जनरञ्जनार्थङ्गर्हाप्रवृत्ताङ्गाररर्द्दकादिप्रायसाधुवत् एकोन्योगर्हतेइति अथवा ॥ मणसावेगत्ति॥ इहअपिचसम्भा वनेतेनसम्भाव्यते अयमर्थोऽपिमनस्यैकोगर्हतेन्योवचसेति अथवामनसापिनकेवलंवचसाएकोगर्हते तथावचसापिनकेवलमनसाएकइति । सएवगर्हतेउभय थाप्ये कएवगर्हतइतिभावः अन्यथागर्हाद्वैविध्यमाह ॥ अहवेत्यादि॥ अथवेति पूर्वोक्तद्वैविध्यप्रकारापेक्षया द्विविधागर्हा प्रज्ञप्तेति प्रागिव अपिः सम्भावनेतेन अपि

गरिहा पन्नत्ता तंजहा मणसावेगेगरिहइ वयसावेगेगरिहइ अहवागरिहा दुविहा पन्नत्ता तंजहा दीहंएगे

गर्हे जिम सुमुख दुमुखना वचनथी पापकरी निंदवो प्रसंनचंद्रनी परें । एक लोक नें रींझविवाने अर्थे वचनें गर्हे पणि मनथी नथी अंगार मर्द नकाचार्य नी परे । वली गर्हणा बे प्रकारे छे ते कहे छे । एक दीर्घ कालनी गर्हणा जन्म पर्यंत नां पाप एक एक निंदवो । एक प्राणी थोडा

दीर्घां बृहतीं अद्वां कालं यावदेक: कोपि गर्हते गर्हणीय माजन्मापी त्यर्थो न्यथा वा दीर्घत्वं विवचया भावनीय मापेचितत्वात् दीर्घह्रस्वयो रिति एवम पि ह्रस्वामल्पा यावदेको न्य इति अथवा दीर्घामेव यावत् ह्रस्वामेव यावदिति व्याख्येय मपेरवधारणार्थत्वा दिति एकएव वा द्विधा कालभेदेन गर्हते भावभेदा दिति अथवा दीर्घं ह्रस्व म्वा कालमेव गर्हत इति अतीते गर्ह्ये कर्म्मणि गर्हाभवति भविष्यतितु प्रत्याख्यान उक्तञ्च अद्दयनिंदामि पडुप्पन्नंसवरेमि अणागय पचक्खामीति प्रत्याख्यानमाह ॥ दुविहेपच्चक्खाणेइत्यादि॥ प्रमादप्रातिकूल्येन मर्यादया ख्यानं कथन म्प्रत्याख्यान म्विधिनिषेधविषया प्रतिज्ञेत्यर्थ. तच्च द्रव्यतो मिथ्यादृष्टे: सम्यग्दृष्टेर्वा नुपयुक्तस्य कृतचतुर्मासप्रत्याख्यानाया पारणकदिनमासदानप्रवृत्ताया राजदुहितु रेवेति॥ भावप्रत्याख्यान सुपयुक्तसम्यग्दृष्टे रिति तच्च देशसर्व्वमूलगुणोत्तरगुणभेदा दनेकविधमपि करणभेदा द्विविध माहच मनसाचैक: प्रत्याख्याति वधादिक निवृत्तिविषयीकरोति शेष प्रागिवेति प्रका रान्तरेणापि तदाह ॥ अहवेत्यादि॥ सुगम ज्ञानपूर्व्वकं प्रत्याख्यानादिमोचफल मतआह ॥ दोहिठाणेहिइत्यादि ॥ द्वाभ्या स्थानाभ्या गुणाभ्या सपन्नो युक्तो

अहं रहस्संएगेअहं दुविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते तंजहा मणसावेगे पच्चक्खाति वयसावेगेपच्चक्खाति अहवा पच्चक्खाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा दीहंएगेअद्धपच्चक्खाति रहस्संएगेअद्धपच्चक्खाति दोहिंठाणेहिं अणपरे

कालना कीधा पापनी गर्हणाकरे दश वर्ष नां पनरह बर्षनां कीधा पापनी निंदाकरे। अंतकालनी निंदा। पचखाणना बे प्रकार छे ते कहे छे एक मनथी भाव शुद्ध पचखाणकरे ते समकित दृष्टी जीव। एक वचने पचखाणकरे मन विना ते मिथ्यात्व। अथवा पचखाण बे प्रकारेछे ते कहे छे। एक प्राणी दीर्घ अद्धाकाल नो पचखाणकरे। एक थोडा कालनो पचखाणकरे दशवर्षनो पनरह बर्षनो पचखाण करे। बे प्रकारे गुणसहित जे

नास्यागारङ्गेह मस्ती त्यनगारः साधु र्नास्त्यादिरस्ये त्यनादिकं तत् अवदग्रं पर्यन्त स्तन्नास्ति यस्य सामान्यजीवापेक्षया तदनवदग्र तत् दीर्घा अद्धा कालो यस्य तद्दीर्घाद्ध न्तत् मकारआगमिको दीर्घोवाध्वा मार्गो यस्मिन् स्तद्दीर्घाध्व तच्चतुरन्तं चतुर्विभाग न्नरकादिगतिविभागेन दीर्घत्व प्राक्तत्वा दिति ससारकान्तार म्भवारण्य व्यतिव्रजे दतिक्रमे त्तद्यथा विद्ययाचेव ज्ञानेनचैव चरणेनचेव चारित्रेणचैवेति ॥ इहच ससारकान्तारव्यतिव्रजन प्रतिविद्याचरण यो र्यौगपद्येनैव कारणत्व मवगन्तव्य मेकैकशो विद्याक्रिययो रैहिकार्थे ष्वप्यकारणत्वात् नन्वनयोः कारणतया अविशेषाभिधानेपि प्रधान ज्ञानमेव न च रण अथवा ज्ञान मेवैक ङ्कारण न्नतु क्रिया यतो ज्ञानफलमेवासौ किञ्च यथा क्रिया ज्ञानस्य फल न्तथा शेषमपि 'यत्क्रियानन्तर मवाप्यते बोधकालेपि य ज्ज्ञेयपरिच्छेदात्मक यच्च रागादिविनिग्रहमय मेषा मविशेषेण ज्ञान कारण यथा मृत्तिका घटस्य कारण म्भवतीति तदन्तरालवर्त्तिनां पिण्डशावकस्था सकोशकुशूलादीना मपि कारणता मापद्यते तथेह ज्ञानमपि भावाभावस्य तदन्तरालवर्त्तिना ञ्च तत्त्वपरिच्छेदसमाधानादीनां कारणमिति यच्चा नुस्मर णमात्रमन्त्रपूतविषभक्षणभोगमनादिक मनेकविधफल मुपलभ्यते साच्चा त्तदपि क्रियाशून्यस्य ज्ञानस्य यथाचैतत् दृष्टफल तथा अदृष्ट मप्यनुमीयत इति आहच आहपहाणनाण णचरित्तनाणमेववासुद्धं कारणमिह्नउकिरिया साविह्नुनाणप्फलजम्हा ॥ १ ॥ जहसानाणस्सफल तहसेसपितहवोहकालेवि

सपन्ने अ्णगारे अ्णाईयं अ्णवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं विइवएज्जा तंजहा विज्जाएचेव चर

अणगार साधु तेहनी आदिनथी नदीर्घ मोटोकाल। जेहनो अंत छेहडो तथा मार्गछे जेहनो च्यार गति नरक देव मनुष्य तिर्यच एच्यारें करी दीर्घ मोटी ससार रूप अटवी उतरे अतिक्रमे साधु ते बे गुण भेदक ते कहे छे। ग्यानेकरी ने नवने तरे। ग्यान क्रियाथी मोक्ष तथा चारित्र थकी

नेयपरिच्छेयमय रागाइविणिग्गहोजोय ॥ २ ॥ जंचमणीचिंतियमं तपूयविसभक्खणाइबहुभेयं फलमिहतंपच्चक्खं किरियारहियस्सनाणस्सत्ति ॥ ३ ॥ अ
त्रोच्यते य त्तावदुक्तं ज्ञानमेवप्रधान ज्ञानमेव चैक कारण न क्रिया यतो ज्ञानफलमेवासा विति ॥ तदयुक्तं यतो यतएव ज्ञानात् क्रिया तत श्रेष्टफलप्राप्ति
रतएवोभयमपि कारण मिष्यते अन्यथाहि ज्ञानफल क्रियेति क्रियापरिकल्पन मनर्थकं ज्ञानमेवहि क्रियाविकलमपि प्रसाधये न्नच साधयति क्रियाभ्युप
गमात् ज्ञानक्रियाप्रतिपत्तौच ज्ञान परम्परयो पकुरुते अनन्तरञ्च क्रिया यत स्तस्मात् क्रियैव प्रधानतर युक्ता कारण नाप्रधान मकारण चेति अथवा युग
पदुपकुरुतस्तत उभयमपि युक्ता नयुक्ता मप्राधान्यं क्रियाया अकारणत्व ञ्चेति यः पुन रकारणत्व मेव क्रियायाः प्रतिपद्यते त प्रतीद विशेषेणोच्यते क्रिया
हि साचात् कारित्वात् कारणमन्य ज्ञानन्तु परम्परोपकारित्वा दमत्यमतः को हेतु र्यदत्य विहाया नत्य कारण मिष्यते अथ सहचारिताङ्गीक्रियते अ
नयो रतोपि ज्ञानमेव कारण नक्रिये त्यत्र नहेतु रस्तीति यच्चोक्त बोधकालेपीत्यादि॥ तत्र ज्ञेयपरिच्छेदो ज्ञानमेवेति रागादिसमञ्च सयमक्रियैव ज्ञान
कारणाद्भवे दिति प्रतिपद्यामहे किन्तु तत्फले भववियोगाख्येय विचारो यदुत कि तत् ज्ञानस्य क्रियाया स्तदुभयस्य वा फलमिति तत्र न ज्ञानस्यैव क्रियाफ
लत्वा त्तस्य नापिकेवलक्रियाया. क्रियामात्रत्वात् उन्मत्तकक्रियावत् ततः पारिशेष्याज् ज्ञानसहितक्रियाया इति यच्चोक्त मनुस्मृतिज्ञानमात्रादीना फलमु
पलभ्यते तत्र ब्रूमो मन्त्रेश्वपि परिजपनादिक्रियायाः साधनभावो न मन्त्रज्ञानस्य प्रत्यचविरुद्ध मितिचे द्यतो दृष्टहि क्वचित् मन्त्रान् स्मृतिमात्रज्ञाना दि
ष्टफल मिति अत्रोच्यते न मन्त्रज्ञानमात्रनिर्वर्त्त्यं तत्फल तज्ज्ञानस्या क्रियत्वात् इह यदक्रिय न तत्कार्यस्यनिर्वर्त्तक दृष्ट यथा काशकुसुम यच्चनिर्वर्त्तक त
दक्रिय न भवति यथाकुलालः नचेद प्रत्यचविरुद्ध नहि ज्ञान साचात्फल मुपहरे दुपलच्यते इति अथ यदि न मन्त्रज्ञानकृत तत्फलं ततः कुतः पुन स्त
दिति तत्समयनिबद्धदेवता विशेषेभ्य इति ब्रूम स्तेषाहि सक्रियत्वेन न क्रियानिर्वर्त्त्यमेतत् न मन्त्रज्ञानसाध्य मिति आहच तीतकत्तो [आचार्य] भणइ

तस्समयनिवद्धदेवश्रीवह्निय किरियाफलंचियजश्री नसतणाणोवश्रोगस्सत्ति ॥ १ ॥ ननु सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग इति श्रूयते इह तु ज्ञानक्रियाभ्या मसा वुक्त इति कथ नविरोधः अथहिस्थानकानुरोधा द्देव निर्देशेपि न विरोधो नैव मवधारणगर्भत्वा न्निर्देशस्य अत्रोच्यते विद्या ग्रहणेन दर्शन मप्यविरुद्धं द्दष्टव्य ज्ञानभेदत्वात् सम्यग्दर्शनस्य यथा ह्यवत्रोधात्मकत्वेमति मतेरनाकारत्वा दवग्रहेहेदर्शनं साकारत्वा च्चाऽपायधारणे ज्ञा न मुक्त मेव मध्यवसायात्मकत्वे सत्य वायस्य रुचिरूपोशः सम्यग्दर्शन मवगमरूपोशो ऽवाय एवेति न विरोधो गवधारणं तु ज्ञानादिव्यतिरेकेण नान्यउ पायो भवव्यवच्छेदस्येति दर्शनार्थमिति विद्याचरणेच कथ मात्मन लभत इत्याह ॥ दोठाणाइत्यादि ॥ सूत्राण्येकादश वेस्थाने द्वेवस्तुनो ॥ अपरियाणित्तत्ति॥ अपरिज्ञाय ज्ञपरिज्ञया यथैता वारम्भपरिग्रहा वनर्थाय तथा अल ममाभ्या मिति परिहाराभिमुख्यद्वारेण प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्यायच व्रह्मदत्त वत्तयो रनिर्विण्ण इत्यर्थः ॥ अपरियाइत्तत्ति ॥ क्वचित्पाठ स्तत्र स्वरूपत स्तावदपर्यादाया ऽगृहीत्वेत्यर्थ. आत्मानोनैव केवलिप्रज्ञप्तं जिनोक्त धर्म्म लभेत श्रवण तया श्रवणभावेन श्रोतु मित्यर्थः तद्यथा आरम्भा. कृष्यादिद्वारेण पृथिव्याद्युपमर्दास्तान्परिग्रहा धर्म्मसाधनव्यतिरेकेण धनधान्यादय स्तानिह चैक वचनप्रक्रमेपि व्यत्ययपेत्यवहुवचन मवधारणसमुच्चयो स्ववुध्या ज्ञेयाविति केवला शुद्धा बोधि दर्शन सम्यक्त्व मित्यर्थो वुद्ध्येता ऽनुभवेत् अथवा केवलया वो

णेणचेव दोठाणाई अपरियाणित्ता आयाणोकेवली पन्नत्तंधम्मं लभेज्जा सवणयाए तंजहा आरंभेचेव परि

ग्गहेचेव दोठाणाइंअपरियाइत्ता आयाणोकेवलं वोधिवुज्झिज्जा तंजहा आरंभेचेव परि ग्गहेचेव दोठा

ग्यान चारित्र मोक्ष । बे थानक ग्यान बुद्धिये जाणया विनां जे अनर्थनां हेतु परिहरेवा छाडवा एम जाणयाविना आतमा जीव केवलीनो भाख्यो

ध्येति विभक्तिपरिणामात् बोध्य जीवादीतिगम्यते बुध्येत अहधीतेति मुण्डो द्रव्यत' शिरोलोचन भावतः कषायाद्यपनयनेन भूत्वा सपद्य अगाराद्गेहान्नि ष्क्रम्येतिगम्यते केवला मित्यस्येह सम्बन्धा त्केवलाम्परिपूर्णा म्विशुद्धा वा अनगारिता प्रव्रज्या प्रव्रजेत् यायादिति ॥ एवमिति॥ यथा प्राक् तथोत्तर वा क्येष्वपि ॥ दोठाणाइत्यादि ॥ वाक्य पठनीयमित्यर्थः ॥ ब्रह्मचर्येण ब्रह्मविरमणेन वासो रात्रौ स्वापः तत्रैव वा वासी निवासो ब्रह्मचर्यवासः तमावसे त्कुर्यादिति सयमेन पृथिव्यादिरक्षणलक्षणेन सयमये दात्मान मिति सवरेणाश्रवनिरोधलक्षणेन सवृणुया दाश्रवद्वाराणीतिगम्यते केवल परिपूर्ण स र्वस्वविषयग्राहक ॥ आभिणिवोहियणाण ॥ अर्थाभिमुखो विपर्ययरूपत्वान्नियतो ऽसशयस्वभावत्वा द्वोधोवेदन माभिणिनिवोध, स एवा भिनिबोधिक तन्नतजज्ञान ञ्चेत्याभिनिवोधिकज्ञान मिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्त ओघतः सर्वद्रव्यसर्वपर्यायविषय ॥ उप्पाडेज्जत्ति ॥ उत्पादयेदिति तथा एवमित्यनेनोत्तरप

णाइं अन्नोकेवलंमुण्डेभवित्ता आगाराओअणगारियपव्वेज्जा तंजहा आरंभेचेवपरिग्गहेचेव एवंणोकेवलं बं भचेरवावि समावसेज्जा णोकेवलेण सजमेणंसंजमेज्जा नोकेवलेणंसंवरेण सवरेज्जा नोकेवलमाभिणिबोहि

धर्म न पावे । ते कहे छे । आरम्भ अनर्थ जाणी छाडे परिगृह अनर्थ जाणी छाडे । एम बे थानक जाण्या विना मुड लोचकरावी द्रव्यथी भावथी कषाय मुड । केवल शुद्ध गृहस्थपणो मूकी अणगारपणो पाली नसके तेकहे छे । आरम्भ न छाडे । परिगृह न मूके । तेप्राणी इम एह बे थानक विना जाण्या शुद्धशील पाली न सके सेवी न सके । एम शुद्ध सयम नपामे छकायरक्षा रूप सयम आरम्भ परिगृह मूक्या विना । इम शुद्ध सयम नपामे । एम आरम्भ परिगृह मूक्या विना शुद्ध सर्बवस्तुग्राहक मतिग्यान पणि पामे नही । इम इग्यारह पद जांणिवा । श्रुतग्यान सिद्धातनु चौ

देषु नो केवल उप्पाडेज्जत्ति द्रष्टव्यं ॥ सुयणाणंति ॥ श्रूयते तदितिश्रुत शब्दएव सच भावश्रुतकारणत्वात् ज्ञानंश्रुतज्ञानं श्रुतग्रन्थानुसारि ओघतः सर्वद्रव्य सर्वपर्यायविषय मचरश्रुतादिभेद मिति ॥ तथाओहिणाणंति ॥ अवधीयते अनेनास्मादस्मिन्वे त्यवधिः अवधीयत इत्यधोधोविस्तृत मपरिच्छिद्यते मर्या दया वेति अत्रविज्ञानावरणचयोपशम एव तदुपयोगहेतुत्वा दिति अवधानम्वा ऽवधि विषयपरिच्छेदनमिति अवधिश्चासौ ज्ञानञ्चेत्यवधिज्ञानं इन्द्रियस नोनिरपेच मात्मनो रूपिद्रव्यसाचात्कारणमिति ॥ तथा मणपज्जवनाणंति ॥ मनसि मनसोवा पर्यव परिच्छेदः सएव ज्ञान मथवा मनस' पर्यवा. पर्या यावा विशेषावस्था मन'पर्यवादय. तेषा त्तेषुवा ज्ञान म्मनःपर्यवज्ञान मेवमितरचापि समयचेत्रगतसज्ञिमन्यमानमनोद्रव्यसाचात्कारीति ॥ केवलनाण ति ॥ केवल मसहाय मत्यादिनिरपेचत्वा दकलङ्कत्वा वरणमलाभावात् सकलवा तत्प्रथमतयैवा शेषतदावरणाभावतः सम्पूर्णोत्पत्ते रसाधारणंवा नन्यस दृशत्वा दनन्तवा ज्ञेयानन्तत्वा त्तच्चतज्ज्ञानञ्च केवलज्ञानमिति ॥ कथ पुन धर्मादीनि विद्याचरणस्वरूपाणि प्राप्नोतीत्याह दोठाणाइमित्यादिकादशसूत्री

यणाणंउप्पाडेज्जा ११ पदं सुयणाणं ओहिनाणं मणपज्जवनाणं केवलनाणं दोठाणाइंपरियाइत्ता आयाकेवली पन्नत्तंधम्मलभेज्ज सवणयाए तजहा आरम्भेचेव परिग्गहेचेव एवजावकेवलनाणमुप्पाडेज्जा दोहिठाणेहिं

दह पूर्वनो । अवधिग्यान मर्यादाये देखवो । मननाजावजाणे ते मन पर्यय । इग केवलग्यान इग्यारह वोल न पामें आरम्भ परिग्रह मूक्या विना इमज बे थानक अनर्थना कारण जांणी छांडे वुद्धियेकरी ते प्राणी रहवों होय ते केवली भाषित धर्म पावे । ते कहे छे । आरंभ परिग्रह रहवे थानक इम यावत् केवल पावे एम इगारह पद पावे । वली बे थानक ना जीव केवली भाषित धर्म पावे सांभलवाथी पावे । ते कहै छे । सिद्धां

सुगमा ॥ धर्म्मादिलाभएव पुनःकारणान्तरतय माह ॥ दोहिमित्यादिसुगमं केवलं श्रवणतया श्रवणभावेन ॥ सोच्चचेवत्ति ॥ श्रुत्वादिगाऊतत्वादेव श्रुत्वा आकर्ण्य तस्यैवो पादेयता मितिगम्यते अभिसमेत्य समधिगम्य तामेवावबुध्येत्यर्थः ॥ उक्तंच सद्धर्म्मश्रवणादेव नरोविगत विक्षिपः ज्ञाततत्वोमहा सत्वः परसंवेगमागतः ॥ १ ॥ धर्म्मोपादेयतांज्ञात्वा सञ्जातेच्छोऽत्रभावतः दृढस्वशक्तिमालोच्य ग्रहणेसम्प्रवर्त्ततइति ॥ २ ॥ एवं बोहिंबुज्झेत्यादि ॥ यावत्केव लनाणंउप्पाडेज्जत्ति ॥ केवलज्ञानस्य कालविशेषे भवतीतितमाह ॥ दोसमाउइत्यादि ॥ समा कालविशेषः शेषं सुगमं केवलज्ञान मोहनीयोन्मादक्षयएव भवत्यतः सामान्येनोन्मादं निरूपयन्नाह ॥ दुविहेउम्माएइत्यादि ॥ उन्मादोमहाग्रो बुद्धिविप्लव इत्यर्थः यक्षावेशोदेवाधिष्ठितत्वं ततो यः स यक्षावेश एवेत्येवो

आयाकेवलिपन्नत्तंधम्मलभेज्जा सवणयाए तंजहा सोच्चाचेव अभिसमच्चेचेव जावकेवलनाणं उप्पाडेज्जा दोसमाउ पन्नत्ताउ तंजहा उसप्पिणिसमाचेव ओसप्पिणिसमाचेव दुविहे उम्माए पन्नत्ते तंजहा जक्खावेसेचेव मोहणिज्जस्सचेवकम्मस्सउदएणं तत्थणं जेसेजक्खावेसेणं सुहवेयतराएचेव सुहविमोयतराएचेव तत्थणं जेसे

त सांभलवाथी ते नाव सरदहवाथी धारवाथी यावत् केवल ग्यान पर्यंत इग्यारे बोल पाछला सर्व पामे । बे थानक ना जाण पणाथी बे प्रकारे काल कह्यियो ते कहेछे । एक उत्सर्पिणी काल । बीजो उतरतो काल ते अवसर्पिणी । बेप्रकारे उन्माद उन्मत्त पणो होय ते कहेछे । देवाधिष्ठित उन्माद । बीजो मोहनीय कर्मना उदयथी चित्तनो भ्रम पुनने पुनीकहे तथा धन कुटुंबनी मूर्छा । तिहां जे यक्षावेशथी चित्तनो उनमाद ते सुखे वेदिये मोहनीथी थोडोकष्ट अने सुखे मुंकाइये संत्रेकरी याद्यादि लागो होय ते । तिहां जे मोहनीय कर्मनां उदयथी चित्तनो उनमाद ते अभ्यंतर

मोहनीयस्य दर्शनमोहनीयादेः कर्मण उदयेन यः सोन्य इति तत्रेति तयो र्मध्ये योसौ यक्षावेशेन भवति स सुखवेद्यतरक एव मोहजनितग्रहापेक्षया अक्लेशानुभवनीयतरएवा नैकान्तिकानात्यतिकभ्रमरूपत्वादस्येति अतिशयेन सुख विमोच्यते त्याज्यते यः स सुखविमोच्यतरक स्वैव मन्त्रमूलादिमात्रसा ध्यत्वा दस्येति अथवा अत्यन्त सुखापेयः सुखापनेय. सुखापेयतरः यथा अत्यतसुखेनैव विमुञ्चति यो देहिन स सुखविमोचतरक इति मोहस्तु तद्विपरी तः एकातिकात्यतिकभ्रमस्वभावतया त्यतानुचितप्रवृत्तिहेतुत्वेना नन्तभवकारणत्वात् तथांतरकारणजनितत्वेन मन्त्राद्यसाध्यत्वात् कर्मक्षयोपशमादिनैव साध्यत्वा दित्यत एवोक्त ॥ दुहवेयतराएचेवदुहविमोयतराएचेवत्ति ॥ अतिशयेन दुःखवेद्यएव दुःखविमोच्यएव चासाविति ॥ उन्मादा त्प्राणी प्राणातिपा तादिरूपे दण्डे प्रवर्त्तते दण्डभाजनवा भवतीति दण्ड निरूपयन्नाह ॥ दोदंडेत्यादि ॥ दण्ड प्राणातिपातादिः सचार्थायेन्द्रियादिप्रयोजनाय य. सोर्थद ण्डः निष्प्रयोजनस्त्व नर्थदण्डइति उक्तरूपमेव दण्ड सर्व्वजीवेषु चतुर्विंशतिदण्डकेन निरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ एवमिति नारकवदर्थदण्डानर्थद

मोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं सेणं दुहवेयतराएचेव दुहविमोयतराएचेव दोदंडा पन्नत्ता तंजहा अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडेचेव नेरइयाणंदोदंडा पन्नत्ता तंजहा अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडेचेव एवंचउवीसदंडा जाववेमाणि

दुःख भोगवीये अनंतभवभमाडे अने मंत्रादिके नछूटे कर्मना क्षयोपशमथी छूटे तेमाटे यक्षावेशनो मोहनी ना उन्मादथी हलको विपाक जे एक मोहनी कर्मनोभोग सत्तर कोटाकोटि सागरोपम भमाडे । बे दंड कहिया ते कहेछै । पाच इंद्रीने अर्थे पाप करवूं ते अर्थ दंड । स्वार्थ विना नि ष्फल पाप करवू ते अनर्थ दंड । सातनारकीने विषे बे दंड कहिया ते कहे छे । अर्थ दंड जे पोताना शरीर राखवाने अर्थे परने हणे । द्वेषमा

खाभिलापेन चतुर्विंशतिदण्डको नेयो नवरं नारकाख स्वशरीररक्षार्थं मारखोपहनन मर्थदण्डः प्रदेपमात्रादनर्थदंडः पृथिव्यादीना मनाभोगेना प्याहा
रगृह्णो जीववधभावा दर्थदण्डो ऽन्यथा त्वनर्थदण्डो ऽथवोभयमपि भवान्तरार्थदण्डादिपरिणतेरिति सम्यग्दर्शनादित्रयवता मेव त्वदण्डो नास्तीति द्वितय
निरूपणेच्छु र्दर्शनं सामान्येन तावन्निरूपयति ॥ तमदुविहेदंसणेत्यादि ॥ सप्तसूत्राणि स्वगमान्येव नवरं दृष्टिर्दर्शन तत्वेषु रुचि स्तत्र सम्यगविपरीत जिनो
क्तानुसारि तथा मिथ्या विपरीतमिति ॥ सम्मदंसणेत्यादि ॥ निसर्गः स्वभावो ऽनुपदेश इत्यनर्थान्तरं अधिगमो गुरूपदेशादि रिति ताभ्यां यत्तत्तथा
क्रमेण मरुदेवीभरतवदिति ॥ निसग्गेत्यादि ॥ प्रतिपतनशील प्रतिपाति सम्यग्दर्शन मौपशमिकं क्षायोपशमिकं वा प्रतिपातिक्षायिक न्तनैषा क्रमेण लक्षण
मौपशमिकों श्रेणि मनुप्रविष्टस्या नन्तानुबन्धिनां दर्शनमोहनीयत्रयस्य चोपशमा दौपशमिक भवति योवा ऽनादिमिथ्यादृष्टि रकृतसम्यक्त्वमिथ्यात्वमि

याणं दुविहेदंसणे पन्नत्ते तंजहा सम्मदंसणेचेव मिच्छादंसणेचेव सम्मदंसणेदुविहे पन्नत्ते तंजहा णिसग्ग
सम्मदसणेचेव अभिगमसम्मादंसणेचेव णिसग्गसम्मदसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा पडिवाईचेव अपडिवाईचेव

नथी उपजे ते अनर्थ दंड । इम पृथिवी प्रमुखने अनाभोगपणें आहारले जीव बंधाए छे ते अर्थ दंड । बीजो अनर्थ दंड । एम चोवीस दंडकें
कहिवो यावत् वैमानिक देवतालगे । हिवे दर्शन कहे छै ते बे प्रकारेछै । समकित दर्शन जे जिनवचनानुसारी तत्वनो जाणिवो । बीजो मिथ्या
दर्शन जे जिन वचनथी विपरीत जाणिवो । समकित दर्शन बे प्रकारे कहियो भगवते ते कहे छे । स्वभावे जिनोक्त तत्वने विषे रुचि आवे ते नि
सर्ग समकित दर्शनी मरुदेवीनी परे । गुरूपदेशथी तत्वनी रुचिआवे ते अभिगमसमकितदर्शनी भरतादिकनी परे । निसर्ग समकितदर्शन बे प्रकारे

स्राभिधानशुद्धाशुद्धोभयरूपमिथ्यात्वपुद्गलत्रिपुञ्जीक एवा चीणमिथ्यादर्शनो चपक इत्यर्थः सम्यक्त्व म्प्रतिपद्यते तस्यौपशमिक म्भवतीति कथमिह यदस्य मिथ्यादर्शनमोहनीय मुदीर्णं त्तदनुभवेनैवोपचीण मन्यच्च मन्दपरिणामतया नोदित मत स्तदन्तर्मुहूर्त्तमात्र मुपशात मास्ते विष्टभितोदय मित्यर्थः तावत काल मस्यौपशमिकसम्यक्त्वलाभ इति आहच उवसामगसेढिगयस्स होतिउवसामियतुसम्मत्तं जोवाअकयतिपुञ्जे अखवियमिच्छोलहइसम्म ॥ १ ॥ खीणम्मिउदिन्नम्मि अणुदिज्जतेयसेसमिच्छते अतोमुहुत्तकाल उवसमसम्मलहइजीवोत्ति ॥ २ ॥ अंतर्मुहूर्त्तमात्रकालत्वा देवास्य प्रतिपातित्व यच्चानन्तानुबन्ध्युदये औपशमिकसम्यक्त्वाप्रतिपतत सास्वादन मुच्यते तदौपशमिकमेव तदपिचप्रतिपात्येव जघन्यतः समयमात्रत्वा दुत्कृष्टतस्तु षडावलिकमानत्वा दस्येति तथा इह यदस्य मिथ्यादर्शनदलिक मुदीर्णं तदुपचीणयच्चानुदीर्णं तदुपशांत मुपशान्तनाम विष्टभितोदय मुपनीतमिथ्यास्वभाव च तदिह चयोपशमस्वभाव मनुभूयमान चायोपशमिक मित्युच्यते नन्वौपशमिकेपि चय श्चोपशमश्च तथेहापीति को नयो विशेषः उच्यते अयमेवहि विशेषो यदिह वेद्यते दलिकं नतत्र इहहि चायोपशमिके पूर्वशमित मनुसमय मुदेति वेद्यते चीयतेच औपशमिके तूदयविष्टभणमात्रमेव आहच मिच्छत्ते जमुदिण्ण तखीणअणुदियचउवसतं मीसीभावपरिणय वेइज्जतखओवसमन्ति ॥ १ ॥ एतदपिजघन्यतो न्तर्मुहूर्त्तस्थितिकत्वा दुत्कर्षतः षट्षष्टिसागरोपम

अभिगमसम्मदंसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा पडिवाईचेव अपडिवाईचेव मिच्छादंसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा

ते कहेछे । एक प्रतिपाती आवी जाय उपशम समकित आव्यो अंतर्मूहूर्त रहे चायोपशमिक छासठ सागरोपम उत्कृष्टोरहे तेमाटे प्रतिपाती बीजो अप्रतिपाती न जाय ते चायिकभावे रहे चायिकसमकित मोच पहुचे तिहां लगे रहे तेमाटे अप्रतिपाती । अभिगम समकित बे प्रकारे ते

स्थितिकत्वाच प्रतिपातीति यदपिच क्षपकस्य सम्यग्दर्शनदलिकचरमपुद्गलानुभवनरूपं वेदक मित्युच्यते तदपि क्षायोपशमिकभेदत्वात् प्रतिपात्येवेति ॥
तथामिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्वमोहनीयक्षयात् क्षायिक मित्याहच खीणेदसणमोहे तिविहम्मिविनवनियाणभूयम्मि निप्पच्चवायमउलं सम्मत्तखाइय
होइत्ति ॥ १ ॥ इदतु क्षायिकत्वादेवाप्रतिपाति अतएव सिद्धत्वेप्यनुवर्त्तते ॥ मिच्छादसणेइत्यादि ॥ अभिग्रहः कुमतपरिग्रहः स यत्रास्ति तदाभिग्रहिकं ॥
तद्विपरीतमनाभिग्रहिकमिति ॥ अभिग्गहिएत्यादि ॥ आभिग्रहिकमिथ्यादर्शन सपर्यवसित सपर्यवसान सम्यक्त्वप्राप्तौ अपर्यवसित मभव्यस्यसम्यक्त्वाप्राप्ते
स्तच्च मिथ्यात्वमात्र मप्यतीतकालतया नुवृत्त्या ऽभिग्रहिक मिति व्यपदिश्यते ॥ ६ ॥ अनाभिग्रहिक भव्यस्य सपर्यवसित मितरस्या पर्यवसित मिति
॥ अतएवाह ॥ एवअणभोत्यादि ॥ ७ ॥ दर्शन मभिहित मथ ज्ञानमभिधीयते तत्त्च ॥ दुविहेणाणे ॥ इत्यादीनि आवस्सगवइरित्ते दुविहे इत्यादि सूत्राव
सानानि त्रयोविंशतिसूत्राणि सुगमानि नवरं ज्ञानं विशेषावबोधः पश्नाति भुंक्ते अश्नुते वाव्याप्नोति ज्ञानेनार्थान् नित्यक्ष आत्मातप्रतियद्वर्त्तते इन्द्रियमनो
निरपेक्षत्वेनतत्प्रत्यक्ष मव्यवहितत्वेनार्थसाक्षात्करणादक्ष मिति ॥ आहच ॥ अक्खोजीवोअत्थ व्वावणभोयणगुणन्निओजेण तपइवट्टइणाण जपच्चक्खतमिह

अभिग्गहियमिच्छादंसणेचेव अणभिग्गहियमिच्छादसणेचेव अभिग्गहियमिच्छादसणे दुविहे प० तजहा सपज्जवसिएचेव अपज्जवसिएचेव एवमणभिग्गहियमिच्छादसणेवि दुविहेनाणे पन्नत्ते तजहा पच्चक्खेचेव

कहेछे । प्रतिपाती आवी जाय उपशमभाव । अप्रतिपाती आवी न जाय समकित क्षायकभाव । मिथ्या दर्शन बे प्रकारे ते कहेछे । कुमति न मूंके
ते अभिगृहिक मिथ्यात हठ विना कुमतिनो परिगृह ते अनभिगृहिक । अभिगृहिक मिथ्या दर्शन बे प्रकारे ते कहेछे । जेहनो अतछे तेसपर्यवसित

तिविहन्ति ॥ १ ॥ परेभ्यो अक्षापेक्षया पुद्गलमयत्वेन द्रव्येन्द्रिय मनोभ्यो ऽक्षस्य जीवस्य यत्तत्परोक्ष न्निरुक्तिवशा दित्याहच अक्खस्सपोग्गलकया जदव्वि दियमणापरातेण तेहितोजणाण परोक्खमिहतमणुमाणवत्ति ॥ अथवा परैरक्ष सबन्धन जन्यजनकभावलक्षण मस्येति परोक्ष इन्द्रियमनोव्यवधाने ना त्मनोर्थप्रत्ययकर्मसाक्षात्कारीत्यर्थः ॥ पच्चक्खेत्यादि ॥ केवल मेक ज्ञान केवलज्ञानतदन्य न्नोकेवलज्ञान मवधिमनःपर्यायलक्षण मिति ॥ केवलेत्यादि ॥ भवत्थ केवलणाणेचेवत्ति ॥ भवस्थस्य केवलज्ञान यत्तत्तथा एव मितरदपि ॥ भवत्थेत्यादि ॥ सहयोगै' कायव्यापारादिभि र्यः सः सयोगी इन्समासात्तत्वा त्सचा सौ भवस्थश्च तस्य केवलज्ञान मितिवि ग्रहः नसन्ति योगा यस्य न योगीतिवा योसा वयोगी शैलेशीकरणव्यवस्थितः शेषतथैव ॥ सजोगीत्यादि ॥ प्रथ

परोक्खेचेव पच्चक्खनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा केवलनाणेचेव णोकेवलनाणेचेव केवलनाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा भवत्थकेवलनाणेचेव सिद्धकेवलनाणेचेव भवत्थकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा सजोगिभवत्थके वलणाणेचेव अजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा पढमसमयसजो

जेहनो अंतनथी ते अपर्यवसित अभव्य जीवने होय ते अपर्यवसित । एम अनभिगृहिक सपर्यवसित अपर्यवसित कहिये । नाणना बे भेदछै ते कहै छ । प्रत्यक्ष जे पाच इद्रीना सहाय रहित आत्माने उपजे । एक परोक्ष जे इद्री मनना सहायथी उपजै । प्रत्यक्षना बे प्रकार ते कहैछे । केवलनाण चौदह राजलोक देखे जाणे ते जीव प्रत्यक्ष । एक नोकेवलनाण प्रत्यक्ष अवधि मन·पर्यवनाण रूप । केवलनाण बे प्रकारें ते कहैछे । संसार मांहिरहिया जीवनो एक । बीजो मोक्षना जीवनो । संसारमाहि रहिया जीवनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहै छे । सयोगी मन वचन कायाना योग सहित

मसमय: सयोगित्वे यस्य स तथा एव सप्रथमो द्वादि: समयो यस्य स तथा शेषतथैव ॥ अथवेत्यादि ॥ चरमोन्त्यसमयो यस्य स योग्यवस्थाया: सतथा शेषतथैवच एवमिति सयोगिसूत्रवत् प्रथमाप्रथमचरमाचरमविशेषणयुता मयोगिसूत्रमपिवाच्यमिति ॥ सिद्धेत्यादि ॥ अनन्तरसिद्धो य: समातिसम ये सिद्ध: सचैको ऽनेकोवा तथा परम्परसिद्धो यस्य द्वादय: समया: सिद्धस्य सोप्येकोनेकोवेति तेषां यत्केवलज्ञान तत्तथाव्यपदिश्यत इति ॥ ओहिनाणे

गिभवत्थकेवलणाणेचेव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणेचेव अहवाचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलना णेचेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणेचेव एवंअजोगिभवत्थकेवलणाणेवि सिद्धकेवलनाणे दुविहे प० तं० अणतरसिद्धकेवलनाणेचेव परंपरसिद्धकेवलणाणेचेव अणंतरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा एक्का

तेरमा गुणठाणा ना जीवने । अयोगी चौदमा गुणठाणा ना जीवने पांच लघु अक्षर भणिये एतली वेला तिहां जीव रहे । सयोगी नो केवल नाण बे प्रकारे ते कहे छे । प्रथम समयनो उपजती वेलानो तेरमा गुणठाणाना भवस्थ जीवनो एमज बीजा समयना भवस्थ सयोगीनो । अथ वा छेहला समयना चौदमे गुणठाणे जातांना सयोगी भवस्थ जीवनो एतले तेरमा गुणठाणाना छेहला समयनो । छेहलो समय नही एतले पहिलो समय ते अचरिम समय सयोगि भवस्थनो । एम अयोगी भवस्थ केवल नाण ना बे भेद जाणवा । सिद्धनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहे छे सप्रति समयें सिद्धथयो ते अनंतरसिद्ध तेहनो । जेहने दो तिण चार समय सिद्ध थया ते परंपरसिद्ध तेहनो केवल नाण । अनंतर सिद्धनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहे छे । एके समये एकज सीधो ते अनंतर सिद्ध तेहनो केवल नाण । एके समये अनेक सीधा ते अनेक अनंतर सिद्ध

त्यादि ॥ भवपच्चइएत्ति ॥ क्षयोपशमनिमित्तत्वे प्यस्य क्षयोपशमस्यापि भवप्रत्ययत्वेन तत्प्राधान्येन भवएव प्रत्ययो यस्य तद्भवप्रत्ययमिति व्यपदिश्यतइति इदमेव भाष्यकारेण साक्षेपपरिहारमुक्तं तत्राक्षेप' ओहीखओवसमिए भावेभणिओभवोतहोदइए तोकिहभवपच्चइओ वोत्तुजुत्तोवहीदोण्हंति ॥ १ ॥ [देवनारकयो. अत्रपरिहार:] सोविहुखओवसमओकिन्तुसएवक्खओवसमलाभो तमिसइहोइवस्सं भण्णइभवपच्चओतोसो ॥ २ ॥ यत: । उदयक्खओवसमोव समाजच कम्मुणोभणिया दव्वखेत्तकालभवंच भावचसम्मप्पत्ति ॥ ३ ॥ तथा तदावरणस्य क्षयोपशमे भव क्षायोपशमिक मिति ॥ मणपज्जवेत्यादि ऋज्वीसा

णंतरसिद्धकेवलणाणेचेव अणेक्कानंतरसिद्धकेवलनाणेचेव परंपरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा एक्क परंपरसिद्धकेवलणाणेचेव अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणेचेव णोकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा ओहिनाणे चेव मणपज्जवणाणेचेव ओहिनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा भवपच्चइएचेव खओवसमिएचेव दोण्हंभवप च्चइए पन्नत्ते तंजहा देवाणंचेव नारइयाणचेव दोण्हखओवसमिए पन्नत्ते तंजहा मणुस्साणंचेव पचिंदिय

तेहनो केवल नाण । परंपरसमयसिद्ध जेहनें मोक्ष गयां दो तीन चार समय थया होय ते परंपरसिद्धनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहें छे । एक एक परंपर सिद्ध नो केवल नाण। बीजो अनेक परंपर सिद्ध नो केवल नाण। नो केवल नाण ना बे प्रकार ते कहें छे । अवधि नाण । बीजो मनपर्यव नाण । एह बे नोकेवल ग्यान छे । अवधि ग्यानना बे भेद ते कहें छे । एक भवप्रत्ययी देवता नारकीने भवेहोय ते बीजो नाणा वरणी कर्मना क्षयोपशमथी उपजे ते भवप्रत्ययी देवताने होय । तथा नारकीने होय । क्षयोपशमथीबेने होय ते कहे छे । मनुष्यने तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच ने

मान्यग्राहिणी मतिः ऋजुमतिः घटोनेनचिन्तित इत्याध्यवसायनिबन्धनं मनोद्रव्यपरिच्छित्तिरित्यर्थः विपुला विशेषग्राहिणी मति र्विपुलमति र्घटोनेन चिन्तितः सच सौवर्णः पाटलिपुत्रको ऽद्यतनोमहानित्याद्यध्यवसायहेतुभूता मनोद्रव्यविज्ञप्ति रिति ॥ आहच ऋजुसामन्नतम्म त्तगाहिणीऋजुम ईमणोणाणं पायविसेसविमुहं घडमेत्तंचितिय मुणइ ॥ १ ॥ विउलब्बत्थविसेसण माणंतग्गाहिणीमईविउला चिंतियमणुसरइघडं पसंगओपज्जयसएहिं ति ॥ आभिणिबोहिएइत्यादि ॥ श्रुतं कर्म्मतापन्ननिश्रित माश्रित मनेनेति श्रुतनिश्रित यत् पूर्वमेव श्रुतकृतोपकारस्ये दानींपुन स्तदनुपेक्ष मेवानुप्रव र्त्तते तदवग्रहादिलक्षण श्रुतनिश्रित मिति यत्पुनः पूर्वंतदपरिकर्म्मितमतेः क्षायोपशमपटीयस्त्वा दौत्पत्तिक्यादिलक्षण मुपजायते अन्यदा ओना दिशभव नदश्रुतनिश्रित मिति आहच पुव्वसुयपरिकम्मिय मइस्सजसंपयसुयातीय तन्निस्सियमियरपुण अणिस्सियमइचउक्कत ॥ १ ॥ सुयेत्यादि ॥ भ

तिरिक्खजोणियाणंचेव मणपज्जवणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा उज्जुमईचेव विउलमईचेव परोक्खणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा आभिणिबोहियणाणेचेव सुयनाणेचेव आभिणिबोहियणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा सुयनि

होय । मनपर्यव ग्यान बे प्रकारे ते कहे छे । एक रिजुमती जे मननोभाव जाणे । बीजो विपुलमती बुद्धि विशेषथी जाणे एणे मन मां घडो चितव्यो छे एम जाणे ते रिजुमती । अनें तेहीज विशेषथी जाणे जे सोनानो घडो छे मोटो अथवा नाह्नो पाटली पुरनो आजनो कीधो अथवा कालनो अथवा घणा कालनो चितव्यो छे इम विशेष तथा जाणे ते विपुलमती । परोक्ष ग्यान बे प्रकार ते कहे छे । मतिनाण । बीजो श्रुतनाण मतीना बे भेद ते कहे छे । एक श्रुतनिश्रित । बोजो अश्रुत निश्रित । श्रुतनिश्रितना बे भेद ते कहे छे । प्रथम जे वस्तुनो सामान्य तया गहिवो ते

त्थोग्गहेत्ति ॥ अर्य्यतेधिगम्यते अर्थ्यते वा न्विष्यत इत्यर्थः तस्य सामान्यरूपस्या शेषविशेषनिरपेक्षानिर्देशस्यरूपादे रवग्रहणं प्रथमपरिच्छेदन मर्थावग्रह इति निर्विकल्पक ज्ञान दर्शनमिति यदुच्यते इत्यर्थः स नैश्चयिको य. स सामयिको यस्तु व्यावहारिकः शब्दोय मित्याद्युल्लेखवान् स आंतर्मौहूर्त्तिक इति अयचेंद्रियमनः सम्बन्धात् षोढा इति तथा व्यज्यते ऽनेनार्थ. प्रदीपेनेव घट इति व्यञ्जन तच्चोपकरणेंद्रिय शब्दादित्वपरिणतद्रव्यसङ्घातो वा तत श्च व्यञ्जने नो पकरणेंद्रियेण शब्दादित्वपरिणतद्रव्याणावा व्यञ्जनाना मवग्रहो व्यञ्जनावग्रह इति अथवा व्यञ्जनमिन्द्रियशब्दादिद्रव्यसम्बन्धः आहच वजिज्जइजे णत्थो घडोव्वदीवेणवजणतोत उवगरणिंदि यसद्दा इपरिणयदव्वसंबधोत्ति ॥ १ ॥ अयंच मनोनयनवर्जेन्द्रियाणाभवतीति चतुर्धा नयनमनसोरप्राप्तार्थप रिच्छेदकत्वात् इतरेषाम्पुन रन्यथेति ननु व्यञ्जनावग्रहो ज्ञानमेव नभवति इन्द्रियशब्दादिद्रव्यसम्बन्धकाले तदनुभवाभावात् वधिरादीना मिवेति नैवव्यञ्ज नावग्रहान्ते तद्वस्तुग्रहणादेवो पलब्धिसद्भावात् इह यस्य ज्ञेयवस्तुग्रहणस्यान्ते ततएव ज्ञेयवस्तूपादानात् उपलब्धि र्भवति तज्ज्ञान दृष्ट यथार्थावग्रहपर्यन्ते तत एवा र्थावग्रह ग्राह्यवस्तुग्रहणा दोहासद्भावादर्थावग्रहज्ञान मिति आहच अन्नाणसोवहिरा इणवतक्कालमणुवलभाओ [आचार्यः] नतदंतेतत्तोच्चिय उवलभाओतयनाणति ॥ १ ॥ किञ्च व्यञ्जनावग्रहकालेपि ज्ञानमस्त्येव सूक्ष्माव्यक्तत्वात्तुनोपलभ्यते सुप्ताव्यक्तविज्ञानवदिति ईहादयोपि श्रुतनिश्रिताएव न

स्सिएचेव असुयनिस्सिएचेव सुयनिस्सिए दुविहे पन्नत्ते तंजहा अत्थोग्गहेचेव वंजणोग्गहेचेव असुयनिस्स

अर्थावग्रह । दूरथी वस्तु देखी कहै जे कोईक वस्तुछे ते अर्थावग्रह । पछे ओलखे जे एह पुरुषछे अथवा स्त्रीछे ते व्यंजनावग्रह । इंद्रीने अनें शब्दादि द्रव्यने सबध ते व्यजना वग्रह । एम अश्रुतनिश्रितना बे भेद जाणिवा । श्रुतनाणना बे भेदछे ते कहैछे । इग्यारह अंग आचारागादिक उप्पनेवा

तूक्ता'ह्यिस्थानकानुरोधादिति ॥ असुयनिस्सिएविएवमेवत्ति ॥ अर्थावग्रहव्यञ्जनावग्रहभेदेनाश्रुतनिश्रितमपि द्विधेवेति इदञ्च श्रोत्रादिप्रभवमेव यत्तु औत्प तिक्याद्यश्रुतनिश्रितन्तत्रार्थावग्रहःसम्भवति यदाह किहपडिकुक्कुडहीणो जुज्झेविवेणउग्गहोईहा किसुसिलिठ्ठमवाओ दप्पणसकतविवत्ति ॥ १ ॥ न नुव्यञ्जनावग्रह स्तस्येंद्रियाश्रितत्वात् बुद्धीनांतु मानसत्वा त्ततो बुद्धिभ्यो न्यत्र व्यञ्जनावग्रहो मन्तव्य इति ॥ सुयनाणेत्यादि ॥ प्रवचनपुरुषस्याङ्गानीवाङ्गा नि तेषु प्रविष्ट तदभ्यतरं तत्स्वरूप मित्यर्थः तच्चगणधरकृतम् ॥ उप्पन्नेइवेत्यादि ॥ मातृकापदत्रयप्रभववा ध्रुवश्रुतवा आचारादि यत्पुनः स्थविरकृतमातृ कापदत्रयव्यतिरिक्ता व्याकरणनिबद्धमध्रुव श्रुतचोत्तराध्ययनादि तदङ्गवाह्यमिति आहच गणहर १ थेराइकय २ आएसा १ मुक्कवागरणओवा २ धुव १ चलविसेसणाओ २ अंगाणंगेसुणाणत्तति ॥ १ ॥ अंगवाहीत्यादि ॥ अवश्यकर्त्तव्य मावश्यक सामायिकादिषड्विध आहच समणेणसावएणय अवस्सकाय व्वयहवइजम्हा अंतोअहोनिसिस्सय तम्हाआवस्सयनामति ॥ १ ॥ आवश्यका द्यतिरिक्तं ततो यदन्यदिति ॥ आवस्समवइरित्तेत्यादि ॥ यदिह दिवसनिशा प्रथमपश्चिमपौरुषीद्वयेएव पठ्यते तत्कालेननिर्वृत्त कालिक मुत्तराध्ययनादि यत्पुनः कालवेलावर्जं पठ्यते तदूर्ध्वकालिकादित्युत्कालिक दशवैकालिकादीनि

एविएवमेव सुअनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा अंगपविठ्ठेचेव अंगबाहिरेचेव अंगबाहिरे दुविहे पन्नत्ते तंजहा आवस्सएचेव आवस्सवइरित्तेचेव आवस्सवइरित्ते दुविहे पन्नत्ते तंजहा कालिएचेव उक्कालिएचेव दुविहे

एह त्रिपदी पामी गणधर रचे ते इग्यारह अंग अंगप्रविष्ट। उत्तराध्ययनादि अंगबाहिर। अंगबाहिरना बे प्रकारछे ते कहे छे। आवश्यक छप्रकारे सामायिक। चौवीसत्थो। वंदना। प्रतिक्रमण। काउसग्ग। पचखाण ॥ बीजो आवश्यक व्यतिरिक्त जे एथी जुओ सिद्धांत। आवश्यक व्यतिरिक्तना

॥ २३ ॥ उक्तज्ञान चारित्रप्रस्तावयति ॥ दुविहेत्यादि॥ दुर्गतौ प्रपततो जीवान् सुगतौचतान्धारयतीति धर्मः श्रुतं द्वादशाङ्गंतदेव धर्मः श्रुतधर्मं श्रयते आ सेव्यते तत्तेनवाचर्यते गम्यते मोक्ष इति चारित्रमूलोत्तरगुणकलाप स्तदेवधर्मश्चारित्रधर्म इति ॥ सुयधम्मेत्यादि ॥ सूत्र्यते सूच्यतेवा अर्थाअनेनेति सूत्रसु प्तितत्वेनच्यापित्वेनच सुष्टुक्तत्वाद्वा सूक्त सुप्तमिववा सुप्तमव्याख्यानेना प्रबुद्धावस्थत्वादिति भाष्यवचनत्वेव सिचइखरइजमत्थं तम्हासुत्त निरुत्तविहिणावा सू एइसवइसुव्वइ सिव्वइसरएत्रजोअत्थ ॥ १ ॥ अभिधरियसुत्तपिवसुद्वियवावित्तउसुचुत्तति ॥ २ ॥ अर्यतेधिगम्यते अर्थ्यतेवायाच्यतेबुभुत्सुभि रित्यर्थो व्याख्या नमिति आहच जोसुत्ताभिप्पाओ सोअत्थोअज्जएयजम्हति ॥ चरित्तेत्यादि ॥ अगारंगृह तद्योगा दागारा गृहिण स्तेषा य श्चरित्रधर्मः सम्यक्तमूलाणुव्र

धम्मे पन्नत्ते तंजहा सुअधम्मेचेव चरित्तधम्मेचेव सुअधम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तसुअधम्मेचेव अत्थ सुयधम्मेचेव चरित्तधम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा आगारचरित्तधम्मेचेव अणगारचरित्तधम्मेचेव अणगार चरित्तधम्मे दुविहे प० तं० सरागसंजमेचेव वीयरागसजमेचेव सरागसजमे दुविहे प० त० सुहुमसंपरा

बे भेद ते कहे छे। एक कालिक कालबेलाये प्रथम छेहली पोरसी येज भणाइये उत्तराध्ययनादि। बीजो उत्कालिक काल बेलारहित भणायें ते दशवैकालिकादि। बे प्रकारे धर्मछे दुर्गतिमां पडता जीवनेराखे तेधर्म ते कहे छे। द्वादशागी रूप सिद्धांत तेहीज धर्म ते श्रुतधर्म। बीजो चारित्र धर्म पच महाव्रतरूप धर्म। श्रुतधर्म बे प्रकारें छे ते कहे छे। जेहमा गणधरे अर्थ गूंथ्याछे ते सूत्र श्रुतधर्म कहिये। जे भगवते अर्थ प्ररूपण कियो ते अर्थ श्रुतधर्म। चारित्रधर्म बे प्रकारे ते कहे छे। गृहस्थ नो सम्यक्त मूल बारेव्रतरूप धर्म देशविरति चारित्रधर्म। जेहने घर नथी ते अनगार

तादिपालनरूपः सतथा एवमितरोपि नवर मगारंनास्ति येषांते नगाराः साधव इति चारित्रधर्म्मश्चसंयमी ऽतस्तमेवाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ सह रागेणप्र भिष्वंगेणमायादिरूपेण यः स सरागः सचासौसयमश्च सरागस्तथा सयमः इतिनाम वीतो विगतो रागो यस्मात् सचासौ संयमश्चवीतरागस्य या संयम इति वाक्य ॥ सरागेत्यादि ॥ सूक्ष्मो ऽसख्यातकिट्टिकावेदनतः सम्परायः कषायः सम्परैति ससरति ससारं जतु रनेनेति व्युत्पादना दाहच कोहाइसपराओ तेण जओसपरीइससारं सच लोभकषायरूप औपशमिकस्य चपकस्यवा यस्यस सूक्ष्मसम्परायः साधु स्तस्य सरागसंयमविशेषणसमासोवा भणनीयइति बादराः स्थूलाः सम्परायाः कषायाः यस्य साधोर्यस्मिन्वा सयमे स तथा सूक्ष्मसपरायप्राचीनगुणस्थानकेषु शेषप्राग्वदिति ॥ सुहुमेत्यादि ॥ सूत्रद्वये प्रथमसमयादि

यसरागसजमेचेव वादरसंपरायसरागसंजमेचेव सुहुमसंपरायसरागसजमे दुविहे प० तं० पढमसमयसु हुमसंपरायसरागसजमेचेव अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमेचेव अहवा चरमसमयसुहुमसपरायसरा

साधु तेहनो धर्म पचमहाव्रतरूप । अनगारधर्म बे प्रकारे ते कहे छे । मायानो सगळे जिहां तेसरागसंयम । माया कपट रहित चारित्र ते वीत रागसजम । सातमा गुणठाणा उपरात होय । सरागसयम बे प्रकारे ते कहे छे । जेणे लोभरूप कषायछोटो कुथुआ रूपकीधो ते उपशम श्रेणिनो तथा क्षपक श्रेणीनो साधु दसमे गुणठाणे एह सुहुमसंपरायसरागसजम थाय । मोटा स्थूल कषायछे जिहा ते बादरसपरायसरागसंयम क हिये । सुहुमसपरायसरागसजम बे प्रकारे ते कहे छे। प्रथम समयनो सुहुमसंपरायसरागसजम जिम पहिले केवल नाणना बे भेद कहिया तिम जा णिवा । दो तीन समयनो सुहुमसपरायसरागसजम । अथवा चरम छेहला समयनो जे पछे वीतरागसंयमआवे ते चरमसमयसुहुमसंपरायसरागसज

विभागः केवलज्ञानवदिति ॥ अहवेत्यादि ॥ संक्लिश्यमानकः सयमः उपशमश्रेण्याः प्रतिपततो विशुद्ध्यमान स्तांउपशमश्रेणीं चपकश्रेणीं वा समारोहत इति ॥ वादरेत्यादिसूत्रद्वय॥ वादरसपरायसरागसयमस्य प्रथमाप्रथमसमयता सयमप्रतिपत्तिकालापेक्षया चरमाचरमसमयतातु यदनन्तरं सूक्ष्मसम्पराय ता असयतलवा भविष्यति तदपेक्षयेति ॥ अहवेत्यादि॥ प्रतिपाती उपशमकस्या न्यस्तवा अप्रतिपाती चपकस्येति सरागसंयमउक्तो अतोवीतरागसंयममाह

गसंजमे अचरमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे अहवा सुहुमसंपरायसरागसंजमेदुविहे प० तं० संकिलेस माणएचेव विसुज्झमाणएचेव वादरसंपरायसरागसजमे दुविहे प० तं० पढमसमयवादरसंपरायसरासंजमे अपढमसमयवादरसपरायसरागसंजमे अहवा चरमसमयवादरसंपरायसरागसंजमे अचरमसमयवादरसंप रायसरागसंजमे अहवा वायरसंपरायसरागसजमे दुविहे प० त० पडिवातिएचेव अपडिवातिएचेव वीय

म । छेहलाथी पहिला समयनो ते अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजम । अथवा वली सुहुमसंपराय सरागसंजम बे प्रकारे कहिवो ते कहे छे । उपशम श्रेणीथी पडतानो सुहुमसंपरायसरागसयम ते संकलेसमाण । अथवा उपशम श्रेणी चपक श्रेणी चढतानो सुहुमसंपरायसरागसंयम ते वि शुद्धिमान कहिये । वादरसपरायसरागसंजम बे प्रकारे ते कहे छे । प्रथम समयनो बादरसंपरायसरागसंजम । बीजो बीजा त्रीजा समयनो । वली छेहला समयनो बादरसपरायसरागसंजम जे पछे सुहुमसंपरायसरागसंजम आवे । अथवा असजम आवे । एम छेहलाथी पहिला समयनो संय म । अथवा वली बादरसपरायसरागसंयमना बे भेद ते कहे छे । एक उपशम श्रेणीथी पडतानो संयम ते प्रतिपाती एकचपक श्रेणीनो ते अप्रति

वीयरायेत्यादि ॥ उपशान्ताः प्रदेशतोप्यवेद्यमानाः कषाया यस्य यस्मिन्वा सतथा साधुः संयमोवेति एकादशगुणस्थानवर्त्तीति क्षीणकषायो द्वादशगुणस्थानवर्त्तीति ॥ उवसंतेत्यादिसूत्रद्वयं प्रागिव ॥ खीणेत्यादि ॥ छादयत्यात्मस्वरूप यत्तच्छद्म ज्ञानावरणादिघातिकर्म्म तत्रातिष्ठतीति छद्मस्थो केवली शेषस्तथैव केवलमुक्तरूप ज्ञानञ्च दर्शनञ्चास्यास्तीति केवलीति ॥ छउमत्थेत्यादि ॥ सयम्बुद्धादिस्वरूप प्रागिवेति ॥ सयबुद्धेत्यादि ॥ नवसूत्राणि गता

रागसंयमे दुविहे प० तं० उवसंतकसायवीयरागसंजमेचेव खीणकसायवीयरायसंजमेचेव उवसंतकसायवीयरायसंजमे दुविहे प० तंजहा पढमसमयउवसंतकसायवीयरायसंजमेचेव अपढमसमयउवसंतकसायवीयरायसंजमेचेव अहवा चरमसमयउवसंतकसायवीयरायसंजमे अचरमसमयउवसंतकसायवीयरायसंजमे खीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे प० तं० छउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमेचेव केवलिखीणकसायवीयराय

पाती । वीतरागसंजमना बे भेद ते कहे छे । मूलथी उपशमाव्याछे कषाय जेणे ते उपशांतकषायवीतरागसंयम इग्यारमागुणठाणानां साधुने थाय । क्षयपाम्याछे कषाय जेहना ते क्षीणकषायवीतरागसंजम बारमा गुणठाणाना साधुने थाय । उपशांतकषायवीतरागसंयम बे प्रकारे ते कहे छे । पहिला समयनो उपशांतकषायवीतरागसंयम । बीजो अप्रथम समयनो उपशांतकषायवीतरागसंयम । अथवा चरम समयना अचरिम समयना बे भेद जाणिवा । क्षीणकषायवीतरागसंयम बे प्रकारे ते कहे छे । छद्मस्थ जे नाणावरणीयादि च्यार घाती कर्म सहितछे जेहनोसंयमते छउमत्थखीणकसायवीतरागसंयम । केवल नाण सहित केवली तेहनो संयम तेकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम । छउमत्थखीणकसायवीतरागसंयम

संजमेचेव छउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे प० तं० सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे बुद्ध वोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे प० तं० पढम समयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमेचेव अहवा चरमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे अचरमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे। बुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा पढमसमयबुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे अपढमसमयबुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे अहवा चरमसमयबुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे अचरमसमयबुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमे

बे प्रकारे तेकहेछे। सयंबुद्ध पोताने मेले प्रतिबोध पामे तेसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजम। आचार्यनां प्रतिबोधथी प्रतिबोध पामे तेबुद्ध बोधितछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजम। सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजम बेप्रकारे तेकहेछे। प्रथमसमयनो बीजो अप्रथमसमयनो अथ वा चरमसमयनो सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजम। अथवा अचरमसमयनो सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायसंजम। बुद्धबोधितछउमत्थ खीणकषायवीयरागसंयम बेप्रकारे तेकहेछे। प्रथमसमयनो बुद्धबोधितछउमत्थखीणकषायवीतरागसंयम। अप्रथमसमयनो बुद्धबोधितछउमत्थखीण कसायवीयरायसंजम। अथवा चरमसमयनो अचरमसमयनो। केवलीखीणकषायवीतरागसंयम बेप्रकारे तेकहेछे। सयोगी तेरमां गुणठाणांनां केव

र्थान्येवेति उक्तः संयमः सच जीवाजीवविषयइति पृथिव्यादिजीवस्वरूपमाह ॥ दुविहापुढवीत्यादि ॥ अष्टाविंशति सूत्राणि तत्र पृथिव्येवकायो येषान्ते

केवलिखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसंजमे अयो गिकेवलिखीणकसायवीयरायसंजमे सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे दुविहे प० तं० पढमसमय सयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसंजमे अपढमसमयसयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसंजमे अहवा चर मसमयसयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे अचरमसमयसयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसंजमे अ जोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे प० त० पढमसमयअयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसंजमे अपढमसमयअयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसंजमे अहवा चरमसमयअयोगिकेवलिखीणकसायवीयरा यसंजमे अचरमसमयअयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे दुविहापुढविकाइया पन्नत्ता तजहा सुहु

लीनो क्षीणकषायवीतरागसंयम । अयोगी चौदमां गुणठाणाना केवलीनो क्षीणकषायवीतरागसंयम। वीतराग सयोगिकेवलीक्षीणकषायसंयम बेप्रका रें तेकहेछे । प्रथमसमयनो वीतरागसयोगिकेवलीक्षीणकषायसंजम । अप्रथमसमय वीतरागसयोगिकेवलीक्षीणकषायसजम । अथवा चरमसमयनो अचरमसमयनो । अयोगिकेवलीक्षीणकषायसजम बे प्रकारें ते कहे छे । प्रथमसमयनो अप्रथमसमयनो । अथवा चरमसमयनो अचरमसमयनो ॥ बे प्रकारे पृथिवी कायना जीव कहिया । ते कहेछे ॥ एक सर्वव्यापी पृथिवी कायना जीव बीजा बादर पृथ्वीकायना जीव पर्वतादिक । एमज पाणी

पृथ्वीकायिन: समासान्तविधे स्तएव स्वार्थिककप्रत्ययात् पृथ्वीकायिका: पृथिव्येववा काय: शरीरं सोस्ति येषान्ते पृथ्वीकायिका: ते सूक्ष्मनामकर्मोद यात् सूक्ष्मा श्चैव ये सर्वलोकापन्ना बादरनामकर्मोदयवर्तिनो बादरा ये पृथ्वीनगादिष्वेवेति तेषा मापेक्षिक सूक्ष्मबादरत्वमिति एवमिति पृथ्वीसूत्रवद प्तेजोवायूनांसूत्राणि वाच्यानि यावत्वनस्पतिसूत्र मतएवाह ॥ जावेत्यादि ५ दुविहेत्यादि ॥ पञ्चसूत्री तत्र पर्याप्तनामकर्मोदयवर्त्तिन: पर्याप्ता येहि च तस्त्र: पर्याप्ती: पूरयन्तीति अपर्याप्तनामकर्मोदयादपर्याप्तका: ये त्वपर्याप्तीर्नपूरयन्तीति इहच पर्याप्तिर्नाम शक्ति: सामर्थ्यविशेषइतियावत् साच पुद्गल द्रव्योपचया दुत्पद्यते षट्भेदाचेय तद्यथा आहारसरीरिंदिय पज्जतीआणुपाणु ४ भास ५ मणे ६ चत्तारिपंचछप्पिय एगिंदियविगलसन्नीणंति ॥ १ ॥ तत्र एकेन्द्रियाणाञ्चतस्रो विकलेन्द्रियाणांपञ्च सञ्ज्ञिनांषट् तत्र आहारपर्याप्तिर्नाम खलरसपरिणमनशक्ति: शरीरइन्द्रियपर्याप्ति: सप्तधातुतया रसस्यपरिण

माचेव वायराचेव एवं जाव दुविहावणस्सइकाइया पन्नत्ता तं० सुहुमाचेव वायराचेव दुविहापुढविका इया प० तं० पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव एवं जाव वणस्सइकाइया दुविहा पुढविकाइया प० तं०

कायनां तेज वायु यावत् वनस्पति कायना बे भेद जाणिवा । ते कहेछे । सर्वलोकमां काजलनी कोपलीनीं परे भस्याछे। बादर जे दृष्टियें दीसे झाड वेली प्रमुख । बे प्रकारे पृथिवीकायिया कहिया ते कहेछे । एक पर्याप्ता जे छ पर्याय पूरीकरी मरे। बीजा अपर्याप्ता अहार शरीर इंद्री श्वासो च्छासभाषामन एह छपर्याप्तिमा एकेंद्रीने च्यार बेंद्री तेंद्री चोइंद्री ने पांच सन्नीने छ असन्नीने पांच तेहमां आहारपर्याप्ति एक समयमां नीपजे बीजी पाच असख्यात समयमां नीपजे सर्वे अंतमुहुर्त्तमानीपजे । अपर्याप्ति ते श्वासोश्वासकीधां विनाज पहिली तीन पूरीकरी पर भवनो आयु

मनशक्तिः इन्द्रियपर्याप्तिः पञ्चानामिन्द्रियाणां योग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा अनाभोगनिर्वर्त्तितेन वीर्येण तद्भावनशक्तिः ३ आनप्राणपर्याप्तिः उच्छासनिःश्वास
योग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा तथापरिणमय्या नप्राणतया निसर्जनशक्तिः ॥ ४ ॥ भाषापर्याप्ति र्वाचोयोग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा भाषात्वेनपरिणमय्य वाग्योगतयानि
सर्जनशक्तिः ॥ ५ ॥ मनःपर्याप्ति. मनोयोग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा मनस्तयापरिणमय्य मनोयोगतया निसर्जनशक्तिरिति ॥ ६ ॥ एताः पर्याप्तनामकर्मोदयेन
निर्वर्त्त्यन्ते तद्येषामस्ति ते पर्याप्तकाः अपर्याप्तनामकर्मोदयेनानिर्वृत्ताः येषा मेताः सन्ति ते पर्याप्तकाइति एताश्च युगपदारभ्यन्ते अन्तर्मुहूर्त्तेनच निर्व
र्त्यन्ते तत्र आहारपर्याप्ते र्निर्वृत्तिकालः समयएव कथमुच्यते यस्मात्प्रज्ञापनायामुक्तं आहारपज्जत्तीए अपज्जत्तएण भंते जीवे किं आहारए अणाहारए
गोयमा नोआहारए अणाहारएत्ति सच विग्रहे आहारपर्याप्त्या अपर्याप्तको लभ्यते यदिपुन रुपातक्षेत्रप्राप्तोप्याहारपर्याप्त्या ऽपर्याप्तको भवेत् तदेव व्या
करणभवेत् गोयमा सियआहारए सियअणाहारएत्ति यथा शरीरादिपर्याप्तिषु सियआहारए सियअणाहारएत्ति शेषाःपुनरसंख्यातसमया अन्तर्मुहूर्त्तेन
निर्वर्त्तन्तइति अपर्याप्तकास्तु उच्छासपर्याप्त्या अपर्याप्ताएव म्रियन्ते नतु शरीरेन्द्रियपर्याप्तिभ्या यस्मादागामिभवायुष्कबध्वा म्रियन्ते तच्च शरीरेंद्रिया
दिपर्याप्तापर्याप्तैरेव बध्यतइति एवमिति पूर्व्ववदेवेति ॥ १० ॥ दुविहापुढवीत्यादि ॥ पट्सूत्री परिणताः स्वकायपरकायशस्त्रादिना परिणामातरमापा
दिता अचित्तीभूताइत्यर्थः तत्र द्रव्यतः चेत्रादिना मिश्रेण द्रव्येण कालतः पौरुप्यादिना कालेन भावतो वर्णगन्धरसस्पर्शान्यथात्वेन परिणताः चेत्रतस्तु

परिणयाचेव अपरिणयाचेव जाव वणस्सइकाइया दुविहादव्वा प० तंजहा परिणयाचेव अपरिणयाचेव

बांधीमरे ते अपर्याप्ता । एम यावत् वनस्पति लगे पाच थावर जाणिवा । वली पृथिवीकायना बे भेद ते कहे छे । एक परिणत जेशस्त्रादि

जीयणसयतुगंता णाहारेणतुभंडसंकती वायागणिधूमेणय विद्वत्थहोइलोणाई ॥ १ ॥ हरियालमणोसिल पिप्पलिखज्जूरमुद्दियाअभया आइन्नमणाइन्ना तेविहुएमेवनायव्वा ॥ २ ॥ आरुहणेओरुहणे णिसियणगोणाइणचगाउम्हा भूमाहारच्छेदे उवक्कमेणेवपरिणामो ॥ ३ ॥ अणाहारेणति ॥ आदिग्रजाहाराभावेणेति भडसंकतित्ति॥ भाजनाद्भाजनान्तरसंक्रान्त्या खर्जूरादयोनाचारिताः अभयादयस्तु आचारिताइति परिणामांतरेपि पृथ्वीकायिकाएव तेकेवलमचेतना इति कथमन्यथा अचेतनपृथ्वीकायपिण्डप्रयोजनाभिधानमिदं स्यात् यथा घट्टवडगलगलेचीमाइपउयणवहुहत्ति ॥ एवमित्यादि॥ प्रागिव तदेवम्मेतानिसूत्राणि द्रवन्तिगच्छन्ति विचित्रपर्यायानिति द्रव्याणि जीवपुद्गलरूपाणि तानिच विवक्षितपरिणामत्यागेन परिणामांतरापन्नानिपरिणतानि विवक्षितपरिणामवत्त्वेवा परिणतानीति द्रव्यसूत्र षष्ठ ॥१६॥ दुविहेत्यादि ॥ षट्सूत्री गतिर्गमन तासमापन्नाः प्राप्ता स्तद्वती गतिसमापन्नाः येहि पृथ्वोकायिकाद्यायुष्कोदया त्पृथिवीकायिकादिव्यपदेशवन्तो विग्रहगत्या उत्पत्तिस्थानंव्रजन्ति अगतिसमापन्नास्तु स्थितिमन्तो द्रव्यसूत्रे गतिर्गमन मात्रमेव शेषन्तथै

दुविहापुढविकाइया प० तं० गइसमावन्नगाचेव अगइसमावन्नगाचेव एवं जाव वणस्सइकाइया दुविहा

केकरी परिणत अचित्त थया। वीजा अपरिणत ते जीव सहित सचित्त। बे प्रकारें जीव और पुदगल रूपद्रव्यछे। पर्यायांतरपामे तेद्रव्य तेकहेछे। परिणाम पर्याय जेहना फिस्या ते परिणत। नथी फिस्या ते अपरिणत। वली पृथिवी कायना बे भेद ते कहेछे। विग्रह गतिये करी उपजवाने थानके गमनकरे तेगति समापन्न। जे थानके रहियाछे ते अगति समापन्न। एमज यावत् अप् तेज वायु वतस्पतिलगे बेबे भेद जाणिवा। वली द्रव्यना बे भेद तेकहेछे। गमनकरे ते गतिसमापन्न। ठेकाणेज रहे ते अगति समापन्न। वली पृथिवी कायना बे भेद ते कहेछे।

वेति ॥ २२ ॥ दुविहापुढवीत्यादि ॥ षट्सूत्री अनन्तरं संप्रत्येवसमये क्वचिदाकाशप्रदेशे अवगाढा आश्रिता स्तएवानन्तरावगाढका सेषान्तु द्व्यादयः समया अवगा ढानांतेपरम्परावगाढका अथवा विवचित चेत्र द्रव्यमस्या पेच्य अनंतर मव्यवधानेनावगाढा अनतरावगाढा इतरेतु परम्परावगाढाः ॥ २८ ॥ अनंतरं द्रव्यस्वरूप मुक्त मधुना द्रव्याधिकारादेव द्रव्य विशेषयोः कालाकाशयोर्द्विसूत्र्याप्ररूपणामाह ॥ दुविहेकालेइत्यादि ॥ तत्र कल्यते सङ्ख्यायते सावनेनवाकलनं वा कला समूहोवेति कालः वर्त्तनापरत्वापरत्वादिलचणः सचा वसर्पिण्युत्सर्पिणीरूपतया द्विविधो द्विस्थानकानुरोधा दुक्तो न्यथा अवस्थितलचणो महाविदेहभो गभूमिसम्भवीद्व्तीयोप्यस्तीति ॥ आगासेत्ति ॥ सर्वद्रव्यस्वभावानाकाशयत्यादीपयति तेषा स्वभावलाभे अवस्थानदानादित्याकाशमाङ्मर्यादाऽभिविधिवा ची तत्र मर्यादाया माकाशे भवतोपिभावाः स्वात्मन्येवा सतेनाकाशता यांतीत्येव तेषामात्मसादकरणादभिविधौतु सर्वभावव्यापनादाकाशमिति तत्र

दव्वा प० तं० गइसमावन्नगाचेव अगइसमावन्नगाचेव दुविहा पुढविकाइया प० तंजहा अणंतरोगाढगा चेव परंपरोगाढगाचेव जावदव्वा दुविहेकाले प० तंजहा उसप्पिणीकालेचेव अवसप्पिणीकालेचेव दुविहे

जेहमणाज समये कोइक आकाश प्रदेशे आवीरहियो ते अनतरोवगाढ । जेहने आकाश प्रदेशे रहियाने बे त्रण समय थयाछे ते परंपरोवगाढ । हिबे कालनोस्वरूप कहेछे । बे भेदे काल ते कहेछे । एक उत्सर्पिणीकाल चढतो आरो । बीजो अवसर्पिणीकाल उतरतो आरो । पहिलो आरो सुसमसुसमा । बीजो सुसमा त्रीजो सुसमदुसमा चोथो दुसमसुसमा पाचमो दुसमा छठो दुसमदुसमा । अवसर्पिणीये एहथी फेरवी कहिये ते उत्सर्पिणीकाल बे प्रकारें । आकाश जीवने द्रव्यने अवकाश आपे ते आकाश । जेहमां छद्रव्य धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय

लोकोयत्राकाशदेशेधर्मास्तिकायादि द्रव्याणांवृत्तिरस्ति सएवाकाशंलोकाकाशमिति विपरीतमलोकाकाशमिति अनंतरं लोकालोकभेदेनाकाशद्वैविध्यमुक्तं लोकश्चशरीरिशरीराणांसर्वतआश्रयस्वरूपइति नारकादिशरीरदण्डकेनशरीरप्ररूपणामाह ॥ णेरइयाणमित्यादि ॥ प्रायःकाथ्य न्तवरं शीर्यतेऽनुक्षण चयाप चयाभ्यांविनश्यतीतिशरीर तदेवसटनादिधर्मतया नुकम्पितत्वात् शरीरक न्तेच द्वे प्रज्ञप्ते जिनैः अभ्यन्तर्मध्येभवमाभ्यतरं आभ्यन्तरत्वञ्च तस्य जीवप्रदेशैः सहचौरनीरन्यायेन लोलीभवनात् भवान्तरगतावपिच जीवस्यानुगतिप्रधानत्वादपवरकाद्यन्तःप्रविष्टपुरुषवदनतिशयिना मप्रत्यचत्वाच्चेति तथा वहिर्भव स्त्वाद्य बाह्यताचास्य जीवप्रदेशैः कस्यापि केषुचि दवयवेष्वव्याप्तेर्भवान्तराननुयायित्वा न्निरतिशयिनामपि प्रायःप्रत्यचत्वाच्चेति तत्राभ्यन्तर ॥ कम्मएत्ति ॥ कार्म्मणशरीरनामकर्म्मोदयनिर्वर्त्यं मशेषकर्म्मणा म्मरोहभूमिराधारभूत न्तथा ससार्यात्मनाङ्गत्यन्तरसङ्क्रमणे साधकतमन्तत्वार्म्मणवर्गणास्वरूप कर्म्मैव कार्म्मकमिति कार्म्मकग्रहणेच तैजसमपिगृहीतद्रष्टव्यंतयोरव्यभिचारित्वे नैकत्वस्यविवचितत्वादिति एव ॥ देवाणभाणियव्वति ॥ अयमर्थः यथानैरयिकाणां

आगासे प० तं० लोगागासेचेव अलोगागासेचेव णेरइयाणंदोसरीरगा प० तं० अभ्भंतरगेचेव वाहिर गेचेव अभ्भंतरएकम्मए वाहिरएवेउव्विए एवंदेवाणंभाणियव्वं पुढविकाइयाणंदोसरीरगा प० तं० अभ्भंतर

पुदगलास्तिकाय काल जीव रह छे ते लोकाकाश । एकलोकाकाश चौदे राजप्रमाण ऊंचो सातमेनरकथी सिद्धलगे । अलोक जेहमां एकलो आका शछे । नारकीने बे शरीर होयछे ते कहे छे । अभ्यंतर जे जीवना प्रदेशथी मली रहियोछे चीर नीरनी परे वीजो प्रदेशथी अलगूं काइक मल्यूं साथे नजाय । अभ्यंतर ते कार्मण तैजस । वाहिर ते वैक्रियशरीर । एम देवताने पणि कहिवूं । पृथिवी कायना वे शरीर ते कहेछे । एक अभ्यं

शरीरद्वय भणितमेव देवानामसुरादीना म्वैमानिकान्ताना भणितव्यं कार्मणवैक्रियर्योरेव तेषा भावाच्चतुर्विंशतिदण्डकस्यच विचचितत्वादिति ॥ पुढ वीत्यादि ॥ पृथिव्यादीनान्तुवाह्य मौदारिकशरीरनामकर्म्मोदया दुदार पुद्गलनिर्वृत्त मौदारिक केवलमेकेन्द्रियाणा मस्थ्यादिविरहितं वायूनां वैक्रियं यत्त न्नविवचित प्रायिकत्वात्तस्येति । वेइंदियाणमित्यादि ॥ अस्थिमांसशोणितैर्बद्धं यत्तत्तथा द्वीन्द्रियादीना मौदारिकत्वेपि शरीरस्यायविशेष. ॥ पचेंदिएत्या दि ॥ पचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याणा पुनरय विशेषो यदस्थिमांसशोणितस्नायुशिराबद्धमिति अस्थ्यादयस्तुप्रतीताइति प्रकारान्तरेण चतुर्विंशतिदण्डकेन शरीरप्र रूपणा मेवाह ॥ विग्गहेत्यादि ॥ विग्रहगति र्व्वक्रगति र्यदा विश्रेणिव्यवस्थितमुत्पत्तिस्थान गन्तव्यभ्भवति तदा या स्या त्ता समापन्ना विग्रहगतिसमाप

गेचेव वाहिरगेचेव अभ्भंतरएकम्मए वाहिरगेउरालिए जाव वणस्सइकाइयाणं वेइंदियाणंदोसरीरगा प० तं० अभ्भंतरएचेव वाहिरएचेव अभ्भंतरएकम्मए अट्ठिमंससोणितवद्धे वाहिरएउरालिए जावचउरिंदियाणं पचंदियतिरिक्खजोणियाणंदोसरीरगा प० तं० अभ्भंतरगेचेव वाहिरगेचेव अभ्भंतरगेकम्मए अट्ठिमंससो

तर । बीजो बाहिरलो । अभ्यतर तेकार्मण तैजस । बाहिरलो ते औदारिक हाडमांसरहित । एम यावत् पनस्पतिकाय लगे बेबे शरीर जांणि वा । बेइंद्री शखमुप्रखना जीवने बे शरीर होय तेकहेछे । एक माहिलो एक बाहिरलो । मांहि ते कार्मलतैजस । बाहिरलो ते हाडमांसलोहीये वाध्यो औदारिकशरीर । जाव तेइद्री चौइंद्री लगे जांणिवो । पचेंद्रिय तिर्यचने बेशरीर होय । तेकहेछे । एक माहिलो एक बाहिरलो । मा हिलो ते कार्मणतैजस । बाहिरलो ते हाडमासलोहीनाडीशिराये बांध्यो औदारिक । चौरिंद्रीलगे नाडीशिरा नहोय । मनुष्यनें पिण बेशरीर

म्रा स्तेषां द्वे शरीरे इहतैजसकार्म्मणयो र्भेदेनविवक्षेति एवंदण्डकशरीराधिकारा च्छरीरोत्पत्तिदण्डकेन निरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तु यारागद्वेषजनितकर्मणा शरीरोत्पत्तिः सारागद्वेषाभ्यामेवेति व्यपदिश्यते कार्य्येकारणोपचारादिति ॥ जाववेमाणियाणति ॥ दण्डकः सूचितः श रीराधिकाराच्छरीरनिर्वर्तनसूत्र तदथैव नवर मुत्पत्तिरारम्भमात्र निर्वर्त्तनातु निष्ठानयनमिति शरीराधिकारा च्छरीरवतां राशिद्वयेन प्ररूपणा माह दोकायेत्यादि ॥ त्रसनामकर्मोदया त्त्रस्यतीति त्रसा स्तेषां कायो राशिः त्रसकायः स्थावरनामकर्म्मोदयात् तिष्ठन्तीत्येवशीलाः स्थावराः तेषां कायः स्थाव

णियरहारुच्छिरावक्के बाहिरए उरालिए मणुस्साणविएवंचेव विग्गहगतिसमावन्नगाणं नेरइयाणं दोसरी रगा प० त० तेइएचेव कम्मएचेव निरंतरं जाव वेमाणियाणं नेरइयाणं दोहिठाणेहिं सरीरुप्पत्तीसिया त० रागेणंचेव दोसेणचेव जाववेमाणियाणं नेरइयाणं दुठाणनिव्वत्तिए सरीरगे प० तं० रागनिव्वत्तिएचेव दोसनिव्वत्तिएचेव जाव वेमाणियाणं दोकाया प० तं० तसकाएचेव थावरकाएचेव तसकाएदुविहे पन्नत्ते

जाणिवा । वांकीगति करतां नारकीनें बेशरीर होय उपजिवाने थानके वांको चाली जायते। एक तैजस बीजो कार्मण । एम जाव आंतरारहित चोवीसेदंडके वैमानिकलगे कहिवो । नारकीने बेथानकेकरी शरीरनी उत्पत्तिछै शरीर बंधायछै ते कहेछै रागेंकरी । द्वेषेकरी । एम जाव वैमानि कलगे जाणिवो । नारकीनें बेथानके करी शरीरनी निर्वर्तना छे । उत्पत्तिते प्रथम आरंभमात्र निर्वर्तनाते शरीरनां अवयवनों पूरो नीपजिवो ते कहेछे । एक रागथी निर्वर्तना । बीजी द्वेषथी निर्वर्तना । राग द्वेषथी शरीर उपजै ते निर्वर्तना होय । एम जाव वैमानिकलगें । बेकाय ते राशि

रकाय इति त्रसस्थावरकाययो र्द्वैविध्यप्ररूपणार्थं त्रसकायेत्यादिसूत्रद्वयं सुगमं चेति पूर्व्वसूत्रे भव्याः शरीरिण उक्ता ऽत एतद्विशेषाणामेव यद्यथाकर्त्तुमुचितं तत्तथा दिक्स्थानकानुपातेनाह ॥ दोदिसाओ इत्यादि ॥ द्वे दिशौ काष्ठे अभिगृह्याङ्गीकृत्य तदभिमुखीभूयेत्यर्थः कल्पते युज्यते निर्गता ग्रन्थाद्धनादे रिति निर्ग्र न्थाः साधव स्तेषां निर्ग्रन्थ्यः साध्व्य स्तासां प्रव्राजयितुरजोहरणादिदानेन प्राचीन प्राचीं पूर्वामित्यर्थः उदीचीन मुदीचीमुत्तरामित्यर्थः उक्तञ्च पुव्वा मुहोउउत्तर मुहोव्वदेज्जाहवायपडिच्छेज्जा जाएजिणादउवा हवेज्जाजिणचेइयाइवत्ति ॥ १ ॥ एवमिति यथाप्रव्राजनसूत्रं दिग्द्वयाभिलापेन अधीत मेवं मुण्डनादिसूत्राण्यपि षोडशाध्येतव्यानीति तत्र मुण्डयितुं शिरोलुञ्चनेन १ शिक्षयितु ग्रहणशिक्षापेक्षया सूत्रार्थौ ग्राहयितु मासेवनाशिक्षापेक्षयातु प्रत्यु पेक्षणादिशिक्षयितु मिति २ उत्थापयितुं महाव्रतेषु व्यवस्थापयितु ३ संभोजयितुं भोजनमण्डल्यां निवेशयितु ४ संवासयितुं संस्तारकमण्डल्यां निवेशयि

तंजहा भवसिद्धिएचेव अभवसिद्धिएचेव एवं थावरकाएवि दोदिसाउ अभिगिज्झकप्पइ निग्गंथाणंवा णिग्गंथीणंवा पव्वावित्तए पाईणंचेव उदीणंचेव एवं मुंडावित्तए सिक्खावित्तए २ उवट्ठावित्तए ३ संभुं

समूह तेकहेछे । त्रसकाय त्रसजीवनो समूह जे त्रास पामें तेत्रस । थावरकाय थावरजीवसमूह । त्रसकाय बेप्रकारे तेकहेछे । एक भवसिद्धिया जेमो क्षजास्ये । एक अभवसिद्धिया जे कदापि मोक्ष न जास्ये । एम थावरकाय पिण भव्य अभव्य जाणिवा । जे तप्तकायी चाली छायाये जावे तेत्रस । जे थिररहे तेथावर । बेदिशिने सांहमारहीने कल्पे सूझे साधुने तथा साध्वीने दीक्षादेवी ओघोप्रमुख वेशआपवो । पूर्वदिशि उत्तरदिशि साहमा रही दीक्षा देवी । एम बे दिशीये लोचकरवो । सूत्रार्थ शीखवो । ओठामणकरवो । पाचमहाव्रत थापवा जीमवो माडलीये एहीज बेदिशा साह

तु ५ सुष्ठु आमर्यादया ऽधीयत इति स्वाध्यायो ऽङ्गादिस्तमुपदेष्टु योगविधिक्रमेण सम्यग्योगेनाधीष्वेदमित्येवमुपदेष्टुमिति ६ समुद्देष्टुं योगसमाचार्यैवस्थि रपरिचितं कुर्विदमिति वक्तुमिति ७ अनुज्ञात तथैव सम्यगेतद्धारया ऽन्येषा च प्रवेदयेत्येव मभिधातुमिति ८ आलोचयितु गुरवे अपराधान् निवेदयितु मिति ९ प्रतिक्रमितुं प्रतिक्रमण कर्त्तुमिति १० निन्दितु मतिचारान् स्वसमक्ष जुगुप्सितु ११ आहच सचरित्तपछयावो । निन्दतिगर्हितगुरुसमक्ष ताने वजुगुप्सितुं १२ आहच अचरित्तपछयावो निंदति गर्हित गुरुसमक्ष तानेव जुगुप्सितु १२ आहच गरहावितहाजातीय मेवनवर ॥ परप्पयासणयत्ति ॥ विउट्टित्तएत्ति ॥ व्यतिवर्त्तयितुं वित्रोटयितु विकुट्टयितु वा अतिचारानुवंधि विच्छेदयितु मित्यर्थः १२ विशोधयितु मतिचारपङ्कापेक्षया त्मानविमलीक र्त्तुं मिति १४ अकरणतया पुन र्न करिष्यामीत्येव मभ्युत्थातु मभ्युपगतु मिति १५ यथार्हं मतिचाराद्यपेक्षया यथोचित पापच्छेदकत्वात् प्राय श्चित्तवि शोधकत्वा द्वा प्रायश्चित उक्तच पावछिंदइजम्हा पायच्छित्ततुभन्नएतेण पाएणवाविचित्त विसोहएतेण पच्छित्तति ॥ १ ॥ तपः कर्म्म निर्विकृतिकादिकं

जित्तए ४ संवसित्तए ५ सज्झायंउद्दिसित्तए ६ सज्झायंसमुद्दिसित्तए सज्झायमणुजाणित्तए आलोइत्तए ९ पडिक्कमित्तए १० निंदित्तए ११ गरहित्तए १२ विउट्टित्तए १३ विसोहित्तए १४ अकरणयाए १५ अहा

मोवेशीने । सिज्झाय तथा योग क्रियानो कहिवो एहीज दिशिये । योगनी समाचारी थिरकरवी परिचित करवी । तिमज योगक्रिया धारवी बीजाने कहिवी । आलोचवू गुरूने आगलि अपराधनो कहिवुं । पडिकमणु करवू पापथी ऊसरवू । आत्माने साखे पापनिंदवूं । गुरूनी साखे पापनी गर्हणाकरवी । पापपंकनो छेदिवू । अतीचारना मलथी आत्माने शुद्ध करिवू । वली पाप नकरवूं तेहने अर्थे जतन करिवूं । उजमालथावूं । यथायोग्य

प्रतिपत्तुमभ्युपगन्तु मिति १६ सप्तदशं सूत्रं साक्षादेवाह ॥ दोदिसेत्यादि ॥ पश्चिमैवा मङ्गलपरिहारार्थं मपश्चिमा साचासौ मरणमेवयोन्त स्तन्नभवामा रणान्तिकी साचासौसलिख्यतेनयाशरीरकषायादीति संलेखनातपोविशेषः साचेति अपश्चिम मारणान्तिकसंलेखना तस्याः ॥ झूसणत्ति ॥ जोषणा सेवा तया तल्लक्षणधर्म्मेणेत्यर्थः ॥ झूसियाणंति ॥ सेविताना तद्युक्तानामित्यर्थः तया वा झूषिताना क्षपिताना क्षपितदेहानामित्यर्थः तथा भक्तपाने प्रत्याख्याते यैस्ते तथा तेषां पादपव दुपगताना मचेष्टतया स्थितानामनशन विशेष प्रतिपन्नानामित्यर्थः काल मरणकाल मनवकांक्षिणा तत्रानुत्सुकाना विहर्त्तुं स्थातुमिति १७ एवमेतानिदिक्सूत्राण्या दितोऽष्टादश सर्व्वत्र यन्नव्याख्यातं तत्सुगमत्वात् द्वितिद्विस्थानकस्य प्रथमोद्देशो विवरणतः समाप्तः ॥ १ ॥

ठित्तए अहारिहंपायच्छित्तंतवोकम्मं पडिवज्जित्तए १६ दोदिसाओ अभिगिज्झकप्पइ णिग्गंथाणंवा णिग्गथीणंवा अपच्छिममारणंतिय संलेहणा झूसणाझूसित्ताणं भत्तपाणपडियाइक्खित्ताणं पाओवगयाणं कालं अणवकखमाणाणं विहरित्तए तंजहा पाईणंचेव उदीणंचेव ॥ वीयठाणस्सपढमोउद्देसओसम्मत्तो १ ॥

अतीचारने अनुसारें प्रायश्चित्त पाप छेदवा टालवाने अर्थे तथा तपकर्म पडवजवाने अर्थे एतला बोल पूरबदिशि उत्तरदिशि सन्मुख रही आदरवा। वली बे दिशीने सनमुखे रही ने कल्पे साधुने तथा साध्वीने छेहली मारणातिक मंगलीक पणा माटे अपश्चिम कही संलेखनानी सेवा ते प्रति सेवतां तेणे सहित देह मूकतां। भात पाणीनो जावजीव पचखाण करता। वृक्षनी काचीडालनी परे थिर रहियो। मरणने अणवाछवो एह रीतें अनशन करवो ते बेदिशि सनमुखरही करवो ते कहेछे। पूर्व दिशिने तथा उत्तर दिशिने ॥ इति बीजा ठाणानो पहिलो उद्देशो सपूरण थयो ॥ १ ॥

इहानन्तरोद्देशकेजीवाजीव धर्म्मोद्वित्वविशिष्टाउक्ता द्वितीयोद्देशकेतु द्वित्वविशिष्टाएव जीवधर्म्मा उच्यन्ते इत्यनेन सम्बन्धेनायातस्योद्देशकस्येदमादिसूत्रं ॥ जेदेवेत्यादि ॥ अस्यचानन्तरसूत्रेण सहाय मभिसम्बन्धः प्रथमोद्देशकान्त्यसूत्रे पादपोपगमनमुक्त तस्माच्चदेवत्व केषांचिद्भवतीति देवविशेषभणनेन तत्क र्मबन्धवेदने प्रतिपादयन्नाह ॥ जेदेवेत्यादि ॥ येदेवाः सुराः वक्ष्यमाणविशेषणेभ्यो वैमानिका अनशनादे रुत्पन्नाः किंभूताः ॥ उड्ढन्ति ॥ उर्द्धलोकस्तत्रोप पन्नका उत्पन्ना ऊर्द्धोपपन्नका स्तेच द्विधा कल्पोपपन्नकाः सौधर्म्मादिदेवलोकोत्पन्नकास्तथा विमानोपपन्नकाः ग्रैवेयकानुत्तरलक्षणविमानोत्पन्नाः कल्पा तीताइत्यर्थः तथापरे ॥ चारोववन्नगत्ति ॥ चरन्ति भ्रमन्ति ज्योतिष्कविमानानियत्र स चारो ज्योतिश्चक्रक्षेत्र समस्तमेवव्युत्पत्त्यर्थमात्रानपेक्षणेन शब्दप्रवृ त्ति निमित्ताश्रयणात् तत्रोपपन्नका श्चारोपपन्नका ज्योतिष्का नच पादपोपगमनादे र्ज्योतिष्कत्व नभवति परिणामविशेषादिति तेपिच द्विधैव तथा हि चारे ज्योतिश्चक्रक्षेत्रे स्थितिरेव येषांते चारस्थितिकाः समयक्षेत्रबहिर्वर्त्तिनो घटाकृतयइत्यर्थ तथा गतौ रति येषांते गति रतिकाः समयक्षेत्रवर्त्तिनइ त्यर्थ. गतिरतयश्च सततगतयोपि भवन्तीत्यतआह गतिर्गमन समितिसन्तत मापन्नकाः प्राप्ता.गतिसमापन्नका. अनुपरतगतयइत्यर्थः तेषा देवानां द्विवि धानां सदा नित्यसमित सतत यत्पाप ज्ञानावरणादि सततबन्धकत्वा ज्जीवाना क्रियते बध्यते कर्म्मकर्त्प्रयोगोय भवतिसम्पद्यतेइत्यर्थः ते देवा स्तस्यक

जेदेवा उड्ढोववन्नगा तेदुविहा पन्नत्ता तंजहा। कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारठिइया

जेदेवता ऊर्द्धलोके ऊपनाछे ते बेप्रकारेछे ते कहेछे । कल्पते बादर देवलोकना ऊपना । विमाने ऊपना जे नवग्रैवेयकना पांच अनुत्तर विमा नना ऊपना । चाले भमें ते जोतिषीदेवता अढीद्वीपना । थिरजोतिषी अढीद्वीपबाहिर । चालवानेविषे जेहनेरतिछे ते गतिरतिक मनुष्यक्षे

गेण: आबाधाकालातिक्रमेसति ॥ तत्थगयाविति ॥ अपरिवेनकारार्थ स्तस्यचैवंसंप्रयोग स्तत्रैव देवभवएव कल्पातीतानां चेत्रान्तरादिगमनासम्भवा दिह तत्रान्यत्रशब्दाभ्या भवएव विवक्षितो नचेत्रशयनासनादीनि गता वर्त्तमानाएके केचन देवा वेदना मुदयविपाकम्वेदयन्ति अनुभवन्ति ॥ अन्नत्थगयाविन्ति॥ देवभवादन्यत्रैवभवान्तरे गता उत्पन्नादेवावेदनामनुभवन्ति केचित्तूभयत्रापि अन्ये विपाकोदयापेक्षया नोभयत्रापीति एतच्च विकल्पद्वय सूत्रेनाश्रित द्वि त्वाधिकारादिति सूत्रोक्तमेव विकल्पद्वयं सर्वजीवेषु चतुर्विंशतिदण्डकेन प्ररूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ प्रायः सुगम नवरं ॥ तत्थगयावि अन्नत्थग यावि ॥ एवमभिलापेनदण्डकोनेयो यावत् पचेंद्रियतिर्यंचो अतएवाह ॥ जीवेत्यादि ॥ मनुष्येषु पुनरभिलापविशेषोद्दृश्यः यथा ॥ इहगयाविएगइयाइति ॥

गइरइया गइसमावन्नगा तेसिणंदेवाणं सयासमियं जेपावेकम्मे कज्जइ तत्थगयावि एगइया वेयणंवेयंति अ न्नत्थगयावि एगइया वेयणंवेयंति नेरइयाणं सयासमियं जेपावेकम्मेकज्जइ तत्थगयावि एगइयावेयणवेयंति अन्नत्थगयावि एगइयावेयणंवेयंति जावपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं सयासमियं जेपावेकम्मे

त्रना । गतिनेविषें पहवजा एतले ज्योतिषी । ते देवताने सदा जेपापकर्म उपजेछे बंधायेछे तेहीज देवताना भवनेंविषे केतलाईक देवता वेदेंभो गवे । केतलाएक देवता भवांतरे जईने वेदे भोगवे। नारकी जे सदा सर्वदा निरंतर पापकर्म करेछे बांधेछे तेपापना फल विपाक केतलाएक ति हाज नारकीमां रहिया वेदे भोगवे । अथवा बीजे भवांतरे गया थका पणि केतलाएक नारकी ते पापना फल वेदे भोगवे । एम जाव पंचेंद्रिय तिर्यंचलगे जाणिवा जे भवे पापकरे तेहिजभवे भोगवे अने बीजे भवे पणि भोगवे । मनुष्य जे सदा पापकर्म करेछे तेपापना फल केतलाएक ते

सूत्रकारोहि मनुष्यो ऽतस्तत्रैत्येवभूतपरोक्षानासन्ननिर्देशं विमुच्य मनुष्यसूत्रे इहेत्येव निर्दिशतिस्म मनुष्यभवस्यस्वीकृतत्वेन प्रत्यक्षासन्नवाचिनइदम्शब्दस्य विषयत्वादिति अतएवाह ॥ मणुस्सवज्जासेसाएक्कगमत्ति ॥ शेषा व्यंतर ज्योतिष्कवैमानिका एकगमाः तुल्याभिलापाः ननु प्रथमसूत्रएव ज्योतिष्क वैमानिकदेवाना विवक्षितार्थस्याभिहितत्वात् किंपुनरिह तद्ग्रहणेनेति उच्यते तत्रानुष्ठान फलदर्शन प्रसङ्गेन भेदत श्चोक्तत्वा दिहतु दण्डकक्रमेण सामान्यत श्चोक्तत्वा दिति नदोषोभवति दृश्यते चेह तत्रतत्र विशेषोक्तावपि सामान्योक्ति रितरोक्तौ त्वितरेति तत्र गता वेदनां वेदयन्तीत्युक्त मतोनारकादीना गति तद्विपर्यय स्वामागतिञ्च निरूपयन्नाह ॥ नेरइएत्यादि ॥ दण्डकः कण्ठ्यो नवरं नैरयिका नारका द्वयो र्मनुष्यगति तिर्यग्गतिलक्षणयो र्गत्यो रधिकरण भूतयो र्गति र्येषांते तथा द्वाभ्यामेताभ्य.मेवा वधिभूताभ्या मागति रागमनं येषांते तथा उदित नाकायु र्नारकएव व्यपदिश्यते अतउच्यते ॥ नेरइए नेरइएसुत्ति ॥ नारकेषुमध्ये इत्यर्थ. इहचोद्देशक्रमव्यत्ययात् प्रथमवाक्येनागतिरुक्ता ॥ सेचेवणसेत्ति ॥ योमानुषत्वादितो नरकगतः सएवासौनारको नान्यो

कज्जइ इहगयाविएगइयावेयणंवेयंति अन्नत्थगयावि एगइयावेयणवेयंति मंणुस्सवज्जं सेसाएक्कगमा नेरइयादुगइया दुयागइया पन्नत्ता तंजहा नेरइएनेरइएसुउववज्जमाणे मणुस्सेहिंतोवा पंचिंदियतिरिक्खजो

हिजअवे जोगवे । केतलाएक अवातरे जोगवै । मनुष्यवर्जी शेषवीजा दंडक व्यंतर जोतिषी वैमानिक एकगमा सरीखा जांणिवा ॥ नारकीने जावानी बेगतिछै आवानी बेआगतिछै तेकहैछै । नारकीनो आऊखो जेणे बाध्यो तेहने नारकीज कहिये । ते नारकी नरकमां उपजैतो मनुष्यमाथी उपजै । अथवा पंचेंद्री तिर्यंचमाथी उपजे एह बे माहियीज नारकीथाय वली तेजनारकी नारकीपणुं मूकेतो नरकमांथी नीसरी मनुष्यमा आवी

ऽने नेकांतानित्यत्वं निरस्तमिति ॥ विप्पजहमाणेत्ति ॥ विप्रजहन् परित्यजन् इहच भूतभावतया नारकव्यपदेश अनेनवाक्येन गतिरुक्ता द्व्यस्य व्याख्या त तेजस्कायिकावा गतयस्तिर्यग्मनुष्यापेक्षया एकागतय स्तिर्यगपेक्षयेति वाक्यमुपजीव्येति ॥ एवमसुरकुमाराविवित्ति ॥ नारकवद्दृत्ताव्याद्रत्यर्थ. नवरं के वल मयं विशेषः तिर्यक्षु नपंचेन्द्रियेष्वेवोत्पद्यते पृथिव्यादिष्वपि तदुत्पत्ते रित्यतः सामान्यतप्राह ॥ सेचेवणसेद्रत्यादि जाव तिरिक्खजोणियत्ताएवागच्छे ज्जत्ति एवसव्वदेवत्ति ॥ असुरवत् द्वादशापिदण्डकपदानिवाच्यानि तेषामप्येकेंद्रियेषूत्पत्ते रिति ॥ नोपुढविकाएहिंतोत्ति ॥ अनेन पृथ्वीकायिकानिषेधहा

णिएहिंतोवा उववज्जेज्जा सेचेवणंसे नेरइयत्तंविप्पजहमाणे मणुस्सत्ताएवा पचिंदियतिरिक्खजोणियत्ता एवागच्छेज्जा एवमसुरकुमाराणवि णवरं सेचेवणंसे असुरकुमारत्तंविप्पजहमाणे मणुस्सत्ताएवा तिरिक्खजो णियत्ताएवा गच्छेज्जा एवसव्वदेवा पुढविकाइया दुगइया दुयागइया पन्नत्ता तंजहा पुढविकाइएपुढविका इएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहितोवा णोपुढविकाइएहितोउववज्जेज्जा सेचेवणंसे पुढविकाइयत्तंवि

उपजे । अथवा पचेंद्रीतिर्यंचमां आवी उपजे एबेठिकाणे जाय । एम नारकीनीपरें असुरकुमार जाणवा पणि एतलोविशेष जेते असुरकुमार देवता असुरकुमारपणो मूंकेतो मनुष्य मां ऊपजे अथवा पंचेंद्रीतिर्यंच मां पृथिवी पाणी वनस्पति एहमा पणि ऊपजे एतलोविशेष । एमसर्वदेवताना व्यतर जोतिषी सौधर्म ईशान लगे जाणवो । पृथिवीकायमां जीव बेगतीयेजाय बेमाथी आवे ते कहेछे । पृथिवी कायनो आयु वांधी पृथिवीकायमा उपजे अने पृथिवीकायमांथी पृथिवीकायमा उपजें। नारकी वर्जीने बीजा सर्वदण्डकमांथी आवी उपजे। पृथिवी प्रथमकह्यो तेविना बीजासर्व नोपृ

रेणाप्कायिकादयः सर्वे गृहीता द्विस्थानकानुरोधादिति तेभ्योवा नारकवर्जेभ्यः समुत्पद्येत ॥ नोपुढविकाइयत्ताएत्ति ॥ देवनारकवर्जाप्कायाऽदितया गच्छेदिति ॥ एवं जावमणुस्सेत्ति ॥ यथा पृथ्वीकायिका दुगइयाइत्यादिभि रभिलापै रुक्ताः एवमेभिरेवाप्कायादयो मनुष्यावसाना. पृथ्वीकायिकशब्दस्था ने ऽप्कायादिव्यपदेशं कुर्वद्भिरभिधातव्याइति व्यन्तरादयस्तु पूर्वमतिदिष्टा एवेति २ जीवाधिकारादेव भव्यादिविशेषणैः षोडशभि र्दण्डकप्ररूपणा माह तत्रभव्यदण्डकः काव्यः १ अनन्तरदण्डके ॥ अणतरत्ति ॥ एकस्मा दनन्तरमुत्पन्ना येते अनन्तरोपपन्नकाः तदन्यथातु परम्परोपपन्नका विवक्षितदेशापे क्षया वा ये ऽनन्तरतयोत्पन्ना स्ते आद्याः परपरयात्वितरेइति गतिदण्डके गतिसमापन्नका नरकाङ्गच्छत इतरेतु तत्र ये गता अथवा गतिसमापन्ना ना

प्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताएवा णोपुढविकाइयत्ताएवा गच्छेज्जा एवं जाव मणुस्सा दुविहाणेरइया प० तजहा भवसिद्धियाचेव अभवसिद्धियाचेव जाववेमाणिया दुविहा नेरइया पन्नत्ता तजहा अणंतरोववन्न गाचेव परंपरोववन्नगाचेव जाववेमाणिया दुविहाणेरइया पन्नत्ता तंजहा गइसमावन्नगाचेव अगइसमाव

थिवी कहिये। वली तेज पृथिवीकायना जीव पृथिवीकायपणो मूंके तो पृथिवीकायमां ऊपजे। अथवा नो पृथिवी ते बीजे सर्वथानके जाय देवता ना रकी जोतिषी एतलामां नजाय। एम जाव मनुष्यलगे जाणवो। वली नारकी बे प्रकारे कहिया ते कहेछे। एकभव्यनारकी बीजा अभव्यनारकी । एम जाव वैमानिक चौवीस दंडके जाणवा। वली नारकी बे प्रकारे ते कहे छे। अनंतर ऊपना नारकी घणा एक उपना ॥ परपराये ऊपना ते एकसमयेएक बीजे समगे बीजो। एम जाव चौवीस दंडके वैमानिक लगे। वली नारकी बे भेदे ते कहे छे। एक नरकमां जाता अथवा नरक पणो पाम्या तुरत ते

रकाल गाताः इतरेतु द्व्यनारका अथवा चलस्थिरत्वापेक्षया ते ज्ञेया इति प्रथमसमयदण्डके ॥ पढमेत्यादि ॥ प्रथमः समय उपपन्नानां येषान्ते प्रथमसमयोपपन्नका स्तदन्येऽप्रथमसमयोपपन्नका इति ॥ ४ ॥ आहारकदण्डके आहारका: सदैव अनाहारकास्तु विग्रहगता केवली वा समयौ ये नाडीमध्ये गत्वा तत्रोत्पद्यन्ते येऽन्यथा ते नैनिति उच्छासदण्डके उच्छसन्तीत्युच्छासका स्तत्पर्याप्तिपर्याप्तका स्तदन्येतु नोच्छासका: ॥ ६ ॥ इन्द्रियदण्डके सेंद्रिया इन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्ता: तदपर्याप्तास्त्वनिन्द्रिया: पर्याप्तदण्डके पर्याप्ता: पर्याप्तनामकर्मोदया दितरेत्वितरोदयादिति ॥ संज्ञिदण्डके सञ्ज्ञिनो मनःप

न्नगाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तं० पढमसमयउववन्नगाचेव अपढमसमयउववन्नगाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरया पन्नत्ता तंजहा आहारगाचेव अणाहारगाचेव एवंजाव वेमाणिया दुविहा णेरइया पन्नत्ता तंजहा उस्सासगाचेव नोउस्सासगाचेव जाववेमाणिया दुविहाणेरइया पन्नत्ता तजहा सइंदियाचेव अणिंदियाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव

गति समापन्न कहिये । जे घणां कालना तिहां छे ते अगति समापन्न कहिये ॥ एम जाव चौवीस दंडकें वैमानिक लगे जाणवा ॥ वली नारकी बे प्रकारें ते कहे छे । प्रथम समयना ऊपना बीजे समयना ऊपना । एम जाव चौवीस दंडके वैमानिक लगे जाणवा । वली नारकी बे भेदे ते कहे छे । सदैव आहार लेवे ते आहारक विग्रह गतियें करी नरके उपजस्ये ते एकसमये बे समये अनाहारी । एम जाव चौवीस दंडकें वैमानिक लगें जाणवा । वली नारकी बे भेदे ते कहे छे । पर्याप्ता ते श्वासोश्वास ले । अपर्याप्ता श्वासोश्वास नथी लेता । एम जाव चौवीस दंडकें वैमानिकलगे

र्याप्ता पर्याप्तका स्तया अपर्याप्तकास्तु येते असंज्ञिन इति एवं ॥ पंचेंदियेत्यादि ॥ अस्यायमर्थः यथा नारकाः सञ्ज्ञसंज्ञिभेदेनोक्ताः ॥ एवंविगलेन्दियवज्ज
त्ति ॥ विकलान्यपरिपूर्णानि सख्येयेंद्रियाणि येषान्ते विकलेंद्रिया स्तान् पृथिव्यादीन् द्वित्रिचतुरिन्द्रियांश्चवर्ज्जयित्वा ये अन्ये चतुर्विंशतिदण्डके पञ्चेंद्रि
या असुरादयो भवन्ति ते सर्वेपि सञ्ज्ञसञ्ज्ञितया वाच्या दण्डकावसानमाह ॥ जाववेमाणियत्ति ॥ वैमानिकपर्यवसाना अप्येववाच्या इति ॥ क्वचिज्जाव
वाणमतरत्ति ॥ पाठ स्तत्रायमर्थः ये असञ्ज्ञिभ्योनारकादितयोत्पद्यन्ते ते ऽसञ्ज्ञिन एवोच्यन्ते असञ्ज्ञिनश्च नारकादिषुव्यन्तरावसाने षूत्पद्यन्ते न ज्योतिष्क
वैमानिकेष्विति तेषा मसञ्ज्ञित्वाभावादिहग्रहणमिति ॥ ८ ॥ भाषादण्डके भाषका भाषापर्याप्त्युदये अभाषका स्तदपर्याप्तकावस्थायामिति एकेंद्रियाणा

जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा सन्नीचेव असन्नीचेव एवंपंचिंदियासव्वे विगलिंदियवज्जा जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा भासगाचेव अभासगाचेव एवमेगिंदियवज्जासव्वे दुविहानेर इया प० तं० सम्मदिठियाचेव मिच्छदिठियाचेव एगिंदियवज्जासव्वे दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा परि

वली बेप्रकारे नारकी ते कहेछे । इंद्रीसहित ते पर्याप्ते करी पर्याप्ता । अपर्याप्ता हजी पूरी पर्याप्ति नथी थई । एम यावत् चौबीस दंडके वै
मानिकलगे । वली नारकी बे प्रकारे ते कहेछे । पर्याप्तनाम कर्मथी एक पर्याप्ता बीजा अपर्याप्ता हजी पूरी पर्याप्ति नथी थइ । एम जाव
चौबीस दडके वैमानिकलगे । वली नारकी बे भेदे ते कहेछे सनी मन पर्याप्ति सहित असंनी मन पर्याप्ति नथी थइ । एम सन्नी असन्नी पंचेद्री
सर्व जाणवा । विगलेद्री छाडीने बेद्री चौरेद्री छांडीने एहने मन नहोय । एम वैमानिकलगे लेवो । वली बे प्रकारे नारकी ते कहेछे । समकितदृष्टी

भाषापर्याप्ति नोक्तीत्यत आह ॥ एवमित्यादि ॥ १० ॥ सम्यग्दृष्टिदण्डके सम्यक्तमेवेंद्रियाणां नास्ति द्वींद्रियादीनान्तु सोखादनस्था दपीत्युक्तं ॥ एगिंदिय वज्जासव्वेति ॥ ११ ॥ संसारदण्डके परित्तसंसारिका: संक्षिप्तभवा इतरेत्वितरे ॥ १२ ॥ स्थितिदण्डके काल: कृष्णोपिस्यात् समय आचारोपिस्या दत: कालश्चासौसमयश्चेति कालसमय: संख्येयो वर्षप्रमाणत: सयस्यासा संख्येयकालसमया स्थितिरवस्थानयेषाते संख्येयकालसमयस्थितिका दशवर्षसहस्रादि स्थितय इत्यर्थ: इतरेतु पल्योपमासंख्येयभागादिस्थितय: ॥ संखेज्जकालठियत्तिक्वचित्पाठ: ॥ सचसुगमएवेति ॥ एवमिति नारकवत् द्विविधस्थितिका: द ण्डकोक्ता: किसर्वेपि नेत्याह पचेंद्रिया असुरादय: किमुक्तं भवति एकेन्द्रियविकलेन्द्रियवर्जा एतेषांहि द्वाविंशतिवर्षसहस्रादिकासंख्यातवर्षस्थिति: पचेन्द्रि याअपि किंसर्वे नेत्याह यावद्व्यन्तरा: व्यंतरान्ता एतेहि उभयस्वभावाअपन्ति ज्योतिष्कवैमानिकास्तु असंख्यातकालस्थितय एवेति ॥ १३ ॥ बोधिदण्डके

त्तसंसारियाचेव अणंतसंसारियाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा संखेज्जकालसमयठिइ याचेव असंखेज्जकालसमयठिइयाचेव एवंपचेंदिया एगिंदियविगलेंदियवज्जा जाव वाणमंतरा दुविहानेर

नारकी । मिथ्यादृष्टी नारकी । एम एकेंद्री वांडीने सर्व दंडके एकेंद्रीमां समकित नहोय । बे प्रकारें नारकी कहिया ते कहेछे । एक थोडा भव शेष छे जेहना एहवो नारकी । बीजो अनंत संसारी । एम यावत् वैमानिकलगे । नारकी बे प्रकारे ते कहेछे । एक संख्याता काल समयनी स्थि तिना एतलें दशहजार वरषना आउखानी स्थितिना । बीजा असंख्यात कालसमय स्थितिना । पल्योपम सागरोपमना आउखाना । एम पचेंद्री लगे । एकेंद्री विगलेंद्री वांडीने एहने असंख्यातो आउखो नथी । एम जाव वाणव्यंतरलगे जोतिषी वैमानिकना असंख्याता आयु छे । बे प्रकारे

वोधि जिंनधर्म्मः सा सुलभा येषान्ते सुलभवोधिका एवमितरेपि ॥ १४ ॥ पाक्षिकादण्डके शुक्लो विशुद्धत्वात्पक्षो भ्युपगमः शुक्लपक्षस्तेन चरन्ति शुक्लपा क्षिकाः शुक्लत्वच क्रियावादित्वेनेति आहच किरियावाईभव्वे नोअभव्वे सुक्कपक्खिएनोकिण्हपक्खिएत्ति शुक्लाना वास्तिकत्वेन शुद्धानांपक्षोवर्गः शु क्लपक्ष स्तत्रभवा शुक्लपाक्षिकाः तद्विपरीतास्तुकृष्णपाक्षिकाइति ॥ १५ ॥ चरमदण्डके येषां स नारकादिभवश्चरमः पुनस्तेनैव नोत्पत्स्यते सिद्धिगमना त्ते चरमा अन्येत्वचरमा इति ॥ १६ ॥ एवमेते आदितोऽष्टादशदण्डकाः ॥ प्राग्वैमानिकाश्चरमाचरमत्वेनोक्ता स्तेचावधिनाऽधोलोकादी न्विदन्त्यतस्तद्वेदने जीवस्यप्रकारद्वयमाह ॥ दोहीत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय द्वाभ्या स्थानाभ्या प्रकाराभ्या आत्माजीवो ऽधोलोकज्ञानात्यवधिज्ञानेन पश्यत्यवधिदर्शनेन समवहतेन वैक्रियससुद्घातगतेनात्मना स्वभावेन समुद्घातान्तरगतेनवा असमवहतेन त्वन्यथेति एतदेवव्याख्याति ॥ अहोहीत्यादि ॥ यत्प्रकारो वधिरस्येति यथा वधिः

इया पन्नत्ता तंजहा सुलभवोहियाय दुल्लभवोहियाय जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा कण्ह पक्खियाचेव सुक्कपक्खियाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा चरमाचेव अचरमाचेव जा ववेमाणिया दोहिंठाणेहिंआया अधोलोगं जाणइपासइ तंजहा समोहएणंचेव अप्पाणेणं आया अहेलो

नारकी छे ते कहेछे । एक सुलभ वोधीछे जेहने जिनधर्म पामवो सोहिलो छे। बीजो दुर्लभ वोधीछे जेहने जिनधर्मनो पामिवो दोहिलो छे । एम जाव वैमानिकलगे जाणिवो । वली वे प्रकारे नारकी छे ते कहेछे । एककृष्णपाखिया जे वहु कर्मी छे । बीजा शुकल पाखिया जेहना कर्म हलु आ छे । एम जाव वैमानिकलगे जाणवा । नारकी वे प्रकार ते कहेछे । एक चरम जे फरी नारकीमां न जाय मोक्ष जाय ते । बीजो अचरम जे

ज्ञादिदीर्घत्वगाढ्यतत्वात् परमावधेर्वा अधोलोकविषयस्य सोधोवधि राजा नियतक्षेत्रविषया ऽवधिज्ञानी सकदाचित् समवहतेन कदाचिदन्यथेति समवह
ता समवहतेनेति एवमित्यादि एवमिति यथा ऽधोलोकः समवहतासमवहतप्रकाराभ्यां मवधेर्विषयतयोक्त एवतिर्यग्लोकादयोपीति सुगमानिच तिर्यग्लो
कोर्ध्वलोक केवल कल्पलोकसूत्राणि नवरं केवलः परिपूर्णः सचासौ स्वकार्यसामर्थ्यात्कल्पश्च केवलज्ञानमिवपरिपूर्णतयेति केवलकल्पो अथवाकेवलकल्पः सम
यभाषया परिपूर्णः स्तं लोकचतुर्दशरज्ज्वात्मकमिति वैक्रियसमुद्घातानन्तरं वैक्रियशरीरं भवतीति वैक्रियशरीरमाश्रित्या ऽधोलोकादिज्ञाने प्रकारद्वयमाह ॥ दो
हीत्यादि सूत्रचतुष्टय कंठ्य नवर ॥ विउव्वएणन्ति ॥ कृतवैक्रियशरीरेणेति ॥ ज्ञानाधिकारएवेदमपरमाह ॥ दोहीत्यादि पञ्चसूत्री स्थानाभ्यां प्रकाराभ्याम् ॥ देसे

गंजाणइपासइ असमोहएणंचेव अप्पाणेणं आया अहोलोगं जाणइपासइ अधोहिसमोहएसमोहएणंचेव
अप्पाणेणं आया अहेलोगंजाणइपासइ एवतिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं दोहिठाणेहिआयाअ
होलोगंजाणइपासइ तंजहा विउव्विएणंचेव अप्पाणेणं आया अहेलोगंजाणइपासइ अविउव्विएणंचेव अ

वली नारकीमां जासे बीजा भवकरीने । एम जाव वैमानिकलगे बे प्रकारे जीव अधोलोकने जाणे देखे ते कहे छे । वैक्रिय समुदघाते जीव स्वभा
वें करीने । अवधिनाणेकरी अधोलोकने आत्मा जाणे देखे अवधि दर्शनेकरी । बीजे भेदे वैक्रिय समुदघात विनाज जीव अधोलोक प्रतें जाणे देखे
अवधिनाण अवधि दर्शनेकरी । अधोवर्ती अवधिनाणी जीव अथवा परमावधि नाणनो धणी वैक्रिय समुदघातेकरी अथवा वैक्रिय समुदघात विना
पणि जीवस्वभावे करीने अधोलोकप्रति जाणे देखे । इमज तिरछा लोकप्रतें जाणे देखे । एमज ऊर्द्धलोकप्रतें जाणे देखे । एमज केवललोक ते चौदे

णविति॥देशेन शृणोत्येकेन श्रोत्रेणैकश्रोतोपघातेसति सर्व्वेणवानुपहतश्रोत्रेन्द्रियो योवा सभिन्नश्रोतोभिधानलब्धियुक्तः ससर्वैरिन्द्रियैः शृणोतीति सर्व्वेणेति व्यपदिश्यते एवमितियथाशब्दान् देशसर्व्वाभ्या एवरूपादीनपि नवरजिह्वादेशस्यप्रसुप्त्यादिनोपघाताद्देशेनास्वादयतीत्यवसेयमिति॥ शब्दश्रवणादयो जीव परिणामा उक्ता स्व अस्तावात् तत्परिणामान्तराख्याह॥ दोहीत्यादि॥ नवसूत्राणि सुगमानि नवर अवभासते द्योतते देशेन खद्योतकवत् सर्वतः प्रदीपवत्

प्पाणेणं आयाअहेलोगंजाणइपासइ अहोहिविउव्वियाविउव्विएणंचेव अप्पाणेणं आयाअहोलोगं जाणइ पासइ एवंतिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पंलोगं दोहिंठाणेहिंआया सद्दाइंसुणेइ तंदेसेणवि आया सद्दाइं सुणेइ सव्वेणवि आयासद्दाइं सुणेइ एवंरूवाइंपासइ गंधाइं आघायइ रसाइंआसाएइ फासाइंपडिसंवेएइ

राजप्रमाणप्रते जांणे देखै। केवलनाण केवल दर्शनेकरीने। वली बे प्रकारे जीव अधोलोकप्रते जाणे देखे शरीर आश्रीने। ते कहेछे। वैक्रिय शरीरे आतमस्वभावे जीव अधोलोकप्रते जाणे देखे। वैक्रिय शरीर कीधां विनां पणि स्वभावेज अधोलोकप्रते जाणे देखे। परमावधि नाणनो धणी इमज वैक्रिय शरीर करीने अथवा अणकरीने स्वभावेज जीव अधोलोकप्रते जाणे देखे। इमज तिरछालोक अने ऊर्द्धलोकना आलावा जाणिवा। बे थानके जीव शब्दप्रति सांभले ते कहेछे। देशथकी एकजकाने बीजा कानने उपघाते जीव शब्द शाभले एक काने बहिरो। अथवा सर्वथी बे कानेकरी साभले संभिन्नश्रोतो लब्धिनो धणी सर्व प्रकारे सांभले। एम बे प्रकारे रूप देखै एक आखे कांणो होय ते देशथी। एम नासिकाथी गधलीये देशथी सर्वथी ए बे भेद एम जीभथी रसलीये देशथी पडजीभी प्रमुख रोग सर्वथी अन्यथालिये। एम फरशप णि देशथी सर्वथी कहिवू बे

अथवा अवभासते जानाति सच देशतः पङ्कावधिज्ञानो सर्व्वतोऽभ्यन्तरावधिरिति एवमिति देशसर्वाभ्यां प्रभासते प्रकर्षेणद्योतते २ विकरोति देशेन ह स्तादिवैक्रियकरणेन सर्वेणसर्व्वस्यैवकायस्येति ३ ॥ परियारेइति ॥ मैथुन सेवते देशेन मनोयोगादीनामन्यतमेन सर्वेण योगत्रयेणापि ४ भाषा भाषते देशे न जिह्वाग्रादिना सर्व्वेण समग्रताल्वादिस्थाने. ५ आहारयति देशेन मुखमात्रेण सर्वेण ओजआहारापेक्षया आहारमेव परिणमयति परिणामनय ति खलरसविभागेन भक्ताश्रयदेशस्य प्लीहादिनारुज्जत्वात् देशतः अन्यथासर्व्वतः वेदयति अनुभवति देशेन हस्तादिना अवयवेन सर्वेण सर्व्वावयवै रा हारसत्कान् परिणमितपुद्गलान् इष्टानिष्टपरिणामतः निर्ज्जरयति त्यजत्याहारितान् परिणामितान् वेदितान् आहारपुद्गलान् देशेन अपानादिना सर्व्वेण

दोहिंठाणेहिं आया ओभासइ तंजहा देसेणवि आया ओभासइ सव्वेणवि आया ओभासइ एवंपभासइविउ व्वइ परियावेइ भासंभासइ आहारेइ परिणामेइ वेएइ निज्जरेइ दोहिंठाणेहिं देवेसद्दाइं सुणेइ तंजहा

थानकेकरी जीव तेजेकरी दीपे ते कहेछे। देषथी खजुआनी परे दीपे । सर्वथी दीवानी परे दीपे एम प्रकर्षथी दीपें देशथी सर्वथी। एम विकुर्वे देशथी हाथप्रमुख वैक्रियकरे सर्वथी काया । एममैथुन सेवे देशथी मनेकरी सर्वथी विधीये सेवे । एम भाषा बोले देशे जीभथी सर्वथी तालु आदिकेंकरी एम आहार सुखमात्रे लीये सर्वथी पूर्ण आहार । एम परगमावे देशथी फीहरो पेटमां होय तेरो सर्वथी रार्ब आंगे । वेदे अनुभवे आहारने हस्ता दिके अवयवे करी एकथी ते देशे । सर्वे शरीरे भोगवे ते सर्वथी । देशथी छांडे अधोवात नीकाले । सर्वरी सारे शरीरे परसेवनी परे । त्यजे छां डे आहारने देशथो सर्वथी । बे थानके करीने देवता पणि शब्दप्रति सांभले ते कहे छे देशथी एक शब्द मांथी कांईक सांभले । सर्वथी जे बोले

शरीरेणैव प्रस्वेदवदिति अथचैतानि चतुर्दशापि सूत्राणि विवक्षितविषयवत्वापेक्षयानेयानि तत्र देशसर्वयोजना यथा देशेनापीति देशतोपिशृणोति ॥
विवक्षितशब्दानांमध्ये कांश्चिच्छृणोति सर्व्वेणापीति सर्वतस्तु सामस्त्येन सर्वानेवेत्यर्थः एव रूपादीनपि तथा विवक्षितस्य देशसर्व्वंवा विवक्षितमवभास
यत्येवं प्रभासयत्येवंविकुर्वणीय विकुरुते परिचारणीय स्त्रीशरीरादिपरिचारयति भाषणीयापेक्षया देशतो भाषा भाषते सर्व्वतोवेति अभ्यवहार्यमाहारय
ति आहृतपरिणमयति वेद्यकर्म्मवेदयति देशतः सर्व्वतोवा एवनिर्जरयत्यपि ॥ देशसर्व्वाभ्यां सामान्यतः श्रवणाद्युक्तविशेषविवक्षाया प्रधानत्वात् देवा
नां तानाश्रित्यतदाह ॥ दोहीत्यादि ॥ एतदपि विवक्षित शब्दादि विशेषापेक्षया सूत्रचतुर्दशकं नेयमिति देशतःसर्वतोवेति अनन्तरोक्ताभावाः शरीरएवस
ति सम्भवन्तीति देवानांच प्रधानत्वा त्तेषामेव व्यक्तितःशरीरनिरूपणायाह ॥ मरुयेत्यादि ॥ सूत्राष्टकं कण्ठ्यम् नवरं मरुतो देवा लोकान्तिकविशेषे यत
उक्तं सारस्वता १ दित्य २ वन्हि ३ वरुण ४ गर्दतोय ५ तुषिता ६ ऽव्यावाध ७ मरुतो ८ रिष्टा ९ श्चेति तेचैकशरीरिणो विग्रहेकार्म्मणशरीरत्वात् तदन
न्तरं वैक्रियभावात् द्विशरीरिणः द्वयोःशरीरयोः समाहारो द्विशरीर तदस्ति येषाते तथा अथवा भवधारणीयमेव यदा तदैकशरीराः यदोत्तरवैक्रियमपि
तदा द्विशरीराः किन्नराद्या स्त्वयोव्यन्तराः शेषा भवनपतयइति परिगणितभेदग्रहणञ्च भेदान्तरोपलक्षणं ननु व्यवच्छेदार्थं सर्व्वजीवानामपि विग्रहे एक
शरीरत्वस्यान्यदाद्विशरीरत्वस्य चोपपद्यमानत्वादिति ८ अतएवसामान्यतआह ॥ देवादुविहेत्यादिकंठ्यम् ॥ द्विस्थानकस्यद्वितीय उद्देशको विवरणतः सं

देसेणवि देवेसद्दाइं सुणेइ सव्वेणविसद्दाइं सुणेइ जावणिज्जरेइ मरुयादेवा दुविहा पन्नत्ता तंजहा एगस ॥

ते सर्व साभले । एम जाव निर्जरावे छाडे एवं सर्वबोल जाणिवा । मरुत देवता आठमां देव लोकांतिक देवता मांहि ते बे प्रकारें कहिया ते ॥

माप्तः ॥ २ ॥ उक्तो द्वितीयोद्देशको ऽथतृतीय आरभ्यते। अस्य चानन्तरेण सहायमभिसम्बन्धो ऽनन्तरोद्देशके जीवपदार्थो ऽनेकधोक्तः प्रनतु तदुप ग्राहकपुद्गलजीवधर्मक्षेत्रद्रव्यलक्षणपदार्थप्ररूपणोच्यते इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदमादिसूत्राष्टकं ॥ दुविहेत्यादि ॥ अस्य पूर्वसूत्रेणसहायमभिसम्बन्धः इहानन्तरो द्देशकान्त्यसूत्रे देवानां शरीरं निरूपितं तत्रांशशब्दादिग्राहकोभवतीत्यत शब्दस्तावन्निरूप्यत इत्येवं सम्बन्धस्यास्यव्याख्या साच सुकरैव नवरं भाषाशब्दो भाषापर्याप्तिनामकर्मोदयो पादितो जीव शब्द इतर स्तु नोभाषाशब्दः अक्षरसम्बद्धोवर्णव्यक्तिमान् नोअक्षरसम्बद्ध स्त्वितरः इति २ आतोद्य स्फटादि स्तस्य

रीरीचेव विसरीरीचेव एवंकिन्नरा किंपुरिसा गंधव्वा णागकुमारा सुवन्नकुमारा अग्गिकुमारा वायुकुमारा देवादुविहा पन्नत्ता तंजहा एगसरीरीचेव विसरीरीचेव ॥ वीयठाणस्सवीउउद्देसउ सम्मत्तो ॥ २ ॥ दुविहेसद्दे प० तं० भासासद्दे चेव नोभासासद्देचेव भासासद्दे दुविहे प० तं० अक्खरसवद्धेचेव नोअक्खरसं

कहे छे। एक शरीरी जिवारे भवधारणीय एक शरीर छे। जिवारे उत्तर वैक्रियकरै तिवारै बे शरीर। एम किन्नर देवता वली किम्पुरुष देवता जाणिवा। एम गंधर्व देवता नागकुमार देवता सुपर्ण कुमार देवता अग्निकुमार देवता वली वायुकुमार देवता लगे बे बे शरीर जाणवा। वली देवता बे प्रकार ते कहे छे। एक शरीर जेहने भवधारणीय शरीर छे। बीजो उत्तर वैक्रिय शरीर धारी ॥ इति बीजा ठाणानो बीजो उदेशो पूरो थयो ॥ २ ॥ हिवे त्रीजो कहे छे। बे शब्द छे। ते कहे छे। एक भाषा। एकनो भाषा जे अजीवथी उपजै अक्षर न जणाय। भाषा बे प्रकारे ते कहेछे। अक्षर सहित। अक्षर रहित बोलतां अक्षर न जणाय। नो भाषा बे प्रकारे ते कहे छे। एक ताडनायें करी उपजे ढोला

य: शब्द: सतथा नोआतोद्यशब्दोवंशस्फोटादिरव: ३ ततं यत्तंत्रीवर्ध्रादिबद्धमातोद्यं तच्च किंचित् घनं यथापिञ्जनकादिं किञ्चि च्छुषिरं यथा वीणापटहा दिक तज्जनित:शब्द स्ततो घन: शुषिरश्चेतिव्यपदिश्यते ५ वितत ततविलचण तन्त्यादिरहितं तदपि घन भाणकवत् शुषिर काहलादिवत् तज्ज:शब्दो विततो घन: शुषिरश्चेति चतु:स्थानके पुनरिदमेवभणिष्यते । ततवीणादिकन्नेयवितितपटहादिक घनन्तुकांस्यतालादि वंशादिशुषिरमतमिति १ विवचाप्रा धान्याच्च नविरोधो मन्तव्यइति ६ भूषणं नूपुरादि नोभूषण भूषणादन्यत् तालोहस्तताल: ॥ लत्तियत्ति ॥ कसिका स्ताहि आतोद्यत्वेन नविवचिता इति अथवा ॥ लत्तियासद्देत्ति ॥ पार्ष्णिप्रहारशब्द: ८ उक्ता: शब्दभेदा इत स्तत्कारणनिरूपणायाह ॥ दोहीत्यादि ॥ द्वाभ्यांस्थानाभ्या कारणाभ्यां शब्दो

वद्देचेव णोभासासद्दे दुविहे प० तं० आउज्जसद्देचेव णोआउज्जसद्दे चेव आउज्जसद्दे दुविहे प० तं० ततेचेव वितते चेव ततेदुविहे पन्नत्ते तंजहा घणेचेव सुसिरेचेव एववितते वि णोआउज्जसद्दे दुविहे पन्नत्ते तंजहा भूसणसद्देचेव नोभूसणसद्देचेव नोभूसणसद्दे दुविहे पन्नत्ते तंजहा तालसद्देचेव लत्तियासद्देचेव दोहिं ठा

दिकनो । बीजो ताड़ना बिना उपजै जिम बास प्रमुख चीरतां थाय । ताड़नाये जे थाय ते बे प्रकारे ते कहेछै । लोहनी तांतनों । बीजो तांत रहित । तत वादित्र बे प्रकारे ते कहे छे । एक घन ते निविड़तालप्रमुख । एक वितत वादित्र पणि जाणवो । बिना ताडनायें उपजै ते बे प्रकारे ते कहे छे । भूषण नेउर झांझर प्रमुख । एक नूषण विनांनो । नो भूषण बे प्रकार ते कहे छे । ताल ते हस्ततालनो । लातनो ते लापटपादूनो प्रहार । बे प्रकारे शब्द ऊपजै ते कहे छे । संहन्यमान हणतां थका बादर पुदगलनो थाय ते घंटा अने लालायें बे थी उपजै । भांजतां बास प्रमुखथी

त्पादःस्या द्भवेत् संहन्यमानानांच संघातमापद्यमानानां सतां कार्यभूतः शब्दोत्पादः स्या त्पञ्चम्यर्थेवाषष्ठीति संहन्यमानेभ्यइत्यर्थः पुद्गलानां बादरपरि णाममानां यथाबच्टालालयो रेवंभिदामानानांच वियुज्यमानानां यथावंशदलानामिति ॥ पुद्गलसंघातभेदयोरेव कारणनिरूपणायाह ॥ दोहीत्यादि ॥ सूत्रपञ्चकं व्यक्तं नवरं स्वयंचेति स्वभावेनवा अभ्रादिष्विव पुद्गलाः संहन्यन्ते सम्बध्यन्ते वाशीकार्ल्पप्रयोगीयं परेणवा पुरुषादिनावा संहन्यन्ते सङ्गताः क्रियंते वार्भप्रयोगीयं एवभिद्यन्ते विघटन्ते यथा परिपतन्ति पर्व्वतशिखरादेरिविति परिशटन्ति कुष्ठादेर्निमित्ता दङ्गुल्यादिवत् विध्वस्यन्ते विनश्यन्ति घनपट

णेहिं सद्दुप्पाएसिया तंजहा साहन्नंताणं चेव पुग्गलाणं सद्दुप्पाएसिया भिज्जंताणचेव पोग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहन्नंति सयंवापोग्गलासाहन्नंति परेणवा पोग्गला साहन्नंति दोहिं ठा णेहिं पोग्गला भिज्जंति तंजहा सयंवा पोग्गला भिज्जंति परेणवा पोग्गला भिज्जंति दोहिं ठाणेहिं पो ग्गला परिसडंति सयंवा पोग्गला परिसडंति परेणवा पोग्गला परिसडंति एव परिवडंति विद्धंसंति दु विहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा भिन्नाचेव अभिन्नाचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा भिउरधम्माचेव नो

उपजे पुदगलनो । बे प्रकार पुदगल बंधाय छे ते कहे छे । एक स्वभावें पुदगल बंधाय बादल प्रमुख । परे करी पुदगल बंधाय मोरक परें एम बे प्रकारे पुदगल भेदाये ते कहे छे । एक पोतानी मेलें पुदगल सडीपडे छे । कोढथी आंगली प्रमुख । परथी पुदगल सडीपडे छे । बे थानके करी पुदगल सडे ते कहे छे । पोतानी मेले पुदगल सडे छे । परथी । एम पडे छे पर्वतना शिखर । एम विणसे छे बादल । बे

लवदिति ५ पुद्गलानेव द्वादशसूत्राणि निरूपयन्नाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ भिन्नाविघटिता इतरेत्वभिन्नाः स्वयमेवभिद्यन्ते इति भिदुरभिदुरत्व धर्म्मोयेषान्ते भिदुरधर्म्माणः अन्तर्भूतभावप्रत्ययोय मतिपचः प्रतीतएवेति २ परमाश्वते ऽणवश्चेति परमाणवः नोपरमाणवः स्कन्धाः सूक्ष्माः येषां सूक्ष्मः परिणामः शीतोष्णस्निग्धरूक्षलक्षणा श्चत्वारएवस्पर्शा स्तेच भाषादयः बादरा स्तु येषां बादरः परिणामः पञ्चादयश्चस्पर्शाः तेचौदारिकादयः ४ पार्श्वेनस्पृष्टाः देहत्व चाक्षुषा रेणुवत् पार्श्वस्पृष्टाः ततोबद्धाः गाढतरसंश्लिष्टा स्तनौतोयवत् पार्श्वतःस्पृष्टाश्च तेबद्धाश्चेति राजदन्तादित्वात् बद्धपार्श्वस्पृष्टाः आहच पुठ्ठरेणुव्व तणुम्मिवद्धमप्पोकयपएसेहिंति एतेच घ्राणेन्द्रियादिग्रहणगोचराः तथानोबद्धाः किन्तु पार्श्वस्पृष्टा इत्येकपदनिषेधे श्रोत्रेन्द्रियग्रहणगोचराः यतउक्तं पुठ्ठं सुणेइसद्द रूवंपुणपासइअपुठ्ठंतु गंधरसंचफासं वद्धंपुठ्ठवियागारेत्ति ॥ १ ॥ उभयपदनिषेधे श्रोत्राद्यविषयाश्चक्षुर्विषयाश्चेति इयमिन्द्रियापेक्षया बद्धपार्श्व

भिउरधम्माचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा परमाणुपोग्गलाचेव नोपरमाणुपोग्गलाचेव दुविहा पोग्ग ला पन्नत्ता तंजहा सुहुमाचेव बायराचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा बद्धपासपुठाचेव नोबद्धपासपु

प्रकारे पुदगल ते कह्या छे । एक जुवाजुवा छे । बीजा एक मलिया छे। वली बे प्रकारे पुदगल ते कह्या छे। पोताने मेले भेदायते भिदुर स्वभाव छे। बीजा नोभिदुर स्वभाव छे वज्रादिक । बे प्रकार पुदगल ते कह्या छे। परमाणु पुदगल जे नजर न आवे केवली जाणे । बंध पुदगल घणानो समूह ते नोपरमाणु । बे भेदे पुदगल ते कह्या छे। एक सुहुम पुदगल ते भाषाना । बीजा बादर । बे भेदे पुदगल ते कह्या छे । बद्धते बंधाणा घणूं सरीर ने एकपासे फरस्या नांक प्रमुख इंद्री गृहण योग्य । नोबद्ध ते बंधाणा नथी जे काने शब्द सांभलाय ते । एभेद इंद्री आश्रीने । बे भेदे पुदगल

स्पृष्टतापुद्गलाना व्याख्याता एवं जीवप्रदेशापेचया परस्परापेचयाच व्याख्येयेति ॥ परियाइयत्ति ॥ विवचितपर्यायमतीताः पयाप्तावा सामस्त्यग्टहीताः कर्मपुद्गलवत् प्रतिषेधः सुन्नात आत्ता ग्टहीताः स्वीकृता जीवेन परिग्रहमात्रतया शरीरादितया वाइत्यन्तेस्म अर्थक्रियार्थिभिरितीष्टाः कान्ताःकमनीया विशिष्टवर्णादियुक्ताः प्रियाः प्रीतिकरा इन्द्रियाल्हादका मनसाज्ञायन्ते शोभना एत इत्येवम्विकल्पमुत्पादयन्तः शोभनत्वप्रकर्षाद्येते मनोज्ञाः मनसो मता वल्लभाः सर्वस्याप्युपभोक्तुः सर्वदाच शोभनत्वप्रकर्षादेव निरुक्तिविधिना मणामा इति १२ व्याख्यानान्तरन्त्वेवं इष्टा वल्लभाः सदैव जीवाना सामान्येन कान्ताः कमनीयाः सदैव तद्भावेनप्रिया अद्वेष्या. सर्वेषामेव मनोज्ञाः कथयापिमनोरमाः मन आमा मनःप्रिया श्चिन्तयापीति विपचः सुन्नातः सर्वेनेति पुद्गलाधिकारादेवतद्धर्मान् शब्दादीननन्तरोक्तसविपचतादिविशेषणषट्कविशिष्टान् ॥ दुविहेसद्देत्यादि ॥ सूत्रनिशत्याह कण्ठ्याचेयमिति उक्ताः

॥ दोचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा परियादितच्चेव अपरियादितच्चेव दुविहापोग्गला पन्नत्ता तंजहा अत्ताचेव अणत्ताचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा इठाचेव अणिठाचेव एवकंता पिया मणुन्ना मणामा दुविहा सद्दा पन्नत्ता तजहा अत्ताचेव अणत्ताचेव एवमिठा जावमणामा दुविहा रूवा प० त० ॥

ते कहेछे । पर्यायातीत जे समस्त गृहीया कर्म पुदगलनी परे । समस्त गृहिया नथी ते । वली बे भेदें पुदगल ते कहेछे । जीव परिगृह तथा शरीरपणे अगीकार कस्या । जे नथी अगीकार कीधा ते बीजा । वली बे प्रकारे पुदगल ते कहेछे । एक इष्ट पुदगल । एक अनिष्ट पुदगल । एम कांत ज्ञलावर्णादि सहित प्रिय इद्रियने सुखकारी । मनोहर देखतां मनने प्रिय लागे । बे प्रकारें शब्द छे ते कहेछे । एक जीवे गृहिया । एक नथी ॥

पुद्गलधर्म्माः सम्प्रति धर्म्माधिकाराज्जीवधर्मानाह ॥ दुविहेआयारे इत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टयं कंठ्य नवरं आचरणमाचारो व्यवहारो ज्ञानं श्रुभज्ञानन्तद्विष यआचार' कालादिरष्टविधो ज्ञानाचारः आहच कालेविणयेबहुमा नवहाणेचेत्रतहयनिणहवणे वजणअत्थतदुभय अठ्ठविहोनाणमायारोत्ति ॥ १ ॥ नो ज्ञानाचार एतद्विलक्षणो दर्शनाचारइति दर्शनसम्यक्त तदाचारो निःशङ्कितादिरष्टविधएव आहच निस्सकियनिक्कंखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिठ्ठीय उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअठ्ठत्ति ॥ १ ॥ नोदर्शनाचार श्चारित्रादिरिति चारित्राचार. समितिगुप्तिरूपोष्टधा आहच पणिहाणजोगजुत्तो प चहिसमिईहिगुत्तोहि एसचरित्तायारो अठ्ठविहोहोइनायव्वोत्ति ॥ १ ॥ नोचारित्राचार स्तपआचारप्रभृति तत्र तपआचारोद्वादशधा उक्तश्च बारस

अत्ताचेव अणत्ताचेव जावमणामा एवंगंधा रसा फासा एव मिक्किक्के आलावगा भाणियव्वा दुविहे आया रे पन्नत्ते तजहा णाणायारेचेव नोणाणायारेचेव नोनाणायारेदुविहे पन्नत्ते तंजहा दंसणायारेचेव नोदंस णायारेचेव नोदंसणायारे दुविहे पन्नत्ते तंजहा चरित्तायारेचेव नोचरित्तायारेचेव णोचरित्तायारे दुविहे

गृहिया । एम इष्ट अनिष्ट जाव मनोहर अमनोहर जिम पूर्वे कहिआ तिम बे बे भेद जाणिवा । रूपना बे भेद ते कहेछे । एक चक्षुयें गहिया एक नथी गहिया । जाव मनोहरतांइ बे भेद कहिवा । एम गंध फरसनां पणि बे भेद जाणिवा । एम एकेकना ब ब आलावा भणिवा । आचारना बे प्रकार ते कहेछे । नाणाचार आठ प्रकारें काले विणसे । नो नाणाचार एबीजो आचार दर्शनाचार । नो नाणाचार बे प्रकारे ते कहेछे । एक द र्शनाचार आठ प्रकारे निस्संकिय निकंखिय इत्यादि । बीजो नोदर्शनाचार ते चारित्राचार पणिहीणजोगजुत्तो । नोदर्शनाचार बे प्रकारे ते कहेछे

निहमिवितवे अभितर बाहिरेकुसलदिठ्ठे अगिलाएअणाजीवी नायव्वोसोतवायारोति ॥ १ ॥ वीर्याचारस्तु ज्ञानादिष्वेव शक्तेरगोपन तदनतिक्रमश्चेति ॥
उक्तञ्च अणगूहियवलविरिओ परक्कमइजोजहुत्तमाउत्तो जुंजइयजहाथाम नायव्वोवीरियायारोत्ति ॥ १ ॥ अथवीर्याचारस्यैव विशेषाभिधानायषट्
सूत्रोमाह ॥ दोपडिमेत्यादि ॥ प्रतिमाप्रतिपत्तिः प्रतिज्ञेतियावत् समाधान समाधिः प्रशस्तभावलक्षण स्तस्य प्रतिमा समाधिप्रतिमा दशाश्रुतस्कन्धो
क्ता द्विभेदा श्रुतसमाधिप्रतिमा सामायिकादि चारित्रसमाधिप्रतिमा च उपधानन्तप स्तत्प्रतिमा उपधानप्रतिमा द्वादशभिक्षुप्रतिमा एकादशोपासक
प्रतिमाश्चेत्येवरूपेति विवेचन विवेक स्त्यागः सचान्तराणां कषायादीना बाह्याना गणशरीरभक्तपानादीनामनुचितानां तत्प्रतिपत्ति विवेकप्रतिमा व्युत्स

पन्नत्ते तंजहा तवायारेचेव वीरियायारेचेव दोपडिमाउ प० तं० समाहिपडिमाचेव उवहाणपडिमाचेव
दोपडिमाउ प० तं० विवेगपडिमाचेव विउसग्गपडिमाचेव दोपडिमाउ प० तंजहा भद्दाचेव सुभद्दाचेव

चारित्राचार आठ प्रकार पाच समिति त्रिण गुप्ति । नोचारित्राचार ते तपाचार प्रमुख। नोचारित्राचार बे प्रकार ते कहेछे । एक तपाचार बाहर
भेदे । बीजो वीर्याचार धर्मने विषे बलनो फोरविवो । बे प्रतिमा एतले प्रतिज्ञा नियम विशेषछे ते कहेछे । एक समाधि प्रतिमा प्रषस्तरूप प्रतिमा
मनना परिणाम चोखा होय ते। बीजी उपधान पडिमा तपविशेष साधुनी बारह पडिमा श्रावकनी इग्यारह। वली बे प्रतिमा ते कहेछे। विवेक प्रति
मा कषाय प्रमुख अयोग्य वस्तुनो त्याग करिवो छाडवो । काउसगनो करिवो ते व्युत्सर्गप्रतिमा । वली पडिमा बे प्रकारे ते कहे छे । भद्रा प्रति
मा पूर्व दिशिये च्यार पहर लगे काउसगनो करिवो अथवा उपधान तप श्रावकने तथा साधुने योग्य तेहनो करिवो बे दिने पूरीथाय परीसहखमे

गप्रतिमा कायोत्सर्गकरणमेवेति भद्रा पूर्वादिदिक्चतुष्टये प्रत्येकं प्रहरचतुष्टयकायोत्सर्गकरणरूपा अहोरात्रद्वयमानेति सुभद्राप्येवं प्रकारेणैवसम्भाव्यते अदृष्टत्वेनतु नोक्तेति महाभद्रापि तथैव नवर महोरात्रकायोत्सर्गरूपा अहोरात्रचतुष्टयमाना सर्वतोभद्रातु दशसुदिक्षु प्रत्येकमहोरात्रकायोत्सर्गरूपा अहोरात्रदशकप्रमाणेति मोकप्रतिमा प्रश्रवणप्रतिमा साच कालभेदेन क्षुद्रिका महतीचभवतीति यतउक्तं व्यवहारे ॥ खुड्डियाणमोयपडिवन्नस्सेत्यादि ॥ इयञ्च द्रव्यतः प्रश्रवण विषया क्षेत्रतो ग्रामादेर्बहिः कालतः शरदिनिदाघेवाप्रतिपद्यते भुक्त्वाचेत्प्रतिपद्यते चतुर्दशभक्तेन समाप्यते अभुक्त्वातु षोडशभक्तेन भावतस्तु दिव्याद्युपसर्गसहनमिति एवम्महत्यपि नवर भुक्त्वाचेत्प्रतिपद्यते षोडशभक्तेनसमाप्यते अन्यथात्वष्टादशभक्तेनेति यवस्येवमध्य यस्याः सा यवम

दोपडिमाउ प० तं० महाभद्देचेव सव्वतोभद्देचेव दोपडिमाउ प० तं० खुड्डियाचेव मोयपडिमा महल्लि

सुभद्रा प्रतिमा पणि इमज दश दिशि छे जे माटे बीजो प्रकार शास्त्रमां दीसतो नथी। वली बे प्रतिमा ते कहे छे। महाभद्रापडिमा पूर्वनी परे एतलो विशेष एकेकदिशि अहोरात्रि काउसग एम च्यार अहोरात्रि प्रमाण। दशदिशि एकेक अहोरात्रि काउसग एतले दश अहोरात्रि मान वली बे पडिमा ते कहे छे। एक नान्ही मोकपडिमा एतले प्रश्रवण पडिमा । बीजी मोटीमोकपडिमा कालथी नान्ही मोटी द्रव्यथी प्रश्रवण ल घुनीत राखिवी क्षेत्रथी गामादिकथी बाहिर रहिवूं कालथी शरद ग्रीष्म काले जमी आहारीने पडिवजें तो चौद भक्ते पूरीथाय । वली बे पडिमा कही ते कहेछे। एक यवमध्यचंद्रपडिमा यवधान सरिखो छे मध्यभाग जेहनो अने चंद्रमानी परे बढती घटती कला अजुआली पडिवा दिने एक कवल आहार करे तथा प्रतिदिन एकेक कवल वधारे इम पूनिमदिनें पनरह कवल ले पछै अंधारी पडिवा दिने पनरह कवल ले एम दिनदिन

ध्या चन्द्रस्येव कलावृद्धिहानिभ्यां याप्रतिमा साचंद्रप्रतिमा तथाहि शुक्लप्रतिपद्येकंकवल मभ्यवहृत्य ततःप्रतिदिनं कवलवृद्ध्या पञ्चदशपूर्णिमास्यां कृष्ण प्रतिपदि च पञ्चदशभुक्त्वा प्रतिदिनमेकहान्या अमावास्यायामेकमेवयस्यांभुंक्ते सा यवमध्याचन्द्रप्रतिमेति यस्यान्तु कृष्णप्रतिपदि पञ्चदशभुक्त्वा एकैकहान्या अमावास्यायामेकं शुक्लप्रतिपदि चैकमेव ततःपुनरेकैकवृद्ध्यापूर्णिमायांपञ्चदश भुंक्तेसावज्रस्येव मध्यं यस्या स्त्वित्यर्थः सावज्रमध्या चन्द्रप्रतिमेति एवं भि क्षादावपि वाच्यमिति प्रतिमाश्च सामायिकवतामेवभवन्तीति सामायिकमाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ समानां ज्ञानादीना मायो लाभः समायः सएवसामायि

याचेव मोयपडिमा दोपडिमाउ पन्नत्ताउ तंजहा जवमज्झेचेव चंदपडिमा वइरमज्झेचेव चंदपडिमा दुविहे सामाइए प० तं० अगारसामाइएचेव अणगारसामाइएचेव दोरहंउववाए प० तं० देवाणच्चेव नेरइयणच्चेव

एकेक कवल ओछो करे एम अमावस्याये एक कवल लीयें एह यवमध्यचंद्रपडिमा तप । बीजी वज्रमध्यचंद्रपडिमा वज्रसरिखो मध्यले जेहनों एम आधारी पडिवाये पनरह कवल लेई दिन दिन एकएक ओछो करतां अमावस्याये एक कवल लीये अजुआली पडवाये एक कवल लेई दिन दिन वधारे ते पूर्णमासीये पनरह कवल लीये एह रीते तप करिवो ते वज्रमध्य तप । तातो पांणी पीजिये थांइ तो चौविहार तथा त्रिविहार करे पूरी थाय आहार कीधा विना पडवजें तो सोलभत्ते पूरी थाय भावथी देवादि उपसर्ग सहे एह नाहनी मोकपडिमा मोटी पिण इमज एतलो विशेष जे आहार लेईने पडिवजे तो सोलभत्ते पूरीथाय आहार विना पडिवजे तो अठार भत्ते पूरीथाय । बे प्रकारे सामायिक छे ते कहे छे । गृहस्थ श्रावकने सामायिक देश विरति रूप । साधुनो सामायिक सर्वविरति रूप । बे उपपात छे ते कहे छे । च्यार निकायना देवता

कमिति तद्द्विविधं अगारवदनगारस्वामिभेदाद्देशसर्वविरतीत्यर्थः जीवधर्म्माधिकारएत द्धर्म्मान्तराणि ॥ दोण्हंउववाए ॥ इत्यादिभि श्चतुर्विंशत्यासूत्रैराह सुग मानिचैतानि नवर ॥ दोण्हति ॥ द्वयोर्जीवस्थानयो रुपपतनमुपपातो गर्भसम्मूर्छनलचणजन्मप्रकारद्वयविलचणो जन्मविशेषइति दीव्यतीतिदेवा श्चतुर्निका याः सुराः नैरयिका. प्राग्वत्तेषां उद्वर्त्तनं मुद्वर्त्तना तत्कायान्निर्गमो मरणमित्यर्थः तचनैरयिकभवनवासिनामेवैवं व्यपदिश्यते अन्येषान्तु मरणमेवेति नैर यिकाणां नारकाणां तथा भवनेष्वधोलोकदेवावासविशेषेषु वस्तु शीलमेषामिति भवनवासिन स्तेषां २ च्युतिश्च्यवन मरणमित्यर्थः तच ज्योतिष्कवैमानिका नामेव व्यपदिश्यते ज्योतिष्षु नचत्रेषु भवा ज्योतिष्काः शब्दव्युत्पत्तिरेवेय प्रवृत्तिनिमित्ताश्रयणात्तु चन्द्रादयोज्योतिष्काइति विमानेषूर्द्धलोकेषुभवा वैमा निकाः सौधर्मादिवासिनः स्तेषां गर्भेगर्भाशये व्युत्क्रान्तिरुत्पत्ति र्गर्भव्युत्क्रान्ति र्मनोरपत्यानिमनुष्या स्तेषा स्तिरोञ्चन्ति गच्छन्तीतितिर्यञ्च स्तेषां सम्बन्धि नीयोनिरुत्पत्तिस्थानं येषान्ते तिर्यग्योनिका. तेचैकेन्द्रियाद्योपिभवन्तीति विशिष्यते पञ्चेन्द्रियाश्च तिर्यग्योनिकाश्चेति पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिका स्तेषां तथा

दोण्हंउवट्टणा प० तं० नेरइयाणंचेव भवणवासीणंचेव दोण्हंचयणे प० तं० जोइसियाणंचेव वेमाणिया णंचेव दोण्हंगब्भवक्कंती पन्नत्ता तंजहा मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव दोण्हंगब्भत्थाणं आ

नो उपपात उपजिवो । सात नारकीनो उपपातछे गर्भस्थिति नथी । बे उद्धर्तनाछे उद्धर्तना ते नीकलवू मरण रूप ते कहेछे । एक नारकीने मरण रूप उद्धर्तना । बीजी भवनपती देवताने पणि उद्धर्तना कहिवी । बे ठिकाणे मरण ते च्यवन कहिवो ते कहेछे । चंद्रसूर्य जोतिषी देवतानो चवन चविवो । वैमानिकदेवतानो चविवो ऊर्द्धलोकनां देवतानो । बेने गर्भमा उपजिवोछे ते कहेछे । मनुष्यने गर्भपणे उपजिवो छे । तथा पचेंद्रिय ति

द्वयोरेवगर्भस्थयो राहारो ऽन्येषां गर्भस्यैवाभावादिति ५ वृद्धिः शरीरोपचयः ६ निर्वृद्धि स्तद्धानि र्वातपित्तादिभि निरुग्व्दस्था भावार्थत्वात् निरुदराकन्ये त्यादिवत् ७ वैक्रियलब्धिमतां विकुर्व्वणा १० गतिपर्याय स्चलन मृत्वावागत्यंतरेगमनलक्षणो यच्चवैक्रियलब्धिमान्गर्भान्निर्गत्य प्रदेशतोवहिःसंग्रामयति सवा गतिपर्यायः उक्तञ्च भगवत्यां जीवेणभंतेगभगएसमाणेनेरइएसुउववज्जेज्जा गोयमा अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइएनोउववज्जेज्जा सेकेणठ्ठेण० गो० सेणंस न्निपचिंदिए सव्वाहिंपज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणीयमागयंसोच्चा निसम्मपएसे निच्छुभइ निच्छुभइत्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समो हणइ चाउरंगिणिसेन्नं विउव्वइ विउव्वइत्ता चाउरंगिणीएसेणाए पराणीएणं सद्धिं संगामसंगामेइ इत्यादि ॥ ८ ॥ समुद्घातो मारणांतिकादिः ॥ १० ॥ कालसंयोगः कालकृतावस्था ॥ ११ ॥ आयातिर्गर्भान्निष्क्रमः ॥ १२ ॥ मरण प्राणत्यागः ॥ १३ ॥ दोषहंछविपव्वत्ति ॥ द्वयानामुभयेषां छविक्तिमतुप्लोपा

हारे पन्नत्ते तंजहा मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव दोराहंगब्भत्थाणंवुड्ढी प० तं० मणुस्साणं चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव एवंनिवुड्ढीविगुव्वणागइपरियाए समुग्घाइकालसजोगे आयाइमरणे दो राहंछविपव्वा प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव दोसुक्कसोणिसंभवा प० तं० मणु

यंचनें एकेंद्रियादिकनें नथी । बेनें गर्भमां आहारले तेकहेछे । मनुष्यनें गर्भमां आहार । तथा पंचेंद्रिय तिर्यंचनें मातानां उदरमांज आहार लि येछे । बेने शरीरनी वृद्धि उपचय कहियो ते कहेछे । मनुष्य गर्भमांयकांज बधे । पंचेंद्रिय तिर्यंच पणि बधे । बेने शरीरनी हानिकही तेकहेछे वात पित्त कफादिकेकरी । मनुष्यनें तथा तिर्यंचनें । एम विकुर्वणा वैक्रियलब्धिवंत । एम गतिपर्याय गर्भमाथी बाहिर गमन करें प्रदेश बाहिर

त् छविमति लब्धन्ति ॥ पब्बत्ति ॥ पर्व्वाणि सन्धिबन्धनानि छविपर्व्वाणि क्वचित् ॥ छवियत्तत्तिपाठ स्तत्र छवियोगात् छविः सएवछविकः सचासौ ॥ अत्तत्ति ॥ आत्माच शरीरछविकात्मेति ॥ छविपत्तत्तिपाठान्तरे ॥ छविःप्राप्ता जातेत्यर्थः गर्भस्थानामिति सर्वत्रसम्बन्धनीयः ॥ १४ ॥ दोसुक्केत्यादि ॥ इयं शुक्ररेतः शोणितमार्त्तवन्ताभ्यां सम्भवोयेषान्ते तथा ॥ १५ ॥ कायठिइत्ति ॥ कायेनिकाये पृथिव्यादिसामान्यरूपेण स्थितिः कायस्थितिः असंख्योत्सर्प्पि ण्यादिका भवेभवरूपावा स्थिति र्भवस्थिति र्भवकालइत्यर्थः ॥ १६ ॥ दोरहति ॥ इयाना मुभयेषामित्यर्थः ॥ कायस्थितिः सप्ताष्टभवग्रहणरूपा पृथिव्यादी नामपि सास्ति नचानेनतद्व्यवच्छेदःअयोगव्यवच्छेदपरत्वात् सूत्राणा मिति ॥ १७ ॥ दोरहेत्यादि ॥ देवनारकाणां भवस्थितिरेव देवादेः पुनर्देवादित्वे ना नुत्पत्तेरिति ॥ १८ ॥ दुविहेत्यादि ॥ अद्धाकाल स्तत्प्रधान मायुःकर्मविशेषो ऽद्धायुर्भवात्ययेपि कालान्तरानुगामीत्यर्थो यथामनुष्यायुः कस्यापिभवा

रसाचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाचेव दुविहाठिई प० तं० कायठिईचेव भवठिईचेव दोरहंकायठिई प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव दोरहंभवठिई प० तं० देवाणंचेव नेरइयाणंचेव दुविहे

काढी संग्राम करें एम भगवती सूत्रमां कहियोछै। एम मारणांतिक समुद्घात छै। एम कालमरणानी अवस्था छै। बेनें छविपर्व संधिबं धनछै ते कहेंछै। मनुष्यने तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच जलचर थलचर खचरने होय। बे जीव शुक्र पितानो वीर्य सोणित मातानो रुधिर तेणेंकरी उपजैछै तेक हेंछै। मनुष्य तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच। जीवनी बेप्रकारे थितिकही तेकहेंछै। पृथिवीप्रमुख छ कायमां रहिवूं। तथा भवनेविषेंरहिवूं। बेजीवने का यथिति छे। मनुष्य मरीने सात आठ भवलगें मनुष्य थाय एह काय थिति। पंचेंद्रिय तिर्यंचने। बे जीवने भवस्थिति कही एक भवकरे ते कहे छे

त्ययएवनागच्छत्यपि १ सप्ताष्ट भवमान कालमुख्यार्थतो नुवर्त्ततइति तथा भवप्रधानमायु र्भवायु र्यन्नवात्ययेपगच्छत्येव भवान्तरमनुयाति यथादेवायु रिति ॥ २० ॥ दोपहमित्यादि ॥ सूत्रद्वयं भावितार्थमेव ॥ दुविहेकम्मेइत्यादि ॥ प्रदेशाएव पुद्गलाएव यस्यवेद्यते न यथावद्धोरस स्तत्प्रदेशमात्रतया वेद्यकर्म प्रदेशकर्म यस्यतु अनुभवो यथावद्धरसोवेद्यते तदनुभावतो वेद्यंकर्मा नुभावकर्मेति ॥ २२ ॥ दोइत्यादि ॥ यथावद्धमायु र्यथायुः पालयन्त्यनुभव न्ति नोपक्रम्यते तदितियावदिति देवानेरइयाविय असंखवासाउयातिरियमणुया उत्तमपुरिसायतहा चरमसरीरानिरुवकमत्ति ॥ १ ॥ वचनेसत्यपि देव नारकयो रेवेह भणनविधानकानुरोधादिति ॥ २२ ॥ दोएहमित्यादि ॥ संवर्त्तनमपवर्त्तनं संवर्त्तः सएयसवर्त्तकउपक्रमइत्यर्थः आयुषः सवर्त्तकमायुः संव

आउए प० तं० अद्धाउएचेव भवाउएचेव दोएहंअद्धाउए प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव दोएहंभवाउए प० तं० देवाणंचेव नेरइयाणंचेव दुविहेकम्मे प० तं० पदेसकम्मेचेव अणुभावकम्मेचेव दोअहाउयंपालेइ तंजहा देवच्चेव नेरइयच्चेव दोएहंआउयसंवट्टए प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्ख

देवताने अनें नारकीने नारकी मरी वली नारकी नथाय। बे प्रकारे आयु छे ते कहे छे। काल प्रधान आयु बीजो भवप्रधान आयु। बे जीवनो कालप्रधान आऊखो कहियो ते कहे छे। मनुष्यनो। तथा पंचेंद्रिय तिर्यंचनो। बे जीवनो भवप्रधान आऊखो कहियो ते कहेछे। देवतानो। तथा नारकीनो। बे प्रकारे कर्मछे ते कहेछे। प्रदेशकर्म पुद्गलहीज वेदे। बीजो अनुभावकर्म कर्मनो रस भोगवीये। बे जीव जेतलो आऊखो बां ध्योछे तेतलो भोगवे ते कहेछे। देवता पूरो आऊखो पाली चवे। नारकी पणि पूरो आऊखो भोगवे। बे जीवनो संवर्तक आऊखो छे ते कहेछे

त्तंकइति २४ पर्यायाधिकारादेव नियतक्षेत्राश्रितत्वात् क्षेत्रव्यपदेशान् पुद्गलपर्यायानभिधित्सु ॥ जंबुद्दीवेत्यादिना ॥ क्षेत्रप्रकरणमाह सुगमचैतत् नवरमि ह जम्बूद्वीपप्रकरण परिपूर्णमण्डलाकार जम्बूद्वीप तन्मध्येमेरु उत्तरदक्षिणतः क्रमेणच वर्षाणिस्थापयित्वा तद्यथा भरतहैमवततियहरिवासतियम हाविदेहति रम्यगमेरन्नवय एरवयक्षेत्रावासाइति ॥ १ ॥ तथा वर्षांतरेषु वर्षधरपर्वतान् कल्पयित्वा तद्यथा हिमवंत १ महाहिमवत २ पव्वयानि सढनीलाताय ३ रूप्पी ५ सिहरी ६ एए वासहरगिरीमुणेयव्वत्ति ॥ १ ॥ सर्वमेवंयोजयमिति मंदरस्य मेरोरुत्तराच दक्षिणाच उत्तरदक्षि णे तयो रुत्तरदक्षिणयोरिति वाक्ये उत्तरदक्षिणेनेति स्यादेनप्रत्ययविधानादिति दैवर्षे क्षेत्रे प्रज्ञप्ते जिनैः समतुल्यशब्दः सदृशार्थः अत्यंतसमनुत्थे व हुसमतुल्ये प्रमाणतः अविशेषे अविशेषलक्षणे नगनगरनद्यादिकृतविशेषरहिते अनानात्वे अवसर्पिण्यादिकृतायुरादिभावभेदवर्जित किमुक्तंभवतीत्याह अन्योन्य परस्पर नातिवर्त्तते इतरेतरं नलङ्घयेत इत्यर्थः केनेत्याह आयामेनदैर्घ्येण विष्कम्भेन पृथुत्वेन संस्थानेनारोपितज्यधनुराकारेण परिणाहेन परि धिनेति इहच द्वन्द्वेकवद्भावः कार्यइति अथवा बहुसमतुल्ये आयामतः तथाहि भरतपर्यंत श्रेणीं चौदसयसहस्साइ सयाइं चत्तारिएगसयराइ भरहधुव

जोणियाणंचेव जंबुद्दीवेद्दीवे मंदरस्सपव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासा प० तं० बहुसमतुल्ला अविसेसम

मनुष्यनो । तथा पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो एकेन्द्रियादिक पिण गर्भमांज आव्या जलचर थलचर खचर सर्वनो । परिपूर्ण चंद्रमंडलाकार जंबूद्वीप मेरुपर्वत एक लाख योजन ऊंचो तेहनें उत्तरपासे तथा दक्षिणपासे जे वर्ष क्षेत्रछे ते कहेछे । प्रमाणथी अद्भुत सम बराबर सरिखा छे विशेष अधिकाई नथी पर्वत नगर नदीनो विशेष नथी एकएकथी वधता नथी आरा प्रमुखनां भावेंकरी लांबपणे पिहुलपणे संठाणे आकार कह्याथी धनुषने आकार

॥०॥

रजीवा छच्चकलाऊणियाकिंचि ॥ १ ॥ कलाच योजनस्यैकोनविंशतितमोभाग इति । १४४७१ । ६ । १८ । ऐरवतेप्येवतथा अविशेषे विष्कंभत स्तथाहि पचसएछव्वीसे छच्चकलाविच्छडभहरवासति । ५२६ । ६ । १८ । अयमेव चैरवतस्यापीति अनानात्वे सस्थानतः अन्योन्यं नातिवर्त्तते परिणाहतः परिणा हश्च ज्याधनुःपृष्टयोर्यत्प्रमाण तत्रज्याप्रमाणमुक्तन्धनुःपृष्टप्रमाण त्विद चोद्दसयसहस्साइ पंचेवसयाइं अठ्ठवीसाइं एगारसयकलाओ धणुपिठ्ठउत्तरऊस्स ॥ १ ॥ ॥ १४५२८ ॥ । ११ । १८ । यथा भरतस्यैरवतस्यापि तथैवेति एकार्थिकानिचैतानिपदानि भृशार्थत्वाच्च नपुनरुक्तानि उक्तञ्च अनुवादादरवीप्सा भृशार्थवि नियोगहेत्वसूयासु ईषत्सम्भ्रमविस्मय गणनास्मरणेष्टपुनरुक्तमिति ॥ १ ॥ तद्यथा ॥ भरहेचेवेत्यादि ॥ उत्तरदाहिणेणति ॥ एतस्यपाठस्य यथासंख्यन्याया श्रयणा द्यथासत्तिन्यायाश्रयणाच्च जबूद्वीपस्यदच्चिणभागे भरत माहिमवत स्तस्यैवोत्तरे भागे ऐरवतं शिखरिणःपरतइति एवमिति भरतैरवतवत् एते नाभिलापेन जबूद्दीवेदीवेमदरस्येत्यादिना उच्चारणेनापरसूत्रद्वय वाच्यं तयोयायविशेषः ॥ हेमवएचेत्यादि ॥ तत्रहैमवतदच्चिणतः हिमवन्महाहिमवतोर्मध्ये

णाणत्ता अन्नमन्नंणाइवहंति आयामविक्खंभसंठाणपरिणाहेणं तं० भरहेचेव एरवएचेव एवमेएणंअहिलावे णंनेयव्वं हेमवएचेव एरण्णवएचेव २ हरिवासेचेव रम्मयवासेचेव जंबुद्दीवेद्दीवे मंदरस्सपव्वयस्स पुरच्छि

तथा परिधि इत्यादिकथी सरिखाछे । ते कहेछे । एक भरतक्षेत्र पांचसे छव्वीस योजन छ कलानो विस्तारें योजननो एकवीसमो भाग ते कला कहिये । बीजो एरवत क्षेत्र विस्तारथी भरत क्षेत्रथी बराबरि । एहरीते मान प्रमाण भाव सर्व इमज जाणिवा । तिम वली बे बे क्षेत्र सरिखा छे हिमवंत क्षेत्र दक्षिणदिशि हिमवान महाहिमवानने विचालें । हैरण्यवत क्षेत्र उत्तरदिशि रुक्मीपर्वत शिखरी पर्वतने विचाले हिमवंत अने हैरण्य

हैरण्यवतमुत्तरतः रुक्मिशिखरिणोरतः हरिवर्षं दक्षिणतोमहाहिमवन्निषधयोरतः रम्यकवर्षं चोत्तरतो नीलरुक्मिणोरन्तरिति ॥ जबूद्वीवेत्यादि ॥ पुरच्छिमपच्चत्थिमेण पुरस्तात् पूर्वस्यादिशि पश्चात्पश्चिमायामित्यर्थः यथाक्रम पूर्वश्चासौविदेहश्चेतिपूर्वविदेह एव अपरविदेहइति एतेषांचायामादिग्रन्था न्तरादवसेयइति ॥ जबूइत्यादि ॥ दक्षिणेनदेवकुरवउत्तरेणउत्तरकुरव स्तत्राद्याः विद्युत्प्रभसौमनसाभिधानवक्षस्कारपर्व्वताभ्यां गजदन्ताकाराभ्या मा वृता इतरेतु गन्धमादनमाल्यवद्भ्यामावृताः उभयेचामी अर्द्धचन्द्राकारा दक्षिणोत्तरतोविस्तृता स्तत्प्रमाणचैव अट्ठसयावायाला एक्कारसहस्सदोकलाओय विक्खभोयकुरूण तेवन्नसहस्सजोवासि ॥ १ ॥ पूर्वापरायामाश्चैता इति ॥ महद्दुमहालयत्ति ॥ महान्तौ गुरू अतीति अत्यत महत्सांतिजसा महानावोत्सवाना मालयावाश्रयौ महतिमहालयौ महातिमहालयौ वा समयभाषयावा महाताविल्यर्थः महाद्रुमौ प्रशस्ततया आयामो दैर्घ्यं विष्कम्भो विस्तार उच्चल मुच्चय उद्दे

मपच्चत्थिमेणं दोखित्ता प० तं० बहुसमउल्ला अविसेसाजाव पुव्वविदेहेचेव अवरविदेहेचेव २ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोकुराउ प० त० बहुसमउल्ला अविसेसाजाव देवकुराचेव उत्तरकुराचेव तत्थणं

वत सरिखाछे । हरिवर्ष दक्षिणदिशि महाहिमवान निषधनें विचाले । रम्यक वर्ष उत्तरदिशि नीलपर्वत रुकमी पर्वतने विचाले हरिवर्ष अने रम्य कवर्ष सरिखाछे । जबूद्वीप तेलनां पूडलाने आकारे तेहमां मेरु पर्वतथी पूरबदिशि अने पश्चिमदिशि बे क्षेत्र कहिया ते कहेछे । बहु सम बरा बरि प्रमाणथी विस्तारथी नगर पर्वत नदी एहथी विशेषनथी । जाव एक पूर्व विदेह । पश्चिम विदेह । जंबूद्वीपमां मेरुथी उत्तरदिशि तथा द क्षिणदिशि बे कुरु कहिया ते कहेछे । मान प्रमाण थी बहुसम बराबर जाव दक्षिणदिशि देवकुरु । उत्तरदिशि उत्तरकुरु । तिहा देवकुरु उत्तरकुरुमां

धोभुविप्रवेश: संस्थानमाकार: परिणाह: परिधिरिति तत्रानयो: प्रमाणं रयणमयापुप्फफला विक्खंभोअट्ठअट्ठउच्चत्त जोयणमद्धुव्वेहो खंधोदोजोयणुव्विद्धो ॥ १ ॥ दोकोसाविच्छिन्नो विडियाछज्जोयणाणिजंबूए चाउद्दिसिपिसाला पुव्विल्लेतत्थसालम्मि ॥ २ ॥ भवणंकोसपमाण सयणिज्जतत्थणाढियसुरस्स तिसुपासाया सालेसुतेसुसीहासणारम्मत्ति ॥ ३ ॥ शाल्मलयामप्येवमेति कूटाकारा शिखराकारा शाल्मलीकूटशाल्मलीतिसज्ञा सुष्टुदर्शनमस्या इति सुदर्शनेतीयमपिसज्ञे ति ॥ तत्थिति ॥ तयोर्महाद्रुमयो र्महेत्यादि महतीऋद्धि रावासपरिवाररत्नादिका ययोस्तौ महर्द्धिकौ यावद्ग्रहणात् महज्जुइया महाणुभागा महा यसा महाबला ॥ महासोक्खेत्ति ॥ तत्र द्युति. शरीराभरणदीप्ति रनुभागो ऽचित्याशक्ति' वैक्रियकरणादिका यश: ख्याति र्बलसामर्थ्यं शरीरस्य सौख्य

दोमहइमहालया महादुमा प० तं० बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नंणाइवट्टंति आयामविक्खंभुच्च त्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेण तंजहा कूडसामलीचेव जंबूचेव सुदसणा तत्थणं दोदेवामहड्ढिया जाव महासो क्खा पलिउवमट्ठिइया परिवसंति तं० गरुलेचेव १ वेणुदेवे अणाढिएचेव २ जंबूद्दीवाहिवई जंबूमंदररुसप

महा मोटा तेजवंत एहवा बे वृक्ष कहिया । मान प्रमाणथी सम बराबरि लांबपण विस्तार ऊंचाई उद्धेध उंडापण आकार परिधिथी सरिखा माहोमाहि एकथीएक वधता नथी लांबा पिहुला उंचा ऊंडा आकार परिधि थी सरिखाछे रत्नमयछे एहनो मानादिक ग्रन्थांतर थी जाणिवो ते कहे छे । एक शिखराकारे सामली वृक्ष । बीजो जंबूवृक्ष सुदर्शन नामा जोइवा योग्य । तिहां दो देवता मोटी रिद्धिना धणी जाव मोटा सुखना धणी एक पल्योपमना आउखाना धणी रहेछे । सुपर्णकुमार जातिना । एक वेणुदेव । बीजो अणाढिय । जंबूद्वीपना अधिष्टाता स्वामीछे ।

मानन्दात्मक महेसक्खाइ इतिक्वचित्पाठः महेसौ महेश्वराविल्याख्या ययोस्तौ महेशाख्याविति पल्योपमंयावत् स्थिति रायुर्ययोस्तौ तथागरुड' सुपर्णकुमा रजातीयः वेणुदेवोनाम्ना ॥ अणाढिओत्ति नाम्ना ॥ जबूद्दत्यादि ॥ वर्षंक्षेत्रविशेष धारयत व्यवस्थापयत इति वर्षधरौ ॥ चुल्लत्ति ॥ महदपेक्षया लघुर्हिम वान् चुल्लहिमवान् भरतानन्तर. शिखरी पुनर्य त्यरमैरवत तौच पूर्वापरतो लवणसमुद्रावबद्धा वायामतश्च चउवीससहस्साइ नवयसएजोयणाणवत्तीसं चुल्लहिमवंतजीवा आयामेणकलढच ॥ १ ॥ २४९३२ । ११ । १९ । एवंशिखरिणोपि तथा भरतद्विगुणनिस्तारौ योजनशतोच्छ्रयौ पचविंशतियोजनान्यव गाढो आयतचतुरस्रसस्थानसंस्थितौ परिणाहस्तु तयोः पणयालोससहस्सा सयमेगन्नवयबारसकलाओ अद्धकलाएहिमवत परिरओसिहरिणोचेवत्ति ॥ १ ॥ ४५१०९ । १२ । १९ । एवमिति यथा हिमवच्छिखरिणौ ॥ जबूद्दीवेत्यादिना ॥ भिलापेनोक्ताश्चैव महाहिमवदादयोपीति तत्रमहाहिमवान् लध्वपे चया सच दक्षिणतः रुक्मीचोत्तरतः एवमेव निषधनीलवन्तौ नवरमेतेषा मायामादयो विशेषत. क्षेत्रसमासादवसेयाः किञ्चित्तु तद्गाथाभिरेवोच्यते ए ॥

वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासहरपव्वया प० तं० बहुसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नंणाइवहंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेणं तंजहा चुल्लहिमवंतेचेव सिहरीचेव एवंमहाहिमवतेचेव रुप्पीचे

जबूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशिं दक्षिणदिशि बे वर्षधर पर्वत छे क्षेत्रनी मर्यादा करे ते वर्षधर । घणूं सरिखा छे विशेष नथी भेद नथी एकएकथी वधता नथी नान्हा नथी लाबपण पिहुलपण ऊंचपण ऊंडपण आकार परिधि एहथी सरीखाछे । नान्हो हिमवत पर्वत सौ योजन ऊंचो । भरत क्षेत्रथी आगलि शिखरीपर्वत ऐरवतथी उरो । एम महाहिमवंत पर्वत मेरुथी आपासे । रूपीपर्वत मेरूथी पैलेपासे । एम निषध आपासें ॥

चसएकच्चौसे छच्चकलाविक्खंभरहवासं दससयवावन्नहियो वारसयकलाओहिमवंते ॥ १ ॥ हेमवएपंचहिया इगवीससयाओपंचयकलाओ दसहियवा यालसया दसयकलाओमहाहिमवे ॥ २ ॥ हरिवासेइगवीसा चुलसीइसयाकलायएक्काय सोलससहस्सअठय वायालादोकलानिसढे ॥ ३ ॥ तेत्तीसचसहस्सा छच्चसयाजोयणाणचुलसीया चउरोयकलासकला महाविदेहस्सविक्खंभो ॥ ४ ॥ जोयणसयमुव्विद्धा कणगमयासिहरिचुल्लहिमवंता रुप्पिमहाहिमवता दुसउच्चारूप्पकणगमया ५ चत्तारिजोयणसए उव्विद्धानिसढनीलवताय निसहोतवणिज्जमओ वेरुलिओनीलवतगिरी ॥ ६ ॥ उस्सेहचउभागो ओगाओपायसोनगवराणं वट्टपरिहीउतिगुणो किंचूणछभायजुत्तोत्ति ॥ ७ ॥ चतुरस्रपरिधिस्तु आयामविष्कंभद्विगुणइति ॥ जंबूद्वत्यादिदोवट्टवेयड्ढपव्वयत्ति ॥ द्वौवृत्तौ पल्याकारत्वात् वैताढ्यौ नामतः तौचतौ पर्व्वतौचेति विग्रहः सहस्रपरिमाणौ रजतमयौ तत्र हैमवतेशब्दापातौ उत्तरतस्तुऐरण्यवतेविकटापातौ

व एवंणिसढेचेव णीलवंतेचेव जंबूमंदरस्सपव्वयस्स उत्तरदाहिणेणंहेमवएरन्नवएसुवासेसु दोवट्टवेयड्ढपव्वया पन्नत्ता तंजहा वज्जसमउल्ला. अविसेसमणाणत्ता जावसद्दावईचेव वियडावईचेव तत्थणं दोदेवामहड्ढिया जावपलिओवमठिइया परिवसंति तंजहा साइचेव पत्रासेचेव जंबूमंदरस्सउत्तरदाहिणेणं हरिवासिरम्मएसु

नीलवंत पैलेपासे । जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तर दक्षिणदिशे हिमवंतक्षेत्र ऐरण्यवत क्षेत्रनेविषें बे वृत्त वाटला वैताढ्य पर्वत छे । ते कहेछे । पल्यने आकारे घणू सरिखा विशेष भेद नथी शब्दापाती हैमवतमा । उत्तरे विकटापाती ऐरण्यवतमा । तिहां बे देवता मोटी रिद्धिना धणी पल्योपम आऊखाना धणी रहेछे । तिहां तेहना भवनछे ते कहेछे । स्वातीनामे प्रभासनामे । जंबूद्वीपना मेरुथी दक्षिणदिशिं हरिवर्ष रम्यकवर्ष

ति ॥ तत्थत्ति ॥ तयोर्वृत्तवैताढ्ययोः क्रमेण स्वातिप्रभासौ देवौ वसत स्तद्भवन भावादिति एवं हरिवर्षेगन्धापातीक्रमेणैवेति ॥ जंबूइत्यादि ॥ पुव्वावरपा सेत्ति ॥ पार्श्वंगब्दस्य प्रत्येक सबन्धात् पूर्वपार्श्वे अपरपार्श्वेच किभूते ॥ एत्थत्ति ॥ प्रज्ञापकेनोपदर्श्यमानेन क्रमेण सौमनसविद्युत्प्रभौप्रज्ञप्तौ किंभूतावश्व स्कधसदृसौ आदौनिम्नौ पर्यवसाने उन्नतौ यतो निषधसमीपे चतुःशतोछ्रितौ मेरुसमीपेच पचशतोछ्रितौ इति आहच वासहरगिरीतेण रुदापचेवजोयणस याइं चत्तारिसउव्विद्धा ओगाढाजोयणाणसय ॥ १ ॥ पचसएउविवड्ढा ओगाढापचगाउयसयाइं अगुलअसखभागो विच्छिन्नामदरतेण ॥ २ ॥ वक्खारप व्वयाण आयामोतीसजोयणसहस्सा दोन्निसयायनवहिया तच्चकलाओचउणहति ॥ ३ ॥ अवड्ढचदत्ति ॥ अपकृष्टमर्द्धं चद्रस्यापार्द्धचन्द्र स्तस्य यत्सस्थानमा कारो गजदन्ताकृतिरित्यर्थः तेनसस्थिता अपार्द्धचद्रसस्थानसस्थितौ अर्द्धचद्रसस्थानसस्थिताविति क्वचित्पाठः तत्रार्द्धशब्देन विभागमात्र विवक्ष्यते नतु स

वासेसु दोवट्टवेयड्ढपव्वया पन्नत्ता तंजहा वञ्जसमतुल्लाजाव गंधावईचेव मालवंतपरियाएचेव तत्थणंदोदेवा महड्ढियाचेव पलिओवमठिइया परिवसंति तंजहा अरुणेचेव पउमेचेव जंबूमंदरस्सदाहिणेण देवकुराएपुव्वा वरपासे एत्थणं आसखंधगसरिसा अवड्ढचदसंठाणसंठिया दोवक्खारपव्वया पन्नत्ता तजहा वञ्जसमतुल्लाजाव

क्षेत्रनेविषे बे वृत्त वाटला वैताढ्यछे ते कहेछे । घणुं सम बराबर छे । गंधापाती हरिवर्षमां । मालवत पर्याय तिहां बे देवता मोटी रिद्धिना धणी पल्योपम आउखाना धणी वसे छे ते कहे छे । अरुणनामा पद्मनाम। जबूद्वीपना मेरुथी दक्षिणदिशिं देवकुरुथी पूर्वने पासे पश्चिमने पासें। इहा घोडाना खंध सरिखा आगलि नीचा छेहले ऊंचा निषधपासे चारसे योजन ऊचो छे मेरुपासे पाचसें योजन अर्धचंद्राकार संस्थान सं

समप्रविभागतेति ताभ्यां चार्द्धचंद्राकारा देवकुरव कृता अतएव वक्षाराकारत्वेनकारिणौ पर्व्वतौ वक्षारपर्व्वताविति ॥ जम्बूइत्यादि ॥ तथैव नवरं मप रपार्श्वे गन्धमादन. पूर्वपार्श्वे माल्यवानिति ॥ दोदीहवेयड्ढत्ति ॥ वृत्तवैताढ्यव्यवच्छेदार्थदीर्घग्रहण वैताढ्यौ विजयाढ्यौचेति संस्कार. तौच भरतैरवतयो र्मध्यभागे पूर्वापरतो लवणोदधि स्पृष्टवन्तौ पञ्चविंशतियोजनोच्छ्रितौ तत्पादावगाढौ पचाशद्विस्तृतौ आयतसंस्थितौ सर्वराजता वुभयतो वहिः कांच नमडनाङ्काविति ॥ आहच ॥ पणवीसउव्विद्धो पन्नासजोयणाणिविच्छिन्नो वेयड्ढोरययमओ भरहक्खेत्तस्समज्झम्मित्ति ॥ १ ॥ भारहेणमित्यादि ॥ वैताढ्ये

सोमणसेचेव विज्जुप्पभेचेव जंबूमंदरस्सउत्तरेणं उत्तरकुराएपुव्वावरेपासे एत्थणंआसखंधगसरिसाअद्धचंद सठाणसठिया दोवक्खारपव्वया प० तजहा बज्जसमतुल्लाजाव गधमायणेचेव मालवंतेचेव जबूमदरस्सपव्व यस्स उत्तरदाहिणेणं दोदीहवेयड्ढपव्वया प० तजहा बज्जसमउल्ला जाव भारहेचेव दीहवेयड्ढे ऐरावएचेव दीहवेयड्ढे भारहेणंदीहवेयड्ढेदोगुहाउ प० त० बज्जसमउल्लाउ अविसेसमणाणत्ताउ अन्नमन्नणाइवट्टंति

स्थित बे वक्षस्कार पर्वतछे । देवकुरुमा अर्द्धआकार कीधो तेमाटे बे वक्षस्कार पर्वत कहिया ते कहेछे । घणूं सरिखा जाव सोमनस बीजो विज्जु प्पभ । जबूद्वीपना मेरुथी उत्तरदिशि उत्तरकुरुक्षेत्रने पूर्वनेपासे तथा उत्तरने पासे इहा अश्वनाखध सरिखा अर्द्धचंद्राकार गजदंताकार बे वक्षस्कार पर्वत छे ते कहेछे घणू जाव पूर्ववत् । पश्चिमने पासे गधमादन नाम पूर्वने पासे मालवत । जंबूद्वीपथी मेरुने उत्तर दक्षिण पासे बे दीर्घ लांबा वैताढ्य पर्वत छे ते कहे छे । घणू सम सरिखा छे । भरत क्षेत्रमा एक दीर्घ वैताढ्य परे पूर्व लवणसमुद्र फरस्यो छे पचीस योजन ऊंचो बीजो

अपरत स्तमिस्रागुहागिरिविस्तारायामा द्वादशयोजनविस्तारा अष्टयोजनोच्छ्रया आयतचतुरस्रसंस्थाना विजयद्वारप्रमाणद्वारा वज्रकपाटपिहितावह मध्येद्वियोजनान्तराभ्यां त्रियोजनविस्ताराभ्यां मुन्मग्ननिमग्नजलाभिधानाभ्यां नदीभ्यां युक्ता तद्वत्पूर्वत.खण्डप्रपातगुहेति ॥ तत्यणति ॥ तयो स्वामि आयागुहायां कृतमालक इतरस्यान्नृत्तमालकइति ॥ एरवएइत्यादि ॥ तथैव जबूइत्यादि हिमवद्वर्षधरपर्वते ह्येकादशकूटानि सिद्धायतन १ चुल्लहिमव

आयामविक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं तंजहा तिमिसगुहाचेव खंडगप्पवायगुहाचेव तत्थणं दोदेवामहड्डिया जाव पलिओवमठिइया परिवसति तजहा कयमालएचेव णट्टमालएचेव एरावएणंदीहवेयड्ढे दोगुहा प० तंजहा जाव कयमालएचेव णट्टमालएचेव जंबूमंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए दोकूडा पन्नत्ता तंजहा बहुसमउल्ला जाव विक्खंभुच्चत्तसठाणपरिणाहेणं तजहा चुल्लहिमवतकूडेचेव वेसमणकूडेचेव

दीर्घ वैताढ्य ऐरवतमा । भरतना दीर्घ वैताढ्यमा बे गुफाछे ते कहेछे । घणी समी सरिखी एकएकथी विशेष भेद नथी । माहोमाही एकएक थी वधती नथी लांबपण पिहुलपण ऊंचपण एहथी सरिखी छे ते कहेछे । एक तिमिस्रागुफा बीजी खडप्रपात गुफा आठयोजन ऊची पचासयो जन लांबी वज्रमय कपाट मध्यभागे बेयोजन आंतरुं एकएकने तीन योजन विस्तारे एहवी उमग्ना निमग्ना नामें बे नदीछे । तिहां बे देवता मोटी रिद्धिना धणी जाव पल्योपमना आउखाना धणी एहवा बसे छे । तिमिस्रा गुफानो स्वामी कृतमाल खंडप्रपातनो स्वामी नृत्यमाल । ऐरव त क्षेत्रमा पणि दीर्घवैताढ्य तेहमा पणि बेगुफाछे । ते कहेछे । जाव कृतमाल नाट्यमाल । जबूद्वीपे मेरुथी दक्षिणे लघुहिमवत वर्षधर पर्वतना

त् २ भरत ३ इला ४ गङ्गा ५ श्री ६ रोहितांशा ७ सिन्धु ८ सुरा ६ हैमवत १० वैश्रमण ११ कूटाभिधानानि भवन्ति पूर्वादिशि सिद्धायतनकूटमत'क्रमेणा परतो न्यानि सर्वरत्नमयानि स्वनामदेवतास्थानानि पञ्चयोजनशतोच्छ्रयाणि तावदेव मूले विस्तृतानि उपरि तदर्द्धविस्तृतानि आद्ये सिद्धायतन पञ्चा शद्योजनायामतदर्द्धनिष्कम्भ षट्त्रिंशदुच्च अष्टयोजनायामेश्चतुर्योजनविष्कम्भप्रवेशै स्त्रिभिर्द्वारै रुपेत जिनप्रतिमाष्टोत्तरशतसमन्वित शेषेषुप्रासादाः सार्द्धषष्ठियोजनोच्चा स्वदर्द्धविस्तृता स्तन्निवासिदेवतासिंहासनवन्तइति इहतु प्रकृतनगनायकनिवासभूतत्वा द्देवनिवास भूतानामेषां मध्ये आद्य त्वाच्च हिमवत्कूट गृहीत सर्वान्तिमत्वाच्च वैश्रमणकूटमिति द्विस्थानकानुरोधेनेति आहच कत्थइदेसग्गाहण कत्थइघिप्पतिनिरवसेसाइं उक्कमकमजुत्ता इं कारणवसओनिउत्ताइ ति ॥ १ ॥ कूटसंग्रहश्चाय वेयड्ढ ६ मालवंते ८ विज्जुप्पह ८ निसढ ६ नीलवंतेय ८ नवनवकूडाभणिया एक्कारससिहरि ११ हिमवते ११ ॥ १ ॥ रुप्पि ८ महाहिमवंते ८ सोमणस ८ गधमायणनगेय ७ अट्ठ सत्तसत्तय वक्खारगिरीसुचत्तारित्ति ॥ २ ॥ जंबूइत्यादि ॥ महा हिमवति ह्यष्टौकूटानि सिद्ध १ महाहिमवत् २ हेमवत ३ रोहिता ४ ह्री ५ हरिकान्ता ६ हरि ७ वैडूर्यकूटाभिधानानि द्वयग्रहणेच कारणमुक्तमेव

जंबूमंदरदाहिणेणं महाहिमवते वासहरपव्वए दोकूडा पन्नत्ता तंजहा बहुसमतुल्ला जाव महाहिमवंत कूडे

बेकूटछे । ते कहेछे बहुसम जाव विष्कंभपणा ऊचपणा संठाण परिधिथी सरिखा छे । ते कहेछे लघुहिमवंत कूट । तथा बीजो वैश्रमण कूट तिहां प्रतिमा प्रासाद शास्वताछे । जबूद्वीपे मेरुथी दक्षिण दिशि महाहिमवत वर्षधर पर्वतछे । तेहना बे बर्ष कहिये क्षेत्र तेहनी मर्यादा करे ते वर्ष धर कहिये । कूट ते शिखर ते कहे छे । बहुसम जाव एक महाहिमवत कूट । तथा बीजो वेरुलिय नामा कूट एम निषधवर्षधर पर्वतना बे कूटछे ते

इत्यादि एवंकारणात् जम्बूइत्यादिरभिलापोद्दृश्यः निषधवर्षधरपर्व्वतेहिं सिद्ध १ निषध २ हरिवर्ष ३ प्राग्विदेह ४ हरि ५ धृति ६ शीतोदा ७ ऽपरविदे ह ८ रुचकाख्यानि ९ स्वनामदेवतानि नवकूटानि इहापि द्वितीयान्त्ययोर्ग्रहण प्राग्वत् व्याख्येयमिति ॥ जम्बूइत्यादि ॥ नीलवर्षधरपर्वतेहिं सिद्ध १ नील २ पूर्वविदेह ३ शीता ४ कीर्त्ति ५ नारिकान्ता ६ ऽपरविदेह ७ रम्यक ८ उपदर्शनाख्यानि नवकूटानि इहापिद्वितीयान्त्यग्रहण प्राग्वदिति ॥ एवमित्या दि ॥ रुक्मिवर्षधरे सिद्ध १ रुक्मि २ रम्यक ३ नरकान्ता ४ बुद्धि ५ रूप्यकूला ६ हैरण्यवत ७ मणिकाञ्चनकूटाख्यानि अष्टकूटानि द्वयाभिधानच प्राग्वदिति ॥ एवमित्यादि ॥ शिखरिणिहिं वर्षधरे सिद्ध १ शिखरि २ हैरण्यवत ३ सुरादेवी ४ रक्ता ५ लक्ष्मी ६ सुवर्णकूला ७ रक्तोदा ८ गन्धापाति ९ ऐरवत१० तिगिच्छिकूटाख्यानि एकादशकूटानि इहापि द्वयोर्ग्रहणतथैवेति ॥ जबूइत्यादि ॥ इहच हिमवदादिषु षट्सु वर्षधरेषु क्रमेणैते पद्मादयः षडेवह्रदाः

चेव वेरुलियकूडेचेव एवनिसढेवासहरपव्वए दोकूडा प० तंजहा बहुसमतुल्ला जाव निसढकूडेचेव रुयग कूडेचेव जंबूमंदरस्सउत्तरेण नीलवंतेवासहरपव्वए दोकूडा प० तंजहा बहुसमतुल्ला जाव नीलवंतकूडेचेव उवदंसणकूडेचेव एवरूप्पिम्मिवासहरपव्वए दोकूडा पन्नत्ता तंजहा बहुसमतुल्ला जाव तंजहा रुप्पिकूडेचेव

कहे छे । बहुसम जाव निषधकूट अने बीजो रुचकप्रत्र । जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशि नीलवंत वर्षधरपर्वते बेकूट तेकहेछे । बहुसम जाव नीलवंत कूट । उपदर्शनकूट । एम रूपीवर्षधर पर्वतना बेकूट ते कहेछे । बहुसम जाव रूपीकूट तथा बीजो मणिकंचनकूट । एम शिखरी वर्षधर पर्व तना बेकूट ते कहेछे । बहुसम जाव शिखरीकूट । तिगिच्छिकूट । जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तर दक्षिणे लघुहिमवत दक्षणे शिखरी उत्तरे एह बे प

तद्यथा पउमेय १ महापउमे २ तिगिच्छि ३ केसरि ४ दहेचेव हरएमहापुंडरीए ५ पुंडरिए ६ चेवयदहाओ ॥ १ ॥ हिमवतउपरि बहुमध्यभागे पद्म ह्रद एवशिखरिणः पौण्डरीक स्तेच पूर्वापरायतौ सहस्रपञ्चशतविस्तृतौ चतुष्कोणौ दशयोजनावगाढौ रजतकूलौवज्रमयपाषाणौ तपनीयतलौ सुवर्ण मध्यरजतमणिवालुकौ चतुर्दशमणिसोपानौ स्वभावतारौ तोरणध्वजछत्रादिविभूषितौ नीलोत्पलपुण्डरीकादिचितौ विचित्रशकुनिमत्स्यविरचितरवौ षट् पदपटलोपभोग्याविति ॥ तत्थणंति ॥ तयोर्महाह्रदयोर्द्वेदेवते परिवसतः पद्मह्रदे श्रीः पौण्डरीके लक्ष्मीः तेच भवनपतिनिकायाभ्यन्तरभूते पल्योपमस्थि तिकत्वात् व्यन्तरदेवीनाहि पल्योपमार्द्धमेवायु स्तत्कर्षतोभवति भवनपतिदेवीना तूत्कर्षतो र्द्धपञ्चपल्योपमान्यायुर्भवतीति आहच अड्डुठअद्धपंचम प

मणिकंचणकूडेचेव एवंसिहरिम्मिविवासहरपव्वए दोकूडा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला तंजहा सिहरिकूडेचेव ति गिच्छिकूडेचेव जंबूमंदरस्सउत्तरदाहिणेणं चुल्लहिमवंतसिहरीसु वासहरपव्वएसु दोमहद्दहा पन्नत्ता बहुस मतुल्लाअविसेसमणाणत्ताअन्नमन्नंनाइवहंति आयामविक्खंभउव्वेहसंठाणपरिणाहेणं तंजहा पउमद्दहेचेव पुं डरीयद्दहेचेव तत्थणंदोदेवयाउ महिड्ढियाउ जाव पलिउवमठिइयाउ परिवसति तं० सिरीचेव लच्छीचेव

वंतने ऊपरि बे मोटा द्रह कहिया ते कहै छे । बहुसम सरिखा किस्यो विशेष नथी एक एकथी वधतो नथी घटतो नथी । लांबपणा पिहुलपणा ऊंडापणा ऊंचपणा संठाण परिधि थी सरिखा छे । ते कहै छे । पदमद्रह । तथा पुंडरीकद्रह । तिहां बे देवताछे मोटी रिद्धिना धणी जाव पल्यो पमना आऊखाना धणी बसै छे । ते कहै छे। श्री देवता तथा बीजी लच्छीदेवता। एम महाहिमवत रूपी वर्षधर ऊपरि बे मोटा द्रह छे तेकहैछे।

लिओवमअसुरजुयलदेवीण सेसभवणदेवयाणय देसूणअद्धपलियमुक्कोसति ॥ १ ॥ तयोश्च महाह्रदयोर्मध्ये योजनमाने पद्मे अर्द्धयोजनवाहल्ये दशावगाहे जलान्तात् द्विक्रोशोच्छ्रये वज्र १ रिष्ट २ वैडूर्य ३ मूल १ कन्द २ नाले ३ वैडूर्य १ जाम्बूनद २ मयबाह्याभ्यन्तर २ पत्रे कनककर्णिके तपनीयकनककेसरे तयो. कर्णिके ऽर्द्धयोजनमाने तदर्द्धबाहल्ये तदुपरि देव्योर्भवनेइति ॥ एवमित्यादि ॥ महाहिमवति महापद्मो रुक्मिणितुमहापौण्डरीक स्तौचद्विसहस्रायामौ तदर्द्धविष्कम्भौ द्वियोजनमानपद्मन्यासवन्तौ तयोर्देवते परिवसतो महापद्मेऽह्री. पौण्डरीकेबुद्धिरिति ॥ एवमित्यादि ॥ निषधेतिगिच्छिह्रदे धृतिर्देवता नीलवतिकेसरिह्रदे कीर्त्तिर्देवता तौचह्रदौ चतुर्द्विसहस्रायामविष्कम्भाविति भवतिचात्रगाथा एएसुसुरवहूओ वसतिपलिओवमट्ठितीयाओ सिरिहिरिधीकित्तीओ बुद्धीलच्छीसमाणाओत्ति ॥ १ ॥ जंबूइत्यादि ॥ तत्ररोहिन्नदीप्रवाहे महापद्मह्रदा द्दक्षिणतोरणेन निर्गत्य षोडशपञ्चोत्तराणि योजनशतानि सातिरेकाणि दक्षिणतो गिरिणागत्वा हाराकारवारिणा सातिरेकयोजनद्विशतकेन प्रपातेन मकरमुखप्रणालेन महाहिमवतो रोहिदभिधानकुण्डे निपतति मक

एवंमहाहिमवंतरुप्पीसु वासहरपव्वएसु दोमहद्दहा प० बहुसमतुल्लाजावमहापउमद्दहेचेव महापोंडरीयद्दहेचेव देवताउहिरिच्चेव बुद्धिच्चेव एवंनिसहनीलवंतेसु तिगिच्छिद्दहेचेव केसरिद्दहेचेव देवताउधिईचेव कित्तीचेव जंबूमंदरदाहिणेणं महाहिमवताउ वासहरपव्वयाउ महापउमद्दहाउ दोमहाणईउपवहंति तंजहा

बहुसम जाव महा पदमद्रह बीजो महा पुंडरीक द्रह तिहां बे देवागना ह्री देवता तथा बीजी बुद्धि देवता। एम निषध नीलवंतें तिगिच्छिद्रह। तथा केसरी द्रह । तिहां बे देवता बसै छे। धृति देवता तथा कीर्त्तिदेवता । जंबूद्वीपें मेरुथी दक्षिण दिशि महाहिमवंत वर्षधर पर्वतना महापदम द्रहथी

॥ रमुखजिह्वायोजनायामेन अर्द्धत्रयोदशयोजनानिविष्कम्भेन क्रोशबाहल्येन रोहितप्रपातकुण्डाच्च दक्षिणतोरणेननिर्गत्य हैमवतवर्षमध्यभागवर्त्तिनं शब्दा पातिवृत्तवैताढ्य मर्द्धयोजनेनाप्राप्याष्टाविंशत्यानदीसहस्त्रैः सयुज्याधोजगती विदार्य पूर्वतोलवणसमुद्र मभिगच्छतीति रोहिन्नदीप्रवहे ऽर्द्धत्रयोदशयोजन विष्कम्भा क्रोशोद्वेधा तत'क्रमेण वर्द्धमाना मुखेपञ्चविंशत्यधिकयोजनशतविष्कम्भा सार्द्धद्वियोजनोद्वेधा उभयतो वेदिकाभ्या वनखण्डाभ्यां युक्ता एव सर्वा महानद्यः पर्व्वताः कूटानिच वेदिकादियुक्तानीति हरिकान्तातु महापद्मह्रदादेवोत्तरेणतोरणेन निर्गत्य पञ्चोत्तराणिषोडशशतानि सातिरेकाणि उत्त राभिमुखोपर्वतेन गत्वा सातिरेकयोजनशतद्वयप्रमाणेन प्रपातेन हरिकान्ताकुण्डे तथैव प्रपतति मकरमुखजिह्विकादिप्रमाण पूर्वोक्ताद्विगुण न्ततः प्रपात कुण्डादुत्तरतोरणेननिर्गत्य हरिवर्षमध्यभागवर्त्तिन गन्धापातिवृत्तवैताढ्य योजनेनासम्प्राप्ता पश्चिमाभिमुखीभूत्वा षट्पञ्चाशता सरित्सहस्त्रै. समग्रा स मुद्रमभिगच्छति इयच हरिकान्ताप्रमाणतो रोहिन्नदीतोद्विगुणेति॥ एवमित्यादि॥ एवमिति जम्बूद्वीवेइत्याद्यभिलापसूचनार्थः हरिन्महानदीतिगिच्छिह्रद स्य दक्षिणतोरणेननिर्गत्य सप्तयोजनसहस्राणि चत्वारिचैकविंशत्यधिकानि योजनशतानि सातिरेकाणि दक्षिणाभिमुखी पर्वतेनगत्वा सातिरेकचतुर्यो जनशतिकेन प्रपातेन हरित्कुण्डेनिपत्य पूर्वसमुद्रे पतति शेषहरिकान्तासमानमिति शीतोदामहानदी तिगिच्छिह्रदस्योत्तरतोरणेन निर्गत्य तावत्येव योजन

दोमहानईउपवहंति तं० हरिच्चेव रोहियच्चेव हरिकंतएचेव एवंनिसहाउ वासहरपव्वयाउ तिगिच्छिद्दहाउ

बे महा मोटी नदी नीकली वहे छे। ते कहे छे रोहिता तथा बीजी हरिकांता नदी एम निषधनामा वर्षधर पर्वतना तिगिच्छि द्रहथी बे नदी नीकली छे ते कहेछे । हरिनदी तथा शीतोदा नदी । जबूद्वीपना मेरुथी उत्तरदिशि नीलवंत वर्षधर पर्वतना केसरीद्रहथी बे मोटी नदी नीकली

सहस्राणि गिरिणाउत्तराभिमुखीगत्वा सातिरेकचतुर्योजनशतिकेन प्रपातेन शीतोदाकुण्डे निपततीति जिह्विका मकरमुखस्य चत्वारियोजनानिआया मेनपचाशद्विष्कम्भेन योजनस्वाहल्येनकुण्डादुत्तरतोरणेननिर्गत्यदेवकुरून् विभजन्ती चित्रविचित्रकूटौ पर्वतौ निषधद्रहादींश्च पचद्रहान् द्विधाकुर्व्वंती चतु रशीत्यानदीसहस्रै रापूर्यमाणा भद्रशालवनमध्येन मेरु योजनद्वयेनाप्राप्ता प्रत्यङ्मुखीश्चावर्त्तमाना अधोविद्युत्प्रभ वचारपर्वतंदारयित्वा मेरोरपरतोपर विदेहमध्यभागेन एकैकस्माद्विजया दष्टाविंशत्यानदीसहस्रै रापूर्यमाणा अधोजयन्तद्वारस्यापरसमुद्रं प्रविशतीति शीतोदादि प्रवाहे पञ्चाशद्योजनवि ष्कम्भा योजनोद्वेधा ततोमात्रया परिवर्द्धमाना मुखे पञ्चयोजनशतानि विष्कम्भा दशयोजनोद्वेधेति ॥ जम्बूइत्यादि ॥ शीतासहानदी केसरिद्रहस्य दक्षिण तोरणेन विनिर्गत्य कुण्डेपतित्वा मेरोः पूर्वतः पूर्वविदेहमध्येन विजयद्वारस्याध पूर्वसमुद्र शीतोदासमानशेषवक्तव्या प्रविशतीति नारिकान्तातु उत्तर तोरणेननिर्गत्य हरिन्महानदीसमानवक्तव्या रम्यकवर्षमध्येनापरसमुद्रंप्रविशतीति ॥ एवमित्यादि ॥ नरकान्ता महापुण्डरीकहृदा द्दक्षिणतोरणेन वि निर्गत्य रम्यकवर्षंविभजन्तीति हरिकान्ता तुल्यवक्तव्या पूर्वसमुद्रमधिगत्वा रूप्यकूलातु तस्यैवोत्तरतोरणेन विनिर्गत्य ऐरण्यवदर्षंविभजन्ती रोहिन्नदी

सीतोञ्चेव जंबूमंदरउत्तरेणं नीलवंताउ वासहरपव्वयाउ केसरिद्दहाउ दोमहाणईउ पवहंति तंजहा सीता चेव नारिकंताचेव एवरुप्पीवासहरपव्वयाउ महापोंडरीयद्दहाउदोमहाणईउ पवहंति तजहा णरकंताचेव

छे ते कहे छे । शीतानदी तथा नारिकाता नदी.। एम रूपी वर्षधर पर्वतना महापुडरीक दहथी बे मोटी नदी वहे छे ते कहेछे । नरकंता तथा रूप्यकूला । जबूना मेरुथी दक्षिण भरत क्षेत्रे बे प्रपात द्रहछे जेहमा पर्वतथी नदीनो प्रवाह पडे छे ते कहेछे । गगा प्रपातकुंड तथा बीजो

तत्थवक्षाव्या अपरसमुद्र इच्छतीति ॥ जंबूइत्यादि ॥ पवायद्दहेत्ति ॥ प्रपतनम्प्रपातः तदुपलक्षितो ह्रदो प्रपातह्रदो इह यत्र हिमवदादेर्नगात् गङ्गादिका महानदी प्रणालेनाधो निपतति सःप्रपातह्रदःप्रपातकुण्डमित्यर्थः ॥ गंगापवायद्दहेचेवत्ति ॥ हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्ति पद्मह्रदस्य पूर्वतोरणेन निर्गत्य पूर्वाभिमुखोपञ्चयोजनशतानिगत्वा गङ्गावर्त्तनकूटे आवृत्तासती पञ्चत्रयोविंशत्यधिकानियोजनशतानि साधिकानि दक्षिणाभिमुखो पर्वतेनगत्वा गङ्गामहानदी अर्द्धयोजनायामया सक्रोशषड्योजनविष्कम्भया अर्द्धक्रोशबाहल्यया जिह्विकाया युक्तेन विवृतमहामकरमुखप्रणालेन सातिरेकयोजनशतिकेन मुक्तावलीकल्पेन प्रपातेन यत्रप्रपतति यश्च,षष्टियोजनायामविष्कम्भः किञ्चिन्न्यूननवत्युत्तरशतपरिक्षेपोदशयोजनोद्वेधो नानामणिनिबद्धो यस्यच पूर्वापरदक्षिणासु त्रयस्त्रिशत्सोपानप्रतिरूपकाः सविचित्रतोरणाः मध्यभागेच गङ्गादेवीद्वीपो ष्टयोजनायामविष्कम्भः सातिरेकपञ्चविंशतिपरिक्षेपः जलान्ता द्विक्रोशोच्छ्रितो वज्रमयो गङ्गादेवीभवनेन क्रोशायामेन तदर्द्धविष्कम्भेन किञ्चिदूनक्रोशोच्चे नानेकस्तम्भशतसन्निविष्टेनालङ्कृतोपरितनभागः यतश्च दक्षिणतोरणेन विनिर्गत्य प्रवहे सक्रोशषट्योजनविष्कम्भा अर्द्धक्रोशोद्वेधा गङ्गाउत्तरभरतार्द्धविभजन्ती सप्तभिर्नदीसहस्रै रापूर्यमाणा अधःखण्डप्रपातगुहाया वैताढ्यपर्वतविदार्य दक्षिणार्द्धभरत विभजन्ती तन्मध्यभागेन गत्वा पूर्वाभिमुखीआवृता सती चतुर्दशभिर्नदीसहस्रैः समग्रा मुखेसार्द्धद्विषष्टियोजनविष्कम्भा सक्रोशयोजनोद्वेधा जगतींविदार्य पूर्वलवणसमुद्र मविशतीति सगङ्गाप्रपातह्रद एतदनुसारेण सिन्धुप्रपात ह्रदोपि व्याख्यातव्य अतएवैतौ बहुसमा

रुप्पकूलाचेव जंबूमंदरदाहिणेणं भरहेवासे दोपवायद्दहा प० तं० बहुसमतुल्ला जाव गंगप्पवायद्दहेचेव

सिधु प्रपातकुंड । एम जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तर दिशाये हैमवत क्षेत्रमां बे प्रपातकुंड छे ते कहे छे । रोहिता प्रपातकुंड तेहमां मकरमुख

द्विविशेषणा वायामविष्कम्भौद्विधपरिणाहे भावनीयाविति सर्वएव प्रपातह्रदा दशयोजनोद्वेधा वक्तव्याइति यच्चेह, वर्षधरनद्यधिकारे गङ्गासिन्धुरोहितां शानां तथा सुवर्णकूलारक्तारक्तवतीना नाभिधान तत् द्विस्थानकानुरोधात् तासांहि एकैकस्मात्पर्वतात् त्रयत्रय प्रवहतीति द्विस्थानके नावतारइति एव मित्यादि प्राग्वत् ॥ रोहियप्पवायद्दहेचेवत्ति ॥ रोहिदुक्तरूपा यत्रपतति यश्च सविंशतिक योजनशतमायामविष्कम्भाभ्या किंचिन्न्यूनाशीत्यधिकानि त्रीणि शतानि परिक्षेपेण यस्यच मध्यभागे रोहितद्वीपो षोडशयोजनायामविष्कम्भः सातिरेकपंचाश योजनपरिक्षेपो जलान्ता द्विक्रोशोछ्रितो यश्चरोहिद्देवता भवनेन गङ्गादेवताभवनसमानेन विभूषितो परितनविभागः सरोहित्प्रपातह्रदइति ॥ रोहियसप्पवायद्दहेचेवत्ति ॥ हिमवद्वर्षधरोपरिवर्त्ति पद्मह्रदोत्तरतो रणेननिर्गत्य रोहितांशामहानदीद्वेषटसमत्युत्तरेयोजनशते सातिरेके उत्तराभिमुखीपर्वतेन गत्वा योजनायामया अर्द्धत्रयोदशयोजनविष्कम्भया क्रोशवाह ल्यया जिह्विकया विवृतमकरमुखप्रणालेन हाराकारेणच सातिरेकयोजनशतिकेन प्रपातेन यत्रप्रपतति यश्च रोहित्प्रपातकुण्डसमानमान यस्यमध्ये रो हितांशाद्वीपो रोहिद्वीपसमानमानः रोहिताशाभवनेन प्रागुक्तमानेनालङ्कृतः यतश्च रोहितांशानदी रोहिन्नदीसमानमाना उत्तरतोरणेननिर्गत्य पश्चिम समुद्रम्प्रविशति सरोहितांशाप्रपातह्रद इति ॥ जबूइत्यादि ॥ हरिप्पवायद्दहेचेवत्ति ॥ हरिन्नदी प्रागुक्तलक्षणा यत्र निपतति यश्च द्वेशतेचत्वारिंशदधिके

सिंधुप्पवायद्दहेचेव एवंहेमवएवासेदोपवायद्दहा प० बहुसमतुल्ला तंजहा रोहियप्पवायद्दहेचेव रोहियं सप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरदाहिणेणं हरिवासे दोपवायद्दहा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला तंजहा हरिप्पवायद्दहेचेव

प्रवाहे रोहिता नदी पडेछे । तथा बीजो रोहितासा प्रपात द्रहछे । जंबूना मेरुथी दक्षिणे हरिवर्ष क्षेत्रे बे प्रपात द्रहछे ते कहेछे । बहुसम जाव

आयामविष्कम्भाभ्यां सप्तशतानिएकोन पञ्चाधिकानि परिक्षेपेण यस्यच मध्यभागे हरिद्देवताद्वीपः द्वात्रिंशद्योजनायामविष्कम्भः एकोत्तरशतपरिक्षेपः ज
लान्ता द्विक्रोशोच्छ्रितो हरिद्देवता भवन विभूषितो परितनभागो सोहरित्प्रपातकुंड इति ॥ हरिकतप्पवायद्दहेचेवत्ति ॥ हरिकान्तोक्तरूपा महानदीय
त्रनिपतति यत्र हरित्कुण्डसमानो हरिद्वीपमानेन हरिकान्तादेवीद्वीपेन सभवनेन भूषितमध्यभाग' स हरिकान्ताप्रपातकुंड इति ॥ जंबूइत्यादि ॥ सीयप्प
वायद्दहेचेवत्ति ॥ यत्र नीलवतः शीतानिपतति यत्र चत्वारिंशत्यधिकानियोजनशतानि आयामविष्कम्भाभ्या पञ्चदशाष्टादशोत्तराणि विशेषन्यूनानिपरि
क्षेपेण यस्यच मध्ये शीताद्वीप. चतुष्पष्टियोजनायामविष्कम्भो द्व्युत्तरयोजनशतद्वयपरिक्षेप जलान्तात् द्विक्रोशोच्छ्रित. शीतादेवीभवनेन विभूषितोपरित
नभागः सशीताप्रपातकुंड इति ॥ सीतोदप्पवायद्दहेचेवत्ति ॥ यत्र निषधात् शीतोदानिपतति स शीतोदाप्रपातह्रद' शीताप्रपातह्रदसमानः शीतादेवी
द्वीपभवनसमान. शीतोदादेवीद्वीपभवनश्चेति ॥ जम्बूइत्यादि ॥ नरकान्तनारिकान्ताप्रपातह्रदौ च हरिकान्ताहरित्प्रपातह्रदसमानौ स्वसमाननामद्वीप

हरिकंतप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरउत्तरदाहिणेण महाविदेहेवासे दोप्पवायद्दहा प० तंजहा वञ्जसमतुल्ला जाव
सीयप्पवायद्दहेचेव सीओयप्पवायद्दहेचेव जंबूमदरउत्तरेणं रम्मएवासे दोपवायद्दहा प० वञ्जसमतुल्ला जाव
नरकतप्पवायद्दहेचेव णारिकतप्पवायद्दहेचेव एवंहेरन्नवएवासे दोपवायदहा प० वञ्जसमतुल्ला जाव सुव

हरिप्रपातद्रह तथा हरिकाता प्रपातद्रह। जंबूनां मेरुथी उत्तरदिशि दक्षिणदिशि महाविदेह क्षेत्रे बे प्रपात द्रहछे ते कहेछे। वज्रसम जाव शीता
प्रपातकुंड बीजो शीतोदा प्रपातकुंड। जबूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशि रम्यकक्षेत्रे बे प्रपातकुंड ते कहेछे। नरकांता प्रपातकुंड बीजो नारिकांता

द्देवोकाविति ॥ एवमित्यादि ॥ सुवर्णकूलारूप्यकूलाप्रपातह्रदौ रोहितांशारोहित्प्रपातह्रदसमानवक्तव्यौ विशेषस्तूह्य इति ॥ जवूद्त्यादि ॥ रक्तारक्तवती प्रपातह्रदौ गङ्गासिन्धुप्रपातह्रदसमानवक्तव्यौ नवर रक्ता पूर्वोदधिगामिनी रक्तवतीतु पश्चिमोदधिगामिनीति ॥ जवूद्दोवेमदरस्सदाहिणेणभरहेवासेदोम हानईश्रोइत्यादि एवमिति अनन्तरक्रमेण ॥ जहत्ति ॥ यथा पूर्वं वर्षेवर्षे द्वौद्वौ प्रपातह्रदावुक्ता वेवन्नद्योवाच्या स्ताश्चैव गगासिधूतहरी हियंसरोहियनईय हरिकंता हरिसलिलासीतोया सत्तेयाहुतिदाहिणश्रो ॥ १ ॥ सीयायनारिकांता नरकताचेवरुप्पकूलाय सलिलासुवणकूला रत्तवतीरत्तउत्तरश्रोत्ति ॥ २ ॥ जम्बूद्वीपाधिकारात् चेत्रधर्मव्यपदेश्यपुद्गलधर्माधिकाराच्च जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतादिसत्काकाललक्षणपर्यायधर्माननेकधाष्टादशसूत्र्याह ॥ जवूद्दोवेद्त्यादि ॥

ण्णकूलप्पवायद्दहेचेव रूप्पकूलप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरउत्तरेणं एरवएवासे दोपवायद्दहा प० बऊसमतुल्लाजाव रत्तप्पवायद्दहेचेव रत्तवइप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरदाहिणेणं भरहेवासे दो महानईउ प० बऊसमतुल्लाजाव गंगाचेव १ सिंधूचेव २ एवंजहापवायद्दहा एवंणईउ भणियव्वाउ एवजहा एरवएवासे दोमहानईउ प० बऊसमतुल्लाउ जावरत्ताचेव रत्तवईचेव जंबूद्दीवेदीवेभरहेरवएसुवासेसु तीताए उसप्पिणीए सुसमदुसमाए

प्रपातकुंड एम हैरण्यवत क्षेत्रे बे प्रपातकुंड तेकहेछे । वहुसम जाव सुवर्णकूला प्रपातकुंड तथा रूप्यकूला प्रपातकुंड । जबूद्वीपना मेरुथी उत्तरदिशि ऐरवतक्षेत्रे बे प्रपातकुंड तेकहेछे । बहुसमजाव रक्ताप्रपातकुंड तथा बीजो रक्तवती प्रपातकुंड । जबूद्वीपे मेरुथी दक्षिण भरत क्षेत्रे बे मोटीनदीछे तेकहेछे । बहुसम जाव गंगानदी तथा बीजी सिंधुनदी । एम जिण अनुक्रमे प्रपातकुंडकह्या तेम अनुक्रमे नदीपिण कहिवी । यावत् ऐरवत क्षेत्रे बे

सुगमानिचैतानि नवरं ॥ तीताएत्ति ॥ अतीता या उत्सर्पिणीप्रागव त्तस्यां तस्या वा सुखमदु'खमाया बहुसुखायाः समाया. कालविभागस्य चतुर्थार ॥ कलक्षणस्य ॥ कालोत्ति ॥ स्थिति' प्रमाण वा ॥ होत्थत्ति ॥ बभूवेति ॥ एवमिति जंबूद्दीवे २ त्यादि ॥ उच्चारणीय नवर ॥ इमीसेत्ति ॥ अस्या प्रत्यक्षायां वर्त्त मानाया मित्यर्थः अवसर्प्पिण्या मुक्तार्थाया ॥ जावत्ति ॥ सुसमदुसमाएसमाए तृतीयारक इत्यर्थ' ॥ दोसागरोवमकोडाकोडीओ काले पन्नत्ते ॥ प्रज्ञप्तइति पूर्वसूत्रा द्विशेषः पूर्वसूत्रेहि ॥ होत्थत्ति ॥ भणितमिति ॥ एवमित्यादि ॥ आगमिस्साएत्ति ॥ आगमिष्यत्या मुत्सर्प्पिण्यामिति भविष्यतीति पूर्वसूत्राद्विशेष'

समाए दोसागरोवमकोडाकोडीउ कालेहोत्था एवमिमीसे उसप्पिणीए जाव प० एवंआगमिस्साए उसप्पि णीए जाव भविस्सइ जंबूद्दीवेदीवे भरहेरवएसु वासेसु तीयाएउसप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दोगाउ याइउढं उच्चत्तेणं होत्था दोन्नियपलिउवमाइ परमाउं पालयित्ता एवमिमीसेउसप्पिणीए जावपालयित्ता एवमागमिस्साए उसप्पिणीए जावपालइस्सति जंबूद्दीवेदीवे भरहेरवएसुवासेसु एगसमए एगजुगे दोअर

नदीछे। बहुसम जाव रक्ता नदी तथा बीजी रक्तवती । जंबूद्वीपना भरत तथा ऐरवत क्षेत्रे अतीत गई उत्सर्प्पिणीकाले सुसमदुसमानामे बे साग रोपमकोटाकोटिकाल प्रमाणे थयो । एम आ उत्सर्पिणीकाले सुसमदुसमा त्रीजो आरो बे कोटाकोटि कालप्रमाणथयो । एम आवतीउत्सर्पिणीये पणि सुसमदुसमा आरो बे कोटाकोटिनो थास्यै जबूद्वीपना भरत ऐरवतक्षेत्रे गईउत्सर्पिणीयें सुसमाआरे मनुष्ययुगलियानो बे गाउ प्रमाण ऊंच पण थयो । बेपल्योपमनो उत्कष्टो आऊखोपालताहुआ एम आ वर्त्तमान उत्सर्पिणीये पणि युगलियानो बे गाऊनों शरीर बे पल्योपमनो



२ ॥ जवूइत्यादि ॥ सुखमायांपञ्चमारके ॥ होत्थत्ति ॥ बभूवु' ॥ पालयत्यत्ति ॥ पालितवन्तः पूर्वसूत्राद्विशेषः ॥ जवूइत्यादि ॥ एगेजुगेत्ति ॥ पञ्चाब्दिकः कालविशेषो युग तत्रैकस्मि स्तस्याप्येकस्मिन् समये ॥ एगसमये १ एगजुगे ॥ इत्येवम्पाठेपि व्याख्योक्तक्रमेणैवे त्यमेवार्थसम्बन्धा दन्यथावा भावनीयेति द्वावर्हंतावशौ प्रवाहौएकोभरतप्रभवो न्यऐरवत प्रभवइति ॥ दशारत्ति ॥ दशाराः समयभाषया वासुदेवाः ९ ॥ जवूइत्यादि ॥ सदा सर्वदा ॥ सुसमसुसमत्ति ॥ प्रथमारकानुभागः सुखमसुखमा तस्याः सम्बन्धिनी या सा सुखमेव तासुत्तमर्द्धि प्रधानविभूतिमुच्चैस्त्वायुः ष्वचदत्तभोगोपभोगादिका म्प्राप्ता.प्रत्यनु

हंतवंसा उप्पजिंसुवा उप्पज्जंति उप्पज्जिस्संतिवा एवं चक्कवट्टिवंसा दसारवंसा जावउप्पज्जिस्संतिवा जंबूदोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुसमिद्धिंपत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तं० देवकुराएचेव उत्तरकुराएचेव जंबूद्दीवेदीवे दोसुवासेसु मणुया सयासुसमुत्तमिद्धिपत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति हरिवासेचेव रम्मगवासेचे

आऊखो थयो । एम आवती उत्सर्पिणीये जाव वे पल्योपमनो आऊखोयासे। जंवूद्वीपे भरत ऐरवतक्षेत्रें एकैंसमये एकैयुगे युगते पांच वर्षनो चंद्र चंद्र अभिवर्द्धित चंद्र अभिवर्द्धित थी थाय छे । बे अरिहंत ते पूज्य भगवंतना मोटा बंश उपना उपजेछै वर्त्तमान चौवीसी आश्रीने आवतेकाले उपजस्ये। एम चक्रवर्त्तिनावश एकभरते एकऐरवते । एम बे वंशवासुदेवना जबूद्वीपें भरत ऐरवते एकसमये बे अरिहंत अतीतकालेऊपना वर्त्तमानकाले उपजैछै अनागतकाले उपजसे । एम चक्रवर्त्ति वलदेव बासुदेव एम जाव उपना उपजैछे उपजसे । जबूद्वीपे बे कुरुने विषे मनुष्य सदाई सुखमसुखमा पहिलाआरानी रिद्धि भोगता युगलिया विचरेछै । ते कहेछे । देवकुरू तथा बीजो उत्तरकुरू एह बे क्षेत्रमां सदैव पहिलो

भवन्तो वेदयन्तो नसत्तामात्रेणेत्यर्थः अथवा सुखमसुखमांकालविशेषं प्राप्ता अधिगताः उत्तमान्दृद्धिमित्यनुभवन्तो विहरन्ति आसते इति अभिधीयतेच ॥ दोसुविकूरामणुया तिपल्लपरमाउणोतिकोसुच्चा पिठ्ठकरंडसयाइं दोछप्पन्नाइंमणुयाणं ॥ १ ॥ सुसमसुसमाणुभाव अणुभवमाणेणवच्चगोवणया अउणापन्नदिणाइ अठ्ठमभत्तस्सआहारो ॥ २ ॥ देवकुरवो दक्षिणा उत्तरकुरव उत्तरा क्षेत्रविति १४ ॥ जबूइत्यादि ॥ सुसमति ॥ सुखमा द्वितीयारकानुभागः शेषतथैव पठ्यतेच ॥ हरिवासरम्मएसु आउपमाणंसरीरउस्सेहो पलिओवमाणिदोन्निय दोन्नियकोसुस्सियाभणिया ॥ १ ॥ छठ्ठस्सयआहारो चउसठ्ठिदिणाणुपालणातेसिपिठ्ठकरडाणसय अठ्ठावीसमुणेयव्वं ति ॥ १५ ॥ जबूइत्यादि ॥ सुसमदुसमंति ॥ सुखमदुःखमात्ततीयारकानुभाग स्तस्या या सा सुखमदु खमाऋद्धिः शेषतथैव ॥ उच्यतेच गाउयमुच्चापलिओ वमाउणोवज्जरिसहसघयणा हेमवएरन्नवए अहमिदनरामिहुणवासी ॥ १ ॥ चउसठ्ठीपिठ्ठकरं डयाणमणुयाणते

व जंबूदीसुवासेसु मणुया सया सुसमदुसमुत्तमिढ्ढिंपत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति हेमवएचेव एरन्नवएचेव जंबूद्दीवेदीवे दोसुखित्तेसु मणुया सया दुसमसुसमुत्तमिढ्ढिंपत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तंजहा पुव्वविदेहेचेव अवरविदेहेचेव जबूद्दीवेदीवे दोसुवासेसुमणुया छव्विहंपिकालंपच्चणुब्भवमाणा विहरंति तंजहा ।

आरो छे ॥ जंबूना बेक्षेत्रनें विषें मनुष्य सदैव सुखमा नामा बीजाआरानी रिद्धि पाम्यां सुखभोगता विचरेछे ॥ ते कहेछे ॥ हरिवर्षक्षेत्रे तथा रम्यकक्षेत्रे ॥ जबूद्वीपना बे क्षेत्रे युगलिया मनुष्य सदाई सुखमदुखमा त्रीजा आराना सुखभोगता विचरेछे ॥ हैमवतक्षेत्रे तथा ऐरण्यवतक्षेत्रे ॥ जंबूद्वीपमा बे क्षेत्रने विषे मनुष्य युगलिया नथी सदाई दुखमसुखमा चौथोआरो अनुभवता विचरेछे ॥ पूर्वमहाविदेहमा तथा पश्चिममहाविदेह

क्तिमाहारो भत्तस्सचउत्थस्सउ उणसीइंदिणाणुपालणयत्ति ॥ १६ ॥ जम्बूइत्यादि ॥ दुसमसुसमति ॥ दुःखमसुखमाचतुर्थारकप्रतिभागस्तत्सम्बन्धिनीकृद्धिदुःखमसुखमैव शेषतथैव अधीयतेच मणुयाणपुव्वकोडी आऊपचोसियाधणुसयाइ दुसमसुसमाणुभाव अणुहुतिनरानियकालति ॥ १७ ॥ जबूदीवेत्यादि छव्विहपित्ति ॥ सुखमसुखमादिकं उत्सर्पिण्यवसर्पिणीरूप मिति ॥ १८ ॥ अनन्तरजम्बूद्वीपेकाललचणद्रव्यपर्यायविशेषा उक्ता अधुनातु जम्बूद्वीपएव कालपदार्थव्यंजकाना ज्योतिषा द्विस्थानकानुपातेन प्ररूपणामाह ॥ जबूदीवे२ इत्यादि सूत्रद्वय ॥ पभासिसुवत्ति ॥ प्रभासितवन्तौ प्रकाशनीयमेव प्रभासयतः प्रभासयिष्यत. चन्द्रयोश्च सौम्यदीप्तिकत्वा त्प्रभासनमात्रमुक्त आदित्ययोश्च खररश्मित्वात्तापितवन्तौ एवतापयत' स्तापयिष्यतइति वस्तुत स्तायन मुक्तं अनेन कालत्रयप्रकाशनभणनेन सर्वकाल चन्द्रादीनां भावाना मस्तित्व मुक्त मत एवोच्यते नकदाचिदनीदृश जगदिति नवाविद्यमानस्य जगतः कर्ताकल्पयितुं युक्तो ऽप्रमाणकत्वात् सन्निवेशविशेषवत् तत् बुद्धिमत्कारणपूर्वकं दृष्ट यथाघटः सन्निवेशविशेषवन्तश्च भूधरादयो यश्च बुद्धिमानसा वीश्वरो जगत्कर्तेति विशेषात्मकवस्तु सन्निवेशविशेषवत्यपि वल्मीके बुद्धिमत्कारणत्वस्यादर्शना दित्यत्र बहुवक्तव्य तच्चस्थानान्तरादवसेयमिति द्विसख्यत्वा च न्द्रयो स्तत्परिवारस्यापि द्वित्वमाह ॥ दोकत्तिएत्यादिना ॥ दोभावकेउइत्येतदवसानेन ग्रथेन सुगमश्चायं नवरं द्वेकृत्तिके नचत्रापेचया नतु तारकापेच

भरहेचेव एरवएचेव जंबूद्दीवे दोचंदापभासिंसुवा पभासंतिवा पभासिस्संतिवा दोसूरियातवइंसुवा तवंति वा तविस्सतिवा। दोकत्तियाउ दोरोहिणीउ दोमियसिराउ दोअद्दाउ एवभाणियव्वं। कत्तियरोहिणिमिय

मां ॥ जंबूद्वीपमा बे क्षेत्रे मनुष्य छप्रकारे आराना कालप्रति उत्तमरिद्धिप्रति पावता भोगता विचरेछे ॥ भरतक्षेत्रें तथा ऐरवतक्षेत्रे ॥ जंबूद्वी

या इत्येवसर्वनेति ॥ कत्तिएइत्यादि ॥ गाथात्रयेण नक्षत्र सूत्रसंग्रहः कृत्तिकादीनामष्टाविंशते र्नक्षत्राणां क्रमेणाग्न्यादयो ष्टाविंशति रेव देवता भवन्ति ॥ ता ग्राह हावग्नी १ । एवप्रजापती २ । सोमौ ३ । रुद्रौ ४ । अदिती ५ । बृहस्पती ६ । सर्पौ ७ । पितरौ ८ । भगौ ९ । अर्यमणौ १० । सवितारौ ११ । त्वष्टारौ १२ । वायू १३ । इन्द्राग्नी १४ । मित्रौ १५ । इन्द्रौ १६ । निर्ऋती १७ । आपः १८ । विश्वौ १९ । ब्रह्माणौ २० । विष्णू २१ । वसू २२ । वरुणौ २३ । अजौ २४ । विवृद्धौ २५ । ग्रन्थान्तरे अहिर्बुध्नावुक्तौ पूषणौ २६ । अश्विनौ २७ । यमाविति २८ । ग्रन्थान्तरे पुन रुक्तनोतआर श्यैता एव मुक्ता अश्वि १ । यम २ । दहन ३ । कमलज ४ । शशि ५ । शूलभृद् ६ । दिति ७ । जीवफणि ८ । पितरः ९ । योन्य १० । यम ११ । दिनकृत्



सिर अद्दायपुणव्वसूयपुस्सोय । तत्तोविअस्सलेसा महायदोफग्गुणीओय ॥ १ ॥ हत्थोचित्तासाई यविसाहा होंतिअणुराहा । जेट्ठामूलोपुव्वा आसाढाउत्तराचेव ॥ २ ॥ अभिईसवणधणिट्ठा सयभिसयादोयहोंतिभद्द वया । रेवइअस्सिणिभरणी णेयव्वाआणुपुव्वीए ॥ ३ ॥ एवगाहानुसारेणणायव्वं जाव दोभरणीओ दोअग्गी

पमा बेचद्रमा अजुआलो करताहुवा वर्तमानकाले करेछे अनागतकाले करस्ये.॥ तथा पणि बेसूर्य अतीतकाले तप्या वर्तमानकाले तपेछे अना गतकाले तपस्ये ॥ वली बे कत्तिका नक्षत्रछे ॥ बे रोहिणी नक्षत्रछे ॥ बे मृगशिर नक्षत्रछे ॥ बे आर्द्रा नक्षत्र छे ॥ एम अठावीस नक्षत्र गाथा थी जाणिवा ॥ कत्तिका । रोहिणी । मृगशिर । आर्द्रा । पुनर्वसु । पुष्य । तिवारपछी अश्लेषा । मघा । बे फाल्गुनी एक पूर्वाफाल्गुनी एक उत्त राफाल्गुनी । हस्त । चित्रा । स्वाति । विशाखा । तिमज अनुराधा । ज्येष्ठा । मूल । पूर्वाषाढा । अने उत्तराषाढा । अभिजित् । श्रवण । धनि

१२। त्वष्टृ १३। पवन १४। शक्रा १५। ग्नि १६। मित्रा १७। ख्याः ॥ १ ॥ ऐन्द्रीनैर्ऋतितोयं विश्वोब्रह्माहरिर्वसुर्वरुण: अजपादोहिर्बुध्नः पूषाचेती श्वरा भानाम्॥ २ ॥ अङ्गारकादयो ऽष्टाशीतिर्ग्रहा. सूत्रसिद्धा: केवलमस्मद्दृष्टपुस्तकेषु केषुचिदेव यथोक्ता सख्यासम्वदतीति सूर्यप्रज्ञप्त्यनुसारेणासा विहसवादनीया तथाहि तत्सूत्र तत्थखलुइमे अट्ठासीइमहागहा पन्नत्ता तजहा इगालए १ वियालए २ लोहियक्खे ३ सणिच्छरे ४ आहुणिए ५ पाहुणिए ६ कणे ७ कण ए ८ कणकणए ९ कणवितणए १० कणसतणए ११ सोमे १२ सहिए १३ अस्साउणे १४ कज्जोयए १५ कव्वडए १६ अयकरे १७ दुदुभए १८ सखे १९ स

दोपयावई दोसोमा दोरुद्दा दोअइइ दोबहस्सई दोसप्पी दोपिई दोभगा दोअज्जमा दोसविया दोतठ्ठा दोवा ऊ दोइदग्गी दोमित्ता दोइदा दोनिरई दोआऊ दोविस्सा दोबम्हा दोविण्हू दोवसू दोवरुणा दोअया दोवि विद्धी दोपुस्सा दोअस्सा दोयमा ॥ दोइगालगा दोवियालगा दोलोहियक्खा दोसणिंचरा दोआहुणिया दोपाहुणिया दोकणा दोकणगा दोकणकणगा दोकणगवियाणगा दोकणगसताणगा दोसोमा दोसहिया

ष्टा । शतभिश । वली बे पूर्वाभाद्रपद । उत्तराभाद्रपद । रेवती । अश्विनी । भरणी । एम अनुक्रमें बेवे जाणिवा ॥ एम गाथाने अनुसारे जाणिवा जाव भरणीलगे ॥ हिवे ताराना स्वामी कहेछे । अग्नी देवता प्राजापती सोम रुद्र अदिती बृहस्पति सर्प्प पितर भग अर्यमा सविता त्वष्टा वा यूइदाग्नी मित्र इंद्र निर्ऋती आप ब्रह्मा विश्व विष्णु वसु वरुण अज विवृद्धि पूषण अश्वि यम ॥ हिवे अठयासी ग्रहना नाम कहेछे। अगारक तेमंगल ब्याल लोहिताक्ष शनैश्चर आहुणिक प्राहुणिक कण कनक कनकनक कनकवितान कनकसंतानक सोम सहित अश्वास

खवन्ने २० सखवन्नाभे २१ कसे २२ कसवन्ने २३ कंसवन्नाभे २४ नीले २५ नीलाभासे १६ रूप्पी ३७ रूप्पाभासे २८ भासे २९ भासरासी ३० तिले ३१ तिल पुप्फवन्ने २२ दगे ३३ दगपंचवन्ने ३४ काए ३५ कायबंझे ३६ इंदग्गी ३७ धूमकेऊ ३८ हरी ३९ पिंगले ४० बुहे ४१ सुक्के ४२ वहस्सई ४३ राहू ४४ अगत्थी ४५ माणवगे ४६ कासे ४७ फासे ४८ धुरे ४९ पमुहे ५० वियडे ५१ विसंधी ५२ नियल्ले ५३ पयल्ले ५४ जडियाइलए ५५ अरुणे ५६ अग्गिल्लए ५७ काले ५८ महाकाले ५९ सोत्थिए ६० सोवत्थिए ६१ वद्धमाणगे ६२ पलंबे ६३ निच्चालोए ६४ निच्चुज्जोए ६५ सयंपभे ६६ ओभासे ६७ सेयंकरे ६८ खेमंकरे ६९ आ

दोआसासणा दोकज्जोवगा दोकब्बडगा दोअयकरगा दोदुंदुभगा दोसंखा दोसंखवन्ना दोसंखवन्नाभा दो कंसा दोकंसवन्ना दोकंसवन्नाभा दोरुप्पी दोरुप्पाभासा दोनीला दोनीलाभासा दोभासा दोभासरासी दो तिला दोतिलपुप्फवन्ना दोदगा दोदगपंचवन्ना दोकाका दोकायबज्झा दोइंदग्गी दोधूमकेऊ दोहरी दोपिं गला दोबुहा दोसुक्का दोबहस्सई दोराहू दोअगत्थी दोमाणवगा दोकासा दोफासा दोधुरा दोपमुहा दो वियडा दोविसंधी दोनियल्ला दोपइल्ला दोजडियाइलगा दोअरुणा दोअग्गिल्ला दोकाला दोमहाकालगा दोसोत्थिया दोसोवत्थिया दोवद्धमाणगा दोपलंबा दोनिच्चालोगा दोनिच्चुज्जोया दोसयंपभा दोओभासा

न कज्जोवग कर्बट अयस्कर दुदुभक शंख शंखवर्ण शंखवर्णाभ कंस कंसवर्ण कंसवर्णाभ रूपी रूप्पाभ नील नीलाभास भस्म भस्मराशी तिल तिल पुष्पवर्ण दक दकपंचवर्ण काक काकवंध्य इंद्राग्नी धूमकेतु हरि पिंगल बुध शुक्र बृहस्पति राहु अगस्ति माणवक कास स्पर्श धुर प्रमुख विकट

भकरे ७० पभकरे ७१ अपराजिए ७२ अरए ७३ असोगे ७४ वीयसोगे ७५ विमले ७६ वितत्ते ७७ वितत्थेय ७८ विसाले ७९ साले ८० मुच्चए ८१ अणिय ट्टी ८२ एगजडी ८३ दुजडी ८४ करकरिए ८५ रायगले ८६ पुप्फकेऊ ८७ भावकेऊ ८८ । इदतन्नैवसग्रहणीगाथाभि निर्बध्नित तथाहि ॥ इगालएवियाल ए । लोहियक्खेसणिच्छरेचेव ॥ आहुणिएपाहुणिए । कणगसनामाविपचेव ११ ॥ १ ॥ सोमेसहिएआसा । सणेयवज्जोयएयकव्वडए ॥ अयकरदुदुहएविय । सखसनामावितिन्नेव २१ ॥ २ ॥ तिन्नेवकसनामा । नीलारूप्पीयहोतिचत्तारि ॥ भासतिलपुप्फवन्ने । दगायदगवन्नकायवज्झेय ३६ ॥ ३ ॥ इदग्गिधूमकेऊ हरिपिगलएवुहेयसुक्केय ॥ वहसइराहुअगत्थी । माणवएकासफासेय ४८ ॥ ४ ॥ धुरएपमुहेवियडे । त्रिसधिकप्पेतहापयल्लेय ॥ जडियालएयअरुणे । अग्गिल कालेमहाकाले ५९ ॥ ५ ॥ सोत्थियसोवत्थियए । वद्धमाणगतहापलवेय ॥ निच्चालोएनिच्चु । ज्जोएयसगपभेयओभासे ६५ ॥ ६ ॥ सेयकरखेमकर । आभकर पभंकरेयवोधव्वे ॥ अरएविरएयतहा । असोगतहवोयसोगेय ७५ ॥ ७ ॥ विमलवितत्तवितत्थे । विसालतहसालमुच्चएचेव ॥ अणियट्टीएगजडी । यहोइविज

दोसेयकरा दोखेमंकरा दोआभंकरा दोपभंकरा दोअपराजिया दोअरया दोअसोगा दोविगयसोगा दोविम ला दोवितत्ता दोवितत्था दोविसाला दोसाला दोमुच्चया दोअणियट्टी दोएगजडी दोदुजडी दोकरकरिगा

विसधि नियल पइल जटितालक अरुण अगिल महाकाल स्वस्तिक सौवस्तिक वर्द्धमान [पूसमानक अंकुश एह वेगूहना नाम गून्यातरेळे] प्रलंब नित्यालोक नित्योद्योत स्वयप्रभ उज्जस श्रेयंकर खेमंकर आभकर प्रभंकर अपराजित अरज अशोक विगतशोक विमल वितत वित्रस्त विशाल सा ल मुक्तक अनीवर्त्त एकजटी द्विजटी करकरिक राजगल पुष्पकेतु भावकेतु एह सर्व अठयासी गृह वे वे जाणिवा ॥ जबूद्वीपनामा द्वीपनी वेदिका

डीयवोधव्वे ८४ ॥८॥ करकिरएरायगल । वोधव्वेपुप्फभावकेऊय ८८॥ अट्ठासीइगहाखलु । नेयव्वाआणुपुव्वीए त्ति ॥८॥ जम्बूद्वीपाधिकारादेवेदमपरमाह
जम्बूद्वीपादिकण्ठ्यनवर वज्रमय्या अष्टयोजनोच्छ्रयाया चतुर्द्वादशोपर्यधोविस्तृताया जम्बूद्वीपनगरप्राकारकल्पाया जगत्या द्विगव्यूतोच्छ्रितेन पंचधनु:शतवि
स्तृतेन नानारत्नमयेन जालकटकेनपरिक्षिप्ताया उपरिवेदिकेति पद्मवरवेदिकेत्यर्थ पंचधनु: शतविस्तीर्णगवाक्षहेमकिङ्किणीघण्टायुक्ता देवाना मासनश
यन मोहनविविधक्रीडास्थान मुभयतो वनखण्डवतीति जम्बूद्वीपवक्तव्यतान्तरत्वादेव लवणसमुद्रवक्तव्यतामाह ॥ लवणेणमित्यादि ॥ कण्ठ्य नवर चक्रवा
लस्यविष्कम्भ: पृथुत्वं चक्रवालविष्कम्भ स्तेनेति सन्.वेदिकासूत्र जम्बूवेदिकासूत्रवद्वाच्यमित्यर्थ: क्षेत्रप्रस्तावा ल्लवणसमुद्रवक्तव्यतानन्तर धातकीखण्ड व
क्तव्यतां ॥धायइसंडेइत्यादिना॥ वेदिकासूत्रान्तेनग्रन्थेनाह कण्ठ्यचाय नवर धातकी खण्डप्रकरणमपि जम्बूद्वीपलवणसमुद्रमध्य वलयाकृति धातकीखण्ड
मालिख्य हिमवदादिवर्षधरान् जम्बूद्वीपानुसारेण चोभयत: पूर्वापरविभागेन भरतहेमवतादिवर्षाणिच व्यवस्थाप्य पूर्वापरदिशोर्वलयविष्कम्भमध्येमेरुंच
कल्पयित्वा ऽववोद्धव्य मनेनैवक्रमेण पुष्करवरद्वीपार्द्धमपीति तत्र धातकीना वृक्षविशेषाणा खण्डो वन समूहइत्यर्थो धातकीखण्ड स्तद्युक्तो योद्वीप. स

दोरायग्गला दोपुप्फकेऊ दोभावकेऊ ॥ ८८ ॥ जंवूदीवस्सणंदीवस्सवेइया दोगाउउड्ढाइं उड्ढंउच्चत्तेण प०
लवणेणं समुद्दे दोजोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण पण्णत्ते लवणस्सणसमुद्दस्स वेइया दोगाउउड्ढाइं

कोटसरिखी आठ योजनउंची ते ऊपरि वली वेगाऊऊंची पानसे धनुष पिहुली पद्मवरवेदिका कहीछे । नानारत्नमय कहीछे ॥ लवणसमुद्र
वेलाख योजन पिहुलपणे चक्रवालमण्डल तेहनुं पिहुलपणछे एतले पूर्वथी पश्चिमने कांठे दक्षिणथी उतरे वे लाख योजनछे । लवणसमुद्रना को

धातकीखण्डएवोच्यते यथा दण्डयोगात्दण्डइति धातकीखण्डश्चासौद्वीपश्चेति धातकीखण्डद्वीप स्तस्य ॥ पुरत्थिमंति ॥ पौरस्त्यं पूर्वमित्यर्थो यद्दर्द्धविभाग स्तद्धातकीखण्ड द्वीप पौरस्त्यार्द्धं पूर्वापरार्द्धताच लवणसमुद्रवेदिकातो दक्षिणत उत्तरतश्च धातकीखण्डवेदिका यावत् गताभ्या मिषुकारपर्व्वताभ्यां धात कीखण्डस्य विभक्तत्वादिति उक्तंच पंचसयजोयणुच्चा सहस्समेगंचहोतिविच्छिन्ना कालोयणलवणजले पुट्ठातेदाहिणुत्तरओ ॥ १ ॥ दोउसुयारनगवराधा यइखंडस्समज्झयारठिया तेणदुहानिद्दिस्सइपुव्वद्धपच्छिमद्धचेवत्ति ॥ २ ॥ तत्र णमितिवाक्यालङ्कारे मन्दरस्यमेरो रित्येवं धातकीखण्डपूर्वार्द्धपश्चिमार्द्धप्रकर णे प्रत्येक मेकोनसप्ततिसूत्रप्रमाणे जबूद्वीपप्रकरणव दध्येतव्ये व्याख्येये चातएवाह ॥ एव जहा जंबूद्दीवेतहेत्यादि ॥ नवरं वर्षधरादिस्वरूप मायामादिसम ताचैव भावनीया पुव्वद्धस्सयमज्झे मेरुस्सपुणदाहिणुत्तरओ ॥ वासाइ तिन्नितिन्नि विदेह वासचमज्झमि ॥ १ ॥ अरविवरसठियाइ चउरोलक्खाइता इं खित्ताइं [दीर्घतया] अतोसखित्ताइं रुदयराइंकमेणपुणपुट्ठो ॥ २ ॥ भरहेमुहविक्खभो छावट्ठिसयाइंचोद्दसहियाइं ॥ अउणत्ती सचसय वारसहियदु सयभागेण ॥ ६६१४ अट्ठारसयसहस्सापचेवसयाइवंतिसीयाला । पणवन्नअससयं वाहिरओ भरहविक्खभो ॥ १८५४७ चउगुणियभरहवासो [व्यास १२९

उद्धंउच्चत्तेणं पण्णत्ता धायईखंडे णं दीवे पुरत्थिमद्धेणं मंदरस्सपव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासा पण्णत्ता व

टनी ऊपरली वेदिका बेगाऊ ऊंचपणें कही धातकीखंड द्वीपनें पूर्वदिशि मेरुपर्वतथी उत्तरे तथा दक्षिणे बे क्षेत्रछै ते कहेछै । बहुसम जाव भरत क्षेत्र अने ऐरवतक्षेत्र ॥ एम जिम जबूद्वीप माछै तिम इहांपणि जाणिवू जाव बे खेत्रने विषें मनुष्य छप्रकारना कालप्रति भोगता बिचरेछै ते कहेछे भरतक्षेत्र ऐरवतक्षेत्रे एतलो विशेष कूटसामली वृक्षछे बीजो धातकी वृक्षछे गरुडनामा देवताछै वेणुदेवता सुदर्शनदेवता । धातकीखंड

इत्यर्थः] हेमवएतंचउगुणंतइयं [हरिवर्षमित्यर्थः] हरिवासंचउगुणियं महाविदेहस्सविक्खंभो ॥ १५५ २१२ ॥ ५ ॥ जहविक्खंभोदाहिणदिसा २१२ एतह उत्तरेविवासतिए ॥ जहपुव्वेसत्तओ तहअवरदेविवासाइं ॥ ६ ॥ सत्ताणउइसहस्सा सत्तागाउयाइं अउयसयाइं । तिन्निवयलक्खाइं कुरूणभागायवाण उई ॥ विक्खभइति ॥ ३९७८९७। ९२ ।२१२ । अडवन्नसयंतेवी ससहस्सादोलक्खजीवाओ दोगहगिरीणायामो संखित्तोतंधणकुरूणं । ८ वासहर १२ गिरो वक्खारपव्वया २२ पुव्वपच्छिमद्धेसु । जंबुद्दीवगदुगुणा वित्थरओउस्सएतुल्ला ॥९॥ कंचणगजमगसुरकुरू नगायवेयड्डवट्टदीहाय विक्खंभोव्वेहसमु स्सएणजहजं बुद्दीविव्व । लक्खाइं तिन्निदीहा विज्जुप्पहगंधमायणादोवि छप्पणंचसहस्सा दोन्निसयासत्तवीसाय ॥ ११ ॥ अउणट्ठादोण्णिसया उणसत्तरिसहस्सलक्खाय । सोमणसमालवंता दीहाइदादससयाइं ॥ १२ ॥ सव्वाओविनईओ विक्खभोव्वेहदुगुणमाणाओ । सीयासीओयाण वणाणिदुगुणाणिविक्खंभो ॥ १३ ॥ वन मुखानीत्यर्थः । वासहरकुरूसुदहा [वर्षधरेषुकुरुषुचयेह्रदाइत्यर्थः] नईणकुंडाइं तेसुजेदीवा उव्वेहुस्सयतुल्ला विक्खभायामओदुगुणा ॥ १४ ॥ जंबूद्वीपकापेक्षयेति कियद्दूरं जबूद्वीपप्रकरणं धातकीखण्डपूर्वार्द्धाभिलापेन वाच्यमित्याह ॥ जावदोसुवासेसु मणुये त्यादि ॥ एतस्माद्धि सूत्रात्परतो जबूद्वीप प्रकरणे चन्द्रादि ज्योतिषां सूत्राण्यधीतानि तानिच धातकीखण्डपुष्करार्धपूर्वार्द्धादिप्रकरणेषु नसम्भवन्ति द्विस्थानकत्वा दस्याध्ययनस्य धातकीखण्डादौच चन्द्रादीनां बहु त्वादिति आहच दोचंदाइहदीवे चत्तारियसायरेलवणतोये धायइखंडेदीवे वारसचदायसूरायत्ति ॥ १ ॥चन्द्राणामद्वित्वेन नक्षत्रादीनामपि द्वित्व नस्यात् ततोद्विस्थाने नवतारइति जबूद्वीपप्रकरणादस्यविशेषंदर्शयन्नाह ॥ नवरमित्यादि ॥ नवरकेवलमयंविशेषइत्यर्थः कुरुसूत्रानन्तरं तत्रकूडसामलीचेव जबूचेव सु

कूसमतुल्ला जाव भरहेचेव ऐरवएचेव एवजहा जंबूद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव दोसुवासेसु मणुया छ

दसणेत्ति उक्तंच इहतु जंबूस्थाने धायईरुक्खेचेवत्ति वक्तव्य प्रमाणच तयो र्जंबूद्वीपशाल्मल्यादिवत् तयोरेवदेवसूत्रे अणाढिएचेव जबूद्दीवाहिवइ इत्यत्रवक्त व्ये ॥ सुदसणेचेवत्ति॥ इहवक्तव्यमिति धायइखडेदीवेत्यादि पश्चिमार्द्धप्रकरण पूर्वार्द्धवदनुसर्त्तव्य अतएवाह ॥ जावछब्विहकालमित्यादि॥ विशेषमाह नवरं कूडसामलीत्यादि ॥ धातकीखडपूर्वार्द्धोत्तरकुरुषु धातकीवृक्षउक्त इहतु महाधातकीवृक्षोध्येतव्यो देवसूत्रे द्वितीयः सुदर्शनसूत्राधीत इहतु प्रियदर्शनोध्येतव्य इति पूर्वार्द्धपश्चिमार्द्धमीलनेन धातकीखण्डद्वीपसम्पूर्णमाश्रित्य द्विस्थानकं ॥ धायईखडेणमित्यादिनाह द्वेभरते पूर्वार्द्धपश्चिमार्द्धयोर्दक्षिणदिग्भागेतयोर्भावा

छ्विहंपिकालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । तंजहा भरहेचेव ऐरवएचेव णवरं कूडसामलीचेव धायईरुरक्केचेव देवा गरुलेचेव वेणुदेवे पियसुदंसणेचेव धायईखडदीवपच्छिमद्धे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दोवा सा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहेचेव एरवएचेव जाव छव्विहंपिकालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । भरहे चेव एरवएचेव णवरं कूडसामलीचेव महाधायईरुरकेचेव देवा गरुलेचेव वेणुदेवे पियदंसणेचेव धायईखं

द्वीपना पश्चिमार्नें विषे मेरुपर्वतने उत्तरे दक्षिणे बे वर्षछे बहुसम जाव मान प्रमाणथी सरिखा एक भरत बीजो ऐरवत जाव तिहाना मनुष्य छआराना सुखदुखप्रते भोगवे फिरताआरा आवै भरतखेत्र तथा एरवतखेत्र । एतलो विशेष छे तिहा कूटसामलीनामा वृक्षछे । बीजो महाधात की वृक्षछे । तिहा गरुडदेवता वेणुदेव प्रीतिदर्शनछे ॥ धातकीखंडद्वीपना पश्चिमार्द्धनेविषे बेभरतक्षेत्रछे । धातकीखंडद्वीपने विषे बे भरतक्षेत्र छे बे एरवतक्षेत्र छे । बे हिमवतक्षेत्रछै । बे हैरण्यवतक्षेत्र छै । बे हरिवर्षक्षेत्र छै । बे रम्यकवर्षक्षेत्रछै । बे पूर्वमहाविदेह क्षेत्रछे जिहां सदैव ।

दिल्येव सर्वत्रभरतादीनांस्वरूपंप्रागुक्तं ॥ दोदेवकुरुमहाद्रुमत्ति ॥ द्वौ कूटशाल्मलीवृक्षावित्यर्थ. द्वौतद्वासिदेवौ वेणुदेवावित्यर्थः ॥ दोउत्तरकुरुमहाद्रुमत्ति ॥
धातकीवृक्षमहाधातकीवृक्षाविति तद्देवौ सुदर्शनप्रियदर्शनाविति चुल्लहिमवदादयः षट्वर्षधरपर्वताः शब्दापातिविकटापातिमाल्यवत् पर्याया
ख्यवृत्तवैताढ्याश्च तन्निवासिस्वातिप्रभासारुणपद्मनामदेवानां द्वयेनद्वयेन सहिताःक्रमेणद्वौद्वावुक्ताः ॥ दोमालवतत्ति ॥ मालवन्तावुत्तरकुरुत' पूर्वदिग्व

रूपच्छिमद्धे मंदरस्सपच्चुयस्स धायइखंडे णं दीवे दोभरहाइं दोएरवयाइं दोहिमवंताइं दोहेरन्नवयाइं दो
हरिवासाइ दोरम्मगवासाइं दोपुव्वविदेहाइं दोअवरविदेहाइं दोदेवकुराउ दोदेवकुरुमहदुमा दोदेवकुरुम
हदुमावासा देवा दोउत्तरकुराउ दोउत्तरकुरुमहदुमाउ दोउत्तरकुरुमहदुमावासा देवा दोचुल्लहिमवता दोमहा
हिमवता दोनिसहा दोनीलवता दोरुप्पी दोसिहरी दोसद्दावई दोसद्दावईवासी साइदेवा दोवियडावई दोवि

चौथो आरोछे । बे पश्चिममहाविदेहछे । बे देवकुरुछे । बे देवकुरुनामें मोटा वृक्ष रत्नमय शास्वताछे । बे देवकुरुमोटावृक्षना वासी देवताछे
वली तेज धातकीखडमा बे उत्तरकुरुछे युगलियाना । तिहां उत्तरकुरुनामा मोटा वृक्षछे । बे उत्तरकुरुमोटावृक्षना रहनार देवताछे । बे लघु
हिमवतपर्वतछे । बे मोटाहिमवतपर्वतछे । बे निषधपर्वतछे । बे नीलवतपर्वतछे । बे रूपीपर्वतछे । बे शिखरीपर्बतछे । बे शब्दापातीना
मा वृत्तवैताढ्यछे । बे शब्दापाती वैताढ्यनां वासी स्वातिदेवताछे । बे बिकटापाती वैताढ्यछे । बे बिकटापातीना रहनार प्रभासनामा देव
ता छे । बे गधापातीना वासी अरुणनामा देवता छे । बे मालवतपर्याय नामा वृत्तवैताढ्य पर्वतछे । बे मालवतपर्यायना वासी पदमनामा दे

र्त्तिनौ गजदन्तकौस्त स्ततोभद्रशालवनतद्वेदिका विजयेभ्यः परौ शीतोतरकूलवर्त्तिनौ दक्षिणोत्तरायतौ चित्रकूटौ वक्षस्कारपर्व्वतौ ततोविजयेनान्त रनद्या विजयेनचान्तरिता वन्यौ तथैवान्यौ पुनस्तथैवान्याविति पुनः पूर्व्ववनमुखवेदिकाविजयाभ्या मर्वाक् शीतादक्षिणकूलवर्त्तीनि तथैव चित्रकूटादीनां च त्वारिद्वयानि ततः सोमनसौ देवकुरुपूर्व्वदिग्वर्त्तिनौ गजदन्तकौ ततो गजदन्तकावेव देवकुरुप्रत्यग्भागवर्त्तिनौ विद्युत्प्रभौ ततोभद्रशालवनतद्वेदिका विजयेभ्य परत स्तथैवाङ्कावत्यादीना चत्वारि द्वयानिशीतोदादक्षिणकूलवर्त्तीनि पुनरन्यानि पश्चिमवनमुखवेदिकात्यविजयाभ्यां पूर्व्वतःक्रमेण तथैवच

यक्षावईवासी पन्नासीदेवा दोगंधावइवासी अरुणादेवा दोमालवंतपरियागा दोमालवंतपरियागावासी पउ मादेवा दोमालवंता दोचित्तकूडा दोपउमकूडा दोनलिनकूडा दोएगसेला दोतिकूडा दोवेसमणकूडा दो अं जणा दोमातंजणा दोसोमणसा दोविज्जुप्पन्ना दोअंकावई दोपम्हावई दोआसीविसा दोसुहावहा दोचंद

वताछे । बे मालवतनामा गजदंतपर्व्वतछे । बे चित्रकूट पर्व्वतछे । बे पदमकूट पर्व्वतछे । बे नलिनकूट पर्व्वतछे । बे एकशैल पर्व्वतछे । बे त्रिकू ट पर्व्वतछे । बे वैश्रमणकूटछे ॥ बे अंजनपर्व्वतछे । बे मातंजनपर्व्वतछे । देवकुरुथी पूर्व्वदिशिये सौमनस गजदंताकार पर्व्वतछे । देवकुरुपासे बे विद्युतप्रभछे । तेहथी आगलि बे अंकावती नगरीछे । बे पदमावती नगरीछे । बे आशीविषा नगरीछे । बे सुखावहा नगरीछे एह च्यारपुरी सीतोदा नदीने जीमणे पासेछे । तिहांथी आगलि पूर्व्व बे चंद्रपर्व्वतछे । बे सूर्य पर्व्वतछे । बे नागपर्व्वतछे । बे देवपर्व्वतछे । तिवारपछी बे गं धमादन गजदंताछे । उत्तरकुरुने पश्चिमभागें एहसर्व्व धातकीखंडनां पूर्व्वार्द्ध अने पश्चिमार्द्ध मा छे तेमाटे बेबे कहिया । बे इषुकार धातकीखं

न्नपर्वताद्दीनांचत्वारिंशयानि ततोगन्धमादनायुत्तरकुरुपश्चिमभागवर्त्तिनौ गजदन्तकाविति एतेधातकीखण्डस्य पूर्व्वार्द्धपश्चिमार्द्धे च भवन्तीति द्वौद्वावुक्ता
विति इषुकारौ दक्षिणोत्तरयोर्दिशोः धातकीखण्डविभागकारिणाविति ॥ दोचुल्लहिमवतकूडाइत्यादि ॥ हिमवदादयः षट्वर्षधरपर्व्वताः तेषुये द्वेद्वे कू
टे जंबूद्वीपप्रकरणे अभिहिते ते पर्वतानाद्विगुणत्वा देकैकशो स्याताभिवर्षधराणाद्विगुणत्वात् पद्मादिह्रदाअपि द्विगुणा स्तद्देव्योप्येवमिति चतुर्दशाना गङ्गा
दिमहानदीना पूर्वपश्चिमार्द्धापेक्षया द्विगुणत्वात् तत्प्रपातह्रदाअपि द्वौद्वौस्यु रित्याह ॥ दोगङ्गप्पवायद्दहेत्यादि दोरोहियाप्रो ॥ इत्यादौ नद्यधिकारे गङ्गा

पव्वया दोसूरपव्वया दोणागपव्वया दोदेवपव्वया दोगंधमायणा दोउसुगारपव्वया दोचुल्लहिमवंतकूडा दोवेस
मणकूडा दोमहाहिमवंतकूडा दोवेरुलियकूडा दोनिसहकूडा दोरुयगकूडा दोनीलवंतकूडा दोउवदंसणकूडा
दोरुप्पिकूडा दोमणिकंचणकूडा दोसिहरिकूडा दोतिगिच्छिकूडा दोपउमद्दहा दोपउमद्दहवासिणीउ देवीउ

डना दक्षिणउत्तर भाग कीधोछे । बे लघुहिमवंत पर्वतना कूटछे बे पर्वतना बेकूट एम सर्वत्र जाणिवा । बे वैश्रमणकूट । बे महाहिमवंत पर्व
तना कूट । बे वैडूर्यकूट । बे निषधपर्वतना कूट ते शिखरछे । बे रुचकना कूट । बे नीलवतपर्वतना कूटछे । बे उपदर्शनकूट । बे रूप्पकूट
बे मणिकंचणकूट । बे शिखरीना कूट । बे तिगिच्छिकूट ॥ एम बे पदमद्रह छे बिमणा क्षेत्रमाटे । तिहा बे पदमद्रहनी वासी रहनारी श्री देवी
छे । बे महापदमद्रह छे । तिहा महापदमद्रहनी रहनारी बे ह्री नामें देवीछे । एम जाव बेपुंडरीक द्रहछे । तिहां बे पुंडरीक द्रहनी रहनारी
लक्ष्मी देवताछे । बे गगाप्रपात द्रहछे । जिहा ऊचाथी गंगानो प्रवाहपडेछे एम जाव बे रक्तवती प्रपात द्रहछे । बे रोहितानदी एम जाव रुप्प

दिमहानदीनां सदपिद्वित्वनोक्त जम्बूद्वीपप्रकरणोक्तस्य ॥ महाहिमवताश्रोवासहरपव्वया श्रीमहापउमदहाश्रोदोमहानईश्री पवहतीत्यादि ॥ सूत्रक्रमस्या श्रयणात् तत्रहि रोहितादय एवाष्टौश्रूयन्त इति चित्रकूटपद्मकूटवचस्कारपर्व्वतयो रन्तरे नीलवर्षधरपर्व्वतनितम्बव्यवस्थितत्वात् ग्राहवतीकुण्डाद्दक्षिण तोरणविनिर्गता अष्टाविंशतिनदीसहस्रपरिवारा शीताविगामिनी सुकच्छमहाकच्छविजययो र्विभागकारिणी ग्राहवतीनदी एवंयथायोगद्वयोर्द्वयो र्वच स्कारपर्वतयो र्विजययो रन्तरेक्रमेण प्रदक्षिणया द्वादशाप्यन्तरनद्यो योज्या स्तद्विलच पूर्ववदिति पङ्कवतीत्यत्र वेगवतीति ग्रन्थान्तरे दृश्यते चारोदे त्यत्र चोरोदेत्यन्यत्र सिंहस्रोताइत्यत्र शीतस्रोताइत्यपरत्र फेनमालिनी गम्भीरमालिनीचेति इह व्यत्ययश्च दृश्यतइति माल्यवद्गजदन्तकभद्रशालवनाभ्यामा

सिरिउ दोमहापउमद्दहा दोमहापउमद्दहवासिणीहिरीउदेवीउ एवंजाव दोपुंडरीयद्दहा दोपुंडरीयद्दहवा सिणीउ लच्छीउ देवीउ दोगंगप्पवायद्दहा जाव दोरत्तवईपवायद्दहा दोरोहियाउ जाव दोरूप्पकूला दोगाहा वईउ दोदहवईउ दोपंकवईउ दोतत्तजलाउ दोमत्तजलाउ दोउम्मत्तजलाउ दोखीरोयाउ दोसीहसोयाउ दोअंतोवाहिणीउ दोउम्मिमालिणीउ दोफेणमालिणीउ दोगम्भीरमालिणीउ दोकच्छा दोसुकच्छा दोमहा

कूला वेनदी । बे गाहवतीनदी । बे द्रहवती नदी । एह सर्व पर्वतथी नीकली विजयमा आवीछे । बे पंकवती नदी । बे तप्तजला । बे उन्मत्तजला नदी । बे क्षारोदा नदी । बे सिंहश्रोता नदी । बे अतर्वाहिनी नदी । बे ऊर्मिमालिनी । बे फेनमालिनी नदी । बे गंभीरमालिनी नदी ॥ बे कच्छ विजय । सुकच्छ विजय । महाकच्छ विजय । बे महाविदेहे बे धातकीखण्डमा छे एकेकमा बत्तीस विजयछे एवं चौसठ विजयछे

रम्यातच्छादीनि द्वानिंशद्विजयक्षेत्रयुगलानि प्रदक्षिणतोवगन्तव्यानीति तथा कच्छादिषु क्रमेणक्षेमादि पुरीणांयुगलानि द्वानिंशद्वगन्तव्यानीति भद्र ॥

कच्छा दोकच्छगावई दोआवत्ता दोमंगलावत्ता दोपुक्कला दोपुक्कलावई दोवच्छा दोसुवच्छा दोमहाव
च्छा दोवच्छगावई दोरम्मा दोरम्मगा दोरमणिज्जा दोमगलावई दोपम्हा दोसुपम्हा दोमहापम्हा दोप
म्हगावई दोसखा दोनलिणा दोकुमुदा दोनलिणावई दोवप्पा दोसुवप्पा दोमहावप्पा दोवप्पगावई दो
वग्गु दोसुवग्गु दोगंधिला दोगंधिलावई दोखेमाउ दोखेमपुराउ दोरिठाउ दोरिठपुराउ दोखग्गीउ दो
मंजूसाउ दोओसहीउ दोपुंडरीगिणीउ दोसुसीमाउ दोकुंडलाउ दोअपराइयाउ दोपभंकराउ दोअंकाव

तेहना नाम बे थोके एकेकाविजयमा बेबे नगरी छे। बे कच्छगावती महाविदेहमाछे। बे आवर्ता बे मंगलावर्ता। बे पुष्कला। बे पुष्कलावती। बे वच्छा। सुवच्छा। महावच्छा। वच्छगावती। रम्मा। रम्मगा। रमणिज्जा। मगलावती। पद्मा। सुपम्हा। महापम्हा। पम्हगावती। शखा। नलिना। कुमुदा। नलिनावती। बे वप्रा विजय। बे सुवप्रा विजय। बे महावप्रा विजय। बे वप्रगावती विजय। बे वलगु। सुवलगु। गंधिला विजय। गंधिलावती विजय। खेमा विजय। खेमपुरा विजय। रिष्ट विजय। रिष्टपुर विजय। बे खड्गी विजय बे मंजूसा विजय। बे ओषधी विजय। बे पुंडरीकिणी विजय। बे सुसीमा विजय। बेकुंडला विजय। बे अपराजिता विजय। बेप्रभंकरा विजय। बे अंकावती विजय। बे पम्हावती विजय। बे शुभा विजय। बे रतसचया विजय। बे आसपुरा विजय। बे सिहपुरी विजय। बे

शालादीनि मेरोश्चत्वारिवनानि भूमीएभद्दसाल मेहलजुयलम्मिदोन्निरम्माइ णदणसोमणसाइं पंडगपरिमंडियसिहरंति वचनात् मेर्वोर्द्वित्वेवचनानांद्वित्व मिति शिलाश्चतस्रो मेरौपण्डकवनमध्ये चूलिकायाः क्रमेणपूर्वादिषु अत्रगाथे पंडगवणमिचउरोशिलाओचउसुविदिसासुचूलाए चउजोयणूसियाओ सव्व ज्जुणकचणमयाओ ॥ १ ॥ पचसयायामाओ मज्झेदीहत्तणद्धरुंदाओ चद्दसठियाओ कुमदोयरहारगोराओत्ति ॥ २ ॥ मन्दरेमेरौ चूलिकाशिखरविशे षः स्वरूपमस्याः मेरुस्सउवरिचूला जिणभवणविभूसियादुवोसुचा वारसअठ्ठयचउरो मूलेमज्झुवरिरुंदायत्ति ॥ १ ॥ वेदिकासूत्र जंबूद्वीपवत् धातकीखंडानत

ईउ दोपम्हावईउ दोसुवाउ दोरयणसंचयाउ दोआसपुराउ दोसीहपुराउ दोमहापुराउ दोविजयपुराउ दोअवराजियाउ दोअवराउ दोअसोयाउ दोविगयसोगाउ दोविजयाउ दोवेजयंतीउ दोजयंतीउ दोअप राजियाउ दोचक्कपुराउ दोखग्गपुराउ दोअवज्झाउ दोअउज्झाउ दोभद्दसालवणा दोणंदणवणा दोसोमण सवणा दोपंडगवणा दोपांडुकंवलसिलाउ दोअतिपांडुकंवलसिलाउ दोरत्तकंवलसिलाउ दोअइरत्तकंवलसि

महापुरी। बे विजयपुरी। बे अपराजिता विजय। बे अवराया विजय। बेअशोका विजय। बे विगतशोका विजय। बे विजया। बे वैजयंती विजय। बे जयंती विजय बे अपराजिता। बे चक्रपुरा विजय। बे खड्गपुरा विजय। बे अवंध्या विजय। बे अयोध्या॥ एम सर्व विजय बेबे जाणवी॥ तिहां बे मेरुपर्वतछै तेमाटे बे भद्रसालवन धरतीछै। बे नंदनवन मेखलानें मध्येछै। बे सोमनसवन मेखलाइं पर्वतने मध्येछै। बे पाडकवन मेरुनें शिखरे छै। बे एक वनमां च्यारच्यार शिलाछै तीर्थंकरना जन्माभिषेक करवानी पांडुकंबला शिलाछै। बे अतिपाडुकंबला शिलाछै। बे रक्तकवला शि

रंकालोद' समुद्रोभवतीति तद्वक्तव्यतामाह ॥ कालोदेइत्यादि ॥ कण्ठ्यम् कालोदानन्तर मनन्तरत्वादेवपुष्करद्वीपस्य पूर्वार्द्धपश्चार्द्धतदुभयप्रकरणान्याह पु
ष्करेत्यादि नीख्यनिर्देशप्रधानान्यतिदेशलभ्यस्वार्थं सुगमएव नवर पूर्वार्द्धापरार्द्धता धातकीखण्डवदिषुकाराभ्यामवगन्तव्या भरतादीनाचायामादिसमते
व भावनीया इगयालीससहस्सा पंचेवसयाहवंतिउणसीया तेवत्तरमससय मुहविक्खभोभरहवासे । ४१५७९१७३ । २१२ । पन्नठिसहस्साइ चत्तारिसयाहव
तिछायाला तेरसचेवयअसा वाहिरओभरहविक्खंभो ६५४४६ । १३ । २१२ । चउगुणियभरवासो [विस्तरइत्यर्थः] हेमवएतचउगुणतइय [हरिवर्षमि

लाउ दोमंदरा दोमंदरचूलियाउ धायइखंडस्सणं दीवस्स वेइया दोगाउयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पन्नत्ता कालोद
स्सणं समुद्दस्स वेइया दोगाउयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पन्नत्ता पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स
उत्तरदाहिणेणं दोवासा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहेचेव एरवएचेव जाव दोकुराउ पन्नत्ताउ देवकुरा
चेव उत्तरकुराचेव तत्थणं दो महति महालया महद्दुमा पन्नत्ता तंजहा कूडसामलीचेव पउमरुक्खेचेव देवा

लाछे ॥ बे अति रक्तकबला शिलाछे ॥ बे मेरुनी चूलिकाछे ॥ धातकीखडनामा द्वीपनी वेदिका काठरूप बेगाऊ ऊंची ऊचपणें कही ॥ कालोद
धि समुद्रनी वेदिका बे गाऊऊंची ऊचपणे कही ॥ पुष्करार्धद्वीपथी पूर्वदिशि मेरुपर्वतथी उत्तरदक्षिणे बे बर्ष क्षेत्र कहिया बहुसम जाव भरतक्षेत्र
तथा बीजो ऐरवत क्षेत्र ॥ तिमज यावत् धातकीखडनी परे पुष्करार्द्धमा पणि जाणिवा ॥ जाव बे देवकुरुछे ॥ देवकुरु तथा बीजो उत्तरकुरु ॥ तिहां
ते देवकुरुमा बेमोटामहालयछे मोटावृक्षकहिआछें तेकहेछे कूटसामलीवृक्ष बीजोपदमवृक्ष तिहादेवतावसेछे गरुलदेवता वेणुदेव बीजो पदमदेव

त्वर्थ.] हरिवासचउगुणिय महाविदेहस्सविक्खंभो ॥ एवमेरावतादीनिमतव्यानि सत्तत्तरिसयाइं चोद्दसहियाइं सत्तरसलक्खा होइकुरुविक्खंभो अट्ठयभागाअपरिसेसा ॥ १ । १७०७७१४ । ८ । २९ ॥ चत्तारिलक्खछत्तीस सहस्सानवसयायसोलहिया [एषाकुरुजीवा] ४३६९१६ । दीण्हगिरीणायामो सखित्तो तधणकुरूण सोमणसमालवता दीहावीसभवेसयसहस्सा ॥ १ ॥ तेयालीसमहस्सा अउणावीसायदोण्णिहसया ॥ २०४३२१९ सोलहियसयमेग छव्वीससहस्स सोलसयलक्खा विज्जुप्पभोनगोगं धमायणोचेवदीहाओ ॥ १६२६११६ महाद्रुमाजंबूद्वीपकमहाद्रुमतुल्या' तथा धायइवरमिदीवे जोविक्खंभोयहोइउनगाण सोदुगुणोनायव्वो पुक्खरद्धेनगाणतु ॥ १ ॥ वासहराबक्खारादहनइकुंडावणायसीयाई दीवेदीवेदुगुणो वित्थरओउस्सएतुल्ला ॥ २ ॥ उसुयारजमगकचण चि

गरुलेचेव वेणुदेवे पउमेचेव जाव छव्विहंपि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासा पन्नत्ता तंजहा तहेवणाणत्तं कूडसामलीचेव महापउमरुक्खेचेव देवागरुलेचेव वेणुदेवे पुंडरीएचेव पुक्खरवरदीवड्ढेणं दोभरहाइं दोएरवयाइं जाव दोमंदरा दोमंदरचूलियाउ पुक्खरवरस्सणं दीवस्स वेइया दोगाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता सव्वेसिं पिणं दीवसमुद्दाणं वेइयाउ

यावत् तिहांसूधी जाणवू छएआरानासुखदुखभोगवेछे सघलेक्षेत्रे सलीने रहेछे पुष्करवरद्वीपपर्यीपश्चिमे मेरुपर्वतइ उत्तरदक्षिणविचेबेवर्षक्षेत्रकहिआ ते कहेछे तिमजांणवू पूर्वनी परे एतलो विशेष जे वृक्ष कूटसामली बीजो पदम देवता गरुलनामे वेणुदेव बीजो पुडरीक॥ पुष्करवरद्वीपमां बे भरतक्षेत्र बे ऐरवतक्षेत्र एम यावत् बे मेरुपर्वत बे मेरुपर्वतनी चूलिका ॥ पुष्करवरद्वीपमां वेदिका बेगाऊ ऊंची ऊंचपणे कही ॥ एम सघला द्वीप समुद्रनी

त्तिचित्तायवट्टवेयड्डा दीवेदीवेतुल्ला दुमेहलाजेयवेयड्डेत्ति ॥ ३ ॥ पुष्करवरद्वीपवेदिकाप्ररूपणानतरं शेषद्वीपसमुद्रवेदिकाप्ररूपणामाह ॥ सव्वेसिपिणमि त्यादि॥ कण्ठ्या एतेच द्वीपसमुद्रा इन्द्राणामुत्पातपर्वताश्रया इतीन्द्रवक्तव्यतामाह ॥ दोअसुरेत्यादि अचुएचेवेत्येतदत सूत्र सुगम ॥ नवर असुरादीनादशाना भवनपतिनिकायाना सर्व्वेपिचया दक्षिणोत्तरदिग्द्वयाश्रितत्वेन द्विविधत्वाद्विशतिरिन्द्रा स्तत्र चमरोदाक्षिणात्यो वली त्वौदीच्य इत्येवं सर्वत्र एवव्यन्तरा

दोगाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेणं पन्नत्ताओ दोअसुरकुमारिंदा पन्नत्ता चमरेचेव वलीचेव दोनागकुमारिंदा पन्नत्ता धरणेचेव भूयाणंदेचेव दोसुवन्नकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा वेणुदेवेचेव वेणुदालीचेव दोविज्जुकुमारिंदा प० तजहा हरिचेव हरिस्सहेचेव दोअग्गिकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा अग्गिसिहेचेव अग्गिमाणवेचेव दोदीव कुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा पुन्नेचेव वसिठेचेव दोउदधिकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा जलकंतेचेव जलप्पभेचेव दोदिसाकुमारिंदा पन्नत्ता तजहा अमियगईचेव अमियवाहणेचेव दोवाउकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा वेलंवे

वेदिका फरना कोटकागरा बिना ते बेदिका कहिवी बे गाऊ ऊची ऊचपणे कही ॥ एह सघला द्वीपसमुद्र उत्पाद पर्वत इंद्र आश्रयीछे तेमाटे इद्रनो अधिकार आव्यो ते कहेछे ॥ बे असुरकुमारना इद्रछे तेकहेछे ॥ चमरेद्र बलेद्र । बे नागकुमारजातिना इद्र धरणेद्र अने भूतानेद । बे सुपर्ण कुमारजातिना इंद्र कहिया बेणुदेव अने बेणुदाली । बे विद्युतकुमारजातिना इद्र कहिया हरिकात हरिसह । बे अग्निकुमारना इद्रछे तेकहेछे अ ग्निशिख अग्निमाणव ॥ बे द्वीपकुमारना इद्र पूर्ण अने वशिष्ट ॥ बे उदधिकुमारेद्र तेकहेछे जलकात बीजो जलप्रभ ॥ बे दिशिकुमारेद्र अमितगती

चेव पन्नंजणेचेव दोथणियकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा घोसेचेव महाघोसेचेव दोपिसायइंदा पन्नत्ता तंजहा कालेचेव महाकालेचेव दोन्नूयइंदा पन्नत्ता तंजहा सुरूवेचेव पडिरूवेचेव दोजक्खिंदा पन्नत्ता तंजहा पुन्न भद्देचेव माणिभद्देचेव दोरक्खसिंदा पन्नत्ता तंजहा भीमेचेव महाभीमेचेव दोकिन्नरिंदा पन्नत्ता तंजहा किन्नरेचेव किंपुरिसेचेव दोकिंपुरिसिंदा पन्नत्ता तंजहा सप्पुरिसेचेव महापुरिसेचेव दोमहोरगिंदा पन्नत्ता तंजहा अइकायेचेव महाकायेचेव दोगंधव्विंदा पन्नत्ता तंजहा गीयरईचेव गीयजसेचेव दोअणपन्निंदा पन्नत्ता तंजहा संनिहिएचेव समाणेचेव दोपणपन्निंदा पन्नत्ता तंजहा धाएचेव विधाएचेव दोइसिवाइंदा

बीजो अमितवाहन ॥ बे वायुकुमारनामा भवनपतीनां इंद्र कहिया ते कहेले बेलंब अने प्रभंजन ॥ बे स्तनितकुमारेंद्र घोष महाघोष ॥ एह बीस भवनपति निकायनां इंद्र जाणिवा दश निकायना मलीने ॥ हिवे व्यंतरनिकायना आठइंद्र कहेले । बे पिशाचना इंद्र कहिया काल अने महा काल ॥ बे भूतेंद्र सुरूप अने बीजो प्रतिरूप ॥ बे यक्षना इंद्र पूर्णभद्र बीजो माणिभद्र ॥ बे राक्षसना इंद्र भीम बीजो महाभीम ॥ बे किन्नरे द्र छै तेकहेछै किंनर किंपुरुष ॥ बे किंपुरुषना इंद्रछै तेकहेछै सुपुरुष अने महापुरुष ॥ बे महोरगना इंद्र कहिया तेकहेछै ॥ अतिकाय तथा बी जो महाकाय ॥ बे गंधर्वना इंद्रछै गीतरती बीजो गीतयशा ॥ वली बीजी आठ व्यंतरनी जातिछै इहायी दश जोयनदेठी बे अणपन्नी निका यना इंद्र ते कहेछे । सन्निक समान ॥ बे पणपन्नी निकायना इंद्रछै । धाती बीजो विधाती ॥ बेइसिवाय निकायना इंद्रछे । इसी इसिवासी

णामष्टनिकाया ना द्विगुणत्वात् षोडशेन्द्राः तथा प्रणपन्निकादीनामप्यष्टानामेवं व्यतर विशेषनिकायानां द्विगुणत्वात् षोडशेति जोतिष्कानांत्वसंख्यातच
न्द्रसूर्यत्वेपि जातिमानाश्रयणात् द्वावेवचद्र सूर्याख्या विद्रावुक्तौ सौधर्मादिकल्पानान्तु दशेन्द्रा प्रत्येवसर्वेपि चतुःषष्टिरिति देवाधिकारात्तन्निवासभूतविमा

पन्नत्ता तंजहा इसिच्चेव इसिवालेचेव दोभूयवाइंदा पन्नत्ता तंजहा ईसरेचेव महेसरेचेव दोकंदिंदा प०
तजहा सुवत्थेचेव विसालेचेव दोमहाकंदिंदा पन्नत्ता तंजहा हासेचेव हासरईचेव दोकुंभफिंदा पन्नत्ता
तजहा सेएचेव महासेएचेव दोपयगिंदा पन्नत्ता तजहा पयएचेव पयगवईचेव जोइसियाणं देवाणं दो
इंदा पन्नत्ता तंजहा चंदेचेव सूरेचेव सोहम्मीसाणेसुणं कप्पेसु दोइंदा पन्नत्ता तंजहा सक्केचेव ईसाणेचेव
एवं सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु दोइंदा पन्नत्ता तंजहा सणंकुमारेचेव माहिंदेचेव बंभलोयलंतगेदोइंदा

बे भूतवाई निकायना इंद्रकहिया ते कहेछे । ईश्वर बीजो महेश्वर ॥ बे कादी निकायना इंद्र ते कहेछे । सुवत्स बीजो विशाल ॥ बे महाकंदी नि
कायना इंद्र कहिया ते कहेछे । हास तथा बीजो हासरती ॥ बे कुंभफ निकायना इंद्र कहिया ॥ श्वेत महाश्वेत ॥ बे पतगेंद्र कहिया पतग प
तगपती ॥ एह सोलह व्यतरना इंद्र कहिया सर्वमिली बत्रीस थया ॥ जोतिषी देवताना बे इंद्र कहिया ते कहेछे चद्रमा बीजो सूर्य ॥ सौधर्म
प्रथम देवलोक बीजो ईशान देवलोक तिहां बे इंद्र ते कहेछे सक्रेंद ईशानेद्र ॥ इमज बे देवलोक सनत्कुमार माहेंद्रे बे इंद्र कहिया सनत्कुमारेंद्र
तथा बीजो माहेंद्र ॥ बिना बोलमाटे बे देवलोक एकठा कहिया ॥ ब्रम्हदेवलोक पाचमुं लांतक छठु तिहां बे इंद्र कहिया ब्रम्हेद्र बीजो लांतकेंद्र

नवत्तव्यतामाह ॥ महासुक्केत्यादि ॥ कण्ठं नवरं हारिद्राणिपीतानि क्रमश्चाय सौधर्मादिविमानवर्णविषयो यथा सौधर्मेशानयो. पञ्चवर्णानि ततो द्वयोरक्तकृष्णानि पुनर्द्वयोरक्तकृष्णनीलानि ततोद्वयो: शुक्रसहस्राराभिधानयो. पीतशुक्लानि तत.शुक्लान्येवेत्याह ॥ सोहम्मेपचवन्ना एक्कगहाणीउजासहस्सारो दोदोतुल्लाकप्पा तेणपरंपुडरीयाइ ति ॥ देवाधिकारादेव द्विस्थानकानुपातिनो तदवगाहनामाह ॥ गेविज्जगाणमित्यादि ॥ पूर्ववत् व्याख्येयमिति ॥ द्विस्थानकस्य ॥

पन्नत्ता तंजहा बंभेचेव लंतएचेव महासुक्कसहस्सारेसुणं कप्पेसु दोइंदा पन्नत्ता तंजहा महासुक्केचेव सहस्सारेचेव आणयपाणयारणच्चुतेसुणं कप्पेसु दोइंदा पन्नत्ता तजहा पाणएचेव अच्चुएचेव महासुक्कसहस्सारेसुणं कप्पेसु विमाणादुवन्ना पन्नत्ता तंजहा हालिद्दाचेव सुक्किलाचेव गेविज्जगाणं देवाणं दोरयणीउ ॥

महाशुक्र सातमुं सहस्रार आठमुं देवलोक तेहमां बे इंद्र कहिया ते कहेछे महाशुक्रेंद बीजो सहस्रारेंद्र आनत नवमुं प्राणत दशमुं आरण इग्यारमुं अच्युत बारमुं एह च्यारदेवलोकमली बे इंद्र कहिया तेकहैछे । प्राणतेंद्र नवमा दशमानो इंद्र अच्युतेंद्र इग्यारमा बारमांनो इंद्र ॥ देवतानो अधिकार आव्यामाटे विमाननो अधिकार कहेछे ॥ महाशुक्र सातमु सहस्रार आठमुं देवलोक एह बे देवलोकने विषै विमान बे वर्णना कहिया पीलावर्णना तथा उजला स्वेतवर्णना॥ इहा क्रम एहवोछै । सौधर्मईशान देवलोकैं पाच वर्णना विमान सनत्कुमार माहेंद्र देवलोकै रातानीला ब्रह्म तथा लातकै काला नीला नवग्रैवेयकना विमान तथा पाच अनुत्तर विमान एक उज्वलवर्णछे ॥ नवग्रैवेयकना देवतानी बेहाथनी काया ऊचपणथी कही ॥ इति बीजाठाणानो त्रीजोउदेशो पूरोथयो ॥ ३ ॥ हिवे काल ते अजीव पणि जीवआश्रयीछे अजीव जेपुदगल

तृतीयोद्देशकः समाप्तः ॥ २ ॥ उक्तस्तृतीयोद्देशकः साम्प्रतं चतुर्थमारभ्यते यस्यच जीवाजीववक्तव्यताप्रतिबद्धस्य पूर्वेणसहायं सम्बन्धः पूर्वस्मिन्
हि पुद्गलजीवधर्मा उक्ता इहतु सर्वंजीवाजीवात्मकमितिवाच्य मनेनसम्बन्धेनायातस्योद्देशकस्येमानि पञ्चविंशतिरादिसूत्राणि ॥ समयेत्यादि ॥ एषांचान
न्तरसूत्रेणायसंबन्धः पूर्वंन जीवविशेषाणामुच्चत्वलक्षणोधर्मोभिहितः इहतु धर्माधिकारादेव समयादिस्थितिलक्षणोधर्मो जीवाजीव सम्बन्धी जीवाजीवतयै
व धर्मधर्मिणोरभेदेनोच्यतइति ॥ तत्र सर्वेषाकालप्रमाणानामाद्यः परमसूक्ष्मो ऽभेदो निरवयव उत्पलपत्रशतव्यतिभेदाद्युदाहरणो पलक्षितः समय स्तस्यचा
तीतादि विवक्षया बहुत्वा द्बहुवचनमित्याह ॥ समयाइवाइत्यादि ॥ इति शब्दउपदर्शने वा शब्दोविकल्पे तथा ऽसंख्यातसमयसमुदयात्मिका आवलिका क्षुल्ल
कभवग्रहणकालस्य षट्पञ्चाशदुत्तरद्विशततमभागभूता इति तत्समया इति वा आवलिका इतिवा सकालत्रस्तु तदविगानेन जीवाइतिच जीवपर्यायत्वात्

उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता ॥ तइओउद्देसो ॥ ३ ॥ समयाइवा आवलियाइवा जीवाइवा अजीवा

तेहने स्थितिभावें आश्रयीछे समयथी माण्डी पुदगल तथा जीव सागरोपमताइं एकस्थानके एकभावे रहे तेकालजीव । अजीव बेने आश्रिताछे ते
मांटे बेठाणामा एह कालमानानो अधिकार कहियो ॥ सर्वथी नान्होकाल तेह समय कहिये । समयथी मोटो कालमान ते आवलिका काल अ
सख्यातसमयनो । एह काल जीवाश्रितमाटें जीव कहिये अजीव पुदगलाश्रितमाटे अजीवपणि होय । आणापाणू ते सासोस्वासनो काल । सा
सोस्वास एकथी प्राण प्राण साते एक थोव थाय । एहनें जीवाश्रितपणा मांटें जीवकालज अजीव तेमाटे अजीव तेमाटे बिभेद कहिया
घणा सख्यातप्राणरूप । लव सातथोवथी थाय । एहनें एमज जीवकहिये । अजीवपणि कहिये । एम मुहूर्तअेगणीनो तीनहजार सातसे तिहो

पर्यायपर्यायिणोय कथंचिदभेदात् तथा अजीवानां पुद्गलादीनां पर्यायत्वा इजीवाइति चकारौसमुच्चयार्थौ दीर्घताच प्राकृतत्वात् प्रोच्यते अभिधीयतइ
ति नजीवादिव्यतिरेकिण' समयादय: तथाहि जोवाजीवाना सादिसपर्यवसानादिभेदा या स्थिति स्तद्भेदा:समयादय: साच तद्धर्म्मो धर्मश्चधर्म्मिणोनात्यत
भेदवा नत्यन्तभेदेहि विप्रकृष्टधर्म्ममात्रोपलब्धौ प्रतिनियतधर्मधर्म्मि विषयएव सशयोनस्या त्तदन्येभ्योपि तस्यभेदविशेषात् दृश्यतेच यदा कश्चिद्दूरिततरुत
रुण शाखाविशरविवरान्तरत: किमपिशुक्लपश्यति तदा किमियपताका किंवा वलाके त्येव प्रतिनियतधर्म्मिविषयसंशय इति अभेदेहि सर्वथा सशयानु
त्पत्तिरेव गुणग्रहणतएव तस्यापिग्टहीतत्वादिति इहत्वभेदनया श्रयणा ज्जीवाइतिवेत्याद्युक्तं इहच समयावलिकालक्षणार्थद्वयस्याजीवादि द्वयात्मकतया भ
णना द्विस्थानकावतारो दृश्य एव मुत्तरसूत्राण्यपि नेयानि विशेषन्तु वक्ष्यामइति ॥ आणापाणूइत्यादि ॥ आनप्राणावित्युच्छ्वासनि.श्वासकाल: सख्याता
वलिकाप्रमाण: आहच हट्ठस्सअणवगल्लस्स निरुवकिट्ठस्सजंतुणो एगेउस्सासनिस्सासे एसपाणुत्तिवुच्चई ॥ १ ॥ तथा स्तोका: सप्तोच्छ्वासनि:श्वासप्रमाणा:
क्षणा: सख्यातप्राणलक्षणा: सप्तस्तोकप्रमाणा लवा एवमिति यथाप्राक्तनेसूत्रद्वये जीवाइति यद्वा अजीवा इतिच प्रोच्यंते इत्यधीत मेवं सर्वेष्पूत्तरसूत्रेष्वि
त्यर्थ: मुहूर्त्ता स्सप्तसप्ततिलवप्रमाणा उक्तञ्च सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाणिसेलवे लवाणंसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहिए ॥ १ ॥ तिन्निसहस्सासत्तय

इवा पवुच्चइ आणापाणूइवा थोवाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ खणाइवा लवाइवा जीवाइवा
अजीवाइवा पवुच्चइ एवंमुहुत्ताइवा अहोरत्ताइवा पक्खाइवा मासाइवा उऊइवा अयणाइवा संवच्छरा

तरसासोस्वासनी बेघडी थाय । त्रीसमुहूर्त्तनो एकअहोरात्रि थाय । पनर अहोरात्रिनो एकपक्ष थाय । बेपक्षनो एकमास थाय । बेमासनो

सयाइतेउत्तरिंचउस्सासा एसमुहुत्तोभणिओ सव्वेहिंअणंतनाणीहिंति ॥ २ ॥ अहोरात्रा स्त्रिंशन्मुहूर्त्तप्रमाणाः पक्षाः पञ्चदशाहोरात्रप्रमाणाः मासा द्विपक्षा ऋतवोद्विमासमाना वसन्ताद्या अयनानि ऋतुत्रयमानानि सम्वत्सरा अयनद्वयमाना युगानि पञ्चसम्वत्सराणि वर्षशतादीनिप्रतीतानि पूर्वाङ्गानि चतुरशीतिवर्षलक्षप्रमाणानि ॥ पूर्वाणिपूर्वाङ्गान्येव चतुरशीतिवर्षलक्षगुणितानि इदञ्चैषामान पुव्वस्सउपरिमाण सयरिखलुहोतिकोडि लक्खाओ छपन्नचसहस्सा वोधव्वावासकोडीण ७०५६०००००००००० पूर्वाणि चतुरशीतिलक्षगुणितानि त्रुटिताङ्गानिभवन्ति एवपूर्वस्यपूर्वस्य चतुरशीति

इवा जुगाइवा वाससयाइवा वाससहस्साइवा वाससयसहस्साइवा वासकोडीइवा पुव्वंगाइवा पुव्वाइवा तुडियंगाइवा तुडियाइवा अडडंगाइवा अडडाइवा अववंगाइवा अववाइवा हूहूअंगाइवा हूहूयाइ

एकरितुथाय । त्रिणरितुथी एकअयनथाय दक्षिणायन तथा उत्तरायण । बे अयनथी एकसंबत्सर बरस थाय । पांचबरसनो एकयुगथाय । एम सोबरस तेप्रसिद्धछे बीसयुग । एह हजारबरस दशसौना हजारथाय । एम लाखबरस सौहजारथी एकलाखथाय । एम कोटिबरस सौ लाखथी एककोटिथाय । चौरासीलाखबरसनो एकपूर्वांगथाय । पूर्वांग चौरासीलाख गुणांकीजे ते सत्तरलाखकोडिबरस छप्पनहजारकोडिब रसथी एकपूरबथाय । चौरासीलाखपूरबथी एकत्रुटितांगथाय । ते चौरासीलाखगुणाथी एकत्रुटितथाय । त्रुटितांगथी अडडांगथाय । अड डांगथी अडडथाय । अडडथी अपपांगथाय । अपपांगथी अपपातथाय । अपपातथी हुहुतांगथाय । हुहुतांगथी हुहुतथाय । हुहुतथी उत्पला गथाय । उत्पलांगथी उत्पलथाय । तेहथी पद्मांगथाय । तेहथी पद्मथाय । पद्मथी नलिनांग कालमान थाय । नलिनांगथी नलिन

लक्षगुणनेनोत्तरमुत्तरं सख्यानम्भवति यावच्छीर्षप्रहेलिकेति तस्या चतुर्नवत्यधिकमङ्कस्थानशतम्भवति अत्रकरणगाथा इच्छियठाणेणगुण पणसुन्नचउरसी ॥ इगुणियच काऊणतइवारे पुव्वंगाइणमुणसंख ॥ १ ॥ शीर्षप्रहेलिकान्तः साव्यवहारिकः सख्यातः कालः तेनच प्रथमपृथिवीनारकाणा भवनपतिव्यन्तरा णा भरतऐरवतेषु सुखमदुःखमायाः पश्चिमेभागे नरतिरश्चांचायुर्मीयतइति किंच शीर्षप्रहेलिकायाः परतोप्यस्तिसख्यातः कालः सचानतिशायिनां नव्यव

वा उप्पलंगाइवा उप्पलाइवा पउमंगाइवा पउमाइवा णलिणंगाइवा णलिणाइवा अत्थणिउरंगाइवा अ त्थणिउराइवा अउअंगाइवा अउआइवा णउअंगाइवा णउआइवा पउअंगाइवा पउयाइवा चूलिअंगा इवा चूलियाइवा सीसप्पहेलियंगाइवा सीसप्पहेलियाइवा पलिउवमाइवा सागरोवमाइवा उस्सप्पिणी

थाय । नलिनथी अर्थनिकुरांगथाय । अर्थनिकुरांग चौरासीलाखगुणांकरें तिवारे अर्थनिकुरथाय । अर्थनिकुर चौरासीलाखगुणांकरे अयुतांग थाय । अयुतांग चौरासीलाखगुणाकरे तिवारे अयुतथाय । अयुत चौरासीलाखगुणाकरे तिवारे नियुतांगथाय । नियुतांगथी नियुतथाय । नियुत चौरासीलाखगुणाकरे तिवारें प्रयुतांगथाय । प्रयुतांग चौरासीलाखगुणांकरे तिवारे प्रयुतथाय । प्रयुत चौरासीलाखगुणांकरे तिवारे चू लिकागथाय । चूलिकागथी चूलिकाथाय । चूलिकाथी शीर्षप्रहेलिकाग थाय । शीर्षप्रहेलिकागथी शीर्षप्रहेलिका थाय । एम इहां एकसो चो राणु अकलगे संख्याछे । एह व्यावहारिक संख्यातो कालनो मान शीर्षप्रहेलिकालगे छे एह उपरातपणि संख्यातोकालछे ते अनतिशायी पुरुषोके व्यवहारमा नथी आतो तेमाटे उपमितछे । तेकहेछे । ब्यारगाऊना कूआने माने पल्योपम थाय असंख्यातकोटिवरस थाय । दशकोडाकोडि प

॥ २ ॥

द्दारविषय इतिकालोपस्येप्रच्छिन्नो ऽतएवशीर्षप्रहेलिकायाः परत. पल्योपमाद्युपन्यासः तत्रपल्येनोपमायेषु तानि पल्योपमानि असङ्ख्यातवर्षकोटीकोटीप्र मागानि वक्ष्यमाणलक्षणानि सागरेणोपमा येषु तानि सागरोपमानि पल्योपमकोटीकोटीदशकमानानीति दशसागरोपमकोटीकोट्य उत्सर्पिणी एवमेवावसर्पिणीति कालविशेषवत् ग्रामादिवस्तुविशेषाअपि जीवाजीवाएवेति द्विपदे. सप्तचत्वारिंशतासूत्रैराह ॥ गामेत्यादि ॥ इहच प्रत्येक जीवाएवे त्यादि आलापोध्येतव्यो गामादीनांच जोवाजीवताप्रतीतैव तत्रकरादिगम्याः ग्रामा नैतेषुकरोस्तीति नकराणि निगमा वणिग्निवासा राजधान्यो या सुराजानोभिषिच्यन्ते खेटानि धूलीप्राकारोपेतानि कर्वटानि कुनगराणि मडवानि सर्वतोर्द्धयोजनात्परतोवस्थितिग्रामाणि द्रोणमुखानि येषां जलस्थल

इवा उसप्पिणीइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ ॥ गामाइवा णगराइवा निगमाइवा रायहाणीइवा खेडाइवा कव्वडाइवा मडंवाइवा दोणमुहाइवा पट्टणाइवा आगराइवा आसमाइवा संवाहाइवा संनि

ल्योपमथी एक सागरोपम थाय । दशकोडाकोडि सागरोपमथी एक उत्सर्प्पिणी काल थाय । एमज दशकोडाकोडि सागरोपमथी एक अवस र्प्पिणी थाय । एसर्व कालमान बेज वस्तुनें आश्रितछै जीवनें तथा अजीवने पुदगलादिकने एम जाणिवो । कालनीपरे ग्रामादिकपणि जीव अजीव बेबोलैजछै ॥ राजादिकनो जिहां कर लागे ते गाव । जिहा कर नलागे ते नगर । जिहा घणावाणिया वसे ते निगम । जिहां राजानो राज्याभि षेकथाय ते राजधानी । जिहां धूलनोकोट तेखेडा । कुनगर ते कर्बट कहिये । च्यारेदिशि जेहने वेगला गामहोय ते मडंब कहिये । जिहा जल थलनो मारग होय तेद्रोणमुख । जिहा जलो रतनवस्तु उपजे तेपाटण । जिहा लोहादिकनी खानिहोय तेआकर.। जिहां तीर्थस्नान थाय ते आ

पथा वुभावपिस्तः पत्तनानि येषुजलस्थलपथयोरन्यतरेणपर्यांद्वारप्रवेश आकराः लोहाद्युत्पत्तिभूमयः आश्रमा स्तीर्थस्थानानि सम्वाहाः समभूमौ क्ष षिंकृत्वा येषु दुर्गभूमिभूतेषु धान्यानि कृषीबला. सवहन्ति रक्षार्थमिति ६ सन्निवेशाः सार्थकटकादेः घोषाः गोष्ठानि ७ आरामाः विविधवृक्षलतो पशोभिताः कदल्यादिप्रच्छन्नगृहेषु स्त्रीसहितानां पुसां रमणस्थानभूता इति उद्यानानि पत्रपुष्पफलच्छायोपशोभितानि बहुजनस्य विविधवेपस्यो न्नत मानस्य भोजनार्थं यान गमनयेष्विति ८ वनानीत्येकजातीयवृक्षाणि वनखण्डा अनेकजातीयोत्तमवृक्षाः ९ वापी चतुरस्रा पुष्करिणी वृत्ता पुष्करवती चेति १० सरासि जलाशयविशेषाः सरः पंक्तयः सरसापङ्क्तयः ११ । अगडत्ति ॥ अवटाः १२ तडागादीनि प्रतीतानि १३ पृथिवीरत्नप्रभादिका उदधिस्तद

वेसाइवा घोसाइवा आरामाइवा उज्जाणाइवा वणाइवा वणखंडाइवा वावीइवा पुक्करणीइवा सराइवा सरपंतियाइवा अगडाइवा तडागाइवा दहाइवा णदीइवा पुढवीइवा उदहीइवा वातखंधाइवा उवासं

श्रम ॥ संबाध जिहां समीभूमि वावी कठिनभूमि राखै खाणिप्रमुखमां ॥ संनिवेस जिहां साथ उतरे ॥ नदीना तटने पासे वसै ते घोषगाम ॥ जि हा घणीजातिना वृक्षवेलि होय केलिना घरहोय जिहा स्त्री पुरुष क्रीडाकरे ते आराम ॥ जिहां पत्रपुष्पफलफूल छायाये सोभित घणालोक उजा णीकरे ते उद्यान ॥ वन जिहां एकजातिना वृक्षहोय ॥ जिहा घणीजातिना वृक्षहोय ते वनखंड ॥ चौखूणी होय तेव ावी ॥ वाटली तथा पु ष्कर कमल जिहांहोय ते पुष्करिणी ॥ सरोवर जलाश्रय विशेष ॥ सरोवरनी पंक्ति वे च्यारश्रेणि होय ॥ कूआ ते अगड कहिये ॥ तलाव क हिये ॥ द्रह जिहां ऊंडोपाणी होय ॥ नदीगंगाप्रमुख ॥ पृथिवी रत्नप्रभादिक ॥ समुद्र उदधि घनोदधि ॥ वायुनाखंध घनवात तनवात प्रमुख ॥

धोघनोदधिः १४ वातस्कन्धाः घनवाततनुवाताः इतरेऽवा अवकाशान्तराणि वातस्कन्धानामधस्तादाकाशानि जीवताचेषा सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिजीवव्या प्तत्वात् १५ वलयानि पृथिवीनांवेष्टनानि घनोदधिघनवाततनुवातलक्षणानीति विग्रहा लोकनाडोचक्राणि जीवताचेपापूर्ववत् १६ द्वीपाः समुद्राश्चप्र तीताः १७ वेला समुद्रजलवृद्धिः वेदिकाः प्रतीताः १८ द्वाराणि विजयादीनि तोरणानि तेष्वेवेति १९ नैरयिका क्लिष्टसत्वविशेषाः तेषाञ्जीवता कर्म्म पुद्गलाद्यपेक्षया तदुत्पत्तिभूमयो नैरयिकावासाः तेषांच जीवतापृथिवीकायिकाद्यपेक्षया इति एवचतुर्विंशतिदण्डकोभिधेयः ४३ अतएवाह यावदित्यादि कल्पादेवलोका स्तद्देशाः कल्पविमानावासाः ४४ वर्षाणि भरतादिक्षेत्राणि वर्षधरपर्वता हिमवदादयः ४५ कूटानिहैमवतकूटानि कूटागाराणि तेष्वेव

तराइवा वलयाइवा विगाहाइवा दीवाइवा समुद्दाइवा वेलाइवा वेइयाइवा दाराइवा तोरणाइवा णेरइयाइवा णेरइयावासाइवा जाव वेमाणियावासाइवा कप्पाइवा कप्पविमाणावासाइवा वासाइवा

अवकाशांतर जिहां सूखम पृथ्वीना जीवछताछे आकाशप्रदेश ॥ वलय जे पृथिवीना घनोदधि घनवातना वधछे ते ॥ विग्रह ते लोकनाडी त्रस नाडी जीव ते जिहां रहियाछे ॥ द्वीप ते जंबूद्वीपादि समुद्र लवण समुद्रादिक ॥ वेल समुद्रना जलनी ॥ वेदिका कोटकागरा रक्षित द्वीपनी ॥ द्वार विजयादिक जंबूद्वीप प्रमुखना ॥ तोरण जेदरवा जाने उपर लगाडिये ॥ नारकी नरकमा रहेनार ॥ नारकीना रहवाना ठाम ते नरका वासा ॥ एम यावत् चौवीसदंडके वैमानिक देवतालगे ॥ जीव अने अजीव ते कर्मपुदगलसहितछे ॥ देवताना उपजवाना विमान तेपृथिवी कायनी अपेक्षाये जीव अजीव सचित्तपणामाटे ॥ कल्पते देवलोक ॥ तेहना अंश ते कल्पविमानावास ते जीव अजीव पणामाटे येभेद ॥ वर्षते क्ष

देवभवनानि ४६ विजया श्चक्रवर्त्तिविजेतव्यानि कच्छादीनि क्षेत्रखंडानि राजधान्यः क्षेमादिकाः जीवेत्यादीप्योक्ता सर्वत्र सम्बन्धनीयमिति ४७ येपिपुद्ग लधर्म्मा स्तेपि तथैवेत्याह ॥ छायेत्यादि ॥ सूत्रपञ्चक गतार्थं नवर छाया वृक्षादीना मातपश्चादित्यस्य ॥ दोसिणातिवत्ति ॥ ज्योत्स्ना अन्धकाराणि तमां सि अवमानानि क्षेत्रादीनि उन्मानानि तुलाकर्षादीनि अतियानगृहाणि नगरादिप्रवेशे यानिगृहाणिप्रतीतानि अवलिवासणिप्पवायाय रूढितो वसेया इति किमेतत्सर्वमित्याह जीवाइतिच जीवव्याप्तत्वात् तदाश्रितत्वाद्वा अजीवाइतिच पुद्गलाद्यजीवरूपत्वात्तदाश्रितत्वाद्वेति प्रोच्यतेजिनैः प्ररूप्यते इति इ

वासहरपव्वयाइवा कूडाइवा कूडागाराइवा विजयाइवा रायहाणीइवा जीवाइया अजीवाइवा पवुच्चइ छायाइवा आतवाइवा दोसिणाइवा अंधकाराइवा जमाणाइवा पमाणाइवा उम्माणाइवा अतिताणगि हाइवा उज्जाणगिहाइवा अवलिंवाइवा सणिप्पवायाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ दोरासी प०

रतादिक्षेत्र ॥ वर्षधर हिमवंतादिपर्वत ॥ हिमवतादिकना कूट तेशिखर ॥ कूटागार ते जिहां देवतानाघरछे ॥ विजयते कच्छमहाकच्छादिक बत्तीस क्षेत्रनाखंड महाविदेहमा ॥ राजधानी क्षेमादिकनगरी जिहा राजारहै ॥ एम सघला बोलमा जीव अनें अजीव एह बेभेद कहिवा पुदगलाश्रितप णामांटे ॥ एहपुदगल स्वभावछै तेपणि इमज बेभेदैं। छाया वृक्षादिकनी । आतप सूर्यादिकनो । छाया ते अजीव वृक्षनी तेमाटें जीव अजीव एह बेभेद कहिवा । उयोत्स्ना कांति अथवा तेज । अंधकार तमस । अवमान तेक्षेत्रादि । प्रमाण ते हाथ गज प्रमुख । उन्मान ते तुलादि कर्ष मासो वालादि । अतितानगृह तेप्रवेशना नगर । उद्यानगृह तेबाडीना घर । अवलिंब देशविशेष । सणिप्रपात पणि एमज रूढिथी जा

५ ॥

इच जीवाद्रवेत्यादि सूत्रपरकेपि प्रत्येकमध्येतव्य मिति ७ अथ समयादिवस्तुजीवाजीवरूपमेवकस्मादभिधीयते उच्यते तल्लिचणराश्यन्तराभावादतए वाह दोरासीत्यादि तत्र जीवराशिश द्विधा यतमुक्तभेदात् तावद्वाना निरूपणायाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ प्रेमरागो मायालोभकषायलचणो द्वेषस्तु क्रोधमान कषायलचणो यदाह मायालोभकषाय श्चेत्येतद्रागसंज्ञितंद्वन्दं । क्रोधोमानश्चपुन र्द्वेषइतिसमासनिर्दिष्ट इति प्रेम्णः प्रेमलचणचित्तविकारसमादकमोह नीयकर्मपुद्गलराशेर्बंधनं जीवप्रदेशेषु योगप्रत्ययतः प्रकृतिस्वरूपतया प्रदेशरूपतयाच सम्बन्धन तथा कषायप्रत्ययतः स्थित्यनुभागविशेषापादानंच प्रेम बन्ध एवंद्वेषमोहनीयसम्बन्धो द्वेषबन्धइति उक्तंहि जोगापयडिपएस ठिइअणुभागकसायप्रोकुणइति प्रेमद्वेषलचणाभ्यां कर्मभ्या मुदयगताभ्यां जीवाना मशुभकर्मबन्धो भवतीत्याह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ अथवा पूर्वसूत्र मन्यथाव्याख्याय सम्बन्धान्तर मस्य क्रियते सामान्येन बधोद्विधा प्रेमतो द्वेषत श्चेति सचा निवृत्ति सूक्ष्मसम्परायांता नगुणस्थानिनः प्रतीत्य द्रष्टव्यो यस्तूपशान्तमोहचीणमोहसयोगिनां सयोगप्रत्ययएव सतु बन्धत्वेन नविवचितो बधस्यापि

तंजहा जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुविहेबंधे पन्नत्ते तंजहा पेज्जबंधेचेव दोसबंधेचेव जीवाणं दोहिंठाणेहिं पावकम्मंबंधइ तंजहा रागेणचेव दोसेणचेव जीवाणंदोहिं ठाणेहिं पावकम्मउदीरेइ तं०

णिवूं । एसघला बोल जीवाश्रितपणां मांटें जीव अनें पुदगलमाटें अजीव कहिवा । बे राशिकही तेकहेछे । एक जीवराशि बीजी अजीवराशि बेप्रकारे बंधकहियो तेकहेछे । एक प्रेम ते रागनो बंध मायालोभरूप । द्वेषबध क्रोधमानरूप । जीवने बेथानकेंकरी पापकर्मनो बधछे पापब धायछे तेकहेछे । रागेकरी पापबधायछे द्वेषेकरी पापबंधायछे । जीव बेथानकेंकरी पापकर्म उदीरेछे अवसर आव्याविना उदये आणे ते उदी

तस्य शेषकर्मबंधविलक्षणतया अबन्धकल्पत्वात् यस्यहि कर्म्मणोसौतदल्पस्थितिकादिविशेषणं उक्तंच अप्पंवायरमउयं वहुंचरुक्खंचसुक्किलंचेव मदंमहव्वयं तिय सायावहुलंचककम्मंति १ अल्पस्थित्या बादरपरिणामतः मृदनुंभावतो बहुप्रदेशं मन्दलेखतो वालुकावत् महाव्यय सर्व्वापगमात् एतदेवदर्शयन्नाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ जीवाः सत्वाः ण वाक्यालङ्कारे द्वाभ्या स्थानाभ्यां करणाभ्यांपापमशुभनिबन्धनत्वात् नतु निरनुबन्ध द्विसमयस्थितिक मत्यन्तं शुभ तस्य केवलयोगप्रत्ययत्वादिति बध्नन्ति सृष्व्यायवस्थ कुर्व्वन्ति रागेणचैव द्वेषेणचैव कषायैरित्यर्थः ननु मिथ्यात्वाविरतिकषाययोगा बन्धहेतव स्तत्काय क षायाएवेहोक्ता इत्युच्यते कषायाणां पापकर्मबंध प्रति प्राधान्याख्यापनार्थ प्राधान्य स्थित्यनुभागप्रकर्षकारणत्वात्तेषामिति अथवा अत्यन्तमनर्थकारित्वात् उक्तच कोदुक्खपावेज्जा कस्सवसोक्खेहिंविम्हिओहोज्जा कोवनलहेज्जमुक्ख रागद्दोसाजइनहोज्जत्ति अथवा बधहेतुदेशग्राहकमेवेद सूत्र द्विस्थानकानु रोधादिति नदोषः उक्तस्थानद्वयवद्धपापकर्मणश्च यथो दीरणवेदननिर्जराः कुर्वंति देहिन स्तथा सूत्रत्रयेणाह ॥ जीवेत्यादि ॥ गतार्थं नवर मुदीरयति अ प्राप्तावसर सदुदये प्रवेशयन्ति अभ्युपगमेनाङ्गीकरणेन निर्वृत्ता तत्रवा भवा भ्युपगमिकी तया शिरोलोचतपश्चरणादिकया वेदनयापीडनया उपक्रमे ण कर्म्मोदीरणकारणेन निर्वृत्ता तत्रभवा वा औपक्रमिकी तया ज्वरातिसारादिजन्यया एवमिति उक्तप्रकारतएववेदयन्ति विपाकतोनुभवत्युदीरितंस

अब्भोवगमियाएचेव वेयणाएउवक्कमियाएचेव वेयणाएएवंवेदेंति एवंणिज्जरेंति अब्भोवगमियाएचेव वेय

रणा तेकहेछे । स्ववसे जाणीने शिरोलोचन तप चारित्रादिकै वेदना पीडा भोगवे । बीजी उपक्रमिकी उपक्रमथी उपजीवेदना ते ताप अती सारादि रोगथी उपजी वेदना एमज बेप्रकारे वेदे भोगवै उदय आव्युं कर्म । एम बेप्रकारे निर्जरे छै क्षयकरेछे । जे जाणीने शिरोलोचनादि क्रि

दिति निर्जरयन्ति प्रदेशेभ्यः साटयन्ति इति निर्जरणेव कर्म्मणो देशतः सवथावा भवान्तरे सिद्धौवा गच्छतः शरीरान्निर्याणंभवतीति सूत्रपञ्चकेन तदाह ॥ दोहीत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं द्वाभ्यांप्रकाराभ्यां ॥ देसेणविति ॥ देशेनापि कतिपयप्रदेशलचणेन केषांचित्प्रदेशाना मिलिकागत्योत्पादस्थानं गच्छताजी वेन शरीराद्बहिः चिप्तत्वात् आत्माजीवः शरीरदेह स्पृष्ठा श्लिष्टा निर्याति शरीरान्मरणकालेपि निस्सरतीति ॥ सव्वेणविति ॥ सर्वेण सर्वात्मना सर्वेर्जीव प्रदेशैः कन्दुकगत्योत्पादस्थान गच्छता शरीराद्बहिः प्रदेशाना मचिप्तत्वादिति अथवा देशेनापि देशतोपि अपिशब्दः सर्वेणापीत्यपेच आत्मा शरीर को र्थः शरीरं देश पादादिकं स्पृष्ठा अवयवान्तरेभ्यः प्रदेशसंहारा न्निर्याति सच ससारी सर्वेणापि सर्वतयाप्यपिनिर्देशेनापीत्यपेचः सर्वमपि शरीर स्पृष्ठा निर्यातीतिभावः सचसिद्धो वक्ष्यतिच पायणिज्जाणानिरएसुउववज्जतीत्यादि यावत् सव्वगनिज्जाणासिद्देसुत्ति ॥ आत्मना शरीरस्यस्पर्शनेसति स्फुरण भवतीत्यत उच्यते ॥ एवमित्यादि ॥ एवमिति दोहिंठाणेहिं इत्याद्यभिलापसंसूचनार्थः तत्रदेशेनापि कियद्भिरप्यात्मप्रदेशै रिलिकागतिकाले ॥ सव्वेण विति ॥ सर्वैरपिगेन्दुकगतिकाले शरीरं ॥ फुरित्ताणंति ॥ स्फोरयित्वा संस्पन्दयित्वा निर्याति अथवा शरीरकं देशतः शरीरदेशमित्यर्थः स्फोरयित्वा पा दादिनिर्याणकाले सर्वतः शरीरंस्फोरयित्वा सर्वाङ्गनिर्याणावसरइति स्फुरणाच्च सात्मकल स्फुट भवतीत्याह ॥ एवमित्यादि ॥ एवमितितेष्वेव देशेनात्म

णाएउवक्कमियाएचेव वेयणाएदोहिंठाणेहिं आया सरीरंफुसित्ताणं णिज्जाति देसेणविआयासरीरंफुसि

यादिके वेदना वेदे । तेकहेछै । उपक्रमवेदनाइ ते रोगादिकनी वेदना । बेथानके आत्मा जीव शरीरने फरसीने भवातरे अथवा मुक्तिये जाय छै ते देशथी तथा सर्वथी पगप्रमुख फरसी नीकले ते देशथी सघलीकाया फरसे जीव नीकलता ते ठिकाणु फरके जीवने शरीरने स्पर्शते थके ते

देशेन शरीरक ॥ फुडित्ताणंति ॥ सचेतनतया स्फुरणलिङ्गतः स्फुटङ्कत्वा इलिकागतौ सर्वेणसर्वात्मना स्फुटङ्कत्वा गेंदुकगताविति अथवा शरीरकंदेशतः सात्मकतया स्फुट ङ्कत्वा पादादिना निर्याणकाले सर्वतः सर्वाङ्गनिर्याणप्रस्तावदति अथवा स्फुटित्वा स्फोटयित्वा विशीर्णंकृत्वा तत्रदेशतो ऽच्यादिविघातेन सर्वतः सर्वविशरणेनदंत्रदोपादिजीववदिति शरीरक सात्मकतया स्फुटीकुर्वं स्तत्सवर्त्तनमपि कश्चित्करोतीत्याह ॥ एवमित्यादि ॥ एवमिति तथैव ॥ सवट्टइत्ताणति ॥ सवर्त्त्यसंकोच्य शरीरक देशेनेलिकागतौ शरीरस्थितप्रदेशैः सर्वेणसर्वात्मना गेन्दुकगतौ सर्वात्मप्रदेशाना शरीरस्थितत्वा न्निर्यातीति अथवा शरीरकं शरीरिण मुपचारा द्दण्डयोगाद्दण्डपुरुषवत् तत्रदेशतः सवर्त्तन ससारिणोम्रियमाणस्य पादादिगतजीवप्रदेशसंहारा त्सर्वतस्तु निर्वाणगंतुरिति अथवा शरीरक देशतः सवर्त्य हस्तादिसङ्कोचनेन सर्वतः सर्वशरीरसङ्कोचनेन पिपीलिकादिवदिति आत्मनश्च सवर्त्तनकुर्व्वन् शरीरस्यनिवर्त्तन करोतीत्याह ॥ एवनिवट्टइत्ताणंति ॥ तथैव निवर्त्य जीवप्रदेशेभ्य. शरीरक पृथक्कृत्वेत्यर्थः तत्रदेशेनेलिकागतौ सर्वेण गेंदुकगता वथवा प्रदेशतः शरीरकं निवर्त्त्यात्मनः पादादिनिर्याणवत् सर्वतः सर्वाङ्गनिर्याणवानिति अथवा पञ्चविधशरीरसमुदयापेक्षया देशतः शरीरमौदारिकादिनिवर्त्य तैजसकार्म्मणेत्वादायैव तथा सर्वेण सर्वशरीरसमुदायं निवर्त्य निर्याति सिद्ध्यतीत्यर्थः अनन्तरं सर्वनिर्याणमुक्तं तच्च परम्परयाधर्मश्रवणलाभादिषु

त्ताणं णिज्जाति सव्वेणविच्छायासरीरं फुसित्ताणं णिज्जाति एवंफुरित्ता एवंफुडित्ता एवंसंवट्टित्ता निव्वट्टित्ता

सर्वथी । एम फरसे शरीर देशथी सर्वथी । एम शरीरनें फोडी जीव नीकली देशथी सर्वथी । एम संकोचीनें शरीरने देशथीसर्वथी ईलिकागते तथा दडानीगते । जीवप्रदेशथी शरीरअंगुलथाय ते देशथीसर्वथी । बेथानकें आत्मा केवलिन्नाषित धर्मप्रति पामे सांमलवाथी । ते कहेछे ।

तेच यथासु स्वयादर्शयन्नाह ॥ दोहीत्यादि ॥ कण्ठ्य मवरं ॥ खएणचेवत्ति ॥ ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्यच कर्मण उदयप्राप्तस्य क्षयेण निर्जर णेन अनुदितस्य चोपशमेन विपाकाननुभवेन क्षायोपशमेनेत्युक्त भवति यावत्कारणात् केवल बोहिंबुज्झेज्जा मुंडेभवित्ता अगाराओअणगारियपव्वएज्जा ॥ केवलबंभचेरवासमावसेज्जा केवलेणं सजमेणं सजमेज्जा केवलेणं सवरेणं संवरेज्जा केवलमाभिणिबोहियनाणमुप्पाडेज्जा इत्यादिदृश्य ॥ यावन्मनः पर्य वज्ञानमुत्पादयेदिति केवलज्ञानंतु क्षयादेवभवतीति तन्नोक्त मिहच यद्यपि बोध्यादयः सम्यक्चारित्ररूपला स्त्केवलेन क्षयेणोपशमेनच भवन्ति तथाप्येते क्षयोपशमेनापि भवन्ति श्रवणाभिनिबोधिकादीनितु क्षयोपशमेन भवन्तीति सर्वसाधारणः क्षयोपशमउक्तः पदद्वयेनातः सएवव्याख्यात इति बोध्या भिनिबोधिक श्रुतावधिज्ञानानिच षट्षष्टिसागरोपमस्थितिकान्युत्कर्षतो भवन्ति सागरोपमाणिच पल्योपमाश्रितानि तद्वितयप्ररूपणायाह ॥ दुविहेअद्धा इत्यादि ॥ उपमाऔपम्य तया निर्वृत्त मौपमिकं अद्धा काल स्तद्विषय मौपमिकमऔपमिक मुपमानमन्तरेण यत्कालप्रमाण मनतिशयिना ग्रहीतु नशक्यते तदौपमिकमितिभावः तच्चद्विधा पल्योपमचेव सागरोपमंचैव तत्र पल्यवत्पल्य स्तेनोपमा यस्मिं स्तत्पल्योपम तथा सागरेणोपमा यस्मिंस्त

दोहिंठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तंधम्मं लभेज्जसवणयाए तंजहा खएणचेव उवसमेणचेव एवंजाव मणपज्ज वनाणं उप्पाडेज्जा तंजहा खएणचेव उवसमेणचेव दुविहे अद्धोवमिये पन्नत्तेतंजहा पलिउवमेचेव सागरो

नाणावरणी दर्शनमोहनीना क्षयथी अथवा उपशमाव्यांथी अन्यथा सांभलवाथीपणिधर्मनपावे। एम यावत् मतिनाण श्रुतनाण अवधिनाण मनपर्य वनाण उपजावे पां मैं बेथानकै तेकहेछै । नाणावरणीनां क्षयथी अथवा उपशमथी । मतिश्रुतअवधिनाणनी उत्कृष्टस्थिति छासठि सागरोपमनीछै

त्सागरोपमं सागरवन्महापरिमाणमित्यर्थं इदंच पल्योपमसागरोपमरूप मौपमिकं सामान्यत उद्धाराद्धाक्षेत्रभेदात् त्रिधा पुनरेकैकं संव्यवहारसूक्ष्मभेदा द्विधा तत्र सव्यवहारपल्योपमंनाम यावता कालेन योजनायामविष्कंभो च्चत्वपल्यो मुडनानन्तरमेकादिसप्ताहोरात्रप्ररूढाणां वालाग्राणां भृतः प्रति समय वालाग्रोद्धारेसति निर्लेपोभवति सकालो व्यावहारिकपल्योपम मुच्यते तेषांच दशभिःकोटीकोटीभिः व्यावहारिकमुद्धारसागरोपम मुच्यते तेषा मेव वालाग्राणां दृष्टिगोचरातिसूक्ष्मद्रव्यासंख्येयभागमात्रसूक्ष्मपनकावगाहना दसख्यातगुणरूपखण्डीकृतानां भृतः पल्योपेन कालेन निर्लेपोभवति तथै वोद्धारे तत्सूक्ष्ममुद्धारपल्योपम तथैव सूक्ष्ममुद्धारसागरोपम मनेनच द्वीपसमुद्राः परिसख्यायन्ते आहच उद्धारसागराण अड्ढाइज्जाणजेत्तियासमया दु गुणादुगुणपवित्थर दीवोदहिरज्जुएवइयत्ति ॥ १ ॥ अद्धापल्योपमसागरोपमेपि सूक्ष्मवादरभेद एवमेव नवरं वर्षशते २ वालस्य वालासंख्येयखण्डस्य चो द्धारइति अनेननारकादिस्थितयो मीयन्ते क्षेत्रतोपिते द्विविधे एवमेव नवरं प्रतिसमयमेकैकाकाशप्रदेशापहारे यावताकालेन वालाग्रस्पृष्टाएव प्रदेशा उध्रियन्ते सकालोव्यावहारिकइति यावता वालाग्रासंख्यातखडैः स्पृष्टाश्चास्पृष्टाश्चोध्रियन्ते सकालः सूक्ष्मइति एतेच प्ररूपणामात्रविषयाएव आभ्यांच दृष्टि वादे स्पृष्टास्पृष्टप्रदेशविभागेन द्रव्यमानेप्रयोजनमिति श्रूयते वादरेच त्रिविधेअपि प्ररूपणामात्रविषयएवेति तदेवमिह प्रक्रमे उद्धारक्षेत्रोपमिकयो र्निरु पयोगत्वा दद्धौपमिकस्यैव चोपयोगित्वा दद्धेतिविशेषण सूत्रेउपात्तमिति अतएवा द्धापल्योपमलक्षणाभिधित्सयाह सूत्रकारः ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथकित

वमेचेव सेकिंतंपलिउवमे पलिउवमे । जंजोयणविच्छिन्नं पल्लंएगाहियप्परूढाणं । होज्जनिरंतरणिचिइं न्नरि

तेसागरोपमनो मान कहिवाने कहेछे ॥ बेप्रकारे कालनुं उपशम तेप्रमाणछे तेकहेछे । एक पल्योपमनुं मानछे बीजो सागरोपमनुं मानछे । तेस्युं

त्पल्योपमं यदङ्गोपमिकतया निर्दिष्टमिति प्रश्ने निर्वचन मेतदनुवादेनाह ॥ पलिओवमत्ति ॥ पल्योपममेव भवतीति वाक्यशेषः ॥ जंगाहा ॥ किलयत्योज नविस्तीर्णमित्युपलक्षणत्वात्सर्वतो यत् योजनप्रमाणं पल्यधान्यस्थानविशेष एकाहएव एकाह्निक स्तेन प्ररूढानां बुद्धाना मुण्डितेशिरसि एकेनाह्ना याव त्योभवन्तीत्यर्थः एतस्यचोपलक्षणत्वा दुत्कर्षतः सप्ताहप्ररूढाणा वालाग्राणा कोटयोविभागाः सूक्ष्मपल्योपमापेक्षया असंख्येयखण्डानि वादरपल्योपमा पेक्षयात् कोटयः सख्याविशेषा स्तासां किंभवेत् भरित भृत ॥ कथमित्याह ॥ निरंतरंनिचितं निविडतया निचयवत् कृतमिति ॥ १ ॥ वासगाहा ॥ एकस्मात पल्या द्वर्षशतेवर्षशते तिक्रान्तेसति प्रतिवर्षशतमित्यर्थः एकैकस्मिन्वालाग्रे असंख्येयखण्डेचापकृते सति यः कालोयावती श्रद्धाभवति प्रमाण तः सतावान् कालोवोद्धव्यः किमित्याह उपमा उपमेयः कस्येत्याह एकस्यपल्यस्य इदमुक्तंभवतिसः काल एकपल्योपम सूक्ष्म व्यावहारिकचोच्यत इति एएसिगाहा ॥ तेषा मेवोक्तरूपाणां सूक्ष्मवादराणां पल्याना पल्योपमानां कोटीकोटीभवेत् दशगुणिता यदिति गम्यते दशकोटीकोट्य इत्यर्थः तदेकस्य सूक्ष्मरूपस्य बादररूपस्य वा सागरोपमस्यैव भवेत् परिमाणमिति एतैश्च चेषां क्रोधादीनां फलभूतकर्म्मस्थिति र्निरूप्यते तत्स्वरूपनिरूपणायाह

इवालग्गकोडीण ॥ १ ॥ वाससएवाससए एक्केक्केअवहडंमिजोकालो । सोकालोवोधव्वो उवमाएगस्सपल्ल

पल्योपमनुंमान तेकहेछे । जे च्यार गाऊनुं ऊडो पिहुलो पालो कूओ होय एकदिनथी माडीसातदिनना जगया युगलिया तेहना मांथानाकेशथी कुओभरिये आतरारहित ठासीने भरिये तेवालाग् जे दृष्टिमापणिनआवे तेबालाग् सौसोबरसे एकेको निकाले तेकाढतेकाढते कूओजेतलेकाले खा लीथाय तेतलाकालनी उपमा जाणवी एक पल्योपमनो कालमान जाणिवो । एह पल्योपमनुंकालदशगुणुकीजे तिवारे सागरोपमनुं कालथाय एत ले दशकोडाकोडि पल्योपमे एकसागरोपमथाय । एप्रकारेंक्रोध तेकहेछे । आत्मप्रतिष्ठित ते आत्माथी उपनो निष्कारणक्रोध अथवा जीतिप्रमुखे

॥ दुविहेकोहेइत्यादि ॥ आत्मापराधा दैहिकापायदर्शनादात्मनिप्रतिष्ठित आत्मविषयोजात आत्मनावा परत्राक्रोशादिना प्रतिष्ठितो जनित आत्मप्र तिष्ठित: परेणाक्रोशादिना प्रतिष्ठित उदीरित: परस्मिन्वा प्रतिष्ठितो जात' परप्रतिष्ठितइति एवमिति यथा सामान्यतो द्विधा क्रोध उक्त एवंनारकादीनां चतुर्विंशते र्वाच्य नवर पृथिव्यादीना मसञ्ज्ञिना मुक्तलक्षण मात्मप्रतिष्ठितत्वादिपूर्वभवसंस्कारात् क्रोधद्वयमवगन्तव्यमिति एवमानादीनि मिथ्यात्वातानि पापस्थानकान्यात्मप्रतिष्ठितविशेषणानि सामान्यपदपूर्वक चतुर्विंशतिदण्डकेनाध्येतव्यानि अतएवाह ॥ एवजावमिच्छादसणसल्लेत्ति ॥ एतेषाच मानादीन स्वविकल्पजातपरजनितत्वाभ्या स्वात्मवर्त्तिपरात्मवर्त्तित्वाभ्या वा स्वपरप्रतिष्ठितत्वमवसेय मेव एते पापस्थानाश्रिता स्त्रयोदशदण्डका इति उक्तविशेषणा निच पापस्थानानि ससारिणामेव भवन्तीति तान् भेदत आह ॥ दुविहेत्यादि ॥ कण्ठ्यं नतु ससारिणएवजीवा उतान्येपि सति सत्येवेति प्राय उभयदर्श

स्स ॥ २ ॥ एतेसिंपल्लाणं कोडाकोडीहवेज्जदसगुणिया । तंसागरोवमस्सउ एगस्सभवेपरीमाणं ॥ ३ ॥ दुवि हेकोहे पन्नत्ते तंजहा आयपइट्ठिएचेव परपइट्ठिएचेव एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं एवं जाव मिच्छा दंसणसल्ले दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा तसाचेव थावराचेव दुविहा सव्वजीवा पन्नत्ता

आपणाणु क्रोधे जीतिनें हणै । परप्रतिष्ठित जे परनावचन साम्भली क्रोधउपजे । एम नारकीआदिदेई वैमानिकतांई चौवीसदंडकै बेप्रकारे क्रोध जाणिवुं । एम यावत् मिथ्यादर्शनशल्यादि अठारह पापस्थानकलगे आत्म अने परनेआश्रित । संसारनाजीव बेप्रकार तेकहैछै । त्रस बेइंद्रियादि थावर पृथिव्यादिक एकेंद्री ॥ अथवा बेप्रकारसर्वजीव तेकहैछै । एक सिद्ध जेमोक्षपाम्या बीजा असिद्ध जेमोक्षनथीपाम्या ॥ अथवा बेप्रकारसर्वजी

नाय नयोदशसूत्री माह ॥ दुविहेत्यादि ॥ कण्ठ्याचेयं नवरं सेंद्रियाः संसारिणो ऽनिन्द्रिया अपर्याप्तककेवलिसिद्धाः ॥ एवंएसन्ति ॥ एवंसिद्धादिसूत्रोक्तक्र मेण दुविहासव्वजीवेत्यादि लक्षणेन एषावक्ष्यमाणा प्रस्तुतसूत्रसंग्रहगाथा स्पर्शनीया अनुसरणीया एतदनुसारेण त्रयोदशापि सूत्राख्यध्येतव्यानीत्यर्थ अतएवाह ॥ जावससरीरीचेव असरीरीचेवत्ति ॥ सिद्धगाहा ॥ सिद्धाः सेन्द्रियाश्च सेतराउक्ता एवं ॥ कायेत्ति ॥ कायाः पृथिव्यादय स्तानाश्रित्य सर्वजीवाः सविपर्ययावाच्याः एवसर्वाणि व्याख्येयानि वाचनाचैव ॥ सकायच्चेव अकायच्चेव ॥ सकायाः पृथिव्यादि षड्विधकायविशिष्टाः संसारिणो ऽकाया स्तद्विलक्षणाः सिद्धाः सयोगाः ससारिणो ऽयोगा अयोगिनः सिद्धाश्च ४ ॥ वेदत्ति ॥ सवेदाः ससारिणः अवेदा अनिवृत्तबादरसम्परायविशेषा दयः षट्सिद्धाश्च ५ ॥ कसायत्ति ॥ सकषायाः सूक्ष्मसम्परायान्ताः अकषाया उपशान्तमोहादयश्चत्वारः सिद्धा श्च ६ ॥ लेसायत्ति ॥ सलेश्याः सयोग्यन्ताः संसारिणोलेश्याः अयोगिनः सिद्धाश्च ७ ॥ नाणेत्ति ॥ ज्ञानिनः सम्यग्दृष्टयो ऽज्ञानिनोमिथ्यादृष्टय आहच अविसेसियामइच्छिय सम्मदिट्ठिस्सामइन्नाण

तंजहा सिद्धाचेव असिद्धाचेव दुविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा सइंदियाचेव अणिंदियाचेव एवएसागाहा फासेयव्वा जाव सरीरीचेव असरीरीचेव । सिद्धसइंदियकाए जोगेवेएकसायलेसाय । णाणुवओगाहारे ज्ञास

व तेकहेछे । इंद्रियसहित एकेंद्रियादिक बीजा अनिंदिय इंद्रियरहित सिद्धनाजीव ॥ एम गाथाने अनुसारे तेरहबोल जाणिवा । यावत् शरीरी सं सारनाजीव शरीररहित मोक्षनाजीव सिद्ध असिद्ध इंद्रियसहित इंद्रियरहित कायासहित कायारहित योगसहित योगरहित वेदसहित वेदरहित कषायसहित कषायरहित लेश्यासहित लेश्यारहित नाणसहित नाणरहित नाणोपयोगी दर्शनोपयोगी आहारी अनाहारी ज्ञायारहित ज्ञायारहि

मइअन्नाणंमिच्छा दिट्ठिस्सुयपिएमेवत्ति ॥ १ ॥ अज्ञानताच मिथ्यादृष्टिबोधस्य सदसतोरविशेषणात् तथाहि संत्यर्थाद्दहतत्सत्वं कथंचिदिति विशेषितव्यं भवति स्वरूपेणेत्यर्थः मिथ्यादृष्टिस्तु मन्यते सतएवेति ततश्चापररूपेणापि तेषांसत्त्वप्रसङ्गः तथा नसत्यर्थाद्दह तदसत्व कथंचिदिति विशेषितव्य भवति पर रूपेणेत्यर्थः सतु नसन्त्येवेति मन्यते तथाच तत्प्रतिषेधकवचनस्याप्यभावः प्रसजतीति अथवा शशविषाणादयो नसन्तीत्येतत्कथंचिदिति विशेषणीय यत स्ते शशमस्तकादिसमवेततयैव नसन्ति नतु शशश्चविषाणच शशस्यवा विषाण शृङ्गिपूर्वभवग्रहणापेक्षया शशविषाणं तद्रूपतयापि नसतीति तदेवं सदस तोः कथंचिदित्येतस्य विशेषणस्या नभ्युपगमा त्तस्य ज्ञानम प्ययथार्थत्वेन कुत्सितत्वा दज्ञानमेव आहच जहदुव्वयणमवयण कुच्छियसीलमसीलमसईए भन्नइतहनाणपिइ मिच्छादिट्ठिस्सअन्नाणंति ॥ १ ॥ तथा मिथ्यादृष्टे रध्यवसायो नज्ञान भवहेतुत्वा न्मिथ्यात्वादिवत् तथायदृच्छोपलब्धे रुन्मत्तव त्तथा ज्ञानफ लस्य सत्क्रियालक्षणभावा दन्धस्य स्वहस्तगतदीपप्रकाशवदिति आहच सदसदविसेसणाओ भवहेउजइच्छिओवलभाओ नाणफलाभावाओ मिच्छादिट्ठि स्सअन्नाणति ॥ ८ ॥ उवओगित्ति ॥ सागारोवउत्तेचेवअणागारोवउत्तेचेवत्ति ॥ सहाकारेण विशेषांशग्रहणशक्तिलक्षणेन वर्त्तते य उपयोगः ससाकारो ज्ञानो पयोग इत्यर्थ स्तेनोपयुक्ताः साकारोपयुक्ता अनाकारस्तु तद्विलक्षणो दर्शनोपयोग इत्यर्थो भिधीयतेच जसामन्नगहणं भावाणनेयकट्टुआगारं अविसेसिजणअ त्थे दसणमितिवुच्चएसमएत्ति ॥ १ ॥ तेनोपयुक्ताअनाकारोपयुक्ताइति ९ ॥ आहारेत्ति ॥ आहारका ओजोलोमकवलभेदभिन्ना आहारविशेषग्राहिण आहच ओयाहाराजीवा सव्वेअपजत्तगामुणेयव्वा पज्जत्तगायलोम पक्खेवेहोतिभइयव्वा ॥ १ ॥ एगिदियदेवाण नेरइयाणचनत्थिपक्खेवो सेसाणजीवाण ससारत्था णपक्खेवोत्ति ॥ २ ॥ अनाहारकास्तु विग्गहगइमावन्ना केवलिणोसमूहयाअजोगीय सिद्धायअणाहारा सेसाआहारगाजीवत्ति ॥ २ ॥ भासत्ति ॥ भाषकाः भाषापर्याप्तिपर्याप्तका स्तन्निषेधादभाषका अयोगिसिद्धा एकेंद्रियाश्च ॥ ११ ॥ चरमत्ति ॥ चरमा येषांचरमोभवोभविष्यति अचरमास्तुयेषां भव्येत्वेसत्यपि

चरमोभवो न भविष्यति ननिर्वास्यन्तीत्यर्थः ॥१२॥ ससरीरत्ति॥ सह यथासम्भवं पञ्चविधशरीरेण येते इन्समासान्तविधेः सशरीरिणः संसारिणो अशरीरिणस्तु शरीरमेषामस्तीति शरीरिण स्तन्निषेधादशरीरिणः सिद्धाः ॥ १३ ॥ एतेच ससारिणः सिद्धाश्च मरणामरणधर्म्मका अप्रशस्तप्रशस्तमरणतयैते भवन्तीतिप्रशस्ताप्रशस्तमरण निरूपणाय नवसूत्रीमाह ॥ दोमरणाइ इत्यादि ॥ कण्ठ्याचेय नवर हेमरणे श्रमणेनभगवतामहावीरेण श्राम्यन्ति तपस्यन्तीति श्रमणा स्तेषा तेच शाक्यादयोपिस्युः यथोक्तं निग्गथ १ सक्क २ तावस ३ गेरुय ४ आजीव ५ पचहासमणाइत्ति तद्व्यवच्छेदार्थमाह निर्गता ग्रथाद्बाह्याभ्यन्तरादिति निर्ग्रंथाःसाधव स्तेषा नोनित्ये सदावर्णिते ता स्तयोः प्रवर्त्तयितु मुपादेयफलतया नाभिहिते ॥ कित्तियाइति ॥ कीर्त्तिते नामत. सशब्दिते उपादेयधिया ॥ बुइयाइति ॥ व्यक्तवाचोक्तेउपादेयस्वरूपतः पाठान्तरेणपूजितेवा तत्कारिपूजनतः प्रशस्ते प्रशसिते श्लाघिते शंसुस्तुतावितिवचनात् अभ्यनुज्ञाते अनुमते यथा कुरुतेति ॥ वलयमरणेत्ति ॥ वलतांसंयमान्निवर्त्तमानानां परीषहादिबाधितत्वा न्मरण वलन्मरण ॥ वसट्टमरणेत्ति ॥ इन्द्रियाणां

गचरिमेयससरीरी ॥ १ दोमरणाइं समणेणंभगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णोणिच्चं वण्णियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णोणिच्चं पूइयाइं णोणिच्चं पसत्थाइ णोणिच्च अब्भणुन्नाइं भवंति तंजहा वलयमरणेचेव

त चरम तेजभवेमोक्षजाय अचरम बीजा शरीरी अशरीरी ॥ शरीरीनें बेमरण तेमांटे मरणाधिकार कहेछे श्रमणतपस्वी भगवान श्रीमहाबीरस्वामी श्रमण तपस्वी कर्मगाठिथी रहित साधुने नथीनित्यसदाई वर्णव्या बखाण्या नथी नित्यआदरवा कह्याथी । नथीनित्य पूजित एथी पूजा नपामें नथी प्रशंस्या नथी आणादीधी भगवतें । तेकहेछे वलन्मरण जे सयमथीपडतो परीसहथी भागी मरे । इंद्रियने परवशपणे मरेते जिमदीवो

वशमधीनता मृतानांगतानां स्निग्धदीपकलिकावलोकनाकुलितपतगादीनामिव मरण वशार्त्तमरणमिति आहच संजमजोगविसन्ना मरंतिजेतंवलाय मरणतु इंद्रियविसयवसगया मरतिजेतेवसट्टतु ॥ १ ॥ एवनियाणेत्यादि ॥ एवमितिदोमरणाइंसमणेणमित्याद्यभिलापस्योत्तरसूत्रेष्वपि सूचनार्थः ऋद्धिभो गादिप्रार्थनानिदान तत्पूर्वकमरण निदानमरणं यस्मिन् भवे वर्त्तते जतुस्तद्भवयोग्यमेवायु र्बध्वा पुनर्म्रियमाणस्य मरण तद्भवमरण एतच्च सख्यातायुष्कान रतिरश्चामेव तेषामेवहि तद्भवायुर्बंधोभवतीति उक्तंच मोत्तुअकम्मभूमिग नरतिरिएसुरगणेयनेरइए सेसाणजीवाण तब्भवमरणतुकेसिचित्ति ॥ १ ॥ सत्थोवाडणेत्ति ॥ शस्त्रेण चुरिकादिना अवपाटन विदारण स्वशरीरस्य यस्मिंस्त च्छस्त्रावपाटन ॥ ५ ॥ कारणेपुणेत्यादि ॥ शीलभगरक्षणादौ पाठातरेतु कारणेन अप्रतिकुष्टे वा अनिवारिते भगवता वृक्षशाखादा वुद्बद्धत्वात् विहायसिनभसि भव वैहायस प्राक्रतत्वेनतु वेहाणस मित्युक्त मिति ग्टध्रैः स्पृष्ट

वसट्टमरणेचेव एवं णियाणमरणेचेव तब्भवमरणेचेव गिरिपडणेचेव तरुपडणेचेव जलप्पवेसेचेव जल णप्पवेसेचेव विसभक्खणेचेव सत्थोवाडणेचेव दो मरणाइं जाव णोणिच्चं अब्भणुन्नाइं भवंति कारणेणं पुण अप्पडिकुठाइं तंजहा वेहाणसेचेव गिद्धपिठेचेव दोमरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गं

देखी पतंगमरे । एम रिद्धीआदिकनों नियाणुंकरीमरे ते माठुंमरण कहियो । तेहीजभवने योग्य आउखो बांधीमरे । पर्वतथी भैरुंझांप खाई मरे तेगिरिपडणमरण । वृक्षथी पडी मरे तेतरुपडणमरण । पाणीमां झपावी मरे तेजलप्रवेशमरण । अग्निमा पेसी मरे ते जलणप्रवेशमरण । विषखाई मरे तेमाठुमरण । शस्त्र कटारीप्रमुख खाईमरे ते । वली बेमरण जाव नथी आणा दीधी भगवंते ॥ पणि कारणे शीलादिराखिवाने

स्पर्शनं यस्मिन् तत् स्प्रष्टं यद्विवा स्प्राणां भस्म एष्टमुपलत्तणत्वा दृदरादिच तत्रच्चं कारिकरभादिशरीरानुप्रवेशेन महासत्वस्य मुमुर्षो र्यस्मिंस्तत्
स्प्रष्टमिति गाथाच गजादिभक्षणंगद्ध पप्रष्ठमुस्वंधणादिवेन्मास एतेदोन्निमिमरणा कारणजाएगणुनायत्ति ॥ १ ॥ अप्रशस्तमरणानंतर तत् प्रशस्तं
भव्याना भवतीति तदाह ॥ दोमरणाइ इत्यादि ॥ पादपोवृत्त स्यस्येवछिन्नपतितस्योपगमन मत्यंतनिश्चेष्टतया ऽवस्थान यस्मिंस्तत् पादपोपगजनं
भक्त भोजन तस्यः नचेष्टाया अपि पादपोपगमनस्येव प्रत्याख्यान वर्जनं यस्मिस्तत् भक्तप्रत्याख्यानमिति ॥ नीहारिमति ॥ यद्वसते रेकादेशे विधीयते
तत्तत: शरीरस्य निर्हरणा न्निसारणा न्निर्हारिम यत् पुनर्गिरिकन्दरादी तदनिर्हरणादनिर्हारिम॥ णियमति ॥ विभक्तिपरिणामा न्नियमा दप्रतिकर्म

थाणं णिच्चं वणियाइं जाव अन्नणुन्नाइं नवंति तंजहा पाउवगमणेचेव नत्तपच्चरकाणेचेव पाउवगमणे
दुविहे पन्नत्ते तंजहा णीहारिमेचेव अणीहारिमेचेव णियमं अप्पडिक्कम्मे नत्तपच्चरकाणे दुविहे पन्नत्ते

वास्तानथी । तेकहेंछे आकाशमरण जे वृक्षनी शाखायें गलोबांधी मरे । गृद्धपृष्टमरण ते ऊटप्रमुखना कलेवरमां पेसी गृद्धपंखिया पाडुंपचरावे ए
सर्वमरण शीलादिराखिवाने कारणें निषेध्यानथी अन्यथा निषेध्याछे । एह अप्रशस्तमरण कहिया । बे प्रशस्तमरण नव्यनेंहोय ते कहेछे । श्रमण
नगवंत महावीरस्वामी श्रमणसाधुनें सदाई वर्णाव्या जाव पूर्वनीपरे आणा दीधीछे । एक पादपोपगमन वृक्षनी कापी डालीनीपरे चेष्टारहित ।
बीजो भातपाणीनो जावजीव पचखाण करवुं पणिहाचाले । पादपोपगमन बेप्रकारे कहियो नगवते तेकहेछे । एक नीहारिम जे शरीरनी सार
नकरे सिंहादिकउपसर्ग आवेकरे । बीजो अणिहारिम गिरिगुफामां जई करे । ए बेपादपोपगमन निश्चे शरीरनी शुश्रूषा साररहितछे । नक्तप्रत्या

शरीरप्रतिक्रियावर्जं पादपोपगमनमिति भवतिचात्रगाथा सीहादिसुअभिभूओपायवगमणंकरेइथिरचित्तो आउम्मिबहुप्पते वियाणिओनवरगीयत्थो त्ति ॥ १ ॥ इदमप्यव्याघातवदुच्यते निर्व्याघाततु यत् सूत्रार्थनिष्ठितउत्सर्गतो द्वादशसमाः कृतपरिकर्मासन् कालएवकरोतीति तद्विधिश्चाय चत्तारिवि चित्ताइ विगईनिज्जूहियाइचत्तारि संवच्छरेयदुन्निउ एगतरियचआयामं ॥ २ ॥ नाइविगिट्ठोयतवो छम्मासेपरिमियंचआयामं अन्नेवियछम्मासे होइवि गिट्ठंतवोकम्म ॥ ३ ॥ वासंकोडीसहियं आयामकाउआणुपुव्वीए संघयणादणुरूवं एत्तोअद्धायनियमेण ॥ ४ ॥ यतः देहम्मिअसलिहिए सहसाधाओ हिखिज्जमाणेहिं जाइयअट्टज्झाण सरीरिणोचरमकालम्मि ॥ ५ ॥ किंच भावम्मिविसलिहेइ जिणप्पणीएणझाणजोगेणं भूयत्थभावणाहिय परिवड्डइवो हिमूलाइं ॥ ६ ॥ भावेइभावियप्पा विसेसओनवरतम्मिकालम्मि पयईएनिगुणत्त ससारमहासमुद्दस्स ॥ ७ ॥ जम्मजरामरणजलो अणाइमवसणसावया इन्नो जीवाणदुक्खहेऊ कट्ठरुद्दोभवसमुद्दो ॥ ८ ॥ धन्नोहजेणमए अणोरपारम्मिनवरमेयति भवसयसहस्सदुल्लह लद्धसद्धम्मजाणति ॥ ९ ॥ एयस्सपभावेण पालिज्जंतस्ससयपयत्तेण जम्मतरेविजीवा पावंतिनदुक्खदोहग्ग ॥ १० ॥ चिंतामणीअउव्वो एसअपुव्वोयकप्परुक्खोत्ति एयपरमोमंतो एयपरमामयएत्थ ॥ ११ ॥ इत्थवेयावडिय गुरुमाईणमहाणभावाण जेसिपभावेणेयं पत्ततहपालियचेव ॥ १२ ॥ तेसिनमोतेसिनमो भावेणपुणोवितेसिचेवनमो अणुव कयपरहियरया जेएयंदितिजीवाणमित्यादि ॥ १३ ॥ सलिहिऊणप्पाण एयपच्चप्पिणेत्तुफलगाई गुरुमाइएयसम्म खमाविओभावसुद्धीए ॥ १४ ॥ उववूहि ऊणसेसे पडिवुद्धेतम्मितहविसेसेण धम्मेउज्जमियव्व सजोगाइहविजोगंता ॥ १५ ॥ अहवदिऊणदेवे जहाविहिसेसएयगुरुमाइ पच्चक्खाइत्तुतओ तयतिए सव्वमाहार ॥ १६ ॥ समभावम्मिठियप्पा सम्मसिद्धतभणियमग्गेण गिरिकदरम्मिगतु पायवगमणअहकरेइ ॥ १७ ॥ सव्वत्थापडिबद्धो दण्डाययमाइठाणमि हठाउ जावज्जीवचिट्ठइ निच्चिट्ठोपायवसमाणो ॥ १८ ॥ पढमिल्लुयसंघयणो महाणभावाकरितिएवमिण पायंसुहभावच्चिय निच्चलपयकारणपरम ॥ १९ ॥

भत्तपरिन्नाणसणं चउव्विहाहारचायनिप्फन्नं सपडिकम्मनियमा जहासमाहीविणिदिट्ठत्ति ॥ २० ॥ इङ्गितमरणंविहनीत्ता विस्थान कानुरोधात् तल्लक्षणं चेद इगियदेसमिसय चउव्विहाहारचायनिप्फन्नं उव्वत्तणाइजुत्तं नन्नेणउइंगिणीमरणंति ॥ २१ ॥ इदंचमरणादिस्वरूप भगवता लोके प्ररूपितमिति लोकास्वरूपप्ररूपणाय प्रश्नकारयन्नाह ॥ केश्रयमित्यादि ॥ केइतिप्रश्नार्थः श्रयमितिदृश्यतः प्रत्यक्ष श्रासन्नश्च यत्र भगवता मरणादिप्रश्नस्ताप्रश्नस्तसमस्तवस्तूमतत्व मभ्यधायि लोक्यतइतिलोक इतिप्रश्नो स्यनिर्वचन जीवाश्चाजीवाश्चेति पंचास्तिकायमयत्वा ल्लोकस्य तेषांजीवाजीवस्वरूपत्वादिति उक्तंच पंच त्थिकायमइय लोगमणाइणिहणजिणक्खायति लोकस्वरूपभूतानांच जीवाजीवाना स्वरूपं प्रश्नपूर्वकेण सूत्रद्वयेनाह ॥ केश्रणतेइत्यादि ॥ के श्रनता लोके इतिप्रश्नः श्रत्रोत्तरं जीवाश्रजीवाश्चेति एतएवच शास्वताः द्रव्यार्थतयेति येचैतेश्रनताः शाश्वताश्च जीवा स्तेनोधिमोक्षलक्षणधर्मयोगा द्बुद्धामूढाश्चभवन्तीति

तंजहा णीहारिमेचेव ञ्रणीहारिमेचेव णियमं सपडिक्कम्मे के ञ्रयं लोए जीवच्चेव ञ्रजीवच्चेव ञ्रणंतालोए जीवच्चेव ञ्रजीवच्चेव केसासयालोए जीवच्चेव ञ्रजीवच्चेव दुविहा बोही प० तं० णाणबोहीचेव दंसणबो

रयानमरण बेप्रकारछे तेवाहेछे । एक नीहारिम बीजो अनाहारिम पणिए निश्चे शरीरशुश्रूषासहित होय एमरणादिस्वरूप भगवते लोकमां कह्यो तेमांटे लोकनुस्वरूप कहेछे । कोण यह लोक कहिये जीव अने अजीव छ द्रव्यरूप लोकछे धर्मास्तिकायादि जेहना अतनथी तेलोक कहिये एहज जीव अने अजीव एह छ द्रव्यनो अंतनथी । किम लोक शास्वतोछे । एहज जीवाजीवादि षड्द्रव्यरूपलोक शास्वतोछे । एह छद्रव्यमा जीवद्रव्य बोधिपावे तेहना बेप्रकार कहिया । एक नाणबोधि ते जिनधर्मनीप्राप्ति बोधिते आमाटे बोधिस्वरूप कहेछे । अवधिनाणादिकनी प्राप्ति । सम्यक्त

दर्शनाय द्विस्थानकानुपातेन सूत्रचतुष्टयमाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ बोधनबोधि र्जिनधर्मलाभं ज्ञानबोधि र्ज्ञानावरणक्षयोपशमभूता ज्ञानप्राप्तिः दर्शनबोधि र्दर्शन मोहनीय क्षयोपशमादिसम्पन्नः श्रद्धानलाभइतिएतद्वंतो द्विविधा बुद्धा एतेच धर्मतएव भिन्ना नधर्म्मितया ज्ञानदर्शनयोरन्योन्याविनाभूतत्वादिति ॥ एवमोहे मूढत्ति ॥ यथा बोधि र्बुद्धाश्च द्विविधोक्ता स्तथा मोहेमूढाश्च वाच्याइति तथाहि ॥ दुविहेमोहेपन्नत्ते त० नाणमोहेचेव दंसणमोहेचेव ॥ ज्ञानं मोहयत्या च्छादयतीतिज्ञानमोहो ज्ञानावरणादयःएवदंसणमोहेचेव सम्यग्दर्शनमोहादयइति॥ दुविहामूढाप०त० नाणमूढाचेव॥ ज्ञानमूढाउदितज्ञानावरणाः॥ दंस णमूढाचेव॥ दर्शनमूढा मिथ्यादृष्टयइति द्विविधोप्ययमोहो ज्ञानावरणादिकर्मनिबन्धन मितिसम्बन्धेन ज्ञानावरणादिकर्मणा मष्टाभिःसूत्रैर्द्वैविध्यमाह॥ नाणे त्यादि ॥ सुगमानिचैतानि नवरं ज्ञानमावृणोतीति ज्ञानावरणीय श्राहच सरउग्गयससिनिम्मल यरस्सजीवस्सछायणजमिह नाणावरणकम्मं पडोवमहोइए वतु ॥ १ ॥ देशज्ञानस्याभिनिबोधिकादि मावृणोतीतिदेशज्ञानावरणीयं सर्वज्ञान केवलाख्य मावृणोतीति सर्वज्ञानावरणीय केवलज्ञानावरणंहि आदित्यकल्प

हीचेव दुविहा बुद्धा प० तंजहा णाणबुद्धाचेव दंसणबुद्धाचेव एवं मोहे मूढा णाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नते तजहा देसणाणावरणिज्जेचेव सव्वणाणावरणिज्जेचेव दरिसणावरणिज्जेकम्मेएवंचेव वेयणिज्जे कम्मे

नीप्राप्ति ते दर्शनमोहनीना क्षयथी । नाणदर्शन सहितहोय तेबुद्ध कहिये ते बेप्रकारेछे । एक नाणबुद्ध बीजो दर्शनबुद्ध एक नाणदर्शनमांटे बेकहि या पणि जीवआश्रितपणांमांटे एकज नाणदर्शन एकनेजहोय एससारीछे। एमज मोहेमूढ मूर्ख नाणमोह दर्शनमोह । मोहते नाणावरणथी बंधा ये नाणावरणीना बेभेदछे एक देशनाणावरणी जे मतिनाणादिक ढांके । बीजो सर्वनाणावरणी जे केवलनाणढांके । दर्शनावरणपणि एमज देशथी

केवलज्ञानरूपस्य जीवस्याच्छादकतया सान्द्रमेघवृन्दकल्पमिति तत्सर्वज्ञानावरण मत्याद्यावरणन्तु घनाच्छादितादित्येषत्प्रभाकल्पस्य केवलज्ञानदेशस्य कटकुड्यादिरूपज्ञानावरणतुल्यमिति देशावरणमिति पठ्यतेच केवलणाणावरण दंसणछक्कचमोहवारसग [अनन्तानुबन्ध्यादीत्यर्थ.] तासव्वघाइसना भवतिमिच्छत्तवीसइमंति ॥ १ ॥ अथवा देशोपघातिसर्वोपघातिपड्डुकापेच्चया देशसर्वावरणत्वमस्य यदाह मइसुयनाणावरणं दंसणमोहचतदुपघाईणि तप्फड्डगाइ दुविहा इंदेशसव्वोवघाईणि ॥ १ ॥ सव्वेसुसव्वघाईसु हएसुदेशोपघाइयाणच भोगेहिमुच्चमाणो समए२अणतेहि ॥ २ ॥ पढमलभइणगारं एक्के कंवन्नमेवमन्नति कमसोविसुज्झमाणो लहइसमत्तनमोक्कारं ॥ ३ ॥ तथा दर्शनसामान्यार्थवोधरूप माहृणोतीति दर्शनावरणीयं उक्तंच दंसणसीलेजीवे दंसणघायंकरेइजं तम्म तपडिहारसमाणं दंसणवरणभवेजीवेत्ति ॥ ४ ॥ एवंदंसत्ति ॥ देशदर्शनावरणीय चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनावरणीयं सर्वदर्शनावरणीयं तु निद्रापञ्चकं केवलदर्शनावरणीयचेत्यर्थः भावनातु पूर्ववदिति ॥ २ ॥ तथावेद्यते अनुभूयते इति वेदनीय सात सुख तद्रूपतयावेद्यते यत्तत्तथा दीर्घत्व प्राकृतत्वात् इतरदेतद्विपरीत आहच महुलित्तनिसियकरवा लधारजीहाएजारिसलिहणं तारिसयवेयणिय सुहदुहउप्पायगमुणहत्ति ॥ १ ॥ मोहयतीति मोहनीय तथाहि जहमज्जपाणमूढो लोएपुरिसोपरव्वसोहोइ तहमोहेणविमूढो जोवोअपरव्वसोहोइत्ति ॥ १ ॥ दर्शनंमोहयतीति दर्शनमोहनीयं मि

दुविहे प० तं० सायावेयणिज्जेचेव असायावेयणिज्जेचेव मोहणिज्जे कम्मे दुविहे प० तं० दंसणमोहणिज्जे

चक्षु अचक्षु अवधिदर्शनावरण सर्वथी पांचनिद्रा केवलदर्शनावरण एबेभेद । एम बेदनीकर्म बेप्रकारे तेकहेछे । एक सातावेदनी तेसुख बीजो असातावेदिनी तेदुखमध्ये खरडीखडगधारा जेहवु । मोहनीकर्म बेप्रकारे कहियो ते कहेछे । दर्शनमोहनी ते मिथ्यात्वमोहनी मिश्रमोहनी समकित

थ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वभेदं चारित्रं सामायिकादि मोहयति यत्कषाय नोकषायभेदं तत्तथा एतिच यातिचें त्यायुः एतद्रूपच दुक्खंनदेइआउं नवियसुहंदेइच उसुविगईसु दुक्खसुहाणाधार धरेइदेहट्ठियंजीवंति ॥ १ ॥ अङ्गायुः कायस्थितिरूपं भावनातुप्राग्वत् भवायु र्भवस्थितिरिति विचित्रपर्यायै र्नमयतिप रिणमयति यज्जीवं तन्नाम एतत् स्वरूपञ्च जहचित्तयरोनिउणो अणेगरूवाइ कुणइरूवाइं सोहणमसोहणाइ चक्खुमचक्खेहिवण्णेहि ॥ १ ॥ तहनामंपिहुकम्मं अणेगरूवाइकुणइजीवस्स सोहणमसोहणाइं इट्ठाणिट्ठाणिलोयस्सत्ति ॥ २ ॥ शुभतीर्थंकरादि अशुभमनादेयत्वादीति पूज्योऽपूज्योयमित्यादि व्यपदेशरूपा ङ्गां वाचंनायते इति गोत्र स्वरूपञ्चास्येदं जहकुभारीभण्डाइं कुणइपुज्जेयराइं लोयस्स इयगोयकुणइजियं लोएपुज्जेयरावत्थुति ॥ १ ॥ उच्चैर्गोत्रंपूज्यत्वनिवन्ध न मितरत्तद्विपरीत ॥ ७ ॥ जीवञ्चार्थंसाधन चान्तराएति पतती त्यन्तरायमिदचैव जहरायादाणाइं नकुणइभंडारिएविकूलम्मि एवजेणंजीवो कम्मंतं

चेव चरित्तमोहणिज्जेचेव आउकम्मेदुविहे प० तं० अद्धाउएचेव भवाउएचेव णामकम्मेदुविहे प० तंजहा सुभणामेचेव असुभणामेचेव गोत्तेकम्मेदुविहे प० तं० उच्चागोएचेव णीयागोएचेव अंतराइएकम्मे दुविहे

मोहनी । चारित्रमोहनी ते सामायिकादिचारित्रने मूझववे कषाय नोकषायरूप । आउखो कर्म वेप्रकारे कहियो हडसरिखुं तेकहेछे । अद्धायु ते कायस्थितिरूप नरतिर्यंचने भवायु भवस्थितिरूप देवता नारकीने । नामकर्म बेप्रकारे कहियो चितारासरिखुं तेकहेछे । एक सुभनामकर्म तीर्थंकरादि बीजो असुभनामकर्म अनादेयनाम । गोत्रकर्म बेप्रकारे कुंभारसरिखुं तेकहेछे । उंचगोत्र ते पूजनीक नीचगोत्र ते निंदनीक । अंतरायकर्म ते बेप्रकारे भडारीसरिखो तेकहेछे । एक प्रत्युत्पन्नविनाशि जे उपनोअर्थ विणासाडे ते अंतराय । बीजुं आवतो अर्थलाभरुंधे ते पिहि

अंतरायंति ॥ १ ॥ पडुप्पन्नविणासिएचेवत्ति ॥ प्रत्युत्पन्नंवर्त्तमानं लब्धं वस्तु इत्यर्थो विनाशित मुपहतं येन तत्तथा पाठान्तरेण प्रत्युत्पन्नं विनाशयतीत्ये वंशीलं प्रत्युत्पन्नविनाशि चैवसमुच्चये इत्येकमन्यच्च पिधत्तेच निरुणद्धिच आगामिनोलब्धव्यस्यवस्तुनः पन्था आगामिपथ स्तमिति क्वचिदागामिपथानि तिदृश्यते क्वचित्त ॥ आगमपहंति ॥ तत्रच लाभमार्गमित्यर्थः इदंचाष्टविधं कर्म्म मूर्च्छाजन्यमिति मूर्च्छास्वरूपमाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं कण्ठ्य न वरं मूर्च्छामोहः सदसद्विवेकनाशः प्रेमरागो वृत्तिर्वर्त्तनरूपं प्रत्ययोवाहेतु र्यस्याः सा प्रेमवृत्तिका प्रेमप्रत्ययावा एवंद्वेषवृत्तिका द्वेषप्रत्ययावेति मूर्च्छोपात्त कर्म्मणश्च क्षयआराधनयेति तंसूत्रत्रयेणाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ सूत्रं कण्ठ्यं नवरं आराधनमाराधना ज्ञानादिवस्तुनो ऽनुकूलवर्त्तित्वं निरतिचारज्ञाना द्यासे वेति यावत् धर्म्मेण श्रुतचारित्ररूपेण चरन्तीति धार्म्मिकाः साधव स्तेषामिय धार्म्मिकी साचासावाराधनाचेति निरतिचारज्ञानादिपालना धार्म्मिकाराधना

प० तं० पडुप्पन्नविणासिणेचेव पिहतियआगामिपहं दुविहामुच्छा प० तंजहा पेज्जवत्तियाचेव दोसवत्ति याचेव पेज्जवत्तियामुच्छा दुविहा प० तं० माएचेव लोभेचेव दोसवत्तियामुच्छा दुविहा प० तं० कोहेचेव माणेचेव दुविहा आराहणा प० तं धम्मियाराहणाचेव केवलिआराहणाचेव धम्मियाराहणा दुविहा प०

तत्रआगामिअंतराय । एआठ कर्मथी मूर्च्छा तेमोह उपजे तेमाटे मूर्च्छानो स्वरूप कहेछे । बेप्रकारेमूर्च्छा एक प्रेम रागनी मूर्च्छा पुत्रधनादि द्वे षथी मूर्च्छा । प्रेमवर्तिमूर्च्छा बेप्रकारे एक माया कपटादि बीजी लोभथी धनादिकनीमूर्च्छा । द्वेषवर्तिकामूर्च्छा बेप्रकारे एक क्रोधथी एक मानथी । मूर्च्छादिकर्मनों क्षय धर्माराधनथी होय तेमाटे आराधना कहेछे । बेप्रकारे आराधनाकही । एक चारित्ररूप धर्मनें आराधिवो ते

केवलिनांश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलज्ञानिना मियं कैवलिकी साचासावाराधनाचेति कैवलिकाराधनेति ॥ सुयधम्मेत्यादौ ॥ विषयभेदेना राधनाभेद उक्तः केवलिआराहणेत्यादौतु फलभेदेनेति तत्र अंतोभवांत स्तस्य क्रियां तक्रिया भवच्छेद इत्यर्थं स्तद्धेतु र्या राधना शैलेशीरूपा सा अतक्रियेत्युपचारात् एषाच चायिकज्ञानिकेवलिनामेव भवति तथा कल्पेषु देवलोकेषु नतुज्योतिश्चारे विमानानि देवावासविशेषा अथवा कल्पाश्च सौधर्म्मादयो विमानानिच तदुप रिवर्त्ति ग्रैवेयकादीनि कल्पविमानानि तेषु उपपत्ति रुपपातो जन्म यस्याः सकाशात् सा कल्पविमानोपपातिका ज्ञानाद्याराधना एषाच श्रुतकेवल्यादी ना भवतीति एवफलाचेय मनतरफलद्वारेणोक्ता परपरयातु भवांतक्रियानुपातिन्येवेति ज्ञानाद्याराधनानतरमुक्ता तत्फलभूताश्च तीर्थकरा स्तेर्वा सासम्यक्त्व ता देशितावेति तीर्थकरान् द्विस्थानकानुपातेनाह ॥ दोतित्थगरेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय कण्ठ्य नवर पद्म रक्तोत्पल तद्व द्गौरौ रक्ताविल्यर्थः तथा चन्द्रगौरौ चद्रसु

तंजहा सुयधम्माराहणाचेवं चरित्तधम्माराहणाचेव केवलिआराहणा दुविहा पन्नत्ता तंजहा अंतकिरियाचेव कप्पविमाणोववत्तियाचेव दोतित्थगरानीलुप्पलसमावन्नेणं प० तं० मुणिसुव्वएचेव अरिठ्ठणेमीचेव दोतित्थ

धार्मिकीआराधना केवलीनें श्रुत अवधि मनपर्यव केवलनाणरूप श्रुताराधना । धार्मिकीआराधना बेप्रकारें कही श्रुतधर्म ते सिद्धांतनी आरा धना चारित्रधर्म पचमहाव्रतादिकनी आराधना सेवना । केवलीनी आराधना बेप्रकार तेकहेछे । अंतक्रिया तेतवनो उच्छेद मोक्षजाय क्षायिक केवलनाणी जेहथी नवग्रैवेयक अनुत्तरविमाने उपजे ते कल्पविमानोववत्तिया श्रुतकेवली प्रमुखने । बे तीर्थंकर नीलाकमलसरीखा वर्णंकरी ॥ मुनिसुव्रत बीसमां तथा अरिष्टनेमि बावीसमां । बेतीर्थंकर प्रियंगुवृक्षसम वर्णथी नीला कहिया मल्लिनाथ उगणीसमां तथा पार्श्वनाथ तेवीस

भाणित्यर्थः गाथात्रयं पउमाभवासुपुज्जा रत्तासमिपुप्फदंतससिगोरा सुव्वयनेमीकाला पासोमल्ली पियंगाभन्ति ॥ १ ॥ तीर्थंकरस्वरूपमनंतरमुक्तं तीर्थकर्तृ
त्वाच्च तीर्थंकरा स्तीर्थंच प्रवचन मतः प्रवचनैकदेशस्य पूर्वविशेषस्य विज्ञानकारकतासाधनाय ॥ सच्चप्पवाएत्यादि ॥ सद्भ्यो जीवेभ्यो हितः सत्यः संयमः सत्यवच
नं वा तद्यत्र सभेदः सप्रतिपक्षश्च प्रकर्षेणोच्यते ऽभिधीयते तत् सत्यप्रवादं तच्च तत् पूर्वंच सर्वश्रुतात् पूर्वंक्रियमाणत्वादिति सत्यप्रवादपूर्वं तस्य षष्ठं
तत्परिमाणंच एकापदकोटी षट्पदाधिका तस्य द्वेवस्तुनी वस्तुच तद्विभागविशेषो ऽध्ययनादिवदिति अनन्तरं षष्ठपूर्वस्वरूप मुक्तं अधुना पूर्वशब्द
साम्यात् पूर्वभद्रपदानक्षत्रस्वरूपमाह ॥ पुव्वेत्यादि ॥ कण्ठ्यं नक्षत्रस्वाता तारास्वरूपं सूत्रद्वयेणाह ॥ उत्तरेत्यादि ॥ कण्ठ्यं नक्षत्रयस्य शेषाः सम

गरा पियंगुसमावण्णेणं प० तं० मल्लीचेव पासेचेव दोतित्थगरापउमगोरा वण्णेणं प० तं० पउमप्पहेचेव
वासुपुज्जेचेव दोतित्थगराचंदगोरा वण्णेणं प० तं० चंदप्पभेचेव पुप्फदंतेचेव सच्चप्पवायपुव्वस्सणं दुवेवत्थू
प० पुव्वभद्दवयानक्खत्ते दुतारे प० उत्तरभद्दवयानक्खत्ते दुतारे प० एवंपुव्वफग्गुणी उत्तरफग्गुणी अंतोणं

मा ॥ बेतीर्थंकर कमलसरिखागोरा वर्णेकरी तेकह्याछे । पद्मप्रभ छठा वासुपूज्य बारमां ॥ बेतीर्थंकर चंद्रसरिखागोर कह्या वर्णेकरी । तेकहेछे
चंद्रप्रभ आठमा तथा पुष्पदंत बीजुंनाम सुविधिनाथ नवमांजिनवर ॥ एह तीर्थंकर तीर्थना करनार तेतीर्थंकर सत्यप्रवाद पूर्वछठुं जिहां स
त्यवादछे तेप्रवचन तेहनों एकप्रदेश तेनवदहछे तेवतीपूर्वनो अधिकार कहेछे तेसत्यप्रवादपूर्वना बेअध्ययनकह्या । पूर्वशब्दमांटे पूर्वाभाद्रप
दनक्षत्रना बेताराछे । एमज उत्तराभाद्रपद नक्षत्रना बेताराछे ॥ एम पूर्वाफाल्गुनी तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रना बेतारा कह्या ॥ नक्षत्र

द्राखेति समुद्रद्विस्थानकमाह ॥ अंतोणमित्यादि ॥ अंतर्म्मध्ये मनुष्यक्षेत्रस्य 'मनुष्योत्पत्त्यादिविशिष्टाकाशखण्डस्य पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाणस्य शेष कण्ठ्य मिति मनुष्यक्षेत्रप्रस्तावा द्भरतक्षेत्रोत्पन्नोत्तमपुरुषाणां नरकगामितया द्विस्थानकावतारमाह ॥ दोचक्कवट्टीत्यादि ॥ द्वौ चक्रेण रत्नभूतप्रहरणविशे षेण वर्त्तितुशीलं ययोस्तौ चक्रवर्त्तिनौ ॥ कामभोगत्ति ॥ कामौच शब्दरूपे भोगाश्च गन्धरसस्पर्शाःकामभोगा' अथवा काम्यतइतिकामा मनोज्ञाइत्यर्थः तेचते भुज्यतइति भोगाश्च शब्दादय इति कामभोगाः नपरित्यक्ता स्ते यकाभ्यां तौ तथा ॥ कालमासेत्ति ॥ कालस्य मरणस्य मास उपलक्षणंचैत त्पक्षाहोरात्रादे स्ततश्चकालमासे मरणावसर इतिभावः कालमरण कृत्वा ऽधःसप्तम्यां पृथिव्यां तमस्तमायामित्यर्थः अधोग्रहणविना सप्तमी उपरिष्टा च्चिन्त्यमानारत्नप्रभा पि स्या दित्यधोग्रहण अप्रतिष्ठाने नरके पञ्चानां मध्यमे नैरयिकत्वेनोत्पन्नौ सुभूमोष्टमो ब्रह्मदत्तश्चद्वादश स्तत्रच तयो स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमानि स्थितिरि ति नारकानाञ्च सङ्ख्येयकालापि स्थिति र्भवतीति भवनपत्यादीनामपि ता न्दर्शयन् पञ्चसूत्रीमाह ॥ असुरेत्यादि ॥ असुरेन्द्रौ चमरवलौ तद्वर्जितानान्तत्सा

मणुस्सखेत्तस्स दोसमुद्दा प० तं० लवणेचेव कालोदेचेव दोचक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे का लंकिच्चा अहेसत्तमाएपुढवीए अप्पइठाणेनरए नेरइयत्ताए उववन्ना तंजहा सुभूमेचेव बंभदत्तेचेव असुरिं

सहित द्वीपसमुद्रछे तेमाटे पैतालीसलाख योजन मनुष्यक्षेत्रछे तेहमां बेसमुद्रछे तेकहेछे । एक लवणसमुद्र बीजो कालोदधि समुद्र ॥ मनुष्य क्षेत्रमा बेचक्रवर्त्तिना प्रस्तावथी भरतक्षेत्रमां ऊपना उत्तमपुरुष बे नरकमां गया कामभोग छाडयाविना कालकरी आयूपूर्णकरी हेठे सातमी नरकपृथिवीये अप्रतिष्टाननाम नरकावासानें विषे नारकीपणे ऊपना तेतीससागरना आऊखानेविषें । एक सुभूम चक्रवर्ति बीजो ब्रह्मदत्त

मानिकवर्जितानान्तदन्येषांच भवनवासिना न्देवाना मसुरेन्द्रवर्जना न्नागकुमारादीन्द्राणामित्यर्थः उत्कर्षतोद्वेपल्योपमेकिंचिदूनेस्थितिः प्रज्ञप्ता उक्तंच चम रवलि सारमहियं सेसाणसुराणआउयवुच्छ दाहिणदिवड्ढपलियं दोदेसूणुत्तरिल्लाण ॥ १ ॥ उत्कर्षत एवैतत् जघन्यतस्तु दशवर्षसहस्राणीति आहच दसभव णवणयराण वाससहस्साठिईजहन्नेण पलिओवमसुक्कोसं बतरियाणवियाणेज्जत्ति ॥ १ ॥ शेष सुगम नवर सौधर्मादिष्वियस्थितिः दोसाहिसत्तसाहिय ४ दस ५ चोद्दस ६ सत्तरेव ७ अयराइं सोहम्माजासुक्को तदुवरिइक्किक्कमारोविवित्ति ॥ १ ॥ इयमुत्कृष्टा जघन्यातु पलियअहिय २ दोसा र ३ साहिया ४ सत्त ५ दसय ६ चोद्दसय ७ सत्तरससहस्सारे ८ तदुवरिइक्किक्कमारोविवित्ति ॥ १ ॥ देवलोकप्रस्तावात् स्त्यादिद्वारेण देवलोकद्विस्थानकावतारं सप्तसूत्र्याह ॥ दोसुइ

दवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं देसूणाइं दोपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मेकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दोसा गरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ईसाणेकप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं दोसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दोसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता माहिंदेकप्पे देवाण जहन्नेणं साइरेगाइं दोसागरोव

बारमो चक्रवर्त्ति ॥ नारकीनी असख्यातकालनी स्थितिछे तिम भवनपतीनी पणि तेकहेछे । असुरेंद्र ते चमरेंद्र बलेंद्र वर्जीने बीजा नागकुमा रेंद्रादिकनो उत्कृष्टो देशेऊणो बे पल्योपमनो आऊखो कहियो जघन्य दशहजारवर्षनो चमरेंद्र तथा बलेंद्रनी उत्कृष्टी सागरोपमनी झाझेरीथिति छे ॥ एम सौधर्मदेवलोके देवतानी उत्कृष्टी वेसागरोपमनी थितिकही ॥ ईशानदेवलोके उत्कृष्टी झाझेरी बेसागरोपमनी थितिकही ॥ सनत्कु मार तीसरेदेवलोके देवताने जघन्य बे सागरोपमनी थितिकही ॥ माहेंद्रदेवलोके देवतानी जघन्य झाझेरी बे सागरोपमनी थितिकही ॥ देव

त्यादि॥ कल्पयो र्देवलोकयो स्त्रिय' कल्पस्त्रियो देव्य परतो नसन्ति गेवं कण्व्यमिति नवरं॥ तेउलेसत्ति॥ तेजोरूपा लेश्या: येपान्ते तेजोलेश्या स्तेच सौध र्मेशानयोरेव नपरत: तयोश्च तेजोलेश्याएव नेतरे आहच किगहानीलाकाऊ तेऊलेसायभवणवंतरिया जोइरासोहम्मीसाणे तेजलेसामुणीयव्वत्ति॥ १॥ ॥ कायपरियारगत्ति॥ परिचरन्ति सेवते स्त्रियमिति परिचारका: कायत: परिचारका. कायपरिचारका एवमुत्तरत्रापि नवर स्पर्शादिपरिचारका: स्पर्शादे रेवोपशान्तवेदोपतापा भवंतीत्यभिप्राय. आनतादिषु चतुर्षु कल्पेषु मन:परिचारका देवा भ ग ोति वक्तव्ये विज्ञानकानुरोधात् दोइन्देत्युक्त

माइंठिई प० दोसुकप्पेसु कप्पत्थियाउ पन्नत्ताउ तं० सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसुकप्पेसुदेवा तेउलेस्सा पन्नत्ता तंजहा सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसुकप्पेसुदेवा कायपरियारगा पन्नत्ता तंजहा सोहम्मेचेव ईसाणे चेव दोसुकप्पेसुदेवा फ़ासपरियारगा पन्नत्ता तंजहा सणंकुमारेचेव माहिंदेचेव दोसुकप्पेसुदेवा रूवपरि यारगा पन्नत्ता तजहा बंभलोएचेव लतएचेव दोसुकप्पेसुदेवा सद्दपरियारगा पन्नत्ता तंजहा महासुक्केचेव

ताना अधिकारमांटे देवीनो अधिकार कहेछे ॥ बे देवलोकने विषे देवलोकनीस्त्री देवागनाछे सौधर्मदेवलोके ईशानदेवलोके। बेदेवलोके देवताने तेजोलेश्या कही सौधर्मदेवलोके तथा ईशानदेवलोके ॥ बेदेवलोके देवताने कायायेकरी देवागनानो भोगछे मनुष्यनीपरे। सौधर्मदेवलोके ईशान देवलोके। बे देवलोके देवताने फरसथी आलिगनादिकथी स्त्रीनोभोग कहियो सनत्कुमार तीसरे देवलोके माहेंद्र चउथे देवलोके। बेदेवलोके देवता नेरूपदीठाथी भोगपूर्णथाय ब्रम्ह पाचमैदेवलोके लातकछठेदेवलोके ॥ बेदेवलोके देवता देवागनाना शब्दथी भोगसेवेछे महाशुक्र सातमैदेवलोके

७॥

आनतादिषु द्वाविन्द्राविति गाथाच दोकायप्पवियारा वप्पाफरिसेणदोन्निदोरूवे सद्देदोचउरोमणे उवरिंपरियारणानत्थित्ति ॥ १ ॥ द्वयञ्च परिचारणा कर्म्मत. कर्म्मच जीवाः स्वहेतुभिः कालत्रयेपि चितायचाख्यं कुर्वंतोत्याह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ सूत्राणिषट् सुगमानि नवरं जीवा जंतवो यंयाक्कालद्वारि द्वयोः स्थानयो राश्रययोः त्रसस्थावरकायलक्षणयोः समाहारो द्विस्थानं तत्रमिथ्यात्वादिभिर्येनिवर्त्तिताः सामान्येनोपार्जिताः वक्ष्यमाणावस्थाषट्कयोग्योक्कताः द्वयोर्वास्थानयो र्निर्वृत्ति र्येषान्ते द्विस्थाननिर्वृत्तिका स्तान् पुद्गलान् कार्म्मणान् पापकर्म्मघातिकर्म्मसर्वमेववा ज्ञानावरणादि तद्भावस्तत्ता तया पापकर्म्मतया तद्रूपतयेत्यर्थः चितवंतीवा अतीते काले चिन्वति वा सम्प्रति चेष्यंतिवा अनागते काले केचिदिति गम्यते चयनं कषायादिपरिणतस्य कर्म्मपुद्गलोपादानमात्रं उपचयनतु चित्तस्या बाधाकाल मुक्त्वा ज्ञानावरणीयादितया निषेकः सचैव प्रथमस्थितौ बहुतरं कर्म्मदलिकं निषिञ्चति ततो द्वितो

सहस्सारेचेव दोइंदामणपरियारगा पण्णत्ता तंजहा पाणएचेव अच्चुएचेव जीवाणंदुठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणंसुवा चिणतिवा चिणिस्संतिवा तजहा तसकायनिव्वत्तिएचेव थावरकायनिव्वत्तिए

सहस्रार आठमैंदेवलोकै ॥ बेइद्रने मनथी देवागनाना भोगनी सेवाछे प्राणतेद्र नवमा दसमा देवलोकनो धणी अच्युतेद इग्यारमा बारमानोधणी नवमा दशमा इग्यारमा बारमा देवलोके मनथीभोगवेछे पणि बेठाणाना अधिकारमांटे इंद्र कहिया ॥ एभोगादिकनी इच्छा ते जीवने बे थानकै ऊपना कर्मथी ऊपनाजेछे तेमाटै पापकर्मनुं स्वरूप कहेछे । राजा मिथ्यात्वादिकै करी पापकर्मपणे पुदगलनो लेवुं चिणवु कहिये चिणता हुया अतीतकाले वर्तमानकाले चिणेछै आगामिकाले चिणस्ये । तेकहेछे । त्रसकायनिवर्तित जे बेइद्रियादिक त्रसकायमा उपजीने पापकर्मनो जो

यायां विशेषहीनमेव ॥ जावुक्कोसियाएविसेसहीणनिसिचइत्ति ॥ बन्धनन्तु तस्यैव ज्ञानावरणादितया निषिक्तस्य पुनरपि कषायपरिणतिविशेषा न्निकाचन मिति उदीरणंतु अनुदयप्राप्तस्य करणेनाकृष्योदये प्रक्षेपणमिति वेदन मनुभवः निर्जरा कर्म्मणो ऽकर्म्मताभवनमिति कर्म्मच पुद्गलात्मकमिति पुद्गलान् द्रव्य क्षेत्रकालभावे द्विस्थानकावतारेण निरूपयन्नाह ॥ दुपएसीत्यादि ॥ सूत्रत्रयोविंशतिः सुगमाचेय नवरं एवं यावत्करणात् दुसमयठिइएइत्यादिसूत्राण्येकावि शति र्वाच्यानि कालं पंचद्विपचाष्टभेदा वर्णगन्धरसस्पर्शांश्चा श्रित्येति वाचनाचैव ॥ दुसमयठियापोग्गलेत्यादि ॥ द्विस्थानकस्यचतुर्थोद्देशक. समाप्तः ॥

चेव उवचिणसुवा उवचिणंतिवा उवचिणिस्संतिवा बंधिंसुवा बंधंतिवा बंधिस्संतिवा उदीरिंसुवा उदीरंतिवा उदीरिस्संतिवा वेदिंसुवा वेदिंतिवा वेदिस्संतिवा णिज्जरिंसुवा णिज्जरिंतिवा णिज्जरिस्संतिवा दुपएसियाखंधा ऽणंता पण्णत्ता दुपएसोगाढा पोग्गला ऽणंता प० एवंजाव दुगुणलुक्खापोग्गला ऽणंता

गिवुं तथा थावरकायनिर्वर्तित जे पृथिव्यादि पांचथावरमां अवतरी पापकर्मनो भोगिवुं एहवाकर्मपुदगल गृह्यैछे ॥ एम गहिया कर्मनो आवाधा कालमुंकीनें धापवुंविशेषथी तेमाथी हीनकरवुं एतले आबाधाकाल जेतलुंओछु तेउपचय अतीतकालेकीधा तेकर्मनुं कषायथी निकाचवुं तेबंध तेवां धताहुया बांधेवै बाधस्ये । एमज त्रसथावरपणां मै उदीरण जेउदयनथीआव्या तेकारणथी बलात्कारे उदयआणे उदीरताहुया उदीरैछे उदीरसे वेदवु तेभोगिवुं वेदताहुया वेदैछे वेदसे निर्जरा जे भोगव्यांपछी कर्मते अकर्मथाय निर्जरताहुया निर्जरेछे निर्जरसे त्रिणकाले एजीव त्रसथावरपणे ॥ कर्मते पुदगलरूपछे तेपुदलनुं स्वरूपकहैछे । बेप्रदेसियापुदगलनाखंध अनंतछे । बेआकाशना प्रदेशने अवगाही आश्रयीरहियाछे एहवा अनंतापुद

तत्समाप्तौच श्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाख्यतृतीयाङ्गविवरणे द्वितीयमध्ययनं द्विस्थानकाभिधानं समाप्तमिति ॥ श्लोका. १६७५ ॥ २ ॥ ॥
द्विस्थानकानन्तरं त्रिस्थानकमेवभवति संख्याक्रमप्रामाण्यादित्यनेन संबंधेनायातस्य चतुरनुयोगद्वारस्य चतुरुद्देशकस्यास्य तत्रापि द्वितीयाध्ययनान्त्योद्देशके
जीवादिपर्याया उक्ता अस्याप्यध्ययनस्य प्रथमोद्देशके तएवाभिधीयतइत्येवं संबंधस्ये तत् प्रथमोद्देशकस्य तत्राप्यनन्तरोद्देशकान्त्यसूत्रे पुद्गलधर्मा उक्ता एतत्
प्रथमसूत्रेतु जीवधर्मा उच्यत इत्येवसंबंधस्ये तदादिसूत्रस्य ॥ तओइंदेत्यादि ॥ व्याख्या साच सुकारैव नवरं मिंदनादैश्वर्या दिंद्रः नामसंज्ञा तदेव यथार्थ मिं
द्रेत्यक्षरात्मक मिंद्रोनामेंद्रो ऽथवा सचेतनस्या चेतनस्यवा यस्येंद्रइत्ययथार्थं नामक्रियते सनामनामवतोरभेदोपचारात् नामचासाविंद्रश्चेति नामेंद्रो ऽथवा
नाम्नैवेंद्र इन्द्रार्थ शून्यत्वान्नामेंद्रइति नामलक्षणं पुनरिदं यद्वस्तुनोभिधानं स्थितमन्यार्थेतदर्थनिरपेक्षः पर्यायानभिधेयं चनामयादृच्छिकञ्चतथेति ॥ १ ॥
अयमर्थः यद्वस्त्वित्यादिना यथार्थ मिंद्रइत्याद्युक्तं स्थित मित्यादिना त्वयथार्थं गोपालादा विंद्रेत्यादि यादृच्छिक मनर्थकं डित्थादीति अथवा यदिन्दनाद्यर्थ
निरपेक्ष गोपालादिवस्तुन इन्द्रइत्यादिक मभिधानं यथार्थतया शक्रादा वन्यत्रार्थे स्थितं तन्नामेति इन्द्रादिवस्तुनोवा अभिधान मिंदनाद्यर्थनिरपेक्ष सद्गो
पालादा वन्यत्रार्थे स्थितं नामेति तथा इन्द्राद्यभिप्रायेण स्थाप्यतइति स्थापना लेप्यादिकर्म सैवेंद्रः स्थापनेंद्र इन्द्रप्रतिमा साकारस्थापनेंद्रः अक्षादिन्यास

पण्णत्ता ॥ दुठाणंसम्मत्त ॥ २ ॥ तओ इंदापण्णत्ता तंजहा णामिंदे ठवणिंदे दव्विंदे

गलछे । एम यावत् बेगुणलूखा पुदगल अनंता कह्या भगवंतें ॥ इति द्विस्थानकनामे बीजूअध्ययन पूरोथयो ॥ २ ॥ ॥
नामथी इंद्र जे वस्तुनो नाम इंद्र । इंद्रनी प्रतिमा ते थापना इंद्र । जे भव्यजीव आवतेभवे इंद्र थाय ते द्रव्येंद्र । अक्षरथी इंद्रसिद्द अथवा वस्तुनो

स्त्वितरइति स्थापनालक्षणमिदं यत्तुतदर्थवियुक्तं तदभिप्रायेणयच्चतत्करणि लेप्यादिकर्मतत्स्था पनेतिक्रियते स्वकालचेति ॥ १ ॥ तथा लेप्पगहत्थीहत्थित्ति एस सब्भावियाभवेठवणा होइअसभावोपुणहत्थित्तिनिरागिईअक्खोत्ति तथा द्रवतिगच्छति तांस्तान् पर्यायान् द्रूयतेवा तैस्तैः पर्यायै र्द्रोर्वासत्ताया अवयवो विकारोवा वर्णादिगुणानां द्रावः समूहइतिद्रव्य तच्च भूतभावंभाविभावचेति आहच दवएदुयतेदोरव यवोविगारोगुणाणसदावो दव्वंभव्वंभाव स्सभुयभाव चजजोगति ॥ १ ॥ तथा भूतस्यभाविनोवा भावस्यहिकारणंतुयल्लोके तत्द्रव्यतत्त्वज्ञैः सचेतनाचेतनगदित ॥ २ ॥ तथा अनुपयोगो द्रव्य मप्रधानंचेति तत्र द्रव्यचासाविन्द्रश्चेति द्रव्येंद्रः सच द्विधा आगमतो नोआगमतश्च अत्रागमतः खल्वागममधिकृत्य ज्ञानापेक्षयेत्यर्थः नोआगमतस्तु तद्विपर्यय माश्रित्यतत्रा गमतइन्द्रशब्दोध्येता नुपयुक्तो द्रव्येंद्रो ऽनुपयोगो द्रव्यमितिवचनात् अयमेवार्थो मगल माश्रित्य भाष्येउक्त स्तथाहि आगमओणुवउत्तो मगलसद्दाणुवासिओ वत्ता तन्नाणलद्धिजुत्तो विणोवउत्तोत्तिनोदव्वंति ॥ १ ॥ तथा नोआगमत स्त्रिविधो द्रव्येंद्र स्तद्यथा ज्ञशरीरद्रव्येन्द्रो भव्यशरीरद्रव्येन्द्रो ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यति रिक्तो द्रव्येंद्रश्चेति तत्रज्ञस्य शरीर ज्ञशरीरमेव द्रव्येन्द्रः ज्ञशरीरद्रव्येंद्र एतदुक्तंभवति इंद्रपदार्थज्ञस्य यच्छरीर मात्मरहित न्तदतीतकालानुभूत तद्भावानुवृत्त्या सिद्धशिलातलादिगतमपि घृतघटादिन्यायेन नोआगमतो द्रव्येन्द्रइति इद्रज्ञानशून्यत्वाच्च तस्येह सर्वनिषेधएवनोशब्दः तथा भव्यो योग्य इन्द्रशब्दार्थं ज्ञास्यति योनतावद्विजानाति सभव्यइति तस्य शरीर भव्यशरीर न्तदेवभव्येंद्रो भव्यशरीरद्रव्येन्द्र अयमत्रभावार्थो भाविनींद्रवृत्ति मङ्गीकृत्ये न्द्रोपयोगाधारत्वा न्मधुघ टादिन्यायेनैव तद्बालादिशरीर भव्यशरीरद्रव्येन्द्रइति नोशब्द. पूर्ववत् उक्तंच मङ्गलमधिकृत्य मगलपयत्थजाणय देहोभव्वस्सवासजीवोवि नोआगमओ दव्व आगमरहिओत्तिजभणियति ॥ १ ॥ ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तद्रव्येंद्रो भावेन्द्र कार्येष्व व्याप्रुत आगमतो नुपयुक्तद्रव्येद्रवत् तथा यच्छरीर मात्मद्र व्यम्वा तीतभावेंद्रपरिणाम न्तच्चोभयातिरिक्तद्रव्येंद्रो ज्ञशरीरद्रव्येंद्रवत् तथा योभावेंद्रपर्यायशरीरयोग्यः पुद्गलराशि यंच्च भावीद्रपर्याय मात्मद्रव्य तदप्युभया

तिरिक्तोद्रव्येंद्रः भव्यशरीरद्रव्येंद्रवत् सचा वस्थाभेदेन त्रिविध स्तद्यथा एक भविको बद्धायुष्को ऽभिमुखनामगोत्रश्चेति तत्रैकस्मिन् भवेतस्मि न्नेवातिक्रान्ते भावी एकभविको योनन्तरएव भावेन्द्रतयो त्पत्स्यतेइति सचोत्कर्षत स्त्रीणि पल्योपमानि भवन्ति देवकुर्वादिमिथुनकस्य भवनपत्यादीन्द्रतयो त्पत्तिसंभ वादिति तथा सएवेन्द्रायुर्बन्धानन्तर मबद्धमायुरनेनेति बद्धायुरुच्यते सचोत्कर्षतः पूर्वकोटित्रिभाग यावद् स्मात्परतः आयुष्कबन्धाभावात् तथा आभिमुखे सन्मुखे जघन्योत्कर्षाभ्यां समयान्तर्मुहूर्त्तानन्तरभावितयानामगोत्रे इन्द्रसम्बन्धिनी यस्यस तथा तथा भावैश्वर्ययुक्ततीर्थकरादिभावेंद्रापेक्षया ऽप्रधानत्वा च्छक्रादिरपि द्रव्येन्द्रएव द्रव्यशब्दस्या प्रधानार्थेपि प्रवृत्तेरिति भावेंद्रस्त्विह त्रिस्थानकानुरोधा न्नोक्त स्तल्लक्षणञ्चेद भाव मिन्दनक्रियानुभवनलक्षणपरिणा म माश्रित्येन्द्रः इन्दनपरिणामेन भवतीतिवा सचासाविन्द्रश्चेति भावेंद्रो यदाह भावोविवक्षितक्रिया नुभूतियुक्तोहिवैसमाख्यातः सर्वज्ञैरिन्द्रादिव दिहें दनादिक्रियानुभवात् ॥ १ ॥ सच द्विधा आगमतो नोआगमतश्च तत्रागमत इन्द्रज्ञानोपयुक्तो जीवो भावेंद्रः कथ मिहें द्रोपयोगमात्रा त्तन्मयता वगम्य ते नह्यग्निज्ञानोपयुक्तो माणवको ग्निरेव दहनपचनप्रकाशनाद्यर्थक्रियाप्रसाधकत्वाभावादितिचेन्ना भिप्रायापरिज्ञानात् संविद्ज्ञानमवगमो भाव इत्य नर्थान्तर न्तत्रार्थाभिधानप्रत्यया स्तुल्यनामधेयाइति सर्ववादिना मविसंवादस्थानं यथाकोयंघटः किमयमाह घटशब्दंकिमस्यज्ञानघटइति अग्निरितिच यज्ज्ञानं तदव्यतिरिक्तो ज्ञाता तल्लक्षणो गृह्यते अन्यथा तज्ज्ञाने सत्यपि नोपलभ्येता ऽतन्मयत्वात् प्रदीपहस्तान्धवत् पुरुषान्तरवद्वा नचानाकारं त त्पदार्थान्तरव द्विवक्षितं पदार्थापरिच्छेदप्रसङ्गात् वन्ध्याद्यभावश्च ज्ञानाज्ञानसुखदुःखपरिणामान्यत्वात् आकाशव न्नचानलः सर्वएव दहनाद्यर्थक्रियाप्र साधको भस्मच्छन्नाग्निना व्यभिचारादिति ग्राह प्रसङ्गेन नोआगमतो भावेन्द्र इन्द्रनामगोत्रे कर्म्मणीवेदयन् परमैश्वर्यभाजनं सर्व्वनिषेधवचनत्वा न्नोश ब्दस्य यत स्सच नेन्द्रपदार्थज्ञान मिन्द्रव्यपदेशनिबन्धनतया विवक्षित मिन्दनक्रियायाएवच विवक्षितत्वात् अथवा तथाविधज्ञानक्रियारूपोय(न्) परिणामः

सनागमएव केवलो नचानागम इत्यतो मिश्रवचनत्वा न्नोशब्दस्य नोआगमत इत्याख्यायतइति ननु नामस्थापना द्रव्येष्विन्द्राभिधान विवक्षितभावशू न्यत्वात् द्रव्यत्वंच समान वर्त्तते ततश्च कएषाविशेषः आहच अभिहाणंदव्वत्तंतदत्थसुन्नत्तणचतुल्लाइं कोभाववज्जियाण नामाईणपइविसेसोत्ति ॥ १ ॥ अत्रोच्यते यथाहि स्थापनेन्द्रेखलु इन्द्राकारो लक्ष्यते तथाकर्तुः सद्भूतेन्द्राभिप्रायो भवति तथा द्रष्टु स्तदाकारदर्शना दिन्द्रप्रत्यय स्तथा प्रणतिकृतधियश्च फलाथिनः स्तोतुं प्रवर्त्तंते फलच प्राप्नुवन्ति केचिद्देवतानुग्रहा नतथा नामद्रव्येन्द्रयोरिति तस्मात् स्थापनाया स्तावदित्थ भेदइति आहच आगारा भिप्पाओ बुद्धीकिरियाफलचपाएण जहदीसइठवणिंदे नतहानामिंददव्विदेत्ति ॥ १ ॥ यथाच द्रव्येन्द्रो भावेन्द्रकारणतां प्रतिपद्यते तथोपयोगा पेक्षाया मपि तदुपयोगतामादय त्यवाप्तवांश्च नतथा नामस्थापनेन्द्रा वित्ययं विशेषइति आहच भावस्सकारणं जह दव्वभावोयतस्सपज्जाओ उवओगप रिणइमओ नतहानामनवाठवणत्ति ॥ १ ॥ उक्तानामस्थापनाद्रव्येन्द्राः इन्द्रानी भावेन्द्र निस्थानकावतारेणाह ॥ तओइंदेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर ज्ञानेन ज्ञा नस्य ज्ञानेवा इन्द्रः परमेश्वरो ज्ञानेन्द्रो अतिशयवत् श्रुताद्यन्यतरज्ञानवशविवेचितवस्तुविस्तरः केवलीवा एवंदर्शनेन्द्रः क्षायिकसम्यग्दर्शनी चारित्रेंद्रो यथा ख्यातचारित्रः एतेषाच भावेन सकलभावप्रधानक्षायिकलक्षणेन विवक्षितक्षायोपशमिकलक्षणेनवा भावतः परमार्थतो वेन्द्रत्वात् सकल संसार्यप्राप्तपूर्वगु णलक्ष्मीलक्षणपरमैश्वर्ययुक्तत्वात् भावेन्द्रतावसेयेति उक्त माध्यात्मिकैश्वर्यापेक्षया भावेन्द्रत्रैविध्य मथवा ह्यैश्वर्यापेक्षयातदेवाह ॥ तओइंदेत्यादि ॥ भावितार्थ

॥ तओ इंदा पन्नत्ता तंजहा णाणिंदे दंसणिंदे चरित्तिंदे ॥

धणी गोपेंद्र भूमीन्द्र इत्यादि नाम ॥ वली त्रिण प्रकारे इद्र कहिया तेकहेछे । नाणेंद्र केवली पूर्ण नाणवंत । दर्शनेंद्र ते क्षायिक समकितनोधणी

नवरं देवा वैमानिकाः ज्योतिष्कवैमानिकावा रूढेः असुरा भवनपतिविशेषा भवनपतिव्यन्तरावा सुरपर्युदासात् मनुजेंद्र शक्रवर्त्यादिरिति त्रयाणामप्येषां वै क्रियकरणादि शक्तियुक्ततयें द्रत्वमिति विकुर्व्वणानिरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रत्रयीकण्ठ्या नवरं वाह्यान् पुद्गलान् भवधारणीयशरीरा नवगाढचेत्र प्रदेशवर्त्तिनो वैक्रियसमुद्घातेन पर्यादाय गृहीत्वे काविकुर्व्वणा क्रियतइति शेष स्थानपर्यादाय यातु भवधारणीयरूपैव सा न्या यत्पुन र्भवधारणीयस्यैव कि ञ्चिद्विशेषापादनं सा पर्यादाया प्यपर्यादायापीति तृतीया व्यपदिश्यते अथवा विकुर्व्वणा भूषाकरण तत्र वाह्यपुद्गला नादाया भरणादीन् अपर्यादाय केश ॥ टी

तउ इंदा पस्सत्ता तंजहा देविंदे असुरिंदे मणुस्सिंदे तिविहा विगुव्वणा पस्सत्ता
तंजहा वाहिरएपोग्गले परिच्छाइत्ता एगाविगुव्वणा वाहिरएपोग्गले अपरिच्छाइत्ता
एगा विगुव्वणा वाहिरएपोग्गले परियाइत्तावि अपरियाइत्तावि एगाविगुव्वणा ॥

चरित्रेंद्र यथाख्यातचारित्र ॥ वली त्रिण इद्र कह्यिा तेकहेछे । देवेंद्र जोतिषी वैमानिक ना । असुरेंद्र भवनपती व्यंतर ना । मनुष्येंद्र चक्रवर्त्यादि एह त्रिणने वैक्रियविकुर्वणा होय तेमाटे विकुर्वणानो अधिकार कहेछे । त्रिणप्रकारे विकुर्वणा कही तेकहेछे । भवधारणी जे मूलशरीर अवगाही जेतलुक्षेत्र रहियोछे तेहथी अलगा क्षेत्रनां पुदगल वैक्रियसमुदघाते करी गृहीने जे नवारूपनी विकुर्वणा करे ते एक विकुर्वणा ॥ जे वाह्यक्षेत्रना पुदगल अणालीधे मूलगाज शरीरमाहिला पुदगल विशिष्ट गृहीने विकुर्वणा करे ते वीजी विकुर्वणा । वाह्यपुदगल गहीने तथा अणगहीने एतले काईंक वाह्यपुदगल गहीने केतलाएक मूलशरीरना लिये एम विकुर्वणा ते तीजी विकुर्वणा ॥ वली त्रिणप्रकारे विकुर्वणा कही तेकहेछे । अभ्यतर ॥

नखसमारचनादिना उभयतस्तू भयथेति अथवा अपर्यादायेति लकालाससर्प्यादीना रक्तत्वफणादिकरणलत्तणेति एव द्वितीयसूत्रमपि नवर मभ्यन्तरपुद्गला भवधारणीयेनौ दारिकेनवा शरीरेण ये क्षेत्रप्रदेशमवगाढा स्तेष्वेव ये वर्त्तन्ते ते अवसेया विभूषापक्षेतु निष्ठीवनादयो भ्यतरपुद्गलाइति ॥ तृतीयन्तु वाह्या भ्यतरपुद्गलयोगेन वाच्य तथाहि उभयेषा मुपादाना न्नवधारणीयनिष्पादन तदनन्तर न्तस्यैव केशादिरचनञ्च अनादाना च्चिरविकुर्व्वितस्यैव मुखादिविका रकारण मुभयतस्तु वाह्याभ्यतराणा मनभिमताना मादानता न्येषाञ्चा नादानतो ऽनिष्टरूपभवधारणीयेतररचनमिति अनन्तर म्विकुर्व्वणोक्ता साच नार

तिविहा विउव्वणा पन्नत्ता तंजहा अब्भंतरएपोग्गले परियाइत्ता एगा विउव्वणा अब्भंतरएपोग्गले अपरिया इत्ता एगा विउव्वणा अब्भंतरएपोग्गले परियाइत्ता वि अपरियाइत्तावि एगा विउव्वणा तिविहा विउव्वणा पन्नत्ता तंजहा वाहिरब्भंतरएपोग्गले परियाइत्ता एगा विउव्वणा वाहिरब्भंतरेपोग्गले अपरियाइत्ता एगा विउव्वणा वाहिरब्भंतरएपोग्गले परियाइत्ता वि अपरियाइत्ता वि एगा विउव्वणा तिविहा नेरइया पन्नत्ता

पुदगल ते भवधारणी तथा औदारिक शरीरे क्षेत्रदेशे अवगाही जे पुदगल तेमाहिज विकुर्वणा करे ते एक विकुर्वणा । अभ्यंतर पुदगल अणगही एक बीजी विकुर्वणा । एम अभ्यंतर पुदगल कांईक गहीने काईक अणगहीने त्रीजी विकुर्वणा ॥ वली त्रिणप्रकारे विकुर्वणा कही तेकहेछे । बाहर अने अभ्यंतर पुदगल गृहीने एक विकुर्वणा । वाहर अभ्यतर पुदगल अणगहीने एक बीजी विकुर्वणा । बाहर अभ्यंतर पुदगल गहीने काईक अ णगहीने एक त्रीजी विकुर्वणा । इहा केतलाएक न्नाव बहुश्रुत गम्यछे । विकुर्वणा नारकीने पणि होइ तेमाटे नारकीनो अधिकार कहेछे ॥ त्रिण

काणामप्यस्तीति नारका न्निरूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ कंथ्य न्नवरं कतीत्यनेन संख्यावाचिनो द्व्यादयः संख्यावन्तो ऽभिधीयन्ते अयच्चा न्यत्न प्रणाविशि ष्टसंख्यावाचकतया रूढोपीह सख्यामात्रे द्रष्टव्यः तत्रनारकाः कतिकतिसख्याता एकैकसमये येउत्पन्नाः सतः सञ्चिता कत्युत्पत्तिसाधर्म्या द्बुद्धया राशी कृता स्ते कतिसञ्चिता स्तथा नकति नसख्याता इत्यकति असख्याता अनन्तावा तत्रये अकत्यकति असख्याता असंख्याता एकैकसमये उत्पन्नाः संत स्त थैव संचिता स्ते अकतिसंचिता स्तथा यः परिणामविशेषो नकतिनाप्यकतीति शक्यते वक्तु सोऽवक्तव्यकः सचैक इति तत्सचिता अवक्तव्यकसचिताः स मयेसमये एकतयो त्पन्नाइत्यर्थ उत्पद्यन्ते हिनारका एकसमये एकाद्यो ऽसख्येयान्ता उक्तंच एगेवदोवतिन्निव सखमसंखायएगसमएण उववज्जतेवइया उव्वट्टंताविएमेवति ॥ १ ॥ एतदेव परिमाण मेतद्देवनारकाणामपि यतउक्तं सखापुणसुरवरतुल्लत्ति कतिसचितादिकमर्थमसुरादीनां दंडकोक्तानां मति

तंजहा कतिसंचिया अकतिसंचिया अवत्तव्वगसंचिया एवमेगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया । तिविहा परि यारणा पन्नत्ता तंजहा एगेदेवे अन्नेदेवे अन्नेसिंदेवाणं देवीतेय अन्निजुंजियअन्निजुंजिय परियारेइ । अप्पे

प्रकारे नारकी कहिया ते कहेछे । एक समय केतला संख्याये उपना छे ते कति सचिता । एक समय असख्याता उपजे ते अकति सचिता समये एकेको उपजे ते अवक्तव्य सचिता कहिये । उपजवानी सख्याये एकठा थया ते कति संचिता नारकी । एक समय एक वे त्रिण ऊपजै सख्याता पणि ऊपजै असंख्याता पणि ऊपजै एक समय त्रिण प्रकारे ॥ इम एकेंद्री वर्जीने चौवीस दडक वैमानिक ताइ एकेंद्रीमा एक समये असख्या ता अनंता उपजै पणि एक बे तथा सख्याता न उपजै तेमाटे अतिशब्द एकज आवे ॥ त्रिण प्रकारे परिचारणा ते देवमैथुन सेवा ते कहिये ।

दिशनाह ॥ एवमिति ॥ नारकवच्छेषा श्चतुर्विंशतिदण्डकोक्ता वाच्या एकेंद्रियवर्जाः यत स्तेषु प्रतिसमयमसंख्याता अनन्तावा अकतिशब्दवाच्याएवोत्प द्यन्ते नत्वेकः सख्यातावाइति आहच अणुसमयमसखिज्जा सखिज्जाश्रोयतिरियमणुयाय एगिदिएसुगच्छे आराईसाणदेवाय ॥ १ ॥ एगोअसखभागो वट्टइउव्वट्टणोववायम्मि एगनिगोएनिच्च एवसेसेसुविसएवत्ति ॥ १ ॥ अनन्तरसूत्रे कतिसञ्चितादिको धर्म्मो वैमानिकाना देवाना मुक्तो ऽधुना देवाना सा मान्येन परिचारणाधर्मनिरूपणायाह ॥ तिविहापरीत्यादि ॥ कंठ्य नवर परिचारणा देवमैथुनसेवेति एकः कश्चिद्देवो नसर्वोप्येवमिति कि ॥ अन्नेदेवेत्ति ॥ अन्यान्देवा नल्पर्द्धिकान् तथा न्येषा देवानां सत्का देवीश्चा भियुज्या २ श्लिष्याश्लिष्य वशीकृत्यवा परिचारयति परिभुंक्ते वेदवाधोपशमायेति नच नसम्भव ति देवस्य देवसेवा पुंस्त्वेने त्याशङ्कनीय मनुष्येष्वपि तथाश्रयणा न्नचा न्नार्थे नरामरयोः प्रायो विशेषोस्ती त्येकएवाय प्रकारो देवदेवीना मन्यत्त्वसामान्या दतएव द्वयोरपि पदयो रेकः क्रियाभिसम्बन्धइति एव मात्मीया देवीः परिचारयतीति द्वितीय स्तथा त्मानमेव परिचारयति कथ मात्मना विकृत्यविकृत्य

णिज्जिताउ देवीउ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ । अप्पाणमेवअप्पाणं विउव्विअविउव्विअ परिया रेइ । एगेदेवे णोअन्नेदेवे णोअन्नेसिंदेवाणं देवीउ अभिजुंजियअभिजुंजिय परियारेइ । अप्पणिज्जित्ताउ देवीउ अभिजुंजियअभिजुंजिय परियारेइ । अप्पाणमेवअप्पाणं विउव्विय विउव्विय परियारेइ । एगेदेवे

एक कोईक देवता सघला नथी थोडी रिद्धिना देवताथी अनेरा देवतानी देवीनें वशकरीने भोगवे। एतले पारकी देवांगनाने भोगवे । कोइक पोतानीज देवांगनाने आश्लेषी आलिगी आलिगीने भोगवे। एतले देवता पोतानी स्त्रीने भोगवे। अथवा पोतेज आत्माने विकुर्वि विकुर्वीने

परिचारणायोग्यं विधायेति तृतीयः एवं प्रकारत्रयरूपा येयं परिचारणा प्रभविष्णूत्कटकामैकपरिचारकवशादिति अथा न्योदेव आद्यप्रकारपरिहारे
णा न्यप्रकारद्वयेन परिचारयतीति द्वितीयेय मप्रभविष्णूचितकामपरिचारकदेवविशेषा त्तथा न्योदेव आद्यप्रकारद्वयवर्जनेना न्यप्रकारेण परिचारयतीति
तृतीया नुत्कटकामाल्पर्द्धिकदेवविशेषस्वामिकत्वादिति परिचारणेति मैथुननिशेष उक्तो धुनातदेवमैथुन सामान्यतः प्ररूपयन्नाह ॥ तिविहेमेहुणेत्यादि ॥
आगच्य अवर मिथुनं स्त्रीपुंसयुग्मं तत्कर्ममैथुन नारकाणां तन्नसम्भवति द्रव्यतइति चतुर्थं नास्त्येवेतिनोक्तं॥ मिथुनकर्मणएव कारकानाह ॥ तओइत्यादि ॥

णोअन्नेदेवे णोअन्नेसिंदेवाणं देवीउ णोअप्पणिज्जियाउ अप्पाणमेवअप्पाणं विउव्विय विउव्विय परियारेइ तिविहे मेहुणे पन्नत्ते तंजहा दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खजोणिए । तउ मेहुणं गच्छंति तंजहा देवा मणुस्सा तिरिक्खजोणिया । तउ मेहुणं सेवंति तंजहा इत्थी पुरिसा णपुंसगा । तिविहे जोगे पन्नत्ते तंजहा मणो

ग योग्य शरीर करें देवागनानु अने पछे भोगवे ए तीन बोल मली एक परिचारणा ॥ कोइक एक देवता बीजीथी रिद्धिवंत बीजा देवतानी दे
वीने वशकरीने भोगवे । एतले प्रकारें नथी बीजो प्रकार पणि बे रीति भोगवे पोतानी देवांगनाने भोगवे अने आतमाशी पणि विकुर्वीने भोगवे
ते बीजी परिचारणा । एकदेवता अन्यदेवतानी देवीने भोगिवानें असमर्थ पोतानी पणि भोगिवाने समर्थ नथी एतले बे भेदनथी आतमाथी
विकुर्वणाकरी देवागनाने भोगवे एह तीजी परिचारणा मैथुनसेवाकही ॥ देवताना मैथुनना अधिकार माटे तेहीज मैथुन कहेछे । त्रण प्रकारे
मैथुन देवतानुं मनुष्यनुं तिर्यचनुं नारकीने मैथुन नथी नपुसक माटे । त्रणि मैथुनना सेवनारछे । देवता मनुष्य तिर्यच । त्रणि मैथुननां सेव

कण्ठ्यं तेषामेवभेदानाह॥ तत्थमेहुणमित्यादि॥ कांच मवरं स्पयादिलक्षणमिद माचक्षते विचक्षणाः योनिर्मृदुत्वमस्थैर्यं । मुग्धताक्लीवतास्तनौ ॥ पुस्कामितेति लिङ्गानि। सप्तस्त्रीत्वेप्रचक्ष्यते ॥ १ ॥ मेहनंखरतादार्व्यं । शौण्डीर्य्यंस्मश्रुधृष्टता ॥ स्त्रीकामितेतिलिङ्गानि । सप्तपुंस्त्वेप्रचक्ष्यते ॥ २ ॥ स्तनादिस्मश्रुकेशादि । भावाभावसमन्वित ॥ नपुंसकंबुधाःप्राहु। र्मोहानलसुदीपित ॥ ३ ॥ तथा न्यत्राप्युक्त स्तनकेशवतीस्त्रीस्या द्रोमशःपुरुषःस्मृत उभयोरन्तरयच्च तदभावेनपुंसक मित्यादि एतेच योगवन्तो भवन्तीति योगप्ररूपणायाह ॥ तिविहेजोएइत्यादि ॥ इहच वीर्यान्तरायक्षयक्षयोपशमसमुत्थलब्धिविशेषप्रत्यय मभिसन्ध्य नभिसन्धिपूर्व मात्मनो वीर्यं योगः आहच योगोविरियथामो उच्छाहपरक्कमोतहाचिट्ठा सत्तीसामत्थतिय जोगस्सहवतिपज्जायत्ति ॥ १॥ सच द्विधा सकरणो ऽकरणश्च तत्रालेश्यस्य केवलिनः कृत्स्नयो र्ज्ञेयदृश्ययो रर्थयोः केवलज्ञान दर्शनाभ्यो पयुञ्जानस्य योसा वपरिस्पन्दो प्रतिघो वीर्यविशेषः सोकरणः सच नेहाधिक्रियते सकरणस्यैव त्रिस्थानकावतारित्वा दत स्तयैव व्युत्पत्ति स्तमेव चाश्रित्य सूत्रव्याख्या युज्यते जीवः कर्मभि र्येन कम्मयोगनिमित्तवज्झइत्तिवचनात् युक्तोवा प्रयुक्तोय पर्याय सयोगो वीर्यान्तरायक्षयोपशमजनितो जीवपरिणामविशेषइति आहच मणसावयसाकाये णवाविजुत्तस्सविरियपरिणामो जीवस्सअप्पणिज्जो सजोगसन्नोजिणक्खाओ ॥ १ ॥ तेओजोगेणजहा रत्तत्ताईघडस्सपरिणामो जीवकरणप्पओगे विरियमविअप्पपरिणामोत्ति ॥ २ ॥ मनसा करणेन युक्तस्य जीवस्य योगो वीर्यपर्यायो दुर्व्वलस्य यष्टिकाद्रव्यव दुपष्टम्भकरो मनोयोगइति सचतुर्विधः सत्यमनोयोगो मृषामनोयोगः सत्यमृषा मनोयोगो ऽसत्यमृषामनोयोगश्चेति मनसोवा योग करणकारणानुमतिरूपो व्यापारो मनोयोग एव वाग्योगोपि एव काययोगोपि नवर स सप्तविध औदारिकौदारिकमिश्रवैक्रियवैक्रियमिश्राहारका ५ हारकमिश्र ६ कार्म्मण ७ काययोगभेदादिति तत्रौदारिकादय शुद्धा. सुवोधा औदारिकमिश्रस्तु औदारिक एवा परिपूर्णोमिश्र उच्यते यथा गुडमिश्रन्दधि नगुडतया नापिदधितया व्यपदिश्यते तत्ताभ्या मपरिपूर्णत्वादेव मौदारिकमिश्र ङ्कार्म्मणेन नौदारिक

तया नापिकार्म्मणतया व्यपदेष्टु शक्य मपरिपूर्णत्वादिति तस्य मिश्रव्यपदेशः एवं वैक्रियाहारकमिश्रावपीति शतकटीकालेशः प्रज्ञापनाव्याख्यानांश स्त्वे व मौदारिकाद्याः शुद्धा स्तत्पर्याप्तकस्य मिश्रा स्त्वपर्याप्तकस्येति तत्रो त्पत्तौ वौदारिककायः कार्मणेन औदारिकशरीरिणस्य वैक्रियाहारककरणकाले वै क्रियाहारकाभ्यां मिश्रीभवतीति एवमौदारिकमिश्र स्तथा वैक्रियमिश्रो देवाद्युत्पत्तौ कार्मणेन सतवैक्रियस्य वौदारिकप्रवेशाद्धाया मौदारिकेण आहार कमिश्रस्तु साधिताहारककायप्रयोजनः पुनरौदारिकप्रवेशे औदारिकेणेति कार्म्मणस्तु विग्रहे केवलिसमुद्घातेनेति सर्वएवा ययोगः पञ्चदशधेति सग्रहोस्य सच्च १ मोस २ मोसं ३ असच्चमोस ४ मणोवएचेव काओउराल १ विक्किय २ आहारग ३ मोस ४ कम्मए गोत्ति ॥ १ ॥ सामान्येन योग प्ररूप्य विशेषतो नारकादिषु चतुर्विंशतौ पदेषु तमतिदिशन्नाह ॥ एवमित्यादि ॥ कण्ठ्य नवर मतिप्रसगपरिहाराये दमुक्तं ॥ विगलिंदियवज्जाणति ॥ तत्रविकलेन्द्रिया अप चेंद्रिया स्तेषा ह्येकेंद्रियाणां काययोगएव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणांतु काययोगवाग्योगाविति मनःप्रभृतिसम्बन्धेनै वेदमाह ॥ तिविहेपओगेइत्यादि ॥ का ण्ठ्य न्नवरं मनःप्रभृतीनां व्याप्रियमाणानां जीवेन हेतुकर्तृभूतेन यद्व्यापारेण प्रयोजनं सप्रयोगो मनसः प्रयोगो मनः प्रयोगएव मितरावपि जहेत्या

जोगे वयजोगे कायजोगे । एवं णेरइयाणं विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं । तिविहे पओगे पण्णत्ते

नारछे । स्त्री पुरुष नपुंसक । एह त्रणि योगवंत छे ते माटे योग कहेछे । त्रणि प्रकारें योग मनोयोग मननो व्यापार वचनयोग वचननो व्या पार काययोग कायानो व्यापार आत्मवीर्यने योग कहिये । एम नारकीनें त्रणियोग कहिवा विगलेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री वरजीनें एहने मननो योग नथी थाय यावत् वैमानिक चौवीस दडके कहिवा ॥ त्रणि प्रकारे प्रयोग प्रयुंजवारूप फोरववुं तेकहेछे । मनप्रयोग वचनप्रयोग कायप्रयोग

यतिदेशसूत्रं पूर्ववद्भावनीयमिति मनःप्रभृतिसम्बन्धेनै वेदमपरमाह ॥ तिविहेकरणेइत्यादि ॥ करणंच नवरं क्रियतेयेनतत्करणं मननादिक्रियासु प्रवर्त्त मानस्या त्मन उपकरणभूत स्तथा तथापरिणामवत् पुद्गलसङ्घातदतिभाव स्तत्र मनसएव करणं मनः करण मेवमितरेऽपि एवमित्याद्यतिदेशसूत्रं पूर्ववद्विभावनीयमिति अथवा योगप्रयोगकरणशब्दाना मनःप्रभृतिकमभिधेयतया योगप्रयोगकरणसूत्रे ष्वभिहितमिति नार्थभेदोन्वेषणीय स्त्रयाणाम प्येषामेकार्थतया आगमे बहुशः प्रवृत्तिदर्शनात् तथाहि योगः पंचदशविधः शतकादिषु व्याख्यातः प्रज्ञापनायान्त्वेवमेवायम्प्रयोगशब्देनोक्त स्तथाहि क तिविहेणभंतेपओगेपणत्ते गोयमा पणरसविहेत्यादि तथा आवश्यके अयमेव करणतयोक्त स्तथाहि जुंजणकरणतिविह मणवइकाएयमणसिसच्चाइ सठा णेतेसिभेओ चउचउहासत्तहाचेवत्ति ॥ १ ॥ प्रकारान्तरेण करणत्रैविध्यमाह ॥ तिविहेइत्यादि ॥ आरम्भणमारम्भःपृथिव्याद्युपमर्द्दन न्तस्य कृतिः करण ॥

तंजहा मणपउगे वयपउगे कायपउगे । जहा जोगो विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं तहा पउगोवि तिविहे करणे पण्णत्ते तंजहा मणकरणे वयकरणे कायकरणे । एवं णेरइयाणं विगलिंदियवज्जाण जाववेमा णियाणं । तिविहे करणे पण्णत्ते तंजहा आरंभकरणे सरंभकरणे समारम्भकरणे । णिरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥

जिम योग तिम प्रयोग पणि जाणिवा विगलेंद्री वरजीनें चौवीस दंडके कहिवा ॥ त्रणिप्रकारे करण जेहथी क्रियादि करियें ते कहेंछे । मनकर ण मनकरे तेपुन्यपाप । वचनेकरे ते वचन करण कायाथीकरे ते कायकरण ॥ एमज विगलेंद्री वरजीने यावत् वैमानिक तांई चौवीस दंडके कहि वा ॥ बली त्रणि प्रकारे करण कहिया तेकहेंछे । आरम्भ जे छ कायनो हणवुं तेहनुं करवुं । संरंभ पृथिव्यादिकने हणवानो संकल्प । समारंभ जे ॥

सएवया करणमित्यारम्भकरण मेव मितरेअपि वाच्ये नवर मयविशेषः संरम्भकरणं पृथिव्यादिविषयमेव मनःसंक्लेशकरण समारम्भकरणं तेषामेवसंताप करणमिति प्राह्च सकप्पोसंरभो परितावकरोभवेसमारभो आरभोउद्दवओ सुद्धनयाणतुसव्वेसिति ॥ १ ॥ इदमारम्भादिकरणत्रयं नारकादीना वैमा निकान्ताना भवतीत्यतिदिशन्नाह ॥ निरतरमित्यादि ॥ सुगमं केवलं सरम्भकरण मसञ्ज्ञिनां पूर्वभवसंस्कारानुवृत्तिमात्रतया भावनीयमिति आरम्भादिक रणस्य क्रियान्तरस्यच फलमुपदर्शयन्नाह ॥ तिहिठाणेहीत्यादि ॥ त्रिभिः स्थानैः करणै जीवाः प्राणिनः ॥ अप्पाउअत्ताएत्ति ॥ अल्पं स्तोक मायु र्जीवि तयस्य सोल्पायु स्तद्भावस्तत्ता तस्यै अल्पायुष्कतायै तदर्थं तन्निबन्धनमित्यर्थः कर्मायुष्कादि अथवा अल्पमायु र्जीवितं यत् आयुष स्तदल्पायु स्तद्भा व स्तत्ता तया कर्म्मायुर्लक्षण प्रकुर्वन्ति बध्नंतीत्यर्थः तद्यथा प्राणान् प्राणिनो ऽतिपातयितेति शीलार्थेतृन्नन्तमिति कर्म्मणिद्वितीयेति प्राणीनां विनाशन शीलइत्यर्थः एवंभूतो योभवति एवं मृषावादस्वक्ता यश्च भवति तथा तत्प्रकार रूप स्वभावो नेपथ्यादिर्वा यस्य सतथारूपो दानोचितइत्यर्थ स्तस्यास्यति तप

तिहिठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति तजहा पाणे अइवाइत्ताभवइ मुसवइत्ताभवइ तहारूवं

कायाने मनथी संताप करवुं । एह त्रण करण आतरा रहित चोवीसदंडके वैमानिकलगे असन्नीने पाछला भवनी अपेक्षाये थाय ॥ आरम्भादिक नु फल कहिवाने कहेछे । त्रणिथानके करीने जीव अल्प थोडुं आऊखानु कर्म बाधे मोटु आयू नपामे तेकहेछे । प्राणातिपात करतो जीवहणतो मृषावाद बोलतो झूठुंबोलतो तथारूप शुद्ध श्रमण माहण हिंसाथी निवर्त्या एहवा साधुने अफासू सचित्त जीवसहित एषणाशुद्धनथी अकल्प अ चित्तपणि असूझतो एहवा अशन पान खादिम स्वादिम वोहरावे पापे एह त्रणि थानकेकरी जीव अल्प आयुकर्म बाधे एतले थोडुं आयु बांधे ॥

स्यतीति श्रमण स्तपोयुक्त स्तम्माहनइत्याचष्टे य परम्मति स्वयहननिवृत्तः सन्निति समाहनो मूलगुणधर स्त वाशब्दौ विशेषणसमुच्चयार्थौ प्रगताअसवो ऽसुमतः प्राणिनो यस्मा त्तत्प्रासुकं तन्निषेधा दप्रासुक सचेतनमित्यर्थः तेन एष्यते गवेष्यते उद्गमादिदोषविकलतया साधुभि र्यत्तदेषणीय कल्प तन्निषेधा द नेषणीय तेन अश्यते भुज्यते इत्यशन चोदनादि पीयतइति पानञ्च सौवीरकादि खादन खाद स्तेनर्निर्वृत्तं खादनार्थ तस्य निर्वर्त्यमानत्वादिति खादिम च भक्तोषधादि स्वादनस्वाद स्तेननिर्वृत्त स्वादिमच दन्तपावनादि इति समाहारद्वन्द्व स्तेन गाथाश्चात्र असणंओयणसत्तुग मुग्गजगाराइखज्जगविहीय खी राइसूरणाइमंडगपभिईइविन्नेयं ॥ १ ॥ पाणसोवीरजवो दगाइ वित्तसुराइयचेव आउक्काओसव्वो कक्कडगजलाइयचतहा ॥ २ ॥ भत्तोसदताई खज्जू रनालिकेरदक्खाइं कक्कडिअंबगफणिसा इवहुविहखाइमनेयं ॥ ३ ॥ दंतवणतंबोलं चित्तअज्जगकुहेडगाईयं महुपिप्पलिसुंठाई अणेगहासाइमंहोइत्ति ४ ॥ प्रतिलम्भयिता लाभवन्त करोती त्येवंशीलोयस्वभवति ते ऽल्पायुष्कतया कर्मकुर्व्वंतीतिप्रक्रमः ॥ इच्चेएहिंति ॥ इत्येतैः प्राणातिपातादिभि रुक्तप्रकारै स्त्रिभिः स्थानै र्जीवा अल्पायुष्कतया कर्मप्रकुर्वन्तीति निगमनमिति इहच प्राणातिपातयित्रादिपुरुषनिर्देशेपि प्राणातिपातादीना मेवा ल्पायुर्बन्धनिबन्ध नत्वेन तत्कारणत्वमुक्तं द्रष्टव्यमिति इयं चास्य सूत्रस्यभावना ऽध्यवसायविशेषेण एतत्त्रय यथोक्तफलंभवतीत्यथवा योहि जीवो जिनादि गुणपक्षपातितया तत्पूजाद्यर्थं पृथिव्याद्यारम्भेण न्यासापहारादिनाच प्राणातिपातादिषु वर्त्तते तस्य सरागसयमनिरवद्यदाननिमित्तायुष्कापेक्षये य मल्पायुष्टासमवसेयेति अथनैतदेव निर्विशेषणत्वात् सूत्रस्या ल्पायुष्कस्य क्षुल्लकभवग्रहणरूपस्यापि प्राणातिपातादिहेतुतो युज्यमानत्वा दतः कथ मभिधीयते सविशेषणप्राणाति पातादिवर्त्ती जीव आपेक्षिकी चाल्पायुष्कतेति उच्यते अविशेषणत्वेपि सूत्रस्य प्राणातिपातादे र्विशेषण मवश्य वाच्य यत इत स्तृतीयसूत्रे प्राणातिपा तादितएवा शुभदीर्घायुष्टां वक्ष्यति नहि समानहेतोः कार्यवैषम्यं युज्यते सर्वत्रा नाश्वासप्रसङ्गात् तथा समणोवासयस्सण भंते तहारूव समणवा माहणवा

अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ गोयमा बहुतरियासे निज्जराकज्जइ अप्पतराएसे पावे कम्मे कज्जइ इति
भगवतीवचनश्रवणा दवसीयते नैवेय क्षुल्लकभवग्रहणरूपा ऽल्पायुष्टा न हि स्वल्पपापबहुनिर्जरानिबन्धनस्या नुष्ठानस्य क्षुल्लकभवग्रहणनिमित्तता सम्भाव्यते
जिनपूजाद्यनुष्ठानस्यापि तथाप्रसङ्गात् अथवा ऽप्रासुकदानस्य भवतु क्षुल्लपायुष्टा प्राणातिपातमृषावादयोस्तु क्षुल्लकभवग्रहणमेव फलमिति नैतदेव मेक
योगप्रवृत्तत्वा दतिविरुद्धत्वाच्चेति अथमिथ्यादृष्टिश्रमणब्राह्मणानां यदप्रासुकदानन्ततो निरुपचरितैवाल्पायुष्टा युज्यते एतराभ्यान्तु कोविचारइति नैव
मप्रासुकेनेति तत्र विशेषणस्या नर्थकत्वात् प्रासुकदानस्याप्यल्पायुष्टा फलत्वाविरोधा दुक्तश्च भगवत्या समणोवासयस्स णं भंते तहारूव असंजयअ
विरयअप्पडिहयअपच्चक्खायपावकम्मं फासुएणवा अफासुएणवा एसणिज्जेणवा अणेसणिज्जेणवा असण ४ पडिलाभेमाणस्स किंकज्जइ गोयमा एगंतसो
पावेकम्मेकज्जइ नोसेकाइनिज्जराकज्जइत्ति यत्र पापकर्मण एव कारणं तदल्पायुष्टाया अपि कारणमिति नन्वेवं प्राणातिपातमृषावादावप्रासुकदानच
कर्त्तव्य मापन्नमिति उच्यते आपन्नतांनाम भूमिकापेक्षया को दोषो यत अधिकारिणो ऽप्यस्मिन् धर्मसाधनसंस्थिति स्वोचितप्रतिक्रियातुल्या विज्ञेया गु
णदोषयो स्तथा च स्तुतिषु प्रतिजिनभवनकारणफलमुक्तं एतद्विभागतः. सद्धर्मबीजवपनकुशलमिदं परमं अभ्युदयानुबन्धितया नियमादपवर्गबीजमिति
१ ॥ तथा भणइ जिणपूयाए कायवहो जइवि होइ उ कहिंचि तहवि तई परिसुद्धा गिहीण कूवाहरणजोगा ॥ १ ॥ असदारम्भपवत्ता जंच गिही तेण तेसि विन्नेया
तन्निवित्तिफलच्चिय एसापरिभावणीयमिदं ॥ २ ॥ दानाधिकारेतु श्रूयते तेपि द्विविधाः श्रमणोपासकाः. संविग्नभाविता लुब्धकदृष्टान्तभाविताश्चेति य
थोक्तं संविग्गभावियाणं लोद्धयदिट्ठंतभावियाणंच मुत्तूण खेत्तकाले भावं च कहिंति सुद्धुञ्छं इति ॥ १ ॥ तत्र लुब्धकदृष्टान्तभाविता यथाकथंचि द्ददति संवि
ग्नभाविता स्तूचितत्वेनेति तथेदं संथरणंमि असुद्धं दोण्हवि गिण्हंतदेंतयाणहियं आउरदिट्ठंतेणं तं चेव हियं असंथरणेत्ति ॥ १ ॥ तथा नायगयाण कप्प णि

ज्जाए अन्नपाणाइए दव्वाए देसकालसद्धासक्कारजम्मजुयमित्यादि कवित्याणि अद्दवाइत्ता मुसंवइत्तादित्येवं भवति शब्दवर्ज्यावाचना तत्रापि सएवार्थः क्वाप्रत्ययान्तता व्याख्येया प्राणानतिपात्यमृषोक्त्वा श्रमण प्रतिलभ्य अल्पायुष्टया कर्मवध्नतीति प्रक्रमः शेष तथैव अथवा प्रतिलम्भन् स्थानकस्यै वेतरे विशेष णे तथाहि प्राणानतिपात्याधाकर्मादिकरणतो मृषोक्त्वा यथा भोसाधो स्वार्थसिद्धमिद भक्तादिकल्पनीय मकल्पनीयवा न शङ्काकार्यैत्यादि प्रतिलभ्य तथा कर्म कुर्वतोति प्रक्रम' इहच द्वयस्य विशेषणत्वे नैकस्यविशेष्यत्वेन त्रिस्थानकत्व मवगन्तव्यं गम्भीरार्थं चेद सून मतो ऽन्यथापि भावनीयमिति अल्पायु ष्कताकारणा न्युक्ता न्यधुनै तद्विपर्ययस्यै तान्येव विपर्यस्ततया कारणान्याह ॥ तिहिंइत्यादि ॥ प्राग्वदवसेय नवरं ॥ दोहाउअत्ताएत्ति ॥ शुभदीर्घायुष्टा यै शुभदीर्घायुष्टयावेति प्रतिपत्तव्यं प्राणातिपातविरत्यादीनां दीर्घायुषः शुभस्यैव निमित्तत्वा दुक्तञ्च महव्वयअणुव्वएहिं वालतवाकामनिज्जराएय देवा उयनिवंधइ सम्मदिट्ठीयजीजोत्रो ॥ १ ॥ तथा पयईएतणुकसाओ दाणरओसीलसयमविहूणो मज्झिमगुणेहिंजुत्तो मणुयाउयंवंधएजीवी ॥ २ ॥ देवमनु ष्यायुषीचशुभेइति तथा भगवत्यां दानमुद्दिश्योक्तं समणोवासयस्सणं भंते तहारूव समणवा माहणंवा फासुएसणिज्जे णं असण ४ पडिलाभे माणस्स किं

समणंवा माहणंवा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिंठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति । तिहिंठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति तं

तिम वली त्रणि थानकै जीव मोटुं आयुकर्म बांधै तेकहेछै । प्राणातिपात जीवहिंसा नकरतो मृषावाद झूठुं नथी बोलतो तेहवो महापुरुष श्र मण माहणने फासू अचित्त एषणीय शुद्धमान निरवद्य अशन पान खादिम स्वादिम आहार आपै एह त्रणिथानकैंकरी जीव दीर्घ मोटुं आयुबांधै

कज्जइ गोयमा एग तेसे निज्जरा कज्जइ णोसेकेइ पावेकम्मे कज्जइत्ति यच्च निर्जराकारणं तत् शुभदीर्घायुःकारणतया नविरुद्धं महाव्रतवदिति अनन्तर मायुषो दीर्घताकारणा न्युक्तानि तत्र शुभाशुभमिति तत्रादौ ताव दशुभायुर्दीर्घता कारणान्याह ॥ तिहिइत्यादि ॥ प्राग्वत् नवरं अशुभदीर्घायुष्टायै इति नारकायुष्कायेतिभाव स्तथाहि अशुभच तत् पाप प्रकृतिरूपत्वात् दीर्घञ्च तस्य जघन्यतोपि दशवर्षसहस्र स्थितिकत्वा दुत्कृष्टतस्तु त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमरूप त्वात् अशुभदीर्घ न्तदेवभूत मायुर्जीवितं यस्मा त्कर्मण स्तदशुभदीर्घायु स्तद्भावस्तत्ता तस्यै तयावेति प्राणान् प्राणिन इत्यर्थो ऽतिपातयिता भवति मृषा वादञ्च वक्ता भवति तथा श्रमणमाहनादीनां हीलनादि कृत्वा प्रतिलम्भयिता भवती त्यक्षरघटना हीलनंतु जात्याद्युद्घट्टनतो निन्दन मनसाखिसन जनसमच गर्हणं तमत्सचं अपमानन मनभ्युत्थानादिभि रन्यतरेण बहूनां मध्ये एकतरेण क्वचि त्त्वन्यतरेणेति नष्टस्यते अमनोज्ञेन स्वरूपतो शोभनेन

जहा णोपाणे अइवाइत्ता भवइ णोमुसंवइत्ता भवइ तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेणं असण पाण खाइम साइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिंठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति । तिहिंठाणेहिं जीवा असुभदीहाउअत्ताए कम्म पगरेंति तंजहा पाणे अइवाइत्ता भवइ मुसंवइत्ता भवइ

वली त्रिणथानकैं जीव अशुभ दुखनुं मोटुं आयु बांधे ते कहेछे । प्राणातिपातकरतो मृषा भूठुं बोलतो तथारूप श्रमणमाहननी वचनेकरी हीलना करतो जातिउघाडतो मनथी खिसना करतो लोकसमक्ष दोष उघाडतो अपमानकरे साधुने देखी ऊभो नथाय तथा अन्यतर कोई जातिनो अम नोग्य रूपथी माठो अप्रीति असंतोषनुंकरनार नागसिरीयें साधुने कडुवु तुंबो आप्यो एहवा अशन पान खादिम स्वादिम बोहरावे एह त्रिण

कदन्नादिना अतएवा प्रीतिकारकेण भक्तिमत स्वमनोज्ञमपि मनोज्ञमेव तत्फलत्वा दार्यचन्दनायाइव आर्यचन्दनया हि कुल्माषाः सूर्पकोणकृता भगवते महावीराय पञ्चदिनोनषाण्मासिकक्षपणपारणके दत्ता स्तदैवच तस्या लोहनिगडानि हेममयनूपुरौ सम्पन्नौ केशा' पूर्ववदेव जाताः पञ्चवर्णविविधरत्नराशिभि र्गृह भृत सेन्द्रदेवदानवनरनायकै रभिनन्दिता कालेना वाप्तचारित्राच सिद्धिसौधशिखर मुपगतेति इहच सूत्रे अशनादिप्रा सुकाप्रासुकत्वादिना न विशेषित हीलनादिकर्त्तुः प्रासुकादिविशेषणस्य फलविशेषं प्रत्यकारणत्वा मत्सरजनितहीलनादिविशेषणानामेव प्रधानतया तत्कारणत्वादिति प्राणातिपातमृषावादयो र्दानविशेषणपक्षव्याख्यानमपि घटत एव अवज्ञादानेपि प्राणातिपातादे र्दृश्यमानत्वादिति भवतिच प्राणा तिपातादे र्नरकायु र्यदाहच मिच्छादिट्ठिमहारं भपरिग्गहोतिव्वलोहनिस्सीलो नरयाउयंनिबधइ पावमईरुद्दपरिणामोत्ति ॥ १ ॥ उक्तविपर्ययेणा शु नेतरदाह ॥ तिहिठाणेहिंइत्यादि ॥ पूर्वव न्नवरं वन्दित्वा स्तुत्वा नमस्यित्वा प्रणम्य सत्कारयित्वा वस्त्रादिना सन्मानयित्वा प्रतिपत्तिविशेषेण कल्याणं

तहारूवं समणंवा माहणंवा हीलेत्ता निंदेत्ता खिंसेत्ता गरिहित्ता अवमाणित्ता अन्नयरेणं अमणुन्नेणं अ पीइकारएणं असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा पडिलाभेत्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अ सुभदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति । तिहिंठाणेहिं जीवा सुभदीहाउअत्ताए कम्मंपगरेंति तंजहा णोपाणेअ इवाइत्ता भवइ णोमुसवइत्ता भवइ तहारूवंसमणवा माहणवा वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता

थानकै करी जीव अशुभदीर्घ आयुकर्म बांधै॥ त्रणि थानकै जीव शुभदीर्घ आयुकर्म बांधै ते कहैछै । प्राणातिपात जीव हिंसा नकरतो मृषा

सम्प्रति सत्कृत्य साधुरपि कल्याणमिव मङ्गलं विघ्नक्षय सामोगा मङ्गल न्दैवतमिव दैवतेव दैवत चैत्यमिव जिनादिप्रतिमेव चैत्यं श्रमण मर्युपास्य उप सेव्येति प्रस्तापि प्रासुकाप्रासुकतया दान अविशेषित मूर्वसूत्रविपर्ययत्वा दस्यपूर्वसूत्रस्थवा विशेषणतया प्रवृत्तत्वा दिति न च प्रासुकाप्रासुकदानयोः फल मति नविशेषोस्ति पूर्वसूत्रयो स्तस्य प्रतिपादितत्वात् तथा दिह प्रासुकोपयोगस्य कालाप्रासामितरस्य चेदं फलमवसेयं अथवा भावप्रकर्षविशेषा दनेषणी यस्यापी दम्फल मविरुध्यते अचिन्त्यत्वा चित्तपरिणतेः सालि यापस्या नुगुणतयेव नफलाभि साधयति भरतादीना मिवेति एतच प्रथम मल्पायुः सूत्रं तितीय मशुभदीर्घायुः सूत्र चतुर्थ न्तद्विपयदति नपुनरुक्ततेति प्राणानतिपातनादिच गुप्तिसद्भावे भवतीति गुप्तीराह ॥ तओगुत्त्यादि ॥ वाणझ मवरं गोपनंगुप्ति मेनःप्रभृतीनां कुशलाना मप्रवर्त्तन मकुशलानाञ्च निवर्त्तनमिति आह च मणगुत्तिकाइयाओ गुत्तीओ तिन्निसमयकेओहिं पवि

कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेत्ता मणुन्नेणं पीइकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भ वइ इच्चेएहिं तिहिंठाणेहिं जीवा सुहदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति । तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा मणगु

वादकूठुं नबोलतो तथा रूप श्रमण माहणने वंदनाकरीने नमस्कारकरी वस्त्रादिकथी सत्कार सन्मानदेई विनयकरीने कल्याणकारी मंगलकारी देव अरिहंतनीचैत्य प्रतिमानी जिम सेवाकीजे तिम साधुनी सेवाकरे वली मनोग्य प्रतिकारी अशन पान खादिम स्वादिमे करी पडिलाभे वोहरावे एह त्रिण थानकें करी जीव शुभ दीर्घ आयुकर्मबांधे देवतानु भरतचक्रीनीपरे पांचसे साधुनें आहार आप्यो पूर्वभवें ॥ जीवहिंसादिनकरे ते गुप्ति ते मांटे गुप्ति कहेछे । त्रणगुप्ति मनोगुप्ति माठायोगथी मननोंरोकिवुं । वचनगुप्ति पापवचन नबोलिवुं । कायगुप्ति पापमां कायानप्रवर्त्तावे ॥

यारेयरूवा निद्दिट्ठाओजओभणियं ॥ १ ॥ समिओनियमागुत्तो गुत्तोसमइत्तणंमिभइयव्वो कुसलवयमुईरंतो जंवयगुत्तोविसमिओवित्ति ॥ २ ॥ एता श्चतुर्विंशतिदण्डके चिन्त्यमाना मनुष्याणामेव तत्रापि संयतानां नतु नारकादीना मित्यतआह ॥ संजयमणुस्साणमित्यादि ॥ कंठ्य मुक्ता गुप्तय स्तद्विप र्ययभूता अथागुप्तीराह ॥ तओइत्यादि ॥ कण्ठ्यं विशेषत श्चतुर्विंशतिदण्डके एता अतिदिशन्नाह ॥ एवमित्यादि ॥ एवमिति सामान्यसूत्रव न्नारका दीनां तिस्रो गुप्तयो वाच्याः शेषं कंठ्यं नवर मिहै केन्द्रियविकलेन्द्रिया नोक्ता वाङ्मनसो स्तेषां यथायोग मसम्भवात् संयतमनुष्या अपि नोक्ता स्तेषां गुप्ति प्रतिपादनादिति अगुप्तय श्चा त्मनः परेषा ञ्च दण्डनानि भवन्तीति दण्डा न्निरूपयन्नाह ॥ तओदंडेत्यादि ॥ कठ्य न्नवरं मनसा दण्डन मात्मनः

त्ती वयगुत्ती कायगुत्ती । संजयमणुस्साणं तउ गुत्तीउ प० तं० मणवयकाए। तउ अगुत्तीउ पन्नत्ताउ तं० मणअगुत्ती वयअगुत्ती कायअगुत्ती । एवं णेरइयाणं जाव थणियकुमाराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं असंजयमणुस्साणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं। तउ दंडा प० तंजहा मणदंडे वयदंडे काय

चौवीसदंडकमाहि मनुष्यनेज तेमाहि संयमवंत मनुष्यने ए त्रणि गुप्ति होय ते कहेछे । मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति ॥ एम तीन अगुप्ति माठे पापनेयोगे प्रवर्त्तवुं ते कहेछे । मनअगुप्ति मनथी पापबंधाये । वचने पापबंधाये तेवचनअगुप्ति । कायाये पापबांधे तेकाय अगुप्ति । एम चौवीस दंडकमां नारकीने यावत् स्तनितकुमार दश भवनपतीने ए तीन अगुप्तिहोय । पंचेंद्री तिर्यंचने पणिहोय ॥ एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री ने नथी होय मन नथी ते मांटे पचेंद्रियतिर्यंच असंयती मनुष्यने होय संयतने गुप्तिकहीछे । व्यंतर ज्योतिषी वैमानिकने अगुप्तिहोय ॥ अगु

परेपांवेति मनोदण्डः अथवा दण्ड्यते नेनेति दण्डो मनएव दण्डो मनोदण्डइति एव मितरावपि विशेषचिन्तायां चतुर्विंशतिदण्डकौ ॥ नेरइयाणंत ओदण्डेत्यादि ॥ यावद्वैमानिकानामिति सूत्रं वाच्यं नवर ॥ विगलिंदियवज्जंति ॥ एकद्वित्रिचतुरिन्द्रियान् वर्जयित्वेत्यर्थः तेषांहि दण्डत्रय नसम्भवति यथायोग वाङ्मनसो रभावादिति दण्डश्च गर्हणीयो भवतीति गर्हां सूत्राभ्यामाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं गतार्थ नवरं गर्हते जुगुप्सते दण्ड स्वकीय पर कीय मात्मानञ्च ॥ कायसाविक्ति ॥ सकारस्या गमिकत्वात् कायेना प्येकः कथमित्याह पापानां कर्मणा मकरणतया हेतुभूतया हिंसाद्यकरणेनेत्य र्थः कायगर्हाहि पापकर्मागप्रवृत्त्यैव भवतीतिभावः उक्तञ्च पापजुगुप्सातुतथा सम्यग्परिशुद्धचेतसासतत पापोद्वेगोकरण त्वादचिन्साचेत्यनुक्रमतइति ॥ १ ॥ अथवा पापकर्मणा मकरणतायै च तद्कारणार्थंत्रिधापि गर्हते अथवा चतुर्थ्यर्थे षष्ठी ततः पापेभ्य. कर्मभ्यो गर्हते तानि जुगुप्सतइत्यर्थः किमर्थ मकरणतायै

दंडे। णेरइयाणं तओ दंडा पन्नत्ता तंजहा मणदंडे वयदंडे कायदंडे विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं तिविहा गरिहा पन्नत्ता तंजहा मणसावेगेगरहइ वयसावेगेगरहइ कायसावेगेगरहइ पावाणकम्माणं अक

प्तिवंतने त्रणदंड कह्या ते कहेछे । कर्मे दंडाये तेदंड कहिये । मनोदंड वचनदंड कायदंड मनेकरीदंडाये वचनथी दंडाये कायथीदंडाये ।.ना रकीने त्रणि दंडछे ते कहेछे । मनोदंड वचनदंड कायदंड विगलेंद्री वर्जीने एकेंद्री माहिज आव्या जाव वेमानिक लगे त्रणदंड जाणिवा ॥ दंडते गर्हणीय तेमाटे गर्हा कहेछे । त्रणि प्रकारे गर्हाकही ते कहेछे । मनथी आत्माने तथा परनें गर्हे । एक वचनथी आत्माने तथा परने गर्हे । एक कायथी पापकर्ममा अणप्रवर्त्ते । पापकर्मने अण करये तेगर्हणा पापकर्म नहीकरुं एमाठुंछे । अथवा गर्हा तीन प्रकारे कही ते कहेछे । एक

माकार्षं मह्ममेतानीति ॥ दीहंएगेअद्धंति ॥ दीर्घं द्धालं यावदित्यर्थः तथा काय मप्येकः प्रतिसंहरति निरुणद्धि कया पापानां कर्मणा मकरणतया हेतु भूतया तदकरणेन तदकरणतायैवा तेभ्यो गर्हते काय वा प्रतिसहरति तेभ्यो ऽकरणतायै तेषा मेवेति अतीतदण्डे गर्हा भवति साचोक्ता भविष्यतिच प्रत्याख्यानमिति सूत्रद्वयेन तदाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ गतार्थं न्नवरं ॥ गरहत्ति ॥ गर्हायां आलापको चेमो ॥ मणसेत्यादि ॥ कायसावेगेपच्चक्खाइ पा वाणं कम्माण अकरणयाए इत्येतदन्त एकः अहवा पच्चक्खाणे तिविहे पन्नत्ते तजहा दीह एगेअद्ध पच्चक्खाइ ऋस्संएगे अद्ध पच्चक्खाइ काय एगेपडिसाहरइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए इतिद्वितीय स्तत्रकाय मप्येकः प्रतिसंहरति पापकर्म्माकरणाय अथवा काय प्रतिसहरति पापकर्मभ्यो ऽकरणतायै तेषामे वेति पापकर्मप्रत्याख्यातारश्च परोपकारिणो भवन्तीति तदुपदर्शनाय दृष्टान्तभूतवृच्चाणां तद्दार्ष्टान्तिकानांच पुरुषाणा प्ररूपणार्थमाह ॥ तओरुक्खेत्या

रणयाए । अहवा गरहा तिविहा पन्नत्ता तंजहा दीहंवेगेगरहइ हुस्सवेगेअद्धगरहइ कायंवेगेपडिसाहरइ पावाणंकम्माणं अकरणयाए । तिविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते तंजहा मणसावेगेपच्चक्खाइ वयसावेगेपच्चक्खाइ

घणा कालनी गर्हणाकरे एक थोडाकालनी गर्हणाकरे । एक वर्त्तमान कायाने पापने अणकरवें संहरराखे ए त्रण प्रकारे पापने अणकरवे अतीत कालनी गर्हणा होय तेकही ॥ अनागत पचखाणहोय ते कहेछे । त्रण भेदे पचखाण एक मनथी पचखाण करेछे । एक वचनथी पचखाण करेछे । एक कायाथी पापकर्मने अणकरवे करी पचखाणकरेछे । एम जिमगर्हणा तिम पचखाणने विषे पणि बेआलावा कहिवा ॥ पापकर्मनुं पचखाण ते परोपकारीछे तेमांटे वृक्षनों दृष्टात सुघटेछे ते कहेछे । त्रणवृक्षकहिया एक पत्रसहित एक फूलसहित एक फलसहित । एहनीपरे त्रणि पुरुष

दि ॥ सूत्रत्रयं पत्राण्युपगच्छति प्राप्नोति पत्रोपग एवमितरो एवमेवेति ॥ दार्ष्टांतिकोपनयार्थः पुरुषजातेति पुरुषप्रकारा यथा पत्रादियुक्तत्वेनो पकारमा नविशिष्टविशिष्टतरोपकारकारिणो ऽर्थिषु वृक्षा स्तथा लोकोत्तरपुरुषाः सूत्रार्थोभयदानादिना यथोत्तर मुपकारविशेषकारित्वा त्तत्समाना मंतव्या एवं लौकिका अपीति इहच पत्तोवगएइत्यादौ वाच्ये पत्तोवाइत्यादि प्राकृतलक्षणवशा दुक्त समाणइत्यत्रापिच सामाणइति अथ पुरुष प्रस्तावात् पुरुषान् सप्तसूत्र्या निरूपयन्नाह ॥ तओइत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं नामपुरुषः पुरुषइति नामेव स्थापनापुरुषः पुरुषप्रतिमादिः द्रव्यपुरुषः पुरुषत्वेन य उत्पत्स्यते उत्प न्नपूर्वोवेति विशेषो ऽनेन्द्रसूत्रात् द्रष्टव्यो भवत्यत्रभाष्यगाथा आगमओणुवउत्तो इयरोदव्वपुरिसोतिहातइओ एगभवियाइतिविहो मुलुत्तरणिम्मिओवावि॥ १ ॥ मूलगुणनिर्म्मितः पुरुषप्रायोग्यानि द्रव्याणि उत्तरगुणनिर्म्मितस्तु तदाकारवंति तान्येवेति भावपुरुषभेदाः पुन र्ज्ञानपुरुषादयः ज्ञानलक्षणभावप्रधान

कायसावेगेपच्चक्खाइ एवंजहा गरहा तहा पच्चक्खाणेवि दोआलावगा भाणियव्वा । तओ रुक्खा पन्नत्ता तं० पत्तोवा पुप्फोवा फलोवा । एवमेव तओ पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा पत्तोवारुक्खसामाणे पुप्फोवारुक्खसा माणे फलोवारुक्खसामाणे । तओ पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा णामपुरिसे ठवणपुरिसे दव्वपुरिसे । तिविहा

कहिया ते कहेछै । पत्रसहित वृक्षसरिखा ते विशेषउपकारी वचनादिकें सूत्रसिद्धांत सांभलावें । फूलसहितवृक्षसरखा ते अर्थधर्मना आपनार । फ लसहितवृक्ष सरखा ते सूत्रार्थ बेनां आपनार ए लोकोत्तर पुरुष ॥ पुरुषनाप्रस्तावथी पुरुषनु सूत्र कहेछै । त्रण पुरुषनी जातकही एक नाम पुरु ष ते पुरुषनामे । स्थापनापुरुष जे पुरुष प्रतिमा । द्रव्यपुरुष जेपुरुषपणे उपजस्ये स्त्री पुरुष नपुंसक ॥ वली त्रण पुरुष जातिकही तेकहेछै । नाण

पुरुषो ज्ञानपुरुष एवमितिरावपि वेदः पुरुषवेद स्तदनुभवनप्रधानः पुरुषो वेदपुरुषः सच स्त्रीपुंसनपुंसकसम्बन्धिषु त्रिष्वपिलिङ्गेषु भवतीति तथा पुरुषचि ह्नैः श्मश्रुप्रभृतिभि रुपलक्षितः पुरुष श्चिह्नपुरुषो यथा नपुसकश्मश्रुचिह्नमिति पुरुषवेदोवा चिह्नपुरुष स्तेनचिह्नते पुरुषइति कृत्वेति पुरुषवेषधारीवा स्त्र्या दिरिति अभिलप्यतेनेनेत्यभिलापः शब्दः सएवपुरुषः पुल्लिङ्गतया भिधानात् यथा घटः कुटोवेति आहच अभिलावोपुल्लिंगा भिहाणमेत्तघडोव्वचिधेउ पुरिसाकिइनपुंसो वेओवापुरिसवेसोवा ॥ १ ॥ वेयपुरिसोतिलिंगो विपुरिसवेयाणभूयकालम्मित्ति ॥ धम्मपुरिसत्ति ॥ धर्मः क्षायिकचारित्रादि स्तदर्जन

पुरिसा प० तं० णाणपुरिसे दंसणपुरिसे चरित्तपुरिसे । तओ पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा वेदपुरिसे चिंधपुरिसे अभिलावपुरिसे । तिविहा पुरिसा प० तं० उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा जहन्नपुरिसा । उत्तमपुरिसा तिविहा पन्नत्ता तंजहा धम्मपुरिसा भोगपुरिसा कम्मपुरिसा । धम्मपुरिसा अरिहंता भोगपुरिसा चक्कवट्टी

पुरुष जे नाणसहित । दर्शन पुरुष जे समकित सहित । चारित्र पुरुष जेचारित्रसहित एह तीन भाव पुरुषछे । वली त्रण पुरुषकहिया ते कहे छे । पुरुष वेदने अनुभवे ते वेदपुरुष ते स्त्री पुरुष नपुसक तीनमा थायछे । चिन्ह पुरुष ते दाढीमुंछ सहित स्त्री पुरुष वेसधरे । अभिलाप पुरुष जे पुरुष शब्दे बोलाविये ते घडो कूवो आंबो इत्यादि ॥ वली त्रण पुरुष तेकहेछे । एक उत्तम पुरुष । बीजो मध्यम पुरुष । त्रीजु जघन्य पुरुष ॥ उत्तमपुरुष त्रण प्रकारे तेकहेछे । एक धर्मपुरुष क्षायिक समकितना उपजावणहार । बीजा भोग पुरुष मनोहर भोगना भोगवनारा । त्रीजा कर्म पुरुष महा आरंभकारी नरकना जानार वासुदेवादि ॥ धर्म पुरुष ते अरिहंत । भोगपुरुष ते चक्रवर्ति । कर्म पुरुष वासुदेव नियाणा

परा: पुरुषा: धर्मपुरुषा: उक्तंच धम्मपुरिसोतदज्जण वावारपरोजहसाहुत्ति ॥ २ ॥ भोगा मनोज्ञा: शब्दादय स्तत्परा: पुरुषा: भोगपुरुषा: आह्च भोगपुरिसोसमज्जिय विसयसुहोचक्कवट्टिव्वत्ति कर्माणि महारम्भादिसंपाद्यानि नरकायुष्कादीनीति उग्रा भगवतो नाभेयस्य राज्यकाले ये आरक्षिका आसन् भोगा स्तत्रैव गुरव: राजन्या स्तत्रैव वयस्या स्तदुक्तं उग्गाभोगारायन्नखत्तियासगहोभंपेचउहा आरक्खियगुरुवयसा सेसाजेखत्तियातेउत्ति ॥ १ तद्वंशजाश्रपि तद्व्यपदेश्याइति एषांच मध्यमत्वमनुत्कृष्टत्वाजघन्यत्वाभ्यामिति दासा: दासीपुत्रादय: भृतका: मूल्यत: कर्मकरा: ॥ भाइल्लगत्ति ॥ भागो विद्यते येषां ते भागवन्त: शुद्धचातुर्थिकादयइति उक्तं मनुष्यपुरुषाणां त्रैविध्य मधुना सामान्यत स्तिरश्चां जलचरस्थलचरखचरविशेषाणां ॥ तिविहाम च्छेत्यादि ॥ सूत्रै: द्वादशभि स्तदाह सुगमानि चैतानि नवरं अण्डाज्जाता: अण्डजा: पोत वस्त्रं तद्वज्जरायुवर्जितत्त्वा ज्जाता: पोतादिववा बाहित्था ज्जा

कम्मपुरिसा वासुदेवा । मज्झिमपुरिसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा उग्गा भोगा राइन्ना । जहन्नपुरिसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा दासा भयगा भाइल्लगा । तिविहा मच्छा पण्णत्ता तंजहा अंडया पोयया संमुच्छिमा

वहु महाआरंभेकरी नरकें जाय । मध्यम पुरुष त्रण प्रकारे ते कहेछे। उग्र जे रिषभदेवे कोटवालपणे थाप्या । भोगकुलना जे गुरु स्थानके थाप्या । राजन्य कुलना क्षत्रिय पोता सरसा थाप्या ॥ जघन्य पुरुष त्रण प्रकारे ते कहेछे । दास जे दासीना पुत्र । भृतक जे मोलथी काम करे । चौथो भाग आपीये ते चोथिआ ते भागवत कहिये ॥ पुरुषनु त्रिविधपणुं कही हिवे तिर्यंच जलचरनुं कहेछे । मच्छ त्रण प्रकारे कहिया ईंडाथी ऊपना ते अंडज । वस्त्रे वींटया ऊपजे जरविना ते पोतज । समूर्छिम जे गर्भ विना ऊपजे ॥ अंडज मच्छ त्रण प्रकारे ते कहेछे । स्त्री पुरुष नपुंसक ॥

ताः पोतजाः सम्मूर्च्छिमा अगर्भजाइत्यर्थः सम्मूर्च्छिमानां स्त्र्यादिभेदो नास्ति नपुंसकत्वो त्तेषामिति स सूत्रे नदर्शित इति पक्षिणोण्डजाः हंसादयः पोत जा वल्गुलीप्रभृतयः सम्मूर्च्छिमाः खञ्जनकादयः उद्भिज्जत्वेपि तेषां सम्मूर्च्छजत्वव्यपदेशो भवत्येव उद्भिज्जादीनां सम्मूर्च्छनजविशेषत्वादिति ॥ एवमिति ॥ पक्षिवत् एतेन प्रत्यक्षेण भिलापेन ॥ तिविहाउरपरिसप्पेइत्यादि ॥ सूत्रत्रयलक्षणेन उरसा वक्षसा परिसर्पन्तीति उरःपरिसर्पाः सर्पादय स्तेपि भणित व्याः तथाभुजाभ्या बाहुभ्या परिसर्पन्तीति ये ते नकुलादय स्तेपि भणितव्या ॥ एवचेवत्ति ॥ यथा पक्षिण स्तथवेत्यर्थः इहापि सूत्रत्रयमध्येतव्यमितिभाव.

अंडयामच्छा तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा णपुंसगा । पोययामच्छा तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा ण पुंसगा । तिविहा पक्खी पन्नत्ता तंजहा अंडया पोयया संमुच्छिमा । अंडया पक्खी तिविहा पन्नत्ता तंजहा इत्थी पुरिसा नपुंसगा । पोयया पक्खी तिविहा पन्नत्ता तंजहा इत्थी पुरिसा णपुंसगा । एवमेएणंअभिला वेणं उरपरिसप्पावि जाणियव्वा । भुयपरिसप्पावि जाणियव्वा । एवचेव तिविहाउ इत्थीउ पन्नत्ताउ तंजहा

पोतज मच्छना त्रण भेद ते कहेछे । स्त्री पुरुष नपुंसक । समूर्छिममा स्त्री पुरुष नथी नपुंसक हीज छे ॥ त्रण प्रकारे पक्षी कहिया ते कहेछे ॥ अंड ज हंस प्रमुख । पोतज वागुल प्रमुख । समूर्छिम खजन प्रमुख एह सर्व पचेंद्री ॥ अंडज पक्षी त्रण प्रकारे कहिया ते कहेछे । स्त्री पुरुष नपुंसक पोतज पक्षी वागुल प्रमुख त्रण प्रकारे स्त्री पुरुष नपुंसक ॥ एम एणे अभिलापे करी उरपरिसर्प हिये चाले ते सर्प ते पणि त्रणि प्रकारे कहिवा । एमज भुजपरिसर्प जे भुजाथी चाले ते पणि जाणिवा ॥ एणे प्रकारे त्रणि प्रकारनी स्त्री कही ते कहेछे तिर्यचनी स्त्री । मनुष्यनी स्त्री । देवनी

उक्तं तिर्यग्विशेषाणा त्रैविध्य इदानींस्त्रीपुरुषनपुंसकानां तदाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ नवसूत्री सुगमा मयरं ॥ खहंति ॥ प्राकृतत्वेन खमाकाशमिति कृष्यादिक मप्रधानाभूमिः कर्म्मभूमिः भरतादिका पंचदशधा तत्रजाताः कर्मभूमिजा एव मकर्म्मभूमिजा नवर मकर्म्मभूमि भोगभूमिरित्यर्थः देवकुर्व्वादिका त्रिंशद्विधा अन्तरे मध्ये समुद्रस्य द्वीपा येते तथा तेषु जाता आंतरद्वीपा स्तएवा न्तरद्वीपिकाः विशेषत्रैविध्य मुक्ता सामान्यत स्तिरश्चा न्तदाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ कण्ठ्य स्त्र्या

तिरिक्खजोणित्थीउ मणुस्सित्थीउ देवित्थीउ । तिरिक्खजोणित्थीउ तिविहाउ पन्नत्ताउ तंजहा जलचरीउ थलचरीउ खहचरीउ । मणुस्सित्थीउ तिविहाउ पन्नत्ताउ तजहा कम्मभूमियाउ अकम्मभूमियाउ अंतरदीवियाउ । तिविहा पुरिसा पन्नत्ता तंजहा तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा । तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पन्नत्ता तजहा जलचरा थलचरा खहचरा । मणुस्सपुरिसा तिविहा प० तं० कम्मभू

स्त्री ॥ तिर्यंचनी स्त्री त्रणि प्रकारे कही ते कहेछे । जलचरी माछली प्रमुख । थलचरी गाय भैंस घोडी प्रमुख । खचरी पक्षी चिडिया प्रमुख जे आकाशमा चाले । मनुष्यनी स्त्री त्रण प्रकारे ते कहेछे । पाच भरत पाच ऐरवत पाच महाविदेह एह पनरह कर्म भूमिमा जे स्त्री । जिहा अग्नि खड्गादि कर्म मसी ते लिखवानो कर्म कसी ते खेतीनो कर्म एह तीन कर्म नथी ते अकर्म भूमिमा जे स्त्री युगलिया मनुष्यनी स्त्री देवकुरु प्रमुख तीस अकर्म भूमिछे । अतरद्वीप ते छप्पन समुद्रमाछे तिहा युगलिया छे तेहनी स्त्री ॥ त्रणि पुरुष कहिया ते कहेछे । तिर्यंच योनिना पुरुष । मनुष्य पुरुष । देवपुरुष ॥ तिर्यंचयोनिनां पुरुष तीन प्रकारे जलचर मच्छप्रमुख । थलचर हाथी घोडा प्रमुख । खचर पक्षी हंस प्र

दिपरिणतिश्च जीवानां लेश्यावशतो भवतीति तन्निबन्धनकर्मकारणत्वा त्तासा मिति नारकादिपदेषु लेश्या स्त्रिस्थानकावतारेण निरूपयन्नाह ॥ नेरइया णमित्यादि ॥ दण्डकसूत्र कण्ठ्य नवर ॥ नेरइयाणतओलेस्साओत्ति ॥ एतासामेव तिसृणां सद्भावा दविशेषणो निर्द्देशो ऽसुरकुमाराणान्तु चतसृणां सद्भावात्

मिया अकम्मभूमिया अंतरदीवया । तिविहा णपुंसगा पण्णत्ता तंजहा णेरइयणपुंसगा तिरिक्खजोणिय णपुंसगा मणुस्सणपुंसगा । तिरिक्खजोणियणपुंसगा तिविहा प० तं० जलचरा थलचरा खहचरा । मणुस्स णपुंसगा तिविहा प० तं० कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा । तिविहा तिरिक्खजोणिया प० तं० इत्थी पुरिसा णपुंसगा । णेरइयाणं तउलेस्साउ प० तं० कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । असुरकुमा राणं तउ लेस्साउ संकिलिट्ठाउ प० तं० कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । एवं थणियकुमाराणं एवंपुढ

मुख ॥ मनुष्यपुरुष त्रण प्रकारे कर्म भूमिनां । अकर्मभूमिना अंतरद्वीपनां ॥ त्रण प्रकारें नपुंसक । नारकी नपुंसक सघलाई सात नरकनांमली । तिर्यंचयोनिना नपुसक । मनुष्यनपुसक । देवता नपुंसक नथाय ॥ तिर्यंच योनिनां नपुंसक त्रण प्रकारें तेकहेंछे । जलचर नपुसक । थलचर नपुसक । खचर नपुसक ॥ मनुष्य नपुसक त्रण प्रकारे तेकहेंछे । कर्मभूमिनां । अकर्मभूमिनां । अंतरद्वीपनां ॥ त्रण प्रकारे सामान्यभावें तिर्यंचकहिया तेकहेंछे । स्त्री पुरुष नपुसक ॥ स्त्री आदिकवेद जीव लेश्याथी बधाये तेमाटे लेश्याकहेंछे चौवीस दडके नारकीने त्रण लेश्याकही तेकहेंछे । कृष्ण लेश्या । नीललेश्या । कापोतलेश्या । असुरकुमारने त्रणलेश्या संकिलिष्टमां कही चौथी तेउ लेश्या असुरकुमारने छे पणि ते

संक्लिष्टाइति विशेषित श्चतुर्थीहि तेषां तेजोलेश्यास्ति किन्तु सा नसंक्लिष्टेति पृथिव्यादि ष्वसुरकुमारसूत्रार्थमतिदिशन्नाह ॥ एवंपुढवीइत्यादि ॥ पृथिव्य ब्वनस्पतिषु देवोत्पादसम्भवा श्चतुर्थी तेजोलेश्यास्तीति सविशेषणो लेश्यानिर्देशो ऽतिदिष्ट स्तेजोवायुद्वित्रिचतुरिन्द्रियेषुतु देवानुत्पत्त्यातदभावा न्निर्विशेष णइति अतएवाह ॥ तेश्रोइत्यादि ॥ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां मनुष्याणाञ्च षडपीति सक्लिष्टासक्लिष्टविशेषणत श्चतुस्सूत्री नवर मनुष्यसूत्रे ऽतिदेशेनोक्तइति व्यन्तर

विकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाणवि तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं वि तउ लेस्सा जहा णेरइयाणं । पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तउ लेस्साउ संकिलिठाउ प० तं० कराहलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं तउ असंकिलिठाउ लेस्साउ प० तं० तेउलेस्सा पम्ह लेस्सा सुक्कलेस्सा । एवमणुस्साणवि वाणमंतराणवि जहा असुरकुमाराणं । वेमाणियाणं तउ लेस्साउ प०

संकिलिष्ट नथी तेकहेछे । कृष्णलेश्या । नीललेश्या । कापोतलेश्या ॥ एम यावत् स्तनित कुमारलगें एह तीन लेश्या सकिलिष्ट जाणवी ॥ एम पृथिवीकाय वनस्पतिकायने त्रण लेश्या जाणवी देवता एहमां आवी उपजे तेमाटे तेजोलेश्या पणछे तेमाटे असुरकुमारना सूत्रमा कहियो । एम तेउकायने । वाउकायने । बे इद्रीने । तेइद्रीने । चोइद्रीने एहतीन लेश्याहोय । जिमनारकीने ॥ पंचेद्रीतिर्यच योनिनाने त्रणि लेश्या संकिलिष्ट पापनी कही तेकहेछे । कृष्णलेश्या । नीललेश्या । कापोतलेश्या । एह त्रण लेश्या पचेद्री तिर्यचने ॥ त्रण लेश्या असकिलिष्ट रूडी कही तेकहेछे । तेजोलेश्या । पदमलेश्या । शुकललेश्या । चौवीसदडके कही । एम मनुष्यने पणि जाणवी व्यतरने तीन तेमांटे व्यंतरने जिम असुरकुमारनेकही

सूत्रे सक्लिष्टा वाच्या अतएवोक्तं ॥ वाणमंतरेत्यादि ॥ वैमानिकसूत्रं निर्विशेषणमेव असंक्लिष्टस्यैव त्रयस्य सद्भावात् व्यवच्छेद्याभावेन विशेषणायोगादिति ज्योतिष्कसूत्रे नोक्ता लेषा तेजोलेश्याया एवभावेन त्रिस्थानकावतारादिति अनन्तरं वैमानिकानां लेश्याद्वारेण ह्यवतार उक्तो ज्योतिष्काणान्तु तथा तदस भवा च्चलनधर्मेण तमाह ॥ तिहीत्यादितारारूवेत्ति ॥ तारकमात्रं ॥ चलेज्जा ॥ स्वावस्थान त्यजेत् वैक्रियं कुर्व्वंद्वा परिचारयमाणवा मैथुनार्थं सरम्भयुक्तमि त्यर्थः स्थानका द्वे कस्मात् स्थानान्तर संक्रामन् गच्छदित्यर्थः यथा धातकीखण्डादि मेरु परिहरदित्यर्थः अथवा क्वचि महर्द्धिके देवादौ चमरव द्वैक्रियादि कुर्व्वति सति तन्मार्गदानार्थं च्चलेदिति उक्तञ्च तत्यण जे से वाघाइए अंतरे से जहन्नेण दोन्निछावठ्ठेजोयणसए उक्कोसेणं वारसजोयणसहस्साइति तत्र व्याघातिक मंतर महर्द्धिकदेवस्य मार्गदानादिति अनन्तर तारकदेवचलनक्रियाकारणा न्युक्ता न्यथ देवस्यैव विद्युत्स्तनितक्रिययोः कारणानि सूत्रद्वये नाह ॥ तिहीत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं ॥ विज्जुयारति ॥ विद्युत् तडित् सैवक्रियतइतिकारः कार्यं विद्युतोवा करण ङ्कारः क्रिया विद्युत्कार स्तं विद्युत कुर्या

तंजहा तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा । तिहिंठाणेहिं तारारूवेचलेज्जा विकुव्वमाणेवा परियारेमाणेवा ठाणाउवा ठाणसंकममाणे तारारूवे चलेज्जा । तिहिंठाणेहि देवे विज्जुयारंकरेज्जा तं० विउव्वमाणेवा परि

तिम जाणिवी । वैमानिक देवनें त्रणि असंकिलिष्ट भली लेश्या कही । ते कहेछै । तेजो लेश्या । पदम लेश्या । शुकल लेश्या । चौवीस दडकै कही । जोतिषीनें तेजो लेश्या छे तेमाटे न कहिया तेहने चालिवा स्वभाव छे । ते कहेछे । त्रणि थानके जोतिषी तारा चलै बीजानथी स्वस्थानकथी चलै । वैक्रिय नथी विकुर्वणा करतो । तथा देवागनाथी मैथुनसेवा करवाने । पोताना थानकथी बीजे थानके जातो तारा रूप

दित्यर्थः वैक्रियकरणादीनि हि सदर्पस्य भवन्ति तग्रहत्तस्य दर्पोल्लासवत शलनविद्युद्गर्जनादी न्यपिभवन्तीति चलनविद्युत्कारादीनां वैक्रियादिकं कारण तयोक्त मिति ऋद्धि विमानपरिवारादिका द्युतिः शरीराभरणादीनां यशः प्रख्याति बलंशारीरं वीर्यंजीवप्रभव म्पुरुषकारस्था भिमानविशेषः सएव नि ष्पादितस्वविषयः पराक्रमश्चेति पुरुषकारपराक्रम समाहारद्वन्द्व स्तदेतत्सर्वं सुपदर्शयमानइति तथा स्तनितशब्दो मेघगर्जितं एवमित्यादि वचनं परिया रेमाणेवा तहारूवस्से त्याद्यालापकसूचनार्थमिति विद्युत्कारस्तनितशब्दा वुत्पातरूपा वनन्तरसुत्ता वथो त्पातरूपाण्येव लोकान्धकारादीनि पञ्चदशसूत्या तिहिठाणेहिमित्यादिकया ॥ आह कण्ठ्या चेय मवर लोके चैनलोके न्धकार न्तमो लोकान्धकार स्याद्भवेत् द्रव्यतो लोकानुभावात् भावतोवा प्रकाशकस्वभा

यारेमाणेवा तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा इड्ढि जुइं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुयारं करेज्जा । तिहिंठाणेहिं देवे थणियसद्दं करेज्जा तजहा विउव्वमाणे एवंजहा विज्जुयारं तहे

चले । अथवा कोईक महर्द्धिक देवता वैक्रिय रूप करतानें मार्ग आपवाने चालें ॥ त्रिण थानके देवता दर्पवंत बीजलीनी परे उद्योत करे ते कहे छे । वैक्रिय रूपादि विकुर्वणा करतो । देवांगनाथी परिचारणा भोग करतो । तथारूप जे श्रमण साधु माहन तेहने महानुभावनें रिद्धि परिवार विमानादिकनी । दुति शरीर आभरणानी दीप्ति । यश कीर्त्ति । बल शरीरनुं । वीर्य जीवनुं । पुरुषात्कार पराक्रम अभिमान उ दम एह सर्व देखाडतो बीजलीनी परे झात्कार ते विद्युत्कारप्रति करे ॥ त्रिण थानके देवता स्तनित शब्द ते मोहनी परे ते गाजवुं ते प्रति करेछे । विकुर्वणा करतो जिम बिजलीकरें तिमज स्तनितशब्द पणि त्रिण प्रकारें जाणिवो । चलयो स्तनित यिदुत इत्यादि उत्पातछे लोकसां

वज्ञानाभावादिति तद्यथा अर्हत्य शोकाद्यष्टप्रकारा मरमभक्तिपरसुरासुरविसरविरचितां जन्मान्तरमञ्चालवालविरूढानवद्यवासनाजलाभिषिक्तपुण्यम हातरुकल्याणफनकल्पां महाप्रातिहार्यरूपा न्निखिलप्रतिपन्थिप्रच्चयात् सिद्धिसौधशिखरारोहणं चेत्यर्हंत: उक्तञ्च अरहंतिवंदणनम सणाणिअरहति पूयसक्कार सिद्धिगमणचअरहाअरहतातेणवुच्चति ॥ १ ॥ तेषु व्यवच्छिद्यमानेषु निर्वाणं गच्छत्सु तथा र्हत्प्रज्ञप्ते धर्मे व्यवच्छिद्यमाने तीर्थव्यवच्छेद्काले तथा पूर्वाणि दृष्टिवादाङ्गभागभूतानि तेषु गत मविष्ट तदभ्यन्तरीभूत न्तत्स्वरूप यत् श्रुत तत्पूर्वगतं तेषु तत्र व्यवच्छिद्यमाने इहच राजमरणदेशनगरभङ्गा दावपि दृश्यते दिशा मन्धकारमात्र रजस्वलतयेति यत्पुनर्भगवत्सु अर्हदादिषु निखिलभुवनजनानवद्यनयनसमानेषु विगच्छत्सु लोकान्धकार भवति तत् किमद्भुतमिति लोकोद्योतो लोकानुभावात् मनुष्यलोके देवागमादा ॥ नाणुप्पयमहिमासु ॥ केवलज्ञानोत्पादे देवकृतमहोत्सवेष्विति देवानां भवनादि

व थणियसद्दंपि । तिहिंठाणेहिं लोगंधयारेसिया तंजहा अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपन्नत्तेधम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगएवोच्छिज्जमाणे । तिहिंठाणेहिं लोगुज्जोएसिया तंजहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं अ

उत्पात अंधकार रूप तेमांटे अंधकारनुं स्वरूप कहेछे । त्रणि थानके लोकमां अंधकार ते कहेछे । अरिहंत अष्टमहाप्रातिहार्यवंत अतिशय वंत मोक्ष जाते लोकमां अंधकार थाय ज्ञावथी ग्यानी गया माटे। अरिहंतनो न्नाष्यो धर्म विच्छेद जाते। न्नरत ऐरवत आश्रीने पूर्वगत दृष्टि वाद विच्छेदजाते। सिद्धांत विच्छेदजाते। द्रव्यथी पणि राजा मरण देश नगरनां न्नंगादिथी अंधकार थाय ॥ एम त्रणि थानके अजुआलुं पणि थाय मनुष्य लोकमां ते कहेछे । अरिहंतनो जन्मथातां । तथा दीक्षा लेतां । अरिहंतनें नाण उपजवानां उच्छवने विषे ॥ त्रणि थानके दे

ध्वन्धकार स्देवान्धकारं लोकानुभावादेवेति लोकान्धकारे उक्तेपि यद्देवान्धकार मुक्तं तत्सर्वत्रान्धकारसद्भावप्रतिपादनार्थमिति एवंदेवोद्योतोपि देवसन्नि पातोभुवि तत्समवतारो देवोत्कलिका तत्समवायविशेषः ॥ एवमिति॥ त्रिभिरेव स्थानैः ॥ देवकहकहत्ति ॥ देवकृतप्रमोदकलकल स्त्रिभिरेवेति ॥ हव्वति॥

रहंतेसुपव्वयमाणेसु अरहंताणंणाणुप्पयमहिमासु । तिहिंठाणेहिं देवंधयारेसिया तंजहा अरहंतेहिं वोच्छि ज्जमाणेहिं अरहंतपण्णत्तेधम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगएवोच्छिज्जमाणे । तिहिठाणेहिं देवुज्जोएसिया तंजहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणंणाणुप्पयमहिमासु । तिहिंठाणेहिं देवसन्निवा एसिया तंजहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहि अरहंताणंणाणुप्पयमहिमासु । एवं देवुक्क लिया देवकहकहए । तिहिंठाणेहिं देविंदा माणुसलोगं हव्वमागच्छंति तंजहा अरहंतेहिंजायमाणेहिं अर

वताना भवनादिकनें विषें अंधकार थाय ते कहेछे । अरिहंतने मोक्षजाते । अरिहंतनो धर्मविच्छेदजातां भरत ऐरवत आश्री । पूर्वगत दृष्टि वाद विच्छेदजातो ॥ त्रणि थानके देवताना भवनादिकै उजुआलो थाय । अरिहंतना जन्म दिवसे । अरिहतना दीक्षा महोच्छवने दिवसे । अ रिहतना नाण उपजवाना दिवसे ॥ त्रणि थानके पृथिवीमा देवतानो सनिपात ते समवाय एकठो मिलै सर्व देवता एकठा मिलै ते कहेछे । अरिहंतनो जन्म थाते सब देवता एकठा मिले । अरिहतने दीक्षा लेते । अरिहतने केवलनाण महोच्छव थाते । एम देव उत्कालिका ते समवाय विशेष । देवतानो कहकह ते देवताना हर्षनो कलकल शब्द ॥ त्रणि थानके सर्व देवेंद्र मनुष्य लोकमा आवै तेकहेछे । अरिहत तीर्थकरना जन्म

शीघ्रं ॥ सामाणियत्ति ॥ इंद्रसमानर्द्धयः ॥ तायत्तिंसत्ति ॥ महत्तरकल्पाः पूज्या लोकपालाः सोमादयो दिङ्नियुक्तका अग्रमहिष्यः प्रधानभार्याः परिषत् परिवार स्तत्रोपपन्नका येते तथा अनीकाधिपतयो गजादिसैन्यप्रधाना ऐरावतादय आत्मरचा अगरचा राज्ञामेवेति ॥ माणुसलोयहव्वमागच्छंतीति प्रतिपदंसंबंधनीय ॥ १५ ॥ मनुष्यलोकागमने देवानां यानि कारणा न्युक्तानि तान्येव देवाभ्युत्थानादीना कारणतया सूत्रपञ्चकेनाह ॥ तिहीत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर ॥ अभुट्ठिज्जत्ति ॥ सिंहासना दभ्युत्तिष्टेयुरिति आसनानि शक्रादीना सिंहासनानि तच्चलन लोकानुभावा देवेति सिंहनादचेलोत्क्षेपौ प्रमोदकार्यौ जनप्रतीतौ चैत्यवृचा ये सुधर्म्मादिसभानां प्रतिद्वार पुरतोमुखमण्डपप्रेक्षमण्डपचैत्यस्तूप चैत्यवृचमहाध्वजादि क्रमतः श्रूयन्ते लोकान्तिकाना प्रधानतरत्वे

हंतेहिंपव्वयमाणेहिं अरहंताणंणाणुप्पयमहिमासु । एवं सामाणिया तायत्तीसा लोगपाला देवा अग्गमहि सीउ परिसोववन्नगा देवा अणियाहिवई देवा आरक्खादेवा माणुसंलोगं हव्वमागच्छंति । तिहिंठाणेहिं देवा अब्भुठेज्जा तजहा अरहंतेहिंजायमाणेहिं जाव तंचेव । एवमासणाइं चलेज्जा सीहणायंकरेज्जा चेलु

महोत्सव दिवसे । तीर्थंकरनां दीक्षा महोत्सवमां । तीर्थंकरनां केवलनाणनी महिमानां महोच्छवमां । एम सामानिक देवता इंद्र सरिखी रिद्धिना धणी । त्रायस्त्रिंशक महतर सरिखा । लोकपाल ते सोम यम वरुण कुवेर । अग्रमहिषी ते इंद्राणी । त्रण पर्षदाना देवता । अनीक कटकना अधिपति देवता । अंग रक्षक देवता एह सर्व इंद्रनो परिवार ए पूर्वे कहिया ते त्रणि कारणे मनुष्य लोकमा आवे ॥ त्रणि थानके देवता सिंहासनथी ऊठे ते कहेछे। अरिहतने जन्मथाते यावत् इमज एह त्रणि कारणे आसन चले। एम सिंहनाद करे विमानमां पृथ्वीमां। तथा

न भेदेन मनुष्यक्षेत्रागमनकारणान्याह ॥ तिहिंइत्यादि ॥ कण्ठ्यं नवरं लोकस्य ब्रह्मलोकस्या न्तः समीपं कृष्णराजीलक्षणं क्षेत्र निवासो येषां ते लोकान्ते वौदयिकभावलोकावसाने भवा अनन्तरभवे मुक्तिगमनादिति लोकान्तिकाः सारस्वतादयो ऽष्टधा वक्ष्यमाणरूपाइति अथ किमर्थंभदन्ततेइहागच्छन्तीति उच्यते अर्हता धर्माचार्यतया महोपकारित्वात् पूजाद्यर्थं मशक्यप्रत्युपकारा स्व भगवतो धर्म्माचार्या यतः ॥ तिण्हेत्यादि ॥ तिण्ह त्रयाणा दुःखेन कृच्छ्रेण प्रतिक्रियते कृतोपकारेणपुसा प्रत्युपक्रियतइति खलप्रत्ययेसति दुःप्रतिकर प्रत्युपकर्त्तुं मशक्यमितियावत् हेश्रमण हेआयुषन् समस्तनिर्द्देशोवा हेश्रमणायु षन्निति भगवता शिष्यः सम्बोधितो ऽम्बयामात्रा सह पिता जनकः अम्बापिता तस्यैक स्थान जनकत्वेनै कत्वविवक्षणा त्तथा ॥ भट्टिस्सत्ति ॥ भर्त्तुः पोष

एवंकरेज्जा तिहिंठाणेहिंदेवाणं चेइयरुक्का चलेज्जा तं० अरहतेहिंजायमाणेहिं जाव तंचेव । तिहिंठाणेहिं लोगंतियादेवा माणुसलोगं हव्वमागच्छेज्जा तंजहा अरहंतेहि जायमाणेहि अरहंतेहिंपव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पयमहिमासु । तिराहदुप्पडियारं समणाउसो तंजहा अम्मापिउणो भट्टिस्स धम्मायरियस्स संपाउवि

वस्त्रनी वृष्टि करै ॥ त्रिणि थानकै देवताना चैत्यवृक्ष चले सुधर्मादि सभाने बारणे बारणें होय ते कहैछै । अरिहंतनां जन्मादि त्रिणि कारणे ॥ त्रिणि थानकै देवता लोकांतिकदेव मनुष्य लोकमा आवे पाचमुं बूम्ह देवलोकने पासे कृष्ण राजीमा बसेछै लोकातिक देवता ते कहैछै । अ रिहतनो जन्मथाते । अरिहंतने दीक्षा लेते । अरिहंतने केवल नाणनी महिमाने विषे ॥ हिवे स्याने अर्थं ते आदत इहा आवेछे । महोपकारी धर्माचार्यनी पूजाने अर्थं धर्माचार्य महाउपकारी छे ते कहैछै । त्रिणि दुःप्रतीकार छै एतले तेहनो प्रत्युपकार करवामे नथी आतो ते कहेछे ।

कस्य स्वामिनइत्यर्थं इतिद्वितीयं धर्मदाता चार्यो धर्म्माचार्यं स्तस्येति तृतीय माहच दु:प्रतिकारौमाता पितरौस्वामीगुरुश्चलोकेस्मिन् तत्रगुरुरिहामुत्रच सुदुष्करतरप्रतीकारइति ॥ १ ॥ तत्र जनक दु:प्रतिकार्यतामाह ॥ संपाउत्ति ॥ प्रात: प्रभात तेनसमं सप्रात: संप्रातरपिच प्रभातसमकालमपिच यदैवप्रा त: सद्यत्त तदैवेत्यर्थो ऽनेन कार्यान्तराव्यग्रता दर्शयति संशब्दस्या तिशयार्थत्वाद्वा ऽतिप्रभाते प्रतिशब्दार्थत्वात् वास्य प्रतिप्रभातमित्यर्थः कश्चिदिति कुली नएव नतुसर्वोपि पुरुषो मानवो देवतिरश्चो रेवंविधव्यतिकरासम्भवात् शतं पाकाना मौषधिक्वाथानां पाके यस्य औषधिशतेनवा सहपच्यते यत् शतकृत्वो वा पाकोयस्य शतेनवा रूपकाणा मूल्यत: पच्यते यत्तच्छतपाक एव सहस्रपाकमपि ताभ्यां तैलाभ्यां ॥ अभिंगित्ता ॥ अभ्यगकृत्वा ॥ गंधट्टएणति ॥ गंधाष्ट केन गन्धद्रव्यचोदेन उद्वर्त्योद्वलनंकृत्वा त्रिभि रुदकै गंधोदकोष्णोदकशीतोदकै र्म्मज्जयित्वा स्नापयित्वा मनोज्ञ कल मोदनादि स्थाली पिठरी तस्यां पाको यस्यत त्तथा अन्यत्रहि पक्वमपक्वंवा नतथाविधस्यादितीदविशेषणमिति शुद्ध भक्तदोषवर्जित स्थालीपाकंचतच्छुद्धं स्थालीपाकेनवा शुद्धमिति विगृह अष्टा

यणं केइपुरिसे अम्मापियरं सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अभ्भंगेत्ता सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहि मज्जावेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोअणंभोआ

माता पिताने ओसिंगल नथाय । भरण पोसण करे ते स्वामी तेहनो धर्माचार्य ते धर्मदाता एह तीननें नित्य सदैव प्रभाते कई कुलवंत पुरु ष माता पिताने शतते सो अथवा हजार औषधे पाक्यो एहवे तेलेकरी मर्दनकरी स्नानकरी सुगंधयुक्त आठ द्रव्यथी उद्धर्त्तन करीने तीन प्रकार ना पाणी सुगंध उष्ण शीतल जलथी । पछे मनोहर हांडलीमें पाक्यो शुद्ध नीपनुं दाधुं नथी एहवो अढार जातिनुं सालण तेणे सहित भोजन

दशभि र्लोकप्रतीतै र्व्यंजनैः शालनकैः सूपादिभि र्व्याकुलं सङ्कीर्णं यत्त त्तथा अथवा ष्टादशभेदन्त व्यञ्जनाकुलञ्चेति अत्रभेदपदलोपेन समासः भोजन भोजयि त्वा एतेचा ष्टादशभेदाः सूओ १ दणो २ जवणं तिन्नियमसाइ ६ गोरसोजूसो ८। भक्खा ९ गुललावणिया १० मूलफला ११ हरियगं १२ सागो १३ ॥१॥ होइरसा लूइतहा १४ पाणंपाणीय १६ पाणगचेव १७। अठ्ठारसमोसागो १८ निरुवहओलोइओपिंडी ॥ २॥ मासत्रय जलजादिसला जूषो मुद्गतंदुलजीरककटुभांडादिर सः भक्ष्याणिखण्डखाद्यादीनि गुललावणिका गुलपर्पटिका लोकप्रसिद्धा गुडधानावा मूलफलान्येकमेवपद हरितकं जीरकादि शाको वसुलादि भर्जिका रसा लू मज्जिका तल्लक्षणमिद दोघयपलामहुपलं दहिस्स अद्धाढयमिरियवीसा दसखडगुलपलाइं एसरसालूनिवइजोगत्ति ॥ १ ॥ पानसुरादि पानीय जलं पान कं द्राचापानकादि शाक स्तक सिद्धइति याव ज्जीवो यावज्जोव यावत्प्राणधारण पृष्टी स्कन्धे अवतसइवावतंसः शेखर स्तस्य करणमवतसिका पृष्ठ्यवतसिका तया परिवहेत पृष्ठ्यारोपितमित्यर्थः तेनापि परिवाहकेन परिवहनेनवा तस्यांवा पितु र्दुःप्रतिकर मशक्य प्रतीकारइत्यर्थः अनुभूतोपकारतया प्रत्युपकारका रित्वा दाहच कयउवयारोजोहो इसज्जणोहोउकोगुणोतस्स उवयारवाहिराजे हवतितेसुदरासुयणत्ति ॥ १ ॥ अहेणसेअत्ति ॥ अथचेत् षमितिवाक्या ल

वेत्ता जावज्जीवं पिठिवडिंसिया तेपरिवहेज्जा तेणावि तस्सअम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ । अहेणंसे तअम्मापियर केवलिपन्नत्तेधम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावित्ता भवइ तेणामेव तस्सअम्मा

जिमाडी जावज्जीव जीवे तिहांलगि वांसे उपाडे चाले एतला वानाकरे तोपणि तेपुत्र माता पितानो ओसिंगल नथाय एहवो भगवंत कहियो छे ॥ हिवे जो ते पुत्र माता पिताने कदापि केवलीनो भाख्यो धर्म कहै समझावे समझावीने प्ररूपीने भेद भेदातर कहीने धर्ममां थितकरे धर्मक

ह्वारे सपुरुष स्तमम्बापितर न्धर्मे स्थापयिता स्थापनशीलो भव त्यनुष्ठानत: स्थापयतीत्यर्थ: किङ्कृत्वेत्याह ॥ आघवइत्ता ॥ धर्ममाख्याय प्रज्ञाप्य बोधयित्वा प्ररूप्य भेदतइति अथवा ख्याय सामान्यतो यथाकार्यो धर्म: प्रज्ञाप्य विशेषतो यथा सा वहिंसादिलक्षण. प्ररूप्यभेदतो यथा शीलाङ्गसहस्त्ररूपइति शीला र्थञ्जनतानि चेतानीति ॥ तेणामेवत्ति ॥ तत स्तेनैव धर्मस्थापनेनैव न परिवहनेन अथवा तेनैव धर्मस्थापकपुरुषेण नपरिवाहिना तस्य प्रत्युपकरणीयस्या म्बा पितु: ॥ सुपडियारत्ति ॥ सुखेन प्रतिक्रियते प्रत्युपक्रियतइति सुप्रतिकार भावसाधनोय तद्भवति प्रत्युपकार: कृतोभवतीत्यर्थ: धर्मस्थापनस्य महोप कारत्वा दाहच सम्मत्तदायगाण दुप्पडियारभवेसुबहुएसु सव्वगुणमेलियाहिवि उवयारसहस्सकोडीहिंति ॥ १ ॥ अथ भर्त्तु र्दु:प्रतिकार्यतामाह कश्चित् कोपि महती ऐश्वर्यलक्षणा ऽर्चा ज्वाला पूजावायस्य अथवा महाश्वासावर्थपतितयार्चेश्च पूज्यइति महार्चो महार्च्योवा माहत्यंमहत्वतद्योगान्माहत्योवा ईश्वरइत्यर्थ: दरिद्र मनीश्वरकञ्चनपुरुष मतिदुस्थ समुत्कर्षयेत् धनदानादिनो त्कृष्टकुर्यात् तत: समुत्कर्षणा नन्तरं सदरिद्र: समुत्कृष्टो धनादिभि: ॥ समाणेत्ति सन् ॥ पच्छत्ति ॥ पश्चात्काले ॥ पुरचणंति ॥ पूर्वकालेच समुत्कर्षणकालएवेत्यर्थ: अथवा पश्चात् भर्त्तु रसमक्षं पुरश्च भर्त्तु:समक्षञ्च विपुलया भोगसमित्या भोग

पिउस्स सुप्पडियारंभवइ समणाउसो केइमहच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा तएणं सेदरिद्देसमुक्किठेसमाणे पच्छा पुरंचणं विउलभोगसमिइसमण्णागएयावि विहरेज्जा तएणंसेमहच्चे अन्नयाकयाइं दरिद्दीऊएसमाणे तस्सद

रावे तेणे करीने ते पुत्र माता पितानो सुप्रतिकार ते ओसिंगल थाय ॥ बीजो अधिकार कहेछे । हे श्रमण हे आयुष्मन् कोईक मोटो द्रव्यवंत ते कोईक दरिद्री पुरुषने द्रव्य देईने उत्कृष्टकरे अर्थात् धनवानकरे पीछे ते दरिद्रीने उत्कृष्ट थया पछी ते पूर्वकाले धन पाम्या पछी घणा भोग स

समुदयेन समन्वागतो युक्तो यः स तथा सचापि विहरेत् वर्त्तते ततो नन्तरं समहार्जीभर्त्ता ॥ सव्वस्संति ॥ सर्वंच तत् स्वच द्रव्यंचेति सर्वस्वं तदपि आस्ता मत्यनिति ॥ दलमाणत्ति ॥ ददन् नकृतमल्पुपकारोभवेदितिशेषः अत स्तेनापि सर्वस्वदानेन सर्व्वस्वदायकेनापिना दुःप्रतिकारमेवेति अथ धर्माचार्यदुः प्रतिकार्यतामाह ॥ केइत्यादि ॥ आरियंति ॥ पापकर्मभ्य आराद्यातमिति आर्य मतएवधार्म्मिक मतएव सुवचनं श्रुत्वा श्रोत्रेण निशम्य मनसा ऽवधार्य्य अन्यतरेषु देवलोकेष न्यतरदेशानां मध्येइत्यर्थः देवत्वेनोत्पद्यतेति दुर्लभा भिक्षा यस्मिन् देशे सदुर्भिक्ष स्तस्मा त्संहरेत् नयेत् कांतार मरण्यं निर्गतः कां

रिद्दस्स अंतियं हव्वमागच्छेज्जा तएणं सेदरिद्दे तस्सन्नहिस्स सव्वस्सवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पडि यारं भवइ अहेणंसे तंभहिं केवलिपन्नत्तेधम्मे आघवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्सभहि स्स सुपडियार भवइ । केइ तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अंतियमेगमवि आरियधम्मं सोच्चा नि

मुदाये करीने सहित विचरें रहै तिवार पछी ते भर्त्ता स्वामी जेणे दरिद्रीने धन देईने धनवान कीधो ते एकदा समये दरिद्री थयो धनरहित थयो निर्धनथई तें पोताना करेला धनवाननें पासे आवे तिवारे ते दरिद्री ते स्वामीनें सघलोई द्रव्य आपे पोते कांई नराखे तोपिण ते दरिद्री ते स्वामीनो ओसिंगल नथाय । तो किम ओसिगल थाय ते कहेछे । ते दरिद्री ते स्वामीने केवलीनो भाष्यो धर्म कहे कहीने ते आगलि प्ररूपीने समझावीने धर्ममां दृढकरै तेहथी धर्म कराये तेथी त स्वामीनो ओसिंगल थाय । एतले धर्म पमाडे तो ओसिगल थाय ॥ हिवे धर्माचार्यनी दुःप्रतिकार्यता कहेछे । कोईक पुरुष तथारूप मोटोश्रमण साधु माहनने पासे एक आर्य निष्पाप धर्मना शुभवचन प्रति सांभली

तारा त्रिःकांतार स्तं निष्क्रामितारंवा दीर्घः कालो विद्यते यस्य सः दीर्घकालिक स्तेन रोगः कालसहः कुष्टादिरांतकः छाच्छजोवितकारी सद्योघातो त्यर्थ. शूलादि रनयो र्द्वन्द्वैकत्वे रोगातक तेनेति धर्मस्थापनेनतुभवति क्ततोपकारो यदाह जोजेणजमिठाण मिठाविश्रोदसणेवचरणेत्रा सोततश्रोचुयत मिचेवकाउ भवेनिरिणोत्ति ॥ १ ॥ शेष सुगमत्वा न्न स्पष्टमिति धर्मस्थापनेन चास्य भवच्छेदलक्षणः प्रत्युपकारः कृतः स्यादिति धर्मस्य स्थान त्रयावतारणेन

सम्म कालमासे कालंकिच्चा अन्नयरेसुदेवलोएसु देवत्ताए उववन्ने तएणं सेदेवे तंधम्मायरियं दुब्भिरकाउ वा देसाउ सुभिरकदेसं साहरेज्जा कंताराउ वा णिक्कतारंकरेज्जा दीहकालिएणं वा रोगातकेण अभिभूयं विमोइज्जा तेणावि तस्सधम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवइ अहेणंसे तंधम्मायरियं केवलिपन्नत्ताउधम्माउ भठंसमाणं भुज्जोवि केवलिपन्नत्तेधम्मे आघवइत्ता जाव ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्सधम्मायरियस्स सु

ने सम्यक् प्रकारें धर्मकरी आउखो पूर्णकरी कालकरीनें अन्यतर कोई एक देव लोकनें विषें देवतापणे उपजे तिवारें ते देवता ते धर्माचार्यनें दु र्भिक्ष दोहली भिक्षाळे जिहां जे देशमां एतले दुकाल माथी सुभिक्ष जिहां सुकाल होय ते देशमां आंण मूकै ॥ अथवा अटवीमां पड्याहोय तिहां थी वसतीमां आणी मूकै । अथवा घणा कालनो रोगहोय रोगनी पीडाथी पराभव्यो होय ते रोगथी मूंकावे देवशक्ती थी एतले प्रकारें पणि ते धर्माचार्यने धर्मना आपनारने दुःप्रतिकार ओसिंगल नथाय तो किम थाय ते कहेछै । जो कदापि ते धर्माचार्यने केवली भाषित धर्मथी पडि या प्रति धर्मथी भ्रष्टथयो तो ते प्रति फरीने केवली भाषित धर्म ते आगलि कही समझावी पाछो धर्ममां थापिये आषाढाचार्यने जेम चेले वा

ललत्तणा अचेतनद्रव्यधर्म्मा अनन्तरमुक्ता स्तत्साधर्म्यात्पुद्गलधर्म्मा न्निरूपयन् सूत्राणि पञ्चचतुरस्र दण्डकानाह ॥ तिहीत्यादि ॥ च्छिन्नः खड्गादिना पुद्गलः समुदायात् चलत्येवेत्यतआह अच्छिन्नपुद्गलइति ॥ आहारिज्जमाणेत्ति ॥ आहारतया जीवेम गृह्यमाणस्स्थाना च्चलति जीवेना कर्षणात् एवं विक्रियमाणोविक्रियकरणवशवर्त्तितयेति स्थाना त्स्थानान्तर सक्रम्यमानो हस्तादिनेति उपधीयते पोष्यते जोवोनेनेत्युपधिः कर्मएवो पधिः कर्म्मो

मज्झिमा जहन्ना । एवं छप्पियसमाउ न्नाणियव्वाउ जाव दुसमदुसमा । तिविहा उस्सप्पिणी पन्नत्ता तंजहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना । एवं छप्पियसमाउन्नाणियव्वाउ जाव सुसमसुसमा । तिहिंठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा तंजहा आहारिज्जमाणेवापोग्गले चलेज्जा विउव्वमाणेवापोग्गले चलेज्जा ठाणाउठाणंसंकामेज्जमाणेवापोग्गले चलेज्जा । तिविहा उवही पन्नत्ता तंजहा कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभंडमत्तोवही ।

मा ते उत्कृष्ट उत्सर्पिणी काल पछें चौथा आरा ताई मध्यम पांचमो छठो ते जघन्य। एम त्रणि प्रकारे उत्सर्पिणी काल कहियो तेकहेछे । उत्कृष्ट मध्यम जघन्य। एम जघन्य ए छये आरा चढता चढता जाणवा। एक दो आरो जघन्य त्रीजो चौथो पाचमो आरो ते मध्यम काल । यावत् सुखम सुखमा छठो आरो ते उत्कृष्टो काल कहिये। काल ते अचेतन कहियो सरखाईपणा माटे पुदगलधर्म कहेछे। त्रणि थानके खडगादिक अणछेदनो पोतानी मेले समुदायमांथी पुदगल चले तेकहेछे। जीव आहार पणे ले तेस्वथानकथी पुदगल चले जीव ताणी ले। देवता मनुष्य वैक्रियने वशवर्ती पुदगलछे तेमाटे। अथवा एक थानकथी बीजे थानके सक्रामीने हस्तादिके करीने मूंके ते पुदगल चले घणा होय तेहमाथी पुदगल ते उपधि गूहण रूप

॥ टी ॥ ॥

भवच्छेदकारणतामाह ॥ तिहीत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं अनादिक मादिरहित मनवदग्र मनन्तं दीर्घाध्वं दीर्घमार्गं चत्वारोंता विभागा नरकगत्याद
यो यस्य तच्चतुरन्त न्दीर्घलं प्राकृतत्वात् संसारएव कान्तार मरण्य संसारकान्तारं तद् व्यतिव्रजेत् व्यतिक्रमेदिति अनादिकालादीनि विशेषणानि कां
तारपचेपि विवचया योजनीयानि तथा ह्यनाद्यनन्तमरण्य मतिमहत्वा च्चतुरन्त न्दिग्भेदादिति निदानभोगर्द्धिप्रार्थनास्तभाय मार्त्तध्यान न्तद्व
र्जितता अनिदानता तया दृष्टिसम्पन्नता सम्यग्दृष्टिता तया योगवाहिता श्रुतोपधानकारित्व समाधिस्थायितावा तयेति भविष्यतिव्रजनंच कालवि
शेष एवस्यादिति कालविशेषनिरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्राणि चतुर्दश कण्ठ्यानि नवर मवसर्प्पिणोप्रथमे अरके उत्कृष्टा चतुर्षु मध्यमा पश्चिमे ज
घन्या एव सुखमसुखमादिषु प्रत्येकं त्रय त्रय कल्पनीय तथा उत्सर्प्पिण्यां दुःखमदुःखमादि तद्भेदाना चोक्तविपर्ययेणो त्कृष्टत्वं प्राग्वत् योज्यमिति का

प्पक्रियारं वइ । तिहिंठाणेहिं संपन्नेअणगारे अणाईयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं विइव
एज्जा तंजहा अणिदाणयाए दिठिसंपन्नयाए जोगवाहियाए । तिविहा उसप्पिणी पन्नत्ता तंजहा उक्कोसा

त्यो देवता थईने तेणे प्रकारे ते धर्माचार्यने ओसिंगलथाय धर्मथी ससार तरिये अन्यथा नथाय ॥ हिवे संसार तरवानां भेद कहेछे । त्रणि था
नके सहित अणगार साधु जेहनो आदिनथी अतनथी जेहनीमोटीमार्गछे चारमनुष्यादिगति ससाररूप अटवीप्रति उतरे अतिक्रमें ते त्रण बोल
कहेछे । धर्मकरीरिद्धिनो नियाणो नकरे । समकित सहितहोय। योग उपधानतपकरें श्रुतसमाधि राखे ससारतरवो ते अवथितिकाल पूरोथये होय
तेमाटे काल विशेषनू स्वरूप कहेछे । त्रणि प्रकारे उत्सर्पिणी कही। उत्कृष्ट मध्यम जघन्य। एणे प्रकारे छए आरा जाणवा। पहिलो आरो सुखमसुख

पधिः एव शरीरोपधि वाह्यशरीरवहिर्वर्त्ती भाण्डानिच भाजनानि मृण्मयानि मात्राणि मात्रायुक्तानि कांस्यादिभाजनानि भोजनोपकरणमित्यर्थः भाण्डमात्राणि तान्येवो पधि भाण्डमात्रोपधि रथवा भाण्डं वस्त्राभरणादि तदेव माना परिच्छेदः सैवो पधिरिति ततो वाह्यशब्दस्य कर्मधारयप्र ति चतुर्विंशतिदण्डकचिन्तायां मसुरादीनां त्रयोपि वाच्याः नारकैकेन्द्रियवर्जा स्तेषा मुपकरणस्याभावात द्वीन्द्रियादीनां न्तूपकरण दृश्यते एव केपा श्चिदिति ॥ अतएवाह ॥ एवमित्यादि अहवेत्यादि ॥ सचित्तोपधि र्यथा शैलभाजन मचित्तोपधि र्वस्त्रादिः मिश्रः परिणतप्रायं शैलभाजनमिवेति दण्डक चिन्ता सुगमा नवर सचित्तोपधि र्नारकाणां शरीर अचेतन उत्पत्तिस्थान म्मिश्रः शरीरमेवो च्छ्वासादिपुद्गलयुक्तं तेषा सचेतनाचेतनत्वेन मिश्रत्वस्य विवक्षणादिति एवमेवशेषाणामप्यय मूह्यमिति ॥ तिविहेपरिग्गहेत्यादि ॥ सूत्राण्यु पधिवत् ज्ञेयानि नवर म्परिग्टह्यते स्वीक्रियतइति परिग्रहो

एव असुरकुमाराणं भाणियव्वं एवं एगिंदियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं । अहवा तिविहा उवही पन्नत्ता तजहा सच्चित्ते अच्चित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं । तिविहे परिग्गहे पन्नत्ते तंज

परिगृहले ते उपधिनो स्वरूप त्रण प्रकारे ते कहेछे । कर्मोपधि ते आठ कर्मनो परिगृह । शरीर उपधि ते औदारिकादिक पांचनो । बाहिर परिगृह माटीना कांसाना पात्रादिक अथवा वस्त्राभरणादिक उपधि । एम असुरकुमारादि दसने ए उपधि परिगृह होय । ते एहनी परे जा णवो । एम चोवीस दण्डके एकेंद्री नारकी टाळीने कोईक बेइंद्रियादिकने दीसे तीन उपकरण । यावत् वैमानिक देव पर्यंत तीन उपधि कही । अथवा तीन प्रकारे उपधि ते कहेछे । सचित्त पाषाणादिक भाजन । अचित्त वस्त्रादिक । मिश्र ते एज शैलादि भाजन काईक सचित्त काईक अचित्त । एम नारकादि चोवीस दंडके सर्वने होय । नारकीने एम जाव वैमानिक चोवीस दण्डक लगे । तीन प्रकारे परिगृह कहियो ते कहे

मूर्च्छाविषयइति दृहचैषा मयमिति व्यपदेशभागे ग्राह्यः सचनारकैकेन्द्रियाणां कर्मादिरेव सम्भवति नभाण्डादिरिति पुद्गलधर्म्माणां त्रित्वं निरूप्य जीवधर्म्माणां ॥ तिविहेत्यादिभि ॥ सूत्रे सूदाह कण्ठ्यानि चैतानि नवर मणिहितिः प्रणिधान मेकाग्रता तच्च मनः प्रभृतिसम्बन्धिभेदात् त्रिविधेति तत्र मनस.प्रणिधान मनःप्रणिधान एवमितरे तच्च चतुर्विंशतिदण्डके सर्वेषां पचेंद्रियाणं भवति तदन्येषान्तु नास्ति योगानां सामस्त्येना भावा दित्यत एवोक्तं

हा कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरभंडमत्तपरिग्गहे । एवमसुरकुमाराणं एवं एगिंदियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं । अहवा तिविहे परिग्गहे पन्नत्ते तंजहा सच्चित्ते अच्चित्ते मीसए एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं । तिविहे पणिहाणे पन्नत्ते तंजहा मणपणिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे । एवं पंचेंदिया

छे । कर्म परिगृह आठ प्रकारे । शरीर परिगृह पाच प्रकारे । बाहिर परिगृह भांड पात्र वस्त्रादिक । एम असुरकुमारादिकने जाणवो । एम चौवीस दंडक माहि एकेंद्री नारकी छांडीने एहने भाडादि परिग्रह नथी तेमाटे यावत् वैमानिक ताईं त्रणि परिगृह जाणिवा । अथवा तीन प्रकारे वली परिगृह कहियो ते कहेछे । सचित्त परिगृह । अचित्त वस्त्रादि । मिश्र ते सचित्ताचित्त । ए त्रण परिगृह चौवीस दंडके आ तरा रहित वैमानिकताईं होय एकेंद्री नारकीने पणि होय । ए प्रथम कहियो छे तिम पुदगलनू त्रिविध पणूं कहेछे । त्रण प्रकारे प्रणिधान कहियो मन प्रमुखनू एकाग्र पणू करवू ते प्रणिधान ते कहेछे । मननू प्रणिधान ते मननू एकागृपणूं । वचननू एकागृपणूं ते वचन प्रणिधान । कायानू एकाग्रपणू ते काय प्रणिधान । एणे प्रकारे ए त्रण प्रणिधान पंचेंद्रीने होय चौवीस दंडक मांही यावत् वैमानिक ताईं । एकेंद्रियादिकने ए

एवं ॥ पंचिंदियेत्यादीनि ॥ प्रणिधानंति शुभाशुभभेद मथशुभमाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सामान्यसूत्रं विशेष माश्रित्य चतुर्विंशतिदण्डकाचिन्तायां मनुष्या णामेव तत्रापि संयतानामेवेदं भवति चारित्रपरिणामरूपत्वा दस्येति ॥ एतदाह ॥ संजयेत्यादि ॥ २ दुःप्रणिधान मशुभमनः प्रवृत्त्यादिरूपं सामान्य प्रणिधानवत् आरवेयमिति २ योषपर्यायाधिकारात् ॥ तिविहेत्यादिना ॥ गब्भवक्कमंतीत्येतदंतेन ॥ गृथेन योनिस्वरूपमाह तत्र शुभस्मि तैजसकार्मण शरीरवन्तः संतः औदारिकादिशरीरेण मिश्रीभवं त्यस्या मिति योनि जीवस्यो त्पत्तिस्थानं शीतादिस्पर्शवदिति ॥ एवंति ॥ यथा सामान्यत स्त्रि

णं जाव वेमाणियाणं । तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्प णिहाणे । संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्प णिहाणे । तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे । एवं पंचें

तीन पूरी होय । अशुभ शुभ होय । शुभ कहेछे । त्रण प्रकारे शुभ प्रणिधान कहिवुं ते कहेछे । एक मन सुप्रणिधान जे मन भलूं धर्ममां । वचननुं सुप्रणिधान जे सत्यवचन । कायसुप्रणिधान जेकायाथी पाप न करे धर्मकरे ॥ संयमवंत मनुष्यनें एतले साधुने त्रणि सुप्रणिधान कहियां तेकहेछे । मनसुप्रणिधान । वचनसुप्रणिधान । कायसुप्रणिधान । एह चारित्रियानेंहोय ॥ त्रणि दुप्रणिधानअशुभकहियां तेकहेछे । मनदु प्रणिधानमांठुंमन । वचनदुःप्रणिधान असत्यवचनबोलें । कायदुःप्रणिधान जेकायाथी पापकरवो । ए पंचेंद्रीनें यावत् वैमानिकलांइं होय । जीवना अधिकारमाटे त्रणिभेदे योनिकही तेकहेछे । शीता उष्णा शीतोष्णा ॥ एणें प्रकारे एकेंद्री विगलेन्द्री ते बेइंद्री तेइंद्री चौइंद्री एहतीनने

विधा स्तथा चतुर्विंशतिदण्डकचिंताया मेकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां तेजोवर्जाना तेजसा मुष्णयोनित्वात् पञ्चेन्द्रियतिर्यक्पदेमनुष्यपदेच सम्मूर्च्छनजानां त्रिविधाशेषाणा त्वन्यथेति यतश्राह सीश्रोसिणजोणीया सव्वेदेवायगब्भवक्कंती उसिणायतेउकाए दुहनिरएतिविहसेसाणति ॥ १ ॥ अन्यथा योनि त्रैविध्यमाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर न्दण्डकचिन्तायां एकेन्द्रियादीना सचित्तादि त्रिविधा योनि रन्येषा न्त्वन्यथा यतउक्त अचित्ताखलुजोणी नेरइयाणतहेवदेवाण मीसायगब्भवसही तिविहाजोणीयसेसाणति ॥ १ ॥ पुन रन्यथातामाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सम्वृत्ता संकटा घटिकालयवत् विहता

दियाणं जाव वेमाणियाणं । तिविहा जोणी पन्नत्ता तंजहा सीश्रा उसिणा सीश्रोसिणा । एवमेगिंदियाणं विगलेंदियाण तेउकाइयवज्जाणं संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साणय । तिविहा जोणी पन्नत्ता तंजहा सच्चित्ता अच्चित्ता मीसिया । एवमेगेंदियाण विगलेंदियाणं समुच्छिमपंचेंदियतिरिक्ख जोणियाणं संमुच्छिममणुस्साणय । तिविहा जोणी पन्नत्ता तंजहा संवुडा वियडा संवुडवियडा । तिविहा

याय । तेउकाय वांडीने एहने उष्णयोनिहोय । समूर्च्छिम पचेन्द्री तिर्यंचने देवताने गर्भजने शीतोष्णयोनिहोय । अग्निने उष्णा बीजाने त्रणियोनिसमूर्च्छिम मनुष्यने । बीजीपणि त्रणियोनिकही ते कहेंछे । सचित्तयोनि । अचित्तयोनि । मिश्रयोनि तेसचित्ताचित्तयोनि ॥ एकेंद्री विगलेंद्रीने समूर्च्छिमतिर्यंच पचेंद्री संमूर्च्छिममनुष्यने एतलाने त्रणयोनिहोय । देवता नारकीने एक अचित्तयोनिहोय । गर्भजमनुष्य तिर्यंचने मिश्रयोनिहोय । समूर्च्छिम मनुष्यने मिश्रयोनिहोय ॥ वली त्रणयोनिकही । तेकहेछे । सवृतसाकडीयोनि घडीनाघरसरिखी । विवृतयोनि

विपरीता सम्वृतविवृता तदुभयरूपेति एतद्विभागोयं एगिंदियनेरइया संवुडजोणीत्यंतिदेवाय गिगलिंदिगाणवियडा संवुडवियडायगब्भवक्कंतिति ॥ १ ॥ कुम्मुन्नतेत्यादि ॥ कच्छपं नवर कूर्मः कच्छप स्तद्वदुन्नता कूर्मोन्नता शंखस्येव आवर्त्तो यस्यां सा शंखावर्त्ता वंशा वंशजालता पत्रकमिव या सा वंशीपत्तिका ॥ गब्भंवक्कमंतित्ति ॥ गर्भे उत्पद्यंते बलदेववासुदेवानां सच्चरत्नेनं कालविपर्ययो त्तमपुरुषत्वेविध्यमिति ॥ बहवेत्यादि ॥ योनिला ज्जीवाः पुद्गलाश्च तत् ग्रहणयोग्याः जिं व्युत्क्रामन्ति उत्पद्यन्ते व्यवक्रामंति विनश्यति एतदेवव्याख्याति ॥ विउक्कमंतित्ति ॥ कोर्थः च्यवंति ॥ वक्कमंतित्ति ॥ किमुक्तं भव

जोणी पण्णत्ता तं० कुम्मुन्नया संखावत्ता बंसीवत्तिया । कुम्मुन्नयाणंजोणी उत्तमपुरिसमाऊणं। कुम्मुन्नया णं जोणीए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति तंजहा अरहंता चक्कवट्टी बलदेवबासुदेवा । संखावत्ता णं जोणी इत्थियरयणस्स संखावत्ताएणंजोणीए बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमति विउक्कमंति चयंति

तेमोकली । संवृतविवृतयोनि तेसांकडीमोकली । एकेंद्रीनें नारकीनें संवृतयोनि देवताने विगलेंद्रीने विवृतयोनिकही । गर्भजनें संवृतयोनिकही ॥ वली त्रणयोनिकही तेकहेछे । कूर्मोन्नतायोनि तेकाछवानीपरे उची । संखावर्त्तायोनि तेसंखनीपरें आवर्त्तहोय । वंशीपत्रायोनि वासनापत्रासरि खी ॥ कूर्मोन्नतायोनि तेउंची पुरुषनें उपजिवानों थानक तेकहेछे । कूर्मोन्नतायोनिनेविषे त्रणिप्रकारना उत्तमपुरुष गर्भमांउपजे तेकहेछे । अरि हंत चक्रवर्त्ति बलदेववासुदेव साथिउपजे तेमाटे एकठाकह्यिा । संखावर्तायोनि चक्रवर्तिनी स्त्रीने होय स्त्रीरत्नने होय । संखावर्त्तयोनिनेविषे घणां जीव अनेपुदगल गृहिवानेयोग्य तेजीवपुदगल घणाउपजे । अनेविणसे । चवे अनेउपजे पणिनीपजेनथी जन्मनथाय ॥ वंशीपत्रायोनि बीजा

ति उत्पद्यन्तइति ॥ पिहज्जणस्सत्ति ॥ पृथग्जनस्य सामान्यजनस्यो त्पत्तिकारणभवतीति अनन्तर योनितो मनुष्याः प्ररूपिता अधुना मनुष्यसधर्म्मणो वादरवनस्पतिकायिकान् प्ररूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ तृणवनस्पतयो वादराइत्यर्थः संख्यातजीविकाः संख्यातजीवा यथा नालिकावद्धकुसुमानि जात्यादीनीत्यर्थः असख्यातजीविकाः यथा निम्बाम्रादीनां मूलकन्दस्कन्धत्वक्शाखाप्रवाला अनंतजीविकाः पनकादयइति इह प्रज्ञापनासूत्राण्यपीत्थं जेकेइ नालियावद्वा पुप्फासखेज्जजीविया णिहुयाअणतजोवा जेयावन्नेतहाविहा ॥ १ ॥ पउमुप्पलनलिणाण सुभगसोगंधियाणय अरविंदकोंकणाण सयवत्तसहस्सवत्ताण ॥२॥ विटवाहिरपत्ता यकन्नियाचेवएगजीवस्स अभिंतरगापत्ता पत्तेयकेसरमिजत्ति ॥ ३ ॥ तथा लिबंबजबुकोस बसालअकोल्लपीलुसल्लूया सल्लइमोयइमालुय वउलपलासेकरंजेयेत्यादि ॥ ४ ॥ एएसिणं मूलावि असंखिज्जजीविया कंदावि खंदावि तयावि सालावि पवालावि पत्ता पत्तेयजीविया पुप्फा अणेगजीविया फला एगट्ठियत्ति अनंतरं वनस्पतय उक्ता स्तेच जलाश्रया बहवो भवतीति सबंधा ज्जलाश्रयाणां तीर्थानान्निरूपणायाह ॥ जंबू

उववज्जंति नोचेवणं णिप्पज्जंति । बंसीपत्ताणंजोणी पिहज्जणस्स बंसीवत्तियाएणं जोणीए बहवे पिहज्जणे गब्भवक्कमंति । तिविहा तणवणस्सइकाइया प० तं० संखेज्जजीविया असंखेज्जजीविया अणंतजीवि

सामान्यपुरुष मनुष्यनेहोय । बंशीपत्रायोनिमां घणासामान्यपुरुष गर्भ्रतयाउपजैं ॥ एहत्रणयोनि मनुष्यनेंकही मनुष्यनांस्वरूप सरखी बादर तृणवनस्पति कायळे तेकहैळे । त्रणप्रकारे वनस्पति संख्याता जीवनी एकजाईनोफूल । असंख्यातजीवनी कमलप्रमुखनोकंद मूलखंधळालमां असंख्यातजीवहोय । अनताजीवनी नीलफूलप्रमुख ॥ वनस्पती जलाश्रये बहुलथाय तेमांटे जलाश्रयतीर्थ कहैळे । त्रणितीर्थकहिया जंबूद्वीपनां भरत

द्वीवेत्यादि ॥ पंचदशसूत्री साक्षादतिदेशाभ्यां सुगमाच केवलं तीर्थानि चक्रवर्त्तिनः समुद्रशीतादिमहानद्यवतारलक्षणानि तन्नामकदेवनिवासभूता नि तत्र भरतैरवतयो स्त्राभि पूर्वदक्षिणापरसमुद्रेषु क्रमेणेति विजयेषुतु शीताशीतोदामहानद्योः पूर्वादिक्रमेणेति जंबूद्वीपादौ मनुष्यक्षेत्रे सति तीर्था नि प्ररूपितानि अधुना तत्रैव संत काल विभागोपयोगिनः सूत्रपंचदशकेन साक्षा दतिदेशाभ्यां निरूपयन्नाह ॥ जंबूद्दीवेत्यादि ॥ सुबोधं किंतु ॥ पन्न त्तेत्ति ॥ अवसर्प्पिणीकालस्य वर्त्तमानत्वेना तीतोत्सर्प्पिणीवत् ॥ होत्यत्ति नव्यपदेशः कार्यो ऽपितु पण्णत्तेत्ति कार्यं इत्यर्थः ॥ जम्बूद्दीवेत्यादिना ॥ वासु

या । जंबूद्दीवेद्दीवे भारहेवासे तउ तित्था पन्नत्ता तंजहा मागहे वरदामे पभासे । एवं एरवएवि । जंबू द्दीवेद्दीवे महाविदेहेवासे एगमेगे चक्कवट्टिविजए तउ तित्था पन्नत्ता तंजहा मागहे वरदामे पभासे । एवं धायइखंडेदीवे पुरच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि । पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि । जंबूद्दीवेद्दीवे

क्षेत्रमां तेकहेछे । मागध वरदाम प्रभास । एम ऐरवतक्षेत्रमांपणि त्रणतीर्थकह्यिवा । जम्बूना महाविदेहक्षेत्रमा एकेक चक्रवर्त्तिविजयमा त्रणितीर्थक ह्यिा मागध वरदाम प्रभास । एम धातकीखंडद्वीपमा पूर्वदिशि तीनतीर्थकह्यिा । एम पश्चिमदिशि पणिजाणवुं । पुष्करार्द्धनेविषे पणिपूर्वा र्द्धमां पश्चिमार्द्धमांपणि तीनतीर्थकह्यिवा । एहतीर्थ मनुष्यक्षेत्रमाछे तीर्थ तेचक्रवर्त्तिना साधवाना तीर्थनामैज देवताअधिष्ठित ॥ मनुष्यक्षेत्रमा कालमानछे तेकहेछे । जम्बूद्वीपमा भरतक्षेत्रै तथा ऐरवतक्षेत्रैं गईउत्सर्पिणीनेविषे सुखमाआरो त्रणकोडाकोडिसागरोपममाननुं थयो । एमज अ वसर्प्पिणीकाले पणिएतलो विशेषकह्यियो आवतीउत्सर्प्पिणीयेथासे । एम धातकीखंडमांहि पूर्वार्द्ध तथा पश्चिमार्द्धमांपणि एम पुष्करवरद्वीपमां

ञरहेरवएसुवासेसु तीञ्चाएउस्सप्पिणीए सुसमाएसमाए तिन्निसागरोवमकोडाकोडीउ कालो होत्था । एवंउ सप्पिणीए णवरं प० ञ्चागमेस्साए उस्सप्पिणीए ञविस्सइएवधाइयखंडे पुरच्छिमद्धेवि पञ्चत्थिमद्धेवि । एवं पुक्करवरदीवह्लपुरत्थिमद्धेपञ्चच्छिमद्धेविकालोञाणियञ्चो । जंबूद्दीवे २ ञरहेरवएसुवासेसुतीयाएउस्सप्पिणी ए सुसमसुसमाएसमाए मणुयातिन्निगाउञ्चाइं उद्ध उच्चत्तेणं तिन्निपलिउवमाइं परमानुं पालइत्ता । एवं इमी से उसप्पिणीए ञ्चागमेस्साए उस्सप्पिणीए जबूद्दीवेदीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया तिन्निगाउञ्चाइ उद्ध उ च्चत्तेणं पन्नत्ता तिन्निपलिउवमाइं परमानुं पालयंति । एवं जाव पुक्करवरदीवह्लपञ्चत्थिमद्धे । जबूद्दीवेदीवे ञरहेरवएसुञासेसु एगमेगाए उसप्पिणीउस्सप्पिणीए तउ बंसा उप्पाज्जिंसुवा उप्पाज्जिंतिवा उप्पाज्जिस्संतिवा

पूर्वार्द्ध तथा पश्चिमार्द्धमांपणि सुखमाआरो त्रणिकोडाकोडि सागरोपमनुंजाणवुं ॥ जबूद्वीपना ञरतऐरवतक्षेत्रमां गईउत्सर्प्पिणीकाले सुखमसुखमा काले मनुष्य त्रणिगाउना ऊंचाथया त्रणिगाऊनुंशरीरथयो ॥ त्रणपल्योपमनुं उत्कृष्टआयुपाले । एम आ वर्त्तमानअवसर्प्पिणी आवती उत्सर्प्पिणीये पणि सुसमाकाले एहमानजाणवु । जंबूद्वीपना देवकुरु उत्तरकुरुक्षेत्रे युगलियामनुष्य त्रणिगाउ ऊचाकह्यिा त्रणपल्योपमनु उत्कृष्टआऊखो सदैवपालेछे । एम यावत् धातकीखड पुष्करार्द्ध पश्चिमार्द्धलगिकह्विवुं । जबूद्वीपना ञरतऐरवतक्षेत्रैं एकेकी उत्सर्प्पिणी तथा अवसर्प्पिणीये त्रणिबशउपना वर्तमानकाले उपजेछे आगामिकाले उपजस्ये । एकअरिहंतनोवंश बीजो चक्रवर्त्तिबंश । त्रीजोदशारबश तेबलदेववासुदेवबंश ॥ एम यावत्

देवेत्येतदन्तेन गंथेन कालधर्म्मानिगाल सुगमश्चायं किन्तु ॥ ग्रहाउयंपालयतित्ति ॥ निरुपक्रमायुष्कत्वा न्मध्यमायुः पालयंति हृक्षत्वाभावा दायुष्काधि
कारा दिदं सूत्रत्रय माह ॥ बादरेत्यादि ॥ स्पष्टं स्थित्यधिकारा देवेद मपरमाह ॥ ग्रहेत्यादि ॥ ग्रहभतेत्ति ॥ ग्रथ परप्रश्नार्थः भन्दतइति भदन्तः कल्या
णस्य सुखस्यच हेतुत्वा त्कल्याणः सुखश्चेति ग्राहच भदिकल्लाणसुहत्थो धाऊतस्सयभदंतसद्दोयं सभदंतोकल्लाणंसुहोयकलंकिलारोगइत्यादि ॥ १ ॥ ग्रथवा

त० ग्ररहंतबंसे चक्कवट्टिबंसे दसारबंसे एवं जाव पुक्करवरदीवड्ढपञ्चत्थिमद्धे। जंबूद्दीवे दीवे भरहेरवएसुवा
सेसु एगमेगाए ग्रोसप्पिणी उस्सप्पिणीए तत्र उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसुवा उप्पज्जतिवा उप्पज्जिस्संतिवा तं०
ग्ररहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा एवं जाव पुक्करवरदीवड्ढपञ्चत्थिमद्धे । तत्रग्रहाउयं पालेंति तंजहा ग्र
रहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा । तत्र मज्झिममाउयं पालयंति तंजहा ग्ररहंता चक्कवट्टी बलदेववासु
देवा वायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिन्निराइंदियाइं ठिई पन्नत्ता । वायरवाउकाइयाण उक्कोसेणं तिन्निवा

पुष्करवरद्वीपना पश्चिमार्द्धलगि जाणिवुं ॥ भरत ऐरवतक्षेत्रमां एकेकी उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीकाले त्रणउत्तमपुरुष उपनाउपजेछे उपजस्ये तेकहेछे
अरिहंत चक्रवर्त्ति बलदेववासुदेव। एम जाव पुष्करार्द्धद्वीपना पश्चिमार्द्धलगे ॥ त्रणियथा आऊखोपूरुपाले निरुपक्रम तेकहेछे। अरिहंत चक्रव
र्त्ति बलदेववासुदेव । त्रणिमध्यग्राऊखोपालें गरडानथाय तेकहेछे । अरिहत चक्रवर्त्ति बलदेववासुदेव ॥ आऊखाना अधिकारमाटे कहेछे । बा
दरअगनिकाइयानी उत्कृष्ट त्रणरात्रिनी थितिकही । बादर वायुकाइयानी उत्कृष्ट त्रणहजारबरसनी थितिकही ॥ हिवे भगवंतप्रति गौतमपूछे

भजते सेवते सिद्वान् सिद्धिमार्गंवा अथवा भज्यते सेव्यते शिवार्थिभिरिति भजंत: आहच अहवाभजसेवाए तस्सभयंतोत्तिसेवएजम्हा सिवगइणोसिवम ग्गंसिव्वीयजओतदत्थीणति ॥ १ ॥ अथवा भाति दीप्यते भ्राजतेवा दीप्यतेवा ज्ञानतपोगुणदीप्त्येति भांतोभ्राजंतोवेति आहच अहवाभाभाजोवा दित्ती एहोइतस्सभतोत्ति भाजंतोवायरिओ सोणाणतवोगुणजुईएत्ति ॥ १ ॥ अथवा भ्रांतोपेतो मिथ्यात्वादे स्तत्वानवस्थित इत्यर्थः इति भ्रान्त अथवा भगवाने श्वर्ययुक्तइति आहच अहवाभतोवेओ जमिच्छत्तादइवधहेजओ अहवेसरियाइभगो विज्जइसोतेणभगवतो ॥ १ ॥ भवस्यवा संसारस्य भयस्यवा त्रासस्यां तहे तुत्वा त्राशकारणत्वा इवान्तो भयान्तोवेति उक्तंच नेरइयाइभवस्सव अतोजतेणसोभवतोत्ति अहवाभयस्सअतो होइभवंतोभयतोसोत्ति ॥ १ ॥ इहच भद न्तादीनां शब्दानां स्थानेप्राकृतत्वा दामत्रणार्थं भंतेत्तिपदं साधनीयमिति अतोभंतेत्ति महावीर मामंत्रयनुक्तवान् गौतमादि: शालीनां कलमादिकानामि ति विशेष: शेषाणा व्रीहीणामिति सामान्यं यवयवा यवविशेषएवै तेषा मभिहितत्वेनप्रत्यत्ताणां कोष्ठे कुशूले आगुप्तानि प्रक्षेपणेन संरक्षितानि कोष्ठागु प्तानि तेषा मेवं सर्वत्र नवर पल्य वंशकटकादिकृतो धान्याधारविशेष: मचस्थूणाना मुपरि स्थापितवंशकटकादिमयो जनप्रतीतो मालको गृहस्योपरितन

ससहस्साइं ठिई पन्नत्ता । अहन्नते सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं एएसिणं धन्नाणं कोठा उत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं उलित्ताणं लित्ताणंलंछियाणं मुद्दियाणं पिहियाणं केवइयंकालं

छे सालि व्रीही जव जवजव तेयवविशेष ए सर्वेधांन कोठारमा घाल्याछुयें बांसप्रमुखनोपालो मांचो एकहेठें एकऊपरि तिहांराख्याहोय । मालो घरनीऊपरलीभूमि तिहाराख्याहोय । बारदेईढांको सघलेलिप्युं । रेखाथी लाछनकीधा तेमांटी प्रमुखनी मुद्राकीधी । सूधा ढांकाऊपरि

भागो ऽभिहितच अङ्कुडीहोइमचो मालोयघरीवरिहोइत्ति ॥ ओलित्ताणति ॥ द्वारदेशे पिधानेन सह गोमयादिना ऽवलिप्तानां ॥ लित्ताणंति ॥ सर्वतः ॥
लञ्छियाणति ॥ रेखादिभिः कृतलाञ्छनानां ॥ मुद्दियाणति ॥ मृत्तिकादिमुद्रावतां ॥ पिहियाणति ॥ स्थगितानां ॥ केवइयति ॥ कियतकाल योनि र्यस्यामङ्कुर
उत्पद्यते तत. परयोनि. प्रम्लायति वर्णादिना हीयते प्रतिध्वंस्यते विध्वंसाभिमुखा भवति विध्वस्यते चीयते एवञ्च तद्बीज मबीज भवति उप्तमपि नाङ्कुरमुत्पादय
ति किमुक्तम्भवति तत परयोनिव्यवच्छेदः प्रज्ञप्तो मया अन्यैश्च केवलिभि रिति शेष स्पष्ट स्थित्यधिकारादेवेद मपर सूत्रद्वयमाह ॥ दोच्चेत्यादि ॥ स्फुट न्नवर द्विती
यायां पृथिव्यां किं नामिकाया मित्याह शर्करप्रभाया मित्येव योजनीय सर्वपृथ्वीषु चेय स्थिति. सागरमेगतियसत्त दससत्तरसतहयवावीसा तेत्तीसजावठिई

जोणी संचिट्ठइ जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्निसंवच्छराइं तेणपरं जोणी पमिलायइ तेणपरं जोणी
पविद्धंसइ तेणपर जोणी विद्धंसइ तेणपरं बीए अबीए भवइ तेणपर जोणी वोच्छेदे पन्नत्ते । दोच्चा
एण सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । तच्चाएणवालुयप्पभाए

केतलाकालताइँ एहधाननी योनिरहे अङ्कुरोउपजे भगवानकहेले । जघन्य अंतरमुहूर्त्त येघणीपछे अचित्तजीवचवे । उत्कृष्ट त्रणियरसताईरहे वाव्यु
उपजे । तिवारपछी योनिम्लानथाय वर्णादिकथीहीनथाय । तिवारपछी योनिविणासवाने सन्मुखथाय । तिवारपछी योनिक्षयपामे । तिवार
पछी बीजअबीजथाय वाव्याअंकूरोनथाय । योनिविच्छेदथाय ॥ थितिना अधिकारमाटे कहेछे । बीजी सर्करप्रभा पृथ्वीमा उत्कृष्ट नारकीनुत्रण
सागरोपमनु आउखूं कहिवु । त्रीजी वालुकप्रभा नरकमा जघन्य नारकीनी त्रणसागरोपमनी थितिकही । पाचमी धूमप्रभा नरकमा त्रण

सत्तसु पुढवीसुउक्कोसा ॥ १ ॥ जापढमाएजेट्ठा साविइयाएकणिट्ठियाभणिया तरतमजोगोएसो दसवाससहस्सरयणायत्ति ॥ २ ॥ नरकपृथिव्यधिकारा न्नारकविशेषस्वरूपप्ररूपणाय सूत्रत्रयमाह ॥ पंचमाएइत्यादि ॥ सुबोधं केवल ॥ उसिणवेयणत्ति ॥ तिसृणा मुष्णस्वभावत्वा त्तिसृषु नारका उष्णवेदना इत्युक्तापि यदुच्यते नैरयिका उष्णवेदना मत्यनुभवन्तो विहरन्तीति तत्तद्वेदनासातत्यप्रदर्शनार्थं न्नरकपृथ्वीना क्षेत्रस्वभावानां प्राक् स्वरूप मुक्त मथ क्षेत्रा धिकारात् क्षेत्रविशेषस्वरूपस्य त्रिस्थानकावतारिणो निरूपणाय सूत्रचतुष्टय माह ॥ तओइत्यादि ॥ त्रीणि लोके समानि तुल्यानि योजनलक्षप्रमाणत्वात् नचप्रमाणतएवात्र समत्व मपितु श्रोत्तराधर्य्यैर्व्यवस्थिततया समश्रेणीतयापीत्यतआह ॥ सपक्खिमित्यादि ॥ पक्षाणा दक्षिणवामादिपार्श्वानां सदृशता

पुढवीएजहन्नेणंणेरइयाणं तिन्निसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । पंचमाएणंधूमप्पभाएपुढवीए तिन्निनिरया वाससयसहस्सा पन्नत्ता । तिसुणं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा पन्नत्ता तंजहा पढमाए दोच्चाए तच्चा ए । तिसुणंपुढवीसु णेरइया उसिणं वेयणं पच्चणुब्भवमाणा विहरति तं० पढमाए दोच्चाए तच्चाए। तओ लोगे समासपक्खिंसपडिदिसिं पन्नत्ता तंजहा अप्पइठाणेणरए जंबूद्दीवेदीवे सव्वठसिद्धेमहाविमाणे। तओ लोगेस

लाख नरकावासा नारकीनां उपजवानाथानक कहिया ॥ पहली त्रणनरकमा उष्णवेदनाकही। रत्नप्रभा शर्करप्रभा वालुप्रभा ॥ त्रणनरकना नारकी उष्णवेदना भोगवता रहेछे । पहली बीजी त्रीजी । नरक क्षेत्रछे तेहथी क्षेत्राधिकार कहेछे ॥ त्रणिलोकमां समतुल्य लक्षयोजन प्रमाणथी सरिखा कहिया । अप्रतिष्ठान सातमी नरकना नरकावासामा विचलो नरकावासू । तथा जबूद्वीपनामाद्वीप । सर्वार्थसिद्धि विमान पांचमुं अ

समता सपचमित्यव्ययीभावः तेन समपार्श्वतया समानीत्यर्थः इकारस्तु प्राकृतत्वात् तथाच प्रतिदिशां विदिशां सदृशता समप्रतिदिक् तेन समप्रतिदि तयेत्यर्थः अप्रतिष्ठान सप्तम्यां पञ्चानां नरकावासानां मध्यम स्तथा जंबूद्वीपः सकलद्वीपमध्यमः सर्वार्थसिद्धविमानं पञ्चाना मनुत्तराणां मध्यममि ति सीमान्तकः प्रथमपृथिव्यां प्रथमप्रस्तटे नरकेन्द्रकः पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षाणि समयः कालः तत्सत्तोपलक्षित क्षेत्र समयक्षेत्र मनुष्यलोकइत्यर्थः ईष दल्पो योजनाष्टकवाहल्यपञ्चचत्वारिंशल्लक्षविष्कम्भत्वात् प्राग्भारः पुद्गलनिचयो यस्याः सा ईषत्प्राग्भारा ऽष्टमपृथिवी शेषपृथिव्योहि रत्नप्रभाद्या महाप्राग्भारा अशीत्यादिसहस्राधिकयोजनलक्षवाहल्यत्वा तथाहि पढमासीइसहस्सा वत्तीसाअट्ठवीसवीसाय अट्ठारससोलअट्ठय सहस्सालक्खोवरिंकु ज्जत्ति ॥ १ ॥ विष्कम्भस्तु तासांक्रमेण एकाद्याः सप्तांता रज्जवइति अथवे षत्प्राग्भारा मनागवनतत्वादिति प्रकृत्या स्वभावेनो दकरसेन युक्ताइति क्रमेण चैते द्वितीयतृतीयातिमाः प्रथमद्वितीयान्तिमाः समुद्रा बहुलजलचरा अन्येत्वल्पजलचराइति उक्तंच जवणेउदगरसेसुय महोरयामच्छकच्छ

मासपक्खिंसपडिदिसिं प० तं० सीमंतएणरए समयखेत्ते ईसिंपब्भारापुढवी । तउ समुद्दा पगईए उदगरसे णं पन्नत्ता तंजहा कालोदे पुक्खरोदे सयंभुरमणे । तउ समुद्दा बहुमच्छकच्छ भाइन्ना पन्नत्ता तंजहा लवणे

नुत्तरविमान ॥ लोकमां त्रणि सम तुल्य बराबरि कहिया । सीमांतक पहली नरकनां पाथडामां नरकेंद्रक । समयक्षेत्र मनुष्यक्षेत्र । सिद्धिशिला ईषत्प्राग्भारा पैतालीसलाख योजनना तेहथी सरिखा कहियाछै ॥ पृथ्वीसाथेज पाणीहोय तेथीकरीछै । त्रणसमुद्रना स्वभावथीज पाणीनारस कहिया तेकहैछै । कालोदधि समुद पुष्करोदधि समुद्र स्वयभूरमण समुद्र छेहलोसमुद्र एह तीननां खारापाणीकह्या । त्रणिसमुद्रमा घणांमच्छ

हाभणियां अप्पासेसेसुभवे नयतेनिम्मच्छयाभणिया ॥ १ ॥ अन्यच्च लवणेकालसमुद्दे सयंभुरमणेयहुंतिमच्छाओ अवसेससमुद्देसु नहुंतिमच्छायमयरा वा ॥ २ ॥ नत्थित्तिपउरभाव पडुच्चनउसव्वमच्छपडिसेहो अप्पासेसेसुभवे नयतेनिम्मच्छयाभणिया इति ॥ १ ॥ क्षेत्राधिकारादेवा प्रतिष्ठाने नरकक्षेत्रे य उत्पद्यते तानाह ॥ तओइत्यादि ॥ निःशीला निर्गतशुभस्वभावा दुःशीलाइत्यर्थः एतदेव प्रपंच्यते निर्व्रता अविरताः प्राणातिपातादिभ्यो निर्गुणा उत्तरगुणाभावात् ॥ निम्मेरत्ति ॥ निर्म्मर्यादाः प्रतिपन्नापरिपालनादिना तथा प्रत्याख्यानंच नमस्कारसहितादि पौषधः पर्व्वदिन मष्टम्यादि तत्रो पवासो ऽभक्तार्थकरणं सच तौनिर्गतौ येषांते निःप्रत्याख्यानपौषधोपवासाः कालमासे मरणमासे काल मरणमिति ॥ नेरइयत्ताएत्ति ॥ पृथिव्यादिलव्यव च्छेदार्थं तत्र ह्येकेन्द्रियतया तदन्ये ऽप्युत्पद्यतइति तत्रराजान श्चक्रवर्त्तिवासुदेवाः माण्डलिकाः शेषराजानः येचामी महारम्भाः पचेंद्रियादिव्यपरोपण

कालोदे सयंभुरमणे। तउलोगे णिस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिपच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाएपुढवीए अप्पइट्ठाणेणरए णेरइयत्ताए उववज्जंति तंजहा रायाणो मंडलियाजेय

कच्छप कहिया बीजामां थोडा मच्छछे ते कहेछे । लवणसमुद्र । कालोदधिसमुद्र । स्वयंभूरमणसमुद्र । अप्रतिष्ठान नरकावासामां जे उपजे छे तेकहेछे । त्रणिलोकनेविषे शीलरहित व्रतरहित उत्तरगुण तथा दानादिगुण रहित मर्यादा विनयादिरहित नवकारसी प्रमुख पचखाणरहित पौष ध उपवासरहित एहवा कालमासे कालकरीने हेठें सातमी नरकपृथ्वीमा अप्रतिष्ठान नरकावासामां नारकीपणें उपजे ते कहेछे । राजा चक्रवर्त्ति वासुदेव । मंडलीक बीजाराजा । वली मोटा आरंभना करनार । कुटुंबी कुटुंबनाधणी ॥ त्रणि लोकनेविषें शीलवंत व्रत पांचमहाव्रत सहित

प्रधानकर्मकारिणः कुटंबिनइति पेषं कण्ठ्यं अप्रतिष्ठानस्य स्थित्यादिभिः समाने सर्व्वार्थेय उत्पद्यंते तानाह ॥ तत्थेत्यादि सुगमं केवलं राजानः प्रतीताः परित्यक्तकामभोगाः सर्व्वविरताः एतच्चोत्तरपदयोरपि सम्बन्धनीय सेनापतयः सैन्यनायकाः प्रशस्तारो लेखाचार्यादयः धर्मशास्त्रपाठका इति क्वचित् अथा नन्तरोक्तसर्वार्थसिद्धविमानसाधर्म्या द्विमानान्तर निरूपणायाह ॥ बंभेत्यादि ॥ इहच किण्हानीलालोहियत्ति ॥ पुस्तकेपि वंचेविध्य दृश्यते स्थानान्तरेच लोहितपीतशुक्लत्वेनेति यतउक्त सोहम्मेपचवन्ना एकगहाणीउजासहस्सार दोदोकप्पातुल्ला तेणपरपुंडरीयाओइति ॥ १ ॥ अनन्तर विमाना न्युक्तानि तानिच देवशरीराश्रयाइति देवशरीरमान निरूपानकानुपात्याह ॥ आणएत्यादि ॥ भवं जन्मापि यावद्धार्यन्ते भववादिवगतिलक्षणं

महारंभाकोडुंबी । तत्थलोए ससीला सव्वया सगुणा सम्मेरा सपच्चख्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववतारो भवंति तंजहा रायाणोपरिचत्तकामभोगा । सेणावई पसत्थारो । बंभलोगलंतएसुणंकप्पेसु विमाणा तिवन्ना पन्नत्ता तंजहा किण्हा नीला लोहिया । आणय पाणयारणच्चुएसु णंकप्पेसु देवाण भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं तिन्निरयणीओ उड्ढउच्चत्तेणं प० । तत्थ पन्न

गुणावत मर्यादावंत पचखाण सहित पौषध उपवास सहित मरणावसरे कालकरी सर्वार्थसिद्ध विमानमा देवतापणे उपजे तेकहेछे । राजाचक्रवर्त्ति प्रमुख कामभोगना छाडनार । सेनापति सैन्यनायक । प्रशास्तार धर्मशास्त्रना भणनार । ब्रह्मदेवलोक लातक छठोदेवलोक तेहमा विमान त्रण वर्णनाकहिया तेकहेछे । काला नीला राता ॥ आनत प्राणत आरण अच्युत नवमा दशमा इग्यारमा बारहमा देवलोकमा देवतानु भवधारणीय

धारयन्तीति धारणीयानि तानिच तानि शरीराणिचेति भवधारणीयशरीराणि उत्तरवैक्रियव्यवच्छेदार्थंचेद तस्य लक्षप्रमाणत्वात् ॥ उक्कोसेणंति ॥ उत्कर्षेण नतुजघन्यत्वादिना जघन्येन तस्यो त्पत्तिसमये ङ्गुलासंख्येयभागमात्रत्वादिति शेषकण्ठ्य मिति अनन्तरदेवशरीराश्रयवक्तव्यतो क्ता तत् प्रति बद्धाश्च प्रायस्त्रयो ग्रन्थाइति तत्स्वरूपाभिधानायाह ॥ तओइत्यादि ॥ कालेन प्रथमपश्चिमपौरुषीलक्षणेन हेतुभूतेना धीयते व्याख्या प्रज्ञप्ति जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिश्च न विवक्षिता त्रिस्थानकानुरोधादिति शेष स्पष्टं ॥ इति त्रिस्थानकस्य प्रथमउद्देशको विवरणतः समाप्तः ३ ॥ १ ॥ व्याख्यातः प्रथमउद्देशक स्तदनन्तर द्वितीय आरभ्यते अस्यचाय मभिसम्बन्ध. प्रथमोद्देशके जीवधर्म्माः प्राय उक्ता इहापि प्राय स्तएवेति इत्थं सम्बन्धस्या स्ये द मादिसूत्र ॥ तिविहेत्यादि ॥ अस्यचाय मभिसम्बधो नन्तरसूत्रेण चन्द्रप्रज्ञप्त्यादिस्वरूप मुक्त मिहतु चन्द्रादीना मेवार्थाना माधारभूतस्य लोकस्य स्वरूप मभिधीयत इत्येव सवन्धवतो स्य सूत्रस्य व्याख्या लोक्यते ऽवलोक्यते केवलावलोकनेनेति लोको नामस्थापनेन्द्रसूत्रवत् द्रव्यलोकोपि तथैव नवरं ज्ञ शरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तद्रव्यलोको धर्म्मास्तिकायादीनि जीवाजीवरूपाणि रूप्यरूपीणि सप्रदेशाप्रदेशानि द्रव्याण्येव द्रव्याणि च तानि लोकश्चेति वि

तीउ कालेणं अहिज्जंति चंदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती । तिठाणस्सपढमो उद्देसउ सम्मत्तो ॥

शरीर मूलवैक्रियशरीर उत्कृष्ट त्रणिहाथनुं ऊंचो ऊंचपणे कहियो ॥ देवता शरीराश्रय वक्तव्यताकही हिव तत्प्रतिबद्ध त्रणिशास्त्रछे तेकहेछे । त्रणि पन्नत्ती प्रथम पश्चिमपोरसी लक्षणे भणाविये तेकहेछे । चंद्रपन्नत्ती चद्रनुविचार सूर्यपन्नत्ती सूर्यनुंविचार द्वीपसागर पन्नत्ती जेहमां द्वीपसा गरनु विचार ॥ एह त्रीजा ठाणानु पहिलो उदेशो पूरोथयो ३ ॥ १ ॥ हिवे बीजो कहेछे । पिछाडी चंद्रपन्नत्ती सूत्रकहियो

ग्रहः उक्तंच जीवमजीवेरूवम रूवीसपएसअप्पएसेय जाणाहिदव्वलोयं णिच्चमणिच्चंचजंदव्वंति ॥ १ ॥ भावलोकं त्रिधाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ भावलोको द्वि विधः आगमतो नोआगमतश्च तत्रा गमतो लोकपर्यालोचनोपयोग स्तदुपयोगानन्यत्वात् पुरुषोवा नोआगमतस्तु सूत्रोक्तो ज्ञानादि नोशब्दस्य मिश्र वचनत्वात् इदंहि त्रय प्रत्येक मितरेतरसव्यपेक्ष नागमएव केवलो नाप्यनागमइति तत्र ज्ञान चासौ लोकश्चेति ज्ञानलोकः भावलोकता चास्य क्षा यिकक्षायोपशमिकभावरूपत्वात् क्षायिकादिभावानाञ्च भावलोकत्वे नाभिहितत्वा दुक्तंच उदइएउवसमिए खइएयखओवसमिएय परिणामसन्निवाए छव्विहोभावलोओउत्ति ॥ १ ॥ एव दर्शनचारित्रलोकावपीति अथ क्षेत्रलोक त्रिधाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ इहच बहुसमभूमिभागे रत्नप्रभाभागे मेरुमध्ये ऽष्ट प्रदेशो रुचको भवति तस्यो परितनप्रतरस्योपरिष्टा न्नवयोजनशतानि यावत् ज्योतिश्चक्रस्यो परितल स्तावत्तिर्यग्लोक स्ततःपरतऊर्द्ध्वभागस्थितत्वा दूर्द्ध्व लोको देशोनसप्तरज्जुप्रमाणो रुचकस्या धस्तनप्रतरस्या धो नवयोजनशतानि यावत् ताव त्तिर्यग्लोक स्ततः परतो धोभागस्थितत्वा दधोलोकः सातिरेकः सप्तरज्जुप्रमाणो ऽधोलोको र्द्ध्वलोकयो र्मध्ये अष्टादशयोजनशतप्रमाण स्तिर्यग्भागस्थितत्वा त्तिर्यग्लोकइति प्रकारान्तरेण चायं गाथाभि र्व्याख्यायते अहवअ

तिविहेलोगे पन्नत्ते तंजहा णामलोगे ठवणलोगे दव्वलोगे । तिविहेलोगे पन्नत्ते तंजहा णाणलोगे दंसण

इहां चद्रादिक लोकमांळे तेहथी लोकनो स्वरूपकहेळे । त्रणिलोक कहिया तेकहेळे । नामलोक चौदे राजलोक । थापनालोक चौदेराजलोकनी थापना । द्रव्यलोक ते धर्मास्तिकायादि जीवाजीवरूप ॥ वली त्रणिप्रकारेलोक भावलोक कहियो । नाणलोक केवलनाणादि । दर्शनलोक स म्यक्तादि । चारित्रलोक सामायिकादि पांचप्रकारे कहिया ॥ वली त्रणिप्रकारे लोक उर्द्ध्वलोक तेदेशोन सातराज प्रमाण । अधोलोक देशोन सा

होपरिणामो खेत्तणुभावेणजेणश्रोसन्नं असुहोअहोत्तिभणिश्रो दव्वाणंतेणहोलोगो ॥ १ ॥ उड्डुंउवरिंजंठिय सुभखेत्तंखेत्तश्रोयदव्वगुणा ॥ उप्पज्जंति सुभावा तेणतश्रोउड्ढलोगोत्ति ॥ २ ॥ मज्भणुभावखेत्त जंततिरियंतिवयणपज्जवश्रो भन्नइतिरियविसालं अश्रोयतंतिरियलोगोत्ति ॥ ३ ॥ लोकस्वरूपनि रूपणानन्तर न्तदाधेयाना ञ्चमरादीना ॥ चमरस्सेत्यादिना ॥ अच्चुयलोगपालाणमित्येतदन्तेन ॥ ग्रन्थेन पर्षदो निरूपयति सुगमश्चाय न्नवर ॥ असुरिंद स्सेत्यादी ॥ इन्द्र ऐश्वर्ययोगात् राजातु राजनादिति परिषत् परिवारः साच त्रिधा प्रत्यासत्तिभेदेन तत्र ये परिवारभूता देवा देव्यश्चा त्यंतगौरव्यत्वात् प्रयोजने प्याहृता एवा गच्छन्ति साभ्यतरा परिषत् येत्वा हृता अनाहूताश्च आगच्छन्ति सामध्यमा येत्वनाहृता अप्यागच्छन्ति सावाह्येति तथा यया सह प्रयोजन म्पर्यालोचयति साऽद्या ययातु तदेव पर्यालोचित सत्प्रपञ्चयति साद्वितीया यस्यास्तु तत्प्रवर्णयति सांत्येति अनन्तर म्पर्षदुपपन्नदेवाः प्ररूपिताः

लोगे चरित्तलोगे। तिविहेलोगे पन्नत्ते तंजहा उड्ढलोगे अहोलोगे तिरियलोगे। चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तउपरिसाउ पन्नत्ताउ तंजहा समिया चंडा जाया। अभिंतरिया समिया मज्झमिया चंडा बाहिरयाजाया। चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणियाणं देवाण तउ परिसाउ पन्नत्ताउ तं०

तराजप्रमाण । तिरछीलोक अठारेसेंयोजन प्रमाण ॥ लोकते असुरादिकनो आधारछे तेकहैछे । चमरेंद्र असुरनोइंद्र असुरकुमारनुंराजा तेहनी त्रणि पर्षदाकही तेकहैछे । समिता चंडा जाया । अभ्यंतरपर्षदा समिता जेकामै तेडावी आवे । मध्यम पर्षदा चंडा कार्यथी तेडावी आवे । बाहिरली जाया अणतेडीपणि आवे ॥ चमरेंद्र असुरेंद्र असुरनां राजाना सामानिक देवताने त्रणि पर्षदाकही तेकहैछे । समिता एम जिम असुर

समिया जहेवचमरस्स। एवं तायत्तीसगाणविलोगपालाणं तुंबा तुडिया पव्वा। एवंअग्गमहिसीणवि। बलस्स
वि। एवचेव जाव अग्गमहिसीणं। धरणस्सय सामाणियतायत्तीसगाणंच समिया चंडा जाया। लोग
पालाण अग्गमहिसीणं ईसा तुडिया दढरहा। जहा धरणस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं। कालस्सणं
पिसाइंदस्स पिसायरन्नो तउ परिसाउ पन्नत्ताउ तंजहा ईसा तुडिया दढरहा। एवं सामाणिय अग्गमहि
सीणंवि। एवजाव गीयरइ गीयजसाणं। चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो तउपरिसाउ पन्नत्ताउ तंजहा
तुंबा तुडिया पव्वा। एव सामाणियअग्गमहिसीणं। एवसूरस्सवि। सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो तउ परि

कुमारनां राजाचमरेद्रनेकही तिम जाणवी। एम त्रायस्त्रिंश देवतानेंपणि त्रणिपर्षदा कहिवी॥ एम लोकपालनी अभ्यंतर पर्षदा तुंबा। मध्यम
पर्षदा तुडिया। वाहनपर्षदा पत्या॥ एम अग्रमहिषीने त्रणिपर्षदा कहिवी॥ एम बलेंद्रनेपणि त्रणिपर्षदा कहवी यावत् अग्रमहिषी लगि॥
धरणेंद्र तथा सामानिक त्रायस्त्रिंश देवताने त्रणिपर्षदा अभ्यतर पर्षदा समिता मध्यमपर्षदा चडा वाहनपर्षदा जाता॥ लोकपालने अग्रमहिसी
इद्राणीने त्रणिपर्षदा अनुक्रमथी ईशा त्रुटिता दृढरथा जाणवी॥ जिम धरणेंद्रने तिमज बीजा भवनपतीने कहिवी॥ कालनामा पिशाचनोइंद्र
व्यतर पिशाचना राजाने त्रणि पर्षदाकही तेकहेछे। ईशा त्रुटिता दृढरथा अनुक्रमथी जाणवी॥ एमज एहनां सामानिक अग्रमहिसीनें एम जाव
गीतरती गीतजस व्यतरेंद्रलगे त्रणपर्षदा कहिवी॥ चद्रमा जोतिषीनो राजा जोतिषीना इद्रने त्रणपर्षदाकही ते कहेछे। तुंबा त्रुटिता पत्या।
एम एहना सामानिक अग्रमहिसीने पणि त्रणिपर्षदा कहिवी॥ एम सूर्यने पणि करवी॥ शक्रदेवेंद्र देवताना राजा पहिला देवलोकना इंद्रने

देवत्वच कुतोपि धर्म्मा त्तत्प्रतिपत्तिश्च कालविशेषे भवतीति कालविशेषनिरूपणपूर्वं त्तत्रैव धर्म्मविशेषाणा म्प्रतिपत्तीराह ॥ तओजामेत्यादि ॥ स्पष्टं केवलं यामो रात्रे र्दिनस्यच चतुर्थभागो यद्यपि प्रसिद्ध स्तथापीह त्रिभागएव विवक्षितः पूर्वरात्रमध्यरात्रापररात्रलक्षणो य माश्रित्य रात्रि स्त्रियामे त्युच्यते एवं दिनस्यापि अथवा चतुर्भागएवसः किंत्विह चतुर्थो नविवक्षित स्त्रिस्थानकानुरोधा दित्येवमपि त्रयोयामा इत्यभिहित मेव यावत्तिकरणा दिद दृश्यं केवल वोहिंवुज्झेज्जा मुंडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा केवलं बंभचेरवास मावसेज्जा एव सजमेण संजमेज्जा सवरेण संवरिज्जा आभिणि वोहियनाण उप्पाडेज्जा इत्यादि यथाकालविशेषे धर्म्मप्रतिपत्ति रेवं वयोविशेषेपीति तन्निरूपणत स्तत्र धर्म्मविशेषप्रतिपत्तीराह ॥ तओवएत्यादि ॥ स्फुट

साओ पन्नत्ताओ तंजहा समिया चंडा जाया । जहा चमरस्स एवं जाव अग्गमहिसीणं । एवंजाव अच्चुयस्स लोगपालाणं । तओ जामा पन्नत्ता तंजहा पढमेजामे मज्झिमेजामे पच्छिमेजामे । तिहिंजामेहिं आया केवलि पन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तंजहा पढमेजामे मज्झिमेजामे पच्छिमेजामे । एवंजावकेवलनाणं

त्रणि पर्षदाकही तेकहेछे । समिता चंडा जाया ॥ एम जिमचमरेंद्रनें तिम यावत् अग्रमहिषीलगि त्रणपर्षदा कहिवी ॥ एम यावत् अच्युतेंद्र बारमा देवलोकना इंद्रना लोकपाल लगि त्रणपर्षदा कहवी ॥ एह देवता कहिया तेधर्मथी थायछे तेधर्म कालविशेषमा होय तेमाटे कालविशेष कहेछे । त्रणियाम तेप्रहर कहिया तेकहेछे । पहिलो पहर । बीजो पहर मध्यम प्रहर । छेहलो प्रहर । इहा यद्यपि दिन तथा रात्रिनां चोथाभागने यामकहेछे । तथापि इहां त्रणनीज विवक्षाछे ॥ त्रणयामथी आत्मा केवलिभाषितधर्म पामे सुणवाथी तेकहेछे । पहलेयामें मध्यम

किन्तु प्राणिनां कालकृतावस्थावय उच्यते तत् त्रिधा बालमध्यमवृद्धत्वभेदादिति वयोलक्षणं चेदं पाषोडशाद्भवेद्बालो यावत्क्षीरान्नवर्त्तकः मध्यमःसप्तति यावत् परतोवृद्धउच्यतइति ॥ १ ॥ शेष प्राग्वत् उक्तानेव धर्म्मविशेषां स्त्रिधा बोधिशब्दाभिधेयान् बोधिमतो २ बोधिविपक्षभूत मोहं ३ तद्वन्तश्च ४ सूत्रचतुष्टये नाह ॥ तिविहेत्यादि॥ सुबोधं किन्तु बोधिः सम्यग्बोध इहच चारित्रं बोधिफलत्वात् बोधि रुच्यते जीवोपयोगरूपत्वाद्वा बोधिविशिष्टाः पुरुषा स्त्रिधा ज्ञान

उप्पाडेज्जा पढमेजामे मज्झिमेजामे पच्छिमेजामे । तओ वया पन्नत्ता तंजहा पढमेवए मज्झिमेवए पच्छि मेवए । तिहिंवएहिं आया केवलि पन्नत्तं धम्मं लभेज्जसवणयाए तंजहा पढमेवए मज्झिमेवए पच्छिमेवए एसोचेव गमो णेयव्वो । जावकेवलनाणं । तिविहाबोही पन्नत्ता । तंजहा णाणबोही दंसणबोही चरित्तबो ही । तिविहा बुद्धा पन्नत्ता तंजहा नाणबुद्धा दसणबुद्धा चरित्तबुद्धा । एवमोहेमूढा । तिविहापव्वज्जा प०

यामें छेहलेयामें ॥ एम जाव केवलनाण उपाडे पहलेयामे मध्यमयामे छेहलेयामे ॥ त्रणि अवस्थाकही तेकहेछे । प्रथमवय बाल्यावस्था । मध्यम वय यौवनावस्था । छेहलीवय वृद्धावस्था । एह त्रणवयनेविषे आत्मा केवलिज्ञापितधर्म पामे साम्भलवाथी तेकहेछे । पहली वयनेविषे मध्यमवय नेविषें छेहली वयनेविषे ॥ एहज वयमा प्रहरनीपरे केवलनाण पणि उपजें ॥ त्रणि प्रकारे बोधि धर्मनी प्राप्तिकही तेकहेछे । नाणबोधी । दर्शन बोधी । चारित्र बोधी ॥ चारित्र पामिये । त्रण बुद्धपुरुष कहिया तेकहेछे । बोधिसहित पुरुष तेबुद्ध कहिए । नाणबुद्ध । दर्शनबुद्ध समकित बुद्ध । चारित्रबुद्ध । एम तीन बोधिमोहे मूढपुरुष कहिया । त्रणभेदे प्रव्रज्यादीक्षा चारित्र पुरुष ॥ इह लोक प्रतिबद्ध तेइहा रिद्धादिक वाछे ।

बुद्घादयइति एव ॥ मोहे मूढत्ति ॥ बोधिव दुव्वच मोहेमूढाश्च त्रिविधा वाच्या स्तथाहि ॥ तिविहेमोहेपन्नत्ते तजहा नाणमोहेइत्यादि तिविहामूढा पन्न त्तातजहाणाणमूढेत्यादि ॥ चारित्रबुद्घाः प्रागभिहिता स्तेच प्रव्रज्यायां सत्या मतस्तां भेदतो निरूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय सुगम केवल प्रव्रज न गमन पापा च्चरणव्यापारेष्विति प्रव्रज्या एतच्च चरणयोर्गमन मोक्षगमनमेव कारणे कार्योपचारात् तन्दुला न्वर्षति पर्जन्य इत्यादिवदिति उक्तच पव्वय णपव्वज्जा पावाओसुद्घचरणजोगेसु इयमोक्खपइगमण कारणकज्जोवयाराओत्ति ॥ १ ॥ इह लोकप्रतिवद्घा ऐहलौकिकभोजनादिकार्यार्थिनां परलोक प्रतिवद्घा जन्मान्तरकामाद्यर्थिनां द्विधा प्रतिवद्घा इहलोकपरलोकप्रतिवद्घा साधो भयार्थिनामिति पुरतो ऽग्रतः प्रतिवद्घा. प्रव्रज्यापर्यायभाविषु शि ष्यादि ष्वाशसनतः प्रतिवन्धत्वात् मार्गतः पृष्टतः स्वजनादिषु स्नेहाच्छेदात् तृतीया द्विधापीति ॥ तुयावइत्तत्ति ॥ तुदव्यथनेइतिवचनात् तोदयित्वा तो द कृत्वा व्यथा मुत्पाद्य या प्रव्रज्यादीयते मुनिचन्द्रपुत्रस्य सागरचन्द्रेणेव सा तथोच्यते ॥ पुयावइत्तत्ति ॥ प्लुङ्गताविितिवचनात् प्लावयित्वा न्यत्र

तंजहा इहलोगपडिवद्धा परलोगपडिवद्धा दुहउपडिवद्धा। तिविहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा पुरउपडिवद्धा मग्गउपडिवद्धा दुहउपडिवद्धा। तिविहापव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा तुयावइत्ता पुयावइत्ता वुयावइत्ता। तिवि

परलोक प्रतिवद्ध ते देवभोगादि वांछिये दीक्षापाले । इहलोक परलोक प्रतिवद्ध ते वे वांछे ॥ वली त्रण प्रव्रज्याकही तेकहेछे । आगलि प्रतिवद्ध ते भावचारित्रियो दीक्षाले । मार्गथी प्रतिवद्ध ते पाछलि जननेविषे स्नेह छेदकरवो । वे प्रकारे ते उभय प्रतिवद्ध ॥ वली त्रण प्रकारे प्रव्रज्या कही तेकहेछे ॥ पीडा उपजावीने दीक्षादीजे जिम मेतार्यने देवताये पीडा उपजावी दीक्षा लेरावी ॥ पूजा महत्व देखाडिने ॥ धर्मकही धर्मसमझावी

नीला यैरचितवत् या दीयते सातथेति ॥ बुयावद्दत्ता ॥ संभाष्य गौतमेन कर्षकवदिति अवपातः सेवा सद्गुरूणांतती या सा अवपातप्रव्रज्या तथा आख्यातस्यवा प्रव्रज्ये त्यभिहितस्य गुरुभि र्या सा ख्यातप्रव्रज्या फल्गुरचितस्ये वेति ॥ सगारत्ति ॥ सकेत स्तस्मा या सा संगारप्रव्रज्या मेतार्यादीना मिवेति अथवा यदि त्वं प्रव्रजसि तदा मया प्रव्रजितव्य मित्येव या सा तथा उक्ता प्रव्रज्यावंतो निर्ग्रंथा भवन्तीति निर्ग्रन्थस्वरूप सूत्रद्वयेनाह ॥ तत्रो इ त्यादि ॥ निर्गता ग्रन्थात् सबाह्याभ्यंतरादितिनिर्ग्रंथाः संयता नोनेव सज्ञाया माहा राद्यभिलापरूपाया पूर्वानुभूतस्मरणानागतचिन्तादारेणो पयु क्ता ये ते नोसञ्ज्ञोपयुक्ता स्तत्र पुलाकोलब्ध्युपजोवनादिना सयमासारताकारको वक्ष्यमाणलक्षणनिर्ग्रन्थ उपशान्तमोहः क्षीणमोहोवेति स्नातको घा तिकर्ममलक्षालनावाप्तशुद्धज्ञानस्वरूप स्तथा त्रयएव संज्ञोपयुक्ता नोसञ्ज्ञोपयुक्तायेति संकीर्णस्वरूपा स्तथास्वरूपला त्तथाचाह ॥ सन्ननोसन्नोवउत्तत्ति ॥

हापव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा उवायपव्वज्जा अक्खायपव्वज्जा संगारपव्वज्जा । तउणियंठा णोसन्नोवउत्ता प० तंजहा पुलाए णियंठे सिणाए । तउणियंठा सन्नणोसन्नोवउत्ता पन्नत्ता तंजहा वउसे पडिसेवणाकुसीले क

जिमगौतमैं हालीनें धर्मसमझावी दीक्षालेरावी ॥ यली त्रणप्रवृज्याकही तेकहेंछे । गुरुनीसेवा प्रवृज्या । धर्मदेशनादेई दीक्षादेवी फल्गुरक्षिते जिमकुटबने धर्मदेशनाकही दीक्षादीधी । सकेतप्रवृज्या जिवारे तूदीक्षालेइस तिवार हूंपणि दीक्षालेइस । दीक्षाथी निग्रंथथाय तेकहेछे । त्रणि निग्रथ नोसग्यासहित कहिया तेकहेछे । पुलाक जेलब्धि नफोरवे । पुलाक ते पुलाकलब्धिवंत । निग्रंथ जेणे मोहसमाव्योहोय । अथवा क्षय कीधोहोय । स्नातक जेघातिकर्मना क्षयथी कर्ममल धोयाथी शुद्धनाणपाम्यो ॥ त्रणिनिग्रन्थ सन्नासहित सन्नारहित वेरीतनाहोय तेकहेछे ।

संज्ञाचा हारादिविषया नोसंज्ञाच तदभावलक्षणा सज्ञानोसंज्ञे तयो रूपयुक्ता इतिविग्रहः पूर्वक्तस्तता प्राक्ततत्वादिति तत्र वकुशःशरीरोपकरण विभूषादिना शवलचारित्रपटः प्रतिषेवणया मूलगुणादिविषयया कुत्सित शील यस्य सतथा एवं कषायकुशीलइति निर्ग्रन्था श्चारोपितव्रताः केचि द्भवन्ती ति व्रतारोपणे कालविशेषा नाह ॥ तओसेहेइत्यादि ॥ सुगम किन्तु ॥ सेहत्ति ॥ षिध्सराद्धाविति वचनात् सेध्यते निष्पाद्यते यः ससेधः शिक्षांवा धीत इति शैक्ष स्तस्य भूमयो महाव्रतारोपणकाललक्षणा अवस्था पदव्य इति सेधभूमयः शैक्षभूमयोवेति अयमभिप्राय उत्कर्षतः षड्भिर्मासै रुत्थाप्यते न ता नतिक्रम्यते मध्यमतश्च चतुर्भिर्मासै रुत्थाप्यते जघन्यत' सप्तभिरेवरात्रिंदिवै र्गृहीतशिक्षत्वादिति उक्तंच सेहस्सतिन्निभूमी जहन्नतहमज्झिमायउ क्कोसा राइदिसत्तचउमा सगायछम्मासियाचेवत्ति ॥ १ ॥ आसुचाय व्यवहारो क्तो विभागः पुव्वोवट्ठपुराणे करणजयट्ठाजहन्नियाभूमी उक्कोसादुम्मेह पडुच्च असद्दहाणंच ॥ १ ॥ एमेवयमज्झिमगा अणहिज्जतेअसद्दहंतेय भावियमेहाविस्सवि करणजयट्ठाइमज्झिमगत्ति ॥ २ ॥ शैक्षस्य च विपर्यस्तः स्थविरो भ वतीति तद्भूमिनिरूपणायाह ॥ तओथेरेइत्यादि ॥ कण्ठ्यं नवरं स्थविरो वृद्ध स्तस्य भूमयः पदव्यः स्थविरभूमय इति जाति र्जन्म श्रुत मागमः पर्या

सायकुसीले। तउसेहभूमीउ पण्णत्ताउ तंजहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना। उक्कोसाछम्मासा मज्झिमाचउमासा

वकुश तेशरीर उपकरणनी शोभाकरवाथी चारित्रने मैलोकरें मूलगुणमां दोषलगाडे कुत्सितशील कषायेकरी कुत्सितशील आचार एह त्रीजो कषा यकुशील ॥ निग्रन्थ व्रतसहितहोय तेहथी व्रतआपवानोकाल कहेछे । त्रणि सेहभूमिकही तेकहेछे । उत्कृष्टा मध्यमा जघन्या । वडी दीक्षादी धां पछी छमहीने ओठामणकरवी । मध्यम चारमहीने ओठामण करवी पंचमहाव्रत आरोपवा ॥ जघन्य सातरात्रीये ॥ व्रतलीधांपछी स्थवि

यः प्रव्रज्या तैः स्थविरा वृद्धा येते तथोक्ता इति इहच भूमिकाभूमिकावतोरभेदा देव मुपन्यासः अन्यथा भूमिका उद्दिष्टाइति ता एव वाच्याः स्युरिति ॥ एतेषां नयाणां क्रमेणा नुकम्पापूजावन्दनानि विधेयानि यतउक्तं व्यवहारे आहारेउवहीसिज्जा सथारेखेत्तसंकमे किइच्छंदाणुवत्तीहिं अणुकपइथेरगं १ ॥ उट्ठाणासणदाणाइ जोगाहारप्पससणा नीयसिज्जाइनिदेस वत्तिएपूयएसुयं ॥ २ ॥ उट्ठाणवंदणंचेव गहणदंडगस्सय अणुकूणोवियनिद्देसे तइयाएप वत्तयन्ति ॥ ३ ॥ स्थविराइति पुरुषप्रकारा उक्ता स्तदधिकारात् पुरुषप्रकारानेवाह ॥ तओपुरिसेदत्यादि ॥ पुरुषजातानि पुरुषप्रकारा सुष्टु मनो

जहन्नासत्तराइंदिया । तओथेरभूमीओ पण्णत्ताओ तंजहा जाइथेरे सुयथेरे परियायथेरे । सट्ठिवासजाएसमणे निग्गंथे जाइथेरे ठाणसमवायधरेणं निग्गंथेसुयथेरे वीसवासपरियाएणं समणेनिग्गंथे परियायथेरे । तओ पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा सुमणे दुम्मणे णोसुमणेनोदुम्मणे । तओ पुरिसजाया प० तंजहा गताणामेगेसु

एकहवाने त्रणस्थविर भूमिकहेछे भूमि तेअवस्था । जातिस्थविर । श्रुतस्थविर । पर्यायथविर । साठिवरषनो जेश्रमण साधुथयो तेजातिथविर ठाणांग समवायांग सिद्धांतनो धरनार तेश्रुतथविर । बीसवरस दीक्षादीधाथाय तेश्रमण पर्यायथविर । जातिथविरने उपधि शज्या सथारो छदानुवृत्ति प्रमुखे भक्तिकरवी । श्रुतथविरने ऊठवुं आसनदेवुं आहारदेवु प्रशंसाप्रमुखे पूजवु । पर्यायथविरने ऊठवु ढांडेचालवु । दांडोलेउं वदनाकरवी ॥ थविर तेपुरुष तेहथी पुरुषनो अधिकार कहेछे । कर्मवशथी पुरुष अनेक प्रकारनाछे । एकसुमन भलुंछे मनजेहनु । एक दुर्मन माठोछे मनजेहनुं । एक सुमनपणानथी दुमनपणानथी मध्यस्थभावें समपरिणामीछे । वली त्रणप्रकारे पुरुषकह्यिा कोईकपुरुष कोईकयानकें ज

यस्यासौ सुमना हर्षवान् रक्तइत्यर्थः एव दुर्म्मना दैन्यादिमान् द्विष्टइत्यर्थः नोसुमना नोदुर्म्मना मध्यस्थ' सामायिकवानित्यर्थः सामान्यतः पुरुषप्रकारा उक्ता एतानेव विशेषतो गत्यादिक्रियापेक्षया ॥ तओइत्यादिभिः ॥ सूत्रै राह तत्र गत्वा क्वचि द्विहारक्षेत्रादौ नामेति सम्भावनाया मेक. कश्चित् सुमना भवति हृष्यति तथैवा न्यो दुर्म्मना. शोचति अन्यः सामायिकवान् भवत्यतीतकालसूत्रमिव वर्त्तमानभविष्यत्कालसूत्रे नवरं ॥ जामीएगेइत्यादिषु ॥ इति

मणेन्नवइ गंतणामेगेदुम्मणेन्नवइ गंतणामेगे णोसुमणे णोदुम्मणे न्नवइ । तन्नपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा जामीएगे सुमणेन्नवइ जामीएगे दुम्मणेन्नवइ जामीएगे णोसुमणे णोदुम्मणेन्नवइ । एवंजाइस्सामीएगेसुम्मणेन्नवइ ॥ ३ ॥ तन्नपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा ऋणागंताणा मेगे सुमणेन्नवइ ॥ ३ ॥ तन्नपुरिसजाया पन्नत्ता तजहा णजामि एगेसुमणेन्नवई ३ । तन्नपुरिसजाया पन्नत्ता तजहा णजाइस्सामि एगेसुमणेन्नवई ३ ।

ईने हर्षवंतथाय जेजलुंपयो हुइहाआव्यो । कोईकपुरुष कोईथानके जईने दुर्मनथाय दुखपामैं । कोईकपुरुष जईने दुर्मनपणि नथाय सुमनपणि न थाय ॥ वली त्रण प्रकारे पुरुष कोई थानकै जाता सुमन होय । तथा जाता दुर्मन थाय । तथा जाता सुमन पणि नथी दुर्मन पणि नथी थाय ॥ एम थानकै हुंजाइस एमचितवतो सुमन थाय । एम त्रणिवोल जाणिवा ॥ वली त्रणपुरुष कहिया तेकहैछे । एह थानकै नथीजावुं एम विचारी सुमनहोय । एम त्रणवोल जाणिवा । वली त्रणप्रकारे पुरुष तेकहेछे । एह थानकै नथीजातो एमचितवतो सुमनथाय । एम त्रणि वोल जाणिवा । वली त्रणपुरुष तेकहैछे । एह थानकै नहीजाउं एम एकपुरुष सुमनहोय एम त्रणवोल कहिवा । एम एहथानकै आव्याथी

शब्दो हेत्वर्थः एवमगत्वेत्यादि प्रतिषेधसूत्राणि आगमनसूत्राणिच सुगमानि एव मनेना नन्तरोक्तेना भिलापेन शेषसूत्राण्यपि वक्तव्यानि अथो क्तान्य नुक्ता निच सूत्राणि सगृह्णन् गाथापञ्चकमाह ॥ गताइत्यादि ॥ गता अगंता आगतेत्युक्त ॥ अणागतत्ति ॥ अणागंताना मेगे सुमणे भवइ अणागंतानामेगेदुम्म णे भवई अणागताना मेगे नोसुमणे नोदुम्मणे भवइ एव नागच्छामोति २ एव नआगमिस्सामीति ॥ चिठ्ठित्तत्ति ॥ स्थित्वाऊर्ध्वस्थानेनसुमना दुर्मना अनुभयंच भवति ॥ एवचिठ्ठामीति ॥ चिठ्ठिस्सामीति ॥ अचिठ्ठित्ता ॥ इहापि कालतः सूत्रत्रयमेव सर्व्वत्र नवर निषद्य उपविश्य ॥ नोचेवत्ति ॥ अनिषद्यानुपविश्य हत्वा विनाश्य किंचित् २ अहत्वा अविनाश्य छित्वा द्विधाकृत्वा अच्छित्वाप्रतीत २ ॥ वुइत्तत्ति ॥ उक्ता भणित्वा पदवाक्यादिकं ॥ अवुइत्तत्ति ॥ अनुक्ता अनुवाक्या दिक ॥ भासित्तत्ति ॥ भाषित्वा सभाष्य कचन सभाषणीय २ ॥ नोचेवत्ति ॥ अभासित्ता असभाष्य कंचन २ ॥ दत्तत्ति ॥ दत्वा अदत्वा भुक्ता अभुक्ता २

एवअणागंताणामेगे सुमणेभवई ३ । एमीएगे सुमणेभवइ । एस्सामी एगे सुमणेभवइ ॥ ३ ॥ एवंएएणं अभि लावेणं गंतायअगंताय आगंताखलुतहाअणागता । चिठ्ठित्तमचिठ्ठित्ता णिसिइत्ताचेवनोचेव ॥ १ ॥ हं तायअहंताय छिंदित्ताखलुतहाअछिंदित्ता । वुत्तित्ताअवुत्तित्ता भासित्ताचेवणोचेव ॥ २ ॥ दच्चायअद

एकसुमनहोय । इहां पणि त्रणबोल कहिवा । आवुंछुं एम एकसुमन होय एम त्रण बोलकहिवा । आवस्यु एम सुमनथाय एम त्रणबोल कहि वा । एम इणअनुक्रमें एहरीते पाचगाथानो अभिलाप जाणवो । एह पाचनु एकअर्थछे । गंता जावु अगंता नजाववुं आगता आववु तिमज अणागता अणआववुं उभोरहिवो उभोनरहिवुं । एम त्रणकालना सूत्रसघले कहिवा बेसवु नबेसवुं ॥ हणीने अणहणीने छेदीने अणछेदीने भणीने पदवचनादि

लब्ध्वा २ अलब्ध्वा २ पीत्वा २ ॥ नोचेवत्ति॥ अपीत्वा २ सुप्त्वा असुप्त्वा २ युध्वा २ अयुध्वा ॥ जयित्तत्ति॥ जित्वा परं २ अजित्वा परमेव २ ॥ पराजिणि त्ता भृग्नजित्वा २ परिभगवा प्राप्य सुमना भवति वर्द्धनकभाविमहाविक्तव्ययविनिर्मुक्तत्वा त्पराजितान् प्रतिपादिन. सभाविता नर्थविप्रमुक्तत्वाद्वा ॥ नो चेवत्ति ॥ अपराजित्य २ ॥ सद्देत्यादि ॥ गाथा सूत्रतएव वोद्धव्या प्रपचितत्वा त्तत्रेवास्या इति ॥ एवमेक्केत्यादि ॥ एवमिति गत्वादिसूत्रोक्तक्रमेण एकैक स्मिन् शब्दादौ विषये विधिप्रतिषेधाभ्या प्रत्येक त्रय त्रय आलापकाः सूत्राणि कालविशेषाश्रयाः सुमनाः दुर्मनाः नोसुमनानोदुर्मना इत्येतत् पद

ञ्चाय भुंजित्ताखलुतहाञ्चभुंजित्ता । लंभित्तायञ्चलंभित्ता पिवइत्ताचेवनोचेव ॥ ३ ॥ सुइत्ताञ्चसुइत्ता जु ज्झित्ताखलुतहाञ्चजुज्झित्ता जयित्ताञ्चजयित्ता पराजिणित्ताचेवनोचेव ॥ ४ ॥ सद्दारूवागंधा रसायफासा तहेवठाणाय । निस्सीलस्सगरहिया पसत्थापुणसीलवंतस्स ॥ ५ ॥ एवमेक्केक्के तिन्नितिन्नि ञ्चालावगा भाणियव्वा । सद्दंसुणेत्ताणामेगेसुमणेभवइ ३ । एवसुणेमीति ३ । सुणेस्सामीति ३ । एवंञ्चसुंणेत्ताणामेगेसु

अणाभणीने कोईने बोलावीने अणबोलावीने देईने अणदेईने भोगवीने तिमज अणभोगवीने काईकवस्तु पामीने अणपामीने रसादि पीईने अणपी ईने सुईने अणसुईने झूझीने सग्रामकलेश करीने अणझूझीने जीतीने अणजीतीने पराजय करीने अणपराजयकरी शब्द रूप रस गध स्पर्श तिमज एह थानक शील आचारवंतने प्रशस्त भलाथाय । एणेप्रकारे एकेके बोले । त्रणि आलावा कालथी अतीत अनागत वर्त्तमान भेदे । सुमना दु र्मना एत्रणि पदसहित जाणवा तेज दिखाडेछे ॥ शब्द सांभलीने एकसुमन थाय हर्षवत थाय त्रण बोललेवा । इमसाभलुछु तेसुमनथाय त्रण बोल

भयवंतो भणितव्या एतदेव दर्शयन्नाह ॥ सद्दमित्यादि ॥ भावितार्थं एवं ॥ रूवाइंगंधाइइत्यादि ॥ यथाशब्दे विधिनिषेधाभ्यां त्रय स्त्रय आलापका भ णिताः एवं रूपाइपासित्तेत्यादय स्त्रय स्त्रयएव दर्शनीया एवंच यद्भवति तदाह ॥ एक्केक्केइत्यादि ॥ एकैकस्मिन् विषये षडालापका भणितव्याः भवति तत्र शब्दे दर्शिता एवं रूपादिषु पुनरेव रूपाणि दृष्ट्वा सुमनाः दुर्मनाः अनुभवं पश्यामीति ३ एवं द्रक्ष्यामीति ३ एवमदृष्ट्वा नपश्यामीति नद्रक्ष्यामीति ६ षट् एवं गंधान् घ्रात्वा ६ रसा नास्वाद्य ६ स्पर्शान् स्पृष्टेति ६ ॥ तहेयठाणायत्ति ॥ यत्संग्रहगाथाया मुक्तं तद्भावयन्नाह ॥ तओ ठाणाइत्यादि ॥ त्रीणिस्थानानि निःशीलस्य सामान्येन शुभस्वभाववर्जितस्य विशेषतः पुनर्निर्व्रतस्य प्राणातिपाताद्यनिवृत्तस्या निर्गुणस्यो त्तरगुणापेक्षया निर्मर्यादस्य लोकाकुलाद्यपेक्षया निष्प्रत्याख्यानपोषधोपवासस्य गर्हितानि जुगुप्सितानि भवंति तद्यथा ॥ अस्सिंति ॥ विभक्तिपरिणामा दयंलोकः

मणेत्तवइ ३ । नसुणेमीएगे । नसुणेस्सामीति ३ । एवंरूवाइं गंधाइं रसाइं फासाइं एक्केक्के छछआलावगा भाणियव्वा । तओठाणाणिस्सीलस्स णिव्वयस्स णिग्गुणस्स णिम्मेरस्स णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरहिं याभवंति तंजहा अस्सिंलोगे गरहिएभवइ उववाएगरहिएभवइ आयाइगरहियाभवइ । तओठाणा ससील

एम सांभलीस हमजाणी सुमनथाय । एम अणसांभली सुमनथाय जेतलोथयुं एनसांभलुं एमदुमनथाय एवं तीन बोल । नथीसांभलतो एमत्रणबो ल । नथीसांभलु एमत्रणबोल । एमदेखीने गंधलेईने रसस्पर्शीने फरस फरसीने एकेकैबोलैं छछआलावाकहिवा । एहमां त्रीजेबोले त्रणिकालका लै जेसमेभावे तेनाणी । तेभायकहियायेंछै । त्रणिथानकै नि शीलतेशुभस्वभावरहित प्राणातिपातादिरहित । वृतउत्तरगुणरहित । कुलादिकनी म

इदं जन्म गर्हितोभवति पापप्रवृत्त्या विद्वज्जनजुगुप्सितत्वात् तथा उपपातो ऽकामनिर्जरादिजनित. किल्बिषादिदेवभवो नारकभवोवा उपपातो देवनारकाणामितिवचनात् सगर्हितो भवति किल्बिषाभियोग्यादिरूपतयेति आजाति स्तस्मात् च्युतस्योद्वृत्तस्य वा कुमानुषत्वतिर्यक्त्वरूपागर्हिता कुमानुषादित्वादेवेति उक्तविपर्ययमाह ॥ तओइत्यादि ॥ निगदसिद्ध एतानिच गर्हितप्रशस्तस्थानानि संसारिणामेव भवन्तीति संसारिजीवनिरूपणाया

स्स सव्वयस्स सगुणस्स समेरस्स सपच्चक्खाणपोसहोववासस्स पसत्था भवंति तंजहा अस्सिंलोगेपसत्थे भवइ उववाएपसत्थेभवइ आयाएपसत्थेभवइ । तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा इत्थी पुरिसा णपुंसगा । तिविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा सम्मदिठी मिच्छदिठी सम्मामिच्छदिठी । अहवा

र्यादाथीरहित । पोरसीप्रमुख तथा पर्वदिवसे उपवासादिरहित । एहवामनुष्यने गर्हितजुगुप्सित होय तेकहेछे । इहलोके आजन्मनिंदनीक होय पापकरवाथी । पडित मांठोकहे उपजवुं तेमांठेठामेहोय । नारकीथाय देवताथाय तोकिल्विषीथाय । अकामनिर्जराथी देवताथाय तो तिहांथी नीसरी चवी अल्पायु तीर्यच काम मनुष्यथाय एह त्रण भव मांठा । त्रणथानके शील सहित वृतसहित उत्तरगुण पचखाणसहितनें पोषधोपवाससहित मनुष्यने प्रशस्त वखाणवायोग्यहोय तेकहेछे । आजन्मप्रशस्तहोय पापना अणकरवाथी । पडित तेहनेबखाणें । परभवे देवता मोटीरिद्धीनुधणीथाय । तिहांथी चवी मनुष्यमोटीरिद्धिनोधणीथाय । एतला संसारीजीवने थाय तेमांटे संसारी जीवनी निरूपणाकहेछे । त्रण प्रकारें संसारी जीवकहिया तेकहेछे । स्त्री पुरुष नपुंसक । त्रणप्रकारें सर्वजीव कहिया तेकहेछे । समकितदृष्टी । मिथ्यादृष्टी सम्यग्मिथ्यादृष्टी ।

ह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रसिद्धं जीवाधिकारा त्सर्वजीवान् त्रिस्थानकावतारेण षड्भिः सूत्रै राह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सुगम न्नवरं ॥ नोपज्जत्तत्ति ॥ ॥
नोपर्याप्तका नोअपर्याप्तकाः सिद्धाः एवमिति ॥ पूर्वक्रमेण ॥ सम्मद्दिठ्ठीत्यादि ॥ गाथार्द्ध मुक्तानुक्त सूत्रसंग्रहार्थ मिति ॥ तिविहासव्वजीवा पन्नत्ता
तंजहा परित्ता अपरित्ता नोपरित्तानोअपरित्ता तत्र परीत्ता. प्रत्येकशरीरा अपरीत्ताः साधारणशरीराः परीत्तशब्दस्य च्छन्दोर्थ व्यत्ययइति ॥ सुहु
मत्ति ॥ तिविहासव्वजीवा प० त० सुहुमा वायरा नोसुहुमानोवायरा एव सन्निनो भव्याश्च भावनीया. सर्वत्र तृतीयपदे सिद्धावाच्या इति सर्वएव
चैते लोके व्यवस्थिता इति लोकस्थितिनिरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तु लोकस्थिति र्लोकव्यवस्था आकाशं व्योम तत्रप्रतिष्ठितो व्यव
स्थित आकाशप्रतिष्ठितो वातो घनवाततनुवातलक्षणः सर्वद्रव्याणा माकाशप्रतिष्ठितत्वात् उदधि र्घनोदधिः पृथिवी तमस्तमप्रभादिकेति उक्तस्थि

तिविहा सव्वजीवा प० तं० पज्जत्तगा अपज्जत्तगा नोपज्जत्तगानोअपज्जत्तगा । एवं सम्मद्दिठ्ठिपरित्ता
पज्जत्तगसुहुमसन्निभविकाय । तिविहा लोगठिई प० तंजहा आगासपइठ्ठिए वाए वायपयठ्ठिया उदही

अथवा त्रण प्रकारे सर्वजीवकहिया तेकहेछे । पर्याप्ता अपर्याप्ता नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता तेसिद्ध । एमसमकितदृष्टीनीपरे परित्त प्रत्येक अपरित्त
तेसाधारण नोपरित्तनोअपरित्त तेसिद्ध सूखम बादर । नोसूखमबादर । एमसन्नी । असन्नी नोसन्नीनोअसन्नी भव्य अभव्य नोभव्यनोअभव्य सघले
त्रीजे पदे सिद्धजांणिवा । एसर्वलोकमाछे तेमाटे लोकस्थितिकहेछे । त्रणप्रकारे लोकस्थितिकहीतेकहेछे । आकाशप्रतिष्ठितवात आकाशे वायुरहेछे । वा
युने आधारे समुद्रछे घनोदधि तनोदधि । समुद्रने आधारे पृथ्वीछे । साते तमतमादि । त्रणदिशिकही जीवने जीवआववानी ऊर्द्ध अधो तिर्यग् । त्रणदि

तिकेच लोके जीवानां दिशोविज्ञात्य गत्यादिभवतीति दिङ्निरूपणपूर्वकं तासु गत्यादिनिरूपयन् ॥ तत्रोदिसेत्यादि ॥ सूत्राणिचतुर्दशाहृ सुगमानिच नवर दिश्यते व्यपदिश्यते पूर्वादितया वस्त्वनयेति दिक् साच नामादिभेदेन सप्तधा आहच नाम १ ठवणा २ दविए ३ खेत्तदिसा ४ तावखेत्त ५ पन्नवए ६ सत्तमियाभावदिसा साहोइट्ठारसविहाओ ॥ १ ॥ तत्र द्रव्यस्य पुद्गलस्कन्धादे र्दिक् द्रव्यदिक् ॥ १ ॥ क्षेत्रस्याकाशस्य दिक् क्षेत्रदिक् साचैव अट्ठपएसोरुयगो तिरियलोगस्समज्झयारंमि एसपभवोदिसाण एसेवभवेअणुदिसाण ॥ २ ॥ तत्र पूर्वाद्या महादिश अतस्त्रोपि द्विप्रदेशादिका दुत्तरा अनुदिशस्तु एकप्रदेशा अनुत्तरा ऊर्द्धाधोदिशौतु चतुरादीअनुत्तरे यतोवाचि ॥ दुपएसादिदुरुत्तर ४ एगपएसाअणुत्तराचेव चउरोचउरोयदिसा चउ राइअणुत्तरादोन्नि ॥ १ ॥ सगडुद्धिसठियाओ महादिसाओहवतिचत्तारि मुत्तावलीउचउरो दोचेवयहोंतिरुयगनिभा ॥ २ ॥ नामानिचासा इंद १ गे यी २ जम्मा य ३ नेरई ४ वारुणीय ५ वायव्वा ६ सोमा ७ ईसाणाविय ८ विमलाय ९ तमाय १० वोधव्वा ॥ १ ॥ तापः सविता तदुपलक्षिता क्षेत्र दिक् तापक्षेत्रदिक् साचानियता यतउक्त जेसिजत्तोसूरो उदेइतेसितईहवइपुव्वा तावक्खेत्तदिसाओ पयाहिणसेसयाओसेत्ति ॥ १ ॥ तथा प्रज्ञापकस्य आ चार्यादे र्दिक् प्रज्ञापकदिक् साचैव पन्नवओजोअभिमुहो सापुव्वासेसियापयाहिणओ तस्सेवणुगतव्वा अग्गेयाईदिसानियमा ॥ १ ॥ भावदिक् चाष्टादशवि धा पुढवि १ जल २ जलण ३ वाया ४ मूलो ५ खंध ६ ग ७ पोरवीयाय ८ ॥ वि ९ ति १० चउ ११ पचिंदियतिरि ॥ १२ यनारगा १३ देवसघाया १४

उर्द्धहिपइठिया पुढवी । तउ दिसाउ प० तं० उद्दा अहो तिरिया । तिहिंदिसाहिं जीवाणं गई पवत्तइ तं

शिजीवने गतिप्रवर्त्तछै उर्द्धदिशि अधोदिशि तिरछीदिशि ॥ एमआववु उपजवु । आहारलेवु । वृद्धि शरीरनुवढवुं । शरीरनुंज घटवु । गतिपर्याय तेचा

२ ॥ समुच्छिम १५ कम्मा १६ क म्मभूमगनरा १७ तहंतरद्दीवा १८ ॥ भावदिसादिस्सइजं संसारीनियमेहोहिं ति ॥ २ ॥ इहच प्रज्ञापकदिग्भि रेवाधिकार स्तत्रच तिर्यग्ग्रहणेन पूर्वाद्या श्चतस्रएव दिशो गृह्यन्ते विदिक्षु जीवाना मनुश्रेणिगामितया वक्ष्यमाणगत्या गतिव्युत्क्रान्त्योना मयुज्यमानत्वा च्छेषपदेषुच विदिशा मविवक्षितत्वा दातोत्रेव वक्ष्यति ॥ तिहिंदिसाहिंजीवाणगईपवत्तईत्यादि ॥ तथा ग्रन्थान्तरेप्याहारमाश्रित्योक्तं निव्वाघाएणनियमा छद्दिसिंति तत्र तिहिंदिसाहिति सप्तमी तृतीया पंचमी वा यथायोग व्याख्येयेतिगतिः प्रज्ञापकस्थानापेक्षया मृत्वा ऽन्यत्रगमनमेव मिति पूर्वोक्ताभिलाप सूचनार्थः आगतिः प्रज्ञापकप्रत्यासन्नस्थाने आगमनमिति व्युत्क्रान्ति रुत्पत्ति राहारः प्रतीतः वृद्धिः शरीरस्यवर्द्धनं हानिः शरीरस्यैवहानिः गतिपर्याय श्च लन जीवतएव समुद्घातो वेदनादिलक्षणः कालसंयोगो वर्त्तनादिकाललक्षणानुभूति र्मरणयोगोवा दर्शनेनावध्यादिना प्रत्यक्षप्रमाणभूतेना भिगमो बोधो दर्शनाभिगम एवज्ञानाभिगम. जीवानांज्ञेयाना मवध्यादिनैवा भिगमो जीवाभिगम इति तिहिंदिसाहिंजीवाणअजीवाभिगमेपन्नत्ते तं० उड्ढा २ एवसर्व त्राभिलापनीय मितिदर्शनार्थं परिपूर्णात्यसूत्राभिधान मिति एतान्यजीवाभिगमान्तानिसामान्यजीवसूत्राणि चतुर्विंशति दण्डकचिन्तायान्तु नारकादिप

जहा उड्ढाए अहोए तिरियाए । एवं आगई वक्कंती आहारे बुड्ढी णिबुड्ढी गइपरियाए समुग्घाए कालसं जोगे दंसणाभिगमे णाणाभिगमे जीवाभिगमे । तिहिठाणेहिं जीवाणं अजीवाभिगमे प० तं० उड्ढाए अ

लवुं । समुद्घात वेदनालक्षण । मरणकालयोग । दर्शन अवधिदर्शनादिकनुंपामिवुं । नाणनुं अभिगम जाणवारूप । जीवनुं जाणवुं । एहत्रणदिशियेंहोय ॥ त्रणदिशिये जीवने अजीवनुं जाणवुंहोय । तेकहेछे । उर्द्धदिशि अधोदिशि तिरछीदिशि । एण प्रकारें पंचेंद्रीतिर्यंचने एहबोल जाणवा जोपणिनारकी

देषु दिक्त्रये गत्यादीनांत्रयोदशानामपि पदानां सामस्त्येनासम्भवात् पचेन्द्रियतिर्यक्षु मनुष्येषुच तत्सम्भवा त्तदतिदेशमाह ॥ एवमित्यादि॥ यथा सामान्य सूत्रेषु गत्यादीनि त्रयोदशपदानि दिक्त्रये अभिहिता न्येव पंचेंद्रियतिर्यग्मनुष्येषु इतिभावः एवंचैतानि षड्विंशतिसूत्राणि भवन्तीति अथैषा न्नारकादिषु कथ मसम्भव इत्युच्यते नारकादीनां द्वाविंशते र्जीवविशेषाणा न्नारकदेवेषूत्पादाभावा दूर्द्धाधोदिशो र्विवचया गत्यागत्यो रभाव स्तथा दर्शनज्ञानजीवाजीवाभिगमागुणप्रत्यया अवध्यादिप्रत्यचरूपा दिक्त्रये नसन्त्येव भवप्रत्ययावधिपचेतु नारकज्योतिष्कास्तिर्यंगवधयो भवनपतिव्यन्तरा ऊर्द्धावधयोवैमानिका अधोवधय एकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां त्ववधिर्नास्त्येवेति यथोक्तानिच गत्यादिपदानि त्रसानामेव सम्भवन्तीति सम्बन्धा त्त्रसा न्निरूपयन्नाह ॥ तिविहे त्यादि ॥ सुष्टं किन्तु त्रस्यन्तीति त्रसाः सञ्चलनधर्म्माण स्तत्र तेजोवाययोगतियोगा त्त्रसाः उदाराः स्थूला स्त्रसाइति त्रसनामकर्म्मोदयवर्त्तित्वात् प्राणाइति व्यक्तोच्छ्वासादिप्राणयोगा द्वीन्द्रियादयस्तेपि गतियोगात् त्रसाइति उक्ता स्त्रसा स्तद्विपर्ययमाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ स्थानशीलत्वा त्स्थावरनामकर्म्मोदयाद्वा स्थावराः शेष व्यक्तमेवेति इहच पृथिव्यादयः प्रायोङ्गुलासंख्येयभागमात्रावगाहित्वात् अच्छेद्यादिस्वभावा व्यवहारतो भवन्तीति तत्प्रस्तावा न्निश्चया च्छे

होए तिरियाए। एवं पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एवंमणुस्साणवि। तिविहा तसा पन्नत्ता तंजहा तेउकाइया वाउकाइया उरालातसापाणा। तिविहा थावरा प० तं० पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइकाइया।

प्रमुखने गत्यादि बोलछैं पणि दर्शनादि त्रण बोल तीर्यंचने मनुष्यनेज छे तेमांटे तिर्यंचमनुष्य एह बे कहिआ। त्रणप्रकारे त्रसकहिया तेकहेछै। तेउकाय वाउकाय औदारकादिक बेइंद्रियादि त्रसप्राण। त्रणथावर कहिया तेकहेछै। पृथ्वीकाय थावर अप्काय पाणीथावर वनस्पतिकाय थावर।

यादौ नष्टभिसूत्रे राह ॥ तत्रोअच्छेज्जेत्यादि ॥ छेत्तुमसक्या बुद्यासुरिकादिशस्त्रेणवे त्यच्छेद्या च्छेद्यत्वे समयादित्वायोगा दितिसमयः कालविशेषः प्रदे शो धर्म्माधर्म्माकाशजीवपुद्गलानां निरवयवौशः परमाणुस्कन्ध.पुद्गल इति उक्तंच सत्थेणसुतिक्खेणवि च्छेत्तुभेत्तुचजंकिरनसक्क तपरमाणुंसिद्धा वयतिआइ पमाणाणति ॥ १ ॥ एवमिति पूर्वसूत्राभिलापसूचनार्थं इति अभेद्या. सूच्यादिना अदाह्या अग्निचारादिना अग्राह्या हस्तादिना नविद्यते अर्द्धं येषा मित्य नर्द्धाविभागद्वयाभावात् अमध्या विभागत्रयाभावात् अतएवाह अप्रदेशा निरवयवा अतएवाविभाज्या विभक्तुमशक्या अथवा विभागेन निर्वृत्ता विभागिमा स्तन्निषेधादविभागिमा एतेष पूर्वतरसूत्रोक्ता त्रसस्थावराख्याः प्राणिनो दु.खभीरव इत्येत त्सविधानकद्वारेणाह ॥ अज्जोइत्यादि ॥ सुगम केवल अज्जोति त्ति आरात् पापकर्म्मभ्यो याता आर्या स्तदामन्त्रणं हेआर्या इति एव मभिलापेनामन्त्र्येतिसम्बन्धः श्रमणो भगवान् महावीरो गौतमादीन् श्रमणा न्निर्ग्रन्था

तउ अच्छेज्जा प० तजहा समए पएसे परमाणु। एव मज्जेज्जा अडज्झा अगिज्झा अणद्धा अमज्झा अपएसा। त
उ अविभाइमा पस्सत्ता तजहा समए पएसे परमाणु । अज्जोत्ति समणेभगवं महावीरे गोयमाई समणेनिग्गथे

त्रण अच्छेद्य कहिया तेकहेछे । बुद्धीथी तथा शस्त्रादिके छेदीनसके । समयतेकालविशेष । प्रदेश धर्माधर्म आकाश जीव पुदगलनु परमाणुओ घणु नान्हो दृष्टिनावे पुदगलखधनु । बलेनथी अग्निथी । हस्तादिकथी गहीनसके । बे भागनथाय । मध्यनथी त्रणविभाग नथाय तेमाटे । अवयव नथी तेमाटे अप्रदेश ॥ त्रणविभागरहित कहिया ते कहेछे । समय प्रदेश परमाणु । एह पूर्वे त्रस थावरकहिया तेभयथी बीहेछे ॥ हेआ र्यो साधो श्रमणभगवत महावीर गौतमादिकने निमत्रीने एम कहिवा लाग्या तेस्यु प्राणी जीवनेस्याथी भयछे हेश्रमणायुष्मन् ए भगवत पूछयो

नेवं वक्ष्यमाणन्यायेना वादीदिति कस्माद्भयं एषान्ते किंभया कुतोविभ्यतीत्यर्थं प्राणा: प्राणिन: ॥ समणाउसोत्ति॥ हेश्रमणा हेआयुषन्तइति गोतमादीना मेवामत्रण मिति अयंच भगवत: प्रश्न: शिष्याणां व्युत्पादनार्थं एवा नेनापृच्छतोपि शिष्यस्य हिताय तत्त्व माख्येयमिति ज्ञापयति उच्यतेच कत्थइपुच्छइसी सो कहिंचपुठ्ठावयतिआयरिया सीसाणंतुहियठ्ठा विउलतरागंतुपुच्छाएत्ति ॥ १ ॥ ततश्च उवक्कमतित्ति ॥ उपसक्रामति उपगच्छन्ति तस्य समीपवर्त्तिनो भवन्ति इहच तत्कालापेक्षया क्रियायावर्त्तमानत्व मिति वर्त्तमाननिर्देशो नदुष्ट: उपसक्रम्य वन्दन्ते स्तुत्या नमस्यन्ति प्रणामत: एव मनेन प्रकारेण ॥ वया सित्ति ॥ छान्दसत्वा इहुवचनार्थं एकवचनमिति अवादिषु रुक्तवन्तो नोजानीमो विशेषतो नोपश्यामः सामान्यतो वाशब्दौ विकल्पार्थौ तदिति तस्मा

भामंतित्ता एवंवयासी किंभयापाणा समणाउसो गोयमाई समणाणिग्गंथा समणंभगवंमहावीरं उवसंकमंति उवसंकमित्ता बंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता एवंवयासी णोखलु वयं देवाणुप्पिया एयमठं जाणामोवा पासामोवा तंजहा जइणं देवाणुप्पिया एयमठं नोगिलायंति परिकहेत्तए तमिच्छामोणं देवाणुप्पियाणं भं

तिवारे गौतमादिकश्रमणनिग्रंथ श्रमणभगवंत महावीर प्रति उपसक्रमे आवें आवीनें वादें नमस्कारकरे मनथीवादी नमस्कारकरी इमकहे हेदे वानुप्रिय हेभगवंत नथी निश्चयथी ए अर्थ विशेषथी जाणतानथी देखता जे प्राणीस्याथीभयपामेछे । तेमाटे जोहेदेवानुप्रिय ए अर्थ तुमनेकहता ग्लानपणुं किलामना नहोय तो अम्हे बाळांछा हेदेवानुप्रिय तुमारेपासे ए अर्थजाणवानें तिवारे भगवानकहेछे हेआर्यो इमकही गौतमादिश्रमण

देत मर्थ द्विभया: प्राणा इत्येवं लक्षणं ॥ नोगिलायंतित्ति ॥ न ग्लायन्ति न श्राम्यन्ति परिकथयितु म्परिकथनेन ॥ तंति ॥ ततो ॥ दुक्खभयत्ति ॥ दुःक्खा न्मरणादिरूपा द्भय मेषामिति दुःखभयाः ॥ सेणंति ॥ तद्.ख ॥ जीवेणकडेत्ति ॥ दुःखकारणकर्म्मकरणा ज्जीवेन क्षत मित्युच्यते कथ मित्याह ॥ पमा एणति ॥ प्रमादेना ज्ञानादिना बन्धहेतुना कारणभूतेनेति उक्तंच पमाओयमुणिदेहिं भणिओअट्ठभेयओ अन्नाणससओचेव मिच्छानाणतहेवय ॥ १ ॥ रागोदोसोमइब्भसो धम्ममियअणायरो जोगाणदुप्पणीहाण अट्ठहावज्जियव्वओत्ति ॥ २ ॥ तच्च वेद्यते क्षिप्यते अप्रमादेन बन्धहेतुप्रतिपक्षभूतत्वादिति अस्यच सूत्रस्य दुक्खभयापाणा १ जीवेणंकडेदुक्खेपमाएणं २ अपमाएणंवेइज्जइ इत्येवरूपप्रश्नोत्तरनयोपेतत्वा त्रिस्थानकावतारो द्रष्टव्यइति जीवेन क्षत दु.ख मित्युक्त मधुना परमतं निरस्य तदेवसमर्थय न्नाह ॥ अन्नउत्थीत्यादि ॥ प्रायः स्पष्टं कि स्वन्यतीर्थिका इहतापसा विभङ्गज्ञानवन्त एव वक्ष्यमाण

तिए एयमठं जाणित्तए । अज्जोत्ति समणेभगवंमहावीरे गोयमाई समणेनिग्गंथे आमंतित्ता एवं वयासी दुक्खभयापाणा समणाउसो सेणं भंते दुक्खे केण कडे जीवेणकडे पमाएणं सेणंभंते दुक्खे कहं वेइज्जंति अप्प माएणं । अन्नउत्थियाणंभंते एवमाइक्खई एवं भासेई एवं परूवेई कहन्नं समणाणं निग्गंथाणं किरिया क

निग्रंथने आमत्री तेडोने इमकहेछे मरणादि दुखथी भय छे प्राणीने हेश्रमणआयुष्मन् तें दुख किणकीधो भगवान कहेछे जीवेकीधुं प्रमादथी दुख नाकारण कर्मकीधा । ते भगवंत दुख केम मटे कर्मक्षिमक्षयथाय अप्रमादथी पाच प्रमाद छांडवाथी । इहा जेमहावीरस्वामीये गौतमादिने साहु मु प्रश्नकीधो ते शिष्यहितार्थ जाणिवो मे कहियोछे कत्थइपुच्छइसीसो कहंविपुच्छायसतिआयरिया इत्यादि ॥ हिवे परमतने खोटो स्हजअर्थ

प्रकार माख्यान्ति सामान्यतो भाषन्ते विशेषतः क्रमेणै तदेव प्रज्ञापयन्ति प्ररूपयन्तीति पर्यायरूपपदद्वयेनो क्तमिति अथवा ख्यामी षन्नाषन्ते व्यक्तभा षया प्रज्ञापयन्ति उपपत्तिभि र्बोधयन्ति प्ररूपयन्ति प्रभेदादिकथनतद्दति कि न्तदित्याह कथा ह्रेन प्रकारेण श्रमणानां निर्ग्रन्थानां मतद्दतिशेषः क्रिय तद्दति क्रिया कर्म सा क्रियते भवति दुःखायेति विवचेति प्रश्नः इह चत्वारो भङ्गा स्तद्यथा क्षता क्रियते विहित सत्कर्मदुःखाय भवतीत्यर्थः १ एवं कृता नक्रियते २ अकृता क्रियते ३ अकृता नक्रियतद्दति ४ एतेष्व नेन प्रश्नेन यो भङ्गः प्रष्टु मिष्ट स्त शेषभङ्गनिराकरणपूर्वक मभिधातु माह ॥ तत्थत्ति ॥ तेषु चतुर्षु भङ्गकेषुमध्ये प्रथम द्वितीय चतुर्थ न्नच पृच्छन्ति एत त्त्रयस्या त्यन्तरूचे रविषयतया तत्प्रश्नास्या प्यप्रवृत्तेरिति तथाहि यासौ कृता क्रियते यत्त त्कर्म कृतं नभवति नोतत् पृच्छन्ति अत्यन्तविरोधेना सम्भवा त्तथाहि कृतचे त्कर्म्म कथन्नभवती त्युच्यते नभवतिचे त्कथङ्कृत न्तदिति कृतस्य कर्म्मणो ऽभव नाभावा त्तनतेषु या सा वकृता यत्त दकृतं कर्म्म नोक्रियते नभवति नोतां पृच्छन्ति अकृत स्वासतश्च कर्मणः खरविषाणकल्पत्वादिति असुमेवच भङ्गत्रय त्रिविध माश्रित्या स्यसूत्रस्य त्रिस्थानकावतारद्दति सम्भाव्यते तृतीयभंगकस्तु तत्सम्मतद्दति तपृच्छन्ति अतएवाह तत्र या सा वकृता क्रियते यत्त दकृतं पूर्व

ज्जंति तत्थ जासा कडा कज्जइ णोतंपुच्छंति । तत्थ जासा कडा नोकज्जइ णोतं पुच्छंति । तत्थ जासा

थायेळे । सत्यपणे अन्यतीर्थो तापसादि अनाणी हेभगवंत इमकहेळे । सामान्यतया । तथा विशेषपणे कहेळे । एणअनुक्रमे जणावेळे । एम भेदेकरी कहेळे । केणप्रकारें श्रमणनिग्रंथने क्रियाकरिये एतले कीधुंकर्म केमदुखने थायळे । इहाचार भांगाळे । तेकहेळे । तिहां जेकर्मकीधो तेदुखनेथाय तेनपूळे एतले नलागे । पूर्वेकीधुं ते अप्रत्यक्षपणांमाटे एहपहलो भांगोनलेवो ॥ तिहां जेकर्मकीधुं पणि नथीकरे एहबीजोभांगो

मविहितं कर्मभवति दुःखाय सम्पद्यते तां पृच्छन्ति पूर्वकालकृतत्वस्या प्रत्यक्षतया ऽसत्वेन दुःखानुभूतेश्च प्रत्यक्षतया सत्वेना कृतकर्मभवनपक्षस्य सम्मत त्वादिति पृच्छतां चायमभिप्रायो यदि निर्ग्रन्थाअपि अकृतमेव कर्म दुःखाय देहिना भवतीति प्रतिपद्यते ततः सुष्ठु शोभन असत्समानबोधत्वादिति शेषा न्नपृच्छन्त स्तृतीयमेव पृच्छतीतिभावः ॥ सेत्ति ॥ अथ तेषा मकृतकर्माभ्युपगमवता मेवं वक्ष्यमाणप्रकार वक्तव्य मुल्लापः स्यात् तएववा एवमाख्याति परान् प्रति यदुत अथैव वक्तव्य मरूपणीयं तत्ववादिना स्या द्भवेत् अकृते सति कर्मणि दुःखाभावात् अकृत्य मकरणीय मबन्धनीय मप्राप्तव्य मनागते काले जीवाना मित्यर्थः कि दुःखं दुःखहेतुत्वा त्कर्म ॥ अफुसंति ॥ अस्पृश्य कर्मा कृतत्वादेव तथा क्रियमाणच वर्त्तमानकाले वध्यमान कृतंवा तीतकाले वद्ध क्रिय माण द्वंद्वैकत्वं कर्मधारयोवा नक्रियमाणकृत मक्रियमाणकृतं किन्तत् दुःख ॥ अकिच्चंदुक्खमित्यादि ॥ पदत्रयं तत्थजासाअकडाकज्जइ तपृच्छती त्यन्यती र्थिकमताश्रितं कालत्रयालम्बन माश्रित्य त्रिस्थानकावतारो स्यद्रष्टव्यः किमुक्तंभवतीत्याह अकृत्वा अकृत्वा कर्म प्राणा द्वीन्द्रियादयो भूता स्तरवो जीवा. प

अकडा कज्जइ तंपुच्छंति । तत्थ जासा अकडा नोकज्जइ णोतंपुच्छंति । ४ । सेएवंवत्तव्वंसियाअकिच्चं दुक्खं अफुसंदुक्खं अकज्जमाणकडंदुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणाभूया जीवा सत्तावेयणं वेयंति वत्तव्वं जेतेएवमाहिंसु

जांणवो कीधुं तेप्रत्यक्ष भोगवेछे । तेनपूछे ॥ तिहां जेनथीकीधुं तेनथीकरतां नहोय एरविषाणनीपरे अन्नावथी ते एनथीपूछे त्रीजोजागो ॥ तिहाजे अकृत अणकीधुं कर्मकरे तेकहेछे पूछुछुं एतले तेभोगवेछे । इमकहेछे तेअन्यमती जेनथीकीधुंकर्म नथी फरस्युंकर्म अक्रियमाण कृत दुःख नथीकरीने नथीकरीने प्राण भूत जीव सत्व वेदना अनुभवेछे । इमकहेछे ॥ हिवे भगवत कहेछे जेअकृतकर्म भोगवेछे एमकहेछे तेखोटुं कहेछे ।

ञ्चेन्द्रिया. सत्वाः पृथिव्यादयो यथोक्तम् प्राणाद्वित्रिचतुःप्रोक्ता भूतास्तुतरवःस्मृता जीवाःपञ्चेन्द्रियाज्ञेया' शेषाःसत्वाइतीरिताः ॥ १ ॥ वेदनां पीडां वेदय न्तीति वक्तव्य मित्ययं तेषा मुल्लापः एतद्वा ते अज्ञानोपहतबुद्धयो भाषन्ते परान् प्रति यदुत एवं वक्तव्यस्यादिति प्रक्रम एव मन्यतीर्थिक मत मुपदर्श्य निरा कुर्व्वन्नाह ॥ जेतेइत्यादि ॥ यएते अन्यतीर्थिका एव मुक्तप्रकारमाहु ॥ सुत्ति॥ उक्तवन्तो मिथ्या असम्यक् ते ऽन्यतीर्थिका एव मुक्तवंतो ऽकृतायाः क्रियात्वा नुपपत्ते. क्रियतइति क्रिया यस्यास्तु कथञ्चनापि करण नास्ति सा कथंक्रियेति अकृतकर्म्मानुभवनेहि बद्धमुक्तसुखितदु खितादिनियतव्यवहाराभावप्रसग इति स्वमतमा विष्कुर्व्वन्नाह ॥ अहमित्यादि॥ अहमित्यहमेव नान्यतीर्थिका' पुन'शब्दो विशेषणार्थः सच पूर्ववाक्यार्था दुत्तरवाक्यार्थस्य विलक्षणतामाह॥ एव माइक्खामीत्यादि ॥ पूर्ववत् कृत्यं करणीय मनागतकाले दुख तद्धेतुत्वात् कर्म स्पृश्य स्पृष्टलक्षणबन्धावस्थायोग्य क्रियमाण वर्त्तमानकाले कृतमतीते अक रण नास्ति कर्म्मणः कथञ्चनापीतिभावः स्वमतसर्वस्वमाह कृत्वा कृत्वा कर्म्मेति गम्यते प्राणादयो वेदनां कर्मकृतशुभाशुभानुभूति वेदयं त्यनुभवन्तीति वक्त व्य स्या त्सम्यग्वादिनां ॥ इति त्रिस्थानकस्य द्वितीयउद्देशको विवरणतः समाप्तः ॥ २ ॥ उक्तोद्वितीयोद्देशकः साम्प्रत तृतीय आरभ्यते अस्यचाय

तेमिच्छा । अहंपुणएवमाइक्खामि एवंभासामि एवंपन्नवेमि एवंपरूवेमि किच्चंदुक्खं किज्जमाणं कडंदुक्खं कट्टुकट्टु पाणाभूयाजीवा सत्तावेयणंवेयंतित्ति वत्तव्वंसिया ॥ तइयठाणस्सबीउउद्देसउसम्मत्तो ॥ २ ॥

मै इमकहुछु एहवो भाखुंछु एमसमझावुछुं एम प्ररूपुंछु भेदथी जे अनागतकाले करसी जेकर्म फरस्युंकर्म वंधावस्थायोग्य वर्त्तमानकाले क्रियमाण जेकर्म .अतीतकालेकीधु जेदुखरूपकर्म करीने करीने प्राण भूत सत्व वेदना शुभाशुभानुभूतिरूप तेप्रतिभोगवे । एहवो कहिवो थाय ॥ इति त्रीजा

मभिसम्बन्धइहा नन्तरोद्देशके विचित्रा जीवधर्माः प्ररूपिता इहापि तएव प्ररूप्यन्त इत्यनेन सम्बन्धेना यातस्या स्योद्देशकस्या दिसूत्रचयं ॥ तिहिंठाणे हिंइत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहायसबन्धः पूर्वसूत्रे मिथ्यादर्शनवता मसमञ्जसतोक्ता इहतु कषायवता न्ता माहेत्येव सम्बधस्या स्य व्याख्या मायी मा यावान् माया मायाविषय गोपनीय प्रच्छन्न मकार्यं कृत्वा नोआलोचयेत् ॥ मायामेवेति ॥ शेष सुगम नवर मालोचन गुरुनिवेदन प्रतिक्रमण मि थ्यादुष्कृतदान निन्दात्मसाक्षिका गर्हागुरुसाक्षिका वित्रोटनं तदध्यवसायविच्छेदनं आत्मन श्चारित्रस्यवा तिचारमलक्षालन मकरणता ऽभ्युत्थान पुन नैत त्करिष्यामीत्य भ्युपगमः ॥ अहारिहं ॥ यथोचितं ॥ पायच्छित्तति ॥ पापच्छेदकं प्रायश्चित्तविशोधकवा तपःकर्म्म निर्विकृतिकादि प्रतिपद्येत तद्यथा अकार्षमह

तिहिंठाणेहिं मायीमायंकट्टु णोआलोएज्जा णोपडिक्कमेज्जा णोणिंदेज्जा णोगरहेज्जा णोविउट्टेज्जा णोविसो हेज्जा णोअकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा णोअहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जिज्जा तं० अकरिंसुवाहं करेमि

ठाणानुं बीजुं उदेशो पूरोथयो ॥ २ ॥ हिवे त्रीजो कहेछे पाछले उदेशे जीवधर्म कहिया तीजे उदेशेपणि तेहज कहेछे । पूर्वसूत्रें मिथ्यात्वीनी मूर्खताकही इहां कषायवंतने तेकहेछे । त्रणिथानके मायावत मायाकरी छांना कार्यकरी आलोवेनथी आलोचिवुं गुरुसमक्ष कहि वुं पडिकमवु जेमिथ्यादुष्कृतदेवु तथा निंदेनथी आतमसाक्षीये निंदानकरे गर्हणानकरे गुरुनीसाक्षीये त्रोडेनथी जे अध्यवसायनुं छेदवुं । चारित्र ना अतीचारने विशोधेनथी वली एहवो पापनकरु एम मोजमाल नथाय । वली एहवो पापनकरु एम अंगीकार नकरे । यथायोग्य प्रायश्चित्त विशोधवाने पापछेदवाने तप कर्म पडिवजेनथी । तेत्रणबोल कहेछे । मै एहकीधोकर्म तेकिम आलोवुं माहरो महिमाजाय एम अहंकारे । वली

मिदमतःक थनिन्द्यमित्यालोचयिष्यामि स्वस्वमाहात्म्यहानिः प्राप्तेरित्येवमभिमानात् ॥ १ ॥ तथा करोमि चाह मिदानी मेव कथमसाध्विति भणामि क रिष्यामीतिचा हमेत दकृत्य मनागतकालेपीति कथ प्रायश्चित्त प्रतिपद्यतइति कीर्त्ति रेकादिग्गामिनी प्रसिद्धिः सर्वदिग्गामिनी सैव वर्णो यशः पर्यायत्वा दस्य अथवा दानपुण्यफलाकीर्त्तिः पराक्रमकृतयशः । तच्चवर्णइति तयोः प्रतिषेधो ऽकीर्त्ति रवर्णश्चेति अविनयः साधुकृतो मे स्यादिति इदंच सूत्रमप्राप्त प्रसिद्धिपुरुषापेच्च ॥ मायकट्टुत्ति ॥ मायां कृत्वा मायां पुरस्कृत्य माययेत्यर्थः परिहास्यति हीना भविष्यति पूजा पुष्पादिभिः सत्कारो वस्त्रादिभि रिद मेक मेव विवचित मेकरूपत्वा दिति इदंतु प्राप्तप्रसिद्धिपुरुषापेच्च शेष सुगम उक्तविपर्ययमाह ॥ तिहिमित्यादि ॥ सूत्रत्रय स्फुटं किन्तु मायी ॥ मायकट्टुआलो

वाहं करिस्सामिवाहं । तिहिंठाणेहिं मायीमायं कट्टु णोआलोएज्जा णोपडिक्कमेज्जा जावनोपडिवज्जेज्जा तंजहा अकित्तीवामेसिया अवन्नेवामेसिया अविणयेवामेसिया । तिहिंठाणेहिं मायीमायं कट्टु णोआलो एज्जा जावणोपडिवज्जेज्जा तंजहा कित्तीवामेपरिहाइस्सइ जसोवामेपरिहाइस्सइ पूयासक्कारेवामेपरिहा

पापहुंकरलुं तोकिम निंदुं माठोकीधुंकिम । वली करीस हुं तो किमप्रायश्चित्तलेवुं एहत्रणबोल आलोवेनथी ॥ वली त्रण थानके मायी कपट वंत मायाकपटकरी नथी आलोवे यावत् पडिकमेनथी । तप पडिवजेनथी । अकीर्त्ति अपयश माहरोथास्यें इमजाणी । अवर्णवाद निंदा मा हरीथासे । माहरी अविनयता मूर्खताथासे । एह त्रणप्रकारे आलोवेनथी ॥ वली त्रणथानके मायावंत मायाकरीने आलोवे नथी जाव तपकर्म नथी पडिवजे तेकहेछे । माहरी कीर्ति हानिपासे । पराक्रमथी ऊपनो जेमाहरो यश तेहानि पामसे । माहरी पूजा सत्कार वस्त्रादिकथी

एज्जत्ति ॥ इह मायो अकृत्यकरणकालएव आलोचनादि कालेल माय्येवा लोचनाद्यन्यथानुपपत्तेरिति ॥ अस्मिति ॥ अथ यती मायिनइहलोकाद्या गर्हि
ता भवन्ति यतथा मायिन इहलोकाद्या प्रशस्ता भवन्ति यतथा मायिन आलोचनादिना निरतिचारो भूतस्य ज्ञानादीनि स्वस्वभाव लभन्ते अतोह ममा

इस्सइ । तिहिंठाणेहिं मायीमायं कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निंदेज्जा जावपडिवज्जेज्जा तंजहा मा
यिस्सणं अस्सिंलोगे गरहिए भवइ उववाए गरहिए भवइ आयाइ गरहिया भवइ । तिहिंठाणेहिं मा
यीमायं कट्टु आलोएज्जा जावपडिवज्जेज्जा तंजहा अमायिस्सणं अस्सिं लोगे पसत्थे भवइ उववाएपसत्थे
भवइ आयाईपसत्थे भवइ। तिहिंठाणेहिं मायीमायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जिज्जा तं० णाणट्ठयाए

थायछे हीनथासे लोक कहस्ये जेएह एहवा पापकर्म करेछे एह त्रणबोलें आलोवेनथी ॥ त्रणथानकें मायावत मायाकरीने आलोवे पडिकमें निंदे
यावत् तपकर्म पडिवजे तेकहेछे । मायावत छाना पापकरनारनी एहलोकने विषे निंदाथायछे । मायाकरवाथी उपपात उपजिवो तेनारकी ति
र्यचमा उपजवाथी निंदनीक थायछे । आगामिकाले पणि तेहनी निंदाथायछे माठेठामें उपजे तेहथी एह तीनबोल जाणी पापप्रते आलोवे ॥
वली त्रणथानकें मायी मायाकरीने आलोवे यावत् तप'कर्म पडिवजे तेकहेछे । मायारहितने इहलोकादिक प्रशस्त भलाथाय । उपपात उपजिवु
देवतादिकमा तिहां पणि रिद्धियेभलो कहवाये । वली तिहांथी चवीने रूडे प्रशस्तठामें अवतरे एमजाणी आलोयणालेवे ॥ वली त्रणठामें मायी
मायाकरीने आलोवे यावत् तप पडिवजे तेकहेछे । नाणने अर्थ आलोयणालेतो नाणपामें । समकितने अर्थलेतो समकितपामे । चारित्रने अर्थ

यीभूत्वा आलोचनादि करोमीतिभाव' अनन्तर शुद्धि रुक्ता इदानीं तत्कारिणो ऽभ्यन्तरसम्पद त्रिधा कुर्वन्नाह ॥ तत्रोपुरीत्यादि ॥ सुबोध नवर मेतेयथो त्तर प्रधानाइति तेषामेव वाह्या सम्पद सूत्रद्वयेनाह ॥ कप्पइत्यादि ॥ कल्पते युज्यते युक्तमित्यर्थ. ॥ धारित्तएत्ति॥ धर्त्तु परिग्रहेपरिहर्तु परिभोक्तुमिति अथवा धारणयाउवभोगो परिहारणाहोइपरिभोगोत्ति ॥ जगिय ॥ जगमजमौर्णिकादि ॥भंगिय॥ अतसोमयं ॥ खोमिय ॥ कार्प्पासिकमिति अलाबुपात्र तुबक दारुपात्र काष्टमय मृत्तिकापात्रं मृन्मय शरावबार्धटिकादि शेष सुगम वस्त्रग्रहणकारणान्याह ॥ तिहीत्यादि ॥ ह्रीलज्जा संयमोवा प्रत्ययो निमित्त यस्य धारणस्य तत्तथा जुगुप्सा प्रवचनखिसा विकृताङ्गदर्शनेन माभूदित्येव प्रत्ययो यत्र तत्तथा एवं परिषहा. शीतोष्णदंशमशकादय. प्रत्य

दसणठयाए चरित्तठयाए । तओपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा सुत्तधरे ज्ञत्थधरे तदुभयधरे । कप्पइनिग्गंथा णवा निग्गथीणंवा तओवत्थाइं धारित्तएवा परिहरित्तएवा तजहा जगिए भंगिए खोमिए कप्पइनिग्गंथाणं वा निग्गथीणंवा तओपायाइं धारित्तएवा परिहरित्तएवा तंजहा लाउयपाएवा दारुपाएवा महियापाएवा तिहिंठाणेहिं वत्थंधरेज्जा तंजहा हिरिवत्तिइं दुगंछावत्तियं परीसहवत्तियं । तओ ज्ञायरक्खा पन्नत्ता तं०

लेतो चारित्र शुद्धथाय ॥ त्रणप्रकारे पुरुष कहिया तेकहेछे । सूत्रना धरणहार । अर्थना धरणहार । सूत्र अने अर्थ बेना धरणहार एह त्रीण उत्तरोतर अधिकाजाणिवा ॥ कल्पे सूझे साधुने तथा साध्वीने त्रणवस्त्र धारवु राखवुं परिभोगवुं तेकहेछे । जंगम ते ऊर्णामय ऊननो धाबल प्रमुख । भंगिक ते रेसमनुं सणनुं अतसीखडनु वस्त्र । क्षौम ते कपासनुं वस्त्र ॥ कल्पे सूझे साधुने तथा साध्वीने त्रण जातिना पात्रनुं धारवुं

यी यन तत्तथा श्राह च वेउव्वियाउडेवा दूएयहीखडपजणणेचेव एसिंश्रणुगाहठा लिंगुदयठायपट्टोउ ॥ १ ॥ वेउव्वित्ति ॥ विकृते तथा अप्रावृते वस्ता भावेसति वातिकेच उच्छूनत्वभाजने क्रियां सत्या खवे सुहगमाणप्रजनने मेहने ॥ लिंगोदयठत्ति ॥ स्त्रीदर्शनेलिंगोदयरचार्थ मित्यर्थः तथा तणगह णानलसेवा निवारणाधम्मसुक्कझाणठा दिठकप्पपहाण गिलाणमरणठयाचेवत्ति ॥ १ ॥ वस्त्रस्य ग्रहणकारणप्रसङ्गात् पात्रस्यापि ता न्याख्यायन्ते श्र तरतवालबुड्ढा सेहादेसागुरूअसहुवग्गो साहारणोग्गहाल जिकारणापायगहणतु ॥ १ ॥ अतरतत्ति ॥ ग्लानादेणाः प्राघूर्णकाः ॥ असहुत्ति ॥ सुकुमा रो राजपुत्रादिः प्रव्रजितः साधारणावग्रहात् सामान्योपष्टभार्थं अलब्धिकार्थं चेति निर्ग्रन्थ प्रस्तावा न्निर्ग्रन्थानेवानुष्ठानत' समसूत्याह ॥ तश्रोश्राए त्यादि ॥ सुगम नवर श्रात्मान रागद्वेषादे रक्षत्योश्रवकूपाद्वा रतत्नी त्यात्मरत्ना: ॥ धम्मियाएपडिचोयणाएत्ति ॥ आत्मना एव धार्म्मिकोपदेशेन नेद भवादृशां विधातु मुचितमित्यादिना प्रेरयिता उपदेष्टा भवतीति अनकूलेतरोपसर्गकारिण स्ततो सा बुपसर्गकरणा न्निवर्त्तते ततो ह्यात्या सेवा नभवती त्यत आत्मा रक्षितो भवतीति १ तूष्णीको वा वाचयम उपेक्षकइत्यर्थः स्यादिति प्रेरणाया अविषये उपेक्षणासामर्थ्ये च ततः स्था

धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता नवइ तुसिणीएवासिया उट्ठित्तुवा श्रायाएगंतमवक्कमेज्जा । णिग्गंथ

परिभोगवुं अनसनादि कारणें तेकहेंछे । तुंबीपात्र काष्ठनुंपात्र माटीनुंपात्र॥ त्रण थानकें साधु वस्त्ररांखे तेकहेंछे । लाजने अर्थ । तथा प्रवचननी निंदा नथाय तेमाटे । शीतोष्णादशमशकादि परीसह टालवाने अर्थ ॥ साधुना अधिकारमाटे तेज अधिकार कहेंछे । नण आत्मरक्षक बोल कहिश्रा तेकहेंछे । धर्मने उपदेशे आगलयाजीवने अकार्यथीवारे जेतुम सरिखाने एह प्रारम्भकरवो नघटे एमकहिवो । अथवा कह्यो नमाने तेहनी

ना दुल्याय ॥ आयत्ति॥ आत्मना एकांत विजनं अंतं भूमिभाग मवक्रामेत् गच्छेत् निर्ग्रंथस्य ग्लायतो शक्नुवत स्तद्वेदनया अभिभूयमानस्येत्यर्थः आहारगृहणहि वेदनादिभि रेव कारणै रनुज्ञातं ॥ तओत्ति ॥ तिस्र. ॥ वियडति ॥ पानकाहार स्तस्य दत्तय एकप्रक्षेपप्रदानरूपाः प्रतिग्रहीतु माश्र यितु वेदनोपशमायेति उत्कर्षः प्रकर्ष स्तद्योगा दुत्कर्षा उत्कर्षतीतिवो त्कर्षा उत्कृष्टेत्यर्थः प्रचुरपानकलक्षणा यया दिनमपि यापयति मध्यमा ततो ह्री ना जघन्या यया सकृदेव वितृष्णो भवति यापनामात्रंवा लभते अथवा पानक विशेषा दुत्कृष्टाद्या वाच्या तथाहि कलमकाञ्जिकावश्रामणादे द्राँचा पानकादेर्वा प्रथमा १ षष्टिकादिकाञ्जिकादेर्वा मध्यमा २ तृणधान्यकाञ्जिकादे रुष्णोदकस्यवा जघन्येति ३ देशकालस्वरुचिविशेषाद्वो त्कर्षादिने य मिति ॥ साहम्मियति ॥ समानेन धर्म्मेण चरतीति साधर्म्मिक स्त समेकत्र भोगो भोजन सम्भोगः साधूनां समानसामाचारीतया परस्पर मुपध्यादिदान

स्सणंगिलायमाणस्स कप्पंति तउवियडदत्तीउ पडिगाहित्तए तंजहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना । तिहिंठाणे हिं समणेनिग्गथे साहम्मियं संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे णाइक्कमइ तंजहा सइंवादट्ठुं सद्धियस्सवा नि

उपेक्षाकरवी उपेखी पोंते मौनपणेरहे । अथवा वारवानें समर्थनथी तेमाटे पापना करनारने पासथी उठी पोतेज एकांते अलगो जाय एह त्रणप्रका आत्मरक्षाकही भगवते ॥ रोगथी पराभव्योहोय एहवा निग्रथ साधुने कल्पै त्रण वियड तेपाणी तेहनी दातीजे एकवारेज प्रक्षेप आप्युं पात्रमां तेवोहरे तेतले तृष्णासमावे तेकहेछे। उत्कृष्टीदाति तेघणु पांणी । मध्यमदाती ते थोडुं । जघन्यदाती ते एकबार पिंई तष्णासमावे ॥ त्रण थानकै श्रमण निग्रथ साधु साधर्मीने जेहनो सरिखो धर्मछे तेहनेसाथे सभोग आहारोपधिनुं देवुंलेवुं विसंभोग तेलेवु पणिनथी देवुं पणिनथी

गृहगासत्र्यवहारलक्षण: सविद्यते यस्य ससभोगिक स्तं विसंभोगी दानादिभि रसंव्यवहार: स यस्यास्ति सविसभोगिक स्तं कुर्व्वे नातिक्रामति नलङ्घय त्याज्ञा सामायिकया विहितकारित्वा दिति स्वयमात्मना साचात् दृष्टा सभोगिकेन क्रियमाणा मसभोगिकदानगृहणादिका मसमाचारी तथा ॥ सड्डि यस्सत्ति ॥ श्रद्धा श्रद्धानं यस्मि न्नस्ति सश्राद्ध: श्रद्धेयवचन: कोप्यन्य: साधु स्तस्य वचनमिति गम्यते निशम्या वधार्य्य तथा ॥ तश्चति ॥ एक द्वितीयं यावत् तृतीय ॥ मोसति ॥ मृषावादं श्रकल्पगृहणपार्श्वस्थदानादिना सावद्यविषयप्रतिज्ञाभङ्गलक्षण माश्रित्येति गम्यते आवर्त्तते निवर्त्तते तमालोचयतीत्यर्थ. श्र नाभीगत स्तस्य भावात् प्रायश्चित्तंवा स्योचित दीयते चतुर्थंत्वाश्रित्यप्रायो नोश्रावर्त्तते त नालोचयति तस्य दर्पत एव भावादिति आलोचनेपि प्राय श्चित्तस्या दानमस्येति अत स्तुर्थासंभोगकारणकारिणं विसभोगिक कुर्व्वे न्नातिक्रामतीतिप्रकृत उक्तंच एगंचदोवितिन्निव आउट्टंतस्सहोइपच्छित्तं आ उट्टतेवितश्रो परेणतियहविसभोगोत्ति ॥ १ ॥ एत चूर्णि: सम्भोइश्रोश्रसुद्धगिण्हतोचोइश्रोभणइ संतापंपडिचोयणा मिच्छामिदुक्कडं नपुणएवंकरिस्सामी ए वमाउट्टेजमावन्नो तपायच्छित्त दाउंसोभोगी एववीयवाराए वि एवतइयवाराश्रो परश्रो चउत्थवाराए तमेवाइयारंसेविऊण आउट्टं तस्सवि ॥ विसंभो गोत्ति ॥ इहचार्यं स्थानद्वयं गुरुतरदोषाश्रय यत स्तत्र ज्ञातमात्रेश्रुतमात्रेच विसम्भोग: क्रियते तृतीय स्त्वल्पतरदोषाश्रय तत्रहि चतुर्थवेलाया सम्बिधीय

सम्मतस्रमोसं स्राउट्टइ चउत्थं नोस्राउट्टइ । तिविहा स्रणुन्ना पन्नत्ता तंजहा स्रायरियत्ताए उवज्झायत्ताए

ते प्रतिकरतो भगवंतनी आग्याप्रते अतिक्रमैनथी भंगकरे नथी । संभोगियेकरी असंभोगिकनूं देवू लेवू एहवी असमाचारीने आप पोते जोईनें वली एक बे यावत् त्रणि मृषावाद आश्रीने निवर्ते तेहने आलोयणादे । वली चौथो मृषावाद आश्रीने जे न निवर्ते तेहने आलोयणा न दे ।

तद्गति ॥ अणुन्नत्ति ॥ अनुज्ञात मनुज्ञा धिकारद्दाम आचर्यते मर्यादाहृत्तितया सेव्यत इत्याचार्य आचारेवा पञ्चप्रकारे साधु रित्याचार्यः आहच पच
विहआयार आयरमाणातहापयासंता आयारद्सित्ता आयरियातेणवुच्चति ॥ १ ॥ तथा सुत्तत्थविजलक्खण जुत्तोगच्छस्समेढिभूओय गणतत्तिविप्प
मुक्को अत्थवाएइआयरिओ ॥ १ ॥ तद्भाव स्तत्ता तया उत्तरत्र गणाचार्यग्रहणा दनुयोगाचार्यतयेत्यर्थ. तथा उपेत्या धीयते स्मादि त्युपाध्याय आह
च समत्तनाणदसण जुत्तोसुत्तत्थतदुभयविहन्नू आयरियठाणजोगो सुत्तवाएइउवज्झाओत्ति ॥ १ ॥ तद्भाव उपाध्यायता तया तथा गणः साधुसमुदा
यो यस्यास्ति सखाभिसम्बन्धेना सोगणी गणाचार्य स्तद्भाव स्तत्ता तया गणनायकतयेतिभाव तथा समितो सगता औत्सर्गिकगुणयुक्तत्वेनो चिता आ
चार्यादितया अनुज्ञा समनुज्ञा तथा ह्यनुयोगाचार्यस्यौ त्सर्गिकगुणाः तस्भावयसंपत्ता कालोचियगहियसयलसुत्तत्था अणुयोगाणुन्नाए जोगाभणिया
जिणिदेहि ॥ १ ॥ इहराउमुसावाओ पवयणखिसायहोइलोयम्मि सेसाणविगुणहाणी तित्थुच्छेओयभावेण ॥ २ ॥ गणाचार्य्योप्यौ त्सर्गिक एवं सुत्तत्थे
निम्माओ पियदढधम्मोणुवत्तणाकुसलो जाईकुलसपन्नो गभीरोलद्धिमतोय ॥ १ ॥ संगहुवग्गहनिरओ कयकरणोपवयणाणुरागीय एवविहोयभणिओ
गणसामीजिणवरिदेहिं ॥ १ ॥ अथैव विधगुणाभावे अनुज्ञाया अप्यभावात् कथ मन्या समनुज्ञा भविष्यतो त्यत्रोच्यते उक्तगुणानां मध्या दन्यतर

गणित्ताए तिविहा समणुन्ना पसाता तंजहा आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणित्ताए । एवंउवसंपयत्ता ।

त्रणप्रकारे साधुने अनुग्याकही तेअधिकार पदवीनुं देवुं सामान्यथी आचार सहितने आचार्य पदवीदेवी उत्तरगुणसहित ते अनुयोगाचार्य । उपा
ध्याय जेपासे भणिये सूत्रार्थनोजाण तेहने उपाध्याय पदवीदेवी । गण ते साधुसमुदाय तेहनुंस्वामी तेगणि गणाचार्य गणाचार्यतादेवी ॥ त्रणप्र

गुणाभावेपि कारणविशेषा त्सम्भवत्येवासौ कथ मन्यथा भिधीयते ॥ जेयाविमंदेत्तिगुरुंविइत्ता डहरेइमेअप्पसुएत्तितच्चा ॥ हीलंतिमिच्छंपडिवज्जमाणा करतिआसायणतेगुरूणंति ॥ १ ॥ अत: केषांचित् गुणाना मभावे प्यनुज्ञासमग्रगुणभावेतु समनुज्ञेति स्थित अथवा स्वस्य मनोज्ञा समान समा चारीकतया अभिरुचिता स्वमनोज्ञास्त इवामनोज्ञे ज्ञानादिभि: समनोज्ञा एकसांभोगिका: साधव: कथन्त्रिविधाइत्याह आचार्यतयेत्यादि भिक्षुत्तु लकेत्यादिभेदा: संतोपि नविवक्षिता: निस्थानतााधिकारादिति एव ॥ उवसपयन्ति ॥ एव मित्याचार्यत्वादिभि स्त्रिधा समनुज्ञावत् ॥ उपसपत्ति ॥ उप सपत् ज्ञानाद्यर्थं भवद्दोयोह मित्यभ्युपगम: तथाहि कश्चि त्स्वाचार्यादिसंदिष्ट:सम्यक् श्रुतग्रन्थाना दर्शनप्रभावकशास्त्राणांवा सूत्रार्थयो र्ग्रहण स्थिरीकरणविस्मृतसधानार्थं तथा चारित्रविशेषभूताय वैयावृत्याय क्षमणायवा संदिष्ट माचार्यान्तरं य दुपसम्पद्यते उक्तंच उवसपयायतिविहा णा णेतहदसणेचरित्तेय दसणनाणेतिविहा दुविहायचरित्तअट्ठाएत्ति ॥ १ ॥ सेय माचार्योपसंपदेव मुपाध्यायगणिनोरपीति ॥ एवंविजहत्ति ॥ एवमिति आचार्यत्वादिभेदेन त्रिविधैव विहान परित्याग स्तञ्च आचार्यादे: स्वकीयस्य प्रमाददोष माश्रित्य वैयावृत्यक्षपणार्थं माचार्यान्तरोपसम्पत्त्या भवतीति आहच नियगच्छादन्नमि उसीएदोसायणाहोइत्ति अथवा आचार्योज्ञानाद्यर्थं मुपसम्पन्न यति न्त मर्थ मनुतिष्ठत सिद्धप्रयोजनवा परित्यजति यत्

कारे समनुग्या विशेषथी अनुग्या पदवी आपवी । तेकहेछे । उत्कृष्ट मूलगुण रहितने आचार्य पदवीदेवुं । एम उपाध्याय पदवी । तथाग णि पदवी प्रथमकही तेहथी विशेष गुणविना पदवी नदेवी ॥ एम उपसपन्ना पदवी तेहने ग्यानादिकने अर्थे सेविये पोताना आचार्यनी आग्याथी अधिकग्यानी बीजा आचार्यने नाणादिक अर्थ ते उपसपन्ना पदवी तेहने देवी ॥ इम आचार्यादि त्रणने छाडवु प्रमादादि दोषदेखीने एक समा

साचार्यविहानि रत्नांच उवसपन्नोजंका रणंतुतंकारणंअपूरितो अहवासमाणियंसि सारणयावाविसग्गोऽत्ति ॥ १ ॥ एव मुपाध्यायगणिनो रपीति
इय मनन्तर विशिष्टा साधुकायचेष्टा त्रिस्थानके वतारिता अधुनातु वचनमनसी तत्पर्युदासौच तत्रा वतारयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय
मस्य गमनिका तस्य विवक्षितार्थस्य घटादे र्वचन भणन तद्वचन घटार्थापेक्षया घटवचनवत् तस्मा द्विवक्षितघटादे रन्यः पटादि स्तस्य वचनं
तदन्यवचन घटापेक्षया पटवचनवत् नो अवचन मभणननिवृत्ति र्वचनमात्र डित्थादिवदिति अथवा स शब्दव्युत्पत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टोर्थोनेनोच्यत
इति तद्वचन यथार्थनामेत्यर्थः ज्वलनतपनादिव त्तथा तस्माच्छब्दव्युत्पत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टा दन्यः शब्दप्रवृत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टो र्थ उच्यते अ
नेनेति तदन्य वचन मयथार्थ मित्यर्थ. मण्डपादिवत् उभयव्यतिरिक्तं नोअवचन निरर्थक मित्यर्थोडित्थादिवत् अथवा तस्या चार्यादे र्वचन त
द्वचन तद्व्यतिरिक्तवचन तदन्यवचन अविवक्षितप्रणेतृविशेष नोअवचन वचनमात्रमित्यर्थः त्रिविधवचनप्रतिषेध स्त्ववचनं तथाहि नोतद्वचन घटा

एवंविजहस्सा । तिविहे वयणे पन्नत्ते तंजहा तव्वयणे तदन्नवयणे णोअवयणे । तिविहेअवयणे पन्नत्ते

चारीनो बीजो आचार्यादि आदरवु ॥ त्रणवचन कहिया तेकहेछे । घटने घटकहवो तेतद्वचन । घटथी अन्यपट कहवो ते अन्यवचन घटनी
अपेक्षाये पट ते अन्यवचन पटनी अपेक्षाये घट ते अन्यवचन । नो अवचन तेनिरर्थक वचन डित्यादिनीपरे प्रवृत्तिनिमित्तशून्य ॥ त्रण प्रकारें
अवचन कहियो तेकहेछे । निरर्थक वचन ते अवचन कामविना नबोले । नोतद्वचन जे घटने घट नकहे पटकहे । नो तदन्य वचन जे पटने
घटकहे यथास्थित नकहे । केवल वचनमात्र निरर्थक ॥ त्रण प्रकारे मनकहियो तेकहेछे । तेह देवदत्तादिनु जेघटादिक वस्तुनेविषे मन ते

पेक्षया पटवचनात् नोतदन्यवचन घटे घटवचनवत् अवचनं वचननिवृत्तिमात्रमिति एवं व्याख्यान्तरापेक्षयापि नेय तस्य देवदत्तादे स्तस्मिन्ना घ टादौ मन स्तन्मन स्ततो देवदत्ता दन्यस्य यज्ञदत्तादे र्घटापेक्षया पटादौ वामन स्तदन्यमनः अविवक्षितसंबंधिविशेषन्तु मनोमात्रं नोप्रमनइति एतदनुसारेणा मनो प्यूह्यमिति अनन्तरं सगतमनुष्यादिव्यापारा उक्ता इदानीं प्रायोदेवव्यापारान् ॥ तिहिंइत्यादिभि ॥ रण्टाभिः सूत्रे राक्ष सुग मानि चैतानि किन्तु ॥ अप्पवुट्ठिकाएत्ति ॥ अल्पः स्तोको ऽविद्यमानोवा वर्षणं वृष्टि रधः पतन वृष्टिप्रधानः कायो जीवनिकायो व्योमनिपत दप्कायइत्यर्थः वर्षणधर्मयुक्तवो दकं वृष्टि स्तस्याः कायो राशि र्वृष्टिकायः अल्पशासौ वृष्टिकायश्चा ल्पवृष्टिकायः सस्या द्भवेत् तस्मिं स्तत्र मगधादौ चशब्दो ल्पवृष्टिकारणान्तरसमुच्चयार्थः वामित्यलङ्कारे देशे जनपदे प्रदेशे तस्यैव एकदेशरूपे वा शब्दौविकल्पार्थौ उदकस्य योनयः परिणामकारणभु

तंजहा णोतव्वयणे णोतदन्नवयणे अवयणे । तिविहेमणे पन्नत्ते तंजहा तंमणे तयन्नमणे णोअमणे । ति विहे अमणे पन्नत्ते तजहा णोतंमणे णोतयन्नमणे अमणे । तिहिंठाणेहिं अप्पवुट्ठीकाए सिया तंजहा

तन्मन । देवदत्तथी अन्यजे यग्यदत्तादिकनुं घटनी अपेक्षायें पटमां जे मन तेतदन्यमन । कोई वस्तुनेविषें मननथी ते अमन ॥ त्रण प्रकारें अमन तेकहेंछे । तन्मन नथी । तदन्य मन नथी । मनमात्रे सहित पणि शून्य ॥ त्रण थानके अलप थोडुं अथवा नथी वृष्टि कायहोय एतले वरखा नवरसें तेकहेछे । तेदेशनेविषें जिहां वर्षा थोडीहोय ते आश्रीलेवुं अथवा ते देशना प्रदेशनेविषें घणा पाणीना योनिया जीव तथा पुदगल अप्कायपणें उपजतानथी चवतानथी उपजतानथी क्षेत्र स्वभावथी । देवता वैमानिक जोतिषी नागकुमार भवनपती यक्ष भूत व्यंतर

ता उदकयोनय स्तएवोदकयोनिका उदकजननस्वभावा व्युत्क्रामन्ति उत्पद्यंते व्यपक्रामन्ति च्यवन्ते एतदेव यथायोग पर्यायतश्चाचष्टे च्यवते उत्पद्यंते चेत्स्वभावा दित्येक तथा देवा वैमानिका ज्योतिष्का नागा नागकुमारा भवनपत्युपलक्षणमेतत् यक्षा भूताइति व्यंतरोपलक्षण अथवा देवा इति सामान्यं नागादयस्तु विशेषं एतद्ग्रहणञ्च प्राय एषा मेघविधेकर्मणि प्रवृत्ति रितिज्ञापनाय विचित्रत्वाद्वा सूत्रगतेरिति नोसम्यगाराधिता भव न्ति अविनयकरणा ज्जानपदे रितिगम्यते ततश्च तत्र मगधादौ देशे प्रदेशेवा तस्यैव समुत्थितमुत्पन्न उदकप्रधान पौद्गल पुद्गलसमूहो मेघइत्यर्थः उदकपौद्गल तथापरिणत उदकादायकावस्थां प्राप्तं अतएव विद्युदादिकरणात् वर्षितुकाम स दन्य देशं मगधादिक सहरन्ति नयन्तीति द्वितीय अभ्राणि मेघा स्तै र्वर्द्दलकं दुर्द्दिन अभ्रवर्द्दलक ॥ वाउयाएत्ति ॥ वायुकायः प्रचडवातो विधुनाति विध्वसयतीतितृतीय ॥ इच्चे इत्यादि ॥ निगमन

तेसिंचणंदेससिवा पएसंसिवा णोवहवेउदगजोणियाजीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयं ति उववज्जंति देवा नागा जक्का णोसम्ममाराहिया भवंति । तत्थसमुट्ठियं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउ कामं अन्नदेसं साहरंति अब्भवद्दलगं चणं समुट्ठियं परिणयं वासिउकामं वाउकाएविहूणेइ इच्चे एहिंति

एह देवताने सम्यक् प्रकारे आराध्या नहोय अविनय कीधो होय तिवारे देशने विषे उपनो मेघ पाणीना पुदगल परिणतपाणी देवानी अव स्था पाम्या विजली प्रमुख कारणे वरसवा मांडयाथका वीजा देशमा सहरे लेजाय ए बीजूं कारण । मेहनां बादल ऊपनां परिणत थया वरसवा माडयायका वायरो विनसाडे विलयकरे । ए त्रिण थानके कारणे अल्प वरसात मेघनो अभाव थाय । त्रण थानके घणी महावृष्टि

मिति एतद्विपर्यासा दनन्तर सूत्रं अधुनो पपन्नो देव: केत्याह देवलोकेष्विति इहच बहुवचनं एकस्मै कदा अनेकेषू त्यादासम्भवा देकार्थे इत्थं वचनव्यत्य याद्देवलोकानेकत्वोपदर्शनार्थंवा देवलोकेषु मध्ये क्वचि द्देवलोकदति इच्छे दभिलषेत् पूर्वसगतिकदर्शनाद्यर्थं मानुषाणा मयं मानुष स्त ॥ हव्वंति ॥

हिंठाणेहिं अप्पवुठिग्गएसिया । तिहिं ठाणेहिं महावुठिकाए सिया तंजहा तेसिच्चणं देसंसिवा पएसंसिवा वहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चयंति उववज्जति देवा नागा भूया जक्का सम्ममाराहिया भवति अन्नत्थसमुठिय उदगपोग्गल परिणयं वासिउकाम तंदेसं साहरंति २ अब्भवद्दलगंचणं समुठिय परिणय वासिउकामं णोवाउआए विद्धणति ३ इच्चे एहि तिहिं ठाणेहिं महा वुठिकाए सिया। तिहि ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसुइच्छेज्जामाणुसंलोगं हव्व मागच्छित्तए णोचेवणं

थाय । तेकहेछे । तेदेशनेविषें घणा पाणीना योनीना जीव पुदगल उदकपणे उपनाहोय व्यतिक्रमे चवे उपजे तिवारे घणी वर्षाथाय । तिम देवता नाग यक्ष भूत ए देवता सम्यक् प्रकारे आराध्या होय तिवारे बीजे देशे उदय पाम्यां पाणीना पुदगल परिणत थई वरसवा मांडया तिहाथी ले ते देशमा वरसावे । तिम वली मेहना बादला उदय पाम्या परिणत थया वरसवामाडया तेमते वायरो विध्वंसनकरे । ए त्रिणि थानके कारणे मोटी वृष्टिथाय ॥ हिवे देवताना अधिकार माटे कहेछे त्रिण थानके हमणातर उपनो देवता देवलोकने विषे वाछे जे मनुष्य लोकमां हुजाऊ आवुं वाछें पूर्व सगति मनुष्यने मिलवो पणि नही शक्ति सामर्थ नथाय इहा आववाने । नवो तुरत उपनो देवता देवलो

शीघ्रं ॥ सचाएत्ति ॥ शक्नोति दिवि देवलोके भवा दिव्या स्तेषु कामौ च शब्दरूपलक्षणौ भोगाश्च गन्धरसस्पर्शाः कामभोगा स्तेषु अथवा काम्यन्तइति कामा मनोज्ञा स्तेचइति भुज्यतइति भोगाः शब्दादय स्तेच कामभोगा स्तेषु मूर्च्छितइव मूर्च्छितो मूढ स्तत्स्वरूपस्या नित्यत्वादे र्विबोधाच्चमत्वात् गृध्र स्तदाकांक्षावा नत्वप्तइत्यर्थः ग्रथितइव ग्रथित स्तद्विषये स्नेहरज्जुभिः सन्दर्भितइत्यर्थः अध्युपपन्न आधिक्येना सक्तो ऽत्यततन्मना इत्यर्थः नोआद्रियते नते ष्वादरवान् भवति नोपरिजानाति एतेपिच वस्तुभूता इत्येवं नमन्यते तथा तेष्विति गम्यते नो अर्थं बध्नाति एते रिद प्रयोजनमिति न निश्चय करोति तथा तेषु नोनिदान प्रकरोति एते मे भूयासु रित्येवमिति तथा तेष्वेव नोस्थितिप्रकल्प मवस्थान विकल्पनमेतेष्वह न्तिष्ठेयमिति एतेवा मम तिष्ठन्तु स्थिरीभवं त्वित्येवं रूप स्थित्यावा मर्यादया विशिष्टप्रकल्प आचार आसेवेत्यर्थं स्त प्रकरोति कर्तुमारभते प्रशब्दस्यादिकर्मा

संचाएइ हव्वमागच्छित्तए तं० अहुणोववन्नेदेवे देवलोगेसु दिव्वेसुकामभोगेसुमुच्छिए गिद्धेगढिए अज्झोववन्ने सेणं माणुस्सए कामभोगे णोआढाइ नोपरियाणाइ णोअट्ठ बंधइ णोणियाणंपगरेइ णोठिइप्पकप्पं पकरेइ अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने तस्सणं माणुस्सए

के तेदिव्यदेवता संबधी काम भोगनें विषे मूर्छापाम्यो मूर्खाणो गृध्र अतृप्त विषयस्नेह दोरडीयें बांध्यो ते गठित तेहमां अत्यत आसक्त थको तेदेवता मनुष्यना कामभोगप्रते आदरनकरे । वस्तुकरी पणिनजाणे जे ए कामभोगळे । अर्थनबांळे एपणि प्रयोजनळे इम नजाणे । एहनूं नियाणूं पणिनकरे जे एभोग हूपाम्यो । स्थितिनोप्रकल्प विचारनकरे एभोग मांहरे घणाकाल रहियो । हमणानवो उपनो देवता देवलोकने विषे दिव्यका

र्थत्वादिति एवं दिव्यविषयप्रशक्तिरित्येकं कारणं तथा यतो सावधुमोपपन्नो देवो दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितादिविशेषणो भवति अत स्तस्य मानुष्य
क मनुष्यविषय प्रेम स्नेहो येन मनुष्यलोके आगम्यते तद्व्यवच्छिन्नं दिविभव दिव्य स्वर्गगतवस्तुविषय सक्रांत तत्र देवे प्रविष्ट भवतीति दिव्यप्रेमस
क्रांति रितिद्वितीय २ तथा ऽसौ देवो यतो दिव्यकामभोगेषु मूर्च्छितादि विशेषणो भवति तत स्तत्प्रतिबन्धात् ॥ तस्सणति ॥ तस्य देवस्य ॥ एवति ॥ ए
व प्रकार चित्त भवति यथा॥ इयण्हिति ॥ इदानीं गच्छामि ॥ मुहुत्तति ॥ मुहूर्त्तेन गच्छामि कृत्यसमाप्ता विल्यर्थं ॥ तेणकालेणति ॥ येन तत् कृत्य
समाप्यते सच कृतकृत्यत्वा दागमन शक्तो भवति तेन कालेन गतेनेतिशेष स्तस्मिन्वा काले गते णशब्दो वाक्यालङ्कारे ऽल्पायुषः स्वभावादेव मनुष्यमा
त्रादयो यद्दर्शनार्थं माजिगमिषति तेन कालधर्म्मेण मरणेन सयुक्ताभवति कस्या सौदर्शनार्थं मागच्छति असमाप्तकर्त्तव्यतानाम तृतीयमिति ॥ इचे

पेमे वोच्छिन्ने विच्छिन्ने दिव्वे संकंते भवइ २ अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए
जाव अज्झोववन्ने तस्सण मेवं भवइ इयण्हिं गच्छं मुहुत्तं गच्छं तेणं कालेण मप्पाउया माणुस्सा काल

मभोगनेविषे मूर्छाणो गृध्ध्यो गठित स्नेहे बंधाणोथको अत्यासक्त मनथयो तेदेवताने मनुष्यलोकनो प्रेमविच्छेद पाम्यो टूट्यो अनें दिव्यदेवता
सबंधीप्रेम सक्रम्यो तेणे नावे एबीजूकारण ॥ नवो उपनो देवता देवलोकनेविषे दिव्यकामभोगमा मूर्च्छाणु यावत् आसक्त मनथयो तेदेवतानी
मती एमहोय जे हु हवणाजाउं मुहुर्त्त बेघडी रहीनेजाउ एमचितवता नाटकजोता बेहजारवरस वहीजाय तेहवे थोडा आऊखानाधणी मनुष्य
इहा कालधर्मपामे मरणपामें तेनआवे त्रणथानकेकरी हमणा ऊपनो नवोदेवलोकमा तेबाछै मनुष्यलोकमा आववु पणिसमर्थ नथाय इहां आवि

त्यादि ॥ निगमनं २ देव: कामेषु कश्चि दमूर्च्छितादिविशेषणो भवति तस्यच मनइति गम्यते एवंभूतं भवति आचार्यप्रतिवोधकप्रव्राजकादि रनुयोगाचा र्योवा इति एवंप्रकारार्थो वाशब्दोविकल्पार्थ: प्रयोगस्त्वेव मनुष्यभवे यं ममा चार्यो स्तौतिवा उपाध्याय: सूत्रदाता सोस्तौतिवा एव सर्वत्र नवर प्र वर्त्तयति साधूना चार्योपदिष्टेषु वैयावृत्त्यादिष्विति प्रवर्ती उक्तंच तवसंयमजोगेसु जोजोगोतत्थतपयट्टेइ असुहंचनियत्तेइ गणतत्तिल्लोपवत्तीओत्ति ॥ १ ॥ प्रवर्त्तिव्यापारितान् साधून् सयमयोगेषु सीदत: स्थिरीकरोतीति स्थविर: उक्तंच थिरकरणापुणथेरो पवत्तिवावारिएसुअत्थेसु जोजत्थसीयइजइ सतवलोतथिरंकुणइत्ति ॥ १ ॥ गणो स्यास्तीति गणी गणाचार्य: गणधरो जिनशिष्यविशेष: आर्यिका प्रतिजागरकोवा साधुविशेष उक्तंच पियधम्मेद

धम्मुणा संजुत्ता नवइ। इच्चे एहिंतिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्व मागच्छित्तए नोचेवणं सचाएइ हव्वमागच्छित्तए अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमु च्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने तस्सणमेवं नवइ अत्थिणं ममंमाणुस्सए नवे आयरिएइवा उव ज्झाएइवा पवत्तेइवा थेरेइवा गणीइवा गणहरेइवा गणावच्छेएइवा जेसिं पन्नावेणं मएइमा एयारूवा

ाने आवीनसके ॥ त्रणथानके नवोदेवलोकमा उपनो जेदेवता तेमनुष्यलोकमां आविवानी इच्छाकरे पणि तेइहां आविवाने समर्थ नहोय । देव ोकमां नवो ऊपनो देवता दिव्यकाम नोगमा मूर्च्छितनथी अनित्यजाणी अगृद्ध गढितनथी अतिआसक्तनथी तेहनु एहवुं मनहोयछे जेमाहरे ानुष्यनवना धर्मना उपदेशक आचार्य उपाध्याय धर्मनाप्रवर्तनार प्रवर्त्तक स्थविर गणीगच्छनास्वामी गणधर नगवतनाशिष्य विशेष गणावच्छेद ते

ढअम्मे सविग्गोउज्जश्रीयतियसो संगहुवग्गहकुसलो सुत्तत्थविजगणाहिवइ ॥ १ ॥ गणस्या वच्छेदो विभागो शो स्यास्तीति योहि गणांश ग्टहीत्वा गच्छोप ष्टभायैवो पधिमार्गणादिनिमित्त विहरति स गणावच्छेदिक आहच श्रोहावणापहावण खेत्तोवहिमग्गणासुअविसाई सुत्तत्थतदुभयविऊ गणवत्थोएरि सोहोइत्ति ॥ १ ॥ इमत्ति ॥ इय प्रत्यचासन्ना एतदेव रूप यस्या नकालान्तरे रूपान्तरभाक साएतद्रूपा दिव्या स्वर्गसम्भवा प्रधानावा देवाना सुराणा मृद्धिः श्री र्विमानरत्नादिसप द्देवर्ध्दिरेवं सर्वत्र नवर युति र्दीप्तिः शरीराभरणादिसम्भवा युतिर्वा युक्ति रिष्टपरिवारादिसयोगलक्षणा नुभावो ऽचिन्त्या वेक्रियकरणादिका शक्ति र्लब्ध उपार्जितो जन्मान्तरे प्राप्त इदानी मुपनतः अभिसमन्वागतो भोग्यतां गतः तदिति तस्मा त्तान् भगवतः पूज्यान् वन्दे सु तिभि र्नमस्यामि प्रणामेन सत्करो म्यत्यादरकरणेन वस्त्रादिनावा सन्मानया म्युचितप्रतिपत्त्या कल्याणं मङ्गल न्देवत चैत्यमिति बुद्धा पर्युपासे सेवे इत्ये कं ॥ एसणंति ॥ एषो वध्यादिप्रत्यचीकृतः मानुष्यके भवे वर्त्तमान इतिशेषः मनुष्यइत्यर्थः ज्ञानीतिवा ज्ञात्वा तपस्वीतिवा ज्ञात्वा किमिति दुष्कराणां सिं

दिव्वा देवड्ढी दिव्वादेवजुई दिव्वेदेवाणुन्नावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए तंगच्छामिणं तंन्नगवं वंदामि णमं सामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणंमंगलदेवयंचेइय पज्जुवासेमि ॥ १ ॥ अउणोववन्नेदेवे देवलोगेसु दिव्वे

गच्छनुंश्रंश केतलोएक समुदायलेई विचरै जेहना प्रभावथी माहरे आ प्रत्यक्ष एहवोरूप देवतानीरिद्धि दिव्यक्रांति दिव्यदेवप्रन्नाव मैलीधो पाम्यो सम्यक्प्रन्नावे पाम्यो तेहथी हुजाउ तेउपकारी न्नगवंतने वादुं नमस्कारकरुं सत्कार आदरदेउं वस्त्रादिकदेई सन्मानदेउ कल्याणमंगलीकनुं करनार देवचैत्य अरिहंतनी प्रतिमाने जिमसेवियै तिम सेउ एमजाणी आवे एप्रथमबोल ॥ देवलोकमा नवो उपनो देवता दिव्यकामन्नोगमा अमूर्च्छित

हगुहा कायोत्सर्ग करणादीनां मध्ये दुष्कर मनुरक्तपूर्वोपभुक्तप्रार्थनापरतरुणीमन्दिरवासाप्रकंपब्रह्मचर्यानुपालनादिक करोतीति अतिदुष्कर २ कारकः स्थूलभद्रवत् तस्मात् ॥ गच्छामित्ति ॥ पूर्वमेकवचननिर्देशे पीह पूज्यविवचया बहुवचनमिति तान् दुष्कर २ कारकान् भगवतो वदे इति द्वितीयं तथा मायाइवापियाइवाभज्जाइवाभइणीइवापुत्ताइवाधुयाइवाइति ॥ यावच्छब्दा चेपः स्नुषा पुत्रभार्या तदिति तस्मा तेषा मन्तिके समीपे प्रादुर्भवामि प्रकट

सुकामभोगेसु ञ्मुच्छिए जाव ञ्णज्झोववन्ने तस्सणं एवंभवइ एसणंमाणुस्सएभवे णाणीइवा तवस्सीइवा ञ्इदुक्करदुक्करकारगे तंगच्छामिणंभगवंते वंदामि णमसामि जाव पज्जुवासामि ॥ २ ॥ ञ्हुणोववन्नेदेवे दे वलोगेसु जाव ञ्णज्झोववन्ने तस्सणमेवंभवइ ञ्त्यिणं ममंमाणुस्सएभवे मायाइवा जावसुरहाइवा तंगच्छा मिणं तेसिमंतियं पाउब्भवामि पासंतुतामे इमं एयारूवं दिव्वंदेविड्ढिं दिव्वंदेवजुइं दिव्वंदेवाणुभावं लद्धं पत्तं ञ्भि

जाव आशक्तनथी तेदेवतानां मनमां एहवूं आवे जे एहमनुष्य भवमां मोटोनाणीछे अथवा तपस्वीछे अतिदोहिली करणीनो करनारछे सिंहगुफा सर्पबिले काउसगकरैछे दुष्कर ब्रम्हचर्यपालैछे स्थूलभद्रनीपरें तेमांटे हुंजाउं तेभगवतने वांदुं नमस्कारकरुं यावत् सेवाभक्तिकरुं एह बीजुं कारण देवलोकमां नवोऊपनो देवता जे कामभोगमा आशक्तनथी तेहनूं एहवो मनथायछे आंहरे मनुष्यनां भवनेविषे माता पिता स्त्री पुत्र भगिनी पुत्री यावत् स्नुषा बहूछै तेमांटे हुंजाउं तेहनेपासे प्रगटथाउं तेहने दिखाडुं आ एहवा स्वरूपनी दिव्य मोटी देवरिद्धि दिव्यशरीरनी काति दिव्यदेवानु भाव प्रभावै मै लाधोपाम्यो विशेषथी पाम्योछै । एहवे त्रणथानकै त्रणकारणे नवोदेवलोकमां ऊपनो जेदेव तेमनमा वाछै मनुष्य लोकमां आवि

भवामि ॥ तामेत्ति ॥ तावत् मेममेति तृतीय ॥ पीहेज्जत्ति ॥ स्पृहये ऽभिलषे दार्यंचैव मर्ढमर्द्धषड्विंशतिजनपदाना मन्यतर मगधादि सुकुले इत्थाहाद देवलोकात् प्रतिनिवृत्तस्या जाति र्जन्मआयातिर्वा आगतिः सुकुलप्रत्याजाति सुकुलप्रत्यायातिर्वा तामिति ॥ परितप्पेज्जत्ति ॥ पश्चात्ताप करोति अहो विस्मये सति विद्यमाने बले शारीरे वीर्ये जीवाश्रिते पुरुषकारेभिमानविशेषे पराक्रमे ऽभिमानएवच निष्पादितस्वविषयइत्यर्थः क्षेमे उपद्रवाभावे सति सुभिक्षे सुकाले सति कल्पशरीरेण नीरोगदेहेनेति सामग्रीसद्भावेपि नोबहुश्रुत मधीत मित्येकं ॥ विसयतिसिएणति ॥ विषयलंपितत्वा दिहलोकप्रति

समत्थागयं । इच्चेएहिं तिहिंठाणेहिं अक्कणोववन्नेदेवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसंलोगं हव्वमागच्छित्तए सं चाएत्तए हव्वमागच्छित्तए ॥ ३ ॥ तउ ठाणाइंदेवे पीहेज्जा त० माणुस्सगंभवं आरिएखेत्ते जम्मं सुकुलपच्चा याइं । तिहिंठाणेहिंदेवेपरितप्पेज्जा तंजहा अहोणं मए संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरक्कमे खेमंसि सुभिक्खंसि आयरियउवज्झाएहिं विज्जमाणेहि कल्लसरीरेण णोबहुएसुएअहीए ॥ १ ॥ अहोणमए इहलोगप

वाने समर्थथाय एतले आवे ॥ त्रणथानकै देवलोकमां रह्यो देवता वाछाकरे तेकहेछे । मनुष्यना भवमा आविवानी । आर्य साढापचीस क्षेत्र मा अवतारनी । देवलोकथी चवी सुकुल उत्तम कुलमा जन्म एह त्रणबोल वाछे ॥ त्रणथानकै देवता पश्चात्तापकरे तेकहेछे अहो इति खेदे माहरे शरीर संबधी बलछते । जीवाश्रित वीर्य छतै । पुरुषात्कार अभिमान ते थी उपनो जेपराक्रम तेछतै क्षेम उपद्रव रहितपणे सुकाल छते आचा र्य उपाध्याय भणावनारनी सामग्रीछतै शरीर नीरोगछते मै मनुष्यना भवमा घणुश्रुत भण्योनथी एम पश्चात्तापकरे ॥ अहो मैं इहलोक विषयादिक

बन्धादिना दीर्घश्रामण्यपर्यायापालनमितिद्वतीयं तथा ऋद्धिराचार्यत्वादौ नरेन्द्रादिपूजा रसा मधुरादयो मनोज्ञाः सातं सुखं एतानि गुरूण्या दरविषया यस्य सोद्द मृद्धिरससातगुरुक स्तेन अथवा एनि गुरुक स्तेषा प्राप्ता वभिमानतो प्राप्तोच प्रार्थनातो शुभभावोपात्तकर्म्मभारतया अलघु स्तेन भोगेषु कामेषु आशसावा प्राप्तप्रार्थन गृद्धच प्राप्ता तृप्ति र्यस्य स भोगाशसाग्टद्ध द्दह्चा नुस्वारलोपक्रस्त्वे प्राकृततयेति पाठान्तरेण भोगामिषगृद्धेनेति नोविशुद्धमनति चार चरित्र स्पृष्टमिति तृतीयं द्दत्येते रित्यादि निगमन विमानाभरणानां निष्प्रभत्व मौत्पातिक न्तचक्षुर्विभ्रमरूपंवा ॥ कप्परुक्खगति ॥ चैत्यवृक्षं ॥ तेय लेस्सति ॥ शरीरदीप्तिं सुखासिकांवा ॥ द्दच्चेएहिद्दत्यादि ॥ निगमन भवन्ति चैव विधानि लिङ्गानि देवाना च्यवनकाले उक्तंच माल्यम्लानिःकल्पवृच्चप्रकपः श्रीह्रीनाशोवाससाचोपरागः ॥ दैन्यन्तन्द्राकामरागाङ्गभङ्गौ । द्दष्टेर्भ्रान्तिर्वेपथुश्चारतिश्चेति ॥ १ ॥ उव्वेगंति ॥ उद्वेग शोकं मयेत श्च्यवनीय भविष्यतीत्येक तथा

फ़िबद्धेणं परलोगपरंमुहेणं विसयतिसिएणं णोदीहेसामन्नपरियाए ऋणुपालिए ॥ २ ॥ ऋहोणंमए इड्डिर ससाय गुरुएणं ञोगासंसगिद्धेणं णोविसुद्धेचरित्ते फासिए ॥ ३ ॥ इच्चेएहिं तिहि ठाणेहिं देवे चइस्सामीति जाणइ विमणाञरणाइं णिप्पञाइं पासित्ता कप्परुक्खगंमिलायमाणंपासित्ता ऋप्पणोतेयलेस्सं परिहायमा

ने प्रतिबंधे अतृप्तपणे परलोकथी पराङ्मुख उपराठेथके विषयतृष्णायेकरी घणोकाललगि चारित्रनो पर्यायनपाल्यो मोटीदीक्षालीधी ॥ अहो वली मे रिद्धिने रसने साताने गारवेकरी ञोगनीआसामा गृधूपणे शुद्धचारित्र फरस्युंनही एतीनथानके पश्चात्तापकरे ॥ त्रिणकारणे देवता इमजाणे हुं इहा थी चवस्युं तेकहेछे पोताना विमान आञरण निःप्रञा कांतिरहित देखीनेजाणें । कुंचवीस कल्पवृक्षनें म्लानकमलाणा देखीने । पोतानी तेजोले

मातृरीज आर्त्तवं पितुः शुक्र स्तथाविधं किमपिविलीनाना मतिविलीन स्तयो रीजः शुक्रयो रुभयं इय न्तदुभयं तत्ततत् संसृष्टंसंश्लिष्टंतिचेवा परस्पर मेकीभूतमित्यर्थः तदुभयसस्रष्टं तदुभयसंश्लिष्टवा एवं लक्षणो य आहार स्तस्य गर्भवासकालस्य प्रथमता तत्प्रथमता तस्यां प्रथमसमयइत्यर्थः सभ्राहर्त्तव्यो ऽभ्यवहार्योभविष्यतीति द्वितीय न्तथा कलमलोजठरद्रव्यसमूहः सएव जंवालः कर्द्दमो यस्यांसा तथा तस्या मतएवा शुचिकायां उद्वेजनीयायां उद्वेगकारि ण्या भीमाया भयानिकायां गर्भएव वसति स्तस्या वस्तव्य मितितृतीयं अत्रगाथेभवतः देवाविदेवलोए दिव्वाभरणाणुरजियसरीरा जपरिवडंतितत्तो

णंजाणित्ता। इच्चेएहिंतिहिंठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा तंजहा अहोणं मए इमाउ एयारूवाउ दिव्वाउ देवड्ढीउ दिव्वाउदेवजुईउ दिव्वाउदेवाणुभावाउ पत्ताउलद्धाउ अभिसमन्नागयाउ चवियव्वंभविस्सइ ॥ १ ॥ अहोणमए माउउयं पिउसुक्कं तंतदुभयसिठं तप्पढमयाए आहारो आहारेयव्वोभविस्सइ ॥ २॥ अहोणंमए कलमलजंवालाए असुईए उव्वेयणित्ताए भीमाएगब्भवसहीए वसियव्वंभविस्सइ ॥ ३ ॥ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं

थ्याहीन पांमतो जाणीने एतीन कारणेकरीने ॥ त्रिणथानकेै देवता देवलोकमां उद्वेगशोकपामें तेकहेछे । अहोमैं आप्रत्यक्ष एहवी मोटी दिव्य देवतानी रिद्धि दिव्यदेवतानीदुगति तेज दिव्यदेवतानो प्रभावलाधोछे पाम्योछे विशेषथी पाम्योछुं तेमूंकीने चववुंथास्ये इमजाणी उद्वेगपामे ॥ अहोमें मातानुं रुधिर पितानुं शुक्रवीर्य ते बे एकठाथया तेप्रथम उपजती बेलाआहार खावोथास्ये अशुचि आहारथास्ये इमउद्वेगपामे वली अहो मांहरे कलमल तेहीजरूप जबाल तेकर्दमछे जिहा अशुचि अपवित्र उद्वेगकारी भीमबीहामणी एहवी गर्भनीवसती मांहि बसवुंथास्ये एतीन थानके

तंदुक्खदारुणंतेसिं ॥ १ ॥ तंसुरविमाणविहव चिंतियचवणंचदेवलोगाओ अइवलियचियजंनवि फुट्टइसयसक्करंहियय ॥ २ ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमनं अथ देववक्तव्यतानन्तर तदाश्रयविमानवक्तव्यमाह ॥ तिसठिएत्यादि ॥ सूत्रत्रय स्फुटमेव केवलत्रीणि सस्थितानि संस्थानानि येषातानि त्रिभिर्वाप्रकारैस्ससंस्थिता नित्रिसंस्थितानि ॥ तत्थणंति ॥ तेषु मध्ये ॥ पुक्खरकण्णियत्ति ॥ पुष्करकर्णिका पद्ममध्यभागः साहि वृत्ता समोपरिभागाच भवति सर्वतइति दिक्षु समता दिति विदिक्षु ॥ सघाडयति ॥ त्रिकोणो जलजफलविशेषः एकत एकस्यां दिशि यस्यां वृत्तविमानमित्यर्थः ॥ अक्खाडगो ॥ चतुरस्त्र. प्रतीतएव वेदिका सुडप्राकारलक्षणा एतानिचैव क्रमाण्येवावलिकाप्रविष्टानि भवति पुष्पावकीर्णानि त्वन्यथापीति भवन्तिचात्रगाथाः सव्वेसुपत्थडेसु मज्झेवट्टअणतरतसं

तिसंठिया विमाणा प० तं० वट्टा तंसा चउरंसा । तत्थणंजेते वट्टविमाणा तेणंपुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया सव्वउसमंतापागारपरिक्खित्ता एगदुवारा पन्नत्ता । तत्थणंजेते तंस विमाणा ते सिंघाडगसंठाणसंठिया दुहउपागारपरिक्खित्ता एगउवेइयापरिक्खित्ता तिदुवारा प० । तत्थणं जेते चउरंसविमाणा तेणंअक्खाड

देवता उद्वेगपामें ॥ तीनसंस्थानना आकारनां विमानकह्या तेकहेंछे । वाटला कमलनी कर्णिकाने आकारे त्रिखोणा संघाडाने आकारे चोखूणा । तेहमां जे वाटला विमानछे तेपुष्करकर्णिका तेकमलनो मध्यभाग तेसंस्थितरहियाछे तेविमान सगला चोफेर प्राकारकोट सहितछे एकद्वार वारणाना कहि या । तिहां जे त्रिखोणिया विमानछे तेविमान संघाडानें सस्थाने सस्थितछे बेपासे प्राकार कोटसहितछे एकपासें वेदिकाये सहित छे तीनद्वार तेहने कहिया । तिहा जेचउरंस विमानछे तेसर्वें अखाडो चउरंसहोइ तेहने संस्थाने संस्थितछे सबदिशें सघले वेदिकाये परिक्षिप्त च्यार वारणा

एयंतरचउरंसं पुणोविवट्टंपुणोतंसं ॥ १ ॥ वट्टंवट्टस्सुवरिं तंसंतंसस्सउप्परेहोइ चउरंसेचउरंसं उड्ढंतुविमाणसेढीओ ॥ २ ॥ वट्टंवलयगंपिव तंसंसिंघाडगंपिव विमाणं चउरसविमाणपिय अक्खाडगसंठियंभणियं ॥ ३ ॥ सव्वेवट्टविमाणा एगदुवाराहवंतिविन्नेया तिन्नियतसविमाणा चत्तारियहोतिचउरसे ॥ ४ ॥ पागारपरिक्खित्ता वट्टविमाणाहवतिसव्वेवि चउरसविमाणाणं चउद्दिसिंवेइयाहोइ ॥ ५ ॥ जत्तोवट्टविमाण तत्तोतसस्सवेइयाहोइ पागारोवोधव्वो अवसेसे हिंतुपासेहिं ॥ ६ ॥ आवलियासुविमाणा वट्टातसातहेवचउरसा पुप्फावगणियापुण अणेगविहरूवसंठाणत्ति ॥ ७ ॥ प्रतिष्ठान सूत्रस्येयं विभजना घणउ दहिपइठाणा सुरभवणाहोंतिदोसुकप्पेसु तिसुवाउपइठाणा तदुभयसुपइठियातीसु तेणपरंउवरिमगा आगासंतरपइठियासव्वेत्ति ॥ १ ॥ अवस्थितानि शाश्वतानिवैक्रियाणि भोगाद्यर्थं निष्पादितानि यतो भिहितं भगवत्यां जाहेण भंते सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइ भोगभोगाइं भुंजिउकामे भवइ से कह मियाणि पकरेइ गोयमा ताहेचणं से सक्के देविंदे देवराया एगं महं नेमिपडिरूवगं विउव्वइ [नेमिरिति चक्रधारा तद्वद्वृत्तं विमानमित्यर्थः] एग जोयण

गसंठाणसंठिया सव्वुतसमंतावेइयापरिक्खित्ता चउदुवारापन्नत्ता । तिपइठियाविमाणा पन्नत्ता तंजहा घणो दहिपइठिया घणवायपइठिया उवासंतरपइठिया । तिविहाविमाणा पन्नत्ता तंजहा अवठिया वेउव्विया

तेहने कहिया ॥ त्रिणने आधारें विमान प्रतिष्ठित रहियाछे तेकहेछे । पहिला बे देवलोकना बिमान घनोदधिनें आधारेंछे तीजा चोथा देवलो कना विमान घनवातने आधारेछे पाचमां छठा सातमां आठमा देवलोकना विमान घनोदधि घनवात ए बेने आधारे छे । नोमाथी ऊपरना वि मान आकाशने आधारछे॥ त्रिण प्रकारे विमान कह्यिा तेकहेछे। अवस्थित शाश्वता। वैक्रिय ते देवागनासुं भोगकरवाने अर्थे नवीन उपजावे। वली

सयसहस्सं आयामविक्खंभेण मित्यादि यावत् पासायवडिंसए सयणिज्जे तत्थणं से सक्के देविंदे देवराया अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं दोहियअणि एहिणट्टाणीएणय गंधव्वाणीएणय सद्धिं महयाणट्टजावदिव्वाइंभोगभोगाइं भुंजमाणेविहरइत्ति परियाणतिर्यग्लोकावतरणादि तत्प्रयोजन येषान्तानि परियाणिकानि पालकपुष्पकादीनि वक्ष्यमाणानीति पूर्वतरसूत्रेषु देवा उक्ता अधुनावैक्रियादिसाधर्म्यान्नारका न्निरूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ स्पष्ट नार का दर्शनतो निरूपिताः शेषाअपि जीवा एवंविधा एवेत्यतिदेशतः शेषानाह ॥ एवमित्यादि ॥ गतार्थं नवरं ॥ विगलिंदियवज्जंति ॥ नारकवत् दंडक स्त्रि धा वाच्यः विकलेन्द्रियान् वर्जयित्वा यतः पृथिव्यादीनां मिथ्यात्वमेव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणान्तु न मिश्रमिति त्रिविधदर्शना श्च दुर्गतिसुगतियोगात् दुर्गताः सुगता श्च भवन्तीति दुर्गत्यादिदर्शनाय सूत्रचतुष्टयमाह ॥ तओइत्यादि ॥ व्यक्तं परं दुष्टागतिर्दुर्गतिः मनुष्याणांदुर्गतिं विवक्षयैव तत् सुगते रप्यभिधास्यमा

परिजाणिया। तिविहा णेरइया पन्नत्ता तंजहा सम्मादिठी मिच्छादिठी सम्मामिच्छादिठी एवंविगलिंदिय वज्जं जाववेमाणियाणं। तउ दुग्गईउ पन्नत्ताउ तंजहा णेरइयदुग्गई तिरक्खजोणियदुग्गई मणुस्सदुग्गई।

प्रयोजन ते जावाआवाने अर्थे पालक विमान प्रमुखबणावे ॥ त्रिणप्रकारें नारकी कहिया तेकहेछे । वैक्रियादिके सरीखाई माटे नारकी कहिया एक समकितदृष्टी बीजो मिथ्यादृष्टी त्रीजा सम्यग् मिथ्यादृष्टी काइक समकित काइक मिथ्यात्व इम विकलेन्द्री तांइ वर्जीने यावत् वैमानिकतांईं चोवीस दंडके ए तीन बोलजाणवा ॥ त्रिण दुर्गति मांठीगति कही तेकहेछे । नरकनी दुर्गति एक तिर्यंचयोनिनी दुर्गति बे मनुष्यनी दुर्गति चंडाल नी त्रण ॥ त्रिण सुगतिकही तेकहेछे । मुक्ति तेसुगति एक देवतानीगति तेसुगति बे मनुष्यनी सुगति उत्तम कुलादिक त्रण॥ त्रिण दुर्गतिगया कहिया

नत्वात् दुर्गता दुःस्थाः सुस्था' सुगताः सिद्धादिसुगताश्च तपस्विनः संतो भवन्तीति तत्कर्त्तव्यपरिहर्त्तव्यविशेषमाह ॥चउत्थेत्यादि॥ सूत्राणि चतुर्दश व्यक्ता नि केवल एक पूर्वदिने द्वे उपवासदिने चतुर्थपारणकदिने भक्तं भोजन परिहरतो यत्र तपसि त च्चतुर्थभक्त तद्यस्यास्ति स चतुर्थभक्तिक स्तस्य एवमन्य' त्रापि शब्दव्युत्पत्तिमात्र मेतत् प्रवृत्तिस्तु चतुर्थभक्तादि शब्दाना मेकाद्युपवासादिष्विति भिक्षणशील धर्म स्तत्साधुकारितावायस्य' सभिक्षु र्भिनत्तिवा क्षु धमिति भिक्षु स्तस्य पानकानि पानाहारा उत्स्वेदेन निर्वृत्त मुत्स्वेदिमं येन व्रीह्यादि पिष्ट सुराद्यर्थं उत्स्वेद्यते तथा संसेकेन निर्वृत्तमिति संसेकिम अर णिकादिपत्रशाक मुत्काल्य येन शीतलजलेन संसिच्यते तदिति तंदुलधावन प्रतीतमेव तिलोदकादि तत्तत्प्रक्षालनजल नवरं तुषोदक व्रीह्युदक २ आया

तउ सुग्गइउ पन्नत्ताउ तंजहा सिद्धिसोग्गई देवसोग्गई मणुस्ससोग्गई । तउदुग्गया पन्नत्ता तंजहा णेरइ यदुग्गया तिरिक्खजोणियदुग्गया मणुस्सदुग्गया । तउसुग्गया पन्नत्ता तंजहा सिद्धसुग्गया देवसुग्गया मणु स्ससुग्गया । चउत्थभत्तियस्सणं भिक्खुस्स कप्पंति तउपाणगाइ पडिगाहित्तए तजहा उस्सेइमे ससेइमे

तेकहेछे । नरकमां गयो ते दुर्गतिगयो एक तिर्यंचनी योनिमांगयो दुर्गतिगयो बे मनुष्य चांडाल प्रमुखमांगयो तेदुर्गतिगयो त्रण ॥ अथवा दुखीया कहिये॥ त्रिण सुखीया कहिया तेकहेछे । सिद्ध मुक्तसदैव सुखीया एक देवता सुखीया बे पुण्यवंत मनुष्य सुखीया त्रण ॥ चतुर्थ भक्त एक उत्तरपा रणो एक पारणो भक्तमुंके बेभक्त उपवासना एव चतुर्थ भक्तना करणहार साधुने त्रिण जातिना पाणी लेवा ते कहेछे। उत्स्वेदिम ते ब्रीही प्रमुखनो पिष्ट लोट मदिरार्थे । पत्र शाक वाफीने शीतलजलथी सींचेछे तेसस्वेदिम । चोखानुं धोवण ॥ षष्ठभक्तना करणहारने सूझे कल्पे त्रिण पाणी

मक मवश्रावणं सौवीरक काञ्जिकं शुद्धं विकट मुषणोदकं २ उपहृत मुपहितं भोजनस्थाने ढौकितं भक्तमितिभाव: फलिकं प्रहेणकादि १ तच्च तदुपहृतं चेतिफलिकोपहृत अवगृहीताभिधानपचमपिंडेषणाविषयभूतमिति यदाह व्यवहारभाष्ये फलियंपहेणगाइ वजणभक्खेहिवाविरहियतु भोत्तुमणस्सावहिय पंचमपिंडेसणाएसत्ति ॥ १ ॥ तथा शुद्ध मलेपकृतं शुद्धोदनञ्च तदुपहृतचेति शुद्धोपहृत एतच्चा ल्पलेपाभिधानचतुर्थैषणाविषयभूतमिति तथा संसृष्टनाम भोक्तु कामेन गृहीतं कूरादौ चिप्तहस्त: चिप्तो न तावन्मुखे चिपति तच्च लेपालेपकरणस्वभावमिति तदेवभूत मुपहृत संसृष्टोपहृत मिद चतुर्थैषणालेन भजनीय लेपालेपकृतादिर्ल्पला दस्येति अत्रगाथा शुद्धचअलेवकडं अहवणसुद्धोदणोभवेसुद्ध ससठ्ठआउत्त [भोक्तुमारब्धमित्यर्थ:] लेवाडमलेवडंवाविति ॥ १ ॥ इह च त्रय एकद्वित्रिसयोगै: सप्ताभिग्रहवत:साधवो भवन्तीति अवगृहीतनामयेनकेनचि त्प्रकारेणदायकेना त्तं भक्तादि यदिति भक्तं चकारा: समुच्चयार्था:

चाउलधोवणे । छठ्ठभत्तियस्सणं भिक्खुस्स कप्पंति तउ पाणगाइं पडिगाहित्तए तंजहा तिलोदए तुसोदए जवोदए । अठमभत्तियस्सणं भिक्खुस्स कप्पंति तउपाणगाइं पडिगाहित्तए तं० आयामए सोवीरए सुद्ध वियडे । तिविहे उवहडे पसत्ते तजहा फलिहउवहडे सुद्धोवहडे ससठोवहडे । तिविहे उगहिए पसत्ते

लेवा तेकहेंछे । तिलनुं धोवण । व्रीहीनुं पाणी । जवनुं धोवण ॥ अष्टमभक्तना करणहार साधुने सूझे त्रण पाणीलेवा तेकहेंछे । ओसामण कांजीनुंपाणी शुद्ध विकट गरमपाणी ॥ त्रणप्रकारे उपहृतकहिये तेकहेंछे । पीसवाने काढयो तेहवे साधुआव्यो अने आपे जे भोजनने अर्थे आणया आहारने । शुद्धओदन हाथनखरडाये तेहवुं आप्युं तेअभिगृहवंतसाधुने कल्पे । जिमनारे गृहियोमाहि हाथघाल्यो तेसंसृष्ट ॥ त्रणप्रकारे अवग्

मवगृह्णाति आदत्ते हस्तेन दायक स्तदवगृहीत मेतच षष्ठीपिंडेषणीति एवंच वृद्धव्याख्यापरिवेषकः पिटकायाः कूरं गृहीत्वा यस्मै दातुकामस्तद्भाजने घेत्तु मुपस्थित स्तेनच भणित मादेहि अत्रावसरे प्राप्तेन साधुना धर्मलाभित ततः परिवेषको भणति प्रसारय साधोपात्र ततः साधुना प्रसारिते पात्रे चिप्त मोदन इहच सयतप्रयोजने गृहस्थेन हस्तएव परिवर्त्तितो नान्यत् गमनादि क्षतमिति जघन्य माहृत जातमिति इहच व्यवहारभाष्यश्लोक. भुंजमाणस्सउक्खित पडिसिद्धचतेणत्रो जहन्नोवहडतंतु हत्थस्सपरियत्तणीत्ति ॥ १ ॥ तथा यच परिवेषकः स्थाना दविचलन् संहरति भक्तभाजना द्भोजनभाजनेषु चिपति तच्चा वगृहीतमिति प्रक्रमः श्लोकोत्र अहसाहारमाणत् वट्टंतो [परिवेषयन्नित्यर्थः] जोउदायत्रो दलेज्जाचलित्रोतत्तो छट्ठाएसाविएसणत्ति ॥ १ ॥ तथा यच भक्त मास्यके पिठरादिमुखे चिपति तच्चा वगृहीतमिति एवचात्र वृद्धव्याख्या कूर मवल्हादननिमित्त कलिजादि भाजने विप्राली त्तानरूपे चिप्त ततो भक्तिकेभ्यो दत्तं ततो भुक्तशेष यत् भूयः पिठरके प्रकाशमुखे चिपति दद्यात् परिवेषयतीतिवा प्रकाशमुखे भाजने तते ह्वतीय मवगृहीतं श्लोकोत्र भुत्तसेसतुजभूत्रो वुभंतीपिठरोदये संवट्टतीचअन्नस्स आसगसिपएसएत्ति ॥ १ ॥ नतु आस्येमुखे यत् प्रचिपतीति मुख्येर्थे सति किं पिठरादिमुखे इतिव्याख्या यतइत्युच्यते अस्य प्रचेपव्याख्यान मयुक्तमिति जुगुप्साभावादिति आहच पक्खेवएदुगुच्छा आएसोकुडमुहाईसुत्ति

तंजहा जंचउगिरहइ जंचसाहरइ जंचआसगंसि पक्खिवइ ।

हीत कोईककारणे दायके आण्यों घणांजनमाथी जन्त । जेदेनारहाथै करी आपे । जेकूरादिक प्रीसवानीमां आएयुं आपे । जे एकपिठ मुख मा घाल्यो एहवे साधुआवी धर्मलाभदीधो तेआपे बीजीवार हाथघाल्योनथी ॥ आहारना अधिकारमाटे अणोदरीनुं कहेछे । अणप्रकारे अ

अवम मून मुदरं यस्य सोऽवमोदरः अवम चोदर मवमोदरं तद्भावो ऽवमोदरता प्राकृतत्वात् ॥ ओमोदरियत्ति ॥ अवमोदरस्यवा करण मवमोदरिका व्युत्प त्तिरेवैय मस्य प्रकृति स्तूनतामात्रे तत्र प्रथमा जिनकल्पिकादीना मेव न पुनरन्येषा शास्त्रोयोपध्यभावेहि समग्रसंयमाभावादिति अतिरिक्ता ग्रहणतो वा नोदरते त्युक्तच जंवट्टइउवयारे उवगरणतसिहोइउवगरणं अइरेगअहिगरण अजओयजयपरिहरंतोअ ॥ १ ॥ यतश्च यत्कल्पंजानो भवतीत्यर्थः भक्त पानावमोदरता पुन रात्मोयात्मोयाहारमानपरित्यागतो वेदितव्या इत्युक्तच बत्तोसंकिरकवला आहारोकुच्छिपूरओभणिओ पुरिसस्समहिलियाए अट्ठावीसभवेकवला ॥ १ ॥ कवलाणयपरिमाण कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ततु जोवाअविगियवयणो वयणमिकुच्छेज्जवोसत्थोत्ति ॥ २ ॥ २ द्वयचाष्ट १ द्वादश २ षोडश ३ चतुर्विंशत्येकत्रिंशदतैः कवलैः क्रमेणा ल्पाहारादिसंज्ञिता पञ्चविधा भवति उक्तच अप्पाहार १ अवड्ढा २ दुभाग ३ पत्ता ४ तहेवकिंचूणा ५ अट्ठदुवा लस ३ सोलस चउवोस ४ तहेक्कतीसायत्ति ५ ॥ १ ॥ एवमनेना नुसारेण पानेपि वाच्या भगवत्या मप्युक्त बत्तोसकुक्कुडिअडगपमाणमित्ते कवले आहारमा हारमाणे पमाणपत्तेत्तिवत्तव्वसिया एत्तोएगेणाविकवलेण ऊणग आहारमाणे समणेनिग्गथे नोपागामरसभोइत्तिपत्तव्वंसियंति भावेनोदरता पुनः क्रोधा

तिविहाउ मोयरियाउ पन्नत्ताउ तंजहा उवकरणोमोयरिया भत्तपाणोमोयरिया भावोमोयरिया । उवग रणोमोयरिया तिविहा पन्नत्ता तंजहा एगेवत्थे एगेपाये चियत्तोवहिसाइज्जणया । तउठाणा णिग्गंथाणवा

णोदरी तेकहेछे । उपकरणनी अणोदरी जिनकल्पीनेथाय बीजानेनथी । भात पाणीनी अणोदरी बत्तीसकवलमाथी ओछो आहार लेवो । भावथी अणोदरी क्रोधादिकनो त्याग ॥ उपकरणनी अणोदरी त्रणप्रकारेकही तेकहेछे । एक वस्त्रराखे । एक पात्रराखे । वियत ते संयमी तेहनी उप-

दित्याग: उक्तंच कोहाईणमणुदिणं चाओजिणवयणभावणाओय भावेणोनोदरिया पन्नत्तावीयरागेहिंति ॥ ९ ॥ उपकरणावमोदरिकाया:भेदानाह ॥ उ
वकरणेत्यादि ॥ एक वस्त्रं जिनकल्पिकादे रेवेवं पात्रमपि एग पायजिणकप्पियाणमितिवचनादिति तथा चियत्तेणसयमोपकारकोयमिति प्रीत्या मलिना
द्यप्रीतिकरणेन वाचि य त्तस्यवा संयमिनां सम्मतस्य उपधे रजोहरणादिकस्य ॥ साइज्जणयत्ति ॥ सेवा चियत्तोवहिसाइज्जणयत्तिचियत्तेणेत्ति ॥ प्रागुक्तमेत
द्विपर्ययभेदान् सकलानाह ॥ तओइत्यादि ॥ स्पष्टंकिन्तु अहिताय अपथ्याय असुखाय दु:खाय अक्षमाय अयुक्तत्वाय अनिश्रेयसाया मोक्षाया नानुगामि
कत्वाय न शुभानुबंधायेति कूअणता आर्त्तस्वरकरण कक्करणता शय्योपध्यादिदोषोद्भावनगर्भप्रलपनं अपध्यानता आर्त्तरौद्रध्यायित्वमिति ८ उक्तवि

णिग्गंथीणवा अहियाए असुहाए अखमाए अणिस्सेयसाए अणाणुगामियत्ताए भवइ तंजहा कूअणया
कक्करणया अवज्झाणया । तओठाणा णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए अ
णुगामियत्ताए भवइ तंजहा अकूयणया अकक्करणया अणवज्झाणया । तओसल्ला पन्नत्ता तंजहा मायासल्ले

धि रजोहरण मुहपत्तीनुं राखवुं ॥ एह पूर्वे कहिया तेहीज विपरीत कहेछे । त्रण थानक साधुने तथा साध्वीने अहित मांठा असुखने काजे
होय अक्षमाने काजेहोय अमोक्षने काजेहोय ससारनां पारपामिवाने नथाय तेकहेछे । आर्तस्वरे रोवू । करकरवूं शय्यामांठी उपधिमांठी एम
दोष काढीने । खोटुं ध्यान ध्यावबुं ॥ त्रण थानक साधु तथा साध्वीने हितना कारण सुखना कारण क्षमाना कारण मोक्षनां कारण संसार
ना पारने आपणहार थाय तेकहेछे । दुख आव्यां आर्त्तस्वरे रोवैनथी । शय्या उपधिमा दोषकाढी गरेनथी । आर्त्तरौद्रध्यान करैनथी ॥

पर्यंयसूत्र व्यक्तं ८ निर्ग्रंथाना मेव परिहर्त्तव्यं त्रयमाह ॥ तओइत्यादि ॥ शल्यते बाध्यते अनेनेति शल्यं द्रव्यत स्तोमरादि भावतस्तु इदं त्रिविध माया निष्कृतिः सैवशल्यं मायाशल्प एव सर्वत्र नवरं नितरां दायते लूयते मोचफल मनियव्रह्मचर्यादिसाध्यं कुशलकर्म्मकल्पतरुवन मनेन देवर्द्धयादिप्रार्थ नपरिणाम निशिताशिनेति निदान मिथ्याविपरीत दर्शन मिथ्यादर्शनमिति ॥ १० ॥ निर्ग्रन्थानामेव लब्धिविशेषस्य कारणत्रयमाह ॥ तिहीत्यादि ॥ संक्षिप्तालघूकृता विपुलापि विस्तीर्णापिसती अन्यथादिर्त्यबिम्बवत् दुर्दर्शः स्यादिति तेजोलेश्या तपोविभूतिज तेजस्वित्व तैजसशरीरपरिणतिरूपं महाज्वा लाकल्प येन ससंक्षिप्तविपुलतेजोलेश्यः आतापनानां शीतादिभिः शरीरस्य सतापनानां भाव आतापनता शीतातपादेः सहनमित्यर्थः तया क्षांत्या क्रोध निग्रहेण क्षमा मर्षणं नत्वशक्ततयेति क्षांति क्षमा तया आपानकेन पारणककाला दन्यत्र तपः कर्म्मणा षष्टादिनेति अभिधीयतेच भगवत्यां जेणगोसाली एगाएसनहाएकुमासपिंडियाएएगेणयवियडामएण छठ्ठछठ्ठेण अणिखित्तेणतवोकम्मेणउड्डुंवाहाओपगिज्झियपगिज्झियसूराभिमुहेआयावणभूमीएआयावेमाणेविहरइ सेणंअंतोछण्हमासाणंसखित्तविपुलतेयलेस्सेभवइत्ति ११ ॥ तेमासियमित्यादि ॥ भिक्षुप्रतिमाः साधो रभिग्रहविशेषा स्ताश्च द्वादश तत्रै कमा

णियाणसल्ले मिच्छादंसणसल्ले । तिहिंठाणेहिं समणेणिग्गंथे संखित्तविउलतेउलेस्से भवइ तंजहा आयाव

वली साधुने त्रण छांडवा तेकहेछे । त्रण शल्य कहिया तेकहेछे । माया शल्य कपट तेहीजशल्य । देवरिद्धि पामिवाने नियाणुं करिवुं । मिथ्यात्वशल्य एह त्रण छांडिवा ॥ त्रण थानके साधु श्रमण संक्षेपे लघुकरे मोटी पणि तेजोलेश्या थाय तेकहेछे । आतापना शीत तापादि सहवाने तेजोलेश्यायें आतापना नथाय । क्षमा करवाने शक्तिछतें तेक्षमा । पारणाना कालथी अन्यकाल वेलो तेलो इत्यादि तपमां तेजोलेश्या

सिक्खादयो मासोत्तराः सप्ततिस्रः सप्तरात्रिंदिवप्रमाणाः प्रत्येकं एकाहोरात्रिकी एका एकरात्रिकी एवम् मासाईसत्तंता ७ पढमा १ बितईय २ सत्तराइंदिया १० अहराइ ११ एगराई १२ भिक्खुपडिमाणबारसगंति ॥ १ ॥ अथ गत भावार्थः पडिवज्जइएयाओ संघयणधिईजुओमहासत्तो पडिमा ओभावियप्पासम्मंगुरुणाअणुन्नाओ ॥ १ ॥ गच्छेच्चियनिम्माओ जापुव्वादसभवेअसंपुन्ना नवमस्सतइयवत्थू होइजहन्नोसुयाभिगमो ॥ २ ॥ वोसट्ठचत्तदेहो उवसग्गसहोजहेवजिणकप्पो एसणअभिग्गहिया भत्तंचअलेवडंतस्स ॥ ३ ॥ गच्छाविणिक्खमित्ता पडिवज्जइमासियमहापडिमं दत्तेगभोयणस्स पाणस्सविएगजामासं ॥ ४ ॥ पच्छागच्छमुवेई एवडुमासोतिमासिजासत्त नवरंदत्तिविवड्ढी जासत्तउसत्तमासीए ॥ ५ ॥ तत्तोयअट्ठमीखलु हवइइहपढमसत्तराइंदी तीएचउत्थचउत्थेणं अपाणएणंअहविसेसो ॥ ६ ॥ तथाचागमः पढमसत्तराइंदियस्स भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पइ से चउत्थेणं भत्तेणं अपाणएणं बहियागामस्स चेत्यादि उत्ताणगपासल्ली नेसज्जीवावियठाणठाइत्ता सहउवसग्गेघोरे दिव्वाइसहइअविकंपो ॥ १ ॥ दोच्चावितारिसच्चिय बहियागामाइयाणनवरंतु उक्कुडलगंडसाई डंडायतिउव्वठाइत्ता ॥ २ ॥ तच्चाएवियएवं नवरंठाणंतुतस्सगोदोही वीरासणमहवावी ठाएज्जवअंबखुज्जओ ॥ ३ ॥ एमेवअहोराइं छट्ठंभत्तंअपाणगंनवरं गामनगराणबहिया वग्घारियपाणिएठाणं ॥ ४ ॥ एमेवएगराइं अट्ठमभत्तेणठाणबाहिरओ ईसिंपब्भारगए अणिमिसनयणेगदिट्ठीए ॥ ५ ॥ साहट्टुदोविपाए वग्घारियपाणिठायइठाणं वग्घारि लंबियभुओ सेसदसासुजहाभणियंति ॥ ६ ॥ तत्र त्रिमासिकी इ

णयाए खंतिखमाए अपाणगेणंतवोकम्मेणं । तेमासियंभिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति

नकरे ॥ त्रण मासनी भिक्षुप्रतिमा अभिग्रहप्रति पडिवज्यो जे अणगार तेहने कल्पे सूझे त्रणदाती भोजननी लेवाने त्रणदात पांणीनी कल्पे सूझे ॥

तीया ता प्रतिपन्नस्या श्रितस्य दत्तिः सकृत् प्रक्षेपलक्षणेति १२ एकरात्रिकी द्वादशी तां सम्य गनुपालयत' उन्माद श्चित्तविभ्रमो रोगः कुष्टादि रातंकः शूलविशूचिकादिः सद्योघाती सच सचेति रोगातक ॥ पाउणेज्जत्ति॥ प्राप्नुया द्धर्मा च्छ्रुतचारित्रलक्षणात् भ्रस्ये त्सम्यक्त्वस्यापि हान्येति उन्मादरोग धर्मभ्र

तउदत्तीउ न्नोयणस्स पडिगाहित्तए तउपाणगस्स एकराइय न्निक्खुपडिमं सम्ममणुपाले माणस्स ऋणगार रस इमे तउठाणा ऋहियाए ऋसुन्नाए ऋखमाए ऋणिस्सेयसाए ऋणाणुगामियत्ताए न्नवंति तंजहा उम्मा यवालन्नेज्जा दीहकालियंवा रोयातकंपाउणेज्जा केवलिपन्नत्ताउधम्माउन्नसेज्जा । एगराइयस्संन्निक्खुपडिमं सम्मंऋणुपालेमाणस्स ऋणगारस्स तउ ठाणाहियाए सुन्नाए स्कमाए णिस्सेयसाए ऋणुगामियत्ताए न्नवंति तंजहा उहिणाणेवासेसमुपज्जेज्जा मणपज्जवनाणेवासेसमुपज्जेज्जा केवलनाणेवासेसमुपज्जेज्जा जंबुद्दीवेदीवे

एकरात्रिनी भिक्षुप्रतिमाने सम्यक् पालता साधुने एह त्रणथानक अहितनेअर्थ थाय असुखने अर्थ अक्षमाने अर्थ अनिश्रेयसने अमोक्षनें संसारना पारनें नापे ते कहेछे । उन्मादनें पामैं चित्तविभ्रमथाय । घणाकालनां कुष्टादि रोगातंकथाय । केवलि भाषित धर्मथी पणि भ्रष्टथाय पडे । एह पहली पडिमा पालतें देवादि उपसर्ग उपजै तिवारे त्रणबोलथाय घणूधीरहोय तेहीज पालीसके ॥ वली तिम एकरात्रिनी प्रतिमा भलीरीते पाले तेसाधुने त्रणथानक हितार्थथाय सुखार्थथाय क्षमार्थथाय मोक्षार्थथाय संसारनु पारआपे तेकहेछे । अवधिनाण उपजै । मनपर्यवनाण उप जै सहुनां मननां भावजाणै । पाचमुं केवलनाण उपजै जो धीरथईने पालै तो ॥ ए साधुनी क्रियाकही तेकर्म भूमिमांजहोय । तेवतीकर्म भूमिनु

था: प्रतिमाया: सम्यगननुपालनजन्या: अहिताद्यर्थो दुःखार्थो भवन्तीति हृदय १३ विपर्ययसूत्रं एतदनुसारतो वोद्धव्यमिति १४ उक्तरूपाणिच साध्वनुष्ठा नानि कर्मभूमिष्वेव भवन्तीति तन्निरूपणायाह ॥ जंबूद्दीवेइत्यादि ॥ सूत्राणि साक्षादतिदेशाभ्यां पञ्च सुगमानिचेति उक्ताः कर्मभूमयो ऽथ तद्गतजनधर्मा नि रूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्राण्ये कादश कण्ठ्यानि किन्तु त्रिविधं दर्शनं शुद्धाशुद्धमिश्रपुञ्जत्रयरूपं मिथ्यात्वमोहनीयं तथाविधदर्शनहेतुत्वादिति ॥ १ ॥ रुचिस्तु तदुदयसम्पाद्य तत्त्वाना श्रद्धान २ प्रयोगः सम्यक्त्वादिपूर्वो मनःप्रभृतिव्यापारइति अथवा सम्यगादिप्रयोग उचितानुचितोभयात्मक औषधादिव्या

तओकम्मभूमीओ पन्नत्ताओ तंजहा भरहे एरवए महाविदेहे । एवंधायइसंडेदीवे पुरच्छिमद्धे जावपुक्खरवर दीवड्ढपच्छिमद्धे । तिविहेदंसणे पन्नत्ते सम्मदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छदंसणे । तिविहारूई पण्णत्ता तंजहा सम्मरुई मिच्छरुई सम्मामिच्छरुई । तिविहे पओगे पन्नत्ते तंजहा सम्मपओगे मिच्छपओगे सम्मामिच्छपओगे

स्वरूप कहेछे । जंबूद्वीपनामें द्वीपमां त्रिणकर्मभूमिकही तेकहेछे । भरतक्षेत्र । ऐरवतक्षेत्र । महाविदेहक्षेत्र । इमधातकीखंड द्वीपे पूर्वार्द्धने विषे । यावत् पुष्करार्द्ध द्वीपे पश्चिमार्द्धे एहीज तीनकर्म भूमिनां क्षेत्रछे । एवं पनरेकर्मभूमिक्षेत्र थया ॥ त्रिणप्रकारे दर्शनकहियो तेकहेछे । सम्यग्दर्शन जे शुद्ध तत्वनुं जाणवुं । मिथ्यादर्शन जेखोटा तत्वनुं सरदहवुं । सम्यग्मिथ्यादर्शन जेशुद्धाशुद्ध मिश्र ॥ त्रिण रुचिमननो स्वभाव विशेष तेकहेछे । सम्यक्रुची । मिथ्यारुची । सम्यग्मिथ्यारुची ॥ त्रिणप्रकारे प्रयोग कहिया ते कहेछे । सम्यक्त्वादि सहित मननो व्यापार तेप्रयोग कहिये । समीचीन प्रयोग । मिथ्या प्रयोग । मिश्रप्रयोग जे काईक खोटु काईक साचु ॥ त्रणप्रकारे व्यापार कहियो तेकहेछे । कार्य

पारवत् व्यवसायो वस्तुनिर्णयइति पुरुषार्थसिद्धार्थमनुष्ठानंवा सच व्यवसायिनां धार्म्मिकाधार्म्मिकधार्म्मिकाधार्म्मिकाणां ३ संयतासंयतदेश संयतलक्षणानां सम्बन्धित्वा दभेदेनो च्यमान स्त्रिधा भवतीति सयमासंयमदेशसयमलक्षणविषयभेदा द्वा व्यवसायो निश्चय: सच प्रत्यक्षा वधिमन:पर्यायकेवलाख्य. प्रत्यया दिन्द्रियानिन्द्रियलक्षणा न्निमित्ता ज्जात: प्रात्ययिक: साध्य मसाध्यमग्न्यादिक मनुगच्छति साध्याभावे न भवति यो धूमादिहेतु: सोनुगामी ततो जात मानुगामिक मनुमानं तद्रूपो व्यवसाय आनुगामिकएवेति अथवाप्रत्यक्ष' स्वयदर्शनलक्षण:प्रात्ययिकआप्तवचनप्रभवस्तृतीयस्तथैवेति इहलोके भव ऐहलौकि को य इहभवे वर्त्तमानस्य निश्चयो नुष्ठानवा स ऐहलौकिको व्यवसायइतिभाव: यस्तुपरलोकेभविष्यति स पारलौकिक: यस्त्विहपरत्रच स ऐहलौकिकपार

तिविहेववसाये पन्नत्ते तंजहा धम्मिएववसाये अहम्मिएववसाये धम्मियाधम्मिएंववसाये। अहवा तिविहे ववसाये पन्नत्ते तंजहा पच्चक्खे पच्चइए अणुगामिए । अहवा तिविहे ववसाये पन्नत्ते तंजहा इहलोइए परलोइए इहलोयपरलोइए । इहलोइए ववसाये तिविहे पन्नत्ते तजहा लोइए वेइए सामइए । लोइएव

सिद्धिने अर्थे क्रियाकरवी तेव्यापार उद्यमरूप । धर्म व्यापार साधुनो आचार । अधर्मनुं व्यापार असंयती आरंभीनें । धर्माधर्म व्यापार तेंदे शविरति श्रावकनो ॥ वली त्रण प्रकारें व्यापार कहियो ते कहेछे । प्रत्यक्ष ते अवधि मन पर्यव केवलरूप । प्रत्यय व्यापार इंद्रिय नाणरूप । अनुगामिक व्यापार ते अनुमान व्यवसाय धूमानुसारें अग्नि जाणवी ॥ अथवा वली त्रणप्रकारें व्यापार कहियो ते कहेछे । इहलोकनो व्यापार वर्तमानभवे पखे आवे । परलोक व्यापार जेपरलोकें भोगवे । इहलोक परलोक व्यापार बेभवे भोगवे । इहलोक व्यापार त्रणप्रकारें कहियो

लौकिकइति लौकिकः सामान्यलोकाश्रयो निश्चयो नुष्ठानंवा वेदाश्रितोवैदिकः समयः सांख्यादीनां सिद्धांत स्तदाश्रितस्तु सामायिकः लौकिकादयो व्यव साया. प्रत्येक त्रिविधा स्तेच प्रतोताएव नवरं अर्थधर्मकामविषयो निर्णयो यथा अर्थस्यमूलनिकृतिःक्षमाच। धर्मस्यदानचदयादमश्च॥ कामस्यवित्तचवपुर्व यश्च। मोचस्यसर्वोपरमःक्रियास॥१॥ इत्यादिरूप स्तदर्थं मनुष्ठानंवा अर्थादिरेव व्यवसाय उच्यतइति ऋग्वेदाद्याहितो निर्णयो व्यापारोवाऋग्वेदादिरेवेति ज्ञानादीनि सामायिको व्यवसायः स्तत्र ज्ञान व्यवसायएव पर्यायशब्दत्वात् दर्शनमपि अज्ञानलक्षणव्यवसायो व्यवसायांशत्वात् तस्येति प्रतिपादितमेव चारित्र मपि समभावलचणो व्यवसायएव बोधस्वभावस्या त्मनः परिणतिविशेषत्वात् यच्चोच्यते सच्चरणमणुठाणं विहिपडिसेहाणुगतव्व ति तद्बाह्यचारित्रापेच म वगतव्यमिति अथवाज्ञानादौ विषये योव्यवसायो बोधो नुष्ठानम्वा स विषयभेदा त्रिविधइति सामायिकता चास्य सम्यग्मिथ्याशब्दलाञ्छितस्य ज्ञानादित्रय स्य सर्वसमयेष्वपि भावादिति अर्थस्य राजलक्ष्म्यादे र्योनिरुपायो र्थयोनिः साम प्रियवचनादि दंडोवधादिरूपः परनिग्रहः भेदो जिगीषितशत्रुवर्गस्य स्नेहा

वसाये तिविहे पन्नत्ते तंजहा अत्थे धम्मे कामे। वेइएववसाए तिविहे पन्नत्ते तंजहा रिउव्वेए जजुव्वेए सामवेए। सामइए ववसाये तिविहे पन्नत्ते तंजहा णाणे दसणे चरित्ते। तिविहा अत्थजोणी पन्नत्ता तजहा

तेकहेछे। लौकिक व्यवहार राखवुं। वेदाश्रित तेवैदिक। सामायिक ते सिद्धांताश्रित धर्मक्रिया॥ लौकिक व्यवसाय वस्तुनो निर्णय तेव्यव साय त्रणप्रकारे कहियें तेकहेछे। अर्थ व्यवसाय द्रव्य कमावुं। धर्म करिवुं। कर्म व्यापार जे विषय व्यापार॥ वैदिक व्यापार त्रण प्रकारे क हियो तेकहेछे। रिजुर्वेदमां जेकहियो। यजुर्वेदमा जेकहियो। सामवेदमा जेकहियो॥ सामायिक सिद्धात व्यापार त्रणप्रकारे। नाण ते तत्व नुं जाणवुं। दर्शन तेसाची श्रद्धा। चारित्र सयम॥ त्रणप्रकारे अर्थ राजलखमीनीं योनि तेउत्पत्तीकही। तेकहेछे। साम ते प्रियवचनादि।

पनयनादि' क्वचित्तु दण्डपदत्यागेन प्रदानेन सह तिस्रोर्थयोनयः पठ्यंते भवन्ति चात्रश्लोकाः परस्परोपकाराणां दर्शन गुणकीर्त्तनसम्बन्धस्य समाख्यान मायत्या.सम्प्रकाशन ॥ १ ॥ [अस्मिन्नेवङ्कृते इद मावयो र्भविष्यतीत्याशा योजन मायतिसम्प्रकाशन मिति] वाचापेशलयासाधु तवाहमितिचार्प्पण इति सामप्रयोगञ्चै. सामपञ्चविधस्मृत ॥ २ ॥ वधश्चैवपरिक्लेशो धनस्यहरणतथा इतिदण्डविधानज्ञै र्दण्डोपिनिविध' स्मृत. स्नेहरागापनयन सहर्षोत्पादनत था सतर्ज्जनञ्चभेदज्ञै र्भेदस्तुत्रिविध.स्मृतः ॥ ४ ॥ सहर्षः स्पर्द्धासतर्जन चास्या स्मन्मित्रविगृहस्य परित्राण मत्तोभविष्यतीत्यादिरूपमिति प्रदानलक्षणमिद यः सम्प्राप्तोधनोत्सर्गः उत्तमाधममध्यमः प्रतिदानतथातस्य गृहीतस्यानुमोदन ॥ ५ ॥ द्रव्यदानमपूर्वंञ्च स्वयग्राहप्रवर्त्तन देयस्यप्रतिमोक्षश्चादानंपञ्चविधस्मृत ॥ ५ ॥ धनोत्सर्गो धनसम्पत् स्वयग्राहप्रवर्त्तन परस्वेषुदेय प्रतिमोक्ष ऋणमोक्षइति प्रयोगश्चासामेव उत्तमप्रणिपातेन सूरंभेदेनयोजयेत् नीचमल्पप्रदाने न समतुल्यंपराक्रमैरिति ॥ १ ॥ अनन्तरजीवधर्मा.निरूपिताः अधुनापुद्गलां स्तथैव प्ररूपयन्नाह ॥ तिविहापुग्गलेत्यादि ॥ प्रयोग परिणता जीवव्यापारे णतथाविधपरिणति मुपनीता यथा पटादिषु कर्मादिषुवा ॥ मीसत्ति ॥ प्रयोगविश्रसाभ्या परिणता यथापटपुद्गलाएव प्रयोगेणपटतया विश्रसापरिणा मेनचा भोगेपि पुराणतयेति विश्रसास्वभावत स्तत् परिणता अभ्रेंद्रधनुरादिवदिति पुद्गलप्रस्तावा द्विश्रसापरिणतपुद्गलरूपाणां नरकावासाना प्रतिष्ठान

सामे दंडे भेए । तिविहा पोग्गला पन्नत्ता तजहा पओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया । तिप

दड तेहणवुं । भेदपाडी धनलेवु ॥ हिवे पुदगलधर्म कहेछे । त्रणप्रकारे पुदगल तेकहेछे । प्रयोग पुदगल तेजीव व्यापारथी जिमपटवणावणुं । मि श्रपरिणत ते काईक प्रयोगथी कांईक स्वभावथी नीपनो । विस्त्रसा परिणत जेस्वभावथीज परिणामप्राप्त जिमवादलमां इंद्रधनुष ॥ पुदगलनां

निरूपणाह ॥ तिपइठ्ठियेत्यादि ॥ स्फुटं केवल नरका नारकावासाः आत्मप्रतिष्ठिताः स्वरूपप्रतिष्ठिताः तत्प्रतिष्ठानं नये राह ॥ णेगमेत्यादिनैकेन ॥ सा मान्यविशेषग्राहकत्वात् तस्यानेकेन ज्ञानेन मिनोति परिच्छिनत्तीतिनैगमः अथवा निगमा निश्चितार्थबोधा स्तेषु कुशलो भवोवा नैगमः अथवा नैको गमो ऽर्थमार्गो यस्य स. प्राकृतत्वेन नैगमः १ सगृह्ण भेदानां सग्टह्लाति वा तान् सगृह्यते वा ते येन सःसग्रहः सामान्यमात्राभ्युपगमपरइति ॥ १ ॥ व्य वह्रण व्यवह्रियते वा तेन विशेषेणवा सामान्य मवह्रियते निराक्रियते नेनेति लोकव्यवहारपरो व्यवहारो विशेषमात्राभ्युपगमपरः २ एतेषा नया ना मतेनेति गम्य ऋजु अवक्र मभिमुख श्रुत श्रुतज्ञान यस्येति ऋजुश्रुतः ऋजुवा तीतानागतवक्रपरित्यागा द्वर्त्तमान वस्तु सूत्रयति गमयतीति ऋजु सूत्रः स्वकीय साम्प्रतञ्च वस्तु नान्यदित्य भ्युपगमपरः शब्द्यते अभिधीयते ऽभिधेय मनेनेति शब्दो वाचको ध्वनिः नयति परिच्छिद त्यनेकधर्म्मात्मक स त् वस्तु सावधारणतये केन धर्म्मेणेति नयाः शब्दप्रधाना नया स्तेच त्रय शब्दसमभिरूढेवभूताख्या स्तत्र शपन मभिधान शप्यते वा येन वस्तु सशब्द स्तद भिधेयविमर्शनपरो नयोपि शब्दएवेति सच भावनिक्षेपरूपं वर्त्तमान मभिन्नलिङ्गवाचक बहुपर्यायमपिच वस्त्वभ्युपगच्छतीति वाचक वाचक प्रतिवाच्य भेद समभिरोहत्या श्रयति यः स. समभिरूढः सह्य नन्तरोक्तविशेषणस्यापि वस्तुनः शक्रपुरन्दरादिवाचकभेदेन भेद मभ्युपगच्छति घटपटादिवदिति यथा

इठिया णरगा पन्नत्ता तंजहा पुढवीपइठिया णरगा आगासपइठिया आयपइठिया । णेगमसंगहववहा

अधिकारमाटे कहेंछे त्रण प्रतिष्ठित नरकछे तेविस्त्रसा पुदगलने आधार नरकछे तेकहेंछे । पृथवीने आधारे नरकावासाछे । आकाशने आधारे नरकावासा छे । आत्मप्रतिष्ठित नरकावासाछे ॥ नैगम नयले निश्चय अर्थने महासामान्य विशेष संगाहक । संगूहनय तेह सामान्यधोज भेदनुं

शब्दार्थो घटते चेष्टतइति घट इत्यादिलक्षणः ॥ एवमिति ॥ तथाभूतः सत्यो घटादि रर्थो नान्यथेत्येव मभ्युपगमपर एवंभूतो नयो ऽयहि भावनिक्षेपा दिविशेषणोपेतं व्युत्पत्त्यर्थाविष्टमेवा र्थमिच्छति जलाहरणादिचेष्टावत घटमेवेति तत्रा द्यनयस्या शुद्धत्वात् प्रायो लोकव्यवहारपरत्वाच्च पृथिवीप्रतिष्ठित त्व नारकाणामिति तत्व चतुर्थस्य शुद्धत्वात् आकाशस्यच गच्छता तिष्ठतावा सर्वभावानामैकान्तिकाधारत्वात् भुवो नैकान्तिकत्वा च्चाकाशप्रतिष्ठितत्व मिति त्रयाणान्तु शुद्धतरत्वात् सर्वभावानां स्वभावलक्षणाधिकरणस्या तरङ्गत्वादव्यभिचारित्वाच्च आत्मप्रतिष्ठितत्वमिति नहि स्वस्वभावं विहाय परस्वभा वाधिकरणभावाः कदाचनापि भवन्तीति यतआह वत्थुवसइसहावे सत्ताओवेयणव्वजोवंमि नविलक्खणत्तणाओ भिन्ने [अन्यत्र] च्छायातवेचेवत्ति ॥ १ ॥ नरकेषुच मिथ्यात्वा इति जन्तूनां भवतीति अथवा नया मिथ्यादृशइति सम्बन्धा न्मिथ्यात्वस्वरूपमाह ॥ तिविहेमिच्छत्तेइत्यादि ॥ सूत्राणि सप्त सुगमा नि नवरं मिथ्यात्वं विपर्ययस्तश्चाज्ञान मिह नविवक्षितं प्रयोगक्रियादीना वक्ष्यमाणतद्भेदाना मसंबध्यमानत्वात् ततोत्रमिथ्यात्वक्रियादीना मसम्यग्रूप

राणंपुढविपइठिया उज्जुसुयस्सआगासपइठिया तिराहंसद्दणयाणं आयपइठिया । तिविहे मिच्छत्ते पराते

गृहिवुं । व्यवहारनय ते लोकव्यवहार सहित सामान्यविना विशेषनुं गृहवुं । एह त्रणनयनें मतें पृथिवी प्रतिष्ठित नरकछे ॥ रिजुनय तेवक्रनथी श्रुतनें सन्मुख अतीतानागतविना वर्त्तमान वस्तु जणाय तेनयने मते आकाश प्रतिष्ठितछे । शब्दनय ते त्रणलिंग वाचक शब्द नपुसक स्त्री पुरुष वाची एकशब्दे जाणवुं । ते शब्दनयनें मते आत्मप्रतिष्ठित नरकछे । पोताने स्वभावें रहियाछे । जेंमांटे सर्वपदार्थ सर्वआत्मस्वभावे रहियाछे परस्वभावे गृहतानथी एशब्दनय नरकनेविषे मिथ्यात्वनीगति विशेषे थाय ॥ त्रणप्रकारे मिथ्यात्व अक्रियारूप तेकहेछे । अकिरिया तेमिथ्या

तामिथ्यादर्शनानाभोगादिजनितो विपर्यासो दुष्टत्व मशोभनत्वमितिभाव: ॥ अकिरियत्ति ॥ नजिह दु:शब्दार्थो यथा अशीला दु:शीलत्यथ: ततश्चा क्रिया दुष्टक्रिया मिथ्यात्वाद्युपहतस्या मोक्षसाधक मनुष्टान यथा मिथ्यादृष्टे र्ज्ञानमप्यज्ञानमिति एव मविनयोपि अज्ञान मसम्यग्ज्ञानमिति अक्रियाहि अ शोभनाक्रियैवा तो ऽक्रिया त्रिविधे त्यभिायधापि प्रयोगेत्यादिना क्रियेवोक्तेति तत्र वीर्यान्तरायक्षयोपशमाविर्भूतवीर्येण। त्मना प्रयुज्यते व्यापार्यतइति प्रयो गो मनोवाक्कायलक्षण स्तस्य क्रिया करण व्यापृतिरिति प्रयोगक्रिया अथवा प्रयोगै मंन:प्रभृतिभि: क्रियते बध्यतइति प्रयोगक्रियाकर्म्मेत्यर्थ: साच दुष्ट त्वा दक्रिया अक्रियाच मिथ्यात्वमिति सर्वत्र प्रक्रम: ॥ समुदाणति ॥ प्रयोगक्रियैकरूपतया गृहीतानां कर्मवर्गणाना ॥ समिति ॥ सम्यक्प्रकृतिबंधादि भेदेन देशसर्वोपघातिरूपतयाच आदान स्वीकरणं समुदानं निपातना त्तदेवक्रिया कर्म्मेति समुदानक्रियेति अज्ञाना द्या चेष्टा कर्मवा सा ज्ञानक्रियेति

तंजहा अकिरिया अविणए अन्नाणे । अकिरिया तिविहा पन्नत्ता तंजहा पओगकिरिया समुदाणकिरिया अन्नाणकिरिया । पओगकिरिया तिविहा प० तंजहा मणपओगकिरिया वयपओगकिरिया कायपओगकिरिया

त्वीनी क्रिया । अविनय ते मिथ्यात्वीनुं विनय । अनाण तेमिथ्यात्वीनु नाण ॥ अकिरिया त्रणप्रकारे कही मिथ्यात्वीनी मोक्षसाधन क्रिया तेअक्रिया । तेकहेछे । मन यचन कायाने प्रयोगेकरी कर्मकरिये तेप्रयोग क्रिया। मनप्रमुख प्रयोगेकरी कीधाकर्म भलीरीते अंगीकार करवा तेस मुदायकी क्रिया प्रकृति बधे बाधै ते । जेअनाणथी कर्मबाधै ते अनाण क्रिया ॥ प्रयोगक्रिया त्रणप्रकारेकही तेकहेछे । मनप्रयोग क्रिया । वचन प्रयोग क्रिया । कायप्रयोग क्रिया ॥ समुदाण क्रिया त्रणप्रकारे ते कहेछे । प्रथम समयनी क्रिया ते अनतर समयक्रिया जेहने आतरु नथी ।

प्रयोगक्रिया त्रिविधा व्याख्याता अर्थात् भास्वतरं व्यवधान यस्याः सा नन्तरा साचासौ समुदानक्रियाचेति विग्रहः प्रथमसमयवर्त्तिनीत्यर्थः द्वितीया ॥
दिसमयवर्त्तिनीतु परम्परसमुदानक्रियेतिप्रथमाप्रथमसमयापेक्षयातु तदुभयसमुदानक्रियेति ॥ मइअन्नाणकिरियत्ति ॥ अविसेसियामइच्चिय सम्मद्दिट्ठिस्स
सामइन्नाण मइअन्नाणमिच्छा दिट्ठिस्ससुयंपिएमेवत्ति ॥ १ ॥ मत्यज्ञानात् क्रिया अनुष्ठानं मत्यज्ञानक्रिया एवमितरेपि नवर विभङ्गो मिथ्याद्दष्टेरव
धिः सएवा ज्ञान विभङ्गाज्ञानमिति व्याख्यात मक्रियमिथ्यात्वं अविनयमिथ्यात्व व्याख्यानायाह ॥ अविणयेत्यादि ॥ विशिष्टोनयो विनयः प्रतिपत्तिवि
शेष स्तत्प्रतिषेधो ऽविनयः देशस्य जन्मक्षेत्रादे स्त्यागो देशत्यागः सयस्मि न्नविनये प्रभुगालीप्रदानादा वस्ति सदेशत्यागी निर्गत आलम्बना दाश्रयणीयात्
गच्छकुटुम्बकादेरिति निरालम्बन स्तद्भावो निरालम्बनता आश्रयणीयानपेक्षत्वमितिभावः पुष्टालबना भावेन चोचितप्रतिपत्तिभ्रंशः प्रेमच द्वेषश्च
प्रेम द्वेषं नानाप्रकारम्प्रेमद्वेष मानाप्रेमद्वेष मविनय इयमत्रभावना आराध्यविषय माराध्यसमतविषयं वा प्रेम तथा राध्यसम्मतविषयो द्वेष इत्येव

समुदाणकिरिया तिविहा पन्नत्ता तंजहा अणंतरसमुदाणकिरिया परंपरसमुदाणकिरिया तदुभयसमुदाणकि ॥
रिया । अन्नाणकिरिया तिविहा पन्नत्ता तजहा मइअन्नाणकिरिया सुयअन्नाणकिरिया विभंगअन्नाणकि

परपर समुदाय ते बीजा त्रीजा समयना आरम्भनी क्रिया । अनंतर अने परपर समयनी जेक्रिया ॥ अनाण क्रिया त्रणप्रकारेकही ते कहेछे । ॥
मिथ्यादृष्टीनो नाण तेअनाण । मति अनाण क्रिया । श्रुत अनाण क्रिया । विभंग अनाण क्रिया मिथ्यात्वीनुं अवधि ते विभंग नाण ॥ अविन
य तेमिथ्यात्व ते त्रणप्रकारे तेकहेछे । देशत्यागी जे देशत्यागकरे घणी गालीदे तेहनेविषे । निरालंबता जेहथी कुटबनां आलंबननुं अभाव छे ।

त्रियता येतो विनयः स्या दुक्तंच सद्भिनतिस्तुतिवचन तदभिमतेप्रेमतद्विषिद्वेषः दानमुपकारकीर्त्तन ममंत्रमूलंवशीकरणमिति ॥ १ ॥ नामाप्रकारी च तावाराध्यतत्सम्मतेतरलक्षणविशेषानपेक्षत्वेना नियतविषया वविनयइति अज्ञान मिथ्यात्वमिति उच्यते ॥ अन्नाणेत्यादि ॥ ज्ञानहि द्रव्यपर्यायविष योबोध स्तन्निषेधो ज्ञान तत्र विवक्षितद्रव्य देशतो यदा नजानाति तदा देशाज्ञान मकारप्रश्लेषात् यदाच सर्वत स्तदा सर्वाज्ञान यदाविवक्षितपर्या यतो न जानाति तदा भावाज्ञानमिति अथवा देशादिज्ञानमपि मिथ्यात्वविशिष्ट मज्ञानमेवेति अकारप्रश्लेष विनापि नदोषइति उक्तं मिथ्यात्व तच्चा धर्म्मइति तद्विपर्यय मधुनाधर्म्ममाह ॥ तिविहेधम्मेइत्यादि ॥ श्रुतमेव धर्म्मः श्रुतधर्म्मः स्वाध्याय एवंचारित्रधर्म्मः चात्यादिश्रमणधर्म्मः अयच द्विविधोपि द्रव्यभावभेदे धर्म्मे भावधर्म उक्तः यदाह दुविहोउभावधम्मो सुयधम्मोखलुचरित्तधम्मोय सुयधम्मोसज्झाओ चरित्तधम्मोसमणधम्मोत्ति ॥ १ ॥ अस्तिशब्दे न प्रदेशा उच्यन्ते तेषा कायो राशि रस्तिकायःसचासौ सज्ञया धर्म्म श्चेत्यस्तिकायधर्म्मो गत्युपष्टम्भलक्षणोधर्म्मास्तिकायइत्यर्थः अयच द्रव्यधर्म्मइति अन

रिया । अविणये तिविहे पन्नत्ते तंजहा देसच्चाई णिरालंवणया णाणपेज्जदोसे । अन्नाणे तिविहे पन्नत्ते तंजहा देसअन्नाणे सव्वअन्नाणे भावअन्नाणे । तिविहे धम्मे पन्नत्ते तंजहा सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्थिका

अनेक प्रकारे प्रेम अने द्वेष तेबिहुं अविनय ॥ अनाण त्रणप्रकारें कह्यियो ते कहेछे । जेद्रव्य देशथी नजाणे तेदेश अनाण । जेसर्वथा नजाणें ते सर्व अनाण । जेद्रव्यथी जाणे पणि पर्यायथी नजाणे ते भावअनाण ॥ हिवे धर्म त्रणप्रकारे तेकहेछे । सिद्धांतनो सिज्झाय । चारित्र पंचमहा व्रत दशविध यतीधर्म । धर्मास्तिकाय धर्म गतिलक्षण एह द्रव्यधर्म ॥ त्रणप्रकारे उपक्रम उद्यम आरम्भ तेकहेछे । धर्मनु उपक्रम श्रुतजाणवु चा

न्तरं श्रुतधर्म्मचारित्रधर्म्मावुक्ता वधुना तद्विशेषमाह ॥ तिविहेउवक्कमेइत्यादि ॥ सूत्रा एयष्टौ सुगमानि पर मुपक्रमण मुपक्रम उपायपूर्वक आरम्भो धर्म
श्रुतचारित्रात्मके भवः सवा प्रयोजन मस्येति धार्म्मिक श्रुतचारित्रार्थं आरम्भइत्यर्थः स्तथा नधार्म्मिको ऽधार्म्मिको संयमार्थ स्तथा धार्म्मिक श्चासौ देशतः
यमरूपत्वा दधार्म्मिकश्च तथैवा संयमरूपत्वाद्दा धार्म्मिका धार्म्मिको देशविरत्यारभइत्यर्थः अथवा नामस्थापना द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदात् षड्विध उपक्र
स्तत्रनामस्थापने सुज्ञाते द्रव्योपक्रमस्तु ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त स्त्रिधा सचित्ताचित्तमिश्रद्रव्यभेदात् तत्र सचित्तद्रव्योपक्रमो द्विपदचतुष्पदापदभेदभिन्न
पुन रेकैकोऽद्विविधः परिकर्म्मणि वस्तुविनाशेच तत्र परिकर्म्म द्रव्यस्य गुणविशेषकरण तस्मि न्सति तद्यथा घृताद्युपयोगेन पुरुषस्यवर्णादिकरण एव शुकस
रिकादीनां शिक्षागुणविशेषकरणं तथा चतुष्पदाना हस्त्यादीना अपदानाञ्च वृक्षादीनां वृक्षायु र्वेदोपदेशात् वार्द्धक्यादिगुणापादनमिति तथा वस्तुविन
शेच पुरुषादीनां खङ्गादिभि र्विनाशएवो पक्रम इति एव मचित्तद्रव्योपक्रमः पद्मरागादि मणेः क्षारमृत्पुटपाकादिना वैमल्यापादन विनाशश्चेति मिश्रद्रव्यो
पक्रमस्तु कटकादिविभूषितपुरुषादिद्रव्यस्यैवेति तथा क्षेत्रस्य शालिक्षेत्रादेः परिकर्म्मविनाशोवा क्षेत्रोपक्रम स्तथा कालस्य चन्द्रोपरागादिलक्षणस्यो पक्रम
उपायेनपरिज्ञान कालोपक्रमस्तथा भावस्य प्रशस्तप्रशस्तरूपस्यो पायतः परिज्ञानमेव भावोपक्रमः सचा प्रशस्तो डोडिनीगणिकामात्यदृष्टान्ता द्वसेयः

यधम्मे । तिविहे उवक्कमे पसत्ते तंजहा धम्मिएउवक्कमे अहम्मिएउवक्कमे धम्मियाधम्मिएउवक्कमे । अह

रित्र पालवुं । अधर्मनुं उपक्रम पापारंभ करवुं । धर्माधर्म उपक्रम ते देशविरति श्रावकनों उपक्रम देशविरति श्रावकने देशविरति संयमछे ते
माटे ॥ अथवा वली त्रण प्रकारे उपक्रम कहिया ते कहे छे । आत्माने अनुकूल उपसर्गादि जए छते शील रक्षाने अर्थे जे उपक्रम वैहानशादि

प्रशस्तस्तु श्रुतादिमिनित्तमाचार्यादिभावोपक्रम एवं धार्मिकस्य संयतस्य य श्चारित्राद्यर्थं न्द्रव्यक्षेत्रकालभावाना मुपक्रम उक्तस्वरूप: स धार्मिकएवो पक्रम: तथा अधार्मिकस्या सयतस्या सयमार्थं य. सो धार्मिकएव तथा धार्मिकाधार्मिकस्य देशविरतस्य य: स धार्मिकाधार्मिकइति अथ स्वाम्यन्तरभेदेनो पक्रम मेव त्रिधाह तथा क्वचनो गुरूलोपसर्गादो शीलरक्षणनिमित्त मुपक्रमो वैहानसादिना विनाश: परिकर्मवा आत्मार्थंवा उपक्रमो ऽन्यस्य वस्तुन आ त्मोपमइति तथा परस्य परार्थंचो पक्रम: परोपक्रमइति तदुभयस्य आत्मपरलक्षणस्य तदुभयार्थंचो पक्रम स्तदुभयोपक्रमइति ॥ एवमिति ॥ उपक्रमसूत्र वत् आत्मपरोभयभेदेन वैयावृत्यादयो वाच्या व्यावृत्तस्य भाव: कर्मवा वैयावृत्त्य भक्तादिभि रुपष्टम्भ स्तत्रा त्मवैयावृत्त्यं गच्छनिर्गतस्यैव परवैयावृत्त्य ग्लाना दिप्रतिजागरकस्य तदुभयवैयावृत्त्य गच्छवासिनइति अनुग्रहो ज्ञानाद्युपकार स्तत्र आत्मनुग्रहो ध्ययनादिप्रवृत्तस्य परानुग्रहो वाचनादिप्रवृत्तस्य तदुभया नुग्रह: शास्त्रव्याख्यानशिष्यसग्रहादिप्रवृत्तस्येति अनुशिष्टि रनुशासन न्तत्रा त्मनोयथा वायालीसेसणस कडमिगहणमिजीवणहुछलिओ इण्हिजहणहुछ लिज्जसि भुजतोरागदोसेहिंति ॥ १ ॥ तथाविधेर्यमिति शेषइति परानुशिष्टि र्यथा तातंसिभाववेज्जो भवदुक्खनिपीडियानुहएते हदिसरणंपवन्ना मो

वा तिविहे उवक्कमे प० तंजहा आयोवक्कमे परोवक्कमे तदुभयोवक्कमे । एव वेयावच्चे अणुग्गहे अणुसि

विनाश मरण । परने अर्थे उपक्रम । आत्माने परने अर्थे उपक्रम ॥ एम त्रण उपक्रम वेयावचमा जाणवा । आत्माने अर्थे आहार लेवाजाय ते आत्मवेयावच । परग्लानने अर्थ । आत्माने गच्छवासीने अर्थ ते तदुभय वेयावच ॥ अनुग्रह नाणादि उपकारमा पणि त्रण कहि वा । अध्ययन भणवामा प्रवृत्त पुरुषने । वाचना दायकने । शास्त्रनुं व्याख्यान शिष्य सग्रहादिकमां प्रवृत्तने ॥ अनुसृष्टी धर्मनी सिखादेवी आ

एयव्वापयत्तेणंति ॥ १ ॥ तदुभयानुशिष्टि यथा कहकहविमाणुसत्ता दूपावियचरणपवररयणंच ताभोइत्थपमाओ कइयाविनतुज्जएअम्हति ॥ १ ॥ उपालम्भ इयमेवा नौचित्यप्रवृत्तिप्रतिपादनगर्भा सचात्मनो यथा चोल्लगदिठ्ठतेणं दुलहलहिऊणमाणुसजम्म जनकुणसिजिणधम्म अप्पाकिंवैरिओतुज्झत्ति ॥ १ ॥ परोपालम्भो यथा उत्तमकुलसभूओ उत्तमगुरुदिक्खिओतुमवत्थ उत्तमनाणगुणड्ढोकहसहस्सावववसिओएवति ॥ १ ॥ तदुभयोपालम्भो यथा एगस्सकए नियजी वियस्सबहुयाउजीवकोडीओ दुक्खेठवतिजेके वितानकिंसासयजीयति ॥ १ ॥ एवमित्यादिना पूर्वोक्तातिदेशो व्याख्यात एवचात्रा चरघटना यथैवोपक्रमे आत्मपरतदुभयैस्त्रय आलापका उक्ता एव मेकैकस्मिन् वैयावृत्यादिसूत्रेतेत्रय स्त्रयो वाच्याइति अथ श्रुतधर्मभेदा उच्यन्ते अर्थस्य लक्ष्म्याः कथा उपायप्रतिपादनपरो वाक्यप्रबन्धोर्थकथा उक्तच सामादिधातुवादादि कृष्यादिप्रतिपादिका अर्थोपादानपरमा कथार्थस्यप्रकीर्त्तिता ॥ १ ॥ तथा अर्थाख्यःपुरुषार्थोय प्रधानः प्रतिभासते तृणादपिलघुलोके धिगर्थरहितनरमिति ॥ १ ॥ इयच कामन्दकादिशास्त्रप्रतिरूपा एवंधर्मोपायकथा उक्तच दयादानक्षमाद्येषु धर्माङ्गेषुप्रतिष्ठिता धर्मोपादेयतागर्भा बुधैर्धर्मकथोच्यते ॥ १ ॥ तथा धर्माख्यःपुरुषार्थोय प्रधानइतिगीयते पापसक्तपशोस्तुल्यधिग्धर्मरहितनरम् ॥ १ ॥ इयचोत्तराध्ययनादिरूपावसेयेति एवकामकथापि यदाह कामोपादानगर्भाच वयोदाक्षिण्यसूचिका अनुरागेंगितादुत्थाकथाकामस्यवर्णिता ॥ १ ॥ तथा स्मितनल

ठी उवालंभे एवमिक्किक्के तिन्नितिन्नि आलावगा जहेव उवक्कमे । तिविहा कहा प० तंजहा अत्थकहा

त्मानें परने उभयनें ॥ ओलंभोदेवो जेमनुष्य जन्मपामी धर्मनथी करतो इत्यादि आत्मानें परने उभयने ॥ एवं एकेक आलावामां तीनतीन आत्मा पर उभय एह आलावा कहिवा ॥ त्रणप्रकारे कथाकही तेकहेछे । अर्थकथा जेद्रव्यविना मनुष्य तृण जेहवोछे । धर्मकथा दान शील तप भा

घेणवचीनकोटिभि र्नकोटिलचैःसविलासमीचितं । अवाप्यतेन्यैर्हृदयोपगूहनं नकोटिकोव्यापितदस्तिकामिनामिति ॥ १ ॥ द्वयमपि वात्स्यायनादिरूप वसेयेति प्रकीर्णावा तत्तदर्था वचनपद्पद्धति कथा चरितवर्णनरूपावा अर्थादिविनिश्चया अर्थादिस्वरूपपरिज्ञानानि तानिच अर्थानामर्जनेदुःख मर्जित नाचरक्षणे आयेदुःखंव्ययेदु.ख धिगर्थंदुःखकारणं ॥ १ ॥ तथा धनदोधनार्थिनाधर्मः कामदःसर्वकामिना धर्मएवापवर्गस्य पारम्पर्येणसाधकः ॥ २ ॥ तथा शल्यकामाविष कामाः कामाआशीविषोपमा' कामानभिलपन्तोपि निष्कामायान्तिदुर्गतिमित्यादीनि अनन्तर मर्थादिविनिश्चय उक्ताइति तत्कारणफलप रमारा निस्थानकानवतारिणीमपि प्रसङ्गतो भगवत्प्रश्नद्वारेण निरूपयन्नाह ॥ तहारूवेद्दत्यादि ॥ पाठसिद्ध केवल पर्युपासना सेवा श्रवण फल यस्याः सा

धम्मकहा कामकहा । तिविहे विणिच्छिए प० तं० अत्थविणिच्छिए धम्मविणिच्छिए कामविणिच्छिए । तहारूवाणंभंते समणंवा माहणंवा पज्जुवासेमाणस्स किंफला पज्जुवासणया सवणफला । सेणंभंते सवणेकिं

वनादि करवी । कामकथा जे कामशास्त्र कोकशास्त्रनी कथा ॥ त्रणप्रकारे विनिश्चय कहियो तेकहेछे । अर्थ विनिश्चय जेअर्थना उपार्जनमां दुख राखता व्ययमा पणि दुख अर्थ दुखनुज कारणछे । धर्म विनिश्चय जे धर्मथी वांछितपामे स्वर्गमोक्षनु साधकछे । काम विनिश्चय जेकामथी वांछित नपामैं दुर्गतिनो आपनारछे ॥ एह निश्चयनुं फल पूछेछे । तथारूप श्रमण माहन ब्र कायाना रक्षकनी सेवाकीधानुं स्यु फलछे सेवाकरनारने हेणी तम श्रवणफलाछे साधु धर्मकथादिक स्वाध्यायकरे तेहनो श्रवणथाय तेहीज फलछे । हेभदंत श्रवणनुं सुणवानुं स्यु फलछे नाण फलछे सुणवाथी श्रुत नाण थायछे । हेभदत नाणनुं स्यु फलछे नाणथी विन्नाण थायछे जे एपदार्थ हेयछे एपदार्थ उपादेयछे इत्यादिनुं जांणवुं थायछे एम एणे अभि

तथा साधवोहि धर्मकथादिक स्वाध्यायं कुर्व्वंतीति श्रवणं तत्सेवायां भवतीति ज्ञानं श्रुतज्ञानं विज्ञान मर्थादीनां हेयोपादेयत्वविनिश्चयः ॥ एवमिति ॥ पूर्वोक्तेनाभिलापेन सेण भते विन्नाणे किफले गोयमा पच्चक्खाणफले इत्यादिना इयंगाथाअनुगतव्या अनुस्मरणीया एतद्गाथोक्तानि उक्तानुक्तानि पदान्यध्ये तव्यानीत्यर्थः ॥ सवणेत्यादि ॥ भावितार्था नवर प्रत्याख्यान निवृत्तिद्वारेणप्रतिज्ञाकरण सयमः प्राणातिपाताद्यकरण उक्तच पञ्चाश्रवाद्विरमण पञ्चेन्द्रि यनिग्रहःकषायजयः दण्डत्रयविरतिश्चेतिसयम.सप्तदशभेदइति ॥ १ ॥ अनाश्रवोनवकर्म्मानुपादानअनाश्रवाल्लघुकर्मत्वेनतपोनशनादिभेदभवति व्यवदान पूर्वकृतकर्मवनलवनं दाप्लवनइतिवचनात् कर्मकचवरशोधनंवा दैप्शोधनइतिवचनादिति अक्रियायोगनिरोधो निर्वाण कर्मकृतविकारविरहितत्व सिद्धयन्ति कृतार्था भवन्तियस्या सा सिद्धिर्लोकाग्र सैव गम्यमानत्वादिति स्वस्यागमन तदेवपर्यवसानफल सर्वान्तिमप्रयोजन यस्यनिर्वाणस्य तत्सिद्धिगमनपर्यवसानफल

फले णाणफले । सेणंभंते णाणेकिफले बिन्नाणफले । एवमेएणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्वा सवणे णाणेयविन्नाणे पच्चक्खाणेयसंजमे । अणण्हवेतवेचेव वोदाणेअकिरियाणिव्वाणे ॥ १ ॥ जाव साणंभंते अ

लापे एरीते एगाथानुं भाव जाणवुं साधुनी सेवानुं फल श्रवण सांभलवुं साभलवानुं फल नाण जाणवुं जांणवानुं फल विन्नाण हेयोपादेयादिकनुं जाणवु तेहनुं फल पचखाण पचखाणथी सतरे भेदे सयमथाय संयमथी आश्रव नवीन कर्मबंध तेहनुं अभावथाय अनाश्रवथी लघुकर्म पणाथी तप अनशनादिक थाय तपथी पूर्वकृत कर्मनु निर्जरावुं निर्जराथी मन वचन कायानां योगनुं निरोधिवुं योगनिरोधथी कर्मकृत विकारथी रहित थाय यावत् हेभदत मन वचन कायानां योगनिरोध रूप अक्रियानुं स्युं फलछे निर्वाण मोक्ष फलछे निर्वाणनुं हेभदत स्युं फलछे सिद्धि लोकाग्र ते

ग्रहार्ं मयाऽन्यैश्चकेवलिभिः हे श्रमण हे आयुष्मन्निति गौतमादिकं शिष्यं भगवानामंत्र्य निदमुवाच ॥ इति त्रिस्थानकस्य तृतीयोद्देशकः विवरणतः समाप्तः ॥ ३ ॥ आख्यात स्तृतीयोद्देशको ऽधुनाचतुर्थ आरभ्यते अस्यचायमभिसम्बन्ध पूर्वस्मिन्नुद्देशके पुद्गलजीवधर्मा स्त्रिविनोक्ता प्ररूपितएव तथैवेोच्यन्ते इत्यने नसम्बन्धेना यातस्यास्येदमादिसूत्रमष्टकं ॥ पडिमेत्यादि ॥ अस्यच पूर्वेणसहायमभिसम्बन्धः पूर्वसूत्रे श्रमणमाहनसपर्युपासनायाः फलपरम्परोक्ता इहतु तद्विशे षस्यफलविशेषरूपत इत्येवसम्बन्धितस्यास्यव्याख्या प्रतिमामासिक्यादिकां भिक्षुप्रतिज्ञाविशेषलक्षणां प्रतिपन्नो ऽभ्युपगतवान् यःसतथा तस्यानगारस्य कल्पंते युज्यन्ते त्रय उपाश्रयस्तेभज्यंते सेवितादिकार्थं तेते उपाश्रयास्तसतयः प्रत्युपेक्षितु मवस्थानार्थं निरीक्षितुमिति ॥ अहेत्ति ॥ अथार्थः अथशब्दस्येह पदत्रये

किरिया किंफला णिव्वाणफला । सेणंभंते णिव्वाणे किंफले सिद्धिगइगमणपज्जवसाणफले पणत्ते समणाउ सो ॥ तीअठाणस्स तीउउद्देसउ सम्मत्तो ॥ ३ ॥ पडिमापडिवन्नस्सणं अणगारस्स कप्पंति तउ उवस्सग्गपडिलेहित्तए तजहा अहे आगमणगिहंसिवा अहेवियडगिहंसिवा अहेरुक्खमूलगिहंसिवा

छीज गति तेहमां जावुं तेहीज छेहलो फल कह्यियो भैं तथा अन्य केवलीयें हे श्रमण हे आयुष्मन् ॥ इति तीजा ठाणानुं तीजो उद्देशो पूरो थयो ॥ ३ ॥ पूर्वे साधुसेवानुंफल कह्यियो हिवे तेसाधुने कल्पें तेकहेछे । बार साधुनी प्रतिमानें पडिवज्यो जेसाधु तेहने कल्पें सूझें त्रण उपाश्रय रहवाने अर्थ पडिलेहवा जोवा तेकहेछे । अथ पंथीने आविवाने तेहने अर्थे जेघर सभा पर्व देउल तिहा रहवाने जोवुं एक खूणुं अथवा वियृतगृह जे उपरिथी ढांक्योनथी एकखूणें ढाक्युंहोय ते अथवा वृक्षने मूलें घरहोय ते अथवा वृक्षनुं मूलहीज घर एह गृहस्थनी आग्या

पि त्रयाणामप्याश्रयाणां प्रतिमाप्रतिपन्नस्य साधोः कल्पनीयतया तुल्यताप्रतिपादनार्थोवा विकल्पार्थः पथिकादीना मागमनेनोपेत तदर्थंवा गृहमागमन गृहंसभाप्रपादि यदाह आगंतुगारत्थजणोजहिंतु संठाइजवागमणंमितेसिं तंआगमोकितुविंदूवयति सभापवादेउलमाइयंवत्ति ॥ १ ॥ तस्मिन्नुपाश्रय स्तदेकदेशभूतः प्रत्युपेक्षितुं कल्पतइतिप्रक्रमः तथा ॥ वियडंति ॥ विवृतअनावृत तच्चद्वेधा अधउर्द्धंच तत्रपार्श्वत एकादिदिक्ष नावृतमधोविवृत मना च्छादितममालगृहचोर्द्धंविवृत तदेवमुद्दविवृतगृहं उक्तंच अनाउडजतुचउद्दिसिपि दिसामह्योतिन्निदुवेयएक्का अहेभवेतवियडगिहतु उड्डअमावंचअतिच्छ इवत्ति ॥ १ ॥ तस्मिन्वा तथा वृक्षस्यकरीरादे र्निर्गलस्य मूलसधोभाग स्तदेवगृहं वृक्षमूलगृहं तस्मिन्वेति प्रत्युपेक्षया चोपाश्रयेशुद्दे गृहस्थंप्रति तदनुज्ञापन भवती त्यनुज्ञापनासूत्र ॥ एवमिति ॥ एतदेव पडिमापडिवन्नेत्या द्युच्चारणीयं नवरं प्रत्युपेक्षणास्थाने अनुज्ञापनंवाच्यमिति अनुज्ञातेच गृहिणातस्योपादा नमि त्युपादानसूत्र तदप्येवमेवेति ॥ उवाइणित्तएत्ति ॥ उपादातुंगृहीतुं प्रवेष्टुमित्यर्थः एव सस्तारकसूत्रत्रयमपि नवर पृथिवीशिलाउड्डअगोत्ति ॥ यः प्रसि द्धः काष्टञ्चासौशिलेवायतिविस्तराभ्या शिला साचेति काष्टशिला यथासंस्तृतमेवेति यत्तृणादियथोपभोगार्हंभवति तथैवयल्लभ्यतइति प्रतिमाश्च नियत

एवमणुन्नवेत्तए उवाइणित्तए । पडिमापडिवन्नस्सणं अणगारस्स कप्पंति तउ संथारगापडिलेहित्तए तंजहा पुढविसिला कठसिला अहासंघडमेव एवमणुन्नवित्तए उवाइणित्तए । तिविहे काले पन्नत्ते तंजहा ।

थी शुद्धथानक जांणी एहमा प्रवेश करवुं कल्पे । प्रतिमांने पडिवज्यो जे अणगार साधु तेहने कल्पें सूझे त्रण संथारा पडिलेहवा दृष्टिथी जोवा ते कहेछे । पृथ्वीनीशिला काष्ठनीशिला तृणादिकनुं सथारो ॥ एम पूर्ववत् आग्या मांगी गृहवो लेवो कल्पे एह तीनमां जे लाभे तेगृहण करे ।

कालाभवतीति कालत्रिधाह अतिशयेनइतो गतोऽतीत पिधानवद्कारलोपे तीतोवर्त्तमानत्वमतिक्रांतइत्यर्थः साम्प्रतउत्पन्नः प्रत्युत्पन्नोवर्त्तमानइत्य र्थः नआगतोऽनागतो वर्त्तमानत्वमप्राप्तो भविष्यन्नित्यर्थः उक्तंच भवतिसनामातीत. प्राप्तोयोवर्त्तमानत्वं एष्यश्चनामसभवति यःप्राप्स्यतिवर्त्तमानत्वमिति ॥ १ ॥ कालसामान्यत्रिधाविभज्य तद्विशेषांस्त्रिधाविभजन्नाह ॥ तिविहेसमयेत्यादि ॥ कालसूत्राणि समयादयो द्विस्थानकाद्युद्देशकवत् व्याख्येया नवर ॥ पोग्गलपरियट्टेत्ति ॥ पुद्गलानांरूपिद्रव्याणा आहारकवर्जितानां मौदारिकादिप्रकारेण ग्रहणत एकजीवापेक्षया परिवर्त्तन सामस्त्येनस्पर्श. पुद्गलपरि वर्त्तः सचयावताकालेनभवति सकालोपिपुद्गलपरिवर्त्तः सचानन्तोत्सर्प्पिण्यवसर्प्पिणीरूपइति सचैत्थ भगवत्यामुक्तः कतिविहेणं भंते पोग्गलपरियट्टे पन्न त्ते सत्तविहे पन्नत्ते तं० ओरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे एवतेयाकम्मामणवइपाणापाणुपोग्गलपरियट्टे तथा से केणट्ठेण भते एववुच्चइओ रालियपोग्गलपरियट्टे २ गोयमा जण्ण जीवेणं ओरालियसरीरेवट्टमाणेणं ओरालियसरीरपाओगाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइ जावनिसट्ठा

तीते पडुप्पन्ने अणागए । तिविहे समए पन्नत्ते तजहा तीते पडुप्पन्ने अणागए । एवंआवलिया आणा पाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते जाव वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे जाव उसप्पिणी । तिविहे पोग्गलपरियट्टे

प्रतिमा कालआश्री होय तेमाटे कालनुं स्वरूप कहेछे । त्रणप्रकारे काल कह्यियो अतीतकाल वर्त्तमानकाल अनागतकाल जे आवसे ॥ त्रणप्रकारे समय कह्यियो तेकहेछे। अतीत वर्त्तमान अनागत ॥ एम आवलिका आनप्रान थोव लव मुहूर्त्त अहोरात्रि यावत् सो वरस हजार वरस पूर्वांग पूर्व यावत् उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी लगि जाणवा ॥ त्रण प्रकारे पुदगल परावर्त्त कह्यियो आहरक वर्जी औदारिकादि शरीरे एक जीव. रूपीपुदगल

इं भवंति सेतेणट्ठेणगोयमा एवंवुच्चइ ओरालियपोग्गलपरियट्टे २ एव शेषाअपिवाच्या: तथा ओरालियपोग्गलपरियट्टेणभंते केवइ कालस्सनिव्वत्तिज्जइ गोयमा अणताहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहिति एवशेषाअपीति अन्यत्रत्वेवमुच्यते ओराले १ वेउव्वे २ तेय ३ कम्म ४ भासा ५ णुपाण ६ मणगेहिफासेविसव्व पोग्गलमुक्का अहवायरपरट्टो दव्वेसुहुमपरट्टोजाहेएगेणअहसरीरेण लोगमि सव्वपोग्गलपरिणामे जणतोमुक्कत्ति २ द्रव्यपुद्गलपरिवर्त्तनसदृशा येन्येचेत्रकालभावपरिवर्त्ता स्तेन्यतोवसेयाइति एतेच समयादय: पुद्गलपरिवर्त्ता ता: स्वरूपेणबहवोपि तत्सामान्यलक्षणमर्थ मेकमाश्रित्यैकवचनान्ततयोक्ताभवन्ति चैकादिष्वर्थेष्वेकवचनादिन्येकवचनादिप्ररूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ एकोर्थउच्यते ऽनेनेतिर्वैतिवचन मेकस्यार्थस्यवचनमेकवचन मेवमितरेपि अत्रक्रमेणोदाहरणानि देव:देवौदेवा: वचनाधिकारे ॥ अहवेत्यादि ॥ सूत्रद्वय सुवोध उदाहरणानितु स्त्रीवचनादीना नदीनद:कुडं अतीतादीना क्षतवान्करोतिकरिष्यति वचनहि जीवपर्याय स्तदधिकारात्तत् पर्यायान्तराणि निस्थानकेऽवतारयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्राणा मेकोनविंशति: सष्टाचेय परम्प्रज्ञापनाभे

पण्णत्ते तंजहा तीते पडुप्पन्ने अणागए। तिविहे वयणे प० त० एगवयणे दुवयणे बहुवयणे। अहवा तिविहे वयणे प० तंजहा इत्थिवयणे पुम्मवयणे णपुंसगवयणे। अहवा तिविहे वयणे प० तं० तीतवयणे

एसघला फरसें तेपुदगल परावर्त्त कहिये तेकहेंछे । अतीतकाले कीधो वर्त्तमानकालें करेछे अनागतकाले करस्ये ॥ त्रणप्रकारे वचन कहियो तेकहेंछे । एकवचन द्विवचन बहुवचन ॥ अथवा त्रणप्रकारे वचन तेकहेंछे । स्त्री वचन नदी नारी इत्यादि । पुरुष वचन आब घट इत्यादि । नपुसक वचन कुल कुंड धान्य इत्यादि ॥ अथवा त्रणप्रकारे वचन कहिया तेकहेंछे । अतीतकाल वचन करतो हुवो । वर्त्तमानकालवचन ते करे

शब्दाभिधानं तच्चज्ञानाज्ञापना आभिनिबोधिकादिपञ्चधा ज्ञानं एवं दर्शनं क्षायिकादिद्विधा चारित्रं सामायिकादिपञ्चधेति सम्यक्त्वोतिसम्य गवि परीतं मोक्षं सिद्धिमसौत्यानुगणमित्यर्थः तच्चज्ञानादीनि उपहननमुपघातः पिण्डशय्यादेरकल्पतेत्यर्थः तत्रउद्गमनमुद्गमः पिण्डादेःप्रभवइत्यर्थः तस्यबाधा कर्मादय षोडशदोषाः उक्तंच तत्थुग्गमोपसूई पभवोएमादिहोतिएगट्ठा सोपिण्डस्सिहपगओ तस्सयदोसाइमेहोंति ॥ १ ॥ आहाकम्मुद्देसिय २ पूईक म्मेय ३ मीसजाएय ४ ठवणा ५ पाहुडियाए ६ पाओयर ७ कीय ८ पामिच्चे ९ ॥ २ ॥ परियट्टए १० अभिहडे ११ उब्भिन्ने १२ मालोहडेइय १३ अ च्छिज्जे १४ अणिसट्ठे १५ अज्झोयरएय १६ सोलसमेत्ति ॥ २ ॥ दृष्टवाभेदविवक्षया उद्गमदोष एवोद्गमो ऽतस्तेनोद्गमेनोपघातः पिण्डादेरकल्पनीयता वा

पडुप्पन्नवयणे अणागयवयणे। तिविहा पन्नवणा पण्णत्ता तंजहा णाणपन्नवणा दंसणपन्नवणा चरित्तपन्न वणा। तिविहे सम्मे प० तं० णाणसम्मे दंसणसम्मे चरित्तसम्मे तिविहेउवघाए प० तं० उग्गमोवघाए

छे । अनागतकाल वचन जेकरस्ये कायादि आश्री ॥ त्रणप्रकारें पन्नवणा कही ते कहेछे । नाण पन्नवणा ते मत्यादि पांचभेदें । दर्शन पन्न वणा ते क्षायिकादि पाचभेदें समकित । चारित्र पन्नवणा सामायिकादि पांचभेदें ॥ त्रणप्रकारे सम्यग् ते अविपरीत मोक्षनुं साधवो । तेकहे छे । नाण सम्यक् जीवादि तत्व । दर्शन सम्यक् ते क्षायिकादि समकित । चारित्र सम्यक् पंचमहाव्रत एह मोक्ष साधकछे ॥ त्रणप्रकारे उप घात कहियो पिंडशय्यादि अकल्प ते सूझे तेकहेछे । उदगमोपघात ते आधाकर्मादि चिंतवी साधुनिमित्त कीधो तेदोष । उत्पादनोपघात विद्या मंत्र चूर्ण चिकित्सादिकें करी उपजाव्यो । एषणोपघात ते अशुद्धमान सचित्तादि आहार ॥ एम विशुद्धि आहारनी शुद्धि पण ए कहिया ते

रणचरणस्यवाशवलींकरणमुद्गमोपघातउद्गमस्यवापिण्डादिप्रसूतेरुपघात आधाकर्मत्वादिभि र्दुष्टतोद्गमोपघात एवमितरावपि केवलमुत्पादन सम्पादन रुद्गस्यात्पिंडादेरुपार्जनमित्यर्थः तद्दोषाधात्रीत्वादयः षोडश यदाह उप्पायणनिव्वत्तण संपायणमायहोतिएगट्ठा आहारस्सिहपगयातीएदोसाइमेहोंति ॥ १ ॥ धाई १ दूइ २ निमित्ते ३ आजीव ४ वणीमगे ५ तिगिच्छाय ६ कोहे ७ माणे ८ माया लोभेय १० हवतिदसएए ॥ १ ॥ पुव्विपच्छासथव ११ वि ज्जामतेय १२ चुस १४ जोगेय १५ उप्पायणाइदोसा सोलसमेसूलकम्मेयत्ति ॥ २ ॥ तथाएषणाश्टहिणादीयमानपिंडादेर्ग्रहण तद्दोषाः शङ्कितादयोदशे त्याहच एसणगवेसणस्से सणायगहणचहोतिएगट्ठा आहारस्सिहपगया तीयदोसाइमेहोंति ॥ १ ॥ सकिय १ मक्खिय २ निक्खि त्त ३ पिहिय ४ साहरि य ५ दायगुम्मोसे ६ अपरिणय ८ लित्त ९ छड्डिय १० एसणदोसादसहवति ॥ २ ॥ इहच सोलसउग्गमदोसा गिहियाउसमुट्ठिएवियाणाहि उप्पाहिउप्पा यणाए दोसासाहूउसमुट्ठिएजाणत्ति ॥ ३ ॥ एषणादोषास्तू भयसमुत्थाइति एवमुद्गमादिदोषै रविद्यमानतया याविशुद्धि.पिण्डचरणादीना निर्दोषता साउद्गमादिविशुद्धि उद्गमादीनांवा विशुद्धिर्यासा तथैतानेवातिदिशन्नाह ॥ एवंविसोही ॥ ज्ञानस्यश्रुतस्या राधना कालाध्ययनादिष्वष्टसु आचारेषु प्रव त्यानिरतिचारपरिपालना ज्ञानाराधना एवदर्शनस्य निःशङ्कित।दिषु चारित्रस्य समितिगुप्तिषु साचोत्कृष्टादिभेदा भावभेदा त्कालभेदादेति ज्ञाना

उप्पायणोवघाए एसणोवघाए। एवंविसोही। तिविहा आराहणा पण्णत्ता तंजहा णाणाराहणा दंसणाराहणा

बेयालीस दोष रहित ॥ त्रण प्रकारे आराधना कही ते कहे छे । अतीचार रहित चारित्र पालवुं ते आराधना । नाण आराधना ते काले विणये ए आठ अतीचार टालवा । दर्शनाराधना ते निस्संकियनिःकखिय आठ अतीचार टालवा । चारित्राराधना ते पाच सुमति त्रणगुप्ति

द्रिप्रतिपतनलक्षण: संक्लिश्यमानपरिणामनिबन्धनो ज्ञानादिसंक्लेशो ज्ञानादिशुद्धिलक्षणो विशुध्यमानपरिणामहेतुक स्तदसंक्लेश एवमिति ज्ञानादिविष या एवातिक्रमादय श्चत्वार स्तत्राधाकर्माश्रित्य चतुर्णामपिनिदर्शनं आहाकम्मामंतण पडिसुणमाणेअइक्कमोहोइ पयभेयाइवइक्कम २ गहिएतइएयरो ३ य रोगिलिएत्ति ४ ॥ १ ॥ एवमेवो त्तरगुणरूपचारित्रस्य चत्वारोपि एतदुद्देशेन ज्ञानदर्शनयो स्तदुपग्रहकारिद्रव्याणाञ्च पुस्तकचैत्यादीना मुपघाताय मि थ्याद्दशा मुपबृंहणार्थंवा निमन्त्रणप्रतिश्रवणादिभि र्ज्ञानदर्शनातिक्रमाद्यो व्यायोज्याइति ॥ तिण्हअइक्कमाणंति ॥ षष्ठ्या द्वितीयार्थत्वात् त्रीनतिक्रमाना लोचयेत् गुरवेनिवेदयेदित्यादिप्राग्व ननवरं शायलकरणात् विसोहेज्जाविउट्टेज्जाअकरणयाएअब्भुट्ठेज्जाअहारिहतवोकम्मपायच्छित्त मित्यध्येतव्यमिति पाप

चरित्ताराहणा । णाणाराहणातिविहा पण्णत्ता तंजहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना । एवं दंसणाराहणावि चरि त्ताराहणावि। तिविहे संकिलेसे प० तंजहा णाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चारित्तसंकिलेसे । एवंअसंकिले सेवि एवमइक्कमेवि वइक्कमेवि अइयारेवि अणायारेवि । तिण्हमइक्कमाणं आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा णिं

पालवी ॥ नाणनी आराधना त्रणप्रकारे कही छेकहेछे । उत्कृष्टी मध्यमा जघन्या ॥ एम दर्शनाराधना त्रणप्रकारे चारित्राराधना पणि त्रणिप्र कारें ॥ त्रणप्रकारे सकिलेश तेकहेछै । नाण संकिलेश नाण भणतो कलेश उद्वेग पामैं । दर्शन सकलेश समकितमा मूंझाये सरदहणा पामैनथी । चारित्र संकलेश चारित्र पालतो दुखपामैं ॥ एम असकिलेश पणि त्रणप्रकारे कलेशनपामे शुद्ध मनपरिणामैं । इम अतिक्रम त्रणप्रकारे । एम व्यतिक्रम त्रणप्रकारे । अतीचार त्रणप्रकारे। अनाचार त्रणप्रकारे ॥ मायादिकनो अतिक्रम पाप आलोये गुरु आगलि कहै पडिकमे मिच्छामिदु

च्छेदकत्वात् प्रायश्चित्तविशोधकत्वाद्वा प्राकृते पायच्छित्तमिति शुद्धिरुच्यते तद्विषयः शोधनीयातिचारोपि प्रायश्चित्तमिति तच्चत्रिधा दशविधत्वेपि तस्यत्रिस्थानकानुरोधादिति तत्रालोचनमालोचनागुरवेनिवेदनं तांशुद्धिभूतामर्हतितयैव शुध्यति यदतिचारजातभिक्षाचर्यादितदालोचनार्हमिति एवं प्रतिक्रमण मिथ्यादुष्कृत तदर्हंसहसाअसमितत्वमगुप्तत्वचेति उभय मालोचनाप्रतिक्रमणलक्षणमर्हति यत्ततथा मनसोरागद्वेषगमनादिसाईगाथेह भि क्खायरियाएसुज्झइ अइयारोकोविवियडणाएय बीओयअसमिओमि त्तिकीससहसाअगुत्तोवा सद्दाइएसुरागं दोसंचमणोगओतइयगमित्ति ॥ १ ॥ एतेच प्रज्ञापनादयो धर्माः प्रायोमनुष्यक्षेत्रएवस्युरिति तद्वक्तव्यतामाह ॥ जंबूदीवेत्यादि ॥ इदंच प्रकरणं द्विस्थानकानुसारेण जंबूद्वीपपदानुसारेणवावसेयमि

देज्जा गरहिज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तंजहा णाणाइक्कमस्स दंसणाइक्कमस्स चरित्ताइक्कमस्स एवं वइक्क माणं अइयाराणं अणायाराणं। तिविहे पायच्छित्ते प० तंजहा आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभया रिहे। जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं तओ अकम्मभूमीओ प० तंजहा हेमवए हरिवासे देवकुरा जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स उत्तरेणं तओ अकम्मभूमीओ प० तं० उत्तरकुरा रम्मगवासे एरन्नवए। जंबूमंदरस्स

करुत देवे आत्मसाक्षिथी निंदे आत्मसाक्षीयें गर्हाकरे परनी साक्षीथी यावत् तप वडिवजे तेकहेछे। नाणातिक्रमथयो होय ते आलोवे निंदे। दर्शनातिक्रम थयो होय चारित्रातिक्रम थयोहोय। एम व्यतिक्रम अतीचार लागो ते अणाचारपणि आलोवे निंदे ॥ त्रणप्रकारे प्रायश्चित कहि यो तेकहेछे। आलोयणानें योग्य। प्रतिक्रमण योग्य। आलोयण प्रतिक्रम बेनें योग्य ॥ ए सर्व धर्म मनुष्यक्षेत्रमां छे तेहनुं स्वरूप कहेछे। जं

पव्वयस्स दाहिणेणं तओ वासा पन्नत्ता तंजहा भरहे हेमयए हरिवासे जंबूमंदरस्स उत्तरेणं तओ वासा पन्नत्ता तं० रम्मगवासे हेरन्नवए एरवए । जंबूमंदरस्स दाहिणेणं तओ वासहरपव्वया पन्नत्ता तंजहा चुल्लहिमवंते महाहिमवंते णिसढे । जंबूमंदरस्स उत्तरेणं तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता तंजहा णीलवंते रूप्पी सिहरी जंबूमंदरस्सदाहिणेणं तओ महादहा प० तं० पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिच्छिद्दहे । तत्थणं तओ देवयाओ महिड्ढिया ओ जाव पलिओवमठिईयाओ परिवसति तजहा सिरी हिरी धीई । एवं उत्तरेणावि णवरं केसरिद्दहे महा

बूद्वीपनामा द्वीपनेंविषे मेरूपर्वतथी दक्षिणदिशि त्रण अकर्मभूमि कही तेकहेछे । हेमवंत युगलक्षेत्र हरिवर्ष युगलक्षेत्र देवकुरु युगलक्षेत्र ॥ जंबूद्वीपने विषे मेरुथी उत्तरदिशि त्रण अकर्मभूमि कही उत्तरकुरु रम्यकवर्ष ऐरण्यवतक्षेत्र ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी दक्षिणदिशि त्रण वर्षक्षेत्र कहिया भरत हेमवत हरिवर्ष ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि त्रण वर्षकहिया रम्यकवर्ष हैरण्यवत ऐरवत ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी दक्षिणदिशि त्रण वर्षधर पर्वत कहिया ॥ लघुहिमवंत पर्वत महाहिमवत पर्वत निषध पर्वत ॥ जबूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि त्रण वर्षधर पर्वत कहिया ते कहेछे । नीलवंत पर्वत रूपीपर्वत शिखरी पर्वत ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी दक्षिणदिशि त्रण मोटाद्रह पाणी भर्या कह्या ॥ पदमद्रह महापदमद्रह तिगिच्छिद्रह तिहा त्रणि देवता मोटी रिद्धिनाधणी यावत् पल्योपमनी स्थितिनाधणी रहेछे तेकहेछे । श्री ह्री धृति ॥ एणें प्रकारे उत्तरदिशि पणि एतलो विशेष जे केसरीद्रह पुंडरीकद्रह महापुंडरीकद्रह ॥ तिहा तीन देवांगना बसेछे । कीर्त्ति बुद्धि लछमी ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी दक्षिणदिशि लघु

ति नवरमतनंदीनाविष्कम्भः पंचविंशत्यधिकयोजनशतमिति अनन्तर मनुष्यक्षेत्रलक्षणक्षितिखण्डवक्तव्यतोक्ता त्यधुनाभंग्यन्तरेणसामान्यपृथिवीदेशवक्तव्य

पोंडरीयद्दहे पोंडरीयद्दहे देवयाउ किन्नी वुद्धी लच्छी । जंबूमंदरस्स दाहिणं चुल्लहिमवंताउ वासहरपव्व याउ पउमदहाउ महादहाउ तउ महाणदीउ पवहंति तंजहा गंगा सिंधु रोहियंसा । जंबूमंदरस्स उत्तरेणं सिहरीउ वासहरपव्वयाउ पोंडरीयद्दहाउ महादहाउ तउ महाणदीउ पवहंति तंजहा सुवन्नकूला रत्ता रत्तावती । जंबूमंदरस्स पुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेणं तउ अंतरणईउ पन्नत्ता तंजहा गाहावई दहवई पंकवई । जंबूमंदरपुरत्थिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं तउ अंतरणईउ पन्नत्ता तंजहा तत्तज ला मत्तजला उम्मत्तजला जंबूमंदरपच्चत्थिमेण सीउदाउ महाणईएदाहिणेणं तउ अंतरणईउ पन्नत्ता तंजहा

हिमवंत वर्षधर पर्वतथी पदमद्रहनाम महाद्रहथी त्रण मोटीनदी निकलीछे । गंगा सिंधु रोहितांसा ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी उत्तरदिशि शिखरी नाम वर्षधर पर्वतथी पुंडरीकनाम महाद्रहथी त्रण मोटीनदी बहेछे । सुवर्णकूला रक्ता रक्तवती ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी पूर्वदिशि शीतामहानदी थी उत्तरदिशि त्रण अतर नदीकही तेकहेछे । ग्राहवती द्रहवती पकवती ॥ जबूद्वीपमा मेरुथी पूर्वदिशि शीता महानदी थी दक्षिणदिशि त्रण अतरनदी कही तेकहेछे । तप्तजला मत्तजला उन्मत्तजला ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी पश्चिमदिशि शीतोदा महानदीथी दक्षिणदिशि त्रण अंतर नदी कही ते कहेछे । क्षीरोदा सिंहश्रोता अंतोवाहिनी ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी पश्चिमदिशि शीतोदा महानदीथी उत्तरदिशि त्रण अंतरनदी कही

तामाह ॥ तिहीत्यादि ॥ सण्टं केवल देशइतिभाग: पृथिव्यारत्नप्रभाभिधानायाइति ॥ अहेत्ति ॥ अध: ॥ ओरालित्ति ॥ उदारा: बादरानिपतेयु विश्रसा परिणामा त्ततोविचटेयु रन्यतोवागत्य तत्नलगेयु यं ग्रमुत्तमहोपलवत् ॥ तएणति ॥ ततस्तेनिपतन्तो देशंपृथिव्याश्चलयेयुरिति पृथिवीदेशश्चलेदिति म होरगोव्यतरविशेष: ॥ महिड्डिए ॥ परिवारादिना यावत्करणात् ॥ महज्जुइए॥ शरीरादिदीप्त्या ॥ महाबले॥ माणतो महानुभागे वैक्रियादिकरणतो ॥ म

खीरोदा सीहसोया अंतोवाहिणी । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीउदाए महाणईए उत्तरेणं तउअंतरणईउ पसत्ता तंजहा उम्मिमालिणी फेणमालिणी गम्भीरमालिणी । एव धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धेवि अकम्मभू मीउ आढवेत्ता जाव अंतरणदीउत्ति णिरवसेस भाणियव्वं जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे तहेव णिरव सेसं भाणियव्वं । तिहिंठाणेहिं देसेहिंपुढवीचलेज्जा तंजहा अहेणंमिमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उरालापो ग्गलाणिचलेज्जा तएणं ते उरालापोग्गलाणिवत्तमाणा देसंपुढवीए चलेज्जा महोरएवामहिड्डिए जाव महे

तेकहेळे । ऊर्मिमालिनी फेनमालिनी गंभीरमालिनी ॥ एम धातकीखंडद्वीपें पूर्वार्द्धमा अकर्मभूमिथी माडीने अंतरनदी लगें विशेष रहित सघलुं कहिवुं यावत् पुष्करवर द्वीपार्द्धमां पश्चिमार्द्धमा पणि तिमज विशेष रहित जाणवु ॥ त्रणप्रकारे देशथी पृथ्वी चलें हालें ते कहेळे । हेठे आ रत्नप्रभा पृथ्वीनेविषे औदारिक पुदगल विश्रसा परिणत बीजलीथी आवीने पडे जिम ऊंचाथी मोटो पाखाण हेठे पडे तिम आवी पडे ति वारें औदारिक पुदगल पळतांथकां देशथी पृथ्वी चले हालें ॥ महोरग ते व्यंतर विशेष मोटी रिद्धिनो धणी यावत् मोटा सुखनुं धणी आ

हेसक्खे ॥ मह्रेयइत्याख्यायस्येति उम्मग्गनिमग्गिका मुत्पतनिपतां कुतोपि दर्प्पादेः कारणात् कुर्व्वन्देशंपृथिव्याश्चलयेत् सचचलेदिति ॥ २ ॥ नागकुमाराणां सुपर्णकुमाराणाञ्च भवनपतिविशेषाणा म्परस्परं सङ्ग्रामेवर्त्तमाने जायमानेसति ॥ देसंति ॥ देशश्चलेदिति ॥ इच्चेएहिंइत्यादि ॥ निगममिति २ पृथिव्यादेशस्यचलनमुक्त मधुना समस्तायास्तदाह ॥ तिहीत्यादि ॥ स्पष्टं किन्तुकेवलैवकेवलकल्पा ईषदूनताचेहनविवक्ष्यते अतःपरिपूर्णेत्यर्थः परिपूर्णप्रायाचेति पृथिवीभूः ॥ अहेत्ति ॥ अधो घनवात स्तथाविधपरिणामो वातविशेषोगुप्येत व्याकुलोभवेत्क्षुभ्येदित्यर्थः ततः सगुप्तःसन् घनोदधि तथाविधपरिणाम जलसमूहलक्षण मेजयेत्कम्पयेत् ॥ तएणंति ॥ ततोनन्तर सघनोदधि रेजितःकम्पितःसन् केवलकल्पां पृथिवींचलयेत् साचचलेदिति देवोवा ऋद्धि म्परि

सक्के इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए अहेउम्मज्जणिमज्जियं करेमाणे देसंपुढवीए चलेज्जा णागसुवन्नाणवा संगामंसिवट्टमाणंसि देसपुढवीएचलेज्जा इच्चेएहिंठाणेहिं केवलकप्पा पुढवीचलेज्जा तंजहा अहेणं इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए घणवाए गुप्पेज्जा तएणसे घणवाए गुविएसमाणे घणोदहि मेएज्जा सेघणोदहीए एइए

रत्नप्रभा पृथ्वीमां हेठे दर्पथी उत्पततो ऊंचोथातो निपतनकरतो नीचोथातो तिवारे देशथी पृथ्वी चालै ॥ नागकुमार सुपर्णकुमार भवनपति देवताने मांहोमांहि संग्रामयुद्ध थातां देशथी पृथ्वी चालै ॥ एह त्रण थानकै केवल कल्पा आखी पृथ्वी चालै ते कहैछे । हेठे आ रत्नप्रभा पृथ्वीये घनवातगुंजै व्याकुलथाय तिवारे ते ऊपर घनवात क्षोभपामैं व्याकुलथाय घनोदधिकापते समस्त रत्नप्रभा पृथ्वी चालै ॥ अथवा कोईक महर्द्धिक देवता यावत् महासुखनुं धणी तथारूप श्रमण माहणने पोतानीरिद्धि परिवार दुनति तेज यश बलशरीरनु वीर्यजीवनुं पुरुषा

धारादिरूपां द्युतिंशरीरादेर्यशःपराक्रमकृतांख्याति वलंशारीरं वीर्यञ्जीवप्रभव पुरुषकारंसाभिमानव्यवसायनिष्पन्नफल स्तमेवपराक्रममिति वलवीर्याद्यु
पदर्शनंहि पृथिव्यादिचलनंविना नभवतीति तद्दर्शय न्ताञ्चलयेदिति देवाश्चवैमानिकाइति असुराभवनपतय स्तेषां भवप्रत्ययवैरंभवति अभिधीयतेचभगव
त्या किंपत्तियणं भंते असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्सतिय गोयमा तेसिणं देवाणं भवपच्चइए वेराणुवधेत्ति ततश्च संग्रामः स्यात्तत्रचवर्त्तमाने
पृथ्वीचले त्तत्रतेषां महाच्छायामत उत्पातनिपातसम्भवादिति ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमनमिति देवाःसुरा संग्रामकारितया नन्तरमुक्ता स्तेचदशविधा
इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंश त्पार्षद्यात्मरक्षकलोकपालानीकप्रकीर्णका भियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशइतिवचना त्तन्मध्यवर्त्तिन स्त्रिस्थानकावतारित्वा त्किल्विषि
कानभिधातुमाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ स्फुटं नवरं ॥ किव्विसियत्ति ॥ नाणस्सकेवलीणं धम्मायरियस्सस्सवसाहूणं । माईअवन्नवाई किव्विसियभावणंकुण

समाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा । देवेवामहिड्ढिए जावमहेसक्खे तहारूवस्स समणस्समाहणस्सवा इड्ढिं
जुतिं जसं वलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविचालेज्जा । देवासुरसंगामंसिवा
वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवीचलेज्जा इच्चेएहितिहि । तिविहादेवाकिव्विसिया पन्नत्ता तंजहा तिपलिउवम

स्कार अभिमान पराक्रम तेपौरुष थी ऊपनुं ते देखाडवाने समस्त पृथवीनें चलावे बलवीर्यनुं देखाडवुं पृथवीना चलनविना नथाय ॥ देव वै
मानिक असुर भवनपति तेहने भवप्रत्यय वैरथी माहोमाहि संग्राम प्रवर्त्ततां समस्त पृथवी चलै एह सघली पृथवी चालै ॥ त्रणप्रकारे कि
लिवष देवता कहिया किलिवष ते चांडाल सरिखा । तेकहेछे । त्रण पल्योपमना आऊखाना । त्रण सागरोपमना आऊखाना । तेरे साग

इत्ति ॥ १ ॥ एवंविधभावनोपात्तं किल्बिषपाप मुदयेविद्यते येषान्तेकिल्बिषिका देवानाम्मध्ये किल्बिषिका: पापा अथवा देवाश्चते किल्बिषिकाश्चेति दे वकिल्बिषिका मनुष्येषुचण्डालाइवा स्पर्शा ॥ उप्पि ॥ उपरि ॥ हिठ्ठति ॥ अधस्तात् ॥ सोहम्मीसाणेसुत्ति ॥ षष्ठ्यर्थेसप्तमी देवाधिकारायात ॥ सक्केत्यादि ॥

ठिईया तिसागरोवमठिईया तेरससागरोवमठिईया । कहिणंन्नते तिपलिउवमठिईया देवा किब्भिसिया परिवसंति उप्पिजोइसियाणं हिठि सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु एत्थणं तिपलिउवमठिईयादेवा किब्भिसिया परिव संति । कहिणं न्नंते तिसागरोवमठिईयादेवाकिब्भिसिया परिवसंति उप्पिंसोहम्मीसाणाणंकप्पाणं हेठिंस णंकुमारमाहिदकप्पेसु एत्थणं तिसायरोवमठिईया देवा किब्भिसिया परिवसंति । कहिणंन्नते तेरससागरो वमठिईयादेवाकिब्भिसिया परिवसंति उप्पिं बंन्नलोयस्सकप्पस्स हिठिं लंतगेकप्पे एत्थण तेरससागरोवमठि ईया देवकिब्भिसिया परिवसंति । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरणो बाहिरपरिसाए देवाणं तिन्निपलिउवमाइं

रोपमना आऊखाना ॥ शिष्य पूछेछे हेन्नगवन् किहां ते त्रण पल्योपमना आऊखाना किल्विष देवता बसैछे । ऊंचा ज्योतिसीथी सौधर्म ई शान देवलोकथी हेठे ए ठिकाणे एक पल्योपमना आऊखाना किल्विष देवता बसैछे ॥ हेन्नगवन् किहां त्रण सागरोपमना आऊखाना किल्वि ष देवता बसैछे । ऊचा सौधर्म ईशान देवलोकथी हेठा सनत्कुमार माहेंद्र देवलोकथी एहथानकै त्रण सागरोपमनी स्थितिना देवता बसैछे ॥ किहां न्नगवंत तेरे सागरोपमनी थितिना देवता बसैछे ऊचा पाचमां ब्रूम्ह देवलोकथी हेठा छठा लांतक देवलोकथी एहथानकै तेरे सागरोपम

सूत्रत्रय सुगममिति देवीना मनन्तरं स्थितिरुक्ता देवीत्वञ्च पूर्वभवे सप्रायश्चित्तानुष्ठानाद्भवतीति प्रायश्चित्तस्य तद्वताञ्च प्ररूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय सुगमं केवल ॥ नाणेत्यादि ॥ ज्ञानाद्यतिचारशुद्ध्यर्थं यदालोचनादिज्ञानादीनावा योतिचार स्तज्ज्ञानप्रायश्चित्तादि तत्राकालाविनयाध्ययना दयो ष्टावतिचारा ज्ञानस्य शङ्कितादयो ष्टौदर्शनस्य मूलगुणोत्तरगुणविराधनारूपा विचित्रा श्चारित्रस्येति ॥ अणुग्घाइमत्ति ॥ उद्घातो भागपात स्तेन निर्वृत्त मुद्घातिम लध्वित्यर्थः यतउक्त अद्धेणछिन्नसेसं पुव्वजेणतुसजुयकाओ दिज्जाइलहुयदाण गुरुदाणतत्तियंचेवत्ति ॥ १ ॥ भावना मासार्द्धेन छिन्नो जातानि पञ्चदशदिनानि ततोमासापेक्षया पूर्वतप. पञ्चविंशतितम तदर्द्धं सार्द्धद्वादशक न्तेनसयुतं मासार्द्धं ञ्जातानि सप्तविंशतिर्दिनानि सार्द्धानीत्येव

ठिई पस्पत्ता । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरस्रो अभिंतरपरिसाए देवीणं तिस्रि पलिउवमाइं ठिई पस्पत्ता । ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरस्रो बाहिरए परिसाए देवीण तिस्रिपलिउवमाइ ठिई पस्पत्ता । तिविहे पाय च्छित्ते पस्पत्ते तंजहा णाणपायच्छित्ते दसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते । तउ अणुग्घाइमा पन्नत्ता तं०

नी स्थितिना किल्विष देवता वसैछे ॥ शक्र देवेंद्र देवताना राजानी बारली पर्षदाना देवतानो त्रण पल्योपमनुं आउखो कहियो ॥ शक्र देवेंद देवतानां राजानी अभ्यतर पर्षदानी देवीनो त्रण पल्योपमनुं आउखो कहियो ॥ ईशान देवेंद्र देवतानां राजानी बाहिरनी पर्षदाना देवतानुं त्रण पल्योपमनु आउखो कहियो ॥ त्रणप्रकारे प्रायश्चित्त कहियो तेकहैछे । नाण प्रायश्चित्त काले विणए बहुमाणे इत्यादि । दर्शन प्रायश्चित्त तेशका कांक्षादि आठ प्रकारे । चारित्र प्रायश्चित्त ते मूलगुण उत्तरगुणानी विराधना करै ॥ त्रण अनुघातिम साधु कहिया तेकहैछे । जेहने

ङ्कृत्वा यद्दीयते तल्लघुमासदान मेवमन्यान्यपि एतन्निषेधा दनुज्ञातिमतपोगुर्व्विंत्यर्थः तद्योगात्साधवोपिवा तथोच्यन्ते हस्तकर्म्मंआगमप्रसिद्धं तत्कुर्व्वंतः सप्तमी चेयषष्ठ्यर्थां तेनकुर्व्वतइतिव्याख्येय मेतेषांच हस्तकर्म्मादीनां यत्रविशेषियोऽनुज्ञातिमविशेषो दीयते स कल्पादितोवसेय ॥ पारंचियत्ति ॥ पारन्तीर तपसाअ्र पराधस्यां चति गच्छति ततोदीच्यतेयः सपारांचो सएवपाराञ्चिकस्तस्ययदनुष्ठान तच्चपाराचिकमिति दशमंप्रायश्चित्तं लिङ्गच्चेत्रकालतपोभि र्बहिःकरण मितिभाव इहचसूत्रे कल्पभाष्ये इदमभिधीयते आसायणपडिसेवी दुविहोपारचिओसमासेण एक्केक्कमियभयणा सचरित्तेचेवअचरित्ते ॥ १ ॥ सव्वचरित्त भस्सइ केणविपडिसेविपणउएएण अत्यइत्तिट्ठइदोसापरिणामवहारमासज्ज ॥ २ ॥ तुल्लमिविअवराहे परिणामवसेणहोइनाणत्त कल्पइपरिणाममविवितुल्लेअ वराहनाणत्तं ॥ ३ ॥ तत्रआसातकपाराचिकः तित्थयरपवयणसुए आयरिएगणहरेमहड्ढीए एतेआसायते पच्छित्तेमग्गणाहोइत्ति ॥ १ ॥ तत्रसव्वेआ सायंतेपावइपारचियंठाणंति ॥ इहचसूत्रे प्रतिसेधकपारांचिकएव त्रिविधउक्त स्तदुक्त पडिसेवणपारंचिय तिविहोसोहोइआणुपुव्वीए दुठ्ठेय १ पमत्तेय २ नेयव्वोअन्नमन्नेय ॥ १ ॥ तत्रदुष्टोदोषवान् कषायतोविषयतश्च पुनरेकैकोद्विधा स्वपचविपचभेदात् उक्तंच दुविहोयहोइदुठ्ठोइ कसायदुठ्ठोयविसयदुठ्ठोय दु विहोकषायदुठ्ठो सपक्खपरपक्खचउभगो ॥ १ ॥ तत्रस्वपचे कषायदुष्टोयथा शर्षपनालिकाभिधानशाकभजिकाग्रहणकुपितो म्हताचार्यदन्तभञ्जकसाधुः

हत्थं कम्मं करेमाणे मेहुणसेवमाणे राईभोयणंभुंजमाणे । तओ पारंचिया पन्नत्ता तंजहा दुठ्ठेपारंचिए पम

प्रायश्चित्त तप नपामैं अयोग्य । हस्तकर्म करतो हस्तें कदर्पनी कुचेष्टा करतो । मैंथुन स्त्रीसेवा करतो स्त्रीसुं भोग करतो । रात्रि भोजन कर तो रात्रिये जीमतो ॥ त्रण पारंचिक तपेकरी अपराधनुं पारपामैं ते पारचिक दशमुं प्रायश्चित्त तेकहैछे । दुष्ट पारंचिक तेक्रोध दुष्ट पारचिक

विषयदुष्टस्तुसाध्वीकामुक स्तत्रचोक्तं लिंगेणलिंगिणीए संपत्तिंजोनिगच्छइपावो सव्वजिणाणंजाव संघोवासाइओतेण ॥ १ ॥ पावाणंपावयरोदिट्ठिफासो विसोनकप्पतिहु जोजिणपुंगवमुद्दं नमिऊणतमेवधरिसेइत्ति ॥ २ ॥ संसारमणवयग्ग जाइजरामरणवेयणापउरं पावमलपडलछन्ना भमंतिमुद्दाधरिसगे णति ॥ ३ ॥ परपक्षकषायदुष्टस्तु राजवधको द्वितीयोराजाग्रमहिष्यधिगतेति उक्तंच जोयसलिगेदुठो कषायविसएहिरायवहगोय रायग्गमहिसिप डिसे वश्रोयबहुसोपयासोय ॥ १ ॥ प्रमत्तः पञ्चमनिद्राप्रमादवान् मासाश्रिप्रव्रजितसाधुवदिति अयच सद्गुणोपित्याज्यइति आहच अविकेवलमुप्पाडि णय लिगेदिइअणइसेसीसे देशवयदंसणवा गेणहअणिच्छेपलायति ॥ १ ॥ तथा अन्योन्यपरस्पर मुखपायुप्रयोगतो मैथुनकुर्व्वं न्पुरुषयुगमितिशेषः उच्यत्ते आसयपोसयसेवी केविमणस्सादुवेयगाहींति तेसिंलिगविवेगोत्ति ॥ १ ॥ आसेवितातिचारविशेषः सन्ननाचरिततपो विशेषः तद्दोषोपरतोपिमहाव्रतेषु ना वस्थाप्यते नाधिक्रियतइति अनवस्थाप्यं तदतिचारजात तच्छुद्धिरपिचा नवस्थाप्यमुच्यतइति नवमंप्रायश्चित्तमिति तत्रसाधर्म्मिकाः साधव स्तेषा सत्कस्यो त्कृष्टोपधिशिष्यादेर्वा बहुशोवा प्रद्विष्टचित्तोवा ॥ तेणति ॥ स्तेयचौर्य्यं कुर्वन् तथा अन्यधार्म्मिकाः शाक्यादयोग्टहस्थावातेषा सत्कस्योपध्यादेः स्तेयकुर्वन्निति

त्तेपारंचिए अणमखंकरेमाणेपारंचिए। तउ अणवठया पन्नत्ता तंजहा साहम्मियाणंतेणंकरेमाणे अणधम्मि

बीजो विशय दुष्ट पारंचिक गुरुये जाजी खाधी तेमांटे मूंआं पछे चेले दांत पाड्या विषयदुष्ट ते साध्वीनां जोगनें बाले एह बेने पारंचिक प्राय श्चित्त आवे पारंचिक ते देश क्षेत्रकाल तप प्रमुखे गच्छथी अलगो करवो ॥ प्रमाद प्रायश्चित्त पाचमी थीणद्धी निद्रावत प्रमादीने माहोमाहि बे पुरुष मैथुन करे मुखबुंधनादि तेहने पारचिक प्रायश्चित्त आवे ॥ त्रणने अनवस्थाप्य नवमुं प्रायश्चित्त ते दोष सहितने आवे तेकहेछे साधर्मी ।

तथा हस्तेनताडन,हस्तताल सम्दलमाणोददन् यष्टिमुष्टिलकुटादिभि र्मरणादिनिरपेक्षआत्मनःपरस्यवा प्रहरन्निति भाव उक्तंच उक्कोसबहुसोवा पदुट्ठ चित्तोवलेणियकुणइ पहरइजोयसपक्खे निरवेक्खोघोरपरिणामोत्ति ॥ १ ॥ अथवा ॥ अत्थादाणंदलमाणोत्ति॥ पाठः तत्रार्थादान द्रव्योपादानकरण अष्टांग निमित्त तद्ददन्प्रयुजानइत्यर्थः अथवा ॥ हत्यालबदलमाणेत्ति ॥ पाठस्तत्र हस्तालबइय हस्तालवस्तहस्तालबददन् अशिवपुररोधादौ तत्प्रशमनार्थं मभि चारुकमन्त्रविद्यादिप्रयुजानइत्यर्थ. पूर्वोक्तप्रायश्चित्त प्रव्राजनादियुक्तास्य भवति तानिचायोग्यनिरासेन योग्यानाविधेयानीति तदयोग्यान्निरूपयन् सूत्रषट्क माह ॥ तओइत्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तु पण्डक नपुसक तश्चलक्षणादिनाविज्ञायपरिहर्त्तव्य लक्षणानिचास्य महिलासहावोसरवन्नभेओ मेढनहतमउई्य वाया ससद्दगंमुत्तमफेणगच एयाणिछपडगलक्खणाणि ॥ १ ॥ तथा वातोस्यास्तीतिवातिकः यदा स्वनिमित्ततोन्ययावा मेहनकषायितभवति तदानशक्तो

याणं तेणंकरेमाणे हत्यतालंदलयमाणे । तओ णोकप्पंति पव्वावित्तए तंजहा पंडए वाइए कीवे । एवं मुंडावे

साधु तेहनी उत्कष्टी उपधि तथा शिष्यादि तेहनी चोरीना करनारनें अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त आवे । अन्यमती शाक्यादि दर्शनी तेहनी जे उप धि प्रमुख वस्तु तेहनी चोरीकरे तेहने । तथा हस्तताल देतानें मुंठे मुंठे लाकडीये आतमानें प्रहार करताने परनें पणि मरणनी अपेक्षा नकरे त्रण जणाने नकल्पे प्रव्रज्या दिक्षादेवी तेकहेछे । पंडक ते नपुसक जन्मथी । व्याधियोरोगी अथवा वातिक नपुंसक असमर्थ एह सर्व नपुंसकना भेदछे तथा एक दृष्टिनपुसक वस्त्ररहित स्त्रीयादिकने देखी पुरुषचिह्न गलें । एक शब्दनपुंसक सुरतनो शब्द शाम्भली गलें । एक निमंत्रणा नपुसक एकाते स्त्रियादिके तेडयोथको वृतराखी नसके ॥ एहने कदाचित दीक्षादीधी तो मुंडवो लोचकरवुं नकल्पे । एम आचारादि सीखाववुं

ति योवेदंधारयितुं यावन्नप्रतिषेवाक्षता सवातिकइति अयच्च निरुद्धवेदो नपुसकतयापरिणमति क्वचित्तु ॥ वाहियत्ति ॥ पाठ स्तत्रव्याधितोरोगीत्यर्थ. तथा क्लीवोऽसमर्थः सचचतुर्धा दृष्टिक्लोवशब्दक्लोवादिग्धक्लीवनिमन्त्रणक्लोवभेदात् तत्रयस्यानुरागतो विवस्त्राद्यवस्थविपक्षं पश्यतोमेहनगलति सदृष्टि क्लीवः यस्तु सुरतादिशब्द श्रृण्वतः सद्वितोयः यस्तु विपक्षेणानगूढो निमंत्रितोवा व्रतरक्षितुं नशक्नोति सप्रादिग्धक्लोवो निमंत्रितक्लीवश्चेति चतुर्विधोप्यय निरोधेन नपुसकतयापरिणमतीति वातिकक्लीवयोस्तु परिज्ञान तयोस्तम्भिनादीनांवा कथनादेरिति विस्तरस्तत्र कल्पादेरवसेयः एतेचो त्कटवेदतया व्रतपालनासहिष्णवइति नकल्पन्ते प्रव्राजयितु प्रव्राजकस्याप्याज्ञाभगेन दोषप्रसङ्गादित्युक्तंच जिणवयणेपडिकुट्ठ जोपव्वावेइलोभदोसेण चरणट्ठिओतवस्सी लोवेइतमेवउवचरित्तंति ॥ १ ॥ इहत्रयी प्रव्राज्याऽक्षमा क्लिष्टानकानुरोधा दन्यथान्येपि तेसतियदाह बालेवुड्ढेनपुसेय जडेकीवेयवाहिए तेणेरायावगारोय उम्मत्तेयश्रदंसणे ॥ १ ॥ दोसेदुट्ठेअमूढेअ अणत्तोजुंगिएइय उव्वद्धएयभयए सेहनिप्फेडियाइय ॥ २ ॥ गुव्विणीबालवच्छाय पव्वावेश्रोनकप्पईत्ति ॥ १ ॥ अदंसणोअंधः अणत्तोन्टणपीडितः जुंगिओजात्यंगहीनः उव्वद्धओ विद्यादायकादिप्रतिजागरकः सेहनिप्फेडिओ अपहृतइति एवमित्यादि यथैते प्रव्रा जयितु नकल्पन्ते एवमेतएव कथंचित् छलितेन प्रव्राजिताअपिसंतो मुडयितु शिरोलोचेन नकल्पंते उक्तंच पव्वाविश्रोसियत्ति [यःस्यादित्यर्थः] मुंडा वेउंअणायरणजोगो अहवामुंडावित्ते दोसाअणिवारियापुरिमत्ति ॥ १ ॥ एवशिक्षयितु प्रत्युपेक्षणादिसामाचारीं ग्राहयितु तथा उपस्थापयितुं महाव

त्तए सिक्खावेत्तए उवट्ठावेत्तए संभुंजित्तए संवासित्तए ।

नकल्पें । पच महाव्रत थापवा नकल्पे । उपधि आहारनुं संभोग भागकरवुं आपवुं नकल्पे । पासे बेसवुं रहवु कांइनथी सूझे जेमाटे तेहनी

तेषु व्यवस्थापयितु तथा सम्भोक्तु मुपध्यादिनाएव मनाभोगात् संभुक्तान् सम्बासयितुं आत्मसमीपे आसयितुं नकल्पंतइति प्रक्रमतइति कथंचि त्संवासि ताअपि वाचनाया अयोग्या नवाचनीया तानाह ॥ तओइत्यादि ॥ सुगम नवर नवाचनीयाः सूत्रनपाठनीया अतएवार्थमप्यश्रावणीया सूत्रादर्थस्य गुरुत्वात् तत्राविनीत सूत्रार्थदातुर्वन्दनादिविनयरहित तद्वाचनेहिदोषा. यतउक्त इहरहविनाणघभ्भइ अविणोओलंभिओकिसुसुएण माणठ्ठेनासिहिंइ ख एवखारोवसेगोओ ॥ १ ॥ गोजूहस्सपडागा सयपलायस्सवड्ढयइवेग दोसोदएयसमण नहोइननियाणतुल्लंच ॥ १ ॥ निदानतुल्यमेवभवतीत्यर्थ. विणयाहीया विज्जा देइफलइहपरेयलोगमि नफलइअविणयगहिया सस्साणिवतोयहीणाइति ॥ १ ॥ तथाविकृतिप्रतिबद्धो घृतादिरसविशेषगृद्धो ऽनुपधानकारीति भाव' इहापिदोषएव यदाह अतवीनहोइजोगी नयफलएहिच्छियफलविज्जा अविफलतिविउलमगुण साहणहीणाजहाविज्जत्ति ॥ १ ॥ अव्यवसित म नुपशांतं प्राभृतमिवप्राभृत नरकपालकौशलिकपरमक्रोधो यस्यसोव्यवसितप्राभृत. उक्तंच अप्पेविपारमाणि अवराहेवयइखामियतच बहुसोउदीरयतो अविओसियपाहुडोसखडुत्ति ॥ १ ॥ पारमाणि परमक्रोधसमुद्घातं व्रजतीतिभाव: एतस्य वाचने इहलोकत स्त्यागो ऽस्यप्रेरणाया कलहनात् प्रातदेव

तउ अवायणिज्जा पण्णत्ता तंजहा अविणीए विगइपडिबद्धे अविउसियपाहुडे ।

संगतिथी चारित्र नपाले ॥ त्रण अवाचनीय एतलें वाचना देवाने अयोग्य कहिया तेकहेछे । अविनीत वंदनादि विनय रहितने सूत्र जणाववूं नथी । विगय घृतादिकरस प्रतिबद्ध तेहमा गृद्ध ते उपधानादि तप नकरिसके तेमाटे एचारित्र पालवा अयोग्य । अव्यवसित प्राभृत ते महा क्रोधी घणी रीसचढै तेपणि अवाचनीय जणावाने अयोग्य एह त्रणने दीधुं श्रुत निष्फल थाय ऊपर खेतमा जिम बीज ॥ त्रण वाचना देवाने

ताछलमाच परलोकतोपित्याग' तत्र श्रुतस्य दत्तस्य निष्फलत्वा दूषरक्षिप्तबीजवदित्याहच दुविहोउपरिचाओ इहचीयणकलह १ देवयाछलणं २ परलोगमियअफल खित्तपिवजसरेवीयति ॥ १ ॥ एतद्विपर्ययसूत्र सुगम श्रुतदानस्या योग्याउक्ता इदानींसम्यक्तस्याप्ययोग्यानाह ॥ तओइत्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तु दुःखेनकृच्छ्रेण सज्ञाप्यन्ते प्रज्ञाप्यन्ते बोध्यतइति दुःसज्ञाप्या स्तत्रदुष्टो द्विष्टस्तत्वप्रज्ञापकवाप्रति सचाप्रज्ञापनोयो द्वेषणोपदेशाप्रतिपत्तेः एवमूढो गुणदोषानभिज्ञ व्युद्ग्राहितः कुप्रज्ञापकदृढीकृतविपर्यास सोप्युपदेश नप्रतिपद्यते उक्तञ्च पुव्वकुग्गाहियाकेइ बालापडियमाणिणो णेच्छंतिकारणसोउ दीवजाएजहानरेत्ति ॥ १ ॥ एतेषाचस्वरूप कलपालकथा कोशा श्रावसेयमिति एतद्विपर्ययस्तान् सुसज्ञाप्यतयाह ॥ तओइत्यादि ॥ स्फुटमिति ॥ उक्ता. प्रज्ञा

तओ कप्पंतिवाइत्तए तंजहा विणीए अविगइपडिबद्धे विओ
सियपाहुडे । तओ दुसन्नप्पा पन्नत्ता तंजहा दुट्ठे मूढे वुग्गा
हिए । तओ सुसन्नप्पा पन्नत्ता तजहा अदुट्ठे अमूढे अवुग्गाहि

श्रुत भणाववाने कल्पे सूझे तेकहेछे । विनीत विनयवंत । विगयमा गृद्धनथी रसनुं लोलुपनथी तप उपधान करवाने समर्थ । व्यवसित प्राभृत क्रोधरहित क्षमावत ते भणाववा योग्य नाण आपवा योग्य ॥ हिवे सम्यक्त योग्य कहेछे । त्रण दुखथी समझावा योग्यछे कष्टथी समझावा योग्य उपराठा द्वेषभरे तेकहेछे । दुष्ट द्वेषी तत्वना कहनारने । मूढ ते गुणदोषनुं अजाण । व्युदग्राहित अन्यमतीये पोतानुमत समझावी दृढ कीधु एहने समझावु कष्टथी थाय समझावी नसके ॥ त्रणने सुखथी धर्म समझावी सके तेकहेछे । द्वेष रहितने । तत्व अतत्वना जांणने । अ

पनाहीः पुरुषाः अधुना तत्रस्थापनीयवस्तूनि त्रिस्थानकावतारीख्याह ॥ तत्रोमंडलिएत्यादि ॥ मण्डलञ्चक्रवाल न्तदस्तियेषाते माण्डलिकाः प्राकारवल यवदवस्थिताः मानुषेभ्यो मानुषक्षेत्राद्वोत्तरतः परतोवर्त्ती मानुषोत्तरइति तत्स्वरूपञ्चेद पुक्खरवरदीवड्ढ परिक्खिवइमाणुसुत्तरोसेलो पायारसरिसरूवो विभयन्तोमाणुसलोग ॥ १ ॥ सत्तरसंएगवीसाइ जोयणसयाइसोसमुव्विडो चत्तारियतीसाइं मूलेकोसचओगाढो ॥ २ ॥ दसवीसाइअहेवि च्छिन्नोहोइ जोयणसयाइ सत्तयतेवीसाइ त्रिच्छिन्नोहोइमज्झम्मि ॥ ३ ॥ चत्तारियचउवीसे वित्थारोहोइउवरिसेलस्स अड्ढाइज्जेदीवे दीयसमुद्देअणुपरीइत्ति ॥ ४ ॥ तथा जंबुद्दीवो १ धायइ २ पुक्खरदीवोय ३ वारुणिवरोय ४ खीरवरोचियदीवो ५ घयवरदीवोय ६ खोयवरो ७ ॥ १ ॥ नंदीसरोय ८ अरुणो ९ अरुणो वाओय १० कुंडलवरोय ११ ॥ तहसख १२ रुयग १३ भुयवर १४ कुसकुचवरो १६ तओदीवो ॥ १ ॥ इति क्रमापेक्षया एकादशेकुण्डलवराख्ये द्वीपे प्राका रकुण्डलाकृतिः कुण्डलवरइति तद्रूपमिद कुण्डलवरस्समज्झे णगुत्तमोहोइकुंडलोसेलो पागारसरिसरूवो विभयतोकुंडलंदीव ॥ १ ॥ बायालीससहस्से उ व्विड्डोकुंडलोहवइसेलो एगचेवसहस्सं धरणियलमहेसमोगाढो ॥ २ ॥ दसचेवजोयणसए बावीसेवित्थडोयमूलम्मि सत्तेवजोयणसए बावीसेवित्थडोमज्झे ३ ॥ चत्तारिजोयणसए चउवीसेवित्थडोउसिहरतलेत्ति ॥ तथा त्रयोदशे रुचकाख्ये द्वीपे कुण्डलाकृतो रुचकइति एतस्यलिदस्वरूप रुयगवरस्सउमज्झे नगु

ए । तउ मंडलियपव्वया पण्णत्ता तंजहा माणुसुत्तरे कुंडलवरे रुयगवरे । तउ महइमहालया पण्णत्ता तंजहा

न्यमतीये त्ररमाव्योनथी तेहनेधर्म सुखथी समझावीसके ॥ त्रण पर्वत मंडलीक कोटनीपरें चक्रवाल वलय सरिखा कहिया तेकहेछे । मानुषोत्तर पर्वत पुष्करार्द्धने फरतोछे । कुंडल पर्वत मडलाकारे कुंडलद्वीपमांछे । रुचक पर्वत तेरमा रुचकवर द्वीपमांछे एह त्रण मोटा पर्वत कहिया ॥

त्तमोहोद्दपव्वओरुयगो पागारसरिसरूवी रुयगंदीवंविभयमाणो ॥ १ ॥ रुयगस्सयउस्सेहो चउरासीइंभवेसहस्साइं एगचेवसहस्सं धरणियलमहेसमोगाढो २ ॥ दसचेवसहस्साखलु बावीसाजोयणाणवोधव्वा मूलमियविक्खंभो सोहोओरुयगसेलस्स ॥ ३ ॥ तथा मध्यविस्तारोऽस्य सप्तसहस्राणि द्वाविंशत्यधिकानि शिरोविस्तारस्तु चत्वारिसहस्राणि चतुर्विंशत्यधिकानीति मानुषोत्तरादयो महांतउक्ताइति महदधिकारा इतिमहतआह ॥ तओमहइत्यादि ॥ व्यक्त केवल मतिमहांतश्चते आलयाश्चाश्रयाश्रतिमहालया महांतश्चते अतिमहालयाश्चेति महतिमहालयाः अथवा लयइत्येतस्य स्वार्थिकत्वात् महातिमहात इत्यर्थ. द्विरुच्चारणञ्च महच्छब्दस्य मन्दरादीना सर्वगुरुत्वख्यापनार्थ अव्युत्पन्नोवायमिति महदर्थंवर्त्ततइति ॥ मंदरेसुत्ति ॥ मेरूणामध्ये जम्बूद्वीपकस्य सा तिरेकलक्षयोजनप्रमाणत्वा च्छेषाणा चतुर्णां सातिरेकपञ्चाशीतियोजनसहस्रप्रमाणत्वा त्तेषा तस्यच क्रमेण किञ्चिन्न्यूनाधिकरज्जुपादप्रमाणत्वादिति ब्र ह्मलोकस्तुमहान् तत्प्रदेशे पञ्चरज्जुप्रमाणत्वा ल्लोकविस्तरस्य तत्प्रमाणतयाचविवक्षितत्वात् ब्रह्मलोकस्येति अनन्तर ब्रह्मलोकस्य कल्पउक्तइति कल्पशब्दसाध र्म्यात् कल्पस्थितिन्त्रिधाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वय कण्ठ्य केवल समानि ज्ञानादीनि तेषा मायोलाभः समायः सएवसामायिक सयमविशेष स्तस्य तद्दे

जंबूद्दीवएमंदरे मंदरेसु सयम्भुरमणेसमुद्देसमुद्देसु बंभलोएकप्पेकप्पेसु । तिविहा कप्पठिई पन्नत्ता तंजहा

वली त्रण महामोटा आलय कहिया तेकहेछे । जबूद्वीपमा मेरुछे ते सघला मेरुथी मोटो बीजा चार मेरु पंच्यासी हजार योजननाछे अनें जबूद्वीपनो मेरु लाख योजन ऊचोछे तेमाटे मोटो । असख्याता समुद्रमा छेहलो स्वयभूरमण समुद्र मोटो बेपासे थईने अर्द्धराजनुछे । बारे देवलोकमां ब्रम्ह पाचमु देवलोक तेमोटुं पांचराज पिहुलोछे तेमाटे ॥ त्रणप्रकारे कल्पशब्दना सदृश पणाथी कल्पस्थिति कही ते कहेछे । कल्प

ववाकल्पः कारणमाचारो यथोक्त सामर्थ्यं वर्णनायाञ्च करणेच्छेदनेतथा औपम्येचाधिवासेच कल्पशब्दंविदुर्बुधाइति ॥ १ ॥ सामायिककल्पः सचप्रथमचरमती र्थयोः साधूना मल्पकाल श्छेदोपस्थापनीयसद्भावात् मध्यमतीर्थेषु महाविदेहेषुच यावत्कथिकः छेदोपस्थापनीयाभावा त्तदेव न्तस्यावस्थिति मर्यादा सामा यिककल्पस्थितिः साच शय्यातरपिण्डपरिहारे चतुर्यामपालने पुरुषज्येष्ठत्वे वृहत्पर्यायस्ये तरेण वन्दनकदानेच नियमलक्षणा शुक्लप्रमाणोपेतवस्त्रापेक्षया यदचेलत्व तथा धाकर्मिकभक्ताद्यग्रहणे १ राजपिण्डाग्रहणे २ प्रतिक्रमणाकरणे ४ मासकल्पकरणे ५ पर्युषणाकल्पकरणेवा नियमलक्षणाचेति उक्तंच सि ज्जायरपिंडेया १ चाउज्जामेय २ पुरिसजेट्ठेय ३ किइकम्मस्सयकरणे चत्तारिअवट्ठियाकप्पा ॥ १ ॥ अचेलक्कु १ देसिय २ सपडिक्कमणेय ३ रायपिंडेय ४ मास ५ पज्जोसवणा ६ छप्पेअणवट्ठियाकप्पा ॥ १ ॥ तत्रा चेलकत्वमेव दुविहोहोइअचेलो असंतचेलोयसतचेलोय तत्थअसतेहिजिणा सताचेलाभवेसेसा ॥ १ ॥ सीसावेढियपोत्तं नइउत्तरणमिनगायवेंति जुत्तेहिनग्गियम्हि तुरसालियदेहिमेपोत्ति ॥ १ ॥ जुत्तेहिखडिएहि असव्वतणुपाउएहिंनयनिच्च सतेहिंविनि ग्गथा अचे लयाहोंतिचेलेहि इत्यादि तथायः पूर्वपर्यायच्छेदेनोपस्थापनीय मारोपणीय छेदोपस्थापनीय व्यक्तितो महाव्रतारोपणमित्यर्थः तच्च प्रथमपश्चि मतीर्थयोरेवेति शेषाव्युत्पत्ति स्तथैवतत्स्थितिश्चोक्तलक्षणेष्वेव दशसुस्थानकेष्व वश्यपालनलक्षणेति तथाहि दसठाणठिओकप्पो पुरिमस्सयपच्छिमस्सयजिण स्स एसोधुयरयकप्पो दसठाणपइट्ठिओहोइत्ति ॥ १ ॥ अचेलक्कुदेसिय २ सेज्जायर ३ रायपिंड ४ किइकम्मे ५ वय ५ जेट्ठ ७ पडिक्कमणे ८ मास ९ पज्जोसवणकप्पो

सामाइयकप्पठिई छेदोवठावणियकप्पठिई णिव्विसमाणकप्पठिई । अहवा तिविहा कप्पठिई पण्णत्ता

ते आचार कहिये । सामायिक चारित्रनी स्थिति आचार प्रथमचारित्र समजाव । प्रथम पर्यायनुं छेदकरी पंचमहाव्रत आरोपवा ते छेदोपस्थाप

त्ति १० ॥ १ ॥ निर्विशमाना ये परिहारविशुद्धितपो नुचरन्ति परिहारिकाइत्यर्थः तेषां कल्पे स्थिति र्यथा ग्रीष्मशीतवर्षाकालेषु क्रमेणतपो जघन्य चतु र्थषष्टाष्टमादि मध्यम षष्टादी न्युत्कृष्ट मष्टमादीनीति पारणेचा याम एवं पिण्डैषणासप्तकेचा द्वयोरग्रहएवेति पचसु पुनरेकयाभक्त मेकयाचपानक मि त्येव द्वयोरभिग्रहइति उक्तंच दृश्यअठ्ठदसछठ्ठ अठ्ठेवछठ्ठचउरोय उक्कोसमज्झिमजहं न्नगाउवासासिसिरगिम्हे ॥ १ ॥ पारणगेआयाम पंचसुगहोदोसुभि ग्गहोभिक्खेत्ति ॥ १ ॥ निर्विष्टा आसेवितविवक्षितचारित्रा अनुपरिहारिकाइत्यर्थं तत्कल्पस्थितिर्यथा प्रतिदिन मायाममात्रं तपोभिक्षा तथैवेति उक्तंच कप्पठ्ठियाविपइदिण करंतिएमेवचायामति ॥ एतेच निर्विशमानका निर्विष्टाश्च परिहारविशुद्धिका उच्यन्ते तेषांच नवकोगणोभवति तेच एवंविधाः सव्वे चरित्तवंतोउ दसणेपरिनिठ्ठिया नवपुव्विया जहन्नेणं उक्कोसादसपुव्विया ॥ १ ॥ पचविहेववहारे कप्पमिदुविहंमिय दसविहेयपच्छित्ते सव्वेतेपरिणि ठ्ठिया ॥ २ ॥ इत्यादि जिनाः गच्छनिर्गतसाधुविशेषा स्तेषा साधुविशेषाणा कल्पस्थिति जिंनकल्पस्थितिः साचैवं जिनकल्पंहि प्रतिपद्यते जघन्येनापि नवमपूर्वस्य तृतीयवस्तुनिसति उत्कृष्टतस्तु दशसु भिन्नेषु प्रथमेसहनने दिव्याद्युपसर्गरोगवेदना स्वासौ सहते एकाक्येवभवति दशगुणोपेतस्थण्डिलएवो

तंजहा णिविठकप्पठिई जिणकप्पठिई थेरकप्पठिई । णेरइयाणं तउ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा वेउव्विए

नीय चारित्र कल्पस्थिति बीजुंचारित्र प्रथम चरम तीर्थंकरने वारेहोय बावीसने वारे नहोय । निर्विशमान कल्पस्थिति तेपरिहार विशुद्धि चा रित्र जे नवजणा गच्छमाथी नीकली तपकरे ॥ अथवा वली त्रण कल्पस्थिति कही तेकहेछे । निर्विष्ट कल्पस्थिति तेपणि परिहार विशुद्धि चारि त्रज । जिनकल्पस्थिति जिनकल्पी परिहार विशुद्धि पछे जिनकल्पीथाय । अथवा थविर कल्पीमां आवे त्रीजी थविर कल्पस्थिति ॥ कल्पस्थिति

शारादिजीर्णवस्त्रादिव त्यजति सर्वोपधिविशुद्धा अभिनार्या तृतीयपौरुष्यां पिण्डैषणोत्तरा आपन्नाना मेकतरेण निर्हारीनामकल्पेन तस्या मेवौषधं प
टनिनेमिभाटनमिति एव प्रकाराद्येव सुगमत्वयणेत्यादिकात् गाथासमूहात् कल्पोऽसौ द्वयगतश्चेति भणितश्च गच्छमिव निर्माया धीरा जोडिगणियपरमत्था
अगच्छजोगअभिग्गह उवेंतिजिणकप्पियचरित्तंमि ॥ १ ॥ प्रपद्य आचार्यो रनिपत्ते प्रभाना पिण्डैषणानां द्वयो योगे द्वयोमध्ये एकतरस्या गृहीतपरमा
र्थाः थिरबलियातरसूरा निसोगरझाउतेपुरिसमोक्षा वनवीरियमायणा उडासमगपरोसक्षाप्रभोक्यति ॥ २ ॥ स्थविरा आचार्यादयो गच्छप्रतिबद्धा स्तेषां
कल्पस्थितिः स्थविरकल्पस्थिति. साच प्रव्रज्याशिक्षाव्रत मत्यन्तगणपरिवर्धीणामो निष्पत्तोऽनिश्चारी सामाचारीस्थितिचेव ॥ १ ॥ इत्यादिकेति इह च
सामायिकेसतिछेदोपस्थापनीय ततश्च परिहारविशुद्धिकभेदरूप निर्विशमानक तदनन्तरं निर्विष्टकायिक तदनन्तरं जिनकल्प स्थविरकल्पौ वा भवतीति
सामायिककल्पस्थित्यादिकसूत्रयो क्रमोपन्यासइति उक्तकल्पस्थितिव्यतिक्रामिणोपि नारकादिशरीरिणोभवन्तीति तच्छरीरनिरूपणायाह ॥ नेरइयाणमि
त्यादि ॥ दण्डकः कण्ठ्य. किन्तु ॥ एवंसव्वदेवाणति ॥ यथा असुराणां त्रीणि शरीराणि एवनागकुमारादिभवनपतिव्यंतरज्योतिष्कवैमानिकाना एवं ॥
वाउकाइयवज्जाणति ॥ वायूनांहि आहारकवर्जानि चत्वारिशरीराणीति तद्वर्जनमेवपंचेन्द्रियतिरश्चामपि चत्वारि मनुष्याणान्तु पंचापीति तद्दर्शितं

तेयए कम्मए। असुरकुमाराणं तओ सरीरगाचेव एवं सव्वेसिंदेवाणं। पुढविकाइयाणं तओ सरीरगा पणत्ता

जे अतिक्रमे तेनारकीनुं शरीरपामे तेकहेछे । त्रण शरीर नारकीने कह्यिा तेकहेछे । वैक्रिय तेजस कार्मणशरीर ॥ एम असुरकुमार प्रमुखनें
त्रण शरीर कह्यिा तेकहेछे । एम सर्व देवताने व्यंतर ज्योतिषी वैमानिकने । पृथवी कायना जीवनें शरीर कह्यिा तेकहेछे । औदारिक ते

कल्पस्थितिव्यतिक्रामिणश्च प्रत्यनीका अपि भवन्तीतितानाह ॥ गुरुमित्यादि ॥ सूत्राणि षट् व्यक्तानि किन्तु गृणात्यभिधत्ते तत्वमिति गुरुः तं प्रतीत्याश्रि त्य प्रत्यनीकाः प्रतिकूलाः स्थविरो जात्यादिभि रेतत्प्रत्यनीकताचैवं जच्चाईहिंअवसविभसद्ववद्दनयाविउववाए अहिओच्छिद्दप्पेही पगासवादीअणणुलोमो ॥ १ ॥ अहवाविवएएवं उवएसपरस्सदेंतिएवतु दसविहवेयावच्चे कायव्वसयनकुव्वंतित्ति ॥ २ ॥ गतिर्मानुषत्वादिका तत्रेहलोकस्य प्रत्यक्षमानुषत्वलक्षणपर्यायस्य प्रत्यनीक इन्द्रियार्थप्रतिकूलकारित्वा त्पञ्चाग्नितपस्विय दिहलोकप्रत्यनीकः परलोको जन्मान्तर तत्प्रत्यनीक इन्द्रियार्थतत्परो द्विधालोकप्रत्यनीकश्चौर्यादिभि रिन्द्रियार्थसाधनपरः यद्वा इहलोकप्रत्यनीक इहलोकोपकारिणां भोगसाधनादीना मुपद्रवकारी हलोकप्रत्यनीक एव ज्ञानादीना मुपद्रवकारी परलोकप्रत्यनीक उभयेषान्तु द्विधा लोकप्रत्यनीकइति अथवे हलोको मनुष्यलोकः परलोकोनारकादिः उभय मेतदेव द्वितयं प्रत्यनीकतातुतद्वितयप्रक

तंजहा उरालिए तेयए कम्मए । एवं वाउकाइयवज्जाणं जावचउरिंदियाण । गुरुंपडुच्च तउ पडिणीया प० त० आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए थेरपडिणीए । गइंपडुच्च तउ पडिणीया प० तं० इहलोयपडिणीए

जस कार्मण ॥ एम वायु काय छाडीनें जेमांटे वायुकायनें च्यार शरीरहोय यावत् चउरेंद्रीलगे सर्वने त्रण शरीर होय ॥ थविर कल्पस्थिति गुरु नें आश्रे ते अतिक्रमे ते प्रत्यनीकपणे होय तेकहेछे । त्रण प्रत्यनीक कहिया तेकहेछे । आचार्यनुं प्रत्यनीक जे अवर्णवाद बोले । उपाध्यायनुं प्रत्यनीक जे उपाध्यायनुं अवर्णवाद बोलै । थविर त्रण प्रकारें तेहना अवर्णवाद बोले छिद्र पेखे ॥ मनुष्य गतिनी आश्री त्रण प्रत्यनीक कहिया तेकहेछे । आचार्यनुं प्रत्यनीक । उपाध्यायनुं प्रत्यनीक । थविरनो प्रत्यनीक ॥ मनुष्यगति आश्रीने त्रण प्रत्यनीक कहिया ते कहेछे । इहलोक

पणीति कुलञ्चान्द्रादिकं तत्समूहोगण: कोटिकादि स्तत्समूह: सङ्घइति प्रत्यनीकता चैतेषां अवर्णवादादिभिरिति कुलादिलक्षणं चेदं एत्थकुलंविन्नेयं एगाय रियस्ससतईजाओ तिण्हकुलाणमिहोपुण सावेक्खाणगणोहोद ॥ १ ॥ सव्वोविनाणादसण चरणगुणविभूसियाणसमणाण समुदाओपुणसंघो गुणसमुदाओ त्तिकाजण ॥ २ ॥ अनुकपा सुपष्टभ प्रतीत्या श्रित्य तपस्वीक्षपक: ग्लानो रोगादिभि रसमर्थ: शैक्षो ऽभिनवप्रव्रजित एतेह्य नुकम्पनीयाभवन्ति तदकरणा करणाभ्यांच प्रत्यनीकतेति भाव: पर्याय: सच जीवाजीवगत स्तत्रजीवस्य प्रशस्तोऽप्रशस्तश्च तत्र प्रशस्त: क्षायिकादि: अप्रशस्तोविवक्षयौदयिक: क्षायिका दिश्च ज्ञानादिरूप: ततोभाव ज्ञानादिकं प्रत्यनीक स्तेषां वितथप्ररूपणातो दूषणतोवा यथा पाययसुत्तनिवद्ध कोवाजाणेइपणीयकीणेय किवाचरणेणत

परलोयपडिणीए दुहउलोगपडिणीए। समूहंपडुच्च तउपडिणीया पन्नत्ता तंजहा कुलपडिणीए गणपडि णीए सघपडिणीए। अणुकंपंपडुच्च तउ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा तवस्सिपडिणीए गिलाणपडिणीए

तेमनुष्य ञवनुं प्रत्यनीक अग्यानपणे शरीरने कष्टआपे पचाग्निसाधै । परलोक ते जन्मातर तेहनुं प्रत्यनीक इंद्रियार्थ विषय सेवै । तेहथी दु र्गतिमां जाय । इहलोक परलोक बेनुं प्रत्यनीक तेचोरी प्रमुखनुं करनार ॥ समुदाय आश्री त्रण प्रत्यनीक कहिया ते कहेछे । कुलनुं प्रत्यनीक ते एक कुलना एक आचार्यनी परपराना यती । गण प्रत्यनीक त्रणकुल एक समाचारीना तेहनुं समुदाय ते गण । चतुर्विध संघनुं प्रत्यनीक ॥ अथवा नाणादि गुणसहित सर्वसाधु समूह तेसंघ ॥ अनुकपा ञक्ति आश्री त्रण प्रत्यनीक कहिया ते कहेछे । तपस्वीनु प्रत्यनीक तपस्वीना अप गुण बोलै । ग्लान रोगीनु प्रत्यनीक रोगीनें संतापै । शिष्य नवो दीक्षित तेहनु प्रत्यनीक ञक्ति नकरे चेलानी ञक्तिनु लाञ छे ॥ ञाव ते म

दाणेणविणाउकिंचिवदन्ति ॥ १ ॥ सूत्रव्याख्येयं अर्थस्तद्याख्यानं निर्युक्त्यादिः तदुभयं द्वितयमिति तत्प्रत्यनीकता कायाववायतेभिय तेचेवपमायअप्पमाया य मोखाहिगारियाणं जोतिसजोणोहिकिंकज्जमित्यादि ॥ १ ॥ दूषणोद्भावनमिति उक्ताकप्रस्थितिति गर्भजमनुजानामेव तच्छरीरंच मातापितृहेतुकमिति तयोस्तदंगेषु हेतुत्वेविभागमाह ॥ तओपियगेत्यादि ॥ सूत्रद्वय कण्ठ्य केवल पितुर्जनकस्या गान्यवयवा. पित्तगानि प्रायःशुक्रपरिणतिरूपाणीत्यर्थः अस्थिप्र तोत १ अस्थिमिञ्जा अस्थिमध्यरस' २ केशायशिरोजा. श्मश्रुचकूर्चरोमाणिच कक्षादिजातानि नखाग्रप्रतोताः केशश्मश्रुरोमनखमित्येकमेव प्रायःसमानत्वा दिति मात्रगानि आर्त्तवपरिणतिप्रायाणीत्यर्थः मासप्रतीत शोणितरक्त मस्तुलिंग शेषं मेद'पिप्फिसादि कपालमध्यवर्त्तिभेद्यकमित्येके पूर्वोक्तस्थविरकल्प

सेहपडिणीए। ज्ञावंपडुच्च तउ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा णाणपडिणीए दसणपडिणीए चरित्तपडिणीए। सुयपडुच्च तउ पडिणीया पन्नत्ता तजहा सुत्तपडिणीए अत्थपडिणीए तदुभयपडिणीए। तउ पितियगा पन्नत्ता तंजहा अठी अठिमिजा केसमसरोमनहे। तउमाउयगा पन्नत्ता तंजहा मंसे सोणिए मत्थुलिंगे।

नना शुभाशुभ पर्याय आश्रीनें त्रण प्रत्यनीक कहिया तेकहेछे। नाण प्रत्यनीक जे उत्सूत्र प्ररूपै। दर्शन प्रत्यनीक धर्म करतो शंका आणे ॥ मिथ्या जाणे। चारित्र प्रत्यनीक चारित्र पालवाणी स्युं थायछे ॥ सूत्र सिद्धांत आश्रीने त्रण प्रत्यनीक ते कहेछे। सूत्र प्रत्यनीक जेकहे भणवा थी स्युं थायछे। अर्थ प्रत्यनीक खोटू अर्थ कहे। सूत्र अने अर्थ बेनु प्रत्यनीक ॥ पूर्वे कलपस्थिति कही तेगर्भज मनुष्यनेहोय तेमनुष्य शरीर मा त्रण पिताना अग कहिया तेकहेछे। अस्थि तेहाड। हाडनु मध्यरस। बाल दाढी मूछ रोम नख ॥ त्रण माताना अग कहिया। मास

स्थितिप्रतिपन्नस्य विशिष्टनिर्जरा कारणान्यभिधातुमाह ॥ तिहीत्यादि ॥ सुगमं नवर महती निर्जरा कर्मक्षयलक्षणा यस्ससतथा मह प्रशस्त्,मात्यतिकं वापर्यवसान पर्यंवः समाधिमरणतो ऽपुनर्मरणतोवा जीवितस्य यस्य सतथा अत्यन्त शुभाश्रयत्वादिति एव ॥ समणसत्ति ॥ एव मुक्तलक्षण त्रय सद्गति साधु मणसत्ति ॥ मनसा ऋस्खल प्राक्तत्वा देव ॥ सवयसत्ति ॥ वचसा ॥ सकायसत्ति ॥ कायेनेत्यर्थः सकारागमः प्राकृतत्वादेव त्रिभिरपि कारणैरित्यर्थः अथ

तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तंजहा कयाणं अहं अप्पं वा बहुंवा सुयं अहिज्जिस्सामि । कयाणं महमेकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सामि । कयाणं महमपच्छि ममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाउवगए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि । एवसमणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ । तिहिं ठाणेहिं

लोही । मस्तु लिग तेमेदकाल शुंभेचो कहेछे ॥ कल्पस्थितिरहे तेहने निर्जराहोय तेमांटे निर्जरानुं स्वरूप कहेछे । त्रण थानके श्रमणसाधु महानिर्जरा कर्मक्षय मोटो पर्यवसान तेसमाधि मरणादि सुगति साधनते होय तेकहेछे । किवारे हु थोडुं अथवा घणुं श्रुत भणस्युं एहवुं मनमा चिंतवतो महानिर्जरा करे । किवारे हु एकल विहारीनी प्रतिमा द्रव्यथी एकलो भावथी पणि एकलापणुं राग द्वेष रहितपणुं एकपणुं अंगी कारकरी विचरस्युं एम चिंतवतो महानिर्जरा करै । किवारे हुं अपश्चिम मारणांतिक संलेखणा सेवना सेवीस भातपाणीनुं निषेधकरी पा दपोपगमन अणसणकरी कालमरण अणबाछतो एहवो थई विचरीस रहीस एम चितवतो महानिर्जरा करै ॥ एहवुं वचनसहित मनसहित

वा ॥ समनसेत्यादि ॥ प्रधारयन् तत्पर्यालोचयन् क्वचित् ॥ पागडेमाणेत्ति ॥ पाठ स्तवप्रकटयन् व्यक्तीकुर्वन्नित्यर्थः यथाश्रमणस्तथा श्रमणोपासकस्यापि क्षीणिनिर्जराकारणानीति दर्शयन्नाह ॥ तिहीत्यादि ॥ कण्ठ्यम् अनन्तर कर्मनिर्ज्जरोक्ता साच पुद्गलपरिणामविशेषरूपेति पुद्गलपरिणामविशेष मभिधा ॥

समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ तंजहा कयाणमहमप्पंवा बहुयंवा परिग्गहं परिचइस्सामि कयाणं अहं मुंडे जवित्ता अगाराउअणगारियं पव्वयिस्सामि । कयाणं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाकूसणा कूसिए जत्तपाणपडियाइक्खिए पाउवगए कालमणवकंखमाणेविहरिस्सामि । एवं समणसा सवयसा सका यसा जागरमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ । तिविहे पोग्गलपडिघाए प० तंजहा

कायासहित प्रधारयन् प्रगट करतो चितवतो निर्ग्रंथ साधु मोटीनिर्जरानुं धणीथाय मोटुं पर्यवसान समाधिपावे ॥ त्रण प्रकारे श्रमणनुं उपासक तेश्रावक मोटी निर्जरा महापर्यवसाननु धणीथाय तेकहेछे । किवारे हुं थोडो अथवा घणुं परिगृह छाडस्यु एहवुं चितवे । किवारे हुं दीक्षालेईस द्रव्यजावथी मुडथईस गृहस्थावासमुंकी अणगारपणुंलेई प्रवृज्या लेईस एम चितवे । किवारे हु अपश्चिम छेहली मरणनी संलेखना अणसणनी सेवनासहित थको जात पाणीनुं पचखाणकरी पादपोपगमने कालप्रति अणबांछतो एहवोथई विचरिस एहवु चिंतवतो महानिर्जरा करे ॥ मनसहित वचनसहित कायासहित एहवुं प्रगट करतो एहवी जावना जावतो श्रमणोपासक श्रावक मोटीनिर्जरा मोटापर्यवसाननुं धणी थाय ॥ त्रणप्रकारें पुदगल परमाणु प्रमुखनुं प्रतिघात तेस्खलन कहियो तेकहेछे । परमाणु पुदगल बीजा परमाणु पुदगल प्रतिपामीने हणाये

तुमाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ पुद्गलाना मखादीनां प्रतिघातः स्खलन पुद्गलप्रतिघातः परमाणुश्चासौ पुद्गलश्च परमाणुपुद्गलः सतदन्तरंप्राप्य प्रतिहन्येत गते प्रतिघातमापद्येत रूक्षतयावा तथाविधपरिणामान्तरान्नतितः प्रतिहन्येत लोकान्तेवा परतो धर्मास्तिकाया भावादिति पुद्गलप्रतिघातश्च सचक्षुरेव जाना तीति तन्निरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ प्राय' कण्ठ्यम् चक्षुर्लोचन ततद्रव्यतोक्षि भावतो ज्ञानं तदस्यास्तीति सतद्योगा च्चक्षुरेव चक्षुष्मानित्यर्थ. सच त्रि विध श्चक्षुः संख्याभेदा त्तत्रैक चक्षुरस्येत्येकचक्षु रेव मितरावपि छादयतीति छद्म ज्ञानावरणादि तत्रतिष्ठतीति छद्मस्थः सच यद्यप्यनुत्पन्नकेवलज्ञान' सर्वः एवोच्यते तथापीहातिशयवत् श्रुतज्ञानादिविवर्जितो विवक्षितइति एकचक्षुरिन्द्रियापेक्षया देवो विचक्षु श्चक्षुरिन्द्रियावधिभ्यां उत्पन्नमावरणक्षयोपशमेन ज्ञानञ्च श्रुतावधिरूपं दर्शनचावधिदर्शनरूप योधारयति वहति सतथा एवभूतः सः त्रिचक्षु श्चक्षुरिन्द्रियपरमश्रुतावधिभिरिति वक्तव्यस्यात् सहि साक्षाद

परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलंपप्पपडिहंमेज्जा लुक्खत्ताएवापडिहंमेज्जा लोगंतेवापडिहंमेज्जा । तिविहे चक्खू पण्णत्ते तंजहा एगचक्खू विचक्खू तिचक्खू। छउमत्थेणमणुस्से एगचक्खू देवे विचक्खू तहारूवे समणे

गतिनुं प्रतिघात थाय एकथी बीजो हणाये । लूखापणाथी हणाये लूखापणाथी आगोचाली सकेनथी । लोकांतने विषे हणायें परमाणु चालतो लोकातेजाय आगो अलोकमां जाईसकेनथी धर्मास्तिकायना अभावथी ॥ त्रणप्रकारे चक्षुकहियो तेकहेछे । द्रव्यथीचक्षु लोचन ज्ञावथी चक्षु नाण एकचक्षु वेचक्षु त्रणचक्षु । छदमस्थ मनुष्य ते श्रुत नाणादि रहित तेएकचक्षु । द्रव्य नेत्रसहित । देवताने वेचक्षु एक द्रव्यचक्षु बीजो श्रुत अवधि रूपचक्षु । तथारूप श्रमणसाधु उत्पन्नथयो जेनाण और दर्शन तेहनुं धरणहार तेहने त्रणचक्षु कहिये एक द्रव्यनेत्र बीजो परमश्रुतनाण परमाव

यावलोकयति हेयोपादेयानि समस्तवस्तूनि केवलीत्विह नव्याख्यातः केवलज्ञानदर्शनलक्षणचक्षुर्द्वयकल्पनासम्भवेपि चक्षुरिन्द्रियलक्षणचक्षुषः उपयोगाभा वेनासत्कल्पनया तस्य चक्षुस्त्वयं नविद्यत इति कृत्वेति द्रव्येन्द्रियापेक्षयातु सोपि नविरुध्यत इति चक्षुष्मानन्तरमुक्त स्तस्यचाभिसमागमोभवतीति तद्भि भेदेनविभजयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि॥ अभीत्यर्थाभिमुख्येन नतु विपर्यासरूपतया समितिसम्यक् नसंशयतया तथा आमर्यादया गमनमभिसमागमो वस्तुप रिच्छेद इहैवज्ञानभेदमाह ॥ जयाणमित्यादि॥ अइसेसत्ति ॥ शेषाणि छद्मस्थज्ञानान्यतिक्रान्त मतिशेषं ज्ञानन्दर्शन न्तच्च परमावधिरूपमिति सम्भाव्यते केवलस्य नक्रमेणोपयोगो येन तत्प्रथमतयेत्यादि सूत्रमनवद्यं स्यादिति तस्यज्ञानादे रुत्पादस्य प्रथमता तत्प्रथमता तस्याः ॥ उड्ढंति ॥ ऊर्ध्वलोकमभिसमेति समभिगच्छति जानाति ततस्तिर्यगिति तिर्यग्लोक न्तत स्तृतीयेस्थाने अध इत्यधोलोक मभिसमेति एवच सामर्थ्या त्प्राप्तमधोलोको दुरभिगमः क्रमेण पर्य

वा माहणेवा उप्पन्नणाणदंसणधरे सेणंतिचक्खुत्ति वत्तव्वंसिया । तिविहे अभिसमागमे पन्नत्ते तंजहा उड्ढं अहं तिरियं । जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अइसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जइ सेणं तप्पढ

भिनाण एव त्रणचक्षु केवलीनी इहां विवक्षानथी जेमाटे केवली समस्त पदार्थ साक्षात देखेछे ॥ त्रणप्रकारे अभिसमागम कहियो सत्यपणे वस्तु नुं जाणवुं ते अभिसमागम तेकहेछे । ऊर्ध्व ऊचो अधोहेठो तिर्यग् तिरछो ॥ जिवारे तथारूप शुद्धचारित्र युक्त श्रमण माहन तेहनें उत्कृष्टु नाणदर्शन उपजे इहा परमावधि नाणदर्शन जाणवा केवलनाणनी विवक्षानुं संभवनथी केवलनाणनु क्रमथी उपयोगनथी तेमांटे तेपरमावधि प्रथ म उपजता ऊर्ध्वलोकेजाय एतले ऊर्ध्वलोकनें जाणे देखे । तिवारपछी तिरछोलोक देखे जाणे । तिवार पछी अधोलोक तेदुरभिगमछे अधोलोक

न्ताधिगम्यत्वादिति हेश्रमणायुष्मन्निति गौतमामंत्रणमिति अनन्तरमभिसमागमउक्तः सच ज्ञान न्तश्च ऋद्धिरितिवक्ष्यमाणत्वादिति ऋद्धिसाधर्म्याद्दिदाना
ह ॥ तिविहाइड्ढीइत्यादि ॥ सूत्राणि सप्त सुगमानि नवर न्देवस्येंद्रादेः ऋद्धिरैश्वर्यं न्देवर्द्धिं रेवराज्ञश्चक्रवर्त्यादे गणिनो गणाधिपते राचार्यस्येति विमा
नाना विमानलक्षणावा ऋद्धिः समृद्धि र्द्वात्रिंशल्लक्षादिकं बाहुल्य महत्व रत्नादिरमणीयत्वचेति विमानर्द्धिर्भवति च द्वात्रिंशल्लक्षादिक सौधर्मादिषु विमा
नबाहुल्य यथोक्त बत्तीसठ्ठावीसा बारसअठ्ठचउरोसयसहस्सा आरेणबभलोगे विमाणसखाभवेएसा ॥ १ ॥ पचासचत्तछच्चेव सहस्सालतसुक्कसहस्सारे सय
चउरोआणयपा णएसुतिन्निारणच्चुयए ॥ २ ॥ एक्कारसुत्तरंहे ठ्ठिमेसुसत्तुत्तरचमज्झिमए सयमेगउवरिमए पचेवअणुत्तरविमाणत्ति ॥ ३ ॥ उपलक्षणचैतत्
भवननगराणामिति वैक्रियकरणलक्षणाऋद्धि वैक्रियऋद्धि वैक्रियशरीरैर्हि जम्बूद्वीपद्वय मसख्यातान्वा द्वीपसमुद्रान् पूरयन्तीत्युक्तश्च भगवत्या चमरेणभते

मयाए उड्ढमज्झिसमेइ तउतिरियं तउपच्छा ग्रहे ग्रहोलोगेणं दुरज्झिगमे पन्नत्ते समणाउसो । तिविहा इड्ढी
पन्नत्ता तजहा देविड्ढी राइड्ढी गणिड्ढी । देविड्ढी तिविहा पन्नत्ता तंजहा विमाणिड्ढी विगुव्विणिड्ढी परि

पदार्थ दोहिलो जाणिये तेमाटे अनुक्रमे छेहडे जाणवुं कहियो । हेश्रमणायुष्मन् । नाण तेरिद्धिछे तेमाटे रिद्धिकहेछे त्रणप्रकारे रिद्धि कही ।
देवर्द्धि इद्रादिकनी रिद्धि । राजरिद्धि तेचक्रवर्त्यादिकनी । गणि तेआचार्य गच्छाधीश तेहनी रिद्धि ॥ त्रणप्रकारे देवरिद्धिकही ते कहेछे । वि
मानर्द्धि तेवत्तीसलाख विमाननुं आधिपत्य । बीजी विकुर्वणारिद्धि जे वैक्रियरूप करवा इंद्र वैक्रियरूप करे तो जंबूद्वीप बेनें अथवा असख्याता
द्वीप समुद्रभरे एतला वैक्रियरूपकरे एतली शक्तिछे पणि कीधानथी करैनथी करस्येनथी । परिचारणर्द्धि तेदेवागनाथी भोगकरवुं वैक्रियरूप

केमहिड्डिए जाव केवइयचणं पभूविउव्वित्तए गोयमा चमरेणंजाय पभूणं केवलकप्पं जंबुद्दीवंदीवं बहूहिंअसुरकुमारेहिंदेवेहिं देवीहिय आइन्नं जाव करेत्तए अदुत्तरचण एत्तूचमरे जाव तिरियमसंखेज्जदीवसमुद्दे बहूहि असुर कुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइन्न जाव करेत्तए एसणं गोयमाचमरस्स २ अयमेयारूवे विसयमेत्ते बुइए नोचेवणं सपत्तीए विउव्विंसु २ एव सक्के दोविणोवलकप्पे जबुद्दीवेदीवे जावआइण्णेकरेज्जत्ति ॥ परिचारणा कामसेवात दृद्धिः अन्यान्देवानन्यसत्का देवीः स्वकीयादेवीरभियुज्या त्मानंच विकृत्य परिचारयतीत्येव मुक्तलचणेति १ सचित्ता स्वशरीराग्रमहिष्यादिविषया सचेतनव स्तुसपत् अचेतना वस्त्राभ रणादिविषया मिश्रा अलङ्कृतदेव्यादिरूपा २ अतियानं नगरप्रवेश स्तत्रऋद्धि स्तोरणहट्टशोभाजनसम्मर्दादिलचणा निर्याणं नगरान्निर्गम स्तत्र ऋद्धिः हस्तिकल्पनसामन्तपरिवारादिका २ बलचतुरंगवाहनानि वेगसरादीनि कोशोभाण्डागारं कोष्टाधान्यभाजनानि तेषामगार

यारंणिड्ढी । अहवादेविड्ढी तिविहा पन्नत्ता तंजहा सचित्ता अचित्ता मीसिया । राइड्ढी तिविहा पन्नत्ता तंजहा रण्णोअइयाणिड्ढी रण्णोणिज्जाणिड्ढी रण्णोबलबाहणकोसकोठागारिड्ढी । अहवा राइड्ढी तिविहा प०

करें भोगने अर्थ ॥ अथवा देवतानीरिद्धि त्रणप्रकारें कही तेकहेछे । सचित्तरिद्धि पोतानुं शरीर । अचितरिद्धि वस्त्राभरणादि । मिश्ररिद्धि अ लंकृतदेवी प्रमुखनुंरूप ॥ राजरिद्धि त्रणप्रकारें कही तेकहेछे । राजाने नगरप्रवेशनी रिद्धि तोरण हट्ट शोभा लोकनो समर्द जोवामिले तेअति यानरिद्धि । राजानें नगरथी नीकलवुं हाथी घोडा पालादि परिवाररिद्धि तेनिर्याणरिद्धि । राजानो बलचतुरग हाथी घोडा रथ पायक वा हन पालखी प्रमुख कोश भंडार कोष्ठागारनी रिद्धि ॥ अथवा त्रणप्रकारे राजानीरिद्धि तेकहेछे । सचित्त स्वशरीर हाथी राणी प्रमुख । अचि

गृहगेहंकोष्टागारंधान्यगृहमित्यर्थः तेषान्तान्येववाऋद्धिर्यासातथा ४ सचित्तादिकापूर्ववद्भावनीयेति ५ ज्ञानर्द्धि र्विशिष्टश्रुतसम्पत् दर्शनर्द्धिःप्रवचनेनिश्श ङ्कितादित्व प्रवचनप्रभावकशास्त्रसम्पद्वा चारित्रर्द्धिः निरतिचारता ६ सचित्ताशिष्यादिका अचित्तावस्त्रादिका मिश्रा तथैवेति इहच विकुर्व्वणादिऋद्धयोन्ये षामपि भवन्ति केवलन्देवादीनांविशेषवत्यस्तादृति तेषामेवोक्ताइति ऋद्धिसद्भावेच गौरवभवतीति तद्भेदानाह ॥ तओगारवेत्यादि ॥ व्यक्त पर गुरोर्भावः कर्म्मवेतिगौरव तच्चद्वेधाद्रव्यतोवज्रादे र्भावतो ऽभिमानलोभलक्षणा शुभभावतआत्मन स्तत्र भावगौरव त्रिधा तत्रऋद्धा नरेन्द्रादिपूजालक्षणया आचा र्यत्वादिलक्षणया वाभिमानादिद्वारेण गौरव ऋद्धिगौरव ऋद्धिप्राप्त्य ऽभिमानप्राप्तिप्रार्थनाद्वारेणा त्मनोऽशुभोभावो भावगौरवमित्यर्थ एवमन्यत्रापि नवरं रसोरसनेन्द्रियार्थो मधुरादिः सात सुखमिति अथवा ऋद्धादिषु गौरव मादरइति अनन्तर चारित्रर्द्धिरुक्ता चारित्रच करणमिति तद्भेदानाह ॥ तिविहे

सचित्ता अचित्ता मीसिया । गणिड्ढी तिविहा पन्नत्ता तजहा णाणिड्ढी दंसणिड्ढी चरित्तिड्ढी । अहवा गणिड्ढी तिविहा प० त० सचित्ता अचित्ता मीसिया । तओ गारवा पन्नत्ता तंजहा इड्ढीगारवे रसगारवे

त रत्नसुवर्णादि आभरण वस्त्रादि । मिश्र अलंकृत राणी प्रमुखनी ॥ गणी आचार्यनी रिद्धि त्रणप्रकारें ते कहेंछे । नाण संपदा । दर्शन ते सम कितनी रिद्धि जिनवचनमा शकानथी । चारित्ररिद्धि तेपंचमहाव्रत ॥ अथवा त्रणप्रकारे गणीनी रिद्धि तेकहेछे । सचित्त शिष्यादिकनी रिद्धि अचित्त वस्त्र पात्रादिकनी । मिश्र तेवस्त्रादि सहित शिष्य ॥ रिद्धि गारवेपामें गारवभार कहिये तेद्रव्यथी वस्त्रादि भावथी अभिमान लोभरूप तेकहेछे । त्रण प्रकारें गारव रिद्धिनुगारव रिद्धि पामी अहंकारकरे । मधुरादि भलारस पामी अहंकार करे तेरसगारव । सुख साता पामी

त्यादि ॥ कृतिः करणमनुष्ठान मत्त्व धार्म्मिकादिस्वामिभेदेन त्रिविध तत्र धार्म्मिकस्य संयतस्येदं धार्म्मिकमेवमितर नवर मधार्म्मिको असयत स्तृतो योहिग्रसयत. अथवा धर्म्मेभव धर्म्मोवा प्रयोजनमस्येति धार्मिक विपर्यस्तमितरत् एवल्ततोयमपोति धार्मिककरणमनन्तरमुक्तं तच्च धर्म्मएवेति तद्भेदानाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ स्पष्ट केवल भगवता महावीरेणेत्येव जगाद सुधर्म्मस्वामी जम्बूस्वामिन प्रतीति सुष्टुकालविनयाद्याराधनेनाधीतं गुरुसकाशात् सूत्रतः पठित स्वधीतं तथा सुष्टुविधिना ततएव व्याख्यानेनार्थत श्रुत्वा ध्यात मनुप्रेक्षित श्रुतमिति गम्य सुध्यात अनुप्रेक्षणाभावे तत्वानवगमेनाध्ययनश्रवणयोः प्रायो ऽकृतार्थत्वादिति अनेन भेदद्वयेन श्रुतधर्म्मउक्त स्तथा सुष्टु इहलोकाद्याशसारहितत्वेन तपसित तपस्यनुष्ठान सुतपसितमिति चारित्रधर्म्म उक्तइति त्रयाणामप्येषा मुत्तरोत्तरतो ऽविनाभाव दर्शयति ॥ जयाइत्यादि ॥ व्यक्तं पर निर्दोषाध्ययन विना श्रुतार्था प्रतीते' सुध्यात नभवति तदभावे ज्ञानविकल

सातागारवे । तिविहे करणे पन्नत्ते तजहा धम्मिएकरणे अधम्मिएकरणे धम्मियाधम्मिएकरणे । तिविहे भगवयाधम्मे पन्नत्ते तजहा सुअहिज्जिए सुज्झाइए सुतवस्सिए । जया सुअहिज्जियंभवइ तदा सुज्झाइयं

अहंकारकरै तेसातागारव ॥ पूर्वे चारित्र कहियो तेकरण तेहना भेद कहैछे । त्रण प्रकारे करण । करण तेक्रिया अनुष्ठान करवुं तेकहैछे । धार्मिक करण तेसयती साधुनी क्रिया । असयती आरम्भी मिथ्यात्वीनी क्रिया करण ते अधार्मिक करण । संयता सयतनी श्रावकनी क्रिया ते धर्माधर्मि करण ॥ सुधर्मास्वामी जबूप्रति कहैछे । भगवत महावीर स्वामीये त्रणप्रकारे धर्मकहियो ते कहैछे । स्वाधीत जे काल विनयादि आराधवे गुरुपासे भण्युं तेसुअधीत । भलीविधिये अर्थथी श्रुत सांभल्यो तेसुध्यात । इहलोकादि सुखनी आशंसा बाछा रहित तपक्रिया कीजे ते सुतपसित ॥ एह चारित्रधर्म जिवारे निर्दोष भणवुहोय तिवारे निर्दोष अध्ययन श्रुतना अर्थनुं सुध्यान होय तत्वज्ञान होय अध्ययन

तया सुतपसितं नभवतीतिभावः यदेतत् स्वधीतादित्रयं भगवता वर्द्धमानस्वामिना धर्मः प्रज्ञप्तः ॥ सेत्ति ॥ स स्वाख्यातः सुष्टूक्तः सम्यग्ज्ञानक्रियारूपत्वात् तयो रैकान्तिकात्यतिकसुखावन्ध्योपायत्वेन निरुपचरितधर्मत्वात् सुगतिधारणाद्धि धर्म्म इति उक्तंच नाणपगासयसोह ओतवोसजमोयगुत्तिकरो तिएहंपिसमाओगो मोक्खोजिणसासणेभणिओत्ति ॥ १ ॥ णमिति वाक्यालङ्कारे सुतपसितमिति चारित्रमुक्तं तच्च प्राणातिपातादिविनिवृत्तिस्वरूपमिति तस्याः भेदानाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ व्यावर्त्तनं व्यावृत्तिः कुतोपि हिंसाद्यवद्या न्निवृत्तिरित्यर्थः साच याज्ञस्य हिंसादे र्हेतुस्वरूपफलविदुषो ज्ञानपूर्विकाव्यावृत्तिः सातदभेदात् ॥ जाणुत्ति ॥ गदिता यालज्ञस्याज्ञानात् सा ॥ अजाणू ॥ इत्यभिहिता यातुविचिकित्सातः संशयात् सा निमित्तनिमित्तिनोरभेदा द्विचिकित्से त्यभिहिता व्यावृत्ति रित्यनेनानन्तरं चारित्रमुक्तं न्तद्विपक्षस्वा शुभाध्यवसायानुष्ठाने इतितयो रधुनाभेदानपि दर्शयत आह ॥ एवमित्यादि

भवइ । जया सुज्झाइयं भवइ तया सुतवस्सियं भवइ । से सुअहिज्जिए सुज्झाइए सुतवस्सिए सुयक्खाएणं भगवया धम्मे पण्णत्ते । तिविहा वावत्ती पण्णत्ता तंजहा जाणू अजाणू वितिगिच्छा । एवमज्झोववज्जणा

विना श्रुतनां अर्थनों ध्याननहोय । जिवारे सुध्यान सुध्यानहोय तिवारें सुतपसित होय अनें नाण विन्नाण विकलपणें सुतपसित भलुंतपनहोय । तेहज सुअधीत सुध्यान सुतपसित एह त्रण स्वाख्यात भलीरीते कहिया सम्यग्नाण क्रियारूप माटे भगवान महावीर स्वामीये एह धर्मकहियो ॥ तपते चारित्ररूप तेचारित्रादि प्राणातिपातादि विरतिरूप तेहनां भेद कहेछे । त्रण प्रकारे व्यावृत्ति कही हिंसादिकथी निवृत्ति कही तेकहेछे । हिंसानां फलने जाणी हिंसाथी निवर्त्ते तेजाणू । विना जाणया अनाणथी निवर्त्ते तेअजाणू । संसयथी निवर्त्ते हिंसादिकथी कोण

सूत्रे एवमिति व्यावृत्तिरिव विधा ॥ अज्झीववज्जणत्ति ॥ अध्युपपादनं क्वचिदिन्द्रियार्थे अध्युपपत्ति रभिष्वंगइत्यर्थः तत्र जानतो विषयजन्यमनर्थं या तत्रा ध्युपपत्ति सा ॥ जाणू ॥ यावजानतः ॥ साअजाणू ॥ यातुअयवतः साविचिकित्सेति ॥ परियावज्जणत्ति ॥ पर्यापादनं पर्यापत्तिरासेवेति यावत्साम्येव मेवेति ॥ जाणत्ति ॥ ज्ञः सच ज्ञाना त्यादित्युक्त ज्ञान चातीन्द्रियार्थेषु प्रायः शास्त्रादिति शास्त्रभेदेन तद्भेदानाह ॥ तिविहेअतेइत्यादि ॥ अमन मधिगमन मत'परिच्छेद स्तत्र लोको लोकशास्त्र तत्कृतत्वात्तदध्येयत्वा च्चार्थशास्त्रादि तस्मादन्तोनिर्णय स्तस्यवा परमरहस्यं पर्यन्तोवेति लोकान्त एवमितरावपि नव र वेदा न्टगादयः समयाः जिनादिसिद्धान्ताइति अनन्तर समयान्तउक्तः समयश्च जिनकेवल्यर्हच्छब्दवाच्ये रुक्तः सम्यग्भवतीति जिनादिशब्दवाच्यभेदानभि धातु निसूत्रीमाह ॥ तओजिणेइत्यादि ॥ सुगमा नवरं रागद्वेषमोहान् जयन्तीति जिनाः सर्वज्ञाः उक्तंच रागद्वेषस्तथामोहो जितोयेनजिनोह्यसौ अस्त्री शस्त्राचमालत्वा दर्हन्नेवानुमीयतइति ॥ १ ॥ तथा जिना इव ये वर्त्तन्ते निश्चयप्रत्यक्षज्ञानतया तेपिजिना स्तत्रावधिप्रधानो जिनो वधिज्ञानजिन एव

परियावज्जणा । तिविहे अते प० तं० लोगते वेयंते समयंते । तउ जिणा पन्नत्ता तंजहा उहिनाणजिणे मणपज्जवनाणजिणे केवलनाणजिणे । तउ केवली प० तंजहा उहिनाणकेवली मणपज्जवनाणकेवली केव

जाणे पापळे किनथी पणिनकीजे एह वितिगिच्छा॥ एम अज्झोवज्जणा ते इद्रियनां विषय वर्जवा तेत्रणभेदे इमज विषय सेवानुं वर्जवुं ते परि आवज्जणा इमज भेदजाणवा तेकहेछे ॥ त्रणप्रकारे अत लोकात तेलोक चउदहराजनुं छेहडो । वेदात ते च्यारवेदनुं रहस्य तत्व तेहज अत । समय जे जिनप्रणीत सूत्र तेहनुं रहस्य ॥ त्रणप्रकारे जिनकहिया । अवधिनाण जिन अवधिनाण सहित । मनपर्यवनाण च्यार नाणसहित जे

मितरावपि नवर मायावुपचरिता वितरी निरुपचार उपचार कारणन्तु प्रत्यचज्ञानित्वमिति केवलमेकमनंतं पूर्णवा ज्ञानादियेषामस्ति तेकेवलिन उक्तंच कसिणकेवलकप्प लोगजाणतितहयपासंति केवलचरित्तनाणी तम्हातेकेवलीहोंति ॥ १ ॥ इहापि जिनवद्व्याख्या अर्हंति देवादिकृतां पूजा मित्यर्हंत अ थवानास्ति रहः प्रच्छन्नं किंचिदपि येषां प्रत्यचज्ञानित्वा त्ते अर्हन्तः शेष प्राग्वत् एते च सलेश्या अपि भवन्तीति लेश्याप्रकरणमाह ॥ तत्रोइत्यादि ॥ सुगम नवरं ॥ दुब्भिगधाओत्ति॥ दुरभिगन्धादुर्गन्धा दुरभिगधत्वच तासां पुद्गलात्मकत्वा त्पुद्गलादीनां च गन्धादीनामवश्यं भावादिति आहच जहगोमडस्सगंधो सुणगमडस्सवजहाअहिमडस्स एत्तोविअणतगुणो लेसाणअप्पसत्थाणति ॥ १ ॥ नामानुसारी चासा वर्णः कपोतवर्णालेश्या कापोतलेश्या धूम्रवर्णेत्यर्थः ॥ सुब्भि गधाओत्ति ॥ सुरभिगंधयः आहच जहसुरभिकुसुमगधो गधावासाणपिस्समाणाणं एत्तोअणंतगुणो पसत्थलेसाणतिण्हंपित्ति ॥ १ ॥ तेजोवह्नि स्तद्वर्णाले

लनाणकेवली । तउ अरहा पन्नत्ता तंजहा उहिनाणअरहा मणपज्जवनाणअरहा केवलनाणअरहा । तउ लेस्साउ दुब्भिगंधाउ प० तं० कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । तउ लेस्साउ सुब्भिगंधाउ पन्नत्ताउ तं०

जिन । केवलनाण जिन पांच नाण सहित तेजिन ॥ त्रणप्रकारे केवली कहिया ते कहेछे । अवधिनाण केवली । मनःपर्यवनाण केवली । के वलनाण केवली ॥ त्रण अरिहंत कहिया तेकहेछे । अवधिनाणी अरिहंत । मनपर्यवनाणी अरिहंत । केवलनाणी अरिहंत ॥ एह अरिहंता दि लेश्यासहित होय तेमांटे लेश्यास्वरूप कहेछे । त्रण लेश्या दुर्गंध माठा गधनीकही लेश्या पुदगलात्मकछे पुदगल नेगंधहोय ते कहेछे । कृष्ण लेश्या जहगोमडस्सगंधोइत्यादि । नीललेश्या सुणगमडस्स । कापोत लेश्या जहाअहिमडस्स ॥ त्रण लेश्या सुगंध रूडागधनीकही ते कहेछे ।

श्या लोहितवर्णेत्यर्थः तेजोलेश्येति पद्मगर्भवर्णालेश्या पीतवर्णेत्यर्थः पद्मलेश्या शुक्ला प्रतीता एवंकरणात्प्रथमसूत्रवत् तओइत्याद्यभिलापेन शेषसूत्राण्यध्येतव्या नीति तत्र दुर्गति नरकतिर्यग्रूपा गमयन्ति प्राणिनमिति दुर्गतिगामिन्यः सुगति देवमनुष्यरूपा संक्लिष्टा सक्लेशहेतुत्वादिति विपर्ययः सर्वत्र सुज्ञानः अम नोज्ञा अमनोज्ञरसोपेतपुद्गलमयत्वात् अविशुद्धा वर्णतो ऽप्रशस्ता अश्रेयस्यो ऽनादेया इत्यर्थः शीतरूक्षाः स्पर्शतः आद्याः द्वितीया सुस्निग्धोष्णाः स्पर्शत एवेति अनन्तर लेश्या उक्ता अधुनातद्विशेषितमरणनिरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय बालोत्र स्तद्वयोवर्त्तते विरतिसाधकविवेकविकलत्वात्सबालो सं यत स्तस्य मरण बालमरण एवमितरे केवलंपडिधातोर्गत्यर्थत्वेनज्ञानार्थत्वा द्विरतिफलेन फलवद्विज्ञानयुक्तत्वात् पण्डितो बुद्धतत्वः संयत इत्यर्थः तथा

तेउ पम्हा सुक्कलेस्सा । एवं तिदुग्गइगामिणीउ तिसुगइगामिणीउ । तउ संकिलिठाउ असंकिलिठाउ अमणुन्नाउ सुमणुन्नाउ अविसुद्धाउ विसुद्धाउ अप्पसत्थाउ पसत्थाउ सीअलुक्खाउ सिणिद्धुण्हाउ । तिवि

तेजोलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या ॥ जहसुरभिकुसुमगंधो गंधावासाणपिस्समाणाणं एत्तोविअणंतगुणो पसत्थलेस्साणतिन्नंपि ॥ १ ॥ पहिली त्रणलेश्या दुर्गतिआपे नरकतिर्यचनी गतिआपे । आगली त्रणलेश्या सुगतिआपे मनुष्य देवतानी गतिआपे । पहली त्रणसकिलेश देवे आगली त्रणअसकिलेश सुखदेवे । पहिली त्रण मनोहरनथी माठा रसनो । आगली त्रण भलारसनो । पहिली त्रण अविशुद्ध वर्णथी मलिन । आगली त्रणनिर्मल । पहिली त्रण अप्रशस्त अनादेय । आगलीत्रण आदेय । स्पर्शथी शीतने लूख । आगली त्रण स्निग्ध उस्नस्पर्शथी । लेश्या विशेषे मरण कहेछे । त्रणप्रकारे मरण कहियो तेकहेछे । बालमरण अनाणी अविरतीनुं मरण । पंडितमरण नाणयुक्त विरतीनु मरण । बाल पंडितमरण

अविरतत्वेन वालत्वात् विरतत्वेनचपण्डितत्वा द्बालपण्डित: संयतासंयत इति स्थिता अवस्थिता अविशुद्धान्त्य संक्लिश्यमानाच लेश्या कृष्णादि र्यस्मिन् त त् स्थितलेश्य सक्लिष्टा संक्लिश्यमाना सक्लेशमागच्छन्तीत्यर्थ: सालेश्या यस्मिन् त त्तथा पर्यवा: पारिशेष्या द्विशुद्धिविशेषा. प्रतिसमयंजाता यस्यां सातथा विशुद्ध्या वर्द्धमानेत्यर्थ: सा लेश्यायस्मि स्तत्तर्थेति अत्र प्रथम कृष्णादिलेश्य: सन् यदा कृष्णादिलेश्येष्वेव नारकादिषूत्पद्यते तदा प्रथम भवति यदात् नीलादिलेश्य: सन् कृष्णादि लेश्येषूत्पद्यते तदा द्वितीयं यदा पुन: कृष्णादिलेश्य: सन् नीलकापोतलेश्येषूत्पद्यते तदातृतीय उक्त चान्यद्वयसवादि भगव त्या यदुत सेणूण भंते कण्हलेसेनीललेसे जावसुक्कलेसेभवित्ता काउलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ हंतागोयमा सेकेणट्ठेणं भंते एव वुच्चइ गोयमालेसट्ठाणेसु स किलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा काउलेस परिणमइ काउलेसेसु नेरइएसु उववज्जइत्ति एतदनुसारेणोत्तरसूत्रयोरपि स्थितलेश्यादिविभागो नेयइति

हे मरणे प० तं० बालमरणे पंडियमरणे बालपंडियमरणे । बालमरणे तिविहे प० तं० ठिअलेस्से संकि लिठलेस्से पज्जवजातलेस्से । पंडियमरणे तिविहे प० तं० ठिअलेस्से असंकिलिठलेस्से पज्जवजातलेस्से

विरता विरती देशविरति श्रावकनुं ॥ बालमरण त्रणप्रकारें तेकहेछे । स्थितलेश्यानुं जेकृष्णादिकमां मरी नरकगतिमां कृष्णलेश्यायेंज उपजे । संकिलिष्ठ लेश्यानुं तेनील लेश्याये मरी कृष्णलेश्याये उपजे । पर्यवजात लेश्यानुं तेपर्याय फरी शुद्धथाय तेकृष्णलेश्यामां मरी नीलकापोत लेश्यामां उपजे॥ पंडितमरण त्रणप्रकारे कहियो ते कहेछे । शुकलादि लेश्यामां मरी शुकल लेश्यामां उपजे देवगतिमां। असंकिलिष्ट लेश्यानुं पंडित मरण तेजो पदम लेश्याये मरी शुकल लेश्यामा देवतादिकमां उपजे । पर्यवजात लेश्यानुं पंडितमरण वधती शुक्लेश्यामां उपजें ॥ बालपंडित

पण्डितमरणे सक्लिश्यमानतालेश्याया: नास्ति संयतत्वादेवेत्ययं वालमरणाद्विशेष: वालपण्डितमरणेतु संक्लिश्यमानता विशुद्ध्यमानताच लेश्याया:नास्ति मिश्रत्वा देवेत्ययंविशेष इति एवं च पण्डितमरणंवस्तुतो द्विविधमेव सक्लिश्यमानलेश्यानिषेधे ऽवस्थितवर्द्धमानलेश्यत्वा त्तस्य त्रिविधत्वतु व्यपदेशमात्रत्वादेव वालपण्डितमरण त्वेकविधमेव संक्लिश्यमानपर्यवजातलेश्यानिषेधे अवस्थितलेश्यत्वा त्तस्येति त्रैविध्यन्त्वस्ये तरव्यावृत्तितो व्यपदेशत्रयप्रवृत्ते रिति मरणम नन्तरमुक्तं मृतस्यतुजन्मान्तरे यथाविधस्य यद्दस्तुत्रय यस्मैसम्पद्यते तस्य तत्तस्मै दर्शयितुमाह ॥ तश्रोठाणेत्यादि ॥ त्रीणिस्थानानि प्रवचनमहाव्रतजोवनिका यलक्षणानि अध्यवसितस्यानिश्चययतो पराक्रमवतो वा ह्विताायापथ्यायासुखायदु:खाया क्षमाया सगतत्वाया। नि:श्रेयसाया मोक्षाया नानुगामिकत्वाया शुभानुवन्धाय भवन्ति ॥ सेणति ॥ यस्यत्रीणिस्थानानि अह्विताादित्वाय भवन्ति सशंकितो देशत: सर्वतो वा संशयवान् कांचितस्तथैव मतान्तरस्यापि साधु

बालपंडियमरणे तिविहे पन्नत्ते तंजहा ठिअलेस्से असंकिलिठलेस्से. अपज्जवजातलेस्से । तओ ठाणा अव्व वसिअस्स अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति तंजहा. सेणंमुंडेभवित्ता

मरण त्रणप्रकारे तेकहेछे । स्थित लेश्यानुं जेलेश्यानुं जेलेश्याये मरें तेलेश्यायें उपजें । असकिलिष्ट लेश्यानुं मरण ते बीजी शुद्धलेश्यायें उपजे । अपर्यवजात लेश्यानुं बालपंडितमरण तेसमय समये शुद्धलेश्या वधतीनपामे ॥ त्रिणथानके जेणे निश्चयकरी साचाकरी नथीधास्या तेहने एतीन थानक अहितना करनार होय । असुखना कारणहोय । अक्षम। क्रोधना कारणहोय । अनिश्रेयस मोक्षदायक नहोय । अनानुगामी संसारपारना आपनार नथाय नहोय ॥ मरणकीधापछी जे जेहवुं थानकपांमे तेकहेछे । जेसाधु द्रव्यभावथी मुंडथई अणगारथई प्रवृज्यालेई निग्रंथ तेप्रवचन

त्वेन मताविचिकित्सितः फलं प्रति शङ्कोपेतो ऽत एवा भेदसमापन्नो द्वैधीभावमापन्नः एवमिदं नचैव मिति मतिकः कलुषसमापन्नो नैतदेव मिति प्रति पत्तिकः ततश्च निर्ग्रंथानामिदंनैर्ग्रन्थिकं प्रशस्तं प्रगत प्रथमं वा वचनमिति प्रवचन मागमो दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् न श्रद्धत्ते सामान्यतो न प्रत्येति न प्रीति विषयीकरोति न रोचयति न चिकीर्षाविषयीकरोति तमिति य एवंभूत स्त प्रव्रजिताभास परिसह्यंते इतिपरीसहाः क्षुधादयः अभियुज्यर२सम्बन्धमुपा गत्य प्रतिस्पर्द्धवा अभिभवन्ति न्यक्कुर्व्वन्ति इति शेषं सुगमं उक्तविपर्ययसूत्र प्राग्वत् किन्तु हित मदोषकर मिह परत्र चा त्मनः परेषाच पथ्यान्न भोज

अगाराउ अणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णिग्गंथं पावयणं णोसद्दहइ णोपत्तियइ णोरोएइ तपरीसहा अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवति नोसे परीसहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ । सेणमुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए पंचहिं

जिनशासन तेहनेविषें शंकाआणे एसाचुं कै खोटुं एहवीकाक्षा परमतनीवांछा धर्ममां आणे । विचिकित्सा धर्मना फलनो संदेहआणें शंका तेहीज भेद ए इमकहियें नही तेप्रतेपांमैं द्विधाभावमापन्न । कलुषसमापन्न ते एभगवते कह्यो पणि इमनथी इमकरी निग्रंथनां प्रवचन सिद्धाता दिक मार्गनें सरदहेनथी सांचुंकरीनें । प्रत्ययविस्वास उपजावेनथी । रुचावेनथी वाछेनथी । एहवा साधुप्रते क्षुधादि बावीसपरीसहमां आवी आवीनें एतले ऊपजीने पराभवकरैं । पणि तेसाधुनथी नामसाधु ते परीसह उपनांआवी फरस्यां तेप्रतिसहे समेनथी तेमोक्ष पिणनपामें ॥ ते साधु मुंडथई गृहस्थावासथकी अणगारथयी दीक्षालेई पंचमहाव्रतनेविषे शंकाआणें यावत् पूर्ववत् कलुषपणुंपामें । पंचमहाव्रतप्रते सरदहें

महव्वुएहिं संकिए जाव कलुससमावन्ने पंचमहव्वयाइं णोसद्दहइ जाव नोसेपरीसहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ । सेणं मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहि जाव अभिभवइ । तउठाणा ववसिअस्स हियाए जावाणुगामियत्ताए भवंति तजहा सेणं मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए णिग्गथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए जाव णोकलुससमावन्ने णिग्गथं पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोएइ से परीसहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ । णोतपरीसहा अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभ वंति । सेणं मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारिय पव्वइए समाणे पचहिं महव्वएहि णिस्संकिए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ णोत परिस्सहा अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवंति । सेणं मुंडेभ

नथी यावत् पूर्वे कहिवुं तिम तेपरीसह उपना तेप्रते सहेनथी । तेमुंडथई अणगारथई प्रवूज्या दीक्षालेई छकायना जीवनी शंकाआणे यावत् परीसह नथीसहे ॥ त्रिणथानक निश्चयकरी जाणयाळे तेहने हितना करनार यावत् ससारनो पारआपे । तेमुंडथई वली गृहस्थपणुं मूकी अणगारथयो प्रवूज्यालेई निग्रथना प्रवचननेविषे जिनसिद्धातनेविषे जेहने शकानथी अन्यधर्मनी काद्वा बांछानथी । यावत् कलुषभावनथी पाम्यो ते निग्रथना प्रवचनप्रते सरदहे । प्रत्ययविस्वासराखे मनमा रुचिआणे तेसाधु परीसहनो सबधपामीने परीसह उपने सहैखमे पिणते परीसह साधु प्रते पराभवनथी करीसके ॥ तेमुडथई गृहस्थावासथी अणगारपणुंलेई प्रवूज्यालीयेथके पंचमहावूतनेविषे शंकारहित यावत् परीसहआवी फरसेयके सहैखमैं पिणतेपरीसह तेसाधुनेआवी फरसी पराभवीसकेनथी ॥ वलीतेमुंडथई आगारपणु मूकी अणगारथयो प्रवूज्यालेई छकायना जीव

नवत् सुखमानन्द स्तृषितस्य शीतलजलपानइव क्षम सुचित तथाविधव्याधिघातकौषधपानमिव निःश्रेयसं निश्चित श्रेयः प्रशस्य भावतः पञ्चनमस्कारकर णमिव अनुगामिकमनुगमनशील भास्वरद्रव्यजनितच्छायेवेति अयचैवविधः साधुरिहैव पृथिव्यां भवतीत्यर्थेनसम्बन्धेन पृथिवीस्वरूपमाह ॥ एगमेगेत्यादि॥ एकैकापृथिवी रत्नप्रभादिका सर्वतः किमुक्तंभवति समता दयत्रा दिक्षुविदिक्षुचेत्यर्थः सम्परिक्षिप्तावेष्टिता आभ्यतरंघनोदधिवलय ततःक्रमेणेतरे तत्र घनः स्त्यानो हिमशिलावत् उदधि र्जलनिचयः सचासौ सचेति घनोदधिः सएववलयमिव वलय कटक घनोदधिवलय तेन एवमितरेपि नवर घनश्चासौवातश्च तथाविधपरिणामोपेतो घनवात एवतनुवातोपि तथाविधपरिणामएवेति भवंत्यत्रगाथाः नवियफुसतिअलोग चउसुपिदिसासुसव्वपुढवीओ संगहिया वलएहिं विक्खभतेसिंवोच्छामि ॥ १ ॥ छच्चेव १ अद्धपचम २ जोयणअद्धच ३ होंतिरयणाए उदही १ घण २ तणुवाया ३ जाहासखेणनिद्दिठा ॥ २ ॥

विता अगाराउ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं णिस्संकिए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय अभि जुजिय अभिभवइ णोतं परिस्सहा अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवंति । एगमेगाणं पुढवी तिहिंवल एहिं सव्वउसमंता संपरिक्खित्ता तंघणोदहिवलएणं घणवायवलएणं तणवायवलएणं । णेरइयाणं उक्कोसेणं

तेविषे शंकारहित यावत् तेसाधु फरसीने पराभवकरी नसकै । एहवा साधुते इहां पृथवीमांछे ॥ तेपृथवीनुं स्वरूप कहेछे ॥ एकेकी पृथवी त्रिण वलयेकरी सगले च्यारेदिशे व्याप्तछै वीटीछे रत्नप्रभादिक तेकहेछे ॥ घनोदधि जलनो समूह तेहनेवलयेकरी बींटीछे । बीजो घनबातनो बलय तेणेकरी बीटीछै । तीजो तनवात बलयेकरी बीटीछै । एह सातनरकें नारकी उपजे । तेनारकीनो उत्पत्ति कहेछे । नारकीनें उत्कृष्ट त्रणसमयनी

तिभागो [योजनस्य] १ गाउयंचेव २ तिभागोगाउयस्सय ३ ॥ आइधुवेपक्खेवो अड्ढोअड्ढोजावसत्तमियत्ति ॥ २ ॥ एतासुच पृथ्वीषु नारकाएव उत्पद्यन्ते इति तदुत्पत्तिविधि मभिधातुमाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ त्रयः समयास्त्रिसमय तद्यत्रास्ति स त्रिसमयिक स्तेन विग्रहेण वक्रगमनेन ॥ उक्कोसेणति ॥ त्रसानाहि त्रसनाड्यन्तरुत्पादात् वक्रद्वय भवति तत्रच त्रयएवसमया स्तथाहि आग्नेयदिशो नैर्ऋतदिश मेकेन समयेन गच्छति ततो द्वितीयेन समश्रे ण्या अध स्तत स्तृतीयेन वायव्यदिशि समश्रेण्यैवेति त्रसानामेव मसोत्पत्तावेवविध उत्कर्षेण विग्रहइत्याह ॥ एगिंदिएत्यादि ॥ एकेन्द्रिया स्त्वेकेंद्रियेषु पंचसामयिकेना प्युत्पद्यते यतस्ते बहिस्ता त्रसनाडीतो बहिरप्युत्पद्यते तथाहि विदिसाउदिसिपढमे बीएपइसरइलोयनाडीए तइएउप्पिंधावइ चउत्थए नीइबाहितु ॥ १ ॥ पचमएविदिसाए गंतुउप्पज्जइउएगिंदित्ति ॥ सम्भवएवाय भवति चतु सामायिकएव भगवत्यांतयोक्तत्वादिति तथाहि अपज्जत्तग सुहुमपुढविकाइएणभते अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरल्लेखेत्ते समोहए समोहणित्ता जेभविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरल्ले खेत्ते अपज्जत्तसुहुमपुढविका इयत्ताए उववज्जित्तए सेणभंते कतिसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा गो० तिसमइएणवा चउसमइएणवा विग्गहेण उववज्जेज्जा इत्यादि विशेषणवत्या मप्यु क्तं सुत्तेचउसमयाउ नत्थिगईओपराविनिद्दिट्ठा जुज्जइयपचसमया जीवस्सइमागईलोए ॥ १ ॥ जोतमतमविदिसाए समोहओबभलोगविदिसाए उववज्ज एगईए सोनियमापंचसमयाए ॥ २ ॥ उववायाभावाओ नपचसमयाहवानसतावि भणियाजहचउसमया महल्लबंधेणसताविंति ॥ ३ ॥ अतउक्तं ॥ एगिं

तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जंति । एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं । खीणमोहस्सणं अरहओ तओकम्मं

विग्रहगति त्रणसमयनी वक्रगतिकरी नारकीमां उपजे कोईक अन्यथापणि एकसमयमा उपजे । एकेंद्री छोडीने एकेंद्रीने पांचसमयनी वक्रगतिथी

दियवज्जंति ॥ यावद्वैमानिकानामिति वैमानिकांतानां जीवानां त्रिसामयिक उत्कर्षेण विग्रहो भवतीतिभावः मोहवर्तोत्रिस्थानक मभिधाया धुना क्षी
णमोहस्य तदाह ॥ खीणेत्यादि ॥ क्षीणमोहस्य क्षीणमोहनीयकर्मणो ऽर्हतो जिनस्य त्रयः कर्मांशाः कर्मप्रकृतय इति उक्तञ्च चरमेनाणावरण पचविहद
सणचउविगप्पं पचविहमतराय खवइत्ताकेवलीहोइत्ति ॥ १ ॥ ग्रेष कांश्चं अनन्तर मशाश्वतानां त्रिस्थानक मुक्त मधुना शाश्वतानां तदाह ॥ अभीत्यादि ॥
सूत्राणि सप्त काव्यानीति पर म्परसूत्रे क्षीणमोहस्य त्रिस्थानकमुक्त मधुना तद्विशेषाणा तीर्थकृतां तदाह ॥ धम्मेत्यादि ॥ प्रकरणं ॥ तिचउब्भागत्ति ॥
त्रिभि श्चतुर्भागैः पादैः पल्ये।पमस्य सर्वै रूनानि त्रिचतुर्भागपल्योपमानि तैर्व्यतिक्रांतै रिति उक्तञ्च धम्मजिणाओसंती तिहिओतिचउब्भागपलियऊणेहि

सा जुगवं खिज्जंति तं णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं अंतरायं । अभिईणरकत्ते तितारे पन्नत्ते एवं सवणे
अस्सिणी भरणी मगसिरे पूसे जेठा । धम्माउणं अरहाउ संतीअरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भाग

य । यावत् वैमानिकनें त्रणसमयनी होय ॥ क्षीणमोहनीय कर्मछे जेहने एहवा अरिहतनें त्रणकर्मनां अंश तेप्रकृति समकालें क्षयपामें तेकहेछे ।
नाणावरणीय पांचप्रकारे । दर्शनावरणी च्यारप्रकारे । अंतरायकर्म पांचप्रकारे एत्रण क्षय समकालेपामें क्षयपाम्यांथी केवलीथाय ॥ अभीजि
न्नक्षत्रना त्रणतारा कहिया एम श्रवण नक्षत्रना त्रणतारा । अश्विनी नक्षत्रना त्रणतारा । भरणी नक्षत्रना त्रणतारा । मृगशिर नक्षत्रना त्रणता
रा । पुष्यना त्रणतारा । ज्येष्ठा नक्षत्रना त्रणतारा ॥ धर्मनाथ पनरमां अरिहंतना मोक्षथी शांतिनाथ सोलमा अरिहत पल्योपमना त्रणभाग
कमती त्रण सागरोपम गयांथी उपना एक पल्योपमना च्यारभाग तेहमां त्रणभाग ऊणा एतले एकभाग पल्योपमनुं लेवो एतले त्रण सागरोपम

६ ॥

भयरेहिंसमुप्पणोत्ति ॥ १ ॥ समणस्सेत्यादि ॥ युगानि पंचवर्षमानानि कालविशेषा लोकप्रसिद्धानिवा कृतयुगादीनि तानिच क्रमव्यवस्थितानि ततश्च पुरुषाः गुरुशिष्यक्रमिणः पितापुत्रक्रमवन्तो वा युगानीव पुरुषयुगानि पुरुषसिंहवत्समासः ततश्च पचम्याद्वितीयार्थत्वा त्तृतीयपुरुषयुगंयावत् जंबूस्वामिनयावदित्यर्थः ॥ जुगत्ति ॥ पुरुषयुग त्तदपेक्षयांतकराणा भवांतकराणां निर्वाणगामिना मित्यर्थः भूमिः कालो युगांतकरभूमि रिदमुक्तंभवति भगवतोवर्द्धमानस्वामितस्तीर्थे तस्मादेवावधे स्तृतीयपुरुषं जबूस्वामिनं यावन्निर्वाणमभू त्ततउत्तर तद्व्यवच्छेदइति ॥ मल्लीत्यादि ॥ सूत्रद्वय तत्र सवाद एकोभगवंवीरो पासोमल्लीयतिहितिहिसएहिंति ॥ मल्लिजिनः स्त्री शतैरपि त्रिभिः ॥ समणेत्यादि ॥ अजिणाणंति ॥ असर्वज्ञत्वेन जिनसकाशानां सकलसंशयच्छेदकत्वेन सर्वे सकला अक्षरसन्निपाता अकारादिसंयोगा विद्यते येषांते तथा स्वार्थिकेनप्रत्ययोपादाना त्तेषां विदितसकलवाङ्मयाना मित्यर्थः ॥ वागरमाणाणंति॥

पलिउवमऊणएहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पन्नो । समणस्सणंभगवउ महावीरस्स जाव तच्चाउ पुरिसजुगाउ जुगंतकरभूमी । मल्लीणं अरहा तिहिपुरिससएहि सद्धिं मुंडेभवेत्ता जाव पव्वइए एवं पासेवि । समणस्सण भगवउ महावीरस्स तिन्निसया चोद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसकासाणं सव्वक्खरसन्निवाईणं जि

एकभाग एल्योपमनुं गयांथी उपना ॥ श्रमण भगवान महावीरने यावत् त्रणपुरुषनी परपरालगि मोक्षमार्ग चाल्यो एतले महावीरस्वामी सुधर्मास्वामी जंबूस्वामी एह त्रणपुरुषलगे मोक्षमार्गहतो तिवारपछी मोक्षमार्ग विच्छेदथयो ॥ मल्लिनाथ अरिहंत उगणीसमा त्रणसें पुरुष संघातें दीक्षालीधी यावत् प्रव्रज्या पचमहाव्रत लीधा ॥ एम पार्श्वनाथ तेवीसमा जिन त्रणसे पुरुषसाथे दीक्षालीधी ॥ श्रमण भगवत महावीरनें त्रणसे

व्यागृणतां व्याकुर्वतामित्यर्थः ॥ तत्रेत्यादि ॥ अत्रोक्तं संतीकुंथूयअरो अरहंताचेवचक्कवट्टीय अवसेसातित्थयरा मंडलियाआसिरायाणोत्ति ॥ १ ॥ तीर्थंकरास्तेते विमानेभ्योऽवतीर्णा इति विमानत्रिस्थानकमाह ॥ तत्रेत्यादि ॥ लोकपुरुषस्य ग्रीवास्थाने भवानि ग्रैवेयकानि तानिच तानि विमानानिच

णोइव अवितहं वागरमाणाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था । तउ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था तंजहा सती कुंथू अरो । तउ गेविज्जविमाणपत्थडा पन्नत्ता तजहा हिठिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे । हेठिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे पन्नत्ते तंजहा हिठिमहिठिमगेविज्जविमाणपत्थडे हिठिममज्झिमगेविज्जबिमाणपत्थडे हिठिमउवरिमगेविज्जबिमाणपत्थडे । मज्झिमगेविज्जबिमाणपत्थडे तिविहे पन्नत्ते तंजहा मज्झिमहिठिमगेविज्जबिमाणपत्थडे मज्झिम मज्झिमगेविज्जबिमाणपत्थडे मज्झिमउवरिमगेविज्जबिमाणपत्थडे । उवरिमगेविज्जबिमाणपत्थडे तिविहे पन्नत्ते

चउदह पूर्वी जिननथी केवलीनथी पिण जिन सरिखा केवली सरिखा सर्वाक्षर सन्निपाती सर्वाक्षर योगनां जाण जिननीपरें अवितथ सत्य व्याकरण प्रश्ननना कहनार एहवी उत्कृष्टी चउदह पूर्वधारीनी संपदाथई ॥ त्रण तीर्थंकर चक्रवर्त्तिथया तेकहेछे । शांतिनाथ सोलमां । कुंथुनाथ सतरमा । अरनाथ अठारमा ॥ त्रण ग्रैवेयक विमान प्रस्तट कहिया तेकहेछे । हेठिम विमान प्रस्तट । मध्यम विमान प्रस्तट । उपरिम विमान प्रस्तट ॥ हेठिम विमान प्रस्तट त्रणप्रकारे तेकहेछे । हेठिम हेठिम विमान प्रस्तट । हेठिम मध्यम विमान प्रस्तट । हेठिम उपरिम

तेषां प्रस्तटा रचनाविशेषवन्तःसमूहाः द्वयज ग्रैवेयकादिविमानवासिता कर्म्मणः सकाशा अवतीति कार्म्मणः त्रिस्थानकमाह ॥ जीवाणमित्यादि॥ सूत्राणि पट् तन त्रिभिःस्थानैः स्तोवेदादिभि र्निर्वर्त्तितान् अर्जितान् पुद्गलान् पापकर्मतया अशुभकर्म्मलेनो त्तरोत्तराशुभाध्यवसायत स्तितवत आसङ्कलनत एव

१॥ सुपचितवतः परिपोषणत एवजवन्तो निर्मापणत उदीरितवत अध्यवसायवशेनानुदीर्णोदयप्रवेशनत. वेदितवतः अनुभवनतः निर्जरितवतः प्रदेशपरिशा टनतः सग्रहणीगाथार्थेमत्र एव चिणउवचिणवधोदी रवेयतहनिज्जराचेवत्ति ॥ एपमिति ॥ यथैवा कालत्रयाभिलापिनोक्ता न्तथा सर्व्वाण्यपीति कर्मेच पुद्ग

तंजहा उवरिमहिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिमउवरिमगेविज्जवि माणपत्थडे । जीवाणं तिठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणिंतिवा चिणिस्संतिवा तंजहा इत्थीणिव्वत्तिए पुरिसणिव्वत्तिए णपुंसगणिव्वत्तिए । एव चिणउवचिणबंधउदी रवेयतहणिज्जराचेव ।

विमान प्रस्तट ॥ मध्यम विमान प्रस्तट त्रणप्रकारे तेकहेछे । मध्यम हेठिम विमान प्रस्तट । मध्यम मध्यम विमान प्रस्तट । मध्यम उपरिम विमान प्रस्तट ॥ उपरिम विमान प्रस्तट त्रणप्रकारे तेकहेछे । उपरिम हेठिम विमान प्रस्तट । उपरिम मध्यम विमान प्रस्तट । उपरिम उपरिम विमान प्रस्तट ॥ जीवनें त्रणथानकै निवर्त्तित उपाज्यो उदगल पापकर्मपणे एकठाचिणया मेल्या अतीतकाले । चिणेछे वर्त्तमानकाले । चिणस्ये अनाग तकाले । तेकहेछे । स्त्रीवेदना उपाज्यो पुरुष वेदना उपाज्यो । नपुंसक वेदना उपाज्यो ॥ एम चिणया उपचय बंध उदीरणा वेदना तिमनि

लात्मकमिति पुद्गलस्कन्धान् प्रति त्रिस्थानकमाह ॥ तिपएसिएत्यादि ॥ स्पष्टमिति सर्वसूत्रेषु व्याख्यातशेषंकण्ठ्यं ॥ इतित्रिस्थानकस्य चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥ तत्समाप्तौच श्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाङ्गविवरणेतृतीयं त्रिस्थानकाख्यमध्ययन समाप्तमिति ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

व्याख्यातंतृतीयमध्ययन मधुना सङ्ख्याक्रमसम्बद्धमेव चतुःस्थानकाख्य चतुर्थमारभ्यते। अस्यचाय पूर्वेणसह विशेषसम्बन्धः अनन्तराध्ययने विचित्रा जीवाजीवद्रव्यपर्याया उक्ता इहापि तएवोच्यन्त इत्यनेन सम्बंधेनायातस्यास्य चतुरुद्देशकस्य चतुरनुयोगद्वारस्य सूत्रानुगमे प्रथमोद्देशकादिसूत्रमेतत् ॥ चत्तारि अतकिरियेत्यादि ॥ अस्यचायसम्बन्ध अनन्तरोद्देशकस्योपान्त्यसूत्रे कर्मेण क्षयायुक्त मिहतु कर्मेण स्तत्कार्यस्यवा भवस्यान्तक्रियोच्यत इत्यथवा ञुत मया युष्मता भगवतैवमाख्यात मित्यभिधाय यत्तदाख्यात तदभिहित तथैदमपर तेनैवाख्यात यत्तदुच्यत इत्येव सम्बन्धस्यास्यव्याख्या अतक्रिया भवस्यान्तकरण तत्र यस्य न तथाविधतपो नापिपरीषहादिजनिता तथाविधावेदना दोर्घेण प्रव्रज्यापर्यायेण सिद्धिर्भवति तस्यैका यस्यतु तथाविधे तपोवेदने अल्पेनैवच प्रव्रज्यापर्यायेण सिद्धि स्या त्तस्य द्वितीया यस्यच प्रकृष्टे तपोवेदने दोर्घेणच पर्यायेण सिद्धि स्तस्य तृतीया यस्य पुनरविद्यमानतथाविधतपोवे

तिपएसियाखंधा अणंता पसत्ता एवंजाव तिगुणलुक्खपोग्गला अणंता पसत्ता ॥ तिठाणंसम्मत्तं ॥ ३

चत्तारि अंतकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा तत्थखलु इमा पढमा अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चायाए यावितवइ

जेरा वे इमजाणवा ॥ त्रण प्रदेसिया पुदगलखंध अनंता कह्यिा । एम यावत् त्रिगुण लूखा पुदगल अनंता कह्यिा लोकमा ॥ इति त्रीजोठाणूं थयो त्रीजो अध्ययन पूरोथयो ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दनस्य क्षपर्यायेणसिद्धि स्तस्य चतुर्थ्रीति अन्तक्रियाया एकस्वरूपत्वेपि सामग्रीभेदा च्चातुर्विध्यमिति समुदायार्थं अवयवार्थस्त्वयं चतस्रोऽन्तक्रिया: प्रज्ञप्ता: भगवतेतिगम्यते तत्रेति सप्तमीनिर्द्धारणे तासु चतसृषु मध्यइत्यर्थ खलुवाक्यालङ्कारे इयमनन्तर वक्ष्यमाणत्वेन प्रत्यक्षासन्ना प्रथमा इतरापेक्षया आद्याअन्तक्रिया इहकश्चित् पुरुष देवलोकादौ यात्वाततोऽल्पै स्तोकै कर्मभि करणभूतै. प्रत्यायात. प्रत्यागतो मानुषत्वमिति अल्पकर्मप्रत्यायातो य इति गम्यते अथवा एकत्र जनित्वा ततोऽल्पकर्मासन् य. प्रत्यायात: स तथा लघुकर्मतयोत्पन्नइत्यर्थ: चकारोवक्ष्यमाणमहाकर्मापेक्षया समुच्चयार्थ: अपि सम्भावने सम्भाव्यते ऽयमपिपचइत्यर्थ भवतिस्यात् ॥ सइति ॥ असौ णमितिवाक्यालङ्कारे मुंडोभूत्वा द्रव्यत शिरोलोचेन भावतो रागाद्यपनयनेनागारात् द्रव्यतो गेहात् भावत ससाराभिनन्दिना देहिनामावासभूता दविवेकगेहा निष्क्रम्येतिगम्यते ऽनगारिता अगारीगृही असयत स्तत्प्रतिषेधादनगारी सं यत स्तद्भावस्तत्ता ता साधुतामित्यर्थ: प्रव्रजित प्रगत प्राप्तइत्यर्थ: अथवा विभक्तिपरिणामादनगारितया निर्ग्रन्थतया प्रव्रजित: प्रव्रज्याप्रतिपन्न. कि भूतइत्याह ॥ सजमबहुलेत्ति ॥ संयमेन पृथिव्यादिसरक्षणलक्षणेन बहुल. प्रचुरो य स तथा सयमोवा बहुल. प्रचुरो यस्यस तथा एव सवरबहुलोपि नवर माश्रवनिरोध: सवर: अथवा इन्द्रियकषायनिग्रहादिभेद: एवंच सयमबहुलग्रहण प्राणातिपातविरते: प्राधान्यख्यापनार्थ: यत: एक्कचियएत्थवय निद्दिट्ठं

सेणंमुंडेभवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए संजमबहुले सवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उव

हिवे चौथो ठाणूं कहेछे । च्यार अंतक्रिया छेहली मोक्ष जावानी कही तेकहेछे । तिहां निश्चयथी पहली अंतक्रिया अल्प थोडा कर्मबंधणी म नुष्यनां अवतारमा आवी मोक्षजाय थोडी वेदना भोगे । तेअल्पकरमी मुंडथईने आगारीपणु मूंकी अणगारपणु साधुपणु अंगीकार कीधो थको

जिणवरेहिंसव्वेहिं पाणाइवायवेरमण मवसेसातसरक्खइत्ति ॥ १ ॥ एतच्च द्वितयमपि रागाद्युपगमयुक्तचित्तवृत्ते र्भवति यत आह समाधिबहुलः समाधि स्तु प्रशमवाहिता ज्ञानादिर्वा समाधिः पुन र्निःस्नेहस्यैव भवतीत्याह ॥ लूहे ॥ रूक्षःशरीरे मनसिच द्रव्यभावस्नेहवर्जितत्वेन रूपः लूषयतिवा कर्ममल मपनयतोतिलूषः कथमसावेवं संवृत्त इत्याह यतः ॥ तीरट्ठी ॥ तीरं पारं भवार्णवस्यार्थयत इत्येवंशील स्तीरार्थी तीरस्थायीवा तीरस्थितिरितिवा प्रा कृतत्वा त्तीरट्ठीति अतएवाह ॥ उवहाणवंति ॥ उपधीयते उपष्टभ्यते श्रुतमनेनेति उपधानं श्रुतविषय स्तपउपचारइत्यर्थ स्तद्वान् अतएवच ॥ दुक्खक्खवे त्ति ॥ दुःख मसुख-न्तत्कारणत्वाद्वा कर्म तत् क्षपयतीति दुःखक्षप. कर्मक्षपणच तपोऽतुक मित्यतआह ॥ तवस्सीति ॥ तपोभ्यन्तरकर्मेन्धनदहनज्वलनक ल्प मनवरतशुभध्यानलक्षण मस्ति यस्यस तपस्वी ॥ तस्सणंति ॥ यस्यैवंविध स्तस्य ण वाक्यालङ्कारे नो तथाप्रकार मत्यतघोर वर्द्धमानजिनस्येव तपो नशनादि र्भवति तथा नो तथाप्रकारा अतिघोरैवोपसर्गादिसम्पाद्यावेदना दुःखासिकाभवति अल्पकर्मप्रत्यायातत्वादिति ततश्च त त्तथाप्रकार मल्पकर्म प्रत्यायातादिविशेषणकलापोपेतं पुरुषजात पुरुषप्रकारा दीर्घेण बहुकालेन पर्यायेण प्रव्रज्यालक्षणेन कर्मभूतेन सिध्यति अणिमादियोगेन निष्ठितार्थो

हाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी । तस्सण णोतहप्पगारे तवे भवइ णोतहप्पगारावेयणा भवइ तहप्पगारे पुरिस

संयम बहुल पृथिव्यादि छकायनी रक्षाकरवामां प्रयत्नवंत तथा संवर बहुल ते आश्रवद्वारनुं रुंधनार घणी चित्तनी समाधि सहित लूखो स्नेह वर्जित तीरनी ससारनां पारनी वांछा सहित श्रुतनाणनां तपनु करनार योग उपधानादिक तपनु करनार दुखदाई कर्मनां क्षयनुं करनार तप स्वी तपनु करनार एहवा तपस्वीने तथाप्रकार तपकरवुं नपडे हलकरमी पणामाटे तथा प्रकारनी आकरी वेदनापणि नथाय । तथा प्रका

वा विशेषतः सिद्धिगमनयोग्योवा भवति सकलकर्मनायकमोहनीयघातात् ततो घातिचतुष्टयघातेन बुध्यते केवलज्ञानभावात् समस्तवस्तूनि ततो मुच्यते भवोपग्राहिकर्मभिः परिनिर्वाति सकलकर्मकृतविकारव्यतिकरनिराकरणेन शीतीभवतीति किमुक्तं भवतीत्याह सर्वदुःखाना मत करोति शारीर मानसाना मित्यर्थः अतथाविधतपोवेदनोदीर्घेणापि पर्यायेण कोपि सिध्यतीति शङ्कापनोदार्थं माह ॥ जहासेइत्यादि ॥ यथासौप्रथमजिनप्रथमनन्दनो नन्दनशताग्रजन्मा भरतोराजा चत्वारीता: पर्यन्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमसमुद्रहिमवल्लक्षणा यस्याः पृथिव्याः साचतुरन्ता तस्या अयस्वामित्वेनेति चातुर न्तः स चासौ चक्रवर्ती चेति सतथा सहिप्राग्भवे लघुकृतकर्मा सर्वार्थसिद्धविमानात् च्युत्वा चक्रवर्तितयोत्पद्य राज्यावस्थ एव केवलमुत्पाद्य कृतपूर्वलक्ष प्रव्रज्यः अतथाविधतपोवेदनएव सिद्धिमुपगतइति प्रथमांत क्रियेति ॥ आहावरेत्ति ॥ अथानतर मपरा पूर्वापेक्षया अन्वा द्वितीयस्थाने भिधानात् द्वितीया

जाए दीहेणंपरियाएणं सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतंकरेइ जहासे भरहेराया चाउरंत चक्कवट्टी । पढमाअंतकिरिया ॥ १ ॥ अहावरे दोच्चा अंतकिरिया महाकम्मपच्चाएयावि भवइ सेणंमुंडे

रनो मोटो पुरुष दीर्घकालनो पर्याय दीक्षापालीनें सिद्धथाय मोक्षजाय । बुद्ध केवलीथई सर्वभाव जाणें । कर्मथी मूकाये । सर्वकर्म रहितथई शीतलथाय । सर्व शरीर संबंधी दुखनु अंतकरीने ॥ जिम तेदृष्टांत । भरत राजा च्यारदिशिनुं धणी चक्रवरती पूर्वभवे पांचसे साधुनी वेयावच आहारथी कीधु हलकरमीथई विमाने उपनुं तिहांथी चवी इहां चक्रवर्तीथई चक्रवर्तीपद भोगी आरीसाना भवनमा केवलीथई लाख पूर्वनी दीक्षा पाली मोक्षगयो भरत चक्रवर्त एह प्रथम अंतक्रिया ॥ अथ अनतर बीजी अंतक्रिया कहेछे । महाकरमी बहुल करमना धणीनी कहो ते

महाकर्म्मभि र्गुरुकर्मभिः महाकर्मावासन् प्रत्यायातः प्रत्याजातोवा यःसतथा ॥ तस्सणमित्यादि ॥ तस्य महाकर्मप्रत्याजातत्वेन तत्क्षपणाय तथाप्र कारं घोरं तपोभवति एववेदनापि कर्मोदयसम्पाद्यत्वा दुपसर्गादीनामिति निरुद्धेनेति अल्पेन यथासौ गजसुकुमारोविष्णोर्लघुभ्राता सहि भगवतो रिष्टनेमिजिननाथस्यांतिके प्रव्रज्यां प्रतिपद्य स्मशाने कृतकायोत्सर्गलक्षणमहातपाः शिरोनिहितजाज्वल्यमानाङ्गारजनितात्यतवेदनो ऽल्पेनेव पर्यायेण सिद्धवानिति शेषकण्ठ्यं ॥ अहावरेत्यादि ॥ कण्ठ्यं यथासौ सनत्कुमारइति चतुर्थचक्रवर्त्ती सहि महातपाः महावेदनश्च सरोगत्वात् दीर्घतरपर्यायेणच सिद्ध स्तद्भवे सिद्धभावेन भवान्तरे सेत्स्यमानत्वादिति ॥ ३ ॥ अहावरेत्यादि ॥ कण्ठ्य यथासौ मरुदेवीप्रथमजिनजननी साहि स्थावरत्वेपि चीणप्रायकर्मत्वे

भवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए संजमबहुले संवरबहुले जाव उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी तस्सणं तहप्पगारे तवे भवइ तहप्पगारावेयणा भवइ तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेणं परियाएणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ जहासे जगसूमाले अणगारे । दोच्चा अंतकिरिया २ । अहावरे तच्चा अंतकिरिया महाकम्मप

मुंडथई अणगारपणुंलेई गृहस्थावास मूकीदीक्षा लीधी घणुं सयमपाले जीवरक्षादि पाले । घणा संवरनुं धणी यावत् तप उपधाननुं करनार दु खना क्षयने अर्थे तपस्वी तपतपतो तेहने तथाप्रकारनुं आकरो तप होय तथा प्रकारनी वेदनापणिहोय तथा प्रकारनुं पुरुषजात सुधीने पर्याय दीक्षानुं तेप्रते दीक्षा थोडाकालनी तुरतसीझे यावत् अंतकरे । जिम तेगजसुकुमाल अणगार कृष्णनुं भाई नेमीश्वरपासे दीक्षालेइ मसाणमा का उसगकीधो सोमल सुसरे अंगारा भरया घणीवेदना भोगी थोडीवेलायें सीधो एह बीजी अंतक्रिया ॥ अथानंतर त्रीजी अतक्रिया कहेछे महामो

नाल्पकर्मा अविद्यमानतपोवेदनाच सिद्धा गजवरारूढा या एवायुः समाप्तौ सिद्धत्वादिति एषाञ्च दृष्टान्तदार्ष्टांतिकाना मर्थानां नसर्वथा साधर्म्यमन्वे षणीय देशदृष्टांतत्वादेषा यतो मरुदेव्याः ॥ मडेभवित्तेत्यादि॥ विशेषणानि कानिचित् नघटन्ते अथवा फलतः सर्वसाधर्म्यमपि मुंडनादिकार्यस्य सिद्धत्व ॥

च्चाए यावि नवइ सेणमुंडेनविता आगाराउ जाव पव्वइए जहा दोच्चा णवर दीहेणं परियाएणं सिज्झइ जाव सव्वदुक्खाणमतं करेइ जहासे सणकुमारे राया चाउरतचक्कवट्टी । तच्चाअंतकिरिया ३ । अहावरा चउत्था अतकिरिया अप्पकम्मपच्चाए यावि नवइ सेणमुंडेनवित्ता जावपव्वइए संजमबहुले जाव तस्सणं णो तहप्पगारे तवे नवइ नोतहप्पगारा वेयणा नवइ तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेणं परियाएणं सिज्झइ

टा कर्मना धणीनेंहोय तेकहेछे । तेमुंडथईनें अगारथी अणगारपणुं प्रवृज्यालेई दीक्षालेई जिम बीजीकही तिमज जाणवी । पणि एतलो विशे ष दीर्घपर्याय पालीने घणाकाल लगि वेदना नोगवी सीझे मोक्षजाय यावत् सर्वदुखनु अतकरे जिमते सनत्कुमार राजा चातुरंत चक्रवर्त्ते चौथो महातपा महावेदन सातसे बरसलगे रोगनोगवी लाखवरस दीक्षापाली सोधो एक नवकरी मोक्षजास्ये ते अपेक्षाये सीधोकहियो । एह त्रीजी अतक्रिया ॥ अथानतर चौथी अतक्रिया कहेछे । अल्पकर्मना धणीने थोडाकर्मना धणीनेहोय । तेकहेछे । तेमुडथईनें यावत् दीक्षालेईने सा धुथई घणुंसयम पाली घणुसयमछे जेहने यावत् तथा प्रकारनुं तप मोटो नथाय तपकरवु नपडे तथा प्रकारनी घणीवेदना पणिनथाय । तथा प्रकारनुं पुरुषजात स्त्रीपणि रुधीने पर्यायप्रतेपाली केवलीथई सीझे जाव सर्वदुखनु अतकरे मोक्षजाय । जिमते मरुदेवा नगवती श्रीरिषनदेव

स्य सिद्धत्वादिति ४। पुरुषविशेषाणां मन्तक्रियोक्ता अधुना तेषामेव स्वरूपनिरूपणाय दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकसूत्राणि षड्विंशतिमाह ॥ चत्तारिरुक्खेत्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तुवृक्ष्यते छिद्यत इति वृत्ता स्ते विवचयाचत्वारः प्रज्ञप्ता. भगवता तत्र उन्नत उच्चो द्रव्यतया नामेतिसम्भावने वाक्यालङ्कारेवा एकः कश्चित् वृत्त विशेषः सएव पुनरुन्नतो जात्यादिभावतो शोकादि रित्येको भङ्ग उन्नतो नामद्रव्यतएव एकोऽन्य. प्रणतो जात्यादिभावे हीनो निम्बादिरित्यर्थः इतिद्वि तीयः प्रणतो नामैको द्रव्यतः खर्वइत्यर्थः सएव उन्नतो जात्यादिना भावेनाशोकादिरिति तृतीयः प्रणतो द्रव्यतएव खर्वः सएवप्रणतोजात्यादिहीनो नि वादिरिति चतुर्थः अथवा पूर्वमुन्नतस्तुगो धुनाप्युन्नतस्तुग एवेत्येवकालापेक्षया चतुर्भङ्गीति ॥ एवमित्यादि ॥ एवमेववृत्तवत् चत्वारिपुरुषजातानि पुरुषप्रका

जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेइ जहा सा मरुदेवा भगवई। चउत्थाअंतकिरिया ४। चत्तारिरुक्खा पन्नत्ता तंजहा उन्नएणाममेगेउन्नए १ उन्नएणाममेगेपणए २ पणएणाममेगेउन्नए ३ पणएणाममेगेपणए ४। एवमेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उन्नएणाममेगेउन्नए तहेव जाव पणएणाममेगेपणए चत्तारिरुक्खा प०

प्रथम तीर्थंकरनी माता तपविना वेदना रहित हाथीना खधपर बैठी थकीज केवलनाण पायो आयु पूर्णकरी सिद्धथई एह चौथी अंतक्रिया ॥ पुरुष विशेषकही हिवे च्यार प्रकारना वृक्षकहिया तेकहेछे। एक वृक्षद्रव्यथी ऊंचो भावथीपणि उचो तेचदनादि। एक द्रव्यथी ऊंचो जातिथी हीन निंबादि एरड प्रमुख। एक द्रव्यथी नीचो नान्हो भावथीपणि नान्हो वेल प्रमुख। एक द्रव्यथी नीचोभावथी ऊचो जातिवंत स्वादवत एलची लवगादि क ॥ एह वृक्ष सरिखा च्यार पुरुषजात पुरुष विशेष कहिया तेकहेछे । एक पुरुष द्रव्यथी ऊचो भावथीपणि ऊचो तेसाधु तथा श्रावक । द्रव्य

रा अनगारा अगारिणोवा उन्नतपुरुषकुलैश्वर्यादिभि र्लौकिकगुणैः शरीरेणवा गृहस्थपर्याये पुनरुन्नतो लोकोत्तरै र्ज्ञानादिभिः प्रव्रज्यापर्याये अथवा उन्नत उत्तमभवत्वेन पुनरुन्नतः शुभगतित्वेन कामदेवादिवदित्येकः ॥ तहेवत्ति ॥ वचसूत्रमिवेद ॥ जावत्ति ॥ यावत् पणएनामएगेपणएत्ति चतुर्भंगकस्तावद्वाच्य स्तत्र उन्नत स्तथैव प्रणतस्तु ज्ञानविहारादिविहीनतया दुर्गतिगमनाद्वा शिथिलत्वेशैलकराजर्षिवत् ब्रह्मदत्तवद्वेति द्वितीयः तृतीयः पुनरागतसंवेगः शैलकवत् मेतार्यवद्वा चतुर्थ उदायिनृपमारकवत् कालशौकरिकवद्वेति एवदृष्टान्तदार्ष्टान्तिकसूत्रे सामान्यतो भिधाय तद्विशेषसूत्राण्याह उन्नत सुगतया एकोष्वचः उन्नतपरिणतो ऽशुभरसादिरूप मनुन्नतत्व मपहाय शुभरसादिरूपोन्नततया परिणत इत्येकः द्वितीयभङ्गे प्रणतपरिणत उत्काल

तंजहा उन्नएणामंएगेउन्नएपरिणए उन्नएणाममेगेपणएपरिणए पणएणाममेगेउन्नएपरिणए पणएणामएगे पणयपरिणए ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उन्नएणाममेगेउन्नएपरिणए चउन्भंगो । चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा उन्नएणाममेगेउन्नएरूवे तहेव चउन्भंगो ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया

थी ज्ञावथी कुलठकुराई लोकीक गुण । काम देववत् । नाणादि गुणसहित ज्ञावथी साधु एक भांगो । तिमज जाव द्रव्यथी नीचो ज्ञावथी नीचो एम वृक्ष दृष्टांते च्यार प्रकारे पुरुष जाणवा ॥ वली च्यार वृक्ष कहिया रसथकी तेकहेछे ॥ एक वृक्ष द्रव्यथी उंचो ज्ञावथी पिण उंचो सरसपणा परिणतथी । एक वृक्ष द्रव्यथी उंचो ज्ञावथी नीचो माठो रसछे । एक वृक्ष द्रव्यथी नींचो ज्ञावथी ऊंचो परिणत सुरस द्राक्षादि ॥ एक वृक्ष द्रव्यथी नीचो ज्ञावथीपिण नींचो लघु अने दुरसकारेलीनीपरे ॥ एहनी परे च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहेछे ॥ एक पुरुष द्रव्यथी

चणोन्नतत्वत्यागात् एतदनुसारेण तृतीयचतुर्थौ वाच्यौ विशेषसूत्रता चास्य पूर्वमुन्नतत्वप्रणतत्वे सामान्येनाभिहिते इहतु पूर्वावस्थातो ऽवस्थान्तरगमनेन विशेषिते इति एव दार्ष्टांतिकेपि परिणतसूत्र मवगन्तव्यमिति ४ परिणामश्चा कारबोधक्रियाभेदा त्त्रिधा तत्राकारमाश्रित्य रूपसूत्र तत्रउन्नतरूप संस्था नावयवादिसौंदर्य्यात् गृहस्थपुरुषोप्येवं प्रव्रजितस्तु संविग्नसाधुनेपथ्यधारीति बोधपरिणामापेचाणि चत्वारिसूत्राणि तत्र उन्नतो जात्यादिगुणै रुच्चत यावा उन्नतमनाः प्रज्ञत्या औदार्यादियुक्तमना एवमन्येपि नयः एवमिति सङ्कल्पादिसूत्रेषु चतुर्भङ्गिकातिदेशो कारि लाघवार्थं सङ्कल्पो विकल्पो मनो

पन्नत्ता तंजहा उन्नएणामं ४ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उन्नएणाममेगेउन्नएमणे उन्न० एवं

ऊंचा भावथी पिण ऊंचा परिणतना धणी ग्यानादिगुणयुक्त । ग्यानरहित तेनींच परिणते इम च्यार भांगाकरीलेवा ॥ वली च्यार वृक्ष कहिया तेकहेछे ॥ एक वृक्ष द्रव्यथी ऊचाछे अने उन्नत रूपछे संस्थान आकार वयथी सुंदरपणायी तिम च्यार भागा जाणवा ॥ इमज च्यार प्रकार ना पुरुष जाणवा तेकहेछे ॥ गृहस्थआश्री द्रव्यथी उन्नतकुल भावथी सुंदर शरीर रूप । साधुआश्री द्रव्यथी ऊचो संवेगी भावथी ऊचो ते साधुना वेषसहित इम च्यारभेद जाणवा ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहेछे ॥ एक पुरुष द्रव्यथी उन्नत इत्यादि गुणे भावथी उन्नत [illegible] भावे औदार्य्यादि गुणयुक्त औदार्यादि सहित सकल्प तेउन्नत सकल्प कहिये । उन्नतथी विपरीत तेप्रणत नीचोपणि इम सर्वत्र जाणवु ॥ इम उन्नतसाथे सकल्पे तेमान विशेष विचार तेहनी चोभंगी ॥ इम प्रज्ञासाथे च्यार भागा । प्रकृष्टग्यान तेप्रज्ञा एतलो अर्थ विशेष ॥ उ न्नत विशेष एहनुं उन्नतपणुं तेविसवाद रहित नाण दृष्टिमांपिण भावथी उन्नतपणु अविसवाद ॥ इम दृष्टि चक्षु [illegible] अथवा नजरत तेथा

णिगेपए णिमर्गद्दत्यर्थः उन्नतत्वंचा स्योदाय्योदियुततया सदर्थनिषयतगाया ८ प्रकष्टं ज्ञानं प्रज्ञान सूक्ष्मार्थविवेचकत्वमित्यर्थः तस्याचोन्नतत्व मविसम्बादि तया ९ तथादर्शनं दृष्टि चक्षुर्ज्ञानं नयमतवा तदुन्नतत्त्व मव्यसम्बादि तयेवेति १० क्रियापरिणामापिच मतःसूत्रनय तत्र शीलाचारः शीलं समाधिः तत् प्रधान स्तस्यवा चारो नुष्ठानं शीलेनवा स्वभावेनाचार इति उन्नतत्व चास्या दूषणतया वाचनान्तरेतु शीलसूत्र माचारसूत्रंच भेदेनाधीयत इति ११ व्यवहारः प्रन्योन्यदानग्रहणादि विवादोवा उन्नतत्व मस्य श्लाघ्यत्वेनेति पराक्रमः पुरुषाकारविशेषः परेषांवा अनूर्ण माक्रमणं तस्योन्नतत्व मगतिहतत्वेन श्रोभनविषयत्वेनचेति उन्नतविपर्ययः सर्वत्र प्रणतत्व भावनीयमिति ॥ एगेपुरिसेत्यादि ॥ एतेषु मनःप्रभृतिषु सप्तसु चतुर्भङ्गिकासूत्रेषु एकएवपुरुषजातालापकोध्येतव्यः प्रतिपक्षो द्वितीयःपक्षो दृष्टान्तभूतो वृक्षसूत्रे नास्ति नाध्येतव्यमिति यावत् एव मनःप्रभृतीना दार्ष्टान्तिकपुरुषधर्माणां दृष्टान्तभूतवृक्षेष्व सम्भवादिति १२ ॥ उज्जुत्ति ॥ ऋजुरवक्रोनामेति पूर्ववदेवाः कश्चित् वृक्षः तथा ऋजुरविपरीतस्वभाव श्रौचित्येन फलादिसम्पादना दित्येकः द्वितीये द्वि

सकप्पे पन्ने दिठी सीलाचारे ववहारे परक्कमे एगेपुरिसजाए पडिवक्खो णत्थि । चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता

पे च्यार भागालेवा ॥ इम शील आचारनापिण च्यार भांगा । शील तेसमाधि तेहनो आचार भावथी उन्नत । व्यवहारे पिण च्यार भांगा । पराक्रम तेपुरुषाकार तेथी च्यार भांगा । इहां भावथी उन्नतपणुं पाछो हणाये नथी । एसात भागांनेविषे एकज आलावो जाणवुं । मनप्रमुखनेविषे प्रतिपक्षनो सूत्रनथी ॥ च्यार प्रकारना वृक्ष कहिया तेकहेछे ॥ एक वृक्ष द्रव्यथी सरल वक्रनथी भावथी उचित योग्य फलनो देणहार । एक द्रव्यथी सरल । भावथी वक्र विपरीत फलनो देणहार । एम च्यार भागा कहिवा ॥ एहनीपरे च्यार भांगा पुरुषना

तीयं पद ॥ वंकइति ॥ वक्र: फलादौविपरीत: तृतीये प्रथमपदं वक्र'कुटिल: चतुर्थ: सुज्ञान: अथवा पूर्वं ऋजु: अवक्र: पश्चादपि ऋजु रवक्रो ऽथवा मूले ऋजुरतेच ऋजु रित्येव चतुर्भङ्गी कार्येत्येषदृष्टात: पुरुषस्तु ऋजु रवक्रो वहिस्तात् शरीरगतिवाक्चेष्टादिभि स्तया ऋजु रन्तर्निर्मायित्वेन सुसाधुवदित्येक: तथो रिजु स्तथैव ॥ वकइतितु ॥ वक्र: अन्तर्मायिकत्वेन मायिकारणवशप्रयुक्तार्जवभावो दु.साधुवदिति द्वितीय स्तृतीयस्तु कारणवशा दर्शितवहिरनार्जवों तन्निर्माय इति प्रवचनगुप्तिरक्षाप्रवृत्तसाधुवदिति चतुर्थ उभयतोवक्र' तथाविधशठवदिति कालभेदेन वाव्याख्येय २ अथ ऋजु' ऋजुपरिणतद्रव्यादिका एकादश चतुर्भङ्गिका लाघवार्थमति देशेनाह एवमित्यनेन ऋजुर्नाम ऋजुरित्यादिनोपदर्शितक्रमभङ्गकक्रमेण ॥ यथेति ॥ येनप्रकारेण परिणतरूपादिविशेषणनवकविशेषिततयेत्यर्थ: उन्नतप्रणताभ्यां परस्पर प्रतिपक्षभूताभ्या गम सदृशपाट: क्षत: तथा तेनप्रकारेण परिणतरूपादिविशेषिताभ्या मित्यर्थ: ऋजुवक्राभ्यामपि भणितव्य: कियत्तमइत्याह ॥ जावपरक्कमेत्ति ॥ ऋजुवक्रवृक्षसूत्रात् त्रयोदश सूत्रं यावदित्यर्थ: तत्र ऋजु:ऋजुपरिणत ऋजुरूपलक्षणानि षट्सूत्राणि वृक्षदृष्टान्त पुरुषदार्ष्टांतिकसरूपाणि शेषाणितु मन: प्रभृतीनि सप्त अदृष्टांतानीति १२ पुरुषविचार एवेदमाह ॥ पडिमेत्यादि ॥ स्फुटं

तंजहा उज्जुणाममेगे उज्जु उज्जुणाममेगेवंके चउभंगो । एवामेव चत्तारिपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उज्जु णामं एगेउज्जु ४ । एवंजहाउन्नयपणएहिं गमो तहा उज्जुवंकेहिंवि भाणियव्वो जाव परक्कमे पडिमाप

कहिया तेकहैछे ॥ एक पुरुष द्रव्यथी जात्यादिकथी सरल भावथी सरल स्वभावी । इम जिम उन्नतपदना च्यार भांगा तिम रिजुवक्रना पिण च्यार भांगा कहिवा पराक्रमलगे ॥ यतीनी बारे प्रतिमा अभिग्रह विशेष अंगीकार कीधा एहवा अणगारने सूझै च्यार भाषानो बोलिवो ते कहैछे ॥ याचनी

परं प्रतिमाभिक्षुप्रतिमा द्वादश समयप्रसिद्धा स्ताः प्रतिपन्नो ऽभ्युपगतवान् य स्तस्य याच्यते अनयेति याचनी पानकादेः दाहिसिमेएत्तोअणतरं पाणग जायमित्यादि समयप्रसिद्धक्रमेण तथा प्रच्छनी मार्गादि कथञ्चित् सूत्रार्थयोर्वा तथा अनुज्ञापनीया अवग्रहस्य तथापृष्टस्य केनाप्यर्थादिर्व्याकरणी प्रतिपा दनीति भाषा प्रस्तावा द्भाषाभेदानाह ॥ चत्तारिभासेत्यादि ॥ जात मुत्पत्तिधर्म्मक तत्त्वव्यक्तिवस्तु अतोभाषाया जातानि व्यक्तिवस्तूनिभेदाः प्रकाराः भाषाजातानि तत्र सतो मुनयोगुणाः पदार्थावा तेभ्योहितं सत्यमेक प्रथम सूत्रक्रमापेक्षया भाष्यते सा तयावा भाषणवा भाषा कोययोगग्रहीतवा ग्योग निसृष्टभाषाद्रव्यसंहति स्तस्या जात प्रकारो भाषाजात अस्त्यात्मेत्यादिवत् द्वितीयं सूत्रक्रमादेव ॥ मोसति ॥ प्राकृतत्वात् मृषा अनृत नास्त्या त्मेत्यादिवत् तृतीय सत्यमृषा तदुभयस्वभावं आत्मास्यकर्त्तेत्यादिवत् चतुर्थमसत्यामृषा अनुभयस्वभाव देहीत्यादिवदिति भवतस्यानगाथे सच्चाहिया

भिक्खुस्सणं अणगारस्स कप्पंति चत्तारिभासाउ भासित्तए तं॰ जायणी पुच्छणी अणुन्नवणी पुठस्सवागरणी। चत्तारि चत्तारिभासजाया पन्नत्ता तंजहा सच्चमेगंभासजायं बीइयमोस तइयंसच्चामोस चउत्थंअसच्चमोसं।

तेयाचनानी आहारादिकनी एआपीस मुझने। पूछणी मार्गादिकनी दाखिवो अथवा सूत्रार्थनो गुरुने पूछिवो। अणुन्नवणी अवगृहनी आग्या देवो। कोईये अर्थादि पूछनो तेकहवु तेपृष्टव्याकरण पूछ्यानु जवाब देवु एच्यार भाषा बोलै॥ भाषाना भेद कहेछे। च्यार प्रकारनी भाषा कही। एक सत्य भाषानुं प्रकार जेसूत्रानुसारे सांचु बोलवु बीजी मृषा खोटु बोलवु नास्तिकनीपरे। त्रीजी सत्या मृषा नास्तिकनी परे जीवादि नथी। चौथीसाची नथी खोटीपिण नथी देहीत्यादिवत्। वली पुरुषनांभेद कहवाने कहेछे। च्यार प्रकारे वस्त्र एक शुद्ध निर्मल

सयामिह संतीमुणाओगुणापयत्थावा तव्विवरीयामोसा मीसाजातदुभयसहावा ॥ १ ॥ अणहिगयोजायाई सुविसहोच्चियकेवलोअसच्चमुसा एयासभेय लक्खण सोदाहरणाजहासुत्तेत्ति ॥ २ ॥ पुरुषभेदनिरूपणा येवेयं त्रयोदशसूत्री ॥ चत्तारिवत्थेत्यादि ॥ स्पष्टा नवरं शुद्धंवस्त्रं निर्मलतंत्वादिकारणारब्धत्वात् पुनः शुद्धमागन्तुकमलाभावादिति अथवा पूर्वं शुद्ध मासी दिदानीमपि शुद्धमेव विपर्च्ची सुज्ञानावेवेति अथदार्ष्टांतिकयोजना ॥ एवमेवेत्यादि ॥ शुद्धो जात्यादिना पुनःशुद्धो निर्मलज्ञानादिगुणतया कालापेक्षयावेति ॥ चउभंगोत्ति ॥ चत्वारोभङ्गाः समाहृताश्चतुर्भङ्गी चतुर्भंगवा पुल्लिंगताचात्र प्राकृतत्वा त्तदयमर्थो वस्त्रव च्चत्वारोभङ्गाःपुरुषेपि वाच्याइति ॥ एवमिति ॥ यथा शुद्धान् शुद्धपदे परे चतुर्भंग सदार्ष्टांतिक वस्त्रसुक्त एवशुद्धपदप्राक्पदे परिणतपदे रूपपदे च चतुर्भंगानि वस्त्राणि ॥ सपडिवक्खंत्ति ॥ सप्रतिपक्षाणि सदार्ष्टांतिकानि वाच्यानि इति तथाहि चत्तारिवत्था पन्नत्ता तजहा सुद्धेनामएगे सुद्धपरिणए चतुर्भङ्गी ॥ एवेत्यादि ॥ पुरुषजातसूत्रचतुर्भङ्गी एव सुद्धेनाम एगे सुद्धरूवे चतुर्भङ्गी एव पुरुषेणापि व्याख्यातपूर्ववत् ॥ चत्तारि इत्यादि ॥ शुद्धो

वत्था पन्नत्ता तंजहा सुद्धेणामंएगेसुद्धे सुद्धेणामंएगेअसुद्धे असुद्धेणामंएगेसुद्धे असुद्धेणामंएगेअसुद्धे । एवा मेव चत्तारिपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा सुद्धेणामएगेसुद्धे चउभंगो। एवंपरिणयरूवे वत्था सपडिवक्खा । च

तंतुथी नीपनुं नवीन मलरहित। एक शुद्ध तंतुथी नीपनुं पणिमलिनथयोछे । एक अशुद्ध मलिन तंतुथी नीपनुंछे पणिनिखारी शुद्धकीधोछे । एकतंतु द्रव्यथी अशुद्ध मलिन त्रावथी पणिमलिन थयोछे ॥ एम च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे । एक शुद्ध जात्यादिके करी त्रावथी पिणनाणादिकथी शुद्धछे । एम वस्त्रनीपरे च्यार भांगा कहिवा ॥ एम परिणतपदें रूपपदे च्यार च्यार भांगा कहिवा ॥ वस्त्रने प्रतिपक्ष दृष्टां

वहि:शुद्धमना: अत: एवं शुद्धसङ्कल्प: शुद्धप्रज्ञ: शुद्धदृष्टि: शुद्धशीलाचार: शुद्धव्यवहार: शुद्धपराक्रमइति वस्त्रवर्ज्या: पुरुषाएव चतुर्भङ्गवन्तो वाच्या: व्याख्याच प्रागिवेति अतएवाह ॥ एवमित्यादि ॥ पुरुषभेदाधिकारएवेदमाह ॥ चत्तारिसुएत्यादि ॥ सुता: पुत्रा: ॥ अइजाएत्ति ॥ पितु:सम्पदमतिलंघ्य जात: सम्वृत्तो ऽतिक्रम्यवा ता यात: प्राप्तो विशिष्टतरसंपद समृद्धतरइत्यर्थ: इत्यतिजातो तियातोवा ऋषभवत् तथा ॥ अणुजाएत्ति ॥ अनुरूप: सम्पदापितुस्तुल्योजातो ऽनुजात: अनुगतोवा पितृविभूत्यानुयात: पितृसमइत्यर्थ: महायशोवत् आदित्ययशसापित्रा तुल्यत्वात्तस्य तथा ॥ अवजाएत्ति ॥ अपइत्यपसदोहीन: पितु: सम्पदो जातो अपजात: पितु: सकाशा दोषहीनगुण इत्यर्थ: आदित्ययशोवत् भरतापेक्षया तस्यहीनत्वात् तथा ॥ कुलिंगालेत्ति ॥

चत्तारिपुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा सुद्धेणामएगेसुद्धमणे चउन्नंगो । एवं संकप्पे जाव परक्कमे । चत्तारिसुया पण्णत्ता तंजहा अइजाए अणुजाए अवजाए कुलिंगाले । चत्तारिसच्चजाया पण्णत्ता तंजहा सच्चेणामंएगेसच्चे

त पणिकहिवो जिमवृक्षने कहियो तिम ॥ च्यार प्रकारनां पुरुष कहिया तेकहैछे । एक ज्यात्यादिकथी शुद्ध तथा भावथी पिणशुद्ध अंत:करण छै । एहना पणिच्यार भांगा कहिवा ॥ एम शुद्धसकल्प मनशुद्धि युक्तना च्यार भांगा कहिवा ॥ एम शुद्धप्रग्य शुद्धशीलाचार जिहांलगि शुद्ध पराक्रमआवे तिहालगे प्रत्येकै च्यार च्यार भांगा कहिवा ॥ पुरुषना अधिकार गाटेज कहैछे च्यार प्रकारना पुत्रकहिया ते कहैछे । अतिजात जेपितानी अपेक्षाये सपदाथी अधिको भरतनीपरे । अनुजात तेपितासरिखो आदित्ययशानुंपुत्र महायशराजाजिम । अपजात जेपिताथी सपदायेहीन भरतनी अपेक्षाथी जिम आदित्ययशा । कुलागार कुलगोत्रने अदूषकपणाथी तथा उपताप देवाथी कडरीकनीपरे । एम शिष्यनापणि

कुलस्यस्वगोत्रस्या ङ्गारद्रवाङ्गारो दूषकत्वा दुपतापकत्वाद्देति कण्डरीकवत् एव शिष्यचातुर्विध्यमप्यवसेयं सुतशब्दस्य शिष्येष्वपि प्रवृत्तिदर्शनात् तत्राभिजा त: सिंहगिर्यपेक्षया वैरस्वामिवत् अनुजात: शय्यभवापेक्षया यशोभद्रवत् अपजातो भद्रवाहुस्वाम्यपेक्षया स्थूलभद्रस्वामिवत् कुलाङ्गार: कूलवालुकव दुदा यिनृपमारकवद्देति तथा ॥ चत्तारीत्यादि ॥ सत्यो यथा वद्दस्तुभणना यथा प्रतिज्ञातकरणाच्च पुन: सत्य: सयमित्वेन सद्भ्योहितत्वात् अथवा पूर्वं सत्य आसी दिदानीमपि सत्यएवेति चतुर्भंगी एवंप्रकारसूत्राख्यतिदिशन्नाह ॥एयमित्यादि॥ व्यक्त नवर मेव शूत्राणि चत्तारि पुरिसजायापन्नत्ता त सच्चेनामंएगे सच्चपरिणए ४ एवं सच्चरूवे ४ सच्चमणे ४ सच्चसंकप्पे सच्चपन्ने ४ सच्चदिट्ठी ४ सच्चसीलायारे ४ सच्चववहारे ४ सच्चपरक्कमेत्ति ४ ॥ पुरुषाधिकारएवेद मपर माह ॥ चत्तारिवत्थेत्यादि ॥ शुचि: पवित्रभावेन पुन: शुचि:सस्कारेण कालभेदेनवेति पुरुषचतुर्भंग्या शुचि: पुरुषो पूतिशरीरतया पुन: शुचि:स्वभावेनेति

सच्चेणामंएगेच्चसच्चे ४ एवंपरिणएजाव परक्कमे । चत्तारिवत्था पण्णत्ता तंजहा सुइणामंएगेसुई सुईणामं

च्यार प्रकार जाणवा सुतशब्दथी शिष्यनुं पणिगूहणाथायछे अभिजात तेसिंहगिरीनी अपेक्षाये जिम वैरस्वामी । अनुजात शय्यंभवसूरिनी अपे क्षाथी जिम यशोभद्रसूरि । अपजात तेभद्रबाहु स्वामीनी अपेक्षाथी जिम स्थूलभद्रस्वामी । कुलांगार जिम कूलवालुक तथा उदायिनृपनुं मार क ॥ वली च्यार प्रकारनां पुरुषकह्यिा तेकहेछे । एक साचो सांची प्रतिग्यानुधणी सत्यसयमनुं पालनहार । एक द्रव्यथी सांचो साची प्ररू पणानुंधणी पणिभावथी असत्यनु चलावनहार एम च्यार भांगा कहिवा ॥ एम सत्य परिणतना च्यार भांगा यावत् जिहांलगे सत्यपराक्रमना च्यार भागाहोय तिहांलगे कहिवा ॥ च्यार प्रकारना वस्त्रकह्यिा तेकहेछे । एक वस्त्रद्रव्यथी पवित्र अने सस्कारथी पवित्र निखास्युं धोयुं ।

॥ सुइपरिणएसुइरूवे ॥ इत्येतत् सूत्रद्वय दृष्टांतदार्ष्टांतिकोपेतं ॥ सुइमणेइत्यादि ॥ च पुरुषमात्राश्रितमेव सूत्रसप्तक मतिदिशन्नाह ॥ एवमित्यादि ॥ कथं पुरुषाधिकारएवेद मपरमाह ॥ चत्तारिकोरवेत्यादि ॥ तत्र आम्रसूत स्तस्य प्रलम्ब: फलं तस्यकोरक तन्निष्पादक मुकुल आम्रफलकोरक एवमन्येपि नवर तालो वृक्षविशेष: वल्ली कालिंग्यादिका मेंढविषाणा मेषशृङ्गसमानफला वनस्पतिजाति: आउलिविशेषइत्यर्थ: तस्या: कोरक मितिविग्रह एतान्येव चत्वारि दृष्टान्ततयो पात्तानीति चत्वारीत्युक्तं नतु चत्वार्येव लोके कोरकाणि बहुतरोपलभादिति ॥ एवमित्यादि ॥ सुगम नवर मुपनय: एवय: पुरुष: सेव्यमान उचि

एगेअसुई चउभंगो । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा सुईणामंएगेसुई चउभंगो । एवं जहेव सुद्धेणंवत्थेणं भणियं तहेव सुइणावि जावपरक्कमे । चत्तारि कोरवा पन्नत्ता तंजहा अंबपलंबकोरवे ताल पलबकोरवे वल्लिपलंबकोरवे मिंढविसाणकोरवे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा अंबपलंब

एक द्रव्यथी पवित्र भावथी अपवित्र । एम च्यार भांगा कहिवा ॥ एणीपरे च्यार भागा च्यार प्रकारनां पुरुष कहिया । एक शरीरथी पवित्र भावथी मनपरिणामथी अपवित्र । एम च्यार भांगा कहवा ॥ एम यावत् शुद्धवस्त्रना च्यार भागा कहिया तिमज पवित्रसाथे कहवा शुचिपरि णात जाव शुचिपराक्रमलगे कहवा पुरुषआश्री ॥ च्यार प्रकारे कोरक कहिया तेकहेछे । आंबानुं फल आगली कोपल नीकले तेकोरक । ताल वृक्षनु कोरक । बेल कालिंग्यादिकनु कोरक । बोकडानासिंग सरिखा फलनी वनस्पति तेआउल तेहना फलनु कोरक । एहनीपरे च्यार प्रकार ना पुरुष कहिया तेकहेछे । एक अंबफल कोरकसमान जेपुरुष सेव्योथको उचितकालें फलआपे वसते तिमआपे । जेपुरुष सेवाकरता सेवकनें कष्ट

तकाले उचितमुपकारफलं जनयत्यसा वा म्रप्रलम्बकोरकसमानः यस्त्व तिचिरेण सेवकस्य कष्टेन मद्दुपकारफलं करोति सतालप्रलम्बकोरकसमानः यस्तु अक्लेशेनाचिरेणच ददाति सवल्लीप्रलम्बकोरकसमानः यस्तु सेव्यमानोपि शोभनवचनान्येव ब्रूते उपकारन्तु नकञ्चन करोति स मिढविषाणकोरकसमानः त त्कोरकस्य सुवर्णवर्णत्वा दखाद्यफलदायकत्वाच्चेति पुरुषाधिकारएवघुणसूत्र त्वचनाह्यवल्क खादतोति त्वक्खादः एवशेषाअपि नवर ॥ छल्लित्ति ॥ अभ्यन्तरं वल्क काष्ट प्रतीत सारः काष्टमध्य मितिदृष्टान्तः एवमेवेत्याद्युपनयसूत्र भिचणशीला भिचणधर्म्माणो भिचणेसाधवोवा भिचाका: त्वक्खादनघुणेन समानो ऽत्यत सन्तोषितया आयामाम्लादिप्रान्ताहारभच्चकत्वात् त्वकखादसमानः एव छल्लीखादसमानो अलेपाहारकत्वात् काष्टखादसमानो निर्वि

कोरवसमाणे तालपलंबकोरवसमाणे वल्लिपलवकोरवसमाणे मिढविसाणकोरवसमाणे। चत्तारि घुणा प० तंजहा तयरकाए छल्लिखाए कठखाए सारखाए। एवामेव चत्तारि भिरकाया पसत्ता तंजहा तयरकायस माणे जाव सारखायसमाणे। तयरकायसमाणस्सणं भिरकागस्स सारखायसमाणे तवे पन्नत्ते। १। सार

थी फलआपे तेताडफलनीपरे तेताडफल कोरकसमान । जेपुरुष कष्टविना सेवकने वहुलधनादि आपे तेवेल प्रलंब कोरकसमान । जेपुरुष सेव्यो थको मीठावचनबोले पणिकाइ आपेनथी तेमिढविषाण कोरकसमान ॥ च्यार प्रकारना घुण काष्टमे उपजे तेजीवकह्या ते कहेछे ॥ एक वाहिर ली त्वचा खाय । एक माहिली छालखाय । एक काष्ट खाय । एक काष्टनो सारमध्यखाय । इणदृष्टांते च्यार भिचाचर साधुकहिया तेकहेछे ॥ त्वचाखाय तेघुण सरिखा तेभिचुसतोषी आंविल प्रमुख तपप्रांतमां आहारनो लेणहार । एम जिहांलगें सारखाय तेसरिखो तेसर्वे विगयनो आ

कृतिकाहारतया सारखादसमानः सर्वकामगुणाहारकत्वादिति एतेषां चतुर्णामपि भिक्षाकाणां तपोविशेषाभिधानसूत्रं॥ तयक्खायेत्यादि ॥ सुगम केव
ल मयभावार्थः त्वक्कल्पासाराहाराभ्यवहर्त्तु निरभिष्वङ्गत्वा त्कर्मभेद मङ्गीकृत्य वज्रसारं तपोभयतीत्यतो तिदिश्यते ॥ सारक्खायसमाणेतवेत्ति ॥ सार

६॥

खादघुणस्य सारखादत्वादेव समर्थत्वात् यज्ञतुडत्वाश्चेति सारखादसमानस्योज्ज्वलचणस्य साभिष्वंगतया त्वक्खादसमानं कर्मसारभेद प्रत्यसमर्थं तपः
स्यात् त्वक्खादघुणस्यनि त्वक्खादत्वादेव सारभेदनं प्रत्यसमर्थत्वादिति तथा छल्लीखादघुणसमानस्य भिक्षाकस्य त्वक्खादघुणसमाना पेक्षया विशिष्टशि
ष्टभोजित्वेन विशिष्टाभिष्वगत्वात् सारखादकाष्टखादघुणसमानापेक्षया त्वसारभोजित्वेन निरभिष्वगत्वाच्च कर्मभेदगति काष्टखादघुणसमान तपः प्र
ज्ञप्तं नातितीव्र सारखादघुणव न्नाप्यति मन्दादित्वक्छल्लीखादघुणवदितिभावः तथा काष्टखादघुणसमानस्य साधोः सारखादघुणसमानापेक्षया त्वसार

खायसमाणस्सणं भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे पन्नत्ते छल्लिखायसमाणस्सणं
भिक्खागस्स कठखायसमाणे तवे पन्नत्ते । ३ । कठखायसमाणस्सणं भिक्खागस्स

हारीहोय तिहालगे कहिये । छल्लीखाय तेघुण सरिखो साधु अल्पाहारी । काष्टखाय तेघुण सरिखो साधु नीवी प्रमुखनो आहारी ॥ हिवे
च्यार भिक्षुना तपकहेछे ॥ त्वचाखाय तेघुणसमान आहारना करणहार साधुनें सारखादक समान तपकहियो सारखाय तेघुणनी चांच वज्रनीपरें
आकरीहोय तिम कर्मभेद वा आकरो तपकरै । सारखादक समान सरस आहारना करणहार साधुनें त्वचा खाय तेसमान तपकहियो थोडो
तपकरै कर्मनुसार मध्यभेदी नसकै । और मांहिली छालखाय तेसमान थोडा आहारना करणार साधुनें काष्टखादक समान तपकहियो ।

भोजित्वेन निरभिष्वंगत्वात् त्वक्छल्लीखादघुणसमानापेक्षया सारतरभोजित्वेन साभिष्वंगत्वाच्च छल्लीखादघुणसमानंतपः प्रज्ञप्तं कर्म्मभेदंप्रति न सारखाद काष्टखादघुणवदतिसमर्थादिनापि त्वक्खादघुणवदतिमन्दमितिभावः प्रथमविकल्पे प्रधानतरन्तपो द्वितीये अप्रधानतरन्तपो तृतीयेप्रधान चतुर्थे ऽप्रधा नमिति अनन्तरं वनस्पत्यऽवयवखादका घुणाः प्ररूपितादृति वनस्पतिमेव प्ररूपयन्नाह ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ वनस्पतिः प्रतीतः सएवकायः शरीरं येषान्ते वनस्पतिकाया स्तएव वनस्पति कायिका स्तृणप्रकारा वनस्पतिकायिका स्तृणवनस्पतिकायिका वादरा इत्यर्थः अग्र वीज येषान्ते अग्रवीजाः कोरण्टका दयः अग्रेवा वीज येषान्ते अग्रवीजा वीह्याद्यो मूलमेव वीज येषान्ते मूलवीजाः उत्पलकन्दादयः एव पर्ववीजा इक्ष्वादयः स्कन्धवीजाः शल्लक्यादयः स्कन्धः त्युडमिति एतानिच सूत्राणि नान्यव्यवच्छेदनपराणि तेन वीजरुहसम्मूर्च्छनजादीना नाभावो मन्तव्यः सूत्रान्तरविरोधादिति अनन्तर वनस्पतिजीवाना

वल्लिखायसमाणे तवे पण्णत्ते । ४ । चउव्विहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता तंजहा अग्गबीया मूलबीया पो

पूर्वे कहियो तेहथी काईक विशेष तपकरै । काष्टखादक समान विगय रहित आहारनां लेणहार साधुनें छल्लिखादक समान तपकहियो हलको तपकरै ॥ प्रथम भेदनु प्रधानतर घणोतप बीजे भेद अप्रधानतप त्रीजें प्रधान चौथे भेदै पणि प्रधानतप । वनस्पतिना खानहार जीवनुं दृष्टात कहियो तेमाटे वनस्पतिना भेदकहैछे । च्यार प्रकारे तृण वनस्पतिकाय तेबादर वनस्पती कही तेकहैछे । अगूमा बीजछे जेहने ते अगूवीजा को रंटवृक्ष वृही जुआरि गोहुं बाजरा प्रमुख अगूवीजा । मूलहीजछे बीज जेहनुं तेमूलबीजा कदादिक । पर्व गाठछे वीज जेहनुं तेपोरवीजा इक्षु प्रमुख । स्कंधछे बीज जेहनुं तेस्कधबीजा सल्लकी प्रमुख ॥ एह वनस्पती पृथ्वीने आश्रितछे रत्नप्रभा पृथवी आश्रित नारकी पणिछे ते कहैछे

चतुःस्थानकमुक्त मधुना जीवसाधर्म्यात् नारकजीवानाश्रित्य तदाह ॥ चउहीत्यादि ॥ सुगम केवलं ॥ ठाणेहिंति ॥ कारणैः ॥ अहुणोववन्नेत्ति ॥ अधुनो पपन्नो ऽचिरोपपन्नो निर्गत मयं शुभमस्मा दितिनिरयो नरकः तत्र भवो नैरयिक स्तस्य चानन्योत्पत्तिस्थानतां दर्शयितुमाह निरयलोके तस्मादिच्छेन्मा नुषाणामयं मानुष स्तं लोकं क्षेत्रविशेष ॥ हव्व ॥ शीघ्रमागन्तु ॥ नोचेवत्ति ॥ नैव णवाक्यालङ्कार ॥ सचाएइ ॥ सम्यक्शक्नोति आगन्तु ॥ समुब्भुयति ॥ समुद्भूता मतिप्रबलतयोत्पन्ना पाठान्तरेण सम्मुखभूता मेकहेलोत्पन्ना म्पाठान्तरेण अमहती महती भवन महद्भूतं तेनसह यासा समहद्भूता तां समहद्भूता वा वेदना दुःखरूपा वेदयमा नो ऽनुभवन् इच्छेदिति मनुष्यलोकागमनेच्छायाः कारण मेतद्देववा ऽशकनस्य तीव्रवेदनाभिभूतोहि नशक्त आगन्तु मि ति तथानिरयपालै रवादिभि र्भूयोभूयः पुनःपुन रधिष्ठीयमानः समाक्रम्यमाण आगन्तु मिच्छे दित्यागमनेच्छाकारणमेतद्देववा गमनाशक्तिकारणं तैरत्य

रवीया खंधबीया। चउहिंठाणेहिं अहुणोववन्ने णेरइए णिरयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसंलोगं हव्वमागच्छि त्तए णोचेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए १। अहुणोववन्नेणेरइए णिरयलोगंसि समुब्भुयं वेयण वेयमाणे

च्यार थानकें तुरत उपनुं नारकी नरकलोकमां नरकावासमां रहियो थको चिंतवें वांछे मनुष्यलोकमां आववानें पणि आवानें समर्थ नथाय एतले आवी नसके मनुष्य लोकमां। तुरतऊपनुं नारकी सम्यक् घणी प्रबल ऊपनी वेदनाप्रति वेदतो भोगतो वांछे मनुष्य लोकमा आवानेपण तीव्रवेद ना भोगतो इहा आवाने समर्थ नथाय एहवेदनानुं पहलु थानकथयु। तुरत ऊपनो नारकी नरकलोकने विषें नरकपाल परमाधामी प्रमुख थी वारंवार आक्रमी आक्रमतोथको वेदना भोगवतो मनुष्यलोकमां आववुं वाछे एपरमाधामीना कारणथी आववानी वांछाकरे पणि आववानें सम

न्ताक्रान्तस्यागन्तु मशक्तत्वादिति तथा निरये वेद्यते अनुभूयते यन्निरययोग्यवा यद्वेदनीयं अत्यन्ताशुभनामकर्मादि असातवेदनीयंवा तत्र कर्मणि अक्षीणे स्थित्या अवेदिते ऽननुभूतानुभागतया ऽतिजीर्णे जीवप्रदेशेभ्यो ऽपरिशटिते इच्छे न्मानुषलोकमागन्तु नच शक्नोति अवश्यवेद्यकर्मनिगडयन्त्रितत्वा दित्यागम नाशकनएव कारण मिति तथा ॥ एवमिति ॥ अहुणोववन्ने ॥ इत्याद्यभिलापससूचनार्थः निरयायुष्केकर्मणि अक्षीणे यावत्करणात् अवेइइत्यादिदृश्य मिति निगमयन्नाह ॥ इच्चेएहिति ॥ इति एवप्रकारै रेतैः प्रत्यक्षै रनन्तरोक्तत्वादिति अनन्तर न्नारकस्वरूपमुक्त तेचासयमोपष्टम्भकपरिग्रहा दुत्पद्यन्तइति तद्वि

इच्छेज्जा माणुसंलोगं हव्व मागच्छित्तए णोचेवणं संचाएइ हव्व मागच्छित्तए २। अहुणोववन्ने णेरइए णिरय लोगंसि णिरयपालेहिं भुज्जो भुज्जो अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नोचेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए । ३ । अहुणोववन्ने णेरइए णिरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिजि ण्णंसि इच्छेज्जा नोचेवणं संचाएइ एवंनिरइया उअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जावणोचेवणं सचाएइ हव्व माग च्छित्तए ४ । एच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने णेरइए जावनोचेवणं संचाएइ हव्व मागच्छित्तए ।

र्थ नथाय अत्यंत आक्रमबाथी आवी नसकै एह बीजुंथानक ॥ तुरत ऊपनो नारकी भोगवायोग्य जेवेदनीय कर्म बांध्युंछे तेअसातावेदनीय कर्म क्षीण नथयुं थितिथी नथीवेदुंन भोगव्यो नथी जीरणथयोनथी सडियोनथी जीवप्रदेशथी तेहथी वांछे आववुं पणि गुरुकर्मपणा मांटें आवी नसकै इमज जेनरकनुं आयुकर्म बांध्योछे ते क्षीणनथयुं थितिथी यावत् आववुं वांछै पणि आववाने समर्थ नथाय आऊखो पूरो थयांविनां आवी नसकै

पञ्चभूत मारिग्रहविशेषं चतुस्थानके वतारयन्नाह ॥ कप्पंतीत्यादि ॥ कल्पन्ते युज्यन्ते निर्गतायन्था द्रव्यहेतो र्हिरण्यादे र्मिथ्यात्वादेश्चेति निर्ग्रन्थ्यः साध्व्य स्तासां सङ्घाट्य उत्तरीयविशेषरूपा धारयितुंवा परिग्रहे परिहर्तुंवा परिभोक्तुमिति द्वौहस्तौ विस्तारःपृथुत्वं यस्याःसा तथा कल्पन्तइति क्रियापेक्षया कार्ष्ठे त्वात्सङ्घाटीनां ॥ एगंदुहत्थवित्थारंएगचउहत्थवित्थारंति ॥ प्रथमासा त्तदर्थेचप्राकृतत्वात् द्वितीयोक्ता धारयन्ति परिभुंजतेचेति प्रत्ययपरिणामेनवा क्रियानु सृते र्द्वितीयैव तत्र प्रथमा उपाश्रयभोग्या त्रिहस्तविस्तरयो रेका भिक्षागमने द्वितीया विचारभूमिगमने चतुर्थी समवसरणे उक्तञ्च सघाडीओचउरी त त्थदुहत्थाउवसयमि दुन्नितिहत्थायामा भिक्खट्टाएगएगउच्चारे ॥ १ ॥ ओसरणेचउहत्था निसन्नपच्छायणीमसिणत्ति ॥ मारकत्वं ध्यानविशेषात् ध्यानविशेषा

कप्पंति णिग्गंथीणं चत्तारिसंघाडीउ धारित्तए वा परिहरित्तएवा तंजहा एगंदुहत्थवित्थारं दोतिहत्थवित्था राउ एगंचउहत्थवित्थारं। चत्तारि ज्झाणा पन्नत्ता तंजहा अट्टेज्झाणे रोद्देज्झाणे धम्मेज्झाणे सुक्केज्झाणे। अट्टे

एह च्यार थानके करी अधुना हमणा ऊपनुं नारकी यावत् पणि समर्थनथाय मनुष्यलोकमां आववानें ॥ पापपरिग्रहथी नरकमां ऊपनो तेह थी विपरिणत पुण्यनुं परिग्रह तेकहेछे । कल्पे सूझै निग्रंथी साध्वीनें च्यार सघाटिका ते पछेडी धारवी परिहरवी भोगवी तेकहेछे । एक बे हाथनी विस्तारे । बे त्रणहाथनी। एक च्यारहाथनी विस्तारे। पहली बेहाथनी ते उपाश्रयमां ओढे तीनहाथनी बे तेहमां एक गोचरीजातां ओढै बीजी थण्डिलजाता। च्यारहाथनी समोसरणमा जातां ओढै एव सर्वमली च्यारथई ॥ ध्यानार्थे पछेडियो कहियो हिवे ध्यान च्यारप्रकारे कहियो तेकहेछे । एक आर्त्तध्यान मुहूर्त्तमात्र चित्तनी थिरता। रौद्रध्यान हिंसाक्रौर्यादिसहित ध्यान तेरौद्र । धर्मध्यान श्रुतचारित्रसहित तेधर्म

र्थमेवच सङ्घात्यादिपरिग्रहइति ध्यानंप्रकरणतआह ॥ सुगम श्चेत न्नवरं ध्यातयो ध्यानानि अन्तर्मुहूर्त्तमात्र ङ्काल श्चित्तस्थिरतालक्षणा न्युक्तंच अंतोमुहुत्त
मित्त चित्तावत्थाणमेगवत्थंमि छउमत्थाणंझाण जोगनिरोहोजिणाणंति ॥१॥ तत्र ऋत दुःखन्तस्य निमित्त न्तत्रवा भव ऋतेवापीडिते भव मार्त्तन्ध्यान दु
ष्टोध्यवसायः हिंसाद्यतिक्रौर्यानुगतरौद्रं श्रुतचरणधर्मादनपेत धर्म्यं शोधयत्यष्टप्रकार कर्म्ममल शुचवा क्लमयतीतिशुक्लं ॥ चउव्विहेत्ति ॥ चतस्रोविधा
भेदायस्य तत्तथा अमनोज्ञस्यानिष्टस्य ॥ असमणुस्सत्ति ॥ पाठान्तरे अस्वमनोज्ञस्या नात्मप्रियस्य शब्दादिविषयस्य तत्साधनवस्तुनो वा सम्प्रयोग. सम्बन्ध
स्तेन सम्प्रयुक्तः सम्बद्धो ऽमनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तो ऽस्वमनोज्ञसप्रयोगसप्रयुक्तोवा य इति गम्यते तस्येति अमनोज्ञस्य शब्दादे र्विप्रयोगाय वियोगार्थं स्मृति
श्चिन्ता ता समन्वागतः समनुप्राप्तो भवति यः प्राणी सोऽभेदोपचारा दार्त्तमिति वापीतिशब्दः विकल्पापेक्षया समुच्चयार्थः अथवा मनोज्ञसप्रयोगसंप्रयुक्तो
य. प्राणी तस्य प्राणिनः विप्रयोगे प्रक्रमादमनोज्ञशब्दादिवस्तूनां वियोजने स्मृति श्चितनं तस्याः समन्वागतः समागमनं समन्वाहारो विप्रयोगस्मृतिसमन्वा

ज्झाणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा अमणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्सविप्पओगसतिसमन्नागए यावित्रवइ मणुन्नसंप ओगसंपउत्ते तस्सअविप्पओगसतिसमन्नागए यावित्रवइ । आतंकसंपओगसंपउत्ते तस्सविप्पओगसतिसमन्ना

शुकलध्यान जेआठकर्मने सोधै ॥ आर्त्त जे दुखपीडाथी ऊपनुं तेच्यारप्रकारे कहियो ते कहैछै । अमनोग्य अप्रिय वस्तुनो संप्रयोग संबंध तेहथी
प्रयुक्त प्रेर्यो एतले मानीवस्तुने योग्यप्राप्ति तेहना अमनोग्य शब्दादिकना वियोगने अर्थे टालवाने चिंताकरवाने आर्त्तध्यान आवे एह पहलो
भेद ॥ मनोग्य प्रिय शब्दादि वस्तुनो संप्रयोग सबंध प्राप्ति तेहनी तेणेसहित तेमनोग्य भलीवस्तुना अविप्रयोगने अर्थ चिंतासहित थाय ए

गतवापीति तथैव भवति आर्त्तध्यानमिति प्रक्रमः अथवा मनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तो प्राणिनि तस्येति अमनोज्ञ शब्दादे विप्रयोगस्मृतिसमन्वागत मार्त्तध्या नमिति उक्तञ्च आर्त्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्वि प्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहार इति प्रथममेवमुत्तरत्रापि नवर मनोज्ञ वल्लभधनधान्यादि अविप्रयोगो ऽवियोगइति द्वितीयमार्त्तमिति तथा आतङ्को रोगइति तृतीय तथा ॥ परिभुसियत्ति ॥ निषेविता ये कामाः कमनीयाः भोगाः शब्दादय अथवा कामौ शब्दरूपे भोगाःगन्धरसस्पर्शाः कामभोगाः कामानावा शब्दादीना योभोग स्तै स्तेनवा सम्प्रयुक्तः पाठान्तरेतु तेषा न्तस्यवा सम्प्रयोग स्तेन समायुक्तो य. सतथा अथवा ॥ परिभुसियत्ति ॥ परिक्षीणो जरादिना सचासौ कामभोगसम्प्रयुक्तश्च यस्तस्य तेषामेवा विप्रयोगस्मृतेः समन्वागत समन्वाहार स्तद पि भवत्यार्त्तध्यान मिति चतुर्थं द्वितीय वल्लभधनादिविषय चतुर्थं तत्सम्पाद्यशब्दादिभोगविषयमितिभेदो नयोर्भावनीयः शास्त्रान्तरेतु द्वितीयचतुर्थयो रे कत्वेन तृतीयत्व चतुर्थं तत्र निदानमुक्त उक्तञ्च अमणुणाणसद्दा इविसयवत्थूणिदोसमइलस्स [वस्तूनि शब्दादिसाधनानि दोसोत्ति द्वेषः] धणियवियोगचि

गएयाविन्नवइ ३ परिफुसियकामन्नोगसंपउत्तगसंपउत्ते तस्सच्चविप्पउत्तगसतिसमस्सागएयाविन्नवइ ४ । च्अह

बीजो आर्त्तध्यान । धनधान्यादिन्नलीवस्तु मलीछे तेरखेंजाये विणासे तेहनी चितानुं । आतंक रोगनुं संप्रयोग संबध पाम्याथकां एतले रोग आ व्याथका तेहनु विप्रयोग नाश तेहनी चितासहित मनुष्य आर्त्तध्यानी थाय एतले चिंतवे जेएरोग कहिए जास्ये । सेव्या जेकामन्नोग तेहना सम्प्रयोग संबध सहितथको अथवा जरासहितथयो तिवारे न्नोगव्या जेन्नोग तेहनुं जेअविप्रयोग अविनाश तेहनेअर्थे चितासहित रहे तेआर्त्त ॥ पाम्या जेन्नोग तेरोगातंके न्नोगवी नसके तेहनी चिंतासहित रहे तेपणि आर्त्त ॥ आर्त्तना च्यार लक्षण कहिया जेथी आर्त्त ओलखाय तेकहेछे

तण मसंपश्रोगाणुसरणंच ॥ १ ॥ तहसूलसीसरोगा इवेयणाएवियोगपणिहाणं तपसंपश्रोगचिंतण तप्पडियाराउलमणस्स ॥ २ ॥ इट्ठाणंविसयाईण. वेय णाएयरागरत्तस्स अविश्रोगज्झवसाणं तहसयोगाभिलासोय ॥ ३ ॥ देविंदचक्कवट्टि त्तणाइगुणरिद्धिपत्थणामइय अहमनियाणचितण मन्नाणाणुगयमच्चत त्ति ॥ ४ ॥ आर्त्तध्यानलचणा न्याह लक्ष्यते निर्णीयते परोचमपि चित्तरूपवृत्तिखात् आर्त्तध्यानमेभि रिति लचणानि तत्र क्रन्दनता महताशब्देन विरव ण शोचनता दीनता तेपनता तिपिः चरणार्थत्वा दश्रुविमोचनं परिदेवनता पुन.पुनः क्लिष्टभाषण मिति एतानिचेष्टवियोगानिष्टसंयोगरोगवेदनाजनि तशोकरूपस्यैवार्त्तस्य लचणानि यतआह तस्सक्कंदणसोयण परिदेवणताडणाइलिगाइं इट्ठाणिट्ठवियोगा वियोगवियणानिमित्ताइति ॥ १ ॥ निदानस्यैषा च लचणातरमस्ति आहच निदइनिययकयाइ पससइसठिम्हश्रोविभूईश्रो पत्थइतासुरज्जइ तयज्जणपरायणोहोइत्ति ॥ १ ॥ अथरौद्रध्यानभेदाउच्यते हिं सां सत्वानावधवेधवधनादिभि' प्रकारैः पीडा मनुवध्नाति सततप्रवृत्ता करोतीत्येवशील यत्प्रणिधानं हिंसानुवन्धोवा यत्रास्ति तद्धिसानुवंधिरौद्रध्यानमि ति प्रक्रम इति उक्तञ्च सत्तवहवेहवधण डहणकणमारणाइपणिहाणं अइकोहगाहघत्थ निग्घिणमणसोहमविवागति ॥ १॥ तथा मृषा ऽसत्य तदनुवघ्ना

स्सणं ज्झाणस्स चत्तारिलक्खणा पन्नत्ता तंजहा कंदणया सोयणया तिप्पणया परिदेवणया। रोद्दज्झाणे चउ व्विहे पन्नत्ते तंजहा हिंसाणुबंधि मोसाणुबंधि तेणाणुबंधि संरक्खणाणुबंधि ४। रोद्दस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि

आक्रंदनता महाशब्दे रोवाथी । दीनपणे शोचकरवाथी । आंसूना गेरवाथी । परिदेवनता बारंबार बहुलदुखनुं जाखवुं ॥ रौद्र च्यार प्रकारें कहियो तेकहैछे । हिंसानुबंधी जीवबधनुं चिंतववुं करुणारहित । मृषानुवधी चाडीप्रमुख खोटुबोलवुं । स्तेनानुबंधी परद्रव्य हरवानुं चित ।

ति पिशुनासभ्यासद्भूतादिभि र्वचनभेदै स्तत्स्थानुवन्धि आहच पिसुणासभासभूय भूयघायाइवयण पणिहाण मायाविणीतिसवण परस्सपच्छन्नपाव स्सत्ति १ तथा स्तेनस्य चौरस्य कर्म स्तेय तीव्रक्रोधाद्याकुलतया तदनुबन्धवतः स्तेयानुवन्धि आहच तहतिव्वकोहलोहा उलस्सभूतोवघायणमणज्जं परदव्वहरणचित्त परलोगावायनिरवेक्खति ॥ १ ॥ सरक्षणे सर्वोपायैः परित्राणे विषयसाधनधनस्यानुवन्धो यत्र तत्सरक्षणानुवन्धि यथाह सद्दाइविस यसाहण धणसरक्खणपरायणमणिट्ठ सव्वाहिसकणपरी वधायकलुसाउलचित्तति ॥ १ ॥ अथैत ल्लक्षणान्युच्यते ॥ ओसन्नदोसेत्ति ॥ हिसादीना मन्यतर स्मिन् ओसन्न प्रवृत्ते प्राचुर्यबाहुल्य यस्तएवदोषः अथवा ओसन्नति बाहुल्येना नुपरतत्वेन दोषो हिसादीना चतुर्णा मन्यतर ओसन्नदोषः तथा बहुष्व पि हिसादिषु सर्वेष्वपि दोषः प्रवृत्तिलक्षणो बहुदोषः बहुर्वा बहुविधो हिसानृतादि रिति बहुदोष स्तथा अज्ञानात् कुशास्त्रसस्कारात् हिसादि ष्व धर्मस्वरूपेषु नरकादिकारणेषु धर्मबुद्ध्या भ्युदयार्थ याप्रवृत्ति स्तल्लक्षणोदोषो ऽज्ञानदोष अथवा उक्तलक्षण मज्ञानमेव दोषो ऽज्ञानदोष इति अन्यत्र नाना विधदोष इतिपाठ' तत्र नानाविधेषू क्तलक्षणादिषु हिंसाद्युपायेषु दोषो ऽसकृत्प्रवृत्तिरिति नानाविधदोष इति तथा मरणमेवान्तो मरणान्त आमरणा ता दामरणात मसजातानुतापस्य कालसौकरिकादेरिव याहिंसादिषु प्रवृत्ति. सैवदोष आमरणातदोष अथ धर्म्यंचतुर्विध मिति स्वरूपेण चतुष्पदेषु

लरकणा पन्नत्ता तजहा उसन्नदोसे बहुलदोसे अन्नाणदोसे आमरणांतदोसे ४ । धम्मेज्झाणे चउव्विहे

सारक्षणानुबंधी धनादिक राखवाने सर्वने माठुं चितवे घातपणि चितवे ॥ च्यार लक्षण कहिया ओलखवाना तेकहेछे । घणुं हिंसादिकमां आ शक्त तेहज दोष । घणे प्रकारे सर्वने विषे हिसाकरे । अनाणथी कुशास्त्र संगे धर्मबुद्धिये हिंसाकरे उदयार्थे । जेमरणांतलगे पश्चात्तापकरवानी

स्वरूपलक्षणालम्बनानुप्रेक्षालक्षणेष्ववतारो विचारणीयत्वेन यस्यत च्चतुष्पदावतारं चतुर्विधस्यैव पर्यायोयमिति क्वचित् ॥ चउप्पडोयारमितिपाठः ॥ तत्र चतुर्षुपदेषु प्रत्यवतारो यस्येति विग्रहइति ॥ आणाविजएत्ति ॥ आअभिविधिना ज्ञायते ऽर्थो ययासा आज्ञा प्रवचन साविचीयते निर्णीयते पर्यालोच्यते वा यस्मिस्तदाज्ञाविचय धर्मध्यानमिति प्राकृतत्वेन विजयमिति आज्ञावा विजीयते अधिगमद्वारेण परिचितीक्रियते यस्मिन्नित्याज्ञाविजयं एवं शेषाण्यपि नवर मपाया रागादिजनिताः प्राणिना मैहिकामुष्मिकाअनर्था विपाकः फल कर्म्मणां ज्ञानाद्यावारकत्वा दिति सस्थानानि लोकसमुद्रजीवादीनामिति आहच आप्तवचनप्रवचन माज्ञाविचयस्तदर्थनिर्णयन आस्रवविकथागौरव परीषहाद्यैरपायस्तु ॥ १ ॥ अशुभकर्म्मविपाका नुचितनार्थोविपाकविचयःस्यात् द्रव्यक्षेत्राकृत्यनु गमनसस्थानविचयस्तु इति ॥ २ ॥ एतल्लक्षणान्याह ॥ आणारुइत्ति ॥ आज्ञासूत्रव्याख्यान निर्युक्त्यादि तत्र तयावा रुचिःश्रद्धान आज्ञारुचि रेवमन्यत्रापि नवर निसर्गः स्वभावो ऽनुपदेश स्तेन तथा सूत्रमागम स्तत्र तस्माद्वा तथाअवगाहन मवगाढ द्वादशाङ्गावगाहो विस्तारोधिगमइति सम्भाव्य

पन्नत्ते तंजहा आणाविजए अवायविजए विवागविजए संठाणविजए । धम्मस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता तंजहा आणारुई णिसग्गरुई सुत्तरुई उगाढरुई । धम्मस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि आलं

हिंसानेविषे प्रवर्ते कालसौकरिकनी परें ॥ धर्मध्यान च्यारप्रकारे च्यारपदनेविषे स्वरूपलक्षण सबंधळे तेकहेछे । आग्या तेप्रवचन तेहनुं सत्य जावे चितववुं । अवाय तेकष्ठ दुख प्राणीनेळे तेरागादिकथी उपजेळे इम चितवे जाणे । विपाक ते शुभाशुभकर्मनुं फल कर्मथीळे एमजाणे । सस्थान लोकद्वीपसमुद्र जीवादिकनु तेचिंतवे जाणे ॥ धर्मध्यानना च्यार लक्षण कहिया तेकहेछे । सूत्रने रुचि ते आणारुचि । स्वभावेज धर्मनी

ते तेन रुचिरथवा ॥ ओगाढेत्ति ॥ साधुप्रत्यासन्नीभूतस्तस्य साधूपदेशात् रुचि रुतांच आगमउवएसेण निसग्गओजजिणप्पणीयाणं भावाणसद्दहणं धम्म ज्झाणस्सतंलिंगति ॥ १ ॥ तत्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्तं धर्मस्य लिंगमितिहृदयं धर्म्यस्यालम्बनान्युच्यन्ते धर्मध्यानसौधारोहणार्थमालव्यत इत्यालम्बनानि वाचनं वाचना विनेयाय निर्जरायै सूत्रदानादि तथा शङ्किते सूत्रादौ शङ्कापनोदाय गुरोः प्रच्छन प्रति प्रच्छना प्रतिशब्दस्य धात्वर्थमात्रार्थत्वा दिति तथा पूर्वा धीतस्यैव सूत्रादे रविस्मरणनिर्जरार्थं मभ्यासः परिवर्त्तनेति अनुप्रेचण मनुप्रेचा सूत्रार्था नुस्मरण मिति अथवा नुप्रेचा उच्यते ॥ अन्विति ॥ ध्यानस्य पश्चात् प्रेचणानि पर्यालोचनान्य नुप्रेचा तत्र एकोऽहनास्तिमेकश्चि न्नाहमन्यस्यकस्यचित् नतपश्यामियस्याह नासौभावीतियोमम ॥ १ ॥ इत्येव मात्मनः ए कस्यैकाकिनो ऽसहायस्या नुप्रेच्चाभावना एकानुप्रेचा तथा कायःसन्निहितापायः सम्पद.पदमापदां समागमा.सापगमाः सर्वमुत्पादिभगुरं ॥ १ ॥ इत्येव

वणा पन्नत्ता तंजहा वायणा पडिपुच्छणा परियहणा अणुप्पेहा। धम्मस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाउ पन्नत्ताउ तंजहा एगाणुप्पेहा अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा। सुक्के ज्झाणे चउव्विहे चउप्पडो

रुचिहोय जेहनें। सूत्र सांजलवानीरुचि । अवगाढरुचि तेद्वादशागी अवगाहना करै जणै ॥ धर्मध्यानना च्यार आलंबन तेआधार जेहथी ध्यान रहै तेकहैछे । वाचना शिष्यने देवी निर्जरार्थै । शंका टालवाने गुरुने पूछवुं । पूर्वे जणयां सूत्र तेसंभारवा गुणवा निर्जराने अर्थे । अनुप्रेक्षा सूत्रार्थनु स्मरणकरवुं संभारवु ॥ धर्मध्याननीं च्यार अनुप्रेक्षा कही ते जे ध्यानपछी पर्यालोच विचारणा करवी ते अनुप्रेक्षा । तेकहेछे । एक हुंछु माहरुं कोईनथी हुं पिण कोईनुं नथी एकाकी एहवी एकाकी भावना भावै । एह संपदादि सर्व अनित्यछे एह अनित्यानुप्रेक्षा । संसार

जीवितादे रनित्यस्या नुप्रेचा अनित्यानुप्रेचेति तथा जन्मजरामरणभये रभिद्रुतेव्याधिवेदनाग्रस्ते जिनवरवचनादन्य न्नास्तिशरणंक्वचिल्लोके ॥ १ ॥ इत्येव मशरणस्या त्राणस्या त्मनो ऽनुप्रेचा अशरणानुप्रेचेति तथा माताभूत्वादुहिता भगिनीभार्याचभवतिससारे व्रजतिसुतःपितृतां भ्रातृता पुनःशत्रु तांचैव ॥ १ ॥ इत्येवं संसारस्य चतसृषुगतिषु सर्वावस्थासु ससरणलचणस्यानुप्रेचा ससारानुप्रेचेति अथ शुक्लमाह ॥ पुहुत्तवियक्कत्ति ॥ पृथक्त्वेन एकद्रव्या श्रितानां उत्पादादिपर्यायाणां भेदेन पृथुत्वेनवा विस्तीर्णभावेने त्यन्ये वितर्कोविकल्पः पूर्वगतश्रुतालम्बनो नानानयानुसरणलचणो यस्मि स्तत्तथा पूर्व्ये सु वितर्कः श्रुतालम्बनतया श्रुतमित्युपचारा दधीत इति तथा विचरण अर्थात् व्यञ्जने व्यञ्जनादर्थे तथा मनः प्रभृतीनांयोगाना मन्यतरस्मा दन्यतरस्मि न्नितिविचारो ऽर्थव्यञ्जनयोगसक्रान्ति रिति वचनात् सहविचारेण सविचारि सर्वधनादित्वादिन्समासान्तः उक्तञ्च उप्पायट्ठिइभगा इपज्जयाणजमेगद व्वम्मि नाणानयानुसरणं पुव्वगयसुयाणुसारेणं सवियारमत्थवंजण जोगतरओत्तयपढमसुक्क होइपुहुत्तवियक्कं सवियारमरागभावस्सत्ति ॥ १ ॥ एकोभेद स्तथा ॥ एगत्तवियक्केत्ति ॥ एकत्वेना भेदेनो त्पादादिपर्यायाणा मन्यतमैकपर्यायालम्बनये त्यर्थ. वितर्कः पूर्वगतश्रुताश्रयो व्यञ्जनरूपो ऽर्थरूपो वा यस्य

यारे प० तं० पुहुत्तवियक्के सवियारी १। एगत्तवियक्के अवियारी २। सुहुमकिरिए अणियट्टी ३। समुच्छि

मां जन्म जरामरण व्याधि वेदनादि जीवने जिनवचनविना कोईनथी एह अशरणानुप्रेक्षा । संसारमां भमतां माता बहिन तेहज भार्या तेज पिता थायछे इत्यादि संसारानुप्रेक्षा ॥ शुकलध्यान च्यार प्रकारे कहियो ते कहेछे । च्यार पदार्थने विषे एकज पदार्थछे एक द्रव्याश्रित मांटे ते कहेछे । एक द्रव्यनें पृथग्भावे चितवुं उप्पन्नेवा विगमेवा धुवेवा । तेपृथक्त्व वितर्क । विचार सहित तेपुहुत्तवितर्क सवियारी । एकत्वपणे भेद

तदेकत्वत्रितर्कं तथा नविद्यते विचारो ऽर्थव्यञ्जनयो रितरस्मा दितरत्र तथा मनःप्रभृतीना मन्यन्तरस्मा दन्यत्र संचरणलक्षणो निर्वातगृहगतप्रदीपस्येव यस्य तदविचारीति पूर्ववदिति उक्तञ्च जंपुणसुनिप्पकंप निवायसरणप्पईवमिवचित्त उप्पायठिइभगा इयाणमेगंमिपज्जाए ॥ १ ॥ अवियारमत्थवंजण जोगतरओतयंविइयसुक्क पुव्वगयसुयालंवण मेगत्तवियक्कमवियारमिति ॥ २ ॥ द्वितीय स्तथा ॥ सुहुमकिरियत्ति ॥ निर्वाणगमनकाले केवलिनो निरुद्ध मनोवाग्योगस्या र्द्धनिरुद्धकाययोगस्यै तदतः सूक्ष्माक्रिया कायिको उच्छ्वासादिका यस्मि स्तत्तथा ननिवर्त्तते नव्यावर्त्तत इति एव शीलमनिवर्त्तिप्रवर्द्धमा नतरपरिणामा दिति भणितञ्च निव्वाणगमणकाले केवलिणोदरनिरुद्धजोगस्स सुहुमकिरियानियट्टी तइयतणुकायकिरियस्सत्ति ॥ १ ॥ तृतीय स्तथा ॥ समुच्छिन्नकिरियत्ति ॥ समुच्छिन्ना क्षीणा क्रिया कायिक्यादिका शैलेशीकरणे निरुद्धयोगत्वेन यस्मि स्तदाथा ॥ अपडिवाइत्ति ॥ अनुपरतस्वभाव मिति चतुर्थः आहच तस्सेवयसेलेसी गयस्ससेलोव्वनिप्पकंपस्स वोच्छिन्नकिरियमप्पडि वाइज्झाणंपरमसुक्कति ॥ १ ॥ इहचांत्ये शुक्लभेदद्वये यक्रमः केवली कि लान्तमुहूर्त्तभाविनि परमपदे भवोपग्राहिकर्मसुच वेदनीयादिषु समुद्घाततो निसर्गेण वा समस्थितिषु सत्सुयोगनिरोधं करोति तत्रच पज्जत्तमित्तसं

समकिरिए अपडिवाई ४ । सुक्कस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता तंजहा अव्वहे असम्मोहे विवेगे वि

उत्पादादि एकज द्रव्यमां छे तेहनु विकल्प ते पृथग्विचारवो नथी ते एकत्व वितर्क अविचार । सूखमक्रिया अनिवृत्ति तेमोक्ष जातां मनवचनना योगरुंधे एक काययोग सासोस्वास रूपछे सूखम वधता समुच्छिन्न क्रियानुं शैलेशीकरणनी अवस्थायें चौदमे गुणठाणें कायादिक्रिया रुंधीये ते अप्रतिपाती पाडेनथी एह च्यार प्रकार शुकल ध्याननां कह्यिा । शुकलना च्यार लक्षण कह्यिा तेकहेछे । व्यथा पीडा रहित देवादिकृत उ

निस्स जत्तियाइंजहन्नजोगिस्स हौंतिमणोद्व्वाइं तव्वावारोयजंमेत्तो ॥ १ ॥ तद्संखगुणविहीणे समएसमएनिरुममाणोसो मणसोसव्वनिरोहं कुणइ असखेज्जसमएहि ॥ २ ॥ पज्जत्तमेत्तबेंदिय जहन्नवययोगपज्जयाजेउ त्तद्सखगुणविहीणे समये २ निरुभंतो ॥ ३ ॥ सव्ववयजोगरोह संखाईएहिकुणइ समएहि तत्तोयसुहुमपणगस्स पढमसमओववस्सस्स ॥ ४ ॥ जोकिरजहन्नजोगो तद्संखेगुणविहीणमेकेके समएनिरुभमाणो देहतिभागंचमुचतो ॥ ५ ॥ रुभइसकायजोग संखाईएहिंचेवसमएहि तोकयजोगनिरोहो सेलेसीभावणामेइ ॥ ६ ॥ शैलेशस्येव मेरोरिव याश्थिरता साशैलेशीति ऋस्सक्खराइमज्झे णजेण कालेणपचभणति अच्छइसेलेसिगओ तत्तियमेत्ततओकाल ॥ ७ ॥ तणुरोहारभाओ ज्झायइसुहुमकिरियानियट्टिसो वोच्छिन्नकिरियमप्पडि वाईसेलेसिकालं मित्ति ॥ ८ ॥ शुक्लध्यानलचणा न्युच्यते ॥ अव्वहेत्ति ॥ देवादिकृतोपसर्गादिजनितं भयचलनवा व्यथा तस्याः अभावी ऽव्यथ तथा देवादिकृतमायाजनितस्य सूक्ष्मपदार्थविषयस्यच संमोहस्य मूढताया निषेधा दसमोह स्तथा देहादात्मान मात्मनोवा सर्वसंयोगानां विवेचन बुद्धा पृथक्करणं विवेकः तथा निःसंगतया देहोपधित्यागोव्युत्सर्गइति अत्र विवरणगाथे चालिज्जइवीहेइं धीरोनपरीसहोवसग्गहिं सुहुमेसुणसमुज्झइ भावेसुनदेवमायासु ॥ १ ॥ देहविचित्त

उस्सग्गे। सुक्कस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता तं० खंती मोत्ती मद्दवे अज्जवे । सुक्कस्सणंज्झाणस्स

पसर्गथी वीहेंनथी । देवादि कोई माया देखाडे तेहथी मूंकायें नथी । विवेक सहित शरीरथी आत्मा आत्माथी शरीरादि सर्वसंयोग ते सर्व जुदाजुदा चिंतववा एह विवेक । शरीरनुं त्यागकरवो निःसंगपणें ॥ शुकलध्याननां च्यार आलंबनळे आधारळे ते कहेळे । क्षमाकरवी । निर्लोभता करवी । मृदु सुकुमारपणुं । आर्जव सरलता मायारहित पणुं ॥ शुकलध्याननी च्यार अनुप्रेक्षा विचारणा कही तेकहेळे । अनंतीबार ए

पिच्छइ अप्पाणतइयसव्वसंजोगा देहोवहिउस्सग्गा निस्सगोसव्वहाकुणइत्ति ॥ २ ॥ आलंबनसूत्र व्यक्त तत्रगाथा अहखतिमद्दअज्जव मुत्तीओजिणमयप्पहा णाओ आलवणाइजेहि उसुक्कज्झाणमारुहइ ॥ अणतवत्तियाणुपेहत्ति ॥ अनता अत्यत प्रभूता वृत्ति वर्त्तन यस्या सा वनतवृत्ति रनन्ततया वा वर्त्तत इत्यनत वर्त्ती तद्भाव स्तत्ता भवसन्तानस्येति गम्यते तस्या अनुप्रेक्षा अनन्तवृत्तितानुप्रेक्षा अनन्तवर्त्तितानुप्रेक्षावेति यथा एसअणाईजोवो ससारीसागरोव्वदुत्ता रो नारयतिरियनरामर भवेसुपरिहिंडएजोवोत्ति ॥ १ ॥ एवमुत्तरत्रापिसमासो नवर विपरिणामेत्ति ॥ विविधेन प्रकारेण परिणमन विपरिणामो व स्तूना मिति गम्यते यथा सव्वट्ठाणाइअसा सयाइ इहचेवदेवलोगेय सुरअसुरनराईण रिद्धिविसेसासुहाइंच ॥ १ ॥ असुभेत्ति ॥ अशुभत्व ससारस्येति गम्यते यथा धीसंसारोजम्मि जुयाणओपरमरूवगव्वियओ मरिऊणजायइकिमी तत्थेवकलेवरेणियए ॥ २ ॥ तथा ॥ अवाएत्ति ॥ अपाया आश्रवाणामि तिगम्यते यथा कोहोयमाणोयअणिग्गहिया मायायलोभोयपवड्डमाणा चत्तारिएतेकसिणाकसाया सिंचंतिमूलाइंपुणभवस्स ॥ १ ॥ इहगाथा आसवदारा वाए तहससारोसुहाणभावस भवसताणमणत वत्थुणविपरिणामचत्ति ॥ १ ॥ ध्यानादेवलमपि स्या दतो देवस्थितिसूत्र स्थितिः क्रमोमर्यादा राजामात्यादि

चत्तारि अणुप्पेहाउ पन्नत्ताउ तंजहा अणंतवत्तियाणुप्पेहा विपरिणामाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अवाया

संसारमा जीव च्यार गतिमा भम्यो भमेछे ए अनुप्रेक्षा कही । एलोकमा सर्ववस्तु असास्वतीछे । शुभ ते अशुभ अशुभ तेशुभ इमज परिणमे छे । अशुभानुप्रेक्षा तेधिग्ससारने जेमाटे रूपनो अभिमानी मरी तेहीज कलेवरमा कीडोथाय । अपायकष्ट दुखनुं मूल कषायछे ॥ ध्यानथी देवतापणि थाय तेमाटे देवस्वरूप कहेछे ॥ च्यार प्रकारे देवस्थिति मर्यादाकही मनुष्यवत् तेकहेछे ॥ एक देवता राजतुल्य सामानिकछे । एक

मनुष्यस्थितिवत् देव: सामान्यो नामेति वाक्यालङ्कारे एक: कश्चित्स्नातक: प्रधानो देवएव देवानांवा स्नातक इतिविग्रह: एवमुत्तरत्रापि नवरं पुरोहित: शांतिकर्मकारी ॥ पज्जलणेत्ति ॥ प्रज्वलयति दीपयति वर्णवादकरणेन मागधवदिति प्रज्वलितइति देवस्थितिप्रस्तावात्त द्विशेषभूतसम्वाससूत्र एतच्च व्यक्तं किन्तु सम्वासो मैथुनार्थं सवसन ॥छविति ॥ त्वक्योगादौदारिकशरीरं तद्दतो नारी तिरश्चीवा तद्वा नर स्तिर्यङ्वा छविरित्युच्यते अन्तरं सम्वास उक्त: सच वेदलक्षणमोहोदया दिति मोहविशेषभूतकषायप्रकरण माह ॥ चत्तारिकसाएइत्यादि ॥ तत्र कृषंति विलिखति कर्मक्षेत्र सुखदु:खफलयोग्य कुर्व्वंति कलुषयतिवा जीवमिति निरुक्तिविधिना कषाया उक्ताश्च सुहदुक्खबहुसईय कम्मक्खेत्तेकसतिजेजम्हा कलुसंतिजंचजीव तेणकसायत्तिवुच्चति ॥ १ ॥ अथ वा कषति हिनस्ति देहिन इति काष कर्म भवोवा तस्यायो लाभहेतुत्वा त्कषवा आययति गमयति देहिन इति कषाया उक्ताश्च कम्मकसंभवोवा कसमा

णुप्पेहा। चउव्विहादेवाणं ठिई पन्नत्ता तंजहा देवेणामेगे देवसिणाएणामेगे देवपुरोहिएणामेगे देवपज्जलणे णामगे। चउव्विहेसवासे पन्नत्ते तंजहा देवेणामेगेदेवीएसद्धिंसंवासंगच्छेज्जा देवेणामेगेछवीएसद्धिंसंवासं

देवता स्नातक तेप्रधाननें ठामेछे । एक देवता पुरोहितनें ठामें शांतिकर्म कारीछे । एक देवता प्रज्वलितछे जेमागध भाट भोजकनीपरें देवताना वर्णनकरेंछे ॥ च्यार प्रकारे संवास तेमैथुनार्थं बसवुं भोगवुं तेकहेछे ॥ एक देवता देवांगनासाथें संवासकरें भोगार्थेमिलें भोगकरें । एकदेवता छवीसाथे संवासपामे भोगकरें छवी तेत्वचा चामडीनो शरीर औदारिक शरीरछे जेहने एहवी नारी अथवा तिर्यंची तेछवि कहीये तेस्युं भोग करे देवता । एक छवी तेनर तथा तिर्यंच तेदेवांगना साथे संवासपांमे एतले देवागनासु नरतिर्यंच भोगकरें । एक नरतिर्यंच तेनारी तिर्यंची

ओसिंजओकषायाओ कसमायर्यतिवजओ गमयंतिकसंकसायत्ति ॥ १ ॥ तनक्रोधनं क्रुध्यतिवा येन सः क्रोधः क्रोधमोहनीयोदयसपाद्यो जीवस्य परिण तिविशेषः सक्रोधमोहनीयकर्मैवेति एवमग्यत्रापि नवरं जात्यादिगुणवा नहमेवेत्येवं मननमवगमन मन्यतेवा अनेनेति मान स्तथा मानं हिसनं वचन मित्यर्थो मीयतेवा अनयेति माया तथा लोभन मभिकांचण लुभ्यतेवा अनेनेति लोभः एवमिति यथा सामान्यत श्चत्वारः कषाया स्तथा विशेषतो ना रकाणा मसुराणा याव च्चतुर्विंशतितमेपदे वैमानिकाना मिति ॥ चउपइट्ठिएत्ति ॥ चतुर्षु आत्मपरोभयतदभावेषु प्रतिष्ठित श्चतुःप्रतिष्ठित स्तत्र ॥ आय पइट्ठिएत्ति ॥ आत्मापराधेनैहिकामुष्मिकापायदर्शना दात्मविषय आत्मप्रतिष्टितः परेणाक्रोशादिनो दीरितः परविषयोवा परप्रतिष्टित आत्मपरविष

गच्छेज्जा छवीणामेगेदेवीएसद्धिंसंवासगच्छेज्जा छवीणामेगेछवीएसद्धिंसंवासंगच्छेज्जा । चत्तारिकसाया पसत्ता तजहा कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए । एव नेरइयाणं जाववेमाणियाणं । चउ पइट्ठिएकोवे पसत्ते तंजहा आयपइट्ठिए परपइट्ठिए तदुभयपइट्ठिए अपइट्ठिए । एवंणेरइयाणं जाववेमा

साथे संवास मिलणकरे भोगार्थे ॥ एवेदोदय मोहथी होय तेमोह कषायमांछे तेकहेछे । च्यार कषाय कह्या तेकहेछे ॥ क्रोध कषाय । मान अहंकार तेकषाय । मायाकपट तेकषाय कर्मरूप क्षेत्रखडेते । लोभ तेकषाय सुख दुखना कर्षण नीपजे ॥ इम नारकीने च्यार कषायहोय । या वत् वैमानिकताई च्यार कषाय होय ॥ च्यार थानक क्रोधने रहवाना कहिया तेकहेछे ॥ आत्मप्रतिष्ठित क्रोध तेपोताने वाके इहलोक परलोक कष्टपामे । परप्रतिष्ठित तेपोताना कठिन वचन साभली क्रोधऊपजे । काईक परनो आक्रोश काईक पोतानो वांक तेथी ऊपजे तेउभय प्रतिष्टित

य उभयप्रतिष्ठित आक्रोशादिकारणनिरपेक्षः केवलं क्रोधवेदनीयोदयात् योभवति सोप्रतिष्ठितः उक्तञ्च सापेक्षाणिचनिरपे क्षाणिचकर्म्माणिफलवि पाकेषु सोपक्रमचनिरूपं क्रमश्चदृष्टंययथायुष्कमिति ॥ १ ॥ अयञ्च चतुर्थभेदो जीवे प्रतिष्ठितोपि आत्मादिविषये ऽनुत्पन्नत्वा दप्रतिष्ठित उक्तो नतु सर्वथा ऽप्रतिष्ठित स्वतुः प्रतिष्ठितत्वस्या भावप्रसगादिति एकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां कोपस्यात्मादिप्रतिष्ठितत्व पूर्वभवे तत्परिणामपरिणतमरणिनो त्पन्नाना मिति एवं मानमायालोभै र्दंडकत्रय सपर मध्येतव्य मिति चेन नारकादीनां ४ स्व स्वमुत्पत्तिस्थान प्रतीत्याश्रित्य एव वस्तु सचेतनादि वास्तुवा गृह शरीर दुः सस्थितं विरूपत्वा उपधि र्यद्यस्योपकरण एकेन्द्रियादीना भवान्तरापेक्षयेति एव मानादिभिरपि दण्डकत्रय मनन्त भवमनुवध्नाति अविछिन्न करोतीत्येव

णियाण । एवंजावलोभे वेमाणियाणं । चउहिंठाणेहिं कोधुप्पत्तिसिया तंजहा खेत्तंपडुच्च वत्थुंपडुच्च स रीरंपडुच्च उवहिंपडुच्च । एवनेरइयाणं जाववेमाणियाणं । चउव्विहेकोहे पन्नत्ते तंजहा अणंताणुबंधिकोहे

परपोताना बांक बिना केवल क्रोध वेदनी कर्मना उदयथी ऊपजे तेपर पोतानी अप्रतिष्ठित । पूर्वभवे क्रोधादि परिणामे परिणतमरें तेहवें ऊपजे तेमाटे अप्रतिष्ठित ॥ इम नारकीने यावत् वैमानिकलगें चोवीस दंडके जाणवा ॥ इम यावत् लोभपणि च्यार प्रकारे वैमानिकतांई चोवीस दंडकै जाणवा ॥ च्यार थानके क्रोधनी उत्पत्ति कही तेकहैछे ॥ क्षेत्रनें आश्रीने नारकी प्रमुखने पोताना उत्पत्ति स्थानक । वस्तु गृहादि आश्रीने । शरीर माठारूप आकार आश्रीने । उपधि उपकरण आश्रीने क्रोध ॥ इम नारकीने यावत् वैमानिकतांई चोवीस दंडकै जाणवुं ॥ इम यावत् लोभ वैमानिक चोवीस दडके जाणवुं ॥ च्यार प्रकारे क्रोध कहैछे । अनतानुबधी क्रोध जावजीवरहै फाटया गिरीनेपरे मिलेनथी । अप्रत्या

शीलो ऽनन्तानुबन्धी अनन्तोवा नुबन्धोयस्ये त्यनन्तानुबन्धी सम्यग्दर्शनसहभावि क्षमादिस्वरूपोपशमादिवरणत्वविवन्धी चारित्रमोहनोयत्वा त्तस्य न
क्षोपशमादिभिरेव चारित्री अनुत्वात् यथा अमनस्को न सञ्ज्ञी किन्तु महता मूलगुणादिरूपेण चारित्रेण चारित्री मनःसञ्ज्ञया संज्ञिव इतएव त्रिविध द
र्शनमोहनीयं पञ्चविंशतिविध चारित्रमोहनीय मिति ननु पढमिल्लयाणउदयेनियमेइत्यादि विरुध्यते चारित्रावारकस्य सम्यक्त्वावारकत्वा नुपपत्ते रत
एव सप्तविध दर्शनमोहनोय मेकविंशतिविध चारित्रमोहनीय मिति मत सगतमाभातो त्यत्रोच्यते पढमिल्लयाणेत्यादि यदुक्त तदनन्तानुबन्धिना नसम्य
क्त्वावारकतया किन्तु सम्यक्त्वसहभाव्युपशमाद्यावारकतया अन्यथा नन्तानुबंधिभिरेव सम्यक्त्वस्या वृतत्वात् किमपरेण मिथ्यात्वेन प्रयोजन मावृतस्याप्या
वरणे ऽनवस्था प्रसङ्गा त्तस्मा यथा केवलियणाणलंभो जन्नत्थखएकसायाणंति इहकषायाणां केवलज्ञानस्या नावारकत्वेपि कषायक्षयः केवलज्ञानकारण
तयोक्त स्तस्मिन्नेव तस्य भावा देव मनन्तानुबंधि क्षयोपशमएव सम्यक्त्वलाभ उच्यते तस्मिन्सति तस्य भावा दतो नानन्तानुबन्धिषू दितेषु मिथ्यात्व
क्षयोपशम सुपयाति तदभावाच्च नसम्यक्त्वमिति यच्च सप्तविध सम्यग्दर्शनमोहनोय मिति मतान्तर तत्सम्यक्त्वसहचरितत्वेनो पशमादिगुणानां सम्यक्त्वोप
चारादिति मन्यामहे इत्यादि नञियते प्रत्याख्यान मणुव्रतादिरूप यस्मिन् सो प्रत्याख्यानो देशविरत्यावारक' प्रत्याख्यान मामर्यादया सर्वविरतिरूप
मेवेत्यर्थः वृणोतीति प्रत्याख्यानावरणः सज्वलयति दीपयति सर्वसावद्यविरतिमपो न्द्रियार्थसम्पातेवा संज्वलति दीप्यत इति संज्वलनः यथा ख्यातचा

अपच्चक्खाणकोहे पच्चक्खाणावरणेकोहे सजलणेकोहे । एवंनेरइयाणं जाववेमाणियाणं एवंजाव लोभे ।

ख्यानी क्रोध वर्षलगेरहे तलाव फाटानीपरे । प्रत्याख्यानी क्रोध च्यार मासरहे । सज्वलन क्रोध पनरे दिनरहे ॥ इम नारकीने यावत् वैमा

रित्रावारकः एवमानमायालोभे ष्वप्यनंतानुवन्ध्यादिभेदचतुष्टयमध्येतव्य मिति एषांनिरुक्तिः पूज्यै रियमुक्ता अनन्तान्यनुवध्नन्ति यतोजन्मनिभूतये अतो नन्तानुवधाख्या क्रोधाद्येषुप्रदर्शिता ॥ १॥ नाल्पमप्युत्सहेद्येषां प्रत्याख्यानमिहोदयात् अप्रत्याख्यानसञ्ज्ञातो द्वितीयेषुनिवेशिता ॥ २ ॥ सर्वसावद्यविरतिः प्रत्याख्यानमुदाहृत तदावरणसञ्ज्ञात स्तृतीयेषुविवेशिता ॥ ३ ॥ शब्दादीन्विषयान्प्राप्य संज्वलतियतोमुहुः अत.सञ्ज्वलनाह्वानं चतुर्थानामिहोच्यते ॥ ४ ॥ इत्येव मानादिभिरपि दण्डकत्रय ॥ आभोगणिव्वत्तिएत्ति ॥ आभोगो ज्ञानं तेन निवर्त्तितो यज्जानन् कोपविपाकादि रुष्यति इतरस्तु यदजानन्निति उप शांतो ऽनुदयावस्थ स्तत्प्रतिपक्षो ऽनुपशांत् एकेन्द्रियादीना माभोगनिवर्त्तितः सञ्ज्ञिपूर्वभवापेक्षया अनाभोगनिवर्त्तितस्तु तद्भवापेक्षयापि उपशांतो नारका दीनां विशिष्टोदयाभावात् अनुपशातो निर्विचारएव इति एवमानादिभिरपि दण्डकत्रयं इदानीं कषायाणामेव कालत्रयवर्त्तिनः फलविशेषा उच्यते ।

वेमाणियाणंचउव्विहेकोहे पण्णत्ते तंजहा आभोगनिव्वत्तिए अणाभोगनिव्वत्तिए उवसंते अणुवसंते । एवंने रइयाणं जाव वेमाणियाणं । एवंजाव लोभे । जाववेमाणियाणं जीवाणं चउहिठाणेहिं अठकम्मपगडीउ

निकताई चोवीस दंडके जाणवुं ॥ इम यावत् लोभ च्यार वैमानिकतांइ चौवीस दंडकतांइ । च्यार प्रकारे क्रोधकह्यो तेकहेछे । आभोग निवर्त्ति त जे क्रोधादिना फलविपाक जाणतो क्रोधकरे । अनाभोग निवर्त्तित जेक्रोधना फल अणजांणतो क्रोधकरे । उपशांत क्रोध उदया वस्थाये न थी आव्यो । अनुपशात क्रोध ते उदय प्राप्त ॥ इम नारकीने यावत् वैमानिकताई चौवीस दंडके जाणवुं ॥ इम यावत् लोभ वैमानिकतांई चौबीस दडके ॥ जीवने च्यार थानके करी आठ कर्मनी प्रकृति चिणताहुवा कर्म पुदगलनुं गृहणमात्र तेचिणवुं कहिये तेकहेछे ॥ क्रोधेंकरीनें ।

जीवाणमित्यादि ॥ गतार्थं नवरं चयनं कषायपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रं उपचयनं चितस्याबाधाकालं मुक्त्वा ज्ञानावरणीयादितया निषेकः सचैवं प्रथमस्थितौ बहुतरं कर्मदलिकं निषिचति ततो द्वितीयायां विशेषहीन एव यावदुत्कृष्टायां विशेषहीनं निषिचति उक्तंच मोत्तूणसगमबाह पढमाएठि ईएबहुतरदव्वं सेसविसेसहीणं जावुक्कोसंतिसव्वेसिंति ॥ १ ॥ बंधनं तस्यैव ज्ञानावरणीयादितया निषिक्तस्य पुनरपि कषायपरिणतिविशेषा न्निकाचन मिति उदीरणमनुदयप्राप्तस्य करणेनाकृष्योदये प्रक्षेपणमिति वेदनस्थितिक्षयादुदयप्राप्तस्य कर्मण उदीरणा करणेनवोदयभावमुपनीतस्या नुभवन मिति निर्जरा कर्मणो ऽकर्मत्वभवन मिति इहच देशनिर्जरैव ग्राह्या सर्वनिर्जराया श्चतुर्विंशतिदण्डके असम्भवात् क्रोधादीनांच तदकारणत्वात् क्रोधादिक्षयस्यैव तत्कारणत्वा दिति इह प्रज्ञापनाधीता संग्रहगाथा आयपइठिय १ खित्त पडु २ च्चणंताणुबंधि ३ आभोगे ४ चिणउवचिणबंधउदी रणेयतहनिज्ज

चिणिंसु तंजहा कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं । एवंजाव वेमाणियाण । एवंचिणंति एसदंडन्न एवंचिणि स्संति एसदंडन्न । एवमेएणं तिन्नि दंडगा । एवंउवचिणिंसु उवचिणंतिच उवचिणिस्संति । बंधिंसु ३ उदीरिंसु ३ वेदेंसु ३ णिज्जरेंसु णिज्जरिंति णिज्जरिस्संति । जाववेमाणियाणमेव मेक्किक्के पदे तिन्नि २

माने करीने । मायाये करीने । लोभे करीनें । इम यावत् वैमानिकने चौबीस दंडके ॥ इम चिणेछे वर्त्तमानकाले एदंडके जाणवो ॥ इम आ गामीकाले चिणस्ये एचौवीस दंडक जाणवा ॥ इम एणे प्रकारे त्रणि दंडक जाणवा ॥ इम उपचिणताहुवा अतीतकाले उवचिणेछे वर्त्तमानकालें उवचिणस्ये अनागतकाले एपूर्वं त्रण ठाणे अर्थ कहिया छे ॥ इम बाधताहुवा त्रणिकाले इम वेदताहुवा त्रणिकाले जाणवा ॥ इम निर्जराताहुवा

राचेवत्ति ॥ १ ॥ अनन्तरं निर्जरोक्ता साच विशिष्टप्रतिमाद्यनुष्ठाना द्भवतीति प्रतिमासूत्रत्रयं तत्द्विस्थानकाधीतमपीहाधीयते चतुः स्थानकानुरोधा दि
ति व्याख्याप्यस्य पूर्वंव दनुसर्त्तव्या किन्तु स्मरणाय किञ्चिदुच्यते समाधिः श्रुतं चारित्रंच तद्विषयाप्रतिमा प्रतिज्ञा भिग्रहः समाधिप्रतिमा द्रव्यसमाधिर्वा
प्रसिद्धस्तद्विषया प्रतिमा अभिग्रहसमाधिप्रतिमा एवमन्यापि नवर मुपधान तपः विवेको शुद्धातिरिक्तभक्तपानवस्त्रशरीरतन्मलादित्यागः ॥ विउस्सग्गे
त्ति॥ कायोत्सर्गं स्तथा पूर्वादिदिक्चतुष्टयाभिमुखस्य प्रत्येक प्रहरचतुष्टयमानः कायोत्सर्गोभद्रेति अहोरात्रद्वयेनचास्याः समाप्तिरिति सुभद्राप्येवभूतैव संभा
व्यते नच दृष्टेति नलिखितेति एवमेव चाहोरात्रप्रमाण. कायोत्सर्गो महाभद्रा चतुर्भिश्चाहोरात्रैरिय समाप्यते यस्तु दिग्दशकाभिमुखस्या होरात्रप्रमाण

दंफगा भाणियव्वा जाव निज्जरिस्संति । चत्तारि पडिमाउ प० तं० समाधिपडिमा उवहाणपडिमा विवे
गपडिमा विउस्सग्गपडिमा । चत्तारिपडिमाउ प० तंजहा भद्दा सुभद्दा महाभद्दा सव्वउभद्दा । चत्तारिपडि

निर्जरेछे निर्जरस्यें । यावत् वैमानिकतांईं इम एकेके एकेपदे त्रणि त्रणि दंडक जाणवा ॥ यावत् निर्जरस्ये तिहांलगे हवे निर्जरा तेप्रतिमादि
क्रियाथी होय ॥ तेमाटे कहेछे च्यार प्रतिमाकही अभिगृह तेप्रतिमा तेकहेछे ॥ समाधि प्रतिमा श्रुतचारित्रनी समाधि अथवा चित्तस्वास्थ्य ।
उपधान विशेष तेहनो अभिगृह । अशुद्ध भात पाणी वस्त्र काय शरीर तेहनो त्याग छांडवु । व्युत्सर्ग करवो तेकाउसग प्रतिमा । वली च्यार प्रति
मा कही ते कहेछे । भद्रा ते च्यारे दिशे च्यार च्यार प्रहर काउसग बे अहोरात्रि सोले प्रहरें पूर्ण थाय । सुभद्रा पणि इमज सोल प्रहरनी । महा
भद्रा प्रतिमा च्यारदिसे आठ आठ प्रहर काउसग करे च्यार अहोरात्रि थाय ॥ सर्वतोभद्रा पणि इमज जाणवी । वली च्यार प्रतिमा कही ते क

कायोत्सर्गः सा सर्वतोभद्रा साच दशभिरहोरात्रै समाप्यत इति मोकप्रतिमा प्रश्रवणप्रतिज्ञा साच क्षुल्लिका या षोडशभक्तेन समाप्यते महतीतु या अ ष्टादशभक्तेनेति यवमध्या या यववदृत्ति कवलादिभि राद्यतयोर्हीनामध्येच वृद्धेति वज्रमध्यातु याद्यन्तवृद्धा मध्यहीनाचेति प्रतिमाश्च जीवास्तिकाये एवे ति तद्विपर्ययस्वरूपाजीवास्तिकाय सूत्रं ॥ अत्थिकायत्ति ॥ अस्तीत्ययंत्रिकालवचनोनिपातः अभूवन् भवति भविष्यतिचेति भावना अतो स्त्रिचतेप्रदेशा ना कायाश्च राशयइति अस्तिशब्देन प्रदेशप्रदेशाः क्वचिदुच्यन्ते ततश्च तेषावा काया अस्तिकाया स्तेचाजीवकाया अचेतनत्वादिति अस्तिकाया मूर्त्ता ऽमूर्त्ताभवतो त्यऽमूर्त्तप्रतिपादनाय अरूप्यस्तिकायसूत्र रूप मूर्त्तिवर्णादिमल तदस्ति येषान्ते रूपिणः तत्पर्युदासा दरूपिणो ऽमूर्त्ता इति अनन्तर

माओ पन्नत्ताओ तजहा खुड्डियामोयपडिमा महल्लियामोयपडिमा जवमज्झा वइरमज्झा । चत्तारि अत्थिका या अजीवकाया पन्नत्ता तजहा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए । चत्तारि

छेले । नाहनी मोकप्रतिमा सोलस भक्ते पूरी थाय । मोक तेमात्रोलघुनीति नकरवी तेअभिग्रह । मोटी मोकप्रतिमा तेअढार भक्ते पूरीथाय तिहां ताइ प्रश्रवण नकरे । जव मध्यप्रतिमा तेकोलीआनी । वज्रमध्यप्रतिमा ते पणि इमज चढता सोल कोलीआ एकथी ते जव मध्य उतरवाते वज्र मध्यप्रतिमा एबीजे ठाणे कहियोछे ॥ प्रतिमा तेजीवनी अपेक्षाये कही तेहथी विपरीत अजीवछे तेकहेछे । च्यार अस्तिकाय तेत्रणि काले अजीव छे तेमाटे अजीव अस्तिकाय कही ते कहेछे । धर्मास्तिकाय चलनस्वभाव । अधर्मास्तिकाय स्थिर स्वभाव । आकाशास्तिकाय अवकाश रूप । पुद्गलास्तिकाय मूर्त्ति रूपवर्णादिवंत वधे घटे ॥ च्यार अस्तिकाय अरूपीकाय कही रूपनथी तेकहेछे । धर्मास्तिकाय अरूपी । अधर्मास्तिकाय

जीवास्तिकाय उक्त स्तद्विशेषभूतपुरुषनिरूपणाय फलसूत्र आममपक्व सत् आममिव मधुर माममधुर मीषन्मधुरमित्यर्थः तथा आमंसत् पक्वमिव मधुर मत्यतमधुरमित्यर्थं स्तथा पक्वसत् आममधुर प्राग्व त्तथा पक्वस त्यक्वमधुरं प्राग्वदेवेति पुरुषस्तु आमो वयः श्रुताभ्या मव्यक्त आममधुरफलसमान उप शमादिलक्षणस्य माधुर्यस्या ल्पस्यैवभावा त्तथा आमएव पक्वमधुरफलसमानः पक्वफलव न्मधुरस्वभाव' प्रधानोपशमादिगुणयुक्तत्वा दिति तथा पक्वोन्यो वय.श्रुताभ्या परिणत आममधुरफलसमान उपशमादिमाधुर्यस्याल्पत्वात् तथा पक्व स्तथैव पक्वमधुरफलसमानो तथैवेति अनन्तर पक्वमधुर उक्तः सच

अत्थिकाया अरूविकाया पन्नत्ता तंजहा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए । चत्तारि फला पन्नत्ता तजहा आमेणामं एगे आममक्करे आमेणामेगे फक्कमक्करे पक्कोणामेगे आममक्करे पक्को णामेगेपक्कमक्करे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा आमेणामेगे आमफलसमाणे ४ । चउव्विहे

अरूपी । आकाशास्तिकाय अरूपी । जीवास्तिकाय जीव अरूपी ॥ च्यार फल कह्या ते कहैछे । पुरुष विशेष जीवस्वरूप कहैछे फल दृष्टांते एक फल काचुं थयु ते पणि कांईक मीठुं मधुरछे । एकफल काचु थयुं पाका जेहवु मीठुं एहवो फल होय । एकफल पाकु पणि आम मधुर का ईक मधुर मीठू । पाकु पणि लगारेक मधुर । एक फल पाको थको पाका जिम मधुर ॥ एफलने सरिखा च्यार पुरुष कह्या ते कहैछे । अव्यक्त तेआम काचो पणि काइक मीठो फल समान ते कांइक उपसमादि माधुर्यवत इमवये आम पणि पक्व मधुरफल समान । प्रधान उपसमादि गुण युक्त वयश्रुते पकूकापणि उपशम अलप॥ वयश्रुते पक्व अने पूर्ण उपसमादियुक्त । उपसम तेसत्यथी च्यारे प्रकारे सत्य कहुर ते कहैछे। कायानी

सत्वगुणयोगा द्भवतीति सत्य तद्विपर्ययश्च मृषा तथा सत्यासत्यनिमित्त प्रणिधानं प्रतिपिपादयिषुः सूत्राण्याह ॥ चउव्विहेसच्चेइत्यादीनि ॥ गतार्थानि नवर मृजुकस्या मायिनो भावः कर्मवा ऋजुकता कायस्य ऋजुकता कायर्जुकता एवमितरेऽपि नवर भावोमनइति कायर्जुकतादयश्च शरीरवाङ्मनसा यथावस्थितार्थप्रत्यायनार्थाः प्रवृत्तय स्तथा अनाभोगादिना गवादिकमश्वादिक यद्वदति कस्मैचित् किञ्चि दभ्युपगम्यवा यन्न करोति साविसम्वादना तद्विपक्षेणयोग' सवन्धो ऽविसम्वादना योगइति ॥ मोसेति ॥ मृषा असत्य कायस्या नृजुकतेत्यादि वाक्य प्रणिधिः प्रणिधान प्रयोगः तत्र मनसःप्रणिधा न मार्त्तरौद्रधर्मादिरूपतया प्रयोगो मन.प्रणिधान एववाक्काययो रपि उपकरणस्य लौकिकलोकोत्तररूपस्य वस्त्रपानादे. संयमासयमोपकाराय प्रणिधा

सच्चे पन्नत्ते तजहा काउज्जुयया भासुज्जुयया भावुज्जुयया अविसवायणाजोगे । चउव्विहेमोसे प० तं० कायअणुज्जुयया भासअणुज्जुयया भावअणुज्जुयया विसवादणजोगे । चउव्विहे पणिहाणे पन्नत्ते तंजहा

रिजुता सरलता । वचननी रिजुता । भाव शरीर वचन मनने यथार्थ साचा अर्थनोप्रत्यय विश्वासपणे अर्थनी प्रवृत्तिते रिजुता मन वचन कायायें ते मननी सरलता साचा भाव धारवाने सत्य बोल । अनाभोगपणे जिन तिम न बोले । पुरुषने स्त्री नकहे । स्त्रीने पुरुष न कहे ए अविसवाद ॥ च्यार प्रकारे असत्य कह्या ते कहेछे ॥ कायानी असरलता वक्राई पणु वक्रचालवु। भाषानी अरिजुता असत्य भाखवुं । मननी अरिजुता असरलता मने असत्य पदार्थधारे । विसवादना योग ते अनाभोगपणे । गवादिकने अस्वादि कहे यद्वातद्वा बोले । च्यार प्रकारे प्रणिधान कह्या । प्रयोग तेप्रणिधान तेकहेछे । मन प्रणिधान तेआर्त्तरौद्र धर्मध्यानादि रूप प्रयोग तेमनप्रणिधान । इम सत्यासत्य बोलवु ते

न प्रयोग उपकरणप्रणिधानं ॥ एवमिति ॥ यथा सामान्यत स्तथा नैरयिकाणा मिति तथा चतुर्विंशतिदण्डकपठितानां मध्ये ये पंचेन्द्रिया स्तेषाम पि वैमानिकातानां मेवमेवेति एकेन्द्रियादीनां मनःप्रभृतीना मसम्भवेन प्रणिधाना सम्भवा दिति प्रणिधानविशेषः सुप्रणिधान दुःप्रणिधानचेति तत्सूत्रा णि शोभनं सयमार्थत्वा त्प्रणिधान मनःप्रभृतीना प्रयोजन सुप्रणिधान मिति इदञ्च सुप्रणिधान चतुर्विंशतिदण्डकनिरूपणायां मनुष्याणां तत्रापि सयतानामेव भवति चारित्रपरिणतिरूपत्वा त्सुप्रणिधानस्ये त्याह ॥ एवसजये त्यादि ॥ दुःप्रणिधानसूत्र सामान्यसूत्रव त्रवरं दुःप्रणिधान मसंयमार्थं मनः

मणपणिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे उवगरणपणिहाणे एवंनेरइयाणं पंचेंदियाणं जाववेमाणियाणं। चउव्विहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरणसुप्पणिहाणे। एवं संजयमणुस्साणवि चउव्विहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणदुप्पणिहाणे जाव उवगरणदुप्पणिहाणे। एवं पंचेंदियाणं जाव

वचन प्रणिधान । कायपणि जे पाप तथा पुण्यकरे तेकायप्रणिधान । उपगरण धर्मना ओघा पात्रादि लौकिक उपगरण गृहादि वस्तु तेहनो प्रयोग मेलवुं तेउपगरण प्रणिधान ॥ इम ए नारकीने तथा पचेन्द्रीने यावत् वैमानिकने पाच प्रणिधान चौवीस दंडकमां एकेंद्री बेद्री तेरिंद्री चउरिं द्रीने पांच न होय । मन भाषा नथी ॥ च्यार प्रकारे शुभ प्रणिधान कहिवुं ते कहे छे ॥ मन सुप्रणिधान जे धर्मार्थने विषे मन प्रवर्त्ते । वचन सु प्रणिधान जे सत्य वचन बोलवुं । काय सुप्रणिधान जे धर्म क्रियाने विषे काय प्रवर्त्ते । उपगरण प्रणिधान जे रजोहरणादि धर्मोपगरण राखवो ए च्यार सुप्रणिधान चौवीस दंडकमां मनुष्यने । तेहमां पणि संयत साधुनेज होय ॥ च्यार प्रकारे दुःख प्रणिधान कहियो असंयमार्थे मन प्रमुखनो

प्रभृतीनां प्रयोग इति पुरुषाधिकारा दैवापरथा पुरुषसूत्राणि चतुर्दश सुगमानि नवर मापातन मापातः प्रथममीलक स्तत्र भद्रको भद्रकारी दर्शनालापा दिना सुखकरत्वा त्सम्वास चिर सहवास स्तस्मिन्नभद्रकोहिंसकत्वा त्संसारकारणनियोजकत्वा द्वेति सम्वासभद्रकः सहसंवसता मत्यतोपकारितया नो आपातभद्रक अनालापककठोरालापादिना एव द्वावन्यौ ॥ वज्जति ॥ वर्ज्यंतद्दतिवर्ज्यं अवद्यवा अकारलोपात् वज्रवत् वज्रवा गुरुत्वा द्धिंसान्नृतादिपाप कर्म्म तदात्मनः सवधिकलहादौ पश्यति पश्चात्तापान्वितत्वा त्रपरस्य तंप्रत्युदासीनत्वात् अन्यस्तु परस्य नात्मनः साधिमानत्वात् इतरउभयो र्निरनुशयत्वे

वेमाणियाणं । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा आवायभद्दएणामेगेणोसंवासभद्दए संवासभद्दएणामेगेणो आवायभद्दए एगेआवायभद्दएविसंवासभद्दएवि एगेणोआवायभद्दएणोसंवासभद्दए । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा अप्पणोणामेगेवज्जंपासइणोपरस्स परस्सणामेगेवज्जंपासइ ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं०

प्रयोग तेकहेछे । मन दुप्रणिधान जेपापने विषे मन प्रवर्त्तें । यावत् इम वचन दुप्रणिधान । कायाये पाप ते कायदुप्रणिधान । असत्य वचन । कायाये पाप करवुं पापोपगरण मेलवा ॥ इम चौवीस दंडकमां पंचेंद्रीनेज होय । ए च्यार यावत् वैमानिकताईं । पुरुषाधिकार मांटेज कहेछे । च्यार प्रकार नां पुरुष कहिया ते कहे छे । एक पुरुष आपातभद्रक ते प्रथम मिले तिवारे दर्शने बोलववे सुखकारी मीठा बोले । पणि पछे सवासे घणे काले आगल जाता भद्र नही भलो नहीं । एक पुरुष एकठां रहतां भद्रक भलो । इह परलोके उपगारी पणि प्रथम भद्रक नही । जे बोलवे नही कठिन वचन बोलवे । एक पुरुष आपात प्रथम पणि दर्शने बोलाववे भद्रक भलो सहवासे पणि भद्रक आगलि जाता पणि भलो । एक पुरुष प्रथम

॥ न यथावद्वस्तुबोधात् अपरस्तु नोभयो विमूढत्वादिति दृष्टाचैकं आत्मनः संबंधि अवद्य मुदीरयति भणति यदुत मयाकृत मेतदिति उपशांतंवा पुनः प्रवर्त्तयति अथवा वज्र कर्म तदुदीरयति पीडोत्पादनेन उदये प्रवेशयतीति २ एव मुपशमयति निवर्त्तयति पापं कर्मेणा ४ ॥ अब्भुट्ठेत्ति ॥ अभ्युत्थान करो ति नकारयति परेण सविग्नपाचिको लघुपर्यायोवा कारयत्येव गुरु रुभयवृत्ति र्वृषभादि रनुभयवृत्ति जिनकल्पिको ऽविनीतोवाइति एव वन्दनादिसू

अप्पणोणामेगेवज्जंउदीरेंतिणोपरस्स ४। चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा अप्पणोणामेगेवज्जंउवसामेइ णोपरस्स ४। चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा अब्भुठेइणामेगेणोअब्भुठावेइ ४। एवं वंदइणामेगेणो

पणि भलो नही पळे पणि नहीं पळे पणि सहवासे रहतां आगल जाता पणि भलो नही पाप मतिनो आपनार ॥ वली च्यार पुरुष कहिया ते क हैं छे। एक द्रव्यथी संसारी पुरुष। भावथी धर्म पुरुष ते कहे छे। एक पुरुष पोतानुं अवद्य ते भूंठा बोलवा प्रमुखनो वांकदोष देखै कलेस करतां पोतानुं वांक देखै पश्चाताप करै पणि परनुं वांक न देखै। एक परनुं अवद्य वांक देखै आत्मानुं वांक न देखै। इम एक परनुं न देखै पोता नुं पणि न देखै॥ वली च्यार पुरुष कहिया ते कहे छे। एक पुरुष आत्मानुं अवद्य वाक दोष उदीरे जे एह मैंज कीधुं ॥ परनुं नथी उदीरे जे ते कीधुं एम न कहै एम च्यार भांगा जाणवा। पूर्वनी परें॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहे छे। एक पुरुष आत्मानुं दोष उपशमावे खमी ने निवर्तावे टाले। पणि परनु नथी एम च्यार भांगा॥ वली च्यार प्रकारे पुरुष कह्या ते कहे छे। साधु आश्री पोतेज अभ्युत्थान करे साधुनें आवतो देखीने पोते ऊभो थाय। बीजानें उठवा न दे लघु पर्यायनुं धणी शिष्यादि ॥ इमज वांदे एक पणि वंदावे नथी ते वैराग्य पत्ती तथा

ज्ञा० ॥

२० ॥

न्वेष्वपि नवरं बन्दते द्वादशावर्त्तादिना ६ सत्करोति वस्त्रादिदानेन सम्मानयतिस्तुत्यादिगुणोन्नतिकरणेन ८ पूजयति उचितपूजाद्रव्यैरिति वाचयति पाठ यति ॥ नोशयावेद्र ॥ आत्मानमनेनेत्युपाध्यायादि द्वितीये विचार स्तृतीये क्वचित् ग्रन्थांतरे अनधीतो चतुर्थे जिनकल्पिकं एव सर्वत्रोदाहण स्वबुध्याया जनीय १० गच्छतीति सूत्रार्थौ गृह्णाति ११ पृच्छतीति प्रश्नयति १२ सूनादियाकरोति ब्रूते तद्देवेति १३ सूत्रधरः पाठको ऽर्थधरो बोद्धा अन्यस्तु भय धरः चतुर्थस्तु जडइति पुरुषाधिकारादेव विशेषपुरुषनिरूपणपराणि लोकपालादिसूत्राणि कण्ठ्यानि नवर इन्द्रः परमैश्वर्ययोगात् प्रभु र्महान्वा गजेन्द्र वत् राजातु राजना द्दीपनात् शोभावत्वादित्यर्थः आराध्यत्वाद्वा एतार्थावेताविति दाक्षिणात्येषु योनामत स्तृतीयो लोकपालः सश्रौदीच्येषु चतुर्थस्त्वित

वंदावेइ ४। एवं सक्कारेइ। सम्माणेइ ४। पूएइ वाएइ पडिपुच्छइ पुच्छइ वागरेइ ४। सुत्तधरेणामेगेणो अत्थधरे अत्थधरेणामेगेणोसुत्तधरे एगेसुत्तधरेविअत्थधरेवि एगेनोसुत्तधरे नोअत्थधरे। चमरस्सणं असुरिं दस्स असुरकुमाररन्नो चत्तारि लोगपाला पन्नत्ता तंजहा सोमे जमे वरुणे वेसमणे। एवं बलिस्सविसो

लघु पर्यायनो धणी एम च्यार भांगा ॥ एम सत्कार करें वस्त्रादि दानें करी। सन्मान करें स्तुति करवा थी। पूजा करें उचित द्रव्य थी। वाच ना देवे। प्रश्ननुं उत्तर देवें। एक पुरुष सूत्रनुज भणनहार सून बोलें पणि अर्थधर नथी अर्थ न जाणें। एक अर्थनु धरणहार छे पणि सूत्रनुं भण नहार नथी ॥ चमरेंद्र असुरकुमारेंद्र असुरकुमारना राजाने च्यार लोकपाल कहिआ ते कहें छे। सोम १। यम २। वरुण ३। वैश्रमण ४॥ एम बलेंद्रने पणि च्यार लोकपाल कह्या ते कहें छे। सोम १। यम २। वैश्रमण ३। वरुण ४॥ धरणेंद्र दक्षिण दिशिना इंद्रने च्यार लोकपाल कह्या

मे जमे वेसमणे वरुणे। धरणस्स कालपाले कोलपाले सेलवाले संखवाले। भूताणंदस्स कालवाले कोल पाले संखवाले सेलवाले। वेणुदेवस्स चित्ते विचित्ते चित्तपक्खे विचित्तपक्खे। वेणुदालिस्स चित्ते विचित्ते विचित्तपक्खे चित्तपक्खे। हरिकंतस्स प्पन्ने सुप्पन्ने प्पन्नकंते सुप्पन्नकंते। हरिसिहस्स प्पन्ने सुप्पन्ने कंते प्पन्नकते। अग्गिसिहस्स तेऊ तेउसिहे तेउकंते तेउप्पन्ने। अग्गिमाणवस्स तेऊ तेउसिहे तेउप्पन्ने तेउकंते। पुन्नस्स रुए रुयंसे रुयकंते रुयप्पन्ने। वसिठस्स रुए रुयसे रुयप्पन्ने रुयकंते। जलकंतस्स जले जलरए जलकंते जलप्पन्ने

ते कहे छे। कालपाल १। कोलपाल २। सेलपाल ३। शंखपाल ४॥ भूतानेंद्रने च्यार लोकपाल ते कहे छे। कालपाल १। कोलपाल २। शंख पाल ३। सेलपाल ४॥ वेणुदेव उत्तर दिशिना धणीने च्यार लोकपाल ते कहे छे॥ चित्र १। विचित्र २। चित्रपक्ष ३। विचित्रपक्ष ४॥ वेणुदा ली इंद्रने च्यार लोकपाल ते कहे छे॥ चित्र १। विचित्र २। विचित्रपक्ष ३। चित्रपक्ष ४॥ हरिकांत इंद्रने च्यार लोकपाल ते कहे छे॥ प्रज्ञ १। सुप्रज्ञ २। प्रज्ञकांत ३। सुप्रज्ञकांत ४॥ हरिसह इंद्रना च्यार लोकपाल प्रज्ञ १। सुप्रज्ञ २। सुप्रज्ञकांत ३। प्रज्ञकांत ४॥ अग्निशीर्ष इंद्रना च्यार लोकपाल ते कहे छे॥ तेज १। तेउसिख २। तेजकात ३। तेजप्रज्ञ ४॥ अग्निमाणव इंद्रनें च्यार लोकपाल ते कहे छे॥ तेऊ १। तेउसिख २। तेउप्रभ ३। तेउकात ४॥ पूर्ण इंद्रने च्यार लोकपाल ते कहे छे॥ रुच १। रुचस २। रुचकांत ३। रुचप्रज्ञ ४ ॥ वशिष्ट इंद्रनां च्यार लोकपाल ते कहे छे॥ रुच १। रुचांस २। रुचप्रज्ञ ३ रुचकांत ४॥ जलकात इंद्रना च्यार लोकपाल ते कहे छे॥ जल १। जलरत २। जलकात ३। जलप्रज्ञ ४॥

जलप्पन्नस्स जले जलरए जलप्पन्ने जलकंते । अमियगइस्स तुरियगई खिप्पगई सिंहगई सीहविक्कमगई अमियवाहणस्स तुरियगई खिप्पगई सीहविक्कमगई सीहगई । वेलंबस्स काले महाकाले अंजणे रिठे । पन्नजणस्स काले महाकाले रिठे अंजणे । घोसस्स आवत्ते वियावत्ते णंदियावत्ते महानंदियावत्ते । महा घोसस्स आवत्ते वियावत्ते महाणंदियावत्ते णंदियावत्ते। सक्कस्स सोमे जमे वरुणे वेसमणे। ईसाणस्स सोमे जमे वेसमणे वरुणे । एवं एगंतरिया जाव अच्चुयस्स । चउव्विहा वायुकुमारा पन्नत्ता तंजहा काले महाकाले

जलप्रज्ञ इंद्रनां च्यार लोकपाल ते कहे छे ॥ जल १ । जलरत २ । जलप्रज्ञ ३ । जलकांत ४ ॥ अमित गति इंद्रना च्यार लोकपाल ते कहे छे ॥ त्व रितगति १ । क्षिप्रगति २ । सिंहगति ३ । सिंहविक्रम गति ४ ॥ अमित वाहन इंद्रनां च्यार लोकपाल ते कहे छे त्वरित गति १ । क्षिप्रगति २ । सिंहविक्रम गति ३ । सिंहगति ४ ॥ वेलंब इंद्रनां च्यार लोकपाल ते कहे छे ॥ काल १ । महाकाल २ । अंजन ३ । अरिष्ट ४ ॥ प्रजंजन इंद्रनां च्यार लोकपाल काल १ ॥ महाकाल २ ॥ रिष्ट ३ ॥ अंजन ४ ॥ घोष इंद्रना च्यार लोकपाल ते कहे छे ॥ आवर्त्त १ ॥ वेयावर्त्त २ ॥ नंदियावर्त्त ३ ॥ महानदियावर्त्त ४ ॥ महाघोष इंद्रनां ४ लोकपाल ते कहे छे ॥ आवर्त्त १ वेयावर्त्त २ महा नदियावर्त्त ३ नदियावर्त्त ४॥ एह वीस भवन पतिना इंद्रना लोकपाल कह्या ॥ शक्र सौधर्मेद्रने च्यार लोक पाल ते कहे छे ॥ सोम १ ॥ यम २ ॥ वरुण ३ ॥ वैश्रमण ४ ॥ ईशानेद्रना च्यार लोकपाल ते कहे छे ॥ सोम १ ॥ यम २ ॥ वैश्रमण ३ ॥ वरुण ४ ॥ एम एकने आतरे अच्युतेद्र लगे जाणवु ॥ सनत्कुमार ३ ब्रह्म ५ शुक्र ७ प्राणत ९ दसमां एहने

॥

रइति एवं ॥ एगंतरियत्ति ॥ यन्नामानः शक्रस्य तन्नामानएव सनत्कुमारब्रह्मलोकशुक्रप्राणतेन्द्राणां तथा यन्नामानः ईशानस्य तन्नामान एव माहेन्द्रला न्तकसहस्राराच्युतेन्द्राणामिति कालादयः पातालकलशस्वामिनइति चतुर्विधा देवा इत्युक्त मेतच्च सख्याप्रमाणमिति प्रमाणप्ररूपणसूत्र तत्र प्रमितिः प्रमीयतेवा परिच्छिद्यते येनार्थ स्तत्प्रमाण तत्र द्रव्यमेव प्रमाण दण्डादिद्रव्येणवा धनुरादिना शरीरादे द्रव्यैर्वा दण्डहस्ताङ्गुलादिभि द्रव्यस्यवा जीवादे द्रव्याणावा जीवधर्माधर्म्मादीना द्रव्येवा परमाण्वादौ पर्यायाणा द्रव्येषुवा तेष्वेव तेषामेव प्रमाण द्रव्यप्रमाण एव यथायोग सर्वत्र विग्रहः कार्यः तत्र द्रव्यप्र माण द्वेधा प्रदेशनिष्पन्न विभागनिष्पन्नच तत्राद्य परमाण्वाद्यनतप्रदेशिकान्त विभागनिष्पन्नं पञ्चधा मानादि तत्र मान धान्यमान सेतिकादि रसमान कर्षा

वेलंबे पभंजणे । चउव्विहा देवा पन्नत्ता तंजहा भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया विमाणवासी । चउ व्विहे प्पमाणे पन्नत्ते तजहा दव्वप्पमाणे खेत्तप्पमाणे कालप्पमाणे भावप्पमाणे । चत्तारि दिसाकुमारिमहत्त

सौधर्मेंद्रवत् लोकपाल कहवा । माहेंद्रादिकने ईशानेद्रवत् लोक पाल कहवा ॥ च्यार प्रकारे वायु कुमार देवता कह्या ते कहे छे ॥ काल १ महा काल २ बेलब ३ प्रभजन ४ ॥ एह च्यार पाताल कलशना स्वामी ॥ च्यार प्रकारनां देवता कह्या ते कहे छे ॥ भवनपती १ वाणव्यंतर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४ ॥ च्यार प्रकारे प्रमाण कह्यो ते कहे छे ॥ जेह थी अर्थनुं मान करिये जांणिये ते प्रमाण कहिये ॥ द्रव्य प्रमाण ते बे प्रकारे एक प्र देश थी निष्पन्न एक विभाग थी निष्पन्न एक प्रदेश परमाणु थी अनंत प्रदेश परमाणु लगें विभाग निष्पन्न ते पांच प्रकारे मानादिक मान ते धान्यनु मान सेतिकादि रसमान कर्षादि १ उन्मान तुला कर्षादि २ अवमान ते हस्तादि ३ गणित एक आदिक ४ ॥ प्रतिमान गुंजावल्लादि ५ एह

दि १ उन्मानं तुलाकर्षादि २ अवमानं हस्तादि ३ गणित मेकादि ४ प्रतिमानं गुञ्जा वल्लादीति ५ क्षेत्र माकाशं तस्य प्रमाणं द्विधा प्रदेशनिष्पन्नादि तत्र प्रदेश निष्पन्न मेकप्रदेशावगाढादि असंख्येय प्रदेशावगाढान्तं विभागनिष्पन्न मङ्गुलादिकालः समय स्तन्मान द्विधा प्रदेशनिष्पन्न मेकसमयस्थित्यादि असंख्येयसम यस्थित्यंत विभागनिष्पन्नं समयावलिकेत्यादि क्षेत्रकालयो र्द्रव्यत्वेसत्यपि भेदनिर्देशो जीवादिद्रव्यविशेषकत्वेना नयो स्तत्पर्यायतापीति द्रव्या द्विशिष्टताख्या पनार्थः भावएव भावानांवा प्रमाण भावप्रमाणं गुणनयसंख्याभेदभिन्न तत्रगुणा जीवस्य ज्ञानदर्शनचारित्राणि तत्र ज्ञान प्रत्यक्षानुमानोपमानागमरूप प्रमा णमिति नयानैगमादयः संख्या एकादिकेति द्वेशाधिकार एवेद सूत्रचतुष्टय ॥ चत्तारिदिसाइत्यादि ॥ सुगम नवर दिक्कुमार्यश्च तामहत्तरिकाश्च प्रधानतमाः तासांवा महत्तरिका दिक्कुमारीमहत्तरिका एता मध्यरुचकवास्तव्या अर्हतो जातमात्रस्य नालकर्त्तनादिकुर्व्वतीति विद्युत्कुमारीमहत्तरिकास्तु विदिग्

रियाउ पन्नत्ताउ तंजहा रूवा रूवंसा सुरूवा रूवावई। चत्तारि विज्जुकुमारि महत्तरियाउ पन्नत्ताउ तंजहा

द्रव्य मानना भेद छे १ क्षेत्र जे आकाश तेहनुं प्रमाण बे प्रकारे एक प्रदेश निष्पन्नादि तिहां प्रदेश निष्पन्न एक प्रदेशावगाढ थी लेई असंख्येय प्र देशावगाढ पर्यंत जाणवुं विभाग निष्पन्न ते अंगुलादिक २ काल ते समय तेहनुं मान बे प्रकारे प्रदेश निष्पन्न जे पुद्गलनी एक आकाश प्रदेशें एक समय स्थिति थी असंख्येय समय स्थिति पर्यंत जाणवी विभाग निष्पन्न ते समयावलिकेत्यादि ३ भाव प्रमाण ते गुण नय संख्या भेद थी भिन्न तिहा गुण जीवना ज्ञान दर्शन चारित्र तिहां ज्ञान ते प्रत्यक्षानु मानोपमानागमन रूप प्रमाण नय ते नैगमादिक संख्या ते एकादिक ४ ॥ च्यार दिशिकुमारि महत्तरिका मध्यरुचक निवासिनी जात मात्र अरिहंत नालीने कांटे ते कहे छे ॥ रूपा १ रूपांसा २ सुरूपा ३ रूपावती ४ ॥ च्यार

रुचकवास्तव्याः एताश्च भगवती जातमात्रस्य चतसृष्वपि दिक्षु स्थिता दीपिकाहस्ता गायन्तीति एतेच देवाः संसारिणइति संसार सूत्रं तत्र संसरण मि तश्चेतश्च परिभ्रमणं ससार स्तत्र ससारशब्दार्थज्ञ स्तत्रानुपयुक्तो द्रव्याणांवा जीवपुद्गललक्षणाना यथायोग भ्रमण द्रव्यसंसार स्तेषामेव क्षेत्रे चतुर्दश रज्वात्मके यत्ससरणं स क्षेत्रससारो यत्रवा क्षेत्रे ससारो व्याख्यायते तदेवक्षेत्र मभेदोपचारात् ससारो यथा रसवती गुणनिकेत्यादि ॥ कालस्य दिवसप क्षमासर्त्वयनसवत्सरादि लक्षणस्य ससरणचक्रन्यायेन भ्रमण पल्योपमादिकालविशेषविशेषितवा यत्कस्यापि जीवस्य नारकादिषु सकालसंसारः यस्मिन् वा काले पौरुष्यादिके ससारो व्याख्यायते सकालोपि संसारउच्यते अभेदात् यथा प्रत्युपेक्षणा करणात्कालोपि प्रत्युपेक्षणेति तथा संसारशब्दार्थज्ञ स्तत्रोप

चित्ता चित्तकणगा सेयंसा सोयामणी। सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवाणं चत्तारि पलिओ वमाइं ठिई पन्नत्ता। ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवीणं चत्तारिपलिओवमाइं ठिई प०

विद्युत्कुमारी महत्तरिका विदिशि रुचक निवासिनी भगवंतनी जन्म वेला च्यार च्यार दिशाएं दीपक लेइ ऊभी रहे ते कहे छे ॥ चित्रा १ चित्रकनका २ श्रेयासा ३ सौदामिनी ४ ॥ सक्र सौधर्मेंद्र देवेंद्र देवताना राजानी मध्यम पर्षदाना देवतानी च्यार पल्योपमनी स्थिति कही ॥ ईशानेंद्र देवेंद्र देवताना राजानी मध्यमपर्षदाना देवतानी च्यार पल्योपमनी स्थिति कही ॥ एह देवता संसारीछे तेमांटे संसार कहेछे। च्यार भेदे संसार कह्यो ते कहेछे जीवपुद्गलनुं भ्रमण ते द्रव्यससार १। चउदह राजलोक प्रमाण क्षेत्रससार २। दिन रात्रि मास वर्ष पल्योपम सागरोपम भ्रमवुं ते कालससार ३। भावससार जे औदयिकादि कर्मना परिणाम ४॥ एह संसार स्वरूप दृष्टिवादमाछे तेदृष्टिवाद च्यार भेदे छे तेकहेछे परिकर्म

गुणो जीवपुद्गलयोर्वा संसरणमान मुपसर्जनीकृतसंबंधिद्रव्य भावानां चौदयिकादीनां वर्णादीनांवा संसरणपरिणामो भावसंसारइति अयञ्च द्रव्यादिसंसारो नेकनयैर्द्दष्टिवादे विचार्यतइति दृष्टिवादसूत्र ॥ चउव्विहेदिट्ठिवाएइत्यादि ॥ तत्र दृष्टयो दर्शनानि नयावा उच्यन्ते अभिधीयते पतन्तिवा ऽवतरंतियस्मिन्नसौ दृष्टिवादो दृष्टिपातोवा द्वादशमंग तत्र सूत्रादि ग्रहणयोग्यता सम्पादन समर्थं परिकर्मगणितपरिकर्मेव तत्र सिद्धिसेनिकादिसूत्राणीति ऋजुसूत्रादीनि द्वाविंशति र्भवन्ति इह सर्वद्रव्यपर्यायनयादार्थसूचनात्सूत्राणीति समस्तश्रुतात् पूर्वंकरणा त्पूर्वाणि तानिचो त्पादपूर्वादीनि चतुर्दश त्येतेषां चैव नाम प्रमाणानि तद्यथा उप्पाय अग्गेणीय २ वीरिय ३ अत्थिनत्थिउववायं ४ नाणप्पवाय ५ सच्च ६ आयपवायचकम्मच ८ ॥ १ ॥ पुव्वंपच्चक्खाण ९ विज्जणुवाय १० अवञ्झ ११ पाणाऊ १२ किरियाविसालपुव्व १३ चोद्दसमविंदुसारंतु १४ ॥ २ ॥ उप्पायपयकोडोअग्गेणीयम्मिछन्नउइलक्खा विरियम्मिसयरिलक्खा सट्ठिलक्खा उअत्थिनत्थिंमि ॥ ३ ॥ एगयऊणाकोडी नाणपवायम्मिहोइपुव्वम्मि एगापत्ताणकोडी छत्तसगासच्चवायम्मि ॥ ४ ॥ छव्वीसकोडीओ आयपवायम्मिहोइपयसखा कम्मपवाएकोडी असीइलक्खेहिअभहिया ॥ ५ ॥ चुलसीयसयसहस्सा पच्चक्खाणमिवन्नियापुव्वे एकापयाणकोडी दससहस्सपहियायअणुवाए ॥ ६ ॥ छव्वी

चउव्विहे संसारे प० तं० दव्वसंसारे खेत्तसंसारे कालसंसारे भावसंसारे । चउव्विहे दिट्ठिवाए प० तंजहा

दृष्टिवाद ते सूत्रग्रहणयोग्यताने नीपजाववा समर्थ १ । सूत्रदृष्टिवाद सर्व द्रव्य पर्याय नयादि अर्थ जणावे २ । पूर्वगतदृष्टिवाद ते चउदहपूर्व सहित श्रुत ३ । अनुयोगदृष्टिवाद ते तीर्थकर कुलकर गडिकानुयोगादि तीर्थंकरगडिका कुलकरगडिका चक्रवर्त्तिगडिका जेहमा तीर्थंकरादिकना अधिकार होय ते गडिका कहिये ४ ॥ च्यार भेदे प्रायश्चित्त कह्यो तेकहेछे ज्ञानप्रायश्चित ते ज्ञानना अतीचारनी आलोयणा गुरुआपें १ । दर्शनप्रायश्चि

॥ संकोडोओ पयाणपुव्वेअवंभनामम्मि पाणाउम्मियकोडी छप्पनलक्खेहिअभहिया ॥ ७ ॥ नवकोडीओसंखा किरियविशालम्मिवन्नियागुरुणा अद्धत्तेरसलक्खा पयसखाविंदुसारमि ॥८॥ तेषु गतं प्रविष्ट यत्श्रुत तत्पूर्वंगत पूर्वाख्येव अगप्रविष्ट मङ्गानि यथेति योजनयोग: ऽनुरूपो अनुकूलोवा सूत्रस्य निजेना भिधे येन सहयोग इत्यनुयोग: सचैकस्तीर्थंकराणा प्रथमसम्यक्तावाप्तिपूर्वभवादिगोचरो य: समूलप्रथमानुयोगो ऽभिधीयते यस्तु कुलकरादिवक्तव्यतागोचर: सगण्डिकानुयोगइति पूर्वंगत मनन्तर मुक्तान्तत्रच प्रायश्चित्तप्ररूपणासीदिति प्रायश्चित्तसूत्रद्वय न्तत्रज्ञानमेवप्रायश्चित्त यत स्तदेव पापच्छिनत्ति प्रायश्चि त्तवा शोधयतीति निरुक्तिवशाज्ज्ञान प्रायश्चित्तमिति एव मन्यत्रापि ॥ वियत्तकिच्चेत्ति ॥ व्यक्तस्य भावतो गीतार्थस्य क्तत्य करणीयं व्यक्तक्तत्य प्रायश्चि त्त मिति गीतार्थोहि गुरुलाघवपर्यालोचनेन यत्किञ्चन करोति तत्सर्वं पापविशोधकमेव भवतीति अथवा ज्ञानाद्यतिचारविशुद्धये यानि प्रायश्चित्तान्या लोचनार्हादीनि विशेषतो ऽभिहितानि तानि तथा अपदिश्यते ॥ वियत्तत्ति ॥ विशेषेण अवस्थाद्यौचित्येन विशेषानभिहितमपि दत्तं वितीर्ण मभ्यनुज्ञात मित्यर्थ: यत्किञ्चि न्मध्यस्थगीतार्थेन क्तत्य मनुष्ठान तत् विदत्तक्तत्य प्रायश्चित्तमेव ॥ वियत्तकिच्चेत्ति ॥ पाठान्तर प्रीतिक्तत्य वैयावृत्यादीति प्रतिषेवण मासे

परिकम्मे सुत्ताइं पुव्वगए अणुजोगे । चउव्विहेपायच्छित्ते पन्नत्ते तंजहा णाणपायच्छित्ते दंसणपायच्छित्ते

त्त दर्शनना अतीचारनी आलोयणा गुरु आपें २ । चारित्रना अतीचारनी आलोयणा गुरु आपे तेचारित्र प्रायश्चित ३ । व्यक्तकृत्यप्रायश्चित्त तेगीतार्थ नी करणी तेसर्व प्रायश्चित्तरूप पापशुद्धिनुं आपनार ४ ॥ वली च्यार प्रकारे प्रायश्चित कह्यो ते कहेछे प्रतिसेवणा सेवना तेहनें अणकरवे प्रायश्चित्त आलोयण १ । संयोजना प्रायश्चित्त बे एकठा मिल्या जे शय्यातरनो पिंड अने आधाकरमी तिहां जे प्रायश्चित २ । आरोपणाप्रायश्चित्त ते एक अपरा

वन मकृत्यस्येति प्रतिषेवणा साच द्विधा परिणामभेदात् प्रतिषेवणीयभेदाद्वा तत्र परिणामभेदात् पडिसेवणाओभावो सोपुणकुसलोव्वहोज्जकुसलोवा कुसलेणहोइकप्पो अकुसलपरिणामओदप्पो ॥ १ ॥ प्रतिषेवणीयभेदा त्तु मूलगुणउत्तरगुणे दुविहापडिसेवणासमासेण मूलगुणेपंचविहा पिंडविसोहोइगोइ यरा ॥ १ ॥ तस्यां प्रायश्चित्त मालोचनादि तच्चेद आलोयण१ पडिकमणे २ मीस ३ विवेगे ४ तहाविउस्सगे ५ तव ६ छेय ७ मूल ८ अणव ठ्ठयाय ९ पा रचिए १० चेवत्ति ११ ॥ २ ॥ प्रतिषेवणाप्रायश्चित्तं तथा सयोजनमेकजातीयातिचारमीलन सयोजना यथा शय्यातरपिण्डो गृहीतः सोप्युदकार्द्रहस्ता दिना सोप्यभ्याहृतः सोप्या धाकर्म्मिकः यत्र यत्प्रायश्चित्त तत् सयोजनाप्रायश्चित्त तथा आरोपण मेकापराधप्रायश्चित्ते पुनः पुन रासेवनेन विजातीयप्रा यश्चित्ताध्यारोपण मारोपणा यथा पञ्चरात्रिन्दिव मायश्चित्त मापन्नः पुन स्तत्सेवने दशरात्रिन्दिव पुनः पचदशरात्रिंदिव मेव यावत् षण्मासान् तत

चरित्तपायच्छित्ते वियत्तकिच्चे । चउव्विहे पायच्छित्ते पन्नत्ते तंजहा पडिसेवणापायच्छित्ते संजोयणापाय

घना प्रायश्चित्तनें बिषें वली पापकीधुं तेहनुं तप वली तेहमा देवो पाच अहोरात्रिनुं प्रायश्चित्तकीधुं तेहमा वली पंचबीस अहोरात्रिनुं एमयावत् छमासी तप आपे तपमां तप छमासीताईं आपे ते आरोपणा प्रायश्चित्त कहिये वली एहनु विशेष गीतार्थना वचनथी जाणज्यो ३ परिकुंचणा प्रायश्चित्त ते पापनुं गोपवुं कीधोअन्य कहेअन्य तेहनुं प्रायश्चित्त ४ ॥ प्रायश्चित्त कालापेक्षाथी दिये ते मांटे काल कहेछे । च्यार भेदे कालकहियो ते कहेछे प्रमाणकाल मासवर्ष रितु अयन शतवर्षपल्योपमादि प्रमाण करिये । देवता नारकी प्रमुखनु आऊखानु काल जेहवानो जेतलो आयु ते यथा यु काल । आऊखानुं काल ते मरणकाल । अद्धाकाल ते समयादि मनुष्य क्षेत्रमा सूर्य भ्रमणरूप च्यार प्रहरे दिवस च्यारप्रहरे रात्रि इत्यादिक ॥ काल

स्तस्याधिकं तपोदेयं न भवत्य पितु शेषतपांसितु तत्रैवा न्तर्भावनीयानि इह तीर्थे षण्मासान्तत्वा त्तपस इति उक्तञ्च पंचाईयारोवणे नेयव्वाजावहोंति छम्मासा तेणपरमासियाण छग्गहुवरिंझोसणंकुज्जत्ति ॥ १ ॥ आरोपणायाः प्रायश्चित्त मारोपणा प्रायश्चित्तमिति तथा परिकुंचन मपराधस्य चेत्रकाल भावानां गोपायन मन्यथा सता मन्यथा भणन परिकुंचना परिवचनावा उक्तंच दव्वेखेत्तेकाले ठावेपलिउंचणाचउवियप्पत्ति तथाहि सच्चित्तेअच्चि त्ते जणवयपडिसेवियंचअद्धाणे २ । सुभिक्खेयदुभिक्खे हत्थेणतहागिलाणेणति ॥ १ ॥ तस्याः प्रायश्चित्त परिकुचना प्रायश्चित्त विशेषोत्र व्यवहारपीठा दव सेयइति प्रायश्चित्तच कालापेचया दीयतइति कालनिरूपणासूत्र तत्र प्रमीयते परिच्छिद्यते येन वर्षशतपल्योपमादि तत्प्रमाण तदेवकालः प्रमाणकालः सच अद्धाकालविशेषएव दिवसादिलचणो मनुष्यचेत्रान्तर्वर्त्तीति उक्तंच दुविहोपमाणकालो दिवसपमाणचहोइराईय चउपोरिसिओदिवसो राईचउपो रिसीचेवत्ति ॥ १ ॥ यथा यत्प्रकार नारकादिभेदेनायुः कर्मविशेषो यथायु स्तस्य रौद्रादिध्यानादिना निर्वृत्ति र्बन्धनं तस्याः सकाशात् यः कालो नार कादित्वेन स्थिति र्जीवानां स यथायुर्निर्वृत्तिकालः अथवा यथायुषो निर्वृत्ति स्तथा यः कालो नारकादिभवे ऽवस्थान सतथेति अयमप्यद्धाकालएवा यु ष्ककर्मानुभवविशिष्टः सर्वसंसारजीवानां वर्त्तनादिरूपइति उक्तंच आउयमित्तविसिट्ठो सएवजीवाणवत्तणादिमओ । भण्णइअहाउकालो वत्तइजोजचिरं तेणत्ति ॥ १ ॥ मरणस्य मृत्योः कालः समयः मरणकालो ऽयमप्यद्धासमयविशेष एव मरणविशिष्टो मरणमेव वा कालो मरणपर्यायत्वा दुक्तंच कालो

च्छित्ते आरोवणापायच्छित्ते पलिउंचणापायच्छित्ते । चउव्विहे काले पन्नत्ते तंजहा पमाणकाले अहाउणि

ते द्रव्य पर्याय रूपछे पर्यायाधिकारथी पुद्गलाधिकार कहेछे । च्यार भेदे पुद्गलकह्यो ते कहेछे । वर्ण परिणामे कालो नीलो नीलानुं पीत इत्यादि ।

त्तिमरगंमरणं जहेवमरणगओत्तिकालगओ। तम्हासकालकालो जस्समओमरणकालोत्ति ॥ १ ॥ तथा अद्धैव कालो ऽद्धाकालः कालशब्दोहि वर्णप्रमाणक लादिष्वपि वर्त्तते ततो ऽद्धाशब्देन विशिष्यतइति अयञ्च सूर्यक्रियाविशिष्टो मनुष्यक्षेत्रान्तर्वर्त्ती समयादिरूपो ऽवसेयः उक्तंच सूरकिरियाविसिठ्ठो गोदोहा इकिरियासुनिरवेक्खो। अद्धाकालोभण्णइ समयक्खेत्तमिसमयाई ॥ १ ॥ समयावलियमुहुत्ता दिवसमहोरत्तपक्खमासाय सवच्छरजुगपलिया सागरओस प्पिपरियट्टत्ति ॥ २ ॥ द्रव्यपर्यायभूतस्य कालस्य चतुःस्थानकमुक्त मिदानी म्पर्यायाधिकारा त्पुद्गलाना पर्यायभूतस्य परिणामस्य तदाह ॥ चउव्विहेत्यादि परिणामो ऽवस्थातो वस्थान्तरगमन नच सर्वथा विनाश उक्तंच परिणामोह्यर्थान्तर गमननसर्वथाव्यवस्थान। नचसर्वथाविनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टइ ति ॥ १ ॥ तत्र वर्णस्य कालादेः परिणामो न्यथाभवनं वर्णनवा कालादिनेतरत्यागेन पुद्गलस्य परिणामो वर्णपरिणाम एव मन्येपि अजीवद्रव्यपरिणामा उक्तो ऽधुनातु जीवद्रव्यस्य परिणामाः विचित्राः सूत्रप्रपंचेना भिधीयन्ते तत्र ॥ भरहेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं व्यक्तमेव किन्तु पुरिमपश्चिमवर्जा किमुक्त भवति म

वृत्तिकाले मरणकाले अद्धाकाले। चउव्विहे पोग्गलपरिणामे पन्नत्ते तंजहा वन्नपरिणामे गधपरिणामे

गंधपरिणाम सुगंधपुद्गल तेदुर्गंधथाय दुर्गंधते सुगंधथाय परिणाम ते नवीनवी अवस्थापामें। रसपरिणाम तीखानुं कडुवो इत्यादि। फरस परिणाम कोमलना कठिन कठिनना कोमल इत्यादि ८ फरसपरिणाम ४ ॥ एह अजीवना परिणाम कह्या हिवे जीवना परिणाम कहेछे। भरत ५ ऐरवत ५ एह १० क्षेत्रने विषे पहलो अने छेहलो २ तीर्थंकर छोडीने बावीस तीर्थंकर भगवंत च्यार महाव्रतरू पधर्मनी प्ररूपणाकरे ते कहेछे। सर्व सूक्ष्म वा दर प्राणातिपात जीवहिंसाथी विरमवु तेव्रत। एम सर्वमृषावादथी विरमवुं तेव्रत। एम सर्व अदत्तादानथी वेरमण अदत्तनलेवु तेव्रत। सर्व

ध्यमकाइति तेंचा ष्टादयोपि भवन्तीति उच्यते द्वाविंशतिरिति चत्वारो यमा एव यामानिवृत्तयो यस्मिन् सतथा ॥ वहिद्धादाणाओत्ति ॥ वहिद्धामैथुनंप रिग्रहविशेष आदानञ्च परिग्रह स्तयो र्द्वन्द्वैकत्व मथवा आदीयत इत्यादान परिग्राह्य वस्तु तच्च धर्म्मोपकरणमपि भवतोत्यत आह बहिस्ता द्धर्म्मोपकरणा द्वहि र्यदिति इहचमैथुन परिग्रहे न्तर्भवति नह्यपरिगृहीता योषित् भुज्यतइति प्रत्याख्येयस्य प्राणातिपातादे श्चतुर्विधत्वा च्चतुर्यामता धर्म्मस्येति इयचेह भावना मध्यमतीर्थंकराणा वैदेहिकानाञ्च चतुर्यामकधर्म्मस्य पूर्वपश्चिमतीर्थंकरयोश्च पचयामधर्मस्य प्ररूपणा शिष्यापेक्षया परमार्थतस्तु पचयामस्यैवो भये षा मप्यसौ यतः प्रथमपश्चिमतीर्थंकरतीर्थसाधव ऋजुजडा वक्रजडाश्चेति तत्त्वादेव परिग्रहोवर्जनीय इत्युपदिष्टो मैथुनवर्जन मववोद्धुं पालयितुंच नचमाः मध्यमविदेहजतीर्थंकरतीर्थसाधवस्तु ऋजुप्राज्ञा स्तद्वोद्धुं वर्जयितुंच चमा इति भवत श्चात्रश्लोकौ पुरिमाउज्जुजडाओ वकजडाओयपच्छिमा । मज्झिमाउ

रसपरिणामे फासपरिणामे । भरहेरवएसुणं वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्झिमगा वावीसं अरहंता भग वंता चाउज्जामं धम्मं पन्नविति तंजहा सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं एवं मुसावायाउ अदिन्नादाणाउ स व्वाउ वहिद्धादाणाउवेरमणं । सव्वेसुणं महाविदेहेसु अरहता भगवंता चाउज्जामं धम्म पन्नवयंति तंजहा

वहिद्धाण मैथुन ते मैथुनपरिग्रह एकठा तेहथी विरमवुं ४ ॥ सघलाई एतले पांच महाविदेह क्षेत्रमां अरिहंत भगवंत च्यार महाव्रतरूप धर्म प्र रूपै तेकहेछे सर्व प्राणातिपात वेरमण १ । यावत् वहिद्धाण मैथुनपरिग्रहथी वेरमण ४ ॥ जे प्राणातिपातथी विरमे नथी तेहने च्यार दुर्गति कही तेकहेछे नरकदुर्गति तिर्यंचदुर्गति मनुष्यदुर्गति देवदुर्गति किल्विषादि ४॥ च्यार सद्गति कही तेकहेछे सिद्धिसद्गति मुक्ति देवसद्गति विमानादि मनुष्यस

ज्जुपणाओ तेणधम्मेदुहाकए ॥ १ ॥ पुरिमाणदुव्विसोज्झोउ चरिमाणंदुरणुपालए । कप्पेमज्झिमगाणतु सुविसोज्झेसुपालएत्ति ॥ २ ॥ अनन्तरोक्तेभ्यः प्राणा तिपातादिभ्यो नुपरतोपरतानां दुर्गतिसुगती भवत स्तद्वतश्च तेदुर्गतेतरा भवतीति दुर्गतिसुगत्यात्मकपरिणामानां दुर्गतसुगतयोश्च भेदान् सूत्रचतुष्टयेना ह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ गतार्थं नवर मनुष्यदुर्गति दुःखितमनुष्यापेक्षया देवदुर्गतिः किल्विषिकाद्यपेक्षयादिति ॥ सुकुलपच्चायाइति ॥ देवलोकादौ गत्वा सुकुले इक्ष्वाकादौ प्रत्यायातिः प्रत्यागमन प्रत्याजातिर्वा प्रतिजन्मेति इयच तीर्थंकरादीना मेवेति मनुष्यसुगते र्भोगभूमिजादिमनुजत्वरूपायाःभिद्यते दुर्गतिरेषा मस्तो त्यचिप्रत्यये दुर्गता दुःस्थावा दुर्गता एवं सुगता अनन्तरसिद्धाः सुगता उक्ता स्तेचाष्टकर्मक्षयत्वा द्भवत्यतः क्षयपरिणामस्य क्रममाह ॥ पढमेत्यादि ॥ सूत्रत्रय व्यक्त पर प्रथमः समयो यस्य सतथा सचासौ जिनश्च सयोगिकेवली प्रथमसमयजिन स्तस्य कर्मणः सामान्यस्यांशाः ज्ञानावरणी

सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं जाव सव्वाउवहिद्धादाणाउवेरमणं । चत्तारिदुग्गईउ प० तंजहा णेरइयदुग्गई तिरिक्खजोणियदुग्गई मणुस्सदुग्गई देवदुग्गई । चत्तारिसोग्गईउ पन्नत्ताउ तंजहा सिद्धिसोग्गई देवसोग्गई

इति उत्तमजाति । सुकुल उत्तमकुलमां उपजवुं ते धर्मसहित कुल देवलोकमा सुकुलमा अवतरे ते तीर्थकरादिक जे मोक्षपामैं ४ ॥ च्यार दुर्गतकह्या तेकहेछे नारकीदुर्गत तिर्यंचदुर्गत मनुष्यदुर्गत देवदुर्गत किल्विषादि आभियोगिक ४ । च्यार सुगत सुखिया कह्या तेकहेछे सिद्धसुगत यावत् सुकुल मा ऊपना ते सुगत पुण्यवत ४ ॥ सिद्ध ते कर्मक्षयथी थाय तेमांटे कर्मक्षय कहेछे । पहले समयनो जिन सयोगी केवलीना च्यार कर्मना अंश समकाले क्षय थाय तिवारे केवलज्ञानी थाय तेकहेछे । ज्ञानावरणी दर्शनावरणी मोहनीय अतराय ४ ॥ ऊपनाछे जे केवलज्ञान केवलदर्शन तेहना धरणहार अरि

यादयो भेदाइति उत्पन्ने आवरणक्षयाज्जाते ज्ञानदर्शने विशेषसामान्यबोधस्वरूपे धारयतीति उत्पन्नज्ञानदर्शनधरो ऽनेना ऽनादिसिद्धकेवलज्ञानवतः सदा शिवस्या सद्भाव दर्शयति नविद्यते रह एकाती गोप्यमस्य सकलसन्निहितव्यवहितस्थूलसूक्ष्मपदार्थसार्थसाक्षात्कारित्वा दित्यरहा देवादिपूजार्हत्वेना र्हन्वा रागादिजेतृत्वा ज्जिनः केवलानि परिपूर्णानि ज्ञानादीनि यस्यसति स केवलीति सिद्धत्वस्य कर्मक्षपणस्य च एकसमये सम्भवात् प्रथमसमयसिद्धस्येत्या दि व्यपदिश्यते असिद्धानान्तु हास्यादयो विकारा भवन्तीति हास्यं ताव च्चतुःस्थानकावतारित्वादाह ॥ चउहीत्यादि ॥ हसन हासो हासमोहोदयजनि तो विकार स्तस्यो त्पत्ति रुत्पादो हासोत्पत्तिः ॥ पासित्तत्ति ॥ दृष्ट्वा विदूषकादिचेष्टां चक्षुषा तथा भाषित्वा वाचा किंचिच्च सूरीवचन तथा श्रुत्वा श्रो

मणुयलोग्गई सुकुलेपच्चायाई । पढमसमयजिणस्सणं चत्तारि कम्मंसा खीणा भवंति तंजहा णाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं मोहणिज्जं अंतराइयं उप्पन्नणाणदंसणधरेणं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेंति तंजहा वेयणिज्जं आउयं णाम गोय। पढमसमयसिद्धस्सणं चत्तारि कम्मंसा जुगवं खिज्जंति तंजहा वेयणि ज्जं आउयं णाम गोयं । चउहिं ठाणेहिं हासुप्पत्तिसिया तंजहा पासेत्ता भासेत्ता सुणेत्ता संभरेत्ता । चउ

हंत जिन केवली चउदह राजलोक हस्तामलकवत् देखै ते जिन च्यार कर्मना अंश वेदै भोगवे तेकहेछे वेदनीयकर्म आयुकर्म नामकर्म गोत्रकर्म ४ । प्रथमसमयना सिद्धने चौदमें अयोगिगुणठाणे च्यार कर्मना अंश जे घनघातीछे समकाले मूलथी क्षयथाय तेकहेछे । वेदनीयकर्म आयुकर्म नामकर्म गोत्रकर्म ४ ॥ असिद्धने हास्यादिहोय तेच्यार थानके हास्यनी उत्पतिकही । भवाईनी चेष्टादेखीनें हास्यउपजे । कोईकबातकरतां हास्यउपजे। बचन

त्रेण परीक्षं तथाविधवाक्य तथाविधमेव चेष्टावाक्यादिकं स्मृत्वा हसतीतिशेषः एवं दर्शनादीनि हासकारणानि भवंतीति असितानामिव धर्मान्तरनिरू पणाय दृष्टांतदार्ष्टांतिकार्थंव तसूत्रद्वयं ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ काष्टस्यच काष्टस्यचेति काष्टयोरन्तरविशेषोरूपनिर्माणादिभिः एवमेव काष्टाद्यतरमिव पक्ष्म कर्पासरूतादि पक्ष्मणोरन्तरं विशिष्टसौकुमार्यादिभि र्लोहान्तरं अत्यंतच्छेदकत्वादिभिः प्रस्तरान्तरं पाषाणान्तरं चिन्तितार्थप्रापणादिभिरेवमेव काष्टा द्यतरवत् स्त्रियावा स्त्र्यन्तरापेक्षया पुरुषस्यवा पुरुषान्तरापेक्षया वाशब्दौ स्त्रीपुंसयो श्चातुर्विध्यं प्रति निर्विशेषताख्यापनार्थौ काष्टान्तरेण समान तु ल्य मन्तर विशेषो विशिष्टपदवीयोग्यत्वादिना पक्ष्मान्तरसमानं वचनसुकुमारतयैव लोहान्तरसमान स्नेहच्छेदेन परीषहादौ निर्भङ्गत्वादिभिश्च प्रस्त

व्विहे अंतरे पन्नत्ते तंजहा कट्ठंतरे पम्हंतरे लोहंतरे पत्थंतरे । एवामेव इत्थिएवा पुरिसस्सवा । चउव्विहे अंतरे प० तंजहा कट्ठंतरसमाणे पम्हंतरसमाणे लोहंतरसमाणे पत्थंतरसमाणे । चत्तारि भयगा प० तं०

व्यास प्रमुखना सांभलीने हास्य उपजे । हीयामा संभारीने हसेते ४ ॥ च्यार प्रकार अंतरकह्यो ते कहेछे । काष्टांतर काष्ट काष्टमां विशेषछे एक चंदन काष्टांतर एक थोहरआक । पम्ह ते पाख पाखमां अतर विशेष सुकुमाल एकसुहाली एक कठिन । लोह लोहमां अतर विशेष एक अत्यत कठिन एक सुकुमाल । पत्थर पत्थरमा विशेष एक चिंतामणि मन वंछित आपें एक कांकरो ॥ एहनीपरे स्त्री स्त्रीमाहि पुरुष पुरुषमाहि च्यार प्रकार अतर विशेषछे । ते कहेछे । काष्टांतर समानते एक विशेष पदवी योग्य एक अयोग्य । पदमातर समान स्त्रीपुरुष तेएकनु वचन सुकुमाल एकनो वचन कठिन । लोहांतर समान तेस्नेह छेदेकरी स्नेहे एकसस्नेही । प्रस्तरातर समान तेचिंता रहित मनोरथपूरे गुणवत वादवायोग्य

रान्तरसमानं चिंतातिक्रान्तमनोरथपूरकत्वेन विशिष्टगुणवत् वंद्यपदवीयोग्यत्वादिनाचेति अनन्तर मन्तरमुक्तमिति पुरुषविशेषान्तरनिरूपणाय भृत कसूत्र तत्र भ्रियते पोष्यतेस्मेति भृत: सएवानुकम्पितो भृतक: कर्म्मकरइत्यर्थ: प्रतिदिवसं नियतमूल्येन कर्म्मकरणार्थं योगृह्यते सदिवसभृतक: यात्रा देशा न्तरगमन तस्यांसहायइति भ्रियते य:स यात्राभृतक: मूल्यकालनियम कृत्वा यो नियत यथावसरं कर्म्म कार्यते स उच्चताभृतक: कवाडभृतक: चितिखा नक: औद्रादिर्यस्यखड्गर्मार्प्यते द्विहस्ता त्रिहस्तावा त्वया भूमि: खनितव्ये तावत्ते धनन्दास्यामीत्येव नियम्येति इहगाथे दिवसभयओघिप्पइ च्छिन्नेणध णेणदिवसदेवसिय । जत्ताओहोइगमणं उभयवा [आगमनचेत्यर्थ:] एत्तियधणेणं ॥ १ ॥ कव्वालउड्डुमाइ हत्थमियकम्मएत्तियधणेण । एच्चिरकालुव्वत्ते कायव्वंकम्मजविंति ॥ २ ॥ उक्तं लौकिकस्य पुरुषविशेषस्यां तर मधुना लोकोत्तरस्य तस्यांतरप्रतिपादनाय प्रतिषेधिसूत्र तत्र सप्रकट अगीतार्थसमच, मक

दिवसभयए जत्ताभयए उच्चत्तभयए कवाडभयए । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० संपागडपडिसेवीणामेगे णोपच्छन्नपडिसेवी पच्छन्नपडिसेवीणामेगेणोसंपागडपडिसेवी एगेसंपागडपडिसेवीवि पच्छन्नपडिसेवी

एक निरगुणी अने अवंदन ॥ पुरुष विशेष अधिकार माटे सेवकनो विशेष च्यार भृतक सेवककह्या ते कहेछे । दिवसनो एक सेवक तेदानगी मूल्य आपी कार्यने राखीयें । यात्रा सेवक ते देशातरे जातां सखाई राखीये मूल्य आपीने । उच्चता भृतक ते जेकालनुं मानकरी मूल्ये काम करावीये । कवाड भृतक ते बेहाथ ३ हाथभूमिखोदसे तोएतलुं धन आपस्युं ॥ वली च्यार प्रकारे पुरुष कह्या ते कहे छे ॥ हिवे लोकोतर पुरुषनो विशेष कहे छे एक गीतार्थसाधु प्रकट अकल्प भक्तादिकनो सेवनार पणि अप्रच्छन्नसेवें समक्षसेवें छानुं न सेवें १ बकुश । एक प्रच्छन्न छानुं पाप कर्मसेवें प्रगट न

रय भक्तादि प्रतिषेधितुं शीलं यस्य स सम्प्रकटप्रतिसेवी त्येवं सर्वत्र नवरं प्रच्छन्नमगीतार्थासमक्षं मत्रचायेषु भङ्गकत्रयेषु पुष्टालंबनो वकुशादि निरा
लम्बनोवा पार्श्वस्थादि द्रष्टव्य श्चतुर्थेतु निर्ग्रंथः स्नातकोवेति अन्तराधिकारादेव पुरुषाणां स्त्रीक्तत मतरं प्रतिपादयन् ॥ चमरस्सेत्यादिक ॥ मग्रमहि
षीसूत्रप्रपञ्चमाह कण्ठ्यश्चाय नवरं ॥ महारन्नोत्ति ॥ लोकपालस्य अग्रभूताः प्रधाना महिष्यो राजभार्या अग्रमहिष्यइति ॥ वइरोयणत्ति ॥ विविधैःप्रकारै
रोचते दीप्यते इति विरोचना स्तएववैरोचना उत्तरदिग्वासिनो असुरा स्तेषा मिंद्रो धरणसूत्रे ॥एवमिति ॥ कालवालस्येव लोकपालशैलपालसंखपालाना

वि एगेणोसंपागडपडिसेवी णोपच्छन्नपडिसेवी । चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महा
रन्नो चत्तारि अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ तजहा कणगा कणगलया चित्तगुत्ता वसुधरा । एवं जमस्स वरुण
स्स वेसमणस्स । वलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो सोमस्समहारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीउ प० तं०
मित्तगा सुभद्दा विज्जुया असणी । एवं जमस्स वेसमणस्स वरुणस्स । धरणस्सणं णागकुमारिंदस्स णाग

सेवें २ कुशीलिउ एक प्रगट पणेसेवे पासस्थो अनें छानुं पणिसेवे ३ एक गुणवंत साधु प्रगटपणि अकलपवस्तुनसेवे अनें प्रच्छन्नपणि म सेवे ते नि
ग्रथ अथवा स्नातक ४ ॥ अंतरा धिकार माटे देव पुरुषनो स्त्रीनो अधिकार कहेछे ॥ चमरेंद्र असुरेंद असुर कुमारनो राजा तेहना सोमनामा म
हाराजाने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे ॥ कनका १ कनकलता २ चित्रगुप्ता ३ वसुधरा ४। एम यमने वरुणने वैश्रमणने च्यार अग्र महिषी एज
नाम ॥ वलेंद्रने वैरोचन उत्तर दिशिना वासी देवतानु राजा तेहनुं सोमनामे मोटो राजा तेहने च्यार अग्रमहिसी कही इद्राणी कही ते कहेछे ।

मेतन्नामिका एव चतस्र श्चतस्रो भार्या एतदेवाह ॥ जावसंखवालस्सत्ति ॥ भूतानन्दसूत्रे ॥ एवमिति ॥ यथाकालवालस्य तथान्येषामपि नवरं तृतीयस्था ने चतुर्थोवाच्यः धरणस्य दक्षिणनागकुमारनिकायेंद्रस्य लोकपालाना मग्रमहिष्यो यथा २ यन्नामिका स्तथा तन्नामिकाएव सर्वेषां दाक्षिणात्यानां शेषा णा मष्टाना वेणुदेवहरिकांताग्निशिखपूर्णजलकान्तमितगतिवेलवघोषाख्याना मिन्द्राणां ये लोकपालाः सूत्रे दर्शिता स्तेषां सर्वेषामिति यथाच भूता नदस्यो दीच्यनागराजस्य तथा शेषाणामष्टाना मौदीच्येन्द्राणां वेणुदालिहरिसहाग्निमाणववशिष्टजलप्रभामितवाहनप्रभञ्जनमहाघोषाख्यानां ये लोकपा ला स्तेषा मपीति एतदेवाह ॥ जहाधरणस्सेत्यादि ॥ उक्त सचेतनाना मन्तर मथान्तराधिकारादेवा चेतनविशेषाणा विकृतीनां गोरसस्नेहमहत्वलक्षण

कुमाररस्रो कालस्स महारस्रो चत्तारि अग्गमहिसीउ प० तं० असोगा विमला सुप्पभा सुदंसणा । एवं जाव संखवालस्स । भूयाणंदस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररस्रो कालवालस्स महारस्रो चत्तारि अग्ग महिसीउ प० तंजहा सुणंदा सुभद्दा सुजाया सुमणा । एवं जाव सेलवालस्स जहा धरणस्स । एवं सव्वेसिं

मित्रगा १ । सुभद्रा २ । विदुगता ३ । अशनी ४ ॥ इमज जमने वैश्रमणनें वरुणनें च्यार च्यार अग्रमहिषी कहवी ॥ धरणेंद्र नागकुमारेंद्र नागकुमा रनां राजानुं काल मोटोराजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही तेकहेछे । अशोका १ । विमला २ । सुप्रभा ३ । सुदर्शना ४ । एम यावत् शंखपाल लगे जाणवुं ॥ भूतानेन्द्र नागकुमारेंद्र नागकुमारनुं राजा तेहनुं कालवाल मोटो राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । सुनदा १ । सुभ द्रा २ । सुजाता ३ । सुमना ४ ॥ एम यावत् सेलपालने एह सर्व लोक पालछे ॥ जिम धरणेन्द्रने तिम सर्वने एम दक्षिण दिशिनां इंद्रनां लोक

दाहिणिंदलोगपालाणं जाव घोसस्स जहा नूयाणंदस्स । एवं जाव महाघोसस्स लोगपालाणं । कालस्सणं पिसाइंदस्स पिसायरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ तंजहा कमला कमलप्पन्ना उप्पला सुदंसणा । एव महाकालस्सवि । सुरूवस्सण नूइंदस्स नूयरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ तजहा रूववई बहुरूवा सुरूवा सुनगा । एवं पडिरूवस्सवि । पुन्नन्नद्दस्सणं जक्खिंदस्स जक्खरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीउ प० तजहा पुन्ना बहुपुत्तिया उत्तमा तारगा । एवं माणिन्नद्दस्सवि । न्नीमस्सणं रक्खसिंदस्स रक्खसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ तंजहा पउमा वसुमई कणगा रयणप्पन्ना । एवं महान्नीमस्सवि । किन्नरस्सणं

पालने यावत् घोसने जिम भूतानेन्द्रने एम यावत् महाघोसना लोकपालने एह नवनपतिना कहिया ॥ काल नाम पिशाचनुं इंद्र पिशाचनुं राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे कमला १ । कमलप्रन्ना २ उत्पला ३ । सुदर्शना ४ ॥ एम महाकालनेपणि ॥ सुरूपनाम भूतेन्द्र भूतना राजाने च्यार अग्रमहिषीकही ते कहेछे रूपवती १ । बहुरूपा २ । सुरूपा ३ । सुभगा ४ एम प्रतिरूप दक्षिण दिशिना इंद्रने पणि ॥ पूर्णन्नद्र नामा यक्षनोइंद्र यक्षनु राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । पूर्णा १ । बहुपुत्रिका २ । उत्तमा ३ । तारगा ४ ॥ एम माणिन्नद्रनेपणि ॥ न्नीमनाम राक्षसनुं इंद्र राक्षसनुं राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । पद्मा १ । वसुमती २ । कनका ३ । रत्नप्रन्ना ४ ॥ एम महान्नीमने पणि ॥ ४ किनर नामा किन्नरनु इंद्र तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । वडिंसा १ । केतुमती २ । रतिसेना ३ । रतिप्रभा ४ ॥ एम किंपुरिसने पणि

किन्नरिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीउ पण्णत्ताउ तंजहा वडिंसा केउमई रइसेणा रइप्पभा । एवं किंपुरिसस्स वि । सुपुरिसस्सणं किंपुरिसिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीउ प० तं० रोहिणी णवमिया हिरी पुप्फवई । एवं महापुरिसस्सवि । अइकायस्सणं महोरगिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीउ प० तं० भुयगा भुयगवई महाकच्छा फुडा । एवं महाकायस्सवि । गीयरइस्सणं गंधव्विंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीउ प० तंजहा सुघोसा विमला सुस्सरा सरस्सई । एवं गीयजसस्सवि । चदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीउ पण्णत्ताउ तंजहा चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा । एवं सूरस्सवि णवरं सूरप्पभा दोसिणा

जाणवी ॥ सुपुरिसनामा किंपुरुषनुं इंद्र तेहने च्यार अग्रमहिषीकही ते कहेछे । रोहिणी १ । नवमिका २ । ह्री ३ । पुष्पवती ४ ॥ एम महापुरुष इंद्रने पणि जाणवी ॥ ४ ॥ अतिकाय नामा महोरगनुं इंद्र तेहने च्यार अग्रमहिषीकही ते कहेछे । भुजगा १ । भुजगवती २ । महाकच्छा ३ । स्फुटा ४ ॥ एम महाकायने पणि ४ । अग्रमहिषी जाणवी ॥ गीतरतिनामा गंधर्वेंद्र गंधर्वनुं राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । सुघोषा १ विमला २ सुस्वरा ३ । सरस्वती ४ ॥ एम गीतयशने पणि च्यार अग्रमहिषी जाणवी । एह व्यतरेंद्र कह्या ॥ चंद्रमा ज्योतिषेन्द्र ज्योतिषीना राजाने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । चदप्रभा १ ज्योत्स्नाभा २ । अर्चिमाली ३ । प्रभंकरा ४ ॥ एम सूर्यनेपणि एतलो विशेष सूरप्रभा १ । ज्योत्स्नाभा २ । अर्चिमाली ३ । प्रभंकरा ४ ॥ इगाल नामा मंगल मोटा ग्रहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । विजया १ । वैजयंती २ । जयंती ३ ।

मन्तरं सूत्रत्रयेणाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ गवां रसो गोरसो व्युत्पत्तिरेवेयं गोरसशब्दस्य प्रवृत्तिस्तु महिष्यादीनामपि दुग्धादिरूपेरसे विकृतय शरीरमनसो प्रायोजिकारहेतो विंकारहेतुत्वादिति शेष प्रकटं नवर सर्प्पिर्घृत नवनीत म्रक्षणमिति स्नेहरूपा विकृतयः स्नेहविकृतयः वसा अस्थिमध्यरसः महाविक्र

न्ना अच्चिमाली पन्नंकरा । इंगालस्सणं महग्गहस्स चत्तारि अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ तंजहा विजया वेजयं ती जयती अपराजिया । एव सब्बेसि महग्गहाणं जाव भावकेउस्स । सक्कस्सण देविंदस्स देवरन्नो सोम स्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ तंजहा रोहिणी मयणा चित्ता सामा । एवं जाव वेसमणस्स ईसाणस्सण देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ तंजहा पुढवी राई रय णी विज्जू । एवं जाव वरुणस्स । चत्तारि गोरसविगईउ प० तजहा खीरं दहि सप्पि णवणीअं । चत्ता

अपराजिता ४ एम सघला ८८ महाग्रहने च्यार च्यार अग्रमहिषी जाणवी जिहां लगे भावकेतु नामाग्रह आवे ॥ शक्रनामा प्रथम देवलोकनुं इंद्र देवताना राजनो सोमनामा मोटो राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । रोहिणी १ मदना २ चित्रा ३ । श्यामा ४ ॥ एम यावत् वैश्रम णने ॥ ईशान नामे देवेन्द्र देवताना राजानुं सोमनामा मोटो राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । पृथिवी १ । रात्रि २ । रजनी ३ । विद्युत् ४ ॥ एम यावत् वरुणने ॥ एह सचेतननु विशेष कह्यो हिवे अचेतननुं स्नेह भाव कहेछे । च्यार गोरसनी विगय कही ते कहेछे । दूध १ । दही २ । घृत ३ । नवनीतमाखण ४ ॥ च्यार स्नेहनी विगयकही ते कहेछे । तेल १ । घी २ । वसाचरबीहाडनी उकालीकरेते ३ । मांखण ४ । च्यार

तयो महारसत्वेन महाविकारकारित्वा मह्त' सत्वोपघातस्य कारणत्वाच्चेति इहविकृतिप्रस्तावात् विकृतयो वृद्धगाथाभिः प्ररूप्यते खीरं ५ दहि ४ णव गोत्रं ४ घय ४ तहातेल्लमेव ४ गुड २ मज्जं २ । महु ३ मसं ३ चेवतहा ओगाहिमगचदसमाओ ॥ १ ॥ गोमहिसुट्टिपसूण एलगखीराणिपचचत्तारि दहिमा इयाइजम्हा उट्टीणताणिणोहुति ॥ २ ॥ चत्तारिहोंतितेल्ला तिलअयसिकुसुंभसरिसवाणच विगईओसेसाई डोलाईणनविगईओ ॥ ३ ॥ दवगुलपिंडगुलादो मज्जगुणकट्ठपिट्ठनिप्फन्नं मच्छियपोत्तियभामर भेयचतिहामहुंहोई ॥ ४ ॥ जलथलखहयरमस चम्मवससोणियतिहेयपि । आइल्लतिन्निचलचल ओगाहिमगं चविगईओ ॥ ५ ॥ [आदिमानित्रीणिचलचलेत्येवपक्वानिविकृतिरित्यर्थ] सेसानहोंतिविगई अजोगवाहीणतेउकप्पति परिभुंजतिनपाय जनत्थियओनणज्ज ति ॥ ६ ॥ एगेणचेवतवो पूरिज्जइपूअएणजोताओ वीओपुणविसकप्पइ निव्विगईयलेवडोनवरं ॥ ७ ॥ इत्यादि अचेतनान्तराधिकारादेव गृहविशेषान्तर दृ ष्टांततया भिधित्सु पुरुषस्त्रियोस्वा न्तरंदार्ष्टान्तिकतया अभिधातुकामः सूत्रचतुष्टयमाह ॥ चत्तारिकूडेत्यादि ॥ कूटानि शिखराणि स्तूपिका स्तद त्यगा

रि सिणेहविगईओ पन्नत्ताओ तंजहा तेल्लं घयं वसा णवणीयं । चत्तारि महाविगईओ पन्नत्ताओ तंजहा मडु मसं मज्जं णवणीयं । चत्तारि कूडागारा पन्नत्ता तंजहा गुत्तेणामेगेगुत्ते गुत्तेणामेगेअगुत्ते अगुत्तेणामेगेगुत्ते

महाविगयकही महारस मांटे मोटा विकारना करवाथी इंद्रीने ते कहेले । मधु १ । मांस २ । मदिरा ३ । मांखण ४ । अचेतनना अधिकार माटेज गृह विशेषांतर दृष्टांते पुरुष स्त्री आश्रित कहेले । च्यार कूटाकारे गृह कह्या ते कहेले । एक गुप्त घर जोहिरु अने गुप्त वारणुं । एक गुप्तघर अने अगुप्तद्वार पूर्वेगुप्त पछे अगुप्त २ । एक अगुप्तघर वारणु गुप्तढाकील ३ । एक अगुप्त घर वारणु पणि अगुप्त प्राकारकोट ४ ॥ एहनीपरें

राणि गेहानि अथवा कूटं सत्वबंधनस्थानं तद्वदगाराणि कूटागाराणि तत्रगुप्तं प्राकारादिवृतं भूमिगृहादिवा पुनर्गुप्तं स्थगितद्वारतया पूर्वकालापरकाला पेक्षयाचेति एवमन्येपि त्रयो भङ्गा बोद्धव्याः पुरुषस्तु गुप्तो नेपथ्यादिनातर्हितत्वेन पुनर्गुप्तो गुप्तेन्द्रियत्वेन अथवा गुप्तः पूर्वं पुनर्गुप्तो ऽधुनापीति विपर्यय ऊह्यः तथा कूटस्येव आकारोयस्याः शालायाः गृहविशेषस्य सा तथा अयच स्त्रीलिङ्गदृष्टान्तः स्त्रीलक्षणदार्ष्टान्तिकार्थसाधर्म्यवशा त्तत्र गुप्ता परिवारा वृता गृहान्तर्गता वस्त्राच्छादिताङ्गा गूढस्वभावावा गुप्तेन्द्रियातु निगृहीता नौचित्यप्रवृत्तेन्द्रिया एवं शेषाभङ्गा ऊह्याः अनन्तरं गुप्तेंद्रियत्व मुक्त मिन्द्रिया णिचा वगाहेनाश्रयाणो त्यवगाहनानिरूपणसूत्र अवगाहन्ते आसते यस्यां आश्रयंतिवा यां जोवाः सा वगाहना शरीर द्रव्यतोवगाहना द्रव्यावगाहना एव

अगुत्तेणामेगेअगुत्ते । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गुत्तेणामेगेगुत्ते ४ । चत्तारि कूडागारसालाउ प० तं० गुत्ताणामेगागुत्तदुवारा गुत्ताणामेगाअगुत्तदुवारा अगुत्ताणामेगागुत्तदुवारा अगुत्ताणामेगाअगुत्त दुवारा । एवामेव चत्तारि त्थीउ प० तं० गुत्ताणामेगागुत्तिंदिया गुत्ताणामेगाअगुत्तिंदिया ४ । चउव्विहा

च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे । एक पुरुष वस्त्रादिकें गुप्त ढाक्योछे अतरंग हिते पणि गुप्तछे सहितछे १ । एम च्यार भांगा जाणिवा च्यार कूटाकारे शाला गृह विशेषकही तेकहेछे । गुप्तढाकी शाला बारणुं पणि गुप्तछे १ । एक शालागुप्तछे बारणुं अगुप्तछे २ । एक शाला अगु प्तछे पणि बारणुं गुप्तछे ३ । एक शाला पणि अगुप्तछे बारणु पणि अगुप्तछे ४ । एणे प्रकारे च्यार स्त्री कही ते कहेछे । एक स्त्रीगुप्तछे । गृह मांज रहीछे अथवा वस्त्रादिके ढाकीछे इंद्रियगुप्तछे सुशीलाछे १ । एक स्त्रीगुप्तछे वस्त्रादिके ढाकीछे पणि इंद्रिय गुप्तनथी २ । एम च्यार भांगा

सर्वत्र तत्र द्रव्यतो ऽनन्तद्रव्या क्षेत्रतो ऽसंख्येयप्रदेशावगाढा कालतो असंख्येयसमयस्थितिका भावतो वर्णाद्यनन्तगुणेति अथवा वगाहना विवक्षितद्रव्यस्या धारभूता आकाशप्रदेशा स्तत्र द्रव्याणा मवगाहना द्रव्यावगाहना क्षेत्रमेवावगाहना क्षेत्रावगाहना कालस्यावगाहना समयक्षेत्रलक्षणा कालावगाहना भाववताद्रव्याणा मवगाहना भावावगाहना भावप्राधान्यादिति आश्रयणमात्रंवा अवगाहना तत्र द्रव्यस्य पर्याये रवगाहना अयणं द्रव्यावगाहना एव क्षेत्रस्य कालस्य भावाना द्रव्येणेति अन्यथाचोपयुज्यव्याख्येयमिति अवगाहनायाश्च प्ररूपणा प्रज्ञप्तिष्विति तच्चतुःस्थानकसूत्र तत्र प्रज्ञाप्यते प्रकर्षेण वोध्यन्ते अर्था यासु ताः प्रज्ञप्तयः अगा न्याचारादीनि तेभ्यो वाह्या अगवाह्या यथार्थाभिधानाश्चैताः कालिकश्रुतरूपा स्तत्र सूर्यप्रज्ञप्तिजम्बूद्वीपप्रज्ञप्ती पंचमषष्ठाङ्गयो रुपाङ्गभूतद्वतरेतु प्रकीर्णकरूपेद्रति व्याख्याप्रज्ञप्ति रस्ति पंचमी केवलं साङ्गप्रविष्टे त्येता श्चतस्र उक्ताः ॥ इतिचतुःस्थानकस्यप्रथमउद्देशकः समाप्तः ॥ १

उगाहणा पसत्ता तंजहा दब्बोगाहणा खेत्तोगाहणा कालोगाहणा भावोगाहणा । चत्तारिपसत्तीउ अंगबाहिरियाउ पसत्ताउ तंजहा चंदपसत्ती सूरपसत्ती जंबूद्दीवपसत्ती द्दीवसागरपसत्ती ॥ चउठाणस्सपढमो

जाणवा ४ । च्यार प्रकारनी अवगाहना कही ते कहेछे । द्रव्यावगाहना द्रव्यथी अनंत द्रव्य शरीरछे १ । क्षेत्रावगाहना असंख्याता प्रदेश अवगाहियाछे क्षेत्रना २ कालावगाहना असंख्यात समय स्थितिनी कायाछे ३ । भावावगाहना भावथी वर्णादि अनंत गुण ४ ॥ एह अवगाहनानी प्ररूपणा प्रज्ञप्ति मांकही ते च्यार प्रज्ञप्ति कही अंग बाहिर कालिक श्रुतरूप ते कहेछे । चंद्र प्रज्ञप्ति तेहमां चंद्रमानी वक्तव्यता १ । सूर्य प्रज्ञप्ति सूर्याधिकार कह्यो २ । जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिमा जंबूद्वीपनुं अधिकारछे ३ । द्वीप सागर प्रज्ञप्तिमां द्वीप अने समुद्रनुं अधिकारछे ४ ॥ एह चौथा

व्याख्यात श्चतुःस्थानकस्य प्रथमोद्देशको ऽधुना द्वितीय आरभ्यते ॥ अस्यचायं पूर्वेण सहाभिसंबंधः अनन्तरोद्देशके जीवादिद्रव्यपर्यायाणां चतुःस्थानक मुक्ता मिहापि तेषामेव तदेवोच्यत इत्येवं संबंधस्या स्यो द्देशकस्ये दमादिसूत्रचतुष्टयं ॥ चत्तारिपडिसलीणेत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहाय मभिसबधो ऽनंतरसूत्रे प्रज्ञप्तय उक्ता स्ताश्च प्रतिसलीनैरेव बुद्धान्तइति प्रतिसलीना: सेतरा अनेना भिधीयत इत्येव सम्बद्ध मिद सुगम नवर क्रोधादिक वस्तु वस्तु प्रति सम्यग्लीना निरोधवत: प्रतिसलीना स्तत्रक्रोधप्रति उभयनिरोधेनो दयप्राप्तविफलोकरणेन प्रतिसलीन. क्रोधप्रतिसलीन उक्तंच उदयस्सेवनिरोहो उदयपत्ताणवाफलीकरण जएत्थकसायाण कसायसलीणयाएसत्ति ॥१॥ कुसलमन उदीरणेना कुशलमनो निरोधेनच मन: प्रतिसलीन यस्य स मनसावा प्रतिसलीनो मन:प्रतिसलीन एव वाक्कायेंद्रियेष्वपि नवर शब्दादिषु मनोज्ञामनोज्ञेषु रागद्वेषपरिहारी इंद्रियप्रतिसलीनइति अत्रगाथा अपसत्थाणनिरोहो जोगाणमुदीरणचकुसलाणं कज्जमिविहीगमण जोगेसलीणयाभणिया ॥ १ ॥ सद्देसुयभद्दयग वएसुसोयविसयमुवगएसु । तुट्ठेणचरुट्ठेणव समणेनसयानहोयव्वं ॥ २ ॥ एव शेषेन्द्रि

उद्देसत्त सम्मत्तो ॥ १ ॥ चत्तारि पडिसंलीणा प० तं० कोहपडिसंलीणे माणपडिसंलीणे मायापडिसंलीणे लोभपडिसंलीणे । चत्तारि अपडिसंलीणा प० तं० कोहअपडिसंलीणे जाव लोभअपडिसं

ठाणानु पहलो उदेशो पूरो थयो ॥ १ ॥ च्यार प्रतिसलीण क्रोधादिकना रुंधनार कहिया तेकहेछे । क्रोधप्रतिसंलीण ऊपनां क्रोधने निष्फल करे १ मानप्रतिसंलीण ऊपना मानने रोके २ मायाप्रतिसलीण जे माया नकरे ३ लोभप्रतिसलीण उदयपाम्या लोभने रोके लोभश्चेदगुणेनकि मितिवचनात् ४ ॥ च्यार अपडिसंलीण कह्या तेकहेछे । क्रोधअपडिसलीण जे क्रोधने वधारे रुंधेनथी १ यावत् एमहीज लोभअपडिसलीण लो

येष्वपि वक्तव्यादिति एवं मनःप्रभृतिभि रसंलीनोभवति विपर्ययादिति असंलीनमेव प्रकारान्तरेण सप्तदशभि श्चतुर्भङ्गीरूपै र्दीनसूत्रै राह दीनो दैन्यवान् क्षी णोर्जितवृत्तिः पूर्वं पश्चादपि दीनएव अथवा दीनो बहिर्वृत्त्या पुन र्दीनोंतर्वृत्त्येत्यादि चतुर्भङ्गी १ तथा दीनो बहिर्वृत्त्या म्लानवदनत्वादिगुणयुक्तशरीरेणेत्य

लीणे । चत्तारिपडिसंलीणा पन्नत्ता तंजहा मणपडिसंलीणे वइपडिसलीणे कायपडिसंलीणे इंदियपडिसं लीणे । चत्तारि अपडिसंलीणा पन्नत्ता तजहा मणअपडिसंलीणे जाव इंदियअपडिसंलीणे । चत्तारि पु रिसजाया पन्नत्ता तंजहा दीणेणामेगेदीणे दीणेणामेगेअदीणे अदीणेणामेगेदीणे अदीणेणामेगेअदीणे। ४ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा दीणेणामेगेदीणपरिणए दीणेणामेगेअदीणपरिणए अदीणेणामेगेदीण

जने उपशमावे नथी निवारे नथी घणुंकरें ४ ॥ वली च्यार पडिसंलीण कह्या तेकहेछे । मनपडिसंलीण रूडे मनेकरी मांठा मनने रूंधे १ वचनपडि संलीण जे सत्य वचन बोले असत्यवचन नबोले २ कायपडिसंलीण जे काया मांठे पापयोगे प्रवर्त्तती रूधे धर्मक्रियामां प्रवर्त्तावे ३ इंद्रियपडिसंली ण जे भला शब्दादि विषय सांभली रागद्वेष नआंणे ४ ॥ च्यार अपडिसंलीण कह्या तेकहेछे मनअपडिसंलीण मनने पापव्यापारथी नरोके १ एम यावत् इंद्रियअपडिसंलीण जे शब्दादि सांभली रागद्वेष करे ४ ॥ पुरुषाधिकार मांटेज कहेछे । च्यार प्रकारें पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष प्रथम दीन क्षीण आजीविका वृत्तिछे अने पछे पणि दीनछे १ एक पुरुष पहली दीन क्षीण आजीविक कालवयमां दरिद्री पछे अदीन घणी जीविकानो ध णी धनवंत थयो २ एक पहली अदीन धनवंत होय पछे दीन निर्धन थयो ३ एक पुरुष पहली पणि अदीन धनवंत पछे पणि अदीन धनवंत अंत्य

र्थः एवं प्रज्ञासूत्र यावदादिपद व्याख्येय दीनपरिणतः अदीनःसन् दीनतया परिणतो तद्वत्ये त्यादि चतुर्भङ्गी २ तथा दीनरूपो मलिनजीर्णवस्त्रादिनेपथ्या पेक्षया ३ तथादीनमनाः स्वभावतएवा नुन्नतचेताः ४ दीनसङ्कल्प उन्नतचित्तस्वाभाव्येपि कथचिद्दीनविमर्शः ५ तथादीनप्रज्ञः दीनसूक्ष्मार्थालोचन. ६ तथा दीन श्चितादिभिरेव मुत्तरत्रापि आदिपद तथा दीनदृष्टि विच्छायचक्षु. ७ तथा दीनशीलसमाचारो दीनधर्मानुष्ठानः ८ तथा दीनव्यवहारो दीनान्योन्य

परिणए अदीणेणामेगेअदीणपरिणए ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा दीणेणामेगेदीणरूवे ४ । एव दीणमणे दीणसंकप्पे दीणपसे दीणदिठी दीणसीलायारे दीणववहारे । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा दीणेणामेगेदीणपरक्कमे दीणेणामेगेअदीणपरक्कमे । एवं सव्वेसिं चउभ्भगो भाणियव्वो । चत्तारि पुरि

वयताई ४ ॥ वली च्यार प्रकारे पुरुष कह्या तेकहेछे । एक बाह्यवृत्तिये शरीरें दीन अने अतरंगवृत्तिये दीनपरिणामथी राक कायर १ एक शरीरे दीनछे पणि अंतरगपरिणामथी अदीनछे २ एक शरीरथी लष्टपुष्ट अदीन पणि दीनपणे प्रवर्त्ते अतरगथी ३ एक शरीरथी अदीन पुष्ट अने परिणामथी पणि अदीनपरिणत सूरवीर ४ ॥ वली च्यार भेदना पुरुप कह्या तेकहेछे एक पुरुष दरिद्री अने दीनरूपछे मलिन जीर्णवस्त्रनी अपेक्षाथी वर्णथी पणि एह चौभगी जाणवी ४ ॥ एम एक दीनछे अने दीनमनछे । एम उन्नतमनने साथे एचौभंगी जाणवी । एम एक दीनछे एक दीनसकल्पछे सकल्प ते विचार एचौभंगी ४ ॥ एक दीन अने प्रज्ञाहीन सूक्ष्मलोचन एह चौभगी जाणवी ४ ॥ एक दीन अने एक दीनदृष्टि हीनतेजचक्षु एचौभंगी ४ ॥ एक दीन अने दीनशीलाचार हीनाचार एह चौभगी ४ ॥ एक दीन अने दीनव्यवहार दानादिक्रियाहीन एह चौभंगी ४ ॥ वली च्यार भेदे पुरु

दानप्रतिदानादिक्रिय: हीनविवादीवा ८ तथा दीनपराक्रमो हीनपुरुषाकार इति १८ तथा दीनस्येव वृत्ति र्वर्त्तन जीविका यस्यस दीनवृत्ति: ११ तथा दीनं दैन्यवंत पुरुषदैन्यवद्वा यथाभवति तथायाचत इत्येवशीलो दीनयाची दीनंवा यातीति दीनयायी दीनावा हीना जाति रस्येति दीनजाति: १२ तथा दीनव द्दीनवा भाषते दीनभाषी १३ दीनव दवभासते प्रतिभाति अपभाषतेवा याचत इत्येव शीलो दीनावभासी दीनापभाषीवा १४ तथा दीन नायक से वत इति दीनसेवी १५ तथा दीनस्येव पर्यायो ऽवस्था प्रव्रज्यादिलक्षणो यस्यस दीनपर्याय: १६ ॥ दीनपरिवालेत्ति ॥ दीन' परिवारो यस्यस तथा १७ स

सजाया पस्सत्ता तंजहा दीणेणामेगेदीणवित्ती ४ । एव दीणजाई दीणभासी दीणोभासी । चत्तारि पुरिस जाया पस्सत्ता तजहा दीणेणामेगेदीणसेवी ४ । एवं दीणेणामेगेदीणपरियाए ४ । एवं दीणेणामेगेदीणप

ष कह्या तेकहेळे एक दीनपुरुषळे अने दीनपराक्रम हीनपुरुषात्कार बलहीण एह चौभंगी जाणवी ४ ॥ एक दीन दयामणो अने दीनवृत्तिळे दीनस रिखी वृत्ति आजीविका ळे एह चौभंगी ४ ॥ एक दीनळे अने दीनजातिळे हीनजातिनुंळे एचौभंगी ४ ॥ एक दीन अने दीनभासी दीनवचन बोलन हार एहनी चौभंगी ४ ॥ एक दीन अने दीनोपभासी दीनवदनयको याचना करे एह चौभंगी ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेळे एक दीनळे अने दीनसेवी दीनदरिद्री एहवा नायकने सेवे ए ४ भगी ए सघले ४ भांगाकरीये ॥ इम एकदीनळे अनेदीनपर्यायळै दीक्षानो पर्याय दीनक्रिया ल क्षण प्रव्रज्याळे इहां पणि ४ भंगा ॥ इम एकदीनळे अने परिवार पणि दीनळे । जेहवा कर्मकीधा तेहवा थया एसर्व ४ भागा । एसतरे १७ बोले चो भगी जाणवी एकर्मनी विचित्राई ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेळे ॥ एक पुरुष आर्यळे क्षेत्रथी आर्यळे । पापकर्मनें अणकरवे ४ चोभंगी

व्यथचउभंगोत्ति ॥ सर्वसूत्रेषु चत्वारो भङ्गाः द्रष्टव्याइति पुरुषजाताधिकारवत्येवेय मष्टादशसूत्री गतार्था नवरं आर्यानवधा यदाह खित्तेजाईकुलक म्मसि प्पभासाएनाणचरणेय दंसणायरियनवहा मेच्छासगजवणखसमाइत्ति ॥ १ ॥ तत्र आर्यः क्षेत्रतः पुनरार्यः पापकर्मबहिर्भूतत्वेना पाप इत्यर्थः एवं सप्तदश सूत्राणि नेयानि तथा आर्यभावः क्षायिकादिज्ञानादियुक्तः अनार्यभावः क्रोधादिमानिति पुरुषजातप्रकरणमेव दृष्टांतदार्ष्टान्तिकार्थोपेत माविकथासूत्रा

रिवाले ४ । सब्बत्थ चउब्भंगो । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा अज्जेणामेगेअज्जे ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अज्जेणामेगेअज्जपरिणए अज्जेणामेगेअणज्जपरिणए ४ । एव अज्जरूवे ४ अज्जमणे ४ अज्ज सकप्पे ४ अज्जपन्ने ४ अज्जदिठी ४ अज्जसीलायारे ४ अज्जववहारे ४ अज्जपरक्कमे ४ अज्जवित्ती ४ । अज्जजाई १२ अज्जभासी १३ अज्जओभासी १४ अज्जसेवी १५ एवं अज्जपरियाए १६ अज्जपरिवाले १७

नवभेदे आर्यछे । जाति आर्य १ क्षेत्रथीआर्य २ कुलआर्य ३ कर्मआर्य ४ शिल्पआर्य ५ भाषाआर्य ६ ज्ञानआर्य ७ दर्शनआर्य ८ चारित्रआर्य ९ एनवप्रकारे आर्य उत्तमकहियें । असे आर्यते उत्तमपरिणत स्वभावेंछे चोभंगी ॥ च्यार प्रकार पुरुषकह्या तेकहेछे ॥ एक आर्यक्षेत्रमा उपनाछे । इम आर्यक्षेत्रथी आर्यरूप वस्त्रादिवेष उत्तमछे । इम आर्य भलोमन इहा चोभंगी ॥ इम आर्यसंकल्पविचार एचोभंगी ॥ इम आर्यप्रज्ञनी चोभंगी ॥ एम आर्यदृष्टिनी चोभंगी ४ ॥ आर्यशीलाचारनी चोभंगी ४ ॥ इम आर्यव्यवहारनी ४ भंगी ॥ इम आर्यपराक्रमनी ४ भंगी ॥ इम आर्यवृत्तिनी ४ भंगी ॥ इम आर्य जातिनी चोभंगी ॥ इम आर्यभाषानी चोभंगी ॥ इम आर्यप्रभाषनी ४ भंगी ॥ इम आर्यसेवानीचोभंगी ॥ इम आर्यपर्यायदीक्षानी चोभंगी ॥ इम

दभिधीयते पाठसिद्ध चैत नवर ऋषभा वलीवर्द्दा जाति गुणवन्माटकत्व कुलं गुणवत्पिटकत्व बल भारवहनादि सामर्थ्यं रूपं शरीरसौंदर्य्य मिति पुरुषास्तु स्वय भावयितव्या अनन्तरदृष्टांतसूत्राणितु सपुरुषदार्ष्टान्तिकानि जात्यादीनि चत्वारि पदानि भुवि विन्यस्य यथा द्विकसयोगाना ॥ जाइसपन्नेनोकुलसं पन्नेइत्यादिना ॥ स्थानभगक्रमेण षडेव चतुर्भंगिका' कृत्वा समवसेयानि हस्तिसूत्रे भद्रादयो हस्तिविशेषा वच्यमाणलक्षणा वनादिविशेषिताश्च यदाह भ

एवं सत्तरसआलावगा जहा दीणेण भणिया तहा अज्जेणवि भाणियव्वा । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० अज्जेणामेगेअज्जभावे अज्जेणामेगेअणज्जभावे अणज्जेणामेगेअज्जभावे अणज्जेणामेगेअणज्जभावे ४ चत्तारि उसभा प० तं० जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने वलसंपन्ने रूवसंपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने वलसंपन्ने रूवसंपन्ने । चत्तारि उसभा प० तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगे नोकुलसंपन्ने

आर्यपरिवारनी चोभंगी ॥ इम एसतरे आलावा जिमदीनसाथे कह्या तिम आर्यसाथे पणि कहवा ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुषकह्या तेकहेछे एक क्षेत्रादिकथी आर्यछे अनेआर्य भावछे ज्ञानादियुक्त १ एक पुरुष आर्यछे अने अनार्यभावछे क्रोधादियुक्तछे २ एक क्षेत्रादिकथी अनार्यछे अने आर्यभावछे उपशमवतछे ३ एक क्षेत्रथी अनार्यछे अनार्यभावछे क्रोधादिसहित भावेछे ४ ॥ पुरुषनो दृष्टात देखाडवाने कहेछे ॥ च्यार प्रकारना वृषभकह्या तेकहेछे एक वृषभजाति सपूर्ण गुणवंत माता जेहनी तेजातिसपन्न १ गुणवत पिता जेहनु ते कुलसपन्न २ । वलसंपन्न ते भार वाहवा समर्थ ३ । रूपसंपन्न शरीरे सुदररूप ४ ॥ एहनीपरे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे । एक पुरुष जाति संपन्न गुणवती सुशीला मातानुं पुत्र

कुलसंपन्नेणाममेगे णोजाइसंपन्ने एगेकुलसंपन्नेवि जाइसंपन्नेवि एगेनोजाइसंपन्ने नोकुलसंपन्ने ४ । एवामे
व चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा जाइसंपन्नेणाममेगेणोकुलसंपन्ने ० ४ । चत्तारि उसन्ना पन्नत्ता तंजहा
जाइसपन्नेनाममेगेनोवलसपन्ने ० ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा जाइसपन्नेनाममेगे
नोवलसपन्ने ० । चत्तारि उसन्ना पन्नत्ता तजहा जाइसंपन्नेनाममेगेनोरूवसपन्ने ० । एवामेव चत्तारि पु
रिसजाया पन्नत्ता तजहा जाइसंपन्नेणाममेगे णोरूवसपन्ने ० । चत्तारि उसन्ना पन्नत्ता तंजहा कुलसंपन्ने

एम यावत् एक रूपसपन्नछे एम ४ । भागा जाणिवा ४ ॥ च्यार प्रकारना वृषभ कह्या तेकहेछे । एक वृषभ जातिसपन्नछे पणि कुलसंपन्न नथी
पिता उत्तम नथी । एक कुल सपन्नछे पणि जातिसपन्न नथी पिता उत्तम मातानीच २ । एक जाति सपन्न माता उत्तम अने कुलसपन्नछे पिता
पणि उत्तमछे ३ । एक जातिसपन्न नथी अने कुल सपन्ननथी जातिकुलथी हीन ४ ॥ एणे प्रकारे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे । एक पुरुष
जातिसपन्न अने कुलसंपन्न एम चौभगी जाणवी ४ ॥ च्यार वृषभ कह्या तेकहेछे । एक वृषभ जातिसपन्नछे पणि वल सपन्ननथी आश्री ४ भागी ४
एम एणे प्रकारे च्यार पुरुष कहिया तेंकहेछे । एक पुरुष जाति सपन्नछे बल सपन्ननथी एम च्यार भांगा ४ ॥ च्यार प्रकारे वृषभ कह्या तेकहेछे
एक वृषभ जाति सपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी । इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुषकह्या तेकहेछे । एक पुरुष जातिसंपन्नछे पणि रूपसंपन्ननथी
एम चौभगी ४ ॥ च्यार वृषभकह्या तेकहेछे । एक वृषभ कुलसपन्नछे । पणि वलसंपन्ननथी एम चौभंगी ४ ॥ एम च्यार प्रकारना पुरुष कह्या

द्रोमन्दोमृगश्चेति विज्ञेयास्त्रिविधागजा: । वनप्रचारसारूप्य सत्वभेदोपलक्षिताइति ॥ १ ॥ तत्र भद्रोहस्ती भद्रएव धीरत्वादिगुणयुक्तत्वात् १ मन्दो मन्दएव धैर्य्यवेगादिगुणेषु मन्दत्वात् २ मृगो मृगइव तनुत्वभीरुत्वादिना सकीर्णः किञ्चिद्भद्रादिगुणसयुक्तत्वात् संकीर्णएवेति ॥ इतिस्थानाङ्गवृत्तिप्रथमखण्डम् ॥ अथ द्वितीयखण्डलिख्यते श्रीस्थानाङ्गस्य ॥ २ ॥ पुरुषो प्येवं भावनीयः उत्तरसूत्राणितु चत्वारि सदार्ष्टान्तिकानि भद्रादिपदानि चत्वारि तदधोधः क्रमेण चत्वार्यैव भद्रमन प्रभृतीनि च विन्यस्य ॥ भद्देणाममेगेभद्दमणेइत्यादिना ॥ क्रमेण समवसेयानि तत्र भद्रो जात्याकाराभ्यां प्रशस्त स्तथा भद्रं मनो यस्य

नाममेगेनोवलसंपन्ने ० । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तंजहा कुलसंपन्नेनाममेगे नोवलसंपन्ने चत्तारि उसन्ना प० तं० कुलसंपन्नेणाममेगेणोरूवसंपन्ने ० । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा कुलसंपन्नेनाममेगेनोरूवसंपन्ने ० । चत्तारिउसन्ना पन्नत्ता तंजहा वलसंपन्नेणाममेगेणोरूवसंपन्ने ० । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा वलसंपन्नेनाममेगेणोरूवसंपन्ने ० ॥ चत्तारि हत्थी पन्नत्ता तंजहा भद्दे मंदे मिए संकिन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा भद्दे मदे मिए संकिन्ने । चत्तारि

भ	मं	मृ	सं
भ	भ	भ	भ
मं	मं	मं	मं
मृ	मृ	मृ	मृ
सं	सं	सं	सं

तेकहेछे । कुलसपन्नछे पणि वलसंपन्ननथी ॥ च्यारे प्रकारे वृषभ कह्या तेकहेछे कुलसंपन्नछे रूपसंपन्ननथी । एम इण दृष्टांते च्यार पुरुष तेकहेछे कुलसपन्नछे रूपसंपन्न नथी एम चौभंगी ४ ॥ च्यार प्रकारना वृषभ कह्या तेकहेछे । वलसंपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी ४ ॥ एम च्यार प्रकारना पुरुष कह्या वलसंपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी एम चौभंगी ४ ॥ च्यार हाथी कह्या तेकहेछे । एक भद्र १ । मंद २ । मृग ३ । संकीर्ण ४ ॥ एम च्यार

अथवा भद्रस्येव मनोयस्यस तथा धीरइत्यर्थ. मद मंदस्येववा मनो यस्यस तथा नात्यन्तधीरः मृगमना भीरुरित्यर्थः संकीर्णमना भद्रादिचित्रलक्षणोपेतमना

हत्थी पन्नत्ता तजहा भद्देणाममेगेभद्दमणे भद्देणाममेगेमंदमणे भद्देणाममेगेमियमणे भद्देणाममेगेसंकिन्न मणे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा भद्देणाममेगेभद्दमणे भद्देणाममेगेमदमणे भद्देणाममेगे मियमणे भद्देणाममेगेसंकिन्नमणे । चत्तारि हत्थी पन्नत्ता तजहा मदेणाममेगेभद्दमणे मदेणाममेगेमंदमणे मंदेणाममेगेमियमणे मदेणाममेगेसंकिन्नमणे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा मंदेणाममेगेभ

प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे । भद्र १ । मंद २ । मृग ३ । संकीर्ण ४ ॥ च्यार प्रकारनो हाथी कह्या तेकहेछे एक जातिआकारे भद्र हाथी अने भद्र मन धैर्यवंत १ । एक भद्रजातिनो हाथी अनें मंदमन मद धैर्यनो धणी २ । एक भद्रजातिनो हाथी पणि मृगमनछे भीरुछे ३ । एक भद्रजातिनुं हाथी संकीर्णमनछे कांईक धैर्यवंत कांईक भीरुछे ४ ॥ इणदृष्टांतेज च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष जातिथी भद्रछे उग्रभोगादिकुलनो अनें भद्रमनछे धैर्यवंत उदारचित्तछे १ । एक पुरुष जातिथी भद्र उत्तमकुलछे अने मदमन मदचित्तछे २ । एक जातिथी भद्रछे पणि मृगमन भीरुस्वभावछे ३ । एक जातिथी भद्रछे पणि सकीर्णमनछे काईक धीर उदारमन काईक भीरु पणिछे ४ ॥ च्यार हाथी कह्या तेकहेछे एक जातिआकारे मद हाथी पणि भद्रमन धैर्यवतछे १ । एक हाथी जातिथी मद अने मदमन धैर्यहीनमनछे २ । एक जातिथीमद अने मृगमन भीरुमन ३ । एक जातिमदछे अने सकीर्णमन काईक धैर्यवतमन ४ ॥ इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष जातिमंद शरीर हीनकुल पणि भद्रम

द्दमणे तंचेव । चत्तारि हत्थी पन्नत्ता तंजहा मिएणाममेगेन्नद्दमणे मिएणाममेगेमंदमणे मिएणाममेगेमियम णे मिएणाममेगेसंकिन्नमणे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा मिएणाममेगेन्नद्दमणे तंचेव । चत्तारि हत्थी पन्नत्ता तंजहा संकिन्नेणाममेगेन्नद्दमणे संकिन्नेणाममेगेमंदमणे संकिन्नेणाममेगेमियमणे संकि न्नेणाममेगेसंकिन्नमणे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा संकिन्नेणाममेगेन्नद्दमणे तंचेव जाव

नळे उदारचित्तळे एम च्यार न्नांगा ४ ॥ च्यार हाथी कह्या तेकहेळे एक जातिमृगळे पणि भद्रमनळे १ । एक जातिमृगळे अनेंमं दमनळे २ । एक हाथी जातिथी मृगळे अने मृगमनळे ३ । एक जातिथी मृग अनें संकीर्णमन काइक धैर्यमनळे ४ ॥ इण दृष्टांते च्यार पुरुष कह्या तेकहेळे एक पुरुष जातिमृगळे बीहकणाळे पणि न्नद्रमन धैर्यवतळे तिमज च्यार न्नांगा कहवा ॥ वली च्यार प्रकारे हाथी कह्या तेकहेळे एक हाथी मृगजाति अनें न्नद्र मन १ । एक जातिमृग अनें मंदमन २ । एक जातिमृग अनें मृगमन ३ । एक जातिमृग अने संकीर्णमन ४ ॥ इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेळे एक पुरुष जातिथी मृग मृगहाथी सरीखो अनें न्नद्रमन तिमज चौन्नंगी जाणवी ४ ॥ च्यार प्रकारना हाथी कह्या तेकहेळे एक हाथी जाति संकीर्ण अने न्नद्रमन १ । एक जातिसंकीर्ण अने मंदमन २ । एक जातिसंकीर्ण अने मृगमन ३ । एक जातिसंकीर्ण अने संकीर्णमन ४ ॥ इण दृष्टांते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेळे एक पुरुष जातिसंकीर्ण अने न्नद्रमन संकीर्णहाथीना शरीर तथा जाति जेहवो १ । तिमज यावत् एक पुरुष जातिसंकीर्ण अने संकीर्णमन २ । काईक धीरउदारमननो धणी ४ ॥ हिवे च्यार हाथीनी जातिना लक्षण कहेळे पुरुषनी जातिना शरीरादिआका

विचित्रचित्तइत्यर्थं पुरुषास्तु वक्ष्यमाणभद्रादिलक्षणानुसारेण प्रशस्ताप्रशस्तस्वरूपा मन्तव्याइति भद्रादिलक्षण मिद ॥ महुगाहा ॥ मधुगुटिकेव क्षौद्रवटि केव पिङ्गले पिङ्गे अक्षिणी लोचने यस्यस तथा अनुपूर्वेण परिपाट्या सुष्टु जात उत्पन्नो य. सोनुपूर्वसुजातः स्वजात्युचितकालक्रमजातोहि बलरूपादि गु णयुक्तो भवति सचासौ दीर्घलाङ्गूलो दीर्घपुच्छश्चेति स तथा अनुपूर्वेणवा स्थूलसूक्ष्मसूक्ष्मतरलक्षणेन सुजात दीर्घलागूल यस्यस तथेति पुरतो ऽग्रभागे उदग्र उन्नत. तथा धीरो ऽक्षोभ स्तथा सर्वाख्यङ्गानि सम्यक्प्रमाणलक्षणोपेतत्वेन आहितानि व्यवस्थितानि यस्यस सर्वाङ्गसमाहितोभद्रोनाम गजविशेषो भवती ति ॥ चलगाहा ॥ चल श्लथं बहुल स्थूल विषम बलियुक्त चर्म यस्य सतथा स्थूलशिराः स्थूलकेन ॥ एणपेएणत्ति ॥ पेचकेन पुच्छमूलेन युक्तः स्थूलन खदतवालो हरिपिंगललोचनः सिंहवत्पिंगाक्षो मन्दो गजविशेषो भवतीति ॥ तणुगाहा ॥ तनुक' कृश स्तनुग्रीवः तनुत्वक् तनुचर्मा तनुकनखदन्तवाल. भीरु भयशील:

सकिस्सेणाममेगेसंकिस्समणे ॥ मधुगुलियपिंगलक्खो अणुपुव्वसुजायदीहलंगूलो । पुरउउदग्गाधीरो सव्वंगस माहिउभद्दो ॥ १ ॥ चलबहलबिसमचम्मो थूलसिरोथूलएणपेएण । थूलणहदंतवालो हरिपिंगललोयणोमं

रे जाणवा । मधुगुलिका ते मधुजेहवी पीली आखळे जेहनी अनुक्रमें भला उपना बलरूपादिगुणवंत दीर्घ लांबू पूछडुं आगे कुंभस्थल उन्नत ऊंचो धीर धैर्यवत अक्षोभ्य । सर्वांगलक्षणोपेत ते भद्रजातिनो हाथो कहिये ॥ १ ॥ लीलरीसहित विषम ऊंचीनीची चामडीळे जेहनी मांथो ऊंचो पिहु लो थूल जाडोळे पूंछडोमूलजेहनु सिंह सरीखा पीलाळे लोचन जेहनां ते मंदजातिनु हाथी कहिये ॥ २ ॥ तनुकृश दुर्बल तनुसूक्ष्म लघुग्रीवा कोट तनु लघु सूखम दांत नख बाल केश तनु सूखम त्वचा चामडी भयशील त्रस्त भयकारणदेखी कान इद्रिय थाभी राखै उद्वेगी रहै पोतै त्रस्त थको

स्वभावत स्त्रस्तो भयकारणवशात् स्त्रश्च' कर्णकरणादिलक्षणोपेतो भीतएव उद्विग्नः कण्टविष्टारादुद्वेगवान् स्वयन्त्रस्तः परानपित्रासयतीति त्रासीच भवे मृ गोनाम गजभेदद्दति ॥ एएसिगाहा भद्दोगाहा ॥ कण्ठ्ये तथा दतेहिन्हणइभद्दो मंदोहत्थेणआहणइहत्थी गत्तावरेहियमिश्री संकिणोसव्व ओहणइत्ति ॥ १ ॥ अनन्तरं सकोर्णः संकीर्णमना इत्यत्र मनःस्वरूप मुक्त मथ वाचः स्वरूपभणनाय विकथा कथा प्रकरणमाह सुगम नवरं विरुद्धा सयमबाधकत्वेन कथा वचनपद्धति विंकथा तत्र स्त्रोणा स्त्रीषुवा कथा स्त्रीकथा इयञ्च कथैत्युक्तापि स्त्रोविषयत्वेन संयमविरुद्धत्वा द्विकथेति भावनीयेति एवं भक्तस्य भोजन स्वदेशस्य जनपदस्य राज्ञो नृपस्येति ब्राह्मणोप्रभृतीना मन्यतमाया याप्रशसा निन्दावासा जात्या जातेर्वा कथेतिजातिकथा यथा धिग्ब्राह्मणोर्धवाभावे याजीवंतिम्टताइव धन्यामन्येजनेशूद्रीः पतिलक्षेप्यनिन्दिताइति ॥ १ ॥ एव मुग्रादिकुलोत्पन्नाना मन्यतमायाः यत्प्रशंसादि साकुलकथा यथा अहोचौ

दो ॥ २ ॥ तणुउतणुतग्गीउ तणुयतउतणुयदंतणहवालो । त्तीरूतत्थुवियग्गो तोसीच्चुत्तएग्मिएणामं ॥ ३ ॥ एएसिंहत्थीणं थोवथोवतुजोच्चुणुहरइहत्थी । रूवेणवसीलेणव सोसंकिम्मोत्तिणायब्बो ॥ ४ ॥ त्तद्दोमज्जइस रए मदोउम्मज्जएवसर्तम्मि । मिउमज्जइहेमते संकिम्मोसब्बकालम्मि ॥ ५ ॥ चत्तारि विकहाउ पसत्ताउ तं०

बीजाने त्रास पमाडे एहवो हाथी ते मृगजातिनो ॥ ३ ॥ ए कहिया जे हाथी त्रण जातिना तेहनुं थोडुंथोडुं लक्षण अनुसरे जेहाथी रूपैकरी तथा शीलस्वभावे करीने अनुशरे तेहाथी सकीर्णजातिनो ॥ ४ ॥ भद्रजातिनुं हाथी होय ते शरत्कालमां मदमां आवे । मंदजातिनुं हाथी वसंतकालमां मदमां आवे । मृगजातिनुं हाथी हेमतकालमां मदमा आवे । संकीर्णजातिनुं हाथी ते सर्व कालमां मदमां आवे छये रितुमां मदमां आवे ॥ ५ ॥

लुब्धपुनीणां साहसजगतोधिकं पत्युर्मृत्योविशत्यग्नौ याप्रेमरहिताप्यपीति ॥ २॥ अन्ध्रीप्रभृतीना मन्यतमायाः रूपस्य यत्प्रशंसादि सारूपकथा यथा च न्द्रवक्त्रासरोजाक्षी सद्गीःपीनघनस्तनी किलाटीनामतःसास्या देवानामपिदुर्लभा इति ॥ १ ॥ तासामेवा न्यतमाया कच्छबंधादिनेपथ्यस्य यत्प्रशंसादि स नैपथ्यकथेति यथा धिङ्नारीरौदीच्या बहुवसनाच्छादितांगलतिकत्वात् यद्यौवनंनयूनां चक्षुर्मोदायभवतिसदेति ॥ १ ॥ स्त्रीकथायाश्च एतेदोषाः अ यपरमोहुदीरण उड्डाहोसुत्तमाइपरिहाणी वंभवयस्सगुत्ती पसंगदोसायगमणाई ॥ १ ॥ उन्निक्रमणादयइत्यर्थः तथा शाकघृतादी न्येतावन्ति तस्य

इत्थिकहा भत्तकहा देसकहा रायकहा । इत्थिकहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा इत्थीणंजाइकहा इत्थीणंकुल कहा इत्थीणंरूवकहा इत्थीणंनेवत्थकहा । भत्तकहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा भत्तस्सआवावकहा भत्तस्सणि

पूर्वे मननु स्वरूप कह्यो हिवे वचननुस्वरूप कहेछे । च्यार विकथा विरुद्ध पापकथा कही तेकहेछे । स्त्रीकथा १ । भक्तकथा २ । भोजन रूडाभुंडा भोजन मलियानी कथा २ । देशकथा देशांतरनी कथा ३ । राजनीकथा ४ ॥ तेहमा स्त्रीनीकथा च्यार प्रकारे कही तेकहेछे स्त्रीनीजातिकथा ब्राह्म णी प्रमुखनी प्रशंसा तथा निंदा करे १ । स्त्रीना कुलनी कथा ए उत्तमकुलनी तथा नीचकुलनी इम कहवु जिम अहोचौलुक्यपुत्रीणां साहसंजगतो धिकं । पत्युर्मृत्यौविशत्यग्नौ याप्रेमरहिताअपि ॥ १ ॥ स्त्रीना रूपनी कथा भलु रूपछे अथवा मांठु रूपछे एह काली एह गोरी जिम चंद्रवक्त्रास रोजाक्षी सद्गी·पीनघनस्तनी । किलाटीनामतःसास्यात् देवानामपिदुर्लभा ॥ २ ॥ स्त्रीना वेशनी कथा ते वस्त्रकथा ४ ॥ भोजननी कथा च्यार प्रकारे तेकहेछे आज भोजनमा शाक घृत सारा हुता तथा माठाहुंता ते भोजननी अवापकथा एमज प्रशंसा निंदा करे १ । भोजननी निर्वापकथा ते प

रसवत्या सुपयुज्यन्त इत्येवंरूपा कथा अवापकथा एतावंत स्तत्र पक्वापक्वान्नभेदा व्यञ्जनभेदावेति निर्वापकथा इति तित्तिरादीना मियतां तत्रोपयोग इत्यारम्भकथा एतावत् द्रविण तत्रोपयुज्यतइति निष्टानकथेति उक्तंच सागययादावावो पक्वापक्कोयहोइनिव्वाओ । आरभतित्तिराई निठ्ठाणंजासयस हस्सति ॥ १ ॥ इहचामी दोषाः आहारमतरेणवि गेहोओजायएसइगाल अजियदियओदरिया वाओअणुणदोसायत्ति ॥ १ ॥ तथा देशे मगधादौ विधि र्विरचना भोजनमणिभूमिकादीना भुज्यतेवा यद्यत्र प्रथमतयेति देशविधि स्तत्कथा देशविधिकथा एव मन्यत्रापि नवर विकल्पः शस्यनिष्पत्तिः वप्रकूपादि देवकुलभवनादिविशेषश्चेति छन्दो गम्यागम्यविभागो यथा लाटदेशे मातुलभगिनी गम्या अन्यत्रागम्येति नेपथ्य स्त्रीपुरुषाणा वेषः स्वाभाविको विभूषाप्रत्ययश्चेति इहदोषाः रागद्दोसुपत्ती सपक्खपरपक्खओयअहिगरण बहुगुणइमोत्तिदेसोसो उगमणचअन्नेसिति ॥ १ ॥ तथा अतियानं नगरादौ

ह्यावकहा न्नत्तरसच्चारन्नकहा न्नत्तरसणिठ्ठाणकहा । देसकहा चउव्विहा पन्नत्ता तजहा देसविहिकहा देसवि ग्रप्पकहा देसच्छंदकहा देसनेवत्यकहा । रायकहा चउहा प० तं० रन्नोञ्जइयाणकहा रन्नोनिज्जाणकहा र

क्वान्न सूखडीप्रमुखना न्नेद बखाणे बाकबखोडवा ७ वानानी सूखडी हती २ । न्नोजनना आरंन्ननीकथा ते राईतीखी मिरचतीखी घणी हती अन्नसां अमकडु हतुं ३ । न्नोजननी निष्ठानकथा ते एतलाद्रव्य एहमां जोइये तो सारीवस्तु नीपजे कपूर कस्तूरी केसर एलची घाती होयतो लाडू सारा था य इत्यादि कहवु ४ ॥ देशकथा च्यार प्रकारे कही तेकहेछे देशनी विधि रचनानी कथा खावो पीवो पहरवो न्नोजनादि एदेशमां रूडाछे १ । दे शनी विकल्प कथा ते निधाननिष्पत्ति वप्र कूप न्नवन आरामादिकनी कथा २ । देशनी छदकथा ते गाथा गूढा दूहा हरिआली छंदना जाण एदेश

प्रवेश स्तत्कथा अतियानकथा यथा सियसिंधुरखंधगओ सियचमरीसेयच्छत्तच्छन्नगो जणनयणकिरणसेओ एसोपविसइपुरेरायत्ति ॥ १॥ एवं सर्वत्र नवरं निर्याणं निर्गम स्तत्कथा यथा वज्जंताउज्जममंदलदिसइ मिलंतसामंत सरिसमुद्दय निधनगरानिगो निगई ॥१॥ बलहस्त्यादिप्रमाण वेगाददितत्कथा यथा हयसेतहयंगज्ज तमयगलंघणघणतरकलकल कमरनिसबिरिलं राज्जसिरिसत्तुसिरभंभो ॥ १ ॥ कोशो भांडागारं कोष्टागारं धान्यागारमिति तत्कथा यथा पुरिसपरंपरपत्ते णभरियविस्सभरेणकोसेणं निज्जियवेसमणेणं तेणसमोनिवोपगोत्ति ॥ १ ॥ दृष्टचेतेदोषाः चारियचोराभिमरे हियमारियसंकाका उक्कामाया भुत्ताभुत्तोहाणी कारेज्जवाआससपओग ॥ १ ॥ भुक्तभोगा अभुक्तभोगा प्राधान्यादित्यर्थः प्याक्षिप्यते मोहात्तत्त्व प्रत्याकृष्यते श्रोता ऽनयै त्याक्षेपणी तथा विक्षिप्यतेसन्मार्गात् कुमार्गे कुमार्गाद्वा सन्मार्गे श्रोता ऽनयेति विक्षेपणी संवेगयति संवेगकरोतीति संवेद्यतेवा संबोध्यते संवेज्यतेवा

रणोबलवाहणकहा रणोकोसकोठागारकहा । चउव्विहा कहा प० तं० अक्खेवणी विक्खेवणी संवेगणी णिव्वे

ना लोकनी इतिकथा ३ । देशना स्त्रीपुरुषना वेषनी कथा पहेरीजाणे नजाणे इत्यादि कथा ४ ॥ राजकथा च्यार प्रकारे कही ते कहेले राजाना अतिया ननी कथा नगरप्रवेशनी वार्त्ता स्वेतहस्तीये वैठो स्वेतचामर छत्रसहित नगरमां आवे १ । राजानी निर्याणकथा ते वाजा वाजते सामंतराजा मिल ते इत्यादिक नगरमां नीकलवानी कथा वार्त्ता २ । राजाना वल हाथी गाजेले घोडा हीसरायाले इत्यादि वखाणवुं ते कथा ३ । राजाना कोश भ ण्डार धन कोठार धानना भरयाले इत्यादि वार्त्ता करवी ४ ॥ वली च्यार प्रकारनी कथा कही तेकहेले आक्षेपणी कथा ते मोहथी आत्माने आकरषी आणिये १ । विक्षेपणी जे आत्माने सन्मार्गथी कुमार्गमां कुमार्गथी सन्मार्गमां आणिये २ । सवेगणी सांभलनारने सवेग वैराग्य आवे ३ । निर्वेगणी

सवेग ग्राह्यते श्रोता ऽनयेति संवेदनो सवेजनीवेति निर्वेद्यते संसारादे निर्विन्ना: क्रियतेनयेति निर्वेदनीति आचारो लोचास्नानादि स्तत्प्रकाश नेन आक्षेपणी आचाराक्षेपणीति एव मन्यत्रापि नवर व्यवहार: कथञ्चिदापन्नदोषव्यपोहाय प्रायश्चित्तलक्षण. प्रज्ञप्ति: संशयापन्नस्य श्रोतु र्मधुरवचनै: प्र ज्ञापनं दृष्टिवाद: श्रोत्रपेक्षया नयानुसारेण सूक्ष्मजीवादिभावकथन मन्येत्वभिदधति अचारादयो ग्रन्था एव परिगृह्यन्ते आचाराद्यभिधानादिति अस्या श्रायरस: विज्जाचरणचतश्रो पुरिसक्कारोयसमिइगुत्तीश्रो उवइस्सइखलुजसो कहाएअक्खेवणीएरसोत्ति ॥ १ स्वसिद्धात कथयति तद्गुणानुद्दीपयतिपूर्वं तत स्त कथयित्वा परसमय कथयति तद्दोषान् दर्षयती त्येका एव परसमयकथनपूर्वक स्वसमय स्थापयित्वा स्वसमयगुणाना स्थापकोभवतीति द्वितीया

गणी अक्खेवणीकहा चउव्विहा प० तं० आयारक्खेवणी ववहारक्खेवणी पन्नत्तिक्खेवणी दिठिवायअक्खेवणी । विक्खेवणीकहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा ससमयंकहेइ ससमयंकहेत्ता परसमयं कहेइ । परसमयं कहे

जेहने सांभलतां संसारथी निर्वेद पामे ४ ॥ आक्षेपणी कथा च्यार प्रकारनी कही तेकहेछे आचारनुं प्रकाशवुं ते आचारनी कथा १ । पापलागो ते टालवाने प्रायश्चित्त लक्षणनी कथा अथवा व्यवहारसूत्र ते व्यवहारक्षेपणी २ । संशयपाम्यो सांभलनार तेहने मीठे वचन कहवुं ते अथवा जंबूद्वीपप न्नत्ती प्रमुख ते प्रज्ञप्तीआक्षेपणी ३ । दृष्टिवादाक्षेपणी ते सूक्ष्म जीवादिभावनी कथा अथवा दृष्टिवादसूत्र तेहनी कथा ४ ॥ निक्षेपणीकथा च्यार प्र कारनी कही तेकहेछे स्वसमय ते सिद्धांत तेहना गुणकही दीपावे स्वसमय कहीने परसमय कहे ते परसासनना दोष देखाडे परसमय कहीने तेहना दोष दिखाडीने स्वसमयनां सिद्धांतनुं थापक होय थापना करे प्रथमसमयमां जे वीतरागना वचनानुसारी तत्ववाद कहे १ । समीचीनतया तत्ववा

॥ सम्मावायमित्यादि ॥ अस्या यमर्थः परसमयेष्वपि घुणाचरन्यायेन योयावान् जिनागमः तत्ववादसदृशतया सम्यगविपरीत स्तत्वानांवादः सम्यग्वाद स्तं कथयति त कथयित्वा तेष्वेव यो जिनप्रणीततत्वविरुद्धत्वा न्मिथ्यावाद स्त दोषदर्शनतः कथयतीति तृतीया परसमयेष्वेव मिथ्यावाद कथयित्वा सम्यग्वा दं स्थापयिता भवतीति चतुर्थी अथवा सम्यग्वादी ऽस्तित्व मिथ्यावादी नास्तित्व तत्रास्तिकवाददृष्टी रुक्त्वा नास्तिकवादिदृष्टी भणतीति तृतीया एतद्वि पर्यया ञ्चतुर्थी इहलोको मनुष्यजन्म तत्स्वरूपकथनेसवेगिनी इहलोकसवेगिनी सर्वमिद मानुषत्व मसार मध्रुव कदलीस्तंभसमान मित्यादिरूपा एव परलोकसवेदनी देवादिभवस्वभावकथनरूपा देवा अपीर्ष्याविषादभयवियोगादिदुखै रभिभूताः किपुन स्तिर्यगादयइति आत्मशरीरसवेगिनी यदेत दस्म दीय शरीर मेत दशुचि अशुचिकारणजात मशुचिद्वारविनिर्गतमिति नप्रतिबन्धस्थानमित्यादिकथनरूपा एव परशरीरसवेगिनी अथवा परशरीर मृतक

त्ता ससमयं ठावित्ता भवइ । सम्मावायं कहेइ सम्मावायं कहेत्ता मिच्छावायं कहेइ । मिच्छावायं कहेत्ता स म्मावाय ठावइत्ता भवइ । संवेगणीकहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा इहलोगसवेगणी परलोगसंवेगणी आय

द कहीने २ । पछे मिथ्यावाद कहे तेह मिथ्यावादना दोषनुं देखाडवुं कहे ३ । प्रथम मिथ्यावाद जे जिनवचन विरुद्ध कही ते मिथ्यावाद जिम अ पुत्रस्यगतिर्नास्ति स्वर्गोनैवचनैवच इत्यादि मिथ्यावाद कही सम्यग्वाद कहे सम्यग्वाद थापे तेह चौथी निक्षेपणी कथा ४ ॥ सवेगणी कथा च्यार प्रकारे कही तेकहेछे इहलोकसंवेगनी ते आसर्व मनुष्यादि असारछे इत्यादि १ । परलोकसंवेदनी ते देवताप्रमुख तेपणि ईर्ष्याविषाद भय वियोगन दुख थी पराभव्याछे २ । आत्मशरीर संवेदनी ते अम्हारू शरीर अशुचि विष्टादिकथी नींपनु अशुचि वारणे नीकल्यु एहथी स्युंप्रतिबध ३ । इमज पर

शरीरमिति इहलोके दुश्चीर्णानि चौर्यादीनि कर्माणि क्रिया इहलोके दुःखमेव कर्म्मद्रुमजन्यत्वात् फल दुःखफलं तस्य विपाको अनुभावो दुःखफलविपाक स्तेनसयुक्तानि दुःखफलविपाकसयुक्तानि भवति चौरादीनामिवे त्येका एव नारकाणा मिवेतिद्वितीया आगर्भात् व्याधिदारिद्र्याभिभूतानामिवेति त्रती या प्राक्कृताशुभकर्मोत्पन्नानां नारकप्रायोग्य वध्नता काकगृद्ध्रादीना मिव चतुर्थीति ॥ इहलोएसुचिन्नेत्यादि ॥ चतुर्भंगी तीर्थंकरदानदाता १ सुसाधु २

सरीरसंवेगणी परसरीरसंवेगणी । णिव्वेगणीकहा चउव्विहा प० तं० इहलोगदुच्चिन्नाकम्माइहलोगदुहफल विवागसजुत्ता भवति । इहलोगदुच्चिन्नाकम्मा परलोगदुहफलविवागसंजुत्ता भवति । परलोगदुच्चिन्नाकम्मा इहलोगदुहफलविवागसंजुत्ता भवति । परलोगदुच्चिन्नाकम्मा परलोगदुहफलविवागसजुत्ता भवंति ॥ इहलो

बीजानुं पणि शरीर इत्यादि कहवुं एह परसंवेदनी ४ ॥ निर्वेगणीकथा च्यार प्रकारे ते कहेछे इहलोक एलोकमां मांठा आचस्याकर्म अथवा कीधा जे चोरीप्रमुख पापकर्म तेहनुं इहाज दुखरूप फलनु विपाक अनुभाव ते सहित होय इहांज भोगवे चोरनीपरे १ । एहलोकमां माठा आचस्या की धा जे पापकर्म तेहना परलोक नरकादिकने विषे दुखरूप फलना विपाक सहित होय पापकरी नरकमां जाय कालकसूरीया कसाईनी परे २ । परलोक पाछिलेभवे कीधा जेकुकर्म तेहना एह लोकनेविषे आधिदारिद्रादि दुखरूप फलविपाक सहित होय इहां दुखी थाय ३ । परलोकने विषे मांठा की धा जे पापकर्म ते परलोकमा दुखरूप फलविपाक सहित होय जिम पूर्वकीधा अशुभकर्मथी इहा काक गीध थाय ते वली नरकगति बाधी नरक मा जाय ४ ॥ एलोकमां रूडा आचस्या पुण्यकर्म कीधा तेहनां इहलोकमां सुखरूप फलविपाक सहित होय ते तीर्थंकरने दानदेणहार साढेवारेको

तीर्थंकर २ देवभवस्थतीर्थंकरादीनामिव भावनीयेति उक्तो वाग्विशेषो ऽधुना पुरुषजातप्रधानतया कायविशेषमाह ॥ चत्तारिपुरिसेत्यादि ॥ कशव्वं न वर कश स्तनुशरीरः पूर्वं पश्चादपि कशएव अथवा कशो भावेन हीनसत्वादित्वा त्पुनः कशः शरीरादिभि रेव दृढोपि विपर्ययादिति पूर्वसूत्रार्थविशेषा

गसुचिण्णाकम्मा इहलोगसुहफलविवागसंजुत्ता भवंति । इहलोगसुचिण्णाकम्मा परलोगसुहफलविवागसंजुत्ता भवंति एवं चउभंगो । तहेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा किसेणाममेगेकिसे किसेणाममेगेदढे दढेणाममेगेकिसे दढेणाममेगेदढे ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा किसेणाममेगेकिससरीरे किसेणाम

डि सुनइयानी वृष्टिथाय १ । इहलोकमां भला आचस्या जेकर्म तेहनां परलोकनेविषे सुखरूप फलविपाक सहित होय साधुनीपरे इहा पांच महा व्रत पाली देवता थाय मोक्ष जाय २ । तिम परलोके कीधा भलाकर्म तेहना फल भोगवे तीर्थंकरनी परे ३ । परलोकेपु ण्यकर्म कीधा तेपरलोके सु खफल भोगवे जिम देवभवमाहि रह्या ते इहा वली आवी तीर्थंकर थाय एचोभंगी ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक शरीरथी कृश दु र्बल अने भावथी पणि दुर्वल हीनसत्वनु धणी १ । एक शरीरथी कृश भावथी दृढसत्वनु धणी २ । एक शरीरथी दृढ भावथी कृश हीनसत्व ३ । एक शरीरथी पणि दृढ भावथी पणि दृढ सत्ववंत ४ । च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक सत्वथी कृश शरीरथी पणि कृश एआलावो विपरीत लीजे पणि एतलो विशेष १ । एक हीनसत्वनो धणी पण शरीरथी दृढ शरीरथी स्थूलछे पणि कायरछे २ । एक दृढसत्वनो धणी पणि शरीरे दुर्व ल ३ । एक सत्वथी दृढ अने शरीरथी दृढ ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक कृशशरीरनां धणीने तपथी ज्ञानावरणी कर्मना क्षयो

श्रितमेव द्वितीयं सूत्रं तत्र कृशोभावत' शेष सुगमं कृशस्यैव चतुर्भंग्या ज्ञानोत्पादमाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ व्यक्ता किन्तु कृशशरीरस्य विचित्रतपसा भावित स्य शुभपरिणामसम्भवेन तदावरणक्षयोपशमादिभावात् ज्ञानच दर्शनञ्च ज्ञानदर्शन ज्ञानेनवा सह दर्शन ज्ञानदर्शनं छाद्मस्थिकं कैवलिकंवा त त्समुत्पद्यते न दृढशरीरस्य तस्यहि उपचितत्वेन बहुमोहतया तथाविधशुभपरिणामाभावेन क्षयोपशमाद्यभावा दित्येकः तथा मन्दसहननस्या ल्पमोहस्य दृढशरीर स्यैव ज्ञानदर्शन मुत्पद्यते स्वस्थशरीरतया मनः स्वास्थ्येन शुभपरिणामभावतः क्षयोपशमादिभावा न्न कृशशरीरस्या स्वास्थ्या दितिद्वितीयः तथा कृशस्य दृढ स्यवा तदुत्पद्यते विशिष्टसहननस्या ल्पमोहस्यो भयथापि शुभपरिणामभावात् कृशत्वदृढत्वेना पेक्षत इतितृतीयः चतुर्थः सुज्ञानः ज्ञानदर्शनयो रुत्पाद उ क्तो ऽधुना तद्व्याघात उच्यते तत्र ॥ चउहीत्यादि ॥ सूत्र स्फुट पर निग्रंथीग्रहणात् स्त्रिया अपि केवल मुत्पद्यत इत्याह अस्मिन्निति प्रत्यक्षइवा नत प्रत्यास

मेगेदढसरीरे दढेणाममेगेकिससरीरे दढेणाममेगेदढसरीरे । चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा किसस्स णाममेगस्स णाणदसणेसमुप्पज्जाइ णोदढसरीरस्स । दढसरीरस्सणाममेगस्स णाणदंसणेसमुप्पज्जाइ णोकिस सरीरस्स । एगस्स किससरीरस्सवि नाणदंसणेसमुप्पज्जाइ दढसरीरस्सवि । एगस्स णोकिससरीरस्स नाणदं

पशमथी ज्ञानदर्शन केवलादि उपजे दृढशरीरनांने नउपजै घणामोहमाटे १ । एक दृढशरीरना धणीने थोडुं मोहले तेहने ज्ञानदर्शन ऊपजे केवला दि अने कृश शरीरना धणीने नऊपजै मोहनी बलवंतले रोगथी दुर्वलले २ । एक कृश शरीरना धणीने थोडुं मोहनीले तपिआने शुभपरिणामथी ज्ञानदर्शन ऊपजै अने शुभपरिणामथी दृढशरीरनांने ऊपजे ३ । एक कृश शरीरनाने अशुभपरिणामथी ज्ञानदर्शन नऊपजै अने दृढशरीरनाने पणि

त्रे समये ॥ अइसेसेत्ति ॥ शेषाणि मत्यादिचक्षुर्दर्शनादीनि अतिक्रांतं सर्वावबोधादिगुणै र्यत्त इतिशेष मतिशयवतः केवलमित्यर्थ. समुत्पत्तुकाममपीति इ हैवार्थो द्रष्टव्य' ज्ञानादे रभिलापाभावा त्कथयितेति शीलार्थिकस्तृन् तेन द्वितीया नविरुद्धा इति विवेकेनेति अशुद्धादित्यागेन ॥ विउस्सग्गेणंति ॥ कायव्यु त्सर्गेण पूर्वरात्रश्च रात्रे' पूर्वोभागो ऽपररात्रश्च रात्रे रपरोभाग स्तावेवकाल' समयो ऽवसरो जागरिकाया' पूर्वरात्रापररात्रकालसमय स्तस्मिन् कुटुम्बजा गरिकाव्यवच्छेदेन धर्मप्रधाना जागरिका निद्राक्षयेण वोधो धर्मजागरिका भावप्रत्युपेक्षेत्यर्थ यथा किंकयकिंवारोस किकरणिज्जतवचनकरेमि पुव्वाव रत्तकाले जागरओ भावपडिलेहत्ति ॥ १ ॥ अहवाकोममकालो किमियस्सउचियअसाराविं सयानियमगामिणो विरसावसाणाभीसणोमच्चू ॥ २ ॥ इत्यादि

सणे समुप्पज्जइ णोदढसरीरस्स ॥ चउहिंठाणेहिं णिग्गथाणवा णिग्गथीणवा अस्सिंसमयंसि अइसेसे ना णदसणे समुप्पज्जिउकामेवि णोसमुप्पज्जेज्जा अभिरकणं अभिरकणं इत्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं कहेत्ता भवइ १ । विवेगेणं विउस्सग्गेण णोसम्ममप्पाण भावेत्ता भवइ २ । पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि णोधम्म

अशुभभावथी ज्ञानदर्शन नऊपजे ४ ॥ च्यार थानके निग्रथने तथा निग्रथणीने आ समयमा अतिशेप मोटुं केवलज्ञान केवलदर्शन ऊपजवानु होय तोपणि नऊपजे तेकहेछे बारबार स्त्रीकथा कहे १ । भोजननी कथा कहे २ । देशकथा कहे ३ । राजकथा कहे ४ । एह च्यार विकथा करवाथी उप जनारू केवलज्ञान केवलदर्शन नऊपजे १ ॥ विवेक ते अशुद्ध मान आहारादित्याग विउस्सग्ग ते काउसग्ग तेणे सम्यक्प्रकारे आत्माने भावितनकरे २ । पाछली रात्रिना काल समयनेविषे धर्मजागरिका नजागे पाछली रात्रिमा जागी धर्मनी चिंता नकरे जे हु स्युधर्म करूंछु स्यु नथी करूंछु ३ ।

रूपा विभक्तिपरिणामा त्तया जागरिता जागरको भवति अथवा धर्मजागरिकां जागरिता कर्त्तेति द्रष्टव्यमिति तथा प्रगता असव उच्छासादयः प्राणा यस्मात् स प्रासुको निर्जीव स्तस्य एषते गवेष्यते उद्गमादिदोषरहिततयेत्येषणीयः कल्प स्तस्य उञ्छ्यते अल्पाल्पतया गृह्यत इत्युञ्छो भक्तपानादि स्तस्य स मुदानिभैचणे याञ्चायां भवः सामुदानिकस्तस्य नो सम्यग्गवेषयिता ऽन्वेष्टा भवतीति एव प्रकारै रेतै रनन्तरोदितै रित्यादि निगमनं एतद्विपर्ययसूत्र कपठ्य

जागरियं जागरित्ता नवइ ३ । फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स णोसम्मंगवेसइत्ता नवइ ४ इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा जाव नोसमुप्पज्जेज्जा ॥ चउहिंठाणेहिं निग्गंथाणवा निग्गंथीणवा अइसेसे नाणदसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा तंजहा इत्थिकहं नत्तकहं देसकह राय कह णोकहेत्ता नवइ । विवेगेणविउस्सग्गेणं सम्ममप्पाणं नावेत्ता नवइ । पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरित्ता नवइ । फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मंगवेसइत्ता नवइ ४

हुं कुण यतीलुं अथवा श्रावक । फासू शुद्ध मान दोष रहित घणां घरनी भिक्षा तेहनी सम्यक् प्रकारे गवेषणा नकरे ४ ॥ एह च्यार थानकें करी साधुने तथा साध्वीने यावत् हमणां तरत ऊपजनारू पणि ज्ञानदर्शन नऊपजै ॥ च्यार थानके साधुने तथा साधवीने मोटुं ज्ञानदर्शन केवलादिक ऊपजवानुं होय ते ऊपजे तेकहेछे स्त्रीकथा नक्तकथा देशकथा राजकथा इत्यादिक च्यार कथा नकहे १ । विवेक ते पापनो त्याग तथा काउसग तेहथी सम्यक् प्रकारे आत्माने नावे २ । पाछली रात्रिना समयमा जागी धर्म जागरिका करे धर्मचितना करे ३ । फासू अचित्त एषणीय दोषरहि

नियमग्रस्तावा तदकृत्यनिषेधाय सूत्रे॥ नोकप्पइत्यादिके ॥ वाच्यो नीरल महोत्सवानन्तरप्रतिलेनो त्सवानुवृत्त्या शेषप्रतिपद्विलक्षणतया महाप्रतिपद स्ता स इहचदेशविशेषरूप्या पाडिवएहिति निर्देशः स्वाध्यायो नन्दादिसूत्रविषयी वाचनादि रनुप्रेक्षातु न निषिध्यते आषाढस्य पूर्णिमासा अनन्तरा प्रति पदाषाढप्रतिप देव मन्यनापि नवर मिन्द्रमहो ऽश्वयुक्पौर्णमासी सगीष्म चैत्रपौर्णमासोति इहच यत्र विषये यतो दिवसा न्महामहाः प्रवर्त्तंते तत्र तद्दिव सात् स्वाध्यायो न विधीयते महसमाप्तिदिन यावत् तत्र पूर्णमास्येव प्रतिपदस्य क्षणानुवृत्तिसंभवेन वर्ज्यत इति उक्तंच आसाढाइंदमहो कत्तियसुगिम्ह एयवोधव्वे एएमहामहाखलु सव्वेसिजावपाडिवएत्ति ॥ १ ॥ अकालस्वाध्यायेचा मीदोषाः सुयनाणमिअभत्ती लोगविरुद्धपमत्तछलणाय विज्जासाहणवे

इच्चेएहिं चउहिंठाणेहिं णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा जाव समुप्पज्जेज्जा ॥ णोकप्पइ णिग्गथाणवा णिग्गथी णवा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करेत्ता तं० आसाढपाडिवए इंदपाडिवए कत्तियपाडिवए सुगिम्हपा डिवए ॥ णोकप्पइ णिग्गथाणवा णिग्गथीणवा चउहिसज्झाहि सज्झाय करेत्तए तं० पढमाए पच्छिमाए मज्झ

त जित्ता समुदाणकी ते घणां घरनी सम्यग्रीतथी गवेषणा करे ४ ॥ एह च्यार थानके साधुने तथा साध्वीने यावत् केवलज्ञान केवलदर्शन ऊपजें ४ ॥ नकल्पे साधुने तथा साध्वीने च्यार मोटी पडिवाने विषे सिज्झाय करवुं तेकहेछे आसाढसुदी १५ नी पडिवा आषाढबदी १। इद्रमोच्छवनी १५ नी पडिवा आसोजबदी १ एहवुं जणायछे २। कार्त्तिक पूर्णमासीनी पडिवा ३। ग्रीष्मकालनी १५ नी पडिवा ते फागणसुदी १५ पाछली पडिवा प छे गीतार्थ कहे तेसाचुं ४ ॥ नकल्पे साधुने तथा साध्वीने च्यार संध्यानी वेलामा सिज्झाय करवुं तेकहेछे प्रथमसध्या सूर्योदयनी वेलाथी प्रथमनी

गुणधम्मयाएवमाकुणसुत्ति ॥ १ ॥ विद्यासाधनवैगुण्यसाधर्म्येणैवेत्यर्थः प्रथमा संध्या अनुदिते सूर्ये पश्चिमा अस्तमयसमये उक्तविपर्ययसूत्र कण्ठ्य किन्तु ॥ पुव्व
ण्हेअवरण्हेत्ति ॥ दिनस्याद्यचरमप्रहरयोः ॥ पश्रोसे पच्चूसेत्ति ॥ रात्रेरिति स्वाध्यायप्रवृत्तस्यच लोकस्थितिपरिज्ञान भवतोति तामेव प्रतिपादयन्नाह ॥ चउव्वि
हेत्यादि ॥ लोकस्य चेत्रलक्षणस्य स्थिति र्व्यवस्था लोकस्थितिः आकाशप्रतिष्ठितो घनवाततनुवातलक्षणः उदधिर्घनोदधिः पृथिवीर त्नप्रभादिका त्रसा द्वींद्रियाद
य स्ते पुनः यैरत्नप्रभादिपृथिवीष्वप्रतिष्ठिता स्तेपि विमानपर्वतादिपृथिवीप्रतिष्ठितत्वात् पृथिवोप्रतिष्ठिताएव विमानपृथिवीनांचा काशादिप्रतिष्ठितत्व यथास
म्भव मवसेय मविवक्षाचेह विमानादिगतदेवादित्रसानामिति स्थावरा स्त्विह बादरवनस्पत्यादयो ग्राह्याः सूक्ष्माणा सकललोकप्रतिष्ठितत्वात् शेष सुगममि

ण्हे अवरत्ते । कप्पइ णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा चउक्कालं सज्झायं करेत्तए पुव्वण्हे अवरण्हे पत्रोसे पच्चूसे
चउव्विहा लोगठिई पन्नत्ता तंजहा आगासपइठिएवाए वायपइठिएउदही उदहिपइठियापुढवी पुढविपइ

बेघडी १ । पश्चिमा ते सूर्य अस्त समयनी बेघडी २ । मध्याह्न बेपहरनी बेघडी ३ । मध्यरात्रिनी बेघडी ४ ॥ कल्पे साधुने तथा साध्वीने च्यार का
लमां सिज्झाय करवुं दिवसनां पहले पहरे १ । दिवसने पाछले पहरे २ । रात्रिना पहले पहरे ३ । रात्रिना पाछले पहरे ४ ॥ सिज्झायकरे तेलो
कस्थिति जाणे तेमाटे च्यार लोकस्थिति कही तेकहेछे आकाशे प्रतिष्ठित रहियोछे वायरो घनवात तनवात १ । वायुप्रतिष्ठित उदधिछे वायुने
आधारे घनोदधितनोदधिछे २ । ते उदधिने आधारे पृथवीछे ३ पृथवीने आधारे बेइंद्रियादिक त्रस तथा थावर प्राण जीवछे चरलेवा सूक्ष्मतो
सकल लोक व्यापीछे ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष साचो सत्यवादी १ । एक पुरुष नोतथा एतले खोटुं असत्यवादी २ ।

तिअनन्तरं त्रसाः प्राणा उक्ता अधुना त्रसप्राणविशेषस्य ॥ चत्तारीत्यादिभि ॥ श्चतुर्भिश्चतुभङ्गीसूत्रैः स्वरूपं दर्शयति कण्ठ्यानि चैतानि केवलं ॥ तहत्ति ॥ से वकः सन् यथैवादिश्यते तथैवयः प्रवर्त्तते सतथा अन्यस्तु नोतथैवा न्यथापीत्यर्थः इतिनोतथः तथा स्वस्तीत्याह चरतिवा सौवस्तिकः प्राकृतत्वा त्ककारलोपे दीर्घत्वेच सावत्थी मागलिकाभिधायी मागधादि रन्य एतेषा मेवा राध्यतया प्रधानः प्रभु रन्यइति ॥ आयतकरेत्ति ॥ आत्मनोन्त मवसानं भवस्य करोती त्यात्मातकर' नोपरस्य भवातकरो धर्म्मदेशनानासेवक' प्रत्येकबुद्धादि स्तथा परस्य भवातं करोति मार्गप्रवर्त्तनेन परातकरो नात्मांतकरो अचरमशरीर आचार्यादि स्तृतीयस्तु तीर्थकरोऽन्योवा चतुर्थो दुःखमाचार्यादि रथवा त्मनोतमरणं करोती त्यात्मान्तकर एव परान्तकरोपि इह प्रथम आत्मवधको द्वि तीयः परवधक स्तृतीय उभयहता चतुर्थ स्त्ववधकइति अथवा त्मतन्त्रः सन् कार्याणि करोती त्यात्मतन्त्रकर एव परतन्त्रकरोपि इहतु प्रथमो जिनो द्वितीयो

ठिया तसा थावरा पाणा । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा तहेणाममेगे णोतहेणाममेगे सोवत्थीणा ममेगे पहाणेणाममेगे । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा आयंतकरेणाममेगेणोपरंतकरे परंतकरेणाममे

एक पुरुष सौवस्तिक मंगलीकनुं वोलणहार भाट भोजकादि ३ । एक प्रधान पुरुष ए ३ ने आराधवा योग्य पुण्यवंत व्यवहारी ४ ॥ च्यार प्रकार ना पुरुष कह्या तेकहेछे एक आत्माना भवनुं अतकरे मोक्ष पहुचे पणि परने भवनु अत नकरावे उपदेश नदेवे प्रत्येकबुद्धादिसाधु १ । एक परने भवनो अतकरावे उपदेश देईने पणि आत्माने भवनुं अंत नकरे ते आचार्यादि अथवा अभव्यना प्रतिबोध्या मुक्तिजाय पणि पोते नजाय २ । एक पोताना भवनु अंतकरे अने परना भवनुं पणि अंतकरे ते तीर्थकरादि ३ । एक आत्मात पणि न करे परात पणि नकरे दुखमदुखमा

भिक्षु स्तृतीय आचार्यादि श्चतुर्थः कार्यविशेषापेक्षया शठइति अथवा आत्मतंत्रं आत्मायत्तं धनं गच्छादि करोती त्यात्मतंत्रकर एव मितरापि भंगयोजना स्वयमूह्येति तथा ऽऽत्मान तमयति खेदयती त्यात्मतमा आचार्यादिः परशिष्यादिक तमयतीति परतमाः सर्वत्रप्राकृतत्वादनुस्वारः अथवा आत्मनितमो अज्ञान क्रोधोवा यस्यस आत्मतमा एव मितरोपि तथा आत्मान दमयति शमवत करोति शिक्षयतिवे त्यात्मदमः आचार्यो ऽश्वदमकादिर्वा एव मितरो पि नवर परः शिष्यो ऽश्वादिर्वा दमश्च गर्ह्यगर्हान्त स्यादिति गर्हासूत्रं तत्र गुरुसाक्षिकमात्मनोनिंदा गर्हा तत्र उपसम्पद्ये आश्रयामि गुरुञ्च स्वदोषनिवेद नार्थ मभ्युपगच्छामि वोचित प्रायश्चित्त मिती त्येवप्रकारः परिणाम एका गर्हेति गर्हात्वञ्चा स्योक्तपरिणामस्य गर्हायाः कारणत्वेन कारणेकार्योपचारा द्ग र्हासमानफलत्वाच्च द्रष्टव्यमिति अभिधीयतेहि भगवत्या णिर्गंथेण गाहावइकुल पिंडवायपडियाए [पिंडलाभप्रतिज्ञयेत्यर्थः] पविट्ठेण अन्नयरेअकिच्चट्ठाणे

गेणोआयंतकरे एगेआयंतकरेविपरंतकरेवि एगेणोआयंतकरेणोपरंतकरे ४ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा आयतमेनाममेगेणोपरंतमे परंतमेनाममेगेनोआयंतमे ४ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा आ यंदमेणाममेगेणोपरंदमे परंदमेणाममेगेणोआयंदमे एगेआयंदमेविपरदमेवि एगेणोआयंदमेणोपरदमे ४

कालना आचार्यादिक अथवा मूर्ख ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुषने आत्माने तम क्रोधछे परने क्रोधनथी करतो १ । एक परने क्रोधकरे पोते नकरे एम च्यार भांगा ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक आचार्यादि आत्माने दमेछे उपशमवंत करेछे पर शिष्या दिकने नथी दमावतो १ । एम च्यार भांगा कहवा ४ ॥ च्यार प्रकारे गर्हा कही तेकहेछे स्वदोष कहवाने गुरुने आश्रइस एहवो परिणाम ते एक

पडिसेविए तस्सणं एवं भवइ इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि पडिक्कमामि निंदामि जाव पडिवज्जामि तओपच्छा थेराणं अंतियं आलोइस्सामि सयसपडिए असंपत्ते अप्पणाय पुव्वमेव कालं करेज्जा सेणंभंते किं आराहए विराहए गोयमा आराहए नो विराहए त्ति तथा ॥ वितिगिच्छामी ति ॥ वीति विशेषेण विविधैः प्रकारैर्वा चिकित्सामि प्रतिकारं अभिगच्छामीत्यर्थः ततोऽनेनेतीतरेव विशिष्टात्मिका एकाग्या गर्हेति तत एवेति तथा ॥ जंकिंचमिच्छामीति ॥ यत्किंचना नुचित तन्मिथ्या विपरीतं दुष्टं मे मम इत्येवं वासनागर्भवचनरूपा एकाग्या गर्हा एवंस्वरूपत्वादेव गर्हीया स्तथा ॥ एवमपीति ॥ अनेनापि स्वदोषगर्हाप्रकारेणापि प्रज्ञप्ता अभिहिता जिनैर्दोषशुद्धिरिति प्रतिपत्ति रेवा गर्हा एवंविधप्रतिपत्ते गर्हा कारणत्वा दिति एवंपिपन्नत्तेनोगरिहेति पाठे व्याख्यान मिदं एवंपिपन्नत्तेएगाइत्ति ॥ पाठे त्विदं यत्किंचना वक्तं तन्मिथ्ये त्येवं प्रतिपत्तव्यमित्ये व मपि प्रज्ञप्ते प्ररूपिते सत्ये का गर्हाभव त्येवंविधप्ररूपणायाः प्रज्ञापनी यस्य गर्हाकारणत्वात् अथवा उपसंपद्ये प्रतिपद्या व्यक्त गतिचारा नित्येवं स्वदोषप्रतिपत्ति रेका गर्हा तथा विचिकित्सामि शंके अश्रद्धानीयानपि जिनभा षितभावान् गुर्वादीन्वा दोषयत्त्ये त्येवं प्रकारापि गर्हा स्वदोषप्रतिपत्तिरूपत्वा देवेति तथा यत्किंचन साधूना मनुचितं तद्दिच्छामि सात्मा इकारणेपि म नसा मिलपामि इत्यमकार आगमिकः प्राकृतत्वादिति अथवा यत्किंचना साधुत्वात् मात्मित्य मिथ्याविपर्यस्तोस्मि भवामि मिथ्याकारेभिया मिथ्यागामी ति ॥ मिच्छामीति ॥ इच्छामदायरामीतिया इच्छामीति मिच्छामि शेषंपूर्ववत् तथा असदनुष्ठाने प्रवृत्तः प्रेरितःसन् केनापि स्वकीयचित्तसमाधानार्थं

चउव्विहा गरहा पण्णत्ता तंजहा उवसंपज्जामिएगागरहा वितिगिच्छामिएगागरहा जंकिंचिमिच्छामिएगाग

गर्हा १। विशेषथी पापनी गर्हा करीस एहवो विकल्प करे ते बीजी गर्हा २। जे पापलागो तेहनु मिथ्यादुष्कृत एह वचनरूप त्रीजी गर्हा ३।

वा स्वकीयासदनुष्ठानसमर्थनाय क्लिष्टचित्ततयैवं प्ररूपयामि भावयामिवा यदुत एवमपि प्रज्ञप्तिः प्ररूपणास्तिजिनागमे पाठान्तरे त्वेवमपि प्रज्ञप्तीयंभाव इत्यस्थानाभिनिवेसी उत्सूत्रप्ररूपको वाहं मित्येका गर्हा स्वदोषप्रतिपत्तिरूपा गर्हा सर्वंवेति गर्हाच दोषवर्जकस्यैव सम्यग्भवति नेतरस्येति दोषवर्जकजीव स्वरूपप्ररूपणाय सप्तदश चतुर्भङ्गी सूत्राणि व्यक्तानि केवल अलमस्तुनिषेधो भवतु य एवमाह सो लमस्तो त्युच्यते निषेधकइत्यर्थः सचा त्मनोदुर्नयेषु प्रवर्त्त मानस्यै को निषेधकः अथवा ॥ अलमथुत्ति ॥ समयभाषया समर्थो भिधीयते तत आत्मानो निग्रहे समर्थः कश्चिदिति १ एको मार्गं ऋजु रादा वतेपि ऋजुः प्रतिभाति तत्वतोपि ऋजुरेवेति पुरुषस्तु ऋजु पूर्वापरकालापेक्षया अंतस्तत्वबहिस्तत्त्वापेक्षया वेति क्वचित्तु ॥ उज्जुणामंएगे उज्जमणेत्ति ॥ पाठं

रहा एवंपिपसत्तिएगागरहा । चत्तारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा अप्पणोणाममेगेअलमंथूभवइनोपरस्स परस्सणाममेगेअलमंथूभवइ नोअप्पणो एगेअप्पणोविअलमंथूभवइ परस्सवि एगेणोअप्पणोअलमंथूभवइ णोपरस्स । चत्तारि मग्गा पसत्ता तंजहा उज्जुणाममेगेउज्जु उज्जुणाममेगेवंके वंकेणाममेगेउज्जु वंकेणाममे

एणे प्रकारें दोषनी गर्हणाकरे ते जिने दोषशुद्धिकही एहवी चिंतना ते चौथी गर्हा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष पपामां प्रवर्त्ततो जे पोतानुं आत्मा तेहने वारवाने समर्थ थाय पणि परना आत्माने पापथी वारवाने अलमंथू कहिये समर्थ नथाय १ । एक पु रुष परने पापथी वारवाने समर्थथाय पणि आत्माने वारी नसकै २ । एक पोताना आत्माने पणि पापथी वारवा समर्थ परने पणि पापथी वा रवासमर्थ ३ । एक पुरुष आत्माने पणि पापथी वारवासमर्थ नथी परने पणि पापथी वारवा समर्थ नथी ४॥ च्यार मार्ग कह्या तेकहेछे एक मार्ग

सोपि बहिस्तत्वान्तस्तत्वापेक्षया व्याख्येयः ३ क्षेमो नामैको मार्ग आदौ निरुपद्रवतया पुनः क्षेमोंते तथैव प्रसिद्धितत्वाभ्यां वा ४ एव पुरुषोपि क्रोधाद्युप द्रवरहिततया क्षेमइति ५ क्षेमोभावतो ऽनुपद्रवत्वेन क्षेमरूप आकारेण मार्ग्गः पुरुषस्तु प्रथमो भावद्रव्यलिङ्गयुक्तःसाधु द्वितीयःकारणिको द्रव्यलिगवर्जितः

बंके । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उज्जुणाममेगेउज्जु ४ । चत्तारि मग्गा पन्नत्ता तंजहा खेमेणाममेगेखेमे खेमेणाममेगेऽखेमे ० ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा खेमेणाममेगेखे मे ४ । चत्तारि मग्गा पन्नत्ता तंजहा खेमेणाममेगेखेमरूवे खेमेणाममेगेऽखेमरूवे ४ । एवामेव चत्तारि

आदिमा सरल अंतमा पणि सरल १ । एक मार्ग प्रथम सरल पछे अतमा वक्र २ । एक मार्ग आदिमा वक्र पछे सरल ३ । एकमार्ग आदिमा पणि वक्र अतमा पणि वक्र ४ ॥ इण दृष्टांते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक पुरुष आदिमा पणि तत्वनुं धणी पछे अतमा पणि तत्वनुं जांण १ । एम ४ । भांगा जाणवा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना मार्ग कह्या तेकहेछे एक मार्ग आदिमा क्षेम उपद्रवरहित पछे पणि क्षेम उपद्रवरहित १ । एक मार्ग आदिमा क्षेम अते अक्षेम उपद्रवसहित २ । एम च्यार भांगा ४ इण दृष्टाते च्यार प्रकारे पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष आदिमा क्षेम क्रोधादि उपद्रवरहित अंते पणि क्षेम एम ४ । भागा कहवा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना मार्ग कह्या ते कहेछे एक मार्ग क्षेम उपद्रवरहित अने क्षेमरूप आ कारे रूडोसमो १ । एक क्षेममार्ग निरुपद्रव अने अक्षेमरूप विषम आकार इम च्यार भांगा ४ ॥ इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष क्षेम भावथी साधु गुण सहित अनेद्रव्यथी साधुवेष सहित १ । गुणयुक्त पणि कारणे वेषरहित २ एक द्रव्य वेष सहित गुणरहित ३ ।

साधुरेव तृतीयो निह्नव श्चतुर्थोन्यतीर्थिको गृहस्थोवेति ७ सवुक्का: शङ्खा वामो वामपार्श्वव्यवस्थितत्वात्प्रतिकूलगुणत्वा द्वा वामावर्त्त: प्रतीत एवं दक्षिणाव
र्त्तोपि दक्षिणपार्श्वनियुक्तत्वा दनुकूलगुणत्वादिति ८ पुरुषस्तु वाम: प्रतिकूलस्वभावतया वामएवा वर्त्तते प्रवर्त्तत इति वामावर्त्तो विपरीतप्रवृत्ते रेकोन्यो वा
मएव स्वरूपेणकारणवशा द्दक्षिणावर्त्तो ऽनुकूलप्रवृत्ति रन्यस्तु दक्षिणो ऽनुकूलस्वभावतया कारणवशा द्वामावर्त्तो ऽनुकूलप्रवृत्ति रित्येव चतुर्थोपीति ९ धू
मशिखा वामा वामपार्श्ववर्त्तितया ऽनुकूलस्वभावतयावा वामत एवावर्त्तते या तथा चलना त्मा वामावर्त्ता १० स्त्रीपुरुषवद् व्याख्येया कवुदृष्टान्ते सत्यपि

पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा खेमेणाममेगेखेमरूवे ०। चत्तारि सवुक्का पन्नत्ता तजहा वामेणाममेगेवामा
वत्ते वामेणाममेगेदाहिणावत्ते दाहिणेणाममेगेवामावत्ते दाहिणेणाममेगेदाहिणावत्ते। एवामेव चत्तारि पु
रिसजाया पन्नत्ता तजहा वामेणाममेगेवामावत्ते ०। चत्तारि धूमसिहाउ पन्नत्ताउ तजहा वामाणाममेगा

एक द्रव्यवेषे रहित गुणथी रहित ४॥ प्रथम वोले साधु वीजें वोले पणिसाधु त्रीजोनिह्नव चौथो अन्यमती ४॥ एम च्यार भांगा॥ च्यार शंख
कह्या तेकहेछे। एक शंखने वाम पासे आवर्त्त रह्याछे पणि वाम दुखदेवामाटे १। एक डावोछे पणि जीमणुं आवर्त्त होय तेसुखदाई होय २।
एक दक्षिण जीमणुछे पणि आवर्त्त डावो ने पणि दुखदाईछे ३। एक शख दक्षिण जीमणे पासे पाप अने आवर्त्त तेहने घणो भलोकहिये ४॥
इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुषनु स्वभाव वांम वाको अने वामावर्त्त प्रवर्त्तित ते पणि वाको १। एम च्यार भागा ४॥
च्यार धूम्रशिखाकही तेकहेछे। एक धूम्रशिखा वामडावीछे अनेवाम आवर्त्तछे १। इम च्यार भागा शंखनीपरे ४॥ एणे प्रकारे च्यार स्त्रीकही

धूमशिखादिदृष्टान्तानां स्त्रीदार्ष्टान्तिके शब्दसाधर्म्येणो पपन्नतरत्वा द्भेदेनो पादानमिति ११ एव मग्निशिखापि १२ वातमण्डलिका मण्डलेनो र्द्ध्वप्रवृत्ती वायुरिति इहच स्त्रियो मालिन्योपतापचापल्यस्वभावा भवन्ती त्यभिप्रायेण तासु धूमशिखादृष्टान्ततयो पन्यास इति उक्तंच चवलामइलणसीला सिणेह परिपूरियाविययावेइ दीवयसिहिव्वमहिला लद्धप्पसराभयंदेइत्ति ॥ १७ वनखण्डस्तु शिखाव न्नवर वामावर्त्तो वामचलनेन जातत्वा द्वायुनावा तथा धूममा नत्वादिति १६ पुरुषस्तु पूर्ववत् १७ अनुकूलस्वभावो नुकूलप्रवृत्ति यानन्तर पुरुषउक्त एवम्भूतश्च निर्ग्रंथः सामान्येना नुचितप्रवृत्तावपि नस्वाचारमतिक्राम

वामावत्ता ४ । एवामेव चत्तारि त्थियाउ पन्नत्ता तजहा वामाणाममेगावामावत्ता ० । चत्तारि अग्गिसि हाउ पन्नत्ताउ तंजहा वामाणाममेगावामावत्ता ४ । एवामेव चत्तारि त्थियाउ पन्नत्ताउ तजहा वामाणा ममेगावामावत्ता ४ । चत्तारि वायमण्डलिया प० त० वामाणाममेगावामावत्ता । एवामेव चत्तारि त्थिया उ पन्नत्ताउ त० वामाणाममेगावामावत्ता ० । चत्तारि वणखण्डा पन्नत्ता तंजहा वामेणाममेगेवामावत्ते ४ ।

तेकहेछे । एक वाम वक्र स्वभावछे अने वाम प्रवर्त्तेछे एम च्यार भांगा जाणवा ४ ॥ च्यार प्रकारे अग्नि शिखाकही ते कहेछे । एक शिखावामछे आवर्त्त पणि वामछे एम च्यार भागा ४ ॥ इण दृष्टाते च्यार स्त्रीकही ते कहेछे । एक वाम अने वामावर्त्त च्यार भांगा कहवा ४ ॥ च्यार वायुनी मडली कही ऊचो वायु मडलचाले ते कहेछे एक वायुमडली वामपासेछे अने वाम आवर्त्तछे इम च्यार भागा ४ ॥ इमज च्यार प्रकारनी स्त्रीकही तेकहेछे । एक वाम अने वामावर्त्त एम च्यार भांगा ४ ॥ च्यार वन खंड कह्या तेकहेछे । एक वन वामछे डावे पासेछे अने वामावर्त्त वायरे करी

तीतिदर्शयन्नाह ॥ चउहीत्यादि ॥ स्फुटं किन्तु आलप न्नीष त्प्रथमतयावा जल्पन् संलपन् मिथोभाषणेन नातिक्रामति नलङ्घयति निर्ग्रंथाचारं एगोएगत्थि एसङ्ढिनेवचिठ्ठेनसलवे विशेषत' साध्व्या इत्येवंरूप मार्गप्रश्नादीनां पुष्टालम्बनत्वा दिति तन्नमार्गं पृच्छन् प्रश्ननोयसाधर्म्मिकगृहस्थपुरुषादीनामभावे हेआर्ये कोस्माकमितो गच्छता मार्ग इत्यादिना क्रमेण मार्गंवा तस्यादेशयन् धर्मशीलेय मार्गस्ते इत्यादिनाक्रमेण अशनादिचाददृ द्धर्मशीलि गृहाणेद अशनादीत्ये वतथा अशनादि दापयन् आर्ये दापयाम्ये तत् तुभ्यं आगच्छेह गृहादा वित्यादिविधिनेति तथा तमस्काय तम इत्यादिभिः शब्दैर्व्याहर न्नातिक्रामति भा षाचार यथार्थत्वादिति तानाह ॥ तमुक्कायेत्यादि ॥ सूत्रनय सुगम नवरं तमसो ऽप्कायपरिणामस्वरूपस्या न्धकारस्य कायः प्रचय स्तमस्कायो यो ह्यस

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा वामेणाममेगेवामावत्ते ० । चउहिंठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं आलवमाणेवा सलवमाणेवा णाइक्कमइ तं० पंथंपुच्छमाणे पंथंदेसमाणे असणवापाणंवाखाइमंवासाइमंवा दलयमाणे दवावेमाणेवा । तमुक्कायस्सणं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० तमेइवा तमुक्काएइवा अंधकारेइवा

डावे पासे वलेळे च्यार भांगा जाणवा ४ ॥ एम च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेळे एक पुरुष वाम स्वभावळे आचरणा पणि वामळे एम च्यार भांगा १७ ॥ च्यार थानके साधु एकली साध्वीनें बोलावतो सलापकरतो आचार प्रति अतिक्रमैं नथी ते कहेळे साधु गृहस्थ पुरुषने अभावे पूछे हे आर्यो केहुं जाउं छुंते मार्गळे । अथवा हेधर्मशीले आमार्गळे एम साधवीनेमार्गदेखाडे अशन पान खादिम स्वादिम देतो धर्मशीले लैअशनादि देवाडतो हे आर्यए तुम्हने अपावीस आवजे इमकहतो ४ ॥ तमस्कायने तम इमकहतां पणि आचार अतिक्रमें नही यथार्थमांटे ॥ तमस्कायना च्यार नाम

ख्याततमस्या रुणवराभिधानद्वीपस्य वाह्यवेदिकान्ता दरुणोदाख्यं समुद्रं द्विचत्वारिंश योजनसहस्त्रा ण्यवगाह्यो परितना ज्जलांता देकप्रदेशिकया श्रेण्या समुत्थित: सप्तदशैकविंशत्यधिकानि योजनशतानि ऊर्द्ध मुत्पत्य तत स्तिर्यं ग्विस्तृणन् सौधर्मादी श्चतुरो देवलोका नाद्वत्यो र्द्धमपि ब्रह्मलोकस्य रिष्टविमा नप्रस्तटं सप्राप्त स्तस्य नामा न्येव नामधेयानि तमइति तमोरूपत्वा दिति रूपप्रदर्शने वा विकल्पे तमोमात्ररूपताभिधायका न्याद्यानि चत्वारि नामानि तथा पराणि चत्वार्यैवा त्यंतिकतमोरूपताभिधायकानीति लोके श्रयमेवान्धकारो नान्योस्ती दृशइति लोकान्धकार: देवाना मप्य न्धकारो सौ तच्छरीर प्रभाया श्रपि तत्राप्रभावनादिति देवान्धकार: श्रतएव तेबलवतो भयेन तत्र नश्यतीति श्रुतिरिति तथा न्यानि चत्वारि कार्याश्रयाणिवा तस्य परिहनना त् परिघो ऽर्गला परिघइव परिघोवा तस्य परिघो वातपरिघ स्तथा वात परिघवत् चोभयति हतमार्गं करोतीति वातपरिचोभ: वातएव वा परिघ स्त

महंधकारेइवा । तमुक्कायस्सण चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता तंजहा लोगंधयारेइवा लोगतमसेइवा देवंधया रेइवा देवतमसेइवा । तमुक्कायस्सणं चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता तंजहा वायफलिहेइवा वायफलिहखोभे

कह्या तेकहेछे । तमकहीये १ । तमस्कायकहिये अप्कायरूपछे तेमाटे कायकह्यो २ । असंख्यातमो अरुणवरनामे द्वीपछे तेहनी बाहिरली वेदिकाना छेहडाथी अरुणोदधिसमुद्रमां बेतालीस ४२ हजार योजन अवगाहीयें तिहा पाणीथी एक प्रदेशनी श्रेणिये तम अंधकार नीकल्यो ते सतरेसे १७२१ इकवीस योजन ऊचो जईने त्रीछो विस्तर्यो सौधर्मआदिक च्यार देवलोक आवरीने ऊचो ५ पाचमा ब्रह्मदेवलोकना रिष्टविमानना प्रतरताई पो हतोछे अधकारकहिये ३ । महाधकार पणि कहिये ४ ॥ वली तमस्कायना च्यार नामकहेछे ॥ लोकाधकार कहिये लोकमा एज अधकारछे १ । लो

क्षोभयति यस्तथा पाठान्तरेण वातपरिक्षोभइति क्वचिद्देवपरिघोदेवपरिक्षोभइति चाद्यपदद्वयस्थाने पठ्यते देवाना मरख्यमिव बलवद्भयेन नाशनस्थानत्वा

द्य सद्देवारण्यमिति देवानां व्यूहः सागरादिः साग्रामिक व्यूहइव यो दुरधिगमत्वा त्तद्देवव्यूहइति तमस्कायस्वरूपप्रतिपादनायैव ॥ तमुक्कायेणमित्यादि ॥

सूत्र गतार्थ क्विन्तु सौधर्मादी नात्वणो त्यसौ कुक्कुटपञ्जरसस्थानसंस्थितस्य तस्य प्रतिपादना दृत्राच तमुक्काएण भते किंसंठिए पन्नत्ते गोयमा अहेमल्लगमू

लसंठिए उप्पिं कुक्कुडपंजरसंठिए ॥ पण्णत्तेत्ति ॥ पूर्व न्तमस्कायो वचनपर्यायै रुक्तो धुना थंपर्यायैः पुरुषनिरूपयता पञ्चसूत्री गदिता सुगमाच नवरं कश्चि

त्साधु गँच्छवासी सम्प्रकट मेव गीतार्थप्रत्यक्षमेव प्रतिसेवते मूलगुणा नुत्तरगुणान्वा दर्पत. कल्पेनवेति सम्प्रकटप्रतिसेवी त्येकः एव मन्यः प्रच्छन्न प्रतिसे

वतइति प्रच्छन्नप्रतिसेवी अन्यस्तु प्रत्युत्पन्नेन लब्धेन वस्त्रशिष्यादिना प्रत्युत्पन्नोवा जातः स न शिष्याचार्यादिरूपेण नन्दति य' सप्रत्युत्पन्ननन्दी अथवा नन्दन

इवा देवरण्णेइवा देववूहेइवा । तमुक्काएणं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिठइ तंजहा सोहम्मीसाणं सणंकुमा

रमाहिंद । चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा संपागडपडिसेवीणाममेगे पच्छन्नपडिसेवीणाममेगे पडुप्प

कतमकहिये २ । देवांधकार कहिये कृष्णराजीछे जेमांटे ३ । देवतमकहिये ४ ॥ वली तमस्कायना ४ नाम कहेछे ॥ बातफलिका वायनी जोगलसरी

खो १ वातफलकाक्षोभ वायुना मार्गनें हणे तेमांटे २ । देवआरण्य अटवी जयथी देवताने नाशवानुं स्थानकछे जेमांटे ३ । देवव्यूह संग्रामना व्यूह ते

सेना तेहनीपरे दुरधिगममाटे ४ ॥ तमस्काय च्यार देवलोकने आवरी व्यापीने रहीछे तेकहेछे ॥ सौधर्म १ । ईशान २ । सनत्कुमार ३ । माहेंद्र ४ ॥

साधु आश्रीने च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ एक साधु अकल्पवस्तुने गीतार्थसमक्ष सेवे तेसप्रकट प्रतिसेवी १ । एक प्रच्छन्न छानुं पापसेवे २

वन्दि रानन्दः प्रत्युत्पन्नेन नन्दि र्यस्य स प्रत्युत्पन्ननन्दि स्तथा प्राघूर्णकशिष्यादीना मात्मनोवा निस्सरणेन गच्छादे र्निर्गमेण नन्दति यो नन्दिर्वा यस्य स
तथा पाठान्तरेण तु प्रत्युत्पन्न यथालब्ध सेवते भजते नानुचित विवेचयतीति प्रत्युत्पन्नसेवीति ॥ जइत्तत्ति ॥ जेत्री जयति रिपुबल एका नपराजेत्री न प
राजयते रिपुवला न्न भज्यते द्वितीयातु पराजेत्री परेभ्यो भङ्गभाक् अतएव नो जेत्रीति तृतीया कारणवशा दुभयस्वभावेति चतुर्थी त्वविजिगीषुत्वा दनुभ
यरूपेति पुरुषः साधुः सजेता परीषहाणां नतेभ्यः पराजेता उद्विजते भज्यत इत्यर्थो महावीरवदिति एको द्वितीयः कण्डरीकवत् तृतीयस्तु कदाचिज्जेता

स्सणंदीणाममेगे णिस्सरणणंदीणाममेगे । चत्तारि सेणाउ पणत्ता तं० जइत्ताणाममेगाणोपराजिणित्ता परा
जिणित्ताणाममेगाणोजइत्ता एगाजइत्ताविपराजिणित्ताव एगाणोजइत्ताणोपराजिणित्ता । एवामेव चत्तारि
पुरिसजाया पणत्ता तजहा जइत्ताणाममेगेणोपराजिणित्ता ० ४ चत्तारि सेणाउ पणत्ताउ तजहा जइत्ताणा

एक प्रत्युत्पन्ननंदीजे आचार्यशिष्यादिपाम्यो नंदे आणद उपजे ३ । एक गच्छादिकमां नीकलवे नंदे हर्षथी ४ ॥ च्यार सेना कही तेकहेछे ॥ एक
सेना जैत्री जे रिपुबलने जीते अने रिपुबलथी भागे नाशे नही १ । एक सेना रिपुवलथी भागे नाशे एतलाजमाटे जैत्री नही जीते एहवीनही २ ।
त्रीजी जीते पणि कारणविशेषे रिपुथी नाशे भागे पणि ३ । एकसेना जीते पणि नही नाशे भागेनही ४ ॥ एणे दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या
तेकहेछे ॥ एक साधु परिसहनी सेनाने जीते पणि परीसहथी भागे नही श्रीवीरवत् १ । बीजे भागें कण्डरीकवत् । त्रीजे भांगे शैलकराजरिषि ।
चोथे भागे जेहने परिस्सहनथी ऊपना एहवासाधु ४ । इम ४ भागो जाणवा ॥ वली च्यार सेना कही तेकहेछे । एकसेना एक वेलारिपुजीतीने

कदाचित्कर्मवशात् पराजेता शैलकराजर्षिवत् चतुर्थस्तु अनुत्पन्नपरीषहो जित्वा एकदा रिपुबलं पुनरपिजयती त्येका अन्याजित्वापराजयते भज्यते अन्या पराजित्य परिभज्य पुनर्जयति चतुर्थीतु पराजित्य परिभज्य कदापुनः पराजयते पुरुषस्तु परीषहादिष्वेव चिंतनीय इति जेतव्याश्चेह तत्वतः कषाया एवेति तत्स्वरूप दर्शयितुकामः क्रोधस्यो त्तरत्रो पदर्शयिष्यमाणत्वा न्मायादिकषायत्रयप्रकरणमाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ प्रकट किन्तु केतनं सामान्येन वक्र वस्तु पुष्पकरण्डस्यवा सम्बन्धि मुष्टिग्रहणस्थान वंशादिदलकं तच्च वक्रं भवति केवल मिह सामान्येन वक्रं वस्तु केतन गृह्यते तत्र वंशीमूल च तत्केतनंच वंशीमूलकेतन मेव सर्वत्र नवरं मेंढविषाण मेषशृंग गोमूत्रिका प्रतीता ॥ अवलेहणियत्ति ॥ अवलिख्यमाणस्य वंशशलाकादे र्या प्रतन्वी त्वक् सा वलेखनिकी

ममेगाजयइ जइत्ताणाममेगापराजिणइ पराजिणित्ताणाममेगाजयइ पराजिणित्ताणाममेगापराजिणइ ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० जइत्ताणाममेगाजयइ । चत्तारि केतणा पन्नत्ता तं० बंसीमूलकेतणए मेंढविसाणकेतणए गोमुत्तिकेतणए अविलेहणियाकेतणए । एवामेव चउव्विहा माया पन्नत्ता तं० बंसीमूल

बली कामपडेजीते १ । एकसेना प्रथम जीतीने कोइ बेला पछे भागेनाशे २ । एकसेना प्रथम नाशीभागीने बली कोईसमे रिपुने जीते ३ । एकसेना नाशी भागीने पछे पणि नाशेभागे ४ ॥ एणे प्रकारें च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ इमज परीसहने आश्रीने एकसाधु परीसहने जीतीपछे पणि जीते इम ४ भागाजाणवा ॥ जीतवा ते तत्वथी कषायनो जीतवो तेकहेछे ॥ च्यार केतन कह्या केतनते वक्र वांकी वस्तुने कहीये तेकहेछे ॥ वसी मूलकेतन तेवासनुं मूलवक्रहोय १ । मेंढविषाणकेतन तेमेंढानुं सीगडुं बक्रहोय २ । गोमुत्ति केतनते गायचालती मूंते तेवक्रहोय ३ । अवले

ति वंशीमूलकेतनकादिसमतास्य मायाया उक्तता अनार्जवभेदात् तथाहि यथा वंशीमूलं अतिगुपिलवक्रं एवं काचिन्मायापि तथैव सर्वाकारान्तरालतमा नार्जवत्वेना न्यापि भावनीयेति इयं च नरकाद्युत्पत्तिकारणानन्तानुबन्धिसंज्वलनरूपा क्रमेण ज्ञेया यत्रेषा स्थितावस्थे तेनैषा नन्तानुबन्धिन्या उदयेपि देवत्वादि न निरुध्यते एवं मानादयोपि वाच्या इत्येतत् पूर्वं क्रोधमानसूत्राणि ततो मायासूत्राणि तत्र क्रोधसूत्राणि चत्तारिराईओ पन्नत्ताओ तंजहा पव्वयराई पुढविराई रेणुराई जलराई एवामेव चउव्विहे कोहे इत्यादि मायासूत्राणि चाधोक्तानि फलसूत्राण्यनुगमिय स्वाद्दश वर्तीति शिलाविकारः शैलः सचासौ स्तम्भश्च स्थाणुः शैलस्तम्भः एवमन्येपि नवरं मणि दारुचयतोस तिनिशो वृक्षविशेष स्तस्य लता कम्बा तिनिशलता साचा त्यंतमृद्वीति मानस्यापि शैल

केअणसमाणा जाव अवलेहणियाकेअणसमाणा ० । बंसीमूलकेअणसमाणंमायंअणुप्पविठेजीवेकालंकरेइणे रइएसु उववज्जइ मेंढविसाणकेअणसमाणंमायमणुप्पविठेजीवे कालंकरेइ तिरिक्खजोणिएसुउववज्जइ गोमुत्तिअं जाव कालंकरेइ मणुस्सेसु उववज्जइ अवलेहणिया जाव देवेसु उववज्जइ । चत्तारि थंभा प० त० सेलथंभे

एणिया केतनने वासनीछाल ऊपरली उतारे ते पणिकांईक वक्रहोय ४ ॥ एणे प्रकारे च्यार प्रकारनी मायाकही तेकहेछे ॥ एक वशीमूल केतनसमान वंसमूलने गुप्त वक्रताहोय तिमकोईकने गुप्तमायाहोय कपटहोय । यावत् मेंढश्रृंग सरिखी गोमूत्रिका समान एक एकथी अल्पथोडी थोडी जाणवी । वंशीमूल केतनसमान मायाकरी प्रविष्टसहित जीव मरणपांमे ते नारकीमां ऊपजे १ । मेंढश्रृंग समान मायाइं प्रविष्टसहित जीव कालकरे ते प्राणी तिर्यंचनी योनिमा ऊपजे २ । गोमूत्रिका समान मायासहित कालकरे ते मनुष्यमां उपजे ३ । अवलेही छालसमान मायाये कालकरे ते

स्तभादिसमानता तद्वतां नमनाभावविशेषात् चैयेति मानो प्यनन्तानुवंध्यादिरूपः क्रमेण दृश्यः तत्फलसूत्रं व्यक्त क्रमिरागे वृद्धसम्प्रदायो य मनुष्यादीनां रुधिर गृहीत्वा केनापि योगेन युक्त भाजने स्थाप्यते तत स्तत्र क्रमय उत्पद्यन्ते तेच वाताभिलाषिण श्छिद्रनिर्गता आसन्ना भ्रमन्तो निर्हारलाला मुंचति ताः क्रमिसूत्र भण्यते तच्च स्वपरिणामरागरंजित मेव भवति अन्येभणति येरुधिरक्रमय उत्पद्यते तान् तत्रैव मृदित्वा कचवर मुत्तार्य तद्रसे किञ्चित् योग प्रक्षिप्य पट्टसूत्र रंजयति सच रसः क्रमिरागो भण्यते अनुत्तारीति तत्र क्रमीणां रागो रजकरस' क्रमिरागस्तेन रक्त क्रमिरागरक्त एवं सर्वत्र नवरं

न्ने अट्ठियन्ने दारुथंन्ने तिणिसलयाथन्ने । एवामेव चउव्विहे माणे पन्नत्ते तं० सेलथन्नसमाणे जाव तिणिसलयाथन्नसमाणे । सेलथंन्नसमाणमाणंअणुप्पविठेजीवेकालंकरेइ णेरइएसुउववज्जइ एव जाव तिणिसलयाथंन्नसमाणमाणंअणुप्पविठेजीवेकालंकरेइ देवेसुउववज्जइ । चत्तारि वत्था पन्नत्ता तजहा किमिरागरत्ते कद्दम

देवतामा उपजे ४ ॥ च्यार थम्न कह्या तेकहेछे ॥ एक शैलथंन्न पाषाणनोथंभ १ । अस्थिहाडनोथंन्न २ । लाकडानोथंभ ३ । तिनस वृक्षविशेष तेहनी लतानोथन्न ४ ॥ एह ४ थंभ सरीखो च्यार प्रकारनो मानकह्यो तेकहेछे ॥ शैल थंन्नसमान यावत् तिणिसलता समान थन्नसरीखो ॥ शैलथंन्नसमाने प्रविष्टसहित जीव कालकरे ते नरकमाऊपजें । इम यावत् माननीपरे तिनसलता थंन्नसमानमाने प्रविष्टसहित जेजीव कालकरे ते देवलोकने विषे ऊपजे ॥ च्यार प्रकारना वस्त्र कह्या तेकहेछे ॥ क्रमिरागतेस्वाभाविक रातापुद्गलनु नीपनु वस्त्र केईक कहेछे मनुष्यना लोहीमा कीडा उपजैछे तेतेह माज मर्दीनें कचरीने मध्ये कांईकयोग घातीने पट्टसूत्ररगवे तेक्रमिरागरक्तवस्त्र १ । कर्दम गोबर प्रमुखनो तेरागरग्यु २ । खंजनते दीवानी कली

कर्द्दमो गोवाटादीनां खञ्जनं दीपादीनां हरिद्रा प्रतीतैवेति कृमिरागादिरक्तवस्त्रसमानताच लोभस्या नन्तानुबन्ध्यादि तद्भेदवतां जीवानां क्रमेण दृढदृढतर
नहीनतरहीनतमानुबन्धित्वा त्तथाहि कृमिरागरक्त वस्त्र दग्धमपि न रागानुबधं मुंचति तद्वत्मनोपि रतात्वा देवं योमृतोपि लोभानुबधं न मुचति तस्या
भिधीयते लोभः कृमिरागरक्तवस्त्रसमानो ऽनन्तानुबधी चेति एव सर्वत्र भावना कार्यैति फलसूत्र स्पष्ट इह कषायप्ररूपणागाथाः जलरेणुपुढविपव्वय
राईसरिसोचउव्विहोकोहो तिणसलयाकठ्ठट्ठिय सेलत्थभोवमोमाणो ॥ १ ॥ मायावलहिगोमु त्तिमेंढसिगघणवसमूलसमा लोहोहलिद्दखंजण कद्दमकि
मिरागसारित्थो ॥ २ ॥ पक्खचउमासवच्छर जावज्जोवाणुगामिणोकमसो देवनरतिरियनारय गइसाहणहेयवोभणियत्ति ॥ ३ ॥ अनन्तर कषायाः प्रज्ञ

रागरत्ते खंजणरागरत्ते हलिद्दरागरत्ते । एवामेव चउव्विहे लोभे पण्णत्ते तंजहा किमिरागरत्तवत्थसमाणे क
द्दमरागरत्तवत्थसमाणे खंजणरागरत्तवत्थसमाणे हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे । किमिरागरत्तवत्थसमाणलोभम
णुप्पविठ्ठेजीवेकालंकरेइ नेरइएसु उववज्जइ तहेव जाव हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुप्पविठ्ठेजीवे कालं

ते रागे रंग्यु ३ । हलदीने रागे रंग्युं ४ ॥ इण प्रकारे च्यार भेदनो लोभ कह्यो तेकहेछे कृमिरागरक्त वस्त्रसमान एक लोभ कह्यो कृमिरागरक्त
वस्त्र बल्यो पणि रग नमूंके तेहनी भस्म पणि राती होय तिम मूओ पणि लोभ नमूके १ । कर्दमरागरक्त वस्त्र समान बीजोलोभ २ । खजन दी
पकलिकासमान वस्त्र सरीखो तीजो लोभ ३ । हरिद्रारागरक्त वस्त्र समान चौथो लोभ ४ ॥ कृमिरागरक्त वस्त्र समान लोभप्रविष्ट जीव काल करे
ते नरकमा उपजें । तिम यावत् पूर्वनी परें हरिद्रारागरक्त वस्त्र समान लोभप्रविष्ट जे जीव काल करे ते देवलोकमा ऊपजे ॥ एह च्यार क्रोधथी स

म्राः कषायैश्च संसारी भवतीति संसारस्वरूपमाह ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ व्यक्तं किन्तु संसरणं संसारः मनुष्यादिपर्याया न्नारकादिपर्यायगमनमिति नैरयिक प्रायोग्ये ष्वायुर्नामगोत्रादिषु कर्म्मसू दयगतेषु जीवो नैरयिक इति व्यपदिश्यते उक्तञ्च नेरइएणं भंते नेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ गो यमा नेरइएनेरइएसु उववज्जइत्ति ततो नैरयिकस्य ससरण मुत्पत्तिदेशगमन मपरापरावस्थागमनवा नेरयिकसंसारः अथवा ससरंति जीवा यस्मिन्नसौ ससारो गतिचतुष्टयं तत्र नैरयिकस्या नुभूयमानगतिलक्षणः परम्परया चतुर्गतिकोवा ससारो नैरयिकससार एवमन्येऽपि उक्तस्वरूपश्च संसार आयुषि सति भवतीति आयु' सूत्र तत्र एतिच यातिचे त्यायुः कर्म्मविशेष इति तत्र येन निरयभवे प्राणी ध्रियटे तन्निरयायु रेव मन्यान्यपि उक्तस्वरूपञ्चा युर्भवे स्थितिंकरोतोति भवसूत्रं कण्ठ्यं केवलं भवन भव उत्पत्ति निरये भवो निरयभवो मनुष्येषु मनुष्याणां वा भवो मनुष्यभव एव मन्यावपि भवेषुच सर्वेष्वा हा रकाजीवा इत्याहारकसूत्रे तत्राह्नियते इत्याहारः अश्यतइत्य शन मोदनादि पीयतइति पान सौवीरादि खादः प्रयोजन मस्येति खादिम फलवर्गादि

करेइ देवेसु उववज्जइ । चउव्विहे संसारे प० तं० णेरइयसंसारे जाव देवसंसारे । चउव्विहे आउए प० तं० णेरइयआउए जाव देवाउए । चउव्विहे भवे प० तं० णेरइयभवे जाव देवभवे । चउव्विहे आहारे प० तं०

सारवधे ते च्यार भेद संसारकह्यो तेकहेछे ॥ नारकीसंसार १ । यावत् तिर्य २ । मनुष्य ३ । अनेदेवतासंसार ४ ॥ च्यार प्रकारनुं आउखुं कह्यो तेकहेछे । नारकीनुं आउखुं १ । यावत् देवतानुं आउखुं ४ ॥ आर भेद भव कह्या तेकहेछे ॥ नारकीनुं भव १ एम यावत् देवतानुं भव ॥ च्यार भेद आहार कह्यो ते कहेछे । पूर्वोक्त च्यार गतिमां आहार छे तेमांठे आहारनुं सूत्र कहेछे । अशन अन्नादि सूंखडी प्रमुख १ । पाणी सौवीस

स्वादः प्रयोजन मस्येति स्वादिमं ताम्बूलादि उपस्क्रियते नेने त्युपस्कारो हिंग्वादि स्तेन सम्पन्नो युक्त उपस्कारसम्पन्न स्तथा उपस्कारण मुपस्कृतं पाक इत्य र्थं स्तेन सम्पन्न ओदनमण्डकादि उपस्कृतसम्पन्नः पाठान्तरेण नो उपस्कारसम्पन्नो हिग्वादिभि रसंस्कृत ओदनादिः स्वभावेन पाकं विना सम्पन्न. सिद्धः द्राक्षादि' स्वभावसम्पन्नः ॥ परिभुसियन्ति ॥ पर्युषितं रात्रिपरिवसन तेन सम्पन्न. पर्युषितसम्पन्नः इड्डरिकादिः यत स्तापर्युषितकललनीकृता आम्लरसाः भवन्ति आरमनाख्यितामफलादिर्वेति अनन्तरोदिताः ससारादयो भावाः कर्मवताभवन्तीति ॥ चउव्विहेबधेत्यादि ॥ कर्मप्रकरण मारादेकाकसूत्रा प्रक ट चैतत् नवर सकषायत्वात् जौवस्य कर्मणो योग्याना पुद्गलाना वन्धन मादान वध स्तच्च कर्मणः प्रकृतयो शा भेदा ज्ञानावरणीयादयो ऽष्टौ तासा मक्ष तेवा अविशेषितस्या कर्मणो बन्धः प्रकृतिबन्ध स्तथा स्थिति स्तासा मेवा वस्थान जघन्यादिभेदभिन्न तस्याः बन्धो निवर्त्तन स्थितिबन्ध स्तथा अनुभागो वि

असणे पाणे खाइमे साइमे । चउव्विहे आहारे प० त० उवक्करसंपन्ने उवक्कडसंपन्ने सन्नावसंपन्ने परि कुसियसपन्ने । चउव्विहे बंधे प० त० पगइबंधे ठिइबंधे अणुन्नावबंधे पएसबंधे । चउव्विहे उवक्कमे प०

दिक २ । खादिम फलफलादि ३ । स्वादिम पान सुपारी लवंगादि ४ ॥ वली च्यार प्रकारनुं आहार कह्यो तेकहेछे उपस्करसंपन्न अग्निमा पाक्यो अन्नमाडादि १ । अथवा नोपस्करसपन्न तेहिग्वादि संस्कार रहित ए पाठातर २ पर्युषित संपन्न तेवासीराखे रात्रिये नीपजे खाटोरस थाय आघो आवणादि ३ । स्वन्नावसंपन्न पाकादि वानी सिद्ध द्राक्षादि ४ ॥ च्यार प्रकारे कर्मनु बध कह्यो तेकहेछे । प्रकृति बंध ज्ञानावरणादि ८ कर्म प्रकृतिनो बंध १ । स्थितिबध तेकर्मनु कालमान २ । अनुन्नागबध तेकर्म प्रकृतिनो विपाक तीव्रादि रसबध ३ । प्रदेशबध जीव प्रदेशसाथे कर्म

पाक स्तीव्रादिभेदो रस इत्यर्थ स्तस्य बन्धो ऽनुभागबन्ध स्तथा जीवप्रदेशेषु कर्मप्रदेशाना मनन्तानां प्रतिप्रकृतिप्रतिनियतपरिमाणाना स्वन्धः सम्बन्धन सप्रदेशबधः परिमितप्रमाणगुडादिमोदकबधवदिति एवञ्च मोदकदृष्टात वर्णयन्ति वृद्धाः यथाकिल मोदकः कणिकागुडघृतकटुभांडादिद्रव्यवद्धः सन् कोपि वातहरः कोपि पित्तहरः कोपिमारकः कोपिवुद्धिकरः कोपिव्यामोहकरः एव कर्मप्रकृतिः काचित् ज्ञानमावृणोति काचित् दर्शनं काचित् सुखदुःखादि वेदन मुत्पादयतीति तथा तस्यैव मोदकस्य यथा ऽविनाशभावेन कालनियमरूपास्थिति र्भवति एव कर्मणोपि तदभावेन नियतकालावस्थान स्थितिवध स्तथा तस्यैव मोदकस्य यथा स्निग्धमधुरादि रेकगुणद्विगुणादिभावेन रसोभवति एव कर्मणोपि देशसर्वघातिशुभाशुभतीव्रमन्दादिरनुभाववंध स्तथा तस्यै वमोदकस्य यथा कणिकादिद्रव्याणा परिमाणवत्त्व एव कर्मणोपि पुद्गलानां प्रतिनियतप्रमाणता प्रदेशबधइति उपक्रम्यते क्रियते नेनेति उपक्रमः कर्मणो वद्धत्वोदीरितत्वादिना परिणमनहेतु र्जीवस्य शक्तिविशेषो यो न्यत्र करणमिति रूढः उपक्रमण चोपक्रमो बधनादीना मारम्भः स्यादारम्भउपक्रम इतिव

तं० बंधणोवक्कमे उदीरणोवक्कमे उवसामणोवक्कमे विप्परिणामनोवक्कमे। बंधणोवक्कमे चउव्विहे प० तं०

प्रदेशनुंबंध तेलाडूना दृष्टांतथी जिम मोदक कणिका गुड घृत सुंठयादि द्रव्यथी बाध्यो ते कोई वातहर कोईक पित्तहर कोईक कफहर कोई बुद्धि कर कोईक मोहमदकरतिम कर्म प्रकृतिनो स्वभाव कोईक ज्ञान आवरे कोईक दर्शन आवरे कोईक सुखदुःखादि ऊपजावे तिम तेहीज मोदकनी स्थितिनुं कालमान थाय तिमज कर्मनी पणि कालस्थितिले जिम मोदकनु स्निग्ध मधुरादिरस तिम कर्मनु पणि रस शुभाशुभादिले ते अनुभाग वध जिमते मोदकनु कणिकादि द्रव्यनुं परिमाण होय तिम कर्मना पणि पुद्गलनुं प्रमाणथाय तेप्रदेशबध ४ ॥ च्यार प्रकारे उपक्रम करीये कर्मवं धादि जेणे उपक्रम जीवशक्तिविशेष ते उपक्रम कहिये ॥ वधनोपक्रम जे जीव प्रदेश अने कर्मपुद्गलने मांहोमाहि सबंध करवो १। उदीरणोपक्रम

चनादिति तत्र बंधनं कर्मपुद्गलानां जीव प्रदेशानाञ्च परस्परं संबंधन मिदञ्च सूत्रमात्रबद्धलोहशलाकासंबंधोपम मवगंतव्यं तस्यो पक्रम उक्तार्थो बंधनोप क्रम आसकलितावस्थस्यवा कर्मणो बद्धावस्थीकरण सबधन तदेवो पक्रमो वस्तुपरिकर्मरूपो बधनोपक्रमो वस्तुपरिकर्म वस्तुविनाशरूपस्याप्यु पक्रमस्या भिहि तत्वादिति एव मन्यत्रापि नवर मप्राप्तकालफलानां कर्मणा मुदये प्रवेशन मुदीरणा उक्तञ्च जकरणेणोकट्टिय उदयेदिज्जइउदीरणाएसा। पगइट्ठियत्र णुभाग प्पएसमूलुत्तरविभागा ॥ १ ॥ तथा उदयोदीरणानिधत्तनिकाचनाकरणाना मयोग्यत्वेन कर्मणो वस्थापन मुपशमनेति उक्तञ्च उव्वट्टणओवट्टण सकमणाइचतत्थकरणाइति। उपशमनाया सतीति प्रक्रमः तथाविधैः प्रकारै. कर्म्मणा सत्तोदयचयचयोपशमोद्वर्त्तनापवर्त्तनादिभि रेतद्रूपतयेत्यर्थः गिरि सरिदुपलन्यायेन द्रव्यक्षेत्रादिभिर्वा करणविशेषेणवा अवस्थान्तरापादन विपरिणामना इहच विपरिणामनाबधनादिषु तदन्येष्व प्युदयादिष्व स्तीति सा मान्यरूपत्वात् भेदेनो क्तेति बंधनोपक्रमो बधनकरणं चतुर्द्धा तत्र प्रकृतिबधनस्यो पक्रमो जीवपरिणामो योगरूप स्तस्य प्रकृतिवधहेतुत्वा दिति स्थितिवध नस्यापि सएव नवरं कषायरूपः स्थितेः कषायहेतुकत्वादिति अनुभागबधनोपक्रमोपि परिणामएव नवर कषायरूपः प्रदेशबधनोपक्रमस्तु सएव योगरूप इति यत उक्तं जोगापयडिपएस ठिइअणुभागकसायओकुणइत्ति ॥ प्रकृत्यादिबधनाना मान्तर्मौहूर्त्तोनान्तःकोटीकोटीरूपारम्भावा उपक्रमाइति एव

पगइबंधणोवक्कमे ठिइबधणोवक्कमे अणुभावबंधणोवक्कमे पएसबंधणोवक्कमे। उदीरणावक्कमे चउव्विहे

ते उदयकालनथी आव्यो ते उदीरणाये कर्मने उदय आणवा ते २ उदयउदीरणा निधत्तनिकाचना करवायोग्य कर्मनुं थापवु ते उपशामनोपक्रम ३। द्रव्यक्षेत्रादिकरणविशेषे करी अवस्थांतरनुं करवुं ते विपरिणामनोपक्रम ४॥ शुभनाअशुभ अशुभनाशुभ करवा ॥ वंधनोपक्रम ते च्यार प्रकारे कह्यो

मन्यत्रापि यन्मूलप्रकृतीना मुत्तरप्रकृतीनांवा दलिकं वीर्यविशेषेण कृष्ठो दये दीयते सा प्रकृत्युदीरणेति वीर्यादेव या प्राप्तोदयया स्थित्या सहा प्राप्तोदया स्थितिरनुभूयते सा स्थित्युदीरणेति तथैव प्राप्तोदयेन रसेन सहा प्राप्तोदयो रसो यो वेद्यते सा ऽनुभागोदीरणेति तथा प्राप्तोदये नियतपरिमाणकर्मप्रदेशैः सहाप्राप्तोदयानां नियतपरिमाणाना कर्मप्रदेशानां यद्वेदन सा प्रदेशोदीरणेति इहापि कषाययोगरूपः परिणाम आरम्भोवो पक्रमार्थः प्रकृत्युपशमनोपक्र मादय श्चत्वारोपि सामान्योपशमनोपक्रमानुसारेणा वगन्तव्या प्रकृतिविपरिणामनोपक्रमादयोपि सामान्यविपरिणामनोपक्रमलक्षणानुसारेणा ववोद्ध व्याः उपक्रमस्तु प्रकृत्यादित्वेन पुद्गलाना परिणामनसमर्थं जीववीर्यमिति ॥ अप्पाबहुएत्ति ॥ अल्पञ्च स्तोकं बहुच प्रभूत मल्पबहु तद्भावो ल्पबहुत्वदीर्घत्वास

प० तं० पगइउदीरणोवक्कमे ठिइउदीरणोवक्कमे अणुभागउदीरणोवक्कमे पएसउदीरणोवक्कमे । उवसाम णोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइउवसामणोवक्कमे ठिइ अणुभाव पएस उवसामणोवक्कमे । विप्परिणाम नोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइ ठिइ अणुभाव पएस विप्परिणामनोवक्कमे । चउव्विहे अप्पाबहुए प० तं०

तेकहेछे ॥ प्रकृतिबंधनोपक्रम १ । स्थितिबंधनोपक्रम २ । अनुभागबंधनोपक्रम ३ । प्रदेशबंधनोपक्रम ४ । ए ४ उपक्रम कषाययोगरूप जाणवा एहथी उपक्रम उदीरणोपक्रम ते च्यार प्रकारे कह्यो तेकहेछे ॥ प्रकृतिउदीरणोपक्रम कषायथकीहीज थाय १ । स्थितिउदीरणोपक्रम आकर्षीने उद यआणवा २ । अनुभागउदीरणोपक्रम ३ । प्रदेशउदीरणोपक्रम ४ ॥ उपशामनोपक्रम ते च्यार प्रकार कह्यो तेकहेछे ॥ प्रकृतिउपशामनोपक्रम १ । यावत् स्थिति अनुभाग प्रदेश उपशामनोपक्रम ४ विपरिणामनोपक्रम च्यार प्रकारे कह्यो तेकहेछे ॥ प्रकृति १ । स्थिति २ । अनुभाग ३ । प्रदेशवि

युक्तत्वेच प्राकृतत्वादिति प्रकृतिविषय मल्पबहुत्व बधापेक्षया यथा सर्वस्तोकप्रकृतिबधक उपशान्तमोहादि रेकविधबधक उपशमकादिसूक्ष्मसम्पराय: षड्
विधबंधकत्वात् बहुतरबधक: सप्तविधबधक स्ततो ष्टविधबधकइति स्थितिविषय मल्पबहुत्व यथा सव्वत्थोवो सजयस्स जहन्नश्रो ठिइबधो एगिदियवाय
रपज्जत्तगस्स जहन्नश्रो ठिइबधो असखिज्जगुणो इत्यादि अनुभागप्रत्य ल्पबहुत्व यथा सव्वत्थोवाइ अणतगुणवुड्ढिठाणाणि असखेज्जगुणवुड्ढिठाणाणि अस
खिज्जगुणाणि सखिज्जगुणवुड्ढिठाणाणि असखिज्जगुणाइ जावअणतभागवुड्ढिठाणाणि असंखिज्जगुणाणि प्रदेशाल्पबहुत्व यथा अट्ठविहबधगस्स यश्राउयभा
गो थोवो नामगोयाण तुल्लो विसेसाहिश्रो नाणदसणावरणतरायाण तुल्लोविसेसाहिश्रो मोहस्स विसेसाहिश्रो वेयणिज्जस्स विसेसाहिश्रोत्ति याप्रकृति व
ध्नाति जीव स्तदनुभावेन प्रकृत्यतरस्थदलिक वीर्यविशेषेण यत्परिणामयति ससक्रम उक्तच सोसकमोत्तिभण्णइ जबधणपरिणश्रोपश्रोगेण पययतरत्थदलि
य परिणामइतदणुभवेजमित्ति ॥ १ ॥ तत्र प्रकृतिसक्रम: सामान्यलक्षणावगम्य एवेति मूलप्रकृतीना मुत्तरप्रकृतीनांवा स्थिते र्यदुत्कर्षणवा ऽपकर्षणवा प्रकृ

पगइअप्पाबहुए ठिइ अणुभाव पएस अप्पाबहुए । चउव्विहे संकमे प० तं० पगइसंकमे ठिइ अणुभाव

परिणामनोपक्रम ४ ॥ एकषाययोगथी थाय ॥ च्यार प्रकारे अलपबहुत्व कर्म आश्री कह्यो तेकहेछे । प्रकृति विषयनुं अलपबहुत्व बधादिकनी अपेक्षा
थी १ । स्थिति विषयनु अलपबहुत्व २ । अनुभागअलपबहुत्व ३ । प्रदेश अलपबहुत्व ४ ॥ जघन्यस्थितिबध सयतीने एकेंद्रीने बादरपर्याप्तने जघन्य
सख्यातगुणो सर्वथी थोडो अनुभाग रसबध सयतीने साधु थोडारसना कर्म बांधे तेहथी वधता असख्यात अनतगुणा थानक छे तिम प्रदेशना
अलपबहुत्वनो । आठ कर्मना बाधणहारने आयु प्रदेश बध थोडो नामगोत्र सरीखो काईक अधिको पणि ज्ञानदर्शनावरणी अंतरायनु तुल्य अधि
को पणि मोहनी वेदनानु विशेषाधिक ॥ च्यार भेदे संक्रम कह्यो तेकहेछे एक कर्म प्रकृतिमा वीजा कर्मनी प्रकृति परिणामे ते सक्रम कहिये ।

त्यतरस्थितौवा नयन सस्थितिसक्रम इति उक्तंच ठिइसकमोत्तिवुच्चइ मूलुत्तरपगइओयजाहिठिई उव्वट्टियाचओव ट्टियावपगईनियावन्नंति ॥१॥ अनुभाग सक्रमोप्येवमेव यदाह तत्थठ्ठपयंउव्व ट्टियावओवट्टियावअविभागा अणुभागसकमोए सोअन्नपगईनियावावित्ति ॥ १ ॥ अठ्ठपयति ॥ अनुभागसक्रमस्वरूपनि द्धारण ॥ अविभागत्ति॥ अनुभागा ॥ नियत्ति॥ नीताइति यत्कर्मद्रव्य मन्यप्रकृतिस्वभावेन परिणामेन परिणाम्यते सप्रदेशसक्रम उक्ताच्च जदलियमन्नपगई निज्जइसोसक्रमोपएसस्सत्ति निधान निहितवा निधत्त भावेकर्म्मणिवाक्तप्रत्यये निपातना दुद्वर्त्तनापवर्त्तनवर्जितानां शेषकरणाना मयोग्यत्वेन कर्म्मणो ऽव स्थापन मुच्यते नितरां काचन बधन निकाचित कर्म्मण: सर्वकरणाना मयोग्यत्वेना वस्थापन उक्तच्चोभयसवादि सकमणापिणिहत्ती पणत्थिसेसाणिव त्तिइपरस्सत्ति निकाचनाकरणस्येति अप्रवापूर्वबद्धस्यकर्मण स्त्रमसमीलितलोहशलाकासवधसमान निधत्त तत्समिलितसकुट्टितलोहशलाकासबधसमानं नि काचितमिति प्रकृत्यादिविशेष स्तूभयत्रापि सामान्यलक्षणानुसारेण नेयइति विशेषतो बन्धादिस्वरूपजिज्ञासुना कर्मप्रकृतिसग्रहणि रनुसरणीयेति इहा

पएस सक्रमे । चउव्विहे निधत्ते प० तं० पगइनिधत्ते ठिइ अणुभाव पएस निधत्ते । चउव्विहे निगाइए प० तं० पगइनिगाइए ठिइनिगाइए अणुभावनिगाइए पएसनिगाइए । चत्तारिक्का प० तं० दविएएक्काए मा

प्रकृतिसंक्रम १ । स्थिति अनुभाग प्रदेशसंक्रम ४ ॥ च्यार भेदे कर्मनुं निधत्त कह्यो तेकहेछे । लोहनी शलाका सोई एकठी काटें करी मली ते नि धत्त कहिये । तिमज कर्म प्रकृतिनिधत्त १ । स्थितिनिधत्त २ अनुभागनिधत्त ३ । प्रदेशनिधत्त ४ ॥ च्यार भेदे निकाचित कर्म कह्यो काटे मली लो हनी शलाका तेज तपावी कूटी तेसबधसमान कर्म निकाचित तेकहेछे । प्रकृतिनिकाचित १ । स्थितिनिकाचित २ । अनुभागनिकाचित ३ । प्रदेश

नन्तरमल्पबहुत्व सूत्रं तत्रा त्यतमल्प मेक शेषं त्वपेक्षया बहु इत्यल्पबहुत्वाभिधायिन एककतिसर्वशब्दां चतुःस्थानके वतारयन् ॥ चत्तारीत्यादि ॥ सूत्रद्वय
माह एकसङ्ख्योपेतानि द्रव्यादीनि स्वार्थिककप्रत्ययोपादाना देककानि तत्र द्रव्यमेवैकक द्रव्यैकक सचित्तादिभेदात् त्रिविधमिति ॥ माउयएक्कएत्ति ॥ मातृ
कापदैकक मेकं मातृकापद तद्यथा उप्पन्नेइवेत्यादि इह प्रवचने दृष्टिवादे समस्तनयवादबीजभूतानि मातृकापदानि भवति तद्यथा उप्पन्नेइवा विगमेइवा
धुवेइवेति प्रभूनिवा मातृकापदानीव अआदत्येवमादीनि सकलशब्दशास्त्रार्थव्यापारव्यापकत्वा न्मातृकापदानीति पर्यायैकक एकः पर्याय' पर्यायो विशे
षो धर्म इत्यनर्थान्तर सचानादिष्टो वर्णादिरादिष्टस्तु कृष्णादिरिति सग्रहैकक: शालिरिति अयमर्थसग्रहः समुदाय स्त माश्रित्यै कवचनगर्भशब्दप्रवृत्ति स्त
था चैकोपि शालिः शालि रित्युच्यते बहवोपि शालयः शालिरिति लोकेतथादर्शना दिति क्वचित्पाठः ॥ दविएएकएत्यादि ॥ तत्र द्रव्ये विषयभूते एकक
इत्यादि व्याख्येयमिति कतीति प्रश्नगर्भापरिच्छेदवत् सङ्ख्यावचनो बहुवचनात स्तत्र द्रव्याणिच तानि कतिच द्रव्यकति कतिद्रव्याणीत्यर्थः द्रव्यविषयोवा

उएक्कए पज्जवएक्कए संगहएक्कए । चत्तारि कई प० तजहा दवियकई माउयकई पज्जवकइ संगहकई । च

निकाचित ४ ॥ निकाचित जोगवाथीज छूटे ॥ पूर्वे अल्पबहुत्व कह्यो तिहा अत्यंत अल्प ते एकनी सङ्ख्यानु तेच्यार थानके कहेछे । च्यार एक
संख्याना जाणवा तेकहेछे द्रव्य एकछे ते सचित्त अचित्त मिश्र एह त्रण भेदे १ । मातृकापद एकछे सिद्धात मातृकापद उपन्नेवा विगमेवा धुवेवा
एह सिद्धातना बीज भूत अथवा अआ इत्यादि मातृकापद सर्व शास्त्रार्थ व्यापारमा व्यापकछे तेमाटे शास्त्रीयमातृका २। पर्याय एक ते वर्णादिधर्म
कालोरातो इत्यादि ३ । सग्रह एकछे तेसमुदाय आश्री वचन ते एक शालि इत्यादि तथा पणि एक शालि शालि कहवाये घणी शालि पिण शालि

कतिशब्दो द्रव्यकति एवं मातृकापदादिष्वपि नवरं संग्रहाः शालियवगोधूमा इत्यादि नामच तत्सर्वंच नामसर्वं सचेतनादेर्वा वस्तुनो यस्य सर्वमितिनाम तन्नामसर्वं नाम्नासर्वं सर्वमितिवा नामयस्येति विग्रहा नामशब्दस्यच पूर्वनिपात स्तथा स्थापनया सर्वमेतदिति कल्पनया अचादिद्रव्य सर्वं स्थापना सर्वं स्थापनैववा अचादिद्रव्यरूपा सर्वस्थापना सर्वं आदेशन मादेश उपचारो व्यवहारः सच बहुतरे प्रधानेवा दिश्यते देशेपि यथाविवचितं घृतमभिसमीच्य बहुतरे भुक्ते स्तोकेच शेषे उपचारः क्रियते सर्वं घृत भुक्तं प्रधाने प्युपचारः क्रियते यथा ग्रामप्रधानेषु गतेषु पुरुषेषु सर्वो ग्रामो गत इति व्यपदिश्यत इति अत आदेशतः सर्वं मादेशसर्वं उपचारसर्वमित्यर्थः तथा निरवशेषतया अपरिशेषव्यक्तिसमाश्रयेण सर्वं निरवशेषसर्वं यथा अनिमिषाः सर्वे देवा नहिदेव व्यक्ति रनिमिषत्व काचि द्व्यभिचरतीत्यर्थः सर्वत्र ककारः स्वार्थिको द्रष्टव्यः अनन्तरं सर्वं प्ररूपितं तत्प्रस्तावात् सर्वमनुष्यचेत्रपर्यन्तवर्त्तिनि पर्वते सर्वासुति र्यग्दिक्षु कूटानि प्ररूपयन्नाह ॥ माणुसुत्तरस्सेत्यादि ॥ स्फुट किन्तु ॥ चउद्दिसिति ॥ चतसृणां दिशा समाहार श्चतुर्दिक् तस्मि श्चतुर्दिशि अनुस्वारः प्राकृ

तारि सव्वा पन्नत्ता तंजहा णामसव्वए ठवणसव्वए आएससव्वए निरवसेससव्वए । माणुसुत्तरस्सणं पव्वयस्स

कहवाये ४ ॥ च्यार कति कह्या तेकहेछे । कतिकति ते केतलाळे इम वोलाय तेद्रव्यकति तेद्रव्य केतलाळे एम वोलवुं १ । मातृका पद केतलाळे इम कहवुं २ । पर्याय केतलाळे ३ । सग्रह केतलाळे शालि गोधूमनो समुदायते ४ ॥ च्यार सर्व ते सघला कह्या तेकहेछे । नाम सर्व ते सचेतन अचेतन वस्तु सघली नाम सहितछे १ । स्थापना सर्वते अचादि द्रव्य ते सर्व स्थापनाछे २ । आदेश सर्व ते जे घणी वस्तुने प्रधान वस्तुने विषे आदेश ३ । निरवशेष सर्व ते सर्व देवता मेषोन्मेष रहितछे एहमा कोई शेष रह्यो नही सहूइं एहवाछे ४ ॥ सर्वशब्दमाटे सर्वमनुष्यचेत्रने अंते मानुषोतर

तत्वादिति कूटानि शिखराणि इहच दिग्ग्रहणेपि विदिक्ष्विति द्रष्टव्यं तत्र दक्षिणपूर्वस्यां दिशि रत्नकूटं गरुडस्य वेणुदेवस्य निवासभूतं तथा दक्षिणा परस्या दिशि रत्नोच्चयकूटं वेलम्बसुखदमित्यपरनामकं वेलम्बस्य वायुकुमारेन्द्रस्य सम्बन्धि तथा पूर्वोत्तरस्यां दिशि सर्वरत्नकूटं वेणुदालिसुपर्णकुमारेन्द्रस्य तथा परोत्तरस्यां रत्नसंचयकूटं प्रभञ्जनापरनामकं प्रभञ्जनवायुकुमारेन्द्रस्येति एवचैतद्व्याख्यायते द्वीपसागरप्रज्ञप्तिसंग्रहण्यनुसारेण यतस्तत्रोक्तं दक्खिण पुव्वेणरयणं कूडंगरुलस्सवेणुदेवस्स । सव्वरयणंचपुव्वु त्तरेणतंवेणुदालिस्स ॥ १ ॥ रयणस्सअवरपासे तिण्णिविसमइच्छिऊणकूडाइं कूडंवेलंवस्साउ वेलंवसुहय सयाहोइ ॥ २ ॥ सव्वरयणस्सअवरे णतिण्णिसमइच्छिऊणकूडाइं । कूडंपभंजणस्साउ पभंजणआढियंहोइत्ति ॥ ३ ॥ इह चतुःस्थानकानुरोधेन चत्वा र्युक्ता न्य न्यथा अन्यान्यपि द्वादशसंति पूर्वदक्षिणापरोत्तरासु त्रीणि द्वादशापि चैकैकदेवाधिष्ठितानीति उक्तंच पुव्वेणतिन्निकूडा दाहिणओतिण्णितिण्णिअवरेण उत्तरओतिण्णिभवे चउद्दिसिमाणुसनगस्सत्ति ॥१॥ अनंतरं मानुषोत्तरे कूटद्रव्याणि प्ररूपितान्यधुना तेनावृतक्षेत्रद्रव्याणां चतुःस्थानकावतारं ॥ जंबूद्दीवेइ त्यादिना ॥ चत्तारिमंदरचूलियाओ॥ एतदंतेन ग्रंथेनाह व्यक्तं स्वाय नवरं चित्रकूटादीनां वक्षारपर्वतानां षोडशानामिदं स्वरूपं पंचसएवाणउए सोलस

चउद्दिसिं चत्तारि कूडा पण्णत्ता तंजहा रयणे रयणुच्चए सव्वरयणए रयणसंचए । जंबूद्दीवे भरहेरवएसुवासे सु तीयाए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीउ कालो होत्था । जंबूद्दीवे भरहेरवए

पर्वतळे तेहनुं स्वरूप कहेळे । मानुषोत्तर पर्वतने च्यारे दिशे च्यार कूटशिखर कह्या । रत्नकूट १ । पूर्वदक्षिणाविचे अग्निकूणे रत्नोच्चयकूट २ । सर्वरत्न कूट ३ । रत्नसंचयकूट ४ ॥ जंबूद्वीपनामेद्वीपविषे भरत ऐरवतक्षेत्रे गई उत्सर्पिणी कालने विषे पहिलो आरो सुखमसुखमा नामे च्यार कोडाकोडी

यसहस्सटीकलाश्रीय । बिजयावक्खारंतर नईणतहवणमुहायामीत्ति ॥ १ ॥ तथा जत्तोवासहरगिरी तत्तोजोयणसयंसमवगाढा । चत्तारिजोयणसए उ
व्विद्वासव्वरयणमया ॥ २ ॥ जत्तोपुणसलिलाश्रो तत्तोपचसयगाउउव्वेहा पचेवजोयणसए उव्विद्धाश्रासखंधणिभत्ति ॥ ३ ॥ विप्कम्भश्चैषामेवं विजयाणविक्ख

इमाए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोमाकोमीउ कालो होत्था । जंबूद्दीवेद्दीवे ञ्रा
गमिस्साए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोमाकोमीउ कालो नविस्सइ । जंबूद्दीवे
द्दीवे देवकुरुउत्तरकुरुवज्जाउ चत्तारि ञ्रकम्मनूमीउ प० तं० हेमवए हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे । तत्थ
ण चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वया पन्नत्ता तजहा सद्दावइ वियमावइ गंधावइ मालवंत परियाए । तत्थणं चत्ता
रि देवामहिड्ढिया जाव पलिउवमठिइया परिवसंति तंजहा साई पन्नासे ञ्ररुणे पउमे । जंबूद्दीवेद्दीवे महा

सागरोपमनो कालमाने थयो । जंबूद्वीपें नरत ऐरवतक्षेत्रें ए वर्त्तमान उत्सर्पिणीकालने विषे सुखमसुखमा नामे पहिलो आरो च्यार कोडाकोडि
सागरोपमनो थयो । जंबूद्वीपने विषे नरत ऐरवतक्षेत्रे अनागत आवती उत्सर्पिणीकाले सुखमसुखमा पहिलो आरो च्यार सागरोपम कोडाकोडि
नो कालमाने थास्ये । जंबूद्वीपने विषे देवकुरु उत्तरकुरु वरजीने च्यार अकर्मभूमी कही ते कहेछे ॥ हेमवंत १ । हैरण्यवत २ । हरिवर्ष ३ । रम्यक
वर्ष ४ ॥ च्यार वृत्त वाटला वैताढ्य पर्वत कह्या तेकहेछे । शब्दापाती १ । विकटापाती २ । गंधापाती ३ । मालयवंतपरियाय ४ ॥ तिहां च्यार
देवता मोटी रिद्धिना धणी रहेछे । पल्योपमनीस्थितिना धणी रहेछे ते कहेछे ॥ स्वाति १ । प्रन्नास २ । अरुण ३ । पद्म ४ ॥ जवद्वीपमे महाविदेह

भी वावीससयाइतेरसहियाइं पंचसएवक्खारापणवीससयंचसलिलाओत्ति ॥ १ ॥ पद्यते गम्यते इतिपदं सख्यास्थान तच्चा नेकधेति जघन्यं सर्वहीन पदं ज घन्यपद तत्र विचार्यं सत्यवश्य भावेन चत्वारोक्रदादयइति भूम्या भद्रशालवनं मेखलायुगलेच नदनसोमनसे शिखरे पंडकवनमिति अत्रगाथा वावीसस हस्साइ पुव्वावरमेरुभद्दसालवण आड्डाइज्जसयाउण दाहिणपासेयउत्तरओ ॥ १ ॥ पचेवजोयणसए उड्डगतूणपचसयपिहुल नदणवणसुमेरु परिक्खिवित्ताठि

विदेहेवासे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा । सव्वेविणं णिसढणीलवंत वासहरपव्वया चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं चत्तारिगाउयसयाइं उव्वेहेणं प० । जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीआएमहाणईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया प० तंजहा चित्तकूडे पम्हकूडे ण लिणकूडे एगसेले । जबूमदरपुरत्थिमेण सीआए महाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता तं० तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे । जंबूमदरपच्चत्थिमेणं सीतोआएमहाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खा

च्यारभेदे कह्या ते कहेछे । पूर्वविदेह १ । पश्चिमविदेह २ । देवकुरुमहाविदेह ३ । उत्तरकुरुमहाविदेह ४ ॥ एममहाविदेहक्षेत्रछे ॥ सघलाई निष धनीलवतनामे वर्षधर पर्वत च्यारसे योजन उचाछे । च्यारसे गाऊ उडा धरतीमा छे । जबूद्वीपे पूर्वदिशे शीतामोटी नदीछे तेहना उत्तरने तटे च्यार वक्खारापर्वतछे ते कहेछे । चित्रकूट १ । पद्मकूट २ । नलिनकूट ३ । एकशैलकूट ४ ॥ जबूद्वीपे मेरुथीपूर्वे शीतामोटी नदीने जीमणे तटे च्यारवक्खा रापर्वतछे ते कहेछे ॥ त्रिकूट १ । वैश्रमणकूट २ । अजन ३ । मातंजन ४ ॥ जबूद्वीपे मेरुथी पश्चिम शीतामोटीनदीने दक्षिणतटे च्यार वक्खारापर्वत

यंरम्म ॥ २ ॥ वासठ्ठिसहस्साइं पचेवसयाइं नंदणवणाओ उड्ढंगतूणवणं सोमणसंनंदणसरित्थ ॥ ३ ॥ सोमणसाओतीसं छच्चसहस्सेविलगिऊणगिरं विमलज

रपव्वया पसत्ता तंजहा अंकावई पम्हावई आसीविसे सुहावहे । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए उत्तरेकूले चत्तारि वरकारपव्वया प० तं० चंदपव्वए सूरपव्वए देवपव्वए णागपव्वए । जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउसुविदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया प० तं० सोमणसे विज्जुप्पभे गंधमायणे मालवते । जंबू द्दीवेद्दीवे महाविदेहेवासे जहन्नपए चत्तारि अरहता चत्तारि चक्कवट्टी चत्तारि बलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पज्जिसुवा उप्पज्जतिवा उप्पज्जिस्सतिवा । जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरेपव्वए चत्तारि वणा पसत्ता तंजहा भद्द सालवणे णंदणवणे सोमणसवणे पंडगवणे । जंबूमंदरपव्वय पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाउ प० तं०

कह्या ते कहेछे ॥ अंकावती १ । पद्मावती २ । आशीविष ३ । सुखावह ४ ॥ जंबुद्वीपे मेरुथी पश्चिम शीतानदीने उत्तर कावे तटे च्यार वक्खारापर्वत कह्या ते कहेछे चंद्रपर्वत १ । सूर्यपर्वत २ । देवपर्वत ३ । नागपर्वत ४ ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वतथी च्यारविदिशे च्यार वक्खारा पर्वत कह्या तेकहेछे ॥ विद्युत्प्रभ १ । सौमनस २ । गंधमादन ३ । माल्यवत ४ ॥ जंबूद्वीपे महाविदेहक्षेत्रे जघन्य पदे थोकातो च्यार अरिहंत होय च्यार चक्रवर्त्ति होय च्यार बलदेवहोय च्यार वासुदेवहोय अतीतकालेऊपना ऊपजेछे आगल उपजस्ये ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वतने विषे च्यार वनछे तेकहेछे ॥ भद्रशा लवन १ । नंदनवन २ । सोमनसवन ३ । पाडुकवन ४ ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वतनेविषे च्यार तीर्थंकरना जन्माभिषेकनी शिला कही तेकहेछे ॥ पांडुकवला

लपंडगहण भवद्दवणंपंडगसिहरे ॥ ४ ॥ पंचसारिजोयणसया चउणउयाचजआलमोरुंदं । इगतीसजोयणसया वावट्ठापरिरओतस्सत्ति ॥ ५ ॥ तीर्थंकराणा मभिषेकार्था शिला भिषेकशिला चूलिकायाः पूर्वदक्षिणापरोत्तरासु दिक्षु क्रमेण वगम्या इति ॥ उवरिंति ॥ अग्रे ॥ विक्ख भेणंति ॥ विस्तरेणेति यथा जंबूद्दीवे दीवे भरहेरवएसु इत्यादिभिः सूत्रैः कालादय चूलिकांता अभिहिता एव धातकीखंडस्य पूर्वार्द्धे पश्चिमार्द्धे एव पुष्करार्द्धस्यापि पूर्वार्द्धे पश्चिमार्द्धेच वाच्या एकामेरुसंबद्धवक्तव्यताया शतुर्ष्वप्यन्येषु समानत्वा देतदेवाह ॥ एवमित्यादि ॥ असुमेवा तिदेश संग्रहगाथयाह ॥ जंबूद्दीवेत्यादि ॥ जंबूद्दीपस्येदं जंबूद्दीपका तवा गच्छतीति जंबूद्दीपगं जंबूद्दीपे यदिति क्वचित्पाठे ऽवसंभाशिला द्वाच्यत्वाद्वा वक्ष्यक जंबूद्दीपगतावश्यकाया वस्तुजातं तुःपूरणे किमादि किम तेचेत्वाद कालात् सुसमसुसमालक्षणा दारभ्य चूलिका मंदरचूलिकां यावत् यत्त दिति गम्यते धातकीखण्डे पुष्करवरे द्वीपेच यौ पूर्वापरौपार्श्वौ प्रत्येक

पंडुकंबलसिला अतिपंडुकंबलसिला रत्तकंबलसिला अतिरत्तकंबलसिला । मंदरचूलियाणं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण पण्णत्ता एवं धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धेवि काल आइंकरित्ता जाव मंदरचूलियत्ति एवं जाव पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति । जंबूद्दीवगआवस्सगतुकालाउ चूलियधायइखंडे

शिला १ । अतिपांडुकंबलाशिला २ । रक्तकंबलाशिला ३ । अतिरक्तकंबलाशिला ४ ॥ मेरुपर्वतनी चूलिकानुं ऊपर च्यार योजन विष्कंभ पिहुलप णो कह्यो ॥ इमधातकीखंडद्वीपना पूर्वार्द्धनेविषे कालमान आदिदेईने यावत् मेरुनी चूलिकाताईं जंबूद्वीपनीपरेजाणवुं ॥ इम यावत् पुष्करवरद्वीप पश्चिमार्द्धथकीमांडी यावत् मेरुचूलिकालगे जाणवुं ॥ जंबूद्वीपने विषे उत्सर्पिणी कालमानथीमांडी चूलिकालगेजिमकह्यो तिम यावत् धातकीखंड

पूर्वार्द्धमपरार्द्धंच तयोः पूर्वापरेषु वर्षेषुवा चेवेष्वन्यूनाधिकं द्रष्टव्यमितिशेषइति विजयादीनि क्रमेण पूर्वादिदिक्षु विष्कम्भो द्वारशाखयो रंतरंप्रवेशः कुड्यस्थूलत्व मष्टयोजनान्युच्चत्वमिति उक्तंच चउजोयणविच्छिन्ना अट्ठेवयजोयणाणिउव्विद्धा । उभओविकोसकोस कुड्डावाहल्लओतेसिंति ॥ १ ॥ [क्रोशंशाखावाहल्यमित्यर्थः] पलिओवमट्ठिईया सुरगणपरिवारियासदेवीया एएसुदारनामा वसंतिदेवामहिड्ढीयत्ति ॥ २ ॥ चुल्लहिमवंतस्सत्ति ॥ महाहिमवदपेक्षया लघो र्हिमवत स्तस्यहि प्राग्भागापरभागयोः प्रत्येक शाखाद्वय मस्तीत्युच्यते ॥ चउसुविदिसासु ॥ विदिक्षु पूर्वोत्तराद्यासु लवणसमुद्रमिति अवगाह्ये त्येतस्य द्वि

पुक्खरवरेयपुव्वावरेपासे जबूद्दीवस्सणद्दीवस्स चत्तारि दारा पन्नत्ता तंजहा विजए वेजयंते जयंते अपराजिए । तेण दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयचेव पवेसेणं पन्नत्ता । तत्थण चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिउवमठिइया परिवसति तंजहा विजए वेजयते जयते अपराजिए । जबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्सदाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्सवासहरपव्वयस्स चउसुविदिसासु लवणसमुद्द तिन्नितिन्नि जोयणसयाइं उ

पुष्करवरद्वीपना पूर्व पश्चिमने पासे जाणवुं ॥ जंबूद्वीपनामे द्वीपना कोटने च्यार बारणा कह्या तेकहेछे ॥ विजयद्वार १ । वैजयंतद्वार २ । जयंतद्वार ३ । अपराजितद्वार ४ ॥ तेदरवाजा च्यार योजनने माने चोडाछे तेतलाज ४ योजन प्रवेशेछे उचा ८ योजनछे तिहा च्यार देवता मोटी रिद्धिना धणी १ पल्योपमनी आउखानी स्थितिना वसेछे तेकहेछे ॥ विजयदेवता १ । वैजयतदेवता २ । जयतदेवता ३ । अपराजितदेवता ४ ॥ जबूद्वीपनामे द्वीपमां मेरुपर्वतथी दक्षिणदिशे चुल्लहिमवत नामे नान्हो वर्षधर पर्वतने च्यार दिशिने विषे लवणसमुद्रप्रति तीनतीनसे योजन अवगाहीने जइये तिहां

कर्मत्वा त्कर्मणि सप्तम्यर्थे द्वितीयेति त्रीणि त्रीणि योजनशता न्यवगाह्य तत्र ये शाखाविभागा वर्त्तते ॥ एत्यत्ति ॥ एतेषु शाखाविभागेषु अतरे मध्ये समुद्रस्य द्वीपा अथवा अतर परस्परविभाग स्तत्प्रधाना द्वीपा अंतरद्वीपा स्तत्र पूर्वोत्तराया मेकोरुकाभिधानो योजनशतत्रयायामविष्कम्भो द्वीप एव माभाषिकवैषाणिकलागूलिकद्वीपाअपि क्रमेणा ग्नेयीनैर्ऋतीवायव्याखिति चतुर्विधाइति समुदायापेक्षया नत्वे कैकस्मिन्निति अतः क्रमेणे ते योज्या द्वीपनामत. पुरुषाणा नामान्येव तेतु सर्वाङ्गोपाङ्गसुन्दरा दर्शने मनोरमा. स्वरूपतो नैकोरुकादय एवेति तथा एतेभ्य एव चत्वारियोजनशता न्यवगाह्य प्रतिवि

गाहेत्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तजहा एगरुअदीवे आभासिअदीवे वेसाणियदीवे णंगोलियदीवे तेसुण दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति एगूरुया आभासिया वेसाणिया णंगोलिया तेसिणं दीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्द चत्तारिचत्तारि जोयणसयाइ उगाहेत्ता एत्थणं चत्तारि अतरदीवा पन्नत्ता तं० हयकन्नदीवे गयकन्नदीवे गोकन्नदीवे सक्कुलिकन्नदीवे । तेसुणं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसति तं०

गजदत पर्वत ऊपरजईये एठिकाणे च्यार अतरद्वीप समुद्रमा कह्या ते कहेछे ॥ एकोरुकनामाद्वीप १ । आभासनामा २ । वैषाणिकद्वीप ३ । लागूलिकद्वीप ४ ॥ ते द्वीपनेविषे च्यार भेदना मनुष्यवसेछे द्वीपनेनामे मनुष्यना नामछे सर्वअग उपाग सुदर मनोहर दर्शनीय रूपछे ॥ एकोरुकमनुष्य १ । आभाषिकमनुष्य २ । वैषाणिकमनुष्य ३ । लागूलिकमनुष्य ४ ॥ तेद्वीपथी च्यार विदिशिनेविषे अग्नि १ । नेरित २ । वायु ३ । ईशान ४ नेविषे लवणसमुद्रप्रति च्यारच्यारसे योजन अवगाहीजे तिवारे एथानकेवली च्यार अतरद्वीपछे ते कहेछे ॥ हयकर्णद्वीप १ । गजकर्णद्वीप २ । गोकर्ण

दिक् चतुर्योजनशतायामविष्कम्भा द्वितीया श्चत्वारएव एव येषा यावदुत्तरं तेषां तावद्देवा याम विष्कम्भप्रमाणं यावत् सप्तमानां नवशता न्यन्तरतावद्देव च तत्प्रमाणमिति सर्वेप्यष्टाविंशति रेते एतन्मनुष्यास्तु युग्मप्रसवाः गल्योपमासख्येयभागायुषो ऽष्टधनुःशतोच्चा स्तथै रवतक्षेत्रत्रिभागकारिण. शिखरिणो प्येवमेव पूर्वोत्तरादिविदिक्षु क्रमेणै तन्नामकै वान्तरद्वीपाना मष्टाविंशति रिति श्रतरद्वीपप्रकरणार्थं संग्रहगाथा. चुल्लहिमवतपुव्वा वरेणविदिसासुसा गरतिसए। गतूणतरदीवा तिण्णिसएहोंतिविच्छिण्णा ॥ १ ॥ अउणावण्णनवसए किंचूणेपरिहिंण्सिमेनामा। एगूरुयआभासिय वेसाणीचेवलंगूली ॥ २ ॥ एएसिदीवाण परओचत्तारिजोयणसयाइ ओगाहिऊणलवण सपडिदिसिंचउसयपमाणा ॥ ३ ॥ चत्तारतरदीवा हयगयगोकन्नसंकुलीकन्ना एवपचसयाइ छसत्तअट्ठेवनवचेव ॥ ४ ॥ ओगाहिऊणलवण विक्खंभोगाहसरिसयाभणिया चउरो २ दीवा इमेहिंनामेहिनायव्वा ॥ ५ ॥ आयसगमेंढमुहा अओमुहागो

हयकन्ना गयकन्ना गोकन्ना सक्कुलिकन्ना । तेसिणं दीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्दं पंचपंच जोयणस याइ उगाहेत्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा पन्नत्ता तंजहा आयसमुहदीवे मेंढगमुहदीवे अउमुहदीवे गोमु

द्वीप ३ । शष्कुलीकर्णद्वीप ४॥ तेद्वीपने विषे च्यार जेदना मनुष्यवसेछै द्वीपनेनामे ते कहैछे ॥ हयकर्णा मनुष्ययुगल १ । गजकर्णामनुष्ययुगल २ । गो कर्णामनुष्ययुगल ३ । शष्कुलीकर्णामनुष्ययुगल ४ ॥ एच्यार द्वीपथी च्यार विदिशामे लवणसमुद्र प्रते पाचपाचसे योजन अवगाही जे एठिकाणें च्यार अंतरदीप कह्या तेकहैछे ॥ आयंसमुखदीप १ । मेंढमुखदीप २ । अयोमुखदीप ३ । गोमुखदीप ४ ॥ तेदीपनेविषै च्यार प्रकारना मनुष्यकह्या ते दीप ने नामथी जाणवा ॥ वली तेदीपथी च्यार विदिशिमे लवणसमुद्रप्रते छसेयोजनअगाहीजे इहां च्यार अंतरदीप कह्या ते कहैछे ॥ अश्वमुखदीप १ ।

मुहायचउरेते अस्समुहाहत्थिमुहा सीहमुहाचेववग्घमुहा ॥ ६ ॥ तत्तोयअस्सकणा हत्थिअकणाअकणपाउरणा । उक्कामुहमेहमुहा विज्जुमुहाविज्जुदंताय ७ ॥ घणदंतलठ्ठदंता निगूढदंतायसुद्धदताय । वासहरेसिहरंमिवि एवंचियअठ्ठवीसावि ॥ ८ ॥ अतरदीवेसुनरा धणुसयअठूसियासयामुइया । पालितिमि

हदीवे । तेसुणं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा जाणियव्वा । तेसिण दीवाण चउसुविदिसासु लवणसमुद्दं छ छ जोयणसयाइ उगाहेत्ता एत्थणं चत्तारि अतरदीवा पन्नत्ता तंजहा आसमुहदीवे हत्थिमुहदीवे सीहमुहदीवे वग्घमुहदीवे । तेसुणदीवेसु मणुस्सा जाणियव्वा । तेसिणदीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्दं सत्तसत्तजोय णसयाइं उगाहित्ता एत्थणं चत्तारि अतरदीवा प० तं० आसकन्नदीवे हत्थिकन्नदीवे अकन्नदीवे कन्नापा उरणदीवे। तेसुणंदीवेसु मणुया जाणियव्वा। तेसुणंदीवाणं चउसुविदिशासुलवणसमुद्दं अठअठ जोयणसयाइं उगाहित्ता एत्थण चत्तारि अतरदीवा प० तंजहा उक्कामुहदीवे मेहमुहदीवे विज्जुमुहदीवे विज्जुदतदीवे ।

हस्तिमुखदीप २ । सिंहमुखदीप ३ । व्याघ्रमुखदीप ४ ॥ ते दीपाने विषे मनुष्यजाणवा । तेदीपथी वली च्यार विदिशिने विषे लवणसमुद्रप्रतें सातसे योजन अवगाहीजे एथानके च्यार अंतरदीप कह्या तेकहेछे ॥ अश्वकर्णदीप १ । हस्तिकर्णदीप २ । अकर्णदीप ३ । कर्णप्रावर्णदीप ४ ॥ तेदीपनेविषे मनुष्यए ज च्यारप्रकारना जाणवा एकह्या तेहवा मुख कानछे ए मनुष्याने । तेदीपथी वली च्यार विदिशमे लवणसमुद्रप्रति आठ आठसे योजन अवगाहीजे इहा च्यार अतरदीप कह्या ते कहेछे ॥ उल्कामुखदीप १ । मेघमुखदीप २ । विद्युन्मुखदीप ३ । विद्युदंतदीप ४ । तेदीपनेविषे मनुष्यजाणवा । वली ते

तेसुणंदीवेसु मणुस्सा ज्ञाणियव्वा । तेसुणंदीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं णवणवजोयणसयाइं उगा हित्ता एत्यण चत्तारि ऋतरदीवा प० त० घणदंतदीवे लठदंतदीवे गूढदंतदीवे सुद्धदंतदीवे । तेसुणंदीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसति तं० घणदंता लठदता गूढदता सुद्धदंता । जवूद्दीवेद्दीवे मंदरस्सपव्वयस्स उत्तरेण सिहरिस्सवासहरपव्वयस्स चत्तारि चउसुविदिसासु लवणसमुद्द तिस्सितिस्सि जोयणसयाइं उगाहि त्ता एत्यणं चत्तारि ऋंतरदीवा पस्सत्ता तजहा एगरुयदीवे सेसंतहेव निरंवसेसं ज्ञाणियव्वं जाव सुद्धदता ।

दीपथी च्यार विदिशिनेविषे लवणसमुद्रप्रतें नवसे योजन अवगाहीजे एठिकाणे च्यार अंतर्दीप कह्या ते कहेछे ॥ घनदंतदीप १। लठदंतदीप २। गूढदतदीप ३। शुद्धदंतदीप ४॥ तेदीपने विषेमनुष्य ४ प्रकारनावसेछे ॥ घनदंतामनुष्य १। लठदता २। गूढदंता ३। शुद्धदंता ४॥ जंवूद्वीपनां मेरुथी उत्तरदिशे शिखरीनामे वर्षधरपर्वतनी एहनी परे च्यार विदिशासे च्यारशाखा निकलीछे॥ एह २८ दीप हिमवंत पर्वतनी समुद्रमा पूर्वदिशि पश्चिमदिशि गजदताकारे बेबे शाखा नीकलीछे च्यार विदिशिये ते एकेक शाखामां सातसात दीपछे एम च्यार शाखाऊपरना सर्व मली २८ थया तिहा युगलिया वसेछे तेहनुं पल्योपमने असख्यातमे ज्ञागे आऊखोछे आठसेधनुष ऊची कायाछे ६४ पांसली छे उन्नासीदिन छोरूनी पालना चतुर्थज्ञक्ते आहार लेछे ॥ लवणसमुद्रप्रतें तीनतीनसे योजन अवगाहीने जईये इहा च्यार अतरदीप कह्या ते कहेछे ॥ एकोरुकदीप १। शेषसर्वे तिमज निर्विशेषपणे जाणवुं यावत् शुद्धदंत दीप लगे । तिम २८ दीप शिखरीपर्वतनी शाखा च्यार छे मनुष्यनाम सर्व इमज छे ए ५६ अतर दीप कह्यां जवूद्वीपनी बाहिरली वेदिकाथी च्यारों दिशि लवण समुद्र प्रति पचाणु हजार योजन अवगाहीने एथानके मोटामाहि मोटा महामोटामोटा अलं

हणधम्मं पल्लस्स असंखभागाओ ॥ ९ ॥ चउसट्ठिपिट्ठिकरंडगाणिमणुयाणवच्चपालणया अउणासीइंतुदिणा चउत्थभत्तेणआहारोत्ति ॥ १० ॥ एत्थणंति ॥ मध्ये
मेषु दशसु योजनसहस्रेसु महामहान्तइति यथाक्रमं समयभाषया महइमहालयाइत्युक्ता महच्चतदरंजरंच अरंजरं उदककुंभ इत्यर्थः महारंजर तस्य संस्थानेन
संस्थिता ये ते तदाकाराइत्यर्थः महांत स्यादन्यक्षुल्लकव्यवच्छेदेन पातालमिव गाधत्वात् गम्भीरत्वा त्पातालाः पातालस्थवस्थितत्वात्ता पायाला महान्तश्च
ते पातालाश्चेति महापातालाः वडवामुखः केतुको यूपक ईश्वरश्चेति क्रमेण पूर्वादिदिक्षु इति एतेच मुखे मूलेच दशसहस्राणि योजनानां मध्ये उद्वेधे
नच लक्षमिति एषां सुपरितनभागे जलमेव मध्ये वायुजले मूले वायुरेवेति एतन्निवासिनो देवा वायुकुमाराः कालादयइति इहगाथाः पणनउइस
हस्साइं ओगाहित्ताणचउद्दिसिलवणे चउरोलिंजरसंठाणसंठियाहोंतिपायाला ॥ १ ॥ वलयामुहकेऊए जूयगतहइस्सरेयबोधव्वे सव्ववइरामयाणं कुड्डा

जंबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स बाहिरिल्लाउवेइयाउ चउद्दिसिंलवणसमुद्दं पंचाणउयं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता एत्थ
ण महइमहालया महालिंजरसठाणसठिया चत्तारि महापायाला प० तं० बडवामुहे केउए यूवए ईसरे ।
तत्थणं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिउवमठिइया परिवसति तंजहा काले महाकाले वेलवे पभंजणे ।

जर ते उदकना कुंभ तेहने संस्थाने रह्याछे एहवा च्यार महापाताल कलश कह्या ते कहेछे वडवामुख पूर्वदिशिमा १ । केतु दक्षिण दिशिमां २ ।
यूपकपश्चिमदिशिमा ३ । ईश्वरउत्तरदिशिमा ४ ॥ तिहां च्यार देवता मोटीरिद्धिना धणी यावत् पल्योपमनीस्थितिना धणी वसेछे काल १ । महा
काल २ । वेलंब ३ । प्रभंजन ४ ॥ जंबूद्दीपनी बाहिरली वेदिकाथी च्यारदिशि लवणसमुद्रप्रति बेंयालीसहजार योजन अवगाहीने एठेकाणे वेलधर

एएसिदससइया ॥ २ ॥ जोयणसहस्सदसगं मूलेउवरिचहोंतिविच्छिसा मज्झेयसयसहस्स तत्तियमेत्तचओगाढा ॥ ३ ॥ पलिओवमठिईया एएसिअहि वईसुराइणमो कालेयमहाकाले वेलंबपभजणेचेव ॥ ४ ॥ असेवियपायाला खुड्डालिंजरगसठियालवणे अट्ठसयाचुलसीया सत्तसहस्सायसव्वेवि ॥ ५ ॥ जो यणसयविच्छिसा मूलुवरिदससयाणिमज्झमि ओगाढायसहस्स दसजोयणियायसिकुड्डा ॥ ६ ॥ पायालाणविभागा सव्वाणवितिसि २ वोधव्वा हेट्ठिमभा गे वाऊ मज्झेवाऊयउदगच ॥ ७ ॥ उवरिउदगभणियं पढमगवीएसुवायुसखुभिओ [वायुमेवमयतीत्यर्थ] उदगतेणयपरिओ परिवट्टइजलनिहीखुहिओ ८ ॥ परिसठियमिपवणे पुणरविउदगतमेवसठाण वच्चइतेणउदही परिहायइणुक्कमेणेवति ॥ ९ ॥ वेला लवणसमुद्रशिखा मन्तर्विशती वहिर्वायान्ती अग्रशि खाञ्च धारयन्तीति सञ्ज्ञाखा वेलन्धरा स्तेचते नागराजाश्च नागकुमारा वेलंधरनागराजा स्तेषा मावासपर्व्वता: पूर्वादिदिक्षु क्रमेण गोस्तूपादयो विदि क्षु पूर्वोत्तरादिषु वेलधराणा पश्चाद्वत्तयो नुनायकत्वेन नागराजा अनुवेलधरनागराजा वेलधरवक्तव्यता गाथा: दसजोयणसहस्सा लवणसिहाचक्कवाल

जंबूद्दीवस्स बाहिरिल्लाउ वेइयताउ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं उगाहित्ता एत्यणं चउ रहं वेलधरणागरायाण चत्तारि आवासपव्वया प० तं० गोथूभे दगभासे संखे दामे । तत्थण चत्तारि महि ड्ढिया जाव पलिउवमठिइया देवा परिवसति गोथूभे सिवए सखे मणोसिलए। जबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स बाहि

नाग राजाना एह समुद्रनी वेलावधती तथा बाहिर नीकलतीधरेळे तेहना च्यार आवास पर्वतळे ते कहेळे गोथूभ पर्वत पूर्वदिशिमा १ । शिव पर्वत दक्षिणदिशिमां २ । शख पर्वत पश्चिम दिशिमां ३ । मन शिलपर्वत उत्तरदिशिमा ४॥ जबूदीपनी बाहिरली बेदिकाना अतथी च्यार विदिशि

पोरुसा सोलससहस्सउच्चा सहस्समेगंतुओगाढा ॥ १ ॥ [समा भूभागादितिभावः] देसूणमद्धजोयण लवणसिहोउवरिदगंतुकालदुगे [द्विवाराणीत्यर्थः] अइरेगंअइरेगं परिवड्ढइहायएयावि ॥ २ ॥ अभितरियवेल धरंतिलवणोदहिस्सनागाण वायालीससहस्सा [प्रतविंशतीमित्यर्थः] दुसत्तरिसहस्सवाहिरियं २ ॥ [वहिर्गच्छन्तोमित्यर्थः] सट्ठिनागसहस्सा धरेंतिअग्गोदगं [शिखाग्रमित्यर्थः] समुद्दस्स वेलधरआवासा लवणेयचउद्दिसिचउरो ॥ ४ ॥ पुव्वाइअणुक्कमसो गोथुभदगभाससंखदगसोमा गोथुभसिवएसंखे मणोसिलेनागरायाणो ॥ ५ ॥ अणुवेलंधरवासा लवणेविदिसासुसंठियाचउरो कक्कोडेविज्जुपहे केलासरुणप्पभेचेव ॥ ६ ॥ कक्कोडयकद्दमए केलासरुणप्पभेयरायाणो वायालीससहस्से गंतुउदहिम्मिसव्वेवि ॥ ७ ॥ चत्तारिजोयणसए तीसेकोसचउग्गयाभूमो सत्तरसजोयणसए इगवोसेऊसियासव्वेत्ति ॥ ८ ॥ पभासिंसुत्ति ॥ चन्द्राणां सौम्यद्योतिकत्वात् वखुनभासन मुक्ता मादित्यानान्तु खररश्मित्वात् ॥ तवद

रिल्लाउ वेइयंताउ चउसुविदिसासु लवणसमुद्दं बायालीसबायालीसं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता एत्थणं चउरो अणुवेलधरणागराईणं चत्तारि आवासपव्वया प० त० कक्कोडए विज्जुजिब्भे केलासे अरुणप्पभे। तत्थण चत्तारि महिड्ढिया जाव पलिउवमठिईया देवा परिवसंति कक्कोडए कद्दमए केलासे अरुणप्पभे। लव

नेविषे लवणसमुद्रप्रति बेतालीस बेतालीस हजार योजन अवगाहीने एथानके च्यार अनुवेलधर जे वेलंधरने पछी समुद्रनी वेला प्रतें राखे ते नागराजाना च्यार आवास पर्वत कह्या ते कहेछे ॥ कर्कोटक १। विद्युत्प्रभ २। कैलाश ३। अरुणप्रभ ४॥ तिहां च्यार देवता मोटीरिद्धिना धणी यावत् पल्योपमनी स्थितिना वसेछे ते कहेछे ॥ कर्कोटक १। कर्दम २। कैलाश ३। अरुणप्रभ ४॥ लवण समुद्रमां ४ चंद्रमा अतीतकाले प्रकाशतां

सुत्ति ॥ तापनमुक्तमिति चतु'सख्यत्वा चन्द्राणां तत्परिवारस्यापि नक्षत्रादे श्वतु:संख्यत्व मेवेत्याह चतस्र: कृत्तिका नक्षत्रापेक्षया नतु तारकापेक्षयेति एव मष्टाविंशतिरपि अग्निरिति कृत्तिकानक्षत्रस्य देवता याव यमइति भरण्या देवता अगारक आद्यो ग्रह: भावकेतु रित्यष्टाशीतितमइति शेषं यथा द्वि स्थानके समुद्रद्वाराणि जम्बूद्वीपद्वारादिव दिति चक्रवालस्य वलयस्य विष्कम्भो विस्तर. जम्बूद्वोपा इहि धातकीखण्डपुष्करार्द्वयोरित्यर्थ: शब्दोपलक्षित उद्दे शक शब्दोद्दिशकी द्विस्थानकस्य तृतीयइत्यर्थ: केवल तत्र द्विस्थानकानुरोधेन दोभरद्वाइ इत्याद्युक्त मिहतु चत्तारीत्यादि उक्त मनुष्यक्षेत्रवस्तूनां चतु:स्थान

णेणंसमुद्दे चत्तारि चदा पन्नासिंसुवा पन्नासितिवा पन्नासिस्संतिवा । चत्तारि सूरिया तविंसुवा तवंतिवा तविस्संतिवा । चत्तारि कत्तियाउ जाव चत्तारि भरणीउ । चत्तारि अग्गी जाव चत्तारि जमा । चत्तारि अगारया जाव चत्तारि भावकेऊ । लवणस्सणंसमुद्दस्स चत्तारि दारा पन्नत्ता तजहा विजए वेजयंते जयं

हवा १ । प्रकाशकरस्ये अनागतकाले २ । प्रकाशकरेछे वर्त्तमानकाले ३ । एहशाश्वतभावछे ४ ॥ तिमज ४ सूर्य तपलाहुवा तपस्यें तपेछे ॥ हिवे चद्रसूर्यनुं परिवार कहेछे ॥ च्यार कत्तिका नक्षत्रछे यावत् अठावीसमो भरणी नक्षत्रआवे तिहालगे च्यारच्यार नक्षत्र कहवा ॥ हिवे नक्षत्रना देवता कहेछे कृत्तिकाना देवता च्यार अग्नि एम यावत् भरणी नक्षत्रना देवता च्यार यम होय तिहा लगे च्यारच्यार देवता कहवा॥ हिवे ८८ ग्रह कहेछे अगारक४ छे एम यावत् च्यार भावकेतुग्रह लगे सर्व च्यारच्यार कहवा भावकेतु अठासीमा छेहलो ग्रहछे ॥ लवण समुद्रमा च्यार दरवाजा बारणा कह्या तेकहेछे ॥ विजय १ । वेजयंत २ । जयंत ३ । अपराजित ४ ॥ ते बारणा ४ योजन विष्कम्भ पिहुलपणेछे तेतलाज लाबपणे छे । तिहां च्यार देवता

क मधुना चैत्रसाधर्म्यो ऽनन्दीश्वरद्वीपवस्तूना मासत्यसूत्रा चतुस्थानकं ॥ नदीसरस्सेत्यादिना ॥ अथैनाह सत्रसिद्ध आयं केवल जबू १ लवणेधायइ २ का लोय पुक्खराद्द ३ जुयलाइ । वारुणि ४ खीर ५ घय ६ क्खू ७ नदीसर ८ अरुण ९ दीवुदही ॥ १ ॥ इति गणनया ऽष्टमो नदीश्वरः सएव वरस्त्र मनुष्य द्वोपा पेक्षया बहुतरजिनभवनादिसद्भावेन तस्य वरत्वा दिति तस्य चक्रवालविष्कम्भस्य प्रमाण ६३८४००००० उक्तञ्च तेवड्डिकोडिसय चउरासीइसयसह स्साइ नदीसरवरदीवो विक्खभोचक्कवालेणमिति ॥ १ ॥ मध्य श्वासौ देशभाग श्च देशावयवो देशमध्यभागः सचा नात्यंतिक इति बहुमध्यदेशभागो न प्रवे शादिपरिगणनया निष्टकितो पितु प्रायइति अथवा अत्यत मध्यदेशभागो बहुमध्यदेशभाग इति तत्र इहा ञ्जनका मूले दशयोजनसहस्राणि विष्कम्भेणे

ते अपराजिए । तेणंदारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयचेव पवेसेण पसत्ता । तत्थणं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसति त० विजए जाव अपराजिए । धायइखंडेणदीवे चत्तारि जो यणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण प० जंबूद्दीवस्सणद्दीवस्स बहिया चत्तारि भरहाइ चत्तारि एरवया इं एवंजहा सद्दुद्देसए तहेव णिरवसेस भाणियव्वं जाव चत्तारि मंदरा चत्तारि मंदरचूलियाओण णदीसरवर

मोटी रिद्धिना यावत् १ पल्योपमनी स्थितिनाधणी वसेछे ते कहेछे ॥ विजय १ । वेजयंत २ । जयत ३ । अपराजित ४ ॥ धातकीखड दीप च्यार लाख योजन ४००००० चक्रवाल विष्कभपणे कह्यो । जबूदीपनामा दीपने वाहिर च्यार मेरुपर्वतनी चूलिकाछे एह बेधातकी खडमाछे वे पुष्करार्द्ध माछे । नंदीश्वर दीप ८ मां नोचक्रवालविष्कंभ पिहुलपणे ६३८४००००० विष्कम्भमान बहु अत्यत पूरो मध्यदेशनु भाग तेहमा पूर्वादिक च्यार दिशिमा

त्युक्त द्वीपसागरप्रज्ञप्तिसंग्रहण्यान्तूक्तं चुलसीइसहस्साइं उव्विद्धाउगयासहस्समुहो। धरणितलेविच्छिरणा ऊणगातेदससहस्सा ॥ १ ॥ नवचेवसहस्साइं पचेवयहोतिजोयणसयाइं। अजणगपव्वयाणं मूलंमिउहोइविक्खभो ॥ २ ॥ [कन्दस्येत्यर्थः] नवचेवसहस्साइ चत्तारियहोंतिजोयणसयाइ। अंजणगपव्वयाण धरणितलेहोइविक्खंभोत्ति ॥ ३ ॥ तदिदंमतान्तर मवसेय मेवमन्यत्रापि मतान्तरबीजानितुकेवलिगम्यानीति ॥ गोपुच्छसठाणेत्ति ॥ गोपुच्छो ह्यादौस्थूलो

स्सणंद्दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभाए चउद्दिसिं चत्तारि ऋंजणगपव्वया पण्णत्ता तंजहा पुरच्छि मिल्लेऋंजणगपव्वए पच्चत्थिमिल्लेऋंजणगपव्वए उत्तरिल्लेऋजणगपव्वए दाहिणिल्लेऋंजणगपव्वए। तेणंऋजणगपव्व या चउरासीइजोयणसहस्साइं उद्धंउच्चत्तेण एगंजोयणसहस्सं उव्वेहेणं मूलेदसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं त दणंतरंचणं मायाएमायाए परिहाएमाणा परिहाएमाणा उवरिमेगंजोयणसहस्स विक्खंभेणं प० मूले एक्क तीसेजोयणसहस्साइं छच्चतेवीसेजोयणसए परिक्खेवेणं उवरितिण्णिजोयणसहस्साइं एगंचबावठिजोयणसयं

च्यार अंजनक पर्वतछे ते कहेछे ॥ पूर्वदिशिमां एक अंजनक पर्वतछे १। बीजो दक्षिणदिशामां अंजनक पर्वतछे २। त्रीजो पश्चिम दिशामां अंजनक पर्वतछे ३। चौथो उत्तर दिशामां अजनकपर्वत ४ ॥ ते च्यार अंजनक पर्वत चोरासी हजार योजन ऊंचा ऊंचपणेछे एक हजार योजन ऊंडा धर रतीमाछे मूल कदमां दश हजार योजन विष्कंभपणे तिवार पछी थोडोथोडो हीनहीन पामते ऊपर एक हजार योजन विस्कंभपणे पिहुल पणे कह्या मूलमा एकत्रीस हजार छसे तेत्रीस योजन परिधि पाछलिफिरे तिवारे थाय ऊपरि त्रण हजार एकसो बासठि योजन परिधिछे मूलमा

न्ति सूक्ष्म स्वहत्तेपीति ॥ सव्वंजणामयत्ति ॥ अजनं कृष्णारत्नविशेषस्तन्मयाः सर्व्वएवा नन्यमयत्वेन सर्वथैवां जनमयाः सर्वाञ्जनमयाः परमकृष्णाइतिभावः ॥ उक्तंच भिंगगरुइदलकज्जल अंजणधाउसरिसाविरायति । गगणतलमणुलिहंता अंजणगापव्वयारम्मत्ति ॥ १ ॥ अच्छा आकाशस्फटिकावत् सच्छा अच्छापर माणुस्कन्धनिष्पन्नाः श्लक्ष्णादलनिष्पन्नपटवत् लण्हा श्लक्ष्णाः मसृणाइत्यर्थः घुण्टितपटव त्तथा घृष्टाइव घृष्टाः खरशाणया पाषाणप्रतिमावत् मृष्टाइव सृष्टाः सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेव शोधितावा प्रमार्जनिकयेव अनएव नीरजसः रजोरहितत्वा न्निर्मलाः कठिनमलाभावात् धौतवस्त्रवद्वा निष्पंका आर्द्र मलाभावा द्वकलङ्कत्वाद्वा निक्ककडच्छाया निष्कङ्कटत्वा निष्कवचा निरावरणेत्यर्थः च्छाया शोभा येषान्ते तथा अकलङ्कशोभावा सप्रभा दीयानन्दत्वा दिप्रभावयुक्ता अथवा स्वेन आत्मना प्रभान्ति न परत इति स्वप्रभाः यतः समरीचीया सह मरीचिभिः किरणै र्येते तथाविधा अतएव सउज्जोया सहो द्योतेन वस्तुप्रभासनेन वर्त्तन्ते येते तथा पासाईयत्ति प्रसादीया मनसः प्रसादकरा दर्शनीया स्तां चक्षुषा पश्यन्नपि न श्रमं गच्छती त्यर्थः अभिरूपाः कामनीयाः प्रतिरूपाः द्रष्टारं द्रष्टारंप्रति रमणीया इति यावच्छन्दसंग्रहः बहुसमा अत्यन्तसमा रमणीयाश्च ये ते तथा सिद्धानि शाश्वतानि सिद्धानांवा

परिक्खेवेणं मूलेविच्छिन्ना मज्झेसंखित्ता उप्पितणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सव्वअंजणगमया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसिणं अंजणगपव्वयाणं बहुसमरमणिज्जाभूमिभागा पन्नत्ता तेसिण बहुसमरमणिज्जाणंभूमिभा

विस्तीर्ण पिहुलाछे मध्यभागमा संक्षिप्तछे साकडाछे ऊपरि तनुसूक्ष्म पातलाछे गायना पूछने आकारें संस्थितछे आदिमा स्थूल मध्यमा साकडा अंतमा सूक्ष्म सघलाई रत्नमयछे अंजन कालारत्नाछे निर्मलछे यावत् प्रतिरूपछे जोनार सर्वेनें रमणीकलागे ते अंजन पर्वतने ऊपर घणुं सम

शाश्वताना मर्हत्प्रतिमाना मायतनानि स्थानानि सिद्धायतनानि उक्तञ्च अजणमपव्वयाणं सिहरितलेसुहवतिपत्तेयं । अरिहंतायणाइं सीहनिसायाइं तुगाइं ॥ १ ॥ मुखे द्वारे आयतनस्य मण्डपा मुखमण्डपाः पट्टशालारूपाः प्रेचा प्रेचणक तदर्थं गृहरूपा मण्डपाः प्रेचागृहमण्डपाः प्रसिद्धस्वरूपाः बहुरं

गाण बहुमज्झदेसभाए चत्तारि सिद्धायतणा प० । तेणंसिद्धायतणा एगंजोयणसयं आयामेणं प० पन्ना संजोयणाइ विक्खम्भेणं बावत्तरिजोयणाइं उहुंउच्चत्तेणं । तेसिणंसिद्धायतणाणं चउद्दिसिं चत्तारिदारा प० तंजहा देवदारे असुरदारे णागदारे सुवण्णदारे । तेसुणंदारेसु चउब्विहा देवा परिवसंति तंजहा देवा असु रा नागा सुवण्णा । तेसिणंदाराणं पुरउ चत्तारि मुहमंडवा प० । तेसिणं मुहमंडवाणं पुरउ चत्तारि पेच्छा

रमणीक सुदर भूमिभाग धरती कही ते बहुसम रमणीक भूमि भागनां मध्यदेशने विषे च्यार सिद्धायतन कह्या अरिहंतनी प्रतिमाना घर कह्या । ते सिद्धायतन १ सोयोजन आयाम लांबपणे पचासयोजन विष्कंभ पिहुलपणे बोहत्तरयोजन ऊचा ऊंचपणे ते सिद्धायतननी च्यार दिशामां च्यार दरवाजा बारणाळे पूर्व १ । पश्चिम २ । उत्तर ३ । दक्षिण ४ ॥ ते कहेछे पूर्वदिशामां देवद्वार । दक्षिण दिशमां असुर २ । पश्चिममा नागदरवाजो उत्तर दिशामां सुपर्ण दरवाजो ४ ॥ तेह दरवाजाने विषे च्यार प्रकारना देवतावसेछे ते कहेछे ॥ देव १ । असुर २ । नाग ३ । सुपर्णकुमार ४ ॥ ते बारणाने आगलि च्यार मुखमंडप कह्या मुखमडपने आगलि च्यार प्रेक्षाघर नाटक देखवाना घर कह्या । तेप्रेक्षाघरमडपनां बहु मध्यदेशनेविषे च्यार मणिरत्न पीठिका कही । तेमणि पीठिकाने ऊपर च्यार सिंहासन कह्या । ते सिंहासन ऊपर च्यार विजयदूष्य रत्नमय वस्त्रविशेष कह्या

वज्र रत्नविशेष स्तन्मया आखाटका: प्रेक्षाकारिजनाशनभूता: प्रतीता एव विजयदूष्याणि वितानकरूपाणि वस्त्राणि तन्मध्यभाग एवां कुशा अवलंबननि मित्त चन्द्रोपका: कुम्भो मुक्ताफलानां परिमाणतया विद्यते येषुतानि कुम्भिकानि मुक्तादामानि मुक्ताफलमाला: कुम्भप्रमाणंच दोअसई सपईओ दोपसईओ सेइया चत्तारिसेइयाओ कुडओ चत्तारिकुडवा पत्थो चत्तारिपत्थया आढय चत्तारिआढया दोणो सठ्ठोआढयाइ जहणोकुंभो असीइ मज्झिमो सय मुक्कोसो त्ति ॥ तदर्द्धेत्ति ॥ तेषामेव मुक्तादाम्ना मर्द्ध मुच्चत्वस्य प्रमाण येषान्तानि तदर्द्धोच्चत्वप्रमाणानि तान्येव तन्मात्राणि तै: ॥ अद्धकुंभिकेहिंति ॥ मुक्ताफलार्द्धकुंभव

घरमंडवा प० । तेसिणं पेच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झदेसभाए चत्तारि वइरामयाअक्खाडगा प० । तेसिणं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसं चत्तारि मणिपेढियाउ प० । तासिणंमणिपेढियाणं उवरिं चत्ता रि सीहासणा पण्णत्ता । तेसिण सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूसा प० । तेसिणं विजयदूसगाणं ब हुमज्झदेसभाए चत्तारि वइरामया अंकुसा प० । तेसिणं वइरामएसुअंकुसेसु चत्तारि कुंभिया मुत्तादामा प० । तेणंकुंभियामुत्तादामा पत्तेयं पत्तेयं अन्नेहिं तदद्धुच्चत्तपमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिएहिं मुत्तादामे

ते विजयदूष्यना मध्यभागमा च्यार वज्रमय अकुश अंकोडाळे । वज्रमय अकुशमा च्यार कुंभिका ते कुंभप्रमाण मोतीनी दाम मालाकही । ते मोतीनी माला प्रत्येके प्रत्येके तेहथी अर्द्ध प्रमाण उच्च एहवी अन्यचार अर्द्ध कुंभिकाप्रमाण मोतीनी मालाथी सर्वथा सर्वत चोफेर व्याप्तछे ते प्रेक्षाघरमंड पने आगलि चार मणिपीठिका कही । ते मणिपीठिकाने ऊपर च्यार २ चैत्यस्तूप कह्या । ते चैत्यस्तूपने च्यार दिशिमा प्रत्येके वली च्यार मणि

ङ्गिः सर्वतः सर्वासुदिक्षु किमुक्तम्भवति समन्तादिति चैत्यस्य सिद्धायतनस्य प्रत्यासन्नाः स्तूपाः प्रतीता श्चैत्यस्तूपा श्चित्ताह्लादकत्वाद्वा चैत्यस्तूपा श्चैत्यस्तूपाः सपर्यङ्कनिषण्णाः पद्मासननिषण्णा एवचैत्यवृक्षाश्रपि महेन्द्रा इत्यतिमहान्तः समयभाषया तेच तेध्वजाश्चेति अथवा महेन्द्रस्येव शक्रादे र्ध्वजा महेन्द्रध्वजा.

हिं सव्वउ समंतासंपरिक्खित्ता तेसिणं पेच्छाघरमंडवाणं पुरउ चत्तारि मणिपीढिया पण्णत्ता । तासिणंमणि पेढियाण उवरिं चत्तारि चेइयथूभा प० । तेसिण चेइयथूभाणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढि याउ प० । तासिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाउ सव्वरयणामइयाउ सपलिअंकणिसण्णाउ थूभाभिमुहीउ चिठंति । तंजहा रिसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा । तेसिणंचेइयथूभाणं पुरउ चत्ता रि मणिपेढियाउ प० । तासिणं मणिपेढियाणं उवरि चत्तारि चेइयरुक्खा प० । तेसिणं चेइयरुक्खाणं पुरउ चत्तारि मणिपेढियाउ प० । तासिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया प० तेसिणं महिं

पीठिका कही ते मणिपीठिकाने ऊपर च्यार जिनप्रतिमाछे सर्व रत्नमयछे पर्यंकासन बैठीछे तेस्तूपने सन्मुख साह्मी रहीछे । रिषभ वर्द्धमान चंद्रा नन वारिषेण एहनामनी प्रतिमाछे । तेहस्तूपने आगलवली च्यार मणिपीठिका कही ते मणिपीठिकाने ऊपर च्यार चैत्यवृक्ष कह्या तेरत्नमयछे । ते चैत्यवृक्षने आगलिवली च्यार मणिपीठिका कही । ते मणिपीठिकाने ऊपर च्यार मोटा महा इद्रध्वजछे । तेइद्रध्वजने आगलि च्यार नंदानामा पुष्करणी वावीकही सर्व पुस्करणी नंदा कहिये । ते पुस्करणीने च्यारों दिशिमां प्रत्येके च्यार वनखंड कह्या ते कहैछे पूर्वदिशिमां । दक्षिणादि

शाश्वतपुष्करिण्यः सर्वाअपि सामान्येन नन्दे त्युच्यते ॥ सत्तयगावर्णति ॥ सत्तच्छदवनमिति ॥ तिसोवाणपडिरूवगत्ति ॥ एकद्वारं प्रति निर्गमप्रवेशार्थं त्रिदि ॥

दक्खयाणं पुरउ चत्तारि णंदाउपुक्करणीउ प० । तासिणंपोक्करणीणं पत्तेयंपत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि वणखं

डा प० तंजहा पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेण उत्तरेणं । पुव्वेणअसोगवणं दाहिणउहोंतिसत्तिवण्णवणं ।

अवरेणचंपगवणं चूतवणंउत्तरेपासे ॥ १ ॥ तत्थण जेसे पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए तस्सणं चउद्दिसि चत्ता

रि णदा पोक्करणीउ पण्णत्ताउ तंजहा णदा णंदुत्तरा आणंदा णदिवद्धणा । तउणंणदापोक्करणीउ एगजो

यणसयसहस्सं आयामेणं पण्णासजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं दसजोयणसयाइं उव्वेहेण। तासिणं पोक्करणीणं

पत्तेयंपत्तेयं चउद्दिसि चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता तंजहा तेसिण तिसोवाणवडिरूवगाणं पुरउ

शिमा । पश्चिमदिशिमां । उत्तरदिशिमां ॥ पूर्वमा अशोकवृक्षनुंवन १ । दक्षिणदिशिमां सप्तच्छदसादडीवृक्षनुंवन २ । पश्चिमदिशे चंपकवन ३ । उत्तरदिशिमा आम्रवनछे ४ ॥ तिहां जे पूर्वदिशिनुं अंजणग पर्वतछे तेहने च्यार दिशिमा च्यार नदा पुस्करणी वावीकही ते कहेछे ॥ नंदोत्तरा १ नंदा २ । आनंदा ३ । नंदिवर्द्धना ४ ॥ तेनदा नामा पुस्करणी एकलाख योजन आयाम लांबपणोछे पचास हजार योजन विस्कंभपणे पिहुलीछे द शसे एतले १ हजार योजन ऊंडीछे । ते पुस्करणी वावीने प्रत्येके एकेकी वावीने त्रण सोपान प्रतिरूपक एतले त्रण दिशा साहमा त्रण बारणाछे तेहमां पेसवाने पावडियाछे । ते त्रण सोपान प्रतिरूपकने आगलि च्यार तोरणछे ते कहेछे ॥ पूर्वदिशिमा दक्षिणमा पश्चिममा उत्तरमां । ते पुस्क

चत्तारि तोरणा पसत्ता तंजहा पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं। तासिणं पोक्खरणीणं पत्तेयंप त्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि वणखन्ना पसत्ता तं० पुरउ दाहिणउ पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं। पुव्वेणअसोगवणं जाव चूयवणउत्तरेपासे। तासिणं पुक्खरणीण बहुमज्झदेसन्नाए चत्तारि दहिमुहगपव्वया पसत्ता। तेणंदहि मुहगपव्वया चउसट्ठिंजोयणसहस्साइं उद्धउच्चत्तेणं एगजोयणसहस्समुव्वेहेण सव्वत्थसमा पल्लगसठाणसठिया दसजोयणसहस्साइ विक्खन्नेणं एक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्चतेवीसजोयणसए परिक्केवेणं सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। तेसिण दहिमुहगपव्वयाण उवरि बहुसमरमणिज्जा भूमिन्नागा पसत्ता सेसंजहे

रणीने प्रत्येके २ च्यार दिशि च्यार वनखंडछे ते कहेछे पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशिमां पूर्वदिशिमां अशोकवन एम यावत् आम्रवनलगेकहे उत्त रदिशामा ४॥ ते पुस्करणीना बहुमध्य देशभागमा विचाले च्यार दधिमुखपर्वत कह्या दहीनीपरे ऊजलाछे ते दधिमुखपर्वत चोसठ हजार योजन ना ऊंचा ऊचपणे एक हजार योजन ऊडाछे वावीप्रमाणे सघले मूले शिखरे सरिखाछे पालाने संस्थाने आकारे संस्थितछे दशहजार योजन विस्कं न पिहुलपणेछे एक त्रीस हजार योजन ऊपरे छस्से त्रेवीस योजन परिक्षेपे परिधिछे सर्वरत्नमय ऊजलाछे निर्मलछे यावत् प्रतिरूप जोवा योग्य छे। ते दधिमुख पर्वतने ऊपरि सम रमणीक सुंदर भूमिभाग प्रदेशछे। शेष बीजु जिम अंजनक पर्वतनुं कह्यो तिमज जाणवु विशेष रहित जा णवु यावत् आम्रवन उत्तरने पासेछे। तिहां जे दक्षिदिशिनुं अंजनकपर्वतछे तेहने च्यारदिशे च्यार नंदा पुष्करिणी कही ते कहेछे॥ भद्रा १। विशाला २। कौमुदी ३। पुंडरीकिणी ४॥ ते च्यार नंदा पुष्करणी एकलाख योजन लांबपणेछे। शेष बीजु तिमज यावत् दधिमुख पर्वत यावत्

गभिमुखा स्तिस्र: सोपानपक्तयो दधिवत्श्वेत मुख शिरो रजतमयत्वा द्येषांति तथा उक्तञ्च सखदलविमलनिम्मल दहिघणगोक्खीरहारसकासा गगणतल ॥

व ञ्जंजणगपव्वयाणं तहेव णिरवसेसं ञाणियव्वं जाव चूञ्जवणंउत्तरेपासे । तत्थणं दाहिणिल्ले ञ्जंजणगपव्व
ए तस्सण चउद्दिसि चत्तारि णंदाउ पुक्खरणीउ पन्नत्ताउ तजहा ञद्दा विसाला कुमुया पोंडरीकिणी। ता
उणं णदाउ पोक्खरणीउ एक्कं जोयणसयसहस्स सेसंतचेव जाव दहिमुहगपव्वया जाव वणखंडा । तत्थणं
जेसे पञ्चत्थिमिल्ले ञ्जंजणगपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि णंदाउ पोक्खरणीउ पन्नत्ताउ तजहा णदिसेणा
ञ्जमोहा गोथूञा सुदसणा। सेसतचेव तहेव दहिमुहगपव्वया सिद्धाययणा जाव वणखंडा। तत्थणं जेसे उत्त
रिल्ले ञ्जंजणगपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि णंदाउ पोक्खरणीउ प० तं० विजया वेजयंती जयंती ञ्जपरा
जिया ताणं पोक्खरणीउ एगजोयणसय तचेवपमाण तहेव दहिमुहपव्वया तहेव सिद्धायञ्जणा जाव वणखंडा
णंदीसरवरस्सण द्दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स वज्झमज्झदेसञाए चउसुविदिसासु चत्तारि रतिकरगपव्वया

वनखंडलगे कहवु । तिहांवली जे पश्चिम दिशिनुं अंजन पर्वतछे तेहने च्यारदिशिमां च्यार पुष्करणी कही नंदिषेणा १ । अमोघा २ । गोस्तूभा ३ । सुदर्शना ४॥ शेषतिमज प्रथमनीपरे दधिमुखपर्वत तिमज सिद्धायतन यावत् नवखंड लगे जाणवा। तिहांवली जे उत्तरदिशिनुं अंजनकपर्वतछे तेहने च्यारदिशि च्यार नंदापुष्करणी कही ते कहेछे ॥ विजया १ । वेजयती २ । जयती ३ । अपराजिता ४ ॥ ते पुष्करणी एक लाख योजन लांबीछे ते

प० तं० उत्तरपुरच्छिमिल्लरतिकरगपव्वए दाहिणपुरच्छिमिल्लरतिकरगपव्वए दाहिणपच्चत्थिमिल्लरतिकरगपव्व
ए उत्तरपच्चत्थिमिल्लरतिकरगपव्वए । तेण रतिकरगपव्वया दसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण दसगाउयसयाइ
उव्वेहेणं सव्वत्थसमाय झल्लरिसंठाणसंठिया दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं एक्कतीसजोयणसहस्साइं छच्चतेवी
सेजोयणसए परिक्खेवेणं सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । तत्थणं जेसे उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरग
पव्वए तस्सणं चउद्दिसि ईसाणस्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबूद्दीवपमाणमेत्ताउ चत्तारि रायहाणीउ

हीज प्रमाण तिमज दधिमुखपर्वत तिमज सिद्धायतन यावत् वनखंड जाणवा । नंदीश्वरवरदीप चक्रवालवलय विष्कंभ तेहना बहुमध्य देशभागमां च्यारविदिशि च्यार रतिकर पर्वतछे रतिशाता सुखना करनारछे ते कहेछे ॥ उत्तर अने पूर्व दिशाने विचे रतिकर पर्वत ईशान विदिशिमाछे १ । दक्षिण अने पूर्वने विचे अग्निविदिशिमा बीजो रतिकर पर्वत २ । दक्षिणपश्चिमने विचाले नैरित विदिशिमां त्रीजो रतिकरपर्वत ३ । उत्तरप श्चिमने विचाले वायुविदिशिमा चौथो रतिकर पर्वतछे ४ ॥ ते रतिकर पर्वत १ हजार योजन ऊंचा ऊंचपणेछे । एक हजार कोश धरतीमाछे सघले ऊपर नीचे सम बराबरछे । झालरने सस्थाने संस्थितछे झालरजेहवु आकारछे दश हजार योजन पिहुलाछे । एकत्रीस हजार छस्से त्रेवीस योजन ३१६२३ परिधिछे । सर्व रत्नमयछे निर्मल यावत् देखवा योग्यछे । तिहां जे उत्तरपूर्वनेविचाले ईशाननुं रतिकरपर्वत तेहने च्यार दिशिमां ईशानेंद्र देवेंद्र देवताना राजानी च्यार अग्रमहिषीनी जंबूदीप प्रमाणे एकएक लाख योजननी ४ राजधानी कही ईशानेंद्र उत्तर लोकार्द्धनु स्वामीछे तेमाटे उत्तर पूर्वने विचाले अने उत्तर पश्चिम विचाले राजधानीछे तेकहेछे ॥ नंदा १ । नंदोत्तरा २ । उत्तरकुरा ३ । देवकुरा ४ ॥ इंद्राणीना नाम

मणुलिहंता सोहंतेदधिमुहारमत्ति ॥ १ ॥ बहुमध्यदेशभागे उत्कलचणे विदिक्षु पूर्वोत्तराद्यासु रतिकरणा द्रतिकराः ४ राजधान्यः क्रमेण कृष्णादीना मिन्द्रा णीनामिति तत्र दक्षिणलोकार्द्धनायकस्याच्छक्रस्य पूर्वदक्षिणदक्षिणापरविदिग्द्वयरतिकरयो स्तस्ये न्द्राणीनां राजधान्यः इतरयो रीशानस्यो त्तरलोकार्द्धा धिपतित्वा त्तस्येति एवच नन्दीश्वरे द्वीपे १६ अञ्जनकदधिमुखेषु विंशति जिनायतनानि भवन्ति अत्रच देवा श्चातुर्मासिकप्रतिपत्सु सांवत्सरिकेषु चान्येषु

पसत्ताउ तंजहा णंदोत्तरा णंदा उत्तरकुरा देवकुरा । कराहा राईए रामाए रामरक्खियाए । तत्थणं जेसेदा हिणपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्सणं चउद्दिसि सक्कस्सदेविंदस्स देवरस्सो चउराहमग्गमहिसीणं जबूद्दी वपमाणाउ चत्तारि रायहाणीउ पसत्ता तंजहा सुमणा सोमणसा अच्चिमाली मणोरमा । पउमाए सिवाए सुईए अंजूए । तत्थण जेसे दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्सणं चउद्दिसिं सक्कस्सदेविंदस्स देवरस्सो चउराहमग्गमहिसीणं जंबूद्दीवपमाणमेत्ताउ चत्तारि रायहाणीउ पसत्ताउ तंजहा चूया चूयवडिंसा गोथूत्रा

कहेंछे कृष्णा १ । राइ २ । रामा ३ । रामरक्षिता ४ ॥ तिहां जे दक्षिण पूर्व विचे अग्नि कूणमा रतिकर पर्वतछे तेहने च्यार दिशि शक्र देवेंद्र देवतानां राजानी च्यार अग्रमहिषीनी जबूद्वीप प्रमाण एतले १ लाख योजननी च्यार राजधानी कही तेकहेंछे समना १ । सौमनसा २ । अर्चिमा ली ३ । मनोरमा ४ ॥ इद्राणीना नाम कहेंछे पद्मा १ । शिवा २ । सुतीता ३ । अजू ४ ॥ तिहां जे दक्षिण पश्चिम विचेनैरित कूणमा रतिकर पर्वतछे तेहनी च्यार दिशि शक्र सौधर्मेंद्र देवेंद्र देवताना राजानी च्यार अग्रमहिषी नी एक १ लाख योजन प्रमाण च्यार राजधानीछे तेकहेंछे भूता १ ।

च बहुजिनजन्मादिषु देवकार्येषु समुदिता अष्टाह्निकामहिमाः कुर्वंतः सुखं सुखेन विहरंती त्युक्तं जीवाभिगमे ततो यद्यन्यान्यपि तथाविधानि संति सिद्धायतनानि तदानविरोधः सम्भवति च तानि उक्तनगरीषु विजयनगर्या मिवेति तथा दृश्यतेच पञ्चदशस्थानो दारलेशः सोलसदहिमुहसेला कुंदा मलसखचन्दसकासा कणयनिभावत्तीस रइकरगिरिवाहिरातेसि ॥ १ ॥ द्वयो द्वयो र्वाप्यो रतराले वहि ष्कोणयोः प्रत्यासन्नौ द्वौद्वावित्यर्थः अंजणगाइगिरीण नाणामणिपज्जलतसिहरेसु वावन्नजिणनिलया मणिरयणसहस्सकूडधरेत्ति ॥ १ ॥ तत्वतु बहुश्रुताविदतीति एतच्चपूर्वोक्तं सर्वं सत्य जिनोक्तत्वादिति सत्यसं

सुदसणा । अमलाए अच्छराए नवमियाए रोहिणीए । तत्थणं जेसे उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्स णं चउद्दिसि मीसाणस्स चउराहमग्गमहिसीण जबूद्दीवपमाणमेत्ताउ चत्तारि रायहाणीउ पन्नत्ताउ तंजहा रयणा रयणोच्चया सव्वरयणा रयणसंचया । वसुए वसुगुत्ताए वसुमित्ताए वसुंधराए । चउव्विहे सच्चे पन्नत्ते तंजहा णामसच्चे ठवणसच्चे दव्वसच्चे भावसच्चे । आजीवियाणं चउव्विहे तवे पन्नत्ते तंजहा उग्गतवे घोरत

भूतावतंसा २ । गोस्तूभा ३ । सुदर्शना ४ ॥ इंद्राणीना नाम कहेछे अमला १ । अप्सरा २ । नवमिका ३ । रोहिणी ४ ॥ तिहां जे उत्तर पश्चिम दिशि वायु कूणमां रतिकर पर्वतछे तेहनी च्यार दिशि ईशानेद्र देवेद्र देवताना राजानी च्यार अग्रमहिषीनी च्यार १ एक लाख योजन प्रमाणे च्यार राजधानी कही तेकहेछे रत्ना १ । रत्नोच्चया २ । सर्वरत्ना ३ । रत्नसंचया ४ ॥ इंद्राणीना नाम कहेछे वसू १ । वसुगुप्ता २ । वसुमित्रा ३ । वसुंधरा ४ ॥ च्यार प्रकारे सत्य साधु कह्यो तेकहेछे नाम सत्य ते रिषभादि नाम सत्यछे १ । स्थापनासत्य भगवंतनी प्रतिमा २ । द्रव्यसत्य जे जीव जिन थासे ३ ।

बधेन सत्यसूत्र नाम स्थापना सत्ये सुज्ञाने द्रव्यसत्य मनुपयुक्तस्य सत्यमपि भावसत्यंतु यत्स्वपरानुपरोधेन उपयुक्तस्येति सत्य चारित्रविशेषइति चारित्रवि
शेषानुद्देशकात यावदाह ॥ आजीविएत्यादि ॥ आजोविकाना गोसालकशिष्याणा उग्र तपो ऽष्टमादि क्वचन उरमितिपाठ स्तत्र उर शोभन इह लोकाद्या
शसारहितत्वेनेति घोर मात्मनिरपेच्चं॥ रसनिज्जुहणता ॥ घृतादिरसपरित्याग: जिह्वेंद्रियप्रतिसलीनता मनोज्ञामनोज्ञे ष्वाहारेषु रागद्वेषपरिहारइति आर्हे
तानान्तु द्वादशधेति मनोवाक्कायाना मकुशल त्वेन निरोधा: कुशलत्वेनतू दीरणानि सयमा उपकरणसयमो महामूल्यवस्त्रादिपरिहार: पुस्तकवस्त्र

बाहल्लेत्ति॥ बाहल्यं पिण्ड' पृथुत्व
विस्तार स्ताभ्या तुल्य' समान श्चतु

त्वणचर्मपचकपरिहारोवा तत्र गंडोकच्छविमुठ्ठी सपुडफलएतहाछिवाडीय एयपोत्थयपणग पणत्तंवीयरागेहि ॥ २ ॥ वाहल्लपुहुत्तेहि गडीपोत्थोयतुल्लओ

वे रसनिज्जुहणया जिभ्भिंदियपडिसलीणया । चउव्विहे संजमे पणत्ते तंजहा मणसजमे वयसंजमे कायसंज

भावसत्य ते प्रत्यच्च वैठा जिन ४ ॥ आजीविक गोसालक मतना शिष्य तेहना तप च्यार प्रकारें कह्या तेकहेछे उग्रतप ते अष्टमादिक तप १ । घोर
तप ते लोकसुखनी इच्छा रहित २ । रसनिज्जूहणा ते घृतादिरसनु त्याग ३ । जिह्वेंद्रियप्रतिसलीनता ते भला माठा आहारमा राग द्वेष नथी २४
अरिहत ने वारे भेदे तपछे ४ ॥ च्यार प्रकारनु सयमकह्यो माठा मन प्रमुखनी उदीरणानुं नियम कह्यो तेकहेछे मनसयम माठा मननु रुंधवु ते
हीज सयम १ । एम मांठा वचननु रोधवु ते वचनसंयम २ । कायसजम कायाथी पाप न करवु ते काय संयम ३ । उप करण सयम ते महा मूल्य वस्त्रा

रस्रो दीर्घश्च कच्छपीपुस्तक उन्नयो· पार्श्वयो रन्तपर्य चउरंगुलत्ति ॥ अंगुलचतुष्टयप्रमाणो दीर्घोवा आकृतो वृत्ताकृति वर्तुलाका ॥ संपुडगोत्ति ॥
न्तन्नागे तनुक· सूक्ष्मो मध्यन्नागे पृथुलो गण्डीपुस्तको रो मुष्ठिपुस्तको ऽथवा ऽगुलचतुष्कायाम श्चतुष्कोणो मुष्टिपुस्तक· ॥ ३ ॥ संपुटफलक
पुस्तको यत्र
ज्ञेयः ॥ विस्तृतो अल्पबाहल्यो ज्ञातव्यः ॥ २ ॥

दीहो कत्थविअंतेतणुओ मज्झेपिहुलोमुणेयव्वो ॥ २ ॥ चउरंगुलदीहोवा वट्टागिइमुट्ठिपोत्थओअहवा चउरंगुलदीहोच्चियचउरंसोसोउविण्णेओ ॥ ३ ॥ सपु

द्व्रादीनि फलकानि न्नवन्ति व ॥ छिवाडिएत्ति ॥ तनुन्नि· पत्रै रुच्छितरूपः
शिग्जनस्यो द्धारनिक्षेपार्दिरा किंचिदुन्नतो न्नवति च्छेदपाटीपुस्तक इति ॥
धार·सम्पुटकाख्यं करणविशेप·

डगोदुमगाई फलगावोत्थछिवाडिएताहे तणुपभूसियरूवा होइछिवाडीवुहावेंति ॥ ४ ॥ दोहोवाऊस्सोवा जोपिहुलोहोइअप्पवाहल्लो तंमुणियसमय

सारा छिवाडिपोत्थभणतीह ॥ ५ ॥ वस्त्रपचक द्विधा अप्रत्युपेक्षितदुःप्रतिपेक्षितभेदा त्तत्र अप्पडिलेहियदूसे चूलीउवहाणगचनायव्व गडुवहाणालिंगिणि

मसूरएचेवपोत्तमए पल्हविकोयवपावा रणवतएतहयदाढिगालोओ दुप्पडिलेहियदूसे एववीयभवेपणग ॥ २ ॥ पल्हविहत्थुत्थरण तुकोयओरूयपूरिओ

पडओ दढिगालोधोयपोत्तो सेसपसिद्वाभवेभेया ॥ ३ ॥ तणपणगपुणभणिय जिणेहिकम्मट्ठगठिमहणेहिं सालीवीहीकोद्दव रालगरन्नेतणाइंच ॥ ४ ॥ चर्मपंच

कमिद अयएलगायमहिसो मिगाणअजिणंतुपचमंहोइ तलियाखल्लगवज्झो कोसगकत्तीयवीयतुत्ति ॥ ५ ॥ वियाएत्ति ॥ त्यागो मनः प्रभृतीनां प्रतीतएव

अथवा मनःप्रभृतिभि रशनादि. साधुभ्यो दानं त्यागएव मुपकरणेन पात्रादिना भक्तादे स्तस्यवा त्याग उपकरणत्यागो न विद्यते किञ्चन द्रव्यजात अस्ये

त्यकिञ्चन स्तद्भावो ऽकिञ्चनता निष्परिग्रहितेत्यर्थः साच मनः प्रभृतिभि रुपकरणापेक्षया च भवतीति तथोक्ता ॥ इतिचतुःस्थानकस्यद्वितीयोद्देशकः स माप्त. ॥ २ ॥ व्याख्यातो द्वितीयउद्देशको ऽथतृतीय आरभ्यते ॥ अस्यच पूर्वेण सहा य मभिसंबधः पूर्वत्र जीवक्षेत्रपर्याया उक्ता इहतु जीवपर्या या उच्यंत इत्येव सम्बधस्यास्ये दमादिसूत्रद्वय ॥ चत्तारीत्यादि ॥ अस्यचा य मभिसम्बन्धः पूर्वं चारित्र मुक्ता तत्प्रतिबधकाश्च क्रोधादिभावइति क्रोधस्वरूपनि रूपणाये द मुच्यते तदेव सबधस्या स्य दृष्टातभूतादिसूत्रव्याख्या राजी रेखा शेष क्रोधव्याख्यान मायादिवत् मायादिप्रकरणा च्चान्यत्र क्रोधविचारो वि

मे उवकरणसंजमे । चउव्विहे वियाए पन्नत्ते तंजहा मणवियाए वइवियाए कायवियाए उवकरणवियाए चउव्विहा अकिंचणया पन्नत्ता तंजहा मणअकिंचणया वइअकिंचणया कायअकिंचणया उवकरणअकिंचण या ॥ चउत्थठाणस्स बीउ उद्देसउ सम्मत्तो ॥ २ ॥ चत्तारि राईउ पन्नत्ता तं० पव्वयराई पुढवि

दि परिहार ४ ॥ च्यार प्रकारे त्याग ते छाडवुं परिहरवुं तेकहेछे माठामननुं त्याग करवुं १ । मांठा वचन नु त्याग करवुं दुर्वलवचन असत्यवचन न वोलवुं २ । कायत्याग ते अनसनादिके काया वोसराववी ३ । उपकरण त्याग वस्त्रादि जीर्णथया अथवा परठवतां अथवा जिनकल्पी थावुं ४ ॥ च्यार प्रकारे अकिंचनता ते द्रव्य रहित थावुं कह्यो तेकहेछे मननी अकिंचनता ते उपकरण वस्त्रादि ऊपरि इच्छा न करे १ । वचनथी परिग्रहनी इच्छा नकरे परिग्रहार्थ वचननुं व्यापार न करे २ । कायाथी परिग्रहने अर्थे उदम नकरे ते कायअकिंचनता ३ । उपकरणअकिंचनता जीर्णप्राय वस्त्रादि राखे तथा जिनकल्पी थई वस्त्रपात्रादि नराखे ४ ॥ एह चौथा ठाणा नो बीजो उदेशो पूरो थयो ॥ २ ॥ हिवे त्रीजो लिखेछे।

चित्रलात्सूत्रगतं द्वितीयचसुगममेव ॥ अयच्च क्रोधो भावविशेषइति भावप्ररूपणाय दृष्टांतादि सूत्रद्वयमाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ प्रसिद्ध किन्तु कर्दमो यत्र प्रविष्टः पादादिनाक्रष्टु शक्यते कष्टेनवा शक्यते खञ्जन दीपादि खञ्जनतुल्य पादादिलेपकारी कर्दमविशेषएव वालुका प्रतीता सातु लग्नापि जलशोषे पादादे रल्पेनैव प्रयत्नेना पैतो त्यल्पलेपकारिणी शेनास्तु पाषाणाः स्त्रक्ष्णरूपा स्तेपादादेः स्पर्शनेनैव किंचित् दुःख मुत्पादयति नतु तथाविध लेप मुपजन

राई वालुयराई उदगराई । एवामेव चउव्विहे कोहे पण्णत्ते तजहा पव्वयराइसमाणे पुढविराइसमाणे वालुय राइसमाणे उदगराइसमाणे । पव्वयराइसमाण कोहमणुप्पविठे जीवे काल करेइ णेरइएसु उववज्जइ पुढवि राइसमाणं कोहमणुप्पविठे जीवे काल करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ वालुयराइसमाण कोह मणुप्पविठे

च्यार प्रकारे राई ते रेखा कही तेकहेछे पर्वतराई ते पर्वतनी रेखा १ । धरतीनी रेखा २ । वालूनी रेखा ३ । पाणीनी रेखा ४ ॥ एहनी परें च्यार प्रकारनु पुरुषने क्रोध कह्यो तेकहैछे पर्वतनीरेखा समान क्रोध जीवने नरक गामी १ । धरतीनीरेखा समान वरस लगिरहे ते २। वलूनीरेखासरिखो जेहने च्यारमासलगे क्रोध रहै ३ । पाणीनीरेखा सरिखो जेहने १५ दिन क्रोध रहै ४ ॥ पर्वतनी रेखासमान क्रोधमां पइठो जीव मरण पामें ते न रक माहि ऊपजे १ । पृथ्वीरेखासमान क्रोधे पैठो जीव मरी ने तीर्यच योनिमा ऊपजे २ । वालूनी रेखासमान क्रोधे अनुप्रविष्ट जीव ते सहित मरी मनुष्यमा ऊपजे ३ । पाणीनी रेखासमान क्रोधे अनुप्रविष्ट जीव मरी देवतामा उपजे ४ ॥ हिवे दृष्टात सूत्र कहेछे च्यार प्रकारे उदक पाणी कह्यो तेकहैछे कर्दमनु पाणी जेहमा पेठा पग कष्टथी काठी सके १ । खंजनोदक ते दीपकनी कालिका सरिखो कादव २ । वालू सहितपाणी सूकाय एतले

यंति कर्दमादिप्रधानान्युदकानि कर्दमोदकादीनीत्युच्यंते भावो जीवस्य रागादिपरिणाम स्तस्य कर्दमोदकादिसाम्य तत्स्वरूपानुसारेण कर्मलेप मंगीकृत्य मन्तव्यमिति अनन्तर भाव उक्तो ऽधुना तद्वतः पुरुषान् सदृष्टातान् ॥ चत्तारिपक्खीत्यादिना ॥ अत्थमियत्थमिए इत्येतदंतेन ॥ गथेनार्थ व्यक्त थाय नयर

जीवेकालंकरेई मणुस्सेसु उववज्जइ उदगराइसमाणं कोहमणुप्पविठे समाणेजीवेकालंकरेइ देवेसु उववज्जइ। चत्तारि उदगा प० तं० कद्दमोदए खजणोदए वालुदए सेलोदए। एवामेव चउव्विहे ज्ञावे प० तं० कद्द मोदगसमाणे खजणोदगसमाणे वालुउदगसमाणे सेलोदगसमाणे। कद्दमोदगसामाणज्ञावसणुप्पविठे जीवे कालकरेइ णेरइएसु उववज्जइ एव जाव सेलोदगसमाणं ज्ञावसमणुप्पविठे जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ चत्तारि पक्खी प० त० रूयसंपन्नेणाममेगेणोरूवसपन्ने रूवसंपन्नेनाममेगेणोरूयसपन्ने एगेरूयसंपन्नेवि

वालू खरीपडे पगने लेपमात्र थाय एहवो कर्दम ३। सिला जे पाषाणसहित पाणी ते पगने फरसतां दुराकरे ४ ॥ एहनीपरे च्यार प्रकारनो ज्ञाव जीवनुं परिणाम कह्यो तेकहे छे कर्दम पाणी सरिखो ज्ञाव एक कर्मना लेपआश्रीने जाणवुं। खंजनोदकसमान एक जीवनुं परिणाम तेकाईक हलकर्मी २। वालूदकसमान परिणाम ३। शैलोदकसमान एक जीवनुं परिणाम ४ ॥ कर्दमोदकसमान परिणामी जीव कालकरे नारकीमा ऊपजे १। एम खजनोदक ज्ञावे मरे ते तिर्यंच योनिमा ऊपजे २। वालूदक समानपरिणामी जीव मरे मनुष्यमा ऊपजे ३। शैलोदकसमान परिणामी जीव मरे मरीने देवता मे ऊपजे ४ ॥ च्यार प्रकारे पक्षी कह्या ते कहे छे एकपक्षी रुत जे शब्द तेणेथी सहितछे शब्दमनोहर करेछे पणि रूपसंपन्न

एतं रूपच सर्व्वेषामेव पक्षिणां अस्य त स्ते विशिष्टे एवे ह ग्राह्ये ततो एतं मनोज्ञः शब्द स्तेन संपन्न एकः पक्षी नचरूपेण मनोज्ञेनैव कोकिलव द्रूपसंप न्नो नोरुतसपन्नः प्राकृतशुकवत् उभयसपन्नो मयूरवत् अनुभयस्वभावः काकवदिति पुरुषो च यथायोग मनोज्ञशब्दः प्रशस्तरूपच प्रियवादित्वसद्वेषत्वाभ्यां साधुर्वा सिद्धातप्रसिद्धधर्मदेशनादिस्वाध्यायप्रबधवान् लोचविरलवालोत्तमाङ्गतातपस्तनुतनुत्वमलमलिनदेहता अल्पोपकरणतादिलक्षणसुविहितसाधुरूप धारीवा योज्यइति ॥ पत्तियति ॥ प्रीतिरेव प्रीतिक स्वार्थिककप्रत्ययोपादानेपि रूढे र्नपुंसकतेति तत्करोमि प्रत्ययवा करोमीति परिणतः प्रीतिकमेव प्रत्य -यमेववा करोतीति स्थिरपरिणामत्वात् उचितप्रतिपत्तिनिपुणत्वा त्सौभाग्यवत्वा द्वेति अन्यस्तु प्रीतिकरणे परिणतो ऽप्रीतिकरोति उक्तवैपरीत्या दिति अ

रूवसंपन्नेवि एगेणोरुयसंपन्ने नोरूवसंपन्ने ४ ॥ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० रुयसंपन्नेनाममेगे नोरूवसंपन्ने ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० त० पत्तियंकरेमीएगेपत्तियंकरेइ पत्तियंकरेमीएगेअपत्तियकरेइ अपत्तियंकरेमीएगेपत्तियंकरेइ अपत्तियंकरेमीएगेअपत्तियंकरेइ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा ।

नथी जिम कोकिल १ । एक पक्षी रूपसंपन्नछे मनोज्ञरूपछे पणि शब्दसंपन्न नथी अजणा पोपटनी परे २ । एक पंखी रुत शब्दसंपन्नछे रूपसंपन्न पणिछे मयूरनी परे ३ । एक पक्षी रूपसपन्न पणि नथी अने शब्दसंपन्न पणि नथी काकनी परे ४ ॥ एह पक्षीनी परे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष शब्दसपन्नछे मिष्टवचन बोलेछे पणि रूपसंपन्न नथी कालोछे कूबडोछे एमपूर्वनी परे च्यार भांगा कहवा ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक पुरुष इम चितवे जेहुं बीजाने प्रीतिकरुं चलुकरु ते बीजाने प्रीतिकरै थिरपरिणाममाटे १ । एक पुरुष प्रथम चिंतवे जे

परो ऽप्रीतो परिणतः प्रीतिमेव करोति संजातपूर्वभावभिन्नत्वात् परस्तथा अप्रीतिरितितोपि प्रीत्युत्पत्तिस्वभावत्वादिति चतुर्थः सुजानः आत्मन एवाः क
श्चित् प्रीतिका मानद भोजनाच्छादनादिभिः करोत्यु त्यादय त्वात्मार्थप्रधानत्वा अपरस्य ऽन्यः परस्य परार्थप्रधानत्वा आत्मनो ऽपर उभयस्या प्युभयार्थ
प्रधानत्वा दितरो नो भयस्या प्युभयार्थशून्यत्वादिति आत्मनः प्रत्यय प्रतीति करोति न परस्मे त्यादपि व्याख्येयमिति ॥ पत्तिदपवेसेमित्ति ॥ प्रीतिका प्र

अप्पणोणाममेगेपत्तियंकरेइणोपरस्स परस्सणाममेगेपत्तियंकरेइणोअप्पणो ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तंजहा पत्तियंपवेसामीएगेपत्तियपवेसेइ पत्तियंपवेसामीएगेअप्पत्तियंपवेसेइ अप्पत्तियंपवेसामीएगे पत्तियं पवेसेई अप्पत्तियंपवेसामिएगे अप्पत्तियपवेसेई ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा अप्पणोणाममे

परने प्रीतिकरुं पणि पछे अप्रीति करे अथिरपरिणामपणामांटे २ । एक प्रथम अप्रीति करु एम चिंतवी पछे भलुकरे एतपणि परिणाम विशेषछे ३
एक प्रथम अप्रीतिकरुं इम चिंतवी पछे पणि अप्रीतिकरे ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक पुरुष पोताना आत्मानेज प्रीति करे
भोजन आच्छादनादिकें करी पणि परने नकरे आत्मार्थनेज प्रधानमाने १ । एक पुरुष परने प्रीति हितकरे पोताना आत्मानें नकरे परार्थनेज
प्रधान माने २ । एक परने अने पोताने बेने हितकरे ३ । एक परने हित नकरे आत्माने पणि हितनकरे ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या
ते कहेछे एक पुरुष चितवे जे परनां चित्तमां प्रवेस करीस परनांचित्तमा विश्वास उपजावीस एम चितवीने विश्वास उपार्जनकरे १ । एक चिंतवे
परना चित्तमां प्रीति प्रवेसीस पणि अप्रीति प्रवेशे एम पूर्वलीपरे च्यार भागा कहया ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक पुरुष

त्यथवा श्रय करोती त्येवं परस्य चित्ते विनिवेशयामीति परिणत स्तथै वैकः प्रवेशयतोत्येकइति सूत्रशेषो नन्तरसूत्रच पूर्ववत् पत्राणि पर्णा न्युपगच्छतीति पत्रोपगो वहलपत्रइत्यर्थः एव शेषाअपि पत्रोपगादिवृक्षसमानतातु पुरुषाणां लोकोत्तराणा लौकिकानावा ऽर्थिषु तथाविधोपकारकरणेन स्वस्वभावलाभ एव पर्यवसितत्वात् सूत्रदानादिनो पकारकत्वा दर्थदानादिना महोपकारकत्वा दनुवर्त्तनापायसरक्षणादिना सततोपसेव्यत्वाच्च क्रमेण द्रष्टव्यमिति भारं धान्यमुक्ताद्यादिक वहमानस्य देशा द्देशान्तरं गच्छतः पुरुषस्य आश्वासा विश्रामा भेदश्च तेषा मवसरभेदेनेति यत्रावसरे अंशा देकस्मात् स्कंधा दशमिति

गेपत्तियंपवेसेइणोपरस्स ० ४ ॥ चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा पत्तोवए पुप्फोवए फलोवए छायोवए ॥ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा पत्तोवारुक्खसामाणे पुप्फोवारुक्खसमाणे फलोवारुक्खसमाणे छाउवारुक्खसमाणे। भारणं वहमाणस्स चत्तारि आसासा पन्नत्ता तजहा जत्थणं अंसाउअंसंसाहरइ तत्थ

पोताना आत्माने प्रतीतिमा तथा प्रीतिमां थापे सुखमा प्रवेशे थापे पणि परने नथापे एम चौभंगी जांणवी ४ ॥ हिवे दृष्टांतदेवाने कहेछे च्यार प्रकारना वृक्ष कह्या ते कहेछे एक वृक्ष घणांपत्र पानडा सहित १ । एक वृक्ष घणाफूल सहित २ । एक घणांफलसहित होय ३ । एक वृक्ष घणी सघन छाया सहित थाय ४ ॥ एम च्यार प्रकारना लौकिक अने लोकोत्तर पुरुष कह्या ते कहेछे पत्रवतवृक्षसमान ते स्वभावथीज वचनादिक थी तथा धर्म कहवाथी उपकारी १ । फूलवतवृक्षसमान ते सूत्रना भणावाथी विशेष उपकारी २ । फलवंतवृक्षसमान तेह अर्थसूत्रनां तथा द्रव्यना देवा थी महोपकारी ३ । छायावतवृक्षसमान जे कष्टमाथी राखे तथा लोकोत्तर पापदुखथी राखे ते ४ ॥ भार वहनार पुरुषने च्यार विश्राम कह्या ते

स्कन्धान्तरं सहरति नयति भारमिति प्रक्रमः तत्रा वसरेपिचेति उत्तराश्वासापेक्षया समुच्चये स तस्य वोढुरिति परिष्टापयति व्युत्सृजति नागकुमाराद्या सादिक मुपलक्षण मतो न्यत्रवा यतनेवा समुपैतीति रात्रौ वसति यावती यत्परिमाणा कथा मनुष्यो य देवदत्तादिर्वा यमिति व्यपदेशलक्षणा याव त्काथा तया यावज्जीवमित्यर्थः. तिष्टति वसतो त्यय दृष्टान्त एवमेवेत्यादिदार्ष्टान्तिकः श्रमणान् साधूनुपास्त इति श्रमणोपासक. श्रावक स्तस्य सावद्यव्या पारभाराक्रान्तस्या श्वासा स्तद्विमोचनेन विश्रामा श्चित्तस्या श्वासनानि स्वास्थानि इद मे परलोकभीतस्य त्राण मित्येवरूपाणीति सहि जिनागम सगमावदातबुद्धितया आरम्भपरिग्रहौ दुःखप्ररम्पराकारिससारकान्तारकारणभूततया परित्याज्या वित्या कलयन् कारणभटवशतया तयोः प्रवर्त्तमानो स हान्त खेद सताप भयचो इहति भावयतिचैवं हियएजिणाणआणा चरियमहएरिसअउणस्स एयआलप्पाल अचादूरविसवयइ ॥ १ ॥ हयमन्हाणनाण ह यमन्हाणमणुसमाहप्प जेकिलल्डविवेया विचिट्ठिमोवालवालुव्वत्ति ॥ २ ॥ यत्रा वसरे शीलानि समाधानविशेषा ब्रह्मचर्यविशेषावा व्रतानि स्थूलप्राणाति पातविरमणादीनि अन्यत्रतु शीलान्य णुव्रतानि सप्त शिक्षाव्रतानि तदिह न व्याख्यात गुणव्रतादीनां साक्षादेवो पादानादिति गुणव्रते दिग्व्रतोपभोगपरि भोगव्रतलक्षणे विरमणा न्यनर्थदण्डविरतिप्रकारा रागादिविरतयोवा प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषधः पर्वदिन मष्टम्यादि तत्रो पवसन मभ क्तार्थ' पौषधोपवास एतेषा द्वद्व स्तान् प्रतिपद्यते भ्युपगच्छति तत्रापिच स तस्यैक आश्वासः प्रज्ञप्तो यत्रापिच सामायिकं सावद्ययोगपरिवर्जननिरवद्ययो

वियसेएगेआसासे पन्नत्ते जत्थवियणं उच्चारंवा पासवणवा परिठावति तत्थवियसेएगेआसासे पन्नत्ते जत्थ

कहेछे जेअवसरे एक स्कधथी बीजा स्कंधने ऊपरि भार संहरे ते अवसरे एक विश्राम कह्यो १। वली जिहा ते पुरुष बडीनीति तथा लघुनीति

गप्रतिसेवनलक्षणं यद्यावस्थित' आह: श्रमणभूतो भवति तथा देशेदिग्व्रतगृहीतस्य दिक्परिमाणस्य विभागो वकाशो वस्थान मवतारो विषयो यस्य त
देशावकाश तदेव देशावकाशिकं दिग्व्रतगृहीतस्य दिक्परिमाणस्य प्रतिदिन सक्षेपकरणलक्षण सर्वव्रतसक्षेपकरणलक्षणंवा नुपालयति प्रतिपत्त्यनन्तर
मखण्ड मासेवतइति तत्रापिच तस्यैक आश्वास. प्रज्ञप्तइति उद्दिष्टे त्वमावास्या परिपूर्ण मित्यहोरात्र यावत् आहारशरीरसत्कारत्यागब्रह्मचर्याव्यापार

वियणं णागकुमारावासंसिवा सुवन्नकुमारावासंसिवा वासं उवेइ तत्थवियसे एगेआसासे पन्नत्ते जत्थवि
यणं आवकहाए चिठइ तत्थवियसे एगेआसासे पन्नत्ते । एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा प०
तंजहा सीलव्वयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइपडिवज्जइ तत्थवियसेएगेआसासे पन्नत्ते जत्थवियणं
सामाइयदेसावगासियमणुपालेइ तत्थवियसे एगेआसासे पन्नत्ते जत्थवियण चाउद्दसिठमुद्दिठपुन्निमासीसु
पडिपुन्न पोसह सम्मं अणुपालेइ तत्थवियसे एगेआसासे पन्नत्ते जत्थवियणं अपच्छिममारणंतियसंलेहणा

परठवे अर्थात् करे भार उतारीने तिहापणि तेहने एक विश्राम २ । जिहां वली ते नागकुमारना आवासमां तथा सुपर्णकुमार देवताना आवास
मा आवी वासो ले रात्रिरहै तिहां पणि तेहने एक विश्राम कह्यु ३ । जिहा ते भारवाही पुरुष वसेछे तिहां ग्रामातरथी भार लावी उतारे ते
पणि एक विश्राम कह्यु ४ ॥ एहनीपरे श्रमणोपासकने श्रावकने सावद्यव्यापारना भारथी आक्रम्याने च्यार विश्राम कह्या ते कहैछे जे अवसरे शील
व्रतव्रत प्राणातिपातविरमण गुणव्रत दिशिपरिमाण भोगोपभोग अनर्थदंड एह त्रण विरमण पचखाण नोकारसीप्रमुखनु पौषधदिन अष्टमी चतु



लक्षणभेदोपेतमिति यत्रापिच पश्चिमैवामगलपरिहारार्थं मपश्चिमा सा चासौ मरणमेवां तो मरणान्त स्तत्रभवा मारणांतिको साचे त्यपश्चिममारणांति को सा चासौ सलिख्यते अनया शरीरकषायादीनि सलेखना तपोविशेषः साचेति अपश्चिममारणांतिकसलेखना तस्या. ॥ झूसणत्ति ॥ जोषणा सेवना लक्षणो यो धर्म्म स्तया ॥झूसिएत्ति॥ जुष्ट. सेवितो थवा क्षितः क्षपितदेहो यः स तथा तथा भक्तपाने प्रत्याख्याते येन स तथा पादपवत् उपगतो नि श्चेष्टतया स्थित. पादपोपगत अनशनविशेष प्रतिपन्नइत्यर्थं कालं मरणकाल अनवकाक्षन् तत्रानुत्सुकइत्यर्थः विहरति तिष्टति उदित स्वासा 'वुन्नतकुल

झूसणाझूसिएभत्तपाणपडियाइक्खिए पाउवगएकालमणवकखमाणे विहरइ तत्थवियसे एगेआसासे पन्नत्ते ॥ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उदिओदिएणाममेगे उदियत्थमिएणाममेगे अत्थमिउदिएणाममेगे अत्थ मियत्थमिएणाममेगे । भरहेराया चाउरंतचक्कवट्टीणं उदिओदिए बंभदत्तेणंरायाचाउरंतचक्कवट्टीउदियत्थ

दशीने दिवसे उपवास एतला पडिवजे आदरे तिहा पणि श्रावकने एक विश्राम कह्यु १ । वली जे अवसरे सामायिक ले देशावगाशिक ले सम्यक् ॥ भली रीते पाले ते अवसरे एक विश्राम २ । वली जे अवसरे चौदस अष्टमी अमावस पूर्णिमासी दिने परिपूर्ण अहोरात्रि पौषधकरे एतले अठपो हरी पौषधप्रति सम्यक् मनवचनकायाथी पाले तेह अवसरे एक विश्राम कह्यो ३ । वली जे अवसरे छेहलीमारणांतिक सलेखणा अनसन तप तेह नी सेवालक्षणधर्म तेहथी झूषित भातपाणीनु पचखाण करीने छेदनाथका वृक्षनी झालनीपरे कालने अणवाछतोथको विचरेछे ते अवसरे तेह श्रावक ने एक विश्राम कह्यो ४ ॥ च्यार प्रकारे पुरुष कह्या ते कहैछे एक पुरुष उदितोदित नाम उच्चकुल बल रिद्धि परमसुखनु धणी १ । एक पुरुष

वलसमृद्धिनिरवद्यकर्मनिरत्युदयवान् उदितश्च परमसुखसंदोहोदयेने त्युदितो यथाभरत उदितोदितत्वंवा स्य प्रसिद्धं तथा उदित श्वासौ तथैव अस्तमि तश्च भास्करइव सर्वसमृद्धिभ्रष्टत्वात् दुर्गतिगतत्वाच्चेति उदितास्तमितो ब्रह्मदत्तचक्रवर्त्तीव सहि पूर्वमुदित उन्नतकुलोत्पन्नत्वादिना स्वभुजोपार्जितसाम्रा ज्यत्वेनच पश्चादस्तमितः अतथाविधकारणकुपितब्राह्मणप्रयुक्तपशुपालधनुर्गोलिकाप्रक्षेपणोपायप्रस्फोटिताक्षिगोलकतया मरणानन्तराप्रतिष्ठानमहानर कवेदनाप्राप्ततयाचेति २ तथा अस्तमित श्चासौ हीनकुलोत्पत्तिदुर्भगत्वदुर्गतत्वादिना उदितश्च समृद्धिकीर्त्तिसुगतिलाभादिनेति अस्तमितोदितो यथा ह रिकेशबलाभिधानोऽनगारः सहिजन्मान्तरोपात्तनीचैर्गोत्रकर्म्मवशा द्वाप्तहरिकेशाभिधानचाण्डालकुलतया दुर्भगतया दरिद्रतयाच पूर्व मस्तमितादि त्यइवा नभ्युदयवत्वा दस्तमितइति पश्चा त्प्रतिपन्नप्रव्रज्यो निष्कम्पचरणगुणा वर्जितदेवकृतसान्निध्यतया प्राप्तप्रसिद्धितया सुगतिगततयाच उदितइति तथा अस्तमित श्चासौ सूर्यइव दुष्कुलतया दुष्कर्म्मकारितयाच कीर्त्तिसमृद्धिलक्षणतेजोविवर्जितत्वा दस्तमितश्च दुर्गतिगमना दित्य स्तमितास्तमितो यथा कालाभिधानः सौकरिकः सहि सूकरै श्चरति मृगयाकरोतीति यथार्थः सौकरिकएव दुष्कुलोत्पन्नः प्रतिदिन महिषपञ्चशतीव्यापादकइति पूर्व म स्तमितः पश्चादपि मृत्वा सप्तमनरकपृथिवीङ्गतइति अस्तमितएवेति ॥ भरहेत्यादि ॥ तू दाहरणसूत्र भावितार्थं मेवेति य एव विचित्रभावैश्चिन्त्यन्ते ते जी

मिए हरिएसबलेणाममणगारेणमत्थमिउदिए कालेणंसोयरिएत्थमित्थमिए ४ । चत्तारि जुंमा पन्नत्ता तं०

उदितथई ने अस्तथया परमसमृद्धि पाई ञोगवी ने निर्धन थया दुखने अभिमुखथया २ । एक पुरुष अस्तथईने उदितथया नीचकुलादि पामीने पछे परम सुखना ञोगनार थया ३ । एक पुरुष अस्तथईने पुन· अस्तथया नीचकुलादि दुखपामीने नरकादिकना दुखपाया ४ ॥ ञरतराजा चातु

वाः सर्वएव चतुर्षु राशिषु प्रवतरंतीति तान् दर्शयन्नाह ॥ चत्तारिजुम्मेत्यादि ॥ जुम्मेत्ति राशिविशेषो योहि राशि चतुष्कापहारेण पह्नियमाण चतुःप र्यवसितो भवति स कृतयुग्म इत्युच्यते यस्तुत्रिपर्यवसितः सत्र्योजो द्विपर्यवसितो द्वापरयुग्म एकपर्यवसितः कल्योजइति इह गणितपरिभाषायां समरा शिर्युग्मइत्युच्यतेविषमस्तु ओजइति इयश समयस्थितिः लोकेतु कृतयुगादीनि एव युच्यंते द्वात्रिंशद्वसहस्राणि कलौलक्षचतुष्टय वर्षाणांद्वापरादौस्या देत

कडजुम्मे तेयोए दावरजुम्मे कलिओए । णेरइयाणं चत्तारि जुंगा पणत्ता तजहा कडजुंमे तेओए दावरजुंमे कलिओए । एवमसुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं एवं पुढविकाइयाण आउतेउवाउवणस्सइवेंदियाणं तेंदियाणं चउरिंदियाणं पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण वाणमंतरजोइसियाण वेमाणियाणं सव्वेसि

रंतचक्रवर्त्ती उदितथईने पुन उदितथयो रिषभ पुन चक्रीथई मोक्ष पोहतो १ । ब्रह्मदत्तनामा चक्रवर्त्तिराजा उदयथईने अस्तथयो सर्वसमृद्धि भ्रष्ट थई दुर्गतिमां गयो २ । हरिकेसवल नामा साधु अणगार अस्तथईने उदय थयो पूर्वभवे नीचगोत्र उपराजी चंडालथयो पछे चारित्र लेई मोक्षपुह तो ३ । कालकसौकरिक आथमीने आथमियो नित्य ५०० भेसा हणतो पछे पणि सातमी नरकमां पोहतो पापकरीने ४ ॥ च्यार युग्म ते राशि विशेष कह्या ते कहेछे कृतयुग्म १ । त्र्योज २ । द्वापरयुग्म ३ । कल्योज ४ ॥ नारकीने च्यार युग्म कह्या उपजें चवे तेणे ओळा अधिकाथाय तेकहे छे कृतयुग्म १ । तेओज २ । द्वापरयुग्म ३ । कलिओज ४ ॥ एम असुरकुमारने च्यार युग्मथाय जन्ममरण माटे यावत् स्तनितकुमारने ४ होय तिहा लगे कहवुं ४ ॥ एम पृथ्वीकायने अप्काय तेउकायने वाउकायने वनस्पतिकाय बेइंद्री तेइंद्री चउइंद्री पंचेंद्री तिर्यंच मनुष्य वाणव्यंतर ज्योतिषी वे

द्विनिचतुर्गुणमिति उक्तराशी नारकादिषु निरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ सुगमं नवरं नारकादय श्चतुर्द्वापि.स्यु र्जन्ममरणाभ्यां हीनाधिकत्वसंभवा दिति पुनर्जीवानेव भावे निरूपयन्नाह ॥ चत्तारिसूरेत्यादि ॥ सूत्रद्वय कण्ठ्य किन्तु शूरा धीराः च्चांति शूरा अर्हंतो महावीरवत् तपः शूरा अनगारा दृढप्रहारिवत् दानशूरो वैश्रवण उत्तराशालोकपाल स्तीर्थकरादिजन्मपारणकादिरत्नदृष्टिपातनादिनेति उक्तच वेसमणवयणसचो इयाउतेतिरियजंभ गादेवा कोडिग्गसोहिरत्र रयणाणियतत्थउवर्णेतित्ति ॥ १ ॥ युद्धशूरो वासुदेव' कृष्णव तस्यषष्ट्यधिकेषुत्रिषु संग्रामशतेषु लब्धजयत्वा दिति उच्च. पुरुषः श रीरकुलविभवादिभि स्तथा उच्चच्छंद उन्नताभिप्राय औदार्यादियुक्तत्वा न्नीचच्छंदस्तु विपरीतो नीचो प्युच्चविपर्यया दिति अनन्तर मुच्चेतराभिप्राय उक्तः स

जहा नेरइयाणं। चत्तारि सूरा पन्नत्ता तंजहा खंतिसूरे तवसूरे दाणसूरे जुद्धसूरे। खंतिसूराअरहंता तव सूराअणगारा दाणसूरेवेसमणे जुद्धसूरेवासुदेवे। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उच्चेणाममेगेउच्चच्छंदे उच्चेनाममेगेणीयच्छंदे णीएणाममेगेउच्चच्छंदे णीएणाममेगेणीयच्छंदे। असुरकुमाराणं चत्तारि लेस्सा प० तं०

मानिकने च्यार युग्म थाय जिम नारकीने कह्या तिम सर्वत्र जन्ममरण मांटे अधिका ओछा थाय ॥ च्यार प्रकारना सूर कह्या ते कहेछे क्षमासूर क्षमाथी धीर १। तपसूर २। दानसूर ३। युद्धसूर ४॥ क्षमासूर अरिहत वीतराग महावीरवत् १। तपसूर साधुमुनिराज दृढप्रहारीनीपरें २॥ दानसूर वैश्रमण उत्तरदिशानु लोकपालतीर्थंकर जन्म पारणादि दिवसे रत्नसुवर्णनी वृष्टिकरे ३। युद्धसूर वासुदेव त्रणसेसाठ संग्रामकरे तेमांटे ४। च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे एक उच्चशरीर कुलधनथी अने उच्चछंद उन्नत अभिप्राय औदार्यादिगुण सहित १। एक उच्चकुलादिके पणि

च लेश्याविशेषा भवतीति लेश्यासूत्राणिसुगमानि नवरं असुरादीनां चतस्रो लेश्या द्रव्याश्रयेण भावतस्तु षडपि सर्वदेवानां मनुष्यपंचेंद्रियतिरश्चान्तु द्रव्यतो भावतश्च षडपीति पृथिव्यब्वनस्पतीनांहि तेजोलेश्या भवति देवोत्पत्तेरिति तेषां चतस्रइति उक्तलेश्याविशेषेणाच विचित्रपरिणामा मानवाः स्युरिति यानादिदृष्टान्त चतुर्भंगिकाभि रथयथाच पुरुष चतुर्भंगिका यानसूत्रादिना श्रावकसूत्रावसानेन ग्रंथेन दर्शयन्नाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ कण्ठ्यश्चायं नवरं यानं शक

करहलेस्सा णीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा एवंजाव थणियकुमाराणं एवं पुढविकाइयाणं आउवणस्स इकाइयाणं वाणमंतराणं सव्वेसिं जहा असुरकुमाराण। चत्तारि जाणा पन्नत्ता तंजहा जुत्तेणाममेगेजुत्ते जुत्ते नाममेगेअजुत्ते अजुत्तेणाममेगेजुत्ते अजुत्तेणाममेगेअजुत्ते । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० जुत्तेणा ममेगे जुत्ते ४ । चत्तारि जाणा पन्नत्ता तजहा जुत्तेणाममेगेजुत्तपरिणए जुत्तेणाममेगेअजुत्तपरिणए ४ ।

नीचछंद नीचस्वभाव औदार्यादिगुण रहित २ । एक कुलादिकथी नीच पणि उच्चछंद उद्यमननुं अभिप्राय औदार्यादिगुण सहित ३ । एक कुलादि कथी पणि नीच अने नीचछंद नीचस्वभाव औदार्यादिगुणरहित ४ ॥ एहऊचनीच लेश्याथी थाय तेमाटे लेश्या कहेछे असुरकुमार भवनपतिना देवताने च्यार प्रकारनी लेश्या कही ते कहेछे कृष्णलेश्या १ । नीललेश्या २ । कापोतलेश्या ३ । तेजोलेश्या ४ ॥ एम यावत् स्तनितकुमारने १० नि कायनाने एमज पृथिवीकायना जीवने अप्कायने वनस्पति कायना जीवने वाणव्यंतर देवताने एह सर्वने जिम असुरकुमारने कही तिमज ४ लेश्या कहवी ४ ॥ च्यार प्रकारे यान गाडो वहिल कहिया ते कहेछे एक यान सर्व सामग्रीसहितछे उपकरणयुक्तछे अने बलद पणि जोड्याछे १। एक सा

टादि तद्युक्त वलीवर्दादिभिः पुन र्युक्तं संगतं समग्रसामग्रीकत्वा पूर्वापरकालापेक्षयावे त्येकं अन्यत् युक्तं तथैवा युक्तंतू क्तविपरीतत्वादिति एवमितरौ पुरु षस्तु युक्तो धनादिभिः पुनर्युक्तउचितानुष्ठानैः सद्भिर्वा पूर्वकालोवा युक्तो धनधर्मानुष्ठानादिभिः पश्चादपितथैवेति चतुर्भंगी अथवा युक्तो द्रव्यलिंगेनभावलिं गेनचेति प्रथमः साधु र्द्रव्यलिंगेन नेतरेणेति द्वितीयो निह्नवादि र्नद्रव्यलिंगेन भावलिंगेन युक्तइति तृतीयः प्रत्येकबुद्धादि उभयवियुक्त श्चतुर्थो गृहस्थादिरि ति एवसूत्रान्तराण्यपि नवरं युक्त क्षोभिर्युक्त म्परिणतन्तु अयुक्तं सत्सामग्र्या युक्ततयापरिणतमिति पुरुषःपूर्ववत् युक्तरूप संगतस्वभावं प्रशस्तवा युक्तं युक्त

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा जुत्तेणाममेगेजुत्तपरिणए ४ । चत्तारिजाणा प० तं० जुत्ते

मग्री उपकरणादिकथी सहितछे पणि वलद वलवान नथी २ । एक सामग्रीयुक्त नथी पणि वलदादिकथी सहितछे ३ । एक सामग्रीसहितनथी अने वलदादिकथीयुक्त पणि नथी ४ ॥ इण दृष्टांते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष धनादिसहितछे अने उचितानुष्ठानसहित छे १ । एक पुरुषधनादिकथी सहितछे पणि उचितक्रियारहित खरचे नथी कृपणछे २ । एम च्यार भांगा । साधुआश्री पणि कहेछे एक साधु द्रव्यवेषसहित भा वथी धर्मानुष्ठान सहितछे १ । द्रव्यवेषसहितभावथी विपरीत तेनिन्हव २ । त्रीजो प्रत्येकबुद्ध ३ । चौथो गृहस्थ ४ ॥ वली च्यार यान कह्या तेकहे छे एक युक्त सामग्री सहितछे अने युक्तपरिणतछे जोडणोनथी पणि वलदादिसहितछे १ । एक सामग्रीसहितछे पणि वलदप्रमुखनी सामग्री तयार नथी तेमाटे अयुक्तपरिणत २ । एम ४ भांगा जाणवा ॥ इणदृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे । एक धनादिकथीसहितछे अने युक्तपरि णतछे उचित कार्यमां तत्परछे १ । एम च्यार भांगा ॥ वली च्यार यान वाहन कह्या तेकहे छे एक यान युक्तछे अने युक्तरूपछे वलद भलाछे अने

रूपमिति पुरुषपक्षेतु युक्तो धनादिना ज्ञानादिगुणैर्वा युक्तरूप उचितवेषः सुविहितनेपथ्योवेति तथा युक्तं तथैव युक्तं शोभते युक्तास्यवा शोभा यस्य तत् यु क्तशोभमिति पुरुषस्तु युक्तो गुणै स्तथा युक्ता उचिता शोभा यस्य सतथेति युग्य वाहन मश्वादि अथवा गोल्लविषये जपाण द्विहस्तप्रमाण चतुरस्रं सवेदिक सुपशोभितं युग्यक मुच्यते तत् युक्त मारोहणसामग्र्या पर्याणादिकया पुन र्युक्त वेगादिभि रित्येव यानव द्व्याख्येय मेतदेवाह ॥ एवंजन्नेत्यादि ॥ प्रतिपक्षो दार्ष्टान्तिक स्तथैव कोसा वित्याह ॥ पुरिसजायत्ति ॥ पुरुषजातानो त्येवं परिणतरूपशोभा स्तत्र चतुर्भङ्गिकाः सप्रतिपक्षा वाच्या यावच्छोभसूत्रचतुर्भङ्गी

णाममेगेजुत्तरूवे जुत्तेणाममेगेअजुत्तरूवे ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्तेणाममेगेजुत्तरूवे ४ । चत्तारि जाणा प० तंजहा जुत्तेणाममेगेजुत्तसोन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तंजहा जुत्तेणाम मेगेजुत्तसोन्ने ४ । चत्तारि जुग्गा प० तं० जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं०

यान सामग्री सहित छे १ । एक यान युक्तछे सामग्रीसहितछे अने अयुक्तरूपछे वृषभ नथी एम च्यार भांगा ४ ॥ इणा दृष्टांते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष तथा साधु धनादिके तथा ज्ञानादिगुणसहितछे अने युक्तरूप भलोरूप साधुवेषादिकछे एम च्यार भागा ४ ॥ वली च्यार यान कह्या तेकहेछे एक युक्तछे अने वृषभादिकथी जोडयो शोभेछे एम च्यार भागा ४ ॥ एम च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष धना दिके सहितछे अने उचितक्रियानी शोभाथी सहितछे एम ४ भागा कहवा ॥ साधु ज्ञानादि सहितछे अने धर्मक्रियानी शोभाथी सहितछे एम ४ भा गा ॥ च्यार युग कह्या युगते अश्वप्रमुख तेकहेछे एक पलाणप्रमुखथी सहितछे अने वेगादिकथी सहितछे एम ४ भागा कहवा ॥ इणा दृष्टाते ४ प्रकार

यथा ॥ जुत्तेणामं एगे जुत्तसोभे ॥ एतदेवाह ॥ जावसोभेत्ति ॥ सारथिः शाकटिको योजयिता शकटे गवादीना न वियोजयिता मोक्ता अन्यस्तु वियोज यिता नतु योजयितेति एव शेषावपि नवर चतुर्थः खेटयत्येवेति अथवा योक्तायतं प्रयुक्ते यः स योक्तापयिता वियोक्तयनः प्रयोक्तातु वियोक्तापयितेति लो कोत्तरपुरुषविवक्षायान्तु सारथिरिव सारथि र्योजयिता संयमयोगेषु साधूना मवर्त्तयिता वियोजयितातु तेपामेवा नुचितानां निवर्त्तयितेति यानसूत्र वत् हयगजसूत्राणीति ॥ जुगारियत्ति ॥ युग्यस्य चर्या वहन गमनमित्यर्थः क्वचित्तु जुग्गायरियत्तिपाठ स्तत्रापि युग्याचर्येति पथया य्येक युग्य भवति

जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवं जहा जाणेणं चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेणवि पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया जाव सोभेत्ति । चत्तारि सारथी प० तं० जोआवइत्ताणाममेगेणोविजोयावइत्ता विजोयावइत्ताणाममेगे णोजोयावइत्ता एगेजोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि एगेणोजोयावइत्ताणोविजोयावइत्ता ४ । एवामेव

ना पुरुप कह्या तेकहेछे धनादिकसहितछे उचितक्रियाथीपणि सहितछे जिम यान वाहनने साथे ४ आलावाकह्या तिमज युग अश्वसाथेपणि प्रति पक्षदृष्टातसहित तिमज पुरुषना प्रकार यावत् शोभेछे तिहालगे कहवा ॥ च्यार सारथी रथना पेडु कह्या तेकहेछे एक सारथी वृषभादिक शकट प्रति जोडेछे पणि छोडनार नथी खेडनारनथी । एक सारथी खेडेछे पणि जोडनारनथी जोडतोनथी । एक जोडेछे अने खेडे पणिछे । एक सारथी जोडतो पणि नथी खेडतो पणि नथी ४ ॥ एहनीपरे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे संयमयोगमां साधूने प्रवर्त्तावे तेमाटे सारथिनीपरे सा रथी । वियोजयिता जे साधुने अनुचितव्यापार थी निवर्त्तावे एम च्यार भांगा कहवा ॥ च्यार प्रकारना घोडा कह्या तेकहेछे । एक पलाणप्रमुख

नो त्पश्यायीत्यादि चतुर्भङ्गी इहच युग्यस्य चर्याद्वारेणैव निर्देशे चतुर्विधत्वेनो क्तात्त्वश्चर्याया एवो देशोक्त चातुर्विध्य मवसेय मिति भावः युग्यपक्षेतु

चत्तारि पुरिजाया ॥ चत्तारि हया पन्नत्ता तंजहा जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवं जुत्तपरिणए जुत्तरूवे जुत्तसोन्ने सव्वेसि पडिवक्खो पुरिसजाया चत्तारि गया प० त० जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्तेणाममेगेजुत्ते एवजहा हयाणं गयाणवि भाणियव्व पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया । चत्तारि जुग्गारिया प० तं० पथजाईणाममेगे णोउप्पहजाई उप्पहजाईणाममेगेणोपथजाई एगेपथजाईविउप्पहजाईवि एगेणोपंथजाईणोउप्पहजाई ।

सामग्रीयें सहितछे अने वेगसहितछे । एक युक्तछे पणि वेगादिकथी अयुक्तछे एम च्यार भांगा जाणवा ॥ इण दृष्टाते च्यारप्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एकसाधु सयमसहितछे अनें क्रियासहितछे एम च्यार भागा ॥ एम पूर्वे कह्युंछे तिमज युक्तपरिणत युक्तरूप युक्तशोभाछे एम सर्वबोले प्रतिपक्ष दृष्टातसहित पुरुषनाप्रकार जाणवा ॥ च्यार हाथी कहिया तेकहेछे एक हाथी अवाडीप्रमुखथी सहितछे अने वेगादिके सहितछे एम ४ भांगा ॥ इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक साधु सयमादिसहितछे अने क्रियाये पणि सहितछे एम ४ भांगाकहवा एम जिम घोडाकह्या तिमज हाथीना पणि जांणवा प्रतिपक्ष तिमज पुरुषना प्रकार कहवा ४ ॥ च्यार युग्य ते अश्व हाथी प्रमुख तेहनु गमन चालवुं कह्युं ते कहेछे एक मार्गे चाले पणि उन्मार्गे नचाले १ । एक उन्मार्गेचाले पणि मार्गेनचाले २ । एक मार्गेमा चाले उन्मार्गेमां पणि चाले ३ । एक मार्गेमां पणिनचा

युग्यमिव युग्य संयमयोगभरवोढा साधुरेव सच पथिया व्यप्रमत्त उत्पथयायी लिंगावशेष' उभययायी प्रमत्त श्चतुर्थः सिद्धक्रमेण सदसदुभयानुभयानुष्ठान रूपत्वात् अथवा पथ्युत्पथयोः स्वपरसमयरूपत्वात् यायित्वस्यच गत्यर्थत्वेन बोधपर्यायत्वात् स्वपरसमयबोधापेक्षये य चतुर्भङ्गी नेयेति एक पुष्प रूपसम्पन्न न गन्धसम्पन्नं माकुलीपुष्पवत् द्वितीय बकुलस्येव तृतीय जातेरिव चतुर्थ बदर्यादेरिव पुरुषो रूपसम्पन्नो रूपवत्वात् सुविहितरूपयुक्तोवेति जाति ६

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० । चत्तारि पुप्फा प० तं० रूवसंपन्नेणाममेगेणोगंधसंपन्ने गंधसपन्नेणाम मेगेणोरूवसंपन्ने एगेरूवसपन्नेविगधसंपन्नेवि एगेणोरूवसंपन्नेणोगधसंपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता रूवसपन्नेणाममेगेणोसीलसंपन्ने ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्नेणाममेगेणोकुलसंपन्ने ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्नेणाममेगेणोवलसंपन्ने वलसंपन्नेणाममेगेणोजाइसंपन्ने

ले उन्मार्गमा पणिनचाले ४ ॥ एम सयममार्गे आश्री च्यार भांगा कहवा ४ ॥ च्यार प्रकारना फूल कह्या तेकहेछे एक फूल रूपसंपन्नछे पणि गंधसपन्न नथी रूडो गधनथी जिम आउलनु फूल १ । एक फूल गधसपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी ते बकुलवृक्षनु फूल तथा वउलसिरीनु फूल २ । एक फूल रूपसपन्न पणि छे गंधसंपन्नपणिछे चपेलीनु फूल तथा चपानु फूल ३ । एक फूल रूपसपन्न पणिनथी गधसपन्न नथी ते बोरडीनु फूल ४ ॥ इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे ॥ एक पुरुषरूपवतछे प्रतिपूर्ण शरीर गोरवर्णछे पणि शील आचारादि गुणसपन्न नथी एम च्यार भागा ॥ २ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे ॥ एक पुरुष जातिसपन्नछे उत्तमजातिछे पणि कुलसपन्ननथी जातिते मातानुपक्ष कुलतेपिता

कुल ५ बल ४ रूप ३ श्रुत २ शील १ चारित्र ७ लक्षणेषु सप्तसु पदेषु एकविंशतौ द्विकसंयोगेषु एकविंशति रेवं चतुर्भङ्गिकाः कार्याः सुगमा श्चेति

एगेजाइसंपन्ने०। एवजाईएरूवेणय चत्तारि आलावगा एव जाईएसुएणय ४। एवं जाईएचरित्तेणय ४। एव कुलेणय बलेणय ४। एव कुलेणयरूवेणय ४। कुलेणयसुएणय ४। कुलेणयसीलेणय ४। कुलेणयचरित्तेण य ४। चत्तारि पुरिसजाया प० त० बलसंपन्नेणामभेगेणोरूवसंपन्ने ४। एव बलेणयसुएणय ४। एव बलेणयसीलेणय ४। एव बलेणचरित्तेणय ४। चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तजहा रूवसंपन्नेणाममेगेणो

रुंपन्न एम ४ भांगा ॥ १ ॥ वली च्यार प्रकारनां पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष जातिसपन्नछे पणि बलसपन्न नथी निर्बलछे एह बलसाथे चोभंगी जाणवी २ ॥ एक पुरुष जातिसंपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी। एम रूपने साथे पूर्वनीपरे च्यार भांगा कहवा ३ ॥ इम जातिसाथे अने श्रुतज्ञानसाथे चोभंगी कहवी ४ ॥ एमजातिसाथे अने शीलसाथे चोभंगी पाचमी ५ ॥ एम जाति अने चारित्र साथे छठी चोभंगी ६ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे ॥ एक पुरुष कुलसपन्नछे पणि बलसंपन्न नथी एबलसाथे चोभंगी सातमी ७ ॥ एम कुल अने रूपसाथे चोभंगी आठमी ८ ॥ एम कुल अने श्रुतसाथे चोभंगी नवमी ९ ॥ कुल अने शीलसाथे चोभंगी दशमी १० ॥ कुल अने चारित्रसाथे चोभगी इग्यारमी ११ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ एक पुरुष बलसंपन्नछे पणि रूपसपन्न नथी एम चोभंगी बारमी १२ ॥ एम बल अने श्रुतसाथे चोभंगी तेरमी १३ ॥ बल अने शीलसाथे चोभंगी चवदमी १४ ॥ एम बल अने चारित्रसाथे चोभंगी पनरमी १५ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ एक पुरुष रूप संपन्न छे

आमलमिव मधुरं यदन्यत् आमलकमेववा मधुर मामलकमधुरं ॥ मुद्दियत्ति ॥ मृद्वीका द्राचा तद्वत्सैववा मधुर मृद्वीकामधुरं चीरवत् खंडवच्च मधुरमि तिविग्रह. यथैतानि क्रमेण पद्बहुबहुतरबहुतममाधुर्यवति तथा य आचार्यादृषद्बहुबहुतरबहुतमोपशमादि गुणलक्षणमाधुर्यवंत स्ते तत्समानतया व्यपदि

सुयसंपन्ने ४। एवंरूवेणयसीलेणय ४। रूवेणयचरित्तेणय ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सुयसंपन्नेणामेगे णोसीलसंपन्ने ४। एवंसुएणयचरित्तेणय ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा सीलसंपन्नेणाममेगेणोचरि त्तसंपन्ने ४। एए एक्कवीसं भंगा भाणियव्वा। चत्तारि फला प० तं० आमलगमहुरे मुद्दियामहुरे खीर महुरे खंडमहुरे। एवामेव चत्तारि आयरिया प० तं० आमलगमहुरफलसामाणे जाव खंडमहुरफलसा

पणि श्रुतसंपन्न नथी एम चोभंगी सोलमी १६ ॥ एम रूप अने शीलसाथे चोभंगी सतरमी १७ ॥ एम रूप अने चारित्र साथे चोभंगी अठारमी १८ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे एक पुरुष श्रुतसंपन्नछे पणि शीलसंपन्न नथी एम चोभंगी १९ ॥ एम श्रुत अने चारित्रसाथे चोभंगी २०॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष शीलसंपन्नछे पणि चारित्रसंपन्न नथी एम चोभंगी एकवीसमी २१ ॥ एम एह एकवीस भागा कहवा पुरुषने तथा साधुआश्री पणि कहवा ॥ हिवे पुरुषने फलनो दृष्टांत कहेछे च्यार प्रकार फल कह्या तेकहेछे आमला जेहवुं मधुर मीठुं १। एक फल द्राक्षा जेहवुं मीठो २। एक फल क्षीर दुग्ध जेहवु मीठु ३। एक फल खाड शर्करा जेहवुं मीठुं ४॥ एहमा एकएकथी फल मधुरतामां चढताछे। एहनी परे च्यार प्रकारना आचार्य कहवा ४॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक साधु-आत्मवेयावच करे आहारादिकथी पणि

र्थन्त इति आत्मवैयावृत्त्यकरो ऽन्तसो विसम्भोगिकोवा परवैयावृत्त्यकरः स्वार्थनिरपेचः स्वपरवैयावृत्त्यकरः स्थविरकल्पिकः कोपि उभयनिवृत्तो ऽनशनवि शेषप्रतिपन्नकादिरिति करोत्ये वैको वैयावृत्त्य निःस्पृहत्वात् प्रतीच्छत्येवा न्य आचार्यत्वग्लानत्वादिना अन्यः करोति प्रतीच्छतिच स्थविरकल्पिकविशेष उ भयनिवृत्तस्तु जिनकल्पिकादिरिति ॥ अट्ठकरीति ॥ अर्थान् हिताहितप्राप्तिपरिहारादीन् राजादीना दिग्यात्रादौ तथोपदेशतः करोती त्यर्थकरो मन्त्री नैमित्तिकोवा सचा र्थकरो नामैको न मानकरः कथ मह मनभ्यर्थितः कथयिष्यामी त्यवलेपवर्जित एवमितरे त्रयो ऽत्रच व्यवहारभाष्यगाथाः पुट्ठापुट्ठो

माणे । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आयवेयावच्चकरेनाममेगेणोपरवेयावच्चकरे ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० त करेइणाममेगेवेयावच्चणोपडिच्छइ पडिच्छइणाममेगेवेयावच्चंनोकरेइ ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तंजहा अट्ठकरेणाममेगेणोमाणकरे माणकरेणामएगेणोअट्ठकरे एगेअट्ठकरेविमाणकरेवि एगेणोअट्ठकरेणो

बीजानी नकरे एह एकलविहारी १ । एक परनी वेयावच्च करे पणि आतमानी नकरे ते अभिग्रहधारी नदिषेण वसुदेवना जीवनी परे २ । एक आत्मवेयावच पणि करे परनी वेयावच पणि करे ते स्थविर ३ । एक आत्मवेयावच पणि नकरे परनी पणि नकरे अणसणनु करणहार ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक साधु वेयावच करे पणि करावे नथी निस्पृहमाटे १ । एक वेयावच करावे पणि करतो नथी ग्लानमाटे २ । एक वेयावच करेछे अने करावे स्थविरकल्पी ३ । एक करतो नथी अने करावतो नथी ते जिनकल्पी ४ ॥ एह सघले लौकिक पुरुष अने लोको त्तर साधुपुरुष एह बेनो भाव आवे ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे राजा आश्री । एक मन्त्री निमित्तियो तथा सेवक राजाना अर्थ

पडनो जताइहियाहियप रेकाहेइ। तइओपुष्टोसेसा उनिक्कनाएवगच्छेविति ॥ १ ॥ गणस्य साधुसमुदायस्या र्थान् प्रयोजनानि करोतीति गणार्थकर आहारादिभि रुपष्टभको नच मानकरोऽभ्यर्थनानपेक्षत्वात् एव नयोन्ये उक्तञ्च आहारउवहिसयणा इएहिंगच्छस्सुवग्गहकुणइ । बीओनजाइमाणं दो सिवितइओनउचउत्थात्ति ॥ २ ॥ अथवा ॥ नोमाणकरेत्ति ॥ गच्छार्थकारी हमिति न माद्यतीति अनन्तर गणस्यार्थ उक्तः सच संग्रहो ऽतआह ॥ गण सगहकरेत्ति ॥ गणस्या हारादिना ज्ञानादिनाच सग्रह करोतीति गणसग्रहकरः शेष तथैव उक्तच सोपुणगच्छस्सठो उसगहोतत्थमगहोदुविहो द व्वेभावेनियमा उहोतिआहारनाणाई ॥ ३ ॥ आहारोपधिशय्याज्ञानादीनीत्यर्थ. नमाद्यति गणस्यानवद्यसाधुसामाचारीप्रवर्त्तनेन वादिधर्मकर्मनैमि

माणकरे । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गणठकरेणाममेगेणोमाणकरे ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गणसंगहकरेणाममेगेणोमाणकरे ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गणसोन्नकरेणामंएगेणोमाणकरे ४ ।

नुं कार्यनु करनारछै पणि मान नथी करतो जे एहकाम मैं कीधो १ । एक मान अहंकारनुं करनारछे पणि अर्थनुं करनार नथी तेहथी किस्युं काम इम नीपजै २ । एक अर्थनुं पणि करनारछे अने माननुं पणि करनारछे ३ । एक अर्थनुं पणि करनारो नथी माननुं पणि करनारो नथी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष साधु आश्रीने कह्या तेकहेछे एक साधु गण ते गच्छना अर्थनुं करनारछे हितकरे अहित मान नकरे जे हुं गच्छनाकार्य करूं छु एम च्यार भागा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक साधु गच्छमां संग्रह ते आहारनुपधिशय्याज्ञानादि तेहनु राखवुं तेकरे पणि मान नकरे सग्रह जे उपकरणादि राखे जोइये तिवारे आपे इहा पणि च्यार भागा ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहेछे एक साधु

त्तिकविद्यासिद्धत्वादिनाशा शोभाकरणशीलो गणशोभाकरो नोमानकरो भ्यर्थनानपेक्षतया मदाभावेनवा गणस्य यथायोग्य प्रायश्चित्तदानादिना शोधिं शुद्धि करोतीति गणशोधिकरो ऽथवा शुद्धिते भक्तादौ सति ग्टहिकुले गत्वा नभ्यर्थितो भक्तशुद्धि करोति यः स प्रथमो यस्तु मानान्न गच्छति स द्विती यो यस्तु अभ्यर्थितोगच्छतिसन्टतोयो यस्तुनाभ्यर्थनापेक्षो नापि तत्र गता सचतुर्थं इतिरूप साधुनेपथ्य जहाति त्यजति कारणवशान्नधर्मं चारित्रलक्षण बौ टिकमध्यस्थितमुनिवत् अन्यस्तु धर्मं नरूप निह्नववत् उभयमपि उत्प्रव्रजितवत् नोभय सुसाधुवत् धर्मं त्यज त्येको जिनाज्ञारूप म गणसंस्थिति स्वगच्छकृतां मर्यादामित्त कैश्चिदाचार्यैस्तीर्थंकरानुपदेशेन संस्थितिः कृता यथा नास्माभि र्महाकल्पादातिशयश्रुत मन्यगणसत्कायदेय मित्येवच योन्यगणसत्काय न त इ

चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गणसोहिकरेणाममेगेणोमाणकरे ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० त० रूवंणा ममेगेजहइ नोधम्मं धम्मंणाममेगेजहइनोरूवं एगेरूवपिजहइधम्मंपिजहइ एगेणोरूवंजहइणोधम्मजहइ ४ ।

गण गच्छनी शोभानुं करणहारछे तपे धर्मकहे निमित्तथी विद्याथी सिद्धिप्रमुखथी गच्छरूडो देखावे पणि मान नकरे इहा पणि च्यार भांगा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहेछे एक साधु रूप साधुना वेषप्रति कारणविशेषे छांडे पणि चारित्ररूपधर्म भावथी नथी मूंकतो जिम हरिभद्रसूरिना चेला वेषमूंकी बौटिक बौद्धमतमा जणायाकारणे रहिया १ । एक धर्मने मूंकेछे पणि वेष नथी मूकतो निन्हव जमालीनीपरे २ । एक धर्म मूंकेछे साधुवेष पणि मूकेछे कंडरीकनी परे ३ । एक रूप ते वेष नथी मूंकतो अने धर्म पणि नथी मूकतो भलासाधुनी परे ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक साधु धर्मते जिनाज्ञा तेप्रति छाडेछे अने गण गच्छनी स्थिति ते गच्छनी मर्यादा नथी मूकतो कोईक आचार्य

दाति स धर्म्मं त्यजति न गणस्थितिं जिनाज्ञाननुपालनात् तीर्थंकरोपदेशो ह्येवं सर्वेभ्यो योगेभ्यः श्रुतं दातव्यमिति प्रथमो यस्तु ददाति स द्वितीय' य स्त्वयो ग्येभ्यस्तु ददाति स तृतीय यस्तु श्रुताव्यवच्छेदार्थं तदव्यवच्छेदसमर्थस्य परशिष्यस्य स्वकीयदिग्बध कृत्वा श्रुत ददातितेन नधर्म्मो नापि गणसंस्थिति स्त्यक्ते ति स चतुर्थइति उक्तञ्च सयमेवदिसाबध काऊणयडिच्छगस्सजोदेई उभयमवलंबमाण कामतुतयंपिपूएमोत्ति ॥ १ ॥ प्रियो धर्मो यस्य तत्र प्रीतिभावे न सुखेनच प्रतिपत्तेः स प्रियधर्मा नो नच दृढो धर्मो यस्य आपद्यपि तत्परिणाम विचलनात् अक्षोभत्वादित्यर्थः स दृढधर्मेति उक्तञ्च दसविहवेयावच्चे अणतरेखिप्पमुज्जमतुणइ अच्चनमणेच्चाणि चिट्ठइविरियक्किसोपढमभगो । १ ॥ अन्यस्तु दृढधर्मा अगीकृतापरित्यागात् नतु प्रियधर्मा कष्टेन धर्मप्रतिपत्तेः

चत्तारि पुरिसजाया प० त० धम्मंणाममेगेजहइ णोगणसंठिइं ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा पिय धम्मेणाममेगेणोदढधम्मे दढधम्मेणाममेगेणोपियधम्मे एगेपियधम्मेविदढधम्मेवि एगेणोपियधम्मेणोदढधम्मे

एहवी मर्यादा कीधीछे जे बीजागच्छना यतीने सिद्धांत नदेवुं हिवे ते बीजागच्छना यतीने श्रुत नापे नजाणावे ते धर्मजिनाज्ञा छाडेछे पणि गच्छनी स्थिति नथी मूंकतो जिनाज्ञा एहवीछे जे योग्यहोय ते सर्वने श्रुत देवुं तेमाटे १ । आज्ञा मूंकी जे अन्यगच्छना यतीने योग्यने श्रुत आपेछे ते जि नाज्ञारूप धर्म नथी मूंकतो गच्छस्थिति मूकेछे २ । जे अयोग्य अन्यगच्छनाने श्रुत आपेछे ते धर्म अने श्रुत बेने मूकेछे ३ । अने जे श्रुतराखवाने को ईक योग्य परना शिष्यने पोतानुं करी श्रुत आपेछे ते धर्म अने स्थिति बे नथी मूंकतो एमचौभगी जाणवी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक पुरुष प्रियधर्मछे धर्म वाहलोछे पणि दृढधर्म नथी कष्ट आव्यांथी धर्ममां दृढपणुं नथी धर्ममूंकीदे १ । इम एक दृढधर्मछे अगीकार

इतरौतु सज्ञानी उक्तंच दुक्खेणउगाहिज्जइ वीओगहियतुनेइजातीए उभयतीकल्लाणी तइओचरमोउपडिकुठोत्ति ॥ १ ॥ आचार्यसूत्रे चतुर्थभङ्गो यो न प्रव्राजनया नैवो पस्थापनया चार्य. स क इत्याह धर्माचार्यइति प्रतिबोधकइत्यर्थः आहच धम्मोजेणवइठो सोधम्मगुरूगिहीवसमणोवा कोवितिहिसप उतो दोहिविण्कोऽणेगेणेवत्ति ॥ १ ॥ त्रिभिरिति प्रव्राजनोत्थापनाधर्माचार्यैरिति उद्देशन मङ्गादी पठनेधिकारित्वकरण तत्र तेन वा चार्यो गुरु रुद्देश

चत्तारि आयरिया प० त० पव्वावणायरिएणाममेगेणोउवठावणायरिए उवठावणायरिएणामंएगेणोपव्वावणायरिए एगेपव्वावणायरिएवि उवठावणायरिएवि एगेणोपव्वावणायरिएणोउवठावणायरिए धम्मायरिए। चत्तारि आयरिया प० त० उद्देसणायरिएणाममेगेणोवायणायरिए ४ धम्मायरिए । चत्तारि अंतेवासी प० त०

कीधो नमूके पणि प्रियधर्म नथी कष्टमा धर्मकरे २ । एक प्रियधर्मछे अने दृढधर्म पणिछे ३ । एक प्रियधर्म पणि नथी अने दृढधर्म पणि नथी तेना स्तिक ४ ॥ च्यार प्रकारना आचार्य कह्या तेकहेछे एक प्रव्रज्याचार्य जेदीक्षादे पणि उपस्थापनाचार्य नथी उठामण नथी करतो सर्व सिद्धातनुं योग वही नाटिकरावीहोय ते ओठामण करे १ । एक उपस्थापनाचार्यछे पणि प्रव्रज्याचार्य नथी २ । एक प्रव्रज्याचार्यछे अने उपस्थापनाचार्य पणिछे ते पचमहाव्रतनुं आरोपकरे ते उपस्थापनाचार्य कहिये ३ । एक प्रव्रज्याचार्य पणि नथी अने उपस्थापनाचार्य पणि नथी ते धर्माचार्य कहिये जेहने पासे धर्म पाम्युं ते धर्माचार्य यती पणि थाय अने प्रतिबोधक श्रावक पणि थाय ४ ॥ वली च्यार प्रकारना आचार्य कहिया तेकहेछे एक उद्देसनाचार्य जे अगादिसूत्र सूत्रथी भणावेछे पणि वाचनाचार्य नथी अर्थआपे ते वाचनाचार्य इहा ४ भागा जाणवा चौथे भागे धर्माचार्य जाणवो ॥ च्या

नाचार्य उभयशून्यः को भवतीत्याह धर्माचार्यइति अंते गुरो समोपे वस्तु शील मस्यां तेवासी शिष्य. प्रव्राजनया दीक्षया अंतेवासी प्रव्राजनांतेवासी दी क्षितइत्यर्थः उपस्थापनांतेवासी महाव्रतारोपणतः शिष्यइति चतुर्थभङ्गकस्थः क इत्याह धर्मांतेवासीति धर्मप्रतिबोधनतः शिष्यो धर्मार्थितयो पसम्पन्नो वेत्यर्थ. यो नो देशनान्तेवासी न वाचनान्तेवासीति चतुर्थः सक इत्याह धर्मान्तेवासीति निर्गता बाह्याभ्यतरग्रथा त्रिर्गन्थाः साधवो रत्नानि भावतो ज्ञानादीनि ते व्यवहरतीति रात्निकः पर्यायज्येष्टइत्यर्थः श्रमणो निर्ग्रंथो महान्ति गुरूणि स्थित्यादिभि स्तथाविधप्रमाणाद्यभिव्यग्यानि कर्माणि यस्य स

पव्वावणंतेवासीणाममेगेणोउवट्ठावणंतेवासी ४ धम्मतेवासी । चत्तारि अंतेवासी प० तंजहा उद्देसणंतेवासी णामंएगेणोवायणतेवासी वायणंतेवासी ४ धम्मंतेवासी । चत्तारि णिग्गथा प० त० रायणिएसमणेनिग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ १ । रायणिए समणेनिग्गथे अप्प

र अंतेवासी शिष्य कह्या तेकहेछे एक प्रव्रज्याशिष्य जेहने पोते दीक्षादीधी तेचेलो पणि उपस्थापना शिष्य नथी एम चोभंगी ४ ॥ चौथे भांगे ध र्म शिष्य जेहने धर्मोपदेश देई बोध्यो ॥ वली च्यार प्रकारना शिष्य कहिया ते कहेछे एक उदेशनांतेवासी जेहने सूत्र भणाव्योछे ते पणि वाचनां तेवासी नथी अर्थ नथी भणाव्युं तेमांटे १ । एक वाचनाशिष्यछे पणि उदेशनाशिष्य नथी एम ४ भागा कहवा ॥ चौथे भांगे धर्मशिष्य जाणवुं श्राव कादि ॥ च्यार प्रकारना निग्रंथ कह्या बाह्याभ्यंतर ग्रथरहित द्रव्यरहित ते कहेछे एक रत्नाधिकसाधु जे दीक्षामां अने पर्यायथी वडेरो निग्रंथ म हाकर्मी मोटीस्थितिना कर्मछे जेहने मोटीक्रियाछे प्रमादादिकनी जेहने आतापनारहित तपनथीछे जेहने समतारहित उपशम नथीछे जेहने एह

महाकर्मा महती क्रिया कायिकादिका कर्मबंधहेतु र्यस्य स महाक्रियः न आतापयति आतापनां शीतादिसहनरूपां करोती त्यनातापी मंदश्रद्धत्वा दिति अतएवा समितः समितिभिः सचैवंभूतो धर्मस्या नाराधको भवतीत्येक' अन्यस्तु पर्यायज्येष्ठएवा ल्पकर्म्मा लघुकर्म्मा ऽल्पक्रियइति द्वितीयः अन्यस्तु अवमो लघुः पर्यायेण रात्निको ऽवमरात्निक एव निर्ग्रंथिका श्रमणोपासकश्रमणोपासिकासूत्राणि ॥ चत्तारिगमत्ति ॥ निष्पपि सूत्रेषु चत्वार आला

कम्मे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्सआराहए भवइ २ । तेमराइणिए समणेणिग्गंथे महाकम्मे महा किरिए अणायावी असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ ३ । तेमराइणिए समणेणिग्गथे अप्पकम्मे अप्प किरिए आयावी समिए धम्मस्सआराहए भवइ ४ । चत्तारि णिग्गथीउ पण्णत्ताउ तंजहा राइणिया समणी णिग्गंथी ४ एवचेव । चत्तारि समणोवासगा प० तंजहा रायणिएसमणोवासए महाकम्मे तहेव । चत्तारि

वो रत्नाधिकसाधु धर्मनो आराधक नथाय १ । एक रत्नाधिकसाधु दीक्षाथी वडो निग्रंथ अल्प थोडीछे कर्मस्थिति जेहने थोडीछे प्रमादादिकनी क्रिया जेहने आतापनानो लेणहार एहवो साधु धर्मनो आराधक थाय २ । एक अवमरात्निक साधु दीक्षाथी लघु श्रमण निग्रंथ मोटीस्थितिना क र्मनुं घणी प्रमादादि मोटी क्रियाछे जेहने आतापना नथी लेतो मदसत्वपणा माटे समतारहित एहवो साधु धर्मनु आराधक नहोय ३ । एक अ वमरात्निक दीक्षायेलघु श्रमणनिग्रंथ अल्पकर्मनु धणी अल्पछे क्रियाजेहने आतापनानु लेणहार समतासहित साधु धर्मनु आराधक थाय ४ ॥ एम च्यार निग्रंथी साध्वीकही तेकहेछे रत्नाधिक दीक्षामां वडेरी श्रमणी निग्रंथीना ४ भागा साधु नीपरे कहवा ॥ च्यार प्रकारना श्रमणोपासक श्राव

पकाभवतीति ॥ अम्मापिइसमाणे ॥ मातापितृसमान उपचारं विनापि साधुषु एकान्तेनैव वत्सलत्वात् भ्रातृसमान अल्पतरप्रेमत्वा त्तत्त्वविचारादौ निष्ठुरवचना दप्रीते. तथाविधप्रयोजने ष्वत्यन्तवत्सलत्वाच्चेति मित्रसमानः सोपचारवचनादिना विना प्रीतिच्चतेः तत्त्चितौचा पद्युपेचकत्वादिति समा नः साधारणः पति रस्याः सा सपत्नी यथा सा सपत्न्या ईर्ष्यावशा दपराधान् वौच्यते एव यः साधुषु दूषणदर्शनतत्परो नुपकारीच स सपत्नीसमानो ऽभिधीयतइति ॥ अद्दागत्ति ॥ आदर्शसमानो यो हि साधुभिः प्रज्ञाप्यमाना नुत्सर्गापवादादी नागमिकान् भावान् यथाव त्प्रतिपद्यते सन्निहितार्था नादर्शकवत् स आदर्शसमानः यस्या नवस्थितो बोधो विचित्रदेशनावायुना सर्वतो पक्रियमाणत्वात् पताकेव स पताकासमानइति यस्तु कुतोपि कदाग्र

समणोवासियाउ प० तं० रायणियासमणोवासियामहाकम्मा तहेव चत्तारि गमा। चत्तारि समणोवासगा प० तं० अम्मापिइसमाणे भाइसमाणे मित्तसमाणे सवत्तिसमाणे । चत्तारि समणोवासगा प० तं अद्दागसमा

क कहिया तेकहेछे । रत्नाधिक वडेरो श्रावक मोटीस्थितिना कर्मनुंधणी तिमज पूर्वनीपरे ४ भांगा कहवा ॥ च्यार प्रकारनी श्रमणोपासिका कही तेकहेछे रत्नाधिक वडेरी संघमा मोटीस्थितिना कर्मनी तिमज साधुनीपरे ४ भागा कहवा ४ ॥ च्यार प्रकारना श्रमणोपासक कहिया ते कहेछे एक श्रावक मातापितासमान जे उपचारविना साधु यतीजनने एकातहितकारी १ । एक भाईसरिखो कांईक प्रमाददेखी क्रोधकरे पणि मनथी घणुंहि तराखे २ । एक मित्रसमान दोषढाकी साधुनां गुण वखाणे ३ । सोकसमान एक श्रावक जिम सोक छिद्र देखे तिम साधुना केवल छिद्र दोषने देखे गुणढांके दोषदेखाडे ४ ॥ वली च्यार प्रकारना श्रावक कह्या ते कहेछे एक आदर्शसमान आरसा समान जेहवु साधु सिद्धातनुं भाव प्ररूपे ते

हा म गीतार्थप्रदेशनया चाल्यते सो ऽनमनस्वभावबोधत्वेना प्रज्ञापनीयः स्थाणुसमानइति यस्तु प्रज्ञाप्यमानो न केवलं स्वाग्रहान्न चलति अपितु प्रज्ञापक दुर्वचनकण्टकै विंध्यति स खरकण्टकसमानः खरा निरन्तरा निष्ठुरावा कण्टाः वाक्कण्टका यस्मि स्यात् खरकण्टं बब्बूलादिडाल खरणमिति लोको य दुच्यते तत्र विलग्न चीवर नकेवल मविनाशितं न मुञ्चति अपितु तद्विमोचक पुरुषादिहस्तादिपु कंटके विंध्यति अथवा खरटयति लेपवंतं करोतीति यत्त त्खरंट मशुच्यादि तत्समानोयोहि गुर्वो धापनयनप्रवृत्त संसर्गमात्रादेव दूषणवत करोति कुबोधकुशीलतादुःप्रसिद्धिजनकत्वेनो त्सूत्रप्ररूपको य मित्य सद्दूषणोद्भा वकत्वेनचेतिश्रमणोपासकाधिकारा दिदमाह ॥ समणस्सेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं श्रमणोपासकाना मानन्दादीना मुपासकदशाभिहिताना मिति देवाधिकारा देवेद माह ॥ चउहीत्यादि ॥ त्रिस्थानके तृतीयोद्देशके प्रायोव्याख्यात मेवेद तथापि किंचि दुच्यते ॥ चउहिंठाणेहिंनोसंचाएत्ति ॥ सबध स्तथा देवलोकेषु

णे पडागसमाणे खाणुसमाणे खरकंटसमाणे । समणस्सणंभगवओमहावीरस्स समणोवासगाणं सोहम्मेकप्पे अरुणाभेविमाणे चत्तारि पलिओवमाइं ठिई प० चउहिंठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जामा

एवुंज अंगीकार करे धारे जिम आरीसामां मुखादिक १ । एक पताकासमान जे विचित्रदेशना सांभली मनडोलावे २ । एक श्रावक स्थाणुसमान ठुठसमान जे पोतानुं खोटुंहटनमूके समभावतां कदाग्रहकरे ३ । एक खरकटकसमान सीखामणदेणाहारसाधुने साहमो दुर्वचनरूपकांटाथी वींधे ४ ॥ श्रमण भगवंत महावीरस्वामीना १० आनंदादिकश्रावकनी सौधर्मदेवलोकमा अरुणाभविमाने च्यारपल्योपमनी स्थितिकही ॥ देवताना अधिकारमाटे कहेछे च्यार थानके नवो तरतउपनुं देवता देवलोकविषें रह्यो वांछाकरे मनुष्यलोकमां आविवाने पिण आवीनसके आवासमर्थ नथाय तेकहेछे हम

देवमध्येइत्यर्थः॥ हव्वं ॥ शीघ्रं ॥ सचाएइ ॥ शक्नोति कामभोगेषु मनोज्ञशब्दादिषु मूर्च्छितइव मूर्च्छितो मूढ स्तत्स्वरूपस्या नित्यत्वादे र्विवेकाचमत्वात् गृद्ध स्तदाकाङ्क्षावान् अतृप्तइत्यर्थः ग्रथितइवग्रथित स्तद्विषयस्नेहरज्जुभिः सन्दर्भितइत्यर्थः अध्युपपन्नो ऽत्यततन्मनाइत्यर्थं नाद्रियते न तेष्वादरवान् भवति न परिजानाति एतेपि वस्तुभूता इत्येव नमन्यते तथातेष्विति गम्यते नो ऽर्थं प्रतिबध्नाति एते रिद प्रयोजनमिति निश्चय करोति तथा नो तेषु निदान प्रक रोति एते मे भूयासु रित्येवमिति तथा नो तेषु स्थितिप्रकल्प मवस्थानविकल्पन मेतेष्व ह तिष्ठामि एतेवा मम तिष्ठन्तु स्थिराभवन्त्वित्येवरूपं स्थित्यावा मर्या दया प्रकृष्टः कल्प आचारः स्थितिप्रकल्प स्त प्रकरोति कर्तुमारभते प्रशब्दस्या दिकर्मार्थत्वादिति एवं दिव्यविषयप्रसक्तिरेक कारण तथा यतो सा वधुनोत्पन्नो देवः कामेषु मूर्च्छितादिविशेषणो ऽतस्तस्य मानुष्यक मित्यादीति दिव्यप्रेमसक्राति र्द्वितीय तथा सो देवो यतो भोगेषु मूर्च्छितादि विशेषणो भवति तत

णुसंलोगंहव्वमागच्छित्तए णोचेवसंचाएइ हव्वमागच्छित्तए तंजहा अहुणोववन्नेदेवेदेवलोगेसु दिव्वेसुकामभो गेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने सेणंमाणुस्सएकामभोगे णोआढाइ णोपरियाणाइ णोअट्ठंबंधइ णोणि याणंपगरेइ णोठिइप्पगप्पपगरेइ १ । अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्सणं

णा तुरत ऊपनुं देवता देवलोकमां दिव्य देवतासंबंधी कामभोगनेविषे मूर्छा पाम्योथको नजाणे जे एह अनित्यछे मूर्च्छित गृद्ध विपयमां अतृप्त अ त्यत आशक्तमन तेदेवता मनुष्यनां कामभोगने आदर नकरे तत्ववस्तुकरी नजाणे असार कुत्सित जाणे अर्थनबाधे जे एहनुं एप्रयोजनछे एमनकरे नियाणुं नकरे जे एह भोग हु भवातरे पांमुं स्थितिप्रकल्प जे एह भोगनेविषे हुं रहुं एहवो विचार नकरे एकारणे नावे १ । वली नवो ऊपनुं दे

स्तत्प्रतिबन्धात् ॥ तस्सणमित्यादीति ॥ देवकार्यायत्ततया मनुष्यकार्यानायतत्वं तृतीय तथा दिव्यभोगमूर्छितादिविशेषणत्वा त्तस्य मनुष्याणा मयं मानुष्यः सएव मानुष्यको गन्धः प्रतिकूलो दिव्यगन्धविपरीतप्रवृत्तिः प्रतिलोमश्चापि इन्द्रियमनसो रनाल्हादकत्वा देकार्थौ चैता वत्यतामनोज्ञताप्रतिपादनायो क्ता वितिं यावदिति परिमाणार्थं ॥ चत्तारिपचेति ॥ विकल्पदर्शनार्थं कदाचि द्भरतादि ष्वेकान्तसुखमादौ चत्वार्यैवा न्यदातु पञ्चापि मनुष्यपचेन्द्रियतिरश्चा

माणुस्सए पेमे वोच्छिन्ने दिव्वे संकते जवइ २। अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामजोगेसु मुच्छिए ४ तस्सणं एवं जवइ इयरिहं गच्छं मुहुत्तेणगच्छं तेणं कालेण मप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता जवंति ३। अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामजोगेसु मुच्छिए ४ । तस्सणं माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि जवइ उड्ढ पियणं माणुस्सएणं गंधे चत्तारि पंचजोयणसयाइं हव्व मागच्छइ ४ । इच्चेएहिं चउहिं

वता देवलोकमां दिव्यकाम भोगने विषें मूर्च्छित थको ४ पूर्ववचन कहवा तेह देवताने मनुष्यना जव संबंधी मातापितानो प्रेम स्नेह विच्छेद थयो अने देवतासबधी जसक्रम्यो ऊपनो एह बीजो कारण २। वली हमणा तुरत ऊपनुं देवता देवलोकमा दिव्य कामजोगने विषे मूर्च्छित थको एम च्यार बोल कहवा ४ तेह देवता इम जाणे हमणा जाऊं बेघडीमां जाऊ छानाटक जोईने जाऊ एक नाटिक जोता बेहजार वरस जाय तेकाले इहा अल्प आऊखाना धणी मनुष्य कालधर्म सहित थाय मरण पामैं एह त्रीजो कारण ३। वली देवलोकमा तुरतऊपनो देवता दिव्य कामजोगने विषे मूर्च्छित थको इहा पूर्वोक्त च्यार बोल कहवा ते देवताने मनुष्य लोकनो गंध प्रतिकूल दिव्यगधथी विपरीत प्रतिलोम इंद्रियमनने

बहुलेनी दारिकशरीराणां तदवयवतत्मलानांच बहुत्वेन दुरभिगन्धप्राचुर्यादिति आगच्छति मनुष्यचेत्रा दाजिगमिषुं देवं प्रतीति इदञ्च मनुष्यचेत्रस्या शु भस्वरूपत्व मेवोक्ता नच देवो ऽन्योवा नवभ्यो योजनेभ्यः परत आगत गन्ध जानातीति अथवा अतएव वचनात् यदिन्द्रियविषयप्रमाण मुक्ता न्तदौदारि कशरीरेन्द्रियापेचयैव सभाव्यते कथ मन्यथा विमानेषु योजनलचादिप्रमाणेषु दूरस्थिता देवा घंटाशब्द शृणुयुः यदि परम्पति शब्दद्वारेणा न्यथावेति नरभवाशुभत्व चतुर्थमनागमनकारणमिति शेष निगमन आगमनकारणानि प्रायः प्राग्वत् तथापि किञ्चिदुच्यते कामभोगे ष्वमूर्छितादि विशेषणो यो देव स्तस्य ॥ एवमिति ॥ एवभूत मनोभवति यदुत अस्ति मे किंतदित्याह आचार्यइतिवा चार्य एतद्वा स्तौति रूपप्रदर्शने वापिकल्पे एव मुत्तरत्रापि व्या

ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसलोगं हव्व मागच्छित्तए णोचेवणं संचाएइ हव्व मा गच्छित्तए ॥ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्व मागच्छित्तए संचा एइ हव्व मागच्छित्तए तंजहा अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने

असु खनो देणहार अत्यंत माठोलागे जेमांटे ऊचो आकाशे मनुष्यनो गंध सर्प गोप्रमुखना मृतक जेहवो यावत् च्यारसे योजन लगे दुकालमां पां चसेयोजन लगे जायछे उछलेछे सदैव एह चौथो कारण ४ ॥ इत्यादि च्यार कारणे थानके नवो ऊपनो देवता देवलोकमा रह्यो बाछे मनुष्यलो कमा आविवाने पणि समर्थ नथाय शीघ्र आविवाने ॥ वली च्यार थानके हमणा उपनो देवता देवलोकमां रह्योथको मनुष्यलोकमां आविवाने समर्थ थाय तेकहेछे तुरत ऊपनो देवता देवलोकमा दिव्य कामभोगनेविषे मूर्च्छित नथयो अनित्य जाणी यावत् अत्यंत आसक्तमन नथी तेहने

चिदिति शब्दो न दृश्यते तत्रसूत्र सुगममेवेति इहचाचार्यप्रतिबोधकप्रव्राजकादि रनुयोगाचार्योवा उपाध्यायः सूत्रदाता प्रवर्त्तयति साधू नाचार्योपदि ष्टेषु वैयावृत्त्यादिष्विति प्रवर्ती प्रवर्त्तिव्यापारितान् साधून् संयमयोगेषु सीदतः स्थिरीकरोतीति स्थविरो गणो ऽस्यास्तीति गणी गणाचार्यो गणधरोवा जि नशिष्यविशेष आर्यिकाप्रतिजागरकोवा साधुविशेषः समयसिद्धान्तोगणस्या वच्छेदो ऽस्या स्तीति गणावच्छेदको योहि त गृहीत्वा गच्छोपष्टम्भायैवो पधिमार्गणादिनिमित्त विहरति ॥ इमेत्ति ॥ इयं प्रत्यक्षासन्ना एतदेव रूप यस्या नकालान्तरादा वपिरूपान्तरभाक् सा तथा दिव्या स्वर्गसम्भवा प्रधाना वा देवर्द्धि विमानरत्नादिका द्युतिः शरीराभरणादिसम्भवा युतिर्वायुक्ति रिष्टपरिवारादिसंयोगलक्षणा लब्धा उपार्जिता जन्मान्तरे प्राप्तेदानी मुपगता अभि समन्वागता भोग्यावस्था कृता ॥तत्ति॥ तस्मा त्तान् भगवतः पूज्यान् वन्दे स्तुतिभि र्नमस्यामि प्रणामेन सत्करोमि आदरकरणेन वस्त्रादिनावा सन्मानया

तस्सणं एव भवइ अत्थिखलु मम माणुस्सए भवे आयरिएइवा उवज्झाएइवा पवित्तीवा थेरेइवा गणीइवा गणहरेइवा गणावच्छेएइवा जेसि पभावेणं मएइमा एयारूवा दिव्वा देवड्ढी दिव्वा देवजुई लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया तंगच्छामिण तेभगवते वंदामि जाव पज्जुवासामि। अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव

एहवो मनमा आवे जे छे माहरे मनुष्यभवसंबधी आचार्य प्रतिबोधक अथवा उपाध्याय त्रसूदाता प्रवर्त्तक जे साधुजनने आचारमां प्रवर्त्तावे अ थवा स्थविर अथवा गणी गच्छनो स्वामी गणधर गच्छनो धरणहार अथवा गणावच्छेदक गच्छनी सार करे ते जेहना प्रभावथी आ प्रत्यक्ष देवसं पत्ती देवतानोशरीर तथा कांति पामी जन्मांतर मां उपराजी ते भोगसन्मुख आवी तेमाटे हुंजाऊं ते भगवतने वांदु यावत् तेहनी सेवा करुं

स्यचितप्रतिपत्या कल्याणं मङ्गल दैवतं चैत्यमिति बुद्ध्या पर्युपास्ये सेवामीत्येकं तथा ज्ञानी श्रुतज्ञानादिनेत्यादि द्वितीयं तथा ॥ मायाइवाभज्जाइवा भइणी इवापुत्ताइवाधुयाइवेति ॥ यावत्शब्दाक्षेप: स्नुषा पुत्रभार्या ॥ त ॥ तस्मा त्तेषा मतिकसमीप प्रादुर्भवामि प्रकटोभवामि ॥ ता ॥ तावत् ॥ मे ॥ मम इतिपाठान्तर मितितृतीय तथा मित्रपश्चात्स्नेहवत् स खावालवयस्य: सुहृत्सज्जनो हितैषी सहाय: सहचर स्त्देककार्यप्रवृत्तोवा संगत विद्यते यस्यासौसाङ्गतिक: परिचि

अणज्झोववन्ने तस्सण मेवं भवइ एसणं माणुस्सए भवे णाणीइवा तवस्सीइवा अइदुक्करकारए तंगच्छामि
ण तेभगवते वदामि जाव पज्जुवासामि २ अक्कुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्सण
मेवं भवइ अत्थिणं मम माणुस्सए भवे मायाइवा जाव सुण्हाइवा तगच्छामिण तेसि मंतिय पाउब्भवामि
पासंतु तामेइममेयारूव दिव्वंदेवड्ढि दिव्वदेवजुइं लद्धं पत्तं अभिसमन्नागय ३। अक्कुणोववन्नेदेवे देवलोएसु

एह प्रथम कारण १। हमणा तुरत ऊपनो देवलोकने विषे देवता यावत् मूर्च्छित विपयमा अत्यत आशक्त नथी तेहने एहवो मनमां आवे जे म नुष्यना भवमा ज्ञानी श्रुतज्ञानादिसहितछे अथवा मोटो तपसीछे अथवा अतिदुष्कर करणीनो करणहार परीसहादि सहनारछे तेमाटे हुं जाऊं ते भगवत ज्ञानी अथवा तपसी अथवा दुष्करकरणीनो करणहारछे तेहने वांदुं यावत् तेहनी सेवाभक्ति करु एह इहा आवानो बीजो कारण २। वली हमणां तुरत देवलोकमा ऊपनो देवता विपयसुखनेविषे अत्यंत आशक्त नथी तेह देवताने एहवो मनमा आवे जे छे माहरे मनुष्यभवसंबधी मातापिता यावत् स्नुषा भार्या भाई बहिन पुत्र पुत्री तेमाटे हु जांऊ तेहने पासे जईने प्रगट थाऊ ते सर्व देखे मांहरी दिव्य देवतानी विमा

॥ तस्तेषां ॥ अम्हेत्ति ॥ अस्माभिः ॥ अण्णमण्णस्सत्ति ॥ अन्योन्यं ॥ संगारेत्ति ॥ संकेतः प्रतिश्रुतो भ्युपगतो भवतिस्मेति ॥ जोमेत्ति ॥ यो स्माकं पूर्वं च्यवते देवलोका
त्स संबोधयितव्य इति चतुर्थ मिदं च मनुष्यभवेकृतसंकेतयो रेकस्य पूर्वं वलनादि जीवितेषु भवनपत्यादिषू त्पद्य च्युत्वाच नरतयो त्पन्नस्या न्यःपूर्ववलनादि जीवितला
॥ सौधर्मादिषू त्पन्न संबोधनार्थं यदि स्मा गच्छति तदा वसेयमिति इत्येते रित्यादि निगमनमिति अनंतर देवागमन सूत्रं तच्च तत्कृतोद्योतोभवतीति तद्विपक्ष मन्ध
कारं लोके आह ॥ चउहीत्यादि ॥ व्यक्तं किन्तु लोके अन्धकारं तमिस्र द्रव्यतो भावतश्च पदनये स्या त्सभाव्यते ह्यर्हदादिव्यवच्छेदे द्रव्यतोन्धकार उत्पातरूपत्वात्

जाव अणज्झोववन्ने तस्सणं एवंभवइ अत्थिणं ममं माणुस्सएभवे मित्तेइवा सुहीइवा सहाएइवा संगइए
इवा तेसिंचणं अम्हे अण्णमण्णस्स संगारेपडिसुएभवइ जोमेपुव्विंचयइ सेसंबोहियव्वे इच्चेएहिंजावसंचाएइ
हव्वमागच्छित्तए ४ । चउहिठाणेहिं लोगंधगारे सिया तंजहा अरिहंतेहिंवोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपण्णत्ते

नादिकनी संपत्ती रत्नप्रमुखनी दिव्य देवतानी कांति शरीरनी जे मैं पामीछे भोगावस्थाये सन्मुख थईछे एह त्रीजो कारण ३ । वली नवो उपनो
देवता यावत् तेहना मनमे एहवो आवे जे छे माहरे मनुष्यभवसंबंधी मित्र स्नेहवंत सखा अथवा सहचारी अथवा सांगतिक घणो जेहथी परिचय
छे ते संघाते मनुष्यना भवमा हता तिवारे मांहोमांहि एहवो संकेत कीधोहतो जे देवतामांहिथी प्रथमचवी मनुष्यमा जाय तिवारे तेहने प्रति
, , बोधवो इत्यादि ४ कारणथी देवता मनुष्यलोकमां आवे एह चौथो कारण ४ ॥ देवतानो अधिकार कह्यो च्यार थानके लोक मनुष्यलोकमां अंध
कार थाय देवलोकमां सदैव उद्योतछे तेहथी विपरीत अंधकारछे तेकहेछे अरिहंतनो विरहथाय तिवारे भावथी अंधकार थाय छत्रभंगादिघणा

।स्य छत्रभङ्गादौ रज उत्पातादियदिति वह्निश्चवच्छेदे ऽन्धकार द्रव्यतएव तथा स्वभावात् दीपादे रभावाद्वा भावतोपिच एकांतदुःखमादा वागमादे रभावा देति पूर्वं देवागम उक्तो तो देवाधिकारवन्त मादुःखशय्यासूत्रा त्सूत्रप्रपञ्चमाह ॥ चउहीत्यादि ॥ सुगमश्चाय नवरं लोकोद्योत श्चतुर्ष्वपि स्थानेषु देवाग ।ात् जन्मादित्रयेतु स्वरूपेणापि ॥ एवमिति ॥ यथा लोकान्धकार तथा देवान्धकारमपि चतुर्भिः स्थाने देवस्थानेष्व प्यर्हदादिव्यवच्छेदकाले वस्तुमाहा स्यात् चण मन्धकार भवति एवं देवोद्योतो हेता ञ्जन्मादिष्वपि देवसन्निपातो देवसमवाय एवमेव देवोत्कलिका देवलहरि रेवमेव ॥ देवकहकहेत्ति ॥

धम्मेवोच्छिज्जमाणे पुव्वगएवोच्छिज्जमाणे जायएजोवोच्छिज्जमाणे। चउहिंठाणेहिं लोउज्जोएसिया तं० ञ्चरि हंतेहिंजायमाणेहिं ञ्चरहतेहिंपव्वयमाणेहिं ञ्चरहंताणंणाणुप्पायमहिमासु ञ्चरहंताणंपरिनिव्वाणमहिमासु ।

उत्पात उपजे तेमाटे १ । अरिहंत भाषितधर्म विच्छेद थाय तिवारे अंधकार थाय तिवारे एकांत दुखमाकाल छठो आरो प्रवर्त्ते २ । चौदेपूर्व वि च्छेद जातां अंधकार थाय आगमहानि मांटे ३ । जाततेजा वादरअग्नि विच्छेद जातां द्रव्यथी अधकार थाय दीपादिकना अभावमांटे ४ ॥ च्यार थानके मनुष्यलोकमां उजवालो थाय तेकहेछे । अरिहंतनो जन्म थातां घणां देवता आवे तेमांटे अने स्वभावथी पणि १ । अरिहंत दीक्षालेते उ जवालो थाय २ । अरिहंतने केवलज्ञान उपजवानी महिमाने विषे भगवत धर्मप्रकाशे देवतापणि आवे ३ ॥ अरिहंतना परिनिर्वाण मोक्ष जावानी महिमाने विषे ए च्यारथानके उजवालो थाय ४ ॥ एम देवताने अंधकार थाय अरिहतादि पूर्वोक्त च्यार विच्छेद जाता ४ ॥ एम देवताने अजु आलु थाय जिनजन्मादि च्यारथातां एम ए च्यार कारणे देवतानो समवाय देवोत्कलिका ते देवलहरी देवकहकह हर्षनो कलकल शब्द थाय ४ ॥

देवागमोद्कलकल एवमेव देवेन्द्रा मनुष्यलोक मागच्छेयु रर्हतां जन्मादिष्वेवेति यथा त्रिस्थानके प्रथमोद्देशके तथा देवेन्द्रागमनादीनि लोकान्तिकसू ॥
त्रावसानानि वाच्यानि केवल मिह परिनिर्वाणमहिमास्विति चतुर्थमिति पूर्वं मर्हतां जन्मादिव्यतिकरेण देवागम उक्तो ऽधुना ऽर्हतामेव प्रवचना
र्थं दुःस्थितस्यसाधो र्दुःखशय्या भ्रतस्तेतराभवन्तीति सूत्रद्वयेनाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ चत्तारि चतुःसंख्या दुःखदाशय्या दुःखशय्या स्ताश्च द्रव्यतो ऽतथा
विधखट्वादिरूपा भावतस्तु दुःस्थचित्ततया दुःश्रमणस्वभावाः प्रवचनाश्रद्धान १ परलाभप्रार्थन २ कामाशसन ३ स्नानादिप्रार्थन ४ विशेषिताः प्रथमाः
सूत्रेति तासुमध्ये सद्गति स काश्चित् गुरुकर्मा अथार्थोवा अयं सच बाक्योपचेपे प्रवचने शासने दीर्घत्वश्च प्राकृतादित्वादिति शङ्कित एकभावविषयसंशये संयु

एवं देवंधगारे देवुज्जोए देवसन्निवाए देवुक्कलिया देवकहकहए । चउहिंठाणेहिं देविंदामाणुसंलोगं हव्वमाग च्छंति एवं जहा तिठाणे जाव लोगंतियादेवा माणुसंलोगं हव्वमागच्छेज्जा अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव अरहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु । चत्तारि दुहसेज्जाउ प० तं० तत्थखलु इमा पढमा दुहसेज्जा सेणंमुंडेभ

च्यार थानके देवेंद्र मनुष्यलोकमां आवे एम जिम त्रीजाठाणामें कह्यो तिमज यावत् लोकांतिकदेवता मनुष्यलोकमां आवे तिम कहेछे अरिहंतनो जन्मथातां यावत् अरिहंतना ज्ञान तथा दीक्षा तथा निर्वाणनी महिमा थातां ४ ॥ हिवे अरिहंतना धर्ममां च्यार दुखशय्या कही ते कहेछे । ति हां निश्चयथी एह पहिली दुखशय्या कोईक घनकरमी जीव मुंडथई दीक्षालेई गृहस्थावासमूंकी अणगार थयो पांचमहाव्रत लेई पछे निर्ग्रंथ प्रव चन ते जिनशासन तेहने विषे शंकासहित बीजामतनी बांछा करे बितिगिच्छा धर्मना फलमां संदेह आणे भेदसमापन्न जे ए सांचोछे किंवा खो

क्ता: कांक्षितो मतांतरमपि साध्विति बुद्धि विचिकित्सित: फलंप्रति शंकावान् भेदसमापन्नो बुद्धे द्वैधीभावापन्न एवमिदं सर्वं जिनशासनोक्त मन्यथावेति कलुषसमापन्नो नैतदेवमिति विपर्यस्तइति नश्रद्धते सामान्येनै वमिदमिति नोप्रत्येति प्रतिपद्यते प्रीतिद्वारेण नो रोचयति अभिलाषातिरेकेणा सेवना भिमुखतयेति मनश्चित्त मुच्चावच मसमजस निर्गच्छति निर्याति करोतीत्यर्थ: ततो विनिपात धर्म्मभ्रंश ससारवा आपद्यते एव मसौ श्रामण्यशय्याया दु:ख मास्ते इत्येका तथा केन स्वकोयेन लभ्यते लभ्भनवेति लाभो ऽन्नादिरन्नादेर्वा तेन आशा करो त्याशयति स नून मेदास्यती त्येवमिति आस्वादयतिवा

वित्ता अगाराअणगारियपव्वइए निग्गंथेपावयणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेयसमावन्ने कलुससमावन्ने निग्गंथपावयणं णोसद्दहइ णोपत्तियइ णोरोएइ निग्गंथंपावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे मणउच्चावचंनियच्छइ विणिघायमावज्जइ पढमादुहसेज्जा । अहावरादोच्चादुहसेज्जा सेणंमुंडेभवित्ता अगा राअणगारियंपव्वइए एसणंलाभेणं णोतुस्सइ परस्सलाभमासाइ पीहेइ पच्छेइ अभिलसइ परस्सलाभमा

टोछे कलुषसमापन्न ए इम नही एहवो कहे एतले प्रकारे वीतरागनी आज्ञाने सरदहे नथी तेहने ऊपर श्रद्धा न आणे वली विश्वास न आणे जे धह साचोछे प्रीतिआणी रुचावेनथी एम निर्ग्रंथ प्रवचनप्रते नथीसरदहतो अविश्वासउपजावतो अणरुचावतो मनऊंचोनींचोकरतो विनिघात पामे एर्मथी पडी ससार भमे ए प्रथमदुखशय्या कही साधुने मनना मांठापणथी । हिवे अपर बीजी दुसज्या कहेछे । ते बहुकरमी जीव मुंडथई गृह स्थावासमूकी यावत् प्रवृज्या लेई पोताने लाभे सतोष नपामें परना लाभप्रति आसादे बाछना करे स्पृहाकरे पाथे मननो अभिलाष करे परना

लभतेचेत् तजुक्तो एवं स्पृहयति वाञ्छति प्रार्थयति याचते अभिलषति लब्धे म्यधिकतरं वाञ्छतीत्यथः शेष मुक्तार्थं मेवमप्य सौ दुःखमास्त इति द्वितीया
तृतीया कथ्या अगारवासी गृहवास स्त मावसामि तन्नवर्त्तं सम्बाधन शरीरस्था स्थिसुखलादिना नैपुण्येन मर्द्दनविशेषः परिमर्द्दनंतु पृष्टादे र्मलनमात्र

साएमाणे जाव अभिलसमाणे मणं उच्चावयंति विणिघायमावज्जइ दोच्चा दुहसेज्जा। अहावरा तच्चा दुहसेज्जा
सेणंमुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए दिव्वेमाणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे म
णंउच्चावचंणियच्छइ विणिघायमावज्जइ तच्चा दुहसेज्जा ३। अहावरा चउत्था दुहसेज्जा सेणं मुंडेभवित्ता
जाव पव्वइए तस्सणमेवंभवइ जयाण अहमगारवासमावसामि तयाणमहं संबाहणपरिमद्दणगाउब्भंगगाउ
च्छोलणाइ लभामि जप्पभियंचणं अहमुंडेभवित्ता जाव पव्वइए तप्पभियंचणं अहंसंबाहणजावगाउच्छोल

आहार उपकरणना लाभनी वांछा करतो यावत् अभिलाष करतो मनऊंचोनीचो करतो विनिघात पामैं धर्मथी पडे एह बीजी दुखसज्या कही २।
हिवे अपर त्रीजी दुखसज्या कहेछे ते बहुकरमी जीव मुंडथई यावत् प्रवृज्या दीक्षा लेई दिव्य दीपतो मनुष्यकामभोग विषयसुखप्रति आस्वादतो
वाछतो यावत् अभिलाश करतो मन ऊचोनीचो करतो विनिघात पामैं धर्मथी पडे एह त्रीजी दुखसज्या कही ३। हिवे अपर चौथी दुखसज्या कहे
छे ते मुंडथई यावत् प्रव्रज्यालेई तेहने मनमां एहवो आवे जिवारे हु गृहस्थावासमां वसतोहतो तिवारे हु सबाधन शरीरना अस्थिने सुखकारी
परिमर्दन मलापहार अभ्यग तैलनो मर्दन अगनो पखालवो उश्न तथा शीतल पाणीथी एतला वाना पामतो जेदिवसथी मांडी हुं मंडथयो यावत

॥ परिग्रहस्य धात्वर्थमात्रवृत्तित्वात् गात्राभ्यंग स्नेहादिनाङ्गम्रक्षणं गात्रोत्क्षालन मङ्गधावन मेतानि लभेत कश्चिन्निषेधयतीति शेषं कंठ्यमिति चतुर्थी दुःख

णाइं आसाएइ जाव अभिलसइ सेणंसबाहणजावगाउच्छोलणाइं आसाएमाणे जाव मणंउच्चावचंनियच्छइ विणिघायमावज्जइ चउत्थादुहसेज्जा ४ । चत्तारि सुहसेज्जाउ पन्नत्ताउ त० तत्थखलु इमापढमा सुहसेज्जा सेणंमुंडेभवित्ता अगाराउअणगारियं पव्वइए निग्गंथेपावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वितिगिच्छिए णोभेयसमावन्ने णोकलुससमावन्ने निग्गंथंपावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोएइ निग्गंथंपावयणं सद्दहमाणे प त्तियमाणे रोएमाणे नोमणंउच्चावचंनियच्छइ णोविणिघायमावज्जइ पढमासुहसेज्जा १ । अहावरा दोच्चा

प्रव्रज्या लीधीछे तेदिवसथी मांडी संबाधन डीलचंपाववो यावत् अंगप्रक्षालन स्नान प्रमुख नथी पामतो यावत् गात्रनुं पखालवुंप्रमुख वाछे यावत् अभिलाष करे वाळा करे ते साधु सबाधन यावत् गात्रनु पखालवु वांछतो यावत् मननु ऊंचानीचापणुं पामें सकल्पविकल्पमाटे विनिघात पामें धर्मथी पडे एह चौथी दुखशय्या ४॥ हिवे सुखसज्या कहेछे तिहा निश्चयथी एह पहिली सुखसज्या जाणवी ते हलकरमी जीव मुंडथई लोच करा वी गृहस्थपणुं मूंकी अणगारपणुं लीधुं प्रव्रज्या पचमहाव्रत ऊचरी जिनशाशनमां शंकारहित आकांक्षारहित वितिगिच्छारहित धर्मफलसंदेहरहित भेद नथी पाम्यो जे धर्म इम हस्ये किंवा नथी कलुषभाव नथी पाम्यो मनमैलो नथी एहवो जिनशाशनप्रति साचोकरी सरदहे प्रत्ययविश्वास उ पजावे रुचावे जिनशाशनने निग्रथना प्रवचनने सरदहतो विश्वास आंणतो रुचावतो मनऊंचोनीचो संकल्पविकल्प नकरे धर्मथी घात नपामै न पडे एह पहली सुखसज्या १ । अथानतर बीजी सुखसज्या कहेछे ते मुंडथई यावत् प्रव्रज्यालेई पोताने ज लाभथी सतोषपामे परना लाभनी आशा

शय्याविपरीताः सुखशय्याः प्राशिवावगस्या नवरं ॥ इहत्ति ॥ शोकाभावेन हृष्टाइव हृष्टा अरोगा ज्वरादिवर्जिताः बलिकाः प्राणवतः कल्पशरीराः पटु

सुहसेज्जा सेणंमुंडेजाव पव्वइए सएणंलाभेणं तुस्सइ परस्सलाभणोआसाएइ णोपीहेइ णोपत्थेइ णोअभि लसइ परस्सलाभमणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे णोमणंउच्चावच णियच्छइ णोविणिघायमावज्जइ दो च्चासुहसेज्जा २ । अहावरा तच्चासुहसेज्जा सेणमुंडे जाव पव्वइए दिव्वमाणुस्सएकामभोगे णोआसाएइ जा व णोअभिलसइ दिव्वमाणुस्सएकामभोगे आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे णोउच्चावय नियच्छइ णोविणि घायमावज्जइ तच्चा सुहसेज्जा ३ । अहावरा चउत्था सुहसेज्जा सेणमुंडेजाव पव्वइए तस्सणमेवभवइ जइ ताव अरहंता भगवता हठा आरोग्गा बलिया कल्लसरीरा अन्नयराइं उरालाइं कल्लाणाइं विउलाइं पय

नकरे वांछा नकरे प्रार्थना नकरे अभिलाष नकरे परनालाभने अणबाछतो यावत् अभिलाष अणकरतो पोतानामनने उंचोनीचोनकरतो विनिघात नपावे धर्मथी नपडे एह बीजी सुखसज्या २ । हिवे त्रीजीसुखसज्या कहेछे ते मुडथई प्रव्रज्यालेई दिव्य मनुष्यना कामभोगमां पामवानी बांछा न करे यावत् अभिलास नकरे दिव्य मनुष्यना कामभोगने विषे आशाअणकरतो यावत् अभिलापअणकरतो मनने ऊचोनीचोनकरतो विनिघात नपा वे धर्मथी नपडे एह त्रीजीसुखसज्या ३ । हिवे चौथी सुखसज्या कहेछे ते मुडथई यावत् प्रव्रज्यालेई ते साधुने मनमा एहवु होय जे ते अरिहत भगवंत हर्षवत शोकरहितमाटे ज्वरादि रोगरहित बलवंत पडवडा पाच इद्रिय शरीरना धणी एहवायका अन्यतर उदार तप आसंसादिदोषर

शरीरा अन्यतराणि अनशनादीनां मध्ये एकतराणि उदाराणि आशंसादोषरहिततया दारचित्तयुक्तानि कल्याणानि मङ्गलस्वरूपत्वात् विपुलानि व हुदिनत्वात् प्रयतानि प्रकृष्टसंयमयुक्तत्वात् प्रगृहीतानि आदरप्रतिपन्नत्वात् महानुभागानि अचिन्त्यशक्तियुक्तत्वात् ऋद्धिविशेषकारणत्वाद्वा कर्मक्षय कारणानि मोक्षसाधकत्वात् तपःकर्माणि तपःक्रियाः प्रतिपद्यन्ते आश्रयन्ति ॥ किमङ्गपुणत्ति ॥ किंप्रश्ने अंगे त्यामंत्रणे अलङ्कारेवा पुनरिति पूर्वोक्तार्थवै लक्षण्यदर्शने शिरोलोचब्रह्मचर्यादीना मभ्युपगमे भवा आभ्युपगमिकी उपक्रम्यते ऽनेना युरि त्युपक्रमो ज्वरातिसारादि स्तत्र भवा या सौ पक्रमिकी सा चासौ साचेति आभ्युपगमिकौपक्रमिकी ता वेदना दुःख सहामि तदुत्पत्तावनिमुखतया अस्तिच सहि रवैमुख्यार्थे यथा असौ भट स्तम्भट सहते तस्मा न्नभज्यतइतिभाव. क्षमे आत्मनि परेवा विकोपतया तितिक्षामि अदैन्यतया अध्यासयामि सौष्टवातिरेकेण तत्रैव वेदनाया मवस्थान करोमीत्यर्थ. एका

त्ताइ पग्गहियाइं महाणुन्नागाइं कम्मरकयकरणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति किमंगपुण ञ्रहं ञ्रज्ज्ञोवगमि उवक्कामिय वेयण णोसम्मंसहामि खमामि तितिरकेमि ञ्रहियासेमि ममंचण ञ्रज्ज्ञोगमिउवक्कामियं सम्मम

हित मंगलीकरूप विपुलघणा उत्कृष्टसंयमसहित आदरसहितग्रह्या महानुन्नाग अचिंत्यसक्तिसहित ८ कर्मना क्षयकरणहार एहवा गुणसहिततप कर्मते पडिवजे ज्योतीर्थंकर जेहवा तपकरेछे तोहु तेहुं अभ्युपगमिकी वेदना ते शिरोलोच ब्रह्मचर्यथी ऊपनी । उपक्रमिकी तेज्वरातीसाररोगथी ऊ पनी एवे प्रकारनी बेदना तेऊपनेहुं नथी सहतो । क्रोधरहित खमतोनथी तितिक्षाऊपरे रीसने अणकरवे अदैन्यपणे अहियासे मुझने अभ्युपगमि की । तथारोगादि उपक्रमथी ऊपनी बेदनाप्रते सम्यक्प्रकारे अणसहते अणखमते तितिक्षाअणकरते वेदना २ यावत् सम्यक् प्रकारेसहते यावत् अ

र्थां शेते शब्दाः॥ किमन्नेत्ति॥ मन्ये निपातो वितर्कार्थः क्रियते भवतीत्यर्थः॥ एगंतसोत्ति॥ एकान्तेन सर्वथेत्यर्थ इति एतेच दुःखसुखशय्यावन्तो निर्गुणाः सगुणाश्च अतद्विशेषाणामेव वाचनीयत्वदर्शनाय सूत्रद्वय कण्ठ्य नवरं॥ वोइत्ति॥ निक्षतिः चौरादिका अध्यवशमितप्राभृत इति प्राभृत मधिकरण

सहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खेमाणस्स अणहियासेमाणस्स किंमन्ने कज्जइ एगंतसोपावेकम्मेकज्जइ ममंचण मज्झोवगमिन्नं जाव सम्मंसहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स किंमन्ने कज्जइ एगतसोमेणिज्जराकज्जइ चउत्थासुहसेज्जा ४॥ चत्तारि अवायणिज्जा प० त० अविणीए विगइप्पडिवद्धे अविउसवियपाहुडे मायी॥ चत्तारि वायणिज्जा पन्नत्ता तंजहा विणीए अविगइपडिवद्धे अविउसवियपाहुडे अमायी। चत्तारि

हिंसते तेस्युं थास्ये एकातेमांहरे तोहु एकांते निश्चयसु पापकर्मकरीस पापउपराजीस। अने मुझने वलीजो अभ्युपगमिकी वेदना २ यावत् सम्यक् प्रकारेसहते यावत् अहियासते तेस्युंथास्ये एकांते मांहरे कर्मनिर्जराथास्यें एहवुं विचारीखमे धर्मसिद्धातनेरुचावे १ पोताने लाभे संतोप आणे २ कामभोगनी बाछानकरे ३ तपकरतोपरीसहरोगादि वेदना सहे ए ४ सुखसज्या जाणवी॥ ४॥ सुखसज्यावंतते गुणवत। दुखसज्यावतते निर्गुण तेहने च्यार पुरुप अवायणीकह्या। भणाववानही। वाचनादेवीनही तेकहेछे॥ अविनीत १। विणयदूधदही प्रमुख ६ तेहनो लालची २। नथीसम्यो अधिकरण एतले क्रोधनु करणहार ३। मायावी कपटी ४॥ च्यारने वाचना देवी तेकहेछे विनयवतने १। विगयनो लालची नथी तेहने २। उपसम्योछे अधिकरण क्रोध जेहने ३। माया कपटरहित ४॥ च्यार प्रकारना पुरुप कह्या तेकहेछे एकपुरुप आत्मभरछे पोतानुजकार्य करेछे पणि

कारी कोपइति अनन्तरं वाचनीयाः पुरुषा उक्ता इति पुरुषाधिकारात्तद्विशेषप्रतिपादनपर चतुर्भङ्गिकाप्रतिबद्धसूत्रप्रबन्ध माह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ आत्मान विभर्त्ति पुष्णातीति आत्मम्भरिः प्राकृतत्वा दायभरेइति तथा पर विभर्तीति परम्भरि रिति प्राकृतत्वा त्परभरेइति तत्र प्रथमभङ्गे स्वार्थकारक एव सच जिनकल्पिको द्वितीय' परार्थकारकएव सच भगवानर्हं स्तस्य विवक्षया सकलस्वार्थसमाप्तेः परप्रधानप्रयोजनप्रापणप्राणितत्वात् तृतीये स्वपरार्थकारी सच स्थविरकल्पिको विहितानुष्ठानतः स्वार्थकरत्वा द्विधिवत्सिद्धान्तदेशनातश्च परार्थसम्पादकत्वा च्चतुर्थे तु भयाजुपकारी सच मुग्धमतिः कश्चि द्यथाछन्दोवेति एव लौकिकपुरुषोपि योजनीय उभयानुपकारीच दुर्गत एव स्यादिति दुर्गतसूत्र दुर्गतो दरिद्रः पूर्वं स्वनविहीनत्वात् ज्ञानादिरत्नविहीनत्वाद्वा पश्चादपि तथैव दुर्गतएवेति अथवा दुर्गतो द्रव्यतः पुन र्दुर्गतो भावत इति प्रथमएव मन्ये त्रयो नवर सुगतो द्रव्यतो धनी भावतो ज्ञानादिगुण

पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा आयंतरे णाममेगेणोपरंतरे परंतरेणाममेगेणोआयंतरे एगेआयंतरेविपरंतरेवि एगेणोआयंतरेणोपरंतरे । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा दुग्गएणाममेगेदुग्गए दुग्गएणाममेगेसुग्गए

पर तर नथी परनो कार्य नकरे अरिहंत दीक्षालीधी पछी मौनकरी रह्या उपदेश नदेवे ते आत्मतर परतर नथी २। एक परना कार्य करेछे पोतानो कार्य नथी करतो परउपकारीछे २। एक आत्मकार्य पणि करेछे परना पणि करेछे ३। एक पोतानु पणि कार्य नथी करतो अने परनो पणि कार्य नथी करतो ४॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे एक पुरुष द्रव्यथी दुर्गत दरिद्री धनरहित अने ज्ञावथी दुर्गत उपकारादि गुण रहित १। एक द्रव्यथी दुर्गत दरिद्रीछे पणि ज्ञावथी ज्ञान उपकारादि गुण सहित २। एक द्रव्यथी सुगत धनवंतछे अने ज्ञावथी उपकारादि

यानिति दुर्गतः कोपि व्रती स्यादिति दुर्व्रतसूत्रं दुर्गतो दरिद्रः पूर्वं न्धनविहीनत्वात् दुर्व्रतो ऽसम्यग्व्रतो ऽथवा दुर्व्यय आयानपेक्ष्य व्ययः कुस्थानव्ययोवे त्ये क' अन्यो दुर्गतः सन् सुव्रतो निरतिचारनियम सुव्ययो वौचित्यप्रवृत्ते रिति इतरौ प्रतीतौ दुर्गत स्तथैव दु'प्रत्यानन्द उपक्षतेन क्षत सुपकार योनाभिम न्यते यस्तु मन्यते त स सुप्रत्यानन्द इति दुर्गतो दरिद्र'सन् दुर्गति गमिष्यतीति दुर्गतिगामी त्येव मन्येपि नवरं सुगति गमिष्यतीति सुगतिगामी सुगत

सुग्गएणाममेगेदुग्गए सुग्गएणाममेगेसुग्गए चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा दुग्गएणाममेगेदुव्वए दुग्गए णामंएगेसुव्वए सुग्गएणाममेगेदुव्वए सुग्गएणामंएगेसुव्वए चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा दुग्गएणाममेगे दुप्पडियाणंदे दुग्गएणाममेगेसुप्पडियाणंदे ४ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा दुग्गएणाममेगेदुग्गइ

गुणरहितछे ३ । एक द्रव्यथी सुगत धनवंत ज्ञावथी पणि सुगत ज्ञान उपकारसहित ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक दरिद्रीछे अनेदुव्रतछे माठाव्रतनो धरणहारछे १ । एक दरिद्रीछे पणि सुव्रत ज्ञलाव्रतनो धरणहारछे २ । एक सुव्रत ज्ञलाव्रतनो धरणहारछे पणि दुर्गतछे द रिद्रीछे ३ । एक सुव्रत ते उचित जाणेछे अने सुव्रतनो धरणहारछे ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे एक दुर्गत दरिद्रीछे एने दु'प्र त्यानंदछे कीधाउपकारने नथी जाणतो १ । एक दरिद्रीछे पणि सुप्रत्यानदछे कीधोउपकार जाणेछे एम ४ भागा कहवा ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक दुर्गत दरिद्रीछे अने दुर्गतिमां गयो राजगृहीमा यात्राना लोक उपर कोपकीधो त्रिलुके लोकने मारवाने शिला नाखी पोते चपानगरे गयो १ । एक दुर्गत दरिद्रीछे पणि धर्मकरी सदगते गयो इम जाणवो एम च्यार ज्ञागा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे

ईश्वर इत्यर्थो दुर्गत स्तथैव दुर्गतिङ्गतः यात्राजनकुपिततन्मारणप्रवृत्तद्रमकवत् एव मन्ये त्रय स्तमद्य तमः पूर्वमज्ञानरूपत्वा दप्रकाशत्वाद्वा पश्चादपित मएवेत्येकः अन्यस्तु तम' पूर्वं पश्चाद् ज्योतिरिव ज्योति रुपाजितज्ञानत्वात् प्रसिद्धिप्राप्तत्वाद्वा शेषौ सुज्ञानौ तमः कुकर्म्मकारितया मलिनस्वभाव स्तमो ऽज्ञान बल सामर्थ्य यस्य स तमो न्धकारवा तदेव तत्त्ववा बल यस्य स तथा असदाचारवा नज्ञानी रात्रिचरोवा चौरादिरित्येकं तथा तम स्तथैवः जोति र्ज्ञानं बल यस्य आदित्यादिप्रकाशोवा ज्योति स्तदेव तत्त्ववा बल यस्य स तथा अयचा सदाचारी ज्ञानवान् दिनचारीवा चौरादिरिति द्वितीयः जोति सत्कर्म्मकारितयो ज्वलस्वभाव स्तमो बल स्तथैव अयच सदाचारवान् ज्ञानीकारणान्तराद्वा रात्रिचर इतित्वतीयः चतुर्थ' सुज्ञानः अयच सदाचारवान्

गामी दुग्गइणाममेगेसुगइगामी । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा दुग्गएणाममेगेदुग्गइगए दुग्गए णाममेगेसुगइगए ४ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा तमेणामंएगेतमे तमेणामंएगेजोई जोईणाम

एक पुरुष तम अधपुरुष अने पछी पणि अंध १ । एक पूर्वे तम अज्ञानथी पछी ज्ञानस्वरूप ज्योतिवंत थयो २ । एक पूर्वे ज्ञानरूप ज्योतिवंतछे पछी तम अज्ञानी थयो ३ । एक पूर्वे पणि ज्ञानवंतछे पछी पणि ज्ञानवंतछे ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहेछे एक पुरुष तमछे कुकर्मना करवाथी अने तमवलछे पापकरवानो वलछे चौरादिक १ रात्रिंचर १ । एक ज्योति पुरुष भलाकर्मना करवाथी ऊज्वलस्वभावछे पणि तमवलछे अंधारे रात्रिमां चालेछे कोईक कारणे ज्ञानीछे २ । एक पुरुष ज्योतिवंत ज्ञानी सदाचारमाटे अने तमवलछे ३ । एक पुरुष कुकर्मकारीछे अने ज्योति सूर्यनी तेहनुं वलछे दिवसचारीछे चौरादि ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे एक पुरुष तम पापी अने तम मिथ्यात्व अज्ञान अथ

ज्ञानी दिनचरोवेति तथा तम स्तथैव ॥ तमवलपलज्जणेत्ति ॥ तमो मिथ्याज्ञान मन्धकारंवा तदेव बलं तत्रा थवा तमस्खु तद्रूपे वलेच सामर्थ्यं प्ररज्य ते रतिकरोतीति तमोवलप्ररजन एव ज्योतिर्बलप्ररजनोपि नवर ज्योति' सम्यक्ज्ञान मादित्यादिप्रकाशोवेति एर्वामतरावपि इहापि तएव सूत्रोक्ता पुरुषविशेषा प्ररजनविशेषिता द्रष्टव्या: अथवा तम स्तथैवा प्रविष्टोवा तमोवलेना धकारवलेन सचरन् प्रलज्जतेइति तमोबलप्रलज्जन. प्रकाशचारी ए व मितरेपि नवर द्वितीयोधकारचारी तृतीय. प्रकाशचारी चतुर्थ. कुतोपिकारणा दधकारचार्य वेति ॥ पज्जलणेत्ति ॥ क्वचित्पाठ स्तत्रा ज्ञानवलेना ध कारवलेनवा ज्ञानवलेनवा प्रकाशवलेनवाप्रज्वलति दर्पितो भवत्य वष्टभ्नरोतिय: स तथेति परिज्ञातानि ज्ञपरिज्ञया स्वरूपतो वगतानि प्रत्याख्यानप

मेगेतमे जोईणाममेगेजोई चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा तमेणाममेगेतमबले तमेणाममेगेजोइबले जोईणाममेगेतमबले जोईणाममेगेजोईवले। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा तमेणाममेगेतमबलपलज्जणे तमेणाममेगेजोइबलपलज्जणे ४। चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा परिन्नायकम्मे णाममेगेणोपरिन्नायस

वा अंधकार तेहना यलथी राजे १। एक पुरुष तमछे अने ज्योतिवल ते सम्यक्त तथा सूर्यनी ज्योति तेवले प्ररज्यते रतिकरे राचे ४॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे एक पुरुष ज्ञानथी जाणी कृष्यादिकर्म पचखाणथी परिहस्याछे एहवोछे पणि ञलाभावसहित नथी नवो यती १। परिज्ञातसञ्ज ते शुभभावे भावितछे तेमाटे पणि परिज्ञातकर्म ते कृष्यादिकना आरंभथी निवर्त्यो नथी ते श्रावक २। एक परिज्ञातकर्मछे आरंभ मात्रनो पचखाण कीधोछे जाणीने अने ज्ञातसञ्जछे शुभपरिणामीछे साधु ३। एक परिज्ञातकर्म पणि नथी अने ज्ञातसञ्ज पिण नथी पचखाण नथी

रिज्ञयाच परिहृतानि कर्म्माणि कृष्यादीनि येन स परिज्ञातकर्मा नो नच परिज्ञाता: संज्ञा आहारसंज्ञाद्या येन सो परिज्ञातसंज्ञ' अभावितावस्थ' प्रव्र जित: श्रावकोवे त्येक: परिज्ञातसञ्ज्ञ सद्भावनाभावितत्वा न्नपरिज्ञातकर्मा कृष्याद्यनिवृत्त: श्रावक इतिद्वितीय: तृतीय: साधु श्चतुर्थो ऽसयतइति परिज्ञा तकर्मा सावद्यकरणकारणानुमतिनिवृत्त: कृष्यादिनिवृत्तोवा नपरिज्ञातगृहावासी ऽप्रव्रजितइत्येक अन्यस्तु परिज्ञातगृहावासो नत्यक्तारम्भो दु'प्रव्रजित इति द्वितीय: तृतीय. साधु श्चतुर्थो ऽसयत स्त्यक्तसंज्ञो विशिष्टगुणस्थानकत्वा दत्यक्तगृहावासो गृहस्थत्वा देक: अन्यस्तु परिहृतगृहावासो यतित्वा द

सो परिसायसस्रेणाममेगेणोपरिसायकम्मे एगेपरिसायकम्मेविपरिसायससोवि एगेनोपरिसायकम्मेनोपरि सायसस्रे ४ । चत्तारि पुरिजाया पसत्ता तजहा परिसायकमेणाममेगेणोपरिसायगिहावासे परिसाय गिहावासेणामंएगेणोपरिसायकम्मे ४ । चत्तारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा परिसायससोसाममेगेणोपरि

भाव पणि नथी ते असयती मिथ्यात्वी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहैछे एक परिज्ञातकर्म ते पापनुं करवो कराववो अनुमोदवो तेहथी निवर्त्योछे अथवा कृष्यादिक आरम्भथी निवर्त्यो गृहावासथी नथी निवर्त्यो दीक्षा नथी लीधी आनदादि श्रावकनी परे १ । एक गृहावास मूं क्यो पिण आरम्भ नथी मूक्यो ते मोकलो साधु तापसादिकनी परे छकायनो आरम्भी एम च्यार भागा जाणवा त्रीजे भागे साधु चौथे भांगे असंय ती मिथ्यात्वी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहैछे एक परिज्ञातसंज्ञछे उत्तम गुणसहितछे पणि गृहावास छाडियो नथी गृहस्थछे १ । बीजो गृहवास मूक्याछे पणि भावितात्मा नथी यती २ । त्रीजो बेभाव सहितछे ते शुद्ध यती ३ । चौथो बेभावरहितछे ते असती मिथ्यात्वी ४ ॥

भाषितत्वा च परिज्ञातसंज्ञः अन्य उभयथा अन्यो नोभयथेति इहैव जन्मन्यर्थः प्रयोजन भोगसुखादि आस्थाना इदमेव साध्विति बुद्धिर्यस्य स इहार्थः इहा र्थोवा भोगपरमः इहलोकप्रतिबद्धोवा परत्रैव जन्मान्तरे अर्थ आस्थाना यस्य स परार्थः परार्थोवा साधु र्वालतपस्वीवा २ इहच परत्रच यस्यार्थ आस्थावा स सुश्रावक उभयप्रतिबद्धोवा उभयप्रतिषेधवान् कालसौकरिकादि र्मूढोवेति ४ अथवा इहैव विवक्षिते ग्रामादौ तिष्ठतीति इहस्थः तत्प्रतिबन्धा त्वा प रत्रो न्यत्र परत्र प्रतिपन्नधात् परस्थः अन्यस्तू भयस्थो ऽन्यः सर्वाप्रतिबद्धत्वा दनुभयस्थः साधुरिति एकेनेति श्रुतेन एकः कश्चि द्वर्धते एकेनेति सम्यग्द

णायगिहावासे परिणायगिहावासेणाममेगे ४ । चत्तारि पुरिसजाया पणत्ता तंजहा इहत्थेणाममेगेणोपरत्थे परत्थेणाममेगेणोइहत्थे ४ । चत्तारि पुरिसजाया पणत्ता तंजहा एगेणणामंएगेवड्ढइ एगेणहायइ एगेण

वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्यिा तेकहेछे एक इहलोकसबंधी सुखना अरथीछे परलोकना सुखना अरथी नही १ । एक परलोकसबंधी सुखना अरथीछे पणि इह लोकसबंधी सुखना अरथी नथी ते साधु तथा वालतपस्वी २ । एम चौभगी । ते इम कहे छे इहां खा इहांखा पी इहांज खावो पीवो भोगवोज भलोछे आगलि कुण दीठोछे राजाप्रमुख १ । बीजो साधु ते इह भवसबंधी सुख मूंक्याछे अने परभवमां सुख पामस्ये २ । एक इह भवसंबधी सुखना अरथी अने पर भवसबधी सुखनां पणि अरथीछे ते श्रावक ३ । एक इह लोकसंबधी सुखना अरथी नथी अने परलोकसंबंधी सुखना पणि अरथी नथी ते दरिद्री अथवा पतितसाधु अथवा कालकसूरियानी परे आचरण करणहार ४ ॥ वली ४ प्रकारना पुरुष कह्यिा तेकहे छे एक कोईक एक ज्ञानथी वधै एक सम्यक्तथी हीन थाय पछे सिद्धांतने उत्सून प्ररूपवे समकितथी पडे १ । एक कोईक एक श्रुतज्ञानथी वधै अ

र्शनेन हीयते यथोक्तं जइ २ वहुसुओसंमओयसीसगणसपरिवुडोय अविणिच्छिओयसमये तहतहसिद्धतपडिणीओत्ति ॥ १ ॥ एकस्तथा एकेन श्रुतेनेवा न्यो वर्द्धते द्वाभ्यां सम्यग्दर्शनविनयाभ्यां हीयतइति द्वितीय. द्वाभ्या श्रुतानुष्ठानाभ्या मन्यो वर्द्धते एकेन सम्यग्दर्शनेन हीयतइति तृतीयः द्वाभ्यां श्रुता नुष्ठानाभ्या मन्यो वर्द्धते द्वाभ्या सम्यग्दर्शनविनयाभ्या हीयतइति अथवा ज्ञानेन वर्द्धते रागेणहीयत इत्येकः अन्यो ज्ञानेन वर्द्धते रागद्वेषाभ्यां हीयतइति द्वितीयो ऽन्यो ज्ञानसंयमाभ्यां वर्द्धते रागेण हीयत इतितृतीयः अन्यो ज्ञानसयमाभ्यां वर्द्धते रागद्वेषाभ्यां हीयतइति चतुर्थः अथवा क्रोधेन वर्द्धते माय या हीयते कोपेनवर्द्धते मायालोभाभ्या हीयते २ क्रोधमानाभ्या वर्द्धते माययाहीयते ३ क्रोधमानाभ्यावर्द्धते मायालोभाभ्याहीयत इति ४ प्रकथकाःपाठांत रतः कथकावा अश्वविशेषा आकीर्णो व्याप्तो जवादिगुणैः पूर्वं पश्चादपि तथैव अन्यस्त्वा कीर्णः पूर्वं पश्चात् खलुङ्को गलि रविनीतइति अन्यः पूर्वंखलुङ्क.

णामंएगेवड्ढइदोहिंहायइ दोहिंणाममेगेवड्ढइएगेणंहायइ दोहिंणाममेगेवड्ढइदोहिंहायइ । चत्तारिपकंथका .

ने बे समकित विनयथी हीन थाय २ । एक बेथी वधे ज्ञानक्रियाथी बेगुणथी वधे एक गुणथी हीनथाय समकित रहित थाय ३ । एक ज्ञान क्रि याथी बेथी हीन थाय अने बे समकित विनयथी रहित थाय ४ ॥ अथवा एक ज्ञानथी वधे मिथ्यात्वथी हीन थाय १ । एक ज्ञानथी वधे अने वे राग द्वेषथी हीन थाय २ । एक ज्ञान संयमथी वधे एक मिथ्यात्वथी हीन थाय ३ । एक बे ज्ञान अने संयमथी वधे अने राग द्वेष बेथी हीन थाय ४ ॥ अथवा एक क्रोधथी वधे अने १ मायाथी हीनथाय १ । एक क्रोधथी वधे अने माया लोभ बेथी हीनथाय २ । एक माया अने लोभ बे थी वधे अने क्रोधथी हीन थाय ३ । एक क्रोध अने मान बेथी वधे अने माया लोभ बेथी हीन थाय एवं ४ भागा जांणवा ४ ॥ च्यार प्रकारना

पश्चा दाकीर्णो गुणवानितिच चतुर्थः पूर्वं पश्चादपि खलुङ्कएवेति आकीर्णो गुणवान् आकीर्णतया गुणवत्तया विनयवेगादिभि रित्यर्थ वहति प्रवर्त्तते विहरतीति पाठांतर आकीर्णो अन्यआरोहदोषेण खलुङ्कतया गलितया वहति अन्यस्तु खलुक आरोहकगुणात् आकीर्णगुणतया वहति चतुर्थः प्रतीतः सूत्रद्वयेपि पुरुषाः दार्ष्टान्तिका योज्याः सूत्रेतु क्वचिन्नोक्ता विचित्रत्वात् सूत्रगते रिति जाति४ कुल२ बल २ रूप १ जयपदेषु दशभि र्द्विकसंयोगै र्दशैव प्रकथक

पसत्ता तंजहा आइन्नेणाममेगेआइन्ने आइन्नेणाममेगेखलुंके खलुंकेणाममेगेआइन्ने खलुंकेणाममेगेख लुंके ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पसत्ता तजहा आइन्नेणाममेगेआइन्ने चउभंगो । चत्तारि पकथका पसत्ता तजहा आइन्नेणाममेगे आइन्नयाएविहरइ आइन्नेणाममेगे खलुंकयाएविहरइ ४ । एवामेव

कथक ते घोटक कहिया तेकहेछे एक पूर्वे आकीर्ण वेगादिगुणसहित पछी आकीर्ण विनय वेगवत १ । एक घोडो पहिलां आकीर्ण गुणवत पछे खलुं क गलयो अविनीत वक्रथाय २ । एक प्रथम खलुक गलियो पछे आकीर्ण गुणवत वेगादिके थाय ३ । एक प्रथम पणि खलुक गलियोछे पछी पणि खलुक गलियो अविनीत ४ ॥ इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पूर्वे आकीर्ण विनयादिगुणवत पछे पणि आकीर्ण एम च्यार भा गा जाणवा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना घोडा कहिया तेकहेछे एक घोडो आकीर्ण जातिवतछे अने आकीर्णताथी वेगथी तथा समरीतथी चालेछे १ । एक आकीर्णछे अने खलुक अविनीतनी परे वांको चालेछे एम ४ भागा जाणवा ॥ इण दृष्टातथी च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहेछे एक पुरुष आकीर्ण विनयादिगुण सहित अने आकीर्ण विनयवतनी चालथी चालेछे एम च्यार भागा जाणवा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना कथक कहिया तेकहे

दृष्टांतचतुर्भङ्गीसूत्राणि प्रत्येक तान्येवानुसरति सति दश दार्ष्टांतिकपुरुषसूत्राणि भवन्तीति नवर जयः पराभिभवइति सिहतया ऊर्जेहत्या निष्का

चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा आइन्नेआइन्नत्ताएविहरइ चउभंगो । चत्तारि पकथका प० तं० जाइसंपन्नेणाममेगेणोकुलसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा जाइसंपन्नेणामएगे चउभंगो । चत्तारि कथगा पन्नत्ता तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगेणोवलसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा जाइसपन्नेणाममेगेणोवलसंपन्ने ४ । चत्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगे णोरूवसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगेणोरूवसंपन्ने ४ । च

ळे एक अश्व जातिसंपूर्णळे पणि कुलसपूर्ण नथी जाति ते मातानुंपक्ष कुलते वापनो पक्ष एम चौभंगी ४ ॥ एहनी परे च्यार प्रकारना पुरुप कहिया तेकहेळे एक पुरुप जातिसपूर्णळे पणि कुलसंपूर्ण नथी एम च्यार भागा कहवा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना अश्व कहिया तेकहेळे एक जातिसंपूर्णळे पणि बलसपूर्ण नथी इम च्यार भागा कहवा ४ ॥ एहनी परे च्यार प्रकारना पुरुप कहिया तेकहेळे एक पुरुष जातिसपूर्णळे पणि बलसंपन्न नथी एम च्यार भागा जाणवा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना अश्व कहिया तेकहेळे एक जातिसपन्नळे पणि रूपसपन्न नथी एम च्यार भांगा जाणवा ४ ॥ इण दृष्टातथी च्यार प्रकारना पुरुप कहिया तेकहेळे एक जातिसपन्नळे पणि रूपसपन्न नथी एम चौभंगी जाणवी ४ ॥ वली च्यांर प्रकारना घोडा कह्या तेकहेळे ॥ एक जातिसपन्नळे पणि जयसंपन्न नथी एम चौभंगी ॥ ४ ॥ एहनी परे च्यार प्रकारना पुरुप एक जातिसपन्नळे पणि जयसपन्न नथी। इम कुलसपन्न अने बलसपन्न साथे चौभंगी ४ ॥ कुलसपन्न अने रूपसंपन्न साथे चौभंगी ४ ॥ कुलसंपन्न अने जयसंपन्न साथे चौभंगी

१० ॥ तो गृहवासात् तथैव विहरति उद्यतविहारेणेति शृगालतया दीनवृत्त्येति पूर्वं पुरुषाणा मश्वादिभि र्जात्यादिगुणेन समतो क्ता धुना अप्रतिष्ठानादीनां

२६ ॥ त्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगेणोजयसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा जाइसंपन्ने ४ । एवं कुलसंपन्नेणयवलसंपन्नेणय ४ । कुलसंपन्नेणरूवसंपन्नेणय ४ । कुलसंपन्नेणय जयसपन्नेणय ४ । एवंबलसंपन्नेणयरूवसंपन्नेणय ४ । बलसंपन्नेणयजयसंपन्नेणय ४ । सव्वत्थपुरिस जायापडिवक्खा । चत्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा रूवसंपन्नेणाममेगेणोजयसंपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिस० । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा सीहत्ताएणाममेगेनिक्खंतिसीहत्ताएविहरइ सीहत्ताएणाम मेगेनिक्खंतिसियालत्ताएविहरइ सियालत्ताएणाममेगेनिक्खंतिसीहत्ताएविहरइ सियालत्ताएणाममेगेनिक्खंति

४ ॥ बलसंपन्न अने रूपसंपन्न साथे चोभंगी ४ ॥ बलसंपन्न अने जयसंपन्न साथे चोभंगी ४ ॥ इहा सघले पुरुषनो दृष्टांत जाणवो ॥ वली च्यार घोडा कह्या तेकहेछे ॥ एक अश्व रूपसपन्न छे पणि जयसपन्न नथी एम ४ भागा ॥ एहनी परे च्यार पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ एक पुरुष रूपसपन्न छे पणि जयसंपन्न नथी ॥ प्रथम अश्व साथे पुरुष दृष्टात कह्यो जात्यादिगुणथी हिवे चारित्रगुणथी सिंहनो दृष्टात कहेछे ॥ च्यार पुरुष कह्या एक पुरुष सिंहनी परे दीक्षा लेवा नीकल्यो धन्ना अणगारनी परें अने सिंहनी परे विचरे विहारकरे १ ॥ एक सिंहनी परे नीकल्यो अने पछी सीया लनी परे विचरे कंडरीकनी परे २ एक सीयालनी परे घरथी दीक्षा लेवा नीकल्यो पछी सिंहथई विचरे भवदेवनीपरे ३ । एकसीयालनी परे नी कल्यो अने सीयालनी परे विचरे दीक्षा भावथी लीधी भावथी पाले नथी पेटभराईपरें ४ ए च्यार भांगा ॥ च्यार पदार्थ लोकमा सम सरिखा क

तामेव प्रमाणत आह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ सूत्रद्वयं प्रायोव्याख्यातार्थं तथा प्युच्यते अप्रतिष्ठानो नरकावासः सप्तम्यां नरकपृथिव्यां पञ्चानां कालादीनां नर कावासानां मध्यवर्त्ती सच योजनलक्ष पालकं पालकदेवनिर्म्मितं सौधर्म्मेन्द्रसम्बन्धि यानञ्च तद्विमानञ्च यानायवा गमनाय विमान यानविमान नतु शाश्वतमिति सर्वार्थसिद्ध पञ्चाना मनुत्तरविमानानां मध्यममिति चत्वारो लोके समा भवन्ति कथमित्याह ॥ सपक्खिसपडिदिसति ॥ समानाः पक्षाः पार्श्वा दिशो यस्मिन् त त्सपक्ष इहे कारः प्राकृतत्वेन तथा समानाः प्रतिदिशो विदिशो यस्मिन् तत् प्रतिदिक् तद्यथा भवत्ये व समा भवन्तीति सद्द शाः पक्षैरिति सपक्ष मित्यव्ययीभावोवेति पृथुसंकीर्णयो र्हि द्रव्ययो रध उपरि विभागेन स्थितयो स्तुल्यमानयोर्वा विषमताव्यवस्थितयो र्न समा दिशो विदिशश्च भवन्तीति अत्यतसमताख्यापनार्थ मिद विशेषणद्वयमिति सीमन्तकः प्रथमपृथिव्याः प्रथमप्रस्तटे पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाण इति समयः

सियालत्ताएविहरइ । चत्तारि लोगे समा पन्नत्ता तंजहा अप्पइठाणेणरए जंबूद्दीवेदीवे पालएजाणवि माणे सव्वठसिद्धेमहाविमाणे । चत्तारि लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं प० तं० सीमंतएनरए समयखेत्ते

ह्या तेकहेछे ॥ सातमीनरके कालादि पांच नरकावासामां बिचलो अप्रतिष्ठान नरकावासो १ । सर्वथी छोटो जंबूद्वीपनामा द्वीप २ । सौधर्मेंद्रनो जावा आवानो पालकविमान ३ । सर्वार्थ सिद्धनामे मोटो अनुत्तरविमान ४ ॥ एच्यार एक एक लाख योजनना छे तेमांटे सम कह्या ॥ वली लोक मा च्यार पदार्थ सरीखा कह्या । सपक्ष सदिशि सविदिशि तेकहेछे ॥ सीमतक नामा नरकावासो पहली नरकमां ४५ लाख योजन प्रमाण १ । स मयक्षेत्र एतले मनुष्यक्षेत्र ४५ लाख योजननु २ । उडुविमान सौधर्म देवलोके प्रथम प्रतरमां ३ । ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी ते सिद्धशिला ४५ लाख योज

कालस्तदुपलक्षितं चेत्र समयक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थः. उडुविमाण सौधर्मे प्रथमप्रस्तट एवेति ईषत्प्राग्भारा रत्नप्रभाद्यपेक्षया प्राग्भारउच्छ्रयादिलक्षणो यस्यां सेषत्प्राग्भारा ईषत्प्राग्भारा ऊर्द्धलोके भवतीति ऊर्द्धलोकप्रस्तावादिदमाह ॥ उड्ढेत्यादि ॥ द्वे शरीरे येषां ते द्विशरीरा एकं पृथिवीकायिकादिशरीरमेव द्वितीयं जन्मांतरभावि मनुष्यशरीरं तत स्तृतीयं तेषां चि न भवत्य नन्तर मेव सिद्धिगमनात् ॥ ओरालातसत्ति ॥ उदाराः स्थूला द्वीन्द्रियादयो नतु सूक्ष्मा स्तेजोवायुलक्षणा स्तेषा मनन्तरभवे मानुषत्वा प्राप्त्या सिद्धि र्नभवतीति शरीरांतरसम्भवा त्तथो दारत्रसग्रहणेन द्वीन्द्रियादिप्रतिपादनेपी ह द्विशरीरतया पञ्चेन्द्रिया एव ग्राह्या विकलेन्द्रियाणा मनन्तरभवे सिद्धेरभावा दुक्तंच विगलालभेज्जविरइं सहुकिंचिलभेज्जसुहुमतसत्ति ॥ लोकसम्बन्धाधाराते ऽधोलोकतिर्यग्लोकयो रतिदेशसूत्रे गतार्थेइति तिर्यग्लोका धिकारा त्तत्सम्भव सयतादिपुरुषं भेदैराह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ ह्रिया लज्जया सत्व परीषहादिसहने रणाङ्ग

उड्डुविमाणे ईसिंपब्भारापुढवी । उड्ढलोएणं चत्तारि विसरीरा पणत्ता तंजहा पुढविकाइया आउवणस्सइउरालतसपाणा । अहेलोगेणं चत्तारि विसरीरा पणत्ता ॥ एवंचेव तिरियलोएवि ॥ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता

ननीछे ४ ॥ उर्द्धलोकमां च्यारने बेशरीर कह्यिा तेकहेछे उर्द्धलोकथी आवी मनुष्यपणुं पामी मोक्ष जाय ते आश्रीने बेशरीर कह्यिा । केतलाईक पृथिवीकायने एक शरीर पृथिवी नोछे बीजो शरीर मनुष्यनो पामी मोक्ष जाय १ । अप्कायने पणि इमज बे शरीर कहवा वनस्पतिकायने पणि इमज बे शरीर २ । औदारिक त्रस जीव ते इहां पचेंद्री जाणवा ४ ॥ अधोलोकमा च्यार बेशरीर कह्यिा ॥ इमज ऊर्द्धलोकनी परे तिरछा लोकमां बे शरीरी कहवा ॥ तिरछालोकना अधिकारमाटे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे लाजथी एकपुरुष सत्व राखेछे लाजथी परीषहादि खमेछे

णेवा अवष्टम्भो यस्य सङ्गीसत्व स्तथा क्रिया हसिष्यति मा मुत्तमकुलजातं जनाइति लज्जया मनस्येव नकार्ये रोमहर्षकपादिभयलिङ्गोपदर्शनात् सत्व यस्य स ह्रीमनःसत्वः चल मस्थिर परीपहादिसम्पाते ध्वंसात्सत्व यस्य स चलसत्व एतद्विपर्यया त्स्थिरसत्वइति स्थिरसत्वो नन्तर सुत्त. सचा भिग्रहान् प्रति पद्य पालयतिइति तद्दर्शनायसूत्रचतुष्टय मिद ॥ चत्तारिसेज्जा इत्यादि ॥ सुगम नवरं शय्यते यस्या सा शय्या संस्तारक स्तस्याः प्रतिमा अभिग्रहाः शय्या प्रतिमा स्तत्रोद्दिष्ट फलकादीना मन्यतमं गृहीष्यामि ने तरदित्येका यदेव प्रागुद्दिष्ट तदेव यदि द्रक्ष्यामि तदा तदेव गृहीष्यामि ना न्यदिति द्वितीया त दपि यदि तस्यैव शय्यातरस्य गेहे भवति ततो गृहीष्यामि नान्यत् आनीय तत्र शयिष्य इति तृतीया तदपि फलकादिक यदि यथा संस्तृतमेवास्ति त तो गृहीष्यामि नान्यथेति चतुर्थी आसुच प्रतिमासु द्वयोःप्रतिमयो र्गच्छनिर्गता नामग्रह उत्तरयो रन्यतरस्या मभिग्रहोगच्छातर्गतानान्तु चतस्रोपि क ल्पन्त इति वस्त्रप्रतिमा वस्त्रग्रहणविषये प्रतिज्ञा. कार्पासिकादी न्येव मुद्दिष्ट वस्त्र याचिष्यइति प्रथमा तथा प्रेक्षित वस्त्र याचिष्ये नापरमिति द्वितीया तथा न्तरपरिभोगेन उत्तरीयपरिभोगेन वा शय्यातरेण परिभुक्तप्राय वस्त्र गृहीष्यामीति तृतीया तथा तदेवो त्सृष्टधर्मिक ग्रहीष्यामीतिचतुर्थी पात्रप्रति

तंजहा हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते। चत्तारि सेज्जपडिमाउ पन्नत्ताउ । चत्तारि वत्थपडिमाउ

सग्राममा ऊभो रहै १ । एक लज्जामन सत्वनु धणीछे परीसहऊपना खमै २ । एक चलसत्वनुं धणी परीसह ऊपना खमै ३ । एक थिरसत्वनु ध णी परीसहऊपनाथी दृढसत्व ४ ॥ सत्ववतने च्यार सय्या संथारानी प्रतिमा ते अभिग्रहविशेष कह्या ते आचारांगमां कहियाछे ॥ च्यार वस्त्रनी प्रतिमा कही ॥ च्यार पात्रनी प्रतिमा कही ॥ च्यार स्थान प्रतिमा कही तेग्रंथांतरथी जाणवी ॥ च्यार शरीरना जीव फरस्या कहिया तेकहैछे

मा उद्दिष्ट न्दारुपात्रादि याचिष्ये १ तथा प्रेक्षितं २ तथा दातुः स्वाङ्गिक परिभुक्तप्राय द्वित्रिषु वापात्रेषु पर्यायेण परिभुज्यमानं पात्र याचिष्य इति तृ तीया उज्झितधर्म्मित मिति चतुर्थी स्थान कायोत्सर्गाद्यर्थ आश्रय स्तत्र प्रतिमा स्थानप्रतिमा स्तत्र कस्यचित् भिक्षो रेवभूतो भिग्रहो भवति यथ ह मचि त्त स्थान मुपाश्रयिष्यामि तत्रचा कुञ्चनप्रसारणादिका क्रियां करिष्ये तथा किञ्चि दचित्त कुड्यादिक मवलम्बयिष्ये तथा तत्रैव स्तोकं पादविहरण समाश्र यिष्या मीतिप्रथमा प्रतिमा द्वितीया त्वा कुंचनप्रसारणादिक्रिया मवलम्बनञ्च करिष्ये न पादविहरण मिति तृतीया त्वा कुचनप्रसारण मेव ना लम्बनपाद विहरणे इति चतुर्थी पुन र्यत्र त्रयमपि न विधत्ते अनन्तरं शरीरचेष्टानिरोध उक्त इति शरीरप्रस्तावा दिद सूत्रद्वय ॥ चत्तारीत्यादि ॥ व्यक्त किन्तुजीवेन स्पृष्टानि व्याप्तानि जीवस्पृष्टानि जोवेन हि स्पृष्टान्येव वैक्रियादोनि भवन्ति नतु यथा औदारिक जीवमुक्तमपि भवति मृतावस्थाया तथैतानीति ॥ कम्ममीसगत्ति ॥ कार्मणेन शरीरेणो मिश्रकाणि न केवलानि यथौ दारिकादीनि तौणिवैक्रियादिभि रमिश्रकाण्यपि भवति नैवं कार्मणेनेति शरीरा णि कार्मणेनो न्मिश्राणो त्युक्त मुन्मिश्राणिच स्पृष्टाण्येवेति स्पृष्टप्रस्तावात् सूत्रद्वय ॥ चउहीत्यादि ॥ गतार्थं केवलं ॥ फुडेत्ति ॥ स्पृष्टः प्रतिप्रदेशं व्याप्तः

पन्नत्ताउ । चत्तारि पायपडिमाउ पन्नत्ताउ । चत्तारि ठाणपडिमा । चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पन्नत्ता तंजहा वेउव्विए आहारगे तेयए कम्मए । चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा पन्नत्ता तंजहा उरालिए वेउव्विए

वैक्रियशरीर १ । आहारकशरीर २ । तैजसशरीर ३ । कार्मणशरीर ४ ॥ च्यार शरीर कार्मणशरीरथी मिश्र कहिया तेकहेछे औदारक १ वैक्रिय २

सूक्ष्माणां पचानामपि सर्वलोकात् सर्वलोके उत्पादात् वादरतेजसानान्तु सर्वलोकादुद्धृत्य मनुष्यक्षेत्रे ऋजुगत्या वक्रगत्याचो त्पद्यमानानां इयो रूर्द्धक पाटयो रेव बादरतेजस व्यपदेशस्ये ष्टत्वात् ॥ चउहिबादरकाएहि ॥ इत्युक्त बादरा हि पृथिव्यब्वायुवनस्पतयः सर्वतो लोका दुद्धृत्य पृथिव्यादिघनोद ध्यादि धनवातवलयादिषु यथा स्वसुपादस्थाने ष्वन्यतरगत्यो त्पद्यमाना अपर्याप्तकावस्थाया मतिवहुत्वा त्सर्वलोक प्रत्येकं स्पृशन्ति पर्याप्ता स्त्वेते बादर तेजस्कायिका स्त्वसाख्य लोकासङ्ख्येयभागमेव स्पृशन्तीति उक्तञ्चप्रज्ञापनाया तत्थण बादरपुढविकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता उववाएण लोय स्स असखेज्जइभागे ॥ तथा ॥ बादरपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता उववाएण सव्वलोए ॥ एवमब्वायुवनस्पतीना तथा ॥ बादरतेउ काइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता उववाएण लोअस्स असखेज्जइभागे बादरतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता लोयस्स दोसु उड्ढकवा डेसुतिरिय ॥ लोयतट्ठेयत्ति ॥ इयो रूर्द्धकपाटयो रूर्द्धकपाटस्थतिर्यग्लोकेचेत्यर्थः तिर्यग्लोकस्थानके वे त्यन्ये तथा कहिण भन्ते सुहुमपुढविकाइयाण पज्जत्त

आहारए तेयए । चउहिं अत्थिगाएहिं लोगे फुडे पन्नत्ते तंजहा धम्मत्थिकाएणं अधम्मत्थिकाएणं जीव त्थिपोग्गलत्थिकाएणं । चउहिंवायरकाएहिं उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे पन्नत्ते तंजहा पुढविकाइएहिं आ

आहारक ३ । तैजसशरीर ४ ॥ फरसना अधिकार माटे कहेछे च्यार अस्तिकायथी आखो लोकस्पृष्टछे तेकहेछे धर्मास्तिकाय १ । अधर्मास्तिकाय २ जीवास्तिकाय ३ । पुद्गलास्तिकाय ४ ॥ ए च्यारे लोकप्रमाणेछे ॥ च्यारयथाइच्छाथी ऊपजता अपर्याप्तावस्थाये बादरपणे एच्यारे लोकफरस्यो क ह्यो तेउकायबादरतेलोकनो असख्यातमो भागफरस्ये तेकहेछे ॥ एक पृथिवीकाय बादर अपर्याप्ता १ अपकाय २ वाउकाय ३ वनस्पतीकाय ४ ।

॥ गाए अपज्जत्तगाणयठाणा पण्णत्ता गोयमा सुहुमपुढविकाइया जेय अपज्जत्तगाते सव्वे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोगपरियावण्णगा पणत्ता ॥ समणाउसोत्ति ॥ एव मन्येपि एव वेइंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता उववाएण लोयस्स असखेज्जइभागेत्ति ॥ एवम्शेषाणा मपीति च तुर्भि र्लोकः स्पृष्ट इत्युक्तमिति लोकप्रस्तावात् तस्य धर्मास्तिकायादीनां वा न्योन्य प्रदेशत' समतामाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर प्रदेशाग्रेण प्र देशप्रमाणेनेति तुल्याः समानाः सर्वेषा मेषा मसख्यातप्रदेशत्वात् ॥ लोयागासेत्ति ॥ आकाशस्या नन्तप्रदेशत्वेन धर्मास्तिकायादिभिः सहा तुल्यता प्रसक्तौ लोकग्रहणम् ॥ एगजीवत्ति ॥ सर्वजीवाना मनन्तप्रदेशत्वात् विवक्षिततुल्यताभावप्रसङ्गा देकग्रहणमिति पूर्वं पृथिव्यादिभिः स्पृष्टो लोक इत्युक्त मिति पृ थिव्यादि प्रस्तावा दिदमाह ॥ चउगहमित्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तु ॥ नोपस्सति ॥ चक्षुषा नो दृश्यमिति सूक्ष्मत्वात् क्वचित् नसुपस्सतिपाठ तत्र न सुखदृश्यं न चक्षुषः प्रत्यक्षदृश्य मनुमानादिभिस्तु दृश्यमपीत्यर्थः बादरवायूना तथा सूक्ष्माणा पञ्चानामपि तदेक मनेकवा अदृश्यमिति चतुर्णामित्युक्त वनस्पतयइति

उकायवाउवणस्सइकाएहिं । चत्तारि पएसग्गेणंतुल्ला प० तंजहा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए लोगागासे एगेजीवे । चउराहमेगसरीरं नोसुपस्सं भवइ त० पुढविकाइयाणं आउतेउवणस्सइकाइयाणं। चत्तारि इंदि

च्यारे प्रदेशथीसरिखा कह्या । एच्यारना प्रदेशसरिखाछे तेकहेछे ॥ धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ लोकाकाश ३ एक जीवना प्रदेश ४ । च्यार सूक्ष्म माटे एहनाशरीर दृष्टिथी दीसेनही एकलोजुदोशरीर तेकहेछे ॥ पृथिवीकायनुशरीर नदीसे १ अपकायनो २ तेउकायनो ३ साधारणवनस्पती नो ४ एनो मानजाणिये एवादर जाणवा अने वादर वायुकायनो अने ए पाचे सूक्ष्मनो एक अथवा अनेक शरीरतेचक्षुथी अदृश्यछे। च्यार इंदियना

॥

साधारणाएव ग्राह्याः प्रत्येकशरीरस्थे कस्यापि दृश्यत्वादिति पृथिव्यादीनां शरीरस्य चक्षुरिन्द्रियाविषयत्व मुक्तामितीं द्रियविषयप्रस्तावा दिदमाह ॥ चत्तारिइंदियेत्यादि ॥ स्पष्ट किन्तु इंद्रियै रर्थ्यं ते अधिगम्यत इतींद्रियार्थाः शब्दादयः ॥ पुट्ठत्ति ॥ स्पष्टा इंद्रियसंबद्धा ॥ वेएतित्ति ॥ वेद्यते आत्मना ज्ञायं ते नयनमनोवर्जाना श्रोत्रादीनां प्राप्तार्थपरिच्छेदस्वभावत्वा दिति उक्तञ्च पुट्ठसुणेइसद्दं रूवपुणपासइअपुट्ठतु। गंधरसचफासं चबद्धपुट्ठवियागरेत्ति ॥ १ ॥ अनतरं जीवपुद्गलयो रिंद्रियद्वारेण ग्राहकग्राह्यभाव उक्तो धुना तयो र्गतिधर्म्मं चितयन्नाह ॥ चउहीत्यादि ॥ व्यक्तं परं अन्येषा गतिरेव नास्तीति जीवा यपोग्गलायेत्युक्तं ॥ नोसंचाएन्त्ति ॥ न शक्नुवति नाल ॥ बहियत्ति ॥ बहिस्तात् लोकातात् अलोकमित्यर्थः गमनताये गमनाय गन्तुमित्यर्थः गत्यभावेन लो कान्ता त्परत स्तेषां गतिलक्षणस्वभावाभावा दधोदीपशिखाव त्तथा निरुपग्रहतया धर्मास्तिकायाभावेन तज्जनितगत्युपष्टंभाभावात् गन्यादिरहितपंगु वत् तथारूक्षतया सिकतामुष्टिवत् लोकांतेषु हि पुद्गलारूक्षतया तथा परिणमति यथा परतो गमनायनाल कर्म्मपुद्गलानां तथा भावे जीवा अपि सिद्धा

यत्था पुट्ठा वेदेंति तंजहा सोइंदियत्थे घाणिंदियत्थे जिब्भिंदियत्थे फासिंदियत्थे। चउहिं ठाणेहिं जीवाय पोग्गलाय णोसंचाएइ बहिया लोगंतागमणयाए गइअभावेणं निरुवग्गहयाए लुक्खत्ताए लोगाणुभावेणं

बिषयफरस्या थका वेदीये तेकहेछे ॥ श्रोत्रेंद्रिय कानइंद्रियनो विषय १ घ्राणेंद्रिय नाशिकाइंद्रियनो विषयगंध २ जीभनो विषयरस ३ फरसनो वि षयरूप ४ तेचलुने अफरस्यो बेदाय ॥ च्यार थानके जीव तथा पुद्गल ए वे समर्थनहोय बाहिर लोकथकी अलोकांतमां जावाने एतले अलोकमां जई नसके तेकहेछे ॥ गतिना अभावथी लोकातलगें जगतछे जिमदीवानी गति शिखानेहेठे १ धर्मास्तिकायना बलना अभावथी जिमगाडा विना पाग

सु निरुपग्रहतयावेति लोकानुभावेन लोकमर्यादया विषयचेत्रा दन्यत्र मार्त्तंडमण्डलवदिति अनन्तरोक्ता अर्थां उक्तावन्निदर्शनतः प्रायः प्राणिनां प्रतीति पथपातिनी भवतीति निदर्शनभेदप्रतिपादनाय पंचसूत्री तत्र ज्ञायते अस्मिन्सति दार्ष्टांतिको ऽर्थइति अधिकरणेक्तप्रत्ययोपादानात् ज्ञात दृष्टांतः साधन सद्भावे साध्यस्या वश्यभाव. साध्याभावेवा साधनस्या वश्य मभाव इत्युपदर्शनलक्षणो यदाह साध्येनानुगमोहेतोः साध्याभावेचनास्तिता । ख्याप्यते यःसदृष्टांतः ससाधर्म्यैतरोद्विधेति ॥ १ ॥ तत्र साधर्म्ये दृष्टांतो अग्नि रत्र धूमा यथा महानस इति वैधर्म्यदृष्टातस्तु अग्न्यभावे धूमो न भवति यथा ज लाशय इति अथवा ख्यानकरूप ज्ञात तच्च चरितकल्पितभेदात् द्विधा तत्र चरित यथा निदानं दुःखाय ब्रह्मदत्तस्येव कल्पित यथा प्रमादवता मनित्य योवनादीनीति निदर्शनीय यथा पांडुपत्रेण किशलयाना देशित तथाहि जहतुमेतम्हअम्हे तुमेवियहोइहाजहाअम्हे। अप्पाहेइपडत पडुयपत्तंकिसलया णति ॥ १ ॥ अथयो पमानमात्रं ज्ञात सुकुमार' करः किसलयमिवे त्यादिवत् अथवा ज्ञातसुपपत्तिमात्र ज्ञानहेतुत्वात् कस्मा दवाः क्रीयते यस्मात् मुधा नलभ्यते इत्यादिव दित्येव मनेकधापि साध्यप्रत्यायनरूप ज्ञात सुपाधिभेदा च्चतुर्विध दर्शयति तत्र आ अभिविधिना ह्रियते प्रतोतौ नीयते अप्रतीतो ऽर्थो ऽनेने त्याहरण यत्र समुदित एव दार्ष्टांतिको ऽर्थ उपनीयते यथा पाप दुःखाय ब्रह्मदत्तस्ये वेति तथा तस्या हरणार्थस्य देश स्तद्देश. सचा सा वुपचारा

चउव्विहे णाणे पन्नत्ते तंजहा आहरणे आहरणतद्देसे

लावत् २ लूखापणा माटे लोकांतने विषे पुद्गल एहवो लूखो थाय जिम आघोजाय नसके ३ वली लोकानुभावथी लोकमर्यादाथी जिम सूर्यमंड ल ४ ॥ हिवे च्यार प्रकारनो ज्ञान कह्यो तेकहेछे प्राणी सदहे ॥ आहरणदृष्टांत ते आघियाथाय १ । आहरणनो एक देशे दृष्टात जिमचंद्रवन्मुख

दाहरणंचेति प्राकृतत्वा दाहरणशब्दस्य पूर्वनिपाते आहरणतद्देश इति भावार्थं यात्र यत्र दृष्टांतार्थदेशेनैव दार्ष्टांतिकार्थस्यो पनयनं क्रियते त त्तद्देशो दाहरण मिति यथा चन्द्रइव मुख मस्याइति इहहि चद्रे सौम्यललक्षणेनैव देशेन मुखस्यो पनयन ना निष्टेन नयननाशावर्जितत्वकलङ्कादिनेति तथा तस्यैवा हरणस्य संबधी साचा त्वसगसपन्नोवा दोष स्तद्दोषः स चासौ धर्मे धर्मिण उपचारा दाहरण चेति प्राकृतत्वेन पूर्वनिपाता दाहरणतद्दोष इति अ थवा तस्या हरणस्य दोषो यस्मिं स्त त्तथा शेष तथैवा यमत्रभावार्थः य त्साध्य विकलत्वादिदोषदुष्ट तद्दोपाहरण यथा नित्यः शब्दो ऽमूर्त्तत्वात् घटवत् इह साध्यसाधनकैवल्य नाम दृष्टांतदोषो यश्वा सत्यादिवचनरूपं तद्दोषाहरण यथा सर्वथा ह मसत्य परिहरामि गुरुमस्तककर्त्तनव दिति यद्दा साध्य सिद्धिं कुर्वदपि दोषान्तर मुपनयति तदपितद्देव यथा सत्यधर्म्म मिच्छति लौकिकमुनयोपि वरकूपशताद्दापो वरवापीशतात्क्रतुः वरक्रतुशतात्पुत्रः सत्य पुत्रशताद्दरमिति ॥ १ ॥ वचनवक्तृनारदव दिति अनेनच श्रोतु' पुत्रकतृप्रभृतिषु प्रायः संसारकारणेषु धर्म्मप्रतीति राहितेति आहरणतद्दोषतेति यथावा बुद्धिमता केनापि कृत मिदं जग त्सविवेशविशेषवत्वात् घटवत् सचे श्वरइति अनेनहि स बुद्धिमान् कुमकारतुल्यो नीश्वर' सिद्ध्यतीति ईश्वरच्य सविवक्षित इति तथा वादिना अभिमतार्थसाधनाय कृते वस्तूपन्यासे तद्दिघटनाय यःप्रतिवादिना विरुद्धार्थो पनयः क्रियते पर्यनुयोगोपन्यासेवा य उत्तरोपनयः स

आहरणतद्दोसे उववन्नासोवणए

एहसौम्यगुणे दृष्टांत २। आहरण ते दृष्टांत ते असत्यवचनादिरूप। यथा बुद्धिमता केनापिकृतमिदं जगत् एजगत् कोईक बुद्धिमंतेकीधोछे ईश्व रादिके जगतरच्योछे घटपटादिकनी परें एदृष्टांत दोषसहित जेमाटे जगत शाश्वतोछे कोईनो कीधोनथी ३। उपन्यासोपनयदृष्टांत ते वादीने जीत

उपन्यासोपनय उत्तररूप मुपपत्तिमात्रमपि ज्ञातभेदो ज्ञानहेतुत्वादिति यथा अकर्त्तात्मा अमूर्त्तत्वा दाकाशव दित्युक्ते अन्यआह आकाशव देवाभोक्ता त्य पिप्राप्त मनिष्टं चैतदिति यथावा मांसभक्षण मदुष्ट माणंगत्वा दोदनादिवत् अत्रा हा न्य ओदनादिव देव स्वपुत्रादिमांसभक्षण मप्यदुष्ट मिति यथावा त्यक्तसगा यस्त्रपात्रादिसंग्रहं न कुर्व्वंति स्वपभादिवत् अत्राह कुण्डिकादापि ते न गृह्णन्ति तद्देवेति तथा कस्मा त्वमं कुरुषे यस्मा द्गनार्थीति इह प्रथमं ज्ञात समग्रसाधर्म्यं द्वितीयं देशसाधर्म्यं तृतीय सदोष चतुर्थं प्रतिवाद्युत्तररूपमि त्यय मेषां स्वरूपविभाग इति इहदेशतः सम्वादगाथा चरियचकप्पिय वा दुविहंतत्तोचउव्विहेक्केक्क आहरणेतद्देसे तद्दोसेचेवमुवासेत्ति ॥ १ ॥ अवाएत्ति ॥ अपायो नर्थः सयत्र द्रव्यादि ष्वभिधीयते यथैतेषु द्रव्यादिविशेषेषु अस्त्य पायो विवक्षितद्रव्यादिविशेषेष्वि व हेयता चास्य यत्रा भिधीयते तदाहरण मपाय इति सच चतुर्द्धा द्रव्यादिभि स्तत्र द्रव्यात् द्रव्येवा पायो द्रव्य मेववा त त्कारणत्वा दपायो द्रव्यापाय एत हेयतासाधक मेत त्साधक चाहरणमपि तथोच्यते तत्प्रयोगो द्रव्यापायः परिहार्य स्तत्र चापायो वर्त्तते देशान्तरगम नोपार्जितद्रविणयो स्त्राणभा त्वरस्वरभारणपरिणतयोः स्वग्रामाद्बहिः प्राप्ता वनुतापात् ह्रदत्यक्तमत्स्यगिलिततद्वित्तयो र्मत्स्यवन्धकपार्श्वात् गृहीतस्य

आहरणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा अवाए

वाने वीजो अर्थआणी खोटो पाडवो इहां प्रथमदृष्टांत समस्तने सरिखो आव्यो पापते सघलुं दुखदेणारछे १ बीजो देशथी सरिखो २। त्रीजोसदो प ३ चौथोवादीने उत्तर देवारूप ४ ॥ आहरण तेपाप च्यार प्रकारें छे तेकहेछे ॥ अवाय ते अनर्थ ते द्रव्यक्षेत्रकालभावथी च्यार प्रकारनो द्रव्यथी मत्स्यविदारता द्रव्य नीकल्यो तेहथी बहिन माता मरण पामी १ क्षेत्रापाय तेसर्पसहित घर अथवा संक्लेशथानक २। कालथी भद्रासहित दिवस ३।

तस्य मत्स्यस्य विदारणे ऽत्रासतद्ग्र्यलुब्धभगिन्या मत्स्यच्छेदकशस्त्राभिघातेन तदुद्दालनप्रवृत्तमारितमातृकयो स्तथाविधव्यतिकरदर्शनोत्पन्नसवेगा त्प्र ॥
तिपन्नप्रव्रज्ययो र्भ्रातृवणिजो रिव तत्परिहारश्च प्रव्रज्यया तत्त्यागादिति आहरणता चास्य दर्शनो पनयस्त्वा विचक्षणा दिति तथा क्षेत्रात् क्षेत्र मेववा
पायः क्षेत्रापायः शेष तथैव एव मुत्तरत्रापि तत्प्रयोगोपायवत् क्षेत्र वर्जयेत् जरासन्धाभिधानप्रतिवासुदेवात् सम्भाविताफाया मथुरां नगरीं यथा
दशार्हचक्र वर्जयामासेति अथ सम्भवति अपायः सप्रत्यनीकक्षेत्रे ससर्पगृहवत् कालापायो यथा सापायकालवर्जने यतेत द्वैपायनो द्वारका मावर्षद्वा
दशकाद्धक्ष्यतीति श्रुतनेमिनाथवचनो द्वादशवर्षलक्षण सापायकालपरिजिहीर्षयो त्तरापथप्रवृत्तो द्वैपायनो यथेति अथवा सापायोपि भवति कालो भ
द्रादिवदिति तथा भावापाय परिहरेत महानागवत् नागदत्तक्षुल्लकवदेति तथाहि किल कश्चित् क्षपकः प्रस्तुतपारणकः सक्षुल्लकः समारब्धभिक्षार्थभ्रम
णकः कथञ्चिन् मारितमण्डूकिकः क्षुल्लकप्रेरितो ऽप्रतिपन्नतद्वचनः पुन रावश्यककाले स्मारिततदर्थः समुत्पन्नकोपः क्षुल्लकोपघाताया भ्युत्थितो वेगा द्वा
गच्छन् स्तम्भ आपतितो मृतो ज्योतिष्केषू त्पन्नो अनन्तर च्युतो जातिस्मरदृष्टिविषसर्पतयो त्पन्नः सर्पदृष्टमृतपुत्रेणच सर्पेषु कुपितेन राज्ञा दिष्टजनमा
र्यमाणेषु नागेषु नागविनाशकनरेण केना प्यौषधिवला दाकृष्यमाणो दृष्टकोपविपाकतयाच मद्दृष्टिविषेण मा घातकपुरुषविघातो भवत्विति भावन
या पुच्छतो निर्गच्छन् यथा निर्गम च खण्ड्यमानः कोपलक्षणभावापाय परिहृतवानिति तथा सएवा नन्तर नागदत्ताभिधानराजसुततयो त्पन्नो बालत्व
एव प्रतिपन्नप्रव्रज्यो त्यतसविग्न स्तिर्यग्भवाभ्यासा च्चात्यन्तक्षुधालु रादित्योदया दस्तमय यावद्भोजनशीलो साधारणगुणावर्जितदेवताभिवन्दितो ऽतएव
तद्गच्छगतमासादिक्षपकचतुष्टयस्ये र्ष्याविषयीभूतो विनयार्थ तेषा मुपदर्शितस्वार्थानीतभोजन स्तैश्च मत्सरा द्भोजनमध्यनिष्ठ्यूतनिष्ठीवनो ऽत्यन्तोपशांत
चित्तवृत्तितया यःसजातकेवलः पुन र्देवतावन्दित स्तेषामपि क्षपकाणा सवेगहेतुत्वेन केवलज्ञानदर्शनसमृद्धिसपादकः कोपरूपं भावापाय परिजहारे

ति अथवा कोपादिलक्षणो भावोपायो भवति क्षपकस्येवेति गाथे इह दव्वावाएदुण्णिउ वाणियगाभायरोवहनिमित्त वहपरिणएक्कमेक दहम्मिमच्छेण निव्वेओ ॥ १ ॥ खेत्तम्मिअयकमण दसारवग्गस्सहोइअवरेण दीवायणोयकाल भावेमडुक्कियाखमओत्ति ॥ २ ॥ उवाएत्ति ॥ उपाय उपेयप्रति पुरुषव्यापारा दिका साधनसामग्री स यत्र द्रव्यादा वुपेये स्तो त्वभिधीयते यथै तेषु द्रव्यादिविशेषेषु साधनीयेषु अस्त्यु पायो विवक्षितद्रव्यादिविशेषवत् उपादेयता चा स्य यत्रा भिधीयते त दाहरणमुपायइति सोपि द्रव्यादिभि श्चतुर्द्धैव तत्र द्रव्यस्य सुवर्णादेः प्राशुकोदकादेर्वा द्रव्यमेववा उपायो द्रव्योपाय एतत्साधन मे तदुपादेयता साधनया हरणमपि तथोच्यते तत्प्रयोगश्चैव अस्ति सुवर्णादिपू पाय उपायेनेव वा सुवर्णादौ प्रवर्त्तितव्यं तथाविधधातुर्वादसिद्धादिव दिति एव क्षेत्रोपायः क्षेत्रपरिकर्मणो पायो यथा अस्त्यस्य क्षेत्रस्य क्षेत्रीकरणोपायो लाङ्गलादि स्तथाविधसाधुविधव्यापारोवा तेनैववा प्रवर्त्तितव्य मत्र तथा विधात्यक्षेत्रवदिति एव कालोपायः कालज्ञानोपायो यथा स्ति कालस्य ज्ञानोपाय धान्यादेरिव जानीह्विवा काल घटिकाच्छायादिनो पायेन तथाभू तगणितज्ञवदिति एव भावोपायो यथा भावज्ञाने उपायो स्ति भावज्ञो पायतो जानीहि वृहत्कुमारिकाकथाकथनेन विज्ञातचौरादिभावाभयकुमारव दिति तथाहि किल राजगृहनगरस्वामिन. श्रेणिकराजस्य पुत्रो भयकुमाराभिधानो देवताप्रसादोपलब्धसर्वर्त्तुकफलादिसमृद्धारामस्या म्रफलाना मका

उवाए

ज्ञावापाय क्रोधसहित डेडकीविराधक साधु ४ । उपायआहरण ते धातुर्वादउपाये द्रव्य उपजाविवो १ । क्षेत्रोपाय हलादिकखेडी धान उपजा विवो २ । कालोपाय कालमज्झिलादि ज्ञान ३ । ज्ञावोपाय वहतकमारीनी कथाथी अभयकुमारे चोर जाण्या ४ । २ ॥ ॥ ॥

लाम्रफलदोहदव ञ्ञार्यादोहदपूरणार्थं चाण्डालचौरेण पहरणे कृते चौरपरिज्ञानार्थं नाट्यदर्शननिमित्तमिलितबहुजनमध्ये वृद्धकुमारिकाकथा मचक थ त्तथाहि काचित् वृद्धकुमारिका वाञ्छितवरलाभाय कामदेवपूजार्थं मारामे पुष्पाणिचौरयती आरामपतिना गृहीता सद्भावकथने विवाहितया पत्या अपरिभुक्तया मत्पार्श्वे समागन्तव्यमिति अभ्युपगमं कारयित्वा मुक्ता तत. कदाचि द्विवाहितासतो पति माप्टच्छ्य रात्रा वारामर्पातपार्श्वे गच्छती चौरराचसाभ्या गृहीता सद्भावकथने प्रतिनिवृत्तया भवत्पार्श्वे आगन्तव्यमिति कृताभ्युपगमा मुक्ता आरामे गता आरामिकेण सत्यप्रतिज्ञे त्यखण्डितशीला विसर्जिता इतराभ्यामपि तथैव विसर्जिता पतिसमीप मागतेति ततो भोलोका. पत्यादीनामध्ये कोदुष्करकारकइति चासौ पप्रच्छ तत ईर्ष्यालुप्रभृतय: प त्यादीन् दुष्करकारकत्वेना भिदधुः चौरचाण्डालस्तु चौरानिति ततो सावनेनो पायेन भाव सुपलभ्य चौर इतिकृत्वा सत वधयामासेति अत्रापिगाथे एमे वचउविगप्पो होइउवाओवितत्थदव्वमि धाउव्वाओपढमो मगलकुलिणहिखेत्ततु ॥ १ ॥ कालोविनालियाई हिहोइभावमिपडिओअभओ। चोरस्सकएनठ्ठिय वड्ढकुमारिपरिकहिसुत्ति ॥ २ ॥ ठवणाकम्मेत्ति ॥ स्थापन प्रतिष्ठापन स्थापना तस्या: कर्म करण स्थापनाकर्म्म येनज्ञातेन परमत दूषयित्वा स्वमतस्थापना क्रियते तत्स्थापनाकर्म्मं तिभाव तत्र द्वितीयाङ्गे द्वितीयश्रुतस्कन्धे प्रथमाध्ययन पुण्डरीकाख्य तत्रह्युक्त अस्ति काचित् पुष्करिणी कर्दमप्रचुरजला तन्मध्यदेशे महापुण्डरीक तदुद्धरणार्थं चतसृभ्यो दिग्भ्य श्चत्वार. पुरुषा सकर्दममार्गं प्रविष्टु मारब्धा स्वेचा कृततदुद्धरणा एव पङ्कनिमग्ना अन्यस्तु तटस्थो ऽसस्पृष्टकर्द

ठवणाकम्मे

स्थापनाकर्म ते जेणे ज्ञाने परनामतने दोस देई पोतानो मत थापे ३। प्रत्युत्पन्नविशी जे उपनी वस्तु तेहनो नाशछै ते दृष्टांतसहितकहियै ४॥

मएवा मोघवचनतया तदुक्तवानिति ज्ञात मुपनय श्राय मन कर्दमस्थानीया विषया: पुण्डरीकं राजादि भव्यपुरुष शलार: पुरुषा: परतीर्थिका: पञ्चम पुरुष: साधु: अमोघवचन धर्म्मदेशना पुष्करिणी संसार: तदुत्तारोनिर्वाणमिति अनेनच ज्ञातेन विषयाभिष्वंगवन्तां अन्यतीर्थिकानां भव्यस्य सशारानुत्तार कत्वं साधो श तद्विपर्ययं वदता आचार्येण परमतदूषणेन स्वमत स्थापित मतो भवतीति इद ज्ञातं स्थापनाकर्मेति अथवा आपन्न दूषण मपोह्य स्वाभि मतस्थापना कार्यं त्येवविधार्थप्रतिपत्ति र्यतो जायते तत् स्थापनाकर्म्म किल मालाकारेण केनापि राजमार्गपुरीषोत्सर्गलक्षणापराधापोहाय तत् स्थाने पुष्पपुञ्जकरणेन किमिद मिति पृच्छतो लोकस्य हिगुशियो देवो यमिति वदता व्यतरायतनस्थापनाकृतेति एतस्मात् किलाख्यानका दुक्तार्थ: प्रतीयत इद स्थापनाकर्मेति तथा नित्यानित्यं वस्त्वि त्यसंगत जिनमत विरुद्धधर्माध्यासादिति दूषण मापन्न मेतद् व्यपोह्यायो च्यते विरुद्धधर्माध्यासो न भेदनिवं धन विकल्पस्येव विकल्पो हि क्रमभाविवर्णोल्लेखवान् विरुद्धधर्मोपेतो भवति नच कथञ्चि द्भेदो न भवति खण्डसो विभक्तस्य तस्य स्वरूपलाभा भावात् प्र वृत्तिनिवृत्त्यो रकारणता स्या दसमञ्जसं चैवमिति एवच विरुद्धधर्माध्यासस्य कथञ्चि द्भेदकत्वे सति न केवल नित्यानित्य भवतीति दूषण मपोढ मपितु सर्वं मनेकांतात्मक मिति विकल्पज्ञातेन स्वमतं प्रसाधित मतो विकल्पज्ञात स्वमतस्थापनेन स्थापनाकर्मेति अत्र निर्युक्तिगाथा ठवणाकम्म एक [अभेदमित्यर्थ:] दिट्ठंतोतत्थपुंडरीयंतु । अहवाविसण्ढंकण हिंगुसिवकयउदाहरणंति ॥ १ ॥ सव्यभिचारोवा हेतु र्य: सहसोपन्यस्त स्तस्य समर्थना र्थ यो दृष्टात: पुनरुपन्यस्यते स स्थापना कर्मेति उक्तंच सव्वभिचारंहेउ सहसावोत्तुतमेवअन्नेहिं । उववूहइसप्पसरं सामत्थचप्पणोणाओत्ति ॥ १ ॥ तद्यथा अनित्य: शब्द: कृतकत्वा दत्र वर्णात्मको शब्दे कृतकत्व न विद्यते वर्णाना नित्यतया भिमतत्वा दिति व्यभिचार: समर्थना पुनर्वर्णात्माशब्द: कृतको निजका रण भेदेन भिद्यमानत्वात् घटपटादिवत् घटादिदृष्टांतेनहि वर्णानां कृतकत्व स्थापित मिति भव त्ययं स्थापनाकर्मे ति ॥ पडुपण्णविणासित्ति ॥ प्रत्युत्प

नस्य तत्कालोत्पन्नवस्तुनो विनाशो भिधेयतया यत्रा स्ति त त्प्रत्युत्पन्नविनाशोति यथा केनापि वणिजा दुहिन्यादिस्त्रोपरिवारशीलविनाशरक्षणार्थं तदा सक्तिनिमित्त स्वगृहासन्नराजगान्धर्विकगुणनिकायां स्वगृहे कुलदेवतानिवेशनात् गुणनिकाकाले तस्या देवताया अग्रत आतोद्यनाद्व्याजेन राजाप राधपरिहारेण विनाशः कृत एवं गुरुणा शिष्यान् क्वचि द्वस्तुन्य ध्युपपद्यमाना नुपलक्ष्य तस्य तदाशक्तिनिमित्तकारण मुपहन्तव्य मित्येव प्रत्युत्पन्नविनाश नीयता ज्ञापकत्वात् प्रत्युत्पन्नविनाशिज्ञातता गान्धर्विकाख्यानकस्या वगन्तव्येति उक्तञ्च होतिपडुप्पन्नविणा सणमिगधव्वियाउदाहरणं । सोसोविकत्थविजई अज्झीवज्जेज्जतोगुरुणा ॥ १ ॥ वारियव्वोउववाएणति ॥ अथवा अकर्त्तात्मा अमूर्त्तत्वा दाकाशवदि त्युत्पन्ने आत्मनो कर्तृत्वापत्तिलक्षणे दूषणे तद्वि नाशायो च्यते कर्त्तैवा त्मा कथञ्चि न्मूर्त्तत्वा द्देवदत्तवदिति व्याख्यात माहरण माहरणता चैत ञ्चेदानीं देशेन दोषवत्तया चोपनयनाभावा दिति अथा हरणतद्देशो व्याख्यायते सच चतुर्द्धा तत्र अनुशासन मनुशास्तिः सद्गुणोत्कीर्त्तनेनोपबृंहण सा विधेयेति यत्रो पदिश्यते सा नुशास्तिः यथा गुणवन्तो नुशासनीया भवन्ति यथा साधुलोचनपतितरज.कणापनयनेन लोकसम्भावितशीलकलङ्का तत्चालनाया राधितदेवताकृतप्रातिहार्या चालनीव्यवस्थापि तोदका च्छोटनतोद्घाटितचम्पागोपुरत्रया सुभद्रा अहो शोलवतीति महाजनेना नुशासितेति उक्तञ्च आहरणतद्देसे चउहाअणुसट्ठितहउवालंभो पुच्छा निस्सावयण होइसुभद्दाणुसट्ठोए ॥ १ ॥ साधुकारपुरोय जहसाअणुसासियापुरजणेण । वेयावच्चाइसुवि एवजयतेववूहिज्जत्ति ॥ २ ॥ इहच तथाविधवैयावृ

पडुप्पन्नविणासीत्र्या । त्र्याहरणतद्देसे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा त्र्यणुसठि

आहरण ते पदार्थ तेहने १ देशे दृष्टांत ते ४ प्रकारे कह्यो ते कहेछे अनुशास्ति छतागुणनुं कहवो प्रसंसा करवी जिम सुभद्रानुं शीलवखाण्युं १ ।

ठा० ॥

०४ ॥

त्या करणादिना प्युपनयः सम्भवति तत्यागेनच महाजनानुशास्तिमात्रेणो पनयः क्वत इत्याहरणतद्देशतेति एव मनभिमतांशत्यागा दभिमतांशोपन यन सुत्तरेष्वपि भावनीय मिति तथा उपलभन मुपालम्भो भंग्यन्तरेणा नुशासनमेव स यत्रा भिधीयते स उपालम्भो यथा क्वचि दपराधप्रवृत्तयो विनेया उ पालभनीया यथा महावीरसमवसरणे सविमानागत चन्द्रादित्योद्योतेन कालविभाग मजानतो मृगावती नाम्नी साध्वी स्थिता तत स्तद्गमने ऽतिका लोयमिति सम्भ्रान्ता सह साध्वीभि रार्यचन्दना समीपङ्गता तयाचो पलब्धा ऽयुक्तमिद भवादृशीना उत्तमकुलजाताना मिति तथा पृच्छा प्रश्नः कि कथ केन क्वत मित्यादि सा यत्र विधेयतयो पदिश्यते सा पृच्छा यथा पृच्छनीया ज्ञानिनो निर्णयार्थिभि र्यथा भगवान् कोणिकेन पृष्ट स्तथाहि किल कोणि क. श्रेणिकराजपुत्रः श्रमणं भगवन्त महावीरं पप्रच्छ तद्यथा भदत चक्रवर्त्तिनो परित्यक्तकामा मृता क्वोपपद्यन्ते भगवता भिहित सप्तमनरकपृथिव्या त तो सौ वभाण अह क्वोत्पत्स्ये स्वामिनो त षष्ठ्या स उवाच अह कि न सप्तम्या स्वामिना जगदे सप्तम्या चक्रवर्त्तिनो याति ततो सा वभिदधौ कि मह न चक्रवर्त्ती यतो ममापि हस्त्यादिक तत्समानमस्ति स्वामिना प्रत्यूचे तव रत्ननिधयो नसति ततोसौ कृत्रिमाणि रत्नानि कृत्वा भरतक्षेत्रसाधनप्रवृत्त कृ तमालकयक्षेण गुहाद्वारे व्यापादितः षष्ठीं गत इति तथा ॥ निस्सावयणेत्ति ॥ निश्रया वचन निश्रावचन मयमर्थः कमपि सुशिष्य मालव्य यदन्यप्रवोधार्थं

उवालन्ने पुच्छा

उपालंन्न अपराध कियाथी ओलन्नो देवो जिम मृगावतीये चदनवालाने २। पृच्छा प्रश्ननुं पूछिवो कोणिक राजा न्नगवंत महावीर स्वामीने पूछ्यो चक्रवर्त्त न्नोग नछाडे तो किहा जाय न्नगवान कह्यो सातमी नारकीमे त्यारेपूछ्यो हुं किहां जाईस भगवान कह्यो छठी नरकमा तो किम हुं चक्री

वचन निश्रावचन न्त दात्र विधेयतयो च्यते तदाहरणं निश्रावचनं यथा असहनान् विनेयान् मार्दवसम्पन्न मन्यमालव्य किंचि द्रूयात् गौतम माश्रित्य भगवानिवेति तथाहि किल गौतम तापसादि प्रव्रजितानां केवलोत्पत्ता वनुत्पन्नकेवलत्वेना धृतिमत चिरसंसृष्टो सि गौतम चिरपरिचितोसि गौतम मा त्व मधृति कार्षी रित्यादिना वचनसंदोहेना नुशासयता न्ये प्यनुशासिता स्तदनुशासनार्थं द्रुमपत्रकाध्ययनञ्च प्रणिन्यद्रति उक्तञ्च पुच्छाएकोणिश्रो खलु निस्सावयणमिणंगोयमस्सामित्ति ॥ व्याख्यात तद्देशोदाहरण तद्दोषोदाहरण मथ व्याख्यायते तच्च चतुर्द्धा तत्र ॥ अहम्मजुत्तेत्ति ॥ य दुदाहरण कस्यचि दर्थस्य साधनायो पादीयते केवल पापाभिधानरूप येनचोक्तेन प्रतिपाद्यस्या धर्मबुद्धि रुपजन्यते त दधर्मयुक्त तद्यथा उपायेन कार्याणि कुर्यात् कोलिकनलदामवत् तथाहि पुत्रखादकमत्कोटकमार्गेणो पलब्धविलवासाना मशेषमत्कोटकानां तप्तजलस्य विले प्रक्षेपणतो मारणदर्शनेन रञ्जित चित्तचाणिक्यावस्थापितेन चौरग्राहनलदामाभिधानकुविंदेन चौर्यसहकारितालक्षणोपायेन विश्वासिता मितिताश्चौरा विषमिश्रभोजनदानतः सर्वे व्या

णिस्सावयणे । आहरणतद्दोसे चउव्विहे पन्नत्ते तजहा अधम्मजुत्ते

नथी भगवान कह्यो ताहरे चवदेरत्न नथी कृत्रिमरत्नकरी तमिश्राये गयो अने मरण पायो ३ । निश्राकरके जेवचन ते निश्रावचन जिम गौतम दीक्षि ततापसादिकने केवलोत्पत्ति देखीने अधृतिवंतथया त्यारे महावीरस्वामी कह्यो हेगौतम बहोतकालथी संसृष्टछै चिरकालथी परिचितछै अधृतिम तकर एम अनुशासना करी द्रुमपत्रकाध्ययन कह्यो ४ ॥ आहरण जे दृष्टांत तेहनो दोष ते च्यार प्रकारे अधर्मयुक्तदृष्टांत जे दृष्टांतकहता अधर्मबु द्धि उपजे जिम नलदामकोलीना पुत्रने मकोडे काट्यु तेहना मार्गथी मकोडानो बिल जाणी तप्तजल नाखी सर्वहण्यां तेदेखी चाणक्यें कोटवाल

पादितादृति आहरणतद्दोषता चास्या धर्मयुक्तत्वा त्तथाविधश्रोतु रधर्मबुद्धिजनकत्वा च्चेति अतएव नैवंविध मुदाहर्त्तव्यं यतिनेति ॥ पडिलोमेत्ति ॥ प्रति कूल यत्र प्रातिकूल्य मुपदिश्यते यथा शठे प्रतिशठत्वकुर्यात् यथा चण्डप्रद्योते तदपहरणार्थं तदपहृताभयकुमार श्चकारेति तद्दोषता चास्य श्रोतुः परोप कारकरणनिपुणबुद्धिजनकत्वात् अथवा धृष्टप्रतिवादिना द्वावेव राशी जीवश्चा जीवश्चे त्युक्ते तत्प्रतिघातार्थं कश्चि दाह तृतीयो प्यस्ति नोजीवाख्यो गृह कोलिकादिच्छिन्नपुच्छवदिति अस्यापि तद्दोषताय सिद्धाताभिधाना दिति ॥ अत्तोवणीएत्ति ॥ आत्मैवो पनीत स्तथा निवेदितो नियोजितो यस्मि स्तत्त था येन ज्ञानेन परमतदूषणायो पात्तेना त्ममतमेव दुष्टतयो पनीयते यथा पिंगलेना त्मा तदात्मोपनीत तथाहि कथमिद तडाग मभेद भविष्यतीति राज्ञापृष्टः पिङ्गलाभिधानः स्थपति रवोचत् भेदस्थाने कपिलादिगुणे पुरुषे निखाते सतीति अमात्येनतु स एव तत्र तद्गुणत्वा न्निखातद्रति तेन आत्मैव नियुक्तः स्ववचनदोषा त्तदेव विध मात्मोपनीतमिति अन्यो दाहरण यथा सर्वेसत्वा न हतव्या इत्यस्य पक्षस्य दूषणाय कश्चि दाह अन्यधर्मस्थिता हंत व्या विष्णुनेव दानवा इत्येवं वादिना आत्मा हतव्यतयो पनीतो धर्मातरस्थितपुरुषाणामिति तद्दोषतातु प्रतीतैवास्येति ॥ दुरोवणीएत्ति ॥ दुष्ट मुपनीत निगमित योजित मस्मि न्निति दुरुपनीत परिव्राजकवाक्यवत् यथाहि किल कश्चि त्परिव्राजको जालव्यग्रकरो मत्स्यवधाय चलितः केनचिद् धूर्त्तेन किं

पडिलोमे अत्तोवणीए दुरोवणीए ।

किधु तेणें चोर विश्वासथी हण्यां १ । बीजो प्रतिलोम दृष्टात शठंप्रतिशठंकुर्यात् मूर्खने मूर्खरीते समझाविवो जिम अभयकुमार चंडप्रद्योतनने बाधी आण्यो २ । पोतानो मत दुष्टपणे थापे जिम जीव न हणवा पिण पापी हणवा ३ । चोथो दृष्टातदेवो जिम त्रिलोकथाश्रयाते इत्यादि ४ ॥

चिदुक्तः तेनच तस्योत्तर मसंगतंदत्त मत्रच वृत्तं भिचोकन्याश्नथातेनह्विश्मफरवधेजालमश्नासिमत्स्यां स्तेमेमद्योपदंशाःपिवसिमधुयुतोवेश्ययायासिवेश्यां दत्वारीणागलेंघ्रिव्वानुतवरिपवोयेषुसधिछिनत्स्नि चौरस्त्वन्यूतहेतोस्त्वयिसकलमिदनास्तिनष्टेविचारः ॥ १ ॥ इत्येव प्रकृतसाध्यानुपयोगि स्वमतदूषणावहवा य त्त दार्ष्टान्तिकेन सह साधर्म्याभावात् दुरुपनीतमिति यथा नित्यः शब्दो घटवदिह घटे नित्यत्व नास्त्येवेति कुत स्तत्साधर्म्या च्छब्दस्य नित्यत्व मस्तु अ पित्व नित्यत्वात् धटस्य तत्साधर्म्या च्छब्दस्या प्यनित्यत्वमेवा नभिमत सिद्ध्यतीति साध्यानुपयोगी द मुदाहरण तथा संतानोच्छेदो मोचो दीपस्येवे त्यभ्यु पगमे दीपदृष्टाता दनादिमतोपि सतानस्या वस्तुताप्रतीयते तथाहि दीपस्या त्मनया संतानोच्छेद उत्तरचणा जनकत्वा त्तदेवार्थक्रियाकारित्वलचणसत्वा भावा दन्त्यचणस्या वस्तुत्व मवस्तुजनकत्वात् पूर्वचणस्यापि ततएव पूर्वतरस्यापी त्येव समस्तस्यापि सतानस्या वस्तुत्व मथ चणान्तरानारम्भेपि स्वविषयी स्वगोचरज्ञानजननलचणार्थक्रियाकारित्वा दन्त्यचणो वस्तुभविष्यति नैवमेवंहि भूतभाविपर्यायपरम्परायोगिज्ञान स्वविषयमुत्पादयतीति वस्तुत्व स्वीकुर्या त्तत्र चणान्तरानारम्भे वस्तुत्व मित्यतो भवति दीपज्ञान स्वमतदूषणावहमिति अथवा अनित्यः शब्दः कृतकत्वात् घटवदिति वक्तव्ये सम्भ्रमा दनित्यो घ टः कृतकत्वा च्छब्दवदिति वदतो दुरुपनीतं विपर्ययोपनयनादिति अत्रगाथा पढमअहम्मजुत्त पडिलोमअत्तणोउवणासो दुरुवणियचचउत्थ अहमजुत्तं मिनलदामो ॥ १ ॥ पडिलोमेजहअभओ पज्जोयहरइअवहिओसतोत्ति ॥ अत्तउवन्नासमिय नलायभेयमिपिंगलोथवई । अणिमिसगिहणभिक्खुग दुरुव

उवण्णासोवणए चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा

उपन्यासोपनय च्यार प्रकारनो कह्यो ते कहेछे ॥ तेहज वस्तुनो दृष्टात जे कोई कह्यो समुद्रना तटने ऊपर एक बडो वृक्षछे तेहनी शाखा जल

णोपन्यासप्रकरणमिति ॥ १ ॥ उक्तः प्रकरणतश्चोदोषो ह्यनो पन्यासोपनय उच्यते स च चतुर्धा तत्र ॥ तव्वत्थुएत्ति ॥ तद्वस्तु परोपन्यस्तसाधनं वस्त्विति उत्तरभूतं यस्मिन् उपन्यासोपनये सतद्वस्तुको यथा तद्देव परोपन्यस्त वस्तु वस्तु तद्वे । तद्वस्तुकं तद्वस्तु उपन्यासोपनयोपि तद्वस्तुक इति उच्यते एव मुत्तरत्रापि यथा कश्चिद्राह समुद्रतटे महान् वृक्षोस्ति त च्छाखा जलस्थलयोः उपरि स्थिता तत्पत्राणि च यानि जले निपतन्ति तानि जलचरा जीवा भवंति या नि स्थले तानि स्थलचरा इति अस्य स्वादुपन्यस्तस्य तद्वस्तु गृहीत्वा तद्द्वा विघटयति यदुत यानि पुन र्मध्ये तयोः स्या वार्ता व्रीत दुपपत्तिमा न उत्तरभूत तद्वस्तुक उपन्यासोपनयो ज्ञातत्वचास्य ज्ञाननिमित्तत्वात् अथवा यथाकृतयोज ज्ञातमेव तथा शेष यत्रोनौ स्या जलस्थलपतितपत्राणि न जलचरादयस्तथा तथापि जलस्थलमध्यपतितपत्राणां किं जलस्थलपतितपत्रजलचरत्वादिरिव उभयरूपतासंगो न चोभयरूपाः सत्त्वा अभ्युपगता इति यथवा नित्यो जीवो ऽमूर्त्तत्वा दाकाशवदिति तत्रोच्यते अनित्य एवास्तु मूर्त्तत्वा त्कर्मवदिति तथा ॥ तदन्नवत्थुएत्ति ॥ तस्मा त्प री पन्यस्ता द्वस्तुनो न्यदुत्तरभूत वस्तु यस्मि न्नुपन्यासोपनये स तदन्यवस्तुको यथा जलेपतितानि जलचरा इत्युक्ते एतद्विघटनाय पतना दन्य दुत्तर मा

तव्वत्थुए तदन्नवत्थुए

स्थलने उपर स्थितछे तेहना पत्र जे जलमे पडेछे ते जलचर जीव थायछे अने जे स्थलमे पडेछे ते स्थलचर जीव थायछे बीजो तेहीज वृक्षना पत्र पडवारूप वस्तु ग्रहीने पूर्वोक्तनो खंडन करेछे जे पत्र जलमां नथी पडता तथा स्थलमां नथी पडता तेहनी स्युं वार्ताछे ए तेहजवस्तुनो दृष्टांत १। बीजो वस्तुनो दृष्टांत देईं खोटुं कहवो जेम तेहीज पूर्वोक्त पत्रपडवारूप वस्तुने आश्रयणकरीने कह्यो ज्यो भ्रमजाणीयतो मनुष्यने आश्रित जूम

ह यानि पुनः पातयित्वा खादति नयतिवा तानि किं भवन्ति न किञ्चि दित्यत्रीयमपि ज्ञापकतया ज्ञात मुक्तो यथा यथारूढमेव ज्ञातमेव तथाहि न जलस्थलपतितानि पत्राणि जलचरादिसत्वाः सम्भवन्ति मनुष्याद्याश्रितानीव अत्र समभिप्रायो यथा जलाद्याश्रितत्वा ज्जलचरादितया तानि सम्पद्यते तथा मनुष्याद्याश्रिततया मनुष्यादिभवयूकादितयापि सम्पद्यता माश्रितत्वस्या विशेषा यच तानि तथा भ्युपगम्यतइति जलादिगतानामपि जलचरत्वा ष्यस भवइति तथा ॥ पडिनिभेत्ति ॥ यत्रो पन्यासोपनये वादिनो पन्यस्तवस्तुनः सदृशं वस्तू त्तरदानायो पनीयते स प्रतिनिभो यथा कोपि प्रतिजानीते यद् त यो मा मपूर्वं श्रावयति तस्मै लक्षमूल्य मिदं करोटकं ददामीति सच श्रावितोपि त त्रापूर्वमिति प्रतिपद्यते तत एकेन सिद्धपुत्रेणोक्तं तुज्झपियामज्झ पिउ धारेइअणूणयसयसहस्सं जइसुयपुव्वदिज्जउ अहन्नसुयंसोरयदेहित्ति ॥ १ ॥ प्रतिनिभता चास्य सर्वस्मि अप्युक्ते श्रुतपूर्वमेवेद ममे त्येव मसत्य वचो त्र वाणस्य परस्य निग्रहाय तव पिता ममपितु र्धारयति लक्ष मित्येव विवस्य द्विपागरज्जुकल्पस्यासत्यस्यै व वचस उपन्यस्तत्वादिति अस्यचो पपत्तिमात्ररू पत्त्वा प्यथेज्ञापकतया ज्ञातत्व मुक्तमिति अथवा यथारूढ मेव ज्ञातमेव तथा न्यथा व प्रयोगो नास्य श्रुतपूर्वं किञ्चित् श्लोकादि ममेत्येव मभिमानधनं त्रू मो वय मस्ति तयाश्रुतपूर्ववचन तव पिता मम पितु र्धारयत्य नून गतसहस्रमिति यथेति तथा ॥ हेउत्ति ॥ यत्रो पन्यासोपनये पर्यनुयोगस्य हेतु रुत्त

पडिणिभे हेऊ ।

मुख मनुष्य केम नथी थाता २। प्रतिनिभ सदृशवस्तुनो दृष्टांत देवो जिम कोइक तापस बोल्यो जे मुझने अणसांभली वात संभलावे तेहने ला खमूल्यनो सुवर्णकटोरो आपुं तिवारे एक सिद्धपुत्र इमकह्यो तुज्झपियामज्झपिउ धारेइअणूणयंसयसहस्स जइसुयपुव्वदिज्जउ अहन्नसुयंसोरयं

इति तथा कस्मात् ब्रह्मचर्यादिक रतया विधीयते सो हेतुरिति यथा कोनापि काश्चि त्पर्यनुयुक्तः यहो किं यवा क्रीयंते त्वया स त्वाह येन मुधैव नलभ्यत इदमपि उपपत्तिमात्रमेव ज्ञातत्वेनो क्ता सर्वज्ञापकत्वादिति अथवा यमपि यथा रूष्ट मनुष्ठीयते यस्मा दकृततपसा नरकादौ गुरुतरा वेदना भवतीति एतत्समर्थनायैव साधु स्तट ज्ञातमेव तथा ह्यस्यैव प्रयोग' कस्मात् त्वया प्रवज्या क्रियत इति पृष्ट'सन् कोनापि साधु राह यत स्ताविना मोक्षो नभवति सभिप्रायो यथा मुधालाभाभावा त्तान् क्रीणासि त्वमेव अह ता विसाह भोयवग्राहिन् किमिति त्वया यवाःक्रीयते सत्वाह येन मुधा नलभ्यते साधोश्चाय ज्ञातानन्तर ज्ञातवद्धेतोः ना तदभावा त्ता करोमीति इहच मुधायवालाभस्य क्रयणे हेतोः सतो दृष्टांततयो पन्यस्तत्वात् हेतूपन्यासोपनयज्ञाततेति इहच किञ्चिद्विशेषेणै वविधा ज्ञातभेदाः सम्भवन्त्य न्येपि किन्तु तेन विवक्षता अन्तर्भावोवा कथचित् गुरुभि र्विवेचितो नच त वय सम्यग् जानीमइति अथ अन्यथानुपपत्तिलक्षण उक्तश्च अन्यथानु साध्यसिध्यगत्वा त्तद्भेदात् ॥ हेऊइत्यादिना ॥ सूत्रत्रयेणाह व्यक्त चैत न्नवरं हिनोति गमयति ज्ञेयमिति हेतुः पर्यनुयुक्तस्योत्तररूप मुपपत्तिमात्र मयन्तु साध्य प्रति अन्वयव्यतिरेपपन्नत्व हेतोर्लक्षणमीरित तदप्रसिद्धिसदेह विपर्यासैस्तदाभासतेति प्रागुक्तश्च हेतुः जावणत्ति ॥ यापयति वा दीनः कालयापना करोति यथा काचित्कवान् तथाविधदृष्टातस्मृततज्ञावइति सचै कलक्षणोपि किञ्चिद्विशेषा च्चतुर्द्धा तत्र ॥

चउव्विहे हेऊ पण्णत्ता तंजहा यावए

देई १ । ३ ॥ जिहां उपन्यासोपनयमां पर्यनुयोग हेतु उत्तरतया कहिये तेहेतु जेम कोई पुरुषने कोईथी पूछ्यो अहो किम यव खरीदेछे तेणे कह्यो जेमाटे मुफत नथी मिलेछे इत्यादि ४ ॥ हेतु ते ज्ञेयवस्तुनो जेह्थी ते जाणवो ते च्यार प्रकारनो कह्यो यापक काल थापना वेला लागे १ ।

सती एकैकरूपकं गेकैकं मुद्रलिंडं दातव्यमिति दत्तमिचस्य पत्यु स्तक्रियार्थं मुज्जयिनोग्रेषणोपायेन विटसेवायां कालयापनां कृतवतीति यापकः उक्तञ्च उभामियायमहिला जावगहेअोमिउटलिडाइति ॥ इह हि व्याख्यातप्रतिवादिन ज्ञात्वा तथा विशेषणबहुलो हेतुः कर्त्तव्यो यथा कालयापना भवति ततो सौ नावगच्छति प्रकृतमिति सचे दम. सम्भाव्यते सचेतनानायवो ऽपवर्गेरणेसति तिर्यगनियतत्वाभ्या गतिमत्वात् गोशरीरादिति अयंहिहेतु र्वि शेषणबहुलतया परस्य दुरधिगमत्वात् वादिनः कालयापनां करोति स्वरूप मस्या नानुध्यमानो हि परो न झटित्येवा नैकान्तिकत्वादिदूषणोद्भावनाय प्रवर्त्तितु शक्नो त्यतो भवत्य स्मा द्वादिनः कालयापनेति अथवा यो प्रतीतिव्याप्तिकतया व्याप्तिसाधक प्रमाणान्तरसव्यपेक्षत्वान्न झटित्येव साध्ये प्रती ति करोत्यपितु कालक्षेपेणै त्यसौ साध्यप्रतीतिप्रतिकालयापनाकारित्वात् यापको यथा क्षणिकं वस्त्विति पक्षे वौद्धस्य सत्वादिति हेतु र्नहि सत्वश्रवणादेव क्षणिकत्व प्रत्येति परस्त्वतो वौद्धः सत्व क्षणिकत्वेन व्याप्तमिति प्रसाधयितु मुपक्रमते तथाहि सत्व नामार्थक्रियाकारित्वमेव अन्यथा वन्ध्यासुतस्यापि सत्वप्रसगो ऽर्थक्रियात् नित्यस्यैकरूपत्वात् न क्रमेण नापि यौगपद्येन क्षणान्तरे अकर्तृत्वप्रसंगा दित्यतो र्थक्रियालक्षण सत्व मक्षणिका न्निवर्त्तमानं क्षणि क एवावतिष्ठत इत्येवं चेपेण साध्यसाधने कालयापनाकारित्वा द्यापकः सत्वलक्षणो हेतुरिति तथा स्थापयति पक्ष सक्षेपेण प्रसिद्धव्याप्तिकत्वा त्सम र्थयति यथा परिव्राजकधूर्त्तो लोकमध्यभागे दत्त बहुफलभवति तन्ना हमेवजानामीति मायया प्रतिग्राम मन्यान्यलोकमध्य म्प्ररूपयतिसति तन्निग्रहा

थावए

थापक हेतुवचन थाइं वसंकेतु २।

य कश्चित् श्रावको लोकमध्यस्थै कला कथं बहुषु ग्रामादिषु तत्संभव इत्येवं विधोपपत्त्या त्वद्दर्शितो लोकमध्यभागो नभवतीति पक्षं स्थापितवानिति स्थापको हेतुः उक्तंच लोगस्समज्झजाणए थावगहेऊउदाहरणंति ॥ सचाय मग्नि रन धूमात् तथा नित्यानित्य वस्तु द्रव्यपर्यायत स्तथैव प्रतीयमानत्वादि ति अनयोश्च प्रतीतिव्याप्तिकतया कालक्षेपेण साध्यस्थापनात् स्थापकइति तथा व्यंसयति परं व्यामोहयति शकटतित्तिरीग्राहधूर्त्तव यः सव्यंसकइति तथाहि कश्चि दन्तरालेष्वमृततित्तिरीयुक्तेन शकटेन नगरं प्रविष्ट उक्तो धूर्त्तेन यथा शकटतित्तिरी कथं लभ्यते सच किलाय शकटसत्का तित्तिरीं याचत इत्यभिप्रायाद्वोचत् तर्पणालोडिकयेति सक्तालोडनेन जलादालोडितसक्तुभि रित्यर्थः ततो धूर्त्तः साक्षिणः आहूत्य सतित्तिरीकं शकटं जग्राह उक्तवां श्च मदीय मेत दनेनैव शकटतित्तिरीदत्तत्वा न्मयातु शकटसहितातित्तिरी शकटतित्तिरी गृहीतत्वादिति ततो विषण्णः शाकटिकइति अन्योक्तं सा सगडतित्तिरीव सगमिहेउम्मिहोइनायव्वंति ॥ सचैव अस्तिजीवो ऽस्ति घट इत्यभ्युपगमे जीवघटयो रस्तित्व मविशेषेण वर्त्तते तत स्तयो रेकत्व माप्त मभि न्नशब्दविषयत्वादिति व्यंसको हेतुः घटशब्दविषयघटस्वरूपवत् तथा अस्तित्व जीवादौ न वर्त्तते ततो जीवाद्यभावः स्या दस्तित्वाभावादिति व्यंसकः २ प्र तिवादिनो व्यामोहकत्वादिति तथा ॥ लूसएत्ति ॥ मुष्णाति लूषयतिवा व्यंसकापादित मनिष्टमिति लूषको हेतुः सएव शाकटिको यथा धूर्त्तान्तरशिक्षिते नहि शाकटिकेन तेन याचितो सौधूर्त्त स्तर्हि देहिमे तर्पणालोडिका मिति ततो धूर्त्तेनोक्ता स्वभार्यां देह्यस्मै शक्तू नालोड्येति तांच तथा कुर्वतीं तद्भार्यां

वंसए लूसए ।

परनें व्यामोह मांडे ३ । लुष्यकोहेतु परने वचनेंछे ४ ॥

गृहीत्वा सो प्रस्थितो वादीच धूर्त्तमभि मदीयेयं तर्पण मिति सक्तूनालोडयतीति तर्पणालोडिकेति भवतैव दत्तत्वादिति सचायं यदि जीवघटयो रस्तित्व वृत्त्या एकत्वं सम्भावयसि तदा सर्वभावाना मेकत्वंस्यात्सर्वैष्व प्यस्तित्ववृत्तेरविशेषा न्नचैवमिति इहास्तित्ववृत्तेरविशेषा दित्यय लूपको जीवघटयो रेकत्वापा दनलक्षणस्य भावापत्तिलक्षणस्यचा निष्टस्य परापादितस्या नेन लूषितत्वादिति ॥ अहवेत्ति ॥ हेतोः प्रकारान्तरता द्योतको विकल्पार्थे हिनोति गमयति प्र मेयमर्थं सवा हीयते ऽधिगम्यते ऽनेनेति हेतुः प्रमेयस्य प्रमितौ कारण प्रमाणमित्यर्थः सचतुर्विध. स्वरूपादिभेदा त्तत्र ॥ पच्चक्खेत्ति ॥ अक्षा त्यश्नुते व्याप्नो ति अर्थां नित्यक्ष आत्मा तम्प्रति य द्वर्त्तते ज्ञानं तत् प्रत्यक्ष नियतो वधिमनःपर्यायकेवलानि अक्षाणि चेन्द्रियाणि प्रति य त्त प्रत्यक्ष व्यवहारत स्तच्च च क्षुरादिप्रभवमिति लक्षणमिदमस्य अपरोक्षतयार्थस्य ग्राहकज्ञानमोदृशं प्रत्यक्षमितरज्ञेय परोक्षग्रहणेक्षया ॥ १ ॥ ग्रहणापेक्षयेतिभावः अन्विति लिङ्गद र्शनसम्बन्धानुस्मरणयोः पश्चा दात्मान ज्ञान मनुज्ञान एतल्लक्षणमिद साध्याविनाभूतलिङ्गात् साध्यनिश्चायकस्मृतं अनुमानतद्भ्रात प्रमाणत्वात्समक्षव दिति ॥ १ ॥ एतच्च साध्याविनाभूतहेतुजन्यत्वेना प्युपचारा द्धेतुरिति ४ तत्रा उपमानमुपमा सैवोपम्य अनेन गवयेन सदृशो गौरिति सादृश्यप्रतिपत्तिरूपं उक्तंच गान्दृष्ट्वायमरण्येन्य गवयवीक्षतेयदा । भूयोवयवसामान्य भाजवर्त्तुंलकण्ठक ॥ १ ॥ तस्यामेवत्ववस्थाया यद्विज्ञानप्रवर्त्तते । पश्नैतेनतुल्योसौ गोपि ण्डइतिसोपमेति ॥ २ ॥ अथवा श्रुतातिदेशवाक्यसमानार्थोपलम्भने सज्ञासञ्ज्ञिसम्बन्धज्ञान मुपमान मुच्यतइति आगम्यन्ते परिच्छिद्यते ऽर्था अनेने त्याग

अथवा हेऊ चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा पच्चक्खे अणुमाणे उवमे आगमे।

अथवा वली हेतू कहेछे प्रत्यक्ष हेतु जे इंद्रियग्राह्यछे १। अनुमान प्रमाण धूमथी अग्नि २। उपमान यथा गौ तथा गवय ३। आगम ते आप्तवचन ४ ॥

म प्रासवचनसम्पाद्यो विप्रकृष्टार्थप्रत्यय उक्तश्च दृष्टेष्टाव्याहतताद्वाक्या त्परमार्थाभिधायिनः तत्त्वग्राहितयोत्पन्न मानशाब्दप्रकीर्त्तितं ॥ १ ॥ आप्तोपज्ञमनु ल्लंघ्य मदृष्टेष्टविरोधकं तत्त्वोपदेशकृत्सार्वशास्त्रंकापथघट्टनमिति ॥ २ ॥ इहा न्यथानुपपन्नत्वलक्षणहेतुजन्यत्वा दनुमानमेव कार्येकारणोपचारा द्धेतुः सच चतुर्विधः चतुर्भंगीरूपत्वा त्तत्र अस्ति विद्यते तदिति लिङ्गभूतं धूमादिवस्त्विति कृत्वा अस्ति सो ग्न्यादिकः साध्यो र्थ इत्येव हेतुरिति अनुमानं तथा तदग्न्यादिकं वस्त्व तो नास्त्य सौ तद्विरुद्ध शीतादि रर्थ इत्येवमपि हेतु रनुमानमिति तथा नास्ति तदग्न्यादिकं मतः शीतकाले स्ति सशीतादि रर्थ इत्येवमपि हेतुमानमिति तथा नास्ति तद्वृक्षत्वादिकमिति तथा नास्ति सशिंशपात्वादिको र्थ इत्यपि हेतु रनुमानमिति इहच शब्दे कृतकत्वस्या स्ति त्वा दस्त्यनित्यत्वं घटवत् तथा धूमस्या स्तित्वा दिह स्त्यग्नि र्महानसद्वे त्यादिक स्वभावानुमानं कार्यानुमानञ्च प्रथमभङ्गकेन सूचितं तथा अग्नेरस्ति त्वात् धूमास्तित्वाद्वा नास्तिशीतस्पर्श इत्यादिविरुद्धो पलम्भानुमानं विरुद्धकार्योपलम्भानुमानंच तथा अग्ने र्धूमस्य वास्तित्वा न्नास्ति शीतस्पर्शजनितदंत वीणारोमहर्षादिपुरुषविकारो महानसवदिति कारणविरुद्धोपलम्भानुमानं कारणविरुद्धकार्योपलम्भानुमानंच द्वितीयभङ्गकेना भिहितं तथा क्वचाद्दे रग्नेर्वा नास्तित्वा दस्ति क्वचित्कालादिविशेषे आतपः शीतस्पर्शो वा पूर्वोपलब्धप्रदेशद्वे त्यादिक विरुद्धकारणानुपलम्भानुमानं विरुद्धानुपलम्भानुमा

अहवा हेऊ चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा अत्थितंअत्थिसोहेऊ अत्थितणत्थिसोहेऊ णत्थितं

अथवा वली च्यार प्रकारना हेतू कहिया तेकहेछे धूमादि छेतो अग्निपछे अस्तित्वास्तित्व हेतू १ ।
अग्निछे पणि शीत ठाढ नथी एह अनुमानहेतू २ । अग्नि शीत नथी पणि शीतकाले शीतछे

न च तृतीयभङ्गकेनोक्त तदादर्शनमात्रगा यथा घटोपलम्भस्य नास्तित्वात् नास्तीह घटो [illegible]प्रदेश इत्यादि [illegible]नुपलब्ध्यनुमान तथा धूमस्य नास्तित्वात् नास्त्य[illegible] धूमकारणत्वाद[illegible] प्रदेशात्[illegible] इत्यादिकार्यानुपलब्ध्यनुमान तथा [illegible]नास्तित्वात् [illegible] नास्त्यत्यादि [illegible] कारणानुपलब्ध्यनुमान तथा [illegible] नास्तित्वात् धूमो नास्तीत्यादि कारणानुपलब्ध्यनुमानम् चतुर्भङ्गिका [illegible]मिति [illegible] जैनाभिमतान्यथानुपपन्नत्वरूपस्य हेतुलक्षणस्य विद्यमानत्वादिति [illegible] हेतुग्रन्थे [illegible] ज्ञानविशेषनिरूपणात् ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ संख्यायते गण्यते येनेति संख्यानं गणितमित्यर्थः तत् परिकर्मसंकलनादिक पाटीगणित [illegible] व्यवहारोऽपि मिश्रकव्यवहारादि [illegible] ॥ रज्जुरिति ॥ रज्जुगणितं क्षेत्रगणितमित्यर्थः राशिरिति त्रैराशिकपञ्चराशिकादीनि [illegible] सम्बन्धा [illegible] विधा विभक्तत्वा धकारो द्योतको [illegible] सूत्रेण प्ररूपणामात्र ॥ अहेत्यादि ॥ सुगमं किन्तु [illegible] चत्वारि वस्तूनीति गम्यते नरका नारकावासा नैरयिका नारका एते कृष्णरूपत्वा दंधकारं कुर्वन्ति पापानि कर्माणि ज्ञानावरणादीनि मिथ्यात्वाज्ञानभावान्धकारित्वा दन्धकारं कुर्वन्ति

अत्थिसोहेऊ णत्थितंणत्थिसोहेऊ । चउव्विहेसंखाणे पन्नत्ते तंजहा पडिकम्मे ववहारे रज्जु रासी । अहोलोगेणं चत्तारि अंधकारं करेंति तंजहा णरगा णेरइया पावाइंकम्माइं असुभापोग्गला । तिरिएलोगेणं च

एहेतू ३ । अग्निमा धूमनथी तोधूमना कारण वृक्षादिक पणि नथी ४ ॥ च्यार प्रकारें गणितछे तेकहेछे सूत्रपरिकर्म संकलादि गणित १ । व्यवहार गणित २ । रज्जुगणित अर्थात् क्षेत्रगणित ३ । गणितराशी त्रैराशिकपंचराशिक ४ ॥ अधोलोकमा च्यार प्रकारनो अंधकार कह्यो तेकहेछे नरकावासा काला माटे १ । नारकी काला तेमाटे अंधारो करे २ । पापकर्म अंधकार करेछे ३ । अशुभपुद्गल अंधकार करेछे ४ ॥ तिरछा लोकमा च्यार

त्युच्यते अथवा ऽन्धकारस्वरूपे ऽधोलोके प्राणिना मुत्पादकत्वेन पापानां कर्मणा मन्धकारकर्तृत्व मिति तथा अशुभाः पुद्गला स्तमिस्रभावेन परिणता इति ॥ मणित्ति ॥ मणय चन्द्रकान्ताद्याः ॥ जोइत्ति ॥ ज्योति रग्निः ॥ इति चतुःस्थानकस्य तृतीयोद्देशकोविवरणतः समाप्तः ४ ॥ ३ ॥ व्याख्या त स्तृतीयोद्देशका स्तदनन्तरं चतुर्थ आरभ्यते अस्यचा यमभिसम्बन्ध इहा नन्तरोद्देशके विविधाभावा शतुःस्थानकतयो क्ता इहापि तएवो च्यत इत्येव सम्ब न्धस्या स्योद्देशकस्ये दमादिसूत्र ॥ चत्तारिपसप्पगेत्यादि ॥ अस्यचा नन्तरसूत्रेण सहायं सम्बन्धो ऽनन्तरसूत्रे देवा देव्यश्च निर्दिष्टा स्तेच भोगवंतः सुखि ताश्च भवतीति भोगान् सुखानिचा श्रित्य प्रसर्पकाभिधानाये दमुच्यते इत्येव संबन्धस्या स्य व्याख्या प्रकर्षेण सर्पन्ति गच्छन्ति भोगाद्यर्थं देशानुदेशं

त्तारि उज्जोयं करेंति चदा सूरा मणी जोती। उड्ढलोगेणं चत्तारि उज्जोयं केरेंति तंजहा देवा देवीउ वि माणा आभरणा। चउठाणस्स तइउ उद्देसउ सम्मत्तो ॥ ३ ॥ चत्तारि पसप्पगा पन्नत्ता तंजहा अणुप्पन्नाणभोगाणंउप्पायत्ता एगेपसप्पए पुव्वुप्पन्नाणं भोगाणं अविप्पउगेणं एगे पसप्पए अणुप्प

अजुवालो करेछे तेकहेछे चंद्रमा १ सूर्य २ मणिरत्न ३ अग्नि ४ ॥ ऊर्द्धलोकमां च्यार अजवालो करेछे ते कहेछे देवता १ देवांगना २ विमान ३ आभ रण ४ ॥ इतिश्री चौथा ठाणानो त्रीजो उदेशो पूरोथयो ॥ ३ ॥ हिवे चौथा ठाणानो चौथो उदेशो कहेछे ॥ च्यार प्रसर्पक कह्या भो गसुख तेप्रति संचरेछे देशानुदेश संचरंती तेकहेछे नथीऊपना भोगसुख उपजाविवाने स्त्रीआदिक मेलवाने एक पुरुष प्रसर्पेछे उदम करेछे ठामोठा

सचरति आरम्भपरिग्रहतोवा विस्तारं यांतीति प्रसर्प्पका ॥ अणुप्पणाणति ॥ द्वितीयार्थे षष्ठीति अनुत्पन्ना नसम्पन्नान् भोगान् शब्दादीन् तत्कारण द्रविणागनादीन्वा ॥ उप्पायत्तत्ति ॥ उत्पादयितु सम्पादनाया ऽथवा ऽनुत्पन्नाना भोगाना मुत्पादयितो त्पादकः सन्नेकः कोपि प्रसर्प्पति प्रगच्छति प्रसर्प्प कोवा प्रगताभवतीति गम्यते प्रसर्प्पन्तिच भोगाद्यर्थिनो देहिनः उक्तच धावेइरोहणतर इसागरभमइगिरिनिकुजेसु मारेइबन्धवपिहु पुरिसोजोहोइध णलुद्दो ॥ १ ॥ अडइबहुवहइभर सहइछुहपावमायरइधिठ्ठो कुलसीलजाइपुव्वय ठिइचलोभछुउत्तयइत्ति ॥ २ ॥ तथा पूर्वोत्पन्नानां पाठातरेण प्रत्युत्पन्ना नावा ॥ अविप्पओगेणति ॥ अविप्रयोगाय रक्षार्थमिति सौख्यानामिति भोगासम्पाद्यानन्दविशेषाणा शेष सुगम भोगसौख्यार्थंच प्रसर्प्पत. कर्मबन्धा न्ना रकत्वेनो त्पद्यन्तइति नारका नाहारतोनिरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त केवल अगारोपम अल्पकालदाहत्वात् मुर्मुरोपमः स्थिरतरदाहत्वात् शीतल शीतवेदनोत्पादकत्वात् हिमशीतलो त्यतशीतलो त्यतशीतवेदनोत्पादकत्वात् अधोयइति क्रमइति आहाराधिकारात् तिर्यग्मनुष्यदेवानामा

साणं सोक्खाणं उप्पाइत्ता एगे पसप्पए पुडुप्पन्नाण सुक्खाणं अविप्पउगेणं एगे पसप्पए । णेरइयाणं चउ व्विहे आहारे पन्नत्ते तंजहा इगालोवमे मुम्मुरोवमे सीयले हिमसीयले । तिरिक्खजोणियाण चउव्विहे आहारे

म देशाटन करेछे १ । वली एक पुरुष उपजता जे भोगसुख ते राखवाने प्रसर्पेछे सचरेछे २ । नथीऊपना जे भोगसुख ते उपजाविवाने एक प्रसर्पे छे ३ । पूर्वे ऊपना जे भोगसुख ते राखवाने एक पुरुष प्रसर्पेछे भमेछे ४ ॥ ते कर्मकरीने नरकमाजाय तेह नारकीने च्यार प्रकारनो आहार कह्यो इगालोपम १ । मुरमुरोपम २ । शीतल ३ । हिमशीतल ४ ॥ तिर्यचनो आहार ४ प्रकारे कह्यो ते कहेछे कक्पत्तीना आहार जेहवो १ । बिलमा

हारनिरूपणाय सूत्राणि ॥ तिरिक्खजोणियाणमित्यादि ॥ व्यक्तं नवरं कंकः पक्षिविशेष स्तस्या हारेणोपमा यत्र स मध्यपदलोपात् कंकोपमः अयमर्थो यथा हि कंकस्य दुर्जरोपि स्वरूपेणा हारः सुखभक्ष्यः सुखपरिणामश्च भवति एव य स्तिरश्चां सुखभक्ष्यः सुपरिणामश्च सकङ्कोपमइति तथा बिले प्रविशद्द्रव्य बिलमेव तेनोपमा यत्र स तथा बिले हि अलब्धरसास्वाद झटिति यथा किल किंचि त्प्रविशति एवं य स्तेषां गलबिले प्रविशति स तथोच्यते पाणो मा तङ्ग स्तन्मांस मस्पृश्यत्वेन जुगुप्सया दुःखाद्यं स्या देवं य स्तेषा दुःखाद्यः स पाणमांसोपमः पुत्रमांसन्तु स्नेहपरतया दुःखाद्यतरं स्या देवं यो दुरद्य तरः सपुत्रमांसोपमः क्रमेण चैते शुभसमा शुभाशुभतरा वेदितव्याः वर्णवानित्यादौ प्रशंसायां मति प्रत्ययेना मन्तुरिति आहारोक्ति भक्षणीयइति भक्षणाधिकारा दाशीविषसूत्र सुगमं चेद नवरं ॥ आसीविसत्ति आश्या दंष्ट्राः तासु विष येषांते आशीविषा स्तेच कर्मतो जातितश्च तत्र कर्मत स्तिर्य

पन्नत्ते तंजहा कंकोवमे बिलोवमे पाणमंसोवमे पुत्तमंसोवमे । मणुस्साणं चउव्विहे आहारे पन्नत्ते तंजहा असणे जाव साइमे । देवाण चउव्विहे आहारे पण्णत्ते तंजहा वन्नमंते गंधमंते रसमंते फासमंते । चत्ता रि जाइआसीविसा पण्णत्ता तंजहा विच्छुयजाइआसीविसे मंडुक्कजाइआसीविसे उरगजाइआसीविसे म

पेसेद्रव्य तेहवो २ । माण ते हाथीना मांस जेहवो हस्तिमांस निंदनीक ३ । पुत्रना मास समान दुखकारी पणांमाटे ४ ॥ मनुष्यने च्यार प्रकारनुं आहार कह्यो ते कहेछे असन धान १ । पाणी २ । खादिम फलादि ३ । स्वादिम लवंगादिक ४ ॥ देवताने च्यार प्रकारनो आहार कह्यो तेकहेछे शुभवर्णवंत १ । शुभगंधवंत २ । शुभरसवंत ३ । शुभफरसवंत ४ ॥ च्यार प्रकारना आशीविष आहारना अधिकार माटे कह्या तेकहेछे । बीछी

ग्मनुष्या: कुतोपिगुणादाशीविषा:स्यु: देवाश्वा सहस्रारात्त्छापादिनापरव्यापादनादिति उक्तञ्च आसीदाढातगय महाविसासोविसादुविहभेया तेकम्म जाइभेए णगिगहाचउव्विहविगप्पत्ति ॥ १ ॥ जातित आशीविषा जात्याशीविषा वृश्चिकादय: ॥ केवइयत्ति ॥ कियान् विषयो गोचरो विषस्येति गम्यते प्रभु: समर्थ: अर्द्धभरतस्य यत्प्रमाण सातिरेकत्रिषष्ठ्यधिकयोजनशतद्वयलक्षण तदेवमात्राप्रमाण यस्या सा र्द्धभरतप्रमाणमात्रा ता स्वोंदि शरीर त्रिपेण स्वकी याशीप्रभवेण करणभूतेन विषपरिणता विषरूपापन्ना विषपरिगतामिति क्वचित्पाठे तद्व्याप्तामित्यर्थ: ॥ विसट्टमाणि वकसती विदलतीं कर्तुं विधातुं वि षय' सगोचरो सो अथवा ॥ से ॥ तस्य वृश्चिकस्य विषमेवा र्थो विषार्थ स्तद्भाव स्तत्ता तस्यां त्रिषार्थतायाविषलस्य तस्यावा ॥ नोचेवत्ति ॥ नैवेत्यर्थ. सपत्या एवविधवोन्दिसम्प्राप्तिद्वारेण ॥ करिसुत्ति ॥ अकार्षु र्वृश्चिकादति गम्यत इहचै कवचनप्रक्रमेपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकाशीविषाणा बहुत्वज्ञापनार्थ एव

णुस्सजाइआसीविसे । विच्छुयजाइआसीविसस्सणं भंते केवइए विसए पसत्ते पन्नूणं विच्छुयजाइआसी विसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करेत्तए विसएसे विसठ्ठत्ताए नोचेवणं

जातिनुं आशीविष १ । डेडक जातिनुं आशीविष तेदाढेछे २ । सर्पजातिनो आशीविष ते एपण मुखेंछे ३ । मनुष्यजातिनो आशीविष ए पणि मु खमाछे ४ ॥ वीछीनी जातिना आशीविषनो हे भगवंत केतलोविषय कह्यो भगवंत कहेछे समस्तार्थछे बीछीनी जातिनो आशीविष अर्द्धभरतक्षेत्रप्रमा ण वेसे त्रेसठ योजनप्रमाण शरीर विषयसहित विष पीडितकरे एबीछी विषय विषनो विषयार्थ एपणि विषमिश्रित शरीर कोई कर्युनथी क रतो नथी करस्ये नथी १ । डेडकाना आशीविषनुं प्रश्न समर्थछे डेडकानुंविष भरतक्षेत्रप्रमाण शरीर विष सहित करे वीजो तिमज यावत् कर्यो

कुर्वंति करिष्यंति त्रिकालनिर्देशश्चा मीषां नैकालिकत्वज्ञापनार्थः समयचेत्रं मनुष्यचेत्रं विषपरिणामोहि व्याधिरिति तदधिकारा द्व्याधिभेदानाह ॥ च उव्विहेत्यादि ॥ कण्ठ्य केवल वातो निदान मस्येति वातिकः एव सर्वत्र नवरं सन्पातः सयोगो द्वयो स्त्रयाणांवेति वातादिस्वरूप चैतत् तत्ररूचोलघुः शीतः खरःसूक्ष्मश्चलोनिलः पित्तसस्नेहतीक्ष्णोष्णा लघुनिस्रसरद्रव ॥ १ ॥ कफोगुरुर्हिमस्निग्धः प्रक्लेदीस्थिरपिच्छिलः सन्निपातस्तुसकीर्ण लक्षणोद्वयादिमीलकः ॥ २ ॥ वातादीना कार्याणि पुन रिमाणि पारुष्यसङ्कोचनतोदशूल श्यामत्वमङ्गव्यथचेष्टभङ्गाः सुप्तत्वशीतत्वखरत्वशोषाः कर्म्माणिवायोःप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ १ ॥

संपत्तिए करिंसुवा करेंतिवा करिस्संतिवा । मंडुक्कजाइआसीविसस्स पुच्छा पन्नूणं मंडुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्त बोंदि विसेण विसए सेसंतचेव जाव करिस्संति । उरगजाइआसीविसस्स पुच्छा पन्नूणं उरगजाइआसीविसे जंबूद्दीवपमाणमेत्तं बोंदि विसेणं सेसंतचेव जाव करिस्संतिवा । मणुस्सजाइआसी विसस्स पुच्छा पन्नूणं मणुस्सजाइआसीविसे समयक्खेत्तपमाणमेत्त बोंदि विसेणं विसपरिणय विसट्टमाणिं करेंति विसएसे विसठ्ठाए नोचेवणं जाव करिस्संतिवा ४ ॥ चउव्विहा वाही पन्नत्ता तंजहा वाइए पि

नथी २ । सर्पना आशीविषनुं प्रश्न समर्थछे सर्पनी जातिनुं विष जंबूद्वीप प्रमाण शरीर विषसहित करे बीजो यावत् कीधो नथी ३ । मनुष्यना आशीविषनु प्रश्न समर्थछे मनुष्यक्षेत्रप्रमाण शरीर ४५ लाख योजननो शरीर विष सहित करे एह विषनु विषय कह्यो शेष तिमज यावत् कीधो नथी ४ ॥ रोगाधिकार माटे कहेछे च्यार प्रकारनी व्याधी कही ते कहेछे । वातव्याधि १ । पित्तव्याधि २ । कफनीव्याधि ३ । सन्निपातनी व्याधि

परिस्रवस्वेदविदाहरागा वैगन्ध्यसंक्लेदविपाककोपाः प्रलापमूर्च्छाभ्रमिपीतभावाः पित्तस्यकर्माणिवदंतितज्ज्ञा' ॥ २ ॥ श्वेतत्वशीतत्वगुरुत्वकंडू स्नेहोप देहस्तिमितत्वलेपाः उत्सेधसपातचिरक्रियश्च कफस्यकर्माणिवदंतितज्ज्ञाः ॥ ३ ॥ अनन्तरं व्याधि रुक्तो ऽधुना तस्यैव चिकित्सां चिकित्सकांश्च सूत्रद्वयेनाह ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं चिकित्सा रोगप्रतीकार स्तस्या श्चातुर्विध्य कारणभेदादिति एतत्सूत्रसम्बादक मुक्त मपरैरपि भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगोपादचतुष्टय चिकित्सितस्यनिर्दिष्टं मत्येकतच्चतुर्गुणं ॥ १ ॥ दक्षोविज्ञातशास्त्रार्थोदृष्टकर्माशुचिर्भिषक् बहुकल्पबहुगुणसम्पन्नयोग्यमौषध ॥ २ ॥ अनुरक्तः शुचिर्दक्षो बुद्धिमान्परिचारकः आढ्योरोगीभिषग्वश्यो ज्ञापकःसत्ववानपीति ॥ ३ ॥ इयद्रव्यरोगचिकित्सा मोहभावरोगचिकित्सालेवं निव्विगइनिव्वलोमे तवउवहाणमेवउज्भामे वेयावच्चाहिंडण मडलिकप्पट्ठियाहरणति ॥ १ ॥ निर्वल वल्लादि अवम मून उद्भ्रामो भिचाभ्रमण आहिंडण देशेषु मडली सूत्रार्थयोः कप्पट्ठिया श्रेटिवधूरिति चिकित्सका द्रव्यतो ज्वरादिरोगा न्प्रति भावतो रागादीन्प्रति इति तत्रा त्मनो ज्वरादेः कामादेर्वा चिकित्सकः प्रतिकर्त्ता त्यात्म

त्तिए सन्निए सन्निवाइए ४ । चउब्विहा तिगिच्छा पस्सत्ता तंजहा विज्जा उसहाइं आउरे परियारए ४ । चत्तारि तिगिच्छगा पस्सत्ता तंजहा आयतिगिच्छिएणामगेणोपरतिगिच्छिए परतिगिच्छिएणामगे णो

ते वातपित्तकफना संयोगथी व्याधि ४ ॥ च्यार प्रकारनी चिकित्साकही विद्या मंत्र १ । औषध २ । आतुर ३ । रोगीनी परिचारणा सेवा ४ ॥ च्यार प्रकारना चिकित्सक ते वैद्य कहिया ते कहेछे एक आत्मानो चिकित्सकछे पणि परनुं चिकित्सक नथी १ । एक परनीचिकित्सा जाणेछे पणि पोतानीचिकित्सा नथी जाणतो २ । एम च्यार भागा कहवा ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या एक पोते लोही काढवाने चांदो प्रमुख करेछे

ठा० ४ उ० ३ ॥

चिकित्सकइति अथा त्मचिकित्सकान् भेदतः सूत्रत्रयेणाह ॥ चत्तारीत्यादि॥ कण्ठ्य नवरं व्रणं देहे क्षत स्वयं करोति रुधिरादिनिर्गलना र्थमिति व्रणकरो नो नैव व्रण परिमृशती त्येवशीलो व्रणपरिमर्शीत्येको न्यस्त्व न्यक्षत व्रण परिमृशति नच तत्करोतीति एव भावव्रण मतिचारलक्षण करोति कायेनच तदेव परिमृशति पुनःपुन सस्मरणेन स्पृशति अन्यस्तु तत्परिमृशती त्यभिलाषा न्नच करोति कायतः ससारभयादिभिरिति व्रण करोति नच तत्पट्टवन्धादिना सरक्षति अन्यस्तुक्षतसरक्षति नच करोति भावव्रणंवा श्रित्या तिचारं करोति नच त सानुवन्ध भवतं कुशीलादिससर्गतन्निदानपरिहारतो रक्षति एको ऽन्यस्तु पूर्वकृतातिचार निदानपरिहारतो रक्षति नवच नकरोति नो नैव व्रण सरोहय त्यौषधदानादिनेति व्रणसरोही भावव्रणापेक्षयातु नो व्रण सरोही प्रायश्चित्ताप्रतिपत्ते व्रणसरोही पूर्वकृतातिचारप्रायश्चित्तप्रतिपत्त्या नो व्रणकरो ऽपूर्वातिचाराकारित्वादिति उक्ता आत्मचिकित्सका अथ चि

आयतिगिच्छिए । चउभंगो ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा वणकरेनाममेगेनोवणपरिमासी वण परिमासीनाममेगेनोवणकरे एगेवणकरेविवणपरिमासीवि एगेनोवणकरेनोवणपरिमासी । चत्तारिपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा वणकरेनाममेगेनोवणसारक्खी ४ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा वणकरेनाममेगेनो

पणि वारंवार संभारवे करी फरसतो नथी १ । एकपरनो कीधोचांदो फरसेछे पणि पोते नथी फरसतो २ । एक पोते व्रण करेछे अने वारवार सभारवे करी फरसेछे ३ । एक व्रण करतो नथी अने फरसतो पणि नथी एम भावव्रणअतीचारआश्री पणकहवो ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे ॥ एक पोतेव्रण चादोकरे पणि पाटोबाधने नथीराखतो एम चोभंगी पूर्वनी परे एम भावथी अतीचार करेछे पणि कुसगतटालवाथी राख

कित्स्यं व्रणं दृष्टांतीकृत्य पुरुषभेदानाह ॥ चत्वारीत्यादि ॥ चतःसूची सुगमा नवरं अन्त मंध्ये शल्यं यस्य अदृश्यमानमित्यर्थः तत्तथा ॥ वाहिसल्लेति ॥ यच्छ ल्य व्रणस्यां तरशल्य वहिस्तु वहु तद्वहिरिव वहिरित्युच्यते अतोवहि'शल्यं यस्य तत्तथा यदिपुनः सर्वथैव त त्ततो वहि' स्या त्तदा शल्यतैव नस्या दुह त्तवेवा भूतभावितया स्यादपीति २ यत्रपुनरन्तर्वहु वहिर प्युपलभ्यते तदुभयशल्प ३ चतुर्थः शून्यइति गुरुसमचमनालोचितत्वेनां तःशल्य मतिचाररूप यस्य स तया वहि शल्य मालोचिततया यस्य सतया अन्तर्वहियशल्य मालोचितानालोचितत्वेन यस्य स तथा चतुर्थ शून्य. अन्त दुंट व्रण लूतादिदो पतो नवहोरागाद्यभावेन सौम्यत्वात् ४ पुरुषस्तु अन्तर्दुष्टः शठतया सद्वताकारत्वात् न वहिरित्येक अन्यस्तु कारणेनो पदर्शितवाक्पारुष्यादित्वा वहिर

वणसारोही ४ । चत्तारि वणा पन्नत्ता तंजहा अंतोसल्लेनाममेगेणोबाहिंसल्ले ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया पन्नत्ता तजहा अंतोसल्लेनाममेगेनोवाहिसल्ले ४ । चत्तारि वणा पन्नत्ता तजहा अंतोदुठेनाममेगेनो

तोनथी ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ एक पोते व्रणकरेछे पणि औषधादिकथी रूंधतो नथी एम अतीचारकरेछे पणि प्रायश्चित्तकरवा थी शुद्धनथी करतो एम चोभंगी ४ ॥ च्यार प्रकारनाशल्य कह्या ते कहेछे ॥ एक माहि अदृश्यशल्यछे पणि वाहिरदीसतो नथी ४ ॥ एहनी परें च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे । एकने माहिसालछे द्रव्यथी पणि वाहिर सालनथी एमचोभंगी भावथी गुरुपासे आलोव्योनथी तेमाहिश ल्यछे ४ ॥ वली च्यार प्रकारनाव्रण कह्या ते कहेछे ॥ एक चादो मांहिदुष्टछे पीडा करेछे पणि वाहिर दुष्टमोटोनथी १ । एक वाहिर दुष्टदेखवामां मोटु वेसुरछे पणि माहि दुष्ट पीडतो नथी २ । एम च्यार भांगा ४ ॥ इण दृष्टांते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ एक पुरुष हियामां

वेति पुरुषाधिकारा त्तद्भेदप्रतिपादनाय षट्सूत्री कण्ठ्या च किंतु प्रतिशयेन प्रशस्य: श्रेयानेक: प्रशस्यभाव: सद्बोधत्वा त्पुन: श्रेयान् प्रशस्तानुष्ठानत्वा त्साधुवदित्येक: अन्यस्तु श्रेयां स्तथैव अतिशयेन पाप पापीयान् सचा विरतत्वेन दुरनुष्ठायित्वादिति २ अन्यस्तु पापीयान् भावतो मिथ्यात्वादिभि रुप रतत्वा त्कारणवशात् सदनुष्ठायित्वाच्च श्रेयानुदायिनृपमारकवत्तुर्थ: सएव ज्ञातपापप्रति अथवा श्रेयान् गृहस्थत्वे निष्क्रमणकालेवा पुन: श्रेयान् प्रव्रज्या या निस्तारकालेवे त्येवमन्येपि १ श्रेया नेको भावतो द्रव्यतस्तु श्रेयान् प्रशस्यतप्रति एव बुद्धिजनकत्वेन सदृशको न्येन श्रेयसा तुल्यो नतु सर्वथाश्रेयाने वेति एक: अन्यस्तु भावत: श्रेयानपि द्रव्यत: पापीया नित्येव बुद्धिजनकत्वेन सदृशको न्येन पापीयसा समानो नतु पापीयानेवेति द्वितियो भावत:

वाहिंदुठे बाहिंदुठेनाममेगेनोअंतोदुठे ॥ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा अंतोदुठेनाममेगेनो बाहिंदुठे ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा सेयसेनाममेगेसेयसे सेयसेनाममेगेपावंसे पावसेनाममे गेसेयंसे पावंसेनाममेगेपावंसे ॥ चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा सेयसेनाममेगेसेयंसेत्तिसालिसए सेयंसे

दुष्टछे शठछे वाहिर दुष्ट नथी भद्राकारछे बगलानी परे एम च्यार भागा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ एक पुरुष नामे श्रेया शछे अने प्रशसवा योग्यछे साधूनी परे १ । एक नामे श्रेयांस पुण्यवत पणि परिणामे पापी अविरतीमाटे उदाईनृप मारकवत् २ । एक नामे पा पीछे पणि पुण्यवत समकितवंतछे ३ । एक नामे पापी परिणामे पापी पापनो करणहार कालशौकरिकनी परे ४ ॥ फेर च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे ॥ एक प्रथम गृहस्थपणे श्रेयासछे अने पछी दीक्षाकाले पणि प्रशसवा योग्यछे १ । एक प्रथम श्रेयासछे पछे पापासछे उत्तरकाले

पापीया नप्यन्यः संवृताकारतया श्रेया नित्येवं सदृशको न्येन श्रेयसे तिलतीयः चतर्थः सुज्ञानः श्रेयानेकः सवृनत्वात् श्रेया नित्येव मात्मान मन्यते यथावद्बोधा त्नोकेन वा मन्यते विशदशुभानुष्ठानात् इह्च मविज्जुइत्ति वक्तव्ये प्राकृतत्वेन मवइत्युक्त १ श्रेया नप्पन्य आत्म न्यरुचिपरायणत्वा त्पापी या नित्यात्मान मन्यते सएववा पूर्वोपलब्धतद्दोषेण जनेन मन्यते दृढप्रहारिवत् २ पापीयानप्पपरो मिथ्यात्वा द्युपहततया श्रेया नित्यात्मान मन्यते कु तीर्थिकवत् तद्भक्तेनवेति ३ पापीया नन्यो अविरतिकत्वात् पापीया नित्यात्मान मन्यते सद्बोधत्वात् असयतोवा मन्यते सयतलोकेनेति श्रेया नेको भा वतो द्रव्यतस्तु किंचित्सदनुष्ठायित्वात् श्रेयानित्येवं विकल्पजनकत्वेन सदृशको न्येन श्रेयसा मन्यते ज्ञायते जनेनेति विभक्तिपरिणामाद्वा सदृशताक मात्मा न मन्यतइति एवशेषाः ॥ आघवइत्तत्ति ॥ आख्यायक. प्रज्ञापक. प्रवचनस्य एकः कश्चि न्नच प्रविभावयिता प्रभावक. शासनस्य उदारक्रियाप्रतिभादि

नाममेगेपावंसेत्तिसालिसए ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा सेयंसेनाममेगेसेयसेत्तिमन्नइ सेयंसेनाममेगे पावसेत्तिमन्नइ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा सेयसेनाममेगेसेयसेत्तिसालिसएमन्नइ सेयसेनाममेगेपा वसेत्तिसालिसएमन्नइ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा आघवइत्ताणाममेगेणोपरिन्नावइत्ता परिन्नावइत्ता

भलो थई माठो थाय एम च्यार भागा ४ ॥ फेर च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे ॥ एक भलोछे अने पोताना आत्माने भलीकरी मानेछे तथा लोक भलो मानेछे १ । एक पुण्यवतथको आत्माने पापीकरी मानेछे दृढ प्रहारी साधुनी परे २ । एम च्यार भागा ४॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे । एक श्रेयासछे अने श्रेयांस सरखो मानेछे जे हु साधु सरिखोछु १ । एक श्रेय पुण्यवंतछे अने आत्माने पापी सरिखो मानेछे विशि

रहितत्वात् प्रविभाजयितावा प्रवचनार्थस्य नयोत्सर्गादिभि विवेचयितेति अथवा आख्यायक' सूत्रस्य प्रविभावयिता प्रविभाजयितावा थेस्येति अथ आ ख्यायक एक' सूत्रार्थस्य नचों छजीविका सम्पन्नो नेषणानिरतइत्यर्थः सचा पन्नत: सविग्नपाक्षिकोवा यदाह हुज्जहुवसग्गपत्तो सरीरदुव्वलयाएअस मत्थो चरणकरणेअसुड्डे सुद्धमग्गपरूवेज्जा ॥ १ ॥ तथा ओसण्णोविविहारे कम्मसिढिलेदसुलहबोहीय चरणकरणविसुद्ध उववूहतोपरूवतोत्ति ॥ २ ॥ एको द्वितीयो यथाच्छन्द स्तृतीय:साधु श्चतुर्थो गृहस्थादिरिति पूर्वसूत्रे साधुलक्षणपुरुषस्या ख्यायकत्वोंछजीविकासम्पन्नत्वलक्षणा गुणविभूषोक्ता अधुना तत्सा स्या वृक्षविभूषामाह ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ अथवा पूर्वं मुञ्छजीविकासम्पन्नः साधुपुरुष उक्त स्तस्यचवैक्रियलब्धिमत स्तथाविधप्रयोजने वृक्षविकुव्वतो यद्वि धातद्विक्रिया स्या त्तामाह ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ पातनये वोक्तार्थं नवरं प्रवालतयेति नवाङ्कुरतयेत्यर्थः एतेहि पूर्वोक्ता आख्यायकादय. पुरुषा स्तीर्थिका

णाममेगेणोऊणाघवइत्ता ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तंजहा ऊणाघवइत्तानाममेगेनोउंछजीवियासंपन्ने उंछजी वियासंपन्नेनाममेगेणोऊणाघवइत्ता ॥ चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा प० तंजहा पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फल

एक्रियामाटे २ । एम च्यार भागा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे । एक सिद्धांतनो आख्यापक रूप कहेछे पणि उदारक्रियायी प्रभावक नथी १ । एक शुद्धक्रियाये करी जिनशासन दीपावेछे पणि प्ररूपक नथी देशना तेहवी नथी २ । एम चोभंगी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे । एक सूत्रार्थनो कहनारोछे पणि छ कायनो राखणहार नथी ईर्यादिसमिति रहितछे १ । एक छ कायनु रक्षकछे पणि प्ररूपकनथी नवोसाधु इम चौभंगी ४ ॥ कोइक लब्धिवंतसाधुकारणे विकुर्वणा विकुर्वे ॥ च्यार प्रकारे वृक्षनी विकुर्वणाछे ते कहेछे । प्रवाल

इतितेषां स्वरूपाभिधानायाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ वादिन स्तोर्थिका : समवसरं त्यवतरंत्येष्विति समवसरणानि विविधमतमीलका स्तेषां समवसरणानि वादिसमवसरणानि क्रियां जीवाजीवादिरर्थोस्तीत्येवरूपा वदतीति क्रियावादिन आस्तिकाइत्यर्थं स्तेषा यत्समवसरण तत्तएवोच्यतेअभेदादिति तन्निषेधा दक्रियावादिनो नास्तिकाइत्यर्थ. अज्ञानमभ्युपगमद्वारेण येषा मस्ति ते अज्ञानिका स्तएव वादिनो ऽज्ञानिकवादिनो ऽज्ञानमेव श्रेयइत्येव प्रतिज्ञाइत्यर्थः विनय एव वैनयिक तदेव निःश्रेयसाये त्येव वादिनो वैनयिकवादिनइति एतद्भेदमख्याचेय असीइसयकिरियाण अकिरियवाईणत्तोइचुलसीई अन्नाणियसत्तठी वेणयियाणचवत्तीसति ॥ १ ॥ तत्रा शीत्यधिक शत क्रियावादिनां भवति इदचा मुनोपायेना वगन्तव्य जीवाजीवाश्रववन्धसवरनिर्जरापुख्यापुख्यमोक्षाख्यान् नवपदार्थान्विरचय्य परिपाट्या जीवपदार्थस्या ध' स्वपरभेदा वुपन्यसनीयौ तयो रधो नित्यानित्यभेदौ तयो रप्यध' कालेश्वरात्मनियतिस्वभावभेदाः पंच न्यसनीयाः पुन श्चेत्थ विकल्पा' कर्त्तव्याः अस्तिजीवः स्वतो नित्यः कालत एवेत्येको विकल्पः विकल्पार्थ श्चाय विद्यते खल्वय मात्मा स्वेन रूपेण न परापेक्षया ह्रस्वत्वदीर्घत्वे इव नित्यश्च कालवादिन उक्तेनेवा भिलापेन द्वितीयोविकल्पः ईश्वरकारणिक स्तृतीयो विकल्पः आत्मवादिन. पुरुष एवेद मित्यादिप्रतिपत्तु रितिचतुर्थी नियतिवादिनो नियतिय पदार्थाना मवश्यतया य द्यथाभवने प्रयोजकर्त्रीति पचमः स्वभाववादिन एवस्वत इत्यजहता लब्धाः पचविकल्पा परत इत्यनेनापि पचैव लभ्यंते तत्र परत इत्यस्या यमर्थ इहच सर्वपदार्थाना पररूपापेक्ष. स्वरूपपरिच्छेदो यथा ह्रस्वत्वाद्य

त्ताए ॥ चत्तारि वाइसमोसरणा प० तंजहा किरियावाई अकिरियावाईअ णाणिअवाई वेणइयवाई ४ ।

नवाकुरपणे विकुर्वणा पत्रसहित फूलसहित । फलपणे विकुर्वे ॥ च्यार वादीपुरुषना मत कह्या १८० क्रियावादीनामत ८४ अक्रियादी ६७ इम

॰ ॥

३ ॥

पेचो दीर्घत्वादिपरिच्छेद एवमेवचा त्मनः स्तम्भकुम्भादीन् समीक्ष्य तद्व्यतिरिक्तेति वस्तु न्यात्मबुद्धिः प्रवर्त्तत इत्यतो यदात्मनः स्वरूपं तत्परतएवा वधा र्यते नसतइति नित्यत्वापरित्यागेन चैते दशविकल्पा एव मनित्यत्वेनापि दशैव एवं विंशति जीवपदार्थेन लब्धा अजीवादि ष्व प्यष्टस्वेव मेव प्रतिपदं विं शति विकल्पाना मतो विंशति र्नवगुणा शत मशीत्युत्तर क्रियावादिनामिति एव एतेच विकल्पा एकैकशो न लभ्यते शीलाङ्गवदिति तथा अक्रियावा दिनां चतुरशीति र्द्रष्टव्या एवचेयं पुण्यापुण्यविवर्जितपदार्थसप्तकन्यास स्तथैव जीवस्या धः स्वपररूपविकल्पद्वयोपन्यासो ऽसत्वा दात्मनो नित्यानित्यभेदौ नस्तः कालादीनान्तु पञ्चाना षष्ठी यदृच्छा न्यस्यते इयंचा नभिसन्धिपूर्विकार्थप्राप्तिरिति पश्चा द्विकल्पाभिलापः नास्ति जीवः स्वतः कालत इत्येको विकल्प एव मीश्वरादिभिरपि यदृच्छावसानैः सर्वे षड्विकल्पा स्तथा नास्ति जीवः परतः कालतइति षडेव विकल्पा इत्येवञ्च द्वादश एव मजीवादि ष्वपि षट्सु प्रत्येकं द्वादशविकल्पा एवच द्वादश सप्तगुणा चतुरशीति र्विकल्पा नास्तिकानामिति अज्ञानिकानां सप्तषष्टि र्भवती यचा मुनो पायेन द्रष्टव्या तत्र जीवाजीवादी न्नवपदार्थान् पूर्वव द्व्यवस्थाप्य पर्यंते चोत्पत्ति मुपन्यस्या धः सप्त सदादय उपन्यसनीयाः सत्व मसत्व सदसत्वं अवाच्यत्व सदवाच्यत्व मसदवाच्यत्वं सदसदवाच्यत्वमिति एते नवसप्तका स्त्रिषष्टि रुत्पत्तेस्तु चत्वारएवा द्याविकल्पा स्तद्यथा सत्व मसत्व सदसत्व मवाच्यत्व चेति त्रिषष्टिम

णेरइयाणं चत्तारि वाइसमोसरणा पण्णत्ता तंजहा किरियावाई जाव वेणइयवाई । एव मसुरकुमाराणवि

अज्ञानवादी ३२ विनयवादी एवं ३६३ पाखंडीना बोल जाणवा । एक क्रियावादी जीवाजीवादिकछे इमभाने । अक्रियावादी नास्तिकमती जीवनथी अज्ञानवादी अज्ञान तेहज भलूंछे ते अज्ञान विनयवादी सहूनो विनयकरे काकश्वाननोकरे ॥ नारकीने चारवादीनां समोसरणमत ते कहेछे । क्रिया

ध्येचिमा सप्तषष्टि र्भवति विकल्पाभिलापश्चैवं को जानाति जीवः सन्निति किंवा तेन ज्ञातेनेत्येको विकल्प एव मसदादयोपि वाच्या स्तथा सती भावो त्पत्तिरिति को जानाति किम्वा नया ज्ञातया एव मसती सदसती अवक्तव्याचेति सत्वादिसप्तभङ्ग्या श्चायमर्थः स्वरूपमात्रापेच्चया वस्तुन' सत्व १ पररूपमा त्रापेचया त्वसत्व २ तथा एकस्य घटादिद्रव्यदेशस्य ग्रीवादेः सद्भावपर्यायेण ग्रीवात्वादिना दिष्टस्य सत्वात् तथा घटादिद्रव्यदेशस्यैवा परस्य बुध्नादे रसद्भावपर्यायेण वृत्तत्वादिना परगतपर्यायेणवा दिष्टस्या सत्वा द्वस्तुन. सदसत्व ३ तथा सकलस्यैवा खण्डितस्य घटादिवस्तुनो ऽर्थान्तरभूतैः पटादि पर्यायै र्निजे श्चोर्ध्वकुण्डलोष्ठायतवृत्तग्रीवादिभि र्युगपद्विवक्षितस्य सत्वेना सत्वेनवा वक्तुमशक्यत्वा त्तस्य घटादे र्द्रव्यस्या वक्तव्यत्व ४ तथा घटादिद्रव्यस्यै कदेशस्य सद्भावपर्यायै रादिष्टत्वस्य सत्वा दपरदेशस्य स्वपरपर्यायै र्युगपदादिष्टतया सत्वेना सत्वेनवा वक्तुमशक्यत्वात् घटादिद्रव्यस्य सदवक्तव्यत्वमि ति ५ तथा तस्यैव घटादिद्रव्यस्यै कदेशस्य परपर्यायै रादिष्टस्या सत्वा दपरदेशस्य स्वपरपर्यायै र्युगपदादिष्टत्वेन तथैव वक्तुमशक्यत्वात् तस्य घटादे र सदवक्तव्यत्व ६ तथा घटादिद्रव्यस्यै कदेशस्य स्वपर्यायै रादिष्टत्वेन सत्वा दपरस्यपरपर्यायै रादिष्टतया असत्वा दन्यस्य स्वपरपर्यायै र्युगपदादिष्टस्य त थैव वक्तुमशक्यत्वेना वक्तव्यत्वात् तस्य घटादिद्रव्यस्य सदवक्तव्यत्वमिति ७ इहच प्रथमद्वितीयचतुर्था अखण्डवस्त्वाश्रिताः शेषा श्चत्वारो वस्तुदेशाश्रिता दर्शि ता स्तथा अन्यै स्तृतीयोपि विकल्पो अखण्डवस्त्वाश्रितएवोक्त स्तथाहि अखण्डस्य वस्तुन. स्वपर्यायै' परपर्यायैश्च विवक्षितस्य सदसत्वमिति अतएवा भि हित माचारटीकाया इहचो त्पत्ति मङ्गीकृत्योत्तर विकल्पत्रय न सम्भवति पदार्थावयवापेक्षत्वा त्तस्यो त्पत्तेश्चा वयवाभावादिति एव मज्ञानिकानां स प्तषष्टिर्भवतीति वैनयिकानांच द्वात्रिंशत् साचेव मवसेया सुरनृपतियतिज्ञातिस्थविराधममातृपितृणां प्रत्येक्ष कायेन वाचा मनसा दानेनच देशकालोप पन्नेन विनयः कार्यइत्येते चत्वारोभेदा सुरादि ष्वष्टसु स्थानेषु भवति तेचैकत्र मोलिता द्वात्रिंशदिति सर्वसंख्या पुनरेतेषा त्रीणिशतानि त्रिषष्ट्यधिकानीति

उक्तंचपूज्यैः आस्तिकमतमात्माद्याः नित्यानित्यात्मकानवपदार्थाः कालनियतिस्वभावे श्वरात्मकृतकाःस्वपरसस्थाः ॥ १ ॥ कालयदृच्छानियतीश्वरस्वभा वात्मनश्चतुरशीति नास्तिकवादिगणमत नसतिसप्तस्वपरसस्थाः ॥ २ ॥ अज्ञानिकवादिमत नवजीवादीन्सदादिसप्तविधा भावोत्पत्तिसदृस द्वेतावाच्यचको वेत्ति ॥३॥ वैनयिकमतविनय श्चेतोवाक्कायदानतःकार्यः सुरनृपतियतिज्ञाति स्थविराधममातृपितृषुसदेति ॥ ४ ॥ एतान्येव समवसरणानि चतुर्विंशतिदण्ड के निरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ सुगम नवर नारकादिपञ्चेन्द्रियाणा समनस्कत्वा चत्वा र्यप्येतानि सम्भवन्ति ॥ विगलिंदियवज्जेत्ति ॥ एकद्वित्रिचतु रिंद्रियाणा ममनस्कत्वा न्नसम्भवतीति नोक्तानीति पुरुषाधिकारात् पुरुषविशेषप्रतिपादनाय प्रायः सप्टटातसूत्राणि पुरुषसूत्राणि त्रिचत्वारिंशत ॥ च त्वारिमेहेत्यादीनाह ॥ सुगमानिच नवरं मेघाः पयोदा गर्जितागर्जितवत् नो वर्षिता न प्रवर्षणकारीति १ एव कश्चित्पुरुषो गर्जितेच गर्जितादान

जाव थणियकुमाणं एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं । चत्तारि मेहा पण्णत्ता तंजहा गज्जित्तानाम मेगेणोवासित्ता वासित्तानाममेगेणोगज्जित्ता एगेगज्जित्ताविवासित्तावि एगेणोगज्जित्ताणोवासित्ता ॥ एवा

वादी यावत् बिनयवादी पचेंद्रीमनसहितमाटे । इमज असुरकुमारमा पणि यावत् स्तनितकुमारताईं इम विगलेंद्री एकेंद्री वेंद्री तेंद्री चउरेंद्री वर्जो तेहने मन नथी । यावत् वैमानिकताईं ॥ च्यार प्रकारना मेघ कह्या ते कहेछे । एक मेघ गाजे पणि वरसे नही १ । एक मेघ वरसेछे पणि गाजता नथी २ । एक गाजेछे वरसेछे ३ । एक गाजता नथी वरसता नथी ४ ॥ एह मेघनी परे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे । एक गाजेछे प्रति ज्ञाकरीबोले हुं आ करीस पणि करता नथी १ इम चौभंगी जाणवी ॥ च्यार प्रकारे मेघ कह्या तेकहेछे । एकगाजे बिजली नथी करता १ इम चौभंगी ॥

ज्ञानव्याख्यानानुष्ठानशत्रुनिग्रहादिविषये उच्चैःप्रतिज्ञावान् नो नैव वर्षितेव वर्षितावर्षित्तोभ्युपगतसम्पादकइत्यर्थ. अन्यस्तु कार्यकर्त्ता नचोच्चैः प्रतिज्ञावा निति विंतिएव मितरावपिनेया २ ॥ विज्जुयाइत्ति॥ विद्युत्कर्त्ता ३ एव पुरुषोपि कश्चिदुच्चैः प्रतिज्ञाता नच विद्युत्कारतुल्यस्य दानादिप्रतिज्ञातार्थारम्भाड म्बरस्य कर्त्ता अन्य स्त्वारम्भांडम्बरस्य कर्त्ता न प्रतिज्ञातेति एव मन्यावपोति ४ वर्षिता कश्चि द्दानादिभि र्नतु तदारम्भाडम्बरकर्त्ता अन्यस्तु विपरीतो न्य उभयथा अन्यो न किंचिदिति ५ कालवर्षो अवसरवर्षीति एव मन्येपि ६ पुरुषस्तु कालवर्षीच कालवर्षी अवसरे दानव्याख्यानादिपरोपकारार्थप्रव

मेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा गज्जित्तानाममेगेणोवासित्ता ४ ॥ चत्तारि मेहा प० तंजहा गज्जि त्तानाममेगेणोविज्जुयाइत्ता विज्जुयाइत्तानाममेगेणोगज्जित्ता । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा गज्जित्तानाममेगेणोविज्जुयाइत्ता ४ । चत्तारि मेहा प० तंज० वासित्तानाममेगेणोविज्जुयाइत्ता । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा वासित्ताणाममेगेणोविज्जुयाइत्ता ४ ॥ चत्तारि मेहा पण्णत्ता तंजहा का लवासीनाममेगेणोअकालवासी । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा कालवासीनाममेगेणोअका

वली च्यार मेघ कह्या ते कहेले । एक वरसेले पणि विजली नथी करता १ इम चौभंगी ॥ इम च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेले । एक वचने वोले पणि देवानो आडंवर नथी एम चौभंगी ॥ एकदे पणि वचननो आडवरनथी इमचौभंगी ॥ वली च्यार प्रकारे मेघछे ते कहेले । एक काले वरसेछे अकालेनथी १ इम चौभंगी ॥ इम च्यार प्रकारे पुरुष कह्या ते कहेले । एक अवसरमादानदे अवसरविनानदे १ इम चौभंगी ॥ वली च्यार

त्तिका एकः अन्यस्त्वन्यथेति एवमेवौ ७ क्षेत्रं धान्याद्युत्पत्तिस्थानं ८ पुरुषस्तु क्षेत्रवर्षी च क्षेत्रवर्षी पात्रे दानश्रुतादीनां निक्षेपकः अन्यो विपरीतो ऽन्यस्तथा विधिविवेकविकलतया महोदार्यात् प्रवचनप्रभावनादिकारणतो वा उभयस्वरूपो ऽन्यस्तु दानादावप्रवृत्तिक इति ९ जनयिता मेघो यो ह्यधान्य मुद्गमयति निर्मापयिता तु यो ह्यन्मेव सफलतां नयतीति एवं मातापितरावपीति प्रसिद्ध एवं आचार्योऽपि शिष्यं प्रत्युत्पादयति ११ विपश्चितभरतादिक्षेत्रस्य ग्रामखंडादिकालतस्तथा देशे आत्मनो वा देशेन वर्षतीति देशवर्षी १ यस्तु तयोः सर्वयोः सर्वात्मनाऽपि वर्षति स सर्ववर्षी २ यस्तु क्षेत्रतो देशे कालतः सर्वत्र आत्मनो वा

लवासी ॥ चत्तारि मेहा प० तं० खेत्तवासीनाममेगेणोअखेत्तवासी । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० खेत्तवासीनाममेगेणोअखेत्तवासी ॥ चत्तारि मेहा पण्णत्ता तजहा जणइत्तानाममेगेणोनिम्मवइत्ता णिम्मवइत्तानाममेगेणोजणइत्ता ॥ एवामेव चत्तारि अम्मापियरो प० त० जणइत्तानाममेगेणोनिम्मइवत्ता ४ ॥ चत्तारि मेहा पण्णत्ता तजहा देसवासीणाममेगेणोसव्ववासी ४ । एवामेव चत्तारि रायाणो प० त० देसा

मेघ कह्या ते कहेछे । एक क्षेत्रे वरसे जिहां धान थाय पणि ऊखरे नथीवरसतो १ इमचौभंगी ॥ इम चार पुरुष कह्या ते कहेछे। एक पात्रे दान करे कुपात्रे नथी १ इम चोभंगी ॥ वली चार मेघ कह्या ते कहेछे । एक प्रथम बरसीने धान उपजावे पणि पूरानीपजावे नही १ एकमेघ धान नीपजावे पणि उपजावे नही २ इम चौभंगी ॥ इम एसरखा चार मातापिता कह्या ते कहेछे । एक पुत्रने जणेछे पणि उछेरतानथी १ इम गुरुशिष्यने पणि जाणवा इमचौभंगी॥ बली च्यार मेघ कह्या तेकहेछे । एक मेघ एक देशमां वरसे पणि सघले नथी वरसतो १ इमचौभंगी॥ एहनी परे चार

॥ सर्व्वेत ३ अथवा कालतोदेशे चेत्रत: सर्व्वत्र आत्मनोवा सर्वत्र ४ अथवा आत्मनो देशे न चेत्रत: सर्वत्र ५ कालतोवा सर्वत्र ६ अथवा चेत्रकालतो देशे आत्मन: सर्वत: ७ अथवा चेत्रतो देशे आत्मनो देशे नच कालत: सर्वत्र ८ अथवा कालतो देशे आत्मनो देशे न चेत्रत: सर्वत्र ९ इत्येवं नवभि विकल्पै र्वेषेति स देशवर्षी सर्ववर्षीचेति चतुर्थ: सुज्ञानइति १३ राजातु यो विवक्षितक्षेत्रस्य मेघवत् देशे एव योगक्षेमकारितया प्रभवति सदेशाधिपति र्न सर्वाधिपति: सच पल्लीपत्यादि र्यस्तु न पल्ल्यादौ देशे अन्यत्रतु सर्वत्र प्रभवति स सर्वाधिपति र्न देशाधिपति र्यस्तु उभयाधिपति: अथवा देशाधिपति र्भूत्वा सर्वाधिपति र्योभवति वासुदेवादिवत् स देशाधिपतिश्चेति चतुर्थोराज्यभ्रष्टइति ॥ १४ ॥ पुक्खलेत्यादिएगेणवासेणति ॥ एकया वृष्ट्या भावयतीति उदकस्नेहवतीं करोति धान्यादि निष्पादनसमर्था मितियावत् भुवमिति गम्यते जिम्हस्तु बहुभि र्वर्षणै रेकमेव वर्षं सम्बद्यावत् भुव भावयति नैववा भावयति रूक्षत्वा

हिवईणाममेगेणोसव्वाहिवई ४ । चत्तारि मेहा पन्नत्ता तंजहा पुक्खलसंवट्टए पज्जुन्ने जीमूए जिम्मए । पोक्खलसंवट्टएणं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइ भावेइ । पज्जुन्नेणं महामेहे एगेणंवासेणं दसवासस

प्रकारना राजा कहिया तेकहेछे । एकराजा एकदेशमाछे पणि सर्वदेशनो धणी नथी १ इम चौभंगी चौथे भागे राज्यभ्रष्टराजा ॥ वली च्यार मेघ कह्या ते कहेछे । पुष्करसंवर्तक १ । प्रदुम्न २ । जीमूत ३ । जिम्ह ४ ॥ पुष्करसंवर्तकनामा महामेघ एकवार वरसे दसहजार वर्षलगे धरती प्रते स्नेहवतकरे १ । प्रदुम्ननामा महामेघ एकवार वरसे एक हजार वर्षलगे धरतीप्रते स्नेहवतकरे २ । जीमूतनामा महामेघ एकवार वरसे दसवर्षलगे धरती प्रते स्नेहवंतकरे ३ । जिम्हनामा महामेघ घणीवारवरसे तिवारे एकवर्षलगे धरती प्रते स्नेहवतकरे अथवानभावे ४ ॥ एहवा ४ पुरुष कह्या ॥

त्तज्जलस्येति अनान्तरे मेघानुसारेण पुरुषाः पुष्कलावर्त्तसमानादयः पुरुषाधिकारत्वा दभ्यूह्याद्दति तत्र सकृदुपदेशेना दानेनवा प्रभूतकालंयावत् शुभस्व भाव मीखरंवा देहिन यः करो त्यसा वाद्यमेघसमानः एव स्तोकतरस्तोकतमकालापेक्षया द्वितीयतृतीयमेघसमानौ असकृदुपदेशादिना देहिन मल्प कालं याव दुपकुर्वन्न नुपकुर्व्वन्वा चतुर्थमेघसमानद्दति करण्डको वस्त्राभरणादिस्थान जनप्रतीतः श्वपाककरण्ड श्चाण्डालकरण्डकः सच प्राय श्चर्मपरि कर्मोपकरणवध्रादिचर्मांशस्थानतया अत्यन्त मसारो भवति वेश्याकरण्डस्तु जतुपूरितस्वर्णाभरणादिस्थानत्वा त्किञ्चि त्ततः सारोपि वक्ष्यमाणकरण्डापेक्षया त्व सारएवेति गृहपतिकरण्डकः श्रीमत्कौटुंबिककरण्डकः सच विशिष्टमणिसुवर्णाभरणादियुक्तत्वा त्सारतरः राजकरण्डकस्तु अमूल्यरत्नादिभाजनत्वा त्सा रतमद्दति १६ एवमाचार्योयः षट्प्रज्ञापकगाथारूपसूत्रार्थधारीविशिष्टक्रियाविकलश्च सप्रथमो ऽत्यंतासारत्वात् यस्तु दुरधीतश्रुतलवोपि वागाडम्बरेण सु

याइं न्नावेइ । जीमूएणंमहामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं न्नावेइ । जिम्मेणंमहामेहे वक्षवासेहि एगंवासं न्नावेइवा णवान्नावेइ । चत्तारि करंम्गा पन्नत्ता तजहा सोवागकरंम्ए वेसियाकरंम्ए गाहावइकरंम्ए रायकरंडए । एवामेव चत्तारि आयरिया पन्नत्ता तजहा सोवागकरंम्गसमाणे वेसियाकरंम्गसमाणे गाहा

एकवार उपदेश सांजली घणांकालताइं धर्मनी मींजी न्नेदाइं ॥ चार करंडिया कह्या तेकहेछे । चंम्रालनो करंड चामडो वधूहोय असार १ वेश्याना करंड जेहमां लाखजस्या आजरणहोइ कांईक सार २ व्यवहारियानो करंड पणि सुवर्णसार रतन ३ राजानो करंड अमोलिकरतनजस्यो घणोसार ४॥ इम चार आचार्यछे ते कहेछे । चंडालना करम्समान उत्सूत्रन्नाषी क्रियारहित यती साधु घणो असार १ । वेश्याकरंम्समान दुष्टरीते श्रुत थोम्रो

ग्धजन मावर्जयति सद्द्वितीयः परिचाऽक्षमतया ऽसारत्वादेव यस्तु स्वसमयपरसमयज्ञः क्रियादिगुणयुक्तश्च स तृतीयः सारतरत्वात् यस्तु समस्ताचार्यगु णयुक्ततया तीर्थंकरकल्पः स चतुर्थः सारतमत्वात् सुधर्मादिवदिति १७ सालो नामैकः सालाभिधानवृक्षजातियुक्तत्वात् सालस्येव पर्याया धर्मा बहलच्छा यत्वासेव्यत्वादयो यस्य स सालपर्याय इत्येकः सालो नामैकइति तथैव एरण्डस्येव पर्याया धर्मा अबहलच्छायत्वा सेव्यत्वादयो यस्य स एरण्डपर्यायइति द्वि तीयः एरण्डो नामैक एरण्डाभिधानवृक्षजातीयत्वा त्सालपर्यायो बहलच्छायत्वादिधर्मयुक्तत्वा दिति तृतीयः एरण्डो नामैक स्तथैव एरण्डपर्यायो ऽबहलच्छा यत्वा द्येरण्डधर्मयुक्तत्वा दितिचतुर्थः १८ आचार्यस्तु सालइव सालो यथाहि सालो जातिमानेव माचार्योपि यः सत्कुलः सद्गुरुकुलश्च ससाल एवो च्य ते तथा सालपर्यायः सालधर्मा यथाहि सालः सत्वचत्वादिधर्मयुक्त एव यो ज्ञानक्रियाप्रभवयशःप्रभृतिगुणयुक्तो भवति स तथोच्यते इत्येकः तथा सालो

वइकरंडगसमाणे रायकरंडगसमाणे । चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा सालेणाममेगेसालपरियाए सालेणाम मेगेएरंडपरियाए एरंडे० ४ । एवामेव चत्तारि आयरिया पन्नत्ता तंजहा सालेणाममेगेसालपरियाए साले

सो जणी जोलालोकने रीझावे अजव्यवत् कांईकसार २ । गाथापतिना करंडसमान स्वसमयनो जाण क्रियावंत ३ । राजाना करंडसमान जे सर्व आचार्यगुण सहित जिनसरिखो ४ ॥ च्यार प्रकारना वृक्ष कह्या ते कहेछे । एक सालनामे वृक्षछे अने सालिनो पर्यायछे घणी छायाछे सळायछे घणो रमणीय फूलफूले। एक जाति सालवृक्षछे एरंडनो पर्यायछे छायादिधर्म एरंड सरखाछे । एम चार आचार्य कह्या तेकहेछे। जातें साल सरखो सुगुरु कुलनो सालपर्याय ते ज्ञानक्रियायशगुणयुक्त जातिसालवृक्षसरखो एरंडपर्याय ज्ञानक्रियादिगुणरहित एकजाति एरंड इम चौभगी ॥ चार बलीवृक्ष

नामेकदृति तथेव एरंडपर्यायस्तू त्ताविपर्यया दितिद्वितीयः एव मितरावपीति १९ तथा साल स्तथेव सालएव परिवारः परिकारो यस्य स साल परिवार एवं शेषत्रयमिति २० आचार्यस्तु सालद्रुम साम्यो गुरुकुलश्रुतादिभि रुत्तमत्वा त्सालपरिवारः सालकल्पमहानुभावसाधुपरिवारत्वा त्तथा एरंडपरिवार एरंडकल्पनिर्गुणसाधुपरिवारत्वात् एव मेरंडोपि श्रुतादिभिर्हीनत्वा दितिचतुर्थः सप्रानः उक्ता चतुर्भंग्या एव भावनार्थं ॥ सालदुमेत्यादि॥ गाथाचतुष्कं व्यक्तं

णाममेगेएरंडपरियाए एरंडेणाममेगे० ४ । चत्तारि रुक्खा पन्नत्ता तंजहा सालेणामंएगे सालपरिवारे ४ । एवामेव चत्तारि आयरिया पन्नत्ता तंजहा सालेणामंएगेसालपरिवारे ४ । सालदुममज्झगारे जहसालेणा महोइदुमराया । इयसुंदरआयरिए सुंदरसीसेमुणेयव्वे ॥ १ ॥ एरंडमज्झगारे जहसालेणामहोइदुमराया । इयसुंदरआयरिए मंगुलसीसेमुणेयव्वे ॥ २ ॥ सालदुममज्झयारे एरंडेणामहोइदुमराया इयमंगुलआयरिए सुंदरसीसेमुणेयव्वे ॥ ३ ॥ एरंडमज्झयारे एरंडेणामहोइदुमराया इयमंगुलआयरिए मंगुलसीसेमुणेयव्वे ४ ।

कह्या ते कहेछे । एक सालनामे वृक्ष अने सालनो परिवार इम चोभंगी ॥ एमचार आचार्य कह्या ते कहेछे । एक साल सरखोगुरू अने साल जेहवोज साधुशिष्यनो परिवारछे जिम सालना वृक्षमध्ये सालनामेज वृक्षनो राजाहोय । एम सुंदर भलो आचार्य अने सुंदर शिष्यनो परिवार जाणवो एरंड वृक्षमांहे जिम सालनामे वृक्षनो राजाहोय ॥ इम भलो आचार्य माठाकुशिष्यनो परिवार सालना वृक्षमाहिं जिम एरंड वृक्षनो राजा होय इम माठो आचार्य क्रियारहित अने चेला सुशिष्य ३ एरंडना वृक्षमाहें एरंडो नामे होय वृक्षनो राजा एम कुगुरु अने कुशिष्यनोपरिवार बेहु क्रिया

नवरं मगुल मसुंदरं २१ अनुस्रोतसा चरतीत्यनुस्रोतश्चारी नद्यादिप्रवाहगामी एवमन्ये त्रयः २२ एवं भिक्षाकः साधु र्योह्यभिग्रहविशेषा दुपाश्रयसमीपात् क्रमेण कुलेषु भिक्षते सो नुस्रोतश्चारिमत्स्यव दनुस्रोतश्चारी प्रथमो यस्तू त्क्रमेण गृहेषुभिक्ष्यमाण उपाश्रय मायाति स द्वितीयो यस्तु क्षेत्रांतरेषु भिक्षते स तृतीयः क्षेत्रमध्ये चतुर्थः २३ मधुसिक्थमदनं तस्य गोलो वृत्तपिण्डो मधुसिकथगोल एवमन्येपि नवर जतुलाक्षा दारुम्रतिके प्रसिद्धेइति २४ यथै ते गोला म्रदुकठिनकठिनतरकठिनतमाः क्रमेण भवन्त्येव ये पुरुषाः परीषहादिषु म्रदुदृढदृढतरदृढतमसत्वा भवन्ति ते मधुसिक्थगोलकसमाना इत्यादिभि र्व्यं

चत्तारि मच्छा पस्मत्ता तंजहा ऋणुसोयचारी पडिसोयचारी ऋंतचारी मज्झचारी । एवामेव चत्तारि भिरकागा पस्मत्ता तजहा ऋणुसोयचारी पडिसोयचारी ऋंतचारी मज्झचारी । चत्तारि गोला पस्मत्ता तंजहा मधुसित्थगोले जउगोले दारुगोले महियागोले । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्मत्ता तजहा मधु सित्थगोलसामाणे ४ । चत्तारि गोला पस्मत्ता तजहा ऋयगोले तउगोले तबगोले सीसगोले । एवामेव

रहित ४ ॥ एम च्यार मच्छ कह्या ते कहेछे । एक नदीना प्रवाहसरखो चाले १ । एक प्रवाहने साहमो चाले २ । एक पाणि उपरे चाले हेठेचाले ३ । एक पाणीने मध्ये चाले ४ ॥ एम चार भिक्षु अभिग्रह धारी साधु कह्या ते कहेछे । अपासराथी अनुक्रमे गृहे भिक्षाले १ । छेहडाथी उपासरालगे आवे २ । छेहले घरे गोचरीकरे ३ । मध्यघरे गोचरीकरे ४ ॥ च्यार गोला कहिया ते कहेछे । मधुसिक्थ ते मधुगोलो १ । लाखनोगोलो २ । लाक डानो गोलो ३ । माटीनो गोलो ४ ॥ एगोलासरखा बहुकर्मी पुरुष कहिया गुरु १ । गुरुतर २ । गुरुतम ३ । अत्यतगुरु ४ ॥ मधुसिक्थगोला समान

पदेशै र्व्यपदिश्यन्तइति २५ अयोगोलादयः प्रतीताः २६ एतैश्चा योगोलकादिभिःक्रमेण गुरुगुरुतरगुरुतमात्यतगुरुभिरारम्भादिविचित्रप्रवृत्त्युपार्जितकर्मभारा ये पुरुषा भवन्ति ते अयोगोलकसमाना इत्यादिव्यपदेशवतो भवन्ति पितृमातृपुत्रकलत्रगतस्नेहभारतोवेति २७ हिरण्यादिगोलेषु क्रमेणा लपगुणगुणाधिकगुणाधिकतरगुणाधिकतमेषु पुरुषाः समृद्धितो ज्ञानादिगुणतोवा समानतया योज्याः २८ पत्राणि पर्णानि तद्वत् प्रतनुतया यानि अस्यादीनि तानि पत्राणीति असिः खड्गः सएव पत्र मसिपत्र करपत्र क्रकच येन दारुच्छिद्यते क्षुरस्क्षुरः सएव पत्र क्षुरपत्र कदम्बवीरिकेति शस्त्रविशेषइति ३० तत्र

चत्तारि पुरिससजाया पन्नत्ता तंजहा अयगोलसमाणे जाव सीसगोलसमाणे । चत्तारि गोला पन्नत्ता हिरन्नगोले सुवन्नगोले रयणगोले वयरगोले । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा हिरन्नगोलसमाणे जाव वयरगोलसमाणे । चत्तारिपत्ते पन्नत्ते तंजहा असिपत्ते करपत्ते खुरपत्ते कलंबवीरियापत्ते । एवामेव

यावत् माटीना गोला समान ४ ॥ वली चार गोला कहिया ते कहेछे । लोहनो गोलो १ । तरुआनो गोलो २ । त्रांबानोगोलो ३ । सीसानोगोलो ४ ॥ एम चार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे । लोहना गोला समान १ । यावत् सीसानागोलासमान ४ पिता माता पुत्र स्त्रीना स्नेहथी कह्या ॥ वली च्यार प्रकारना गोला कह्या ते कहेछे । रूपानोगोलो १ । सोनानोगोलो २ । रत्ननोगोलो ३ । हीरानोगोलो ४ । एक एकथी रिद्धिये अधिक ॥ इण सरखा चार पुरुष कह्या ज्ञानादिगुणेकरी अधिकअधिक जोडवा ते कहेछे । रूपानागोलासमान यावत् हीराना गोलासमान अधिकाधिक ॥ च्यार पत्र कहिया पत्रसमान ते कहेछे । तरवारपत्र १ । करपत्र तेक्रकचपत्र २ । क्षुरपत्र तेळरपलो ३ । कदंबवीरकपत्र शस्त्रविशेष ४ ॥ एणे प्रकारें

द्राक्छेदकत्वा दृमेयं पुरुषो द्रागेव स्नेहपाश छिनत्ति सो सिपत्रसमानो ऽवधारितदेववचनसनत्कुमारचक्रवर्त्तिवत् यस्तु पुनः पुन रुच्यमानो भावना भ्यासात् स्नेहतरुछिनत्ति स करपत्रसमान स्तथाविधश्रावकवत् करपत्रस्य हि गमनागमनाभ्या कालक्षेपेण च्छेदकत्वादिति यस्तु श्रुतधर्ममार्गोपि सर्वथा स्नेह च्छेदासमर्थो देशविरतिमात्रमेव प्रतिपद्यते स क्षुरपत्रसमान. क्षुरोहि केशादिक मल्पमेव च्छिनत्तीति यस्तु स्नेहच्छेद मनोरथमात्रेणैव करोति स चतुर्थः अविरतसम्यग्दृष्टिरिति अथवा योगुर्वादिषु शीघ्रमन्दमन्दतरमन्दतमतया स्नेह छिनत्ति सएव मपदिश्यते २१ कटादिभिराताननवितानभावेन निष्पाद्यते यः स कट कटइव कट इत्युपचारा त्तत्वादिमयोपि कटएवेति तत्र ॥ सुठडेत्ति ॥ तृणविशेषनिष्पन्ने ॥ विदलकमेत्ति ॥ वंशशकलकृतः ॥ चम्मकडेत्ति ॥ वर्ध्र व्यूतमचकादिः ॥ कबलकडेत्ति ॥ कबलमेवेति २२ एतेषु चाल्पबहुबहुतरबहुतमावयवप्रतिबंधेषु पुरुषा योजनीया स्तथाहि यस्य गुर्वादिष्वल्पःप्रतिबधः

चत्तारि पुरिसजाया पस्मत्ता तंजहा श्रसिपत्तसामाणे जाव कलंववीरियापत्तसामाणे । चत्तारि कडा पस्मत्ता तजहा सुंठकडे विदलकडे चमकडे कबलकडे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सुंठकडसामाणे जाव

च्यार पुरुष कह्या ते कहेछे । तरवार सरखा पुरुष तरत स्नेह रागछेदे २ उपदेशदेता देता छेदे राग अनेद्वेषने करपत्र पूर्वे न छेदे तेश्रावक छुरप ला जेहवो सर्वथा छेदी नसके तेचोथो अविरति सम्यग्दृष्टि यावत् कदब पत्रसमान ते हलुंई राग छेदे सनत्कुमार चक्रीवत् ॥ चार कंड कह्या पुद्गलना अवयवनोबध ते कहेछे । सुंठनो कंड थोडोबंध १ । विदलबध वासनी फाडीनोबध ३ चर्मनोबंध तेबाधनो माचो ३ । कंबलनोकडते का बलोज ४ ॥ एम च्यार पुरुष गुर्वादिकना प्रतिबध आश्री कह्या ते कहेछे । सुंठिना कंडसमान तेहने गुरुस्यूं प्रतिबंध थोडो निस्नेही यावत् कबल

स्वल्पश्चलीकादिनापि विगमा त्वसुठकटसमान' इत्येवसर्वत्र भावनीयमिति ३२ चतुष्पदाः स्थलचरपचेंद्रियतिर्यंच एकः खुरः पादेपादे येषांते एकखुरा अश्वादय एव द्वौखुरी येषाते तथा तेच गवादयः गडी सुवर्णकारादोना मधिकरणो गडिका तद्व त्पदानि येषाते तथा ते हस्त्यादयः ॥ सणप्पयत्ति ॥ सनखपदा नाखरा. सिहादय इहो त्तरस्त्रद्वयेच जीवाना पुरुषशब्दवाच्यत्वात् पुरुपाधिकारतेति ३४ चर्ममयपत्रा: पच्चिणः चर्म्मपच्चिणो वलुलीप्रभृ तय एव लोमपच्चिणो हसादयः समुद्गकवत् पच्ची येषाते समुद्गकपच्चिणः समासांत इन् तेच बहिर्द्वीपसमुद्रे ष्वेववितितपच्चिणोपीति ३५ ॥ चुद्रा अधमा अनतरभवे सिद्धाभावात् प्राणा उच्छ्वासादिमतः चुद्रप्राणा. समूर्छन निर्वृत्ता सम्मूर्छिमा तिरश्चां सत्का योनि येषांते तथा पदत्रयस्य कर्मधारयेसति

कवलकक्ससामाणे । चउव्विहा चउप्पया पन्नत्ता तंजहा एगखुरा दुखुरा गंडीपदा सणप्पदा ॥ चउव्विहा पक्की प० तजहा चम्मपक्की लोमपक्की समुग्गपक्की बिययपक्की ॥ चउव्विहा खुद्दपाणा पन्नत्ता तंजहा वेइंदिया तेंदिया चउरिंदिया समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्कजोणिया । चत्तारि पक्की प० तंजहा णिवइत्ता

कंऊ समान ॥ च्यार प्रकारना चतुष्पदछे तेकहेछे । एक खुरीछे पगे अश्व १ । बेखुरी ते गाय २ । गंडीपद ते सोनारनी हाथी ३ । नखला सिहप्रमु ख ४ ॥ च्यार प्रकारना पत्ती कह्या तेकहेछे । चर्मपत्ती ते चामडीनी पांख वागुलछाया १ । रोमनी पांख ते हसादिक २ । समुद्गपत्ती डाबडा समान पाखछे ३ । मोकली पाख रहेछे तेविततपत्ती मनुष्य लोक बाहिर ४ ॥ च्यार प्रकारना अधमप्राणीछे ञवांतरे एके मोक्ष नजाय ते कहेछे । बेद्री १ । तेद्री २ । चउरिद्री ३ । समूर्छिमपंचेद्री तिर्यंच ४ ॥ ए च्यार चउदस्थानके उपजेते ॥ च्यार प्रकारना पत्ती कहिया ते कहेछे । एक पखी मालाथी

संमूर्छिमपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकादइति भवति निपतिता नीडा दवतरीता अवतरीतु शक्तो नामैकः पक्षी धृष्टत्वा दन्यत्वाद्वा नतु परिव्रजिता नपरिव्रजितु शक्तो वालत्वा दित्येकः एव मन्यः परिव्रजितु शक्तः पुष्टत्वा न्नतु निपतितुं भीरुत्वा दन्यस्तू भयथा चतुर्थस्तू भयप्रतिषेधवा नतिवालत्वादिति २७ निपतिता भिक्षाचर्याया मवतरीता भोजनाद्यर्थित्वा न्नतु परिव्रजिता परिभ्रमको ग्लानत्वा दलसत्वा ल्लज्जालुत्वाद्वेत्येक अन्य. परिव्रजिता परिभ्रमणशील आश्रया न्निर्गतः स न्नतु निपतिता भिक्षार्थं मवतरीतुमशक्तः सूत्रार्थाशक्तत्वादिना शेषौ स्पष्टौ २८ निकृष्टो निष्कर्षित स्तपसा कृशदेह इत्यर्थः पुनर्निष्कृष्टो

णाममेगेणोपरिवइत्ता परिवइत्ताणाममेगेणोणिवइत्ता एगेणिवइत्ताविपरिवइत्तावि एगेणोणिवइत्ताणोपरिवइत्ता। एवामेव चत्तारि भिक्खागा प० तं० णिवइत्ताणाममेगेणोपरिवइत्ता चत्तारि पुरिसजाया प० तं० णिक्कठेनाममेगेणिक्कठे णिक्कठेनाममेगेऋणिक्कठे ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० णिक्कठेनाममेगेणिक्कठप्पा

उडी जावाने समर्थछे पणि अरहोपरो फरवा समर्थ नथी बालक माटे १। एकपंखी फरवा समर्थछे पणि मालाथी नीसरिवा समर्थ नथी बीहक्कणामाटे २। एक मालाथी निवर्तवा निकलवा समर्थ अने फरवाने समर्थ वीहकण नथी ३। एक मालाथी निकलवा समर्थनथी अने फरवा समर्थ नथी घणोवालकमाटे ४॥ एम च्यार भिक्षुसाधु कह्या ते कहेछे। एक गोचरीये जावा समर्थ भोजनना अरथी माटे पणि सघले घरे फरवा समर्थ नथी ग्लान आलसी लज्जालुमाटे इम चौभंगी। वली च्यार पुरुष कह्या तेकहेछे एक शरीरे निकृष्ट तपे दुर्बलछे देहअने भावथी दुबलो कषाय रहित १। एक शरीरे दुबलो अने भावथी कषाये करीअनिकृष्ट २। इम चौभंगी॥ वली चार पुरुष कह्या ते कहेछे। एक शरीरे दुबलो अने कषा

भावतः कृशीकृतकषायत्वा देव मन्ये नयद्दति ३९ एतद्भावनार्थमेवा नन्तरसूत्र निष्कृष्टः कृशशरीरतया तथा निष्कृष्ट आत्मा कषायादिनिर्मथनेन यस्यस तथे त्येव मन्ये नयद्दति अथवा निष्कृष्ट स्तपसा कृशीकृत' पूर्वं म्मथादपि तथैवे त्येव मादिसूत्र व्याख्येय द्वितीयन्तु यथोक्त मेवेति ४० बुधो बुधत्वकार्यभू तसत्क्रियायोगात् उक्तच पठक पाठकाश्चैव येचान्येतत्वचिंतकाः सर्वेव्यसनिनोराजन् यःक्रियावान्सपंडितद्दति ॥ १ ॥ पुन बुध' सविवेकमनस्त्वा दित्येको अन्यो बुध स्तथैव अबुध स्त्वविवितमनस्त्वादपर स्त्वबुधो असत्क्रियत्वा द्बुधो विवेकवच्चित्तत्वा च्चतुर्थ उभयनिषेधादिति ४१ अनन्तरसूत्रेणै तदेव व्यक्तीक्रिय ते बुध' सत्क्रियत्वात् बुध हृदय मनो यस्य स बुधहृदयो विवेकमनस्त्वात् अथवा बुधः शास्त्रज्ञत्वात् बुधहृदयस्तु कार्येषु ग्रमूढलक्ष्यत्वा दित्येक एव मन्ये च यजहाः ४२ आत्मानुकम्पक आत्मर्हितप्रवृत्त. प्रत्येकबुद्धो जिनकल्पिकोवा परानपेक्षोवा निर्घृण. परानुकम्पको निष्ठितार्थतयातीर्थकर आत्मानपेक्षोवा

णिक्कठेनाममेगेत्र्प्रणिक्कठप्पा ४ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा बुहेनाममेगेबुहे बुहेनामेगे ग्रबुहे ४ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा बुहेनाममेगेबुहहियए ४ । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा ग्रा

य रहित दुर्बल आत्मा १ । एक दुर्बल शरीर अने आत्माकषायथी अनिकृष्ट मातो इमचौभंगी ॥ ए अर्थथी एकज ॥ वली चार पुरुष कह्या ते कहेछे एक बुद्ध पंडितछे जाणमाटे भावथी पंडित छे १ । एक पंडितछे पणि भलीक्रियारहितमाटे अपंडित इम चौभंगी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे । एक पंडित शास्त्रना जाणमाटे अने पडित हृदयछे विवेकसाहित मनछे इम च्यारभागा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे । एक आत्मानुकंप आत्मानोहित वाछे पणि परनो नथी तेप्रत्येकबुद्ध तथा जिनकल्पी इम ४ भागा तीर्थंकर परनो हितवांछे ४ । च्यार

दयैकरसी मेतार्यवत् उभयानुकम्पकः स्थविरकल्पिकः उभयानुकम्पकः पापात्मा कालशौकरिकादिरिति ४२ अनन्तर पुरुषभेदा उक्ता अधुना तद्व्यापार विशेष तद्भेदसम्पाद्य मभिधित्सुः सूत्रसप्तकमाह ॥ चउव्विहेसंवासेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं स्त्रिया सह वसन शयन संवासः द्यौ स्वर्ग स्तद्वासी दैवो व्युपचा रा द्यौ स्तत्र भवो दिव्यो वैमानिकसंबधीत्यर्थः असुरस्य भवनपतिविशेषस्या य मासुरएव मितरौ नवरं राक्षसो व्यतरविशेष चतुर्भङ्गिकासूत्राणि देवासुरे त्येवमादि संयोगतः |देवा १ |असुर २| राक्षस ३ | मनुष्य ४ | षट् भवंति पुरुषक्रियाधिकारादेवा पध्वंससूत्र तत्रा पध्वंसन मपध्वंस चारित्रस्य तत्फलस्यवा असुरादिभावना ज |देवी |असुरी | राक्षसी | मानुषी | नितो निवास स्तत्रासुरभावनाजनित आसारोयेषुचा नुष्ठानेषु वर्त्तमानो ऽसुरत्व मर्जयति

याणुकंपएनाममेगेनोपराणुकंपए ४ । चउव्विहे संवासे प० तं० दिव्वे आसुरे रक्खसे माणुसे । चउव्विहे सं वासे पन्नत्ते तंजहा देवेनाममेगेदेवीएसद्धिंसंवासंगच्छइ देवेनाममेगेआसुरीएसद्धिंसंवासंगच्छइ आसुरेनाम मेगेदेवीएसद्धिंसंवासंगच्छइ आसुरेनाममेगेआसुरीएसद्धिंसंवासंगच्छइ । चउव्विहे संवासे पन्नत्ते तंजहा देवे

प्रकारनो संवास ते स्त्रीसाथे वसवुं ते सवास तिर्यंच एकठा नथी रहता देववैमानिक १ । असुर भवनपति २ । राक्षसनो व्यंतर ३ । मनुष्यनो सं वास ४ ॥ वली च्यार प्रकारे सवास कह्यो ते कहेछे । एक देवनामे वैमानिक देवीसाथे संवास संभोगादि पामे १ । एकदेवता आसुरी स्त्रीसुं वास करे २ । असुर भवनपति एक देवीसुं सवास पामें ३ । एक असुर आसुरीसु संवासकरे ४ ॥ वली च्यार संवास कह्या ते कहेछे । देवतादेवीसु संवास करे वसे १ । एक देवछे ते राक्षसीसु संवास पामे २ । एक राक्षसछे देवीसुं संवास पामे भोगार्थी ३ । एक राक्षसछे ते राक्षसीसुं सवास पामे भोग

णाममेगेदेवीएसद्धिंसंबासंगच्छइ देवेनाममेगेरक्खसीएसद्धिंसंबासंगच्छइ रक्खसेनाम० । चउब्विहे संबासे प० तजहा देवेनाममेगेदेवीएसद्धिंसंवासंगच्छइ देवेनाममेगेमणुस्सीहिंसद्धिंसंबासंगच्छइ ४ । चउब्विहे संबासे पन्नत्ते तजहा असुरेनाममेगेअसुरीहिंसद्धिंसंबासंगच्छइ असुरेनाममेगेरक्खसीहिसद्धिंसंबासगच्छइ ४ ॥ चउब्विहे सबासे पन्नत्ते तजहा असुरेनाममेगेअसुरीएसद्धिंसंवासगच्छइ असुरेनाममेगेमणुस्सीएसद्धिंसंबासं गच्छइ । चउब्विहे सबासे प० त० रक्खसेनाममेगेरक्खसीएसद्धिंसबासगच्छइ रक्खसेनाममेगेमाणुसीएसद्धिं सबासगच्छइ ४ । चउब्विहे अवद्धसे प० त० आसुरे आभियोगे समोहे देवकिब्बिसे । चउहिंठाणेहि जीवा

पामे ४ ॥ वली च्यार संवास कह्या ते कहेछे । एक देवछे अने देवांगनासाथे सवासपामे १ । एकदेवछे अने मनुष्यणीसाथे संवासपामे २ । एक मनुष्यछे ते देवीसाथे सवासपामे ३ । एक मनुष्यछे ते मनुष्यणी साथे सवास पामे ४ ॥ वली च्यार प्रकारे सवास कह्या ते कहेछे असुरनामे एक ते आसुरी साथे सवास पामे १ । असुरनामे एक तेराक्षसी साथे सवास पामे २ । इमचौभगी ॥ वली च्यार सवास कहिया ते कहेछे । असुरनामे एक ते आसुरी साथे सवास पामे १ । असुरनामे एक ते मनुष्यणी साथे संवास पामे २ । इमचौभगी ॥ वली च्यार सवासकहिया ते कहेछे । राक्षसनामे एक ते राक्षसी साथे सवासपामे १ । राक्षसनामे एक तेमनुष्यणी साथे सवास पामे २ । इम चौभगी ॥ च्यार प्रकारना अपध्वंस ते चारित्रना फलनोवास कह्या ते कहेछे आसुरी भावना १ । अभियोग चाकरपणो पामे २ । समोहभावना ३ । कल्विषदेवता ४ ॥ चारथानके जीव असुर

त रात्मनो वासन भासुरभावना एव भावनान्तरमपि ...

वकिल्बिष इति इहच कन्दर्पभावनाजनितः कन्दर्पोपप्लवसः पंचमोस्ति सच सन्नपि नोक्त अतःस्थानकानुरोधा द्भावनाहि पञ्चागमे भिहिताः आहच क

दप्प १ देवकिब्बिस २ अभिजोगा ३ आसुराय ४ संमोहा ५ एसाउसंकिलिट्ठा पचविहाभावणाभणिया ॥ १ ॥ आसाच मध्ये यो यस्यां भावनायां वर्त्त

स तद्विधेष्वेव देवेषु गच्छति चारित्रलेशप्रभावा दुक्तच जोसजओविएया सुअप्पसत्थासुवट्टइकाहिचि सोतव्विहेसुगच्छइ सुरेसुभइओचरणहीणोत्ति ॥ १

असुरादि रुपध्वसउक्तः सचासुरत्वादिनिबधन इत्यसुरादिभावनास्वरूपभूता न्यसुरादित्वसाधनकर्मणाकारणानि सूत्रचतुष्टयेनाह ॥चउहिठाणेहिमित्यादि

कण्ठ्य नवर असुरेषुभव आसुरः असुरविशेष स्तद्भाव असुरत्वं तस्मै आसुरत्वाय तदर्थमित्यर्थः अथवा असुरतायै असुरतयावा कर्म तदायुष्कादि प्रकुर्वंति व

तुं मारभते तद्यथा क्रोधनशीलतया कोपस्वभावत्वेन प्राभृतशीलतया कलहनसबधतया सशक्ततपःकर्मणा आहारोपधिशय्यादिप्रतिबद्धभावतपश्चरणेन नि

मित्ताजीवनतया त्रैकालिकलाभालाभादिविषयनिमित्तोपात्ताहाराद्युपजीवनेनेति अयमर्थो अन्यत्रैव मुक्तः अणुबद्धविग्गहोचिय ससत्ततवोनिमित्तमा

सी निक्किवनिराणुकपो आसुरियभावणकुणइत्ति ॥ १ ॥ तथा अभियोग व्यापारण मर्हतीत्याभियोग्या. किंकरदेवविशेषा स्तद्भावस्तत्ता तस्यैतयावेति व

त्मोत्कर्षेणा त्मगुणभिमानेन परपरिवादेन परदोषपरिकीर्त्तनेन भूतिकर्मणा ज्वरितादीना भूत्यादिभी रक्षादिकरणेन कौतुककरणेन सौभाग्यादिनिमित्त

आसुरत्ताएकम्मं पकरेंति तंजहा कोवसीलयाए पाहुडसीलयाए संसत्ततवोकम्मेणं निमित्ताजीवयाए ४ ॥

देवतानो कर्मबांधे असुर देवतायाय क्रोधशीलहोय १। कलहसंबंधपणे २। संसक्त तपते आहार उपधिशय्यादिलाभने अर्थे ३। निमित्तिकादि कहे

परस्तापनक्वादिकारणेनेति इयमप्येगमन्यत्र कोउयभूगकम्मे पसिणाइयरेनिमित्तमाजीवी इड्डिरससायगरुश्रो अभिजोगंभावणंकुणइत्ति ॥ १ ॥ अर्थोद्धृष्टप्रम्णा दि रितर, स्वप्ननिद्यादि रिति तथा संमुगतोति समोहो मूढात्मा देवविशेषएव तद्भाव स्तत्ता तस्यै सम्मोहताये,समोहतया वेति उम्मागदेशनया सम्यग्दर्शनादिरूपभावमार्गातिक्रान्त धर्मप्रकथनेन मार्गान्तरायेण मोक्षाध्वप्रवृत्तविघ्नकरणेन कामाशसाप्रयोगेण शब्दादा वभिलाषकरणेन ॥ भिज्जत्ति ॥ लोभो र्त्ति स्तेन निदानकरण मेतस्मा त्तपः प्रभृते शक्रवर्त्यादित्व मे भूयादिति निकाचनाकरण तेनेति इयम प्येव मन्यत्र उम्मग्गदेशश्रोमग्ग नासश्रोमग्गविपाडिवत्ती। मोहेणयमोहेत्ता समोहभावणकुणइत्ति ॥ १ ॥ देवानां मध्ये किल्विषः पापो ऽतएवा स्पृश्यादिधर्मको देव शासो किल्विष सेतिवा देवकि

चउहिंठाणेहिंजीवाअभिजोगत्ताए कम्मंपगरेंति तंजहा अणुक्कोसेणं परपरिवाएण भूइकम्मेण कोउयकरणेणं चउहिंठाणेहि जीवा सम्मोहत्ताए कम्म पगरेंति तंजहा उम्मग्गदेसणयाए मग्गतराएण कामासंसपओगेणं भिज्झानियाणकरणेण। चउहिंठाणेहिजीवा देवकिब्बिसियाए कम्म पगरेंति तंजहा अरहंताणअवसवयमाणे

आजीविका करे ४ ॥ च्यार थानके जीव अभियोग पणानो कर्म बांधे सेवकथाय तेकहेछे। आत्मोत्कर्षे पोताना गुणाने अभिमाने १। परदोष कहवाथी भूतकर्म रोगीने औषधादि करे ३। सौभाग्यादि निमितेशरीरे उगटणादिकरे ४ ॥ च्यार थानके जीव समोह मूढात्मादेव विशेष पणानो कर्मबांधे उन्मार्गने देखाडवे जिनमार्गथीअन्य १। मोक्षमार्गे चालताने अतरायकरे २। कामा सञ्चप्रयोगे विषयने अभिलाषे ३। लोभथी नियाणो करे तपस्वी चक्रीनी रिद्धि मागे ४ ॥ च्यार थानके किल्विष देवतानो कर्मबाधे देवतामा ढेडवत् अरिहंतना अवर्णवाद अवगुण बोले १। अरहतना

ल्विष:शेष तथैवा ऽवर्णोऽश्लाघा ऽसद्दोषोद्घट्टनमित्यर्थ' अयमर्थो न्यत्रैव मुच्यते णाणस्सकेवलीणं धम्मायरियाणसव्वसाह्णं भासंअवन्नमाई किव्विसियभा वणकुणइत्ति ॥ १ ॥ इह कदर्प्पभावनानोक्ता चतु'स्थानकत्वा दित्यवसरश्चाय मस्याइति साग्रदर्श्यते कंदप्पेकुकुइए दवकुसीलेयाविहासणकरेय विम्हाविंतोय पर कदप्पभावणकुणइत्ति ॥ १ ॥ कदर्प्प:कदर्प्पक्रयावान् कुकुचितो भांडचेष्टो द्रवशीलो दर्प्पंद्रुतगमनभाषणादिहामनकरो वेपरचनादिस्वपराहासोत्पा दको विस्मापक इद्रजाली अयचा पध्वस. प्रव्रज्यान्वितस्येति प्रव्रज्यानिरूपणाय ॥ चउव्विहापव्वज्जेत्यादि ॥ सूत्राष्टक कण्ठ्य किन्तु इह लोकप्रतिवद्धनि र्वाहादिमात्रार्थिना परलोकप्रतिवद्धा जन्मांतर कामाद्यर्थिना द्विधालोकप्रतिवद्धोभयार्थिना अप्रतिवद्धा विशिष्टसामायिकवतामिति पुरतो ऽग्रत' प्रव्र ज्या पर्यायभाविषु शिष्याहारादिषु या प्रतिवद्धा सा तथोच्यते एव मार्गत पृष्टत' स्वजनादिषु द्विधापि काचित् अप्रतिवद्धा पूर्ववत् ॥ उवायत्ति ॥ अवपा

अरहंतपन्नत्तस्सधम्मस्सअवन्नंवयमाणे आयरियउवज्झायाणमवन्नवयमाणेवा चाउव्वन्नस्ससंघस्सअवन्नंव यमाणे ॥ चउव्विहा पव्वज्जा प० त० इहलोगपडिवद्धा परलोगपडिवद्धा दुहओलोगपडिवद्धा अप्पडिवद्धा चउव्विहा पव्वज्जा प० त० पुरओपडिवद्धा मग्गओपडिवद्धा दुहओपडिवद्धा अपडिवद्धा । चउव्विहा पव्वज्जा

कह्या धर्मना अवर्णवाद वोले जमालीवत् २ । आचार्य उपाध्यायना अवर्णवाद वोले ३ । चतुर्विधसंघनो अवर्णवाद वोले ४ ॥ च्यार प्रकारनी प्रव्र ज्या कही ते कहेछे । इहलोक प्रतिवद्ध ते पेटभरो १ । परलोकने भोगादिकने अर्थे २ । इहलोक परलोकने भोगादिकने अर्थे ३ । अप्रतिवद्ध तेमो क्षने अर्थे ४ ॥ च्यार प्रकारे प्रव्रज्या कही ते कहेछे । पुरतआगलदीक्षा १ । मार्गत' पृष्टत' पाछलिथी स्वजनादिषु २ । वेप्रकारे प्रतिवद्ध ३ । अप्र

तः सद्गुरूणासेयाततो या प्रव्रज्या सा वपातप्रव्रज्या आख्यातस्य प्रव्रज्ये त्याद्युक्तस्य या स्यात् साख्यातप्रव्रज्या आर्यरचित भ्रातुः फल्गुरचितस्येवेति ॥ सगारत्ति ॥ सकेत स्वस्मात् या सा तथा मेतार्यादीनामिव यदिवा यदित्व प्रव्रजसि तदाहमपि व्रत्येव सकेततो या सा तथेति ॥ विहगगइत्ति ॥ विह गगत्या पक्षिन्यायेन परिवारादिवियोगेने काकिनो देशान्तरगमनेनच या सा विहगगतिप्रव्रज्या क्वचि द्विहगप्रव्रज्येतिपाठ स्तत्र विहतगस्येवेति दृश्यं इति विहतस्यवा दारिद्राादिभि ररिभिर्वेति ॥ तुयावइत्तत्ति ॥ तोदक्कत्वा तोदयित्वा व्यथा मुत्पाद्य या प्रवज्या दीयते मुनिचन्द्रपुत्रस्य सागरचन्द्रेणेव सा तथोच्यते ॥ ओयावइत्तत्ति ॥ क्वचित्पाठ स्तत्र ओजो वल शारीरं विद्यादिसत्कंवा तत् कृत्वा प्रदर्श्य दीयते सा ओजयित्वे त्यभिधीयते ॥ पुयावइत्तत्ति ॥ प्लुत्ता वितिवचनात् प्लावयित्वा अन्यत्र नीत्वा ऽार्यरक्षितवत् पूतंवा दूषणाव्यपोहेन कृत्वा या सा पूतयित्वेति ॥ बुयावइत्तत्ति ॥ सभाष्य गौतमेन कर्षकव त् वचनगा पूर्वपक्षरूप कारयित्वा निग्रहाच प्रतिज्ञावचनवा कारयित्वा या सा तथोक्ता क्वचित् ॥ मोयावइत्तत्ति ॥ पाठ स्तत्र मोचयित्वा साधुना तैला ॥

पन्नत्ता तंजहा उवायपव्वज्जा अक्खायपव्वज्जा सगारपव्वज्जा विहगगइपव्व ज्जा। चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता तजहा तुयावइत्ता पुयावइत्ता मोयावइत्ता

तिवद्ध ४॥ चार प्रकारे प्रव्रज्या कही ते कहेछे । अपपात प्रव्रज्या गुरुसेवाथी १ । आख्यात प्रव्रज्या आर्यरक्षित भाई फल्गुरक्षितवत् २ । शृंगार प्रव्र ज्या सोमदेववत् ३ । दरिद्रथी प्रव्रज्या ४॥ च्यार प्रकारे प्रव्रज्या कही तेकहेछे । पीडाउपजावी दीक्षा लीधी १ । प्लावयित्वा नसाडी अन्यत्र लेजईने २ । सुश्रीने साधुंए तैलमाटे दासीथई भगवत् मुनिचद्रना पुत्रसागरचद्र ३ । घृतादिभोजन करावी लालची देखाडी दीक्षा लीधी सप्रति भिखारिवत् ४॥ बली

॥ यैत्वा दासन्नग्रामभगिनीवदिति ॥ परिपुयावइत्ति ॥ घृतादिभिः परिप्लुतभोजनः परिप्लुतएव तं कृत्वा परिप्लुतयित्वा सुहस्तिनो रकवत् या सा तथोच्यत ॥
इति नटस्येव सवेगविकलधर्मकथाकरणोपार्जितभोजनादीना ॥ खइयत्ति ॥ खादित भचण यस्यांसा नटखादिता नटस्येववा ॥ खइत्ति ॥ सवेगशून्यंधर्म
कथनलचणो हेवाकःस्वभावो यस्यासा तथा एव भटादिष्वपि नवरं भट स्तथाविधवलोपदर्शनलब्धभोजनादेः खादिता आरभटवृत्तिलचणहेवाकोवा सिंहः
पुनः शौर्यातिरेका दवज्ञयोपात्तस्य यथा रब्धभचणेनवा खादिता तथाविधप्रकृतिर्वा शृगालस्तु न्यग्वृत्त्यो पात्तस्या न्यान्यस्थानभचणेनवा खादिता तत्स्व
भावावेति कृषि धान्यार्थं चेत्रकर्षणम् ॥ वावियत्ति ॥ सकृडान्यवपनवती ॥ परिवावियत्ति ॥ द्विस्त्रिर्वा उत्पाद्य स्थानान्तरारोपणतः परिवपनवती शालिक
षिवत् ॥ णिंदियत्ति ॥ एकदा विजातोय तृणाद्यपनयनेन शोधिता निंदिता ॥ परिनिंदियत्ति ॥ द्विस्त्रिर्वातृणादिशोधनेनेति ६ प्रव्रज्यातु ॥ वाविया ॥ सा

परिपुयावइत्ता । चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा णडखइत्ता भडखइत्ता सीहखइत्ता सियालखइत्ता ।
चउव्विहा किसी प० तं० वाविया परिवाविया णिंदिया परिणिंदिया एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा पन्नत्ता

च्यार प्रकारे प्रव्रज्याकही तेकहेछे । नटनी परे संवेगरहित धर्मकथाये उपार्जित भोजनकरे १ । सुभटनी परे तथाविध बल देखाडी भोजन करे २ ।
सिंहनीपरे शौर्यगुणदेखाडी भोजनकरे ३ । सियालपरे गरीब थई एकात अन्यत्रथी आणी भोजनकरे ४ ॥ च्यार प्रकारे कृषी खेत्रवाडी कही तेक
हेछे । एकवार वाव्युउगे १ । बीजीवार उपाडीवाव्युं उगेशालि २ । एकवार नींदे तृणादि ३ । वारवार बे त्रणवार नींदे उगे ४ ॥ ए दृष्टांते च्यार
प्रकारे प्रव्रज्या कही ते कहेछे । सामायकादिविषे आलोयण रहित १ । मूल दोषलागे फरीचारित्रले २ एकवार अतीचारनी आलोयणाले ३ । वार

मारोपणेन ॥ परिजाविया ॥ महाव्रतारोपणेन निरतिचारस्य सातिचारस्यवा मूलप्रायश्चित्तदानतः निंदिया सकृदतिचारालोचनेन परिणिंदिया पु नः पुनरिति ७ ॥ धण्णपुंजियसमाणत्ति ॥ खले लूनपूतविशुद्धपुंजीकृतधान्यसमानासकलातिचारकचवरविरहेण लब्धस्वस्वभावत्वात् एका म्यातु खलकाएव यद्विरेल्लितं विसारितं वायुना पूतपुंजीकृतं धान्यं तत्समाना याति लघुनापि यतेन स्वस्वभाव लप्स्यतइति अन्यातु यद्विकीर्णं गोखुरक्षुण्णतया विक्षिप्तं धान्यं तत्समाना यात्ति सप्समुत्पन्नातिचारकचवरयुक्तत्वा त्सामगान्तरापेक्षितया कालक्षेपलभ्यस्वस्वभावा सा धान्यविकीर्णसमानो च्यते अन्यातु य त्संकर्षितं क्षेत्रादाकर्षितं खलमानीत धान्यं तत्समाना यात्ति बहुतरातिचारोपेतत्वा द्बहुतरकालप्राप्तव्यस्वस्वभावा सा धान्यसङ्कर्षितसमानेति इहच पुंजितादि र्धा न्यविशेषणस्य परनिपातः प्राकृतत्वादिति इयंच प्रव्रज्या एवंविधा संज्ञावशा द्भवतीति संज्ञानिरूपणाय सूत्रपञ्चक॥ चत्तारीत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं सं ज्ञानं संज्ञा चैतन्यं तथा सातवेदनीयमोहनीयकर्मोदयजन्यविकारयुक्त माहारसंज्ञादित्वेन व्यपदिश्यत इति तत्रा हारसंज्ञा हाराभिलापः भयसंज्ञा भय

तंजहा वाविया परिवाविया णिंदिया परिणिंदिया । चउव्विहा पव्वज्जा प० तंजहा धण्णपुंजियसामाणा धण्णविरल्लियसामाणा धण्णविक्खित्तसामाणा धण्णसंकट्टियसामाणा । चत्तारिसण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आ

वार अतीचार लगाडी आलोयणाले ४ ॥ वली च्यार प्रकारे प्रव्रज्या कही ते कहेछे । खलानी शुद्धकरी ढिगकीधो तेसरखी ते अतीचारने कचरे र हित १ । बीजो खलाणामां जवायरे विस्तार्यो धान्य तेसरखी ते थोडे उद्यमे शुद्ध थाय २ । त्रीजीदीधा बलदनीखुरीमा रुधाना ते कालांतरे शुद्ध थाय ३ । चौथीदीक्षाक्षेत्रथी खलाणामा प्राण्यु धान तेसमान अतीचार घणा ४ ॥ सर्वजीवने च्यार सज्ञाकही ते कहेछे आहार लेवानी सज्ञा ते

मोहनीयसम्पाद्यो जीवपरिणामो मैथुनसंज्ञा वेदोदयजनितो मैथुनाभिलाषः परिग्रहसञ्ज्ञा चारित्रमोहोदयजनितपरिग्रहाभिलाष इति अवमकोष्टतया रिक्तोदरतया मत्या आहारकथा श्रवणादिजनितया तदर्थोपयोगेन सतत माहारचिन्तयेति हीनसत्त्वतया सत्वाभावेन मति भयवार्त्ताश्रवणभीषणदर्श नादिजनिता बुद्धि स्तया तदर्थोपयोगेन इहलोकादिभयलक्षणार्थपर्यालोचनेनेति चिते उपचिते मांसशोणिते यस्य स तथा तद्भाव स्तत्ता तया चितमा

हारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना परिग्गहसन्ना । चउहिं ठाणेहि आहारसन्ना समुप्पज्जइ तंजहा भमकोठ याए बुहावेयणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं मईए तदठोवओगेणं । चउहिठाणेहिं भयसन्नासमुप्पज्जइ तंजहा हीणसत्तयाए भयवेयणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं मईए तदठोवगएणं । चउहिठाणेहिं मेहुणसन्नासमुप्पज्जइ तजहा चित्तमंससोणियाए मोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं मईए तदठोवओगेण । चउहिं ठाणेहिं परिग्गह

आहार संज्ञा १ । भयसंज्ञा ते भयपामवो २ । मैथुनाभिलाश ते मैथुनसंज्ञा ३ । परिग्रहाभिलाप ते परिग्रहसञ्ज्ञा ४ ॥ जीवने च्यार थानके आहार लेवानी सञ्ज्ञा उपजे पेट खालीहोय तिवारे १ । भूखवेदनी कर्मना उदयथी २ । मतिथी आहारनी वात सांभलवाथी ३ । निरंतर आहारनी चिंता करवाथी ४ ॥ च्यार थानके जीवने भयसञ्ज्ञा उपजे ते कहेछे । हीनसत्व पणांथी १ । भयवेदनी कर्मना उदयथी २ । भयनीवात सांभल्यांथी ३ । निजरे देखवाथी इहलोक भयना विचारवाथी ४ ॥ च्यार थानके मैथुन सञ्ज्ञा उपजे तेकहेछे । मांस लोहीना उपचयथी वधवाथी डीले पूठवाथी १ । मोहनीयकर्मना उदयथी २ । मैथुननी कथा सांभल्याथी ३ । मैथुननी घणी चिंतना कर्यांथी ४ ॥ च्यार थानके जीवने परिग्रह संज्ञाउपजे तेकहेछे

सशोणिततया मत्या सुरतकथाश्रवणादिजनितबुद्धा तदर्थोपयोगेन मैथुनलक्षणार्थानुचिन्तनेनेति अविमुक्तानया सपरिग्रहतया मत्या सचेतनादिपरिग्र हदर्शनादिजनितबुद्धा तदर्थोपयोगेन परिग्रहानुचिन्तनेनेति संज्ञाहि कामगोचरा भवन्तीति कामनिरूपणसूत्रं व्यक्तंच किन्तु कामा. शब्दादयः शृङ्गा रा देवाना मेकातिकात्यतिकमनोज्ञत्वेन प्रकृष्टरतिरसास्पदत्वादिति रूपोहि शृङ्गारो यदाह व्यवहार: पुन्नार्यो रन्योन्यरक्तयो रतिप्रकृतिः शृङ्गारइति मनुष्याणां करुणा मनोज्ञत्वस्या तथाविधत्वात् तुच्छत्वेन चणदृष्टनष्टत्वेन शुक्रशोणितादिप्रभवदेहाश्रितत्वेनच शोचनात्मकत्वात् करुणोहि रसः शोकस्व भाव: करुण: शोकप्रकृति रितिवचना दिति तिरश्चा बीभत्सा जुगुप्सास्पदत्वात् बीभत्सरसोहि जुगुप्सात्मको यदाह भवतिजुगुप्साप्रकृति र्बीभत्स इति नैरयिकाणा रौद्रदारुणा अत्यन्तमनिष्टत्वेन क्रोधोत्पादकत्वात् रौद्ररसोहि क्रोधरूपो यतश्चाह रौद्र' क्रोधप्रकृतिरिति एतेच कामा स्तुच्छगम्भीरयो र्बोध कोतराइति तावभिधित्सु सदृष्टांताम्यष्टौ सूत्राण्याह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ व्यक्तानि किन्तु उदकानि जलानि प्रज्ञप्तानि तत्रो त्तान नामैक तुच्छत्वात् प्र

सन्ना समुप्पज्जइ तंजहा अविमुत्तयाए लोभवेयणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं मईए तदठोवउगेणं । चउव्विहा कामा पसत्ता तजहा सिंगारा कलुणा बीभच्छा रोद्दा । सिंगाराकामामणुयाणं बीभच्छाकामातिरिक्कजो

परिग्रहसहितपणे १ । लोभवेदनी कर्मना उदयथी २ । परिग्रहनी वात सांभलयाथी ३ । मतिथी तेहनी घणी चिंतना करवाथी ४॥ च्यार प्रकारे काम शब्दादिक कह्या ते कहेछे । श्रृंगारकाम देवताने १ । करुणाकाम मनुष्यने २ । बीभत्सकाम जुगुप्सनीय ३ । रौद्रकाम क्रोधरूप ४ ॥ श्रृंगार काम देवताने १ । करुणकाम मनुष्यने २ । बीभत्सकाम तिर्यंचने ३ । रौद्रकाम अत्यत अनिष्ट माटे क्रोधना उपजावण हारने नारकीने ४ ॥ च्यार

तलमित्यर्थः पुनरुत्तानं स्वच्छतयोपलभ्यमध्यस्वरूपत्वा दुदकं जलं ॥ उत्ताणोदएत्ति । व्यस्तोयं निर्देशः प्राकृतशैलीवशात् समस्तइव भासते नच मूलोपा
त्तेनो दकशब्देना यङ्गतार्थो भविष्यतीति वाच्य तस्य बहुवचनान्तत्वेने हासबध्यमानत्वात् साद्या दुदकशब्देच सति किं तस्य वचनपरिणामा दनुकर्षणेने
त्येव मुदविसूत्रेपि भावनीयमिति १ तथो त्तान तथैव गम्भीर मुदकं गडुलत्वा दनुपलभ्यमानस्वरूप २ तथा गम्भीर मगाध प्रचुरत्वा दुत्तान मुदक स्वच्छत
यो पलभ्य स्थेध्यस्वरूपत्वात् ३ तथा गम्भीर मगाधत्वात् पुन र्गम्भीर मुदक गडुलत्वादिति पुरुषस्तु उत्तानो ऽगम्भीरो बहि र्दर्शितमदैन्यादिजन्यविकृतका
यवाक्चेष्टत्वा दुत्तानहृदयस्तु दैन्यादियुक्तगुह्यधरणासमर्थचित्तत्वा दित्येको न्य उत्तान. कारणवशाद्दर्शितविकृतचेष्टत्वात् गम्भीरहृदयस्तु स्वभावेनो त्ता
नहृदयविपरीतत्वात् तृतीयस्तु गम्भोरा दैन्यादित्वत्वेपि कारणवशा त्सम्वृताकारतया उत्तानहृदय स्तथैव चतुर्थ. प्रथमविपर्ययादिति २ तथा उत्तान प्रत

णियाणं रोहाकामाणेरइयाणं । चत्तारि उदगा पस्सत्ता तंजहा उत्ताणेणाममेगेउत्ताणोदए उत्ताणेणाममेगे
गम्भीरोदए गम्भीरेणाममेगेउत्ताणोदए गंभीरेणाममेगेगम्भीरोदए । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता

पाणी कह्या ते कहेछे । एक तुच्छ थोडो जलछे स्वस्थमाटे मध्यजणाय तेमाटे उत्ताणोदग १ । एक उत्तान तुच्छ जलछे अने गम्भीरछे मध्यडोहलो
छे २ । गंभीरनाम एक उत्तानोदक ३ । गंभीर नाम एक गम्भीरोदक ४ ॥ इण दृष्टांते च्यार प्रकारना पुरुषछे ते कहेछे । उत्ताण तुच्छ मुखछे अने
हृदयछे १ । एक उत्ताननामा गभीरह्रिदयछे २ । एम चार भांगा ४ ॥ वली च्यार पाणी कह्या ते कहेछे उत्तान नामा एक जल उत्तान अवभासे
स्थानविशेष १ । एक उत्तानछे पणि गम्भीर दीसे ऊडोदीसे सांकडा ठाम माटे २ । इमचौभंगी ॥ इम चार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे । उत्तान

३० ॥

२९ ॥

न्त्वा दुत्तान मवभासते स्थानविशेषात् १ तथो त्तान न्तथैव गम्भीर मगाध मवभासते संकीर्णाम्यत्वादिना २ तथा गम्भीर मगाध मुत्तानावभासितं वि स्तीर्णस्थानाम्यत्वादिना ३ तथा गम्भीर मगाध गम्भीरावभासि तथाविधस्थानाश्रितत्वादिनैवेति ४ पुरुषस्तू त्तान स्तुच्छ उत्तानंएवा वभासते प्रदर्शि ततुच्छविकारत्वात् द्वितीयः सम्वृतत्वात् तृतीयः कारणतो दर्शितविकारित्वा चतुर्थः सुज्ञानः ४ तथा उदकसूत्रव दुदधिसूत्रद्वयमपि सदार्ष्टान्तिक मवसे यमिति अथवा उत्तानः सगाधत्वादेक उदधिदेशः पूर्वं पश्चादपि उत्तानएव वेलाया वहिः समुद्रेष्व भावात् द्वितीयस्तू त्तानः पूर्वं पश्चा दगम्भीरो वेला

तजहा उत्ताणेणाममेगेउत्ताणहियए उत्ताणेणाममेगेगम्भीरहियए ४ । चत्तारि उदगा पण्णत्ता तजहा उत्ता णेणाममेगेउत्ताणभासी उत्ताणेणाममेगेगंभीरोभासी ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा उत्ताणेणाममेगेउत्ताणोभासी उत्ताणेणाममेगेगम्भीरोभासी ४ । चत्तारि उदही पण्णत्ता तजहा उत्ताणेणाम मेगेउत्ताणोदही उत्ताणेणाममेगेगम्भीरोदही । गंभीरेउत्ताणोणाममेगेदही । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा उत्ताणेणाममेगेउत्ताणहियए ४ । चत्तारि उदधी प० तं० उत्ताणेणाममेगेउत्ताणोभासी उत्ताणेणाममेगेगम्भीरोभासी ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता उत्ताणेणाममेगेउत्ताणोभासी ४ ।

तुच्छनामे एक तुच्छहृदय इम समुद्रनो दृष्टांत इमचौभंगी ॥ एम च्यार पुरुष जाणिवा ते कहेछे । एक उत्तानहृदयछे एमचौभंगी ॥ च्यार समुद्रछे। एक समुद्र उत्तान नाम १ । उत्तानअवभासे २ । उत्ताननामेएक ३ । गम्भीरअवभासे ४ ॥ एम च्यार पुरुष कह्या ते कहेछे । उत्तान नाम एक उत्ता

॥ गमेना गाधत्वात् तृतीयस्तु गम्भीरः पूव पश्चा द्वेलाविगमेनो त्तान्॥ उदधि श्चतुर्थः सुज्ञानः समुद्रप्रस्तावा त्तत्तरकान् सूत्रद्वयेनाह ॥ चत्तारितरगेत्यादि ॥
व्यक्त नवर तरन्तीति तरा स्तएव तरकाः समुद्र समुद्रवत् दुस्तर सर्वविरत्यादिकं कार्यं तरामि करोमी त्येव मभ्युपगम्य तत्र समर्थत्वा देकः समुद्र तर
ति तदेव समर्थयती त्येक अन्यस्तु तदभ्युपगमासमर्थत्वा द्गोपद तत्कल्प देशविरत्यादिक मल्पतमं तरति निर्वाहयतीति अन्यस्तु गोपदप्राय मभ्युपग
म्य वीर्यातिरेका त्समुद्रप्रायमपि साधयतीति चतुर्थः प्रतीतः समुद्रप्राय कार्यं तरीत्वा निर्वाह्य समुद्रप्राये प्रयोजनांतरे विषीदति न त निर्वाहयति वि
चित्रत्वात् क्षयोपशमस्येति एव मन्ये त्र्यदति पुरुषानेव कुंभदृष्टांतेन प्रतिपिपादयिषुः सूत्रप्रपञ्च माह सुगम श्चाय नवर पूर्णः सकलावयवयुक्तः प्रमा

चत्तारि तरगा पन्नत्ता तंजहा समुद्दंतरामीएगेसमुद्दंतरइ समुद्दंतरामीएगेगोपतंतरइ गोपतंतरामीएगे ४ ।
चत्तारि तरगा पन्नत्ता तजहा समुद्दतरित्ताणामेगेसमुद्देविसीयइ समुद्दंतरेत्ताणामेगेगोपएविसीयइ गो
पयं० ४ । चत्तारि कुंभा पन्नत्ता पुन्नेणामेगेपुन्ने पुन्नेणामेगेतुच्छे तुच्छेणामेगेपुन्ने तुच्छेणामेगेतुच्छे ।
एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा पुन्नेणामेगेपुन्ने ४ । चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तजहा पुन्ने

नअवज्ञासे १ । इमचोभंगी ॥ च्यारतरक कह्या ते कहेछे । समुद्रवत् दुस्तर सर्वविरतिकरुं एम चिंतवी समुद्र तरे सर्वकार्य समर्थ समुद्रतरुं एम
चितवे पणि असमर्थ माटे गोपददेश समान विरतितरे गोपद गायना पगला समान आगमी करी बलवत थई समुद्र समान कार्यकरे इमचौभंगी ॥
वली च्यार प्रकारे तरक कह्या ते कहेछे । समुद्रतरीस इम कही समुद्रमां पैसे १ । समुद्र तरूं एम कही गोपद तरे पैसे २ । इमचौभंगी ॥ च्यार

ठा० ॥
३० ॥

णोपेतोवा पुन पूर्णो मध्वादिभृतः द्वितीये भङ्गे तुच्छो रिता स्तृतीये तुच्छो पूर्णावयवी लघुर्वा चतुर्थ. सुज्ञानः अथवापूर्णो भृत' पूर्वं मथादपि पूर्णएवे त्येव चत्वारोपि पुरुषस्तु पूर्णो जात्यादिभि गुणैः पुन' पूर्णोज्ञानादिभिरिति अथवा पूर्णो धनेन गुणैर्वा पूर्वं पश्चादपि ते. पूर्णएवेति एव शेषास्त्रपि २ पूर्णो वयवै र्दध्यादिनाम्ना पूर्णएवा वभासते द्रष्टॄणामिति पूर्णावभासोत्येको न्यस्तु पूर्णोपि कुतश्चि द्वेतो र्विवचितप्रयोजनसाधकत्वादे स्तुच्छोवभासते एव शेषो २ पुरुषस्तु पूर्णो धनश्रुतादिभि स्तद्विनियोगाच्च परिपूर्णएवा वभासते अन्यस्तु तदविनियोगात् तुच्छएवा वभाषते अन्य स्तुच्छोपि कथमपि प्रस्तावोचितप्रवृत्ते. पूर्णव दवभासते अपरस्तु तुच्छो धनश्रुतादिरहितो ऽतएव तदविनियोजकत्वात् तुच्छावभासोति तथा पूर्णोनीरादिना पुनः पूर्णं पुण्यवा पवित्र रूप यस्य स तथेति प्रथमो द्वितोये तुच्छ हीन रूप माकारो यस्य स तुच्छरूप एवशेषो ५ पुरुषस्तु पूर्णो ज्ञानादिभिः पूर्णरूप'पु ण्यरूपोवा विशिष्ट

णामंएगेपुण्णोव्भासी पुण्णेणामंएगेतुच्छोव्भासी ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा पुन्नेणाममेगेपुन्नोव्भासी ४ । चत्तारि कुंभा पण्णत्ता तंजहा पुन्नेणाममेगेपुन्नरूवे पुन्नेणाममेगेतुच्छरूवे ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तजहा पुन्नेणाममेगेपुण्णरूवे ४ । चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा पुन्नेविएगेपि

कुंभ कह्या ते कहेछे । एक पूर्णनामे घृतादिके शोभे १ । एक पूर्णनामे तुच्छ घृतादि रहित अवभासे २ । एक तुच्छनामे पूर्णअवभासे ३ । एक तुच्छनामे तुच्छअवभासे ४ एम च्यार पुरुष कह्या ते कहेछे । एक धनादिके पूर्ण अने पूर्ण अवभासे दीसे ४ ॥ वली च्यार कुंभ कहिया ते कहेछे । एक पूरो कुंभछे अने पूर्णरूपछे आकार सारो १ । एकपूर्ण पणि तुच्छरूपछे हीन आकारछे २ । इमचोभंगी ॥ एम च्यार पुरुष कह्या ते कहेछे ।

रजोहरणादिद्रव्यलिंगसद्भावात् सुसाधुरिति द्वितीयभङ्गे तुच्छरूपः कारणा त्यक्तलिङ्गः सुसाधु रेवेति तृतीये तुच्छो ज्ञानादिविहीनो निह्नवादि श्चतुर्थो ज्ञानादिद्रव्यलिंगहीनो गृहस्थादिरिति ६ तथा पूर्णः स्तथैव अपि स्तुच्छापेक्षया समुच्चयार्थः एकः कश्चित् प्रियाय प्रीतये अयमिति प्रियार्थः कनकादिमय त्वा त्सारइत्यर्थः तथा अपदल मपसदं द्रव्य कारणभूतं मृत्तिकादि यस्या सा वपदलो ऽवदलति वा दीर्यत इत्यवदल आमपक्वतया असारइत्यर्थः तुच्छो प्येवमिति ७ पुरुषो धनश्रुतादिभिः पूर्णः प्रियार्थः कश्चित् प्रियवचनदानादिभिः प्रियकारो सारइत्यर्थः अन्यस्तु नतथे त्यपदलः परोपकार प्रत्ययोग्यइ ति तुच्छोप्येव मेवेति ८ पूर्णो ऽपि जलादिविष्यन्दते स्रवति इह तुच्छ स्तुच्छजलादि सएव विष्यन्दते अपिः सर्वत्र समुच्चये प्रतियोग्यपेक्षयेति ९ पुरुषस्तु

यठे पुन्नेविएगेऽवदले तुच्छेविएगेपियठे तुच्छेविएगेऽवदले । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तंजहा पुन्नेविएगेपियठे तहेव चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा पुन्नेविएगेविस्सदइ पुन्नेविएगेणोविस्संदइ तुच्छेवि एगेविस्संदइ तुच्छेविएगेणोविस्सदइ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा पुन्नेविएगेविस्संदइ ।

एक पुरुष ज्ञानादिके पूर्णछे अने पूर्णरूपछे ऊंचो मुहपत्ति साधुरूप १ इमचौभंगी ॥ वली च्यार कुंभ कह्या ते कहेछे । एक पूर्ण कुंभछे अने प्रिय छे सुवर्णमाटे १ । एक पूर्णछे पणि अवदलमाटीनो पाकोनथी २ । एकतुच्छहीन आकारछे पणि प्रियछे सुवर्णनो ३ । एक तुच्छआकार अने तुच्छ माटीनो ४ ॥ एम च्यार पुरुष कह्या ते कहेछे ॥ एक ज्ञानादिक पूर्ण अने प्रिय १ इमचौभंगी ॥ तेमज वली च्यार कुंभ कह्या ते कहेछे ॥ एक पूर्ण छे पणि जलस्रवेछे १ । एकपूर्णछे स्रवतो नथी २ । एकतुच्छछे अने स्रवेछे ३ । एक तुच्छछे पणि स्रवतो नथी ४ ॥ एमज चार पुरुष कह्या तेकहेछे ॥

पूर्णो णेको निष्यन्दते धनं ददाति पुतंगा न्योनेति तुच्छो ष्यणयित्तादि रनिष्यन्दते गन्धो नेयेति १० तथा भिन्न' स्फुटितो जर्जरितो राजीयुता: परिस्रा वि दुष्पक्कत्वात् घरको ऽपरिस्रावी कठिनत्वादिति १ चारित्रन्तु भिन्न मूलप्रायश्चित्तापत्त्या जर्जरितं छेदादिगास्या परिस्रावि सूक्ष्मातिचारतया गपरिस्रा विनिरतिचारतयेति इत्थच पुरुषाधिकारेपि य शारित्रलक्षणपुरुषधर्माभणन त पर्माधर्मिणो काथञ्चिदभेदा इनवदा मवगन्तव्यमिति १२ तथा मधुन: त्पो इस कुम्भो मधुकुंभो मधुभृत मल्लिवया पिधान स्थगन यस्या सो मधुपिधान एवमन्ये नय: १२ पुरुषसूनं स्वयमेव ॥ हियमित्यादि ॥ गाथाचतुष्टयेन भा

तहेव चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा भिन्ने जज्जरिए परिस्साई अपरिस्साई । एवामेव चउव्विहे चरित्ते पन्नत्ते तजहा भिन्नेजाव अपरिस्साई चत्तारि कुंभा पन्नत्ता तंजहा मकुकुंभेणाम एगेमकुप्पिहाणे मकुकुंभेणामंएगेविसप्पिहाणे विसकुंभेणामंएगेमकुप्पिहाणे विसकुंभेणाममेगेविसप्पिहाणे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा मधुकुंभेणामंएगेमधुप्पिहाणे ४ । हिययमपावमकलुसं जीहावियमधुरभासिणी

एक ज्ञाने धने पूर्ण अने स्रवेछेदातारके इमचौभंगी ॥ तेमज च्यार कुंभ कह्या ते कहेछे ॥ एक फूटोछे १ । एक जाजरोछे २ । एमपरिस्रावी काचा माटे ३ । एक अपरिस्रावी पक्क कठिनमाटे ४ ॥ एम च्यार प्रकारे चारित्र कह्या ते कहेछे ॥ एक भिन्न फल भग १ । एक जाजरो दीक्षानोछेद २ । एक परिस्रावी सूक्ष्म अतिचारनो ३ । एक अपरिस्रावी निरतिचारनो ४ ॥ वली च्यार कुंभ कह्या तेकहेछे ॥ मधुनो घडो अने मधुनो ढांकणो १ । मधुनो घडो विषनो ढाकणो २ । विषनो घडो मधुनो ढाकणो ३ । विषनो घडो विषनो ढांकणो ४ ॥ इम च्यार पुरुष कह्या ते कहेछे ॥ एक

वितमिति तत्र हृदय मनः अपाप महिंस्र मकलुष मप्रीतिवर्जितमिति जिह्वापिच मधुरभाषिणी नित्यं यस्मिन् पुरुषे विद्यते स पुरुषो मधुकुंभइव म धुकुभो मधुपिधानइव मधुपिधानइति प्रथमभङ्गयोजना तृतीयगाथायां यत् हृदय क्लुषमयप्रीत्यात्मक मुपलक्षणत्वा त्पापञ्च जिह्वा या मधुरभाषिणी नित्य तत्साचेति गम्यते यस्मिन् पुरुषे विद्यते स पुरुषो विषकुम्भो मधुपिधान स्तत्साधर्म्यादिति १४ अत्र चतुर्थ. पुरुष उपसर्गकारी स्या दित्युपसर्गप्ररूप णाय ॥ चउव्विहाउवसग्गेत्यादि ॥ सूत्रपञ्चकमाह कण्ठ्य चेद नवर मुपसर्जना न्युपसृज्यते धर्म्मा त्प्रच्याव्यते जन्तु रेभि रित्युपसर्गाः वाधाविशेषा

णिच्चं जमिपुरिसंमिविज्जइ सेमधुकुंभेमहुपिहाणे ॥ १ ॥ हियमपावमकलुसं जीहावियकडुयभासिणी णिच्च जमिपुरिसंमिविज्जइ सेमधुकुंभेविसपिहाणे ॥ २ ॥ जंहिययंकलुसमयं जीहावियमहुरभासिणीणिच्चं जमिपुरिसंमिविज्जइ सेविसकुंभेमहुपिहाणे ॥ ३ ॥ जंहिययंकलुसमयं जीहावियकडुगभासिणीणिच्चं जम्मि पुरिसंमिविज्जइ सेविसकुंभे विसपिहाणे ॥ ४ ॥ चउव्विहा उवसग्गा पन्नत्ता तंजहा दिव्वा माणुसा तिरि

मधुनो घडो मधुनो ढांकणो १ एमचौभंगी ॥ मन पापरहित मैलरहित जीभ पणि मीठाबोली जेपुरुषने होय तेपुरुष मधुनो घडो मधुनो ढांकणा सरीखो १ मन मैल रहित अने जीभ कडवा बोली जेपुरुषने होय तेमधुनो घडो विषनो ढाकणो सरखो २ जेहनो मन कलुष पापसहित अने जीभ मीठाबोली तेविषनो घडो मधुनो ढांकणो सरखो ३ । जहनो मन मैलो अने जीभ पणि नित्यकडुआ बोली तेविषकुंभ विषढाकणो सरखो ४ ॥ च्यार उपसर्ग कह्या तें कहेछे ॥ देवताना १ । मनुष्यना २ । तिर्यंचना ३ । पोते आत्माएंकरी ते विषखाई ४ ॥ देवताना उपसर्ग च्यार प्रकारे

स्वेच कार्टभेदा चतुर्विधाः आहच उवसज्जणमुवसग्गो तेणतओयउवसज्जिएजम्हा सोदिव्वमणुयतेरि छआयसंचेयणाभेउत्ति ॥ १ ॥ आत्मना संचेत्यंते क्रि यते इत्यात्मसचेतनीयाः ॥ तत्र दिव्या ॥हासत्ति॥ हासा द्भवति हाससभूतत्वात् या हासाः उपसर्गा एवेत्येव मन्यत्रापि यथा भिचार्थं ग्रामान्तरप्रस्थित चुल्लकै व्यंतर्य्या उपयाचित प्रतिपन्न यदीप्सित लप्स्यामहे तदा तवों डेरकादि दास्याम इति लब्धे च तत्र तवेद मिति भणित्वा तदुन्डेरिकादिते स्वयमे व भक्षित देवतया चहासेन तद्रूप मावृत्य क्रीडित मनागच्छसु चुल्लकेषु व्याकुले गच्छे निवेदित माचार्याणा देवतया चुल्लकहृत्त ततो वृषभे रुडेरिका दि याचित्वा तस्यै दत्त तयातु ते दर्शिता इति प्रद्वेषा यथा सङ्गमको महावीरस्यो पसर्गा नकरोत् विमर्षा यथा क्वचिद्देवकुलिकाया वर्षासु पित्वा सा धुषु तदीयएवा न्यः पश्चादागत स्तत्रोषित स्तत्र देवता किंस्वरूपो यमितिविमर्षा दुपसर्गितवतीति पृथग् विभिन्ना विविधा मात्रा हासादिवस्तुरूपा येषु ते पृथग्विमात्रा अथवा पृथग्विविधा मात्रा विमात्रा तये त्येतमुप्ततृतीयैकवचन पद दृश्य तथाहि हासेन कृत्वा प्रद्वेषेण करोती त्येव सयोगा. यथा सगमका एव विमर्षेण कृत्वा प्रद्वेषेण कृतवानिति तथा मानुष्या हास्यात् यथा गणिकादुहिता चुल्लक मुपसर्गितवती साच तेन दडेन ताडिता वि वादेच राज्ञः ओघ्टहट्टहातो निवेदित स्तेनेति प्रद्वेषात् यथा गजसुकुमारः सोमिलब्राह्मणेन व्यपरोपितो विमर्षात् यथा चाणक्योक्तचन्द्रगुप्तेन धर्मपरी चार्थं लिङ्गिनो न्तःपुरे धर्ममाख्यापिता चोभिताश्च साधवस्तु चोभितु न शक्ताइति कुशील मब्रह्म तस्य प्रतिषेवण कुशीलप्रतिषेवण तद्भावः कुशीलप्र

खजोणिया आयसंचेयणिज्जा । बादि उवसग्गा चउव्विहा प० तं० हासा प्पउसा वीमंसा पुढोवेमाया

ते कहेछे । अटहहास १ । प्रद्वेषथी सगमे महावीरनेकीधा २ । ईर्ष्याथी गोसाले महावीरनेकीधा ३ । हासोद्वेषे विविधपरेकरे ४ ॥ मनुष्यना उपसर्ग

तिषेवणता उपसर्गकुशीलस्यवा प्रतिषेवणं येषु ते कुशोलप्रतिषेवणका अथवा कुशीलप्रतिषेवणयेति व्याख्येयं यथा संध्यायां वसत्यर्थं प्रोषितस्ये र्ष्यालो गृहे प्रविष्टः साधु स्वतस्तभिरीर्ष्यालुजायाभि र्दत्तावासः प्रत्येक चतुरोपि यामानुपसर्गितो नच क्षुभितः तथा तैरश्चो भयात् श्वाद्यो दंशेयुः प्रद्वेषा चण्डकौशिको भगवन्त दृष्टवान् आहारहेतोः सिंहाद्यो ऽपत्यलयनसंरक्षणाय काक्याद्य उपसर्गयेयुरिति तथा आत्मसचेतनीया घट्टनता घट्टनयावा यथा ऽक्षणि रजः पतित तत स्तदक्षि हस्तेन मलित दुःखितु मारब्ध मथवा स्वयमेव अक्षणि गलेवा मांसाकुरादि जात घट्टयतीति प्रपतनात् प्रपतनयावा यथा अप्रयत्ने न सचरतः प्रपतनात् दु.ख मुत्पद्यते स्तम्भनता स्तम्भनयावा यथा ताव दुपविष्टः स्थितो यावत्सुप्तः पादादिस्तब्धो जातस्लेषणता स्लेषणयावा यथा पाद माकुच्य स्थितो वातेन तथैव पादौ लगितइति भवतिचात्रागाथाः हासप्पदोसवीमसओविमायाययाभवेदिव्वो एवचियमाणुस्सो कुसीलपडिसेवणचउत्थो ॥ १ ॥ तिरिओभयप्पओसा हारावच्चाइरक्खणत्थवा घट्टणथंभणपवडणलेसणओवायसंवेओ ॥ २ ॥ दिव्वंमिवतरोसं गमेगजइलोभणाईया [इत्युत्तराई]

मा। णुस्साउवसग्ग चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा हासाप्पउसा वीमंसा कुसीलपडिसेवणया। तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा भया पदोसा आहारहेउं अवच्चलेणसारक्खणया। आयसंचेयणिज्जा उव

च्यार प्रकारे कह्या ते कहेछे ॥ हासथी १। द्वेषथी २। ईर्ष्याथी ३। कुशील सेवनाथी स्त्रीयादिक आलिंगनकरे ४ ॥ तिर्यचना उपसर्ग च्यार प्रकारे कह्या ते कहेछे ॥ भयथी सर्पादि दीठे १। प्रद्वेषथी चण्डकौशिके २। आहारहेते सिंह भक्षक ३। बालकराखवाने सियालणीप्रमुख अवंती सुकुमालवत् ४ ॥ आत्मसंवेदनीयउपसर्ग च्यार प्रकारे कह्या ते कहेछे ॥ सघट्टणथी आंखमा रज पडी तेहाथे चोलते वेदनाथाय १। पडवाथीवागे

गणिया सोमिलधम्मो वएसणेसालुजोसियाईया ॥ ३ ॥ तिरियंमिसाणकोसिय सोहाअचिरसूचियगवाई कणगकुडणाभिपयणा इगत्तसंलेसणादओनेया ॥ ४ आप्रोदाहरणावा यपित्तकफसन्निवायावत्ति ॥ आत्मसचेतने उदाहरणानि उपसर्गसहना त्कर्मचर्या भवतीति कर्मस्वरूपप्रतिपादनायाह ॥ चउ व्विहेत्यादि सूत्रत्रय कण्ठ्य नवर क्रियतइति कर्म ज्ञानावरणीयादि तत् शुभ पुण्यप्रकृतिरूप पुनः शुभ शुभानुबन्धित्वा द्भरतादीनामिव शुभ तथैवा शुभ मशुभानुबन्धित्वात् ब्रह्मदत्तादीनामिव अशुभ पापप्रकृतिरूप शुभ शुभानुबन्धित्वात् दु खिताना मकामनिर्जरावता गवादीनामिव अशुभ तथैव पुनर शु भ मशुभानुबन्धित्वा न्मत्स्यबन्धादीनामिवेति तथा शुभ सातादि सातादित्वेनैव बद्ध तथैवो देति यत्तत् शुभविपाक यत्तुबद्ध शुभत्वेन सक्रमकरणवशा त्तूदे त्यचशुभत्वेन तत् द्वितीयं भवतिच कर्मणि कर्मान्तरानुप्रवेशसक्रमाभिधानकरणवशा दुक्ताच मूलप्रकृत्यभिनाःसक्रमयति गुणउत्तराःप्रकृतीः नत्वात्मामूर्त्तत्वा

सग्गा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा घट्टणया पवडणया थंभणया लेसणया । चउव्विहे कम्मे पन्नत्ते तंजहा सुभे णामंएगेसुभे सुभेणाममेगेअसुभे असुभे० ४ । चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते तंजहा सुभेणाममेगेसुभविवागे सुभे णाममेगेअसुभविवागे असुभेणाममेगेसुभविवागे असुभेणाममेगेअसुभविवागे ४ । चउव्विहे कम्मे प० तं०

वेदना थाय २ । ऊभासूता पण स्तब्धथाय ३ । श्लेष्मणाता वायथी पण रहे ४ ॥ एकर्मथीहोय तेकर्म चार प्रकारे कह्या ते कहेछे ॥ एक शुभ पुण्य प्रकृतिरूप अशुभानुबधी ब्रम्हदत्तनीपरे नरकदाता अकाम निर्जरा ३ । माछीनीपरे ४ प्रथमे अशुभ ॥ वली च्यार प्रकारे कर्म ते कहेछे एक शुभ शातावेदनी उदयकाले पणि सुख भोगवे १ । एक शुभकर्म बाध्यो उदयकालमा विचे माठाकर्मना सक्रमवाथी असुख उपजे ४ ॥ वली च्यार प्रकारे

॥ दध्यवसानप्रयोगेणेति ॥१॥ तथा मतान्तरं मोत्तूणमाउयखलु दंसणमोहंचरित्तमोहच सेसाणपयडीणं उत्तरविहिसकमोभणिओत्ति॥ १ ॥ यद्वद्व मशुभतयो देतिचशुभतया तत् तृतीय चतुर्थं प्रतीतमिति तृतीयं कर्म्मसूत्र मनत्यद्वितीयोद्देशकवन्धसूत्रवत् ज्ञेयमिति चतुर्विधकर्म्मस्वरूप सघएववेत्तीति सघसूत्र सच सर्वविद्वचनसस्कृतबुद्धिमानिति बुद्धिसूत्र बुद्धिय मतिविशेषइति मतिसूत्रे सुगमानि चैतानि नवरं संघो गुणरत्नपात्रभूतसत्वसमूह स्तत्र श्राम्यंति तपस्यती ति श्रमणा: अथवा सहमनसा शोभनेन निदानपरिणामलक्षणया परहितेनच चेतसा वर्त्तंतइति समनस स्तथा समान स्वजनपरिजनादिषु तुल्य मनो येषां ते समनस उक्तच तोसमणोजइसमणो भावेणयजइनहोइपावमणो सयणेयजणेयसमो समोयमाणावमाणेस्॥१॥ अथवा समिति समतया शत्रुमित्रा दि ष्वणति प्रवर्त्तंतइति श्रमणा: आहच नत्थियसिकोइवेसो पिओवसव्वेसुचेवजोवेसु एएणहोइसमणो एसोअन्नोविपज्जाओत्ति ॥ १ ॥ प्राकृत तया सर्वत्र समणत्ति ॥ एव ॥ समणोओ ॥ तथा शृणवति जिनवचनमिति श्रावका उक्तच अवाप्तदृष्ट्यादिविशुद्धसम्पत् परसमाचारमनुप्रभात शृणोतिय'साधुजनाद् तद्र स्तंश्रावकप्राहुरमीजिनेन्द्राइति ॥१॥ अथवा श्रान्ति पचति तत्वार्थश्रद्धान निष्ठा नयंतीति श्रा स्तथा वपन्ति गुणवत्सप्तक्षेत्रेषु धनवीजानि निक्षिपन्ती ति वा स्तथा किरति क्लिष्टकर्म्मरजो विक्षिपतीति का स्ततः कर्म्मधारये श्रावकाइति भवति यदाह श्रद्धालुतांश्रातिपदार्थचिन्तना द्धनानिपात्रेषुवपत्यना ॥

पगडीकम्मे ठिईकम्मे अणुभावकम्मे पदेसकम्मे । चउव्विहे संघे पन्नत्ते तंजहा समणा समणीओ सावगा सा ॥

कर्मकह्या ते कहैछे प्रकृतिकर्म कर्मस्वभाव १ । स्थितिकर्म कर्मरहवानी स्थिति २ । अनुभावकर्म कर्मनुरस ३ । प्रदेशकर्म तेकर्मना दल ४ ॥ एकर्मनी वात सघ जाणे ते च्यार प्रकारेछे ते कहैछे ॥ साधु १ । साध्वी २ । श्रावक ३ । श्राविका ४ ॥ संघ बुद्धि वान होय तेबुद्धि च्यार प्रकारे कही ते ॥

रतं किरत्य पुण्यानि सुसाधुसेवना दथापितश्रावकमाहुरजसेति ॥१॥ एव श्राविकाऽपीति तथा उत्पत्तिरेव प्रयोजन यस्या सा औत्पत्तिकी नतु क्षयोपशम कारण मस्या सत्य किन्तु स खल्वतरङ्गत्वात् सर्वबुद्धिसाधारणइति न विवक्ष्यते नचा न्यच्छास्त्रकर्माभ्यासादिक मपेक्षतइति अपिच बुद्ध्युत्पादा त्पूर्वं स्वय मदृष्टो न्यतश्चा श्रुतो मनसा प्यनालोचित स्तस्मिन्नेव क्षणो यथावस्थितो र्थो गृह्यते यया सा लोकद्वयाविरुद्धैकांतिकफलवतीबुद्धि रौत्पत्तिकीति यदाह पुव्वमदिठ्ठमसुयम वेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था अव्वाहयफलजोगा बुद्धीउप्पत्तियानामत्ति ॥१॥ नटपुत्ररोहकादीना मिवेति तथा विनयो गुरुशुश्रूषा सकार ण मस्या स्तत्प्रधाना वैनयिकी अपिच कार्यभरनिस्तरणस मर्थाधर्मार्थकामशास्त्राणा गृहीतसूत्रार्थसार लोकद्वयफलवतीचेयमिति ॥ १ ॥ यदाह भरणि त्थरणसमत्था तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला उभओलोगफलवती विणयसमुत्थाहवइबुद्धिति ॥१॥ नैमित्तिकसिद्धपुत्रशिष्यादीनामिवेति अनाचार्यक कर्मसाचार्य क शिल्प कदाचित्कम् वा कर्म्म नित्यव्यापारस्तु शिल्पमिति कर्म्मणो जाता कर्म्मजा अपिच कर्म्माभिनिवेशोपलब्धकर्म्मपरमार्था कर्म्माभ्यासविचाराभ्याविस्तीर्णा प्रशसा फलवतीचेति यदाह [उवओगदिठ्ठसारा कम्मपसगपरिघोलनविसाला साहुक्कारफलवती कम्मसमुत्थाहवइबुद्धित्ति ॥१॥ हैरण्यककर्षकादीनामिवेति परिणामस्तु दीर्घकाल. पूर्वापरार्थावलोकनादिजन्य आत्मधर्म: स प्रयोजन मस्या स्तत्प्रधानावेति पारिणामिकी अपिच अनुमानकारणमात्रदृष्टान्तै' साध्य साधिका वयोविपाकेच पुष्टीभूता भ्युदयमोक्षफलाचेति यदाह अणुमाणहेउदिठ्ठ तसाहियावयविवागपरिणामा 'हियनिस्सेसफलवई बुद्धीपरिणामिया

विगाउ। चउव्विहा बुद्धी पन्नत्ता तजहा उप्पइया वेणइया कम्मिया पारिणामिया। चउव्विहा मई प० तं०

कहेछे ॥ औत्पातिकी अदीठी असाभली ऊपजे १। वैनयिकी विनयथी ऊपजे २। कार्मणकी कर्मकरता ऊपजै ३। पारिणामिकी वय पाक्याथी पा

नामस्ति ॥ १ ॥ अभयकुमारादीनामिवेति तथा मननमति स्तत्र सामान्यार्थस्या शेष विशेषनिरपेक्षस्या निर्देशस्य स्वरूपादे रवग्रति प्रथमतो ग्रहण परि
च्छेदन मवग्रह सएव मति रवग्रहमति रेव सर्वत्र नवरं तदर्थविशेषालोचन मीहा प्रक्रातार्थविशेषनिश्चयो वाय: अवगतार्थविशेषधरण धारण श्चेति उ
तञ्च सामन्नत्थावग्गह णमोग्गहभेयमग्गहणमिहेहा । तस्सावगमोवाओ अविचुई धारणातस्सेत्ति ॥ १ ॥ तथा अरजर मुदककुंभो लजरमिति यत्प्रसिद्ध त
त्तो दक य तत्समानार्थप्रभूतार्थग्रहणो त्रैवणधारणसामर्थ्याभावेना ल्पत्वा दस्थिरत्वाच्च अरजरोदकहि सत्त्वितं शोघ्रनिष्ठश्चेति विदुरो नदीपुलिनादौ जला
र्थीगर्त्त स्तत्र यदुदक तत्समानाल्पत्वा दपरापरार्थीहनमात्रसमर्थत्वाद् भ्फटि त्यनिष्ठितत्वाच्च तदुदक ह्यल्प तथा परापर मल्पमल्प स्यदते अतएवच सत्वित
मनिष्ठितचेति सरउदकसमानातु विपुलत्वात् बहुजनोपकारित्वा दनिष्ठितत्वाच्च प्राय. सरोजलस्याप्येवभूतत्वादिति सागरोदकसमाना पुन: सकलपदा

उग्गहमई ईहामई अवायमई धारणामई। अहवा चउव्विहा मई प० तं० अरंजरोदगसामाणा वियरोदगसा माणा सरोदगसामाणा सागरोदगसामाणा चउव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं० णेरइया तिरिक्ख

कीमति ऊपजै ४ ॥ बुद्धि ते मतिविशेष ते मती च्यार प्रकारनी ते कहैछे ॥ अवग्रह मति तेप्रथमवस्तुग्रहण १ । ईहामतिविचारवो २ । तेहीज व
स्तुनो निश्चय करवो ते अवाय ३ । धारणामति ते धारीराखवो ४ ॥ अथवा च्यार प्रकारनी मति कही ते कहैछे ॥ अलंजर तेउदकनो कुंभ तेसमान
घणो अर्थ ग्रही नसके अस्थिरपणाथी १ । विदुरोदक समान नवोनवो अर्थ ग्रहण करे शीघ्रघटै नही २। सरोदकसमान विपुल घणाने उपकारी ३ ।
समुदोदकसमान सर्वपदार्थ विशेष जाणे ४ ॥ मतिमान जीव होय ते च्यार प्रकारना कह्िया ते कहैछे ॥ नारकी १ । तिर्यंच योनिया २। मनुष्य ३।

थॅनिक्षेपविषयत्वेना त्यन्तविपुलत्वा दचयत्वादलक्ष्मनथ्यत्वाच्च सागरजलस्यापि ह्येवभूतत्वादिति यथोक्तामतिमन्तो जीवाएव भवन्तीति जीवसूनाणि पञ्च
व्यक्तानि चेतानि नवरं मनोयोगिनः समनस्का योगत्रयसद्भावेपि तस्य प्राधान्या देवं वाग्योगिनो द्वीन्द्रियादयः काययोगिन एकेंद्रिया अयोगिनो निरुद्ध
योगा. सिद्धाश्चेति अवेदकाः सिद्धादय चक्षुषः सामान्यार्थग्रहण मवग्रहेहारूप दर्शनं चक्षुर्दर्शनं तद्वन्त श्चतुरिन्द्रियादयो ऽचक्षु.सर्शनादि तद्दर्शनवत एके
न्द्रियादयइति संयताः सर्वविरता असयता अविरताः सयता देशविरता स्तयः प्रतिषेधवन्तः सिद्धाइति जीवाधिकारात् जीवविशेषान् पुरुषभेदान् चतुः

जोणिया मणुस्सा देवा । चउव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा मणजोगी वयजोगी कायजोगी अजोगी । अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता तजहा इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा णपुंसगवेयगा अवेयगा अहवा चउ व्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता तजहा चक्खुदसणी अचक्खुदसणी अहिदसणी केवलदसणी अहवा चउव्विहा सव्व जीवा पन्नत्ता तजहा संजया १ असंजया २ संजयासंजया ३ णोसंजयासंजया । चत्तारि पुरिसजाया प०

देवता ४ ॥ च्यार प्रकारना सर्व जीव कह्या ते कहेछे ॥ मनोयोगी १ । ववनयोगी २ । काययोगी ३ । अयोगी ते सिद्धनाजीव ४ ॥ वली च्यार प्रकारना सर्व जीव कह्या ते कहेछे ॥ स्त्रीवेदनाधणी १ । अचक्षुदर्शनी पुरुषवेदी २ । नपुंसकवेदी ३ । अवेदी ते वेद रहित सिद्धनाजीव ४ ॥ अथवा च्यार प्रकाना सर्व जीव कह्या ते कहेछे ॥ चक्षुदर्शनी १ । अचक्षुदर्शनी २ । अवधिदर्शनी ३ । केवलदर्शनी ४ ॥ अथवा च्यार प्रकारना सर्व जीव कह्या ते कहेछे ॥ सयती साधु १ । असयती मिथ्यात्वी २ । सयतासयती ते श्रावक ३ । नोसयतासयती तेसिद्ध ४ ॥ च्यार पुरुष कह्या ते कहेछे ॥ मित्रनाम

सून्याह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ स्पष्टाचेयं नवरं मित्र मिहलोकोपकारित्वात् पुन र्मित्र परलोकोपकारित्वात् सद्गुरुवत् अन्यस्तु मित्र स्नेहवत्वा दमित्रः पर लोकसाधनविध्वंसा त्कलत्रादिवत् अन्य स्त्वमित्रः प्रतिकूलत्वा न्मित्रं निर्वेदनोत्पादनेन परलोकसाधनोपकारित्वा दविनीतकलत्रादिवत् चतुर्थोमित्रः प्र तिकूलत्वात् पुन रमित्रः सक्लेशहेतुत्वेन दुर्गतिनिमित्तत्वा त्पूर्वापरकालापेचया चेदभावनीयमिति तथा मित्रमतः स्नेहवृत्त्या मित्रस्यैव रूप माकारोवा ह्योपचारकारणत्वात् यस्य स मित्ररूप इत्येको द्वितीयो अमित्ररूपो वाह्योपचाराभावात् तृतीयो अमित्रः स्नेहवर्जितत्वादिति चतुर्थ. प्रतीत स्तथा मुक्त स्त्यक्तसगो द्रव्यतः पुनर्मुक्तो भावतो भिष्वगाभावात् सुसाधुवत् द्वितीयो ऽमुक्त साभिष्वगत्वा द्द्रुवत तृतीयो ऽमुक्तो द्रव्यतो भावतस्तु मुक्तो राज्यावस्थोत्प न्नकेवलज्ञानभरतचक्रवर्तिव च्चतुर्थो गृहस्थः कालापेचया चेद दृश्यमिति मुक्तो निरभिष्वगतया मुक्तरूपो वैराग्यपिशुनाकारतया यतिरिवे त्येको द्वितीयो ऽमुक्तरूप उक्तरूपविपरीतत्वात गृहस्थावस्थाया महावीरइव तृतीयो मुक्तः साभिष्वङ्गत्वात् शठयतिव च्चतुर्थो गृहस्थइति जीवाधिकारिक पञ्चेंद्रियतिर्य

मित्तेनाममेगेमित्ते मित्तेनाममेगेऽमित्ते अमित्तेनाममेगेमित्ते अमित्तेनाममेगेऽमित्ते। चत्तारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा मित्तेनाममेगेमित्तरूवे० चउभंगो। चत्तारि पुरिसजाया पसत्ता तजहा मुत्तेनाममेगेमुत्ते मुत्तेनाममेगेऽमुत्ते०। चत्तारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा मुत्तेनाममेगेमुत्तरूवे०। पचेंदियतिरिक्खजोणि

एकमित्र सद्गुरुवत् इहलोक परलोकोपकारी १। एक मित्रछे स्नेहमाटे परलोके दु:खदायी तेमाटे अमित्र स्त्रीआदि २। एक अमित्र शत्रु परमार्थे थी मित्र परलोकसाधन करावे ३। एक शत्रुछे अने संक्लेशकारी दुर्गतिमा नाखे कर्मबंधकारी ४॥ वली च्यार पुरुष कहिया ते कहेछे। एक मुक्त

या चउगइया चउआगइया पन्नत्ता तंजहा पंचेंदियतिरिक्खजोणिए पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमा णे णेरइएहिंतोवा तिरिक्खजोणिएहिंतोवा मणुस्सेहितोवा देवेहितोवा उववज्जेज्जा सेचेवणं से पचेंदिय तिरिक्खजोणिए पचेंदियतिरिक्खजोणियं विप्पजहयमाणे णेरइयत्ताए जाव देवत्ताए उवागच्छेज्जा । मणु स्सा चउगइया चउआगइया एवंचेव मणुस्सावि । बेइंदिया ण जीवा असमारम्भमाणस्स चउव्विहे संजमे कज्जइ तजहा जिब्भामयाउसोक्खाउ अववरोवेत्ता भवइ जिब्भामएणदुक्खेणअसंजोगेत्ताभवइ फासामयाउ सोक्खाउअववरोवेत्ताभवइ फासामयाउदुक्खाउअसंजोगेत्ताभवइ । एवचेव बेइंदियाजीवा समारम्भमाणस्स चउव्विहे असंजमे कज्जइ तजहा जिब्भामयाउसोक्खाउववरोवित्ताभवइ जिब्भामएणदुक्खेणसंजोगेत्ताभवइ

अने मुक्त रूप साधुवेशसहित १ इमचौभगी ॥ पंचेद्रिय तिर्यच योनिमा जीवने चारगती चारआगती ते कहेछे ॥ पचेद्रियतिर्यंचनो जीव पंचेद्रियति र्यंचमा उपजतो नारकीमाथी आवी उपजे १ । तिर्यंचमाथी आवी उपजे २ । मनुष्यमाथी आवी उपजे ३ । देवतामाथी आवी उपजे ४ ॥ तेहज पचेद्रियतिर्यच पणू मूकतो छाडतो नारकी तिर्यचमा यावत् मनुष्य देवतामा उपजे एकेद्री बेरिंद्री तेरिंद्री चउरिंद्री तिर्यंचमाउपजे ॥ मनुष्य चार गतिमाथी आवे इमज तिर्यचनी परे मनुष्य पणि बेरिंद्री जीवनो जे आरम्भनकरे हणेनही ते च्यार प्रकारनो धर्मकरे ते कहेछे ॥ जीभ इंद्रीमा सुखथी अलगो नकरे एतले जीभना सुखथी टाले नही १ । अने जीभना दुखथी जोडे नही २ । फरसेंद्रीना सुखथी टालेनही ३ । अने कायाना दुखथी जोडेन

॥ त्समनुष्यसूत्रद्वय सुगम एव द्वीन्द्रियसूत्रद्वयमपि नवरं द्वींद्रियान् जीवान् असमारभमाणस्या व्यापादयतो जिह्वाया विकारो जिह्वामयं तस्मा त्सौख्या द्रसो पलभानन्दरूपा द्व्यपरोपयिता अभ्रग्रयिता तथा जिह्वामय जिह्वेन्द्रियहानिरूप यत् दुःख तेना सयोजयितेति जोवाधिकारादेव सम्यग्दृष्टीनां चतस्रः क्रिया मिथ्यात्वक्रियाया अभावात एव ॥ विगलिदियवज्जति ॥ एकद्वित्रिचतुरिन्द्रियाणा पञ्चापि तेषामिथ्यादृष्टित्वात् द्वींद्रियादीनांच सासादनसम्यक्त्वस्या ल्पत्वेना विवक्षितत्वादिति एव चेह यिकलेंद्रियवर्जनेन षोडशक्रियासूत्राणि वैमानिकान्तानि भवतीति अनतर क्रिया उक्ता स्तद्वाद्या सद्भूतान् परगुणा न्नाशयति प्रकाशयतिचे त्येवमर्थं सूत्रद्वय तत्र सुगम नवर सतो विद्यमानान् गुणान्नाशये दवनाशये दपलपति न मन्यते क्रोधेन रोषेण तथा प्रतिनिवे

फासामयाउसोक्खाउववरोवित्ताभवइ फासामएणंदुक्खेणसंजोगेत्ताभवइ । एवचेव सम्मदिठियाणं णेरइयाणं चत्तारि किरियाउ पन्नत्ताउ तजहा आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अप्पच्चक्खाणकिरिया । सम्मदि ठियाणमसुरकुमाराणं चत्तारि किरियाउ एवंचेव । एवविगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं । चउहिंठाणेहिं संतेगुणे णासेज्जा तजहा कोहेणं पडिनिवेसेण अकयणुयाए मिच्छत्ताहिणिवेसेणं । चउहिठाणेहि संतेगुणे

ही ४ ॥ जे मनुष्य वेद्री जीवनो आरंभ करे ते च्यार प्रकारे असंयम अधर्मकरे तेकहेछे ॥ जीभना सुखथी अलगोकरे १ । जीभना दुखसाथे जोडे २ । फरसें द्रीना सुखथी टाले ३ । कायाना दुखथी जोडे ४ ॥ समकितदृष्टि नारकीने च्यार क्रिया पापनी कही ते कहेछे ॥ आरंभिकी १ । पारिग्रहिकी २ । मा याप्रत्ययिकी ३ । अपचक्खाणिकी ४ ॥ समकितदृष्टि असुरकुमार देवताने च्यार क्रिया कही ते कहेछे । इमज वेद्री तेद्री चउरिंद्री वर्जीने वैमानि

ग्रेनै ष पूज्यते अहन्तु नेत्येव परपूजाया असहनलक्षणेन क्षत मुपकारं परसबन्धिन न जानाती त्यक्षतज्ञ स्तद्भाव स्तत्ता तया मिथ्यात्वाभिनिवेशेन बोध विपर्यासेनेति उक्तञ्च रोसेणपडिनिवेसे णतहयअकयतृमिथ्यभावेण सतगुणेनासित्ता भासइअगुणेअसतेविति ॥ १ ॥ असती ऽविद्यमानात् क्वचि त्सन्ते तिपाठ' तत्रच सतो विद्यमानान् गुणान् दीपयेत् वदेदित्यर्थः अभ्यासो ह्वेवाको वर्णनीयासन्नतावा प्रत्ययो निमित्त यत्र दीपते त दभ्यासप्रत्यय दृश्यते ह्यभ्यासा न्निर्विषयापि निष्फलापिच प्रवृत्ति. सनिहितस्यच प्रायेण गुणानामेव ग्रहणमिति तथा परच्छन्दस्य पराभिप्रायस्या नुवृत्ति रनुवर्त्तना यत्र त त्परच्छदानुवृत्तिकं दीपन मेव तथा कार्यहेतोः प्रयोजननिमित्त चिकीर्षितकार्य मत्या नुकूल्यकरणायेत्यर्थ तथा क्षते उपक्षते प्रतिक्षत प्रत्युपकार स्त द्यस्यास्ति स क्षतप्रतिक्षतकइतिवा क्षतप्रत्युपकर्त्तेति हेतो रित्यर्थः अथवा कृतप्रतिकृतयेइति एके नैकस्यो पकृत गुणावो त्कीर्त्तिता. स तस्या सतोपि गुणान् प्रत्युपकारार्थमुत्कीर्त्तयतीत्यर्थः इतिरूपप्रदर्शने वा विकल्पे इदच गुणनाशनादिशरीरेणक्रियतइति शरीरस्यो त्पत्ति निर्वृत्तिसूत्राणां दण्डकद्वय

दीवेज्जा तंजहा अब्भासवत्तियं परछंदाणुवत्तियं कज्जहेउं कयपडिकएइवा । णेरइयाणं चउहिंठाणेहिं सरी रुप्पत्ती सिया तजहा कोवेण माणेणं मायाए लोभेण । एवं जाव वेमाणियाणं । णेरइयाणं चउठ्ठाणणिव्व

कलगे ॥ च्यार थानके छतागुण नासे वर्त्तमान गुणनो नासथाय ते कहेछे ॥ क्रोधकरीने १ । प्रद्वेषथी २ । उपकारकीधो नजाणे कृतघ्नताथी ३ । मिथ्यात्वना अभिनिवेशथी आदरवाथी ४ ॥ च्यार थानके छतागुण दीपे ते कहेछे ॥ अधिक अधिक गुणना अभ्यासथी १ । परनाअभिप्रायने अ नुवर्तवाथी तेहनामने चालवाथी २ । कार्यनाहेतुथी ३ जेहने उपकार कीधो तेहना प्रत्युपकार करवाथी ४ ॥ नारकीने च्यार थानके शरीर नीपजे

करणं चेत नवरं क्रोधादय: कर्मबन्धहेतव: कर्मंच शरीरस्योत्पत्तिकारणमिति कारणेकार्योपचारात् क्रोधादय: शरीरोत्पत्तिनिमित्ततया अपदिश्यत इ
ति ॥ चउहिठाणेहि ॥ शरीरेत्याद्युक्तक्रोधादिजन्यकर्मनिर्वर्त्तितत्वात् क्रोधादिनिर्वर्त्तित शरीर मित्यपदिष्टं इहचो त्पत्ति रारम्भमात्र निर्वृत्ति स्तु निष्पत्ति
रिति क्रोधादय: शरीरनिर्वृत्ते: कारणानी त्युक्त तन्निग्रहास्तु धर्मस्येत्याह ॥ चत्तारिधम्मेत्यादि ॥ धर्मस्य चारित्रलक्षणस्य द्वाराणीव द्वारा ख्युपाया: क्षां
त्यादीनि धर्मद्वाराणी त्युक्त मथारम्भादीनि नारकत्वादिसाधनकर्म्मणो द्वाराणीति विभागत: ॥ चउहिठाणेही त्यादिना ॥ सूत्रचतुष्टयेनाह करणं चेत
नवर ॥ नेरइयत्ताएत्ति ॥ नेरयिकत्वाय नैरयिकतायै नैरयिकतयावा कर्म आयुष्कादि ॥ नेरइयाउयत्ताएत्ति ॥ पाठांतरे नैरयिकायुष्करूप कर्मदलिक
मिति महानिच्छापरिमाणेना कृतमर्यादया बृहद्दारम्भ. पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणो यस्य स महारम्भ श्चक्रवर्त्यादि स्तद्भाव स्तत्ता तया महारम्भतया एव

त्तिएसरीरए तंजहा कोहनिव्वत्तिए जाव लोभनिव्वत्तिए । एवंजाव वेमाणियाण । चत्तारि धम्मदारा प० तं०
खंती मोत्ती अज्जवे मद्दवे । चउहिठाणेहि जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पगरेंति तंजहा महारंभयाए महाप
रिग्गहयाए पंचेंदियबहेणं कुणिमाहारेणं । चउहिठाणेहि जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति तजहा

ते कहेछे ॥ क्रोधथी १ । मानथी २ । मायाथी ३ । लोभथी ४ ॥ एम यावत् वैमानिकलगे चौवीस दडके कहवो ॥ नारकीने चार थानके शरीरनो
निर्वृत्ति नीपनो आउखाताई रहे तेकहेछे ॥ क्रोधनिर्वर्तित यावत् लोभ निर्वर्तित ॥ एम यावत् वैमानिकलगे कहवो ॥ हिवे च्यार धर्मना द्वार
कह्या ते कहेछे ॥ क्षमा १ । निर्लोभता २ । आर्जव तेनिष्कपटता ३ । मार्दव अहंकार रहितता ४ ॥ च्यार थानके जीव नारकीनो आयुकर्मबांधे

महापरियहृतयापि नजरं परिग्रहात इति परिग्रहो हिरण्यसुवर्णद्विपदचतुष्पदादिरिति ॥ कुणिमभिति ॥ मांसं तदेवा हारो भोजनं तेन ॥ माइल्लयाए त्ति ॥ मायितया मायाच मनःकुटिलता ॥ नियडिल्लयाएत्ति ॥ निकृतिमत्तया निकृतिश्च वञ्चनार्थं कायचेष्टादान्यथाकारणलक्षणाऽभ्युपचारलक्षणावा सद्द त्तया कूटतुलाकूटमानेन यो व्यवहारः सकूटतुलाकूटमान एवोच्यते अत स्तेनेति प्रकृत्या स्वभावेन भद्रकता परानुपतापिता या सा प्रकृतिभद्रकता त या सानुक्रोशतया सदयतया मत्सरिकता परगुणासहिष्णुता तत्प्रतिषेधो ऽमत्सरिकता तयेति सरागसंयमेन सकषायचारित्रेण वीतरागसंयमिना मा शुभो बन्धाभावात् संयमासंयमो हिस्वभावत्वात् देशसंयमो बालाइव बाला मिथ्यादृश स्तेषां तप कर्मतपःक्रिया बालतपःकर्म तेन अकामेन निर्जराप्रत्य नभिलाषेण निर्जराकर्म निर्जरणहेतु र्बुभुक्षादिसहनं यस्ता अकामनिर्जरा तया अनन्तर न्देवोत्पत्तिकारणान्युक्तानि देवाश्च वादनाय्यादिरतयो भवती

माइल्लयाए नियडिल्लयाए अलियवयणेणं कूडतुल्लकूडमाणेणं । चउहिंठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पग रेंति तंजहा पगइभद्दयाए विणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरियाए । चउहिंठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति तंजहा सरागसंजमेण संजमासंजमेण बालतवोकम्मेण अकामनिज्जराए । चउव्विहे बज्जे प०

ते कहेछे ॥ मोटाआरम्भथी १ । मोटापरिग्रहथी २ । पचेंद्रिय जीवना बधथी ३ । मासना खावाथी ४ ॥ च्यार थानके जीव नारकीनुं आयुकर्म बांधे ते कहेछे ॥ मायाकपटना करवाथी १ । वचना करवाथी २ । अलीक झूठ वचन बोलवाथी ३ । खोटा तोल खोटा माप तेगजादिकथी खोटु मापवाथी ४ ॥ च्यार थानके जीव मनुष्यनु आयुकर्म बांधे ते कहेछे ॥ भद्रकस्वभावथी १ । विनीत स्वभाव पणाथी २ । दयावत पणाथी ३ । अमत्स

॥ ति वाद्यादिभेदाभिधानाय षट्सूत्री तत्र ॥ वज्जेत्ति ॥ वाद्यं तत्र ततवीणादिकं ज्ञेय विततंपटहादिक घनन्तुकास्यतालादि वंशादिशुषिरंमतमिति ॥ १ ॥ नाट्यगेयाभिनयसूत्राणि सम्प्रदायाभावा न्न विवृतानि मालायां साधु माल्य पुष्प तद्रचनापि माल्य ग्रथः संदर्भ सूत्रेण ग्रथन तेन निर्वृत्त ग्रथिम माला दि वेष्टन वेष्ट स्तेन निर्वृत्त वेष्टिमं मुकुटादि पूरेण पूरणेन निर्वृत्त पूरिम मृन्मय मनेकच्छिद्र वंशशलाकादिपंजरंवा यत्र पुष्पैः पूर्य्यतइति संघातेन निर्वृत्त संघातिम य त्परस्परतः पुष्पमालादिसंघातिनो पजन्यतइति अलंक्रियते भूष्यते नेने त्यलंकार एवसर्वत्र देवाधिकारवत्येव ॥ सणंकुमारेत्यादिका ॥ द्विसूत्री

तंजहा तते वितते घणे सुसिरे । चउव्विहे णट्टे पण्णत्ते तंजहा अंचिए रिभिए आरभडे भिसोले । चउव्वि हे गेये प० तंजहा उक्खित्तए पत्तए मंदए रोविंदए । चउव्विहे मल्ले पण्णत्ते तंजहा गंथिमे वेढिमे पूरिमे संघाइमे । चउव्विहे अलंकारे पण्णत्ते तंजहा केसालंकारे वत्थालंकारे मल्लालंकारे आभरणालंकारे । चउव्विहे

रिकता मत्सर क्रोधनथी करवाथी ४ ॥ च्यार थानकै जीव देवतानुं आउखो बांधे ते कहेछे ॥ कषाय सहित चारित्रथी १ । देशसयम श्राद्ध धर्मथी २ । अज्ञानतप करवाथी ३ । अकामनिर्जराथी ४ ॥ च्यार प्रकारे वादित्र कह्या ते कहेछे ॥ तत तेवीणादिक १ । वितत ते पटहादिक २ । घन ते कां स्यतालादिक ३ । शुषिर ते वांसली प्रमुख ४ ॥ च्यार प्रकारे नाटक कह्यो ते कहेछे ॥ अंचित १ । रिंभित २ । आरभट ३ । भिसोल ४ ॥ च्यार भेदे गीत ते कहेछे उत्क्षिप्त १ । पत्रक २ । मंद ३ । रोविंदक ४ ॥ च्यार भेदे माल्य ते कहेछे ॥ सूत्रे गूंथ्या १ । माल्यादि वींटवो २ । वंश जालें पूरव ३ । घणा फूल माहोमाहि गूंथवो ४ ॥ च्यार प्रकारे अलंकार कह्यो ते कहेछे केश समारवा १ । भलावस्त्र पहरवा २ । फूलपहरवा ३ ।

सुगमाचेय नवर सनत्कुमारमाहेन्द्रयो श्चतुर्वर्णानि कल्पान्तरेषु त्वन्यथा यदुक्तं सोहमिपंचवणा एक्कगहाणीउजासहस्सारो दोदोतुल्लाकप्पा तेणपरपुंड रीयाश्रो ॥ १ ॥ द्वयोर्द्वयोः कल्पयो र्वर्णस्य हानिः कार्येत्यर्थ स्तत्र भवे धार्यते तदिति तंवा भव धारयतीति भवधारणीय यज्जन्मतो मरणावधि कृतमुष्टिक स्तु रत्निः सएव विततांगुलि ररत्नि रिति वचने सत्यपि रत्निशब्देनेह सामान्येन हस्तो भिधीयतइति शुक्रसहस्रारयो श्चतुर्हस्ता देवा अन्यत्र त्वन्यथायत आह भवण १ वण ८ जोइ २ सोह म्मीसाणेसत्तहोंतिरयणीश्रो एक्केक्कहाणिसेसे दुदुगेयदुगेयचउक्केय ॥ १ ॥ गेवेज्जेसुयदुन्निय एक्कारयणीअणुत्तरसुरेसुत्ति ॥ १ ॥ भवधारणीयान्येव मुत्तरवैक्रियाणितु लक्षमपि सभवति उत्कृष्टेनैतत् जघन्य स्त्वङ्गुलासख्येयभागप्रमाणा न्युत्पत्तिकाले भवधारणीयानि भव त्युत्तर वैक्रियाणि त्वङ्गुलासख्येयभागप्रमाणा नीति अनतर देववक्तव्यतोक्ता देवा श्चाप्कायतयाप्युत्पद्यते इत्युदकगर्भप्रतिपादनाय ॥ चत्तारीत्यादि ॥ सूत्रद्वयमा

अन्निणए प० तं० दिठतिए पाहृसुए सामंतोवणिए लोगमज्झवासिए । सणकुमारमाहिंदेसुणकप्पेसु विमा णा चउवन्ना प० त० णीला लोहिया हालिद्दा सुक्किल्ला । महासुक्कसहस्सारेसुण कप्पेसु देवाणं भवधारणि ज्जा सरीरगा उक्कोसेण चत्तारि रयणीउ उड्ढ उच्चत्तेणं पन्नत्ता । चत्तारि दगगब्भा प० तं० उस्सा महिया

आभरण पहरवा ४ ॥ सनत्कुमार माहेंद्र तीजे चौथे देवलोके च्यारवर्णना विमान कह्या ते कहेछे ॥ नीला १ । राता २ । पीला ३ । धोला ४ ॥ महाशुक्र सहस्रार सातमा आठमा देव लोकमा देवताने भवधारणीय मूलवैक्रिय शरीर उत्कृष्ट च्यार हाथ उचपणे कह्यो ॥ च्यार पाणीना गर्भ कहिया जेकालांतरे वरसे ते कहेछे ॥ उसठार ते जेस रात्रिमा पडेते १ । धूंअर तेमहिका २ । ठाढि तेठढ ३ । उष्ण तफखो घाम ४ ॥ बली च्यार

ह ॥ दगगभेत्ति ॥ दकस्यो दकस्य गर्भाइव गर्भा दकगर्भाः कालांतरे जलवर्षणस्य हेतवः तत्तसूचकाइति तत्वमिति अवश्यायः चपाजलं महिका धूमिका शीता न्यात्यन्तिकानि एव मुष्णो घर्म्म एतेहि यत्र दिने उत्पन्ना स्तस्मा दुत्कर्षेणा व्याहता:सतः षड्भिर्मासै रुदक प्रसुवते अन्यैः पुनरेव सुत्तं पवनाभ्रवृष्टिविद्यु द्गर्जितशीतोष्णरश्मिपरिवेषा' जलमत्स्येनसहोक्ता दशधाचांवुप्रजनहेतुः ॥ १ ॥ तथा शीतवाताश्चविदुश्च गर्जितपरिवेषणं सर्वगर्भेषुशंसति निर्ग्रंथ्याःसाधुदर्शनाः ॥ १ ॥ तथा सप्तमेसप्तमेमासे सप्तमेसप्तमेहनि गर्भाःपाकनियच्छति याद्दशास्ताद्दशफलं ॥ १ ॥ हिम तुहिनं तदेव हिमक तस्येते हैमकाः हिमपातरूपाइत्यर्थः ॥ अभ्रसवडन्ति ॥ अभ्रसंस्तानि मेघै राकाशाच्छादनानीत्यर्थः आत्यंतिके शीतोष्णे यचानां रूपाणां गर्जितविद्युज्जलवाताभ्रलचणाना समाहारः पञ्चरूप तदस्ति येषांते पञ्चरूपिका उदकगर्भा इहमतान्तरमेव पौषेसमार्गशीर्षे संध्यारागोंवुदासपरिवेषाः नात्यर्थमार्गशिरे शीतपौषेऽतिहिमपातः ॥ १ ॥ माघेप्रवलोवायु स्तुषारकलुषद्युतीरविशशाको अतिशीतसघनस्यच भानोरस्तोदयौधन्यौ ॥ २ ॥ फाल्गुनमासेरूच श्चण्डः पवनोऽभ्रसम्प्लवाःस्निग्धाः परिवेषाश्चसकलाः कपिलस्ताम्रोरविश्चशुभः ॥ ३ ॥ पवनघनवृष्टियुक्ता श्चैत्रेगर्भाःशुभाःसपरिवेषाः घनपवनसलिलविद्युत् स्तनि

सीया उसिणा । चत्तारि उदगगब्भा पण्णत्ता तंजहा हेमगा अब्भसंघडा सीउसिणा पंचरूविया ॥ सिलोगो ॥ माहेउहेमगागब्भा फग्गुणेअब्भसघडा । सीउसिणाउयचित्ते वइसाहेपंचरूविया ॥ १ ॥ चत्तारि मणुस्सीगब्भा

पाणीना गर्भ कह्यिा ते कहेछे ॥ हिमनुं पडवो १ । वादला आकाशढांके २ । घणोठंढ अने तडखोघाम ३ । पंचरूपी आकाश तेगाज बीज जलवात शीत रूई बादल ४ ॥ गाथा ॥ माघ मासमां हिमनुंगर्भ फागुण मासमा वारिदनुं गर्भ शीतोष्णचैत्रमासमांवैशाखमासमां पंचरूपीपणुं ॥ १ ॥ च्यार

तेशहितायवैशाखइति ॥ ४ ॥ तानेव मासभेदेन दर्शयति ॥ माहेत्यादि ॥ श्लोकः गर्भाधिकारान्नरीगर्भसूत्र व्यक्तं केवलं ॥ इत्थित्ताएत्ति ॥ स्त्रीतया बिम्बमि
ति गर्भप्रतिबिम्ब इर्भाकृति रात्तेवपरिणामो नतुगर्भएवेति उक्तंच अवस्थितलोहितमङ्गनाया वातेनगर्भंब्रुवतेनभिज्ञाः गर्भाकृतित्वात्कटुकोष्णतीव्रैः स्रुतेपु
नःकेवलएवरक्तो॥१॥गर्भजडाभूतहृतवदन्तीत्यादि॥ वैचित्र्य गर्भस्य कारणभेदादिति श्लोकाभ्यां तदाह ॥ अप्पमित्यादि ॥ शुक्रं रेतः पुरुषसम्बन्धि ओज आ
र्त्तव रक्तं स्त्रीसम्बन्धि यत्र गर्भाशयइति गम्यत इति तथा स्त्रिया ओजसा समायोगो वातवशेन तत् स्थिरीभवलक्षण' स्त्र्योज. समायोग तस्मिन्सति बिम्ब
तत्र गर्भाशये प्रजायते अन्यैरप्यत्रोक्तं अतएवचशुक्रस्य वाहुल्याज्जायतेपुमान् रक्तस्यस्त्रीतयोःसाम्ये क्लीव'शुक्रार्त्तवेपुनः ॥ १ ॥ वायुनाबहुशोभिन्ने यथास्व
बहुपत्यता वियोनिविकृताकारा जायन्तेविकृतैर्मलैरिति ॥ २ ॥ गर्भः प्राणिनां जन्मविशेषः सचो त्पादो भिधीयते उत्पादस्योत्पादाभिधानः पूर्वं प्रपञ्चतइ
ति तत् स्वरूपविशेषप्रतिपादनायाह ॥ उप्पायेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर उत्पादपूर्वं प्रथम पूर्वाणा तस्यचूला आचारस्या ग्रायीव तद्रूपाणि वस्तूनि परिच्छे

पत्नत्ता तजहा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए बिंबत्ताए ॥ सिलोगो ॥ अप्पसुक्कंबहुउयं इत्थीतत्थप्प
जायइ अप्पउयबहुसुक्क पुरिसोतत्थजायइ ॥ १ ॥ दोण्हपिरत्तसुक्काणं चुल्लभावेनपुंसउ ॥ इत्थीउतरसमा

मानुषी मनुष्यनी स्त्रीना गर्भ कह्या ते कहेछे स्त्रीपणे १ । पुरुषपणे २ । नपुसक पणें ३ । गर्भनो प्रतिबिंब गर्भनुं आकार तनुगर्भ ४ ॥ गाथा ॥
थोडो शुक्र पुरुषनोवीर्य अने घणु स्त्रीनो उज ते रितुसबधी रुधिर होय तिवारे स्त्रीऊपजे गर्भमा ॥ थोडो उजघणु वीर्यतिहां पुरुष होय ॥१॥
बेरितु अने क्रशु सरखा बराबर होय तिवारे नपुंसक होय। स्त्रीना उज रुधिरनो जवाय विशेषतया बधपडे तिहां बिंब नीपजे ॥२॥ उत्पाद पूर्वनी

॥ दविशेषा अध्यनवत् चूलावस्तूनि उत्पादपूर्वं हि काव्य मिति काव्यसूत्रं कण्ठ्यं चेत नवरं काव्यं गृन्थः गद्य मच्छन्दोनिवद्ध शस्त्रपरिज्ञाध्ययनवत् पद्यं च्छ न्दोनिवद्ध विमुक्ताध्ययनवत् कथाया साधु कथ्य ज्ञाताध्ययनवत् गेयं गानयोग्य इहगद्यपद्यान्तर्भाविपी तरयोः कथागानधर्म्मविशिष्टतया विशेषो विवचि तइति अनन्तरं गेय मुक्त तच्च भाषास्वभावत्वा इडमथादिक्रमेण लोकैकदेशादि पूरयति समुद्घातो प्येवमेवेति साधर्म्या त्समुद्घातसूत्रे सुगमेच नवर समुद्धनन समुद्घातः शरीरा द्दहिर्जीवप्रदेशप्रक्षेपः वेदनया समुद्घातः कषाये. समुद्घातो मरणमेवा न्तो मरणान्त स्तत्र भवो मारणान्तिक. सएव समुद्घातो वैक्रिया य समुद्घातइति विग्रहाइति वैक्रियसमुद्घातो हि लब्धिरूप उक्तइति लब्धेः प्रस्तावात् विशिष्टश्रुतलब्धिमता मभिधानायाह ॥ अरहओइत्यादि ॥ सूत्र ॥

नगे विवंतस्यप्पजायइ ॥ २ ॥ उप्पायपुव्वस्सणं चत्तारि चूलियावत्थू पन्नत्ता । चउव्विहे कव्वे पन्नत्ते तं० गज्जे पज्जे कत्थे गेये । णेरइयाण चत्तारि समुग्घाए प० त० वेयणसमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियस मुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए । एवं वाउकाइयाणवि । अरहओणंअरिठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीण ॥

च्यार चूला वस्तु अध्ययनरूप कही ॥ च्यार भेदेकाव्य ते ग्रंथ ते कहेछे ॥ गद्यबंध जेहमां छंद नही शास्त्रपरिज्ञाध्ययननीपरे १ । पद्य ते छंदो निबद्ध विमुक्ताध्ययननीपरे २ । कथाग्रथ ते ज्ञाताध्ययननीपरे ३ । गेय गावायोग्य जेअध्यन ४ ॥ नारकीने च्यार समुदघात शरीरथी जीवप्रदेश बाहिर नीकलता वेदनाथाय ते कहेछे ॥ वेदनासमुदघात १ । कपायथी समुदघात २ । मारणातसमुदघात ३ । वैक्रियसमुदघात वैक्रियरूपकरेते ४ ॥ एम वायुकायने पणि च्यार समुदघात कहवा ४ ॥ अरिहत अरिष्टनेमि नाथने च्यारसे ४०० चोदस पूर्वीनी संपदाथई जिन नही पिण जिन सरिखा ॥

द्यी सुगमाच नवर मजिनाना मसर्वज्ञत्वात् जिनसङ्काशाना मविसवादिवचनत्वा यथापृष्टनिर्वक्तृत्वा च सर्वेऽक्षराणा मकारादीनां सन्निपाता द्या दिसयोगा अभिधेयानन्तत्वा दनन्ताअपि विद्यन्ते येषांते सर्वाक्षरसन्निपातिन स्तेषां जिनसकाशत्वे कारणमाह ॥ जिणोइवेत्यादि ॥ उक्कोसियत्ति ॥ नातो धिका चतुर्दशपूर्विणो बभूवुः कदाचिदपीति तेच प्रायः कल्पेषु गताइति कल्पसूत्राणि सुगमानिच नवर ॥ अद्धचंदसठाणसठिएत्ति ॥ पूर्वापर

मजिणाणंजिणसंकासाणं सव्वक्खरसंनिवाईणं जिणोइवअवितहवागरमाणाण उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था । समणस्सणभगवओमहावीरस्स चत्तारिसया वाईण सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ हेछिल्ला चत्तारिकप्पा अद्धचंदसंठाणसठिया प० त० सोहम्मे ईसाणे सणकुमारे माहिंदे । मज्झिल्लाकप्पा पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया पन्नत्ता तजहा बंभलोगे लंतए महासुक्के सहस्सारे । उवरिल्ला चत्तारिकप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया प० तंजहा आणए पाणए आरणे अच्चुए । चत्तारि

सर्वाक्षर संनिपातयोगना जाण केवलीनी परे सत्य प्रश्नना कहनार उत्कृष्टी चौदहपूर्वधारी साधुनी संपदाथई ॥ श्रमण भगवंत महावीरने च्यारसे वादीनी सपदाथई देवता मनुष्य असुरनी पर्षदामा अपराजित कोई जीती नसके एहवी उत्कृष्टी वादीनी सपदा थई ॥ हेठला च्यार देवलोक अर्द्ध चंद्र सठाण संस्थित कह्या ते कहेछे ॥ सौधर्म १ । ईशान २ । सनत्कुमार ३ । माहेंद्र ४ ॥ मध्यम विचालना च्यार देवलोक परिपूर्णचद्र सस्थान संस्थित कह्या ते कहेछे ॥ ब्रम्हदेवलोक १ । लांतक २ महाशुक्र ३ । सहस्रार ४ ॥ ऊपरला च्यार देवलोक अर्द्धचंद्रसस्थान संस्थित कह्या तेकहेछे ॥

तो मध्यभागे सीमासद्भावादिति देवलोकादि चेत्रप्रस्तावा त्समुद्रसूत्रं व्यक्तंच नवरं एकमेकंप्रति भिन्नो रसो येषां ते प्रत्येकरसा' अतुल्यरसा इत्यर्थः ल वणरसोदकत्वा ल्लवणः पाठान्तरन्तु लवणमिवो दक यत्र सलवणोदो निपातनादिति प्रथमः वारुणी सुरा तया समान वारुण वारुण मुदक यस्मिन् स वारुणोद श्चतुर्थः चीरव त्तथा घृतव दुदकं यत्र सचीरोदः पचमो घृतोदः षष्ठः कालोदपुष्करोदस्वयभूरमणा उदकरसाः शेषास्तु इक्षुरसाइति उक्तं च वारुणिवरखीरवरो घयवरलवणोयहौंतिपत्तेया कालोयपुक्खरोदहि सयंभुरमणोयउदकरसत्ति ॥ १ ॥ अनन्तरं समुद्रा उक्ता स्तेष्चा वर्त्ता भवंती त्यावर्त्तान् दृष्टांतान् कषायांश्च तद्दार्ष्टान्तिकान् अभिधित्सु सूत्रद्वयमाह सुगम चैतन्नवर खरो निष्ठुरो अतिवेगितया पातक श्छेदकोवा आवर्त्तन माव र्त्तः सच समुद्रादे श्चक्रविशेषाणाचेति खरावर्त्त उन्नतउच्छ्रित' सचा सा वावर्त्तश्चेति उन्नतावर्त्तः सच पर्वतशिखरारोहणमार्गस्य वातोत्कलिकायावा गूढ श्चासा वावर्त्तश्चेति गूढावर्त्त सच गेन्दुकदवरकस्य दारुग्रन्थ्यादेर्वा आमिष मासादि तदर्थसावर्त्तः शकुनिकादीना मामिषावर्त्तइति एतत्समानताच क्रोधादी

समुद्दा पत्तेयरसा पसत्ता तजहा लवणोदए वारुणोदए खीरोदए घिअदए । चत्तारि आवत्ता पसत्ता तं० खरावत्ते उन्नयावत्ते गूढावत्ते आमिसावत्ते । एवामेव चत्तारि कसाया पसत्ता तंजहा खरावत्तसमाणेकोहे

आनत १ । प्राणत २ । आरण ३ । अच्युत ४ ॥ च्यार समुद्र जूजुआ रसना कह्या ते कहेछे ॥ लवणसमुद्र खारो १ । वारुणोदधि मदिरा सरिखो २ । चीरोदधि दूधसमान पाणीनु कह्यो ३ । घृतोदधि घीसमान पाणीनुं कहियो ४ ॥ च्यार पाणीना आवर्त्त कह्या तेकहेछे ॥ खरावर्त्त ते कठिन कठोर चक्रनीपरे पाणीनुं ज्ञमवो १ । उन्नतावर्त्त उचो जे पाणीनुं ज्ञमवो २ । गुप्तावर्त्त काठनी गाठवतू ३ । मासावर्त्त समली आकाशमा भमे ४ ॥ एम

ना क्रमेण परोपकारकरणदारुणत्वात् पत्रत्टणादिवस्तुनइव मनस उन्नतत्वारोपणात् अत्यन्तदुर्लक्ष्यस्वरूपत्वात् अनर्थशतसंपातसंकुले प्यवपतनकारणत्वा च्चेति द्रयचोपमा प्रकर्षवता कोपादोनामिति तत्फलमाह ॥ खरावत्तेत्यादि ॥ अशुभपरिणामस्या शुभकर्मबन्धनिमित्ततया दुर्गतिनिमित्तत्वा दुच्यते ॥ णेर इएसुउववज्जइत्ति ॥ नारका अनतर मुक्ता स्तेच वैक्रियादिना समानधर्म्माणोदेवाइतितद्विशेषभूतनक्षत्रदेयाना चतु.स्थानक विवक्षुः ॥ अणुराहेत्या दि ॥ सूत्रत्रय माह कण्ठ्यं चैतदिति देवत्वादिभिदश्च जीवाना कर्मपुद्गलावयवादिकृतइतितत्प्रतिपादनायाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ सूत्रषट्क व्याख्यात

उन्नयावत्तसमाणेमाणे गूढावत्तसमाणामाया आमिसावत्तसमाणेलोभे । खरावत्तसमाणंकोहमणुप्पविठेजी वे कालकरेइ णेरइएसु उववज्जइ । उन्नयावत्तसमाण तचेव । गूढावत्तसमाणंमानमेवंचेव । आमिसावत्त समाणलोभमणुप्पविठेजीवे काल करेइ णेरइएसु उववज्जइ ॥ अणुराहाणरकत्ते चउतारे पन्नत्ते । पुव्वासा ढा एवचेव । उत्तरासाढाएवंचेव । जीवाणचउठाणनिव्वत्तिएपोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणितिवा

च्यार कषाय कह्या ते कहेछे ॥ खरावर्त्तसमान क्रोध १ । उन्नतावर्त्तसमान मान २ । गूढावर्त्तसमान माया ३ । आमिषावर्त्तसमान लोभ ४ ॥ खरा वर्त्तसमान क्रोधमा अनुप्रविष्ट पैठो जीव कालकरीने नारकीमाउपजै १ । उन्नतावर्त्तसमान मानमा अनुप्रविष्ट जीव मरीने नारकीमां उपजे २। गूढा वर्त्तमायामा अनुप्रविष्ट जीव कालकरी नरकमा जाय ३ । आमिषावर्त्तसमान लोभमा अनुप्रविष्ट जीव कालकरी नरकमा जाय ४ ॥ अनुराधा नक्ष त्रना च्यार तारा कह्या ॥ पूर्वाषाढानक्षत्रना पणि ४ तारा कह्या ॥ उत्तराषाढा नक्षत्रना पणि इमज च्यार तारा कह्या ॥ जीव च्यार थानके उप

प्राक तथापि किञ्चिल्लिख्यते ॥ जीवाणति ॥ णंशब्दोवाक्यालङ्कारार्थं चतुर्भिःस्थानकै र्नारकत्वादिभिः पर्यायै र्निर्वर्त्तिताः कर्मपरिणामं नीता स्तथाविधा शुभपरिणामवशा द्वद्वा स्ते चतुःस्थाननिर्वर्त्तिता स्तान् पुद्गलान् कथ निर्वर्त्तितानित्याह पापकर्म्मतया अशुभस्वरूपज्ञानावरणादिरूपत्वेन ॥ चिणसुत्ति ॥ तथाविधापरकर्म्मपुद्गलै श्चितवतः पापप्रकृतौ रल्पप्रदेशा बहुप्रदेशीकृतवंत. ॥ नेरइयणिव्वत्तिएत्ति ॥ नैरयिकेण सता निर्वर्त्तिता इति विग्रह एव सर्वत्र तथा ॥ एवंउवचिणसुत्ति ॥ चयसूत्राभिलापेनो पचयसूत्र वाच्य तत्र ॥ उवचिणसुति ॥ उपचितवतः पौन.पुन्येन एवमिति चयादिन्यायेन बधादिसूत्राणि वाच्यानीत्यर्थः इहच बधउदीरेत्यादिवक्तव्ये यच्चयोपचयगृहण तत्स्थानान्तरप्रसिद्धगाथोत्तरार्द्धानुवृत्तिवशा दिति तत्र ॥ बंधत्ति ॥ बंधेयु स्नथबधनबद्धान् गाढबधनबद्धान् कृतवतः ॥ २ ॥ उदीरत्ति ॥ उदीरिसु ॥ उदयप्राप्ते दलिके अनुदिता स्ता नाकृष्य करणेन वेदितवतः ॥ वेयत्ति ॥ वेदिसु ॥ प्रतिसमय स्वेन रसविपाकेना नुभूतवतः ॥ तहनिज्जराचेवत्ति ॥ निज्जरिसु ॥ कात्स्न्र्येना नुसमयविशेषतद्विपाकहान्या परिशाटितवंतः पुद्गलाधिकारा त्पुद्गलानेव

चिणिस्संतिवा तं० णेरइयणिव्वत्तिए तिरिक्खजोणिणिव्वत्तिए मणुस्सणिव्वत्तिए देवणिव्वत्तिए । एवंउवचिणं सुवा उवचिणंतिवा उवचिणिस्संतिवा । एवं चिणउवचिणबंधोदी रवेयतहणिज्जराचेव । चउप्पएसियाखं

जवाना पुद्गलने पापकर्मतया चिणताहुवा अतीतकाले चिण्याछे वर्त्तमानकालमां चिणस्ये आगामिकालमां तेकहेछे ॥ नारकीनिर्वर्त्तित १ । तिर्यंचयोनि निर्वर्त्तित २ । मनुष्यनिर्वर्त्तित ३ । देवनिर्वर्त्तित ४ ॥ एम पूर्वे अतीतकालमां एकठा कीधा वर्त्तमानकालमा उपचिण्याछे आगामिकालमां उपचिण स्ये ४ ॥ एम चिणे उपचिणे बांधे उदयआणे तिम निर्जरावे ॥ च्यार प्रदेशिया खध अनंता कह्या ॥ च्यार आकाशने अवगाही रह्या एहवा पुद्गल

द्रव्यादिभि निरूपयन्नाह ॥ चउप्पएत्यादि ॥ सुगममिति ॥ इतिचतुःस्थानकस्यचतुर्थोद्देशकः ॥ इति श्रीमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानाख्यतृतीयाङ्ग विवरणे चतुःस्थानकाख्य चतुर्थमध्ययन परिसमाप्तमिति ॥ ग्रथश्लोकाः २९३२ ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
व्याख्यात चतुर्थ मध्ययन साम्प्रत व्याख्याक्रमसम्बद्धमेव पञ्चस्थानकाख्यं पञ्चम मध्ययन व्याख्यायते ऽस्य चाय विशेषाभिसम्बन्ध इहा नन्तराध्ययने जी वाजीवतद्धर्म्माख्यः पदार्था श्चतुःस्थानकावतारेणे नाभिहिता इहतु तएव पञ्चस्थानकावतारेणे नाभिधीयत इत्यनेना भिसम्बन्धेना यातस्या स्यो द्देशकश्च यवत श्चतुरनुयोगद्वारवतो ध्ययनस्य प्रथमोद्देशको व्याख्यायते अस्यच पूर्वोद्देशकेन सह सम्बन्धो धिकृताध्ययनवद् द्रष्टव्य स्तस्य चेद मादिसूत्रं ॥ पंचम

धा ऋणंता पन्नत्ता । चउप्पएसोगाढा पोग्गला ऋणंता पन्नत्ता । चउसमयठिईया पोग्गला ऋणंता पन्नत्ता चउगुणकालगा पोग्गला ऋणंता पन्नत्ता । जाव चउग्गुणलुस्का पोग्गला ऋणता पन्नत्ता ॥ इइ चउठाणं सम्मत ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
पच महव्वया पन्नत्ता तजहा सव्वाउपाणाइवायाउवेरमण सव्वाउमुसावायाउवेरमणं जाव सव्वाउपरिग्गहा

अनंता कह्या ॥ च्यार समयनी स्थितिना पुद्गल अनंता कह्या ॥ च्यार गुणा काला पुद्गल अनता कह्या ॥ यावत् च्यारगुणा लूखा पुद्गल अनंता कह्या ॥ इति चौथो ठाणू सपूर्ण थयो ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
हिवे पाचमो लिखेछे ॥ पाच महाव्रत कह्या ते कहेछे ॥ सर्व प्राणातिपातथी विरमवो त्यागकरवो १ । एम सर्व मृषावादथी विरमवो २ । सर्व

हव्वएत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहायं सम्बन्धः पूर्वसूत्रे ऽजीवानां परिणामविशेष उक्त इहतु सएव जीवाना मुच्यत इत्येवं संबन्धस्या स्य व्याख्या सं
हितादिक्रमेण सच सुगएव नवरं पंचेति सङ्ख्यान्तर व्यवच्छेद स्तेन न चत्वारि प्रथमपश्चिमतीर्थयोः पञ्चानामेव भावात् महान्ति इहन्ति तानिच ता
निच नियमात् महाव्रतानि महत्वं चैषां सर्वजीवादिविषयत्वेन महाविषयत्वात् उक्तंच पढममिसव्वजीवा वीएचरिमेयसव्वदव्वाइं । सेसामहव्वयाख
लु तदेकदेसेणदव्वाणंति ॥ १ ॥ तेषां द्रव्याणा एकदेशेनेत्यर्थ स्तथा यावज्जीवं त्रिविधंत्रिविधेनेति प्रत्याख्यानरूपत्वात् तेषामिति देशविरतापेक्षया म
हतोवा गुणिनो व्रतानि महद्व्रतानीति पुलिङ्गनिर्देशस्तु प्राकृतत्वादिति प्रज्ञप्तानि तथाविधशिष्यापेक्षया प्ररूपितानि महावीरेण आद्यतीर्थकरेणच न
शेषै रित्येतत् किल सुधर्म्मस्वामी जंबूस्वामिन प्रतिपादयामास तद्यथा सर्वस्मा न्निरवशेषात् त्रसस्थावरसूक्ष्मवादरभेदभिन्नात् कृतकारितानुमतिभेदाच्चे
त्यर्थः अथवा द्रव्यतः षड्जीवनिकायविषयात् क्षेत्रत स्त्रिलोकसंभवात् कालतो तीतादे रात्र्यादिप्रभवाद्वा भावतो रागद्वेषसमुत्थाच्च नत परिस्थूरादेवे
तिभावः प्राणाना मिन्द्रियोच्छ्वासायुरादीना मतिपातः प्राणिनः सकाशा द्विभ्रंशः प्राणातिपातः प्राणिप्राणवियोजनमित्यर्थः तस्मा द्विरमण सम्यक्
ज्ञानश्रद्धानपूर्वकं निवर्त्तनमिति तथा सर्वस्मा त्सद्भावप्रतिषेधासद्भावोद्भावना २ अर्थान्तरोक्तिगर्हाभेदात् कृतादिभेदाद्वा थवा द्रव्यतः सर्वद्रव्यास्तिकाया
दिद्रव्यविषयत्वात् क्षेत्रतः सर्व्वलोकालोकगोचरात् कालतो तीतादेः रात्र्यादिवर्त्तिनोवा भावतः कषायनोकषायादिप्रभवात् मृषा ऽलीकं वदनं वादो
मृषावाद स्तस्मा द्विरमण विरतिरिति तथा सर्वस्मात् कृतादिभेदा दथवा द्रव्यतः सचेतनाचेतनद्रव्यविषयात् क्षेत्रतो ग्रामनगरारण्यादिसंभवात् काल
तो तीतादे रात्र्यादिप्रभवाद्वा भावतो रागद्वेषमोहसमुत्थात् अदत्तं स्वामिना अवितीर्णं तस्या दान ग्रहण मदत्तादानं तस्मा द्विरमण मिति
तथा सर्वस्मात् कृतकारितानुमतिभेदा दथवा द्रव्यतो दिव्यमानुषतैरश्चभेदात् रूपरूपसहगतभेदाद्वा तत्र रूपाणि निर्जीवानि प्रतिमारूपा ण्यु

ष्यंते रूपसहगतानितु सजीवानि भूषणविकलानिवा रूपाणि भूषणसहितानि रूपसहगतानीति चेत्रतस्तिलोकसम्भवात् कालतो ऽतीतादेराध्यादि समुत्पाद्या भावतो रागद्वेषप्रभवात् मिथुन स्त्रीपुसद्वद्द तस्य कर्ममैथुन तस्मा द्विरमणमिति तथा सर्वस्मात् छतादे रथवा द्रव्यतः सर्वद्रव्यविषयान् चेत्र तो लोकसम्भवात् कालतो ऽतीतादे राच्यादिभयाद्वा भावतो रागद्वेषविषया त्परिग्रहात् आदीयते परिग्रहणवा परिग्रह स्तस्मा द्विरमणमिति व्रत प्रस्तावात् ॥ पचाणुव्वएत्यादि ॥ अणुव्रतसूत्र स्फुटं चेदं किन्तु अणूनि लघूनि व्रतानि अणुव्रतानि लघुत्वच महाव्रतापेक्षया अल्पविषयत्वादिनेति प्रतीत मेवेति उक्तंच सव्वगयंसमत्तं सुएचरित्तेनपज्जवासव्वे देशविरइंपडुच्चा दोण्हविपडिसेयणकुज्जत्ति ॥ १ ॥ अथवा अनुमहाव्रतकथनस्य पश्चा त्तद्प्रतिप त्तौ यानि व्रतानि काथ्यन्ते ता न्यणुव्रतानीति उक्तंच जइधम्मस्ससमत्थे जुज्जइतद्देसणपिसाहूण तदहिगदोसनिवत्तो फलतिकायाणुकंपइत्ति ॥ १ ॥ अथ वा सर्वविरतापेक्षया अणो र्लघो र्गुणिनो व्रता न्यणुव्रतानीति स्थूला द्वीन्द्रियादयः सत्वाः स्थूलत्वे चैतेषां सकललौकिकाना जीवत्वाप्रसिद्धेः स्थूलविषय त्वात् स्थूल तस्मा त्प्राणातिपाता त्तथा स्थूलः परिस्थूलवस्तुविषयो ऽतिदुष्टो विवक्षासमुद्भव स्तस्मात् मृषावादात् तथापरिस्थूलवस्तुविषय चौर्यारोपणहे तुत्वेन प्रसिद्ध मतिदुष्टाध्यवसायपूर्वक स्थूल तस्माददत्तादाना त्तथा स्वदारसंतोष आत्मीयकलत्रा दन्यनेच्छानिवृत्ति रित्युपलक्षणा त्परदारवर्जनमपि

उवेरमणं । पंचाणुव्वया पन्नत्ता तंजहा थूलाउपाणाइवायाउवेरमण थूलाउमुसावायाउवेरमणं थूलाउअदि

अदत्तादानथी विरमवो ३ । सर्व मैथुनथी विरमवो ४ ॥ सर्वपरिग्रहथी विरमवो ५ ॥ पांच अणुव्रत कह्या ते कहेछे स्थूल प्राणातिपातथी विरमवो १। थूल मोटा मृषावादथी विरमवो २ । थूल अदत्तादानथी विरमवो ३ । थूल मैथुनथी विरमवो स्वदार तेस्व कीयस्त्रीपोतानी स्त्रीमा संतोष ४ ॥ थूल

॥ ग्राह्यं तथा इच्छाया धनादिविषयस्या भिलाषस्य परिमाणं नियमन मिच्छापरिमाणं देशत: परिग्रहविरतिरित्यर्थ: इच्छापरिमाण चेन्द्रियार्थगोचरं श्रे य इतींद्रियार्थवक्तव्यतार्थं ॥ पचवन्नेत्यादि ॥ त्रयोदशसूत्री माह प्रकटा चेय नवरं पचवर्णा: १ पंचैव रसा स्तदन्येषां सयोगिकत्वेना विवक्षितत्वादिति ॥ कामगुणत्ति ॥ कामस्य मदनस्या भिलाषमात्रस्यवा सम्पादका गुणा धर्म्मा: पुद्गलाना काम्यन्तइति कामा स्तेचते गुणाश्चेतिवा कामगुणाइति ३ ॥ पंच हिंठाणेहि ॥ पचसु पचभिर्वा स्थानेषु रागाद्याश्रयेषु तैर्वा सह सज्यतेसग सम्बन्धं कुर्व्वतीति ४ ॥ एवमिति ॥ पचस्वेव स्थानेषु रज्यते सगकारण रागं यां तीति ५ ॥ मुच्छंति ॥ तद्दोषानवलोकनेन मोह मचेतनत्व मिव यान्ति सरक्षणानुवंधवतीवा भवंतीति ६ गृध्यन्ति प्राप्तस्या सतोषेणा प्राप्तस्या कांचावती भवन्तीति ७ अध्युपपद्यन्ते तदेकचित्ताभवन्तीति तदर्जनायवा धिक्येनोपपद्यन्ते उपपन्ना घटमानाभवतीति ८ विनिघातं मरणं मृगादिव त्ससारवा प द्यते प्राप्नुवतीति आहच रक्ता: शब्दे हरिण. स्पर्शेनागोरसेचवारिचर: कृपणपतङ्गोरूपे भुजगोगधेनतुविनष्ट: ॥ १ ॥ पचसुरक्ता:पचवि नष्टायत्राग्टहीत

न्नादाणाउवेरमणं सदारसतोसे इच्छापरिमाणे । पंचवन्ना पन्नत्ता तंजहा किण्हा नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किल्ला । पचहिंठाणेहि जीवा सज्जंति तंजहा सद्देहि जाव फासेहि । एव रज्जंति मुच्छंति गिज्झंति अ

परिग्रहथी विरमवो इच्छा परिमाणे परिग्रहनुं मान परिमाण करवो ५ ॥ पाच वर्ण कह्या ते कहेछे ॥ कालो १ । नीलो २ । रातो ३ । पीलो ४ । सपेद ५ ॥ पाच रस कह्या ते कहेछे ॥ तिक्त यावत् मधुर मीठो ५॥ पच कामगुण कह्या तेकहेछे ॥ शब्द १ । रूप २ । रस ३ । गंध ४ । स्पर्श ५ ॥ पांच थानके जीव सज्जित होय उदनम करे ते कहेछे शब्दने विषे रूपरसगधस्पर्शनेविषे ॥ एम राचेछे । मूर्च्छापामेछे । गृध्नथाय एपाचथानके जीव

ा० ॥

५ ॥

परमार्थः एकःपचसुरक्तः प्रयातिभस्मान्ततांमूढइति ॥ २ ॥ ८ अपरिणायत्ति ॥ अपरिज्ञया स्वरूपतो अपरिज्ञाता न्यनवगतानि प्रत्याख्यानपरिज्ञयाचा प्रत्याख्यातानि अहिताया पायाया सुभाया पुख्यबधाया सुखायवा ऽचमाया नुचितत्वाया ऽसमर्थत्वायवा ऽनिःश्रेयसाया कल्याणाया मोचायवा य दु पकारिस कालान्तर मनुयाति तदनुगामिकं तत्प्रतिषेधो ननुगामिका तद्भाव स्तत्व तस्मै प्रननुगामिकत्वाय भवति १० द्वितीयं विपर्ययसूत्र ११ उत्तरसूत्र द्वयेनतु एतदेवा हितहिताादि व्यजितमिति दुर्गतिगमनाय नारकादिभवप्राप्तये सुगतिगमनाय सिद्धादिप्राप्तयइति दुर्गतिसुगत्योः कारणान्तरप्रतिपाद

ज्ञोववज्जंति । पंचहिंठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जइ तंजहा सद्देहिं जाव फासेहि । पंचठाणा जीवा णं अपरिन्नाया अहियाए असुन्नाए अखमाए अणिस्सेयसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति तंजहा सद्दा जा व फासा । पचठाणा सुपरिन्नाया जीवाणं हियाए सुन्नाए जाव आणुगामियत्ताए भवति तं० सद्दा जाव फासा । पंचठाणा परिन्नाया जीवाणं सुगइगमणत्ताए भवंति तं० सद्दा जाव फासा । पंचहिंठाणेहिजीवा

विनिघात मरण पामैं मृगादिवत् ते कहैछे ॥ शब्दथी रूपरसगंधस्पर्शथी पतंग मत्स्य भ्रमर हस्तिवत् ॥ पांच थानके जीवने अणजाण्याथकां एह नाफल जाण्याविना अहितने अर्थ थाय अशुभने अर्थथाय । अक्षमाने अर्थथाय । अनिश्रेयस अकल्याणने अर्थं थाय ससार बधार वाने अर्थं थाय संसारनुं पार नपामै ते कहैछे ॥ शब्द यावत् स्पर्श ॥ पांच थानके जीव भलीरीतें जाण्याथकी जीवने हितने शुभने यावत् संसारनुं पार पामिवा ने अर्थ थाय ते कहैछे ॥ शब्द यावत् स्पर्श ॥ पाच थानक जाण्याथका जीवने सद्गतिने अर्थहोय ते कहैछे ॥ शब्द यावत् स्पर्श ॥ पांच थानकथी

॥ नसूत्रे सुगमेइति इह संवरतपसी मोक्षहेतू तत्रा नन्तर माश्रवनिरोधलक्षण: संवर उक्तो धुना तपोभेदात्मिका: प्रतिमाआह ॥ पचेत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं भद्रा १ महाभद्रा २ सर्वतोभद्रा ३ च द्विचतुर्दशभि र्दिने. क्रमेणभवतीत्युक्त प्राक् सुभद्राव दृष्टत्वात् नलिखिता सर्वतोभद्रातु प्रकारान्तरेणा प्युच्यते द्वि धेय क्षुल्लिका महतीच तत्राद्या चतुर्थादिना द्वादशावसानेन पंचसप्ततिदिनप्रमाणेन तपसा भवति अस्याश्च स्थापनोपायगाथा एगाईपंचंते ठवियम ज्झंतुआइमणुयंति उचियकमेणयसेसे जाणलहुसव्वओभद्दमिति १ पारणकदिनानितु पचविंशतिरिति स्थापना महतीतु चतुर्थादिना षोडशावसानेन षणवत्यधिकदिनशतमानेन तपसा भवति अस्याअपि स्थापनोपायगाथा एगाईसत्तंते ठवियमज्झतुआदिमणुयति उचियकमेणयसेसे जाण महंसव्वओभ इति ॥ १ ॥ पारणकदिना न्येकोनपचाशदिति २ स्थापना भद्रोत्तरप्रतिमा द्विधा क्षुल्लिका महतीच तत्राद्या द्वादशादिनाविंशांतेन पचसप्तत्यधिकादिशत प्रमाणेन तपसा भवति अस्या: स्थापनोपायगाथा पचाईअनवते ठवियमज्झतुआइमणुयति उचियकमेणयसेसे जाणहभद्दोतरंखुड्डति ॥ १ ॥ पारणकदि नानि पचविंशतिरिति ३ महतीतु द्वादशादिना चतुर्विंशतितमांतेन द्विनवत्यधिकदिनशतत्रयमानेन तपसा भवति तत्रचगाथा पचाइगारसते ठवियम

दुग्गइं गच्छंति तंजहा पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं । पंचहिंठाणेहिं जीवा सोग्गइं गच्छंति तंजहा पाणाइ वायवेरमणं जाव परिग्गहवेरमणं । पचपडिमाउ पन्नत्ताउ तजहा भद्दा सुभद्दा महाभद्दा सव्वउभद्दा भद्दु

जीवदुर्गतिमां जाय ते कहेछे ॥ जीवहिंसाथी यावत् परिग्रहथी ॥ पांच थानकें जीव सुगतिमां जायछे ते कहेछे ॥ जीवहिंसाथी विरमवो यावत् परिग्रहथी विरमवो ॥ पाच प्रतिमा ते अविग्रहविशेषकह्या ते कहेछे ॥ भद्रा १ । सुभद्रा २ । महाभद्रा ३ सर्वतोभद्रा ४ ॥ भद्रोत्तरप्रतिमा ५ ॥

ठा० ॥

७६ ॥

णांतुआदमणयंति उचियकमेणयसेसे मङ्ङभणीत्तरजाणत्ति ॥१॥ पारणदिना न्येकोनपंचाशदिति उक्त: कर्मणां निर्जरणहेतु स्तपोविशेषोऽधुना तेषामेव अनुपादानहेतो: संयमस्य विषयभूता नेकेन्द्रियजीवानाह ॥ पंचेत्यादि ॥ स्थावरनामकर्मोदयात् स्थावरा: पृथिव्यादय स्तेषां काया राशय: स्थावरोवा काय: शरीरं येषांते स्थावरकाया: इंद्रसंबंधित्वादिन्द्र: स्थावरकाय: पृथिवीकाय एवंब्रह्मशिल्पसमतिप्राजापत्या अपि अप्कायादित्वेन वाच्या इति एतन्नायकानाह ॥ पंचेत्यादि ॥ स्थावरकायाना पृथिव्यादीनामिति सभाव्यते अधिपतयो नायका दिशामिवे न्द्राग्न्यादयो नक्षत्राणामिवा श्वियमदहनादयो दक्षिणोत्तर लोकार्धयो रिवशक्रेशानावितिस्थावरकायाधिपतयइति एतेषा मधिमत इत्यावधिस्वरूपमाह ॥ पंचहीत्यादि ॥ अव्य अवरं अवधिना दर्शन मवलोकन म र्थानामुत्पत्तुकाम भवितुकाम तत्प्रथमतायां मवधिदर्शनोत्पादप्रथमसमये ॥ खभाएज्जत्ति ॥ क्षाभीयात् क्षुभ्येत् चलतीत्यर्थ: अवधिदर्शनेवा समुत्पत्तुकाम

त्तरपडिमा । पंचथावरकाया पणत्ता तंजहा इंदेथावरकाये बंभेथावरकाये सिप्पेथावरकाये समईथावरका ये पयावएथावरकाये । पंच थावरकायाहिवई प० तं० इंदेथावरकायाहिवई जाव पयावएथावरकायाहिवई पंचहिंठाणेहि ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि तप्पढमयाए खभाएज्जा तंजहा अप्पभूयवा पुढविं पासित्ता

पाच थावरकाय कह्या ते कहेछे ॥ इंद्रथावरकाय पृथिवी १ । ब्रह्म थावर काय ते अप्काय तेहनोस्वामी ब्रह्माछे २। शिल्पथावरकाय ते अग्नि तेहनु स्वामी शिल्पछे ३ । समतीथावरकाय ते वनस्पतिकाय तेहनु स्वामी समती देवताछे ४ ॥ प्राजापत्य थावरकाय ते वनस्पतिकाय तेहनोस्वामी प्रजा पतीछे ५ ॥ पाच थावर कायना अधिपती कह्या ते कहेछे ॥ इंद्रपृथिवी थावरकायनो स्वामी एम यावत् प्रजापति वनस्पति थावरकायनो स्वामी

सति अवधिमानितिगम्यते क्षुभ्ये दल्पभूतां स्तोकसत्वां पृथिवीं दृष्ट्वा वाशब्दो विकल्पार्थः अनेकसत्वव्याकुला भूरिति सम्भावनावा मकस्मा दल्पसत्वभूदर्श नात् आकि मेतदेव मित्येव क्षुभ्ये देवा चोणमोहनीयत्वादितिभावः अथवाभूतशब्दस्य प्रकृत्यर्थत्वा दल्पभूता मत्वा पूर्व्वंहि तस्यवन्नो पृथिवीति सम्भावना सोदिति १ तथा त्यतप्रचुरत्वात् कुंथूनां कुन्थूराशिभूतां कुथूराशित्व प्राप्तां पृथिवी दृष्ट्वा ऽत्यतविस्मयदयाभ्यामिति तथा ॥ मह्इमहालयति ॥ महांतिमहन् महोरगशरीर महाहितनुं बाह्यद्वीपवर्त्तियोजनसहस्रप्रमाण दृष्ट्वा विस्मया द्भया द्वा ३ तथादेव महर्द्धिक महाद्युतिकमहानुभाग महाबलं महासौख्य दृष्ट्वा विस्मयादिति ४ तथा ॥पुरेसुवत्ति॥ नगरा द्येकदेशभूतानि प्राकारावृतानि पुराणीति प्रसिद्धं तेषु पुराणानि चिरतनानि ॥उरालाइंति॥ क्वचित्पाठ

तप्पढमयाए खन्नाएज्जा । कुंथुंकुंथुरासिन्नूयत्रा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाएखन्नाएज्जा । महइमहालयंवाम होरगसरीरपासित्तातप्पढमयाएखन्नाएज्जा । देववा महड्डिय जाव महेसक्क पासित्ता तप्पढमयाए खन्नाए

५ ॥ पांचथानके अवधि दर्शन उपजवा आव्यों ते पणि उपजवाने पहिलेज समये चोभनां पामें स्खलना पामें ते कहेछे ॥ अलपमूत थोडी पृथवी देखी अने घणा जीवथी भरीदेखीने १ । अथवापूर्वे जे पृथवीने घणी जाणतो हतो ते अल्पदेखीने जाणे जे एहस्युं एम प्रथम समयमा चोभ पामे १ । कुंथु जीवनी राशिभूत पृथ्वी देखी एतले घणा कुथुआकुल पृथ्वी देखी प्रथम समयमा चोभ पामे अत्यत विस्मय ऊपजे २ । अत्यंत मोटा मोटा सर्पनाशरीर देखी पहले चोभना पामें विस्मयथी अथवा भय पामवाथी मनुष्यक्षेत्रवाहिर जेद्वीप तेहमां सर्पनुं १ हजार योजननो शरीरछे एहवा मोटासर्पछे ३ । देवताने महारिद्धिमंत यावत् महासुखीदेखी ते प्रथम चोभ पामे जे अहह एहवी मोटी रिद्धछे ४ ॥ मोटा जूंना नगरने

०॥ त्वात मनोहराणीत्यर्थः ॥ मग्गमहालयाइंति ॥ विस्तीर्णत्वेन महानिधानानीति महामूल्यरत्नादिमत्वेन प्रहीणाः स्वामिनो येषांतानि तथा प्रहीणाः
७॥ सेताारः सेचका स्रोवेरो पर्युपरिधनप्रक्षेपकाः पुत्रादयो येषा तानि तथा अथवाप्रहीणाः सेतव स्यादभिज्ञानभूताः पालय स्त्रमार्गोवा तिचिरतनतया
प्रतिजागरकाभावेनच येषां तानि प्रहीणसेतुकानि किं बहुना निधायकानां यानि गोत्रागाराणि कुलगृहाणि तान्यपि प्रहीणानि येषा मथवा तेषा
मेव गोत्राणि नामा न्याकाराश्च कृतय स्ते प्रहीणा येषांतानि प्रहीणगोत्रागाराणि प्रहीणगोत्राकाराणिवा एव मुच्छन्नस्वामिकादीन्यपिनवर मिह प्रही
णाः किंचित्सत्तावतः उच्छया निर्नष्टसत्ताका यानी माणि अनतरोक्तविशेषणानि तथा ग्रामादिषु यानि तत्र करादिगम्यो ग्रामः आगत्यकुर्वंति यत्र स
आकरो लोहाद्युत्पत्तिभूमिरिति नास्मिन् करोस्तीति नकर धुलीप्रकारोपेतं खेट कुनगर कर्वट सर्वतोऽर्द्धयोजनात्परेणस्थितग्रामं मडबं यस्यजलस्थलपथा वु
भावपि तद्द्रोणमुख यत्र जलपथस्थलपथयोरन्यतरेण पर्याहारं प्रवेश स्त त्पत्तन तीर्थस्थान माश्रमः यत्र पर्वतनितबादि दुर्गो परचक्रभयेन रक्षार्थं धान्या

ज्जा । पुरेवा पोराणाइं महइ महालयाइं महाणिहाणाइ पहीणसेउयाइं पहीणगोत्तागाराइं उच्छिन्नसामि
याइं उच्छिन्नसेउयाइ उच्छिन्नगोत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागरनगरखेडकव्वडमडबदोणमुहपट्टणा सम

विषे जूना मोटामोटा निधान महामूल्यरत्न प्रहीण थयाछे स्वामी जेहना क्षयगयाछे सेवनार पुत्रादि जेहना क्षयगयाछे गोत्रघर निधान दाटनारनां
विच्छेद थयाछे स्वामी उच्छेद थयाछे गोत्रीयघर जेहना जे एह गाम आकर नगर खेट कर्बट मडब द्रोणमुख पाटण आश्रम सवाह संनिवेश इ
त्यादिकने विषे घोडाकारे मार्गने विषे त्रिक चतुष्क चाचर चतुर्मुख महापथ ते राजमार्गमा नगर नो पाणी जावानोमार्ग तेहमां मसाण सूनांघर

दीनि संवहंति ससंवाहः यत्र प्रभूतानां भाण्डानां प्रवेशः स संनिवेश स्तथा शृङ्गाटकं त्रिकोणं रथ्यांतरं स्थापनात्रिकं यत्र रथ्यानां त्रयं मिलति चतुष्कं यत्र चतुष्टयं चत्वरं रथ्याष्टकमध्यं चतुर्मुख देवकुलादि महापथो राजमार्गः पथो रथ्यामात्र एव भूतेषुवा स्थानेषु नगरनिर्द्धमनेषु तत्चालेषु तथा अगारशब्द सबधात् श्मशानागारं पितृवनगृह शून्यागार प्रतीत तथा गृहशब्दसबधात् गिरिगृहं पर्वतोपरिगृह कन्दरगृहं गिरिगुहा गिरिकन्दरवा शांतिगृहं यत्र राज्ञां शांतिकर्म होमादि क्रियते शैलगृह पर्वत मुत्कीर्य यत्कृत उपस्थानगृह आस्थानमण्डपो अथवा शैलोपस्थानगृह पाषाणमण्डपः भवनगृहं य त्र कुटम्बिनो वास्तव्याभवंतीति अथवा शांत्यादिविशेषितानि भवनानि गृहाणिवा तत्र भवन चतुःशालादि गृहन्त्वपवरकादिमात्रं तेषु संनिचिप्तानि न्यस्तानि दृष्ट्वा क्षुभ्येत् दृष्टपूर्वतया विस्मया त्क्षोभाद्वेति ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमनमिति केवलज्ञानदर्शनतु न स्कम्भीया त्केवलीच याथात्म्येन वस्तुद

संबाहसंनिवेसेसु सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु णगरणिद्धमणेसु मसाणसुन्नागारगिरिकंद रसंतिसेलोवट्ठाणभवणगिहेसु संनिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइंवा पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं उहिदंसणेसमुप्पज्जिउंकामे तप्पढमयाए खभाएज्जा ॥ पंचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदंसणे

मां पर्वतनी गुफामां शांतिघर ते होमकरवानो घर तेहमां शैलघर पर्वत कोरी घरकीधो उपस्थान आस्थानसभा भवनघर मोटा कुटुंबीनांघर ए तला स्थानकमां दाटया होय रहिया होय ते देखीने प्रथम क्षोभना पांमे पूर्वे एहवा दीठानही ते देखीने विस्मय ऊपजे ५ । इत्यादि पांच था नके अवधिदर्शन उपजतो प्रथम क्षोभना पांमें क्षीण मोहनीयकर्म नथी थयो तेमाटे ॥ पांच थानके केवलज्ञान एतले केवल दर्शन उपजवा मांड्यो

१०॥ ८॥

र्शनात् क्षीणमोहनीयत्वेन भयविस्मयलोभाद्यभावेना तिगम्भीरत्वाच्चेति अतआह ॥ पंचहीत्यादि ॥ सुगममिति तथा नारकादिशरीराणि बीभत्सा न्यु दाराणिच दृष्ट्वापि नकेवलदर्शन स्क्षुभ्यतीति शरीरप्ररूपणाय ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ सूत्रप्रपचोगतार्थश्चाय नवरं पचवर्णत्वं नारकादिवैमानिकांता नां शरीरिणा शरीराणा निश्चयनयात् व्यवहारतस्तु एकवर्णप्राचुर्यात् कृष्णादिप्रतिनियतवर्णतैवेति ॥ जावसुक्किलत्ति ॥ किण्हा नीला लोहिया हालि द्दा सुक्किलाय जाव महुरत्ति तित्ता कडुया कसाया अंबिला महुरा जाव वेमाणियाणंति ॥ चतुर्विंशतिदंडकसूत्राणि ॥ सरीरेत्ति ॥ उत्पत्ति समया दा

समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए णोखन्नाएज्जा तंजहा अप्पनूयंवा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए णोखन्नाए ज्जा सेसंतहेव जाव भवणगिहेसु संनिक्खित्ताइं चिठंति ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए णोखन्नाएज्जा सेसंत हेव । इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं जाव णोखन्नाएज्जा ॥ णेरइयाणंसरीरगा पंचवन्ना पंचरसा पन्नत्ता तंजहा किण्हा जाव सुक्किल्ला तित्ता जाव मधुरा । एव निरंतरं जाव वेमाणियाण । पंचसरीरगा पन्नत्ता तंजहा

ते पहले समये क्षोभना नपामे क्षीण मोहनीयकर्म थयो तेमाटे तेकहेछे अल्पभूत पृथिवी देखीने ते प्रथम समयमा क्षोभना नपामे बीजो तिमज पूर्व वत् यावत् भवनघरमा थाप्या होय ते निधान देखीने प्रथम समयमा क्षोभना नपामे एम पांच थानके यावत् क्षोभना न पामे ॥ नारकीना श रीर पाचवर्ण ना तथा पाच रसना कहिया ते कहेछे कृष्ण यावत् ऊजलो सपेद वणि सर्व ठेकाणे तीखा यावत् मधुर रस एम अंतर रहित याव त् वैमानिक चौवीस दंडक लगे ॥ पाच शरीर कह्या ते कहेछे औदारिक १ । वैक्रिय २ । आहारक ३ । तैजस ४ । कार्मण ५ ॥ औदारिक शरीर

रभ्य प्रतिक्षणमेव शीर्यतइति शरीरं ॥ ओरालियत्ति ॥ उदारं प्रधानं उदार मेवौदारिकं प्रधानता चास्य तीर्थंकरादिशरीरापेक्षया महि ततो ष्यत्प्रधान तर मस्ति प्राकृतत्वेनच ॥ ओरालियति ॥ अथवा उरालनाम विस्ताराल विशाल सातिरेकयोजनसहस्त्रप्रमाणत्वा दस्या न्यस्य वा वस्थितस्यैव मसम्भवा दुक्तञ्च जोयणसहस्समहियं ओहयएगेंदिएतरुगणेसु मच्छजुयलेसहस्स उरगेसुयगभजाएसुत्ति॥ १ ॥ वैक्रियस्य लक्षप्रमाणत्वे ष्यनवस्थितत्वात् तदेव औरालिकं अथवा उराल मल्पप्रदेशोपचितत्वात् बृहत्वाच्च भिंडवदिति तदेव औरालिक निपातनात् अथवा ओरालं मासास्थिस्नाय्वाद्यवबद्धं तदेव औ रालिकमिति उक्तंच तत्थोदारमुरालं उरालओरालमहवविन्नेय ओदारियंतिपढम पडुच्चतित्थेसरसरीरं ॥ १ ॥ भण्णइयतहोरालं वित्थरवंतंवणस्सइंपप्प प गईएनत्थिअन्न एइहमेत्तंविसालतु ॥ २ ॥ उरलथोवपएसो वचियपिमहल्लगंजहाभिंड संसट्ठिएहारुवद्ध ओरालसमयपरिभासत्ति ॥ ३ ॥ वेउव्वियत्ति ॥ वि विधा विशिष्टावा क्रिया विक्रिया तस्यां भव वैक्रियं उक्तंच विविहायविसिट्ठावा किरियाविक्किरियतीएजंभवतमिह वेउव्वियतयंपुण नारगदेवाणयगईए त्ति ॥ १ ॥ विविध विशिष्टंवा कुर्व्वंति तदिति वैकुर्व्विकमिति वा ॥ आहारएत्ति ॥ तथाविधकार्योत्पत्तौ चतुर्दशपूर्वविदा योगवलेना क्रियत इत्याहारकं उक्तंच कज्जम्मिसमुप्पन्ने सुयकेवलिणोविसिट्ठलद्धीए जरत्थआहरिज्जइ भणतिआहारगतंतु ॥ १ ॥ कार्याणि त्वमूनि पाणिदयरिद्धिसंदरि सणत्थमत्थोवग्ग हणहेओवा ससयवुच्छेयत्थं गमणंजिणपायमूलंमि ॥ १ ॥ कार्यसमाप्तौ पुन र्मुंचते याचितोपकरणवदिति ॥ तेयएत्ति ॥ तेजसो भाव स्तैजस मूष्मादिलिंग

उरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए । उरालियसरीरे पंचवन्ने पंचरसे पन्नत्ते तंजहा किण्हे जाव

ने पांचवर्ण पांचरस कहिया कृष्ण यावत् सपेद तीखो यावत् मधुर मीठो ॥ एम यावत् कार्मण शरीर लगे पांच वर्ण पांच रस कहवा ॥ सघलाई

सितं उत्ताव सत्वास उक्कसितं रसादिपापारयागजगाणंच तेयगलजिनिमित्तं पतेयगंघोप्रनायत्वमिति ॥ १ ॥ कम्मएत्ति ॥ कार्मणोविकारः कार्मणं सकल शरीरकारणमिति उक्तंच कम्मविगारोकम्मण मट्ठविहविचित्तकम्मनिप्पन्नं सव्वेसिसरीराणं कारणभूयंमुणीयव्वंत्ति १ ॥ औदारिकादिक्रमश यणोत्तरं सूक्ष्मत्वा मदेशवाहुल्याशेति तथा सर्व्वाण्यपि बादरबौंदिधराणि पर्याप्तकत्वेन स्थूराकारधारीणि कलेवराणि शरीराणि मनुष्यादीना पंचादिवर्णादी न्य वयवभेदेनेति श्रणिगोलकादिषु तद्वेयो पलब्धेः ॥ दोगंधत्ति ॥ सुरभिदुरभिभेदात् ॥ अट्ठफासत्ति ॥ कठिनमृदुशीतोष्णगुरुलघुस्निग्धरूक्षभेदादिति अबादर बौंदिधराणि तु न नियतवर्णादिव्यपदेश्या अपर्याप्तकत्वेना वयवविभागाभावादिति अनंतरं शरीराणि प्ररूपितानीति शरीरविशेषगतान् धर्मविशेषान् ॥ पंचहिठाणेहिं॥ इत्यादिना ऐकसूत्रेतेन ग्रंथेन दर्शयति सुगमश्चाय नवरं पंचसु स्थानकेषुश्राख्याता दिक्रिया विशेषलक्षणेषु पुरिमा भरतेरावतेषु चतुर्विं शति रादिमा स्तेच पश्चिमकाश्चरमा पुरिमपश्चिमका स्तेषां जिनानां महतां ॥ दुग्गमति॥ दुःखेन गम्यतइति दुर्गमं भावसाधनीयं आपृच्छत्ति रित्यर्थस्तद्भवति विनेयानां मृजुजडत्वेन वक्रजडत्वेनच तानि चेमानि तद्यथेत्यादि दुःखेन आख्यानं विभजन दर्शन तितिक्षण मनुचरणचे त्येव वक्तव्येपि येषु स्थानेषु आपृच्छ

सुक्किल्ले तित्ते जाव मउरे । एवं जाव कम्मगसरीरे । सव्वेविणं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवन्ना पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा । पंचहिठाणेहिं पुरिमपच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवइ तंजहा दुआइक्खं दुविभज्जं

बादर मोटा आकारना धरणहार पर्याप्ता शरीर ते पांच वर्ण सहित पांच रस बेगंध आठ स्पर्श सहित कहिया ॥ पांच थानके प्रथम अने छे हला जिनने वारे तत्व दुखथी समझे रिजुजड वक्रजड माटे ते कहेछे शिष्यने दुखथी कहवाय भेद भावना विभागदुखथी समझे जीवा जीवनुं दे

वृत्ति र्भवति तानि तद्योगात् कृच्छ्रवृत्ती न्येवोच्यतइति कृच्छ्रवृत्तिद्योतकदुःशब्दविशेषितानि कर्मसाधनशब्दाभिधेया न्याख्यानादीनि विचित्रत्वात् शब्द प्रवृत्तेराह॥ दुआइक्खमित्यादि॥ तत्र दुराख्येयं कृच्छ्राख्येयवस्तुतत्त्व विनेयाना महावचनाटोपप्रबोध्यत्वेन भगवता मायासोत्पत्तेरिति एव माख्याने कृच्छ्र वृत्ति रता एव विभजनादिष्वपि भावनीया तथा आख्यातेपि तत्र दुर्विभज कष्टविभजनीयं ऋजुजडत्वादेरेव तद्भवतीति दुशक शिष्याणां वस्तुतत्वस्य वि भागेना वस्थापनमित्यर्थः दुर्भिभवमित्यत्र पाठांतरे दुर्विभाव्यं दुश्शका विभावना कर्त्तु तस्येत्यर्थः तथा॥ दुप्पस्साति॥ दुक्खेन दर्श्यतइति दुर्दर्श सुपपत्तिभि र्दुश्शका शिष्याणा प्रतीता वारोपयितु तत्वमितिभावः॥ दुतितिक्खति॥ दुखेन तितिक्षते सह्यतइति दुस्तितिक्ष परीषहादि दुःशकपरीषहादिक मुत्पन्न न्तितिक्षयितु शिष्य तत्प्रतिक्षमां कारयितुमिति भावइति॥ दुरणुचरति॥ दुःखेना नुचर्य्यंते ऽनुष्ठीयतइति दुरनुचरमंतर्भूतकारितार्थत्वेन दुःशक मनुष्ठा पयितुमित्यर्थः अथवा तेषां तीर्थं दुराख्येयं दुर्विभज माचार्य्यादीना वस्तुतत्त्व स्वशिष्या न्प्रति आत्मनापि दुर्दर्श्यदुस्तितिक्ष दुरनुचर मित्येवं कारितार्थवि मुच्य व्याख्येय तेषामपि ऋजुजडादित्वादिति मध्यमानान्तु सुगम मऊच्छ्रवृत्ति स्तद्विनेयाना मृजुप्राज्ञत्वेना ल्पप्रयत्नेनैव बोधनीयत्वा द्विहितानुष्ठाने सु

दुपस्सं दुतितिक्खं दुरणुचरं। पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणंसुग्गमं भवइ तंजहा सुआइक्खं सुवि

खाडवु ते दुखथी परिसहादिक दुखथी सहे आचारनुं पालवो दोहिलो॥ पाच थानके मध्यम एतले २२ जिनना वारेका साधुने सुगम सोहिलो कह्यो ते कहेछे सोहिलो कहवो १। भाव भेद समझवा सुगम २। जीवादिकनो देखावो सुगम ३। खमवो सुगम ४। पालवो सुगम ५॥ पाच था नके श्रमण भगवंत महावीरने श्रमण निग्रंथ साधुने नित्य वर्णव्या नित्य वखाण्यां नित्य नामथी कह्या नित्य प्रशस्या नित्य करवु एम आज्ञा

खप्रवर्त्तनीयत्वा चेति शेष पूर्वेण अवर मकृत्क्षार्थविशिष्टता आख्यानादीनां वाच्या तथा ॥ सुरणुचरंति ॥ रेफःप्राकृतत्वादिति नित्यं सदा वर्णितानि फ
लतः कोर्त्तितानि सर्वशिदतानि नामत ॥ वुइयाइति॥ व्यक्तवाचोक्तानि स्वरूपत' प्रशस्तानि प्रशसितानि श्लाघितानि प्रसुखुतावितियचनात् अभ्यनुज्ञाता
नि कर्त्तव्यतया अनुमतानि भवतोति अयच सूत्रोतचेपः प्रतिसूत्रे वैयावृत्यसूत्रं यावत् द्रष्टव्यत इति तत्र च्यांत्यादयः क्रोधलोभमानमायानिग्रहा स्तथा लाघ
वमुपकरणतो गौरवत्रयत्यागतश्चेति तथा अन्यामि पच सद्भ्योहित सत्य मनलीक तच्चतुर्विध यतो अवाचि अविसंवादनयोगः कायमनोवागजिह्मताचैव
सत्य चतुर्विध तच्च जिनवरमतेस्ति नान्यत्रेति तथा संयमन सयमो हिंसादिनिवृत्तिः सच सप्तदशविध यदुक्तं पुढविदगअगणिमारुय वणस्सइवितिच
उपणिदिअज्जावे पेहोप्पेहपमज्जण परिठ्ठवणमणोवईकाये ॥ १ ॥ अथवा पचाश्रवाद्विरमण पचेंद्रियनिग्रहःकषायजय. दडत्रयविरतिश्चे तिसयम.सप्तदश
भेदइति ॥ १ ॥ तथा तप्यते अनेनेति तपः यतो ऽभ्यधायि रसरुधिरमासमेदो स्थिमज्जाशुक्राण्यनेनतप्यते कर्माणिवाशुभानी त्यतस्तपोनामनैरुक्त ॥ १ ॥

अजं सुपस्सं सुतितिरकं सुरणुचरं । पंचठाणाइं समणेणं भगवयामहावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं णिच्चं
वस्रियाइं णिच्चकित्तियाइ णिच्चबुइयाइं णिच्चंपसत्थाइं निच्चमब्भणुण्णाइ भवति तजहा खती मोत्तीअज्जवे
मद्दवे लाघवे। पंचठाणाइं समणाणं जावअब्भणुन्नायाइं भवति तजहा सच्चे संजमे तवे चियाए बंभचेरवासे

दीधीछे ते कहेंछे क्षमा १ । निर्लोभता २ । आर्जव भद्रक ३ । मार्दव अहकार रहितता ४ । लाघव द्रव्यभावे हलुकापण ५ ॥ पांच थानकें श्रमण
भगवत महावीरने यावत् आज्ञा दीधीछे ते कहेंछे सत्य १ । १७ भेदे सयम २ । तप १२ भेदे ३ । त्यागी यती साधुने विभाग ४ । बृम्हचर्य पालवो

तच्च द्वादशधा यथाह अणसणमूणोयरिया वित्तीसंखेवणंरसच्चावो कायकिलेसोसंली णयायबझोतवोहोइ ॥ १ ॥ पायच्छित्तविणओ वेयावच्चंतहेवसज्झा ओ झाणउस्सग्गोवियअभ्भितरओ तवोहोइत्ति ॥ २ ॥ चियाएत्ति ॥ त्यजन त्यागः सविग्नैकसभोगिकाना भक्तादिदानमित्यर्थः गाथेचात्र तोकायपच्च क्खाणो आयरियगिलाणबालवुड्ढाणं दिज्जासणाइसते लाभेकयवीरियारो ॥ १ ॥ सविग्गअन्नसंतो इयाणदेसिज्जसड्ढगकुलाइं अतरंतोवासभोइयाणदेयेज हसमाहीति ॥ २ ॥ बंभचेरे मैथुनविरमणे तेनवा वासो ब्रह्मचर्यवास इत्येष पूर्वोक्तैः सहदशविधः श्रमणधर्म इति अन्यत्रलयमेव मुक्तः खंतीयमद्दवज्जव मुत्तीतवसजमेवबोधव्वे सच्चसोयंआकिं चनचबंभचजइधम्मोत्ति ॥ १ ॥ इतश्चसाधुधर्म्म भेदस्य वाह्यतपोविशेषस्य वृत्तिसंक्षेपाभिधानस्यभेदाऽ ॥ उक्खित्तचर येत्यादिना ॥ अभिधीयते तत्र उत्क्षिप्त स्वप्रयोजनाय पाकभाजना दुद्धृत तदर्थं मभिग्रहविशेषा चरति तन्नवेषणाय गच्छती त्युत्क्षि प्तचरकः एवं सर्व त्र नवर निक्षिप्तमनुद्धृतं अतएव मांत भुक्तावशेष वल्लादिप्रकृष्ट मांत प्रातत दिवपर्युषित रूक्ष निःस्नेहमिति इहच भावप्रत्ययप्रधानत्वेन उत्क्षिप्तचरक त्वमित्यादि द्रष्टव्य मेव मुत्तरत्रापि भावप्रधानता दृश्या इहचाद्यौ भावाभिग्रहा वितरे द्रव्याभिग्रहा यतो ऽभाणि उक्खित्तमाइचरगा भावजुयाखलुअ

पंचठाणाइं समणाणं जाव अभ्भणुन्नायाइं भवंति तंजहा उक्खित्तचरए णिक्खित्तचरए अंतचरए पंतचरए

५ ॥ पांच थानके यावत् भगवान एम आज्ञा दीधीछे तेकहेछै पोताने अर्थे भाजनथी उपाडयो १ । आहार लेवानी गवेषणा २ । भाजन नथी ऊध

॥ भिग्गहोइत्ति गायतोयकयंतो जंदिट्ठनिसत्तमाइया ॥ १ ॥ तथा लेवडमलेवडंवा अमुगंदव्वंचअज्जघेच्छामि अमुगेणउदव्वेणं अहदव्वाभिग्गहोनामंति ॥ १ ॥ ॥ ट

एवमन्यत्रापि विशेष ऊह्य इति अज्ञातः अनुपदर्शितस्वाजन्यर्द्धिमत्प्रव्रजितादिभावः संचरति भिक्षार्थं मटती त्यज्ञातचरकः तथा ॥ अन्नइलायचरएत्ति ॥ ॥

अन्नग्लानको दोषान्नभुगिति भगवतीटीपनकेउक्त एवविधः स ह्यथवा अन्न विना ग्लायकः समुत्पन्नवेदनादिकारण एवेत्यर्थः अन्यस्मैवा ग्लायकाय भोजनार्थं

चरतीति अन्नग्लानकचरको ऽन्न ग्लायकचरको अन्यग्लायकचरकोवा क्वचित्पाठः ॥ अन्नवेलत्ति ॥ तत्र अन्यस्यां भोजनकालापेक्षया आद्यावसानरूपायां

वेलाया समग्रे चरतीत्यादि द्दश्य मयच कालाभिग्रह इति तथा मौन मौनव्रतं तेन चरति मौनचरकः तथा संसृष्टेन खरटितेने त्यर्थो हस्तभाजनादिना

दीयमानं कल्पिक कल्पवत् कल्पनीय मुचितमभिग्रहविशेषा ज्ञातादि यस्यस संसृष्टकल्पिक स्तथा तज्जातेन देयद्रव्यप्रकारेण यत्ससृष्टं हस्तादि तेनदीय

मानं काल्पिकं यस्येति विग्रह इति उपनिधीयत इत्युपनिधिः प्रत्यासन्न य द्यथाकथचि दानीत तेनचरतीति तद्गृहणाये त्यर्थः इत्यौपनिधिकः उपनिहित

मेववा यस्य ग्रहणविषयतयास्ति स प्रज्ञादेराकृतिगणत्वेन मत्वर्थीयणप्रत्यये औपनिहित इति तथा शुद्धा अनतिचारा एषणाशंकितादिदोषवर्जितरूपा

लूहचरए । पंचठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तंजहा अन्नायचरए अन्नवेलचरए मोणचरए संसठक ।

स्यो ते लेवानी गवेषणा अते खाधी पछे ऊगस्यो लिये ३ । प्रांत ते वल्ल चणयादि आहार लीजिए ४ । लूखो ते घीतेल रहित आहार वोसरे ५ ॥ ॥

पाच थानके यावत् भगवते आज्ञा दीधीछे ते कहेछे पोतानी जाति कुल सगाई अण जणावी आहार लेवो १ । भोजननो काल छाडी गोचरी जाय

ते कालाभिग्रह २ । मौन व्रतधारी गोचरी जाय ३ । हस्तादि खरडे हाथथी कल्पनीय लेवे ४ । जे आहारदियेछे तेणेंज घरडो हाथे इम कल्पनीय

॥ संसट्ठमसंसट्ठेत्यादि ॥ सप्तप्रकारा अन्यतरावा तयाचरती त्युत्तरपदवृद्धा शुद्धैषणिकः संख्याप्रधानाः परिमिता एव दत्तयः सकृद्भक्तादिचेपलचणा ग्रा ह्या यस्यस संख्यादत्तिकः दत्तिलचणस्रोको ऽत्र दत्तीओजत्तिएवारे खिवइहोंतितत्तिता अवोच्छिन्ननिवायावो दत्तीहोइदवेतरत्ति ॥ १ ॥ तथा दृष्टस्यै व भक्तादे र्लाभ स्तेन चरतीति तथैव दृष्टालाभिक स्पृष्टस्यैव साधो र्दीयत इत्येवंयोलाभ स्तेन चरतीति प्राग्वत् पृष्टलाभिकः आचाम्ल समयप्रसिद्ध तेनचर तीत्याचाम्लिकः निर्गतो घृतादिविकृतिभ्यो यः स निर्विकृतिकः पुरिमार्द्ध पूर्वाह्नलचण प्रत्याख्यानविशेषो ऽस्ति यस्यस तथा परिमितो द्रव्यादिपरि माणतः पिण्डपातो भक्तादिलाभो यस्यास्ति सपरिमितपिण्डपातिकः भिन्नस्यैव स्फोटितस्यैव पिण्डस्य सक्तुकादिसंबधिनः पातो लाभो यस्यास्ति स भिन्नपिंडपातिकः ग्रहणानन्तरमभ्यवहरण भवतीत्य त एतदुच्यते अरस हिंग्वादिभि रसस्कृत माहारयती त्यरसोवा हारो यस्यासा वरसाहार एव सर्वत्र

प्पिए तज्जायसंसठकप्पिए । पंचठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तंजहा उवनिहिए सुद्धेसणिए संखा दत्तिए दिठलाभिए पुठलाभिए । पंचठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तंजहा आयंबिलए निब्बिइए पुरिमढ्ढिए परिमियपिंडवाइए भिन्नपिंडवाइए । पंचठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तंजहा अरसा

आहार लेवो एहवा अभिग्रह करे ५ ॥ पांच थानके यावत् एम आज्ञा दीधीछे ते कहेछे कोईक रीते आण्यो आहार लेवो ते उपनिहित १ । ए षणा शुद्ध ४२ दोषरहित लेवो २ । संख्यादत्ति लेवो ३ । नजरथी देखी लाभस्यें तोलेस्युं ४ । पूछो ते लाभस्ये तोलेस्युं ५ ॥ पांच थानकें यावत् आज्ञा दीधीछे तेकहेछे आंबिलकरे १ । नीवीकरेविगयमूंकें २ । पुरिमार्द्ध बेपहरनुं सूर्योदयथी पचखाण करे ३ । द्रव्यपरिमाणकरी आहार लेवो जे एतला

नवरं विरसं विगतरसं पुराणधान्योदनादि रूक्षं तैलादिवर्जितमिति तथा अरसेन जीवितुं शील माजन्मापि यस्यास तथा एव मन्यथापि ॥ ठाणाइए
एत्ति ॥ स्थानं कायोत्सर्गस्त्व मति ददाति मकरोति अतिगच्छति वेति स्थानातिदः स्थानातिगोवेति उत्कुटुकासन पीठादौ पुतालगनेनोपवेशनरूप मभि
गृहतो यस्यास्ति स उत्कुटुकासनिकः तथा प्रतिमया एकरात्रिकादिकया कायोत्सर्गविशेषेण तिष्ठती त्येवंशीलो यः स प्रतिमास्थायी वीरासनं भून्यस्त
पादस्य सिंहासने उपविष्टस्य तदपनयने या कायावस्था तद्रूप दुष्करच तदित्यतएव वीरस्य साहसिकस्या सनमिति वीरासन मुक्त तदस्यास्तीति वी
रासनिक स्तथा निषद्योपवेशनविशेषः साच पंचधा तत्र यस्यां समपादौ पुतौच स्पृशतः सा समपादपुता यस्यान्तु गोरिवोपवेशन सागोनिषद्यिका यत्र

हारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लूहाहारे । पंचठाणा जाव नवति तंजहा अरसजीवी विरसजीवी
अंतजीवी पतजीवी लूहजीवी । पचठाणाइं जाव नवति तजहा ठाणाइए उक्कुडुआसणिए पडिमठाइ
वीरासणिए णेसज्जिए । पंचठाणाइं जाव नवंति तंजहा दंडायइए लगंडसाई आयावए अवाउडए अकंडु

द्रव्य लेवा ४ । भिन्न फेस्यो फलादि आहारनो लाभ नलेवे ५ ॥ पाच थानक यावत् आज्ञादीधीछे तेकहैछे अरस लवणादि रहित आहार लेवो १।
विरस जूना धाननो आहार लेवो २ । जगन्यो आहार लेवो ३ । प्रात तुच्छ आहार लेवो ४ । लूखो आहार लेवो ५ ॥ पांच थानक यावत् कह्या
ते कहैछे । अरस आहार करी जीवे १ । विरस आहार करी जीवे २ । अंत आहार करी जीवे ३ । प्रात आहार करी जीवे ४ । लूखो आहार क
री जीवे ५ ॥ पाच थानक अनुज्ञात होय ते कहैछे काउसग्गमारहै १ । ऊकडू आसन बेठे २ । एकरात्रि प्रमुख प्रतिमा अभिग्रह विशेष लेई रहै

पुताभ्यामुपविष्टः सन् एकं पाद मुत्पाट्यास्ते सा हस्तिशुंडिका पर्यंका ऽर्द्धपर्यंकाच प्रसिद्धा निषद्यया चरति नैषद्यिक इति दंडस्येवा यतिदीर्घत्वं पादप्र सारणेन यस्य स दंडायतिकः तथा लगड किल दुःसस्थित काष्ठं तद्वन्मस्तकपार्ष्णिकानां भुवि लगनेन पृष्टस्य चालगनेनेत्यर्थः यः शेते तथाविधाभिग्रहा त्स लगडसायी तथा आतापयत्यापनां शीतातपादिसहनरूपां करोती त्यातापकः तथा नविद्यते प्रावृतं प्रावरण मस्ये त्यप्रावृतकः तथा न कंडूयत इ त्यकडूयकः स्थानातिगेत्यादि पदानां कल्पभाष्यव्याख्यैव उड्डाणठाणा इयतुपडिमायहोंतिमासाई पचेवनिसेज्जाओ तासिविभासाउकायव्वा ॥ १ ॥ वीरासणतुसीहा सणेव्वजहमुक्कजाणुगनिविट्ठो दंडेलडंगउवमा आययकुज्जेयदोण्हपि ॥ २ ॥ आयावणायतिविहा उक्कोसा १ मज्झिमा २ जहन्नाय ३ उ क्कोसाउनिविणा निसणमज्झावियजहन्ना ॥ ३ ॥ तिविहाहोइतिविणा ओमंथिय १ पास २ तइयउत्ताणत्ति ॥ निषणापि त्रिविधा गोदोहुक्कडपलियं कमेसतिविहायमज्झिमाहोइ तइयाउहत्थिसुडे गपायसमपाइयाचेन्नत्ति ॥ १ ॥ इयच निषणादिका त्रिविधाप्यातापना स्वस्थाने पुनरुत्कृष्टादिभेदा ओमथि यादिभेदेनावगतव्या इहच यद्यपि स्थानातिगत्वादीना मातापनाया मतर्भाव स्तथापि प्रधानेतरविवक्षया नपुनरुक्तत्वं मतव्यमिति तथा महानिर्जरो इ

यए। पंचहिंठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तजहा अगिलाए आयरियवेयावच्चं

३। वीरासनथी वैठे ४। निषेधिका आसन विषेशमां रहै ५॥ पांच थानक अनुज्ञात होय तेकहैछे दंडनीपरे पग पसारी रहवो १। लकुट लाक डानी परे सोई मांथो जमीनमां लगाडे २। आतापना लेवे ३। शीत ठांढ खमै उश्नकाले तडखो खमै ४। खाज शरीरमां न खणे ५॥ पांच थानके श्रमण निग्रंथ मोटी निर्जरा कर्मक्षय पामे मोटा संसारनो छेद नासकरे तेकहैछे अग्लान पणे आचार्यनी वेयावच करे १। एम उपाध्यायनी वेया

कर्म्मक्षयकारी महानिर्जरत्वात् महत्पर्यवसानमंतो यस्य स तथा ॥ अगिलाएत्ति ॥ अग्लान्या अखिन्नतया बहुमानेनेत्यर्थः आचार्यः पंचप्रकार स्तद्यथा प्रव्राजनाचार्यो दिगाचार्यः सूत्रस्योद्देशनाचार्यः सूत्रस्यसमुद्देशनाचार्यो वाचनाचार्य श्चेति तस्यवैयावृत्त्यं व्यावृतस्य शुभव्यापा रस्यो भावः कर्मवा वैयावृत्त्यं भक्तादिभि र्धर्मोपग्रहकारिवस्तुभि रुपष्टंभकारण माचार्यवैयावृत्त्यं तत्कुर्वाणो निर्जरयतीति एव मुत्तरपदेष्वपि नवरं मुपाध्या यः सूत्रदाता स्थविरः स्थिरीकरणात् अथवा जात्या षष्टिवार्षिकः पर्यायेण विंशतिवर्षपर्यायः श्रुतेन समवायधारी तपस्वी मासक्षपकादिः ग्लानो ऽशक्तो व्याध्यादिभिरिति तथा ॥ सेहत्ति ॥ शैक्षको ऽभिनवप्रव्रजितः साधर्मिकाः समानधर्मा लिंगतः प्रवचनत श्चेति कुलचान्द्रादिकं साधुसमुदायविशेषरूपं प्रती तं गणः कुलसमुदायः संघो गणसमुदाय प्रत्येकं सूत्रद्वयेन दशविधं वैयावृत्त्य माभ्यंतरतपोभेदभूतं प्रतिपादित मिति उक्तंच आयरियउवज्झाए थेरतव

करेमाणे एवंउवज्झायवेयावच्चं थेरवेयावच्चं तवस्सिवेयावच्चं गिलाणवेयावच्चं करेमाणे। पंचहिं ठाणेहिं समणेनिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तंजहा अगिलाएसेहवेयावच्चं करेमाणे। अगिलाएकुलवेया वच्चंकरेमाणे अगिलाएगणवेयावच्चकरेमाणे अगिलाएसंघवेयावच्चं करेमाणे अगिलाए साहम्मियवेयावच्चं करे

वच्च करवाथी २। थविरनी वेयावच्च ३। तपस्वीनी वेयावच्च ४। अने ग्लान रोगीनी वेयावच्च करतो ५॥ पांच थानके श्रमण निग्रंथ मोटी निर्जरा मो टो संसारनुं अंतकरे तेकहेछे अग्लानपणे शिष्य लघु चेलानी वेयावच्च करतो १। अग्लानपणे कुलनी वेयावच्च करतो २। अग्लानपणे गण गच्छनी वेयावच्च करतो ३। संघनी वेयावच्च करतो ४। साधर्मीनी वेयावच्च करतो ५॥ पांच थानके श्रमण निग्रंथ पोताना साधर्मीने एक भोजन मंडली

॥ स्रोगिलाणसहायं साहम्मियकुलगणसंघ संगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ संभोगिक मेकभोजनमंडलीकादिकं विसंभोगिकं मंडलीबाह्यं कुव न्नातिक्रामति आज्ञा मितिगम्यते उचितत्वादिति सक्रिय प्रस्तावा दशुभकर्म्मबंधयुक्तं स्थान मकल्पविशेषलचणं प्रतिषेविता भवतीत्येक प्रतिषेव्य गुरवे नालोचयति ननिवे दयतीति द्वितीयं आलोच्य गुरूपदिष्ट प्रायश्चित्त न प्रस्थापयति कर्त्तुं नारभते इतितृतीय प्रस्थाप्य ननिर्विशति नसमस्त प्रवेशयति अथवा निर्वेशः परिभोग इति वचना न्नपरिभुंक्ते नासेवतइत्यर्थः इति चतुर्थं यानीमानि सुप्रसिद्धतया प्रत्यचाणि स्थविराणां स्थविरकल्पिकानां स्थितौ समाचारे प्रकल्पानि प्रकल्पनी यानि योग्यानि विशुद्धपिंडशय्यादीनि स्थितिप्रकल्पानि अथवा स्थितिश्च मासकल्पादिका कल्पानिच पिंडादीनि स्थितिप्रकल्पादीनि तानि ॥ अइयचियअइ यचियत्ति ॥ अतिक्रम्यातिक्रम्येत्यर्थः प्रतिषेवते तदन्यानीति गम्यते अथ सघाटकादिः साधुरेव पर्यालोचयति यथा नैत प्रतिषेवितु मुचित गुरूनौ वाह्यो

माणे । पंचहिंठाणेहिं समणेनिग्गथे साहंमियं संभोइयं विसंभोइयंकरेमाणे णाइक्कमइ तंजहा सकिरि यठाणंपडिसेवित्ताभवति पडिसेवित्ता णोआलोइए आलोएत्ता णोपठिवेइ णोपठठित्ता णोणिव्विसइ । जाइं इमाइं थेराणं ठिइप्पकप्पाइं भवंति ताइं अइयंचिय २ पडिसेवेइ से हंद हं पडिसेवामि किमेथे

कादिकने विसंभोगिक मंडली बाह्यकरतो जिनाज्ञा प्रति नथी अतिक्रम करे तेकहेछे क्रिया पापक्रिया सहित थान सेवीने १। पाप सेवी करी गुरुपासे आलोवे नही ३। आलोईने गुरुदत्त प्रायश्चित तप करे नही ४। प्रायश्चित तप आदरी पूरो नहोय ४। जे एह प्रसिद्ध थविर कल्पीनी स्थिति प्रकल्प मासकल्प पिंड शय्यादि आचारने अतिक्रमी अतिक्रमी अणाचार सेवे तेहुं अणाचार सेवीसमुझने थविर गुरु स्युं करस्ये रीसाणा थका ५॥ पांच

करिष्यतित्येतन्नेतर आह ॥सेद्रत्ति॥ तदकल्पजातं ॥ हंदेति॥ कोमलामन्त्रणवचनं हमित्यकारप्रश्लेषा दहं प्रतिषेवामि किं मम स्थविराः गुरवः करिष्यति न किञ्चि त्तैरुष्टै रपि कर्त्तुं मे शक्यतइति बलोपदर्शन पंचम मिति ॥पारंचियति॥ दशमप्रायश्चित्तभेदव त मपहृतलिंगादिक मित्यर्थ. कुर्वं न्नातिक्रामति सामा यिक मिति गम्यते कुले चाद्रादिके वसति गच्छवासी त्यर्थः तस्यैव कुलस्यभेदाया न्योन्य मधिकरणोत्पादनेना भ्युत्थाता भवति यतत इत्यर्थः इत्येवं गणस्या पीति द्वितीय तथा हिंसावध साध्वादेः प्रेचते गवेषयतीति हिंसा प्रेक्षीति तृतीय हिंसार्थमेवा पभ्राजनार्थना च्छिद्राणि प्रमत्ततादीनि प्रेचत इति छिद्रप्रे क्षी चतुर्थ अभीक्ष्ण मितीह पुन. शब्दार्थ. ततश्चा भीक्ष्ण मभीक्ष्णं पुन.पुनरित्यर्थः प्रश्ना अंगुष्टकुड्यप्रश्नादय सावद्यानुष्ठानपृच्छावा तएवायतनानि असय मस्य प्रश्नायतनानि प्रयोक्ता भवति प्रयुंक्ते इत्यर्थः इति पंचम तथा आचार्योपाध्यायस्येति समाहारद्वंदः कर्मधारयोवा ततश्चाचार्यस्योपाध्यायस्यचाचार्यस्यो

रा करिस्संति । पचहिं ठाणेहिं समणेनिग्गंथे साहम्मियं पारंचियं करेमाणे णाइक्कमइ तंजहा कुलेवसइ । कुलस्सभेयाएअब्भुठेत्ताभवइ । गणस्सभेयाएअब्भुठेत्ताभवइ । हिंसप्पेही छिद्दप्पेही । अभिक्खणं २ पसि णाए तेणाइ पउत्ता भवइ । आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि पंच वुग्गहठाणा पण्णत्ता तंजहा आयरिय

थानके श्रमण निर्ग्रंथ साधर्मीने पारंचिक प्रायश्चित करावतो आज्ञा नलोपें वेसरहित रहवो आचारमा वर्ष १२ लगे ते कहेछे ते कुलमां वसेरहे ते कुलनोज भेद कुलते समुदाय कहिये १ । गण गच्छमा वसे अने तेज गच्छनो भेद करवा उजमाल थाय २ । हिंसानो करनार ३ । साधुना छिद्र नो देखणहार ४ । वारवार प्रश्ननो पूछनार प्रयुजनार जिमतिम गुरुने खोटा पाड़वाने ५ ॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे पांच व्युद्ग्रह कल

पाध्यायस्यत्ना ॥ गणंसित्ति ॥ गणे विग्रहस्थानानि कलहाश्रयाः आचार्यउपाध्यायौ इयंवा गणे गणविषये आज्ञां हेसाधी भवतेदं विधेय मित्येवंरूपा मादिष्टिं धारणा नविधेय मित्येव रूपा नोनैव सम्य गौचित्येन प्रयोक्ता भवतीति साधवः परस्परं कलहायते असम्यग्नियोगात् दुर्निर्यहत्वाच्च अथवा नौचित्यनियो क्तार माचार्यादिक मेव कलहायत इत्येवं सर्वत्रेति अथवा गूढार्थपदे रगीतार्थस्य पुरतो देशांतरस्थगीतार्थनिवेदनाय गीतार्थो यदतिचारनिवेदनं करोति साज्ञा ऽसकृदालोचनादानेन यः प्रायश्चित्तविशेषावधारणसा धारणा तयो र्नसम्यक् प्रयोक्तेति सकलहभा गिति प्रथमं तथा सएव ॥ आहारादइणियाएत्ति ॥ रत्नानि द्विधा द्रव्यतो भावत श्च तत्र द्रव्यतः कर्कैतनादीनि भावतो ज्ञानादीनि तत्र रत्नै र्ज्ञानादिभि र्व्यवहरतीति रात्निकः बृहत्पर्यायो यो रात्निको यथा रात्निक तद्भाव स्तत्ता तया यथा ज्येष्ठं कृतिकर्म निवेदन विनयएव वैनयिक तच्च न सम्यक् प्रयोक्ता अतर्भूतकारितार्थत्वाद्वा प्रयोजयिता भवतीति द्वितीयं तथा सएव यानि श्रुतस्य पर्यायजातानि सूत्रार्थप्रकारान् धारयति धारणा विषयीकरोति तानि काले २ यथावसर नसम्यगनुप्रवाचयिता

उवज्झायस्सणंगणंसि आणंवा धारणंवा नोसम्मं पउंजित्ता भवइ । आयरियउवज्झाएणंगणंसि अहाराइ णियाए किइकम्मं णोसम्म पउंजित्ता भवइ । आयरियउवज्झाएणंगणंसि जेसुयपज्जवजाएधारेइ तेकाले

हना करणहार थानक ते कहेछे आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे आज्ञा धारणा संयमनुं प्रयुंजनार नहोय तेकलहकारी जाणवो १ । आचार्य उ पाध्यायना गच्छमा यथायोग्य रत्नाधिक वडेराने कृतिकर्म वंदणा सम्यक् भलीरीते प्रयुंजे नथी २ । आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे जे श्रुत प र्यायने जाणे सूत्रार्थने धारे तेकालवेलामां सम्यक् प्रकारे वांचे भणे नही अकालमां भणे ३ । आचार्य उपाध्यायना गच्छमां ग्लान शिष्यनी वेयावच्च

भवति न पाठयतीत्यर्थ इति तृतीयं काले अनुप्रवाचयिते त्युक्त न्तत्रगाथाः कालक्कमेणपत्त संवच्छरमाइणाउजजंमि तंतंमिचेवधीरो वाएज्जासोयकालो य ॥ १ ॥ तिवरिसपरियागस्सउ आयारपकप्पणाममज्झयण चउवरिसस्सयसम्म सूयगडनामअंगंति ॥ २ ॥ दसकप्पववहारा सवच्छरपणगदिक्खियस्सेय ठाणसमवाओविय अगेतेअठ्ठवासस्स ॥ ३ ॥ दसवासस्सविवाहो एक्कारसवासयस्सयइमेओ खुड्डियविमाणमाई अज्झयणापचनायब्बा ॥ ४ ॥ वारसवासस्सतहा अरुणववायाइपचअज्झयणा तेरसवासस्सतहा उठ्ठाणसुयाइयावउरो ॥ ५ ॥ चोद्दसवासस्सतहा आसीविसभावणंजिणाविति पन्नरसवासगस्सय दिठ्ठिविसभावणंतहय ॥ ६ ॥ सोलसवासाईसुय एक्कोत्तरबुड्ढिएसुजहसखं चारणभावणमाइस विणभावणतेयगनिसग्गा ॥ ७ ॥ एगूणवीसगस्सउ दिठ्ठीवाओदुवालसममगं संपुणवीसवरिसो अणुवाईसव्वसुत्तस्सत्ति ॥ ८ ॥ तथा सएव ग्लानशैचवैयावृत्त्य म्अंति न सम्यक् स्वय मभ्युत्थाता अभ्युपगन्ता भवतीति चतुर्थं तथा सएव गणमनापृच्छ्य चरति चैत्रातरसक्रमादि करोती त्येवशीलो ऽनापृच्छ्यचारी किमुक्त भवति नोआपृच्छ्य चारीति पचम विग्रहस्थान एतदेव व्यतिरेकेणाह वि

णोसम्ममणुप्पवाएत्ता नवइ। आयरियउवज्झाएणंगणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं णोसम्ममब्भुठेत्ता नवइ। आयरियउवज्झाएणंगणंसि अणापुच्छियचारीयाविहवइ नोआपुच्छियचारी। आयरियउवज्झायस्सणगणंसि

सम्यग् रीते नकरे ४। आचार्य उपाध्यायना गच्छमा गुरुने अणपूछी विहार करे गुरुने पूछी नचाले ५॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छमा पांच उग्रहस्थान कह्या तेकहेछे आचार्य उपाध्यायना गच्छमां आज्ञा धारणा सम्यक् रीतथी प्रयुंजे ते आधारभूत होय १। एम वडेराने वादणा देवे २। आचार्यादिकना गच्छमा सूत्रजाण्या धास्याछे कालमाज नणे ३। एम ग्लान शिष्यनी वेयावच करे ४। आचार्य उपाध्यायनां गच्छमा गुरुने पूछी

ग्रहसूत्रं गतार्थं निषद्यासूत्रे निषदनानि निषद्या उपवेशनप्रकारा स्तत्रासनालग्नपुतः पादाभ्यामवस्थित उत्कुटुक स्तस्य या सा उत्कुटुका तथा गोर्दोहनं गोदोहिका तद्व यासौ गोदोहिका तथा समौ समतया भूलग्नौ पादौच पुतौच यस्यां सा समपादपुता तथा पर्यंका जिनप्रतिमा तामिव या पद्मास नमिति रूढा तथा अर्द्धपर्यंका ऊरा वेकपादनिवेशनलक्षणेति तथा ऋजो रागद्वेषवक्रत्ववर्जितस्य सामायिकवतः कर्मभावोवा आर्जवं सवर इत्यर्थं स्तस्य स्थानानि भेदा आर्जवस्थानानि साधुसम्यग्दर्शनपूर्वकत्वेन शोभन मार्जवं मायानिग्रह स्ततः कर्मधारयः साधोर्वा यते राजवसाध्वार्जवं एवशेषाख्यपि आर्जव

पंच अवुग्गहठाणा पन्नत्ता तंजहा आयरियउवज्झाएणंगणसि आणंवा धारणंवा सम्मंपउंजित्ता भवइ । एवमहाराइणियाएसम्मं आयरियउवज्झाएणंगणंसि जेसुयपज्जवजाएधारेइ तेकालेसम्म० ॥ एवंगिलाणसेह वेयावच्चंसम्म० ॥ आयरियउवज्झाएणंगणसि आपुच्छियचारीयाविभवइ णोअणापुच्छियचारी । पंचनि सिज्जाउ पन्नत्ताउ तंजहा उक्कुडुया गोदोहिया समपायपुया पलियंका अद्धपलियका । पंच अज्जवठाणा पन्नत्ता तंजहा साऊअज्जवं साऊमद्दव साऊलाघवं साऊखंती साऊमोत्ती । पंचविहा जोइसिया पन्नत्ता

चाले अणपूछी नचाले ५ ॥ पाच निषद्या कही तेकहैछे ऊकडू वैसवो १ । गोदूहासने २ । बे पग समा जोडी बेसवुं ३ । पलाठी वाली वेसवो ४ । अर्द्ध पलाठी वाली वेसवो ५ ॥ पांच आर्जव सवरना थान कह्या तेकहैछे भलो आर्जवपणुं सरलतापणो १ । भलो मार्दव कोमलतापणुं अहंकार र हितता २ । भलो लाघव द्रव्यभावथी हलुकापण ३ । भली चाति क्षमा ४ । भली मुक्ति ते निर्लोभता ५ ॥ पांच प्रकारना ज्योतिषी देवता कहिया

गुणाश मत्वा प्रायोदेवा भवन्तीति ॥ पंचविहाजोइसिएत्यादिनाउद्देसाणस्सगमेतदंतेन ग्रन्थेन ॥ देवाधिकारगाऽऽ सुगमशायं नवरं ज्योतींषि विमानविशेषाः
तेषु भवा ज्योतिष्का इति तथा दीव्यति क्रीडादिधर्मभाजो भवंति दीव्यतेवा स्तूयते येते देवा भव्या भाविदेवपर्याययोग्या अतएव द्रव्यभूता स्तेच ते देवाश्चे
ति भव्यद्रव्यदेवा वैमानिकादि ४ देवत्वेनानन्तरभवे ये उत्पत्स्यन्तइत्यर्थः नराणादेवानरदेवा चक्रवर्तिनइत्यर्थः धर्मप्रधानादेवाधर्मदेवा चारित्रवंतो देवानां
मध्ये अतिशयवंतोदेवा देवातिदेवा अरहंतः भावदेवा देवायुष्कायनुभवंतो वैमानिकादय ४ इत्यर्थः ॥ परिचारणत्ति ॥ वेदोदयप्रतीकार स्तत्र स्त्रीपुंसयोः
कायेन परिचारणा मैथुनप्रवृत्तिः कायपरिचारणा ईशान कल्पयाव देवमन्यनापि समासो नवर स्पर्शन तदुपरि द्वयोः रूपेण द्वयोः शब्देन द्वयो र्मनसा च

तंजहा चंदा सूरा गहा णक्खत्ता ताराउ। पंचविहा देवा पण्णत्ता तंजहा भवियदव्वदेवा णरदेवा धम्मदेवा
देवातिदेवा भावदेवा। पंचविहा परियारणा पण्णत्ता तंजहा कायपरियारणा फासपरियारणा रूवपरिया
रणा सद्दपरियारणा मणपरियारणा। चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच अग्गमहिसीउ पण्णत्ताउ

तेकहेछे। चद्रमा १। सूर्य २। ग्रह ३। नक्षत्र ४। तारा ५॥ पाच प्रकारना देवता कहिया तेकहेछे भव्य द्रव्यदेव जे इहांथी मरी देवता थास्ये १।
नरदेव चक्रवर्त्ति २। धर्मदेव चारित्रवंत साधु ३। देवातिदेव ते अरिहंत ४। भावदेव वैमानिकादि ५॥ देवताने पांच प्रकारनी परिचारणा मैथु
नसेवा कही तेकहेछे काय परिचारणा सौधर्म ईशाने १। फास परिचारणा ते ३। ४। देवलोकमा २। रूप परिचारणा ५। ६। देवलोकमां ३।
शब्दपरिचारणा ७। ८। देवलोकमा ४। मनपरिचारणा मनथी मैथुनसेवा ९। १०। ११। १२। देवलोकमा ५॥ चमरेंद्र असुरेंद्र असुरकुमारना रा

॥ तुर्थु ग्रैवेयकादिषु परिचारणैव नास्तीति सांग्रामिकाणि संग्रामप्रयोजना न्येतच्च गंधर्वनाट्यानीकयो र्व्यवच्छेदार्थं विशेषण मिति अनीकाधिपतयः सैन्यम ध्यप्रधानाः पदात्यादय एव पदातीनां समूहः पादात तदेवानीक पादातानीक पीठानीक मश्वसैन्यं तथा पादातानीकाधिपतिः पदातिरेवोत्तमः अश्वराजः

तंजहा काली राई रयणी विज्जु मेहा । बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरस्रो पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तजहा सुन्ना णिसुन्ना रन्ना णिरंन्ना मयणा । चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई प० तजहा पायत्ताणिए पीढाणिए कुंजराणिए महिसाणिए रहाणिए । दुमे पायत्ताणिआहिवई सोदामी आसराया पीढाणीयाहिवई वेकुंथुहत्थिराया कुंजराणियाहिवई लोहियक्खे महिसाणियाहिवई किन्नरे रहाणियाहिवई । बलिस्सण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो

जाने पांच अग्रमहिषी कही तेकहेछे काली १ । रात्रि २ । रजनी ३ । विदुनत् ४ । मेघा ५ ॥ बलेंद्र वैरोचनेंद्रने वैरोचनना राजाने पांच अग्रमहिषी कही तेकहेछे शुन्ना १ । निशुंभा २ । निरंभा ३ । रंभा ४ । मदना ५ ॥ चमर असुरेंद्र असुरकुमारना राजाने पांच सांग्रामिक अनीक सेना तेहना पांच अधिपती कह्या ते कहेछे पादात्यनीक ते पालीआ तपाल १ । पीठानीक ते घोडा सवारनी फौज २ । हाथीनी सेना ३ । भैंसानी सेना ४ । रथनी सेना ५ ॥ दुम पादात्यनीकाधिपती १ । सौदाम अश्वराज पीठानीकाधिपती २ । वैंकुथु हस्तिराज कुंजरानीकाधिपती ३ । लोहिताक्ष भैंसानी सेनानुं अधिपती स्वामी ४ । किन्नर रथानीकनो स्वामी ५ ॥ बली वैरोचनेद्र वैरोचननां राजाने पांच संग्रामना अनीक कह्या पांच संग्रामना

पंच संगामियाअणिया पंच संगामिया अणियाहिवई पन्नत्ता तंजहा पायत्ताणिए जाव रहाणिए। महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई महासोदामे आसराया पीढाणियाहिवई मालंकारे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई महालोहिअक्खे महिसाणियाहिवई किंपुरिसे रहाणियाहिवई। धरणिंदस्सण नागिंदस्स नागकुमाररन्नो पंच संगामिआ अणीआ पच संगामिआ अणीआहिवई पन्नत्ता तजहा पायत्ताणिए जाव रहाणिए भद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई जसोधरे आसराया पीढाणीयाहिवई सुदसणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई नीलकंठे महिसाणियाहिवई आणंदे रहाणीयाहिवई भूयाणंदस्सणं नागकुमारिदस्स नागकुमाररन्नो पच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई पन्नत्ता पायत्ताणीए जाव रहाणीए। दक्खे पायत्ताणिया

सैन्य कह्या तेकहेछे पादानीक यावत् रथानीक लगे कहवो॥ महाद्रुम पदात्यनीकाधिपती १। महासोदाम अश्वनो राजा पीठानीकनो स्वामी २। मालकार हस्तिनो राजा कुंजरसेनाधिपती ३। महालोहिताक्ष भैसानी सेनानु अधिपती ४। किपुरुष रथानीकाधिपती ५॥ धरणेंद्र नागेंद्र नागकुमारना राजाने पाच सग्रामना अनीक कटक कहिया तेकहेछे पादानीक यावत् रथानीक। भद्रसैन्य पादानीक सेनानो अधिपती स्वामी १। यशोधर अश्वराजा पीठानीकनो स्वामी २। सुदर्शन हस्तिनो राजा कुजराधिपती ३। नीलकठ महिषानीकाधिपती ४। आणद रथानीकाधिपती ५॥ भूतानंद नागकुमारनो इंद्र नागकुमारना राजाने पाच सग्रामना अनीक सैन्य पांच सेनाधिपती कहिया तेकहेछे। पदात्यनीक यावत् रथानीक ५॥

॥ प्रधानोऽश्व एवमन्येपि ॥ दाहिणिल्लाणंति ॥ सनत्कुमारब्रह्मशुक्राननारणानां ॥ उत्तरिल्लाणति ॥ माहेंद्रलांतकसहस्रारप्राणताच्युतानामिति इहष दाहि

हिवई सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणीयाहिवई सेयकंठे महिसाणिया हिवई णंदुत्तरे रहाणियाहिवई । वेणुदेवस्सणं सुवित्तिंदस्स सुवन्नकुमाररन्नो पंच संगामिया आणिया पंच संगामिया आणियाहिवई पन्नत्ता तजहा पायत्ताणिए एव जहा धरणस्स तहा वेणुदेवस्सवि वेणुदालियस्सय जहा नूताणंदस्स जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स । जहा नूयाणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स । सक्कस्सण देविदस्स देवरन्नो पंच संगामिया आणिया पंच संगामिया आणियाहिवई पन्नत्ता तंजहा पायत्ताणिए जाव उसन्नाणिए । हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई वाऊ आ

दत्तपाल पदात्यनीकाधिपती १ । सुग्रीव अश्वराज पीठानीकाधिपती २ । सुविक्रम हस्तिनो राजा कुंजरानीकाधिपती ३ । श्वेतकंठ महिषानीकाधि पती ४ । नंदोत्तर रथानीकाधिपती ५ ॥ वेणुदेव सुपर्णेंद्र सुपर्णकुमारना राजाने पाच सांग्रामिक सैन्य पाच सेनाना अधिपती कहिया तेकहेळे पा दानीक एम जिम धरणेंद्रने कह्या तिमज ॥ वेणुदेवने वेणुदालीने जिम नूतानेंद्रने कह्यो तिम ॥ जिम धरणने तिम सघला इंद्र दक्षिण दिशिनाने यावत् घोषने जिम नूताणंदने तिम सघलाई उत्तरदिशाना इंद्रने यावत् महाघोषने ॥ शक्रेंद्र देवेंद्र देवताना राजाने पांच सग्रामनी सेना कही पाच तेहना अधिपती कहिया तेकहेळे पादानीक यावत् वृषभसैन्य रथसैन्य । हरिणेगमेषी पदात्यनीकाधिपती १ । वायुनामा अश्वराज पीठानीका

णात्या: सौधर्मादयो विषमसंख्यादति विषमसंख्यत्वशब्दस्यप्रवृत्तिनिमित्तीकृत्य ब्रह्मलोकशुक्रौ दाक्षिणात्या वुक्तौ समसंख्यत्वन्तु प्रवृत्तिनिमित्तीकृत्य लांतक सहस्रारावौत्तरावितिति तथा देवेन्द्रस्तवाभिधानप्रकीर्णकश्रुतद्वव द्वादशाना मिंद्राणाविवक्षणा दारणस्ये त्याद्युक्तमितिसभाव्यते अन्यथा चतुर्षु द्वावेवेंद्रा वत

सराया पीढाणियाहिवई ऐरावणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई दामड्ढी उसभाणियाहिवई माढरे रहाणियाहिवई ईसाणस्सण देविदस्स देवरन्नो पंच संगामिया अणिया जाव पायत्ताणिए पीढा कुंजरा उसभा रहाणिउ । लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई १ महावाऊ आसराया पीढाणीयाहिवई २ पुप्फदते हत्थिराया कुंजराणियाहिवई महादामड्ढी उसभाणियाहिवई महामाढरे रहाणियाहिवई । जहा सक्कस्स तहा सव्वेसि दाहिणिल्लाण जाव आरणस्स । जहा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव अच्चुयस्स ।

धिपती २ । ऐरावण हस्तिराज कुजरानीकाधिपती ३ । दामास्ति वृषभ सेनाधिपती ४ । माढर रथानीकाधिपती ५ ॥ ईशान देवेंद्र देवताना राजा ने पाच सांग्रामिक अनीक सेना पाच तेहना अधिपती स्वामी कहिया ते कहेछे पादानीक १ । पीठानीक २ । कुजरानीक ३ । वृषभानीक ४ । रथानीक ५ ॥ लघुपराक्रम पदात्यनीकाधिपती १ । महावायु अश्वराज पीठानीकाधिपती २ । पुष्पदंत हस्तिराज कुजरसेनाधिपती ३ । महादामस्थी वृषभानीकाधिपती ४ । महामाढर रथानीकाधिपती ५ ॥ जिम शक्रेंद्रने तिम सघला दक्षिण दिशाना इंद्रने यावत् आरणेंद्रने ॥ जिम ईशानेंद्रने तिम सघलाई उत्तरदिशाना इद्रने जाणवा ॥ अभ्यतर पर्षदानी देवीनी स्थिति पांच पल्योपमनी कही ॥ पाच प्रकारना प्रतिघात कहिया तेकहे

आरणस्ये त्याद्यनुपपन्नंस्यादिति इहा नंतरं देवानां वक्तव्यतोक्ता दुष्टाध्यवसायस्यच प्राणिन स्तद्गतिस्थित्यादिप्रतिघातो भवतीति तन्निरूपणायाह ॥ पंचवि हापडिहेत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ पडिहत्ति ॥ प्राकृतत्वात् ॥ उवघ्याइत्यादिवत् प्रतिघातः प्रतिहनन मित्यर्थ स्तत्र गते र्देवगत्यादेः प्रकरणात् शुभायाः प्र तिघात स्तत्प्राप्तियोग्यत्वे सति विकर्मकरणा दप्राप्ति र्गतिप्रतिघातः प्रवज्यादिपरिपालनतः प्राप्तव्यशुभदेवगते र्नरकप्राप्तौ कडरीकस्येवेति तथा स्थितिः शु भदेवगतिप्रायोग्यकर्म्मणां तथैव प्रतिघातः स्थितिप्रतिघातः भवतिचाध्यवसायविशेषात् स्थितेः प्रतिघातो यदाह दीहकालठियाओए ह्रस्सकालठियाओ पकरेइत्ति ॥ तथा बन्धन नामकर्मण उत्तरप्रकृतिरूप मौदारिकादिभेद यः पचविध तस्य प्रक्रमात् प्रशस्तस्य प्राग्व त्प्रतिघातो वंधनप्रतिघातो बंधनग्रहण स्यो पलक्षणत्वात् तत्सहचरप्रशस्तशरीरतदंगोपांगसंहननसंस्थानाना मपि प्रतिघातो व्याख्येयः २ तथा प्रशस्तगतिस्थितिबंधनादिप्रतिघाता द्भोगा नां प्रशस्तगत्याद्यविनाभूतानां प्रतिघातो भोगप्रतिघातो भवतिहि कारणाभावे कार्याभाव इति तथा प्रशस्तगत्यादे रभावादेव बलवीर्यपुरुषकारपरा क्रमप्रतिघातो भवतीति प्रतीत तत्रबल शारीर वीर्यं जीवप्रभव पुरुषकारो ऽभिमानविशेषः पराक्रमः सएव निष्पादितस्वविषयो ऽथवा पुरुषकारः पुरु

सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो अभिंतरपरिसाए देवाणं पचपलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो अभिंतरपरिसाए देवीणं पंच पलिओवमाइठिई पन्नत्ता । पचविहा पडिहा पन्नत्ता तंजहा गइ पडिहा ठिइपडिहा बंधणपडिहा भोगपडिहा बलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमपडिहा । पचविहे आजीवे प०

के गति प्रतिघात ते शुभगतिनो घात कर्मवशथी १ । दीर्घ शुभ देवस्थिति नुंघात २ । शुभप्रकृतिबधनो घात ३ । भोगसुखनो प्रतिघात गति स्थि

पराक्रमः पराक्रमो बलवीर्ययो र्व्यापारणमिति देवगत्यादिप्रतिघातश्च चारित्रातिचारकारिणो भवती त्युत्तरगुणानाश्रित्य तद्विशेषमाह ॥ पञ्चविहेत्यादि ॥ जाति ब्राह्मणादिका माजीव त्युपजीवति तज्जातीय मात्मान सूचादिनोपदर्श्य ततो भक्तादिक गृह्णातीति जात्याजीवक एवं सर्वत्र नवर कुल मुग्रादिकं गुरुकुलंवा कर्म क्ष्याद्यनाचार्यकारा शिल्प तूर्णनादि साचार्यकंवा लिङ्गं साधुलिङ्ग तदाजीवति ज्ञानादिशून्य स्तेनजीविकां कल्पयतीत्यर्थः लिंगस्थाने ऽन्य न गणोभिधीयते यतउक्त जाईकुलगणकम्मे सिप्पेआजीवणाउपचविहा सूयाएअसूयाए अप्पाणकहेइएक्केकेत्ति ॥ १ ॥ तत्र गणो मल्लादिः सूचया व्याजेना सूचया साक्षात् अनन्तरं साधूनां रजोहरणादिक लिङ्गमुक्तं अधुना खड्गादिरूप राज्ञां तदेवाह ॥ पंचरायककुहेत्यादि ॥ व्यक्त नवर राज्ञां नृपतीना ककुदानि चिह्नानि राजककुदानि ॥ उप्फेसित्ति ॥ शिरोवेष्टन शेखरक इत्यर्थः ॥ पाहणाओत्ति ॥ उपानहो वालव्यजनी चामरमित्यर्थः श्रूयतेच अव णीद्रपचककुहाणि जाणिरायाणचिधभूयाणि छत्तखग्गोवाहणमउडतहचामराओयत्ति ॥ १ ॥ अनंतरोदितककुदयोग्य शैव्याकादिकः प्रव्रजितः सरागो

तंजहा जाइआजीवे कुलाजीवे कम्माजीवे सिप्पाजीवे लिंगाजीवे । पंचरायककुहा पन्नत्ता तंजहा खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाउ वालवीयाणी। पचहि ठाणेहिं छउमत्थेणं उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मंसहेज्जा खमेज्जा

ति नही तिवारे ४ । वलवीर्य पुरुषाकारपराक्रमथी घात थाय वलादि रहित थाय ५ ॥ पाच प्रकारना आजीविक पेट भराई करणहार कहिया तेकहेछे जाति जणावी आहार लेवे ते जात्याजीवी १ । कुलजणावी आहार लेवे २ । कर्म कृष्यादिकनुं करी पेटभरे ३ । शिल्प विज्ञान देखाडी जीवे ४ । लिंग साधुना चिन्ह धारणकरी पेटभरे ५ ॥ पांच राजाना चिन्ह कहिया ते कहेछे खड्ग १ । छत्र २ । मुकुट ३ । उपानह पगरखी मोज

पिसन्सत्वाधिकत्वात् यानि वस्तू न्यालव्य परीषहादीन् अपगणयति तान्याह ॥ पंचहीत्यादि ॥ स्फुटं किन्तु च्छाद्यते येन तत् छद्म ज्ञानावरणादिघाति कर्मचतुष्टयं तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः सकषायइत्यर्थः उदीर्णा नुदितान् परीषहोपसर्गानभिहितस्वरूपान् सम्यक्तकषायोदयनिरोधादिना सहेत अथाभावे ना विचलना इट भटवत् चमेत चांत्यातितिचेत अदीनतया अध्यासीनपरीषहादा वेवाधिक्येना सीन नचले दिति उदीर्ण सुदितप्रबलवा कर्म मिथ्यात्व मोहनीयादि यस्यस उदीर्णकर्मा खलुर्वाक्यालङ्कारे अयं प्रत्यचः पुरुष उन्मत्तको मदिरादिना विप्लुतचित्तः सइव उन्मत्तकभूतो भूतशब्दस्योपमानार्थत्वा त् उन्मत्तकएववा उन्मत्तकभूतो भूतशब्दस्य प्रकृत्यर्थत्वात् ॥ तेणत्ति ॥ उदीर्णकर्मा यतोय मुन्मत्तकभूतः पुरुष स्तेन कारणेन ॥ मेइति ॥ मा एषोय माक्रो शति शपति अपहसति उपहासं करोति अपघर्षतिवा अपघर्षणं करोति निर्च्छोटयति सबन्धान्तरसबद्धहस्तादौ गृहीत्वा बलात् चिपति निर्भर्त्सयति दुर्वचनै र्बध्नाति रज्वादिना रुणद्धि कारागारप्रवेशादिना छवेः शरीरावयवस्य हस्तादेर्च्छेद करोति मारणप्रारम्भ. प्रमारो मूर्च्छाविशेषो मारणस्थानंवा त नयति प्रापयतीति अपद्रावयति मारयति अथवा प्रमार मरणमेव ॥ उद्दवेइत्ति ॥ उपद्रवयति उपद्रवं करोतीति पतद्ग्रहं पात्र कबल प्रतीत पादप्रोंछन

तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा तंजहा उदिन्नकम्मे खलु अयं पुरिसे उम्मत्तगभूए तेणमे एस पुरिसे अक्कोस इवा अवहसइवा णिच्छोडेइवा णिब्भत्थेइवा बंधइवा रुंधइवा छविच्छेयंकरेइवा पमारवाणेइ उद्दवेइवा

री ४ । चामर ५ ॥ पांच ठेकाणे छद्मस्थ साधु उदय पाम्यां परीषह उपसर्ग सम्यक् सहवा खमवा तितिक्षा करवा अहियासवा तेकहेछे कर्मना उदयथी निश्चे यह पुरुष उन्मतथयोछे तेभांटे मुझने एपुरुष आक्रोशकरेछे हसेछे हाथ प्रमुखथी डाली बलकरी नाखेछे कठिनवचनथी निर्भर्त्सना

रजोहरणं प्राछिनत्ति बला दुद्दालयति विच्छिनत्ति विच्छिन्नं करोति दूरेव्यवस्थापयती त्यर्थः अथवा वस्त्र मीष च्छिनत्ति श्राच्छिनत्ति विशेषेण छिनत्ति विच्छिनत्ति भिनत्ति पात्र स्फोटयति अपहरति चोरयति वाशब्दाः सर्वे विकल्पार्था इत्येक परीषहादिसहनालबनस्थान मिदश्चा क्रोशादिक मिह प्राय आक्रोशवधाभिधानपरीषहद्वयरूप मतश्च मुपसर्गविवचायान्तु मानुष्यकप्राद्वेषिकाद्युपसर्गरूप मिति तथा यचाविष्टो देवाधिष्ठितो ऽयतेना क्रोशतीत्या दिद्वितीय तथा अयहि परीषहोपसर्गकारी मिथ्यात्वादिकर्मवशवर्त्ती ॥ ममचणति ॥ मम पुन स्तेनैव मानुष्यकेण भवेन जन्मना वेद्यते ऽनुभूयते यत्त ङ्गववे

वत्थपडिग्गहं कंबलंपायपुच्छणमाच्छिंदइवा विच्छिंदइवा भिंदइवा अवहरइवा १। जक्खाइठे खलु अयंपु रिसे तेणमे एसपुरिसे अक्कोसइवा तहेव जाव अवहरइवा २। ममंचणं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ने भवइ तेणमे एसपुरिसे अक्कोसइवा जाव अवहरइवा ३। ममंचणं सम्मं असहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खेमाणस्स अणहियासेमाणस्स किम्मन्ने कज्जइ एगतसोमे पावकम्मे कज्जइ ४। ममंचणं सम्मं

करेछे बांधेछे रूंधेछे छविच्छेद मस्तक आंगुली प्रमुख काटेछे प्रकर्षथी मारेछे उपद्रव करेछे बस्त्रपडघो कांबलो पुछणुं उदाली लियेछे वेगलो लेई नाखेछे पात्र फोडेछे चोरी लिएछे एम सहेछे १। यक्षयी अधिष्ठितछे निश्चे यह पुरुष तेमाटे मुझने यह पुरुष आक्रोश करेछे तिमज यावत् अप हरेछे २। मांहरे ते भवनुं वेदनीयकर्म उदय आव्योछे तेमाटे मुझने एपुरुष आक्रोश करेछे एम यावत् अपहरेछे ३। मुझने सम्यक् अणसहताने अण खमते क्षमा अणकरता क्षमा कीधाविना अण अहियासतां स्युथास्ये एकातथी पापकर्म करीस ४। अने मुजने भलीरीते सहतां यावत् अहि

द्वनीयं कर्म्म उदीर्णं भवत्यस्ति तेनैष मा माक्रोशतीत्यादि तृतीयं तथा एषयालिश: पापाभीतत्वा त्करोतु नामाक्रोशनादि मम पुनरसहमानस्य ॥ किम्मन्ने त्ति ॥ मन्ये इति निपाती वितर्कार्थ: ॥ कज्जइत्ति ॥ सपद्यते इह विनिश्चयमाह ॥ एगंतसोत्ति ॥ एकान्तेन सर्वथा पापं कर्मा ऽसातादि क्रियते संपद्यत इ तिचतुर्थ: तथा अय ताव त्पापं बध्नाति ममचेदं महती निर्जरा क्रियत इतिपचमं ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमनमिति शेषसुगम छद्मस्थविपर्यय: केवलीति तत्सूत्र तत्रच चिप्तचित्त: पुत्रशोकादिना नष्टचित्त: पुत्रजन्मादिना दर्पवच्चित्त उन्मत्त एवेति माच सहमानं दृष्ट्वा अन्येपि सहिष्य त्युत्तमानुसारित्वात् प्रा य इतरेषां यदाह जोउत्तमेहिंमग्गो पहओसोदुक्करोनसेसाण आयरियमिजयते तयणुचराकेणसीएज्जत्ति ॥ १ ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ अत्रापिनिगमनं शेषसुग

सहमाणस्स जाव ऋहियासेमाणस्स किम्मन्ने कज्जइ एगंतसोमे निज्जराकज्जइ ५ । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा जाव ऋहियासेज्जा ॥ पंचहिठाणेहिं केवली उदिन्ने परीस होवसग्गे सम्म सहेज्जा जाव ऋहिऋासेज्जा तजहा खित्तचित्ते खलु ऋयपुरिसे तेणमे एसपुरिसे ऋक्कोस इवा तहेव जाव ऋवहरइवा १ । दित्तचित्ते खलु ऋयंपुरिसे तेणमे एसपुरिसे जाव ऋवहरइवा २ ।

यासतां स्युंथास्ये एकांतथी कर्मनिर्जरा थासे ५ ॥ एहवा पाच थानके छदमस्थ उदय आव्यां परीषह उपसर्ग सम्यक् सहै यावत् अहियासवा ५ ॥ पाच थानके केवली उदय आव्या परीषहोपसर्ग सम्यक् सहै यावत् अहियासे तेकहेळे पुत्र शोकादिना नष्ट चित्त निश्चे यह पुरुष मुजने आक्रोश क रेळे तिमज यावत् अपहरेंळे १ । पुत्र जन्मादिकथी दीप्त उन्मत्तचित्त निश्चे यह पुरुषळे तेमाटे मुजने यावत् अपहरेळे आक्रोशकरेळे २ । भूतग्रस्त

ममिति छद्मस्थकेलिनो रनतरं स्वरूपमुक्त मिदानीमपि तयोरेव तदाह ॥ पंचहेऊइत्यादि ॥ सूत्रनवकं तत्र भगवतीपंचमशतसप्तमोद्देशकचूर्ण्यनुसारेण कि मपि लिख्यते पचहेतव इह यश्छद्मस्थतया नुमानव्यवहारी अनुमानाङ्गतया हेतुलिंग धूमादिकं जानाति स हेतुरेवो च्यते एवं यः पश्यति २ अद्धत्ते ३ प्रा प्नोति चेति ४ तदेव हेतुचतुष्टय मिथ्यादृष्टि माश्रित्य कुत्साद्वारेणाह हेतु नजानाति नसम्य ग्विशेषतो गच्छाति नञः कुत्सार्थत्वा दसम्यगवैतीत्यर्थः एव नप

जक्काइ ठे खलु अयंपुरिसे तेणमे एसपुरिसे जाव अवहरइवा ३ । ममंचणं तप्भववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ने भवइ तेणमे एसपुरिसे जाव अवहरइवा ४ । ममंचणं सम्मं सहमाणं खममाणं तितिक्खमाण अहियासे माणं पासित्ता बहवे अन्ने छउमत्थासमणा निग्गथा उदिन्ने परीसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति जाव अहियासिस्संति ५ । इच्चेएहिं पचहि ठाणेहि केवली उदिन्ने परीसहोवसग्गेसम्मं सहेज्जा जाव अहिया सेज्जा । पंचहेऊ पन्नत्ता तजहा हेऊनजाणइ हेउणपासइ हेउणबुज्झइ हेउंणाभिगच्छइ हेउमन्नाणमरणं

निश्चे यह पुरुषछे तेमाटे मुजने एह यावत् अपहरेछे ३ । मुजने ते भवना वेदनीकर्म उदय आव्याछे तेमाटे एह पुरुष यावत् अपहरेछे इहालगे स र्व बोलकहवा ४ । मुजने सम्यक् सहताने खमताने क्षमा करताने अहियासताने देखी घणा अन्य बीजा छद्मस्थ श्रमण निग्रंथ उदय आव्या परी षहोपसर्ग एम सम्यक् सहस्ये जे केवली सरखा खमेछे तो आपणे खमस्ये यावत् अहियासस्ये ५ ॥ एह पांच थानके केवली उदय आव्या परीषह उपसर्ग सम्यक् सहे यावत् अहियासे ॥ पांच हेतु अनुमानादि कह्या ते कहेछे हेतु नजाणे १ । हेतु नदेखे २ । हेतु न बूझे हेतु न सरदहे ३ । हे

ष्यति सामान्यतो नबुध्यते नम्यक्त्ते बोधेः अज्ञानपर्यायत्वा त्तथा नसमभिगच्छति भवनिस्तरणकारणतया नप्राप्नो त्येवचाय चतुर्विधो हेतु र्भवतीति तथा हेतु मध्यवसानादिमरणहेतुजन्यत्वेनो पचारा दज्ञानमरणं मिथ्यादृष्टित्वेनाज्ञानहेतु तन्नम्यभावस्य मरण तन्म्रियते करोति यश्चैवंविधः सोपि हेतु रेवेति पचमो हेतु र्बिधित एवोक्तइति १ तथा पचहेतव स्तत्नयोहेतुना धूमादिना ऽनुमेय मर्थंज्ञानाति स हेतुरेव एवं यः पश्यती त्यादि तदेव कुत्साद्वारेण मिथ्या दृष्टि माश्रित्य हेतुचतुष्टयमाह हेतुना न जाना त्यनुमेय नञः कुत्सार्थत्वा देवा सम्यगवगच्छतीत्यर्थः एव न पश्यती त्यादि तथा हेतुना मरणकारणेन यो ऽज्ञानमरण म्रियते स हेतुरेवेति पचमो हेतुरिति २ तथा पंचहेतवो योहि सम्यग्दृष्टितया हेतुं सम्यग्जानाति स हेतुरेवे त्येव मन्येपि नवर हेतुर्हेतु म च्छद्मस्थमरणं सम्यग्दृष्टित्वा न्नाज्ञानमरण मनुमात्टत्वाच्च न केवलिमरण मिति ३ एवं तृतीयांतसूत्रमपि ३ इह सूत्रद्वयेपि हेतवः स्वरूपत एवोक्ताः ४ तथा पचा ऽहेतवो यः प्रत्यक्षज्ञानादितया नुमानानपेक्षः सधूमादिका महेतुना यहेतु मंज्ञा नुमानोत्थापक इत्येव जानाती त्यतो हेतुभूत तं जान

मरइ। पंचहेऊ प० तंजहा हेऊणाणजाणइ जाव हेमणा अन्नाणमरणंमरइ २। पंचहेउ पन्नत्ता तंजहा हेउं जाणइ जाव हेउछउमत्थउरणं मरइ २। पंच हेउ पन्नत्ता तंजहा हेउणाजाणइ जाव हेउणा छउमत्थ मरणं

तु हियामां नआणे ४। हेतु अज्ञानमरणे मरे ते हेतुज मिथ्यादृष्टि मांटे ५॥ पांच हेतु कह्या ते कहेछे हेतुथी धर्म नजाणे यावत् हेतुथी करी अ ज्ञानमरण मरे ५॥ पाच हेतु कहिया तेकहेछे हेतु जाणे यावत् हेतु छदमस्थ मरण मरे समकित दृष्टि मांटे ५॥ पांच हेतु कह्या तेकहेछे हेतुथी जाणे यावत् हेतुथी छदमस्थ मरण मरे ५॥ पांच अहेतु कह्या ते कहेछे अहेतुथी जाणे यावत् अहेतु छदमस्थ मरण मरे ५॥ पाच अहेतु कह्या

ग्रहेतुरेवा सा वुध्यते एवं दर्शनबोधाभिसमागमापेचयापि तदेव महेतुचतुष्टयं छद्मस्थ माश्रित्य देशनिषेधत आह अहेतुमिति धूमादिकं हेतु महेतुभावेन न जानाति न सर्वथा वगच्छति कथंचिदेवा वगच्छतीत्यर्थः नञो देश निषेधार्थत्वात् ज्ञातुर्वा वध्यादिकेवलित्वेना नुमानाव्यवहर्तृत्वा दित्येको य महेतु देशप्रतिषेधत उक्त एव महेतु कृत्वा धूमादिक नपश्यतीति द्वितीयो न बुध्यते न श्रद्धत्ते इति तृतीयो नाभिसमागच्छतीति चतुर्थः तथा अहेतु मध्यवसा नादिहेतुनिरपेक्ष निरुपक्रमतया छद्मस्थमरण मनुमानव्यवहर्तृत्वे प्यकेवलित्वा त्तस्यायच स्वरूपतएव पचमो हेतुरुक्तः तथा पचा हेतवो यो ऽहेतुना हेत्वभावेना वध्यादिकेवलित्वात् जाना त्यसा वहेतुरेवे त्येव पश्यतो त्यादर्योपि एवच छद्मस्थ माश्रित्य पदचतुष्टयेना हेतुचतुष्टय देशप्रतिषेधत आह तथा ऽहेतुनो पक्रमाभावेन छद्मस्थमरण म्रियतइति पचमो ऽहेतु' स्वरूपत एवोक्त. ६ तथा पचाहेतवो ऽहेतु नहेतुभावेन विकल्पित धूमादिक जानाति केव लितया यो ऽनुमानाव्यवहारित्वा त्सो ऽहेतुरेन एव यः पश्यतीत्यादि तथा अहेतु निर्हेतुक मनुपक्रमत्वात् केवलिमरण मनुमानाव्यवहारित्वान् म्रियते यात्य सावहेतु पंचम एते पचापो ह स्वरूपत उक्ता. ७ एव तृतीयान्तसूत्रम प्यनुसर्त्तव्यमिति ८ गमनिकामात्रमेत त्तत्वत् बहुश्रुता बिदतीति तथा न

मरइ ४ । पंच ऋहेऊ प० तंजहा ऋहेउंणजाणइ जाव ऋहेउब्रउमत्थमरणंमरइ ५। पंच ऋहेऊ प० तं० ऋहेउणानजाणइ जाव ऋहेउणाब्रउमत्थमरणमरइ ६ । पच ऋहेउ पसत्ता तजहा ऋहेउंजाणइ जाव

तेकहेछे अहेतुथी नजाणे यावत् अहेतुथी करी छदमस्थ मरण मरे ५॥ पांच अहेतु कहिया तेकहेछे अहेतु जाणे यावत् केवली मरणे मरे ५॥ पां च अहेतु कह्या तेकहेछे अहेतुये करी जाणे यायावत् हेतुये करी जाणे हेतुये करी केवली मरण मरे ५॥ एह पांच अहेतु कह्या ८॥ केवलीने पां

॥ संत्यु त्तराणि प्रधानानि येभ्य स्ता न्य ऽनुत्तराणि यथा स्वं सर्वथावरणक्षयात् तत्राद्ये ज्ञानदर्शनावरणक्षया दनन्तरे मोहक्षया त्तपस श्चारित्रभेदत्वा त्त पश्च केवलिना मनुत्तर शैलेश्यवस्थायां शुक्लध्यानभेदद्वयस्वरूप ध्यानस्या भ्यन्तरतपोभेदत्वा द्वीर्यान्तरायक्षयादिति ८ केवल्यधिकारा त्तीर्थंकरसूत्राणि चतुर्दश कण्ठ्यानि चैतानि नवर पद्मप्रभ ऋषभादिषु षष्ठ: पंचसु च्यवनादिदिनेषु चित्रानक्षत्रविशेषो यस्य स पचचित्र श्चित्राभिरिति रूढ्या बहुवचन च्युतो ऽवतीर्ण उपरिमोपरिमग्रैवेयका द्देकत्रिंशत्सागरोपमस्थितिकात् च्यवाच ॥ गभ्र ति ॥ गर्भे कुक्षौ व्युत्क्रांत उत्पन्न: कौशाम्ब्यां धराभिधानमहाराजभार्यायाः सुसीमा नामिकायाः माघमासबहुलषष्ठ्या जातो गर्भनिर्गमेन कार्त्तिकबहुलद्वादश्यां तथा मुंडोभूत्वा केशवाषायाद्यपेक्षया अगारा न्निष्क्रम्या नगारितां श्रमणतां प्रव्रजितो गतो ऽनगारतयाच प्रव्रजित: कार्त्तिक शुद्धत्रयोदश्यां तथा अनतपर्यायानन्तत्वादनुत्तर सर्वज्ञानोत्तमत्वात् निर्व्याघात मप्रतिपातित्वा न्निरावरणं ॥

अहेउकेवलिमरणंमरइ ७। केवलिस्सण पंच अणुत्तरा प० तं० अणुत्तरेनाणे अणुत्तरेदंसणे अणुत्तरेचरित्ते अणुत्तरेतवे अणुत्तरेवीरिए ९। पउमप्पन्नेणमरहा पच चित्ते होत्था तंजहा चित्ताहिचुएचइत्ता गब्भवक्कंते चित्ताहिंजाए चित्ताहिमुंडेभवित्ता अगाराअणगारियपव्वइए चित्ताहिअणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए निराव

च उत्कृष्टा कह्या तेकहेछे उत्कृष्ट ज्ञान १। उत्कृष्ट दर्शन २। उत्कृष्ट चारित्र ३॥ उत्कृष्ट तप ४॥ उत्कृष्ट वीर्य ५ ॥ पदमप्रभ ६ अरिहंतनां ५ क ल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थया ते कहेछे चित्रामां चव्या चित्रायें गर्भमां ऊपना १॥ चित्रामां जन्मलीधो २॥ चित्रामां मुंडथई गृहस्थावास मूंकीने अणगार थया दीक्षालीधी ३॥ चित्रामां अनत उत्कृष्टो व्याघात रहित आवरण रहित कृत्स्न आखो प्रतिपूर्ण केवलवरज्ञानदर्शन ऊपनुं ४॥ चि

सर्वथास्वावरणक्षयात् कटकुड्याद्यावरणाभावाद्वा कृत्स्नं सकलपदार्थविषयत्वात् परिपूर्णं स्वावयवापेक्षया ऽखंडं पौर्णमासीचंद्रबिम्बवत् किमित्याह केवलं ज्ञानान्तरासहायत्वात् सकलत्वाद्वा अतएव वरं प्रधान केवलवर ज्ञानच विशेषावभास दर्शनच सामान्यावभास ज्ञानदर्शन तच्च तच्चेति केवलवरज्ञानदर्शन समुत्पन्नं जात चैत्रशुद्धपंचदश्या तथा परिनिर्वृतो निर्वाणगतः मार्गशीर्षबहुलैकादश्या प्रादेशान्तरेण फाल्गुनबहुलचतुर्थ्यामिति ॥ एवचेवत्ति ॥ पद्मप्रभसूत्र मिवपुष्पदंतसूत्र मप्यध्येतव्य मेव मनन्तरोक्तस्वरूपेण एतेना नन्तरत्वा न्नात्यक्षेणाभिलापेन सूत्रपाठेमे मा स्मिस्तः सूत्रसंग्रहणिगाथा अनुगन्तव्या अनुसर्त्तव्याः शेषसूत्राभिलापनिष्पादनार्थं ॥ पउमप्पभस्सेत्यादि ॥ तत्र पद्मप्रभस्य चित्रानक्षत्र च्यवनादिषु पंचस्थानकेषु भवती त्यादिगाथाक्षरार्थो वक्षाव्य. सूत्राभिलाप स्त्वाद्यसूत्रद्वयस्य साक्षाद्दर्शितएव इतरेषांत्विव ॥ सीयलेण अरहा पंचपुव्वासाढे होत्था तजहा पुव्वासाढाहिं चुएचइत्ता गब्भं वक्कंते पुव्वासाढाहिं जाएइत्या दि ॥ एवसर्वाण्यपोति व्याख्यात्विव पुष्पदंतो नवमतीर्थंकर आनतकल्पा देकोनविंशतिसागरोपमस्थितिकात् फाल्गुनबहुलनवम्या मूलनक्षत्रे च्युतः च्युत्वा का कन्दीनगर्यां सुग्रीवराजभार्यायाः रामाभिधानायाः गर्भत्वेन व्युत्क्रान्तो मूलनक्षत्रे मार्गशीर्षबहुलपंचम्या जात स्तथा मूलएव ज्येष्ठशुद्धप्रतिपदि मतांतरेण मार्गशीर्षबहुलषष्ठ्यां निष्क्रान्तः तथामूलएव कार्त्तिकशुक्लतृतीयायां केवलज्ञान मुत्पन्नं तथा ऽश्वयुज. शुद्धनवम्या मादेशांतरेण वैशाखबहुलषष्ठ्यां निर्वृतइति

रणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणेसमुप्पन्ने चित्ताहिंपरिनिव्वुए १। पुप्फदंतेणं अरहा पंच मूले होत्था मूलेणंचुएचइत्ता गब्भंवक्कंते एवचेव एएणं अभिलावेणं इमाउगाहाउ अणुगंतव्वाउ। पउमप्पभस्स

त्रानक्षत्रमां मोक्ष पोहता ५ ॥ सुविधिनाथ अरिहंतना पांच कल्याणक मूल नक्षत्रमां थया मूलमां देवलोकथी चवी गर्भमां ऊपना १ ॥ इमज एणे

तथा शीतलो दशमजिनः प्राणतकल्पाद्विंशतिसागरोपमस्थितिका द्वैशाखबहुलषष्ठ्यां पूर्वाषाढानक्षत्रे च्युतः च्युत्वाच भद्दिलपुरे दृढरथनृपतिभार्याया नन्दा या: गर्भतया व्युत्क्रान्तः तथा पूर्वाषाढास्वेव माघबहुलद्वादश्यांजातः तयापूर्वाषाढास्वेव माघबहुलद्वादश्यां निष्क्रांतः तथा पूर्वाषाढास्वेव पौषस्यशुद्धे मता न्तरेण बहुलपक्षे चतुर्दश्यां ज्ञान मुत्पन्न तथा तत्रैव नक्षत्रे श्रावणशुद्धपचम्यां मतातरेण श्रावणबहुलद्वितीयाया निर्वृतइति एव गाथात्रयोक्तानां शेषाणाम

स्ससचित्ता मूलेपुणहोइपुप्फदंतस्स पुव्वाआसाढासी यलस्सउत्तराविमलस्सजद्दवया ॥ १ ॥ रेवइयअणंतजि णो पूसोधम्मस्ससंतिणोजरणी कुंथुस्सकत्तियाअ अरस्सतहारेवईजय॥ २ ॥ मुणिसुव्वयस्ससवणो आसिणि नमिणोयनेमिणोचित्ता पासस्साविसाहाअ पचयहत्थुत्तरेवीरो ॥ ३ ॥ समणे जगव महावीरे पंचहत्थुत्तरे

अजिलापे करी एगाथा कही छे तेहथी जांणवूं पदमप्रजु छठा अरिहंतना पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थया ॥ वली मूल नक्षत्रमा पाच कल्याण क पुष्पदत सुविधिनाथना थया ॥ पूर्वाषाढा नक्षत्रमा शीतलनाथना पांच कल्याणक थया ॥ उत्तराजाद्रपदमां विमलनाथना पांच कल्याणक थ या ॥ १ ॥ रेवती नक्षत्रमां पाच कल्याणक अनतनाथना थया ॥ पुष्य नक्षत्रमां पांच कल्याणक धर्मनाथना थया ॥ जरणी नक्षत्रमां पाच कल्याण क शातिनाथना थया ॥ कुथुनाथना पाच कल्याणक कृत्तिका नक्षत्रमां थया ॥ अर नाथना पाच कल्याणक रेवतीमा थया ॥ २ ॥ मुनिसुव्रतना श्र वण नक्षत्रमां ॥ अश्विनी नक्षत्रमां नमिनाथना थया ॥ चित्रा नक्षत्रमां नेमिनाथना थया ॥ विशाखा नक्षत्रमां पार्श्वनाथना थया ॥ अने पांच क ल्याणक महावीरना उत्तराफाल्गुनीमां थया ॥ ३ ॥ श्रमण जगवत महावीर स्वामिने पांच कल्याणक उत्तराफाल्गुनीमां थया उत्तराफाल्गुनीमा

ठा० ॥

६४ ॥

पि सूत्राणां प्रथमानुयोगपदानुसारेणो पयुज्य व्याख्या कार्या नवरं चतुर्दशसूत्रे ऽभिलापविशेषो स्तीति तद्दर्शनार्थ माह ॥ समणेइत्यादि ॥ हस्तोपलक्षितै उत्तरा हस्तोत्तरा हस्तोवो त्तरो यासांता हस्तोत्तरा उत्तराफाल्गुन्यः पचसुच्यवनगर्भहरणादिषु हस्तोत्तरा यस्यस तथा गर्भात् गर्भस्थानात् ॥ गभ्र ति ॥ गर्भे गर्भस्थानान्तरे सहृतो नीतो निर्वृतस्तु स्वातिनक्षत्रे कार्त्तिकामावास्यायामिति ॥ इतिपचमस्थानकस्यप्रथमउद्देशको विवरणतः समाप्तः ॥ १ ॥ उक्तः प्रथमोद्देशकः साम्प्रत द्वितीय आरभ्यते अस्यचाय मभिसम्बन्धो ऽनन्तरोद्देशके विविधा जीववक्तव्यतोक्ता इहापि सैवो च्यत इत्येव मभिसम्बन्धस्या स्येद मादिसूत्रं ॥ नोकप्पइत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेणसहा यमभिसबंधः पूर्वसूत्रे केवलिनिर्गंथगत वस्तूक्त मिहतु छद्मस्थनिर्ग्रंथगत तदुच्यत इत्येव मस्माद्गर्भे

होत्था तंजहा हत्थुत्तराहिंचुएचइत्ता गब्भंवक्कंते । हत्थुत्तराहिं गब्भाउ गब्भं साहरइ । हत्थुत्तराहिंजाए हत्थुत्तराहिमुंडेभवित्ता जाव पव्वइए । हत्थुत्तराहि अणते अणुत्तरे जाव केवलवरनाण दंसणे समुप्पन्ने । इति पंचठाणस्स पढमोउद्देसउ सम्मत्तो ॥ १ ॥ नोकप्पइ निग्गथाणंवा निग्गंथीणंवा इमाउ उद्दिठाउ गणियाउ वजियाउ पंच महण्णवाउ महाणईउ अंतोमासस्स दुखुत्तोवा तिखुत्तोवा उत्तरित्तएवा

देवलोकथी च्यवी गर्भपणे ऊपना १ । तेहीज नक्षत्रमा गर्भसहस्यो २ । तेहीजनक्षत्रमां जन्मथयो ३ । तेहीजनक्षत्रमा दीक्षालीधी ४ । तेज नक्षत्रमा अनत उत्कृष्ट यावत् केवल वर ज्ञान दर्शन ऊपनो ॥ इतिश्री पाचमा ठाणानो पहिलो उदेशो पूरो थयो ॥ १ ॥ हिवे बीजो कहेछे ॥ नकल्पे साधुने तथा साधवीने ए आगलि कहेछे ते एह उदिष्ट गणित सख्याथी पाच व्यजिता प्रगट कीधी पाच महार्णवा घणा पाणी मांहे मोटी

सूत्रादन्येषां च सम्बन्धानां ॥ नोकप्पइत्यादीनां ॥ व्याख्या सुकरैव नवरं ॥ नोकप्पइत्ति ॥ नकल्पते नयुज्यंते एकवचनस्य बहुवचनार्थत्वात् वत्थगन्धमलाल कारमित्यादाविवेति निर्गता ग्रन्थादिति निर्ग्रंथाः साधव स्तेषां तथा निर्ग्रंथीना साध्वीना मिह प्राय स्तुल्यानुष्ठानत्व मुभयेषा मपीति दर्शनार्थौं वाश ब्दो ॥ इमाइति ॥ वक्ष्यमाणनामतः प्रत्यक्षासन्ना उद्दिष्टाः सामान्यतो भिहिता यथा महानद्यइति गणिता यथा पंचेति व्यञ्जिता व्यक्तीकृता यथा गंगेत्यादि विशेषणोपादानाद्वा यथा महार्णवाइति तत्र महर्णव इव या बहूदकत्वा न्महार्णवगामिन्योवा या स्ता महार्णवा महानद्यो गुरुनिम्नगा अंतर्मध्ये मास स्य द्विःकृत्वोवा द्वौवारौ त्रिःकृत्वोवा त्रीन् वारान् उत्तरीतुं लंघयितु बाहुजंघादिना संतरीतुं सांगत्येन नावादिनेत्यर्थः लंघयितुमेव सकृद्वो त्तरीतु मने कशः संतरीतुमिति अकल्प्यतावा त्मसंयमोपघातसम्भवेन शवलचारित्राभावा द्यतआह ॥ मासभंतरतिन्निय दगलेवाओकरेमाणेत्ति ॥ उदकलेपो नाभिप्रमा णजलावतरणमिति इह सूत्रे कल्पभाष्यगाथा इमउत्तिसुत्तउत्ता १ उद्दिट्ठनईओ २ गणियपंचेव ३ गंगादिवजियाओ ४ बहूदयमहण्णवाओय ५ ॥ १ ॥ पंच ण्हगहणेण सेसाविउसूइयामहासलिलेत्ति ॥ प्रत्यपाया श्चेह ओदारमगराईया घोरातत्थउसावया सरीरोवहिमाईया णावातेणावकत्थइत्ति ॥ १ ॥ अ

संतरित्तएवा तंजहा गंगा जउणा सरऊ एएवती मही ॥ पंचहिं ठाणेहिं कप्पंति तंजहा भयंसिवा दुब्भिक्खं सिवा २ पव्वाहेज्जवणंकोई उदघंसिवा एज्जमाणंसि महतावा ऋणारिएहिं । णोकप्पइ णिग्गंथाणंवा णिग्गं

नदी मासमां बेवार त्रिणवार उतरवाने नाव आदिकथी तरवाने भुजाथी ते कहेछे गंगा १ । जमुना २ । सरजू ३ । ऐरावती ४ । मही ५ ॥ अने अपवादमार्गथी कल्पै उतरवाने पांच थानके तेकहेछे राजादिकना भयथी १ । दुकालथी २ । कोईक शत्रु उपाडी गंगादिकमा नांखे ३ । पांणी गं

पवादमाह ॥ पचेत्यादि ॥ भये राजप्रत्यनीकादेः सकाशा दुपध्याद्यपहारविषये सति १ दुर्भिक्षेवा भिक्षाऽभावे सति २ ॥ पव्वहेज्जत्ति॥ प्रव्याथते वाधते श्रं तर्भूतकारितार्थत्वाद्वा प्रवाहयेत् क्वचि प्रत्यनीक स्तत्रैव गगादौ प्रक्षिपेदित्यर्थ. ३ ॥ दश्रोघसिस्सि ॥ उदकौघेवा गगादीना मुन्मार्गगामित्वेना वगच्छति सति तेन प्लाव्यमानानामित्यर्थः महतावा श्राटोपेने तिशेषः ४ ॥ अणारिएसुत्ति ॥ विभक्तिव्यत्ययादनार्यै र्म्लेच्छादिभि र्जीवितचारित्रापहारिभिरभि भूताना मितिशेषः ५ म्लेच्छेषुवा आगच्छत्स्विति शेष एतानि पुष्टा न्यालबनानीति तत्तरणेपि नदोषइति उक्तच सालवणोपडंतो विश्रप्पयदुग्गमेविधा रेइइयसालवणसेवी धारेइजईश्रसढभाव ॥ १ ॥ श्रालंबणहीणोपुणनिवडइखलिश्रोश्रहेदुरुत्तारे इयनिक्कारणसेवी पडइभवोहेश्रगाहमित्ति॥ २ ॥ तथा॥ पढमपा उससित्ति॥ इहा षाढश्रावणौ प्राबृट् आषाढस्तुप्रथमप्राबृट् ऋतूनांवा प्रथमइति प्रथमप्राबृट अथवा चतुर्मासप्रमाणो वर्षाकालः प्राबृडिति विवक्षितस्तत्र सप्त तिदिनप्रमाणे प्राबृषे द्वितीये भागे ताव न्नकल्पतएव गन्तु मथमभागेपि पञ्चाशद्दिनप्रमाणे विंशतिदिनप्रमाणेवा न कल्पते जीवव्याकुलभूतत्वा दुक्तच एत्थयअणभिग्गहिय वीसइराइंसवीसईमास तेणपरमभिग्गहिय गिहिनायकत्तियजावत्ति ॥ १ ॥ अनभिग्रहीत मनिश्चित मशिवादिभि र्निर्गमभावात् आहच असिवादिकारणेहि अहवावासनसुट्ठुआरद्धं अभिवड्ढियमिवीसा इयरेसु सवीसईमासो ॥ १ ॥ यत्रसवत्सरेऽ धिकमासको भवति तत्राषाढ्याः

थीणंवा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जित्तए । पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तंजहा भयंसिसा दुब्भिक्खंसिवा

गादिकनुं उन्मार्ग थई घणो ताणतो आवतां ४ । अनार्य म्लेच्छ आवतां ५ ॥ नकल्पे साधुने तथा साधवीने प्रथम वर्षाकाल चौमासाने विषे ग्रामा नुग्राम विहरवो ॥ पाच थानके चौमासामां कल्पे तेकहेछे भयहुवांथी दुकालथी यावत् मोटा अनार्यने आवतां ॥ वर्षाकाल चौमासाने विषे नकल्पे

विंशति दिनानि याव दनभिग्रहिक आवासो ऽन्यत्र सविंशतिरात्रं मासं पंचाशतं दिनानीति अत्रचै ते दोषाः छकायविराहणया आवडणविषमगा

णुकटेसु वुज्झणअभिहणरुक्खो असावएतेणउवचरए ॥ १ ॥ पच्छुन्नेसुपहेसु पुढवीउदगचहोइदुविहंतु उल्लपयावणअगणो इक्करापणओहरियकुंथुत्ति ॥ २ ॥

तत स्तत्र प्रावृषि किमतआह एकस्मा द्ग्रामा दवधिभूता दुत्तरग्रामाणा मनतिक्रमो ग्रामानुग्रामं तेन ग्रामपरम्परयेत्यर्थः अथवा एकग्रामा त्अनुपचाद्गा

वाभ्यां ग्रामो ऽनुग्रामो गामोय अणुगामोय गामाणुगाम तत्र ॥ दूइज्जित्तएत्ति ॥ द्रोतुं विहर्त्तुं मित्युत्सर्गो पवादमाह ॥ पचेत्यादि ॥ तत्रैव नवर मिन्ने ग्रध्य

येत ग्रामा चालये त्रिक्षापयेत् कश्चित् उदकोघेवा आगच्छति ततोनश्येदिति उक्तंच आवाहेदुब्भिक्खे भएदओघसिवामहतसि परिभवणंतालणवा जया

परोवाकरेज्जासित्ति ॥ १ ॥ तथावर्षासु वर्षाकालेवर्षो वृष्टिः वर्षावर्षो वर्षासुवा आवासो ऽवस्थान वर्षावास स्त सच जघन्यत आकार्त्तिक्या दिनसततिप्र

माणो मध्यमवृत्त्याच चतुर्मासप्रमाण उत्कृष्टतः षण्मासमान स्तदुक्तं इयसत्तरीजहन्ना असिईनउईविसुत्तरसयच जइवासेमग्गसिर दसरायातिन्निउ

क्कोसा ॥ १ ॥ [मासमित्यर्थं] काऊणमासकप्पं तथेवठियाणतीतमग्गसिरे सालंबणाणछम्मा सियोजिट्ठोगहोहोइत्ति ॥ २ ॥ पज्जोसवियाणंति ॥ प

रीति सामस्त्येनो षितानां पर्युषणाकल्पेन नियमवस्तु मारब्धानामित्यर्थः पर्युषणाकल्पश्च न्यूनोदरताकरणं विकृतिनवकपरित्यागः पीठफलकादिस

स्तारकादान मुच्चारादिमात्रकसंग्रहण लोचकरण शैक्षाप्रव्राजन प्राग्गृहीताना भस्मडगलकादीना परित्यजन मितरेषा ग्रहण द्विगुणवर्षाविग्राह्योपकरणध

रण मभिनवोपकरणग्रहण सक्रोशयोजना त्परतो गमनवर्जन मित्यादि उक्तंच दव्वठवणाहारे विगईसंथारमत्तएलोए सच्चित्तेअच्चित्ते वोसिरणंगहणधर

जाव महताबाच्छणारिएहि वासावासंपज्जोसवित्ताणं णोकप्पइ णिग्गंथाणंवा निग्गंथीणंवा २ गामाणुगामं

पाइत्ति ॥ १ ॥ दूइज्जित्तए ॥ निशीथे तारपरामर्षइति ज्ञानमेवार्थो यस्य स ज्ञानार्थ स्तद्भाव स्तत्ता तया ज्ञानार्थतया ज्ञानार्थित्वेन तथा पूर्वः श्रुतस्क न्धो न्यस्या चार्यादे रस्ति सच भक्तं प्रत्याख्यातुकाम स्ततो यद्यसौ तत्सकाशा न गृह्यते ततो सौ व्यवच्छिद्यते ऽत स्तद्ग्रहणार्थं ग्रामानुग्रामं द्रोतुं कल्पते एव दर्शनार्थतया दर्शनप्रभावकशास्त्रार्थितयेन चारित्रार्थतयात् तत्क्षेत्रस्य नेषणा स्त्र्यादिदोषदुष्टतया तद्रक्षणार्थं तथा ॥ आयरियउवज्झाएत्ति ॥ स माचारदंसत्वा दाचार्योपाध्यायवा से तस्य भिचोः ॥ विसुभेज्जत्ति ॥ विष्वक्शरीरात् पृथगभवेत् जायेता म्रिय तेत्यर्थ स्तत स्तान गच्छे न्यस्या चार्या दे रभा वा द्गणांतरागमनार्थं अथवा ॥ वोसुभेज्जत्ति ॥ विश्वभेत तस्य साधो राचार्यादि विश्वस्तोभवे त्ततो त्वन्तरगस्यकार्यकरणायेति तथाचार्योपाध्यायानांवा बहिस्था त्क्षेत्रस्य वर्त्तमानानां वैयावृत्त्यकारणतायै प्रेषितस्या चार्यादिना द्रोतुं कल्पतइति उक्तंच असिवेत्रोमोयरिए रायदुट्टेभएयगेलन्ने नाणाइति

दूइज्जित्तए । पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तंजहा णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए आयरियउवज्झाएवा सेवीसुब्भेज्जा आयरियउवज्झायाणंवावहियावेयावच्चकरणयाए । पंचअणुग्घाइमा पसात्ता तं० हत्यकम्मकरे

निर्ग्रंथ साधुने तथा साध्वीने ग्रामानुग्राम विहार करवो ॥ पांच थानके कल्पे साधुने तथा साध्वीने तेकहेछे ज्ञानने अर्थे १ । सम्यक्त्वने अर्थे २ । चारित्रना लाभने अर्थे ३ । आचार्य उपाध्याय ने मरणादि रोगादिकारणे अथवा अत्यंत हास्य कार्य करवाने ४ । आचार्य उपाध्याय क्षेत्रथी बा हिर रहियाने वेयावच्च करवाने ५ ॥ पांच अनुद्घातिम कहिया तेकहेछे हस्तकर्म हाथे कंदर्पनी कुचेष्टा करतो १ । मैथुन स्त्रीसेवा करतो २ ।

गस्सट्ठा वीसुंभणपेसणेणवत्ति ॥१॥ अणुग्घाइयत्ति ॥ न विद्यते उद्घातो लघूकरणलक्षणो यस्य तपोविशेषस्य तदनुद्घातं यथा श्रुतदानमित्यर्थ स्त दोषां प्रतिसेवा विशेषतो स्तिते ऽनुद्घातिका हस्तकर्म समयप्रसिद्ध तत् कुर्व्वाणो मैथुन मब्रह्मातिक्रमादिना सेवमान स्तथा भुज्यतइति भोजनं रात्रौ भोजन रात्रिभोजन तच्च द्रव्यतो ग्रनादि क्षेत्रत: समयक्षेत्रे कालतो दिवाग्टहीत दिवाभुक्त दिवाग्टहीत रात्रौ भुक्त रात्रौग्टहीतं दिवाभुक्त रात्रौग्टहीत रात्रौभुक्त मित्येवंचतुर्भ ङ्गरूपं भावतो रागद्वेषाभ्यां तद्भुञ्जानो ऽस्मिन्विषयेर्थ: अत्रदोषा. सतिमेसुहुमापाणेत्यादि श्लोकत्रय तथा जइविहुफासुगदव्वं कुथूपणगातहाविदुप्पस्सा पच्च क्खणाणोविहु राईभत्तपरिहरंति ॥ १ ॥ जइविय पिवीलिगाई दीसतिपईवजोइउज्जोए तहविखलुअणाइण्णं मूलवयविराहणाजेणंति ॥ २ ॥ तथा अगार ग्टहं सह तेन वर्त्ततइति सागार: सएव सागारिक: शय्यातर स्तस्यपिंड: आहारोपधिरूप: अन्य स्त्वसौ नभवति उक्तञ्च तणछारडगलमल्लग सेज्जासयार पीढलेवाई सेज्जायरपिंडोसो नहोइसोहोयसीवहिओत्ति ॥ १ ॥ सागारिकपिंड स्त भुञ्जान स्तद्भोजने चा मीदोषा' तित्थकरपडिकुट्ठो अन्नाय [अज्ञातीं च्छोनभवतीत्यर्थ.] उग्गमोवियनसुज्झोय [परिचयात्] अविमुत्तिअलाघवया दुल्लहसेज्जायवोच्छेदो ॥ १ ॥ पडिवक्खनिराकरणं केईअणेअगिहीयगहणस्स तस्साउट्टण [शय्यातरावर्जनमित्यर्थ'] आण एत्थवरेवितिभावल्यति ॥ २ ॥ तथा राज्ञ पिंडोजरापिण्डस्तं भुञ्जान. राजा चेह चक्रवर्त्यादि यतआह जो मुद्दाअभिसित्तो पचहिसहिओहुभुजएरज्ज तस्सउपिंडोवर्ज्जो तव्विवरीयमिभयणाओ ॥ १ ॥ पिंडस्वरूपच असणाईयाचउरो वत्थेपाएयकवलेचेव पाओ

माणे मेहुणंपडिसेवमाणे राईभोयणभुंजमाणे सागारियपिंडभुंजमाणे रायपिंडभुंजमाणे । पंचहिं ठाणेहिं

रात्रिमां भोजन करतो ३ । सय्यातरनु पिंड भोजन करतो ४ । राजपिंड भोजन करतो ५ ॥ पांच थानके श्रमण निग्रंथ राजानां अंतेउरमां प्रवेश

कणएयतद्दा अठ्ठविहोरायपिंडोउ ॥ १ ॥ दोषा आज्ञादय ईश्वरादिप्रवेशादौ व्याघातो मङ्गलधिया प्रेरणालोभ एषणाव्याघात श्चौरादिशङ्कावेत्यादयइति

॥ नाइक्कमइत्ति ॥ आज्ञा माचार वेति नगर स्या ऽत्रवे त्सर्वतः सर्वासु दिक्षु समता द्विदिक्षु अथवा सर्वतः किमुक्तंभवति समतादिति गुप्तं प्राकारावेष्टित

त्वात् गुप्तद्वार द्वाराणा स्थगितत्वात् श्राम्यति तपस्यन्तीति श्रमणा मावधीरिति प्रवृत्ति येषांते माहना उत्तरगुणमूलगुणवंत' सयताइत्यर्थः अथवा श्रम

णाः शाक्यादयो माहना ब्राह्मणाः ॥ नोसचाएत्ति ॥ नशक्नुवंति भक्ताय पानायवा निष्क्रमितुवा निर्गंतुं नगरा त्तद्वहि र्भिक्षाकुलेषु भिक्षित्वा तत्रैव प्रवेष्टु

वेति तत स्तेषां श्रमणादीनां प्रयोजने विज्ञापनाय राज्ञो त'पुरस्थस्य प्रमाणभूतराज्ञ्यावाराजान्तःपुर मनुप्रविशे दिह च शाक्यादीनां प्रयोजने यद्राज्ञो

विज्ञापन तदपवादरूप मसयताविरतत्वा त्तेषा मेतच्च किञ्चि दात्यन्तिक सघादिप्रयोजन मवलबमानाना भवतीति समवसेयमित्येक तथा कृतप्रयोजनैः

प्रतिक्रियते प्रतिनीयते य त्त प्रतिहारप्रयोजनत्वा त्प्रातिहारिक पीठं पट्टादिक फलवा मवष्टम्भफलक शय्या सर्वाङ्गीणा फलकादिरूपा सस्तारको लघुतरो

समणेनिग्गथे रायतेउरमणुपविसमाणे नाइक्कमइ तंजहा णगरेसिया सव्वउसमंतागुत्ते गुत्तदुवारे बहवे सम

णमाहणा णोसंचाएइ भत्ताएवा पाणाएवा निक्कमित्तएवा पविसित्तएवा तेसिंविणवणठ्ठयाए रायतेउरम

णुपविसेज्जा पाडिहारिएवा पीढफलगसेज्जासंथारगंपच्चप्पिणमाणे रायतेउरमणुपविसेज्जा । हयस्सवा गय

करतो जातो आज्ञा अतिक्रमे नथी तेकहेछे नगर एहवो होय कदाचित् । च्यारदिशि कोटथी गुप्त द्वार दीधाळे घणा श्रमण माहन शाक्यादि द

र्शनी ते नथी शक्तिवत भातने पाणीने नीकली सकता नथी पैसी सकता नथी ते श्रमणादिकने कामे वीनववाने अतेउरमा राजाळे तिहा जाई

ऽथवा शय्या शयनं तदर्थं संस्तारकः शय्यासंस्तारको द्वन्द्वैकवद्भावात् पीठफलकशय्यासंस्तारकं ॥ पच्चप्पिणमाणत्ति ॥ आर्यत्वा प्रत्यर्पयितु तत्प्रविशे यस्मा यदानीतं त त्तत्रैव निक्षेप्तव्यमिति कृत्वेतिद्वितीय हयादे दृष्ट्वा दागच्छतो भीतइतितृतीय पर आत्मव्यतिरिक्तः ॥ सहसत्ति ॥ अकस्मात् ॥ बलसत्ति ॥ बलेन हठात् सकार स्त्वागमिको बाहौ गृहीत्वेति चतुर्थं ॥ वहियावत्ति ॥ नगरादे बहि रारामगतं वोद्यानगतवा निर्ग्रन्थ तत्रा रामो विविधपुष्पजात्य् पशोभित उद्यानतु चपकवनाद्युपशोभितमिति ॥ सपरिक्खिवियत्ति ॥ सपरिक्षिप्य परिचार्य सनिविशेत् क्रीडाद्यर्थं गत आवास कुर्यादिति पचममि ति ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमन मिहच पीठादीना मर्प्पणस्य ग्रहणव्यतिरेकेण सम्भवा त्तद्ग्रहण मप्यनेनैव संगृहीत द्रष्टव्यमिति भवतिचात्रगाथा अते

स्सवा दुठस्स आगच्छमाणस्स भीए रायंतेउरमणुपविसेज्जा । परोवणं सहसावा बलसावा बाहाए गहाय रायंतेउरमणुपवेसेज्जा वहियावण आरामगयंवा उज्जाणगयवा रायंतेउरजणो सव्वउसमंता संपरिक्खिवि त्ताणं निविसेज्जा इच्चेएहिपचहिं ठाणेहि समणे जाव णाइक्कमइ । पंचहिं ठाणेहिं इत्थीपुरिसेणसद्धिं

साधुनो विश्वासजले प्रमाण भूतले प्रातिहार अथवा पीठ फलक शय्या संथारो राजाथी आवी आण्योळे ते पाळो आपवाने अंतः पुरमां जाय १ । घोळो अथवा हाथी दुष्ट मदवत साहमुं आवतो देखी बीहतोथको राजाना अतेउरमा पैसे २ । कोईक बीजो अकस्मात् बलात्कारथी हाथ पकडीने लेजायतो राजाना अत पुरमा पैसे । बाहिर आराम बगीचामां गयाळे साथ वा उद्यानमा पोहताळे तिहां राजानो अतेउर आवी च्यारो दिशी वीटीने क्रीडाने अर्थे आवी करी रहै तिहां साधुपणि रहे ॥ एहवा पांच थानके श्रमण निग्रंथ यावत् आज्ञा अतिक्रमे नथी ॥ पांच थानके स्त्री पु

उरंचतिविहं जुगांनवपंचकन्नगाणंच एक्केकंपियदुविहं सट्ठाणेचेवपरठाणे ॥ १ ॥ एतेसामण्णपरं रणोअंतेउरंतुजोपविसे सोआणाअणवत्थं मिच्छत्तविराहणं पावे ॥ २ ॥ सद्दाइइंदियत्थो वओगदोसाणएसणासोहि सिंगारकहाकहणे एगयरभएयबहुदोसा ॥ ३ ॥ वहियावि [निर्गतस्येत्यर्थ.] होंतिदोसा केरिसगा कहणगिणहणाईया गब्बोवाउसियत्तं सिगाराणचसंभरणं ॥ ४ ॥ वितियपद [अपवाददृत्यर्थः] मणाभोगे वसहिपरिक्खेवसेज्जसंथारे हयमाईदुट्ठाण आव यमाणाणवाज्जेहत्ति ॥ ॥ ५ ॥ अनन्तरमंतःपुरसूत्रत्वात् स्त्रीगत सुत्र मधुनापि तद्गतमेव क्रियाविशेषमाह ॥ पंचहीत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टयं कण्ठ्य नवरं ॥ दु व्वियडत्ति ॥ विवृता अनावृता साचो त्तरीयापेक्षयापिस्या दतो दुःशब्देन विशेष्यते दुष्टविवृता दुर्विवृता परिधानवर्जितेत्यर्थः अथवा विवृतोरुका दुर्व्वि वृता सती दुर्निषण्णा दुष्टविरूपतयो पविष्टा गुह्यप्रदेशेन कथंचित् पुरुषनिसृष्टशुक्रपुद्गलवद्भूमिपट्टादिक मासन माक्रम्य निविष्टा सादुर्विवृता दुर्निषण्णेति शुक्रपुद्गलान् कथचित् पुरुषनिसृष्टा नासनस्था नधितिष्ठे द्योन्याकर्षणेन सम्टह्णीयात् तथा शुक्रपुद्गलसंसृष्टं ॥ से ॥ तस्या स्त्रिया वस्त्र मंत मध्ये योना व नुप्रविशे दिहच वस्त्र मित्युपलक्षण तथाविध,मन्यदपि कोशिमातुः कोशवत् कण्डूयनार्थं रक्तानिरोधार्थंवा तया प्रयुक्तं सद नुप्रविशे दनाभोगेनया तथावि धं वस्त्रं परिहित सद्योनि मनुप्रविशे त्तथा स्वयमिति पुत्रार्थिनीत्वात् शीलरक्षकत्वाच ॥ सेत्ति ॥ सा शुक्रपुद्गलान् योना वनुप्रवेशयेत् तथा परोवेति श्वश्रू

ञ्जसंवसमाणीवि गब्भंधरेज्जा तजहा दुव्वियडा दुन्निसन्ना सुक्कपोग्गले ञ्जहिट्ठेज्जा । सुक्कपोग्गलसंसिठे

रूपसाथे अगारहती अलगी रहती पणि गर्भ धरे तेकहेछे वस्त्ररहित माठीरीतयी वेठी तिहां भूमिकाये तथा पाटला प्रमुखे लागा जे शुक्रना पुद्गल योनिमां प्रवेश करे योनिमार्गयी ग्रही लेवे १ । शुक्रना पुद्गलयी खरड्यो जेवस्त्र ते योनिमांहि पेसे तिवारे पुद्गल ग्रही गर्भ धरे २ । पोतेकाईक

प्रभृतिकः एतार्थमेव ॥ से ॥ तस्या योना वितिगम्यते तथा ॥ वियडंति ॥ समयभाषया जलं तस्मा नेकधे त्यंत उच्यते शीतोदकलचणं यद्विकटं पल्वलादिगत मित्यर्थः तेनवा ॥ से ॥ तस्या आचमत्याः पूर्वपतिता उदकमध्यवर्त्तिन. शुक्रपुद्गला अनुप्रविशेयुरिति ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमनमिति अप्राप्तयौवना प्राय आवर्षद्वादशका दार्त्तवाभावा त्तथा तिक्रान्तयौवना वर्षाणा पचपचाशतः पंचाशतोवा परत आर्त्तवाभावा देव यतोवाचि मासि २ रज.स्त्रीणा मजस्त्र स्रवतिच्यह वत्सराद्द्वादशादूर्द्धं यातिपंचाशतःचयं ॥ १ ॥ पूर्णषोडशवर्षास्त्री पूर्णविंशेनसगता शुद्धेगर्भाशये १ मार्गे २ रक्ते ३ शुक्रे ४ निले ५ हृदि ॥ २ ॥ वोर्यवतसुतसूते ततोन्यूनाव्दयोःपुनः रोग्यल्पायुरधन्योवा गर्भोभवतिनेववेति ॥ ३ ॥ शुद्धे निर्दोषे गर्भाशयादिषट्कइत्यर्थः तथा जाते जन्मत आरभ्य वध्या

वसे वत्थे अंतो जोणीए अणुपविसेज्जा । सयंवासेसुक्कपोग्गले अणुपविसेज्जा । परोवा सेसुक्कपोग्गले अणु पविसेज्जा ४ । सीउदगवियडेणवा सेआयममाणीए सुक्कपोग्गले अणुपविसेज्जा ५ । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहि जाव धरेज्जा ॥ पचहि ठाणेहिं इत्थी पुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गब्भं नोधरेज्जा तंजहा अप्पत्तजो

स्त्री पुत्रनी अर्थिनी पुत्रनी इच्छा करनारी शीलराखवाने ते शुक्र वीर्यना पुद्गल योनिमा प्रवेशकरावे मूके ३ । परवीजो सासू प्रमुख पुत्रार्थे वहूना गुह्यप्रदेशमा वीर्य पुद्गल प्रवेशे मूके ४ । शीतल जल विकट पलवल द्रह प्रमुखनु तिहां स्नान करते पूर्व पतित वीर्य पुद्गल योनिमां प्रवेश करे अ ने गर्भ धरवानो समय होय ५ ॥ एहवा पांच थानके स्त्री पुरुष साथे अणरहती पिण गर्भ धारण करे ॥ पांच थानके स्त्री पुरुष साथे वसती थ की पिण गर्भ धारण नकरे ते कहेछे अप्राप्तयौवना प्राय १२ वरसनी स्त्री १ । तथा अतिक्रातयौवना ५५ वरस पीछे रितुना अन्नावथी एतले पच

निर्बीजा जातिवध्या तथा ग्लान्येन ग्लानत्वेन स्पृष्टाग्लान्यस्पृष्टा रोगार्दिता तथा दौर्मनस्य शोकाद्यस्ति यस्याः सा दौर्मनस्थिका तद्वा जात मस्या इति दौर्मनस्थितेति ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमन नित्य सदा न न्यहमेव ऋतू रक्तप्रवृत्तिलक्षणो यस्या सा नित्यर्तुका तथा न विद्यते ऋतू रक्तरूप. शास्त्रप्रसि डोया यस्या. सा अनृतुका तथाहि ऋतुस्तुद्वादशनिशाः पूर्वास्तिस्रोऽत्रनिंदिता. एकादशीचयुग्मासु स्यात्पुत्रोऽन्यासु कन्यका ॥ १ ॥ पद्मंसकोचमायाति दिनेतीतेयथातथा ऋतावतीतेयोनिःसा नैवशुक्रंप्रतीच्छति ॥ २ ॥ मासेनोपचितरक्त धमनीभ्यामृतौपुनः ईषत्कृष्णविगधंच वायुर्योनिमुखात्तुदेदिति ॥ ३ तथा व्यापन्न विनष्ट रोगतः श्रोतो गर्भाशयच्छिद्रलक्षण यस्याः सा व्यापन्नश्रोता स्तथा व्यादिग्ध व्याविद्धवा वातादिव्याप्त विद्यमानमप्युपहतशक्तिक श्रोत

वुणा अइक्कंतजोव्वुणा जाइवंज्झा गेलन्नपुठ्ठा दोमणंसिया । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थीपुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गब्भंनोधरेज्जा ॥ पचहि ठाणेहि इत्थीपुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गब्भंनोधरेज्जा तजहा निच्चोउच्या अणोउया वावन्नसोया वाविद्धसोया अणगपडिसेविणी । इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहि इत्थी

पन वरसनी स्त्री २ । तथा जातिवध्या जन्मथी निर्बीजा स्त्री ३ । तथा ग्लानस्पृष्टा रोगथी पीडायुक्त जे स्त्री ४ । तथा दौर्मनस्थिका शोकादिक मानसी पीडायुक्त जे स्त्री ५ ॥ एहवा पाच थानके स्त्री पुरुष साथे रहती थकी पिण गर्भ नधारे ॥ पांच थानके स्त्री पुरुष साथे वसती थकी गर्भ नधारे ते कहेछे नित्यर्त्तुका नित्य सदा प्रतिदिनछे रितू रक्तनी लोहीनी प्रवृत्ति प्रश्राव जेहने १ । तथा नथीछे रितू रक्त प्रश्रवणरूप शास्त्रप्रसिद्ध जेहने ते अनर्त्तुका २ । व्यापन्न कहिये विनाशने प्राप्त थयोछे रोगथी गर्भाशय च्छिद्रलक्षण जेहनु ते व्यापन्नश्रोता ३ । वातादिकथी व्याप्त वि

उक्तरूप यस्या' सा व्यादिग्धश्रोता व्याविद्धश्रोतावा तथा मैथुने प्रधान मग मेहनं भगश्च तत्प्रतिषेधो ऽनंगं तेना नगेना हार्यलिंगादिना ऽनंगेवा मुखादौ प्रतिषेवा अस्तियस्याः अनगवा काम मपरापरपुरुषसपर्कतो ऽतिशयेन प्रतिषेवत इत्येवं शीला अनगप्रतिषेविणी तथाविधवेश्यावदिति ऋतौ ऋतुकाले नो नैव निकाम मत्यर्थं वीजपात यावत् पुरुष प्रतिषेवत इत्येव शीला निकामप्रतिषेविणी वापीति उत्तरविकल्पापेक्षया समुच्चये समागतावा से तस्यां ते प्रतिविध्वसते योनिदोषा दुपहतशक्तयो भवति मेहनविश्रोतसावा योने र्वहि'पततो विध्वसतइति उदीर्णं चोत्कट तस्या. पित्तप्रधान शोणित स्यात्तच्चा वीजमिति पुरावा पूर्वंवा गर्भावसरात् देवकर्मणा देवक्रियया देवतानुभावेन शक्त्युपघात' स्यादिति शेषः अथवा देवश्च कार्मणच तथाविधद्रव्यसयोगो देवकार्मण तस्मादिति पुत्रलक्षण फल पुत्रफल पुत्रोवा फल यस्य कर्मण स्तत्पुत्रफलं तद्रा तो निर्विष्ट भवति अलब्ध मनुपात्त स्यादित्यर्थः योववहु निवेसमि

पुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गब्भं नोधरेज्जा ॥ पंचहि ठाणेहि इत्थी पुरिसेणसद्धि संवसमाणीवि गब्भं नोधरेज्जा तजहा उदूसिणोणिगामपडिसेविणीवाविभवइ समागयावासेसुक्कपोग्गलेपडिविद्धंसंति उदिन्ने वासेपित्तसोणिए पुरावादेवकमुणा पुत्तफलेवानोनिविठेभवइ इच्चेएहिं जाव नोधरेज्जा । पचहिंठाणेहिं

दह्यमानथको पिण शक्ति रहित थयोछे श्रोत उक्तरूप जेहनो ते व्यादिग्ध श्रोता ४ । घणी कामसेवाथी गणिका प्रमुख अपरापर पुरुष सेवे तेमां टे ५ ॥ एहवा पाच थानके स्त्री पुरुष साथे वसती पणि गर्भ नधारे ॥ पाच थानके स्त्री पुरुषसाथे रहती पणि गर्भ नधारे ते कहेछे रितुकाले घ णी कामसेवा नकरे १ । अथवा योनिदोषथी वीर्यना पुद्गल माहि आव्या पणि वाहिरपडे कमल संकोचथी २ । उत्कटआकरो ते स्त्रीने पित्तनु सो

त्यादी निर्वेशयग्रन्थस्य लाभार्थस्य दर्शना दथवापुत्रफल यम्यत त्पत्रफल दामं त ज्जन्मान्तरे अनिर्विष्ट मद्दत्तभवति निर्विष्टस्य दत्तार्थत्वा यथा ॥ नानिवि इत्तभृइति ॥ स्त्यधिकारादेव साध्वोवक्तव्यताप्रतिवद्धं सूत्रत्रय मिहमाह ॥ पवद्देत्यादि ॥ सुगमं नवर ॥ एगयओत्ति ॥ एकत्र ॥ ठाणंति ॥ कायोत्सर्गं उ पवेशनंवा ॥ सेज्जति ॥ शयन ॥ निसीहियत्ति ॥ स्वाध्यायस्थान चेतयत: कुर्वंतो नाति क्रामति न लङ्घय त्याज्ञामिति गम्यते ॥ अत्थित्ति ॥ सन्ति भवति ॥ एगइयति ॥ एके केचन एका मद्वितीयां महंतो विपुला मग्रामिका मकामिकावा अनभिलषणीया छिन्ना आपाता: सार्थगोकुलादीनां यस्यां सा तथा ता दीर्घो ऽध्वा मार्गो यस्या सा तथा तां दीर्घाध्वान मकार स्वागमिको दीर्घो ऽद्धावा कालो निस्तरणे यस्या सा दीर्घाध्वा ता मटवी कातार म नुप्रविष्टा दुर्भिक्षादिकारणवशात् तत्राटव्यां ॥ एगयओत्ति ॥ एकत: एकत्रेत्यर्थ: स्थानादि कुर्व्वंत आगमोक्तसामाचार्यानातिक्रामति १ तथा राजधानी यत्र

निग्गंथाय निग्गथीउय एगयउ ठाणंवा सेज्जवा निसीहियंवा चेएमाणा णाइक्कमंति तंजहा अत्थेगइया निग्गथाय निग्गथीउय एग मह अगामिय छिन्नावाय दीहमद्धमडविमणुपविठा तत्थेगयाउ ठाणवा सेज्जवा निसीहियवा चेएमाणा णाइक्कमंति। अत्थेगइया णिग्गंथा गामंसिवा नगरंसिवा जाव रायहाणिवा

णितहोय रुधिर होय ३। अथवा दैव कर्मथी कर्मना दोषथी ४। अथवा पुत्रादि फल कर्म पाछले जवमा उपार्ज्यो नथी ५॥ इत्यादि पांच थान के गर्भ नथी धरे॥ पांच थानकें साधु साध्वी एकठा कायोत्सर्ग करता वैसता आज्ञाना विराधक नथाय ते कहेंछे केतला एक निग्रंथ साधु सा ध्वी मोटी अगा बाळिये एहवी कोईक सार्थ प्रमुख आवे नथी घणा गाउनी अटवी प्रते पैठा तिहा गयाथका पिण साधु साध्वी एक थानके सोता वसता आज्ञा लोपे नथी १। गामने विषे नगरने विषे यावत् राजधानीने विषे रहिवा आव्या एक उपाश्रये रहवा आव्या एक उपाश्रय एक र

राजाऽभिषिच्यते वासमुपगता निवासंप्राप्तादित्यर्थः ॥ एगइयायत्थत्ति ॥ एकका एकतरा निर्ग्रंथा निर्ग्रंथिकावा च पुनरर्थः अत्र ग्रामादौ उपाश्रयं गृहपति गृहादिकमिति२ तथा ॥ अत्थेत्ति ॥ अथ गृहपतिगृहादिक मुपाश्रय मलब्धा ॥ एगइया ॥ एके केचन नागकुमारावासादौ वास मुपगता अथवा ॥ अत्थेत्ति ॥ इह सबध्यते अस्ति सति भवति निवास|मुपगता स्तस्यच नागकुमारावासादे रतिशून्यत्वा दथवाबहुजनाश्रयत्वादनायकत्वाच्च निर्ग्रंथिकारक्षार्थ मेकतएव स्थानादि कुर्वाणा नातिक्रामतीति तथा आमुष्णन्ती त्यामोषका चौरा दृश्यंतेच इच्छन्ति निर्ग्रं थिका ॥ चीवरवडियाएत्ति ॥ चीवरप्रतिज्ञयावस्त्राणि गृही ष्याम इत्यभिप्रायेण प्रतिग्रहितु यत्नेति गम्यते तत्र निर्ग्रं या स्तद्रक्षणार्थं मेकत: स्थानादिकमिति ४ तथा मैथुनप्रतिज्ञया मैथुनार्थमिति ५ इद मपवादसूत्र मुत्सर्गश्चा पवादसहितो भाष्यगाथाभि रवसेय स्ताश्चेमाः भयणपयाणचउण्ह [एक.साधुरेकास्त्रीत्यादिभंगकानामित्यर्थः] अण्णतरजुएउसंजएसते जेभिक्खूवि

वासउवगया एगइयायत्थउवस्सयं लब्भंति एगइया णोलब्भंति तत्थेगयाउ ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । अत्थेगइया णिग्गंथा णिग्गंथीउय णागकुमारावासंसिवा सुवन्नकुमारावासंसिवा वासंउवगया तत्थेगयाउ ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । आमोसगा दीसंति इच्छति णिग्गथीउ चीवरपडियाए पडिगाहेत्तए तत्थे

हवानो ठांम तिहां गया एकठा रहता यावत् आज्ञा प्रते अतिक्रमे नथी २ । केतलाएक साधु साध्वी नागकुमारना देहरामां वसवा आव्या तिहां एकठा रहतां यावत् अतिक्रमे नथी ३ । चोर दीसे तेवाळे साध्वीना लूगडा साडी लेवाने तिहां एकठा रहता अतिक्रमे नथी ४ । जवान पुरुष दे खी बाळे साध्वीने मैथुन सेविवाने ग्रहवाने तिहां एकठा रहता अतिक्रमे नथी आज्ञाप्रते ५ ॥ इत्यादि पांच थानके यावत् रहता अतिक्रमे नथी

॥ हरज्जा अहवाअिकरिज्जासज्झायं ॥१॥ असणादिंताहारि उच्चारादिंचआवरिज्जाकिं निठुरमसाधुजुत्त अणंतरकाहंचजोवाहए [स्त्रीभिःसहेति] ॥२॥ सोआ गाअणायत्थं मिच्छत्तविराहणतहादुविहं पावइजम्हातेणं एएउपएविवज्जेज्जात्ति ॥३ वीयपयमणप्पज्जे [अपवादो ऽनात्मवशइत्यर्थः] गेलन्नुवसग्गरोहगद्धाणे सभमभयवासासुय खंतियमाईणणिक्खमणेत्ति ॥४॥ अचेलः क्षिप्तचित्तत्वादिना क्षिप्तचित्तः शोकेन तत्प्रतिजागरकाः साधवो नविद्यते ततो निर्ग्रन्थिकां पुत्रादिकमिव तत्संगोपायतीति नततो प्यसा वाज्ञा मतिक्रामति १ दृप्तचित्तो हर्षातिरेकात् यक्षाविष्टो देवाधिष्ठितउन्मादप्राप्तो वातादिक्षोभात् ४ निर्ग्रं

गयत्ते ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । जुवाणादीसंति तेइच्छति णिग्गंथीत्ते मेहुणपडियाए पडिगाहेत्तए तत्थे गयत्ते ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । इच्चेएहिं पचहिंठाणेहिं जाव णाइक्कमंति । पचहिंठाणेहिं समणेनिग्गथे अचेलए सचेलियाहिं णिग्गथीहिं सद्धिं संवसमाणे णाइक्कमइ तजहा खित्तचित्तेसमणेनिग्गथे निग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचेलत्ते सचेलियाहिं निग्गंथीहिंसद्धिं संवसमाणे नाइक्कमइ । एवमेएणगमएणं दित्तचित्ते जक्खाइठे उम्मायपत्ते निग्गथीपव्वावियए समणे निग्गथेहिं अविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिनिग्ग

पाच थानके श्रमण निग्रंथ वस्त्ररहित वस्त्रसहित साध्वी साथे वसतो व्यतिक्रमे नथी ते कहेछे व्याक्षिप्त चित्त शोकादिकथी एहवो साधु वीजा साधु कोई नहोय तिवारे पुत्रवत् करी वस्त्र रहितने सचेल साध्वीपासे राखे एकठा रहता अतिक्रमे नथी आज्ञामते १ । एमज हर्षथी दीप्तचित्त २ भूतग्रस्त ३ । वायथी उन्माद पाम्यो ४ । साध्वीये कारण विशेषे पुत्रादिकने दीक्षा दीधी ते पासे विद्यमान वस्त्ररहितछे वस्त्रसहित साध्वीसाथे ॥

॥ न्यिकया कारणवशात् पुत्रादिः प्रव्राजितः सचबालत्वा दचेलो महानपिवा तथाविधव्रडत्वादिनेति य अत्रचोत्सर्गापवादौ भाष्याभिहिताविवं जेभिक्खूयस चेले ठाणनिसीयणउयट्टणवावि वेएज्जसचेलाण मज्झमियआणमाईणि ॥ १ ॥ इयसदसगणसभा सणेहिभिन्नकहविरहजोगेहिं [दोषाभवतीति तथ] सेज्जा तरादिपासण वोच्छेयदुदिट्ठधम्मत्ति ॥ २ ॥ तथा सचरिएविहृदोसा किंपुणएगंतरणिगिणउभओवा दिट्ठमदिट्ठव्वमे दिट्ठिपयारेभवेखोभोत्ति ॥ ३ ॥ उत्सर्गाः वीयपदमणप्पभे गेलन्नुवसग्गरोहगद्धाणे समणाणंअसइए समणीपव्वाविएचेवत्ति ॥ ४ ॥ धर्म नातिक्रमतो त्युक्त तदतिक्रमश्चा स्त्रवरूप इति तद्दाराणि तस्यै वच प्रतिपचत्वा त्सम्बरद्वाराणि पुन राश्रवविशेषांश्च दडक्रियालचणानापरिज्ञासूत्रादाह ॥ पचेत्यादि ॥ सुगम नवर आश्रवण जीवतडागे कर्मजलस्य सं गलन माश्रवः कर्मबंधनमित्यर्थ. तस्य द्वाराणीव द्वारा णुपाया आश्रवद्वाराणीति तथा सवरण जीवतडागे कर्मजलस्य निरोधनं सवर स्तस्य द्वाराणुपा याः सवरद्वाराणि मिथ्यात्वादीना माश्रवाणा क्रमेण विपर्ययाः सम्यक्त्वविरत्यप्रमादाकषायित्वायोगित्वलचणाः प्रथमाध्ययनकव द्वाच्यादति दंड्यते आत्मा न्योवा प्राणी येन सदण्ड स्तत्र त्रसानां स्थावराणावा त्मनः परस्यवो पकाराय हिंसा ऽर्थदण्डो विपर्यया दनर्थदण्डो हिंसितवान् हिनस्ति हिंसिष्य त्यय ॥

थीहिं सद्धिं संवसमाणे णाइक्कमइ ॥ पंच आसवदारा पण्णत्ता तंजहा मिच्छत्तं अविरई पमाउ कसाया जोगा ॥ पंच संवरदारा पण्णत्ता तंजहा संमत्तं विरती अपमाउ अकसाया उत्तमजोगित्तं । पंच दंडा ॥

वसती आज्ञा प्रते अतिक्रमे नथी ५ । पांच आश्रवद्वार कहिया ते कहेछे मिथ्यात्व १ । अविरती २ । प्रमाद ३ । कषाय ४ । जोग ५ ॥ पांच संवर द्वार कह्या तेकहेछे सम्यक्त १ । विरति २ । अप्रमाद ३ । अकषाय ४ । उत्तमयोग ५ ॥ पाच दंड कह्या ते कहेछे अर्थदंड १ । अनर्थदंड कामकाज ॥

भित्यभिसंधे यः सर्पवैरिकादिवधः स हिंसादंडइति ॥ अकस्माद्दंडइत्ति ॥ मगधदेशे गोपालबालाजलादिगसिद्धो ऽकस्मादिति शब्द स इह प्राकृतेपि तथैव ॥ ८
प्रयुक्तइति तत्र न्यवधार्थं शरादि मुक्ते ऽन्यस्य वधो ऽकस्मा द्दंडइति यो मित्रस्या प्यमित्रो यमिति बुद्ध्या वधः स दृष्टिविपर्यासदंडइति एतेह्नि दंडा स्त्रयोद
शानां क्रियास्थानानां मध्ये धीताइति प्रसंगतः शेषाणि प्यष्टौ क्रियास्थाना न्यभिधीयन्ते तत्र मृषाक्रिया प्यात्मज्ञात्याद्यर्थं यदलीकभाषणं १ तथा ऽदत्तादा
नक्रिया त्मार्थं मदत्तगृहणं २ तथा ऽध्यात्मक्रिया यत्केनापि कथंचना प्यपरिभूतस्य दौर्मनस्यकारणं ३ । तथा मानक्रिया यज्जात्यादिमदमत्तस्य परेषां हील
नादिकरणं ४ तथा ऽमित्रक्रिया य न्मातापितृस्वजनादीना मल्पे प्यपराधे तीव्रदंडस्य दहनाङ्कनताडनादिकस्य करणं ५ तथा मायाक्रिया य च्छठतया मनो
वाक्कायप्रवर्त्तनं ६ तथा लोभक्रिया य ल्लोभाभिभूतस्य सावद्यारंभपरिग्रहेषु महत्सु प्रवर्त्तनं ७ तथैर्यापथक्रिया य दुपशांतमोहादे रेकविधकर्मबन्धनमिति ८
अत्रगाथा अट्ठा १ णट्ठा २ हिंसा ३ कम्हा ४ दिट्ठीय ५ मोस ६ दिणेय ७ अभत्थ ८ माण ९ मित्ते १० माया ११ लोभे १२ रियावहियत्ति १३ ॥ १ ॥ नयरं

पण्णत्ता तंजहा अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकस्माद्दंडे दिट्ठिविपरियासियादंडे । पंच किरियाउ पण्णत्ताउ तजहा आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया मिच्छादंसणवत्तिया । मिच्छ दिट्ठिनेरइयाणं पंच किरियाउ पण्णत्ताउ तंजहा आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवंसव्वेसिंनिरं

विनाज पापकर्ममां प्रवर्त्तवो २ । हिंसादंड ३ । अकस्मात् दंड अन्यने हणतां बीजो हणाये ४ । दृष्टिविपर्यासदंड ते मित्रने अमित्र जाणी हणे ५ ॥
मिथ्यादृष्टी नारकीने पांच क्रिया कही तेकहेछे आरंभिकी १ । पारिग्रहिकी २ । माया प्रत्येकी ३ । अप्रत्याख्याननी ४ । मिथ्या दर्शननी ५ ॥ इम

॥ विगलिंदियेत्यादि ॥ एकद्वित्रिचतुरिंद्रियेषु मिथ्यादृष्टिविशेषणं न वाच्यं तेषां सदैव सम्यक्त्वाभावेन व्यवच्छेद्याभावात् सासादनस्य चाल्पत्वेना विवक्षितत्वा दिति कायिकी कायचेष्टा १ अधिकरणिकी २ खड्गादिनिवर्त्तिनी २ प्राद्वेषिकी मत्सरजन्या ३ पारितापनिकी दुःखोत्पादनरूपा ४ प्राणातिपातः प्रतीतः ५ ॥ दिठ्ठिया ॥ अश्वादिचित्रकर्मक्रियादर्शनार्थं गमनरूपा १ ॥ पुठ्ठिया ॥ जीवादीन् रागादिना पृच्छतः स्पृशतोवा २ ॥ पाडुच्चिया ॥ जीवादीन् प्रतीत्य या ३ ॥ सामतोवणिवाइया ॥ अश्वादिरथादिक लोके श्लाघयति हृष्यतो ऽश्वादिपतेरिति ४ ॥ साहत्थिया ॥ स्वहस्तगृहीतजीवादिना जीवं मारयतः ॥ नेस

तरं जाव मिच्छदिठ्ठियाणंवेमाणियाणं । णवरं विगलेंद्दिया मिच्छादिठी नन्नन्नंति सेसं तहेव । पंच किरि याउ पन्नत्ताउ तंजहा काइया ऋहिगरणिया पाउसिया पारियावणिया पाणाइवायकिरिया । नेरइयाणं पंच एवचेव । एवंनिरतर जाव वेमाणियाणं। पंच किरियाउ पन्नत्ताउ तजहा ऋारंभिया १ जाव मिच्छा दंसणवत्तिया ५ । णेरइयाणं पचकिरिया निरंतरं जाव वेमाणियाणं। पंच किरियाउ पन्नत्ताउ तंजहा

सर्वेने निरंतर यावत् मिथ्यादृष्टी वैमानिक देव २४ दंडकें एतलो विशेषछे विगलेंद्रीमिथ्यादृष्टीज कहिये बीजो तिमज ॥ पांच क्रिया कही ते कहेछे। कायानी १। अधिकरणकी २। प्रद्वेषकी ३। परितापकी ४। प्राणातिपातकी ५॥ नारकीने ए पाच एमज एमनिरंतर यावत् वैमानिक ताइं ॥ पांच क्रिया कही तेकहेछे। आरंभिकी यावत् मिथ्या दर्शनकी ५॥ नारकीने एपांच क्रिया निरंतर वैमानिक ताइं ॥ पांच क्रिया कही ते कहेछे। दृष्टि की जोवाजावूं १। फर्शकी रागथी जीवादिकने फरस २। जीवादिक प्रत्ययकी ३। घोडा प्रमुख लोकने बखाणतो वस्तु धणी हर्षपामे ४। स्वहस्ते

त्थिया ॥ यंत्रादिना जीवाजीवा न्निसृजत: १ ॥ आणवणिया ॥ जीवाजीवा नानासंयत: २ ॥ वियारणिया ॥ तानेवविदारयत: ३ ॥ अणाभोगवत्तिया ॥ अनाभोगेन पात्रा द्याददतो निच्चिपतोवा ४ ॥ अणवकंखवत्तिया ॥ इहलोकपरलोकापायानपेचस्येति ५ ॥ पेज्जवत्तिया ॥ रागप्रत्यया १ ॥ दोसव त्तिया ॥ द्वेषप्रत्यया २ ॥ योगक्रिया कायादिव्यापारा: ३ ॥ समुदानक्रिया कर्मोपादान ४ ॥ इरियावहिया योगप्रत्ययो बध: ५ ॥ इदच प्रेमादि क्रियापचक सामान्यपदे चतुर्विंशतिदडके तु मनुष्यपदएव समवति ईर्यापथक्रियाया उपशांतमोहादित्रयस्यैवभावादित्याह ॥ एवमित्यादि ॥ इहे केंद्रिया

दिठ्ठिया १ पुठ्ठिया २ पाडुच्चिया ३ सामंतोवणिवाइया ४ साहत्थिया ५ । एवंणेरइयाणं जाव वेमाणि याणं २४ । पंच किरियाउ पसत्ताउ तजहा णेसत्थिया १ आणवणिया २ वेयारणिया २ अणाभोगवत्ति या ४ अणवकंखवत्तिया ५ । एवं जाव वेमाणियाणं २४ । पंच किरियाउ पसत्ताउ तजहा पेज्जवत्तिया १ दोसवत्तिया २ पउगकिरिया ३ समुदाणकिरिया ४ इरियावहिया ५ । एव मणुस्साणवि सेसाणनत्थि ।

जीवादि हणे ५ ॥ इम नारकीने वैमानिक ताईं २४ ॥ पांच क्रिया कही तेकहेछे यंत्रादिके जीवाजीव पालता १ । जीवादिक अणाववा २ । तेज अ णावी विदारता छेदता ३ । अनाभोग पणे जिम तिम बोलतां मूकता लेतां ४ । इहलोक परलोकना कष्टनी विचारणा नही जे पाप फल कटुकछे ५ ॥ इम यावत् वैमानिक ताईं २४ दंडके ॥ वली पांच क्रिया कही तेकहेछे । राग प्रत्येकी १ । द्वेष प्रत्येकी २ । प्रयोग क्रिया कायादि व्यापार ३ ।

दीना मविशेषेण क्रियो क्ता साच पूर्वभवापेक्षया सर्वापि संभवतीति भावनीयं द्विस्थानके द्वित्वेन क्रियाप्रकरण मुक्त मिहतु पंचकत्वेन नरकादिचतुर्विं
शतिदंडकाश्रयेणचेति विशेषः क्रियाणाच विस्तरव्याख्यान द्विस्थानकप्रथमोद्देशका द्वाच्यमिति अनन्तरं कर्म्मणो बंधनिबंधनभूताः क्रिया उक्ता अधुना तस्यैव
निर्जरोपायभूतां परिज्ञामाह ॥ पंचविहेत्यादि ॥ सुगम नवरं परिज्ञान परिज्ञावस्तुस्वरूपस्य ज्ञान तत्पूर्वकप्रत्याख्यान इयच द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतोऽनु
पयुक्तस्य भावतस्तूपयुक्तस्ये त्याहच भावपरिन्नाजाणण पच्चक्खाणचभावेणंति ॥ तत्रो पधी रजोहरणादि स्तस्या तिरिक्तस्या शुद्धस्य सर्वस्य वा परिज्ञा
उपधिपरिज्ञा एव शेषपदान्यपि नवरं उपाश्रीयते सेव्यते सयमात्मपालनाये त्युपाश्रयः परिज्ञाच व्यवहारवतां भवतीति व्यवहारं प्ररूपयन्नाह ॥ पचेत्यादि ॥
व्यवहरण व्यवहारो व्यवहारो मुमुक्षप्रवृत्तिनिवृत्तिरूप इहतु तन्निबंधनत्वात् ज्ञानविशेषोपि व्यवहार स्तत्र आगम्यते परिच्छिद्यतेर्थो नेने त्यागमः केवलमनः

पचविहा परिन्ना प० तं० उवहिपरिन्ना उवस्सयपरिन्ना कसायपरिन्ना जोगपरिन्ना भत्तपाणपरिन्ना। पंच विहे ववहारे प० त० आगमे १ सुए २ आणा ३ धारणा ४ जीए ५। जहासे तत्थ आगमेसिया आगमेणं

समुदायकर्म बांधे ४। जेमन वचन काया जोगथी वंधाए ५॥ एपांच क्रिया इहां एकेंद्रियादिकने क्रिया ओ कही ते सघली पूर्व भवना अपेक्षायें
मनुष्यनेज होय बीजे दंडके नथी॥ पाच प्रकारनी परिज्ञा कही वस्तुनूं स्वरूप जाणी पचखवुं ते परिज्ञा ते कहेछे। उपधिरजोहरणादि अशुद्धनी
परिज्ञा १। उपासरानी परिज्ञा अशुद्ध वसति जाणी छाळवी २। कषायनी परिज्ञा ३। जोग परिज्ञा ४। भातपाणीनी परिज्ञा ५॥ पाच प्रकारे
व्यवहार कह्यो ते कहेछे। आगम व्यवहार १। जाणिये अर्थ जेणे ते आगम केवल मनपर्यव अवधिज्ञान चौदेपूर्व नवपूर्व लगे ए आगम। शेष आ



पर्यायावधिपूर्वचतुर्दशकदशकनवकरूपः १ तथा शेषं श्रुत माचारप्रकल्पादिकं श्रुतं नवादिपूर्वाणां श्रुतत्वे प्यतीन्द्रियार्थज्ञानहेतुत्वेन सातिशयत्वा दागमव्यपदे शः केवलवदिति यदगीतार्थस्य पुरतो गूढार्थपदै देशान्तरस्थगीतार्थनिवेदनाया तिचारालोचन मितरस्यापि तथैव शुद्धिदानं साज्ञा गीतार्थसंविग्नेन द्रव्या द्यपेक्षया यत्र पराधे यथा या विशुद्धिः क्षताता मवधार्य य दन्य स्तत्रैव तथैव तामेव प्रयुंक्ते साधारणा वैयावृत्यकरादेर्वा गच्छोपगृहकारिणो ऽशेषानुचि तस्यो चितप्रायश्चित्तपदाना प्रदर्शितानां धरणं धारणेति तथा द्रव्यक्षेत्रकालभावपुरुषप्रतिषेवानुवृत्त्या संहननवृत्त्यादिपरिहाणि मवेक्ष्य यत्प्रायश्चित्तदानं योवा यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्तः कारणतः प्रायश्चित्तव्यवहारप्रवर्त्तितो बहुभि रन्यैश्चा नुवर्त्तित तज्जीतमिति अत्रगाथा आगमसुयववहारो सुणहजहाधी रपुरिसपन्नत्तो पच्चक्खोयपरोक्खो सोवियदुविहोमुणेयव्वो ॥ १ ॥ पच्चक्खोवियदुविहो इंदियजोचेवनोयइंदियजो इंदियपच्चक्खोविय पंचसुविसएसुणेयव्वो ॥ २ नोइंदियपच्चक्खो ववहारोसोसमासओतिविहो ओहिमणपज्जवेया केवलनाणेयपच्चक्खो ॥ ३ ॥ पच्चक्खागमसरिसो होइपरोक्खोविआगमोजस्स चंदमहीचउ सोविहु आगमववहारवंहोइ ॥ ४ ॥ पारोक्खववहार आगमओसुयहरावववहरंति चोद्दसदसपुव्वधरा नवपुव्विगगंधहत्थीय ॥ ५ ॥ जजहमोल्लरयणं तंजाण इरयणवाणिओनिउणं इयजाणइपच्चक्खो जोसुज्झइजेणदिन्नेण ॥ ६ ॥ कप्पस्सयनिज्जुत्ति ववहारस्सेवपरमनिउणस्स जोअत्थओवियाणइ सोववहारीअणु णाओ ॥ ७ ॥ तंचेवणुसज्जंते [अनुसरन्] ववहारविहिंपउजइजहुत्त एसोसुयववहारो पण्णत्तोवीयरागेहिं ॥ ८ ॥ अपरक्कमोतवस्सी गंतुंजोसोहिकारगस मीवे नवएइआगतु सोसोहिकरीविदेसाओ ॥ ९ ॥ अहपट्ठवेइसीस देसंतरगमणनट्ठचेट्ठाओ इच्छामज्जोकाओ सोहितुभसगासिंमि ॥ १० ॥ सोववहारविह णू अणुसज्जित्तासुओवएसेण सीसस्सदेइआण तस्सइमदेहपच्छित्तं ॥ ११ ॥ [गूढैः पदै रुपदिशतीति] ॥ १२ ॥ जेणणयाइदिट्ठ सोहीकरणंपरस्सकीरस जारिसयचेवपुणो उप्पणकारणतस्स ॥ १३ ॥ सोतम्मिचेवदव्वे खेत्तेकालेयकारणेपुरिसे तारिसयचेवपुणो करेंतुआराहओहोइ ॥ १४ ॥ वेयावच्चकरोवा सीस

॥ वादेसहिडओवावि देसअवधारेंतो चउत्थओहोइववहारोत्ति ॥ १५ ॥ बहुसोबहुस्सुएहि जीवत्तोनोनिवारिओहोइ वत्तणुवत्तपमाणं जोएणकयहवइएयं॥१६॥ तथा जजस्सउपच्छित्त आयरियपरपराएअ विरुद्ध जोगायबहुविहीया एसोखलुजीवकप्पोउत्ति ॥ १७ ॥ जीत माचरित मिद्वा स्वलचण असढे हिसमा इन जकत्थइकेणईअसावज्ज ननिवारियमन्नेहिं बहुमणुमयमेयमायरियति ॥ १ ॥ आगमादीनां व्यापारणे उत्सर्गापवादावाह यथेति प्रकारः केव लादीना मन्यतमा ॥ से ॥ तस्य व्यवहर्तुः सवा उक्तलचण स्तत्र तेषु पचसु व्यवहारेषु मध्ये तस्मिन्वा प्रायश्चित्तदानादिव्यवहारकाले व्यवहर्त्तव्येवा वस्तु नि विषये आगम. केवलादिः स्या द्भवे त्तादृशेनेतिशेषः आगमेन व्यवहारप्रायश्चित्तदानादिक प्रस्थापयेत् प्रवर्त्तयेत् नशेषै रागमेपि षड्विधे केवलेना त्तस्यै तदभावेच मन.पर्यायेणैव प्रधानतराभाव इतरेणेति अथवा नोनैव ॥ से॥ तस्य सवा तत्र व्यवहर्त्तव्यादा वागम. स्यात् यथा यत् प्रकार तत्र स्रुत स्या वथ्यव्रोधत्वा त्तादृशेन स्रुतेन व्यवहार प्रस्थापयेदिति ॥ इच्चेएहिइत्यादि ॥ निगमनं सामान्येनेति यथायथा सी तत्रा गमादिः स्या त्तथा तथा व्यव

ववहारे पठवेज्जा णोसे तत्थ आगमेसिया १ जहासेतत्थसुएसिया सुत्तेणं ववहारे पठवेज्जा णोसेतत्थ सुए सिया २ एव जाव जहासे तत्थ जीएसिया जीएणं ववहारेणं पठवेज्जा । इच्चेएहि पंचहिं ववहार पठवेज्जा

चारागादि ते सूत्र । सूत्र व्यवहार २ । आज्ञा व्यहार ३ । धारणा व्यवहार ४ । जीत व्यवहार ५ ॥ जेवहुश्रुते आचर्यो ते आचरवा ते जीत । ति मज तिहाथी आगमवत केवली प्रमुख पूर्वधारी ते आगमेकरी व्यवहार थापे प्रायश्चितादि दे पोताने ज्ञाने १ । नहीते तिहां आगमवत सूत्रे क ह्यो तिम व्यवहारने थापे प्रायश्चितनदे २ । वली तिहा सूत्रना जाण आगमे व्यवहारने थापे इम यावत् जिम ते तिहां जीतवंत जीते व्यवहार

हारं तितु प्रस्थापयेदिविशेषनिगमनमिति एतै व्यंवहर्तु प्रश्नद्वारेण फलमाह ॥ सेकिमित्यादि ॥ अथ किं हेभदत भट्टारका आहुः प्रतिपादयति के आगमबलिका उत्ताश्ना नविशेषव्नलवतः श्रमणा निर्ग्रंथाः केवलिप्रभृतयः ॥ इच्चेयति ॥ इत्येत द्वच्यमाण मथवा कि तदित्याह इत्येव इति उक्तरूप एत प्रत्यचक्ता पचविध व्यवहार प्रायश्चित्तदानादिरूप ॥ समववहारमाणेत्ति ॥ सवध्यते व्यवहरन् प्रवर्त्तयन्नित्यर्थः कथ ॥ समति ॥ सम्यक् तदेव कथ मित्याह यदा यदा यस्मिन् य स्मि न्नवसरे यत्र यत्र प्रयोजने चेत्रेवा यो य उचित स्तमिति शेष स्तदा तदा काले तस्मिन् तस्मिन् प्रयोजनादौ कथभूतमित्याह अनिश्रितै सर्वाशंसार हितै रूपाश्रितोङ्गीकृतो ऽनिश्रितोपाश्रित स्त अथवा निश्रितश्च शिष्यत्वादिप्रतिपन्न उपाश्रितश्च सएव कथमित्याह वैयावृत्त्यकरत्वादिना प्रत्यासन्नतर स्ता वथवा निश्रितश्च रागउपाश्रितश्च द्वेष स्ते ऽथवा निश्रितचा हारादिलिप्सा उपाश्रित च शिष्यप्रतीच्छकक्कुलाद्य पेचा

आगमेणं जाव जीएणं जहा २ से तत्थ आगमे जावजीए तहा २ ववहारं पठवेज्जा सेकिमाउत्संते आगम वलियासमणा निग्गथा इच्चेय पंचविहं ववहारं जया २ जहिं २ तया तया तहि तहिं आणिस्सिउवस्सियं

थापे एणे पांचे व्यवहार थापे । आगमे यावत् जीते जेजिहा जे व्यवहारमा होय आगममां तथा जीतमा तिम तिम व्यवहार थापे । तेस्यां माटे भगवत आगमे वलि आ श्रमण निग्रथ केवली होय । ए पाच प्रकारे व्यवहार प्रते जिवारे जिवारे जिहा जिहा चेत्रकाले तिवारे तिवारे तिहा तिहा आहारादिकनी लालचविना उपाश्रित शिष्यादिकनी अपेचाये मूंकी सम व्यवहारे विचरतो श्रमण निग्रंथ आज्ञानो आराधक होय । जिवारे जे व्यवहारनो काम तिवारे ते व्यवहारे चाले ते आराधक होय ॥ सयमवत मनुष्य ते साधुने सूताने पाच जागता कह्या अरिनने परे ते कहे छे ।

ते नस्तो यत्र तत्तथेति क्रियाविशेषणं सर्वथा पक्षपातवर्जितत्वेन यथावदित्यर्थः इह पूज्यव्याख्या रागोउद्दोइनिस्सा उवसिओदोससंजुत्तो अहवणआहाराई दाहीमज्झतुएसनिस्साओ ॥ १ ॥ सीसोपडच्छओवाहोइउवस्साकुलाईयत्ति ॥ आम्नायाजिनोपदेशस्याराधको भवतीति हंत आइरेवेतिगुरुवचन गम्यमिति श्रमणप्रस्तावा त्तद्व्यतिकरमेव सूत्रद्वयेनाह ॥ सजयेत्यादि ॥ व्यक्त नवर सयत मनुष्याणां साधूनां सुप्तानां निद्रावतां जाग्रतीति जागरा असुप्ता जागरा इव जागरा इय मत्र भावना शब्दादयोहि सुप्तानां सयतानां जाग्रदग्निवदप्रतिहतशक्तयो भवंति कर्मबंधाभावकारणस्या प्रमादस्य तदानीं तेषा मभावा त्कर्मबधकारणं भवतीत्यर्थः द्वितीयसूत्रभावनात् जागराणां शब्दादयः सुप्ताइव सुप्ता भस्मच्छन्नाग्निवत् प्रतिहतशक्तयो भवंति कर्मबधकारणस्य प्रमाद स्य तदानी तेषा मभावा त्कर्मबधकारण भवतीत्यर्थ. सयतविपरीता ह्यसंयताइति तानधिकृत्याह ॥ असजयेत्यादि ॥ व्यक्त नवर मसयतानां प्रमादितया वस्थाद्वयेपि कर्म्मबधकारणतया ऽप्रतिहतशक्तित्वात् शब्दादयो जगराइव जागरा भवन्तीति भावना सयतासयताधिकारा त्तद्व्यतिकराभिधायिसूत्रद्वयं

समं ववहारेमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहएभवइ । संजयमणुस्साणं सुत्ताणं पंच जागरा पन्नत्ता तंजहा सद्दा जाव फासा । संजयमणुस्साण जागराण पंच सुत्ता पन्नत्ता तंजहा सद्दा जाव फासा । असंजय मणुस्साण सुत्ताणंवा जागराणंवा पंच जागरा पन्नत्ता तंजहा सद्दा जाव फासा । पंचहिठाणेहिं जीवा

शब्द रूप रस गंध फरस ए ५ इंद्रीना विषे जागे ॥ संयत मनुष्यने साधुने जागताने पांच सूता भस्मढाक्या अग्निवत् ते कहेले । शब्द यावत् फरस ॥ असंयत मनुष्यने सूताने अने जागताने पाच जागता कह्या तेकहेले । शब्द यावत् फरस कर्म बंधनो कारण ॥ पांच थानके जीव रज ते

:१० ॥
६ ॥

सुगमं नवरं ॥ जीवत्ति ॥ असंयतजीवा ॥ रयति ॥ जीयस्वरूपोपरंजना द्रजइव रजः कर्म्म ॥ आद्रयंतित्ति ॥ आददति गृह्णन्ति बध्नन्तीत्यर्थः ॥ जीवत्ति ॥ संयतजीवाः ॥ वमतित्ति ॥ त्यजति चपयंतीत्यर्थ' सयताधिकारादेवा पर सूत्रत्रय ॥ पचमासिएत्यादि ॥ व्यक्त नवर उपघातो ऽशुद्धता उद्गमोपघात उद्ग मदोषै राधाकर्मादिभिः षोडशप्रकारैं र्भक्तपानोपकरणलेपाना मशुद्धता एव सर्वत्र नवर उत्पादनया उत्पादनादोषैः षोडशभि र्धात्र्यादिभि रेषणया तद्दोषै र्दशभिः शङ्कितादिभिरिति परिकर्म्म वस्त्रपात्रादेश्छेदनसेवनादि तेन तस्यो पघातो कल्पता तत्र वस्त्रस्य परिकर्म्मोपघातो यथा तिगहपरिफालि याण वत्थंजोफालियंतुससीवे पचगहण्णतर [औधिकाद्यन्यतरत्तु] सोपायइआणमाइँणि ॥ १ ॥ [तथा पात्रस्य] अवलक्खणेगबधे दुगतिगअइरेगबधणवा वि जोपायपरियट्टइ [परिभुंक्ते] परंदिवड्ढाउमासाउ ॥ २ ॥ [समाप्नोत्यादीनाप्नोतीति तथावसतेः] दूमियधूमियवासिय उज्जोइयबलिकडाअवत्ताय सित्ता समट्ठाविय विसोहिकोडिंगयावसहित्ति ॥ ३ ॥ दूमिता धवलिता बलिकृता कूरादिना अव्यक्ता छगणादिना लिप्ता समृष्टा समार्जितेत्यर्थः तथा परिहरणा आसेवा तयो पघ्यादे रकल्पता तत्रो पधे यथा एकाकिना छिडकसाधुना यदा सेवित मुपकरण तदुपहतभवतीति समयव्यवस्था जगच्छणअप्पडिवज्जाय जइविचिरेणउवहम्मेति वचना दस्यचायमर्थं एकाको गच्छभ्रष्टो यदि जागर्त्ति दुग्धादिपुष न प्रतिबध्यते तदा यद्यप्यसी गच्छे चिरेणा गच्छति तथा प्युपधि र्नोपहन्यते अन्यथातु पहन्यत इति वसतेरपि मासचतुर्मासयो रुपरिकालातिक्रांततेति तथा मासद्वय चतुर्मासद्वयषा वर्जयित्वा पुन स्तत्रैव वस ता मुपस्थानेपिच तद्दोषाभिधानात् उक्तश्च उउवासासमतीता कालातीताउसाभवेसेज्जा सोचेवउवट्ठाणा दुगुणादुगुणचवज्जित्तत्ति ॥ १ ॥ तथा भक्तस्या परिष्ठापनिकाकारंप्रत्यकल्पता तदुक्त विहिगहियंविहिभुत्त अइरेगभत्तपाणभोत्तव्व विहिगहिएविहिभुत्ते इत्थयचउरोभवेभंगा ॥ १ ॥ अहवाविप्पविहिग हिय विहिभुत्त तगुरुहिएणायं सेसाणाएणाया गहणेदिन्नेवनिज्जुहणाति ॥ २ ॥ उद्गमादिभिरेव भक्तादीनां कल्पता विशुद्धयइति उपघातविशुद्धसूत्तयशजो

वानिर्धर्म्मधार्मिकलाभ्यां बोधे रलाभलाभस्थानेषु प्रवर्त्तंत इति तत्प्रतिपादनाय सूत्रद्वयं ॥ पंचहीत्यादि ॥ सुगमं नवरं दुर्लभाबोधि र्जिनधर्मो यस्यस तया

रयं त्र्याहिज्जंति तंजहा पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं । पंचहिंठाणेहिं जीवा रयं वमंति तंजहा पाणाइ वायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं । पंचमासिएणं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति पंच दत्तीउ भोयणस्स पडिगाहेत्तए पंचपाणगस्स । पंचविहे उवघाए पन्नत्ते तंजहा उग्गमोवघाए उप्पायणोव घाए एसणोवघाए परिक्कम्मोवघाए परिहरणोवघाए । पंचविहा विसोही पन्नत्ता तंजहा उग्गमविसोही उप्पा यणविसोही एसणाविसोही परिक्कम्मविसोही परिहरणविसोही । पंचहिंठाणेहिं जीवा दुल्लभबोहियत्ताए

पापकर्म ते प्रतिग्रहे बांधे ते कहेछे । प्राणातिपाते यावत् परिग्रहथी करी ॥ पांच थानके जीवरज पापकर्मतेवमे ते कहेछे । प्राणातिपातथी विरमे यावत् परिग्रहथी विरमे ॥ पांचमासनी भिक्षु साधुनी प्रतिमा पडिवज्यो एहवा अणगारने कल्पे पांच दांती भोजननी एकवारे पात्रमां आवे ते १ दाति पडिगाहठी लेवी अने पांच पाणीनी ॥ पांच प्रकारे उपघात आहारनो दोष होय तेकहेछे । उपजतां आधाकर्मादि १६ दोष आहारना । उ त्पादना दोष १६ उपजाववाना आहारना धातृप्रमुख । एषणाना दोष १६ शंकितादि । परिकर्मना दोष वस्त्र पात्रा छेदवूं सीववूं । उपधिअसूडतीनो दोषवसति ४ मास अधिकरहे ॥ पांच प्रकारे विसोधी कही शुद्ध मानता आहारादिकनी तेकहेछे । उद्गम विसोधी १ । उत्पादनाविसोधी २ । एष णा विशोधी ३ । परिकर्मणा विशोधी ४ । परिहरणा विशोधी ५ ॥ पांच थानके जीव दुर्लभ बोधि पणानो कर्म बाधे जिन धर्मनी प्राप्ति दोहिली

तङ्गाय स्तात्ता तथा दुर्लभबोधिकतया तस्येववा कर्ममोहनीयादि प्रकुर्वन्ति बध्नन्ति अर्हतां मवण्ण मश्लाघां वदन् यथा नत्थीअरहंतत्ती जाणंतोकीसभुं जएभोए पाहुडियउवजीवइ समवसरणादिरूपाए ॥ १ ॥ माइजिणाणअवण्णो ॥ नच ते नाभूवं स्तत्प्रणीतप्रवचनोपलब्धे नापि भोगानुभवनादे र्दोषो ऽय श्यवेद्यसातस्य तीर्थंकरनामादिकर्मणश्च निर्जरणोपायत्वा त्तस्य तथा वीतरागत्वेनसमवसरणादिषु प्रतिबधाभावादिति तथा अर्हत्प्रज्ञप्तस्य धर्मस्य श्रुतचा रित्ररूपस्य प्राकृतभाषानिबद्ध मेतत् तथा किंचारित्रेण दानमेव श्रेय इत्यादिका मवर्णं वदन् उत्तर चात्र प्राकृतभाषात्वं श्रुतस्य नदुष्टं बालादीनां सुखाध्येय त्वेनो पकारित्वा त्तथा चारित्रमेव श्रेयो निर्वाणस्या नन्तरहेतुत्वा दिति आचार्योपाध्यायाना मवर्णं वदन् यथा बालो ययमित्यादि नच बालत्वादिदोषो बुद्धादिभि र्वृद्धत्वादिति तथा चत्वारो वर्णाः प्रकाराः श्रमणादयो यस्मिन्स तथा सएव स्वार्थिकाण्विधाना चातुर्वर्णं स्तस्य संघस्या वर्णं वदन् यथा कोऽयंसं

कम्म पकरेंति तंजहा अरहंताणमवन्नंवदमाणे अरहंतपन्नत्तस्सधम्मस्सअवन्नंवदमाणे आयरियउवज्झायाण मवन्नंवदमाणे चाउवन्नसंघस्सअवन्नंवयमाणे विविक्कतवबंभचेराणंदेवाणअवन्नंवदमाणे । पंचहिठाणेहिं

होय तेकहेछे १ अरिहंतना अवर्णवाद बोलतो अरिहंत थयातो समोसरणस्यूं बेसवूं ॥ अरिहंतना भाख्याधर्म चारित्र रूप तेहनो अवर्णवाद बोल तो जे चारित्र तेस्यूं दानदे तेज भलूंछे २ । आचार्य उपाध्यायनो अवर्णवाद बोलतो एस्यूं बालकछे ३ । चतुर्विध संघनो अवर्णवाद बोलतो जे ए स्यो संघ पशूनो समुदाय त सरखो ४ । विविक्त परिपूर्ण पाल्यिा भवना तप ब्रह्मचर्य पालयाथी देवता पणूं पाम्या ते देवताना अवर्णवाद बो लतो ५ ॥ पांच थानके जीव सुलभ बोधि पणानो कर्म बांधे ते कहेछे । अरिहंतना गुण बोलतो यावत् विविक्त तप ब्रह्मचर्यथी देवता थया तेह

षो यः समवायबलेन पशुसंघइवा मार्गमपि मार्गीकरोतीति नचैव साधुज्ञानादिगुणसमुदायात्मकत्वा त्तस्य तेनच मार्गस्यैव मार्गीकरणादिति तथा विपक्वं सुपरिनिष्ठित प्रकर्षपर्यन्त मुपगत मित्यर्थ. तपश्च ब्रह्मचर्यंच भवान्तरे येषां विपक्वंवा उदयागतं तपोब्रह्मचर्य तद्धेतुक देवायुष्कादिकर्म येषाते तथा तेषा मवर्णं वदन् नसन्त्येवदेवाः कदाचनाप्यनुपलभ्यमानत्वात् किंवा ते विटैरिव कामासक्तमनोभि रविरतै स्तथा निर्निमेषै रचेष्टैश्च म्रियमाणैरिव प्रव चन कार्यानुपयोगिभिश्चे त्यादिक इहोत्तर सतिदेवा स्तत्कृतानुग्रहोपघातादिदर्शनात् कामासक्तताच मोहसात कर्मोदया दित्यादि अभिहितच एत्यप सिद्धीमोहणि यसायवेयणियकम्मउदयाओ कामपसत्ताविरई कम्मोदयओवियनतेसि॥ १ ॥ अणमिसदेवसहावो निच्चेट्ठाणुत्तराइकयकिच्चा काल णुभावति त्थ् साइपिअसत्यकुवतित्ति ॥ २ ॥ तथा अर्हतावर्णवादोयथा जियरागदोसमोहा सव्वसूतियसनाहकयपूया अच्चतसच्चवयणा सिवगइगमणाजयतिजि णत्ति ॥१॥ अर्हत्प्रणीतधर्मवर्णो यथा वत्थुपयासणसूरी अइसयरयणाणसायरोजयइ सव्वजयजीवबंधुर बंधूदुविहोविजिणधम्मो ॥ २ ॥ आचार्यवर्णवादो य था तेसिंनमोतेसिंनमो भावेणपुणोवितेसिंचेवनमो अणुवकयपरहियरया जेनाणदेंतिभव्वाण ॥ ३ ॥ चतुर्वर्णश्रमणसंघवर्णोयथा एवमिपूइयमि नत्थितय जनपूइयव्वोइ भवणेविपूयणिज्जो नगुणोसघाउजअन्नो ॥ १ ॥ देववर्णवादोयथा देवाणअहोसीलं विसयविसमोहियाविजिणभवणे अच्छरसाहिपिसम हासा ईजेणनकरतित्ति ॥ १ ॥ संयतासंयतव्यतिकरमेव ॥ पचपडिसलीणेत्यादिना ॥ आरोपणासूत्रपर्यंतेन ग्रन्थेनाह गतार्थश्चाय नवरं श्रोत्रेन्द्रियादिक्रमो यथा

जीवा सुलभबोहियत्ताए कम्मं पगरेंति अरहंताणंवन्नंवदमाणे जाव विविक्कतवबंभचेराणं देवाणंवन्नंवद

ना गुण बोलतो ॥ पांच प्रति संलीनता ते संवर भावना कही ते कहेछे । श्रोत्रेंद्री कानना प्रति संलीनता यावत् फरसनी प्रति संलीनता ॥ पांच

प्रधान्या प्राधान्यंच चयोपगमबहुलत्वकृत तथा प्रतिसलीनेतरसूत्रयो. पुरुषोधर्मौ उक्ता: संवरेतरसूत्रयोस्तु धर्म्मएवेति तथा संयमनं सयम: पापोपरम इत्य र्थ स्तत्र समो रागादिरहित स्तस्य अयो गमन प्रवृत्ति रित्यर्थ: समाय: समायएव समायेभव सम।येननिर्वृत्त समायस्यविकारो ऽयोवा समायो वा प्रयोज नमस्येति सामायिक उक्तंच „ रागद्दोसविरहिओ समोत्तिअयणअयोत्तिगमणति समगमणतिसमाओ सएवसामाइयनाम ॥ १ ॥ अहवाभवसमाए निव्वत्त तेणतम्मयनाजि जाप्पयोयणवा तेणविसामाइयनेयति ॥२॥ अथवा समानि ज्ञानादीनि तेषु तैर्वा अयनमय: समाय: सएव सामायिकमिति अवादिच अहवासमाइसम त्तनाणचरणाइतेसुतेहिवा अयणंअयोसमाओ सएवसामाइयनामत्ति ॥ १ ॥ अथवा समस्य रागादिरहितस्या यो गुणानालाभ: समानां

माणे । पंच पडिसंलीणा पन्नत्ता तजहा सोइंदियपडिसलीणे जाव फासिंदियपडिसंलीणे । पंच अपडि सलीणा पन्नत्ता तंजहा सोइंदियअपडिसलीणे जाव फासिंदियअपडिसंलीणे । पचविहे संवरे पन्नत्ते त० सोइंदियसवरे जाव फासिंदियसंवरे । पचविहे असवरे पन्नत्ते तजहा सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदिय असवरे । पंचविहे सजमे पन्नत्ते तजहा सामाइयसजमे छेदोवठावणियसंजमे परिहारविसुद्धियसजमे सुहु

अप्रति संलीनता ते असवर मोकला कह्या ते कहेछे । श्रोत्रेंद्रीनी अप्रति संलीनता यावत् फरसनी अप्रति संलीनता ॥ पांच प्रकारे सवर कह्यो ते कहेछे । श्रोत्रेंद्रीनी सवर यावत् फरसेंद्रीनो सवर ॥ पांच प्रकारनो असवर कह्यो ते कहेछे । श्रोत्रेंद्रीनो असवर यावत् फरसेंद्रीनो असवर ॥ पांच प्रकारे सजम चारित्र तेकहेछे । सामायिक सयम १ । छेदोपस्थापनिक सयम २ । परिहार विशुद्धि चारित्र ३ । सूक्ष्मसपराय चारित्र ४ । यथा

या ज्ञानादीना मायः समायः सएव सामायिक मभाणिच अहवासमस्सआओ गुणाणलाभोत्तिजोसमाओसो अहवासमाणमत्ते नेयोसामाइयंनाम
त्ति ॥ १ ॥ अथवा साम्नि मैत्र्यां साम्नावा आय स्तस्यवा आयः समायः सएव सामायिका अभ्यधायिच अहवा साममेत्ती तत्थअओतेणवत्तिसामाओ अ
हवासामस्साओ लाभोसामाइयनामत्ति ॥ १ ॥ सावद्ययोगविरतिरूपं सर्वमपिचारित्रमविशेषितः सामायिकमेव छेदादिविशेषैस्तु विशिष्यमाण मर्थतः
शब्दतश्चनानात्वं भजते तत्र प्रथमं विशेषणाभावात् सामान्यशब्द एवावतिष्ठते सामायिका मिति तच्च द्विधा इत्वरकालिकं यावज्जीविकंच तत्रेत्वरकालिकं
सर्वेषु प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थे ष्वनारोपितव्रतस्य यावज्जीविकंतु मध्यमविदेहतीर्थकरतीर्थेषु भवतीति तेषू पस्थापना भावादिति सामायिकंच तत्सं
यमश्चे त्येवं सर्वत्र वाक्यं कार्यमिति भवंति चात्रगाथाः सव्वमिणसामइयं छेदादिविसेसओपुणविभिन्नं अविसेसियमादिमयं थियमिहसामन्नसंनाए ॥१॥
सावज्जजोगविरइ त्तितत्थसामाइयंदुहातच इत्तरमावकहंतिय पढमपढमंतिमजिणाणं ॥ १ ॥ तित्थेसुअणारोविय वयस्ससेहस्सथोवकालीयं सेसाणमावक
हियं तित्थेसुविदेहियाणंवेत्ति ॥२॥ तथाच्छेदस्य पूर्वपर्यायस्यो पस्थापनच व्रतेषु यत्र तच्छेदोपस्थापनं तदेवच्छेदोपस्थापनिक तेवा विद्यते यत्र तत् च्छेदो
पस्थापनिक मथवा पूर्वपर्यायच्छेदेनो पस्थाप्यते आरोप्यते यन्महाव्रतलक्षणं चारित्र तत् च्छेदोपस्थापनीयं तदपि द्विधा अनतिचारं सातिचारंच तत्रान
तिचारं य दित्वरसामायिकस्य शिष्यकस्या रोप्यते पार्श्वनाथसाधोर्वा पंचयामधर्मप्रतिपत्तौ सातिचारं य न्मूलप्रायश्चित्तप्राप्तस्येति इहापिगाथे परिया
यस्सच्छेओ जत्थोवट्ठावणवएसुचच्छेदो च्छेदोवट्ठावणमिह तमणइयारेतरंदुविहं ॥ १ ॥ सेहस्सनिरइयारं तित्थतरसकमेवतंहोज्जा मूलगुणघाइणोसा इयार
मुभयचठियकप्पे ॥ २ ॥ प्रथमपश्चिमतीर्थयो रित्यर्थ स्तथा परिहरण परिहार स्तपोविशेष स्तेन विशुद्ध परिहारोवा विशेषेणशुद्धो यस्मि स्तत् परिहारवि
शुद्ध तदेव परिहारविशुद्धिका परिहारेणवा विशुद्धि र्यस्मि स्तत् परिहारविशुद्धिक तच्च द्विधा निर्विशमानक निर्विष्टकायिकंच तत्र निविशमानकानां

यत्त न्निर्विशमानकं यत्तु निविष्टकायानां प्रासेवितविवक्षितचारित्रकायानां तन्निर्विष्टकायिक मिति इहापिगाथे परिहारेणविसुद्धं सुद्धीयतवोजहिंवि
सेसेणं तपरिहारविसुद्ध परिहारविसुद्धियनाम ॥ १ ॥ तंदुविकप्पंनिव्विस माणंनिव्विट्ठगाइयवसेणं परिहारियाणपरिहा रियाणवाणुट्ठियस्सवियत्ति ॥ २ ॥
इहच नवको गणो भवति तत्रचत्वारः परिहारिका अपरेतु तद्वैयावृत्त्यकर श्चत्वार एवा नुपरिहारिका एकस्तु कल्पस्थितो वाचनाचार्यो गुरुभूत इत्यर्थः
एतेषांच निर्विशमानकाना मय परिहारः ग्रीष्मे जघन्यादीनि चतुर्थषष्ठाष्टमानि शिशिरेतु षष्ठाष्टमदशमानि वर्षा स्वष्टमदशमद्वादशानि पारणके चा
यामं इतरेषां सर्वेषा मायाममेव एवमेते चत्वारः षण्मासान् पुनरन्ये चत्वारः षडेव पुनर्वाचनाचार्यः षडिति सर्वएवा यमष्टादशमासिकः कल्प इति
तथा सूक्ष्माः लोभकिट्टिकारूपाः संपरायाः कषाया यत्र तत् सूक्ष्मसंपराय तदपि द्विधा विशुद्ध्यमानकं संक्लिश्यमानकंच तत्राद्य क्षपकोपशमश्रेणिद्वय
समारोहतः संक्लिश्यमानकं तूपशमश्रेणितः प्रच्यवमानस्येति प्रोक्तं कोहाइसंपराओ तेणजुओसंपरोइससारं तंसुहुमसंपराय सुहुमोजत्थावसेसोसे ॥ १ ॥
सेढिविलग्गओत विसुज्झमाणतओवयतस्स तहसंकिलिस्समाण परिणामवसेणविन्नेयं ॥ २ ॥ अथशब्दो यथार्थः यथैवा कषायतयेत्यर्थः आख्यात मभिहित
मथाख्यात तदेव संयमो यथाख्यातसंयमो यच छद्मस्थस्योपशांतमोहस्य क्षीणमोहस्यच स्या त्केवलिनः सयोगस्यायोगस्यच स्यादिति इहाप्यधायि अह
सद्दोजाहत्थो अङ्गोअभिविहीएकाहियमक्खाय चरणमकसायमुदिय तमहक्खायंअहक्खाय ॥ १ ॥ तदुविकप्पंछउम त्थकेवलिविहाणओपुणेक्कि खयसमज
सजोगाजो गिकेवलिविहाणओदुविहंति ॥ २ ॥ एगिंदियाणजीवत्ति ॥ एकेंद्रियान् णमितिवाक्यालंकारे जीवा नसमारंभमाणस्य संघट्टादीना मविषयी

मसंपरायसंजमे अहक्खायसंजमे । एगिंदियाणजीवा असमारंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ तंजहा

ख्यात चारित्र ५ ॥ एकेंद्रीनो जीव आरंभ नकरे ते पांच प्रकारनो संयम करे तेकहेछे । पृथिवी कायनो संयम जीव राखे यावत् वनस्पति कायनो

कुर्वंतः सप्तदशप्रकारस्य संयमस्य मध्ये पंचविधसंयमो व्युपरमो ऽनाश्रवः क्रियते भवति तद्यथा पृथिवीकायिकेषु विषये संयमः संघट्टाद्युपरमः पृथिवीकायिकसंयम एव मन्यान्यपि पदानि असयमसूत्रं संयमसूत्रव द्विपर्ययेण व्याख्येयमिति ॥ पंचिदियाणमित्यादि ॥ इह सप्तदशप्रकारसयमभेदस्य पचेंद्रियसंयमलक्षणस्यें द्रियभेदेन भेदविवक्षणा त्पचविधत्व तत्र पचेंद्रियानारंभे श्रोत्रेन्द्रियस्य व्याघातपरिवर्जन श्रोत्रेंद्रियसयमः एव चक्षुरिंद्रियसयमादयोपि वाच्या असयमसूत्र मेतद्विपर्यासेन वोद्धव्य मिति ॥ सव्वपाणेत्यादि ॥ पूर्व मेकेंद्रियपचेंद्रियजीवाश्रयेण सयमासयमा वुक्ता विहतु सर्वजीवाश्रयेणा तएव सर्वग्रहण कृतमिति प्राणादीना चायं विशेषः प्राणाद्वित्रिचतुःप्रोक्ता भूतास्तुतरवःस्मृताः जीवा.पचेंद्रियाज्ञेयाः शेषाःसत्वाइतीरिताः ॥ १ ॥ इह सप्तदश

पुढविकाइयसंजमे जाव वणस्सइकाइयसंजमे। एगिंदियाणंजीवा समारंभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ तंजहा पुढविकाइयअसंजमे जाव वणस्सइकाइयअसंजमे । पंचिदियाणंजीवाणं असमारंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ तंजहा सोइंदियसंजमे जाव फासिंदियसजमे । पचेंदियाणं जीवा समारंभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ तंजहा सोइंदिय असंजमे जाव फासिंदियअसजमे । सव्वपाणभूयजीवसत्ताणं असमारंभ

संजम राखे ॥ एकेंद्री जीवनो आरंभ करे पांच प्रकारे असयम करे ते कहेछे । पृथ्वीकायनो असंयम यावत् वनस्पति कायनो असंयम ॥ पंचेद्री जीवनो आरभ नकरतो पांच प्रकारनो सयम करे तेकहेछे । श्रोत्रेंद्रीनो सयम यावत् फरसेंद्रीनो सजम॥ पंचेद्री जीवनो आरभ करतो पांच प्रकारे असयमकरे तेकहेछे । श्रोत्रेंद्रीनो असंयम यावत् फरसेंद्रीनो असंजम ॥ सर्व प्राण बेंद्रीयादि भूत वनस्पति जीव पचेंद्री वीजा सत्व पृथिव्यादि तेह

प्रकारसंयमस्याव्यानवभेदाः संगृहीता एकेंद्रियसंयमग्रहणेन पृथिव्यादि संयमपंचकस्य गृहीतत्वादिति एतदन्यथेना संयमसूत्रं ॥ तणवणस्सइत्ति ॥ तृणव नस्पतयो बादरवनस्पतयो ऽग्रबीजादयः क्रमेण कोरंटका उत्पलकंदा वंशाः शल्लकी वटा एवमादयो व्याख्यातं चैत प्रागिति आचरण माचारो ज्ञानादि विषयासेवेत्यर्थः ज्ञानाचारः कालादि रष्टधा दर्शनं सम्यक्त्व तदाचारो निःशंकितादि रष्टधैव चारित्राचारः समितिगुप्तिभेदो ष्टधा तपआचारो ऽनशना दिभेदो द्वादशधा वीर्याचारो वीर्यागोपन मेतेष्वे वेति आचारस्य प्रथमांगस्य पदविभागसमाचारीलक्षणप्रकृष्टकल्पाभिधायकत्वा प्रकल्प आचारप्रकल्पः

माणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ तंजहा एगेंदियसंजमे पंचेंदियसंजमे । सव्वपाणभूयजीवसत्ताणं समारंभ माणस्स पचविहेअसंजमे कज्जइ तंजहा एगेंदियअसजमे जाव पचेंदियअसंजमे । पचविहा तणवणस्सइ काइया पण्णत्ता तंजहा अग्गवीया मूलवीया पोरवीया खधवीया वीयरुहा ॥ पंचविहे आयारे पण्णत्ते तजहा णाणायारे दसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे । पंचविहे आयारपकप्पे प० तं० मासि

नो आरभ नकरे तेहनो पाच प्रकारे संयम करे तेकहेले । एकेंद्रीनो संयम यावत् पचेद्रीनो संयम ॥ सर्वप्राण भूत जीव सत्वनो आरंभ करतो पांच प्रकारे असयमकरे तेकहेले । एकेंद्रीनो असयम यावत् पचेंद्रीनो असयम ॥ पाच प्रकारे तृणवनस्पति काय कह्या ते कहेले । अग्रबीजा कोरटादि वृक्ष १ । मूलबीजा उत्पलादिकंद २ । पर्वबीजा सेलडीबीज ३ । स्कधबीजा सालि प्रमुख ४ । बीज ऊगे ते ताली प्रमुख ५ ॥ पाच प्रकारे आचार कह्यो तेकहेले । ज्ञानाचार १ । दर्शनाचार २ । चारित्राचार ३ । तपाचार ४ । वीर्याचार ५ ॥ पांच प्रकारे उत्कृष्ट आचार कह्यो तेकहेले । प्रायश्चि

निशीथाध्ययनं सच पंचविधः पंचविधप्रायश्चित्ताभिधायकत्वा त्तथाहि तत्र केषुचि दुर्द्देशकेषुलघुमासप्रायश्चित्तापत्ति रुच्यते १ केषुचिच्च गुरुमासापत्तिः २ एवंलघुचतुर्मास ३ गुरुचतुर्मासा ४ रोपणा चेति ५ तत्र मासेननिष्पन्न मासिकं तप स्तत्र उद्घातो भोगपातो यत्रास्ति तदुद्घातिक लघ्वित्यर्थः यतउक्त अद्वेणच्छिन्नसेसं पुव्वद्धेणतुसजुयकाउ देज्जाहिलहुयदाण गुरुदाणतत्तियचेवत्ति ॥ १ ॥ यचेवत्ति ॥ एतद्भावना मासिकतपोधिकृत्यो पदर्श्यते मासस्या र्द्धच्छिन्नस्य शेषदिनानां पचदशक तन्मासापेक्षयाच पूर्वस्यपंचविंशतिकस्यार्द्धेन सार्द्धद्वादशकेन सयुतं कृत सार्द्धा सप्तविंशति र्भवतीति आरोपणातु चडा वणित्तिभणियंहोइ योहि यथाप्रतिषेवित मालोचयति तस्यप्रतिषेवानिष्पन्न मेव मासलघुमासगुरुप्रभृतिकं दीयते यस्तु न तथा त त्तावद्दीयते एव माया सनिष्पन्न चान्यदा रोप्यत इत्यारोपणेति ॥ आरोवणत्ति ॥ आरोपणोक्तस्वरूपा तत्र ॥ पट्ठवियत्ति ॥ वहुष्वारोपितेषु य न्मासगुर्व्वादिप्रायश्चित्त प्रस्थाप यति वोढु मारभते तदपेक्षया सौ प्रस्थापिते त्युक्ता ॥ १ ॥ ठवियत्ति ॥ यत्प्रायश्चित्त मापन्न स्तस्य स्थापित ङ्कृत नवाहयितु मारव्धमित्यर्थः आचार्य्यादि

एउग्घाइए मासिएअणुग्घाइए चउमासिएउग्घाइए चाउंमासिएअणुग्घाइए आरोवणा। आरोवणा पंचविहा पन्नत्ता तंजहा पठविया ठविया कसिणा अकसिणा हाहडा। जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स पुरच्छिमेणं

त देवारूप ते आचार प्रकल्प मास नो १ नीतपते उद्घात सहित पारणा सहित । १५ उपवास १५ पारणा एवंमास । घणे प्रायश्चित्ते गुरुमास त पते अनुद्घातिक पारणादिन विना २ । चारमासी तप पारणा सहित ते उद्घातिक ३ । चारमासी तपते अनुद्घाती पारणादिन जुदाग्रहवा ४ । आरोपणा यथा प्रायश्चित्त तप देवो ५ ॥ आरोपणा पाच प्रकारे कही तेकहेछे । प्रस्थापिता ते तप तरत करे १ । स्थापिता ते थापणा राखे २ ।

वैयाहृत्यकरणार्थं तन्नि वहन्नशक्नोति वैयाहृत्य कर्त्तुं वैयाहृत्यसमाप्तौतु तत्करिष्यतीति स्थापितोच्यत इति कृत्स्ना पुन यत्र ज्झोषो न क्रियते झोषस्त्वय मि ह तीर्थे षण्मासांतमेव तप स्ततः षण्मांमासाना मुपरि यान् मासाना पन्नो ऽपराधी तेषा चपण मनारोपण प्रस्थे चतुःसेतिकातिरिक्तधान्यस्येव झाटनमि त्यर्थः ज्झोषाभावेन सा परिपूर्णेति कृत्स्नेत्युच्यत इतिभावः ३ अकृत्स्नातु यस्या षण्मासाधिक झोष्यते तस्याहि तदतिरिक्तझाटनेना परिपूर्णत्वा दिति ४ ॥ हाडहडेत्ति ॥ यल्लघुगुरुमासादिक मापन्न स्तत्त्यएव यस्या दीयते सा हाडहडोक्तेति एतत्स्वरूपच विशेषतो निशीथविंशतितमोद्देशका दवगन्तव्यमिति ५ अयच सयतासयतगतवस्तुविशेषणव्यतिकरो मनुष्यक्षेत्रएव भवतीति मनुष्यक्षेत्रवर्त्तिनो वस्तुविशेषान् ॥ जबूदीवेत्यादिना उसुयारानत्थित्तिपर्यवसानेन ॥ ग्रन्थेनाह कण्ठ्यश्चाय नवर मालवतो गजदतकात् प्रदक्षिणया सूत्रचतुष्टयोक्ता विंशतिर्वक्खारगिरयो ऽवगतव्यादति इहच देवकुरुषु निषधवर्षधरपर्वता दुत्तरेणा ष्टौ योजनाना शतानि चतुस्त्रिंश दधिकानि योजनस्य चतुरश्च सप्तभागान तिक्रम्य शीतोदाया महानद्याः पूर्वापरकूलयो र्विचित्रकूटाभिधाना

सीयाएमहानदीए उत्तरेण पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता तंजहा मालवए चित्तकूडे पम्हकूडे णलिणकूडे एग सेले । जबूमंदरस्सपुरए सीयाएमहाणदीए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता तजहा तिकूडे वेसमणकूडे

क्रोध रहित तप करे पूर्ण ३ । क्रोध सहित करे तेअपूर्ण ४ । जे लघु गुरु तप वय जोई तप दीजे ५ ॥ जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे मेरुपर्वतने पूर्वदि शे सीता महानदीने उत्तर पासे पाच वक्खार पर्वत कह्या ते कहेछे । मालवत १ । चित्रकूट २ । पद्मकूट ३ । नलिनकूट ४ । एकशैल ५ ॥ जबूद्वीप ने विषे मेरु पर्वतने पूर्वे सीता महानदीने दक्षिणदिशे पाच वक्खार पर्वत कहिया तेकहेछे । त्रिकूट १ । वैश्रमण कूट २ । अंजनकूट ३ । मातजन

॥ योजनसहस्रोच्छ्रितौ ,मूले सहस्रायामविष्कंभा वुपरि पचयोजनशतायामविष्कंभौ प्रासादमंडितौ स्वसमाननामदेवनिवासभूतौ पर्वतौ स्त स्तत स्ताभ्यामु त्तरतोनन्तरोदितान्तर.शीतोदा महानदी मध्यभागवर्त्ती दक्षिणोत्तरतो योजनसहस्रमायत:पूर्वापरत: पचयोजनशतानि विस्तीर्णं वेदिकावनखण्डद्वयपरि क्षिप्तो दशयोजनावगाढो नानामणिमयेन दशयोजननालेना द्वियोजनबाहुल्येन योजनविष्कम्भेना द्वियोजनविस्तीर्णया क्रोशोच्छ्रितया कर्णिकया युक्तेन निषधाभिधानदेवनिवासभूतभवनभासितमध्येन तदर्द्धप्रमाणा ष्टोत्तरशतसख्यपद्मै स्तदन्येषांच सामानिकादिदेवनिवासभूतानांपद्मानां मनेकलक्षै: सम तात्परिवृतेन महापद्मेन विराजमानमध्यभागो निषधो महाह्रद एवमन्येपि निषधसमानवक्तव्यता: स्वसमानाभिधानदेवनिवासा उक्तान्तरा: समव

अंजणे मायंजणे सोमणसे । जंबूमंदरपच्चं सीतोयाए महाणइए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता तंजहा विज्जुप्पभे अंकावई पम्हावई आसीविसे सुहावहे । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोयाएमहाणईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया प० त० चदपव्वए सूरपव्वए णागपव्वए देवपव्वए गंधमायणे । जबूमंदरदाहिणेणं देवकुरा एकुराए पचमहद्दहा पण्णत्ता तंजहा निसहद्दहे देवकुरुद्दहे सूरदहे सुलसदहे विज्जुप्पहदहे।जबूमंदरउत्तरेणं

कूट ४ । सोमनस ५ ॥ जंबूद्वीपें मेरुपर्वतने सीतोदा महानदीने दक्षिणे पाच वक्खार पर्वत कहिया ते कहेछे । विदुत्प्रभ १ । अंकावती २ । पद्मा वती ३ । आशीविष ४ । सुखावह ५ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पश्चिमे सीतोदामहानदीने उत्तरे पांच वक्खार पर्वत कह्या ते कहेछे । चंद्रपर्वत १ । सूर पर्व त २ । नागपर्वत ३ । देवपर्वत ४ । गंधमादन ५ ॥ जबूद्वीपे मेरुथी दक्षिणे देवकुरुने विषे पांच मोटाद्रह कह्या ते कहेछे । निषधद्रह १ । देवकुरुद्र

सेया नवरं नीलाव्यह्लाद्रदो विचित्रचित्रकूटपर्वतसमवक्तव्यताभ्यां यमकाभिधानाभ्यां स्वसमाननामदेवावासाभ्यां पर्व्वताभ्या मनंतरं द्रष्टव्य स्ततो दचि णत: शेषा शत्वार इति एतेच सर्वेपि प्रत्येक दशभिर्दशभि: काञ्चनकाभिधानै योजनशतोच्छ्रिते योजनशतमूलविष्कम्भै: पचाशद्योजनमानमस्तकविस्ता रै. स्वसमाननामदेवाधिवासै: प्रत्येक दशयोजनांतरै: पूर्वापरव्यवस्थिते र्गिरिभि रुपेता एतेषाच विचित्रकूटादिपर्वतह्रदनिवासिदेवाना मसंख्येयतमजबू द्वीपे द्वादशयोजनसहस्रप्रमाणा स्वशामिता नगर्यो भवंतीति ॥ सव्वेविणमित्यादि ॥ सर्वेपि जम्बूद्वीपादिसबधिन: ॥ तेणंति ॥ शीताशीतोदेमहानद्यो प्र तीते लचणीकृत्य नदीदिशीत्यर्थ: मदरवा मेरुवा पर्व्वत प्रति तद्दिशीत्यर्थ: तत्र मालवत्सौमनसविद्युत्प्रभगन्धमादना: गजदंताकारपर्वता मेरुप्रति यथो क्तस्वरूपा: शेषास्तु वचारपर्वता महानद्यो प्रतीते इयचानन्तरोदिता सप्तसूत्री धातकीखण्डस्य पुष्कराईस्यच पूर्वापराईयो र्दृश्ये त्यत एवोक्त ॥ एवजहाजबू द्दीवेत्यादि ॥ समय: काल स्तद्विशिष्ट चेत्र समयचेत्र मनुष्यचेत्र तस्यैवा दित्यगतिसमभिव्यंग्यकृलवनादिकालयुक्तत्वात् ॥ जावपंचमदरत्ति ॥ इहे यव

उत्तरकुराएकुराए पच महद्दहा पसत्ता तंजहा नीलवतदहे एरावणदहे उत्तरकुरुदहे चददहे मालवंतदहे । सव्वेविण वक्खारपव्वया सीयासीओयाउ महाणईउ मंदरंवा पव्वय तेण पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण पंच गाउयसयाइ उव्वेहेणं धायइखडदीवपुरच्छिमद्धेणं । मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेण सीयाएमहाणदीए उत्त

ह २ । सूरद्रह ३ । सुलस द्रह ४ । विदुग्नप्रभद्रह ५ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरे उत्तर कुरुने विषे पाच मोटाद्रह कह्या ते कहेछे । नीलवंतद्रह १ । उत्त र कुरुद्रह २ । चद्रद्रह ३ । ऐरावण ४ । मालवतद्रह ५ ॥ सघला एवक्खारपर्वत सीता सीतोदा महानदी ओ मेरुपर्वतने अने पांचसे योजन ऊच पणे पांचसे ऊडापणे ॥ धातकी खड द्वीपे पूर्वार्द्धे मेरुपर्वतने पूर्वदिशे सीतोदानदीने उत्तरे पाच वक्खारपर्वत कह्या ते कहेछे । मालवत इमजिम जं

कारणा त्यंचहैमवतानि पंच हैरण्यवतानीत्यादि पंच शब्दापातिन इत्यादि चीपयुज्य सर्वं चतुःस्थानकद्वितीयोद्देशकानुसारेण वाच्य नवरं ॥ उसुयारत्ति ॥ चतुःस्थानके चत्वार इषुकारपर्वता उक्ता इहतु ते नवाच्याः पचस्थानकत्वा दस्येति अनन्तरं मनुष्यक्षेत्रवस्तून्युक्तानीति तदधिकारात् भरतक्षेत्रवर्त्तमाना वसर्पिणीभूषणभूतऋषभजिनवस्तु तत्सम्बन्धात् अन्यानिच पचस्थानकेऽवतारयन् सूत्रपंचक माह ॥ उसभेणमित्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं ॥ कोसलिएत्ति ॥ कोशलदेशोत्पन्नत्वा त्कौशलिको भरतादयश्च ऋषभापत्यानि बुद्धाश्चैते बुद्धश्च भावतो मोहक्षयाद् द्रव्यतो निद्राक्षयादिति द्रव्यबोध द्वारेणत उपदर्शय न्नाह

रेणं पंच वक्खारपव्वया पन्नत्ता तंजहा मालवते एवं जहा जंबूद्दीवे तहा जाव पोक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे वक्खारा दहाय उच्चत्तं भाणियव्वं । समयखेत्तेणं पच भरहाइं पचएरवयाइं एव जहा चउठाणे विईएउद्देसे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव पंच मंदरा पच मदरचूलिया । णवरं उसुयाराणत्थि । उसभेणंअरहा कोसलिए पच धणुसयाइं उड्ढउच्चत्तेण होत्था । भरहेणराया चाउरतचक्कवट्टी पच धणुसयाइं उड्ढ उच्चत्तेण होत्था बाहु

बूद्वीपने विषे तिम यावत् पुष्करवरद्वीपे पश्चिमार्द्धने वक्खार पर्वतद्रह वक्खार पर्वतनो ऊचपणो जाणवो ॥ समयक्षेत्र मनुष्यक्षेत्रने विषे पांच भरत पाच ऐरवतक्षे इम जिम चोथेठाणे बीजे उदेसेक्षे । तिम इहा पणि जाणवो ॥ यावत् पांचमेरु । पाच चूलिका ओ कही एतलो विशेष जे इषुकार पर्वत नथी ॥ रिषभदेव अरिहंत कौशली पांचसे धपनुऊचा ऊचपणे थया १ । भरत राजा चातुरंत चक्रवर्ती पाचसे धनुषऊंचा ऊचपणे थ या २ । बाहुबली अणगार साधु ३ । इम ब्राह्मी आर्या ४ । इमज सुंदरी पिण ५ ॥ पाच थानके श्रमण साधु साधवीनो शब्द साभले हाथे धरतो

॥ पंचहीत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं इह निद्राचयो ऽनंतरकारण शब्दादयस्तु तत्कारणत्वेन तत्कारणतयोक्ता भोजनपरिणामो बुभुचा अनन्तरं द्रव्यप्रबुद्ध' का रणत उक्तो ऽथ भावप्रबुद्ध मनुष्ठानत आज्ञानतिक्रमण दर्शयितुमाह ॥ पंचहीत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ गिरहमाणेत्ति ॥ बाह्वादा वगे रहन् अवलबमान.प तत्तो म्बाह्वादौ गृहोत्वा धारयन् अथवा संव्वगियतगहण करेणअवलवणतुद्देसमित्ति ॥ नातिक्रामति स्वाचार माज्ञां वा गीतार्थस्थविरोवा निर्ग्रंथिका भावेन यथाकथञ्चि त्पशुजातीयो दृप्तगवादिः पत्तिजातीयो गृध्रादिः ॥ श्रोहाएज्जत्ति ॥ उपहन्या त्तत्रेति उपहनने ग्टह्न नातिक्रामति कारणिकत्वा न्नि ष्कारणत्वेतुदोषा' यदाह मिच्छत्तउड्डाहो विराहणाफासभावसबन्धो पडिगमणाईदोषा भुत्ताभुत्तेयमायव्वा ॥ १ ॥ इत्येक तथा दु'खेन गम्यत इति दु

बलीणमणगारे एवचेव। बंभीणं अज्जा एवचेव। एवसुदरीवि। पचहिठाणेहिं सुत्तेवि बुज्झेज्जा तं० सद्देणं फासेणं भोयणपरिणामेण णिद्दक्खएणं सुविणदसणेण। पचहिठाणेहि समणेनिग्गथे निग्गथिंगिरहमाणेवा अवलबमाणेवा णाइक्कमइ तजहा निग्गथिचणं अन्नयरे पसुजाइएवा पक्खिजाइएवा ओहाएज्जा तत्थनिग्गथे निग्गथिगिरहमाणेवा अवलबमाणेवा णाइक्कमइ। निग्गथे निग्गथिं दुग्गसिवा विसमसिवा पक्खलमाणिंवा

फरसथी भोजनने परिणामे भूखलागे निद्रा पूरी थाय सुपन दीठे। पाच थानके श्रमण साधु साध्वीने हाथें ग्रहतो आलबन लेतो अतिक्रमे नही तेकहेछे। साधवीने कोईक पशू दर्पवत गवादि अथवा पत्तीनी जाति गृध्रादि हणे तिहा साधु साधवी प्रते ग्रहतो आलबन देतो आज्ञा अतिक्र मे नही १। साधु साधवीने मनुष्यादि दुष्ट विषम खंड पाषाणादि सहित पर्वत तिहा खलातिलयरूथी पड़ता थका ग्रहता आज्ञा अतिक्रमे न

गं: सच त्रिधा वृत्तदुर्गः श्वापददुर्गो म्लेच्छादिमनुष्यदुर्गं स्तत्रवामाग उक्तञ्च तिविहंचहोइदुग्गं रुक्खेसावयमणुस्सदुगंचत्ति ॥ तथा विषमेवा गर्त्तपाषाणा द्याकुले पर्वतेवा प्रस्खलंतींवा गत्याप्रपततींवा भुवि अथवा भूमीएअसपत्त पत्तवाहत्थजाणुगादीहि पक्खलणनायव्व पवडणभूमीयगत्तेहिंति । १ ॥ गृह्णन्नातिक्रामतीति द्वितीय तथा पंक: पतकोवा सजलोयत्र निमज्जते ससेक स्तत्रवा पंक: कर्दम स्तत्रवा पनकोवा आगंतुकप्रतनुप्रतनुद्रवरूपे कर्द मएव तुल्लावा अपकसन्तीं पंकपनकयोः परिक्सती अपोह्यमानांवा सेके उदकेवा नीयमानां गृह्णन्नातिक्रामतीति गाथेचेह पंकोखलुचिक्खिल्लो आ गन्तुपतणुओदवोपणओ सोच्चियसजलोसेउ सीइज्जइजत्थदुविहेविंत्ति ॥ १ ॥ पंकेपणएसुनियमा ओसगणवुभ्भणसियासेए निमियमिनिमज्जणया सजलेसे एसियादीवित्ति ॥ २ ॥ तृतीय तथा ॥ नावमारुहमाणेत्ति ॥ आरोहयन् ॥ ओरुहमाणेत्ति ॥ अवरोहय न्नुत्तारयन्नित्यर्थो नातिक्रामतीति चतुर्थं तथा क्षिप्तं नष्ट रागभयापमाने श्चित्त यस्याःसा क्षिप्तचित्ता तांवा उक्तञ्च रागेणवाभयेणव अहवाअवमाणियामहतेण एतेहिखित्तचित्तत्ति ॥ तथा दृप्तंसन्माना द्दर्पेव चित्त यस्या सा दृप्तचित्ता तांवा उक्तञ्च इतिएसअसमाण खित्तोसमाणओभवेदित्तो अग्गीवइधणेण दिप्पइचित्तंइमेहितु ॥ १ ॥ लाभमएणव मत्तो अहवाजेऊणदुज्जयसत्तुति ॥ यक्षेण देवेन आविष्टा धिष्ठिता यक्षाविष्टा तांवा अन्योक्त पुव्वभववेरिएण अहवारागेणरागियासंती एतेहिंजक्खाइ

पक्ख्लमाणिंवा गेण्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ । निग्गंथे निग्गंथिं सेससिवा पंकंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उक्कस्समाणिंवा उउज्झमाणिवा गेण्हमवलंब णाइक्कमइ । निग्गंथे निग्गंथिं णाव आरुहमाणेवा

ही २ । साधु साध्वीने पाणीमां कादवमां पनकनील फूलमां पाणीमां ड्रुबी पडती पाणीथी ग्रहतो अवलंबतो अतिक्रमे नही ३ । साधु साध्वीने वा

इत्ति ॥ उन्मादं उन्मत्ततां प्राप्ता उन्मादप्राप्तातांवा अत्राप्युक्तं उम्माओखलुदुविहो जक्खाएसोयमोहणिज्जोय जक्खाएसोवुत्तो मोहेणइमंथुवोच्छामि ॥ १ ॥ रूवगदट्ठूण उम्माओअहवपित्तमुच्छाएत्ति ॥ उपसर्गं सुपद्रव प्राप्ता उपसर्गप्राप्ता तांवा इहाप्युक्तं तिविहेयउवसग्गे दिव्वेमाणुस्सएतिरिक्खेय दिव्वेयपुव्व भणिए माणुस्सेआभिओगेय ॥ १ ॥ विज्जाएमतेणय चुणेणवज्जोइयाअणप्पवसत्ति ॥ तथा सहाधिकरणेन साधिकरणा युद्धार्थमुपस्थिता तावा सहप्राय श्चित्तेन सप्रायश्चित्ता तावा भावनाचेह अहिगरणंमिकयमिउ खामेउमुवट्ठियाएपच्छित्तं तप्पढमयाभएण होइकिलतावववहमाणो ॥ १ ॥ तथा भक्तपाने आभवं प्रत्याख्याते यथा सा भक्तपानप्रत्याख्याना तावा इहगाथा अट्ठवाहेउवा समणीणविरहएकहेंतस्स मुच्छायविवडियाए कप्पगहणपरिसाए त्ति ॥ २ ॥ अर्थः कार्यं मुत्प्रव्राजनतः स्वकीयपरिणेत्रादे जांत यया सार्थजाता पतिचौरादिना संयमाच्चाल्यमाने त्यर्थं स्तावा इहगाथा अट्ठोत्तिजोएक ज्ज सजायएसअट्ठजायाओ तपुणसयमभावा चालिज्जतीसमवलवति ॥ १ ॥ पचममिति अनन्तर येषुस्थानेषु वर्त्तमानो निर्ग्रंथो धर्मं नातिक्रामति तान्यु क्ता न्यधुना तद्विशेष आचार्यो येष्वतिशयेषु वर्त्तमान स्तन्नातिक्रामति तानाह ॥ आयरिएत्याह ॥ आचार्यश्चासा वुपाध्यायश्चे त्याचार्योपाध्यायः सहि के

तरुहमाणेवा णाइक्कमइ । खेत्तइत्तं दित्तइत्तं जक्खाइठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं सपायच्छित्तं भत्त पाणपडियाइक्खित्त अट्ठजायं निग्गथे निग्गथि गिण्हमाणेवा अवलबमाणेवा णाइक्कमइ ॥ आयरिय

हण प्रते चढावतो उतारतो अतिक्रमे नही ४ । रागें भयें अपमानें व्याप्यूं चित्त अहंकारे दर्पमा यत्ता विष्टित चित्त मोहनीयें उन्माद पाम्यू चित्त उपसर्ग उपद्रव व्याप्त अधिकरण क्रोधादिक प्रायश्चित्त सहित भात पाणीनुं पचखाण कीधुं काई अर्थ उपने साधु साध्वीने ग्रहतो अवलंबन देतो

पांचि दर्थदायकत्वा दाचार्यो ऽन्येषां सूत्रदायकत्वा दुपाध्यायइति तस्या चार्योपाध्यायर्योवान शेषसाधूनां गणेसाधुसमुदाये वर्त्तमानस्य वर्त्तमानयोर्वा गणविषयेवा शेषसाधुसमुदायापेक्षये त्यर्थः पंचातिशेषा अतिशयाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा आचार्योपाध्यायर्यो तर्मध्य उपाश्रयस्यव सतेः पादौ निगृह्य २ पादधूले रुद्धूयमानाया' निग्रह वचनेन कारयित्वा यथान्ये धूल्यान भ्रियते तथेत्यर्थ प्रस्फोटयित्वा आभिग्रहिकेना न्येनवा साधुना स्वकीयरजोहरणेन ऊर्णिकापाद प्रोञ्छनेनवा प्रस्फोटन कारयन् झाटय न्नित्यर्थः प्रमार्जयित्वा शनै र्लूषय न्नातिक्रामतीति इहच भावार्थ इत्य मास्थित आचार्यः कुलादिकार्येणनिर्गतः प्रत्यागतः उत्सर्गेण तावत् वसते र्बहिरेव पादौ प्रस्फोटयति अथ तत्रसागारिको भवे त्तदा वसतेरतः प्रस्फोटयेत् प्रस्फोटनच प्रमार्जनविशेष स्तच्चक्षुर्व्यापार लक्षणप्रत्युपेक्षणपूर्वक मितीह सप्तभगा स्तत्र न प्रत्युपेक्षते नप्रमार्ष्टिचे त्येकः न प्रत्युपेक्षते प्रमार्ष्टीति द्वितीयः प्रत्युपेक्षते नप्रमार्ष्टीति तृतीयः प्रत्युपेक्षते प्रमार्ष्टिचेति चतुर्थः यत्त प्रत्युपेक्ष्यते प्रमार्ज्यतेच तत् दुःप्रत्युपेक्षितंदु.प्रमार्जित दुःप्रत्युपेक्षितं सुप्रमार्जितवा सुप्रत्युपेक्षितदुःप्रमार्जितवा ६ सुप्रत्युपेक्षितं सुप्रमार्जितंवा ७ करोति इहच सप्तमः शुद्धः शेषेष्व समाचारीति यदितु सागारिक स्तल स्ततः सप्ततालमात्र सप्तपदावक्रमणमात्रंवा काल वहिरेव स्थि

उवज्झायस्सणं गणंसि पंच अतिसेसा पन्नत्ता तजहा आयरियउवज्झाए अतोउवस्सयस्स पाये निगिज्झि य २ पप्फोडेमाणेवा पमज्जेमाणेवा णाइक्कमइ । आयरियउवज्झाए अतोउवस्सयस्स उच्चारपासवणं विगिं

अतिक्रमे नही ५ ॥ आचार्य उपाध्यायनो गच्छने विषे पांच अतिसेस विशेष कह्या तेकहेछे । आचार्य उपाध्यायने उपासरामाहि पग डाली डालीने निग्रह धूलिटाले ओघे पूछणे फाडजो टालेतो रज हलूये पोजतो अतिक्रमे नही कोईठामे गुरु जइ आव्या तेपगे इम पूजे १ । आचार्य उपाध्याय



त्वा तस्मिन् गते पादौ प्रस्फोटयेत् उक्तञ्च अइवाइगंमिवाहिं अच्छंतिमुहुत्तगंथेरंति ॥ अतिपातितो ऽस्थिर स्ततो वसतौ प्रविशेत् कः केनवा स्वपादौ प्र मार्जयतो त्युच्यते आभिग्गहियस्ससई तस्सेवरओहरेणअणयरो [तस्यैवे त्याचार्यस्यैव] पाओंछणत्तियेणव पुच्छइओअणन्नभुत्तेणति ॥ १ ॥ वसते रतःप्र विष्टस्य चायविधिः विपुलाया वसतौ अपरिभोगे स्थाने सकटायां चात्मसस्तारकावकासे उपविष्टस्य पादौ प्रमार्जनीयौ वन्यस्यापि गणावच्छेदकादे रय मेवविधिः केवल मन्यो वहि श्चिरतर तिष्ठतीति उक्तञ्च विपुलाएअपरिभोगे अत्तणओवासएवचेठस्स एमेवयभिक्खुस्सवि नवरवाहिंचिरयरतु ॥ १ ॥ एता वानेव चाय मतिशयो यदसौ नचिरं बहिरास्ते अथ चिरतिष्ठतः केदोषा इत्युच्यते तिण्हुण्हभावियस्सा [सुकुमाराचार्यस्य] पडिच्छमाणस्स [वहिस्तात्] मुच्छमाईया खद्धाइयणगिलाणे [प्रचुरद्रवपाने ग्लानत्वे] सुत्तत्थविराहणाचेवेत्यादि ॥ १ ॥ शेषसाधवस्तु चिर मपि वहि स्तिष्ठति नचदोषाः स्फूर्जितश्च मत्वा दाहच दसविहवेयावच्चे सग्गमवहियचनिच्चवायामो सोउण्हसहाभिक्खू नयहाणीवायणाईयत्ति ॥ १ ॥ एको ऽतिशय स्तथां तर्मध्ये उपाश्रयस्य उच्चार पुरीष प्रश्रवण मूत्र विवेचयन् सर्वं परिष्ठापयन् विशोधयन् पादादिलग्नस्य निरवयवत्व कुर्वन् शौचभावेन वेति अथवा सकृद्विवेचन बहुशोविशो धन मुक्तञ्च सव्वस्सवट्टणविगि चणाओपुयपायहत्थलग्गस्स पुसणधुवणाविसोहण सकिचबहुसोयनाणत्तति ॥ १ ॥ नातिक्रमतीहच भावार्थ एव माचार्यो नोत्सर्गतो विचारभूमि गच्छति दोषसंभवात् तथाहि श्रुतवानय मित्यादिगुणत. पूर्वं वोथिषु वणिजो बहुमाना दभ्युत्थानादिक्षतवत स्ततो विचारभूमौ

चमाणेवा विसोहेमाणेवा णाइक्कमइ। आयरियउवज्झाए पभू इच्छा वेयावडिय करेज्जा इच्छा णोकरेज्जा

ने उपासरामांही लघूनीति वडनीति परठवतो शुद्धकरतो पगप्रमुखे लागी तेटालतो अतिक्रमे नही आराधक २। आचार्य उपाध्यायनी समर्थ इ

॰ ॥

सक्तद्विर्वा आचार्यस्य गमने आलस्यात्त न्नकुर्वन्ति पराङ्मुखाश्च भवन्ती त्येतञ्च परे दृष्ट्वा संकंते यदुताय मिदानीं पतितो वणिजाना मभ्युत्थानाद्यकरणा दि त्येव मिथ्यात्वगमनादयो दोषा उक्तंच सुयवंतवस्सिपरिवा रवचवणियतराणवट्ठाणे [अतरापुणोवीथी] दुट्ठाणनिग्गमम्मिय [द्विर्निर्गमे] हाणीय [वि नयस्य] परम्मुहावण्णो ॥ १ ॥ अवर्णो नूनं द्विर्भुक्तइति गुणवतोजओवणिया पूयतिअणेविसत्तयातंमि पडिउत्तिअणुट्ठाणे [अनुत्थाने] दुविहनियत्तीअ भिमुहाण ॥ २ ॥ श्रावकत्वप्रव्रजितत्वाभ्यां निवृत्तिरिति तथा मत्सरिभ्यः सकाशात् मरणबधनापभ्राजनादयो ऽन्येपि व्यवहारभाष्या दवगतव्या इति द्वि तीयो ऽतिशयः तथा प्रभुः समर्थः इच्छा अभिलाषो वैयावृत्त्यकरणे यदिभवे त्तदा वैयावृत्त्य भक्तपानगवेषणग्रहणातः साधुभ्यो दानलक्षण कुर्या दथेच्छा भिलाष स्तदकरणे तन्नकुर्यादिति भावार्थ स्वय आचार्यस्य भिक्षाभ्रमण नकल्पते यतो ऽवाचि उप्पन्ननाणाजहनोअडति चोत्तीसबुद्धाइसयाजिणिंदा एवगणीअट्ठगणोववेओ सच्छावनोहिडइइड्ढिमतु ॥ १ ॥ दोषास्त्वमी भारेणवेदणावा हिडतेउच्चनीयसासोवा आईणछट्टुणाई [प्रचुरपनकादेरापानादी छर्यादयो] गेलसेपोरिसीभगोत्ति ॥ १ ॥ एवमादयो ऽनेकेदोषाः व्यवहारभाष्योक्ताः समवसेया एतेच सामान्यसाधोरपि प्राय' समाना स्तथापि गच्छ स्यतीर्थस्यवा महोपकारित्वेन रक्षणीयत्वेनवा चार्यस्याय मतिशय उक्त उक्तंच जेणकुलआयत्त तपुरिसआयरेणरखिज्जा नहुतुंबमिविणट्ठे अरयासाहारया होंतित्ति ॥ १ ॥ तृतीयः तथा अन्तरुपाश्रयस्य एकाचासो रात्रिश्चे त्येकरात्र तदा द्वयोः रात्र्योः समाहारो द्विरात्र तदा विद्यादिसाधनार्थ मेकाक्ये काते

आयरियउवज्झाए अतोउवस्सयस्स एगराइंवा दुराइंवा एगाजीवसमाणे णाइक्कमइ । आयरियउवज्झाए

च्छायें अभिलाष होयतो यावत् करे इच्छानहो ते नकरे ३ । आचार्य उपाध्यायना उपासरामाहि एकरात्रि ज्ञान साधवा बेरात्रि जणी एकाते रह

वस मातिक्रामति तत्र तस्य वक्ष्यमाण दोषासंभवा दन्यस्तु तद्भावा दितिचतुर्थः एवं पंचमोपि भावार्थश्चाय मनयोंत रुपाश्रयस्य बहारके विष्व ग्वसतिब हिर्वा पाश्रयस्य शून्यगृहादिषु वसति यदितदा असमाचारीदोषाः शेते पुर्वेद्रोपयोगेन जनरहिते हस्तकर्मादिकारणेन संयमभेदो भवति मर्यादा मया लं घितेति निर्वेदेन वैहायसादिमरणंच प्रतिपद्यतइति इहगाथा तत्थावुवओगेणं रहिएकम्मादिसंजमेभेदो मेरावलंघियामे वेहाणसमादिनिव्वेया ॥ १ ॥ जइवियनिग्गयभावो तहाविरक्खिज्जइ सअन्नेहिं वंसकडिल्लेछिणो विवेणुओपावएनमहिं ॥ २ ॥ योसुयसमोदप्पो गणिआयरिएयहोइएमेव सुत्तंपुणकारणि यं भिक्खुस्स निकारणेणगा ॥ ३ ॥ निज्जा।णपरियाडिं पव्वेपव्वेकरेंतिआयरिया दिउतोमहपाणे अतोवाहिंचवसहीएत्ति ॥ ४ ॥ आचार्यस्य गणेतिशया उक्ता अधुना तस्यैवातिशयविपर्ययभूतानि गणान्निर्गमकारणान्याह ॥ पचहीत्यादि ॥ सुगम नवरं आचार्योपाध्यायस्य आचार्योपाध्याययोर्वा गणाद्गच्छा दपक्र मणं निर्निर्गमो गणापक्रमण आचार्योपाध्यायो गणेगच्छविषये आज्ञांवा योगेषुप्रवर्त्तनलक्षणां धारणांवा विधेयेषु निवर्त्तनलक्षणां नोनैव सम्य ग्यथौ चित्यं प्रयोक्ता तयोः प्रवर्त्तनशीलो भवति इदमुक्तं भवति दुर्विनीतत्वा द्गणस्य तेप्रयोक्तु मशक्नुवन् गणादपक्रामति कालिकाचार्यव दित्येक तथा गणविष

वाहिउवस्सगस्स एगराइं दुराइंवा वसमाणे णाइक्कमइ ॥ पचहिं ठाणेहिं आयरियउवज्झायस्स गणावक्क मणे प० त० आयरियउवज्झाए गणंसि आणंवा धारणवा नोसम्मं पउजित्ता भवइ। आयरियउवज्झाए गणं

ती आज्ञा प्रतिक्रमे नही ४। आचार्य उपाध्यायथी बाहिर सून्य गृहादिके एकरात्रि बेरात्रि रहती थको अतिक्रमे नही ५॥ पांच थानके आचा र्य उपाध्यायना गच्छापक्रम कह्या गच्छने माठो देखाडे तेकहेछे। आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे आज्ञा धारणा सम्यक् प्रकारे प्रयुजे नही क

ये यथा रत्नाधिकतया यथा ज्येष्ठ कृतिकर्म्म तथा वैनयिकं विनयं नोनैव सम्यक्प्रयोक्ता भव त्याचार्यसंपदासाभिमानत्वात् यत आचार्येणापि प्रतिक्रमण क्षामणादिषू चितानामुचितविनयः कर्त्तव्य एवेतिद्वितीयं तथा असौ यानि श्रुतपर्यवजातानि यान्श्रुतपर्यायप्रकारा नुद्देशकाध्ययनादीन् धारयति ग्रंथ विस्मरणत स्तानि काले २ यथावसरं नोसम्यगनुप्रवाचयिता तेषा पाठयिताभवति ॥ गणेत्ति ॥ इहसप्तम्यर्थे तेन गणेगणविषये गणमित्यर्थ स्तस्या विनीत त्वा त्स्वस्यवा सुखलंपटत्वात् मदप्रज्ञत्वाद्वेति गणादपक्रामतीति तृतीयं तथासौ गणे वर्त्तमानः ॥ सगणियाएत्ति ॥ स्वगणसंबंधिन्यां ॥ परगणियाएत्ति ॥ परगणसत्काया निर्ग्रंथ्या तथाविधाशुभकर्मवशवर्त्तितया सकलकल्याणाश्रयसयमसौधमध्याद्वहिर्लेश्या तःकरण यस्यासौ वहिर्लेश आसक्तो भवतीत्यर्थ एव गणा दपक्रामतीति नचेद मधिकगुणत्वेना स्या सभाव्य यतः पठ्यते कम्माईतूणिघणचि क्कणाइगरुयाइवज्जसाराइं नाणड्ढियंपिपुरिस पथाओउप्पह

सि अहारायणियाए किइकम्मं वेणइयं नोसम्मं पउंजित्ता भवइ । आयरिअउवज्झाए गणंसि जे सुयपज्जवजाए धारिंति ते काले णोसम्म मणुपवादेत्ता भवइ । आयरियउवज्झाए गणसि सगणियाएवा परगणियाएवा निग्गंथीए वहिल्लेस्से भवइ । मित्ते णाइगणेवा सेगणाउ अवक्कमेज्जा तेसिं संगहोवग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे

रेनही १ । आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे जे जेहथी वडाहोय तेहने वांदे नही विनय सम्यक् प्रकारे प्रयुंजे नही २ । आचार्य उपाध्यायने गच्छने विषे जे सूत्र पर्याय जाणे धारे ते कालवेलाये सम्यक् रीते वाचे भणे नही ३ । आचार्य उपाध्यायने गच्छने विषे पोतानागच्छने विषे तथा परना गच्छ निग्रथ साधवो अशुभ कर्मना उदयथी तेहने व्यथ्यधिको वाहिर धर्म ध्यानथी वर्त्तलेप्रयासन परिणाम मित्रजातिगण ते स्वजनादि माटे गच्छ

नेतित्ति ॥ १ चतुर्थं तथा मिनज्ञातिगणोवा सुहृत्स्वजनवर्गोवा ॥ से ॥ तस्याचार्यादेः कुतोपि कारणा द्गणादपक्रामे दत स्तेषां सुहृत्स्वजनानां संग्रहा र्थं गणादपक्रमणं प्रज्ञप्तं तत्र संग्रहः स्तेषां स्वीकार उपग्रहो वस्त्रादिभि रुपष्टंभ इति पंचमं अनन्तर माचार्यस्य गणापक्रमणमुक्तं सच ऋद्धिमन्मनुष्य विशेष इत्यधिकारा दृद्धिमन्मनुष्यविशेषा नाह ॥ पंचविहेत्यादि ॥ कण्ठ्यं नवरं ऋद्धि रामर्षौषध्यादिकासंपत् तद्यथा आमर्षौषधि र्विप्रुडौषधिः खेलौषधि र्जल्लौ मलः सर्वौषधिराशीविषत्वं शापानुग्रहसामर्थ्यमित्यर्थ आकाशगामित्वं मचीणमहानसिकत्वं वैक्रियकरणं माहारकत्वं तेजोनिसर्जनं पुलाकत्वं चीराश्र वत्वं मध्वाश्रवत्वं सर्पिराश्रवत्वं कोष्टबुद्धिता बीजबुद्धिता पदानुसारिता संभिन्नश्रोतृत्वं युगपत्सर्वशब्दश्रावितेत्यर्थः पूर्वधरता ऽवधिज्ञानं मनःपर्यवज्ञानं केव लज्ञानं मर्हत्ता गणधरता चक्रवर्तिता बलदेवता वासुदेवताचेत्येवमादिका उक्तंच उदयक्खयखश्रोवसमो वसमसमुत्थाबहुप्पगाराश्रो एवपरिणामवसा ल द्धीश्रोहोंतिजोवाणंति ॥ १ ॥ तद्देवरूपा प्रचुरा प्रशस्तातिशायिनीवा ऋद्धि र्विद्यते येषांते ऋद्धिमन्तो भावितः सद्वासनया वासित आत्मा यैस्ते भावितात्मा नो ऽनगारा इति एतेषांच ऋद्धिमत्वं मामर्षौषध्यादिभि रर्हदादीनांतु चतुर्णां यथासंभवं मामर्षौषध्यादिना ऽर्हत्वादिनाचेति पंचस्थानकस्य विवरणतो

पस्सत्ते ॥ पंचविहा इड्ढिमंता मणुस्सा पस्सत्ता तंजहा अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा भावियप्पाणो अणगारा । पंचठाणस्स वियत्त उद्देसउ सम्मत्तो ॥ २ ॥ पंचअत्थिकाया पस्सत्ता तंजहा

माथी अलगो निकले तेहने संग्रहवा माटे ते स्वजनादिकने उपग्रहवा वस्त्रादिके आधार देवाने गच्छथी अलगो थाय ॥ पांच प्रकारे रिद्धिवंत मनु ष्य कह्या तेकहेछे । अरिहंत १ । चक्रवर्ति २ । बलदेव ३ । वासुदेव ४ । भावितात्मा साधु लब्धिनो धणी ५ ॥ पांच ठाणानो बीजो उद्देशो थ

द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥ २ ॥ उक्तो द्वितीयोद्देशकः सांप्रत तृतीय आरभ्यते अस्य चायमभिसंबन्धो ऽनन्तरोद्देशके जीवधर्माः प्ररूपिता इह त्वजी
वाजीवधर्मा उच्यत इत्येव संबन्धस्यास्येद मादिसूत्र ॥ पंचत्थिकायेत्यादि ॥ अस्य चाय मभिसंबंधो अनन्तरसूत्रे जीवास्तिकायविशेषा कृद्धिमंत उक्ता इह
त्वसंख्येयानंतप्रदेशलक्षणा कृद्धिमतः समस्तास्तिकाया उच्यंत इत्येवं संबन्धस्यास्य व्याख्या प्रथमाध्ययनवदनुसर्त्तव्या नवरं धर्मास्तिकायादयः किमर्थमित्य
मेवं पन्यस्यंत इत्युच्यते धर्मास्तिकायादिपदस्य मांगलिकत्वा त्प्रथमं धर्मास्तिकायोपन्यासः पुनः धर्मास्तिकायप्रतिपक्षत्वा दधर्मास्तिकायस्य पुनस्तदाधार
त्वा दाकाशास्तिकायस्य पुनस्तदाधेयत्वा ज्जीवास्तिकायस्य पुनस्तदुपग्राहकत्वात् पुद्गलास्तिकायस्येति धर्मास्तिकायादीनां क्रमेण स्वरूपमाह ॥ धम्मत्थि
कायेत्यादि ॥ वर्णगंधरसस्पर्शप्रतिषेधात् ॥ अरूवित्ति ॥ रूपं मूर्त्तिर्वर्णादिमत्त्वं तदस्यास्तीति रूपी न रूपी अरूपी अमूर्त्त इत्यर्थः स्वतो अजीवो ऽचेतनः शाश्वतः
प्रतिक्षणं सत्तालिंगितत्वा दवस्थितो ऽनेन रूपेण नित्यत्वादिति लोकस्यांशभूतं द्रव्यं लोकद्रव्यं यत उक्तं पंचत्थिकायमइयं लोगमणाइनिहणंति ॥ अथै
तत्स्वरूपस्योक्तस्य प्रपंचनाया गुरुकस्यचाभिधानायाह समासतः संक्षेपतः पंचविधो विस्तरस्त्वन्यथापि स्यात्तथमित्याह द्रव्यतो द्रव्य मधिकृत्य क्षेत्रतः
क्षेत्रमाश्रित्य एवं कालतो भावतश्च गुणतः कार्यतः कार्यमाश्रित्येत्यर्थः तत्र द्रव्यतो धार्मिकं द्रव्यं तथाविधैकपरिणामा देकसंख्याया एवे इहभावात् क्षेत्रतो

धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए । धम्मत्थिकाए अवन्ने अगंधे

यो ॥ २ ॥ पांच अस्तिकाय कह्या तेकहेछे । धर्मास्तिकाय १ । अधर्मास्तिकाय २ । पुद्गलास्तिकाय ३ । आकाशास्तिकाय ४ । जीवास्तिकाय ५ ॥
धर्मास्तिकायनो वर्णनथी गंधनथी रसनथी फरसनथी रूपनथी जीवनथी सास्वतोछे अवस्थितछे लोक द्रव्य लोकमांज छे ॥ ते संक्षेपे पांच प्रकारछे

लोकस्य प्रमाणं लोकप्रमाण असंख्येयाः प्रदेशा स्तत्परिमाण मस्येति लोकप्रमाणमात्रः कालतो न कदाचिन् नासी दित्यादि कालत्रयनिर्देश एतदेव मु खार्थं व्यतिरेकेणाह अभूच्च भवतिच भविष्यतिचेति एव त्रिकालभावित्वाद् ध्रुवो माभू देकसर्गापेक्षयैव ध्रुवत्वमिति सर्वदैव भावा न्नियतो माभू दनेकस र्गापेक्षयैव नियतत्वमिति प्रलयाभावा च्छाश्वत एवं सदाभाविना क्षयः पर्यायापगमे प्यक्षतपर्यायतया ऽव्यय एव मुभयरूपतया ऽवस्थितो ऽनेन प्रकारेणो क्तो नित्यइति पूज्यव्याख्या अथवा यतएव त्रैकालिको सा वतएव ध्रुवो ऽवश्यभावित्वा दादित्योदयवत् नियत एकरूपत्वा च्छाश्वत. प्रतिक्षण सत्वा दतएवा क्षयो ऽवयविद्रव्यापेक्षया ऽक्षतोपा परिपूर्णत्वा दव्ययो ऽवयवापेक्षया ऽवस्थितो निश्चलत्वा त्तात्पर्यमाह नित्यइति अथवा इंद्रशक्रादिशब्दव त्पर्यायशब्दा ध्रुवादयो नानादेशजविनेयप्रतिपत्यर्थ मुपन्यस्ताइति तथा गुणतो गमन इति स्तद्गुणो गतिपरिणामपरिणताना जीवपुद्गलाना सहकारिकारणभावतः का र्यं मत्स्याना जलस्येव यस्यासौ गमनगुणो गमनेवा गुण उपकारो जीवादीना यस्मा दसौ गमनगुण इति ॥ एवचेवत्ति ॥ यथा धर्मास्तिकायो धीतएव म धर्मास्तिकायोपोति नवर केवल मेतावान् विशेषो यदुत ॥ ठाणगुणेत्ति ॥ स्थान स्थिति र्गुण. कार्यं यस्य स स्थानगुणः सहि स्थितिपरिणताना जीवादी

अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवठिए लोगदव्वे से समासउ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउ खेत्तउ कालउ भावउ गुणउ । दव्वउणं धम्मत्थिकाये एग दव्व खेत्तउलोगपमाणमेत्ते कालउनकयावि णासी नक

ते कहेछे । द्रव्यथी १ । क्षेत्रथी २ । कालथी ३ । भावथी ४ । गुणथी ५ ॥ द्रव्यथी धर्मास्तिकाय एकद्रव्य छे । क्षेत्रथी १४ राजलोक प्रमाण छे । काल थी किवारे नहतो एम नथी १ । किवारे नरहे एमनथी २ । किवारे नरहस्ये एमनही ३ ॥ पूर्वे हतो १ । वर्त्तमानकाले छे । अनागतकाले रहस्ये

१० ॥

ना मपेचाकारणतया स्थानं कार्यं करोति स्थानेवा स्थितौगुण उपकारो यस्मात्स तथा ॥ लोगालोगेत्यादि ॥ लोकालोकयोस्तद्व्यत्ययो र्यत्प्रमाण मनंताः प्रदे शा स्तदेव परिमाण मस्येति लोकालोकप्रमाणमात्रो ऽवगाहनाजीवादीना माश्रयो गुणः कार्यं यस्यस तस्यावा गुण उपकारो यस्मा त्सो वगाहनागुण. ॥ अणताइदव्वाइति ॥ अनता जीवा स्तेषा प्रत्येक द्रव्यत्वादिति ॥ अरूवीजीवेत्ति ॥ जीवास्तिकायो ऽमूर्त्त स्तथा चेतनावानिति उपयोगः साकारानाका रभेद चैतन्य गुणो धर्मो यस्य स तथा शेष तदेव य दधर्मास्तिकायादीनामिति लोकप्रमाणो जीवास्तिकायः पुद्गलास्तिकायश्च तयो स्तत्रैव भावादि

यावि नन्नवइ णकयावि नन्नविस्सइ त्तुविंच न्नवइय न्नविस्सइय धुवे णितिते सासए ऋक्खए ऋव्वए ऋव ठिए निच्चे । न्नवतो ऋवन्ने ऋगंधे ऋरसे ऋफासे । गुणत्त गमणगुणेय । ऋधम्मत्यिकाये ऋवसे एवचेव नवर गुणत्त ठाणगुणे । ऋागासत्यिकाए ऋवन्ले एवचेव णवरं खेतत्त लोगालोगप्पमाणे गुणत्त ऋवगाह णागुणे सेसं तचेव । जीवत्यिकाएणं ऋवन्ने एवंचेव णवर दव्वत्तणं जीवत्यिगाए ऋणंताइ दव्वाइं ऋरूवे जीवे सासए गुणत्त उवत्तगगुणे सेसं तचेव । पोग्गलत्यिगाए पचवन्ने पचरसे दुगधे ऋठफासे रूवी ऋजीवे

एवं त्रिण कालमां सासतोछे धुवछे नित्यछे अक्षयछे अवस्थितछे । नित्य भावथीछे अवर्ण अगध रसरहित स्पर्शरहित । गुणथी चालवानुं गुण ॥ अधर्मास्तिकाय वर्णरहित यावत् स्पर्शरहित एतलो विशेष गुणथी स्थानगुण स्थिरस्वभाव ॥ आकाशास्तिकाय अवर्ण इमज एमविशेष क्षेत्रथी लो कालोक प्रमाण गुणथी अवकाशदेवानो गुण बीजो तिमज ॥ जीवास्तिकाय अवर्ण इमज एतलो विशेष द्रव्यथी जीवास्तिकाय अनंता द्रव्यछे अरूपी ॥

ति ॥ गहणगुणेत्ति ॥ गहण औदारिकशरीरादितया ग्राह्यता इंद्रियग्राह्यतावा वर्णादिमत्त्वात् परस्परसंबंधलक्षणवा तद्गुणो धर्मो यस्य स तथा अनंतर मस्तिकाया उक्ताइति तद्विशेषस्य जीवास्तिकायस्य सर्वधियस्तू न्याहा ध्ययनपरिसमाप्ति यावदिति मत्त्वा न्सजध स्तन ॥ पचेत्यादि ॥ गतिसूत्र कराठ्य नवर गमन गति गम्यत इतिवा गतिः क्षेत्रविशेषो गम्यतेवा अनया कर्मपुद्गलसहत्येति गति र्नाम कर्मोत्तरप्रकृतिरूपा तत्कृतावा जीवावस्थिति स्तत्र निरये नरके १ गति र्निरय गासौ गतिश्च तिवा २ निरयप्रापिकावा गतिः ३ निरयगति एवतिर्यक्षु १ तिरश्चा २ तिर्यक्त्वप्रसाधिकावा गति स्तिर्यग्गतिः एवमनुष्यदेवगतो सिद्धौगतिः सिद्धि शासौ गतिश्चेतिवा सिद्धिगति रिह नामप्रकृति र्नास्तीति अनतर सिद्धिगति रुक्ता साचेंद्रियार्थान् कषायादिचाश्रि त्य मुडितत्वे सति भवतीतींद्रियार्था निंद्रियकषायादि मुंडां शाभिधित्सुः सूत्रनयमाह ॥ पचेत्यादि ॥ सुगम नवर मिंदना दिद्री जीवः सर्वविषयोपलब्धि

सासए अवठिए जाव दव्वन्तणं पोग्गलत्थिकाए अणताइं दव्वाइ खेत्तन्त लोगप्पमाणमेत्ते कालन्त णकयाविं णासि जाव निच्चे भावन्तवन्नमंते गधमंते रसमंते फासमंते गुणन्तगहणगुणे । पच गईन्त पन्नत्तान्त तंजहा निरयगई तिरियगई मणुयगई देवगई सिद्धिगई । पच इदियत्था पन्नत्ता तजहा सोइदियत्थे जाव फासिं

छे सासतो गुणथी उपयोग गुण शेष तिमज ॥ पुद्गलास्तिकाय पाच वर्णनो पाच रसथी युक्त बेगध आठ फरश रूपी अजीवछे सासतो अवस्थित छे यावत् द्रव्यथी पुद्गलास्तिकाय अनंता द्रव्यछे क्षेत्रथी लोकप्रमाण कालथी किवारेन हतो एम नथी यावत् नित्यछे भावथी वर्णसहित गधसहित रससहित स्पर्शसहित गुणथी ग्रहण गुण ॥ पांच गति कही ते कहेछे नरकगति १ । तिर्यचगति २ । मनुष्यगति ३ । देवगति ४ । सिद्धिगति ५ ॥

भोगलक्षणपरमैश्वर्ययोगा त्तस्य लिंगं तेन दृष्टं सृष्टं जुष्टं दत्तमितिवा इन्द्रियं श्रोत्रादि तच्चतुर्विधं नामादिभेदा त्तत्र नामस्थापने सुज्ञाने निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येंद्रिय लब्ध्युपयोगौ भावेंद्रिय तत्र निर्वृत्ति राकारः साच बाह्या भ्यतराच तत्र बाह्या अनेकप्रकारा अभ्यंतरा पुनः क्रमेण श्रोत्रादीनां कदंबपुष्प १ धान्यमसूरा २ तिमुक्तकपुष्प चन्द्रिका क्षुरप्रनानाप्रकार ५ संस्थाना उपकरणेन्द्रिय विषयग्रहणे समर्थं च्छेद्यच्छेदने खड्गस्येव धारा यस्मिन् उपहते निर्वृत्तिसद्भावेपि विषयेन गृह्णातीति लब्धीन्द्रिय यं स्तदा वरणक्षयोपशम उपयोगेंद्रियं यः स्वविषये व्यापार इतीहच गाथा इंदोजीवोसव्वो वलद्धिभोग परमेसरत्तणओ सोतादिभेदमिदिय मिहतल्लिंगादिभावाओ ॥ १ ॥ तन्नामादिचउद्धा दव्वंमिनिव्वत्तिओवकरणच आकारोनिव्वत्ती वित्तावज्झाइमा अंतो ॥ २ ॥ पुप्फंकलंबुयाए धन्नमसूरातिमुत्तचंदोय होइखुरप्पोनाणा गिईयसोइंदियाईणं ॥ ३ ॥ विसयग्गहणसमत्थ उवगरणंइंदियंतरंतंपि जंनेहतदुव घाएगिण्हइनिव्वत्तिभावेवि ॥ ४ ॥ लद्धुवओगोभाविंदियतुलद्धित्तिजोखओवसमो होइतयावरणाण तल्लाभेचेवसेसंपि ॥ ५ ॥ जोसविसयवावारे सोउव ओगोसएगकालमि एगेणचेवतम्हा उवओगेगिंदिओसव्वे ॥ ६ ॥ एगिंदियादिभेदा पडुच्चसेसिंदियाइंजीवाण अहवापडुच्चलद्धिं दियपिपचेंदियासव्वे ॥ ७ ॥ जकिरवउलाईण दीसइसेसदिओवलंभोवि तेणत्थितदावरण खओवसमसभवोतेसिति ॥ ८ ॥ अर्थ्यंते ऽभिलष्यते क्रियार्थिभि रर्यन्ते वाधिगम्यंत इत्यर्था इन्द्रियाणा मर्था इन्द्रियार्था स्वविषयाः शब्दादय' श्रूयते नेने तिश्रोत्र तच्च तदिन्द्रिय श्रोत्रेंद्रिय तस्यार्थो ग्राह्यः श्रोत्रेंद्रियार्थः शब्दः एव क्रमेण रूपरसगध स्पर्शा श्चक्षुराद्यर्था इति मुडन मुडो ऽपनयनं सच द्वेधा द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतः शिरसः केशापनयनं भावतस्तु चेतस इन्द्रियार्थगतप्रेमा प्रेम्णोः कषा याणांवा पनयन मिति मुण्डलक्षणधर्मयोगा त्पुरुषो मुण्डउच्यते तत्र श्रोत्रेंद्रिये श्रोत्रेंद्रियेणवा मुंडः पादेन खंज इत्यादिवत् श्रोत्रेंद्रियमुंड' शब्दे रागादिमुंडनात् श्रोत्रेंद्रियार्थमुड इतिभाव इत्येव सर्वत्र तथा क्रोधे मुंडः क्रोधमुड स्तच्छेदना देव मन्यत्रापि तथा शिरसि शिरसावा मुंड. शिरोमुंड इति इदच मुंडि

तत्त्व वादरजीवविशेषाणां भवतीति लोकत्रयापेक्षया वादरजीवकायान् प्ररूपयन् सूत्रत्रय माह ॥ अहेइत्यादि ॥ सुगम नवर अधऊर्ध्वलोकयो स्तेजसा वादरा न सन्तीति पञ्चैते उक्ता अन्यथा षट्स्यु रिति अधोलोकग्रामेषु ये वादरा स्तैजसा स्तेऽल्पतया नविवक्षिता शेचोर्ध्वकपाटद्वये ते उत्पत्तुकामस्तेनो त्पत्तिस्थानावस्थितत्वा दिति ॥ उरालातसत्ति ॥ त्रसत्वं तेजोवायुष्वपि प्रसिद्ध अत स्तद्व्यवच्छेदेन द्वीन्द्रियादिप्रतिपत्त्यर्थ मोरालग्रहण ओराला. स्थूला ए केंद्रियापेक्षयेति एकमिन्द्रिय करण स्पर्शनलक्षण मेकेन्द्रियजातिनामकर्मोदया त्तदावरणक्षयोपशमाच्च येषान्ते एकेंद्रिया पृथिव्यादय एवं द्वींद्रियादयोपि नवर मिन्द्रियविशेषो जातिविशेषश्च वाच्य इति एकेंद्रिया इत्युक्तमिति तान् पञ्चस्थानकाननुपातिनो विशेषतः सूत्रत्रयेणाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ अगारः

दियत्थे । पच मुंडा प० त० सोइंदियमुंडे जाव फासिंदियमुंडे । अहवा पच मुंडा पण्णत्ता तंजहा कोहमुंडे माणमुंडे मायामुंडे लोभमुंडे सिरमुंडे । अहेलोगेण पंच वादरा पण्णत्ता तजहा पुढविकाइया आउवाउव णस्सइकाइया उरालातसापाणा । उड्ढलोगेण पच वादरा एएचेव । तिरियलोगेण पच वादरा पण्णत्ता तजहा

पाच इंद्रियना अर्थ विषय कहिया ते कहेछे श्रोत्रेंद्रियार्थ यावत् स्पर्शनेंद्रियार्थ ॥ पाच मुंड कहिया ते कहेछे श्रोत्रेंद्रियमुंड यावत् स्पर्शनेंद्रियमुंड ५॥ अथवा पाच मुंड कहिया ते कहेछे क्रोधमुंड जे रीसटाले १ । मानमुंड २ । मायामुंड ३ । लोभमुंड ४ । शिरोमुंड ५ ॥ अधोलोकमा पाच बादर क ह्या तेकहेछे पृथ्वीकाय पाणी वायु वनस्पती औदारिक त्रसप्राण देव नारकी ५ ॥ ऊर्द्ध लोकमा पाच बादर कहिया एहज पूर्वे कह्या तेहीज क हवा ५ ॥ तिरछा लोकमा पांच बादर कह्या तेकहेछे एकेंद्री यावत् पचेंद्री ॥ पाच प्रकारना बादर तेउकायना जीव कहिया ते कहेछे इगारा १ ।

प्रतीतः ज्वाला ऽग्निशिखा च्छिन्नमूला सैवा च्छिन्नमूलार्चि मुंर्मुरो भस्ममिश्राग्निकणरूपः अलातमुल्मुकमिति प्राचीनवातः पूर्ववातः प्रतीचीनः पश्चिमः दक्षिणः प्रतीतःउदीचीन उत्तर स्तदन्यस्तु विदिग्वात इति आक्रान्ते पादादिना भूतलादौ यो भवति स आक्रान्तो यस्तु ध्माते दृत्यादौ सध्मातः जलार्द्रवस्त्रे निष्पीड्यमाने पीडित' उद्गारोच्छासादिः शरीरानुगतः व्यञ्जनादिजन्यः सम्मूर्च्छिम एतेच पूर्व मचेतना स्ततः सचेतना अपि भवतीति पूर्वं पचेंद्रिया उक्तादति पचेंद्रियविशेषा नाह अथवा अनंतरं सचेतना अचेतना वायव उक्ता स्तांश्च रक्षन्ति निर्ग्रन्थाएवेति तानाह ॥ पंचनियंठेत्यादि ॥ सूत्रषट्क सुगम नवर ग्रन्था दांतरा स्मिथ्यात्वादे र्वाह्याश्च धर्म्मोपकरणवर्जना इनादे र्निर्गता निर्ग्रन्थाः पुलाक स्तंदुलकणशून्यापलंजित स्तद्वत् य स्तपः श्रुतहेतुकायाः सर्वादिप्रयोजने चक्रवर्त्त्यादेरपि चूर्णनसमर्थाया लब्धे रुपजोवनेन ज्ञानाद्यतिचारासेवनेनवा सयमसाररहितः सपुलाकः अत्रोक्तं जिनप्ररिता दा

एगिंदिया जाव पंचेंदिया । पंचविहा वादरतेउकाइया पन्नत्ता तंजहा इंगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाए। पच वादरवाउकाइया प० तंजहा पाईणवाए पडीणवाए उदीणवाए दाहिणवाए विदिसिवाए । पंचविहा अचित्ता वाउकाइया पन्नत्ता तजहा अक्कंते धंते पीलिए सरीराणुगए समुच्छिमे ॥ पंच नियंठा प० तं०

जाला २ । मुर्मुर ३ । अर्ची मूलमां अगनिनी झाल ४ । उंबाडुं ५ ॥ पांच प्रकारें बादर वायुकाय कहिया तेकहेछे पूर्वनो वायु १ । पश्चिमनोवायू २ दक्षिणनो वायू ३ । उत्तरनो वायू ४ । विदिशिनो वायू ५ ॥ पांच प्रकारनो अचित्त वायुकाय कह्यो ते कहेछे पग प्रमुखने अनुक्रमे १ । धमता वायुनीकले धौंकणी प्रमुखथी २ । भीनुवस्त्र निचोतां ३ । उत्कार सासोस्वास लेतां ४ । समूर्च्छिम बीजणा प्रमुखथी ऊपनुं ५ ॥ पांच नियंठा निग्रंथ

गमात् सर्वो ग्रतिपातिनो ज्ञानानुसारेण क्रियानुष्ठायिनो लब्धि मुपजीवतो निर्ग्रन्थाः पुलाका भवंतीति वकुशः शबलः कर्बुर इत्यर्थः शरीरोपकरणवि भूषानुवर्त्तितया शुद्धाशुद्धिव्यतिकीर्णचरण इत्ययमपि द्विविधः यथाह मोहनीयचयंप्रति प्रस्थिताः शरीरोपकरणविभूषानुवर्त्तिन स्तत्र शरीरे ऽनागुप्त व्यतिकारेण करचरणवदनप्रक्षालनमक्षिकर्णनासिकाद्यवयवेभ्योपि दूषिकामलाद्यपनयनं दंतपावनलक्षणं केशसंस्कारश्च देहविभूषार्थं माचरतः शरीरव कुशा उपकरणवकुशा स्तु अकालएवप्रक्षालितचोलपट्टकांतरकल्पादिचोक्षवासःप्रियाः पात्रदंडकाद्यपितैलमात्रयो ज्वलीकृत्य विभूषार्थं मनुवर्त्तमाना वि भ्रति उभयेपिच ऋद्धि यशस्कामा स्तत्र ऋद्धि प्रभूत वस्त्रपात्रादिकां ख्यातिश्च गुणवंतो विशिष्टाः साधव इत्यादि प्रवादरूपा कामयते सातगौरव माश्रि ता नातीवाहोरात्राभ्यंतरानुष्ठेयासु क्रियास्वभ्युद्यता अविविक्तपरिवारानासंयमात् घृष्टजंघा तैलादिकृतशरीरमृज' कर्त्तरिकाकल्पितकेशश्च प

पुलाए वउसे कुसीले नियठे सिणाए । पुलाए पंचविहे पन्नत्ते तंजहा णाणपुलाए दंसणपुलाए चरित्तपुलाए लिंगपुलाए अहासुक्कमपुलाएनामपंचमे । बउसे पंचविहे पन्नत्ते तंजहा आभोगवउसे अणाभोगवउसे सवुङ

कह्या तेकहेछे पुलाक कण रहित तुस समान संयमसार रहित तप श्रुत लब्धिवंत काम ऊपनाथी चक्रवर्त्तिनी सेनानो चूर्ण करे ज्ञानादिकना अती चार सहित लब्धि फोरवे ते पुलाक १ । बकुश काबरो चारित्र करे २ । कुशील शरीरना उपकरण थी विभूषा करी जे उत्तरगुण दूषे ३ । निग्रंथ ४ । स्नातक ५ ॥ पुलाक पांच प्रकारनो कह्यो ते कहेछे ज्ञान पुलाक १ । दर्शनपुलाक २ । चारित्रपुलाक ३ । लिंगपुलाक अधिक वेष धरे ४ । य था सूक्ष्मपुलाक ते प्रमादने मने अकल्पनीय वस्तु ग्रहण करे मनमां अणाचार चिंतवे ५ ॥ बकुश पांच प्रकारना कह्या ते कहेछे आभोग बकुश ते

॥ टी

रिचारोयेषामितिभावः वहुच्छेदशवलयुक्ताः सर्वदेशच्छेदार्हातिचारजनितशवलत्वेन युक्ता निर्ग्रन्थवकुशा इति तथा कुत्सितं उत्तरगुणप्रतिषेवया सज्व लनकषायोदयेनवा दूषितत्वात् शील मष्टादशशीलांगसहस्रभेदं यस्यस कुशील इत्येषोपि द्विविधएव अत्राप्युक्त द्विविधाः कुशीलाः प्रतिषेवणाकुशीलाः क षायकुशीला श्च तत्र ये नैर्ग्रंथ्यम्प्रति प्रस्थिता अनियतेंद्रिया कथंचित् किंचि देवोत्तरगुणेषुपिंडविशुद्धिसमितिभावनातप'प्रतिमाभिग्रहादिषु विराधयतः सर्वज्ञाज्ञोल्लंघनमाचरति ते प्रतिषेवणाकुशीला येषातु सयतानामपि सताङ्कथंचित्सज्वलनकषाया उदीर्यं ते ते कषायकुशीला निर्गतो ग्रन्था न्मोहनीयाख्या न्निर्ग्रंथ चीणकषाय उपशांतमोहोवा चालितसकलघातिकर्ममलपटलत्वात् स्नातइव स्नातः सएव स्नातकः सयोगो ऽयोगोवा केवलीति अधुने तएव भेदत उच्यंते तत्र पुलाक इत्यासेवी पुलाकः पंचविधो लब्धिपुलाकस्यै कविधत्वात् तत्र स्खलितमिलितादिभि रभिचारै र्ज्ञान माश्रित्या त्मान ससार कुर्वन् ज्ञानपु लाकएवंकुदृष्टिसंस्तवादिभि र्दर्शनपुलाको मूलोत्तरगुणप्रतिषेवणात चरणपुलाको यथोक्तलिङ्गाधिकगृहणा न्निष्कारणे ऽन्यलिङ्गकरणाद्वा लिङ्गपुलाकः किंचि

॥ मू

वउसे असंवुडवउसे अहासुहुमवउसेणामंपंचमे । कुसीले पंचविहे पन्नत्ते तंजहा णाणकुसीले दंसणकुसीले चरित्तकुसीले लिंगकुसीले अहासुहुमकुसीलेणामंपंचमे । नियंठे पंचविहे पन्नत्ते तंजहा पढमसमयनियंठे

॥ भा

सहसात्कारी १ । अनाभोगवकुश जे छानां कर्म करे २ । संवृत्त वकुश तेपग प्रमुख धोवादिके ३ । असंवृत्त वकुश ते मूलोत्तर गुणमां संवरी असंव री ४ । यथा सूक्ष्म वकुश ते काईक प्रमादी आंख प्रमुखनां मलटालवाथी ५ ॥ कुशील पांच प्रकारे कह्यो ते कहेछे ज्ञान कुशील १ । दर्शनकुशील २ चारित्र कुशील ३ । लिगकुशील जे एतपसीछे एम सांभली हर्ष पामे ४ । यथासूक्ष्म कुशील ते प्रमादे सेवे ५ ॥ अठार सहस्र शीलांगमा दोष लगा

१० ॥ ... प्रमादात् मनसाकल्पगृहणाद्वा यथा सूक्ष्मपुलाकोनाम पंचमकइति वकुशो द्विविधोपि पचविध स्तत्र शरीरोपकरणविभूषयोः संचिन्त्यकारी आभोगवकुशः
२ ॥ सहसाकारी अनाभोगवकुशः प्रच्छन्नकारी सवृतवकुशः प्रकटकारी असंवृतवकुशो मूलोत्तरगुणाश्रितंवा सवृतासवृतत्वं किञ्चित्प्रमादी अचिमलाद्यपनयन त्वात् यथा सूक्ष्मवकुशोनाम पचमइति कुशीलो द्विविधोपि पचविध स्तत्र ज्ञानदर्शनचारित्रलिङ्गा न्युपजीवन् प्रतिपेवणतो ज्ञानादिकुशीलो लिङ्गस्थाने क्वचि त्तपो दृश्यते तथायं तपश्चरती त्येवमनुमोद्यमानो हर्षङ्गच्छन् यथा सूक्ष्मकुशीलः प्रतिपेवणयैवेति कषायकुशीलोप्येव नवर क्रोधादिना विद्यादिज्ञान प्रयुजा नो ज्ञानकुशीलो दर्शनग्रन्थ प्रयुञ्जानो दर्शनतःशाप दद्चारित्रतः कषायै र्लिङ्गान्तर कुर्वन् लिङ्गतोमनसाकषायान्कुर्वन् यथा सूक्ष्म चूर्णिकारव्याख्यात्वेवं सम्य गाराधनविपरीता प्रतिगतावा सेवना प्रतिषेवणा सा पचसु ज्ञानादिषु येषाते प्रतिषेवणाकुशीलाः कषायकुशीलास्तु पञ्चसु ज्ञानादिषु येषाकषायै र्विरा धना क्रियतइति अन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणाया निर्ग्रन्थाद्धायाः प्रथमे समये वर्त्तमान एकः शेषेषु द्वितीयः अन्तिमे तृतीयः शेषेषु चतुर्थः सर्वेषु पचमइति विवचया भेद एषामिति च्छविः शरीर तदभावा त्काययोगनिरोधेसति अच्छवि र्भवति अव्यथकोवा १ निरतिचारत्वा दशवलः २ चपितकर्मत्वा दकर्मांश इतिद्व

अपढमसमयनियंठे चरिमसमयनियंठे अचरिमसमयनियंठे अहासुहुमनियंठेणामंपचमे । सिणाए पंचविहे

डे सजलन कषायना उदयथी ते कुशीलकषाय निग्रंथ ॥ मोहनीनी गांठिथी नीकल्यो क्षीणकषाय अथवा उपशांत मोहनो धणी ते निग्रंथ पांच निग्रथ कह्या तेकहेछे प्रथमसमय निग्रथ अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण निग्रथ होय तेहमा पहले समये वर्त्ततो ते १ । बीजे समये वर्त्ततो ते अपढमसमय नि ग्रथ २ । छेहला समयनो निग्रथ ३ । अचरमसमयनो निग्रथ ४ । सर्वसमयमा वर्त्तमान ते पाचमो निग्रथ ५ ॥ स्नातक पाच प्रकारनो कहियो ते

तीयः ज्ञानान्तरेणा संपृक्तत्वा त्संशुद्धज्ञानदर्शनधरः पूजार्हत्वा दर्हन् नास्यरहो रहस्य मस्तीत्यरहावा जितकषायत्वात् जिनः केवलं परिपूर्णं ज्ञानादि त्रय मस्यास्तीति केवलीति चतुर्थः निष्क्रियत्वा त्सकलयोगनिरोधे ऽपरिश्रावीति पचमः क्वचित् पुनरर्हन् जिन इतिपचमः अत्रभाष्यगाथा होइपुलाश्रोदुवि हो लद्धिपुलाश्रोतहेवइयरोय लद्धिपुलाश्रोसघा इकज्जइयरोयपचविहो ॥ १ ॥ नाणेदंसणचरणे लिगेअहसुहमएयनायव्वो नाणेदसणचरणे तेसितुविराहण असारो ॥ २ ॥ लिगपुलाश्रोअन्नं निक्कारणश्रोकरेइसोलिगं मणसोअकप्पियाणं निसेवतोहोअहासुहुमे ३ ॥ सरीरे उवकरणे वाउसियत्तदुहासमक्खायं सुक्किलवच्छाणिधरे देसेसव्वेसरीरंमि ॥४॥ आभोगमणाभोगे सवुडमसवुडेअहासुहुमे सोदुविहोवियवउसो पचविहोहोइनायव्वो ॥ ५ ॥ आभोगेजाणंतो करे इदोसतहाअणाभोगे मूलुत्तरेहिसवुड विवरीयमसवुडोहोइ ॥ ६ ॥ अच्छिसुहमज्जमाणो होइअहासुहुमश्रोदुहावउसो पडिसेवणाकसाए होइकुसीलोदुहा एसो ॥ ७ ॥ णाणेदसणचरणे तवेयअहसुहुमएयबोधव्वे पडिसेवणाकुसीलो पंचविहोऊमुणेयव्वो ॥ ८ ॥ नाणादीउवजीवइ अहसुहुमोअहइमोमुणेयव्वो सा इज्जतोराग वच्चइएसोतवच्चरणो ॥९॥ एष तपश्चरणोत्येव मनुमोद्यमानो हर्षं व्रजतीत्यर्थः एमेवकसायमो पचविहोहोइऊकुसीलो कोहेणविज्जाई पउंज एमेवमाणाई ॥ १० ॥ एवमेव मानादिभिरित्यर्थः एमेवदसणतवे सावपुणदेइउवचरित्तंमि मणसाकोहाईणं करेइअहसोअहासुहुमो ॥ ११ ॥ पढमापढमेच

पन्नत्ते तंजहा अच्छवी असंवले अकम्मंसे संसुद्धणाणदसणधरेअरहाजिणेकेवली अपरिस्सावी । कप्पइनि

कहेछे कायानो योग रुध्योछे तेमांटे अच्छवी १ । निरतीचारमांटे असंवल २ । कर्मक्षय कीधा तेमांटे अकर्मांश ३ । ज्ञानांतरायना क्षयथी शुद्धज्ञान दर्शनना धरणहार अरिहत जिन केवली ४ । सर्वयोगना रूधवाथी अपरिश्रावी ५ ॥ कल्पे साधुने तथा साध्वीने पांच वस्त्र धारवा राखवा परि

रमा चरमेग्रहसुहम ५ होइनिग्गंथे अच्छवि १ असवलेया २ अकम्म ३ ससुह ४ अरहजिणेत्ति ॥ १२ ॥ निर्ग्रन्थानामेवो पधिविशेषप्रतिपादनाय सूत्रद्वयमाह ॥ कप्पइत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर कल्पन्ते युज्यन्ते धारयितुं परिगृहे परिहर्तुं मासेवितुमिति अथवा धारणया उवभोगो परिहरणाहोइपरिभोगोत्ति ॥ ज गियत्ति ॥ जगमा स्त्रसा स्तद्वयवनिष्पन्न जागमिक कबलादि ॥ भगएत्ति ॥ भगा अतसी तन्मय भांगिक ॥ साणएत्ति ॥ सनसूत्रमय सानक ॥ पोत्तियत्ति ॥ पोतमेव पौत्तिक कार्पासिक ॥ तिरिडवट्टेत्ति ॥ वृच्चलम्मयमिति इहगाथा जगमजायजगिय तपुणविगलिदियंचपचेदि एक्केकपियपत्तो होइविभागेणणेग विह ॥ १ ॥ पट्टसुवन्नेमलए असुयचीणसुएयविगलिंदी उणोट्टियमियलोमे कुतवेकिट्टीयपचेंदी ॥ २ ॥ पट्टः सुवर्णसुवर्णसूत्र कृमिकाणा मलयमलयविप यएव अशुक श्लणपट्ट चीनाशुक कोसिकार स्त्रीनविषयेवा यद्भवति श्लक्ष्णात् पट्टादिति मृगरोमज शशलोमज मूषकरोमजवा कुतप स्छागले किट्टिजमेतेषा मेवा वयवनिष्पन्नमिति अयसीवसीमाइय भगियसाणयतुसणवक्के ॥ पोतकप्पासमय तिरीडरुक्खातिरीडपट्टीय ॥ १ ॥ इह पचविधे वस्त्रे प्ररूपिते प्युत्सर्ग तः कार्पासिकौर्णिकेएव ग्राह्ये यतो ऽवाचि कप्पासियाओदोणी उणियएक्कीयपरिभोगोत्ति ॥ कप्पासियस्सअसई वागयपट्टीयकोसियारोय असईयउ

ग्गंथाणवा निग्गथीणवा २ पंच वत्थाइं धारेत्तएवा परिहरित्तएवा तंजहा जंगिए भंगिए साणए पोत्तिए तरीडपट्टएणामंपचमए। कप्पइ निग्गथाणवा निग्गथीणवा २ पच रयहरणाइं धारित्तएवा परिहारि त्तएवा

ग्रहवा भोगववा तेकहैछे कबल प्रमुख त्रसजीवना अवयवथी नीपनु १ । अतसीनुं रेसमनु २ । सणनो ३ । कपासनो ४ । वृक्षनी छाल तथा तृण नो ५ ॥ कल्पे साधुने तथा साध्वीने पाच रजोहरण धारवा राखवा परिहरवा तेकहैछे ऊननो १ । उंटनालोमनो २। सणनो ३। तृणविशेपनो ४ ।

णियस्सा वागयकोसिज्जपट्टीयत्ति ॥ १ ॥ तद प्यमहामूल्यमेव ग्राह्यं महामूल्यताच पाटलिपुत्रीयरूपकाष्टादशका दारभ्य रूपकलक्षं यावदिति रजो ह्रि यते अपनीयते येन तद्रजोहरणं मुक्तंच हरइरयंजीवाणं बज्झंअभतरचजतेण रयहरणंतिपवुच्चइ कारणकज्जोवयाराओत्ति ॥ १ ॥ तत्र ॥ उण्णियंति ॥ अ विलोममय ॥ उट्टियंति ॥ उष्ट्रलोममय सानकं सणसूत्रमय ॥ पच्चापिच्चियएत्ति ॥ पल्वज त्वणविशेष स्तन्मय ॥ पिच्चियति ॥ कुट्टितत्वक्तन्मय मुञ्ज' णापणीति इहगाथा पाउंच्छणयंदुविह उस्सग्गियमाववाइयचेव एक्केक्कंपियदुविहणिव्वावायचवाघायं औत्सर्गिक रजोहरणं पट्टनिपद्याद्वययुक्त मापवादिक मनाहृत दंडं निर्व्याघातिक मौर्णिकंदशिकं व्याघातिकं त्वितरदिति जतनिव्वाघाय तएगउन्नियतिनायव्व [औत्सर्गिकंच] उस्सग्गियवाघाय उट्टियसणवच्चमुजच ॥१॥ निव्वाघायववाई दारुगदंडुण्णियाहिदसियाहिं अववाइयवाघाय उट्टीसणवच्चमुजभयति ॥ २ ॥ श्रमणानां यथा वस्त्ररजोहरणे धर्मोपग्राहके तथा पराण्यपि कायादीनीति तान्येवाह ॥ धम्ममित्यादि ॥ धर्म्मं श्रुतचारित्ररूपं णमित्यलङ्कारे चरतः सेवमानस्य पचनिस्सास्सांजा न्यवलवनस्थानानि उपग्रहहेतवइत्यर्थः षट्कायाः पृथिव्यादय स्तेषांच संयमोपकारिता आगमप्रसिद्धा तथाहि पृथिवीकाय माश्रित्यो क्तं ठाणनिसीयतुयट्टण उच्चाराईणगहण निक्खेवे घट्टगडगलगलेवो एमाइपओयणंवहुहा ॥ १ ॥ अप्काय माश्रित्य परिसेयपियणहत्या इधोयणीवीरधोयणीचेव आयमणभाणधुवणे एमाइपओयणंव हुहा ॥ २ ॥ तेजस्काय मपि ओयणवंजणपाणग आयासुसिणोदगचकुम्मासा डगलगसरक्खसूइय पिप्पलमाईउवओगो ॥ ३ ॥ वायुकायमभि दृइएण

तंजहा उन्निए उट्टिए साणिए पच्चापिच्चिए मुंजापिच्चिए णामंपंचमे । धम्मंणं चरमाणस्स पंच निस्साठाणा

मुंजनो कुट्टितमुंजनो ५ ॥ धर्मकरताने पांच निश्राना स्थान कह्या आलंबनना ते कहेछे छकाय १ । गच्छ २ । राजा ३ । गाथापती ४ । शरीर क्षा ॥

यत्थिणावा पम्रोयणंहोज्जवाउणामुणिणो गेलणंमिविहोज्जा सचित्तमीसेपरिहरेज्जा ॥ ४ ॥ वनस्पतिग्रति संथारपायदंडग खोमियकप्पायपीढफलगा ॥
ईप्रोसहभेसज्जाणिय एमाइपम्रोयणंतदसु ॥ ५ ॥ त्रसकाये पचेंद्रिय तिरश्च आश्रित्योक्त चम्मट्ठिदंतनहरो मसिगअजिलाणच्छगणगोमुत्ते खीरदहि
माइयाण पंचिंदियतिरियपरिभोगे ॥ ६ ॥ एव विकलेंद्रियमनुष्यदेवाना मप्युपगृह्यकारिता वाच्या तथा गणो गच्छ स्तस्यचोपग्राहिता एगस्सकओधम्मो
इत्यादिगाथा पूगाद्यसेया तथा गुरुपरिवारोगच्छो तत्थवसताणनिज्जराविउला विणयाउतहासारण माईहिंनदोसपडिवत्ती ॥ ७ ॥ अन्नन्नावेक्खाए
जोगतितहिपयइतो नियमेणगच्छवासो असगपयसाहगेनेओत्ति तथा राजा नरपति स्तस्य धर्मसहायकत्व दुष्टेभ्य: साधुरक्षणा दुक्तंचलौकिकै: क्षु
द्रलोकाकुलेलोकेधर्मं कुर्यु. कथहिते यांतादांता प्रहतार येद्राजातारक्ष्नति ॥ १ ॥ तथा अराजकेहिलोकेऽस्मिन् सर्वतोविद्रुते भयात् रक्षार्थमस्यसर्वस्य रा
जानमसृजत्प्रभुरिति ॥ २ ॥ तथा गृहपति: शय्यादाता सोपि निस्राख्यान स्थानदानेन सयमोपकारित्वा यदुक्तं धृतिस्तेनदत्तामतिस्तेनदत्ता गतिस्ते
नदत्तासुखतेनदत्त गुणश्रोसमालि ग्यतेभ्येवरेभ्यो मुनिभ्योमुदायेनदत्तोनिवास: ॥ १ ॥ तथा जोदेइउवस्सयजइ वराणतवनियमजोगजुत्ताण तेणदिण्णा
वत्थ णपाणसयणासणविगप्पति ॥ १ ॥ तथाशरीरकाय: अस्यचधर्मोपग्राहिता स्फुटैव यतोवाचि शरीरधर्मसयुक्तं रक्षणीयंप्रयत्नत: शरीरात्प्रवतेधर्म: प
र्वतात्सलिलयथेति ॥ १ ॥ भवति चात्रार्या धर्मं चरत:साधो र्लोकेनिश्रापदानिपचैव राजागृहपतिरपर: षट्कायागणशरीरेचेति ॥ १ ॥ शेषं सुगमं अम

प० तं० छक्काया गणो राया गाहावई सरीरं । पंचणिही पण्णत्ता तजहा पुत्तणिही मित्तणिही सिप्पणिही

या ५ ॥ पाच निधान कह्या तेकहेछे पुत्रते निधान १ । मित्रते निधान २ । विज्ञान ते निधान ३ । धन सुवर्णादि ते निधान ४ । धान्य गोधूमा

॥

णस्य निधास्थाना न्युक्तानि अथलौकिकं निधिलचणं निधास्थान पंचधा प्रतिपादय न्नाह ॥ पचनिहीत्यादि ॥ सुगमं नवरं नितरा न्धीयते स्थाप्यते य स्मिन् स निधिः विशिष्टरत्नसुवर्णादिद्रव्यभाजन तत्र निधिरिव निधिः पुत्रश्चासौ निधिश्च पुत्रनिधि र्द्रव्योपार्जकत्वेन पित्रो र्निर्वाहहेतुत्वा दतएव स्वभावे नच तयो रानन्दसुखकरत्वाच्च अत्रोक्तंपरैः जन्मांतरफलपुख्खतपोदानसमुद्भव सतति.शुद्धवंश्याहि परत्रेहचशम्मणइति ॥१॥ तथा मित्र सुहृ त्तच्च तन्निधिश्चेति मित्रनिधि रर्थकामासाधकत्वेना नन्दहेतुत्वा त्तदुक्त कुतस्तस्यास्तुराज्यश्रीः कुतस्तस्यमृगेचणाः यस्यसूरंविनीतच नास्तिमित्रविचचण ॥ १ ॥ शिल्प चित्रा दिविज्ञान तदेवनिधिः शिल्पनिधि रेतच्च विद्योपलचण तेन विद्या निधिरिव पुरुपार्थसाधनत्वा दुक्तोक्त विद्ययाराज्यपूज्यःस्या द्विद्ययाकामिनीप्रियः वि द्याहिसर्वलोकस्य वशीकरणकार्मणमिति " १ ॥ तथा धननिधिः कोशो धान्यनिधिः कोष्टागारमिति अनतर निधि रुक्तः सच द्रव्यतः पुत्रादि र्भावतस्तु कुशलानुष्ठानरूप ब्रह्म तत्पुनः शौचतया विभणिषु. प्रसगेन शेषाख्यपि शौचान्याह ॥ पचविहेत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं शुचे र्भाव शौचं शुद्धि रित्यर्थ स्तच्च द्विधा द्रव्यतो भावतश्च तत्राद्य चतुष्टय द्रव्यशौच पचमन्तु भावशौच तत्र पृथिव्या मृत्तिकया शौच जुगुप्सितमलगन्धयो रपनयन शरीरादिभ्योघर्पणोपलेप नादिनेति पृथिवीशौच मिहच पृथिवीशौचाभिधानेपि यत्परै स्तल्लचण मभिधीयते यदुत एकालिंगेगुदेतिस्र स्तथैकत्रकरेदश उभयोःसप्तविज्ञेयाः मृदः शुद्धौमनीषिभिः ॥ १ ॥ एतच्छौचग्टहस्थाना द्विगुणब्रह्मचारिणा त्रिगुणवानप्रस्थानां यतीनांचचतुर्गुण ॥ २ ॥ तदिहनाभिमत गधाद्युपघातमात्रस्य शौच

॥ टी

धणणिही धन्नणिही। पंचविहे सोए पन्नत्ते तंजहा पुढविसोए आउसोए तेउसोए मंतसोए बंभसोए । पच

॥ मू

दिते पिण निधान ५ ॥ पाच प्रकारे शौच पवित्रता कही तेकहेछे पृथ्वी मांटीथी पवित्रता १ । पाणीथी पवित्रता २ । अग्निथी पवित्रता ३ । म

॥ भा

त्वेनविवर्चितत्वा त्तस्यैवच युक्तियुक्तत्वादिति तथा अद्भिः शौचमत् शौचप्रचालनमित्यर्थ स्तेजसा अग्निना तद्विकारेणवा भस्मना शौच तेज'शौच मनशौच शुचिविद्यया ब्रह्मचर्यादिकुशलानुष्ठान तदेव शौच ब्रह्मशौच मनेनच सत्यादिशौच चतुर्विधमपि सगृहीतं तच्चेद सत्यशौचतपःशौच शौचमिद्रियनिग्रहः सर्वभूतदयाशौचं जलशौचतुपचममिति ॥ १ ॥ लौकिके. पुनरिद सप्तधोक्तम् यदाह सप्तस्नानानिप्रोक्तानि स्वयमेवस्वयंभुवा द्रव्यभावविशुद्धयर्थ मृषीणाम्ब्रह्मचारिणां ॥ १ ॥ आग्नेयवारुणब्राह्मा वायव्यंदिव्यमेवच पार्थिवमानसचैव स्नानंसप्तविधस्मृतं ॥ २ आग्नेयभस्मनास्नान मवगाह्यतुवारुण आपोहिष्टामयब्रा ह्मर वायव्यतुगवांरजः ॥ ३ ॥ सूर्यदृष्टन्तुयद्वृष्ट तद्दिव्यमृषयोविदु' पार्थिवन्तुमृदास्नान मनःशुद्धिस्तुमानस ॥ ४ ॥ इति अनतर ब्रह्मशौच सुक्त त्तच्च जीवशुद्धि रूप जीवच छद्मस्थो नजानाति केवलीतु जानातीति सवधा च्छद्मस्थकेवलिनो रज्ञेयज्ञेयवस्तुप्रतिपादनाय सूत्रद्वयमाह ॥ छउमत्थेत्यादि ॥ सुगम नवरं छद्मस्थ इहावध्याद्यतिशयविकलो गृह्यते ऽन्यथा अमूर्त्तत्वेना धर्मास्तिकायादी नजानन्नपि परमाणु जानात्येवा सौ मूर्त्तत्वा त्तस्या थ सर्वभावेने त्युक्त त्ततश्च त कथचि ज्जानन्नपि अनन्तपर्यायतया नजानातीति एवं तर्हि सख्यानियमोव्यर्थः स्या द्घटादीना सुबहूना मर्थाना मकेवलिना सर्वपर्यायतया ज्ञातु म शक्यत्वादिति ॥ सव्वभावेणंति ॥ साचात्कारेण श्रुतज्ञानेन त्वसाचात्कारेण जानात्येव जीव मशरीरप्रतिवद्ध न्देहमुक्त परमाणु श्चासौ पुद्गलश्चेतिविग्रह. द्व्यणुकादीना मुपलचण मिद यथैताम्यतीन्द्रियाणि जिनः पंच जानाति तथा न्यद प्यतीन्द्रियं जानाती त्यधो लोकोर्ध्वलोकव त्स्यतीद्रिय पचस्थानकावतारि

ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं णयाणइ णपासइ तंजहा धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकायं जीवं

त्र पवित्रता ४ । शील वृह्मचर्यथी पवित्रता ५ ॥ पाच थानके छदमस्थ सर्व भावे करी नजाणे नदेखै देशथी जाणे ते कहेछे धर्मास्तिकाय १ । अध

दर्शयन् सूत्रद्वयमाह ॥ अहोइत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ॥ अहोलोएत्ति ॥ सप्तमपृथिव्या मनुत्तराः सर्वोत्कृष्टवेदनादित्वा त्ततःपरं नरकाभावाद्वा महत्वञ्च च तुर्णा चैवतो व्यसंख्यातयोजनत्वा दप्रतिष्ठानस्यतु योजनलक्षप्रमाणत्वेप्यायुषो ऽतिमहत्वा महत्वद्रति एव मूर्ध्वलोकेपि कालादिषु विजयादिषुच सत्वाधि कपुरुषाएव गच्छंतीति तत्प्रतिपादनायाह ॥ पंचपुरिसेत्यादि ॥ हिरिसत्ते ॥ ह्रिया लज्जया सत्व परीषहेषु साधोः संगामादा वितरस्यवा ऽवष्टंभो ऽविचल

असरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं । एयाणिचेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ धम्मत्थिकायं जाव परमाणुपोग्गलं । अहोलोगेणं पंच अणुत्तरा महइमहालयामहाणिरया पण्णत्ता तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइठाणे । उड्ढलोगेण पच अणुत्तरा महइमहालया महाविमा णा पण्णत्ता तंजहा विजये वेजयंते जयते अपराजिए सव्वठसिद्धे । पंच पुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा हिरि

र्मास्तिकाय २ । आकाशास्तिकाय ३ । शरीर रहित जीव ४ । परमाणुपुद्गल ५ ॥ एहीज पांच निश्चयथी ऊपनुं छे केवल ज्ञानदर्शन जेहने एहवा अरिहंत जिन केवली तेह सर्वभावे जाणे देखे ते कहेछे धर्मास्तिकाय यावत् परमाणु पुद्गल ॥ अधो लोकने विषे पांच उत्कृष्टा मोटा महालय क ह्या ते कहेछे काल १ । महाकाल २ । रोरुय ३ । महारोरुय ४ । अप्रतिष्ठान ५ ॥ उर्द्ध लोकमां पाच उत्कृष्टा मोटा महालय महा विमान कह्या तेकहछे विजय १ । वैजयंत २ । जयत ३ । अपराजित ४ । सर्वार्थसिद्ध ५ ॥ पांच प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक लाजथी सत्वराखे १ । एक ला जथी मनमा सत्व राखे देहमां शीतादि विकारथी कंप नथी होय २ । चल सत्व ३ । स्थिरसत्व ४ । एकने उदय पामतोछे सत्व बढतो बढतो स

त्वं यस्यासौ क्लीसत्व स्तथा क्रियापि मनस्येव सत्व न देहे शीतादिषु कंपादिविकारभावात् सक्लीमन.सत्व श्चल भगुर सत्व यस्य सतथा एतद्विपर्ययात् स्थि रसत्व उदयन मुदयगामि प्रवर्द्धमानं सत्व यस्य स तथा अनतर सत्वपुरुष उक्त' सच भिक्षुरेवेति तत्स्वरूपप्रतिपादनाय दृष्टांतदार्ष्टांतिकसूत्रे ॥ पचमच्छे त्यादिके ॥ आह तत्र मत्स्य. प्राग्वत् भिक्षाकस्तु अनुश्रोतश्चारी प्रतिश्रया दारभ्य भिक्षाचारी सच प्रथम प्रतिश्रोतश्चारीच प्रतिश्रोतश्चारी दूरादारभ्य प्र तिश्रयाभिमुखचारीत्यर्थ. सच द्वितीय. अंतचारी पार्श्वचारीतितृतीय: शेषौ प्रतीतौ भिक्षाकाधिकारा त्तद्विशेष पचधाह ॥ पंचेत्यादि ॥ व्यक्ता क्विन्तु परेषा मात्मदुस्थत्वदर्शनेना नुकूलभाषणतो यल्लभ्यते द्रव्य सा वनी प्रतीता तां पिवति आस्वादयति पातीतिवेति वनीप: सएव वनीपकोयाचक इहतु यो यस्या तिथ्यादे र्भक्तो भवति तत्प्रशसनेन यो दानाभिमुख करोतीति सवनीपकइति तत्र भोजनकालोपस्थायीप्राघूर्णको ऽतिथि स्तद्दानप्रशंसनेन तद्भक्तान् यो लिप्सते सोतिथि माश्रित्य वनीपको ऽतिथिवनीपको यथा पाएणदेइलोगो उपगारिसुपरिचिएवजुसिएवा जोपुणअद्धाखिन्न अइहिपूएइतदाणति ॥ १ ॥

सत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते उदयणसत्ते । पच मच्छा पसत्ता तजहा अणुसोयचारी पडिसोय चारी अंतचारी मज्झचारी सव्वचारी । एवामेव पच भिक्खागा पसत्ता तजहा अणुसोयचारी जाव सव्व

पाणी ऊ त्वळे जेहनुं ते उदयनसत्व ५ ॥ पांच प्रकारना मच्छ कह्या तेकहैळे प्रवाहने पाछल चाल्यो जाय १ । प्रवाहने साहमो चाल्यो जाय २ । पर चाले ३ । पाणीने वीचमा चाले ४ । सर्व रीतथी चाले ५ ॥ एहनी परे पाच भिक्षाचर कहिआ तेकहैळे उपासराथी माण्डी भिक्षा लेतो जाय एम यावत् सर्वचारी ५ ॥ पाच वनीपक कह्या तेकहैळे अतिथिवनीपक जे अतिथ्यादिक नो भक्त होय तेहनी प्रशसा पूर्वक जेदानाभिमुख करे ते

जुसिएत्ति प्रीते तमिति तस्य दानं महाफल मितिशेष एवमन्येपि नवरं कृपणा रङ्कादयो दुस्था उदाहरण किवणेसुदुम्मणेसुय अबंधवोयकिजुगियंगेसु पू जाहज्जेलोए दाणपडागहरइदेंतो ॥ १ ॥ आयकित्ति रोगी जुगियगो व्यगितः पूजाहार्यःपूजितपूजको माहना ब्राह्मणा स्तउदाहरण लोयाणुग्गहकारिसु भूमोदेवेसुबहुफलंदाण अविनामबंभबधुसु किपुणछक्कम्मनिरयाणं ॥ १ ॥ बंभबधुसुत्ति जन्ममात्रेण ब्रह्मबांधवेषु निर्गुणेष्वपीत्यर्थः यजनादीनि षट्कर्म्माणीति श्ववनीपको यथा अविनामहोज्जसुलभो गोणाईणतणाइआहारो च्छिच्छिक्कारहयाण नहुसुलहोहोज्जसुणगाण ॥ १ ॥ कैलासभवणाएए गुज्झगाआगया महिं चरतिजक्खरूवेण पूयापूयाहियाहिया ॥ १ ॥ पूजयाहिता अपूजया त्वहिताइत्यर्थः श्रमणाः पंचधा निर्ग्रंथाः शाक्या स्तापसा गैरिका आजीविकाश्चे ति तत्र शाक्यवनीपको यथा भुजतिचित्तकम्म ठियावकारुणियदाणरुइणोय अविकामगइभेसुचि ननस्सएकिपुणजतीसुत्ति ॥ १॥ एवमन्येपि तापसवनीप कादयो द्रष्टव्याइति योय वनीपकउक्तः स साधुविशेषः साधुश्चा चेलोभवती त्यचेलस्य प्रशसास्थानान्याह ॥ पचहीत्यादि ॥ प्रतीत नवरं नविद्यन्ते चेलानि वासांसि यस्या सा वचेलकः सच जिनकल्पिकविशेष स्तदभावा देव तथा जिनकल्पिकविशेषः स्थविरकल्पिकश्चा ल्पाल्पमूल्यसप्रमाणजीर्णमलिनवसनत्वादि

चारी। पंच वणीमगा पन्नत्ता तंजहा अतिहिवणीमए किवणवणीमए माहणवणीमए साणवणीमए समणव णीमए। पंचहिं ठाणेहि अचेलए पसत्थे भवइ तंजहा अप्पापडिलेहा लाघविएपसत्थे रूवेवेसासिए त

१। कृपणावनीपक ते रंकादिक दुस्थ २। ब्राह्मणावनीपक ३। श्वानावनीपक ४। श्रमणा वनीपक शाक्यादि दर्शनावनीपक ५॥ पांच थानके सा धुने अचेलकपणु ते शप्रस्त भलो कह्यो तेकहेछे अल्प अपेक्षा होय घणुं जोवो जालवुं नहोय १। हलुकापणुं ते भलो होय २। विश्वासरूपथाय सहूजा

ति प्रशस्तः प्रशंसित स्तीर्थकरादिभिरिति गम्यते अल्पा प्रत्युपेचा अचेलकस्य स्यादिति गम्यं प्रत्युपेचणीयं तथाविधोपधेरभावा देवंच नस्वाध्यायादिपरि मंथइति तथा लघोर्भावो लाघवं तदेवलाघविकं द्रव्यतो भावतोपि रागविषयाभावात् प्रशस्त मनिद्यंस्या त्तथारूप नेपथ्यं वैश्वासिक विश्वासप्रयोजन मलि ग्सुतासूचकत्वात् स्यादिति तथा तप उपकरणसंलीनतारूप मनुज्ञातं जिनानुमत स्या त्तथा विपुलो महा निद्रियनिग्रहः स्या दुपकरणविना स्पर्शनप्रतिकू लशीतवातातपादिसहनादिति इंद्रियनिग्रहस्य सत्वेनो त्कटै रेव कर्त्तुं शक्य इत्युत्काटभेदानाह ॥ पचेत्यादि ॥ सुगम नवरं ॥ उक्कलत्ति ॥ उत्काटा उत्कालावा तत्र दड आज्ञा अपराधिदडनवा सैन्यंवा उत्कटः प्रकृष्टो यस्य तेन वोत्काटो यः स दडोत्काटो दडेन योत्कालति वृद्धियाति यः स दडोत्काल इत्येव सर्वत्र नवर राज्य प्रभुता स्तेना चौरा देशो मडलं सर्वं मेत त्समुदयइति असयतो दडादिभि रुत्काटो भवति सयतस्तु समितिभिरिति समितीः प्राह ॥ पंचेत्यादि ॥ सुगम नवर समेकीभावेनेतिः प्रवृत्तिः समितिः शोभनै कायपरिणामस्य चेष्टेत्यर्थः ईरणमीर्या गमनमित्यर्थं स्ताच समिति रीर्यासमिति रुक्तांच ईर्यासमितिर्नाम रथशक टयानवाहनाक्रांतेषुमार्गेषु सूर्यरश्मिप्रतापितेषु प्रासुकविविक्तेषु युगमात्रदृष्टिना भूत्वा गमनागमन कर्त्तव्यमिति भाषण भाषा तस्यां समिति र्भाषासमिति

वेत्थुणुस्साए विउलेइंदियनिग्गहे । पंच उक्काला पत्नत्ता तंजहा दंडुक्काले रज्जुक्काले तणुक्काले देसुक्काले सत्तुक्काले । पंच समिइउ पन्नत्ता तजहा इरियासमिई भासा जाव पारिठावणियासमिई । पंचविहा संसारस

णो जे एह निरलोभी ३ । तप अनुज्ञान कह्यो अचेलकपणु ते तप ४ । घणो इंद्रियनो निग्रह ५ ॥ पाच उत्कट कह्या तेकहेछे दड अपराधे तेथी उत्कट १ । राज्यनो उत्कट समुदय २ । शरीरनु उत्कट सत्वयुक्त ३ । देशोत्कट ४ । सेनानु उत्कट ५ ॥ पाच समिति कही ते कहेछे ईर्यासमिति जे

रत्तांच भाषासमितिर्नाम हितमितासंदिग्धार्थभाषणं तथा एषण मेषणा गवेषणग्रहणग्रासैषणाभेदा शंकादिलक्षणावा तस्यां समिति रेषणासमिति रत्तांच एषणासमितिर्नाम गोचरगतेन मुनिना सम्यगुपयुक्तेन नवकोटीपरिशुद्धं ग्राह्यमिति तथा आदानभांडमात्रनिक्षेपणासमितिः भांडमात्रे आदाननिक्षेपवि षया सुंदरचेष्टेत्यर्थ इहचा प्रत्युपेक्षिताः प्रमार्ज्जिताद्याः सप्तभंगाः पूर्वोक्ता भवतीति तथा उच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणजल्लानां पारिष्ठापनिका त्याग स्तत्र समिति र्या सा तथेति तत्रो च्चारः पुरीषं प्रस्रवण मूत्रं खेलः श्लेष्मा जल्लो मलः सिंघाणो नासिकोद्भवः श्लेष्मा अत्रापि तएव सप्तभंगाइति समितिप्ररूपणंच जीवरक्षार्थ मिति जीवस्वरूपप्रतिपादनाय सूत्राष्टकमाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ स्फुटार्थं नवरं ससारसमापन्ना भववर्त्तिनः विप्रजहन् परित्यजन्सर्वजीवाः

मावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा एगिंदिया जाव पंचेंदिया । एगिंदिया पंचगइया पंचागइया प० तं० एगिंदिए एगिंदिएसु उववज्जमाणे एगेंदिएहिंतोवा जाव पंचेंदिएहिंतोवा उववज्जेज्जा सेचेवण से एगेंदिए एगेंदियत्त विप्पजहमाणे एगेंदियत्ताएवा जाव पचेंदियत्ताएवा गच्छेज्जा । वेइंदिया पंचगइया पंचागइ या एवंचेव । एवं जाव पंचेंदिया पंचगइया पचागइया पन्नत्ता तजहा पंचेंदिया जाव गच्छेज्जा । पंचविहा

जोई चाले १ । भाषासमिति २ । यावत् पारिष्ठापनिकासमिति ५ ॥ पांच प्रकारना संसार समापन्न जीव कह्या तेकहेछे एकेंद्री यावत् पंचेंद्री ५ ॥ एकेंद्रीने पाच गति पांच आगति कही तेकहेछे एकेंद्रीमा ऊपनो जीव एकेंद्रीमाहिथी उपजे यावत् पंचेंद्रीमांथी आवी ऊपजे । तेहज एकेंद्री एकेंद्री पणु छांडतो मूकतो एकेंद्री माहि आवे यावत् पंचेंद्रीमां आवे । बेइंद्री पाच गतिथी आवे पाचगतिमा जाय । इमज यावत् पंचेंद्री पाचगतिथी आवे

संसारिसिद्धा अकषायिण उपशांतमोहादयो जीवाधिकारा द्दनस्पतिजीवा नाश्रित्य पचस्थानक मा॰ ॥ अहेत्यादि ॥ निस्थानकवद्वाख्येय नवर कला या वट्टचणगा मसूरा चणइयाश्रो तिलमुद्गमासाः प्रतीताः निप्पावा वल्ला कुलत्था चवलगसरिसा चिप्पडिया भवति आलिसदया चवलया सईणा तुवरी पलिमिथा कालचणगा इति अनन्तर सवत्सरप्रमाणेन योनिव्यतिक्रम उक्तो ऽधुना सएव सवत्सर शिल्यत इति ॥ पचसवच्छरेत्यादि ॥ सूनचतुष्टय तत्र नक्खत्तसवच्छरेत्ति ॥ इन्दचद्रस्यनक्षत्रमडलभोगकालो नक्षत्रमासः सचसप्तविंशति दिनानि एकविंशतिः सप्तषष्टिभागा दिवसस्येति ॥ एवंविधद्वादशमा

सव्वजीवा पस्सत्ता तजहा कोहकसायी जाव लोभकसायी अकसायी। अहवा पंचविहा सव्वजीवा प० तं० नेरइया जाव देवा सिद्धा। अहभंते कल मसूरतिलमुग्गमासणिप्पावकुलत्यआलिसदगसईणपलिमथगाणं एए सिणं धन्नाणं कोठाउत्ताणं जहा सालीणं जाव केवइयंकाल जोणीसंचिठइ गोयमा जहन्नेणमंतोमुहुत्त उक्को सेण पच संवच्छराइं तेणपर जोणीपरिमिलायइ जाव तेणपर जोणीवोच्छेदेपन्नत्ते । पचसंवच्छरा प० तं०

पाचगतिमा जाय तेकहेछे पंचेद्रीमां यावत् आवे ॥ पांच प्रकारना सर्वे जीव कह्या तेकहेछे क्रोध कषाई यावत् लोभकषाई अकसाई ५ ॥ पाच प्र कारना सर्वे जीव कह्या ते कहेछे नारकी यावत् देवता सिद्ध ५ ॥ अथ भगवत कलम वाटला चिणा मसूर तिल मुंग उडद वाल कुलथी चोलरा स हडातुअरि चणा ए जातिना धान्य कोठारमा घात्या जिम शालि कहिया यावत् केतले काल योनि रहै केतले काल सचित रहे भगवत कहेछे जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पाच वरस तिवार पछी योनि स्तान थाय यावत् तिवार पछी योनी विछेद थाय ॥ पाच संवच्छर कह्या तेकहेछे नक्षत्र

॥ सो नचत्रसंबत्सरः २७ । २१ । ६७ । सचायं त्रीणिशतानि भह्नां सप्तविंशत्युत्तराणि एकपंचाशच्च सप्तषष्टिभागा इति ३२७ । ५१ । ६७ । पचसंवत्सरात्मकं युगं तदेकदेशभूतो वच्यमाणलचण चंद्रादि युगसबत्सरः प्रमाणं परिमाण दिवसादीनां तेनो पलचितो वच्यमाण एव नचत्रसम्बत्सरादिः प्रमाणसंबत्सरः सएव लचणाना वच्यमाणस्वरूपाणा प्रधानतया लचणसबत्सरो यावता कालेन शनैश्चरो नचत्र मेक मथवा द्वादशापि राशीन् भुंक्ते स शनैश्चरसंबत्सर इति यत श्चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र सणिचरसवच्छरे अठ्ठावीसविहे पणत्ते अभिई समणे जाव उत्तरासाढा जवा सणिचरे मह्ग्गहे तीसाए सयच्छरेहिं सव्व नक्खत्तमं डल समाणेइत्ति युगसबत्सरः पंचविध स्तद्यथा ॥ चदेत्ति ॥ एकोनत्रिंशद्दिनानि द्वात्रिंशच्च द्विषष्टिभागा दिवसस्यै त्येवंप्रमाणः २९ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रति पदारब्धः पौर्णमासीनिष्ठित श्चंद्रमास स्तेन मासेन द्वादशमासपरिमाण श्चद्रसबत्सर स्तस्यच प्रमाण मिदं त्रीणिशता न्यह्नां चतुःपंचाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्टिभागाः ३५४ । १२ । ६२ । एवं द्वितीयचतुर्थावपि चद्रसबत्सरौ ॥ अभिवड्ढिएत्ति ॥ एकत्रिंशद्दिनानि एकविंशत्युत्तरशतं चतुर्विंशत्युत्तरशतभागा

णक्खत्तसंबच्छरे जुगसंबच्छरे पमाणसंबच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिंचरसंबच्छरे । जुगसंबच्छरे पंचविहे प०

संबत्सर १ । युगसंबत्सर २ । प्रमाण सबत्सर ३ । लक्षण संबत्सर ४ । शनैश्चर सबत्सर ५ ॥ अठावीस नक्षत्रनो शनैश्चर जोग करे ते शनैश्चर संब त्सर ५ ॥ युगसंबत्सर पाच प्रकारनो कह्यो तेकहेछे चंद्रसंबत्सर १ । चंद्रसबत्सर २ । अभिबर्द्धित सबत्सर ३ । चंद्रसबत्सर ४ । अभिबर्द्धित सबत्स र ५ ॥ प्रमाणसबत्सर पाच प्रकारनो कह्यो तेकहेछे नक्षत्रप्रमाण सबत्सर २७ दिन अने १ दिवसनाद ७ हाइया भाग २१ एह नक्षत्र मासनो परि माण एहवा १२ मासथी नक्षत्रसंबत्सर होय तेहनादिन ३२७ । भाग ५१ । ६७ हाइया ॥ चंद्र प्रमाण सबत्सर वदी १ पडवाथी पौर्णमासी लगे तेह

नामभिवर्द्धितमास एवं विधेन मासेन द्वादशप्रमाणो ऽभिवर्द्धितसंबत्सरः सच प्रमाणेन त्रीणिशतान्यष्टा न्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्च द्विषष्टिभागा ३८३ । ४४ । ६२ । इत्येव पचमोपि एभिश्चन्द्रादिभिः पचभिः सबत्सरै रेकंयुग भवती त्येषांच पंचानां संबतसराणा मध्ये ऽभिवर्द्धिताख्ये सबत्सरे ऽधिकमास कः पततीति प्रमाणसंबत्सरः पचविध स्तत्र नक्षत्रइति नक्षत्रसबत्सरः सच उक्तलक्षण. केवलं तत्र नक्षत्रमडलस्य चन्द्रभोगमात्र विवक्षित मिहतु दिन भागादिप्रमाणमिति तथा चद्राभिवर्द्धिता वप्युक्तलक्षणा वेव किन्तु तत्र युगावयवतामात्र मिहतु प्रमाणमिति विशेष ॥ उजइत्ति ॥ ऋतुसंबत्सरस्त्रिंशद होरात्रप्रमाणै र्द्वादशभि र्ऋतुमासैः सावनमासकर्ममासपर्यायै र्निष्पन्न. षष्ठ्यधिकाहोरात्रशतत्रयमानइति ३६० ॥ आइच्चेत्ति ॥ आदित्यसबत्सरः सच त्रि शद्दिना न्यर्द्धंचे त्येवविधमासद्वादशकनिष्पन्नः षट्षष्ठ्यधिकाहोरात्रशतत्रयमानइति ३६६ । अयमेवा नन्तरोक्तो नक्षत्रादिसबत्सरो लक्षणप्रधानतया लक्षणसं बत्सरइति तत्र नक्षत्रमाह ॥ समग गाहा ॥ समकं समतया नक्षत्राणि कृत्तिकादीनि योगं कार्त्तिकीपौर्णमास्यादितिथ्या सह सबध योजयति कुर्वन्ति इद

तंजहा चंदे चदे अभिवड्ढिए चदे अभिवड्ढिएचेव । पमाणसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा णक्खत्ते चंदे उऊ आइच्चे अभिवड्ढिए । लक्खणसंवच्छरे पचविहे पण्णत्ते तजहा समगंनक्खत्तायोगंजोयंति समगंउऊपरिणमंति

ना दिन २८ भाग ३२ एक अहोरात्रिना ६७ भाइया एहवा १२ मासथी १ चद्रसबतसर होय तेहना दिन ३५४ अने एक अहोरात्रिना ६२ भाइया भा ग १२ होय ॥ रितु प्रमाण सबत्सर ३० अहोरात्रिनो १ मास एहवा १२ मासथी १ रितुसबत्सर तेहना दिन ३६० होय ॥ आदित्य प्रमाण सबत्स र तेहनो मास साढातीस दिननु १२ मासना दिन ३६६ ॥ अभिवर्द्धित प्रमाण सबत्सर १३ चंद्रमासनो ॥ नक्षत्रादि सबत्सर लक्षण प्रधान ते लक्षण

सुक्तभवति यानि नचत्राणि यासु तिथिषू लगंती भवंति यथा कार्त्तिक्यां कृत्तिका स्तानि तास्वेव यत्र भवंति यथोक्तं जेठ्ठीवच्चइमूले णसावणोवच्चईधणि

ट्ठाहि अद्दासुयमगसिरो सेसानक्खत्तनामियामासत्ति ॥ १ ॥ तथा यत्र समतयैव ऋतवः परिणमति न विषमतया कार्त्तिक्या अनन्तरं हेमन्तर्त्तु. पौष्या

अनन्तर शिशिरर्तुरित्येव मवतरन्तीतिभावः यत्र न नैवातीव उष्ण धर्म्मो यत्र सो त्युष्णो न नैवाति शीतो ऽतिहिमः बहूदक यत्र सवहूदकः सच भवति

लचणतो नचत्रइति नचत्रचारलचणलचितत्वा न्नचत्रसवत्सरइति अस्यांच गाथाया पचमाष्टमावशको पचकाला वितीय विचित्रेतिच्छंदोविज्ञि रुप

दिश्यते बहुलाविचित्रेति गाथालचणात् पत्तिपचकलोगणइति ॥ ससिगाहा ॥ ससित्ति विभक्तिलोपात् शशिना चद्रेण सकलपौर्णमासी समस्तरा

का यः सवत्सर इतिगम्यते अथवा यत्र शशी सकलापौर्णमासींयोजयति आत्मना सबंधयति तथा विषमचारीणि यथा स्वतिथि स्ववर्त्तीनि नचत्राणि

णक्खुरहणाइसीज बहूदजहोइनक्खत्तो १ ससिसगलपुण्णमासी जोएइविसमचारिणक्खत्ते कडुजबहूदजय तमा

पांच प्रकारना कहिया तेकहैछे समान सरखा मासनामथी समान नक्षत्र पूर्णिमाये योग करे चंद्रमाथी जिम कार्त्तिकी पूर्णमासीये कृतिका । एम

जेठीये ज्येष्टा इत्यादि मासनाम सदृश नक्षत्र होय समान अनुक्रमथी रितुपरिणामे विषमरीतथी रितु नथी परिणमे कार्त्तिकी पूर्णिमा पछे हेमंत

रितू पौषी पूर्णिमा पछे शिशिर रितू इत्यादि समतया परिणमे नथी घणो उष्णता पणुं नथी घणो शीत हिम उदकपाणी बहुत बरसात जिहांछे

एह नक्षत्रचारने समपणाथी नक्षत्र संबत्सर कह्यो ॥ १ ॥ जिहां चद्रमा संपूर्ण पूनिमजोडे अने मासना नामथी नक्षत्र विषमचारी होय जे मासनी

पूर्णमासीने सदृश नहोय जिम जेठनी पूर्णमासीयें मूल श्रावणी पूर्णमासीये धनिष्ठा मार्गशीर्षनी पूर्णमासीये आर्द्रा एम मासनामथी विषमचारी न

यत्र स विषमचारिनक्षत्रः तथा कटुको ऽतिशीतोष्णसद्भावात् बहूदकश्च दीर्घत्वं प्राकृतत्वा त्तमेवंविधमाहु लक्षणतो ब्रुवते तद्विदः संवत्सरं चंद्रं चंद्रचारल
क्षणलक्षितत्वादिति ॥ विषम ॥ गाहा विषमवैषम्येण प्रवालं पल्लवाङ्कुर स्तद्दियते येषाते प्रवालिनो वृक्षा इति गम्यते परिणमति प्रवालवत्तालक्षणया
अवस्थया जायंते अथवा प्रवालिनो वृक्षाः परिणमति अंकुरोद्भेदा द्यवस्थां यान्ति तथा अनृतुषु अस्वकाल ददति प्रयच्छन्ति पुष्पफलं यथा चैत्रादिषु कु
सुमादिदायिनोपि स्वरूपेण चूताः माघादिषु पुष्पादि यच्छतीतियथा वर्ष वृष्टि मेघो न सम्यग्वर्षति यत्रेतिगम्यते त माहु लक्षणतः सवत्सरं कार्मण
यस्य स ऋतुसवत्सरः सावनसवत्सरश्चेति पर्यायौ ॥ पुढविगाथा ॥ यत्रलिति गम्यते तथाच यत्रतु सवत्सरे पृथिव्युदकयो. समाधुर्यस्निग्धतालक्षण पुष्प
फलानांच ददा त्यादित्यः तया स्वभावत्वा त्तथाविधोदकाभावेपीतिभाव. अतएवा ल्पेनापि वर्षेण सम्यग्यथाभिमत निष्पद्यते सस्य शाल्यादिधान्य स ल

क्खसंवच्छरंचदं ॥ २ ॥ विसमंपवालिणोपरि णमंतिअणदूसुदेंतिपुप्फफल वासंणसम्मवासइ तमाहुसंवच्छरं
कम्मं ॥ ३ ॥ पुढविदगाणंतुरसं पुप्फफलाणतुदेंतिआइच्चो अप्पेणविवासेणं सम्मंनिप्पज्जएसासं ॥ ४ ॥ आ

त्त्रहोय अतिशीत अतिउष्ण घणुं पाणी बरसे जेबर्षमां ते चद्रसंबत्सर कहिये चंद्रचार लक्षणथी लक्षित पणामांटे ॥ २ ॥ विषमरीते एतले रितुवि
ना वृक्षने पत्र नवीन आवे काल विनाज वृक्षने फल फूल आवे तिम वरसात सम्यग् रीते नवरसे ते कर्मसबत्सर कहिये अथवा रितुसंबत्सर सवन
सबत्सर कहिये बेतेहना पर्यायछे ॥ ३ ॥ जे सबत्सरने विषे पाणीनो रस माधुर्य स्निग्धता लिएहोय फूलफल काले वृक्ष आपे ते आदित्यसबत्स
र कहिये थोडा पाणी वरसवाथी पिण भलीरीते धान्य ऊपजे ॥ ४ ॥ सूर्य तेजथी क्षण ते मुहूर्त्त लव ते ४९ स्वासोत्स्वास प्रमाण दिवसते अहोरा

चणात आदित्यसंवत्सरउच्यतइति शेषइति ॥ आइगाथा ॥ आदित्यतेजसा तप्ताः पृथिव्यादितो येप्युपचारात् चणादय स्तप्ता इतिमंतव्यं तत्र चणो मुहू र्त्तः लव एकोनपचाशदुच्छासप्रमाणो दिवसो ऽहोरात्र ऋतुर्मासद्वयप्रमाणः परिणमति अतिक्रामंति यत्रेतिगम्यते यत्र पूरयति वायूत्खातरेणुभिः स्थला नि भूमिप्रदेशविशेषान् त माहु राचार्या लचणतः संवत्सरमभिवर्द्धित ॥ जाणेत्ति ॥ त्वमपि शिष्य त तथैव जानीहीति सवत्सरव्याख्यानमिद तत्वार्थं टीकाद्यनुसारेणप्रायोलिखितमिति अनंतर सवत्सरउक्तः सचकालः कालात्ययेच शरीरिणां शरीरान्निर्गमो भवती त्यत स्तन्मार्गं निरूपयन्नाह ॥ पचवि हेत्यादि ॥ व्यक्त किन्तु निर्याण मरणकाले शरीरिणः शरीरान्निर्गम स्तस्यमार्गो निर्याणमार्गः पादादिक स्तत्र ॥ पाएहि ॥ पादाभ्या मार्गभूताभ्यां कार णतापन्नाभ्या जीव शरीरा न्निर्यातीतिशेष एव मूरुभ्यामित्यादावपि अथ क्रमेणा स्य निर्याणमार्गस्य फलमाह पादाभ्या शरीरा न्निर्यान् जीवो ॥ निर

इच्चूतेयतविया खणलवदिवसाउऊपरिणमंति पूरेइयथलयाइं तमाहुअभिवड्डियंजाण ॥ ५ ॥ पंचविहे जीवस्स णिज्जाणमग्गे पण्णत्ते तजहा पाएहिं उरूहिं उरेणं सिरेण सव्वंगेहिं । पाएहिं णिज्जाणमाणे निरयगामी भवइ उरूहिंणिज्जाणमाणे तिरियगामी भवइ उरेणंणिज्जाणमाणे मणुयगामीभवइ सिरेणंणिज्जाणमाणे

त्रि रितु ते बेमासप्रमाण तेपरगमे जणाय जे पवन रेणुथी खाडो पूरे ते अभिवर्द्धितसवत्सर कहिये आचार्यना कहवाथी तूपिण जाण हेशिष्य ५ ॥ पांच प्रकारे जीवने कायामाथी निकलवानो मार्ग कह्यो ते कहेछे पगथी १ । जंघाथी २ । हृदयथी ३ । मस्तकथी ४ । सर्वांगथी ५ ॥ पगथी नीकल तो जीव नरकमा जाय १ । जघाथी नीकलतो जीव तिर्यंचगामी होय २ । हृदयथी नीकलतो जीव मनुष्य गतिगामी थाय ३ । मस्तकथी नीकलतो

ठा० ॥
०१ ॥

यंगामित्ति ॥ प्राकृतत्वा दनुस्वारइति निरयगामी भवति एव मम्यत्रापि सर्वांणिच तान्यंगानिच सर्वाङ्गानि तै र्निर्यान् सिद्धिगतिः पर्यवसानं संसरणप र्यन्तो यस्य स सिद्धिगतिपर्यवसान' प्रज्ञप्तइति निर्याणचा युष्कच्छेदने भवतीति च्छेदन प्ररूपयन्नाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ कण्ठ्य केवल ॥ उप्पत्ति ॥ उत्पा दो देवत्वादिपर्यायातरस्य तेन च्छेदो जीवादिद्रव्यस्य विभाग उत्पाद च्छेदन तथा ॥ वियत्ति ॥ व्ययो विगमो मानुषत्वादिपर्यायस्य तेन च्छेदनं जीवादे रेवेति व्यवच्छेदनं तथा बंधनस्य जीवापेच्चया कर्म्मण. स्कन्धापेच्चयातु सम्बन्धस्य च्छेदन विनाशनं बन्धनच्छेदनमिति तथा तस्यैव प्रदेशतो निर्विभागा वयवतो बुद्ध्या च्छेदन विभजन प्रदेशच्छेदन तथा जीवादेरेव द्रव्यस्य द्विधाकरण द्विधाकारः सएव च्छेदन द्विधाकारच्छेदन उपलचणं चैतत् त्रिधाकारा दीना मनेनच देशत श्छेदन सुत्त अथवा त्यादस्यो त्पत्ते श्छेदन विरहो यथा नरकगतौ द्वादशमुहूर्त्ता व्यवच्छेदन मुद्वर्त्तनाविरहः सोप्येव बधनविरहो यथो पशान्तमोहस्य सप्तविधकर्मबधनापेच्चया प्रदेशच्छेदन प्रदेशविरहो यथा विसयोजिताना मनतानुबध्यादिकर्मप्रदेशाना तथा द्वे धारे यस्य तद्विधा रं तच्च तच्छेदनच द्विधाच्छेदन मुपलचणत्वा दस्यैकधाराद्यपि दृश्य तच्च चुरखड्गचक्राद्ये तच्चच्छेदनशब्दसामान्या दिहोपात्तमिति प्रदेशच्छेदनस्थाने क्वचित्

देवगामी भवइ सव्वंगेहि णिज्जायमाणे सिद्धिगतिपज्जवसाणे पसत्ते। पंचविहे च्छेयणे पसत्ते तंजहा उप्पा यच्छेयणे वियच्छेयणे बंधणच्छेयणे पएसच्छेयणे दोधारच्छेयणे । पंचविहे आणंतरिए पसत्ते तंजहा उप्पा

जीव देवगामी होय ४ । सर्वांगथी नीकलतो जीव सिद्धिगति पर्यवसान होय ५ ॥ पांच प्रकारे आयुनो छेदवुं कह्यो तेकहेछे देवनारकीमा उपजवो ते उत्पादच्छेदन १ । मानुषटली देव थाय मनुष्यनो पर्यायटले फिरे २ । जीवने कर्मसंबधनुं छेदवो ते बंधन छेदन ३ । जीवना प्रदेश छे ४ । जीव

॥ पंथच्छेयणेत्ति ॥ पथ्यते तत्र पथिच्छेदनं मार्गच्छेदनं मार्गातिक्रमणमित्यर्थः च्छेदनस्य विपर्यय आनन्तर्यमिति तदाह ॥ पंचविहेत्यादि ॥ आनन्तर्यं सा तत्य मच्छेदन मविरहइत्यर्थ स्तत्रो त्पादस्य यथा निरयगतौ जीवाना मुत्कर्षतो ऽसख्येयाः समया एवं व्ययस्यापि प्रदेशानां समयानाञ्च तत्प्रतीतमेव अवि वक्षितोत्पादव्ययादिविशेषण मानंतर्यमात्र सामान्या नन्तर्यं श्रामण्यस्यवा आकर्षविरहेणा नन्तर्यं श्रामण्यानन्तर्य मिति बहुजीवापेक्षयावा श्रामण्य प्रतिपत्त्या नन्तर्यं त्तच्चा ष्टौ समयाइति अनन्तरसूत्रे समयप्रदेशाना मानन्तर्यमुक्त न्तेचा नन्ता इत्यनन्तकमेवप्ररूपयन्नाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं प्रती तार्थं नवरं नाम्ना अनतक नामानन्तकं अनतकमिति यस्य नाम यथा समयभाषया वस्त्रमिति स्थापनैव स्थापनयावा अनतक स्थापनानतक मनतकमि ति कल्पनया चादिन्यासः ज्ञशरीरादिव्यतिरिक्त द्रव्याणामण ादीना गणनीयाना मनंतक द्रव्यानन्तक द्रव्यानन्तकं गणना संख्यान तल्लक्षण मनंतक म विवक्षिता णादिसख्येयविषयः सख्याविशेषो गणना नतक प्रदेशाना सख्येयाना मनतकं प्रदेशानन्तकमिति एकत एकेना शेना यामलक्षणेना नन्तक मे

यणंतरिए वियणतरिए पएसाणंतरिए समयाणंतरिए सामणाणंतरिए। पंचविहे अणंतए पन्नत्ते तंजहा णामा णंतए ठवणाणंतए दव्वाणंतए गणणाणंतए पएसाणतए। अहवा पंचविहे अणंतए पन्नत्ते तंजहा एगतुणंत

अने कर्मने पृथक् करे ते द्विधाछेदन ५॥ पांच प्रकारे अनंतर्य आंतरा रहित पणुं कह्यो तेकहेछे उत्पादनु निरंतर जीवने उत्कृष्टो असंख्यसमय वि रह नहीं १। मनुष्यगत्यादि पर्यायनो अच्छेद २। प्रदेशनु निरतर पणुं ३। समयनुं अनंतर पणु ४। सामान्यथी सर्वजीवनुं अनंतर ८ समय ५॥ पांच प्रकारे अनतो कह्यो तेकहेछे नामथी अनतो वस्त्रजिम वस्त्रनीपरे १। स्थापना अनत २। द्रव्यानत ३। गणवानुं अनंत ४। प्रदेशानंत ५॥

॥ कतो नतन मेतत्प्रोक्तं चेत्रं द्विधा आयामविस्ताराभ्या मनंतक द्विधा ऽनंतक प्रतरचेत्रं चेत्रस्य यो रुचकापेक्षया पूर्वाद्यन्यतरदिग्लचणो देश स्तस्य वि
स्तारो विष्कंभ स्तस्य प्रदेशापेक्षया ऽनतक देशविस्तारानंतक सर्वाकाशस्तु चतुर्थं शाश्वत च तदनतकाच शाश्वतानतक मनाद्यपर्यवसित य ज्जीवादि द्र
२॥ व्य मनंतसमयस्थितिकत्वा दिति एवभूतार्थपरिच्छेदो ज्ञानाद्भवतीति ज्ञानस्वरूपनिरूपणायाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ पचेति पचसख्या विधा भेदा यस्य त
त्पचविध ज्ञाति र्ज्ञानमिति भावसाधनः सविदित्यर्थः ज्ञायतेवा अनेना स्मादिति ज्ञान तदावरणस्य चयः चयोपशमोवा ज्ञायतेवा अस्मिन्निति ज्ञान मा
त्मा तदावरणचयचयोपशमपरिणामयुक्तो जानातीतिवा ज्ञानं तदेव स्वविषयग्रहणस्वरूपत्वादिति प्रज्ञप्तं प्ररूपित मर्थत स्तीर्थकरैः सूत्रतो गणधरै रुक्त
च अत्थभासइअरहा सुत्तगथतिगणहरानिउण सासणस्सहियठ्ठाए तओसुत्तपवत्तइत्ति ॥ १ ॥ अथवा प्राज्ञा त्तीर्थकरात् प्राज्ञैर्वा प्रज्ञयावा आप्त प्राप्त
मात्तवा प्राज्ञाप्तं प्रज्ञाप्तवा तद्यथा अर्थाभिमुखो ऽविपर्ययरूपत्वा न्नियतो सशयरूपत्वा द्बोधः सवेदन मभिनिबोधः सएव स्वार्थिकप्रत्ययोपादाना दाभि
निबोधिकं अभिनिबोधेन वा भव तेनवा निर्वृत्त तन्मयवा तत्प्रयोजन वेत्याभिनिबोधिक अभिनिबुध्यतेवा तत्कर्मभूत मित्याभिनिबोधिक मवग्रहादिरप मति
ज्ञानमेव तस्य स्वसविदितरूपत्वा दभेदोपचारा दित्यर्थः अभिनिबुध्यतेवा अनेना स्मादस्मिन्वेत्याभिनिबोधिक तदावरणकर्मचयोपशमइतिभावार्थः आत्मैववा

ए दुहउणंतए देसवित्थाराणतए सव्ववित्थाराणंतए सासयाणंतए । पचविहेणाणे पन्नत्ते तंजहा आभिनिबोहि

अथवा पाच प्रकारे अनंतो कह्यो तेकहेछे एक अनंतो आयाम लक्षण एक श्रेणि रूप १ । बे प्रकारे आयाम विस्तार पणे पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्त
र २ । देश विस्तारानत पूर्वादि एक दिशि अनतप्रदेशात्मक ३ । सर्व विस्तारनु अनत ते सर्वाकाशरूप ४ । शास्वतानत ते अनादि अनतरूप ५ ॥

भिनिबोधोपयोगपरिणामानन्यत्वा दभिनिबुध्यत इत्याभिनिबोधिकं तच्च तज्ज्ञानंचे त्याभिनिबोधिकज्ञानमिति आहच अत्थाभिमुहोनियओ बोधोजोसो मओअभिनिबोहो सोचेवाभिणिबोहिय मह्वजहोजोगमाजोज्जा ॥ १ ॥ ततेणतओतमिय सोणाभिनिबुज्झएतओवायति ॥ तथा श्रूयतइति श्रुतं शब्दएव भावश्रुतकारणत्वा त्कारणेकार्योपचारादितिभावार्थः श्रूयतेवा अनेनास्मा दस्मिन्वेति श्रुतं तदावरणकर्मक्षयोपशमइत्यर्थ आत्मैववा श्रुतोपभोगपरिणामा नन्यत्वात् शृणोतीति श्रुत श्रुतच तज्ज्ञानंचेति श्रुतज्ञान आहच ततेणतओतमिय सुणेइसोवासुयतेणति ॥ तथा अवधीयते अनेना स्मा दस्मिन्वे त्यवधिः अवधीयत इत्यधोधो विस्तृतं परिच्छिद्यते मर्यादयाचेत्यर्थः सचा वधिज्ञानावरणक्षयोपशमएव तदुपयोगहेतुत्वादिति अवधानवा अवधि र्विषयपरि च्छेदनमित्यर्थः अवधि श्चासौ ज्ञानचे त्यवधिज्ञान उक्तंच तेणावधीयतेत मिवापहाणवतोवहोसोय मज्जायाजताए दव्वाइपरोप्परमुणइत्ति ॥ १ ॥ तथा परि. सर्वतोभावे अवन अवो ऽयनंवा अय आयोवा गमन वेदनमिति पर्यायाः परिअवो ऽय आयोवा पर्यव' पर्ययः पर्यायोवा मनसि मनसोवा पर्यवः प र्ययः पर्यायोवा मन.पर्यवो मनःपर्ययो मनःपर्यायोवा सर्वत स्तत्परिच्छेदइत्यर्थः सएव ज्ञान मनःपर्यवज्ञान मन पर्ययज्ञानं मनःपर्यायज्ञानवा अथवा म नसः पर्याया. पर्ययाः पर्यवावा भेदा धर्मा बाह्यवस्त्वालोचनादिप्रकाराइत्यर्थ स्तेषु तेषावा ज्ञान मनःपर्ययज्ञान मनःपर्यायज्ञान मनःपर्यवज्ञान मिति आ हच पज्जवणंपज्जयण पज्जाओवामणमिमणसोवा तस्सवपज्जायादि नाणमणपज्जवणाणमिति ॥ १ ॥ तथा केवल मसहाय मत्यादिज्ञाननिरपेक्षत्वात् शु

यणाणे सुयणाणे उहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे। पंचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते तंजहा आभि

पांच प्रकारे ज्ञान कह्यो तेकहेछे मतिज्ञान १। श्रुतज्ञान २। अवधिज्ञान ३। मन. पर्यायज्ञान ४। केवलज्ञान ५॥ पांच प्रकारे ज्ञानावरणी कर्म

त्वं वा प्रावरणमलकलङ्करहितत्वात् सकलं वा तत्प्रथमतयैवा शेषतदावरणाभावतः संपूर्णोत्पत्ते रसाधारणं वा ऽनन्यसदृशत्वात् अनंतं वा ज्ञेयानन्तत्वा यथा वस्थिताशेषभूतभवद्भाविभावस्वभावावभासीति भावना तच्च ज्ञानं चेति केवलज्ञानं मुक्तंच केवलमेगंसुद्धं सकलमसाहारणंअणंतंच ॥ पागंचनाणसद्दो ना णसमाणाहिगरणोयति ॥ १ ॥ मायइति मनःपर्यायज्ञानेतत्प्ररूपस्यापि दर्शितत्वात् प्र्रच स्वामिकालकारणविषयपरोक्षत्वसाधर्म्यं तदावेव शेषज्ञानस ज्ञाया दादावेव मतिश्रुतज्ञानयोः उपन्यासइति तथाहि यएव मतिज्ञानस्य स्वामी सएव श्रुतज्ञानस्य जत्थमतिनाणंतत्थसुयनाणमितिवचना त्तथा यावा न्मतिज्ञानस्य स्थितिकाल स्तावानेवेतरस्य प्रवाहापेक्षया अतीतादिसर्वएव प्रतिपतितैकजीवापेक्षयातु षट्षष्टिसागरोपमाख्य धिकानीति यथा मतिज्ञानं क्षयोपशमहेतुकं तथा श्रुतज्ञानमपि यथाच मतिज्ञान मोघतः सर्वद्रव्यादिविषय मेवंश्रुतज्ञानमपि यथाचमतिज्ञान परोक्षं एव श्रुतज्ञानमपि तथामतिज्ञा नश्रुतज्ञानभावेवा चश्वादिभावादिति आहच जसामिकालकारण विसयपरोक्खत्तणेहिंतुल्लाइं तब्भावेसेसाइं तेणाईएमइसुयाइंति ॥ १ ॥ मतिपूर्वकत्वा च्छ्रुतस्य विशिष्ट मत्यशरूपत्वाच्च श्रुतस्यादौ मते रुपन्यास इत्युक्तंच मइपुव्वंजेणसुयं तेणाईएमईविसिट्ठोवा मइभेओचेवसुय तोमइसमणतरभणियंति ॥ १ तथा कालविपर्ययस्वामिलाभसाधर्म्यो न्मतिज्ञानश्रुतज्ञानानतर मवधिज्ञानस्योपन्यास स्तथाहि यावानेव मतिश्रुतज्ञानयोःस्थितिकालः प्रवाहापेक्षया प्रति पतितैकसत्वाधारापेक्षयाच तावानेवा वधिज्ञानस्यापि तथा यथैव मतिज्ञानश्रुतज्ञानयो विपर्ययज्ञाने भवत एव मिदमपि मिथ्यादृष्टे र्विभङ्गज्ञानंभवतो ति तथा यएव तयोः स्वामी सएवा स्यापि भवतीति तथा विभङ्गज्ञानिन स्त्रिदशादेः सम्यग्दर्शनावाप्तौ युगपदेव ज्ञानत्रयलाभसम्भवइति उक्तंच काल विवज्जयसामि त्तलाहसाहम्मओवहीतत्तोत्ति ॥ तथा छद्मस्थविषयभावाध्यवत्वसाधर्म्या दवधिज्ञानानतरं मनःपर्यवज्ञानस्यो पन्यास स्तथाहि यथा व धिज्ञान छद्मस्थस्य भवति एव मनःपर्यायज्ञानमपि तथा यथा वधिज्ञान रूपिद्रव्यविषयमेव मेतदपि तथा यथा वधिज्ञानं क्षयोपशमिके भावे तथेदमपि

तथा यथा वधिज्ञानं प्रत्यक्ष तथेदमपीति उक्तञ्च माणसमेत्तोछउम त्थविसयभावादिसामन्नत्तत्ति ॥ तथा मनःपर्यायज्ञानानतर केवलज्ञानोपन्यास स्त स्य सकलज्ञानोत्तमत्वा त्तथा अप्रमत्तयतिस्वामिसाधर्म्या त्तथाहि यथा मनःपर्यायज्ञान मुत्तमयतेरेव भवति एव मिदमपि तथा अवसानलाभात् योहि सर्वज्ञानानि समासादयति सखल्व तएवेदमाप्नोतीति तथा विपर्ययाभावसाधर्म्या त्तथाहि मनःपर्यायज्ञानं सविपर्यय नभवत्येव केवलमपीति उक्तञ्च अ तेकेवलमुत्तम जइसामित्तवसाणलाभाओ एर्थंचमइसुयाइ परोक्खमियरंचपच्चक्खति ॥ १ ॥ उक्तस्वरूपस्य ज्ञानस्य य दावारक कर्म्म तत्स्वरूपाभिधानाय सूत्र ॥ पचेत्यादि ॥ सुगमच उक्त ज्ञानावरणमिति तत् क्षपणोपायविशेषस्य स्वाध्यायस्य भेदानाह । पचविहेत्यादि ॥ सुगम नवरं शोभन मामर्यादया ऽध्य यन श्रुतस्या धिक मनुसरणस्वाध्याय तत्र वत्ति शिष्य स्तप्रति गुरोः प्रयोजकभावो वाचनापाठनमित्यर्थः ग्टहीतवाचनेनापि संशयाद्युत्पत्तौ पुनः प्रष्टव्य मिति पूर्वाधीतस्य सूत्रादेः शङ्कितादौ प्रश्नः प्रच्छनेति प्रच्छनाविशोधितस्य सूत्रस्य माभू द्विस्मरणमिति परिवर्त्तनासूत्रस्य गुणन मित्यर्थः सूत्रवदर्थेऽपि स भवति विस्मरण मतः सोपि परिभावनीय इत्यनुप्रेक्षण मनुप्रेक्षा चिन्तनिकेत्यर्थ एव मभ्यस्तश्रुतेन धर्मकथा विधेयेति धर्मस्य श्रुतरूपस्य कथा व्याख्या धर्म

णिबोहियनाणावरणिज्जे जाव केवलनाणावरणिज्जे । पंचविहेसज्झाए प० तं० वायणा पुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा । पंचविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते तंजहा सद्दहणसुद्धे विणयसुद्धे अणुभासणासुद्धे अणुपाल णासुद्धे भावसुद्धे ॥ पंचविहे पडिक्कमणे पन्नत्ते तंजहा आसवदारपडिक्कमणे मिच्छत्तपडिक्कमणे कसाय

कह्यो तेकहैछे मतिज्ञानावरणी १ । यावत् केवल ज्ञानावरणी ५ ॥ पांच प्रकारे सिज्झाय कही ते कहैछे वाचना १ । पृच्छना २ । परिवर्त्तना फरीग

॥ कथेति धर्मकथामंथनिर्मथितमिथ्यात्वभावाश भव्याः शुद्धं प्रत्याख्यानं प्रपद्यंतइति तदाह ॥ पंचविहेत्यादि ॥ प्रतिषेधत आख्यानं मर्यादया कथनं प्रतिज्ञा
न प्रत्याख्यान तत्र ज्ञानेन तथेति प्रत्ययलक्षणेन शुद्धं निरवद्यं ज्ञानशुद्ध अज्ञानाभावेहि तदशुद्धं भवति एव सर्वत्रेह निर्युक्तिगाथा पञ्चक्खाणसव्व न्नुद्दे
सियंजजहिजयाकाले तंजोसद्दहइनरो तजाणसुसद्दहणासुद्ध ॥ १ ॥ विनयशुद्धं यथा किइकम्मस्सविसोहिं पओजएजोअहीणमइरित्त मणवयणकायगुत्तो
तंजाणस्विणयपोसुद्धं ॥ १ ॥ अनुभाषणाशुद्धयथा अणुभासइगुरुवयणं अक्खरपयवजणेहिंपरिसुद्ध पंजलिउडोअभिमुहो तंजाणणुभासणासुद्धं ॥ १ ॥ नव
र गुरुर्भणति ॥ वोसिरतत्ति ॥ शिष्यस्तु ॥ वोसिरामित्ति ॥ अनुपालनाशुद्ध यथा कातारेदुभिक्खे आयंकेवामहइया [महतीत्यर्थ.] समुप्पणे जपालियन
भग्ग तजाणणुपालणासुद्ध ॥ १ ॥ भावशुद्धयथा रोगेणवदोसेणव परिणामेणव [इहलोकाद्याशंसालक्षणेन] नदूसियजतु तखलुपञ्चक्खाण भाववसुद्धमुणे
यव्वंति ॥ १ ॥ अन्यदपि षष्टं ज्ञातशुद्धमिति निर्युक्तावुक्त यदाह पञ्चक्खाणजाणइ कप्पेजजमिहोइकायव्व मूलगुणउत्तरगुणे तंजाणसुजाणसुद्धति ॥ १ ॥
इहतु पचख्यानकानुरोधा नेदमुक्त श्रद्धानशुद्धेनवा सङ्गृहीतत्वात् ज्ञानविशेषत्वात् ज्ञानस्येति प्रत्याख्यानेच कृते कदाचि दतिचारः सम्भवति तनच प्रति
क्रमण कर्त्तव्यमिति प्रतिक्रमण निरूपयन्नाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ प्रतीप क्रमण प्रतिक्रमण एतदुक्तभवति शुभयोगेभ्यो शुभयोगानुक्रान्तस्य शुभेष्वेव गमन
मिति उक्तंच स्वस्थानात्यत्परस्थान प्रमादस्यवशादतः तत्रैवक्रमणभूयः प्रतिक्रमणमुच्यते ॥ १ ॥ क्षायोपशमिकाद्भावा दौदयिकस्यवशगतः ॥ तत्रापिच स

पडिक्कमणे जोगपडिक्कमणे भावपडिक्कमणे । पंचहि ठाणेहि सुत्तं वाएज्जा तंजहा संगहठ्याए उवग्गह

णावु ३ । अनुप्रेक्षा अर्थ चितन ४ । धर्मकथा ५ ॥ पाच प्रकारे पचखाण कह्यो तेकहेछे श्रद्दहणा शुद्ध १ । विनयशुद्ध गुरुने वंदना करी पचखाण

एवार्थं प्रतिकूलगमात्स्मृतइति ॥ २ ॥ इदंच विषयभेदा त्पंचधेति तत्रा अवद्दाराणि प्राणातिपातादीनि तेभ्यः प्रतिक्रमणं निवर्त्तनं पुनरकरणमित्यर्थं आ
अवद्दारप्रतिक्रमण मसंयमप्रतिक्रमणमितिह्रदय मिथ्यात्वप्रतिक्रमणं यदाभोगानाभोगसहसाकारै र्मिथ्यात्वगमन तन्निवृत्ति रेवकषायप्रतिक्रमणं योगप्रतिक्र
मणतु यन्मनोवचनकायव्यापाराणा मशोभनानांव्यावर्त्तनमि त्याश्रवद्दारादिप्रतिक्रमणमेव विवक्षितविशेष भावप्रतिक्रमणमिति आहच मिच्छत्ताइनगच्छ
इ नयगच्छावेइनाणुजाणाइ जमणवइकाएहिंतभणियभावपडिकमणमिति ॥ १ ॥ विशेषविवक्षायातूक्ता एवचत्वारोभेदा यदाह मिच्छत्तपडिक्कमण तहेवअ
सजमेपडिक्कमण कसायाणपडिक्कमण जोगाणयअप्पसत्थाणति ॥ १ ॥ भावप्रतिक्रमणच श्रुतभावितमतेरेव भवतीति श्रुत वाचनीय शिक्षणीयचेत्येतद्दयोपदर्श
नार्थं देसूत्रे॥ पचहीत्यादि सुगमे नवर॥ सुत्तं॥ श्रुत सूत्रमात्र वाचयेत् पाठये त्तत्र सग्रहः शिष्याणां श्रुतोपादान सएवार्थं प्रयोजनं तस्मै सग्रहार्थाय सग्रह
एववार्थो यस्यस सग्रहार्थं स्तद्भावस्तत्ता तया संग्रहार्थतया श्रुतसग्रहो भव त्वेनामिति प्रयोजनेनेतिभाव अथवै तएव मया एवसङ्गृहीता भवन्ति शिष्योक्ता
ता भवतोति संग्रहार्थतया तदसग्रहायेतिभाव एव मुपग्रहार्थतयावा एव ह्येते भक्तपानवस्त्राद्युत्पादनसमर्थतयो पष्टम्भिता भवन्तितिभावः निर्जरार्थाय नि

ठयाए निज्जरठयाए सुत्तेवा मे पज्जवयाए भविस्सइ सुत्तस्सवा अव्वोच्छित्तिणयठयाए। पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं

करे २। अनुज्ञावना शुद्ध गुरुये कह्यां पछी वोसरामीति जाणवो ३। पूर्णपालवो ४। भाव आणवो ते भावशुद्ध ५॥ पांच प्रकारे प्रतिक्रमण कह्यो
तेकहेछे आश्रवद्वारनो रोकवो पडिकमवो अशुभपरिणामथी शुभपरिणाम आणवो १। मिथ्यात्वनु पडिकमवो ते मिथ्यात्वप्रतिक्रमण २। कषायनो
पडिक्कमवो ते कषाय प्रतिक्रमण ३। योग मन वचन कायानो पडिकमवो ते योग प्रतिक्रमण ४। भाव आणी पडि कमवो ते भाव प्रतिक्रमण ५॥

जरणमेव मेकर्मणां भवत्विति श्रुतवा ग्रथो मे मम वाचयतइति गम्यते पर्यवजातं जातिविशेष स्फुटतया भविष्यतीति अव्यवच्छित्त्या नयनं शुतस्य कालांतर प्रापण अव्यवच्छित्तिनयः सएवार्थ स्तस्मै इति ज्ञान तत्वाना परिच्छेदो दर्शन तेषामेव शद्धान चारित्र सदनुष्ठानं व्युद्ग्रहो मिथ्याभिनिवेश स्तस्य तस्माद्वा परेषा विमोचन व्युद्ग्रहविमोचन तदर्थाय तदर्थतयावा ॥ अहत्थेत्ति ॥ यथास्था न्यथावस्थिता न्यथार्थान्वा यथाप्रयोजनान् जीवादी न्यथार्थान्वा यथाद्रव्या न् भावान् पर्यायान् ज्ञास्यामीति कृत्वा इतिहेतोः शिचतइति यथावस्थिताश्च भावा ऊर्द्धलोके सौधर्मादयइति तद्विषयं सूत्रचय तथा धोलोकादी लोके

सिक्खेज्जा तजहा णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए वुग्गहविमोयणठयाए । अहत्थेवा भावे जाणिस्सा मी तिकट्टु । सोहम्मीसाणेसुण कप्पेसु विमाणा पचवन्ना पन्नत्ता तजहा किरहा जाव सुक्किल्ला । सोहम्मी साणेसुणं कप्पेसु विमाणा पचजोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेण पन्नत्ता । बंभलोगलतएसुणं कप्पेसु देवाणं भव धारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पचरयणीउ उड्ढ उच्चत्तेण पन्नत्ता । णेरइयाणं पचवन्ने पंचरसे पोग्गले बंधि

पाच थानके सूत्रनी वाचना देवी कही तेकहेछे शिष्यना सग्रहने अर्थे भणावाथी शिष्यथाय १ । उपग्रहने अर्थे भणावाथी शिष्यभक्त पानवस्त्र पा त्र आणवा समर्थ थासे २ । कर्म निर्जराने अर्थ ३ । सूत्र माहरे भणावते पर्याप्त स्पष्ट थास्ये वीसस्यो साभलस्ये ४ । अथवा सूत्र घणा काल लगे परपराथी रहस्ये विच्छेद नथी थास्ये ५ ॥ पाच थानके सूत्र सीखवो तेकहेछे ज्ञानने अर्थ १ । दर्शनने अर्थ २ । चारित्रने अर्थ ३ । व्युद्ग्रह मिथ्या त्वाभिनिवेश ते परनो मुकाववाने अर्थ ४ । यथार्थ भावपदार्थ जाणवाने अर्थ ५ ॥ सौधर्म ईशान देवलोकमा विमान पाच वर्णना कह्या कृष्ण

नारकादय श्चतुर्विंशतिरिति तद्गतां चतुर्विंशतिसूत्रीं तथा तिर्यग्लोके जंबूद्वीपादयइति तद्गतवस्तुविषयं सूत्रचतुष्टय माह सर्वं ख्येतानि सुगमानि नवरं ॥ बंधिसुत्ति ॥ शरीरादितयेति दक्षिणेनेति भरते ॥ समप्पेंतित्ति ॥ समाप्नुवति उत्तरेणेति ऐरवतइति पूर्वंतरसूत्रे भरतवक्तव्यतोक्तेति तत्प्रस्तावा त्तदुत्पन्नतो

सुवा बधंतिवा बंधिस्संतिवा तंजहा किरहे जाव सुक्किल्ले । तित्ते जाव मधुरे । एवं जाव वेमाणिया । जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्सदाहिणेणं गगामहाणदिं पचमहाणदीउसमप्पेंति तंजहा जउणा सरऊ ञ्यादी कोसी मही जंबूमंदरस्स दाहिणेण सिंधुमहानदीं पचमहाणईउ समप्पेंति तंजहा सद्दू ञावितत्थी वत्रासा एरावई चदन्नागा । जबूमंदरउत्तरेण रत्तमहानइ पचमहाणईउ समप्पेंति तजहा किरहा महाकिरहा नीला महानीला महातीरा । जबूमंदरउत्तरेणं रत्तावइंमहाणदिं पच महाणईउ समप्पेंति इदा इंदसेणा सुसेणा वारि

यावत् सपेद ५ ॥ सौधर्म ईशान देवलोकमां विमान पांचसे योजन ऊंचा ऊंचपणे कह्या ॥ ब्रह्म देवलोक लांतक देवलोकमां देवताने भवधारणीय शरीर उत्कष्ट पाच हाथनो कह्यो ५ ॥ नारकीने पांचवर्ण पांचरसना पुद्गल बांध्याळे बांधेळे बाधस्ये ते कहेळे कृष्ण यावत् स्वेत ॥ तीखा यावत् मधुर एम यावत् वैमानिक लगे कहवा ॥ जबूद्वीपमा मेरु पर्वतथी दक्षिण दिशि गगा महानदीमां पाच मोटी नदी ञलेळे ते कहेळे जमुना १ । सरजू २ । आदी ३ । कौशी ४ । मही ५ ॥ जबूद्वीपमा मेरुथी दक्षिणदिशि सिधु महानदीमां पाच मोटीनदी आवी ञलेळे तेकहेळे सद्रु १ । विसा २ । ञावितस्ता ३ । ऐरावती ४ । चंद्रञागा ५ ॥ जबूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशि रक्ता मोटी नदीमां पाच मोटी नदी आवी मलेळे ते कहेळे कृष्णा १ । महाकृ

र्थकरसूत्रं सुगमं नवरं कुमाराणां मराजभावेन वासः कुमारवास' ॥ तंप्रजज्ञावसित्तत्ति ॥ अच्युस्येति तथा भरतादिच्चेत्रप्रस्तावात् चेत्रभूतचमरचचादिवक्त
व्यताभिधायिसूत्रद्वयं चमरचचारत्नप्रभापृथिव्यां चमरस्या सुरकुमारराजस्येति सुधर्मा सभा यस्यां मध्या उपपातसभा यस्या सुत्पद्यते अभिषेकसभा यस्यां
राज्याभिषेकेणा भिषिच्यते अलंकारिका यस्यां मलंक्रियते व्यवसायसभा यत्र पुस्तकवाचनतो व्यवसाय तत्वनिश्चयं करोति एताश्च यथाक्रमं मुत्तरपूर्वस्यां
दृष्टव्याइति देवनिवासाधिकारात् नक्षत्रसूत्रमचत्रादिदेवरूपताच सत्वानां कर्मपुद्गलचयादेरेति चयादिसूत्रषट्कं पुद्गलाश्च विविधपरिणामाइति पुद्गलसूत्रा

सेणा महाभोगा । पच तित्थगरा कुमारवासमज्झेवसित्ता मुंडे जाव पव्वइया तंजहा वासुपुज्जे मल्ली अरिठ
नेमी पासे वीरे । चमरचचाएणं राजधाणीए पंच सभाओ पन्नत्ता तंजहा सभासुहम्मा उववायसभा अभि
सेयसभा आलंकारियसभा ववसायसभा । एगमेगेणइंदठाणे पच सभाओ पन्नत्ताओ तंजहा सभासुहम्मा
जाव ववसायसभा । पच णक्खत्ता पंचतारा पन्नत्ता तजहा धणिठा रोहिणी पुणव्वसू हत्थो विसाहा । जी

रमा २ । नीला ३ ॥ महानीला ४ ॥ महातीरा ५ ॥ जबूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि रक्तवती महानदीमा पाच मोटीनदी आवी मलेछे तेकहेछे इंदा १ ॥
इंद्रसेना २ ॥ सुषेणा ३ ॥ वारिषेणा ४ ॥ महाभोगा ५ ॥ पाच तीर्थंकर कुमार वासमा बसीने घरमा रहीने मुंड थया यावत् दीक्षा लीधी तेकहे
छे १२ वासुपूज्य १ ॥ १९ मल्लीनाथ २ ॥ २२ अरिष्ट नेमिनाथ ३ ॥ २३ पार्श्वनाथ ४ ॥ महावीर २४ ५ ॥ चमरचचा राजधानीमा पाच सभा कही ते
कहेछे सुधर्मा सभा १ ॥ उपपात सभा २ ॥ अभिषेक सभा ३ ॥ अलकार सभा ४ ॥ व्यवसायसभा ५ ॥ एक एक इंद्रना स्थानकमां पाच सभा कही

|| णीति व्याख्याच प्राग्व दध्ययनसमाप्तिंयावत् सुकराचेति पंचस्थानकस्य तृतीयः ॥ इतिश्रीमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानांगविवरणे पंचस्थानकाख्यं पंचम मध्ययनं समाप्त स्रो० १६२५ ॥ ५ ॥ * * * * * ॥

व्याख्यात पचम मध्ययन मधुना संख्याक्रमसबधमेव षट्स्थानकाख्य षष्ठं समारभ्यते अस्यचायमभिसंबध इहा नन्तराध्ययने जीवादिपर्यायप्ररूपणा कृते हापि सैव क्रियत इत्येव संबधस्या स्य चतुरनुयोगद्वारस्ये द मादिसूत्र ॥ छहिंठाणेहीत्यादि ॥ अस्यचाय मभिसबंधः पूर्वसूत्रे पंचगुणरूचाः पुद्गला अनन्ताः

वाणं पंचठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणिंतिवा चिणिस्सिंतिवा तंजहा एगेंदियनिव्वत्तिए जाव पचेंदियनिव्वत्तिए । एवं चिणउवचिणबंधउदी रवेदतहनिज्जराचेव । पंचपएसियाखधा ऋणता पन्नत्ता पंचपएसोगाढा पोग्गला ऋणता पन्नत्ता । जाव पंचगुणलुक्का पोग्गला ऋणंता पन्नत्ता । इति पंचठाण सम्मत्त ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तेकहेछे सुधर्मासभा १ ॥ यावत् व्यवसायसभा ५ ॥ पांच नक्षत्र पांच ताराना कह्या तेकहेछे धनिष्ठा १ ॥ रोहिणी २ ॥ पुनर्वसु ३ ॥ हस्त ४ ॥ विशाखा ५ ॥ जीवने पाच थानके निर्वर्त्तित पुद्गल पापकर्म पणे चिण्या चिणेछे चिणस्ये ते कहेछे एकेंद्री पणाना यावत् पंचेद्री निर्वर्त्तित ५ ॥ इम चिण्या उपचिण्या बध उदीरणा वेदना तिम निर्ज्जरा ५ ॥ पांच प्रदेसिया खंध अनंता कह्या ॥ पाच आकाश प्रदेशोवगाढ पुद्गल अनंता कह्या ॥ पाच गुण लूखा पुद्गल अनंता कह्या ॥ इति पांचमोठाणो संपूर्ण थयो ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

प्रज्ञप्ता इत्युक्ता प्रज्ञापकाशेतेषा मर्थतो ऽर्हंतः सूत्रतो गणधरा गणधराश्च ये गुंणैर्युक्तास्य अनगारस्य गणधरणार्हत्वं भवति तद्युक्ताएवेति तेषां गुणाना मुपदर्श नाय इद मुक्त मित्येव सवभस्या स्य व्याख्या सहिता दिचर्चस्तु प्रतीत एव नवर पड्भिः स्थानै गुंणविशेषैः सपन्नो युक्तो ऽनगारो भिक्षु रर्हतियोग्यो भवति गणंगच्छं धारयितु मर्यादायामिति गम्यते पालयितुंचेत्यर्थः ॥ सड्ढित्ति ॥ श्रद्धावान् अश्रद्धावतोहि स्वयम्मर्यादावर्त्तितया परेषां मर्यादास्थापनायां असमर्थत्वा द्गणधर नर्हत्व मेवसर्वत्र भावनाकार्या पुरुषजातं पुरुषप्रकार इहच षड्भिःस्थानै रित्युक्तापि यदुक्त श्राद्धंपुरुषजातमिति तद्धर्मधर्मवतो रभेदा दन्यथा श्राद्धत्वंसत्यत्व मित्यादि वक्तव्य स्यादिति तथा सत्यं सद्भ्यो जीवेभ्यो हिततया प्रतिज्ञातशूरतयावा एवंभूतोहि पुरुषो गणपालक आदेयश्च स्यादिति २ तथा मेधावि म र्यादया धावतो त्येव शीलमिति निरुक्तिवशादेवभूतोहि गणस्य मर्यादा प्रवर्त्तको भवति अथवा मेधाश्रुतग्रहणशक्ति स्तद्व देवंभूतोहि श्रुत मन्यतो झटि ति गृहीत्वा शिष्याध्यापने समर्थोभवतीति ३ तथा बहु प्रभूत श्रुतं सूत्रार्थरूप यस्य तत्तथा अन्यथाहि गणानुपकारी स्या दुक्तंच सीसाणकुणइकहसो त हाविहोहदिनाणमाईण अहियाहियसंपत्ती संसारुच्छेयणपरम ॥ १ ॥ तथा कहसोजयउअगीउ कहवाकुणओअगीयनिस्साए कहवाकरेउगच्छ सबालवु

छहिंठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ गणं धारित्तए तंजहा सड्ढिपुरिसजाए सच्चेपुरिसजाए मेहावीपुरिस जाए बहुस्सुएपुरिसजाए सत्तिमं अप्पाहिगरणे । छहिंठाणेहिं निग्गथेनिग्गथिंगिण्हमाणेवा अवलबमा

छस्थानकसहित अणगार अरिहंतना गणनें साधुने साध्वीने श्रावक श्राविकाने धारें ते कहेछे । श्रद्धावंत पुरुष १ । सत्यवंत पुरुष २ । बुद्धिवंत पु रुष ३ । बहुश्रुत पुरुष ४ । सत्ववत ५ । अलपाधिकरण क्रोधादिरहित रीसालुनही ६ ॥ छस्थानके साधु साधवीने ग्रहतोथको अवलंबनलेतो अतिक्रमे

डुाउलसोउंत्ति ॥ ४ ॥ तथा शक्तिम च्छरीरमंत्रतंत्रपरिवारादिसामर्थ्ययुक्तं तद्विविधा स्वापत्सु गणस्या त्मन श्च निस्तारकं भवतीति ५ तथा ॥ अप्पाहिगर णेत्ति ॥ अल्प मविद्यमान मधिकरण सपक्षपरपक्षविषयो विग्रहो यस्य तत्तथा तद्वानुवर्त्तकतया गणस्या हानिकारक भवतीति ६ ग्रथांतरेत्विव गणिन: स्वरूप मुक्त सुत्तत्थेनिम्माउ पियदढधम्मोणुवत्तणाकुसलो जाईकुलसपन्नो गभीरोलद्धिमतीय ॥ १ ॥ सगहुवग्गहनिरश्रो कयकरणोपवयणाणुरागीय एव विह्रीयभणिओ गणसामीजिणवंरिदेहि ॥२॥ अनन्तरं गणधरगुणा उक्ता गणधरकृतमर्यादयाच वर्त्तमानो निर्ग्रंथो ना ज्ञा मतिक्रामती त्येतत् सूत्रद्वयमाह तत्र प्रथमं पञ्चस्थानके व्याख्यातमेव तथापि किंचि दुच्यते गृह्णन् ग्रीवादा ववलम्बयन् हस्तवस्त्रांचलादौ गृहीत्वा नातिक्रामत्या ज्ञा मितिगम्यते चित्त चित्तां शोकेन दृप्तचित्तां हर्षेण यक्षाविष्टां देवताधिष्टितां उन्मादप्राप्तां वातादिना उपसर्गप्राप्तां तिर्यग्मनुष्यादिना नीयमानां साधिकरणा कलहयतीं इतिषड्भि: स्थानै वंक्ष्यमाणै र्निर्ग्रंथा: साधवो निर्ग्रंथ्यश्च साध्व्य, स्तथाविधनिर्ग्रंथाभावे मिश्रा: सत: साधर्मिकं समानधर्मयुक्तं साधुमित्यर्थ: ॥ समायरमाणत्ति॥ समाद्रियमाणा: साधर्मिक प्रत्यादरकुर्वाणा: समाचरतीवा उत्पाटनादिव्यवहारविषयीकुर्वंतो नातिक्रामंत्या ज्ञां स्त्रीभि: सह विहारस्वाध्यायावस्थानादि

णेवा नाइक्कमइ तंजहा खित्तचित्तं दित्तचित्तं जक्खाइठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं । छहिंठाणेहिं निग्गंथानिग्गंथीउय साहमियं कालगयं समायरमाणा णाइक्कमइ तं० अंतोहितोवाहिणीणेमाणा वाहिहिं

नही तेकहेछे शोकें व्याप्त चित्त १ । हर्षे व्याप्त चित्त २ । यक्षाधिष्टित ३ । उन्मादप्राप्त कामोद्रेक ४ । उपसर्गपामी कोई लेईजाइ ५ । अधिकरणसहि त क्रोधेहठमां आवी ६ ॥ छस्थानके साधुसाधवी साधर्मी समान धर्मी जेसाधुतेप्रते काल प्राप्तजाणी समाचरतां उपाडवा- प्रमुख व्यवहार साचव

न कार्यं मित्यादिरूपां पुष्टालंबनत्वादिति ॥ अंतोहिंतोवेत्ति॥ गृहादे मंध्या द्वहि नयंती वा शब्दा विकल्पार्थाः॥ वाहिहितोवत्ति ॥ गृहादे र्वहिस्तान् निर्व हि रत्यत बहि र्वहिस्ता त्तरां नयन्त उपेक्षमाणाइति उपेक्षा द्विविधा व्यापारोपेक्षा अव्यापारोपेक्षाच तत्र व्यापारोपेक्षया त मुपेक्षमाणा स्तद्विषयाया च्छेदनबधनादिकायां समयप्रसिद्धक्रियाया व्याप्रियमाणा इत्यर्थः अव्यापारोपेक्षयाच मृतकस्वजनादिभि स्तसत्क्रियमाण मुपेक्षमाणा स्तत्रो दासीना इत्यर्थं स्तथा ॥ उवासमाणेत्ति ॥ पाठांतरेण ॥ भयमाणत्तिवा ॥ रात्रिजागरणा त्तदुपासन विदधाना ॥ उवसामेमाणत्ति ॥ पाठातरे त क्षुद्रव्यतराधिष्ठितं सम यप्रसिद्धविधिनो पशमयंतइति तथा ४ ॥ अणुस्रवेमाणेत्ति ॥ तत् स्वजनादीं स्तत्परिष्ठापनाया मनुज्ञापयंतः ५॥ तुसिणीएत्ति ॥ तूष्णीभावेन सप्रव्रजन्त स्तत्परिष्टापनार्थं मागमानुज्ञातत्वा त्सर्वं मिद माज्ञातिक्रमाय नभवतीति छाद्मस्थिक श्चाय व्यवहारः प्रायउक्तइति छद्मस्थप्रस्तावा दिदमाह ॥ छहीत्यादि॥ इह छद्मस्थो विशिष्टावध्यादिविकलो नत्व केवली यतो यद्यपि धर्माधर्माकाशान्यशरीरं जीवंच परमावधि र्न जानाति तथापि परमाणुशब्दो जानात्येव रू

तोवाणिव्वाहिंणीणेमाणा उवेहमाणावा उवासमाणावा त्र्प्रणुन्नवेमाणावा तुसिणीएवासंपव्वयमाणा । छठा णाइं छउमत्थे सव्वन्नावेणं णयाणइ णपासइ तंजहा धम्मत्थिकाय मधम्मत्थिगायं त्र्प्रागासं जीवमसरीरप

तां अतिक्रमे नथी तेकहेछे माहिथी वाहिर काढता १ । वाहिरथी वा घणेरो वाहिर लेतां २ । उपेक्षादिछेदन बंधनादि करतां ३ । रात्रि जा गरणादि उपासना सेवा करता ४ । तेहना स्वजनादिकने परठवानो जणावबु ५ ॥ अणवोल्यो परठवा जाय ए छदमस्थनो व्यवहारछे ६ । छथा नके छदमस्थ सर्व भावने नजाणे नदेखे तेकहेछे धर्मास्तिकाय १ । अधर्मास्तिकाय २ । आकाशास्तिकाय ३ । जीव शरीर रहित ४ । परमाणु पुद्ग

पिला त्तयो रूपिविषयला ह्यावधेरिति एतच्च सूत्रं सविपर्ययं प्राग्व्याख्यातप्रायमेवेति छद्मस्थस्य धर्मास्तिकायादिषु ज्ञानशक्ति र्नास्ती त्युक्त मधुना सर्व जीवानां येषु यथा शक्ति र्नास्ति तानि तथा आह ॥ छद्दीत्यादि ॥ षट्सु स्थानेषु सर्वजीवानां संसारिमुक्तस्वरूपाणां नास्ति ऋद्धि र्विभूति रितीति एवं प्र कारा यथा जीवादि रजीवादिः क्रियते वा विकल्पे एव द्युतिः प्रेमा माहात्म्यमित्यर्थः यावत्कारणात् जसेइवा वलेइवा वीरिएवा पुरिसक्कारपरक्कमेइवत्ति इदंच व्याख्यात मनेकशइति न व्याख्यायते तद्यथा ॥ जीववेत्यादि ॥ जीवस्याजीवस्य करणतायां जीव मजीवं कर्तुं मित्यर्थः १ ॥ अजीवस्यवा जीवस्य क रणतायां२ ॥ एगसमएणंवत्ति ॥ युगपद्वा द्वेभाषे सत्यासत्यादिके भाषितुमिति ३ स्वयक्कतवा कर्म्म वेदयामिवा मा वा वेदयामी त्यनेच्छावशे वेदने ऽवेदने वा नास्ति वलमिति प्रक्रमो ऽय मभिप्रायो नह्ी च्छावशतः प्राणिनां कर्मणः चपणाचपणी स्तो बाहुबलिनइवा पिल नाभोगनिर्वर्त्तिते ते भवतो ऽन्यत्र

छिंदत्तं परमाणुपोग्गलं सद्दं । एयाणिचेव उप्पन्नणाणदंसणधरे अरहाजिणे जाव सव्वन्नावेणं जाणइ पासइ तंजहा धम्मत्थिगायं जाव सद्दं । छहिंठाणेहि सव्वजीवाण णत्थि इड्ढीतिवा जाव परक्कमेतिवा तं० जीवंवा अजीवंकरणयाए अजीवंवाजीवंकरणयाए एगसएणंवादोभासाउभासित्तए सयकडंवाकम्मंवेएमिवामावावे

ल ५ । शब्द ६ ॥ छस्थानक उपनां छे ज्ञान दर्शन जेहने अरिहंत जिनकेवली यावत् सर्वज्ञावे जाणे देखे तेकहेछे धर्मास्तिकाय यावत् शब्द ॥ छ थानके सर्व जीवने नथी एहवी रिद्धिनाधणी दुगति तेज यावत् पराक्रम नथी तेकहेछे जीवने अजीव करवानुं १ । अथवा अजीवने जीवकरवानुं वलनथी २ । एक समये वे भाषा वोलवाने समर्थ थाय ३ । पोताना कीधा कर्म वेदुं अथवा नथी वेदु ४ । परमाणुपुद्गलप्रति छेदवा समर्थ नही

केवलिसमुद्घातादिति ४ परमाणुपुद्गलंवा च्छेत्तु खड्गादिना द्विधीकृत्य भेत्तुवा सूच्यादिना विद्धा च्छेदादौ परमाणुत्वहाने रग्निकायेनवा समवदग्धम तिसूक्ष्मत्वेना दाह्यत्वा त्तस्येति ५ बहिस्ताद्वा लोकान्तगमनताया ६ अलोकस्यापि लोकतापत्तेरिति जीव मजीव कर्तुं मित्युक्त मतो जीवपदार्थस्यैव बहु धा प्ररूपणाय ॥ छजीवनिकायेत्यादि ॥ सूत्रप्रपञ्चमाह सुगम श्चाय नवर जीवानानिकायो राशयो जीवनिकाया इहच जीवनिकाया नभिधाय यत् पृथिवीकायिकादिशब्दै र्निकायवंत उक्ता स्त त्तेषा मभेदोपदर्शनार्थं नह्ये कान्तेन समुदायात् समुदायिनो व्यतिरिच्यते व्यतिरेकेण प्रतीयमानत्वादिति तारकाकाराः ग्रहा स्तारकग्रहा लोकेहि नवग्रहा. प्रसिद्धा स्तत्रच चद्रादित्यराहूणा मतारकाकारत्वा दन्ये षट् तथोक्ता इति ॥ सुक्केत्ति ॥ शुक्रः ॥ वहस्स इत्ति ॥ वृहस्पतिः अगारको मगलः ॥ सनिच्चरेत्ति ॥ शनैश्चरइति संसारसमापन्नकजीवसूत्रे पृथिवीकायिकादयो जीवतयो क्ताः पूर्वसूत्रेतु निकायत्वेने

एमि परमाणुपोग्गलंवाछिदित्तएवाभिंदित्तएवा अगणिकाएणवासमोदहित्तए वहियावालोगंतागमणयाए । छजीवनिकाया पन्नत्ता तजहा पुढविकाइया जाव तसकाइया । छ तारगहा प० तं० सुक्के बुधे वहस्सई अगारए सणिच्चरे केऊ । छव्विहासंसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा पुढविकाइया जाव तसकाइया ।

भेदवा समर्थ नही अगनिकाये करी वालवा समर्थ नही ५ ॥ बाहिर लोकना अंतथी अलोकमां जावा समर्थ नही ६ ॥ छ जीवना निकाय ते जेह मा घणां जीवछे तेकहैछे पृथिवीकाय यावत् त्रसकाय ॥ छ ताराॆरूप ग्रहछे तेकहैछे शुक्र १ । बुध २ । वृहस्पति ३ । मंगल ४ । शनैश्चर ५ । केतु ६ ॥ छ प्रकारे संसार समापन्न जीव कह्या तेकहैछे पृथिवीकाय यावत् त्रसकाय ॥ पृथिवी कायना जीवने छगति छ आगति कही तेकहैछे । पृथिवीका

ति विशेषा अपुनरुक्ततेति ज्ञानिसूत्रे अज्ञानिन स्त्रिविधा मिथ्यात्वोपहतज्ञाना इंद्रियसूत्रे अनिन्द्रिया अपर्याप्ताः केवलिनः सिद्धाश्चेति शरीरसूत्रे यद्यप्य तरगती कार्म्मणशरीरसभव स्तद्व्यतिरिक्तस्य तैजसशरीरिणो ऽसंभव स्तथाप्ये कतराविवक्षया भेदो व्याख्यातव्य स्तथा अशरीरी सिद्धइति तृणवनस्पति

पुढविकाइया छगइया छआगइया पन्नत्ता तंजहा पुढविकाइए पुढविकाइएसु पुढविकाइएहिंतोवा जाव तसकाइएहिंतोवा गच्छेज्जा। सोचेवणंसेपुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताएवा जाव तसकाइयत्ताएवा गच्छेज्जा । आउकाइया छगइया छआगइया एवंचेव । जाव तसकाइया । छव्विहा सव्व जीवा पन्नत्ता तंजहा आभिणिवोहियणाणी जाव केवलनाणी अन्नाणी । अहवा छव्विहा सव्वजीवा प० तंजहा एगिंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया । अहवा छव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा उरालियसरीरी वेउव्वियसरीरी आहारगसरीरी तेयगसरीरी कम्मगसरीरी असरीरी। छव्विहा तणवणस्सइकाइया प० त०

यनो जीव पृथिवीकायमां उपजतो पृथिवीकायमांथी ऊपजे । यावत् त्रसकायमांथी आवी ऊपजे ॥ तेज ते पृथिवीकायियो पृथिवीकायपणूं छांडतो वीजी पृथिवीकायमा जाय यावत् त्रसकायमा जाय ॥ अप्कायना जीव छगति छ आगतीना कह्या तेकहेछे । एमज यावत् त्रसकाय पणे॥ छ प्रकारे सर्वजीव कह्या तेकहेछे । मति ज्ञानी यावत् केवल ज्ञानी अज्ञानी ॥ अथवा छ प्रकारे सर्वजीव कह्या ते कहेछे । एकेंद्री यावत् पंचेंद्री अनिंद्री सि द्ध ॥ अथवा छ प्रकारे सर्व जीव कह्या तेकहेछे । औदारिक शरीरी १ वैक्रिय शरीरी २ आहारक शरीरी ३ तैजस शरीरी ४ कार्मण शरीरी ५ अ

कायिका बादरा इत्यर्थो मूलबीजा उत्पलकन्दादय इत्यादिव्याख्यातमेव अपरं संमूर्छिमा दग्धभूमीबीजासत्वेपि ये तृणादय उत्पद्यंते यथाधिकृताध्यय नानन्तरं प्ररूपिता जीवा अथतेषामेव पर्यायविशेषा दुर्लभा स्तां स्तथेताह ॥ छठाणाइंइत्यादि ॥ षट्स्थानानि षड्वस्तूनि सर्वजीवानां नेव सुलभानि सुप्रापाणि भवंति अप्रलभ्यानीत्यर्थः न पुन रलभ्यानि केषांचित् जीवानां तल्लाभो पलम्भादिति तद्यथा मानुष्यको मनुष्यसंबधीभवो जन्म नोसुलभइति प्रक्रम आहच नतुपुनरिदमतिदुर्लभ मगाधसंसारजलधिविभ्रष्टं मानुष्यंखद्योतक तडिल्लताविलसितप्रमितमिति ॥ १ ॥ एव मार्ये क्षेत्रे अर्द्धषड्विंश तिजनपदरूपे जन्मोत्पत्ति रिक्षा प्युक्तं सत्यपिचमानुषत्वे दुर्लभतरमार्यभूमिसभवन यस्मिन्धर्माचरण प्रवणत्वमाप्नुयात्प्राणीति ॥ १ ॥ तथासुकुले इक्ष्वा कादिके प्रत्याजाति र्जन्म नो सुलभमिति अनाभिहितम् आर्यक्षेत्रोत्पत्तौ सत्यामपिसत्कुलनसुलभंस्यात् सचरणगुणमणीनां पात्रप्राणीभवतियत्रेति ॥ १ ॥ तथा केवलिप्रज्ञप्तस्य धर्मस्य श्रवणता दुर्लभा यतोऽवाचि सुलहासुरलोयसिरी रयणायरमेहलामहीसुलहा निव्वुइसुहजणियरुई जिणवयणसुईजए दुल हत्ति ॥ १ ॥ श्रुतस्यवा श्रद्धानता दुर्लभा उक्तंच आहच्चसवणलद्धुं सद्धापरमदुल्लहा सोच्चानेयाउयमग्गं बहवेपरिभस्सइत्ति ॥ १ ॥ तथाश्रद्धितस्यवा सामा

अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा समुच्छिमा । छठाणाइं सव्वजीवाणं णसुलभाइं भवंति माणुस्सएभवे आयरिएखेत्तेजम्मं सुकुलेपच्चायाती केवलीपन्नत्तस्सधम्मस्ससवणया सुयस्स वासद्दहणया सद्द

शरीरी ते सिद्ध ६ ॥ छ प्रकारे तृण वनस्पतिकाय कह्या ते कहेछे । अग्रबीजा १ मूलबीजा २ पर्वबीजा ३ स्कंधबीजा ४ बीजरुहा ५ संमूर्छिम ६ ॥ छ थानक सर्व जीवने सुलभ नथी ते कहेछे । मनुष्यनो भव १ आर्यक्षेत्रने विषे जन्म २ उत्तम कुलमा ऊपजवो ३ केवली प्रणीत धर्मनो सांभलवो ४

ग्येनप्रतीतस्यवो पपत्तिभि रथवा प्रीतिकस्य स्वविषय उत्पादितप्रीते रोचितस्य वा चिकीर्षितस्य सम्य ग्यथावत्कायेन शरीरेण न मनोरथमात्रेणा विरत वत् स्पर्शनता स्पर्शनमिति यदाह धम्मंपिहुसद्दहतया दुल्लहयाकाएणफासया इहकामगुणेसु मुच्छिया समयगोयममापसायएत्ति ॥ १ ॥ मानुष्यभवादी नाच दुर्लभत्व प्रमादादिप्रसक्तप्राणिनामेव न सर्वेषामिति यतो मनुष्यभव माश्रित्याभिहित एयपुणएवंखलु अन्नाणपमायदोसओनेयं जंदोहाकायठिइं भ णियाएगिंदियाईण ॥ १ ॥ एसोयअसइदोसा सेवणओधम्मवउभ्भचित्ताण ताधम्मेजइयव्व सम्मसइधीरपुरिसेहिंति ॥ १ ॥ मानुषत्वादीनिच सुलभानि दु र्लभानिचभवतीतीं द्रियार्थाना सवरे असंवरेच सति तयोश्च सतोः सातासाते स्त स्तत्त्वयश्च प्रायश्चित्ता द्भवती न्द्रियार्थानिंद्रियसंवरासंवरौ सातासा ते प्रायश्चित्तच प्ररूपयन् सूत्र षट्कमाह सुगम चेद नवर ॥ छइंदियत्थत्ति ॥ मनस आंतरकरणत्वेन करणत्वा त्कारणस्यचें द्रियत्वा त्तत्रा तररूप्यावा मनस इंद्रियत्वा त्तद्विषयस्यें द्रियार्थत्वेम षडिन्द्रियार्था इत्युक्तं तत्र श्रोत्रें द्रियादीना मर्था विषयाः शब्दादयो ॥ नोइंदियत्थत्ति ॥ औदारिकादि त्वार्थपरिच्छेदक त्वलक्षणधर्मद्वयोपेत मिन्द्रिय तस्यौदारिकादित्व धर्मलक्षणदेशनिषेधा न्नोइन्द्रियं मनः सादृश्या र्थत्वाद्वा नोशब्दस्या र्थपरिच्छेदकत्वेनें द्रियाणां सदृशमि

हियस्सवापत्तियस्सवारोइयस्सवासम्मंकाएणफासणया। छइंदियत्था पन्नत्ता तंजहा सोइंदियत्थे जाव फासिं दियत्थे नोइंदियत्थे। छव्विहे संवरे पन्नत्ते तंजहा सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे णोइंदियसंवरे। छव्विहे

सात्तली सूत्रनी सर्दहना ५ सर्दहीने विश्वास ऊपजावीने रुचावीने त्तली रीते कायाथी फरसवो करवो ॥ छ इंद्रियना विषय कह्या तेकहेछे । श्रोत्रें द्रीनो विषय यावत् फरसेंद्रीनो विषय ५ नोइंद्रिय मननो विषय ६ ॥ छ संवर कह्या तेकहेछे । श्रोत्रेंद्रीनो सवर यावत् फरसेंद्रीनो सवर ५ । नो

तित्तजचरमितिवा नोइन्द्रियं मन स्तस्यार्थो विषयो जीवादि नौइन्द्रियार्थइति श्रोनेंद्रियद्वारेण मनोज्ञशब्दश्रवणतो य सातं सुख तत् श्रोत्रेंद्रियसात मेव शेषाण्यपि तथा य दिष्टचिंतनत स्त नोइन्द्रियसात इति आलोचनार्हं यद्गुरुनिवेदनया शुद्धति प्रतिक्रमणार्हं य मिथ्यादुष्कृतेन तदुभयार्हं यदा लो चनामिथ्यादुष्कृताभ्यां विवेकार्हं य त्परिष्ठापित आधाकर्मादो शुद्धति व्युत्सर्गार्हं य त्कायचेष्टानिरोधत स्तपोऽर्हं यन्निर्विकृतिकादिना तपसेति प्रायश्चि त्तस्य च मनुष्याएव वोढारइति मनुष्याधिकारवत् ॥ छव्विहामणस्सेत्यादि ॥ सूत्रादारभ्या लोकस्थितिसूत्रात् प्रकरणमाह्न गतार्थं चेतन्नवरं ॥ अड्ढवाछब्वि

असंवरे पन्नत्ते तंजहा सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदियअसंवरे णोइंदियअसंवरे । छव्विहे साए प० तं० सोइंदियसाए जाव नोइंदियसाए । छव्विहे असाए प० तं० सोइंदियअसाए जाव नोइंदियअसाए । छव्विहे पायच्छित्ते प० तंजहा आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे तवारिहे । छव्विहा मणुस्सा प० तं० जंबूद्दीवगा धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धगा धायइखंडदीवपच्चच्छिमद्धगा पोक्खरवर

इंद्री मननो संवर ६ ॥ छ प्रकारे असंवर कह्या तेकहेछे । श्रोनेंद्रीनो असवर यावत् फरसेंद्रीनो असंवर ५ । नोइंद्री मननो असवर ॥ छ प्रकारे सा ता कही तेकहेछे । श्रोत्रेंद्रीनी साता यावत् फरसेंद्रीनी साता ५ । नोइंद्री मननी साता ६ ॥ छ प्रकारे असाता कही ते कहेछे । श्रोत्रेंद्रीनी असाता यावत् फरसेंद्रीनी असाता ५ । नोइंद्री मननी असाता ६ ॥ छ प्रकारे प्रायश्चित्त ते कहेछे आलोयणा योग्य १ । प्रतिक्रमण योग्य २ । आलोयण प्र तिक्रमण बेने योग्य ३ । विवेकने योग्य आधाकरमी आहार परठवे ४ । कायोत्सर्ग योग्य ५ । तपयोग्य ६ ॥ छ प्रकारे मनुष्य कह्या ते कहेछे जंबू

हे ॥ इत्यत्र सम्मूर्च्छनजमनुष्या स्त्रिविधाः कर्म्मभूमिजादिभेदेन तथा गर्भव्युत्क्रांतिका स्त्रिधा तथैवेति षोढा ॥ चारणत्ति ॥ जघाचारणा विद्याचारणाश्च

दीवद्धपुरच्छिमद्धगा पुक्करवरदीवद्धपच्चच्छिमद्धगा अंतरदीवगा । अहवा छव्विहा मणुस्सा पन्नत्ता तंजहा संमुच्छिममणुस्सा कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा २ अंतरदीवगा ३ गब्भवक्कंतियमणुस्साकम्मभूमिगा ४ अक म्मभूमिगा ५ अंतरदीवगा ६ । छव्विहा इड्ढिमंता मणुस्सा प० तं० अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाधरा । छव्विहा अणिड्ढिमंता मणुस्सा पन्नत्ता तंजहा हेमवंतगा हेरन्नवंतगा हरिवसगा रम्मगवंसगा कुरुवासिणो अंतरदीवगा । छव्विहा उसप्पिणी प० तं० सुसमसुसमा जाव दुसमदुसमा । छ

द्वीपना १ । धातकी खंडद्वीपना पूर्वार्द्धना मनुष्य २ । धातकीखंड पश्चिमार्द्धना मनुष्य ३ । पुष्करवरद्वीपार्द्धना मनुष्य ४ । पुष्करवरद्वीप पश्चिमार्द्ध ना मनुष्य ५ । अंतरद्वीपनां मनुष्य ६ ॥ अथवा छ प्रकारे मनुष्य कहिया ते कहेछे समूर्च्छिम कर्म भूमिनां मनुष्य १ । समूर्च्छिम अकर्म भूमिना म नुष्य २ । अतरद्वीपना ३ । गर्भव्युत्क्रांतिक कर्म भूमिना मनुष्य ४ । अकर्म भूमिना गर्भज मनुष्य ५ । अतरद्वीपना ६ ॥ छ प्रकारे रिद्धिवंत मनुष्य कह्या तेकहेछे अरिहंत १ । चक्रवर्त्ति २ । बलदेव ३ । वासुदेव ४ । जघाचारण ५ । विद्याधर ६ ॥ छ प्रकारे रिद्धिरहित मनुष्य कहिया ते कहेछे हेमवंत क्षेत्रना १ । ऐरण्यवत क्षेत्रना २ । हरिवर्ष क्षेत्रना ३ । रम्यक क्षेत्रना ४ । देवकुरु उत्तरकुरुना ५ । अंतरद्वीपना ६ एहसर्व युगलियाछे ॥ छ प्रकारे अवसर्पिणी तेकहेछे सुसम सुसमा १ । यावत् दुसमदुसमा छठो आरो ६ ॥ छ प्रकारे उत्सर्पिणी कही ते कहेछे दुखम दुखमा १ । यावत्

विद्याधरा वैताढ्यादिनिवासिनः ॥ छधणुसहस्साइंति ॥ त्रीन् क्रोशानित्यर्थः ॥ छच्चअद्धपलिओवमाइंति ॥ त्रीणिपल्योपमानीत्यर्थः संहनन मस्थिसंचयो

छिहा उसप्पिणी प० तं० दुसमदुसमा जाव सुसमसुसमा । जंबुद्दीवेदीवे भरहेरवएसुवासेसु तीताए उस्स प्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया छधणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेण होत्था छच्चअद्धपलिउवमाइं परमाउंपा लइत्ता जबूद्दीवेदीवे भरहेरवएसुवासेसु इमीसे उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए एवंचेव । जबूभरहेरवए आगमिस्साए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए एवंचेव जाव छच्चअद्धपलिउ वमाइंपरमाउपालइस्संति । जबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया छधणुसहस्साइ उड्ढ मुच्चत्तेण पन्नत्ता छच्च अद्धपलिउवमाइं परमाउं पाल यंति । एव धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे चत्तारि आला

सुखम सुखमा ६ ॥ जंबूद्वीपमां भरत ऐरवत क्षेत्रने विषे गई उत्सर्प्पिणीमां सुखम सुखमा समय तेविषे मनुष्य छ हजार धनुप उंचा उंचपणे थ या । छ अर्द्ध पल्योपमनो आउखो पालीने जबूद्वीपने विषे भरत ऐरवत क्षेत्रे आ अवसर्प्पिणी काले सुखमसुखमा । इमज जबूना भरत ऐरवते आ वती उत्सर्प्पिणीये सुखमसुखमा समयने विषे । इमज यावत् छ अर्द्धपल्योपमनो आउखो पालसे । जबूद्वीपे देवकुरु उत्तर कुरुने विषे मनुष्य छ ह जार धनुष ऊंचा ऊंचपणे कह्या । छ अर्द्धपल्योपमनो आउखो पालसे । इम धातकी खड द्वीपना पूर्वार्द्धे च्यार आलावा कहवा यावत् पुष्कर वर द्वीप पश्चिमार्द्धे पणि च्यार आलावा कहवा ॥ छ प्रकारे संघयण कह्या तेकहेछे वज्ररिषभनाराच १ । रिषभनाराच संघयण २ । नाराचसंघयण ३ ।

वच्यमाणोपमानोपमेयः शक्तिविशेषद्रत्यन्ये तत्र वज्र कीलिका ऋषभः परिवेष्टनपट्टः नाराच उभयतो मर्कटबन्धः यत्र द्वयोरस्थ्नो रुभयतो मर्कटबंधे
न बद्धयोः पट्टाकृतिना तृतीयेनास्थ्नापरिवेष्टितयो रुपरि तदस्थित्रितयभेदिकीलिकाकार वज्रनामक मस्थि भवति तद्वज्रऋषभनाराच प्रथमं यत्रतु की
लिका नास्ति त दृषभनाराच द्वितीयं यत्रतू भयो र्मर्कटबन्धएव तन्नाराच तृतीय यत्रैक तो मर्कटबन्धो द्वितीयपार्श्वेकीलिका तदर्द्धनाराच चतुर्थं
कीलिकाविद्धास्थिद्वयसंचितं कीलिकाख्यपंचम अस्थिद्वयपर्यंतस्पर्शनलचण सेवामार्त्त सेवा मागतमिति सेवार्त्तंषष्ठं शक्तिविशेषपचे त्वेवविधदार्वादे
रिवदृढत्व संहननमिति इहगाथे वज्जरिसभनाराय पढमवीयचरिसहनारायं नारायमद्धनारा यकीलियातहयछेवठ्ठं ॥ १ ॥ रिसहोयपट्टो वज्जपुण
कीलियवियाणाहि उभयोमक्कडबधे नारायंतंवियाणाहिति ॥ २ ॥ सस्थान शरीराकृति रवयवरचनात्मिका तत्र समाः शरीरलचणोक्तप्रमाणा विसवा
दिन्य श्चतस्रो स्रयो यस्य त त्समचतुरस्रं अस्त्रिस्त्विह चतुर्दिग्विभागोपलचिताः शरीरावयवा स्ततश्च सर्वेप्यवयवाः शरीरलचणोक्तप्रमाणा व्यभिचारिणो
यस्य नतु न्यूनाधिकप्रमाणा स्तत्तुल्य समचतुरस्र न्तथा न्यग्रोधवत्परिमंडलं यथा न्यग्रोध उपरि सपूर्णावयवो ऽधस्तनभागे पुन र्न तथा तथेद मपि नाभे
रुपरि विस्तरबहुल शरीरलचणोक्तप्रमाणभा गधस्तु हीनाधिकप्रमाणमिति तथा ॥ सादीति ॥ आदि रिहोत्सेधाख्यो नाभे रधस्तनो देहभागो गृह्यते ते

वगा । छव्विहे संघयणे पन्नत्ते तंजहा वइरोसभणारायसंघयणे उसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्ध णारायसघयणे कीलियासंघयणे छेवठ्ठसघयणे । छव्विहे संठाणे प० तं० समचउरंसे णिग्गोहपरिमंडले साई

अर्द्धनाराच संघयण ४ । कीलिका संघयण ५ । छेवठोसंघयण ६ ॥ छ प्रकारे संस्थान कह्या तेकहेछे समचतुरस्र १ । न्यग्रोधपरिमंडल २ । सादि ३ ।

ना दिना शरीरलक्षणोक्तप्रमाणभाजा सह वर्त्तते यत्त त्सादिसर्वमेव हि शरीरविशिष्टेना दिना सह वर्त्ततइति विशेषणा न्यथानुपपत्ते रिह विशिष्टता लभ्यते अतः सादिउत्सेधबहुल परिपूर्णोत्सेधमित्यर्थ. ॥ खुज्जेत्ति ॥ अधस्तनकायं मडह इहा धस्तनकायशब्देन पादपाणिशिरोग्रीवमुच्यते तेष्वत्र शरीरलक्ष णोक्तप्रमाणव्यभिचारि यत्पुनः शेष तद्यथोक्तप्रमाण तत्कुब्जमिति ॥ वामणेत्ति ॥ मडहकोष्टं यत्रहि पाणिपादशिरोग्रीव यथोक्तप्रमाणोपेत यत्पुनः शेष को ष्ट तन्मडह न्यूनाधिकप्रमाण तद्वामन ॥ हुंडेत्ति ॥ सर्वत्रा सस्थित यस्यहि प्रायेणै कोप्यवयवः शरीरलक्षणोक्तप्रमाणेन न संवदति सर्वत्रासस्थित हुंडमि त्युक्तंच तुल्लवित्थरबहुल २ उस्सेहबहुच ३ मडहकोठंच ४ हिठ्ठिल्लकायमडह सव्वत्थासठियहुंडंति ॥ १ ॥ इहगाथायां सूत्रोक्तक्रमापेक्षया चतुर्थपंचमयो र्व्यत्ययो दृश्यतइति ॥ अणत्तवओत्ति ॥ अकषायो ह्यात्मा भवति स्वस्वरूपावस्थितत्वा त्तद्वा न्नभवति यः सो ऽनात्मवान् सकषाय इत्यर्थ. तस्य अहिताय अपथ्याय अशुभाय पापाय असुखायवा दुःखाया क्षमाया सगतत्वाय अक्षान्त्यैवा अनिःश्रेयसाय अकल्याणाय अननुगामिकत्वाय अशुभानुबंधाय भवंति मानकारणतयै हिकामुष्मिकापायजनकत्वादिति पर्यायो जन्मकालः प्रव्रज्याकालोवा सच महानेव मानकारण भवतीति महानिति विशेषणं द्रष्टव्य मथवा गृहस्थापेक्षया ऽल्पोपि प्रव्रज्यापर्यायो मानहेतुरेवेति तत्र जन्मपर्यायो महानहिताय यथा बाहुबलिन एवमन्येपि यथासभवंवाच्या नवर ॥ परिया लेत्ति ॥ परिवारः शिष्यादिः श्रुत पूर्वगतादि उक्तंच जहजहबहुस्सुओस मओयसीसगणसपरिवुडोय अवणिच्छिओयसमये तहतहसिद्धतपडणीओत्ति

खुज्जे वामणे हुंडे । छठाणा अणत्तवतो अहियाए असुभाए जाव अणाणुगामियत्ताए भवति तजहा परि

कुब्ज ४ । वामन ५ । हुंड ६ ॥ छ स्थानक अनात्मवतने आत्मस्वभाव रहितने एतले कषाय सहितने अहितकारी अशुभकारी अक्षमाकारी अनिश्रे

॥ १ ॥ तपो नशनादि लाभो न्वादीनां पूजा स्तवादिरूपा तत्पूर्वकः सत्कारो वस्त्राभ्यर्चनं पूजायांवा आदरः पूजासत्कारइति जाति मातृकः पच्च स्तया आर्या अपापा निर्दोषा जात्यार्या विशुद्धमातृकाइत्यर्थः अवष्ठेत्याद्यनुष्टुप्प्रतिकृतिः षडप्येता इभ्यजातय इति इभमर्हंतीतीभ्या यद्द्रव्यस्तूपांतरित उच्छ्रित कदलिकादंडो हस्ती नदृश्यते ते इभ्याइतिश्रुति स्तेषा जातय इभ्यजातय स्ता एताइति कुल पैतृकः पच्च उग्रा आदिराजेना रचकत्वेन येव्यवस्थापिता स्तइश्चाश्व येतु गुरुत्वेन व्यवस्थापिता स्ते भोगा स्तइश्या येतुवयस्यतयाचरिता स्तेराजन्यास्तइंश्याश्व इक्ष्वाकवः प्रथम प्रजापतिवंशजाः ज्ञाताः कुरवश्च महावीरशांतिजिनपूर्वजा अथवै ते लोकरूढितो ज्ञेया इयच जातिकुलार्यादिका लोकस्थिति रिति लोकस्थितिप्रत्यासत्त्या तामेवाह ॥ छव्विहेत्यादि ॥

याए परियाले सुए तवे लाभे पूयासक्कारे । छठाणा अत्तवतो हियाए जाव अणाणुगामियत्ताए नवंति तंजहा परियाए परियाले जाव पूयासक्कारे । छव्विहा जाइआरिया मणुस्सा पन्नत्ता तंजहा अंवठायकलदाय वेदेहावेदिगाइया हरियाचुंचुणाचेव छप्पेयाइब्भजाइउ ॥ १ ॥ छव्विहा कुलारिया मणुस्सा पन्नत्ता तंजहा

यशकारी संसारना पारने आपनार न होय मानना करवाथी ते कहेछे पर्यायते दीक्षा तथा जन्मनो १ । परिवारनो अहंकार करे २ । सूत्र जणया नो २ । तपनो ३ । लाभनुं ४ । पूजासत्कारनो ६ । छस्थानक आत्मस्वभाववतने अकषाईने यावत् संसारना पार पामिवाने मानना अणकरवाथी तेकहेछे पर्याय उत्तमकुल जन्म दीक्षा १ । परिवारनो अभिमान २ । यावत् पूजा सत्कारनो मान नकरे ६ ॥ छ प्रकारे जातिआर्य मनुष्य कह्या तेकहेछे अंबष्ट १ । कलिंद २ । विदेह ३ । विदेहगा ४ । हरिता ५ । चुंचुणा ६ ॥ एह छ इभ्य जातिनी स्त्रीना पुत्र १ ॥ छ प्रकारे कुल जे पितानो

॥ टीका ॥ बहुतराणां मजीवा

एवं पूर्वमेव व्याख्यातं नवरं मजीवा औदारिकादिपुद्गला स्ते जीवेषु प्रतिष्ठिता आश्रिता एवंचा नवधारण वीवर्थ्यं जीवविरहेणापि बहुतराणां मजीवानां तेषामभावादिति अनंतरं नाम त्वानात् पृथिव्यो रिरितिापि त्रसस्थावरवदिति तथा जीवाः कर्मसु ज्ञानावरणादिषु प्रतिष्ठिताः प्राय स्ताभिरश्रितानां छद्दिसाओइत्यादि ॥ सूत्रकादगक एवंच निगानकएव कामेप्रतिष्ठिता जीवाउता स्तेषांच दिक्षोग गत्यादयो भवन्तीति दिग स्तासु गत्यादीश प्ररूपयनाह ॥ ऊर्ध्वमधश्चेति प्रतीते विदिशो नदिशो विदिशादे व्याख्यात तथापि किंचि दुच्यते प्राचीना पूर्वा प्रतीचीना पश्चिमा दक्षिणा प्रतीता उदीचीना उत्तरा षट्स्थानकानुरोधेनआविदिशो नविवक्षिताइति षडेव दिश उक्ता वेति षडेताता भगवा एभिरेव जीवानां वक्ष्यमाणा गतिप्रभृतयःपदार्थाः प्रायःप्रवर्त्तंते चतुर्दशसूत्राणि नेयानि नवरं गति रागतिश प्रज्ञा इति षड्भि र्दिग्भि र्जीवानां गति रुत्पत्तिस्थान गमन प्रवर्त्तते अनुश्रेणिगमना त्तेषां मित्येव मेतानि

छागासपइठिएवाए वाय

उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा णाया कौरवा ॥ छव्विहा लोगठिई प० तंजहा जीवाकम्म पइठिएउदही उदहिपइठियापुढवी पुढविपइठियातसाथावरापाणा छजीवाजीवपइठिया जीवाणं पइठिया । छद्दिसाउ पन्नत्ताउ तंजहा पाईणा पडीणा दाहिणा उईणा उड्ढा छहा । छहिंदिसाहि

उग्रकुलना १ । भोगकुलना २ । राजाना कुलना ३ । इक्ष्वाकुकुलना ४ । ज्ञातकुलना ५ । कौरव कुलना ६ ॥ पन्न तेहुथी आर्य मनुष्य कह्या ते कहेछे वायु रह्योछे घनवात १ । वायुने आधारे घनोदधिछे २ । घनोदधीने आधारे पृथिवीछे ३ । पृथ्वीने छ प्रकारे लोकस्थिति कही ते कहेछे आकाशे वायु रह्योछे घनवात १ । वायुने आधारे घनोदधिछे २ । घनोदधीने आधारे पृथिवीछे ३ । पृथ्वीने आधारे त्रस अने थावर प्राणीछे ४ । जीवने आधारे अजीवछे ५ । जीव कर्म प्रतिष्टितछे ६ ॥ छदिसि कही ते कहेछे पूर्व १ । पश्चिम २ । दक्षिण ३ ।

पकस्थानापेचिखो प्रसिद्दे एव व्युत्क्रांति रुत्पत्तिस्थानप्राप्तस्यो त्पादः सोपि ऋजुगतौ षट्स्वेव दिच्चु तथा आहारःप्रतीतः सोपि षट्स्वेव दिच्चु एतद्व्यवस्थि तप्रदेशावगाढपुद्गलानामेव जीवेन स्पर्शनात् स्पृष्टानामेवा हरणा दित्येवं षट्दिकता यथासभव वृद्ध्यादि ष्वप्यूह्येति तथा वृद्धिः शरीरस्या निर्वृत्ति र्हानि स्तस्यैव विकुर्वणा वैक्रियकरण गतिपर्यायो गमनमात्र नपरलोकगमनरूप स्तस्य गत्यागतिग्रहणेन गृहीतत्वादिति समुद्घातो वेदनादिकः सप्तविधः काल संयोगः समयचेत्रमध्ये आदित्यादिप्रकाशसबधलचणः दर्शनं सामान्यग्राही बोध स्तचेह गुणप्रत्ययावध्यादि प्रत्यचरूप तेना भिगमो वस्तुनः परिच्छेद स्त त्प्राप्तिर्वा दर्शनाभिगम एवं ज्ञानाभिगमोपि जीवाभिगमः सत्वाभिगमो गुणप्रत्ययावध्यादिप्रत्यचतो ऽजीवाभिगमः पुद्गलास्तिकायाद्यभिगमः सोपि तथैवेति एवमिति तथा ॥ छहिंदिसाहिंजीवाणगईपवत्तईत्यादि ॥ सूत्रा ण्युक्तानि एव चतुर्विंशतिदंडकचिंतायां ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं छहिंदि

गई पवत्तई तंजहा पाईणाए जाव ऋहाए। एवं आगई बक्कंती ऋहारे वुढ्ढी निवुढ्ढी विगुव्वणा गइपरियाए समुग्घाए कालसंजोगे दंसणाभिगमे जीवाभिगमे ऋजीवाभिगमे एवंपचेंदियतिरिक्खजोणियाणवि मणुस्सा

उत्तर ४। ऊर्द्ध ५। अधो ६ ॥ छ दिशिमां जीवने गति प्रवर्त्ते ते कहेछे पूर्वदिशिमा यावत् अधोदिशिमां ६ ॥ एम आववो १। उपजवानो स्थानक २। आहार ३। वृद्धि शरीरनी ४। हानि शरीरनी ५। विकुर्वणा वैक्रियशरीर करवो ६। गतिपर्याय चालवो ७। समुदघात वेदनादि ८। कालदिव सादिकनो संयोग ९। दर्शन सामान्यथी देखवो १०। ज्ञाननुं अभिगम जाणवो ११। जीवनो अभिगम १२। अजीव पुद्गलादिकनो अभिगम जाणवो १३। एम पंचेंद्री तिर्यंच योनियाने। तथा मनुष्य पण छ दिशिथी कहवो ॥ छ स्थानके श्रमण निग्रंथ आहार करतो अतिक्रमे नथी आज्ञा प्रते

साहिगइत्यादी ॥ न्यपि वाच्यानि तथा मनुष्यसूत्राण्यपि शेषेषु नारकादिपदेषु षट्स दिक्षु गत्यादीनां सामस्त्येना संभव स्तथाहि नारकादीना द्वाविंशते जीवविशेषाणां नारकदेवेषू त्पादाभावा दूर्ध्वाधोदिशो विवक्षया गत्यागत्यो रभाव स्तथा दर्शनज्ञानजीवाजीवाभिगमा गुणप्रत्ययावधिलक्षणप्रत्यक्षसतान रूपा न सत्येव तेषा भवप्रत्ययावधिपक्षेतु नारकज्योतिष्का स्तिर्यगवधयो भवनपतिव्यंतरा ऊर्द्धावधयो वैमानिका स्त्वधोवधयः शेषा निरवधय एवेति भावना विवक्षाप्रधानानिच प्रायो ऽन्यत्रापि सूत्राणीति अनतरसूत्रे मनुष्याणामजीवाभिगम उक्तइति मनुष्यप्रत्यासत्या संयतमनुष्याणा माहारग्रहणाग्रहणकारणा नि सूत्रद्वयेनाह ॥ छहीत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर माहार मशनादिक माहारय न्नभ्यवहरन् नातिक्रामत्याज्ञां पुष्टकारणत्वा दन्यथा त्वतिक्रामत्येव रागादिभावा त्तथा ॥ वेदनेत्यादि गाथा ॥ वेदनाच क्षुद्वेदना वैयावृत्त्यंचा चार्यादिकृत्यकरण वेदनावैयावृत्त्य तत्रविषये भुंजीत वेदनोपशमनार्थं वैयावृत्त्यकरणार्थं चेतिभावः ईर्या गमनं तस्याः विशुद्धि र्युगमात्रनिहितदृष्टित्व मोर्याविशुद्धि स्तस्यै इद मीर्याविशुध्यर्थं इहच विशुद्धिशब्दलोपा दीर्यार्थं मित्युक्त बुभुक्षितो ह्रीर्याशुद्धा वशक्त. स्यादिति तदर्थमिति चसमुच्चये सयमः प्रेक्षोत्प्रेक्षाप्रमार्जनादिलक्षण स्तदर्थं तथेति कारणान्तरसमुच्चये प्राणा उच्छ्वासादयो बल वा प्राण स्तेषा तस्यवा वृत्तिः

णवि । छहिंठाणेहिं समणेनिग्गंथे आहारमाहारेमाणे णाइक्कमइ तंजहा वेयणवेयावच्चे इरियट्ठाएयसं जमट्ठाए तहपाणवत्तियाए छट्ठपुणधम्माचिंताए ॥ १ ॥ छहिंठाणेहिं समणेनिग्गथे आहारंवोच्छिंदमाणे

तेकहेछे क्षुधा वेदनी समाववा १ । वेयावच करवा २ । ईर्यासुमति पालवाने ३ । सयमने अर्थे ४ । तिमज प्राणराखवाने ५ । छठो वली धर्मचिंत नाने अर्थे ६ ॥ १ ॥ छ स्थानके श्रमण निग्रंथ आहार प्रते छांडतो अतिक्रमे नथी ते कहेछे रोग आव्यांथी १ । उपसर्ग आव्याथी २ । क्षुधा समाव

पालनं तदर्थं प्राणसंधारणार्थमित्यर्थः षष्ठं पुनः कारणं धर्मचिंतायै गुणनानुप्रेक्षार्थमित्यर्थः इत्येतानि षट्कारणानीति अत्रभाष्यगाथे नत्थिछुहाएसरिसा वियणाभुंजेज्जतप्पसमणठ्ठा छाओ [बुभुक्षितः] वेयावच्चं नतरइकाओअओभुंजे ॥ १ ॥ इरियनविसोहेइ पेहाईयंचसंजमकाओ थामोवापरिहायइ गुणणुप्पे हासुयअसत्तोत्ति ॥ २ ॥ वोछिंदमाणेत्ति ॥ परित्यजन् आतंके ज्वरादा वुपसर्गे राजस्वजनादिजनिते प्रतिकूलानुकूलस्वभावे तितिक्षणे अधिसहने कस्याः ब्रह्मचर्यगुप्तेः मैथुनव्रतसंरक्षणस्या हारत्यागिनोहि ब्रह्मचर्यं सुरक्षं स्यादिति प्राणिदयाच सपातिमत्रसादिसरक्षण तप श्चतुर्थादिषण्मासांत प्राणिदयातप स्तच्च तद्धेतुश्च प्राणिदयातपोहेतु स्तस्मात् प्राणिदयातपोहेतो र्दयादिनिमित्त मित्यर्थ स्तथा शरीरव्यवच्छेदार्थं देहत्यागाय आहार व्यवच्छिद न्नातिक्रा म त्याज्ञामिति प्रक्रम इहगाथे आयकोरजमाई रायासन्नाइगाइउवसग्गे बंभवयपालणठ्ठा पाणिदयावासमहियाई ॥ १ ॥ तवहेउचउत्थाइ जावयछ म्मासिओतवोहोइ छठ्ठंशरीरवोच्छे यणठ्ठयाहोअणाहारोत्ति॥ २ ॥ अनंतर श्रमणस्या हारग्रहणकारणा न्यभिहितानीति श्रमणादे र्जीवस्या नुचितका रिण उन्मादस्थानान्याह ॥ छहीत्यादि ॥ इदंच सूत्रं पचस्थानकएव व्याख्यातप्राय नवरं षड्भिः स्थानै रात्मा जीव उन्माद मुन्मत्ततां प्राप्नुया दुन्मादश्च

णाइक्कमइ तंजहा आतंके उवसग्गे तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीए पाणदयातवहेउं सरीरवोच्छेयणठ्ठाए । छहिं ठाणेहिं आया उम्मायंपाउणेज्जा तजहा अरहंताणमवन्नंवदमाणे अरहंतपन्नत्तस्सधम्मस्सअवन्नंवदमाणे

वाने ३ । ब्रह्मचर्य राखवाने ४ । जीवदया पालवाने तपने अर्थ ५ । शरीर छांडवाने अणसणने ६ ॥ छ स्थानके आत्मा उन्माद प्रते पामै उन्माद ते महा मिथ्यात्व लक्षण तेकहेछे अरिहंतना अवर्णवाद बोलतो १ । अरहंत प्ररूपित धर्मनो अवर्णवाद बोलतो २ । आचार्य उपाध्यायनो अवर्ण

महामिथ्यात्वलक्षण स्तीर्थंकरादीना मवर्णवदतो भवत्येव तीर्थंकराद्यवर्णवदनकुपितप्रवचनदेवतातोवा सो ग्रहणरूपो भवेदिति पाठांतरेण ॥ उम्मायप मायति ॥ उन्मादः सङ्गहत्वं सएव प्रमादः प्रमत्तत्व माभोगशून्यतोन्मादप्रमाद प्रथवो न्मादश्च प्रमादश्च हितप्रवृत्तिर्हिताप्रवृत्ती उन्मादप्रमादं प्राप्नुया दिति ॥ पवयति ॥ पवर्णं प्रज्ञापना मवज्ञांवा वदन् व्रजन्वा कुर्वन्नित्यर्थः ॥ धम्मस्सत्ति ॥ श्रुतस्य चारित्रस्यवा आचार्योपाध्यायानाञ्च चतुर्वर्णस्य श्रम णादिभेदेन चतुःप्रकारस्य यक्षावेशेन चैव निमित्तान्तरकुपितदेवाधिष्ठितत्वे मोहनीयस्य मिथ्यात्ववेदशोकोदयेनेति उन्मादसहचरः प्रमादइति तमाह ॥ छविहेत्यादि ॥ षड्विधः षट्प्रकारः प्रमदनं प्रमादः प्रमत्तता सदुपयोगाभावइत्यर्थः प्रज्ञप्त स्तद्यथा मद्यं सुरादि स्तदेव प्रमादकारणत्वात् प्रमादो मद्यप्रमादो यतश्चाह चित्तभ्रांतिर्जायतेमद्यपाना 'च्चित्तभ्रांतिःपापचर्यामुपैति पापंकृत्वादुर्गतिंयांतिमूढा स्तस्मान्मद्यंनैवपेयंनदेयमिति ॥ १ ॥ एव सर्वत्र नवर निद्रा प्रतीता तद्दोषश्चाय निद्राशीलोनश्रुतनापिवित्त लब्धुंशक्नोहीयतेवैषताभ्यां ज्ञानद्रव्याभावतोदुःखभागी लोकद्वैतेस्यादतोनिद्रयालमिति ॥ १ ॥ विषयाः शब्दादय स्तेषां चैव प्रमादता विषयव्याकुलचित्तो हितमहितंवानवेत्तिजतुरयं तस्मादनुचितचारी चरतिचिरंदुःखकांतारे ॥ १ ॥ कषायाः क्रोधा

आयरियउवज्झायाणमवन्नंवदमाणे चाउवन्नस्ससंघस्सयअवन्नंवदमाणे जक्खावेसेणचेवमोहणिज्जस्सकम्म स्सउदएणं। छव्विहेपमाए पण्णत्ते तंजहा मज्जपमाए णिद्दापमाए विसयपमाए कसायपमाए जूयपमाए पडि

वाद बोलतो ३ । चतुर्विधसंघनो अवर्णवाद वोलतो ४ । यक्षादिकना आवेशथी ५ । मोहनीकर्मना उदयथी ६ ॥ छ प्रमाद कह्या तेकहेछे मदिरा प्रमाद १ । निद्राप्रमाद २ । विषयप्रमाद ३ । कषायप्रमाद ४ । जूवानोप्रमाद ५ । प्रत्युपेक्षणाप्रमाद वस्त्र पात्र आहारादि गवेषणा नकरे ६ ॥ छ

दयः तेषा मप्येवं प्रमादता चित्तरत्नमसंक्लिष्ट मान्तरंधनमुच्यते तस्यतन्मुषितंदोषै स्तस्यशिष्टाविपत्तयइति ॥ १ ॥ द्यूतं प्रतीतं तदपिप्रमादएव द्यूतासक्तस्य सञ्चितं धनकामा:सुचेष्ठितं नश्यत्येवपरंशीर्षं नामापिचविनश्यति ॥१॥ तथा प्रत्युपेचणं प्रत्युपेचणा साच द्रव्यचेत्रकालभावभेदा चतुर्धा तत्र द्रव्यप्रत्युपेचणा वस्त्रपात्राद्युपकरणाना मशनपानाद्याहाराणांच चक्षुर्निरीचणरूपा चेत्रप्रत्युपेचणा कायोत्सर्गनिषदनशयनस्थानस्य स्थंडिलानां मार्गस्य विहारचेत्रस्यच निरूपणा कालप्रत्युपेचणा उचितानुष्टानकरणार्थं कालविशेषस्य पर्यालोचना भावप्रत्युपेचणा धर्मजागरिकादिरूपा यथा किंकयकिवासेस किं करणिज्जतवचनकरेमि पुव्वावरत्तकाले जागरओभावपडिलेहत्ति ॥ १ ॥ तत्र प्रत्युपेचणायां प्रमादः शैथिल्यं आज्ञातिक्रमोवा प्रत्युपेचणाप्रमाद अनेनच प्रमार्जना भिचाचर्यादिषु इच्छाकारमिथ्याकारादिषुच दशविधसमाचारीरूपव्यापारेषु यः प्रमादो सा वुपलचितः तस्यापि सामाचारीगतत्वेन षण्ठप्रमाद लचणाव्यभिचारित्वादिति ॥ अनंतर प्रत्युपेचाप्रमाद उक्तो ऽथ तामेव तद्विशिष्टामाह ॥ छव्विहत्ति ॥ षड्विधा षट्भेदा प्रमादे नोक्तलचणेन प्रत्युपेचा प्रमादप्रत्युपेचा प्रज्ञप्ता तद्यथा ॥ आरभडागाहा ॥ आरभटा वितथकरणरूपा अथवा त्वरित सर्व मारभमाणस्या थवा प्रत्युपेचिता एवैकत्र य दन्यान्य वस्त्रगृहण सा आरभटा साच वर्जनीया सदोषत्वादिति सर्वत्र संबंधनीयमिति सम्मर्दा यत्र वस्त्रस्य मध्यप्रदेशे सवलिता कोणाभवति यत्रवा प्रत्युपेचणीयो पधिवेटिकाया मेवो पविश्य प्रत्युपेचते सा संमर्देति मोसलो प्रत्युपेचमाणवस्त्रभागेन तिर्यगूर्द्धमधोवा घट्टनरूपा ॥ तइयत्ति ॥ तृतीया प्रमादप्रत्युपेचणेति

लेहणापमाए । छव्विहा पमायपडिलेहा पन्नत्ता तंजहा आरभडासम्मद्दा वज्जेयव्वायमोसलीतइया पप्फोड ॥

प्रकारे प्रमाद पडिलेहणा कही ते कहेछे आरभट उतावला थई वस्त्रपडिलेहै १ । संमर्दना माहोमाहि वस्त्र लगाडे २ । वर्जवी तीजी मोसली ति ॥ भ

क्वचित् ॥ अट्ठाणठवणायत्ति ॥ दृश्यते तत्र गुर्ववग्रहादिके अस्थाने प्रत्युपेक्षितोपधेः स्थापनं निक्षेपो ऽस्थानस्थापना प्रस्फोटना प्रकर्षेण धूननं रेणुगुंडित स्ये व वस्त्रस्येति इयच चतुर्थी ॥ विक्खित्तत्ति ॥ वस्त्र प्रत्युपेक्ष्य ततो न्यत्र यमनिकादौ प्रक्षिपति य दथवा वस्त्राञ्चलादीना यदूर्द्ध्वक्षेपण सा विक्षिप्तोच्यते ॥ वेइयत्ति ॥ वेदिका पंचप्रकारा तत्र ऊर्द्धवेदिका यत्र जानुनो रुपरि हस्तौ कृत्वा प्रत्युपेक्षते १ अधोवेदिका जानुनो रधो हस्तौ निवेश्य २ एव तिर्य ग्वेदिका जानुनोः पार्श्वतो हस्तौ नीत्वा ३ द्विधावेदिका बाह्वो रंतरे द्वे अपि जानुनी कृत्वा ४ एकतोवेदिका एकं जानु बाह्वो रतरे कृत्वेति ५ षष्ठी प्र मादप्रत्युपेक्षणेति प्रक्रमः इहगाथे वितहकरणंमितुरिय अणअणचगेगह आरभडा अतोध्वहोज्जकोणा निसियणतत्थेवसम्मद्दा ॥ १ ॥ गुरुउग्गहादट्ठाण प प्फोडणरेणुगुंडिएचेव विक्खेवतुक्खेवो वेइयपणगंचछद्दोसत्ति ॥ २ ॥ उक्तविपरीता प्रत्युपेक्षणा मेवाह ॥ छव्विहेत्यादि ॥ षड्विधा अप्रमादेन प्रमादविप र्ययेण प्रत्युपेक्षणा अप्रमाद प्रत्युपेक्षणा प्रज्ञप्ता तद्यथा ॥ अणच्चागाहा ॥ वस्त्रमात्मावा न नर्त्तित न नृत्यदिवकृत यत्र तदनर्त्तित प्रत्युपेक्षण १ वस्त्र न र्त्तय त्यात्मानचे त्येय मिह चत्वारो भगाः तथा वस्त्र शरीरंवा न चलित कृत यत्र त दचलित मिहापि तथैव चतुर्भङ्गी २ तथा न विद्यते अनुबन्धः

णीचउत्थी विक्खित्तावेइयाछठा ॥ १ ॥ छव्विहा अप्पमाय पडिलेहा पण्णत्ता तंजहा अणच्चावियं अचलितं अणाणुबंधीममोसलिंचेव छप्पुरिमाणवखोडा पाणीपाणविसोहणी ॥ १ ॥ छ लेसाउ पण्णत्ता तजहा कराह

रखो गूढवस्त्र राखे २। चोथी प्रष्फोटनी वस्त्रने झाटके ४। व्याक्षिप्त अन्यत्र ऊंचो नींचो नांखे ५। वेदिका ढींचण ऊपर हाथ राखे ६ ॥ १ ॥ छ प्रकारे अप्रमाद पडिलेहणा कही ते कहेछे पडिलेहतो वस्त्र नचावे नथी १। वस्त्र शरीर नचावे नथी २। अत्यत झाटकवानो अनुबधनथी ३। ति

सातत्य प्रस्फोटकादीनां यत्र त दनुबंधि इनसमासांतोत्र इस्व: नानुबंधि अननुबंधीतिवा २ तथा न विद्यते मोसली उक्तलक्षणा यत्र त दमोसलि ४ ॥ छप्पुरिमानवखोडत्ति॥ तत्र वस्त्रे प्रसारिते सति चक्षुषा निरूप्य तदर्वाग्भाग परावर्त्य निरूप्यच त्रय: पुरिमा: कर्त्तव्या: प्रस्फोटकाइत्यर्थ: तथा तत्परावर्त्य चक्षुषा निरूप्यच पुन रपरे त्रय: पुरिमा एवमेते षट् तथा नवखोटका स्तेच त्रय स्त्रय: प्रमार्जनानां त्रयेणत्रयेणां तरिता: कार्याइति पदद्वयेनापि पचमी अप्रमादप्रत्युपेक्षणोक्ता पुरिमखोटकानां सद्दशलादिति तथा पाणे हंस्तस्यो परि प्राणानां प्राणिनां कुंथ्वादीनामित्यर्थ: ॥ विसोहणत्ति॥ विशोधना प्रमार्जना प्रत्युपेक्षमाणवस्त्रेणैव कार्या नवैववारा उक्तन्यायेन खोटकान्तरितेति षष्ठी प्रमादप्रत्युपेक्षणेति इहगाथे वत्थेअप्पाणमिय चउहअणच्चावियअचलियच अणुवधिनिरतरया तिरिउट्टहवट्टणामुसली ॥ १ ॥ छप्पुरिमातिरियकए नवखोडातिखितिखिअंतरिया तेपुणवियाणियव्वा हत्थमिपमज्जणत्तिपए ॥ २ ॥ इयच प्रमादाप्रमादप्रत्युपेक्षा लेश्या विशेषतो भवतीति लेश्यासूत्र लेश्याधिकारादेव पंचेंद्रियतिर्यग्मनुष्यदेवलेश्यासूत्राणि देवप्रत्यासत्त्या ॥ सक्केत्यादिकानि॥ अग्रमहिष्यादिसूत्राणिवा अग्रहमतिसूत्रा दर्वा ग्वर्त्तीनि कण्ठ्यानिच नवर देवाना जात्यपेक्षया अवस्थितरूपा: षड्लेश्या अवगतव्याइति अनन्तरदे

लेसा जाव सुक्कलेसा । पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं छ लेसाउ पसत्ताउ तंजहा कराहलेस्सा जाव सुक्कलेसा। एवं मणुस्सदेवाणवि । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारस्रो छ अग्गमहिसीउ पसत्ताउ सक्क

रवो गूढ अण ओळखो खेलयो वस्त्र नराखे ४। छप्पुरिमनवखोडा ३ वार हाथ ऊपर वली २ वस्त्र पिछुलोकरी पूंजवो इम बीजीवार एवं छवार न व खोटका इमज ५। कुंथु प्रमुख पांखी हाथमां लेई सोधवा जोवा ६ ॥ छ लेश्या कही तेकहेछे कृष्णलेश्या यावत् शुक्ल लेश्या ६ ॥ पंचेद्री तिर्यंचने

स्सणं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो ६ अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ । ईसाणस्सणं देविंदस्स मज्झिम परिसाए देवाणं ६ पलिउवमाइं ठिई प० । ६ दिसाकुमारि महत्तरियाउ पन्नत्ताउ तंजहा रूवा रूवंसा सुरूवा रूववई रूअकंता रूयप्पन्ना । ६ विज्जुकुमारि महत्तरियाउ पन्नत्ताउ तंजहा अला सक्का सतेरा सो यामणा इंदा घणविज्जुया । धरणस्सण णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो ६ अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ तं० अला सक्का सतेरा सोदामणा इदा घणविज्जुया । भूयाणंदस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो ६अग्ग महिसीउ पन्नत्ताउ तंजहा रूवा रूवसा सुरूवा रूववई रूवकंता रूयप्पन्ना । जहाधरणस्स । तहा सव्वेसि

६ लेश्या कही तेकहेछे कृष्णलेश्या यावत् शुक्ललेश्या ६ ॥ इम मनुष्य देवताने पणि कहवी ॥ शक्र देवेंद्र देवतानो राजा तेहनो सोमनामा महा राजाने ६ अग्रमहिषी कही । शक्रदेवेद्र देवताना राजानो यम महाराजा तेहने ६ अग्रमहिषी कही । ईशानेद्र देवेंद्र देवताना राजानी मध्यमपर्ष दाना देवतानी ६ पल्योपमनी स्थिति कही ॥ ६दिशाकुमारी कही ते कहेछे रूपा १ । रूपासा २ । सुरूपा ३ । रूपवती ४ । रूपकांता ५ । रूपप्र भा ६ ॥ ६ विद्युत्कुमारी महत्तरिका कही ते कहेछे आला १ । शक्रा २ । सतेरा ३ । सौदामिनी ४ । इद्रा ५ । घनविद्युता ६ ॥ धरणेद्र नागेद्र ना गकुमारना राजाने ६ अग्रमहिषी कही आला १ । शक्रा २ । सतेरा ३ । सौदामिनी ४ । इंद्रा ५ । घनविद्युता ६ ॥ भूतानेद्र नागकुमारना राजाने ६ अग्रमहिषी कही तेकहेछे रूपा १ । रूपासा २ । सुरूपा ३ । रूपवती ४ । रूपकाता ५ । रूपप्रभा ६ ॥ एम जिम धरणेद्रने तिम सघलाई दक्षि

व वक्तव्यतोक्ता देवाश्च भवप्रत्यया देवविग्रिष्टमतिमंतो भवंतीति मतिभेदान् सूत्रचतुष्टयेनाह ॥ छव्विहाउग्गहेत्यादि ॥ मतिराभिनिबोधिकं सा चतुर्विधा अवगृहेहापायधारणाभेदा तत्रा वगृहः प्रथमं सामान्यार्थगृहणं तद्रूपा मति रवगृहमति रियंच द्विविधा व्यञ्जनावगृहमति रर्थावगृहमतिश्च तत्रा र्थावगृहमति र्द्विधा निश्चयतो व्यवहारतश्च तत्रव्यजनावगृहोत्तरकाल मेकसामयिकी प्रथमा द्वितीया त्वन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणा अवायरूपा अपि सा ईहापाययो रुत्तरयोः कारणत्वा दवगृहमति रित्युपचरितेति यत आह सामण्णमित्तगहणनिच्छइओसमयमोग्गहोपढमो तत्तोणतरमीहिय वत्थुविसेसस्सजोवाओ ॥१॥ सोपुणईहावाया वेक्खाओअवग्गहोत्तिउवयरिओ ॥ एसविसेसाविक्ख सामण्णंगिण्हएजेण ॥ २ ॥ तत्तोणतरमीहा तत्तोवाओयतव्विसेसस्स इयसामण्णविसेसा वेक्खाजावतिमोभेओ ॥३॥ सव्वत्थेहावायो निच्छयओमोत्तुमाइसामण्णं सववहारत्थपुण सव्वत्थावग्गहोवाओ ॥ ४ ॥ तरतमजोगाभावे वाओव्वियधारणा

दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स । जहाभूयाणंदस्स । तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स । धरणस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो छ सामाणियसाहस्सीउ पन्नत्ताउ एव भूयाणंदस्सवि जाव महाघोसस्स छव्विहा उग्गहमई प० तं० खिप्पमोगिण्हई बहुमोगिण्हइ बहुविधमोगिण्हइ धुवमोगिण्हइ अणिस्सि

ण दिशाना इंद्रने यावत् घोषने जिम भूतानेंद्रने तिम सर्व उत्तर दिशाना इंद्रने यावत् महाघोषने ॥ धरण नागकुमारना राजाने छहजार सामानिकदेवता कह्या ॥ एम भूतानेंद्रने पणि यावत् घोषने ॥ छ प्रकारे अवग्रहमती कही प्रथम सामान्यार्थ ग्रहणरूपा मती तेकहेछे शीघ्र अर्थने ग्रहण करे जाणे १ । घणी वेलाये ग्रहण करे २ । घणे प्रकारे ग्रहण करे ३ । अत्यंत पणे सर्वदा ग्रहण करे ४ । लिंगचिह्न अनुमाने करी ग्रहण करे ५

१० ॥ तदंतंमि सव्वत्थवासणापुण भणियाकालंतरसइयत्ति ॥ ५ ॥ तत्र व्यवहारावग्रहमति माश्रित्य प्रायः षड्विधत्वं व्याख्येयमिति तद्यथा क्षिप्र मेव गृह्णाति
ए॥ तूल्यादिस्पर्शं क्षयोपशमपटुता दचिरेणैववेत्ति मति स्तद्विशिष्टः पुरुषोवेति ॥ बहुति ॥ शय्यायां ह्युपविश्य न्पुमां स्तत्रस्थयोषित्पुष्पचंदनवस्त्रादिस्पर्शं बहु भिन्नजातीयं सत मेकैकं भेदेना वबुध्यते अय योषित्स्पर्शइत्यादि ॥ बहुविहंति ॥ बह्वयो विधा भेदा यस्य स बहुविध स्त योषिदादिस्पर्श मेकैकं शीतस्नि ग्धमृदुकठिनादिरूप मवगृह्णातीति ॥ धुवंति ॥ ध्रुव मत्यंतं सर्वदेत्यर्थः यदा यदा अस्य तेन स्पर्शेन योषिदादिना योगो भवति तदा तदा त मवच्छिन्नत्ती त्यर्थ एतदुक्तं भवति सतींद्रिये सति चोपयोगे यदा सौ विषयः स्पृष्टो भवति तदा त मवगृह्णात्येवेति ॥ अणिस्सियंति ॥ निश्रितो लिंगप्रमितो भिधीय ते यथा यूथिकाकुसुमाना मत्यन्त शीतमृदुस्निग्धादिरूपः प्राक्स्पर्शो ऽनुभूत स्तेना नुमानेन लिङ्गेन त विषय मपरिच्छिंद यदा ज्ञान प्रवर्त्तते तदा अ निश्रित मलिंग मवगृह्णाती त्यभिधीयते ॥ असंदिद्धंति ॥ असदिग्धं निश्चित सकलसंशयादिदोषरहितमिति यथा तमेव योषिदादिस्पर्श मवगृह्णत् योषि त एवाय चंदनस्यैवाय मित्येव मवगृह्णातीति एव मीहावायधारणामतीनां षड्विधत्व नवर धारणायां क्षिप्रध्रुवपदे परित्यज्य पुराणदुर्धरपदाभ्या सह षड्विधत्व मुक्त तत्रच पुराण बहुकालीन दुर्धर गहनं चिरादीति क्षिप्रबहुबहुविधादिपदषट्कविपर्ययेणापि षड्विधा अवग्रहादिमति र्भवतीति मतिभे दाना मष्टाविंशते र्द्वादशभि र्गुणना त्त्रीणिशतानि षट्त्रिंश दधिकानि भवंति अभाणिच भाष्यकारेण जबहु १ बहुविह २ खिप्पा ३ णिस्सिय ४ निच्छि

यमोगिण्हइ असंदिद्धमोगिण्हइ । छव्विहा ईहामई पन्नत्ता तंजहा खिप्पमीहइ बहुमीहइ जाव असंदि

संदेहरहित ग्रहण करे ६ ॥ छ प्रकारे ईहामति कही विचारणारूप ते कहेछे शीघ्र विचारणा करे १ । घणी वार ईहाकरे २ । यावत् पूर्वनी परे सं

य ५ ध्रुवे ६ यर १२ विभिणा पुणरोगहाद्ग्रोसो तंछत्तीसत्तिसयभेदंति ॥ १ ॥ नाणासद्दसमूहं बहुंपिहुंमुणइभिणजाईयं १ बहुविहमणेगभेयं एक्केक्कंनि द्धमहुरादि २॥ २॥ खिप्पमचिरेण ३ तचिय सरूवग्रोजग्रणिस्सियमलिग ४ निच्छयमससयजं ५ धुवमच्चतनउकयाइ ६ ॥ ३ ॥ एत्तोच्चियपडिवक्खं साहे ज्जानिस्सिएविसेसोवा परधम्मेहिविनिरसं निस्सियमविनिस्सियइयरति ॥ ४ ॥ इह भावना अचिप्रं चिरेण निश्रितं लिंगात् अनिश्रितं सदिग्ध मध्रुवं क दाचि दथवा निश्रितानिश्रितयो रय मपरो विशेषः निश्रितं गृह्णाति गवादिक मर्थं सारगादिधर्म्मविशिष्ट मवगृह्णाति अनिश्रितं गा द्गोर्धर्मो रविशि ष्टं गृह्णाति यदिह नस्पृष्टं तत् स्पष्टमेवेति अनतर मतिरुक्ता तद्विशेषवतश्च तपस्यन्तीति तपोभिधानाय सूत्रद्वय ॥ छव्विहेत्यादि ॥ गतार्थं एत त्तथापि कि ञ्चि दुच्यते ॥ वाहिरएतवेत्ति ॥ बाह्य मित्यासेव्यमानस्य लौकिकै रपि तपस्तया ज्ञायमानत्वात् प्रायो बहिः शरीरस्य तापकत्वाद्वा तपति दुनोति शरीर

ग्रमीहइ। छव्विहा ग्रवायमई पन्नत्ता तंजहा खिप्पमवेइ जाव ग्रसंदिद्धं ग्रवेइ । छव्विहा धारणा पन्नत्ता तंजहा बहुधारेइ बहुविहंधारेइ पोराणं धारेइ दुद्धरंधारेइ ग्रणिस्सियंधारेइ ग्रसदिद्धंधारेइ । छव्विहे वाहिरएतवे पन्नत्ते तंजहा ग्रणसणं ग्रोमोयरिया भिक्खायरिया रसपरिच्चाए कायकिलेसो पडिसंलीणया ।

देहरहित ईहा करे ६ ॥ छ प्रकारे अवायमति कही निश्चयरूप तेकहेछे शीघ्र निश्चय करे १ । यावत् संदेहरहित निश्चयकरे ६ ॥ छप्रकारे धारणा कही तेकहेछे घणुंधारणा करे १ । घणे प्रकारे धारे २ । जूनीवात धारे ३ । दुर्द्धर धारे ४ । अनिश्रित धारे ५ । संदेहरहित धारे ६ ॥ छप्रकारे बा ह्य तप कह्यो तेकहेछे उपवास १ ॥ ऊनोदरी २ ॥ विगयसंक्षेप ३ ॥ रसपरित्याग ४ ॥ कायक्लेश ५ ॥ प्रतिसंलीनता ६ ॥ छ प्रकारे अभ्यंतर तप क

ठा० ॥

२० ॥

कर्म्माणि य त्त त्तप इति तत्रानशन मभोजन माहारत्याग इत्यर्थः स द्विधा इत्वरं याव त्कथिकंच तत्रेत्वरं चतुर्थादिषण्मासांत मिदं तीर्थमाश्रित्येति याव त्कथिक त्वाजन्मभावि त्रिधा पादपोपगमनेंगितमरणभक्तपरिज्ञाभेदा देतच्च प्राय व्याख्यातमिति ॥ ओमोयरियत्ति ॥ अवम मून मुदरं जठर मव मोदरं तस्य करण मवमोदरिकेति साच द्रव्यत उपकरणभक्तपानविषया प्रतीता भावतस्तु क्रोधादित्याग इति तथा भिक्षार्थं चर्या चरण मटन भिक्षा चर्यासैव तपो निर्जरांगत्वा दनशनव दथवा सामान्योपादानेपि विशिष्टा विचित्राभिग्रहयुक्तत्वेन वृत्तिसंक्षेपरूपा सा ग्राह्या इहैव वक्ष्यति ॥ गोयरचरियत्ति ॥ नचेय ततोत्यत भिन्नेति भिक्षाचर्यायां चाभिग्रहा द्रव्यादिविषयतया चतुर्विधा स्तत्र द्रव्यतो लेपकार्य्येव द्रव्यं ग्रहीष्ये क्षेत्रत: परग्रामगृहपचकादिलब्धं कालत: पूर्वाह्णादौ भावतो गानादिप्रवृत्ता ल्लब्धमिति रसा: क्षीरादय स्तत्परित्यागो रसपरित्याग: कायक्लेश' शरीरक्लेशन सच वीरासनादि रनेकधा प्रतिसलोनता गुप्तता साचेन्द्रियकषाययोगविषया विविक्तशयनासनता वेति ॥ अभिंतरएत्ति ॥ लौकिके रनभिलक्ष्यत्वा त्तत्रा न्तरीयैश्च परमार्थतो अना सेव्यमानत्वा न्मोक्षप्राप्त्यंतरंगत्वाच्चा भ्यतरमिति प्रायश्चित्त मुक्तं निर्वचन मालोचनादिदशविधमिति विनीयते कर्म्म येनेति स विनय उक्तंच जम्हाविण यइकम्म अठविहंचाउरंतमोक्खाए तम्हाउवयतिविऊ विणयतिविलीणसंसारत्ति ॥ १ ॥ सच ज्ञानादिभेदात् सप्तधा वक्ष्यते तथा व्यावृत्तभावो वैयावृत्त्य धर्म्मसाधनार्थं मन्नादिदानमित्यर्थः आहच , वेयावच्चंवावड भावोइहधम्मसाहणनिमित्तं अन्नाइयाणविहिणा संपायणमेसभावत्थोत्ति ॥ १ ॥ तच्च दशधा

छव्विहे अब्भतरिए तवे पन्नत्ते तंजहा पायच्छित्तं विणए वेयावच्चं सज्झाए झाणं विउस्सग्गो । छव्विहे विवादे

छयो तेकहेछे प्रायश्चित लेवो १ ॥ विनय करवो २ ॥ वेयावच करवो ३ ॥ तिम सिज्झाय करवो ४ ॥ ध्यान करवो ५ ॥ कायोत्सर्ग करवो ६ ॥ छप्र

आयरियउवज्झाए थेरतवस्सीगिलाणसेहाणं साहम्मियकुलगणसं घसंगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ सुष्टु आ मर्यादया अध्यायो ऽध्ययनं स्वाध्यायः सच पंचध वाचना प्रच्छना परिवर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथाचेति ध्याति ध्यान मेकाग्रचित्तनिरोध स्तच्चतुर्द्धा प्राग्व्याख्यातं तत्र धर्म्मशुक्ले एव तपसी निर्जरार्थत्वा न्नेतरे बंधहेतुत्वादिति व्युत्सर्गः परित्यागः सच द्विधा द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो गणशरीरोपध्याहारविषयो भावतस्तु क्रोधादिविषयइति एतेच तपसूत्रे दृष्ट कालिका द्विशेषतो अवसेयाइति अनन्तरोदितार्थेषु विवदते कश्चिदिति वादस्वरूपमाह ॥ छव्विहेत्यादि ॥ षड्विधः षड्भेदो विप्रतिपन्नयोः क्वचि दर्थ वादी जल्पो विवादः प्रज्ञप्त स्तद्यथा ॥ ओसक्कइत्तत्ति ॥ अवष्वष्क्य अपसृत्या वसरलाभाय कालहरणं कृत्वा यो विधीयते स तथो च्यत एव सर्वत्र क्वचिच्च ॥ उस्सक्कावइत्तेत्ति ॥ पाठ स्तत्र प्रतिपथिन केनापि व्याजेना पसर्प्यापसृतंकृत्वा पुनरवसर मवाप्य विवदते ॥ उस्सक्कइत्तत्ति ॥ उष्वष्क्य उत्सृत्य लब्धावसर तयो त्सुकीभूय ॥ उस्सक्कावइत्तत्ति ॥ पाठान्तरे पर मुत्सुकीकृत्य लब्धावसरो जयार्थी विवदते तथा ॥ अणुलोमइत्तत्ति ॥ विवादाध्यक्षान् सामनीत्या नु लोमान् कृत्वा प्रतिपथिनमेववा पूर्वं तत्पक्षाभ्युपगमेना नुलोम कृत्वा ॥ पडिलोमइत्ता ॥ प्रतिलोमान् कृत्वा अध्यक्षान् प्रतिपथिनवा सर्वथा सामर्थ्येसतीति ॥ तथाभइत्तत्ति ॥ अध्यक्षान् भंक्त्वा ससेव्य तथा ॥ भेलइत्तत्ति ॥ स्वपक्षपातिभि र्मिश्रा न्कारणिकान् कृत्वेति भावः क्वचित् ॥ भेयइत्तत्ति ॥ पाठ स्तत्र भेदयित्वा केनाप्युपायेन प्रतिपथिनप्रति कारणिकान् द्वेषिणो विधाय स्वपक्षग्राहिणोवेतिभावः विवादच कृत्वा ततो प्रतिक्राता केचित् क्षुद्रसत्वेषु त्पद्यं

पन्नत्ते तंजहा उसक्काइत्ता उस्सक्काइत्ता अणुलोमइत्ता पडिलोमइत्ता भइत्ता भेलइत्ता । छव्विहा खुद्दापाणा

कारे विवाद कह्यो तेकहेछे अवसर जांणी एकवार ओसरी विवाद करे १ ॥ उत्सकथई वादकरे २ ॥ सामनीते तेहनोज वचन पकडी विवादकरे ३ ॥

तदति तान्निरूपय माह ॥ छव्विहेत्यादि ॥ सुगमं पर मिह क्षुद्रा अधमा यदाह अल्पमधमंपणस्त्री क्रूरंसरघांनटीत्रषट्क्षुद्रान् ब्रुवतइति अधमत्वंच वि कलेंद्रियतेजोवायूना मनतरभवे सिद्धिगमनाभावा यतउक्त भूदगपकप्पभवा थोरोहरियाउवत्रसिज्झेज्जा विगलालभेज्जविरइं नउकिंचलभेज्जसुहुमतसा सूक्ष्मत्रसा स्तेजोवायवइति तथा एतेषु देवानुपपत्तेश्च यतउक्त पुढवीआउवणस्सइ गब्भेपज्जत्तसखजीवीसु सग्गुच्चुयाणवासो सेसापडिसेहियाठाणत्ति ॥१॥ संमूर्च्छिमपचेंद्रियतिरश्चांवा धमत्व तेषु देवानु त्पत्ते स्तथा पचेन्द्रियत्वे प्यमनस्कतया विवेकाभावेन निर्गुणत्वादिति वाचनांतरेतु सिंहा व्याघ्रा वृका दीपिका ऋक्षाइति क्षुद्रा उक्ताः क्रूराइत्यर्थः अनतरं सत्वविशेषा उक्ताः सत्वानां चानपायतः साधुना भिक्षाचर्याकार्येति साच षोढेति दर्शयन्नाह ॥ छव्वि हेत्यादि ॥ गोयरचरियत्ति ॥ गो र्बलीवर्दस्य चरण चरी गोचर स्तद्वया सा चर्या चरण सा गोचरचर्या इदमुक्तं भवति यथा गो रुच्चनीचत्वणे ष्वविशेषत श्चरण प्रवर्त्तते तथा य त्साधो ररक्ता द्विष्टस्यो श्चनीचमध्यमकुलेषु धर्मसाधनदेहपरिपालनाय भिक्षार्थं चरणं सागोचरचर्येति इय चैकस्वरूपा प्यभिग्रहविशे षात् षोढा तत्र प्रथमा पेटा वंशदलमय वस्त्रादिस्थान जनप्रतीत साच चतुरस्रा भवति स्थापना [] ततश्च साधु रभिग्रहविशेषा द्यस्यां चर्यायां ग्रामादिक्षे

पन्नत्ता तंजहा बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया तेउकाइया वाउकाइया ।
छव्विहा गोयरचरिया पण्णत्ता तंजहा पेढा अद्धपेढा गोमुत्तिया पतंगवीहिया संबुक्कवट्टा गंतुपच्चागया ।

प्रतिकूल वचने विवाद करे ४ ॥ एकवार भोगवी पछे विवाद करे ५ ॥ मांहि भली जई पछे विवाद करे ६ ॥ छ प्रकारे क्षुद्र अधम प्राणी कह्या ते कहेछे बेइंद्री तेइंद्री चोइंद्री समूर्च्छिम एकेंद्रीतिर्यंच योनिया तेउकाय वायुकाय ६ ॥ छ प्रकारे गोचरी कही तेकहेछे पेढा वासनुं स्थानक १ ॥ अ

त्रं पेटाव च्चतुरस्रं विभज न्विहरति सा पेटेत्युच्यते एव मर्द्धपेटापि एतदनुसारेण वाच्या गो मूत्रणं गोमूत्रिका तद्व द्या सा तथा इयंहि परस्पराभिमुख गृहपङ्क्त्यो रेकस्यां गत्वा पुन रितरस्यां पुन स्तस्या मेवे त्येवं क्रमेण भावनीया पतगः सलभ स्तस्य वीथिका मार्ग स्तद्व द्या सा तथा पतंगगतिर्हि अनिय तक्रमा भवति एवं या नाश्रितक्रमा तथा ॥ संबुक्कवट्टत्ति ॥ सबुकः शंखः तद्व च्छखम्रमिव द्वित्यर्थो या वृत्ता सा सबुक्कवृत्तेति इयंच द्वेधा तत्र यस्यां चेत्र बहिर्भागा च्छंखवृत्तत्वगत्या अटन् चेत्रमध्यभाग मायाति सा भ्यंतरसंवुक्का यस्यां तु मध्यभागा द्वहिर्याति सा बहिः संवुक्केति ॥ गतुपच्चागयत्ति ॥ उपाश्रया न्निर्गत. स न्नेकस्यां गृहपंक्तौ भिच्चमाणः चेत्रपर्यंत गत्वा प्रत्यागच्छन् पुन र्द्वितीयायां गृहपंक्तौ यस्यां भिच्चते सागतप्रत्यागता गत्वाप्रत्यागतं यस्या मि तिच विग्रहद्दति अनंतरं साधुचर्योक्तेति चर्या प्रस्तावा दसाधुचर्याफलभोक्तृस्थानविशेषाभिधानाय सूत्रद्वयं ॥ जंबूद्दीवेत्यादि ॥ सुगमं नवरं ॥ अवक्कतत्ति ॥ अपक्रांताः सर्वशुभभावेभ्यो ऽपगता भ्रष्टा स्तदन्येभ्यो तिनिकृष्टाइत्यर्थः आपक्रांतावा अपक्रमणीयाः सर्वे प्येवमेव नरका विशेषत श्चैतदिति दर्शनार्थं विशेष णमिति संभाव्यते तेचते महानरकाश्चेति विग्रह एतेषां चैव प्ररूपणा तेरिक्कारसनवस त्त पचतिन्नेवहोंतिएक्कोय पत्थडसंखाएसा सत्तसुविकमेणपुढवीसु ॥ १ ॥ एव मेकोनपचाशत्प्रस्तटा एतेषु क्रमेणै तावत एव सीमंतकादयो वृत्ताकारा नरकेंद्रका स्तत्र सीमतकस्य पूर्वादिदिक्षु एकोनपचाशत् प्रमाणा नर कावली विदिक्षुचाष्टचत्वारिं शत्प्रमाणेति प्रतिप्रस्तटमुभयत्रैकैकहान्या सप्तम्यांदिक्ष्वेकएव विदिक्षुनसत्येवेति उक्तच एगूणवन्ननिरया सेढीसीमतगस्सपुव्वे

जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण मिमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए छच्चवक्कंतमहानिरया पसत्ता तंजहा ॥

द्धपेढा २ ॥ गोमूत्रिका ३ ॥ पतंगना मार्गनीपरे ४ ॥ शंखना आवर्त्तनी परे ५ ॥ उपासराथी मांडी भित्ता करतो छेहडे जाय पाछो वले ६ ॥ जंबू ॥

णं उत्तरओअवरेणय दाहिणओचेवबोधव्वा ॥१॥ अडयालीसंनिरया सेढीसीमंतगस्सबोधव्वा पुव्वुत्तरेणनियमा एवंसेसासुविदिसासु ॥ २ ॥ एक्केकोयदिसासु मज्झेनिरओभवेपइङाणो विदिसानिरयविरहिया तम्हारंपचमजाण ॥ २ ॥ सीमंतकास्यच पूर्वापुदिक्षु सीमंतकप्रभादयो नरका भवति तदुक्तं सीमंतग प्पभोखलु निरओसीमतगस्सपुव्वेणं सीमंतगमज्झिमओ उत्तरपासेमुणेयव्वो ॥ १ ॥ सीमंतावत्तोपुण निरओसीमंतगस्सअवरेण सीमतगावसिङो दाहिणपा सेमुणेयव्वोत्ति ॥ २ ॥ ततः पूर्वादिषु चतसृषु दिक्षु सीमतकापेक्षया तृतीयादयः प्रत्येक मावलिकासु विलयादयो नरकाभवतीति एवचैते लोलादयः षड प्यावलिकागतानां मध्ये धीता थिमाननरकेंद्रकाख्ये भन्येयत स्तत्रोक्तं लोलेतहलोलुएचेवत्ति ॥ एतो चावलिकायाः पर्यंतिमौ तथा ॥ उद्दड्ढेचेवनिद्दड्ढे ति ॥ एतौ सीमतकप्रभा दिशतितमैकविंशाविति तथा ॥ जरएतहचेवपज्जरएत्ति ॥ पंचर्विशत्तमौ केवले लोले लोलुए इत्येवं शब्दपदैः सर्वनरकाणां पूर्वा वलिकाया मेवाभिलाप उत्तरदिगावावलिकासु पुनरेभिरेव सविशेषै र्नामभि र्नरका अभिलप्यन्ते तद्यथा उत्तरायां लोलमध्यो लोलुपमध्य इत्यादि एवं पश्चिमायां लोलावर्त्तो दक्षिणायांलीलावशिष्ट इत्यादि उक्तंच मज्झाउत्तरपासे आवत्ताअवरओमुणेयव्वा सिङादाहिणपासे पुव्विल्लाओविभइयव्वत्ति ॥ १ ॥ इहतु दक्षिणाना मेषां निवक्षितत्वेन लोलानशिष्टइत्यादि न्त्वेपि सामान्याभिधानमेव निर्विशेषं विवक्षितमिति सभाव्यते ॥ चउत्थीएत्ति ॥ पक प्रभायां अपक्रातावित्यादि तथैव इहच सप्त प्रस्तटाः सप्तैव नरकेंद्रका यथोक्तं आरेमारेणारे तत्थेयमएयहोइबोधव्वे क्खोडखडेयखडखडे इंदयनिरयाच

लोले लोलुए उद्दड्ढे निद्दड्ढे जरए पज्जरए । चउत्थीएणं पकप्पभाए पुढवीए छ अवक्कंतमहानिरया प० तं०

द्वीपमा मेरुपर्वतने दक्षिणदिशि आ रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे छ अक्रमनीय माठा मोटा नरक कह्या ते कहेछे लोल १ ॥ लोलुक २ ॥ उदग्ध ३ ॥

उत्थीएत्ति ॥ १ ॥ तदेवं आरा मारा खाडखडा नरकेंद्रका अन्येतु वाररोररोरुकाख्या स्वयः प्रकीर्णका अथवा इन्द्रका एव नामान्तरै रुक्तादृति संभाव्य तद्गति अनतर मसाधुचर्याफलभोक्तृलस्थाना न्युक्तानी तथ साधुचर्याफलभोक्तृस्थानविशेषमाह ॥ बभेत्यादि ॥ बंभलोएत्ति ॥ पचमदेवलोके षडेव विमान प्रस्तटाः प्रज्ञप्ता आहच तेरसवारस २ छप चचेवचत्तारि चउसुकप्पेसु गेविज्जेसुयतियतिय एगोयअणुत्तरेसुभवेत्ति ॥ १ ॥ सर्वेपि ६२ तद्यथा ॥ अर जाइत्यादि ॥ सुगममेवेति अनतर विमानवक्तव्यतोक्तेति तत्प्रस्तावा न्नक्षत्रविमानवक्तव्यता सूत्रत्रयेणाह ॥ चदस्सेत्यादि ॥ व्यक्त न्नवर ॥ पुव्वभागत्ति ॥ पू र्वभागेना ग्रेणेत्यर्थः ४ भज्यंते अप्राप्तेनैव चंद्रेण सेव्यते भुज्यते युज्यत इतियावदिति पूर्वभागानि अनुस्वारश्च प्राकृतत्वादिति चंद्रस्याग्रयोगीनि चंद्र ए ता न्यप्राप्तो भुक्तइति लोकश्रीप्रोक्ता भावनेति उक्तञ्चतत्रैव पुव्वातिखियमूलो मह्वकित्तियअग्गिमाजोगत्ति ॥ सम स्थूलन्याय माश्रित्य त्रिंशन्मुहूर्त्तभो

आरे वारे मारे रोरे रोरुए खाडखडे । बंभलोएणं कप्पे छविमाणपत्थडा प० तं० अरए विरए नीरए निम्मले वितिमिरे विसुद्धे । चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता प० तंजहा पुव्वाभद्दवया कत्तिया महा पुव्वाफग्गुणी मूलो पुव्वासाढा । चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो

निर्दिष्ट ४ ॥ जरक ५ ॥ प्रजरक ६ ॥ चउथी पकप्रज्ञा पृथ्वीने विषे छ अवक्रांत घणा मांठा नरक कहिया तेकहेछे आर १ ॥ वार २ ॥ मार ३ ॥ रोर ४ रोरुय ५ ॥ खाडखड ६ ॥ पांचमा ब्रह्मदेवलोकमां छविमानना पाथडा कहिया ते कहेछे अरत १ ॥ विरत २ ॥ नोरत ३ ॥ निर्मल ४ ॥ विति मिर ५ ॥ विशुद्ध ६ ॥ चद्रमा ज्योतिषीनुं इंद्र ज्योतिषीना राजाने छनक्षत्र पूर्वने भागे समक्षेत्रछे त्रीसमुहूर्तना कह्या ते कहेछे पूर्वभाद्रपद १ ॥ कृ

ग्यं चेत्र माकाशप्रदेशलचणं येषां तानि समचेत्राणि अतएवाह त्रिंशन्मुहूर्त्तानि त्रिंशतं मुहूर्त्ता संद्रभोगो येषांतानि तथा ॥ पत्तंभागत्ति ॥ नक्त भागा नि चन्द्रस्य समयोगीनीत्यर्थं उक्तञ्च अट्ठासेसासाई सयभिसमभिई्यजेट्ठसमजोगा ॥ केवल भरणीस्थाने लोकश्रीसूत्रे अभिजि दुक्तेति मतविशेषो दृश्यत इति अपार्द्ध समचेत्रापेचया अर्द्धमेव चेत्रं येषांतानि तथा अर्द्धचेत्रत्वमेवाह पचदशमुहूर्त्तानीति ॥ उभयभागत्ति ॥ चद्रेणो भयत उभयभागाभ्या पूर्वत' पश्चाच्चे त्यर्थो भज्यते भुज्यन्ते यानि ता न्युभयभागानि चद्रस्य पूर्वत: पृष्टतश्च भोग मुपगच्छतीत्यर्थ इति भावना लोकश्रीभणितेति उक्तञ्च उत्तरतिग्वि विसाहा पुणव्वसूरोहिणीउभयजोगत्ति ॥ द्वितीय मपार्द्धं यत्र त द्वापार्द्ध सार्द्धमित्यर्थ. चेत्र येषां तानि तथा यत' पचचत्वारिशन्मुहूर्त्तानीति अन्यानि दश पश्चिमयोगीनि पूर्वभागादिनचत्राणा गुणीय उक्तक्रमेण नचत्रे युंज्यमानस्तु चद्रमा: सुभिचकृ द्विपरीत युज्यमानो न्यथा भवेदिति अनंतर चद्रव्यतिकर उक्त

छणक्खत्ता णक्खत्तभागा अवड्ढक्खेत्ता पन्नरसमुहुत्ता पन्नत्ता तंजहा सयभिसया भरणी अद्दा असेसा साइ जेठा । चदस्सण जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसमुहुत्ता पन्नत्ता तजहा रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा उत्तराभद्दवया । अभिचदेणं कुलकरे छधणुस

त्तिका २ ॥ मघा ३ ॥ पूर्वाफाल्गुनी ४ ॥ मूल ५ ॥ पूर्वाषाढा ६ ॥ चद्रमा ज्योतिषीना इद्र ज्योतिषीना राजाने छनक्षत्र नक्षत्रभागे समयोगना अर्द्ध क्षेत्रना पनर मुहूर्त्तना कह्या ते कहेछे शतभिषा १ ॥ भरणी २ ॥ आर्द्रा ३ ॥ अश्लेषा ४ ॥ स्वाति ५ ॥ ज्येष्टा ६ ॥ चद्रमा ज्योतिषना राजा ज्योति षीना इद्रने छनक्षत्र उभयभागे हेठे क्षेत्रे आगल पाछल भोग प्रते पामेछे पैंतालीस मुहूर्त्तना कह्या ते कहेछे रोहिणी १ ॥ पुनर्वसु २ ॥ उत्तराफाल्गु

इति किंचिच्छब्दसाधर्म्या त्तद्वंशसाधर्म्याद्वा ऽभिचंद्रकुलकरसूत्र तद्वंशजन्मसंबन्धा द्भरतसूत्रं पार्श्वनाथसूत्रंच जिनसाधर्म्या द्वासुपूज्यसूत्र चद्रप्रभसूत्रचाह सु
गमानि चैतानि नवर अभिचंद्रो मुष्या मवसर्प्पिण्यां चतुर्थः कुलकरः ॥ चाउरंतत्ति ॥ चत्वारों ता. समुद्रत्रयहिमवल्लक्षणा यस्याः सा चतुरंता पृथ्वी त
स्या अयं स्वामीति चातुरंतः सचासौ चक्रवर्त्तीचेति चातुरंतचक्रवर्त्ती षट्पूर्वशतसहस्राणि तल्लक्षणानि पूर्वन्तु चतुरशीति र्वर्षलक्षाणां तद्गुणेति ॥ आदा
णीयस्सेत्ति ॥ आदीयत उपादीयत इत्यादानीय उपादेयइत्यर्थः पुरुषाणा मध्ये आदानीयः पुरुष स्वा सा वादानीयश्चेतिवा पुरुषादानीय स्तस्य चंद्रप्रभस्य
षण्मासा निहछद्मस्थपर्यायो दृश्यत आवश्यकेतु पद्मप्रभस्यासौ पठ्यते चद्रप्रभस्यतुत्रोनिति मतांतरमिदमिति छद्मस्थ श्चेंद्रियोपयोगवान् भवती तीन्द्रियप्र
त्यासत्या त्रीन्द्रियाश्रित सयम मसंयमञ्च प्रतिपादयन् सूत्रद्वयमाह ॥ तेइंदिएत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर ॥ असमारभमाणस्सत्ति ॥ अव्यापादयतः ॥ घाणामा

याइं उद्धंउच्चत्तेणं होत्था भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी छपुव्वसयसहस्साइं महाराया होत्था । पासस्सणं
अरहओ पुरिसादाणीयस्स छस्सया वाईणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं संपया होत्था । वासु
पुज्जेणं अरहा छहि पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे जाव पव्वइए । चंदप्पभेणं अरहा छम्मासा छउमत्थे होत्था ।

नी ३ ॥ विषाखा ४ ॥ उत्तराषाढा ५ ॥ उत्तराभाद्रपद ६ ॥ अभिचंद्र नामा कुलकर छसे धनुष ऊंचो ऊंचपणे थयो ॥ भरतराजा चातुरंत चक्रवर्त्ति
छ लाख पूर्वलगे महाराजा थया चक्रीपद भोगवियो ॥ पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादाणीने ६०० छसेवादी थया ॥ देवता सहित मनुष्य असुरनी पर्ष
दामा अपराजित अजेय ॥ वासुपूज्य अरिहत ६०० छसे पुरुष संघाते दीक्षा लीधी मुंडथया ॥ चंद्रप्रभ अरिहंत ६ महीना छदमस्थ रह्या ॥ तेइंद्री

श्रोत्ति ॥ घ्राणमया त्सौख्यात् गन्धोपादानरूपात् अव्यपरोपयिता अभ्रंशकता घ्राणमयेन गन्धोपलभाभावरूपेण दुःखेना संयोजयिता भवति इहचा व्यप रोपण मसयोजनञ्च संयमो ऽनाश्रवरूपत्वा दितर इसयमइति इयंच सयमासयमप्ररूपणा मनुष्यक्षेत्रएवेति मनुष्यक्षेत्रगत षट्स्थानकावतारि वस्तुप्ररूप

तेइंदियाणं जीवा ऋसमारंनमाणस्स बव्विहे संजमे कज्जइ तंजहा घाणामाउ सोरकाउ ऋववरोवेत्ता नवइ घाणामएणं दुरकेणं ऋसंयोगेत्ता नवइ जिप्नामयाउ सोरकाउ ऋववरोवेत्ता नवइ एवंचेव फासामयाउवि तेइंदियाणं जीवा समारननमाणस्स बव्विहे ऋसंयमे कज्जइ तंजहा घाणामाउ सोरकाउ ववरोवेत्ता नवइ घाणामएणं दुरकेणं संजोयेत्ता नवइ जाव फासमएणं दुरकेणं संजोयेत्ता नवइ । जंबूद्दीवेदीवे ब ऋकम्म नूमीउ पन्नत्ताउ तजहा हेमवए हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे देवकुरा उत्तरकुरा । जबूद्दीवेदीवे बवासा पन्नत्ता तजहा नरहे एरवए हेमवए हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे । जबूद्दीवे ब वासहरपव्वया पन्नत्ता

जीवना आरम्न अणकरवाने ब प्रकारे संयम कह्यो ते कहेंछे घ्राण नासिकाना सुखथी हणे नथी जुदोनकरे १ ॥ नासिकाना दुखथी जोडे नथी २ ॥ जीभना सुखथी अलगो नकरे ३ ॥ इमज स्पर्शनेंद्रीनापणि ॥ ते इंद्री जीवना आरम्न करताने ब प्रकारे असंयम कह्यो ते कहेंछे नासिकाना सुखथी अलगो करे नासिकाना दुखथी जोडे यावत् फरसनेंद्रीना सुखथी अलगो करे फरसनेंद्रीना दुखथी जोडे ॥ जबूद्दीपमा ब अकर्म नूमि कही ते कहेंछे हेमवत १ ॥ हैरण्यवत २ ॥ हरिवर्ष ३ ॥ रम्यकवर्ष ४ ॥ देवकुरु ५ ॥ उत्तरकुरु ६ ॥ जबूद्दीपमा बवर्ष क्षेत्र कह्या ते कहेंछे भरत १ ॥

णाप्रकरण ॥ जबूद्दीवेत्यादिकं ॥ पंचपंचाशत्सूत्रमात्रमाह ॥ सुबोधं चैत न्नवरं कूटसूत्रे हिमवदादिषु वर्षधरपर्व्वतेषु द्विस्थानकोक्तक्रमेण द्वे द्वे कूटे समवसेये

तंजहा चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवते रुप्पी सिहरी। जंबूमंदरदाहिणेणं छ कूडा पन्नत्ता तंजहा चुल्लहिमवंतकूडे वेसमणकूडे महाहिमवतकूडे वेरुलियकूडे निसहकूडे रुयगकूडे। जंबूमंदरउत्तरेणं छकूडा पन्नत्ता तंजहा नीलवंतकूडे उवदसणकूडे रुप्पिकूडे मणिकंचणकूडे सिहरिकूडे तिगिच्छिकूडे। जंबूद्दीवे दीवे छ महादहा पन्नत्ता तंजहा पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिच्छिदहे केसरिदहे पुंडरीयदहे महापुंडरीय दहे। तत्थण छदेवयाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमठिईया परिवसंति तंजहा सिरि हिरि धिइ कित्ति बुद्धि

ऐरवत २ ॥ हिमवंत ३ ॥ हैरण्यवत ४ ॥ हरिवर्ष ५ ॥ रम्यकवर्ष ६ ॥ जंबूद्वीपमां छ वर्षधर पर्वत कह्या तेकहेछे चुल्लहिमवंत १ ॥ महाहिमवंत २॥ निषध ३ ॥ नीलवत ४ ॥ रूपी ५ ॥ शिखरी ६ ॥ जबूद्वीपमां मेरुथी दक्षिणदिशि छकूट कह्या ते कहेछे चुल्लहिमवतकूट १ ॥ वैश्रमणकूट २ ॥ महा हिमवंतकूट ३ ॥ वेरुलियकूट ४ ॥ निषधकूट ५ ॥ रुचककूट ६ ॥ जबूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि छकूट कह्या ते कहेछे नीलवंतकूट १ ॥ उपदर्शनकूट २ ॥ रुप्पिकूट ३ ॥ मणिकांचनकूट ४ ॥ शिखरीकूट ५ ॥ तिगिच्छिकूट ६ ॥ जबूद्वीपमां छमोटा द्रह कह्या ते कहेछे पद्मद्रह १ ॥ महापद्मद्रह २ ॥ तिगिच्छिद्रह ३ ॥ केसरीद्रह ४ ॥ महापुंडरीकद्रह ५ ॥ पुडरीकद्रह ६ ॥ तिहा छ देवी मोटी रिद्धिनी यावत् १ पल्योपम आऊखानी धणी वसेछे तेकहेछे श्री १ ॥ ह्री २ ॥ धृति ३ ॥ कीर्त्ति ४ ॥ बुद्धि ५ ॥ लक्ष्मी ६ ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी दक्षिणदिशि छ महानदी कही ते कहेछे गंगा १ ॥ सिंधू

॥ ॥ ॥ भ

इति अनन्तरोपवर्णितरूपेच क्षेत्रे कालो भवतीति कालविशेषनिरूपणाय ॥ उऊद्रत्यादि ॥ सूत्रत्रयं सुगमचेद नवर ॥ उदूत्ति ॥ द्विमासप्रमाण:कालविशेष ॥

लच्छी । जंबूमंदरदाहिणेणं छमहानईउ पन्नत्ताउ तंजहा गंगा सिधू रोहिया रोहियंसा हरी हरिकंता । जंबूमंदरउत्तरेणं छमहाणदीउ पन्नत्ताउ तंजहा णरकंता णारिकंता सुवन्नकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवई जबू मंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणदीए उभयकूले छअंतरनईउ प० तंजहा गाहावई दहवई पंकवई तत्तजला मत्तजला उम्मत्तजला। जंबूमंदरपच्चत्थिमेण सीउयाए महाणईए उभयकूले छअंतरणईउ प० त० खीरोदा सीहसोया अंतोवाहिणी उम्मिमालिणी फेनमालिणी गम्भीरमालणी। धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धेणं छअकम्म भूमीउ पन्नत्ताउ तजहा हेमवए जहाजंबुदीवे तहा जाव अंतरणईउ जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे भाणि

२ ॥ रोहिता ३ ॥ रोहितांसा ४ ॥ हरी ५ ॥ हरिकाता ६ ॥ जबूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि छ मोटी नदी कही ते कहेले नरकांता १ ॥ नारिकाता २ ॥ सुवर्णकूला ३ ॥ रूप्यकूला ४ ॥ रक्ता ५ ॥ रक्तवती ६ ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी पूर्वदिशि शीतामहानदीना बेतटे छ अंतरनदी कही ते कहेले ग्राह वती १ ॥ द्रहवती २ ॥ पकवती ३ ॥ तप्तजला ४ ॥ मत्तजला ५ ॥ उन्मत्तजला ६ ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी पश्चिमदिशि शीतोदा महानदीना उभयतटे छ अंतर नदी कही तेकहेले क्षीरोदा १ ॥ सिंहश्रोता २ ॥ अंतर्वाहिनी ३ ॥ ऊर्मिमालिनी ४ ॥ फेनमालिनी ५ ॥ गम्भीर मालिनी ६ ॥ धातकी खड ना पूर्वार्द्धमा छ अकर्मभूमि कही ते कहेले हेमवंत एम जिम जबूद्वीपे तिम यावत् अंतर नदी यावत् पुष्करवरद्वीपार्द्ध पश्चिमार्द्धमा पणि कहवी ॥

ऋतु स्तत्रा षाढश्रावणलक्षणा प्रावृट् एवं शेषाः क्रमेण लौकिकव्यवहारतः श्रावणाद्या वर्षाशरद्धेमन्तशिशिरवसंतग्रीष्माख्या ऋतवइति ॥ श्रोमरत्तत्ति ॥ अवमा हीना रात्रि रवमरात्रो दिनक्षयः ॥ पव्वत्ति ॥ अमावास्या पौर्णमासीवा तदुपलक्षितः पक्षोपि पर्व तत्र लौकिकग्रीष्मर्त्तौ यत् तृतीय पर्व आषाढक्ष णपक्ष स्तत्र सप्तम पर्व भाद्रपदकृष्णपक्ष एव मेकान्तरितमासाना कृष्णपक्षाः सर्वत्र पर्व्वाणीति उक्तञ्च आसाढबहुलपक्खे भद्दवएकत्तिएयपोसेय फग्गु णवइसाहेसुयबोधव्वाश्रोमरत्ताश्रो ॥ १ ॥ अइरत्तत्ति ॥ अतिरात्रो ऽधिकदिन दिनवृद्धिरिति यावत् चतुर्थ पर्व आषाढशुक्लपक्ष एव मिहैकांतरितमासा

यव्वं । छउदू प० तं० पाउसे वरिसारत्ते सरए हेमंते सिसिररत्ते वसते गिम्हे । छ ओमरत्ता प० तं० तइए पव्वे सत्तमेपव्वे एक्कारसमेपव्वे पन्नरसमेपव्वे एगूणवीसइमेपव्वे तेवीसइमेपव्वे । छअइरत्ता पण्णत्ता तंजहा चउत्थेपव्वे छठमेपव्वे दुवालसमेपव्वे सोलसमेपव्वे वीसइमेपव्वे चउवीसइमेपव्वे । छआभिणिबोहियणाणस्सणं

छ रितु कही ते कहेछे पावसवर्षा १ ॥ शरद २ ॥ हेमंत ३ ॥ शिशिर ४ ॥ वसंत ५ ॥ ग्रीष्म ६ ॥ छ अवमरात्रि एतले तिथिक्षय कह्या तेकहेछे अ मावस पूनिमे उपलक्षित ते पक्ष अंधारो अजुआलो पक्ष तिहां लौकिक ग्रीष्मरितुनी अपेक्षाथी त्रीजो पक्ष ते अषाढ कृष्णपक्ष तेहमा १ तिथिक्ष य । सातमो भाद्रपद कृष्णपक्ष तेहमा तिथिक्षय २ । इग्यारमोपक्ष कार्तिकबदी तेहमां तिथिक्षय ३ । पनरमो पोषमां तिथिक्षय ४ । उगणीसमां फाल्गुनकृष्णपक्षमा तिथिक्षय ५ । तेवीसमां वैशाख कृष्णपक्षमा तिथिक्षय ६ ॥ छ अतिरात्र एतले तिथिवृद्धि कही ते कहेछे चौथो पक्ष आषाढशुक्ल पक्षमा १ । आठमो पक्ष भाद्रपद शुक्लमा २ । बारमोपक्ष कार्त्तिकसुदीमा तिथिवधै ३ । सोलमो पोसशुक्लपक्षमां तिथि वधै ४ । वीसमो पक्ष फागु

नां शुक्लपक्षाः सर्वत्र पक्षाणीति अयंवा तिराश्चादिको यो ज्ञानेना वसीयते इत्यधिकृताध्ययनावतारिणो ज्ञानस्या भिधानाय सूत्रद्वयमाह ॥ आभीत्यादि ॥
सुगम नवर अर्थस्य सामान्यस्य श्रोत्रेंद्रियादिभिः प्रथममविकल्प शब्दोय मित्यादि विकल्परूप चोत्तरविशेषापेक्षया सामान्यावग्रहण अर्थावग्रहः सच
नैश्चयिक एकसामयिको व्यवहारिक स्त्वान्तमौहूर्त्तिको ऽर्थविशेषितत्वा द्वयञ्जनावग्रहव्युदासः सञ्च चतुर्धा ॥ आणुगामिएत्ति ॥ अनुगमनशील मानु
गामि तदेवा नुगामिक देशांतरगमपि ज्ञानिनं यदनुगच्छति लोचनवदिति यत्तु तद्देशस्थस्यैव भवति तद्देशनिबन्धनक्षयोपशमजत्वात् स्थानस्थ दीपव
द्देशान्तरगतस्य त्वपैति तदनुगामिकमिति उक्तञ्च अणुगामिओणुगच्छइ गच्छतलोयण जहापुरिसं इयरोयनाणुगच्छइ तियपईवोव्वगच्छतंति ॥ १ ॥
यत्तु क्षेत्रतो ङ्गुलासंख्येयभागविषय कालत आवलिकासंख्येयभागादिविषय द्रव्यत स्तेजोभाषाद्रव्यातरालवर्त्तिविषय भावत स्तदनंतसंख्येयपर्यायविषयश्च
जघन्यतः समुत्पद्य पुन र्वृद्धिविषयविस्तरणात्मिका गच्छ दुत्कर्षेणा लोके लोकप्रमाणान्यसंख्येयानि खंडा न्यसंख्येया उत्सर्पिण्यवसर्प्पिणीसर्वरूपिद्रव्या

छव्विहे अत्थोग्गहे पणत्ते तजहा सोइंदियत्थोग्गहे जाव नोइंदियत्थोग्गहे। छव्विहे ओहिणाणे पणत्ते तंजहा
अणुगामिएअणाणुगामिए वड्ढमाणए हीयमाणए पडिवाइ अपडिवाइ। नोकप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथी

णसुक्लमा तिथि वधे ५। चौवीसमो पक्ष वैशाषसुक्लमां तिथिवधे ६ ॥ मतिज्ञाननुं छ प्रकारे अर्थावग्रह कह्यो ते कहेछे श्रोत्रेद्री अर्थावग्रह १।
यावत् नोइद्री अर्थावग्रह ६ ॥ छ प्रकारे अवधि ज्ञान कह्यो ते कहेछे आनुगामी भवातरे साथे आवे अथवा जिहाजाय तिहा साथे आवे १। अना
नुगामी उपनो तेहज क्षेत्रे रहे बीजे नावे २। वर्द्धमान बधतो जाय ३। हीयमान ऊपना पछी हीन थातो जाय ४। प्रतिपाती आवी जाय ५। अ

णि प्रतिद्रव्य मसंख्येयपर्यायांश्च विषयीकरोति तद्वर्द्धमानमिति उक्तञ्च पइसमयमसंखेज्जइ भागहियंकोइसंखभागहियं अणीसखेज्जगुणं खेत्तमसंखेज्ज गुणमन्नो ॥ १ ॥ पेच्छइ विवडुमाणं ह्रायतवातहेवकालपौत्यादि ॥ २ ॥ तथा य ज्जघन्येनां गुलासंख्येयभागविषय मुत्कर्षेण सर्वलोकविषय मुत्पद्य पुन. सं क्लेशवशात् क्रमेण हानि सङ्कोचात्मिका याति यावदगुलासख्येयभाग तद्धीयमानमिति तथा प्रतिपतनशील प्रतिपाति उत्कर्षेण लोकविषय भूत्वा प्रति पतति तथा त द्विपरीत मप्रतिपाति येना लोकस्य प्रदेशेपि दृष्ट स्तदप्रतिपात्येवेत्याह ॥ चउकोसलोगमत्तोपडिवायपरअपडिवाइत्ति ॥ एवंविधज्ञानवतां च यानि वचनानि वक्तुं नकल्पन्ते तान्याह ॥ नोकप्पतीत्यादि ॥ कण्ठ्य न्नवर ॥ अवयणाइ ति ॥ नञ: कुत्सार्थत्वात् कुत्सितानि वचनानि अवचनानि तत्रा लीक प्रचलायसेकिंदिवेत्यादि प्रश्नेन प्रचलायामी त्यादि हीलिन सासूय गणिन् वाचक ज्येष्ठा यैत्यादि खिसित जन्मकर्माद्युद्घट्टनत: परुष दुष्टशैचेत्यादि ॥ अगारति ॥ अगारगेह तद्वत्तयो ऽगारस्थिता गृहिण स्तेषा यत्त दागारस्थितवचन पुत्रमामकभागिनेयेत्यादि उक्तञ्च अरिरेमाहणपुत्ता अवोवप्पोत्तिभाय माणेत्ति भट्टोसामोयगोमियत्ति ॥ व्यवशमित चोपशमित वा पुनरुदीरयितुं नकल्पतइति प्रक्रमो ऽवचनत्वादस्येति अनेनच व्यवशितस्य पुन रुदीरणवच न नाम षष्ठ मवचन मुक्त मत्रचगाथा खामियवोसमियाइ अहिगरणाइतुजेउदीरंति तेपावानायव्वा तेसिचारोवणाइणमोत्ति ॥ १ ॥ अवचनेषु प्राय

णवा इमाइं छवयणाइं वइत्तए तंजहा अलियवयणे हीलियवयणे खिंसियवयणे फरुसवयणे गारत्थि

प्रतिपाती आव्यां पछी जाय नथी केवलीनो केवलज्ञान ६ ॥ नकल्पे साधुसाध्वीने अवक्तव्य वचन वोलवा ते कहेछे खोटो वचन १ । हीलणावचन ई र्ष्यानुं वचन २ । खिसानुं वचन जन्म उघाडवो ३ । कठिन वचन ४ । गृहस्थनुं वचन मा पुत्र इत्यादि वचन ५ । गयो कलेस तेफिरी उदेरवानुं व

शित्तप्रस्तारो भवतीति तानाह ॥ कप्पेत्यादि ॥ कल्पः साध्वाचार स्तस्य संबंधिन स्तद्विशुद्धार्थत्वात् प्रस्ताराः प्रायश्चित्तरचनाविशेषा स्तान् प्राणातिपा तस्य वाद् वार्त्ता वाचना वदति साधोः प्रायश्चित्तप्रस्तारो भवतीत्येकः यथा कस्यचन जिनाश्रितदर्दुरस्यस्तापादं भिक्षु मुपलभ्य क्षुल्लक आह साधो दर्दुरो भव तामारितः भिक्षु राह नेवं क्षुल्लक आह द्वितीयमपि व्रतं ते नास्ति ततः क्षुल्लको भिक्षाचर्यातो निवृत्त्या चार्यसमीप मागच्छती त्येकं प्रायश्चित्तस्थानं ततः साधयति यथा तेन दर्दुरो मारितइति प्रायश्चित्तान्तरं ततो व्याख्यातसाधु राचार्येणो क्तो यथा दर्दुरो भवता मारितो सावाह नेव मिति क्षुल्लकस्य प्राय श्चित्तान्तरं पुनः क्षुल्लक आह पुन रप्यपलपसीति भिक्षु राह त्वहस्थाः पश्यन्तां समुपमा गत्वा पृच्छन्तीति प्रायश्चित्तान्तर मित्येवं यो व्याख्याति तस्य मृषावा ददोष एव यस्तु सत्यं मारितं निह्नुते तस्य दोषत्रयमिति अनोक्तं ओमोचोइज्जंतो दुपेद्धियाईमुसंपसारेह [पर्यालोचयति] पस्स विगंचोयस्स जयलभए तारिसंरिझ्हं ॥ १ ॥ अणेगधाइणद पुरंमिदलुचपलणकयं ओमेपविप्रोजाए सतुमेनवन्तिवोर्यपितेणत्थि ॥ १ ॥ इत्यादि तथा मृषावादस्यसकास्मादं पिकत्थ नं वार्त्तां वा वदति साधो प्रायश्चित्तप्रस्तारो भवतीति तथाहि कोपि साधुना मकालत्वा अतिपिण्डो साधू अन्यत्र गतो ततो मुहूर्त्तान्तरे रत्नाधिकेनोक्त स्नू जामः साधा मिदानीं भोजनकालो यत स्तानेति लघुर्भणति प्रतिषिद्धोहं नपुन र्भजामि ततो सौ निर्वृत्त्या चार्यायेद मालोचयति यथा अयं दीनकरुणवच

यवयणे विउसमियंवापुणोउदीरेत्तए। ६ कप्पस्स पत्थारा पन्नत्ता तंजहा पाणाइवायस्सवायंवयमाणे मुसावा

चन ६ ॥ ६ साधुना आचारना प्रस्तार ते प्रायश्चित्त आवे ते कहेछे प्राणातिपातनी वाता बोलतां प्रायश्चित्त आवे प्राणातिपातनुं वचन बोलवो १। मृषावादनी वार्ता करतो २। अदत्तादाननी वार्ता बोलता ३। अविरति स्त्रीनी वार्त्ता बोलतां ४। पुरुष नपुंसकछे ए वार्त्ता करता ५। दोष उघाड

नै यांचते प्रतिषिद्धोपिच प्रविशति एषणां प्रेरयतीत्यादि ततोरत्नाधिकमाचार्यैभणति साधो भवानेवं करोति सआह नैवमित्यादि पूर्ववत्प्रस्तार इहाप्युक्त म् मोसंमिसंखडीए मोयगगहणंमिअदत्तदाणम्मि आरोपणपत्थारो तंचेवइमंतुनाणत्तं ॥ १ ॥ दोणकलुणेहिंजायइ पडिसिओविसइएसणंहणइ जंपइमुहप्पि याणिय जोगतिगिच्छानिमित्ताईति ॥२॥ इत्यादि एवमदत्तादानस्य वादं वदति अत्र भावना एकत्र गेहे भिचा लब्धा सा अवसेन गृहीता याव दसौ भा जनं समाष्टि ताव द्रत्नाधिकेन संखड्या मोदका लब्धा स्ता नवमो दृष्ट्वा निवृत्त्या चार्यस्या लोचयति यथा नेना दत्ता मोदका गृहीता इत्यादिप्रस्तार. प्रा ग्वदिति एव मविरति रव्रह्म तद्वादं वार्त्तां वा अथवा नविद्यते विरति र्यस्याः सा अविरतिका स्त्री तद्वादं वार्त्ता वा तदासेवाभणनरूपा वदति तथा ह्यव मो भावय त्येष रत्नाधिकतया मां स्खलितादिषु प्रेरयति ततो रोषा दभ्याख्याति जेठ्ठज्जेणअकज्ज सज्जंअज्जाघरेकयंअज्ज उवजोविओयभंते मएविसंसठक प्पोत्य ॥ १ ॥ अहमपि तत् भुक्तां भुक्तवानित्यर्थः प्रस्तारभावना प्राग्वत् ४ तथा अपुरुषो नपुसको य इत्येवं वाद वार्त्तां वाचंवा वदतो तोह समासः प्रतीतएव भावना त्र आचार्यं प्रत्याहा यं साधु नंपुसक आचार्य आह कथं जानासि स आह एतन्निजकै रह मुक्तः किं भवतां कल्पते प्रव्राजयितु नपुं सकमिति ममापि किञ्चि त्तल्लिगदर्शना च्छङ्कास्तीति प्रस्तारः प्राग्व दत्राप्युक्तं तइओत्तिकहंजाणसि दिठ्ठाणायासितेहिंसेवुत्तं वट्टइतइओतुभं पव्वा वेओममविसंका ॥ १ ॥ दोसइयपाडिरूवं ठियवंकम्मियसरोरभासादो वहुसोअपुरिसवयणे वित्थारारोपणंकुज्जत्ति५ ॥२॥ तथा दासवादंवदति भावना क श्चिदाह दासोय माचार्यं आह कथ देहाकारा कथयति दासत्वमस्येति प्रस्तारः प्राग्वदिति अत्राप्युक्तं खरओत्तिकहंजाणसि देहागाराकहंतिसेहंदि छिक्कोवण [शोघ्रकोपः] उब्भडो नोयासोदारुणसहावो ॥ १ ॥ देहेणवोविरूवो क्खज्जोवडभोयवाहिरप्पाओ फुडमेवंआगारा कहिंतिजहएसखरओत्ति ॥ २ ॥ आचार्यआह केइसुरूवविरूवा खुज्जामडहायवाहिरप्पाय नहुतेपरिभवियब्वा वयणचअणारियंवोत्तु मित्यादोति एवंप्रकारा नेता ननन्तरोदिता

न् षट्कल्पस्य साध्वाचारस्य प्रस्तारान् प्रायश्चित्तरचनाविशेषान् मासगुर्वादिपारंचिकावसानान् प्रस्तीर्य अभ्युपगमतः आत्मनि प्रस्तुता न्विधाय प्रस्तार यिताऽसा वाभ्याख्यानदायकसाधुः सम्यगप्रतिपूरयन् अभ्याख्येयार्थस्या सद्भूततया अभ्याख्यानसमर्थनं कर्त्तु मशक्नुवन् प्रत्यगिरं कुर्वन् सन् तस्यैव प्राणाति पातादि कर्तु रेव स्थान प्राप्तो गत स्तत् स्थानप्राप्तः स्या त्प्राणातिपातादिकारीच दंडनीयः स्यादितिभावः अथवा प्रस्तारा न्प्रस्तार्य विरचय्या चार्येणा भ्या ख्यानदाता अप्रतिपूरय अपरापरप्रत्ययवचने स्तमर्थ मसत्य मकुर्वन् तत् स्थानप्राप्तः कार्य इतिशेषः यत्र प्रायश्चित्तपदे विवदमानो वतिष्ठते न पदान्तर मा रभते तत्पदं प्रापणीय इतिभावः शेषं सुगममिति कल्पाधिकारे सूत्रद्वयं ॥ कप्पेत्यादि ॥ षट्कल्पस्य कल्पोक्तसाध्वाचारस्य परिमथ्नन्तीतिपरिमन्थव उणादि त्वा त्पाठान्तरेण परिमन्थावा व्याघातकालइत्यर्थः इहच मन्थोद्विधा द्रव्यतो भावतश्च यतआह दव्वंमिमंथवोखलु तेणामथिज्जएजद्दादहियं दहितुल्लोख लुकप्पो मथिज्जइकुक्कुयाईहिति ॥ १ ॥ तत्र ॥ कुक्कुइएत्ति ॥ कुच अवस्यंदनइति वचना कुत्सित मप्रत्युपेक्षितत्वादिना त्कुचित मवस्यन्दितं यस्य स कुकुचि तः सएव कौकुचितः कुकुचावा अवस्यन्दन मप्रयोजन मस्येति कौकुचिकः सच त्रिधा स्थानशरीरभाषाभि रुक्तंच वाणेसरीरभासा तिविहापुणकुक्कुईसमा

यस्सवायंवयमाणे अदिन्नादाणस्सवायंवयमाणे अविरइयावायंवयमाणे अपुरिसवायंवयमाणे दासवायंवय माणे। इच्चेए छ कप्पस्स पत्थारे पत्थरेत्ता सम्ममपडिपूरेमाणे तट्ठाणपत्ते। छक्कप्पस्स पलिमंथू प० तं० कुक्कु

वानी वात करतां एह छ आचारमां प्रायश्चित्त आवाना प्रस्तार करीने सम्यक् गुरुदत्त प्रायश्चित्त अणकरतो प्राणातिपातादिकनुं करणहार जाण वो ॥ छ आचारना पलिमथू कहिया ते कहेछे कुत्सितमदनो धणी पाषाणादि नाखे एहवी चेष्टा करतो सयमनो पलिमथू १। मुखथी अविमासी

सेणं ॥ तत्र स्थानतो यो यंत्रकव र्त्तिंकीवद्दा भ्राम्यतीति शरीरतो यः करादिभिः पाषाणादीन् क्षिपति उक्तंच करगोफणधणुपाया इएहिउच्छुहद्द पच्छराइए भमुहादाढियथणपुय विकपगांनटवाइत्तत्ति ॥ १ ॥ भाषातो यः सेटितमुखवादित्रादि करोति तथाच जल्पति यथा परे हसंतीति उक्तंच छे लियमुहवाइत्ते जपइयतहाजहापरोहसइ कुणइयरूवेबहुविहे वग्घारियदेसभासाओत्ति ॥ १ ॥ अयंच त्रिविधोपि संयमस्य पृथिव्यादिसरक्षणादेः कायगु प्तिपर्यन्तस्य यथा संभव परिमन्थु र्भवत्येवेति १ ॥ मोहरिएत्ति ॥ मुख मतिभाषणातिशयेन वदतीति मुखरः सएव मौखरिको बहुभाषी अथवा मुखे ना रि मावहतीति निपाता न्मौखरिकः उक्तंच मुहरिस्सगोणनामं आवहइमुहेणभासतोत्ति ॥ सच सत्यवचनस्य मृषावादविरतेः परिमथु मौखर्ये सति मृषावादसभवादिति २ ॥ चक्खुलोलएत्ति ॥ चक्षुषा लोल श्चंचल श्चक्षुर्वा लोल यस्य स तथा स्तूपादी नालोकयन् व्रजति य इत्यर्थ इदंच धर्मकथादीना मुप लक्षणं आहच आलोयंतोवच्चइ थूभाइणकहेइवाधम्मं परियट्टणाणुपेहण णपेहपथअणुचउत्तोत्ति ॥ १ ॥ इरियावहियत्ति ॥ ईर्या गमन तस्याः पंथा मा र्ग ईर्यापथ स्तत्र भवा या समितिः ईर्यासमितिलक्षणा या सा ऐर्यापथिकी तस्याः परिमथुरिति आहच छक्कायाणविराहण संजमेआयाएकंटकाई या आवडणभाणभेओ खद्धेउड्डाहपरिहाणित्ति ३ ॥ तितिणिएत्ति ॥ तिंतिणिको ऽलाभेसति खेदा द्यत्किंचना भिधायी सच खेदप्रधानत्वा देषणा उद्गमा दिदोषविमुक्तपानादिगवेषणग्रहणलक्षणा तत्प्रधानो यो गोचरो गौरिव मध्यस्थतया भिक्षार्थचरण स एषणागोचर स्तस्य परिमथु. सखेदोहि अनेषणीय

इए संजमस्सपलिमंथू मोहरिएसच्चवयणस्सपलिमंथू चक्खुलोलए इरियावहियापलिमंथू तितिणिए एसणागो ॥

बोलतो सत्य वचननो पलिमथू २। चक्षुलोलुपी ईर्यासमितीनुं पलिमंथू ३। तितिणीक ते अलाभे खेद पाम्यो जिमतिम बोले ते एषणा समितिनुं ॥

मपि गृह्णातीतिभावः ॥ इच्छालोभियत्ति ॥ इच्छा अभिलाष. स चासौ लोभश्च इच्छालोभो महालोभइत्यर्थ' शुक्लशुक्लो ऽतिशुक्लो यथा स यस्यास्ति स इच्छालोभिको महेच्छा ऽधिकोपधिरित्यर्थः इच्छालोभोउउवहिमद्दरेगोत्ति स मुक्तिमार्गस्येति मुक्ति र्निष्परिग्रहत्व मलोभत्वमित्यर्थ. सैव मार्गइव मार्गो निर्वृत्तिपुरस्येति ॥ भिज्जत्ति ॥ लोभ स्तेन य न्निदानकरण चक्रावर्तीन्द्रादिऋद्धिप्रार्थन त न्मोक्षमार्गस्य सम्यग्दर्शनादिरूपस्य परिमथु रार्त्तध्यान रूपत्वात् भिज्जाग्रहणा द्य त्पुन रलोभस्य भवनिर्वेदमार्गानुसारितादिप्रार्थन त न्न मोक्षमास्यर्ग परिमथुरिति दर्शितमिति ननु तीर्थंकरत्वादिप्रार्थन न राज्यादिप्रार्थनव दुष्ट मत स्तद्विषय निदान मोक्षस्या परिमथुरिति नेव यत आह ॥ सव्वत्थेत्यादि ॥ सर्वत्र तीर्थंकरत्वचरमदेहत्वादिविषयेपि आस्ता राज्यादौ भगवता जिनेना निदानता अप्रार्थनमेव ॥ पसत्थत्ति ॥ प्रशसिता श्लाघितेति तथाच इहपरलोगनिमित्त अवितित्थगरत्तचरमदेहत्तं सव्वत्थे सुभगवया अणियाणत्तपसत्थतु ॥ १ ॥ एवमेवहि सामायिक शुद्धि स्यादिति उक्तञ्च पडिसिद्धेसुयदेसे विहिएसुयईरागभावेवि सामइयसुयविसुद्धं सुउंसमयाएदोण्हपित्ति ॥ १ ॥ अयचा न्तिमपरिमथयो र्विशेषः आहारोवहिदेहेसु इच्छालोभोउसज्जई नियाणकारीसगतु कुरुतेउद्धदेहिक ॥ १ ॥

यरस्सपलिमंथू इच्छालोन्नेमोत्तिमग्गस्सपलिमंथू न्निज्जाणिदाणकरणेमोरकमग्गस्सपलिमंथू । सव्वत्थन्नगवया अणिदानतापसत्था । छव्विहा कप्पठिई पन्नत्ता तजहा सामाइयकप्पठिई छेत्रवठावणियकप्पठिई निव्वि

पलिमथू ४ । इच्छा लोजियो ते मुक्तिमार्गनुं पलिमंथू ५ । नियाणानो करणहार मोक्षमार्गनुं पलिमंथू ६ ॥ सघले नियाणानो अणकरवोज भगवंते प्रशस्त कह्यो ॥ छ प्रकारनी कल्पस्थिति कही तेकहेछे सामायिक कल्पस्थिति १ । छेदोपस्थापनीय चारित्रनी स्थिति मर्यादा २ । परिहार वि

पारलौकिकमित्यर्थः ॥ कप्पट्ठिईत्यादि ॥ कल्पस्य कल्पायुक्तसाध्वाचारस्य सामायिकच्छेदोपस्थापनीयादेः स्थिति मर्यादा कल्पस्थिति स्तत्र सामायिक कल्पस्थितिः सिज्जायरपिंडेया १ चाउज्जामेय २ पुरिसजेट्ठेय ३ किइकम्मस्सयकरणे ४ चत्तारिअवट्ठियाकप्पा ॥ १ ॥ सामायिकसाधूनां अवश्यभाविन इत्यर्थः आचेलक्कु १ देसिय २ सपडिक्कमणेय ३ रायपिंडेय ४ । मास ५ पज्जोसवणा ६ छप्पेअणवट्ठियाकप्पा ॥ १ ॥ नावश्यभाविनइत्यर्थः. छेदोपस्थापनी यकल्पस्थितिः आचेल १ कुद्देसिय २ सेज्जायर ३ रायपिंड ४ किइकम्मे ५ । वय ६ जेट्ठ ७ पडिक्कमणे ८ मासपज्जोसवणकप्पे १० ॥ १ ॥ एतानिच तृती याध्ययनवत् ज्ञेयानि ॥ निव्विसमाणकप्पट्ठिइनिव्विट्ठकप्पट्ठिइत्ति ॥ परिहारविशुद्धिकल्प वहमाना निर्विसमानका ये रसो व्यूढ स्ते निर्विष्टा स्तेषां या स्थिति मर्यादा सा तथा तत्र परिहारियछम्मासे तहअणुपरिहारियाविछम्मासे कप्पट्ठिओछम्माए तेअट्ठारसविमासत्ति ॥ १ ॥ तथा जिनकल्पस्थितिः गच्छम्मिउनिम्माया धीराजाहियगहियपरमत्था अग्गहजोगअभिग्गहे उविंतिजिणकप्पियचरित्तंति ॥ १ ॥ एवमादिका अग्गहजोगअभिग्गहेत्ति कासां चित् पिण्डेषणानां मग्रहे योग्यानां चाभिगृहे अनयैव ग्राह्य मित्येवरूपे गृहीतपरमार्थादित्यर्थः स्थविरकल्पस्थितिः सयमकरणुज्जोया उज्जोनिप्पायग १ नाणदसणचरित्ते दीहाउ १ वुड्ढवासे वसहीदोसेहियविमुक्का ॥ १ ॥ इत्यादिका इयंच कल्पस्थिति र्महावीरेण देशितेति सवधान्महावीरवक्तव्यता सूत्रय तथा अनेने य मपरापि कल्पस्थिति र्देशितेति कल्पसूत्रद्वय मुपन्यस्य सुगमं चैत त्पचकमपि नवरं पटेन भगोनो पवासद्वयलक्षणेन अपानकेन पानीयपा

समाणकप्पट्ठिई निव्विट्ठकप्पट्ठिई जिणकप्पकप्पट्ठिई थेरकप्पट्ठिई । समणेभगवंमहावीरे छट्ठेणंभत्तेणं अपा

शुद्धि वहमान चारित्रनी स्थिति मर्यादा ३ । जेणे परिहार वहियोछे तेहनी स्थिति मर्यादा ४ । जिनकल्पनी स्थिति मर्यादा ५ । स्थविर कल्पनी

नपरिहारवता यावत्करणा विग्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुणे केवलवरनाणदंसणधरेत्ति द्रष्टं सिद्धे जायति कारणात् बुद्धेमुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडेत्ति द्रष्टव्य उक्तारूपेपूर्वदेवशरीरे आहारपरिणामो स्त्रीत्याहारपरिणामनिरूपणायाह ॥ छविहेभोयणेइत्यादि ॥ भोजनस्येत्याहारविशेषस्य परिणामः पर्यायः स्वभावो धर्मइतियावत् तत्र ॥ मणुणेत्ति ॥ मनोज्ञ मभिलषणीय भोजन मित्येक स्त परिणामः परिणामवता सहा भेदोपचारात् तथा रसिक माधुर्याद्युपेतं तथा प्रीणनीय रसादिधातुसमताकारि वृंहणीयं धातूपचयकारि दीपनीयं अग्निबलजनकं पाठान्तरेत् मदनीयं मदनोदयकारि दर्पणीयं वलकार मु

णएणं मुंडे जाव पव्वइए । समणस्स भगवओमहावीरस्स छट्ठेणंभत्तेण अपाणएणं अणंतेअणुत्तरे जाव समु प्पन्ने । समणेभगवमहावीरे छट्ठेणंभत्तेण अपाणएण सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । सणंकुमारमाहिंदेसुण कप्पेसु बिमाणा छजोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पणत्ता । सणंकुमारमाहिंदेसुणं कप्पेसु देवाण भवधारणि ज्जगा सरीरगा उक्कोसेण छरयणीउ उद्धं उच्चत्तेण पणत्ता । छव्विहे भोयणपरिणामे पणत्ते तंजहा मणुन्ने

स्थिति मर्यादा ६ ॥ श्रमण भगवंत महावीर षष्ट भक्त एतले चोविहार बे उपवास कीयाथका मुंड यावत् दीक्षालीधी १ ॥ श्रमण भगवत महावीरने षष्ठभक्ते चोविहारे अनंत उत्कष्ट केवलज्ञान ऊपनुं ॥ श्रमण भगवत महावीर षष्ठभक्त चोविहारनी तपस्याथी सीधा यावत् सर्वदुखरहित थया ॥ सनत्कु मार देवलोकमा विमान छसे योजन ऊंचा ऊचपणे कहिया ॥ सनत्कुमार माहेंद्रदेवलोके विमानमा देवताने भवधारणीय शरीर उत्कष्टो छ हाथ नो ऊचो ऊचपणे कह्यो ॥ छ प्रकारे भोजननो परिणाम कह्यो तेकहेछे मनोज्ञरमनु भोजन अभिलसणीय १ । रसित ते मीठा रसादियुक्त २ । प्री

त्वाद्‌वृद्धिकर मित्यन्यदूति अथवा भोजनस्य परिणामो विपाकः सच मनोज्ञः शुभत्वा न्मनोज्ञभोजनसंबंधित्वा द्वे त्येव मन्येपि परिणामाधिकारा दायातं विषपरिणामसूत्र मप्येव नवर ॥ डक्केत्ति ॥ दष्टस्य प्राणिनो दंष्ट्राविषादिना यत्पीडाकारि तद्दष्ट जंगमविष यच्च भुक्तं सत् पीडयति तद् भुक्त मित्युच्यते तच्च स्थावर यत्पुनर्निपतित उपरिपतित सत् पीडयति त न्निपतित त्वग्विष दृष्टिविषंचेति त्रिविधं स्वरूपतः तथा किंचि न्मासानुसारि मांसांतधातुव्यापक, किंचि च्छोणितानुसारि तथैव किंचिच्चा स्थिमिंजानुसारि तथैवेति त्रिविध कार्यत एवच सति षड्विध त त्वत स्तत्परिणामो पि षोढैवेति एवभूतार्था नाच निर्णयो निरतिशयस्या मप्रश्नतो भवतीति प्रश्नविभागमाह ॥ छव्विहेत्यादि ॥ प्रच्छनं प्रश्न स्तत्र संशय प्रश्नः क्वचिदर्थे संशये सति यो विधीयते यथा जइतवसाओदाण संजमओगोसवोत्तितेकहण देवत्तजतिजई गुरुराहसरागसंजमओत्ति ॥ १ ॥ व्युद्ग्रहेण मिथ्याभिनिवेशेन विप्रतिपत्त्येत्यर्थः परपचदूषणा

रसिए पीणणिज्जे विंहणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे । छव्विहे विसपरिणामे पण्णत्ते तंजहा डक्के भुत्ते निवइए मंसाणुसारी सोणियाणुसारी अट्ठिमिंजाणुसारी । छव्विहे पट्ठे पण्णत्ते तंजहा संसयपट्ठे वुग्गहपट्ठे अणुजोगी

णनीय ते रसादिधातुनी समतानो करणहार ३ । वृंहणीय धातुको वढानेवाला ४ । दीपनीय अग्नि और बलको वढाने वाला ५ । दर्पणीय बलकर उत्साहवृद्धि को करनेवाला ६ ॥ छ प्रकारे विषनो परिणाम कह्यो तेकहेछे डक्क ते दाढमां जहर साप प्रमुखने १ । भुक्त अफीम सोमल प्रमुख २। ऊपरि पडयो पीडाकरे ते निर्वर्त्तित ३ । केतलो मासानुसारी ४ । लोहीने अनुसारे कोईक विष ५ । केतलोक विष हाडमा जई जई लागे ६ ॥ छ प्रकारे प्रश्न कह्यो ते कहेछे शंसय ऊपनाथी गुरूने पूछे मिथ्याभिनिवेशथी पूछे १ । परपक्षने दोष देवाने पूछे २ । अनुयोग व्याख्यान करतीवेला

र्थं य' क्रियते प्रश्न. सव्युद्ग्रहप्रश्नो यथा सामन्नश्रोविसेसो अन्नोणन्नोव्वह्नोज्जाजुद्दश्रन्नो सोनल्थिखपुष्पंपिव गन्नोसामग्गमेवतयति ॥ १ ॥ अनुयोगीति अनुयोगो व्याख्यान प्ररूपणेति यावत् स यत्रास्ति तदर्थं य' क्रियत इतिभावी यथा चउहिसमएहिलोगो इत्यादि प्ररूपणाय कइहिंसमएहीत्यादि गन्यकारएव प्रश्नयति अनुलोमे ऽनुलोमनार्थं मनुकूलकरणाय परस्य यो विधीयते यथाचेमं भवतामित्यादि ॥ तहनाणेत्ति ॥ यथा प्रच्छनीयार्थे प्रष्टव्यस्य ज्ञानं तथैव प्रच्छकस्यापि ज्ञान यत्र प्रश्ने स तथाज्ञानो ज्ञानप्रश्नइत्यर्थः सच गौतमादे र्यथा केवइकालेणभंते चमरचचारायहाणी विरहिया उववाएण मित्यादि रिति एतद्विपरीत स्त्वतथाज्ञानो अज्ञानप्रश्न इत्यर्थ क्वचिच्छव्विहेप्रष्ठेइतिपाठ स्तत्र संशयादिभिरर्थोविशेषणीय इति इहानन्तरसूत्रे तथा ज्ञानप्रश्नो दर्शित स्तत्र चोत्तरवस्तुना भाव्यमिति तद्दर्शयति॥ चमरचचेत्यादि ॥ चमरस्य दाक्षिणात्यस्यासुरनिकायनायकस्य चंचा चंचाख्या नगरी चमरचंचा याहि जंबूद्वीपे मदरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन तिर्यगसंख्येयान् द्वीपसमुद्रान् व्यतिव्रज्या रुणवरद्वीपस्य वाह्याद्वेदिकांता दरुणोद समुद्रं द्विचत्वारिंश द्योजनसहस्राण्य वगाह्य चमरस्या सुरराजस्य तिगिच्छिकूटोनाम य उत्पातपर्व्वतो स्ति सप्तदशैकविंशत्युत्तराणि योजनशता न्युच्च स्तस्य दक्षिणेन षट्योजनकोटिश

अणुलोमे तहणाणे अतहणाणे । चमरचंचाणं रायहाणी उक्कोसेणं छमासाविरहिया उववाएणं । एगमेगेणं इदठाणे उक्कोसेणं छम्मासे विरहिए उववाएणं । अहे सत्तमाणं पुढवी उक्कोसेण छम्मासा विरहिया उव

पूछे ३ । अणुलोम माहोमाहि अनुकूल करवाने पूछे जेतुमने कुशलछे ४ । तथा ज्ञानप्रश्न ३६ हजार गौतमे प्रश्नपूछ्या ५ । असत्य ज्ञाननुं अज्ञान प्रश्न ६ ॥ चमरचचा राजधानीमा उत्कष्टो छ महीनानो विरह होय उपजवानो देवतानुं ॥ एक एक इंद्रना स्थानके उत्कष्टो छमहीनानुं विरहहो

तानि साधिकान्यरुणोदे समुद्रे तिर्यग्व्यतिव्रज्या धोरत्नप्रभायाः पृथिव्या श्चत्वारिंशद्योजनसहस्रा ख्यवगाह्य व्यवस्थिता जंबूद्वीपप्रमाणाच सा चमरचं ॥
चाराजधानी उत्कृष्टेन षड्मासान्विरहिता वियुक्ता उपपातेन इह्वो त्पद्यमानदेवाना षड्मासान् यावत् विरहो भवतीतिभावः विरहाधिकारा दिदं
सूत्रत्रय ॥ एगेत्यादि ॥ एकैक मिन्द्रस्थान चमरादिसबध्याश्रयो भवननगरविमानरूप स्तदुत्कर्षेण षण्मासान् याव दिरहित मुपपातेनें द्रापेचयेति अधः
सप्तमी त्यत्र सप्तमीहि रत्नप्रभापि कथंचि द्भवति तद्व्यवच्छेदार्थं मधोग्रहण मत स्तमस्तमेत्यर्थः सा षण्मासान्विरहितो पपातेन यदाह चउवीसइमुहु
त्ता १ सत्तअहोरत्त २ तहयपन्नरस ३ मासोय ४ दोय ५ चउरो ६ छम्मासाविरहकालोउक्ति ७ ॥ १ ॥ सिद्धिगतानुपपातो गमनमात्र मुच्यते न जन्म
तद्धेतूना सिद्धस्या भावादिति इहोक्तं एगसमओजहन्नं उक्कोसेणहवंतिछम्मासा विरहोसिद्धिगईए उव्वट्टणवज्जियानियमत्ति ॥ १ ॥ शेष सुगममिति अ
नतर मुपपातस्य विरह उक्त उपपातश्चा युर्बन्धे सति भवती त्यायुर्बन्धसूत्रप्रपच ॥ छव्विहेत्यादिक ॥ माह सुगम श्चायं नवरं आयुषो बंध आयुर्बन्ध स्तत्र
जाति रेकेंद्रियजात्यादिः पंचधा सैव नाम नाम्नः कर्म्मण उत्तरप्रकृति विशेषो जीवपरिणामोवा तेन सह निधत्त न्निषित्तं यदायु स्तज्जातिनामनिधत्तायु

वाएणं । सिद्धिगईणं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववाएणं । छव्विहे आउयबंधे पन्नत्ते तंजहा जाइणाम ॥

य उपजवानो ॥ अथ सातमी पृथ्वीये उत्कृष्टो छ महीनानुं विरह उपजवानो होय ॥ मोक्ष गतिमा उत्कृष्टो छ महीनानुं उपजवानुं विरह होय ॥ ॥
छ प्रकारे आऊखानुं बध कह्यो ते कहेछे एकेद्रियादि जातिनामनुं तेसाथे वाध्यो कर्म ते समय समय भोगवो १ । नारकादि गति च्यारनु निवद्ध
कर्म २ । स्थिति नाम निवद्ध कर्म जेतलो वाध्यो तेतलोज भोगवो ३ । अवगाहना औदारिकादि शरीरथी बांध्यो आयुकर्म ४ । आयुकर्मना प्रदेश

निषेकश्च कर्मपुद्गलानां प्रतिसमयमनुभवनरचनेति उक्तं च मोत्तूणसगमबाहं पढमाए ठिईए बहुतरं दव्वं सेसे विसेसहीणं जावुक्कोसंति सव्वासिंति ॥ १ ॥ सव्वासिंति स्थापनाचैवं तथा गति नारकादिका चतुर्द्धा सैव तथैवेति गतिनामनिधत्तायुरिति तथा स्थितिरिति यत् स्थातव्यं केनचिद्विवक्षितेन भावेन जीवेना युःकर्मणा वा सैव नामपरिणामो कर्मस्थितिनाम तेन विशिष्टं निधत्तं यदायुर्दलिकरूपं तत् स्थितिनामनिधत्तायुः अथचेह नामसने जाति नामगतिनामावगाहनानामग्रहणा ज्जातिगत्यवगाहनानां प्रकृतिमात्रमुक्तं स्थितिप्रदेशानुभागनामग्रहणात्तु तासामेव स्थित्यादय उक्ता स्तेच जात्या दिनामसंबंधित्वा न्नामकर्मरूपा एवेति नामशब्दः सर्वत्र कर्मार्थोघटतइति स्थितिरूपं नामकर्म स्थितिनाम तेन सह निधत्तं यदायुस्तत् स्थितिनामनिध त्तायुरिति तथा अवगाहते यस्यां जीवः सा अवगाहना शरीरमौदारिकादि तस्या नाम औदारिकादिशरीरनामेत्यवगाहनानाम तेन सह यन्नि धत्त मायुस्त दवगाहनानामनिधत्तायुरिति तथा प्रदेशाना मायुःकर्मद्रव्याणां नाम तथाविधा परिणतिः प्रदेशनाम प्रदेशरूपंवा नाम कर्मविशेषइत्य र्थः प्रदेशनाम तेन सह य न्निधत्त मायु स्तत्प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अनुभाग आयुर्द्रव्याणामेव विपाक स्तल्लक्षणएव नाम परिणामो ऽनुभागरूपं वा नामकर्मा नुभागनाम तेन सह निधत्तं यदायु स्तदनुभागनामनिधत्तायुरिति अथ किमर्थं जात्यादिनामकर्मणा आयुर्विशेष्यते उच्यते आयुष्कस्य प्रा धान्योपदर्शनार्थं यस्मा न्नारकाद्यायु रुदये सति जात्यादिनामकर्मणा मुदयोभवति नारकादिभवोपग्राहक मायुरेव यस्मा दुक्तं प्रज्ञप्त्यां नेरइएणं भंते

णिहत्ताउए ठिइणामनिहत्ताउए उगाहणाणामनिहत्ताउए पएसणामनिहत्ताउए अणुभावणामनिहत्ताउए।

थी बांध्यो ते प्रदेश निधत्त ५। आयुकर्मना रसणी बांध्यो ते अनुभाग नाम निबद्ध अनुभागो रसो ज्ञेय इति वचनात् ॥ नारकीने छे प्रकारे आ

नेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ गोयमा नेरइए नेरइएसु उववज्जइ एतदुक्तं भवति नारकायुः सवेदनप्रथमसमयएव नारक इत्युच्यते तत्सहचारिणां पचेंद्रियजात्यादिनामकर्म्मणा मप्युदयइति इह चायुर्बन्धस्य षड्विधत्वे उपचिते यदायुषः षड्विधत्व मुक्त-न्तदायुषो बन्धाव्यतिरेका इडस्यैव चायु र्व्यपदेशविषयत्वादिति ॥ नियमति ॥ अवश्य भ्भावादित्यर्थः ॥ छम्मासावसेसाउयत्ति ॥ षण्मासा अवशेषा अवशिष्टा यस्य त त्तथा त दायु र्येषांते ष ण्मासावशेषायुष्काः परभवोविद्यते यस्मि स्त त्परभविकं तच्च तदायु श्चेति परभविकायुः प्रकुर्व्वं ति बध्नन्ति असख्येयानि वर्षाण्यायु र्येषाते तथा तेचते स ञ्ज्ञिनश्च समनस्काः पचेंद्रियतिर्यग्योनिका श्चे त्यसख्येयवर्षायुष्कसञ्ज्ञिपचेंद्रियतिर्यग्योनिका इहच सञ्ज्ञिग्रहण मसख्येयवर्षायुष्कासञ्ज्ञिनएवभवंतीति नियम दर्शनार्थं न त्वसख्येयवर्षायुषा मसञ्ज्ञिनां व्यवच्छेदार्थं तेषा मसभवादिति इहच गाथे निरइसुरअसखाऊ तिरिमणुयासेसएउछम्मासे इगविगलानिरु वक्कम तिरिमणुयाआउयतिभागे ॥ १ ॥ अवसेसासोवक्कम तिभागनवभागसत्तवीसइमे बधतिपरभवाओ निययभवेसव्वजीवाओत्ति ॥ २ ॥ इदमेवा न्यै रित्थ मुक्त मिह तिर्यग्मनुष्या आत्मीयायुष स्तृतीयत्रिभागे परभवायुषो बधयोग्या भवंति देवनारकाः पुन' षण्मासे शेषे तत्र तिर्यग्मनुष्ये र्यद्वितृतीयत्रिभा ॥

णेरइयाणं छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते तंजहा जाइणामणिहत्ताउए जाव अणुभावनामणिहत्ताउए । एवं जाव वेमाणियाण । णेरइया छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति । एव मसुरकुमाराविं जाव थणियकुमा ॥

उखानो बध कह्यो ते कहेछे जातिनाम निधत्त आयु एम यावत् वैमानिक लगे ॥ नारकी निश्चे छ महीनानु आयु थाकतां शेष रहतां परभवनो आउखो बाधे ॥ एम असुरकुमार पणि यावत् स्तनितकुमार ॥ असख्याता वरसना आउखाना सन्नी पचेद्री तिर्यंच योनिया निश्चे छ महीनानुं शे ॥

गे आयु र्न बद्ध ततः पुन स्तृतीयत्रिभागस्य तृतीयत्रिभागे शेषे बध्नन्ति एवं तावत् संक्षिपं त्यायु र्याव त्सर्वजघन्य आयुर्बन्धकाल उत्तरकालश्च शेष स्तिष्ट ॥
ति इह तिर्यग्मनुष्या आयु र्बध्नत्यथवा सक्षेपकाल उच्यते तथा देवनैरयिकैरपि यद्दिषण्मासे शेषे आयुर्न बद्ध तत आत्मीयस्या युषः षण्मासशेषं ताव त्सक्षि
यति याव त्सर्वजघन्य आयुर्बंधकाल उत्तरकालश्चा वशेषो वतिष्ठत इह परभवायु र्देवनैरयिका बध्नती त्यय मसंक्षेपकालः अनन्तरमायु:कर्मबध उक्तः आ
युः पुनरौदयिकभावहेतु रित्यौदयिकभाव भाजसाधर्म्या च्छेषभावांश्च प्रतिपादयन्नाह ॥ छव्विहेभावेइत्यादि ॥ भवनभाव. पर्याय इत्यर्थ स्तत्रौदयिको
द्विविध उदय उदयनिष्पन्नश्च तत्रोदयो ष्टाना कर्मप्रकृतीना मुदयः शातावस्थापरित्यागे नोदीरणावलिका मतिक्रम्य उदयावलिकाया आत्मीयरूपेण वि
पाकइत्यर्थः अत्रचैव व्युत्पत्तिः उदयएव औदयिक उदयनिष्पन्नस्तु कर्मोदयजनितो जोवस्य मानुषत्वादिपर्याय स्तत्रच उदयेन निर्वृत्त स्तत्र भव इत्यौ दयिक
इत्येव व्युत्पत्तिरिति तथा औपशमिकोपि द्विविध उपशम उपशमनिष्पन्नश्च तत्रो पशमो मोहनीयकर्मणो नन्तानुबन्ध्यादिभेदभिन्नस्यो पशमश्रेणिप्रतिपन्नस्य
मोहनीयभेदाननन्तानुबंधादी नुपशमयत उदयाभावइत्यर्थः उपशम एवौपशमिक उपशमनिष्पन्नस्तु उपशांतक्रोधइत्यादि उदयाभावफलरूप आत्मपरि
णामइति भावना तत्रच व्युत्पत्तिः उपशमेन निर्वृत्त औपशमिकइति तथा क्षायिको द्विविधः क्षयः क्षयनिष्पन्नश्च तत्रक्षयोऽष्टाना कर्मप्रकृतीना ज्ञानावर
णादिभेदाना क्षय. कर्माभाव एवेत्यर्थ स्तत्र क्षयएव क्षायिकः क्षयनिष्पन्नस्तु तत्फलरूपो विचित्र आत्मपरिणामः केवलज्ञानदर्शनचारित्रादि तत्रक्षयेण नि
र्वृत्त क्षायिकइति व्युत्पत्ति स्तथा क्षायोपशमिको द्विविधः क्षयोपशमः क्षयोपशमनिष्पन्नश्च तत्र क्षयोपशम श्चतुर्णां घातिकर्मणा केवलज्ञानप्रतिबन्धकाना
ज्ञानावरणदर्शनावरणमोहनोयांतरायाणां क्षयोपशम इहतू दीर्णस्य क्षयो ऽनुदीर्णस्यच विपाक मधिकृत्यो पशमइति गृह्यते आ ह्यौपशमिकोप्येव भूत
एव नैव तत्रो पशान्तस्य प्रदेशानुभवतो प्यवेदना इस्मिंश्च वेदनादिति अयच क्षयोपशमक्रियारूपएवेति क्षयोपशमएव क्षायोपशमिकः क्षयोपशमनिष्प

न स्वाभिनिवोधिकज्ञानादिलब्धिपरिणाम आत्मनएव क्षयोपशमेन निर्वृत्तः क्षायोपशमिकइति च व्युत्पत्तिरिति तथा परिणमनं परिणामः अपरित्यक्तपू र्वावस्थस्यैव तद्भावगमनमित्यर्थः उक्तंच परिणामोह्यर्थान्तर गमनन्नचसर्वथाव्यवस्थान नचसर्व्वथाविनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टः ॥ १ ॥ सएव परिणा मिकइत्युच्यते सच साद्यनादिभेदेन द्विविध स्तत्र सादि जीर्णघृतादीनां तद्भावस्य सादित्वादिति अनादिपरिणामिकस्तु धर्मास्तिकायादीनां तद्भावस्य ते षा मनादित्वादिति तथा सनिपातो मेलक स्तन्निवृत्तः सान्निपातिकः अथ चैषां पंचाना मौदयिकादिभावाना द्व्यादिसंयोगत सभवासभवानपेक्षया ष ड्विंशतिभङ्गरूपः तत्र द्विकसंयोगे दश त्रिकसंयोगेपि दशैव चतुष्कसंयोगे पंच पचसंयोगेतु एकएवेति सर्वेपिषड् विंशतिरिति इहचा विरुद्धाः पंचदश सा न्निपातिकभेदा इष्यते नेचैव भवनि उदइयखओवसमिए परिणामिक्केक्कोगइचउक्केवि खययोगेणविचउरो तयभावेउवसमेणपि ॥ १ ॥ उवसमसेढीएक्को केवलिणोवियतहेवसिद्धस्स अविरुद्धसन्निवाइय भेयाएमेवपन्नरसत्ति । २ ॥ औदयिकक्षायोपशमिकपारिणामिकनिष्पन्नः सांन्निपातिक एकैको गतिचतु

रा । असंखेज्जवासाउया सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति असंखेज्जवासाउया सन्निमणुस्सा णियमं जाव पगरेंति । वाणमंतरजोइसिया वेमाणिया जहा णेरइया ।

ए थाकते आउखो परभवनुं आउखो बांधे ॥ असंख्याता वरसना आउखाना सन्नी मनुष्य निश्चे यावत् बांधे ॥ व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक जिम नारकी तिम ॥ छ प्रकारे कर्मनो भाव कह्यो ते कहेछे औदयिक भाव ८ कर्म उदय प्राप्त भोगवे ते १ । उपशमभाव ते भाव २ । क्षायिक भाव ८ कर्मनो समावे ते ३ । क्षयोपशमिक ते काईक शमावे ४ । पारिणामिक भाव ते कर्मस्वभाव ५ । सन्निपातिक भाव ते एह १५ भावनुं एकठो मेलवो

ष्कोपि तद्यथा औदयिको नारकत्वं चायोपशमिक इंद्रियाणि पारिणामिको जोवत्वमिति इत्थ तिर्यग्नरामरेष्वपि योजनीयमिति चत्वारो भेदा स्तथा च
यर्योगेनापि चत्वार एव तास्वपि गतिषु अभिलापस्तु औदयिको नारकत्व चायोपशमिक इन्द्रियाणि चायिकः सम्यक्त्व पारिणामिकोजोवत्वमिति एवं
तिर्यगादिष्वपि वाच्यं संति चेतेष्वपि चायिकसम्यग्दृष्टयो ऽधिकृतभङ्गान्यथानुपपत्तेरिति भावनीयइति ॥ खयभावेत्ति ॥ चायिकाभावे चशब्दा च्छेपचयभा
वे चौपशमिकेनापि चत्वारएव उपशममानस्य गतिचतुष्टयेपि भावादिति अभिलाप स्तथैव नवरं सम्यक्त्वस्थाने उपशांतकषायत्वमिति व्याख्य मेते चाष्टौ
भङ्गा प्राक्तना श्चत्वारइति द्वादश उपशमश्रेण्या मेको भंग स्तस्या मनुष्येष्वेव भावात् अभिलापः पूर्ववं नवरं मनुष्यविषयएव केवलिन स्येक एवौदयिको मा
नुषत्वं चायिकसम्यक्त्वं पारिणामिको जीवत्व तथैव सिद्धस्ये कएव चायिकः सम्यक्त्व पारिणामिको जोवत्वमिति एव मेते स्त्रिभि र्भङ्गैः सहिताः प्रागुक्ता
द्वादश अविरुद्धसान्निपातिकभेदाः पंचदश भवंतीति अपिच उवसमिए २ खइएविय ९ खयउपशम १८ उदय २१ पारिणामेय ३ दोनवअट्ठारसग इगवी
सातिन्निभेएण ॥ १ ॥ सम्मचरित्ते २ पढमे दसण १ नाणेय २ दाण ३ लाभेय ४ उवभोग ५ भोग ६ वीरिय ७ सम्म ८ चरित्तेय ९ तहवीए ॥ २ ॥ चउणा
ण ४ णाणतियं ३ दसणतिय ३ पंचदाणलद्धीओ ५ सम्मत्त १ चरित्तंच संजमासंजमोतइए ॥ २ ॥ चउगइ ४ चउक्कसाया ४ लिंगतियलेसछक्क अणाण १ मि
च्छत्त १ मसिद्धत्त १ असंजमेलच्छचउत्थेओ ॥ २ ॥ पंचमगमियभावे जीव १ अभव्वत्त २ भव्वताचेव पंचण्हविभावाण भेयाएमेयतेवणत्ति ॥ ४ ॥ अनन्तरं

छव्विहे भावे पन्नत्ते तंजहा उदइए उवसमिए खइए खयोवसमिए पारिणामिए संनिवाइए । छव्विहे पडिक्क

द्विकसयोगी त्रिकसयोगी सर्वमिली १६ भांगा थाय ते सन्निपातिक ६ ॥ छ प्रकारे पडिकमणुं कह्युं ते कहेछे वलीनीत परठवीने इरियावही पडिक

भावा उक्ता स्तेषु चा प्रशस्तेषु यद्वत्तं यच्च प्रशस्तेषु न वृत्तं विपरीतश्रद्धानप्ररूपणेवा ये कृते तत्र प्रतिक्रमितव्यं भवतीति प्रतिक्रमणमाह ॥ छव्विहेपडि क्कमणेत्यादि ॥ प्रतिक्रमण द्वितीयप्रायश्चित्तभेदलक्षण मिथ्यादुष्कृतकरणमितिभावः तच्चो च्चारोत्सर्गं विधाय यदीर्यापथिकाप्रतिक्रमण तदुच्चारप्रतिक्रमण मेव प्रश्रवणविषयमपीति उक्तञ्च उच्चारंपासवण भूमीएवोसिरित्तुउवउत्तो ओसरिऊणंतत्तो इरियावहियंपडिक्कमइ ॥ १ ॥ वोसिरइमत्तगेज्जइ नपडि क्कमईयमत्तगंजोउ साहुपरिठवेई नियमेणपडिक्कमेसोउत्ति २ ॥ इत्तरियत्ति ॥ इत्वरं स्वकल्पकालिक दैवसिकरात्रिकादि ॥ आवकहियत्ति ॥ यावत्कथि कं यावज्जीविकं महाव्रतभक्तपरिज्ञामादिरूप प्रतिक्रमणत्वं चास्य निवृत्तिलक्षणान्वर्थयोगादिति ॥ जंकिंचिमिच्छत्ति ॥ खेलसिंघाणाविधिनिसर्गा भोगानाभोगसहसाकाराद्यसयमस्वरूपं यत्किंचि न्मि थ्या असम्यक् त द्विषयं मिथ्ये दमित्येवं प्रतिपत्ति पूर्वक मिथ्यादुष्कृतकरणं यत् किंचिन्मिथ्याप्रति क्रमणमिति उक्तच सजमयोगेअभु ठियस्सजंकिंचितहमायरियं मिच्छाएयंतिविया णिऊणमिच्छत्तिकायव्वंति ॥ १ ॥ तथा खेलसिंघाणंवाअप्पडिलेहा पमज्जिओतहय वोसिरियपडिक्कमइ तपियमिच्छुकडदेई त्यादि ॥ १ ॥ तथा ॥ सोमणतिएत्ति ॥ स्वापनातिकं स्वपनस्य सुप्तिक्रियाया अंते ऽवसाने भव स्वापनान्तिक सुप्तोत्थिताहि ईर्यां प्रतिक्रामति साधवइति अथवा स्वप्नो निद्रावशेविकल्प स्तस्यान्र्तोविभागः स्वप्नान्त स्तत्र भवं स्वाप्नान्तिक स्वप्नविशेषे हि प्रतिक्रमण कुर्व्वंति साधवो यदाह गमणागमणविहारे सुत्तेवासुमिणदंसणेराओ नावानइसतारे इरियावहियापडिक्कमण ॥ १ ॥ यत आउलमा

मणे पसत्ते तंजहा उच्चारपडिक्कमणे पासवणपडिक्कमणे इत्तरिए आवकहिए जकिंचिमिच्छा सोमणंइए ।

मे १ । लघुनीत परठवीने इरियावही पडिकमे २ । इत्वर थोडाकालनुं पडिकमवो देवसी राई पडिकमे ३ । यावत्कथिक महाव्रत ऊचरवारूप ४ ।

उलयाए सोवणवत्तियाएइत्यादि प्रतिक्रमणसूत्रं तथा स्वप्नकृतप्राणातिपातादि स्पर्शगत्या प्रतिक्रमणरूपया कायोत्सर्गलक्षणप्रतिक्रमणमेव मुक्तं पाणि वहमुसावाए अदत्तमेहुणपरिग्गहेचेव सयमेगंतुअणूण जसासाणभवेज्जाहि ॥ १ ॥ अनतरं प्रतिक्रमण मुक्ता नक्षत्र वश्यकम प्युच्यते आवश्यकाच नक्षत्रोदया दावसरे कुर्व्वंतोति नक्षत्रसूत्रे शेषसूत्राणि चाध्ययनपरिसमाप्तेःपूर्वाध्ययनव दवसेयानीति ॥ इतिश्रीमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानाख्यतृतीयाङ्गविवरणे षट्स्थानकाख्ये षष्ठमध्ययन समाप्त मिति ॥ श्लोकाः ७६५ ॥ ६ ॥

कत्तियाणखत्ते छतारे प० । असिलेसाणखत्ते छतारे पन्नत्ते । छठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिं सुवा ३ त० पुढविकाइयनिव्वत्तिए जाव तसकाइयनिव्वत्तिए एव चिणउवचिणवधउदी रवेयतहनिज्जराचेव । छप्पएसियाण खधा अणता पन्नत्ता । छप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता । छसमयठिईयापोग्गला अणता । छगुणकालगापोग्गला जाव छगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता ॥ इइछठाणं समत्त ॥ ६ ॥

संयमने विषे दूषण लाग्यां मिच्छामिदुक्कडं कहे ५ । सूतो उठी इरियावही पडिक्कमे ६ ॥ कृत्तिका नक्षत्रना छ तारा कह्या ॥ आश्लेषा नक्षत्रना छ तारा कह्या ॥ जीवने छ थानके नीपना पुद्गल पापकर्म पणे चिण्या चिणेछे चिणस्ये तेकहेछे पृथ्वीकाय निर्वर्तित यावत् त्रसकाय निर्वर्त्तित ॥ इम चिण्या उपचिण्या बांध्या उदीस्या वेदवा निर्जराव्या जाणवा ॥ छ प्रदेशिया खध अनताछे ॥ छप्रदेशे रहिया पुद्गल अनताछे ॥ छ समयनी स्थि तिना पुद्गल अनताछे ॥ छगुण काला पुद्गल अनंताछे यावत् छ गुण लूखा पुद्गल अनताछे ॥ इति छ स्थानकरूप छठो अध्ययन ठाणो पूरोथयो ॥

व्याख्यातं षष्ठ मध्ययन मधुना सप्तम मारभ्यते अस्य चाय मभिसंबंधः इहानन्तराध्ययने षट्संख्यो पेताः पदार्था. प्ररूपिता इहतु तएव सप्तसंख्ययोपेताः प्ररूप्यन्त इत्येव सबधस्या स्य चतुरनुयोगद्वारस्ये दमादिसूत्र ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहा य मभिसबधो ऽनन्तरसूत्रे पुद्गलाःपर्यायत उक्ता इह तु पुद्गलविशेषानामेव चयोपशमतो यो नुष्ठानविशेषो जीवस्य भवति तस्य सप्तविधत्व मुच्यते एव सवन्धस्या स्य व्याख्या सहितादिस्तु तत्क्रमः प्रतीतएव नवर सप्तविध सप्तप्रकार प्रयोजनभेदेन भेदा इणा इच्छा दपक्रमण निर्गमो गणोपक्रमणं प्रज्ञप्त न्तीर्थकरादिभि स्तद्यथा सर्वान् धर्म्मान् निर्जराहेतून् श्रुतभेदान् सूत्रार्थोभयविषयान् अपूर्वग्रहणविस्मृतसधीन पूर्वाधीतपरावर्त्तनरूपान् चारित्रभेदा श्च चपणवैयावृत्त्यरूपान् रोचयामि रुचिविषयीकरोमि चिकीर्षामि तेचा मुत्र परगणे सपद्यते नेह स्वगणे बहुश्रुतादिसामग्राभावा दत स्तदर्थं स्वगणा दपक्रमामि भदंत इत्येवं गुरुपृच्छाद्वारेणे क गणापक्रमण सुक्तं अथ सर्वधर्मान् रोचयामो त्युक्ते कथं पृच्छार्थो वगम्यत इत्युच्यते ॥ इच्छामिणभंतेएकल्लविहारपडिममित्यादि ॥ पृच्छा वचनसाधर्म्यादिति रुचेस्तुकरणेच्छार्थता पत्तियामि रोएमो त्यत्र व्याख्यातैवेति क्वचित्तु ॥ सव्वधम्मंजाणामि एवमेगेअवक्कमे ॥ इत्येवं पाठ स्तत्र ज्ञानी अहमिति किंगणेनेति मदा दप

सत्तविहे गणावक्कमणे पन्नत्ते तंजहा सव्वधम्मारोएमि एगइयारोएमि एगइयानोरोएमि सव्वधम्मावितिगि

सात प्रकारे कारण विशेषे गच्छमांथी नीकलवो कह्यो तेकहेछे गुरुने पूछी सर्वधर्म चारित्रादि रुचावाने वीजागच्छमां जाय १। काईक श्रुत चारित्रादि रुचावुछु काईक नथी चारित्रसेवी सकतो तिवारे गुरुने पूछी बीजागच्छमां सामग्री जाणी जाय २। सर्वधर्म अनुकूललक्षणछे तेहनो संसय मुजने ते टालवा बीजागच्छमा जाय गुरुने पूछीने ३। एक कोईक ज्ञाननु संदेह मुजने छे केतलाईक ज्ञानवो संदेह नथी आवतो तेमाटे बीजा गच्छ

क्रामति तथा ॥ एगइयत्ति ॥ एककान् कांश्चन श्रुतधर्मा श्चारित्रधर्मान्वा रोचयामि चिकीर्षामि एककाश्च श्रुतधर्मा श्चारित्रधर्म्मान्वा नोरोचयामि नचि कीर्षामी त्यत श्चिकीर्षितधर्माणां स्वगणे वारणासामग्रभावा दपक्रमामि भदंतइति द्वितीयं २ तथा सर्वधर्मा नुक्तलक्षणान्विचिकित्सामि संशयविषयीकरोमी त्यत संशयापनोदार्थं स्वगणा दपक्रमामीति तृतीय ३ एव मेकका न्विचिकित्साम्येकका नोविचिकित्सामीति चतुर्थं ४ तथा ॥ जुहुणामित्ति ॥ जुह्वोमि अ न्येभ्यो ददामि नच स्वगणे पात्रमस्त्यतो पक्रमामीति पचम ५ एव षष्ठमपि ६ तथा ॥ इच्छामिणभदंत ॥ धर्माचार्य एकाकिनो गच्छनिर्गतत्वा ज्जिनकल्पि कादितया यो विहारा विचरणं तस्य या प्रतिमा प्रतिपत्ति प्रतिज्ञा सा एकाकिविहारप्रतिमा ता मुपसपद्या ङ्गीकृत्य विहर्तुमिति सप्तममिति ७ अ थवा सर्वधर्मान् रोचयामि श्रद्धे ऽहमिति तेषां स्थिरीकरणार्थं मपक्रमामि तथा एककान् रोचयामि श्रद्धे एककाश्च नोरोचयामी त्यश्रद्धितानां श्रद्धा नार्थं मपक्रमामी त्यनेन पदद्वयेन सर्वविषयाय देशविषयायच सम्यग्दर्शनाय गणापक्रमण मुक्तं एवं सर्वदेशविषयसंशयविनोदसूचकेन ॥ सव्वधम्माविं चिकिच्छामीत्यादि ॥ पदद्वयेन ज्ञानार्थं मपक्रमण मुक्तं तथा सर्वधर्मान् जुह्वोमीति जुह्वोते रदनार्थत्वा द्भक्षणार्थत्वाच्च सेवावृत्तिदर्शना दाचराम्यासेवा म्यनुतिष्ठामीति याव त्तथा एककान्वा सेवामीति सर्वेषामासेव्यमानाना विशेषाय्ये मनासेवितानाच क्षपणवैयावृत्त्यादीना चारित्रधर्माणा मासेवार्थं मपक्रमामी त्यनेन पदद्वयेन तथैव चारित्रार्थं मपक्रमण मुक्तमिति उक्तश्च नाणट्ठदसणट्ठा चरणट्ठाएवमाइसंकमण संभोगट्ठावपुणो आयरियट्ठावणायव्वंति

च्छामि एगइयाविंतिगिच्छामि एगइयानोविंतिगिच्छामि सव्वधम्माजुज्झणामि एगइयाजुज्झणामि एगइया

मा ज्ञानी जाणी जाय पूछीने ४। सर्व धर्म ज्ञानादिरूप अन्यने आपु इम जाणी पोताना गच्छमां पात्र तेहवो नथी तेमाटे वीजा गच्छमा जाय ५।

॥ १ ॥ तत्र ज्ञानार्थं सुत्तस्सवअत्थस्सव उभयस्सवकारणाउसकमण बीसज्जियम्सगमण भीअीयनियत्तएकोएत्ति ॥ १ ॥ दर्शनप्रभावकशास्त्रार्थं दर्शनार्थ चारित्रार्थं यथा चरित्तट्ठदेसिदुविहा [देशेहिविधादोषादित्यर्थः] एसणदोसायइत्थिदोसाय [ततोगणापक्रमणंभवति] गच्छंमियसीयते आयसमुत्थेहि दोसेहिति ॥ १ ॥ संभोगार्थं नाम यत्रो पसपन्न स्ततोपि विसंभोगकारणे सदनलचणे स त्यपक्रामतीति आचार्यार्थं नामाचार्यस्य महाकल्पश्रुतादिश्रुत नास्यत स्तदध्यापनाय शिष्यस्य गणान्तरसक्रमो भवतीति इहच स्वगुरु पृष्ट्वेव विसर्जिते नापक्रमितव्यमिति सर्वत्र पृच्छार्थो व्याख्येय उक्तकारणवशात्तु पश्चा दिकाला त्परतो ऽविसर्जितोपि गच्छेदिति निष्कारण गणापक्रमणं त्वविधेयं यत आयरियाईणसया पच्छित्तभयानसेवइअकिच्च वेयावच्चज्झयणे सुस ज्जएतदुवओगेण ॥ १ ॥ सूत्रार्थोपयोगेनेत्यर्थ स्तथा एगोइच्छोगंमो तेणादिभयायअलियगारे [गृहस्थान्] कोहादोचउदिसे परिनिव्वावंतिसेअसेत्ति ॥ १ ॥ एव अज्ञानस्थैर्यायर्थ मन्यथावा गणा द्दपक्रान्तस्य कस्यापि विभगज्ञान स्यादिति विभगज्ञानभेदानाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ सप्तविधं सप्तप्रकारं विरुद्धो वितथोवा अयथावस्तुभगो वस्तुविकल्पो यस्मिंस्त द्विभग तच्च तज्ज्ञानच साकारत्वादिति विभगज्ञानं मिथ्यात्वसहितावधिरित्यर्थः ॥ एग दिसिं ॥ एक स्या दिशि एकया दिशा पूर्वादिकयेत्यर्थ. लोकाभिगमो लोकाववोध इत्येवं विभगज्ञान विभगता चास्य शेषदिक्षु लोकस्या नभिगमेन तत्प्रतिषेधनादिति

नोजुज्जणामि इच्छामिणंभंतेएगल्लविहारपडिमंउवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए । सत्तविहे विभंगणाणे पण्णत्ते

एक कांईक ज्ञान आपुं एहवो पात्रछे एकज्ञान आपिवा जेहवो पात्र नथी एतले पूर्णपात्र नथी इम जाणी वीजा गच्छमां जाय ६ । हे भगवन हुं वाछा करुछु एकलो विहार करवानो भाव अगीकार करी गुरु आज्ञा आपे तिवारे विहार करे ७ ॥ सात प्रकारे विभगज्ञान कह्यो तेकहेछे मि

१ तथा पचसु दिन्नु लोकाभिगमो नैकस्यां कस्यांचि द्दिशीति इहापि विभंगता एकदिशि लोकानिषेधादिति २ क्रियामात्रस्यैव प्राणातिपातादे जींवैः क्रियमाणस्य दर्शना त्तद्धेतुकर्म्मण श्चादर्शनात् क्रियैवा चरणं कर्म यस्य स क्रियाचरण' कोसौ जीव इत्यवष्टभ परं यद्विभगं तत्तृतीय विभगता चास्य कर्म्मी णो ऽदर्शनेना,नभ्युपगमा देव मुत्तरत्रापि विभंगता वसेयेति ३ ॥ मुयगोत्ति ॥ बाह्याभ्यतर पुद्गलरचितशरीरो जीव इत्यवष्टभवत् भवनपत्यादि देवानां बाह्याभ्यतर पुद्गलपर्यादानतो वैक्रियकरणदर्शनादिति चतुर्थं ४ ॥ अमुदगोजोवेत्ति॥ देवाना बाह्याभ्यन्तरपुद्गलादानविरहेण वैक्रियवता दर्शना द्वाह्याभ्यंत रपुद्गलरचितावयवशरीरो जीव इत्यवसायवत् पचम५ तथा॥ रूविजोवेति॥ देवानां वैक्रियशरीरयतां दर्शना द्रूप्येवजीव इत्येव मवष्टम्भव त्षष्ठमिति ६ तथा ॥ सव्वमिणजीवत्ति ॥ वायुना चलतः पुद्गलकायस्य दर्शना त्सर्वे मेवेद वस्तु जीवा एव चलनधर्मोपेतत्वा दित्येवं निश्चयव त्सप्तममिति सग्रहवचनमेतत् ॥ तत्थेत्यादि ॥ त्वेतस्यैव विवरणवचन मुत्तानार्थमेव नवर॥ तत्थत्ति ॥ तेषु सप्तसु मध्ये ॥ जयाणति ॥ यस्मि न्काले ॥ सेणंति ॥ इह तदेति गम्यते स

तंजहा एगदिसिंलोगाभिगमे पंचदिसिंलोगाभिगमे किरियाचरणेजीवे मुदगोजीवे अमुदगोजीवे रूवीजीवे सव्वमिण जीवा । तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विभंग

थ्यात्वसहित अवधि ते विभग ज्ञान । एक दिशि लोकनें जाणे देखें १ । पाचदिशि लोकने जांणे एक दिशि नजाणे २ । कर्म तेज जीवछे कोण अ न्य जीवछे इम जाणे ३ । बाह्य अभ्यतर पुद्गले नीपनुं शरीर तेज जीव ४ । बाह्य अभ्यतर पुद्गले रहित जीवछे ५ । रूपी जीवछे ६ । सर्व पुद्गला दि वस्तु चलेछे तेमाटे सर्वजीवछे ७ ॥ तिहा निश्चै यह पहिलो विभगज्ञान कहेछे जिवारे तथा रूपनो मिथ्यात्वीने श्रमणमाहन शाक्यादि दर्शनी

विभगी ॥ पासइत्ति ॥ उपलचणत्वा ज्जानातीति चान्यथा ज्ञानत्वं विभंगस्य नस्यादिति ॥ पाईणंवेत्यादौ ॥ वा विकल्पार्थः ॥ उड्ढंजावसोहम्मोकप्पोइत्यनेन ॥ सौधर्म्मात्परतः प्रायः किल वालतपस्विनो न पश्यन्तीति दर्शित तथावधिमतो प्यधोलोको दुरधिगमो विभंग ज्ञानिनस्तु सुतरा मित्यधोदिग्दर्शन मिह नाभिहित दुरधिगम्यता चाधोलोकस्य त्रिस्थानके ऽभिहितेति ॥ एवंभवइत्ति ॥ एवंविधो विकल्पो भवति यदुत अस्ति मे अतिशेष शेषा व्यतिक्रात सा तिशयमित्यर्थो ज्ञानच दर्शनच ज्ञानेनवा दर्शन ज्ञानदर्शनं तत श्चैकदिशो दर्शनेन तत्रैव लोकस्यो पलम्भादाह एकदिशि लोकाभिगमइति एकदिग्मात्रए व लोक स्तथो पलभादिति भावः सति विद्यते एकके श्रमणावा ब्राह्मणावा तेचैवमाहुः अन्यास्वपिचपसुदिचु लोकाभिगमो भवति तास्वपि तस्य विद्यमा नत्वात् येते एवमाहु' यदुत पंचस्वपि दिचु लोकाभिगमो मिथ्या तेएव माहुरिति प्रथम विभगज्ञानमिति १ अथा पर द्वितीयं तत्र ॥ पाईणवेत्यादौ ॥

णाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणंविन्नंगणाणेणं समुप्पन्नेण पासइ । पाईणवा दाहिणंवा उदीणंवा उड्ढंवा जाव सोहम्मोकप्पो तस्सण मेव न्नवइ च्चुत्थिणमम च्चुइसेसे णाणदसणे समुप्पन्ने एगादिसिंलोगान्निगमे सतेग इया समणावा माहणावा एवमाहंसु पंचदिसिंलोगान्निगमे जेते एवमाहसु मिच्छंते एवमाहंसु पढमेविन्नग

ने अज्ञान तप करे ते विन्नगज्ञान उपजै ते दर्शनी ते विन्नगज्ञान उपनाथी देखै पूर्वै अथवा पश्चिमे अथवा दक्षिणे अथवा उत्तरे अथवा ऊंचो या वत् सौधर्म देवलोक लगे तेहनें एहवो होय छै मुझने उत्कष्टो ज्ञानदर्शन ऊपनुछे एकदिशि लोकने जाणुछुं केतलाईक श्रमणमहन इम कहैछे पाच दिशि लोकनुं अन्निगमछे जे एहवु कहैछे तेखोटो कहैछे एपहिलो विन्नगज्ञान १ । हिवे बीजो विन्नंगज्ञान कहैछे जिवारे तथारूप

वाशब्द श्चकारार्थोद्रष्टव्यः विकल्पार्थत्वेतु पश्चानां दिशां पश्यत्ता नगम्यते एकस्या एवच गम्यते तथ।च प्रथमद्वितीययो र्विभंगयो र्भेदो नस्या दिति कश्चिद्वा शब्दा न दृश्यतएवेति २ प्राणानतिपातयमानानित्यादिषु जीवा निति गम्यते ॥ नोकिरियाचरणेत्ति ॥ अपितुकर्मावरणद्रति ३ ॥ देवामेवत्ति ॥ देवानेव भवनवास्यादोनेव ॥ बाह्रिरभतरेत्ति ॥ बाह्यान् शरोरावगाहचेत्रा दभ्यतरान् अवगाहचेत्रस्थान् पुद्गलान् वैक्रियवर्गणारूपान् पर्यादायपरिसमतात् वे

णाणे। अहावरे दोच्चेविभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विभंगणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेण विभंगणाणेण समुप्पन्नेणं पासइ पाईणवा पडीणवा दाहिणवा उदीणवा उड्ढ जाव सोहम्मोकप्पो तस्स णमेव भवइ अत्थिण मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने पचदिसिं लोगाभिगमे संतेगइया समणावा माह णावा एवमाहसु एगदिसिं लोगाभिगमे जेते एवमाहसु मिच्छंते एवमाहसु दोच्चेविभंगणाणे । अहावरेतच्चे विभंगणाणे जयाणतहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विभंगणाणे समुप्पज्जइ सेण तेण विभंगनाणेणं

मिथ्यात्वी श्रमण माहणने विभंगज्ञान ऊपजे ते ते ज्ञान ऊपने देखे पूर्व पश्चिमे दक्षिणे उत्तरे ऊंचो यावत् सौधर्म देवलोक विभंगज्ञानी अधोलोक नदेखे ते दुरधिगमछे तेहने एहवो होय छे मुजने उतकृष्टो ज्ञानदर्शन ऊपनोछे पाचदिशि लोकने जाणुछु केतलाईक श्रमण माहन इमकहेछे एकदि शेज लोकनु अभिगमछे जेइम कहेछे ते खोटो कहेले इम कहे ते बीजो बिभंगज्ञान २ । हिवे त्रीजो विभंगज्ञान कहेछे जिवारे तथारूप श्रमण माहनने विभंगज्ञान उपजे ते तेविभंग ज्ञाने करी ऊपने देखे प्राणातिपात करतो मृषावाद बोलतो अदत्तादान लेतो मैथुन स्त्री सेवा करतो परि

क्रियसमुद्घातेनादाय गृहीत्वा ॥ पुढेगत्तंति ॥ पृथक्कालदेशभेदेन कदाचित् क्वचिदित्यर्थः एकत्वं एकरूपत्वं नानात्वं नानारूपत्वं विकृत्य उत्तरवैक्रियतया ॥ चिट्ठित्तएत्ति ॥ स्थातुमासितु प्रवृत्तानिति वाक्यशेषइति संबंधः कथंविकृत्ये त्याह ॥ फुसित्ता ॥ तानेव पुद्गलान् स्पृष्ट्वा तथा त्मना स्फुरित्वा वीर्यं मुल्लास्यपुद्गलान्वा

समुप्पन्नेणं पासइ पाणंअइवाएमाणे मुसंवयमाणे अदिन्नमादित्तमाणे मेहुणंपडिसेवमाणे परिग्गहंपरिगेण्हमाणेवा राइभोयणंभुंजमाणेवा पावचणं कम्मं कीरमाण णोपासइ तस्सणमेवं भवइ अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने किरियाचरणेजीवे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु नोकिरियाचरणेजीवे जेते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु तच्चेविभंगणाणे । अहावरे चउत्थे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा जाव समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता पुढेगत्तं णाणत्त फुसित्ता फुरित्ता फुडित्ता विगुब्वित्ताणं चिट्ठित्तए तस्सणमेवं भवइ अत्थिणं मम

ग्रह प्रते ग्रहतो रात्रिभोजन करतो एहवा जीवने देखे तेहने एहवो होय छै मुजने अतिशायी ज्ञानदर्शन ऊपनुं जे क्रियाचरण जीवछै केतलाईक श्रमण माहन इम कहैछे क्रियाचरण जीव नथी जे ते इमकहैछे ते खोटो कहैछे ते त्रीजो विभंगज्ञान ३। हिवे चौथो विभंगज्ञान कहैछे जिवारे तथारूप श्रमण माहनने यावत् उपजे ते पुरुष तेविभंगज्ञाने एक देवतानेज देखे बाह्य अभ्यंतर पुद्गल वैक्रियसमुदघाते ग्रहीने पृथक् जुदो पोताथी एक घणा प्रकारना रूप विकुर्वीने ते पुद्गल फरसीने वीर्यउलसीने प्रगट करीने विकुर्वणा करीने रहै ते देखी तेहने एहवो होय छै मांहरे अतिशा

स्फोरयित्वा तथा स्फुटित्वा प्रकाशीभूय पुद्गलान्वा स्फोटयित्वा वाचनांतरेतु पदद्वय मपर मुपलभ्यते तत्र संवर्त्त्य सारानेकीकृत्य निवर्त्त्या ऽसारान् पृथक्कृ त्वेति अथवा पर्याप्तपुद्गले रुत्तरवैक्रियशरीरस्यैकत्व नानात्वच कर्मतापन्न स्फुरद्रा गारभ्य तथा स्फुरत् कृत्वा स्फुटकृत्वा समेकीभावेन वर्त्तितं सामान्यनिष्पन्नं कृत्वा सर्वथा परिसमाप्य किमुक्तं भवति विकुर्व्य वैक्रिय कृत्वा नत्वौदारिकतयेति तस्येति विभंगज्ञानिनो बाह्याभ्यंतरपुद्गलपर्यादानप्रवृत्तदेवान् पश्यत एव भवति इतिविकल्पो जायते ॥ मुदगोत्ति ॥ बाह्याभ्यन्तरपुद्गलरचितशरीरो जीवइति ४ अथा परपंचम तत्र बाह्याभ्यंतरान् पुद्गलान् पर्यादायेत्यत्र निषेधस्य वैक्रियसमुद्घातापेक्षितत्वा दुत्पत्तिचेत्वस्था स्तूत्पत्तिकाले ग्रहीत्वा भवधारणीयशरीरस्यै कत्व मेकादेवापेक्षयाकंठाद्यवयवापेक्षयावा नानात्वं त्वनेकादेवापेक्षया हस्ताङ्गुल्याद्यवयवापेक्षयावा विकुर्व्य स्थातुं शक्नुता नित्यादि शेषप्राग्वत् बाह्यपुद्गलपर्यादानं हि विनो त्तरवैक्रियैकत्वनानात्वे किल नभवत इति भवधारणी

अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने मुदगोजीवे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु अमुदगोजीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु चउत्थेविभंगणाणे। अहावरेपंचमेविभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्स जाव समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेण देवामेव पासइ बाहिरब्भंतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता

यी ज्ञानदर्शन ऊपनु छे मृतक जीव बाह्याभ्यंतर पुद्गलरचित शरीरे जावे ते मृतक केतलाईक श्रमण माहन इम कहेछे अमृतक जीवछे पुद्गलरहित जीवछे जे ते इम कहेछे ते खोटुं कहेछे एह चौथो विभंगज्ञान ४। हिवे पाचमु विभंगज्ञान कहेछे जिवारे तथारूप श्रमण माहनने यावत् उपजे ते विभंगज्ञान देवतानेज देखे बाह्याभ्यंतर पुद्गल अणलीधे भवधारणीय उपजवा काले वैक्रिय समुदघातविना वैक्रिय पुद्गल ग्रहीने एक शरीर कं

य मिहा धिकृतं तदेव मबाह्याभ्यन्तरपुद्गलरचितशरीरदेवदर्शना त्तस्यैवं विकल्पो भवति ॥ अमुदगोत्ति॥ अबाह्याभ्यन्तरपुद्गलरचितावयवशरीरो जीवइति ॥ रूवीजीवेत्ति ॥ पुद्गलाना पर्यादाने अपर्यादानेव वैक्रियरूपस्यै कानेकरूपस्य देवेषु दर्शना द्रूपवानेव जीवइत्यवसायो जायते तस्या रूपस्य कदाचना

पुढेगत्तं णाणत्तं जाव विउव्वित्ता चिठित्तए तस्सणमेवं भवइ अत्थि जाव समुप्पन्ने अमुदगोजीवे संतेगइ या समणावा माहणावा एवमाहंसु मुदगोजीवे जेते एवमाहंसु मिच्छते एवमाहंसु पंचमे विभंगणाणे। अहावरे छठे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा जाव समुप्पज्जइ सेण तेणं विभं गणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्तावा अपरियाइत्तावा पुढेगत्तं णाणत्तं फुसित्ता जाव विउव्वित्ताणं चिठित्तए तस्सण मेवंभवइ अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने रूवीजीवे संते गइया समणावा माहणावा एवमाहंसु अरूवीजीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु छठे विभंग

ठा अवयव लेखै अथवा घणा देवना आपै ते देखीने एहवो होय छै मुजने यावत् ऊपनुं छे केतलाईक श्रमण माहन इम कहेछे समुदगो जीवछे जे इम कहेछे तेखोटो कहेछे ए पाचमु विभंगज्ञान ५। हिवे छठो विभगज्ञान कहेछे जिवारे तथारूप श्रमण माहनने यावत् ऊपजै तेपुरुष ते विभंग ज्ञान ऊपनाथी देखै देवतानेज बाह्याभ्यंतर पुद्गल ग्रहीने अथवा अणग्रहीने जुदो एकरूप घणारूप फरसीने यावत् विकुर्वणा करीने रहेछे तिवारे एहवो जाणै मुजने अतिशायी ज्ञानदर्शन ऊपनोछे रूपी जीवछे अरूपीजीवछे जे इम कहेछे ते खोटो कहेछे एह छठो विभंगज्ञान ६। हिवे सातमो

प्यदर्शनादिति ६ ॥ सुहुमेत्यादि ॥ सूक्ष्मेण मन्देन नतु सूक्ष्मनामकर्मोदयवर्त्तिना तस्य वस्तुचलना समर्थत्वात् ॥ फुडंति ॥ स्पृष्टं पुद्गलकायं पुद्गलराशिं ॥ एयतंति ॥ एजमानं कंपमानं वेजमान विशेषेण कंपमानं चलंत स्वस्थाना दन्यत्र गच्छन्तं क्षुभ्यंतं अधोनिमज्जतं स्पन्दन्तमीषच्चलंत घट्टयंतं वस्त्वन्तरं स्पृशत मुदीरयतं वस्त्वंतर प्रेरयंत मनाख्येय मनेकविधं भाव पर्याय परिणमंतं गच्छत ॥ सव्वमिणति ॥ सर्वमिद चलत्पुद्गलजातं जीवा' स्पन्दनलक्षणजीवधर्मोपेतत्वा त्व च चलदपि श्रमणादयो जोवा चाजीवाश्चेति प्राहु स्तन्मिथ्येति तदध्यवसायइति ॥ तस्सणति ॥ तस्य विभगज्ञानवतः ॥ इमेत्ति ॥ वक्ष्यमाणान सम्यगुपगता

णाणे। अहावरेसत्तमे विन्नगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विन्नंगणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विन्नगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ सुहुमेणं वाउकाएणं फुडं पोग्गलकायं पयंत वेयत चलंत खुभंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरेंतं तन्नाव परिणमंतं तस्सणमेव भवइ अत्थिण मम अइसेसे णाणदसणे समुप्पन्ने सव्वमिणंजीवा संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहिंसु जीवाचेव अजीवाचेव जेते एवमाहिंसु मिच्छाते एवमाहिंसु

विन्नंगज्ञान कहैछे जिवारे तथारूप श्रमणने विभंगज्ञान उपजे ते विन्नगज्ञान ऊपनाथी देखे सूक्ष्म मद वायुकाये फरसी पुद्गल काय पुद्गल निरासी ते कंपाती विशेषे कंपती स्वस्थानथी अन्यस्थाने जाती क्षोभती थोडीकचलती वीजी वस्तुने सघटती वीजी वस्तुने प्रेरती तेने अनेक भावप्रते परिणमती जाती पुद्गल देखी तेहने एहवो होय छे मुजने अतिशायी ज्ञानदर्शन ऊपनुं सर्व एह चलती पुद्गलनी जाति ते जीवछे केतलाईक श्रमण माहन इम कहैछे जीव पणिछे अजीव पणिछे इम कहै ते खोटो कहैछे तेहने ए च्यार जीवनी निकाय थावरनथी जाण्या अणचलवानी अवस्थाये जी

अचलनावस्थायां जीवत्वेन नबोधविषयीभूता स्तद्यथा पृथिव्यप्तेजोवायव श्चलनदोहदादिधर्मवतां त्रसाना मेव दोहदादित्रसधर्मवतां वनस्पतीना मेवच जीव
तया प्रज्ञातात् पृथिव्यादीनांतु वायुचलनेन स्वत श्चलनेनच त्रसत्वेनैव प्रज्ञातात् स्थावरजीवतया तु तेषा मनभ्युपगमाच्चेति ॥ इच्चेएहिंति ॥ इति हेतो रेतेसु
चतुर्षु जीवनिकायेषु मिथ्यात्वपूर्वो दंडो हिंसा मिथ्यादंड स्तं प्रवर्त्तयति तद्रूपानभिज्ञः स स्तान् हिनस्ति निन्हुतेचेतिभावइति सप्तमं विभंगज्ञानमिति मिथ्या
दंड प्रवर्त्तयतीत्युक्त दंडश्च जीवेषु भवतीति योनिसंग्रहतो जीवानाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ योनिभि रुत्पत्तिस्थानविशेषैर्जीवानां संग्रहो योनिसंग्रहः सच सप्त
धा योनिभेदा त्सप्तधा जीवाइत्यर्थः अंडजाः पक्षिमत्स्यसर्पादयः पोतं वस्त्र न्तद्वज्जाताः पोतादिववा वाहित्या ज्जाताअजरायुवेष्टिताइत्यर्थः पोतजा हस्तिव
ल्गुलीप्रभृतयो जरायौ गर्भवेष्टने जाता तद्वेष्टिता इत्यर्थो जरायुजा मनुष्या गवादयश्च रसे तीमनकाञ्जिकादौ जातारसजाः सस्वेदाज्जाताः सस्वेदजाः यूका

तस्सणमिमे चत्तारि जीवनिकाया णोसंममुवगया भवंति तंजहा पुढविकाइया जाव वाउकाइया । इच्चेएहिं
चउहिं जीवनिकाएहि मिच्छादंडपवत्तेइ सत्तमेविभंगणाणे । सत्तविहे जोणिसंगहे पन्नत्ते तंजहा अंडजा
पोतजा जराउजा रसया संसेयया संमुच्छिमा उब्भिया । अंडगा सत्तगइया सत्तागइया पन्नत्ता तंजहा अंडगे

वकरी नथी जाण्यां ते कहेले पृथ्वीकाय अपकाय तेउकाय वाउकाय इमकरी च्यार जीवनिकायेकरी हिंसादंड प्रते करे यहसातमो विभंगज्ञान ७ ॥
सात प्रकारे योनिसंग्रह जीवना उत्पत्तिस्थान कह्या तेकहेले अंडज पक्षी मत्स्य सर्पादि १ । वस्त्रवेष्टित पोतज हस्ती प्रमुख २ । जरायुज जरथी वीं
ट्या माणस गाय प्रमुख ३ । रसज कांजीमां उपजे ते ४ । परसेवाथी जूं प्रमुख ५ । समूर्च्छिम कृमि प्रमुख ६ । भूफोड नीसरे खंजनादि ७ ॥ अंडज

दय: संमूर्च्छेन निर्वृत्ताः संमूर्च्छिमाः कृम्यादय उद्भिदो भूमिभेदा ज्जाता उद्भिज्जा खञ्जनकादय अथा ण्डजादीनामेव गत्यागतिप्रतिपादनाय ॥ अडयेत्या दि ॥ सप्तसूत्रक तत्र मृतानां सप्तगतयों डजादियोनिलक्षणा येषा ते सप्तगतय' सप्तभ्य एवाडजादियोनिभ्यः आगति रुत्पत्ति येषाते सप्तागतयः ॥ एवचेव त्ति ॥ यथां डजाना सप्तविधे गत्यागती भणिते तथा पोतजादिभिः सह सप्ताना मप्यंडजादिजीवभेदानां गतिरागतिश्च भणितव्या ॥ जावउभियत्ति ॥ स प्तमसूत्रं यावदिति शेषं सुगमं पूर्वं योनिसंग्रह उक्तइति संग्रहप्रस्तावा त्संगहस्थानसूत्रं ॥ आयरियेत्यादि ॥ आचार्योपाध्यायस्येति समाहारद्वन्द्वः कर्मधारयोवा गणे गच्छे सग्रहो ज्ञानादीनां शिष्याणांवा तस्य स्थानानि हेतवः सग्रहस्थानानि आचार्योपाध्यायो गणेआज्ञावा विधिविषय मादेश धारणावानिषेधविषय मादेशमेव सम्यक्प्रयोक्ता भवति एवहि ज्ञानादिसग्रहः शिष्यसग्रहोवा स्या दन्यथा तद्भ्रंशएवेति प्रतीतं यतः जहिनत्थिसारणावा रणायपडिचोयणायग

अंडगेसुउववज्जमाणे अंडएहिंतोवा पोयएहिंवा जाव उब्भिएहिंतोवा उववज्जेज्जा सेचेवणं से अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडयत्ताएवा पोययत्ताएवा जाव उब्भियत्ताएवा गच्छेज्जा । पोयया सत्तगइया सत्तागइया एवचेव सत्तण्हविगइरागईज्ञाणियव्वा जावउब्भियत्ति आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि सत्त संगहठाणा पन्नत्ता

जीवने सात गति सात आगति कही ते कहेछे अंडज अंडजमा उपजतो अंडजमाहिथी अथवा पोतजमाहिथी यावत् उदभेदज मांहिथी उपजे तेज ते अंडज अंडजपणु मूकतो अंडजपणे अथवा पोतजपणे यावत् उद भेदजपणे जाय । पोतजनी सातगति सात आगति कही इमज सातगति सात आगति कही यावत् उद्भिज लगे जाणवी ॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छमा सात सग्रहस्थान कह्या ज्ञानशिष्यनाहेतु तेकहेछे आचार्य उपाध्यायना

॥ च्छंमि सोउग्गगच्छोगच्छो मोत्तव्वोसंजमत्थीहिंति ॥ १ ॥ एवंजहापंचठ्ठाणेत्ति ॥ तचेदं आयरियउवज्झाएणं गणंसि आहाराइणियाए किइकंमंपजजुत्ता भवई २ आयरियउवज्झाएणं गणसि जे सुयपज्जवजाएधारेइ तेकालेकालेसम्मअणुप्पवाइत्ताभवइ ३ आयरियउवज्झाएण गणसि गिलाणसेहवेयावच्चं सम्मं अ भुठ्ठित्ताभवइ ४ आयरियउवज्झाएणगणसि आपुच्छियचारी याविभवइ नोअणापुच्छियचारी ५ स्थानद्वय लिहेवेति व्याख्यातु सुकरमेव नवर माप्रच्छनं ग च्छस्य यतउक्तं सोसेजइआमते पडिच्छगातेणवाहिरभाव अहइयरेतोसीसा नेवसमत्तम्मिगच्छम्मि ॥ १ ॥ तरुणावाहिरभावं नयपडिलेहोवहीणकोकम्मं मूलगपत्तसरिसगा परिभूयावच्चिमोथेरत्ति ॥ २ ॥ तथा ॥ अणुप्पन्नाइति ॥ अनुत्पन्ना न्यलब्धानि उपकरणानि वस्त्रपात्रादीनि सम्यगेषणादिशुद्धा उत्पा दयिता सपादनशीलो भवति सरचयिता पायेन चौरादिभ्यः संगोपयिता अल्पसागारिककरणेन मलिनता रचणेनवेति एव संग्रहस्थानविपर्ययभूत मसग्र

तं० आयरियउवज्झाएगणंसि आणंवा धारणंवा सम्मंपउजित्ता भवइ एवं जहा पंचठाणे जाव आयरियउव ज्झाएगणंसि आपुच्छिय चारीयाविभवइ नो अपुच्छियचारीयाविभवइ । आयरियउवज्झाएणंगणसि अणु प्पन्नाइं उवकरणाइ सम्म उप्पाइत्ता भवइ आयरियउवज्झाएणंगणंसि पुव्वुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मंसार

गच्छमा आज्ञाप्रते सूत्रार्थनुं धारवो सम्यक् प्रकारे ते साधुसंग्रहरूप एम जिम पांचमां ठाणामां कह्यो तिम यावत् आचार्य उपाध्यायनां गच्छमां पूछीने गुरुने चाले ते अणपूछी नचाले किहांई नजाय । आचार्य उपाध्यायना गच्छमां नथी ऊपना जे उपकरण वस्त्रपात्रादि उपजावा मेलवा स मर्थ होय । आचार्य उपाध्यायना गच्छमां ऊपना जे उपकरण वस्त्रपात्रादि ते सम्यक् प्रकारे चौरादिकथी राखे गोपवे मलिन थावानदे असम्यक्

इसूत्रमपि भावनीयमिति भनस्सर मात्रां न प्रयोक्ताभवतीति उक्त मात्राच पिण्डैषणादिविषयेति पिण्डैषणादिसूत्रषट्कं ॥ सत्त पिंडेसणाओत्ति ॥ पिंडं समय भाषया भक्त तस्यैषणा गृहणप्रकारा: पिण्डैषणा स्तायैता: संसठमससठा उद्धडतहप्पलेवियाचेव ४ उग्गहिया ५ पग्गहिया ६ उज्झियधम्मायसत्तमिया ॥ १ ॥ तत्रा ससृष्टा हस्तमात्राभ्या चिन्तनीया ॥ असंसट्ठेमत्तेखरडियत्ति ॥ वुत्तभवइ ॥ एव स्टङ्गत: प्रथमा भवति गाथायां तु सुखमुखोच्चारणार्थो न्यथा पाठ: ससृष्टाताभ्या मेन चिन्त्या ॥ ससट्ठेहत्थेसंसट्ठेमत्तेखरडिएत्तिवुत्तभवइ ॥ एवग्टङ्गतो द्वितीया उद्धृताना मस्थान्यादौ स्वयोगेन भोजनजात मुद्धृतं ततो ॥ असंसट्ठेहत्थेअसंसट्ठेमत्तेससट्ठेवामत्तेससट्ठेवाहत्थे ॥ एवग्टङ्गत स्टतीया अल्पलेपाना मल्पशब्दो ऽभाववाचक: निर्लेप पृथुकादिगृह्णत चतुर्थी अवगृहीता ना सभोजनकाले शरावादिषू पहृत मेव भोजनजात यत्नतो गृह्णत: पचमी प्रग्टहीताना मभोजनवेलायां दातु मभ्युद्यते न करादिना प्रग्टहीतं यद्भोज नजातं भोक्तुवा स्वहस्तादिना तद्ग्टह्णत इतिषष्ठी उज्झितधर्मानाम यत्परित्यागार्हं भोजनजात मन्येच द्विपदादयो ना वकांचति तद्धैत्यक्तांवा स्टह्णत

खित्ता संगोवित्ता न्नवइ। आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि सत्त असंगहठाणा पसत्ता तंजहा आयरियउ वज्झाएणंगणंसि आणंवा धारणंवा नोसम्मं पउजित्ता न्नवइ एवं जाव उवगरणाण नोसम्मं सारक्खित्ता सगोवेत्ता न्नवइ। सत्त पिंडेसणाउ पसत्ताउ। सत्त पाणेसणाउ पसत्ताउ। सत्त उग्गाहपडिमाउ पसत्ताउ

पणे नराखे नगोपवे ७ ॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छमा सात असंग्रहस्थान कह्या तेकहेछे आचार्य उपाध्यायना गच्छमा आज्ञाप्रते सूत्रार्थनी धार णाप्रते सम्यक् प्रयुजे नही एम यावत् ऊपना उपकरण प्रते सम्यक् प्रकारे राखे नही गोपवे नही ॥ सात पिंडेषणा कही ॥ सात पांणीनी एषणा

इति हृदयं सप्तमीति पानकैषणा एता एव नवरं चतुर्थ्यां नानात्वं तत्र द्रायामसौवीरकादिनिर्लेप विज्ञेयमिति ॥ उग्गहपडिमत्ति ॥ अवगृह्यत इत्यवगृ
हो वसति स्तत्प्रतिमा अभिगृहा अवगृहप्रतिमा तत्र पूर्वमेव विचिन्त्यै वंभूतः प्रतिश्रयो मया गृाह्यो नान्यथाभूतइति तमेन याचित्वा गृह्णतः प्रथमा तथा
यस्य भिचो रेवभूतो भिगृहो भवति तद्यथा अहच खल्वेषां साधूनां कृते अवगृहं गृहीष्यामि अन्येषां वा वगृहे गृहीते सति वत्स्यामीति तस्य द्वितीया
प्रथमा सामान्येन इयतु गच्छान्तर्गताना सभोगिकाना मसभोगिकाना वोद्युक्तविहारिणा यत स्ते न्योन्यार्थं याचतइति तृतीयात्वियं अन्यार्थ मवगृह
याचिष्ये अन्यावगृहीतायातु न स्थास्यामीति एषा त्वहालंदिकानां यत स्ते सूत्रावशेष माचार्या दभिकाचत आचार्यार्थंतां याचंतइति चतुर्थीपुन रहमन्ये
षां कृते अवगृहं न याचिष्ये अन्यावगृहीतेतु वत्स्यामीतो यंतु गच्छ एव अभ्युद्यतविहारिणां जिनकल्पाद्यर्थं परिकुर्वता पचमीतु अह मात्मकृते अवगृह
मवगृहीष्यामि नचा परेषा द्वित्रिचतुःपचानामिति इयतु जिनकल्पिकस्येति षष्ठी पुनर्यदीयमवगृह गृहीष्यामि तदीयमेवच कटादिक सस्तारक संगृहीष्या
मि इतरथो त्कटुकोवा निषण्ण उपविष्टोवा रजनीं गमयिष्यामी त्येषामपि जिनकल्पिकादे रिति सप्तमी एषैव पूर्वोक्ता नवर यथासूतमेव शिलादिक
गृहीष्यामी नेतरदिति अयच सूत्रत्रयार्थः क्वचित् सूत्रपुस्तक एव दृश्यतइति ॥ सत्तसत्तिक्कयत्ति ॥ अनुद्देशकतयैव सप्तैन एकका अध्ययनविशेषा आचारां
गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयचूडारूपा स्तेच समुदायतः सप्तेतिकृत्वा सप्तैकका अभिधीयते तेषा मेकोपि सप्तैककइति व्यपदिश्यते तथैव नामत्वात्

सत्त सत्तिक्कया प० । सत्तमहज्झयणा पन्नत्ता सत्त सत्तमियाणं भिक्खुपडिमा एगूणपन्नयाए राइंदिएहिं एगे

कही ॥ सात अवग्रह उपासरो तेहनी प्रतिमा ते अवग्रहप्रतिमा कही सात सप्तैकक कह्या तिहां पहिला स्थान सप्तैकक दुहरा नेषेधिकी सप्तैक

एवंच ते सप्तेति तत्र प्रथमः स्थानसप्तैकको द्वितीयो नैषेधिको सप्तैककः स्तृतीय उच्चारप्रश्रवणविधिसप्तैकक श्चतुर्थः शब्दसप्तैकक' पचमो रूपसप्तैक क षष्ठःपरक्रियासप्तैककः सप्तमो न्योन्यक्रियासप्तैककः इति ॥ सत्तमहज्झयणत्ति ॥ सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे महान्ति प्रथमश्रुतस्कन्धाध्ययनेभ्य· श्चकाशा न्नन्यतो बृहति अध्ययमानि महाध्ययनानि तानिच पुण्डरीक १ क्रियास्थान २ आहारपरिज्ञा ३ प्रत्याख्यानक्रिया ४ अनाचारश्रुत ५ आर्द्रककुमा रीयं ६ नालदीयचेति ७ ॥ सत्तसत्तमियत्ति ॥ सप्तसप्तमानिदिनानि यस्या सा सप्तसप्तमिका साहि सप्तसप्तभि र्दिनसप्तकै र्यथोत्तरवर्द्धमानदत्ति भि र्भवति तत्र प्रथमे सप्तके प्रतिदिनमेका भक्तस्य पानकस्य चैका दत्ति र्यावत्सप्तमे सप्तदत्तय' भिक्षुप्रतिमा साध्वभिग्रहविशेषः सा चैकोनपचाशता रात्रिदिवै रहोरात्रै र्भवति यतः सप्तसप्तका न्येकोनपचाशद्देवस्यादिति तथा एकोनचपणवत्यधिकेन भिक्षाशतेन यत' प्रथमे सप्तके सप्तैव द्वितीयादिषु तद्विगुणा द्या यावत्सप्तमे एकोनपचाशदिति सर्वाः सकलिता शत पणवत्यधिक भवति भक्तभिक्षा शेताः पानकभिक्षा अप्येतावत्यो नचेह गणिताडति एतत् स्वरूपमेव पडिमासु सत्तगा सत्तपढमेतत्थसत्तएएक्केक गिण्हएभिक्ख वीइएएदोगिदोगिज्जएवमिक्किक्कियभिक्खवुभेज्जेक्केकसत्ताए गिण्हदूसंतिमेजावस त्तसत्तदिणेदिणेअहवाइक्किक्कियदत्ति जाव सत्तिक्किकसत्तएआएसोअत्थि एसोविविसिहविक्कमसगिहो इत्यादि ॥ अहासुत्तति ॥ यथासूत्र सूत्रानतिक्रमेण वा वत्कारणात् ॥ अहाअत्थं ॥ यथार्थं निर्युक्त्यादिव्याख्याना नतिक्रमेणेत्यर्थ' ॥ अहातच्च ॥ यथातत्व सप्तसप्तमिके त्यभिधानार्थाऽनतिक्रमेण अन्वर्थसत्यापनेने

णयव्वसउएण निरकासएण अहासुत्तं जाव आराहियावि भवइ । अहोलोगेण सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ। सत्त

क तीसरा उच्चारप्रश्रवणसप्तैकक चौथा शब्दसप्तैकक पाचमां रूपसप्तैकक छठा परक्रियासप्तैकक सातमा अन्योन्यक्रियासप्तैकक ॥ सात महाध्य

त्यर्थः ॥ अहामग्गं ॥ मार्गः क्षायोपशमिको भाव स्तदनतिक्रमेण औदयिकभावापगमेनेत्यर्थः ॥ अहाकप्प ॥ यथाकल्पं कल्पनीयानतिक्रमेण प्रतिमा समाचारानतिक्रमेणवा ॥ समंकायेण ॥ कायप्रवृत्त्या न मनोमात्रेणेत्यर्थः ॥ फासिया ॥ स्पृष्टा प्रतिपत्तिकाले विधिना प्राप्ता ॥ पालियत्ति ॥ पुनः पुन रुपयोगप्रतिजागरणेन रचिता ॥ सोहियंत्ति ॥ शोभिता तत्समाप्तौ गुर्वादिप्रदानशेषभोजनासेवनेन शोधितावा अतिचारवर्ज्जनेन तदालोचनेन वा ॥ तिरियत्ति ॥ तीरं पार नीता पूर्णेपि कालावधौ किञ्चित्कालावस्थानेन ॥ किट्टियत्ति ॥ कीर्त्तिता पारणकदिने अय मय चाभिग्रहकविशेषः कृत आसी दस्याम्प्रतिमायां सचाराधित एवा धुना मुत्कलोहमिति गुरुसमक्षं कीर्त्तनादिति ॥ आराहियत्ति ॥ एभिरेव प्रकारैः संपूर्णैर्निष्ठा नीता भवतीति प्रत्याख्यानापेक्षया अन्यत्र व्याख्यान मेषामेव उचिएकालेविहिणा पत्तजफासियंतयंभणियं तहपालियतुअसइ सम्मउवओगपडिपरिय ॥ १ ॥ गुरुदाणसेसभोयणा सेवणयाएउसोहियंजाण पुसेविथेवकाला वच्छाणातीरियहोइ ॥ २ भोयणकालेअसुयं पच्चक्खायतिभुजकिट्टियय आराहियपयारेहिं समसेएहिंनिठ्ठवियति ॥ ३ ॥ सप्तसप्तमिकादिप्रतिमाश्च पृथिव्यामेव विधीयन्तइति पृथिवीप्रतिपादनायाह ॥ अहोलोएइत्यादि ॥ अधोलोकग्रहणा दूर्द्धलोके पृथिवी

घणोदहीउ पसत्ताउ । सत्त घणवायाउ प० । सत्त तणुवाया प० । सत्त उवासतरा प० । एएसुणं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवायापइठिया एएसुणं सत्तसु तणुवाएसु सत्त घणवाया पइठिया सत्तसु घणवाएसु सत्त

यन कह्या सूय गडांग के दुसरे श्रुतस्कंधमां महान प्रथमश्रुतस्कंधाध्ययननी अपेक्षाथी पुंडरीकाध्ययनादि ॥ सात सप्तसप्तमिका साधु प्रतिमा अभिग्रहरूप तेहना उगण पंचास रात्रि सर्वमिली एकसो छन्नु भिक्षानी दोते करी पांणीनी पणि एतली जिम सूत्रमांछे तिम यावत् आराधि

सता वगम्यसे तच चैकाद्वैसप्णागारास्या पुथि व्यस्तीति दशच यद्यपि ग्रममपृथिव्या उपरितनानि नवयोजनशतानि तिर्यग्लोके भवंति तथापि देशोना पिपृथिवीतिकृत्वा नदोषायेति एतास क्रमेण वाहल्यतो योजनलक्षमशीत्यादिसहस्राधिकं भवति उक्तंच पढमाअसीइसहस्सा १ बत्तीसा २ अट्ठवीस ३ वीसाग ४ अट्ठार ५ सोल ६ अट्ठ ७ सहस्सलक्खोवरिं कुज्जत्ति ॥ १ ॥ अधोलोकाधिकारात्ततवस्तूनामवादरसूत्राणिसुगमानिचैतानि नवरं घनोदधीनां वाहल्यं विंशति योजनसहस्राणि घनतनुवाताकाशांतराणां मसंख्यातानि तान्याहच सव्वेवीससहस्सा वाहल्लेणघणोदहीनेया सेसाण तुअसंखा अहो अहोजावसत्तमियस्ति ॥१॥ तथा छत्रमतिक्रम्य छत्रं छत्रातिछत्रं तस्य संस्थानमाकारो ऽधस्तानंछत्रं महदुपरितनं लघ्विति तेन संस्थिता छत्रातिच्छत्रसंस्थान संस्थिता इदमुक्तंभवति सप्तमी सप्तरज्जुविस्तृता पष्ठाद्यस्त्वेकैकरज्जुहीना इतिकाचित्पाठः ॥ पिंडलगपिहूलसंठाणसंठिया ॥ तत्र पिउलगंपटलकं पटलपृथुभाजनं तच्च पृथुलं संस्थानं तेन संस्थिता इति पटलकपृथुलसंस्थानसंस्थिताइति पृथुल २ संस्थान संस्थिता इति काचित्पाठः सच व्यक्तएव ॥ नामधेज्जत्ति ॥ ना

घणोदही पइठिया एएसुणं सत्तसु घणोदहीसु पिंडलगपिहुलसंठाणसंठियाउ सत्तपुढवीउ पणत्ताउ तंजहा पढमा जाव सत्तमा । एयासिणं सत्तएहंपुढवीणं सत्त णामधेज्जा पणत्ता तंजहा घम्मा वसा सेला अंजणा

त थाय ॥ अधोलोकमां सात पृथ्वी कही तेकहेछे ॥ सात घनवात कह्या ॥ सात तनवात कह्या ॥ सात पृथ्वीना आंतर कह्या ॥ यत्र सात उवासंतरने विषे सात तनवात रहियाछे । यत्र सात तनवातने विषे सात घनवात रहियाछे । सात घनवातने विषे सात घनोदधि रहियाछे । सात घनोदधिने विषे सात तनोदधि रहियाछे । सात तनोदधिमां विस्तग पृथुलसंस्थाने स्थित सात पृथ्वी कही ते कहेछे पहेली यावत् सातमी ॥ य

मान्येव नामधेयानि॥ गोत्तत्ति॥ गोत्राणि तान्यपि मामान्येव केवल मन्वर्थयुक्तानि गोत्राणि इतराणि अन्वर्थेय सुखोन्नेय: सप्तावकाशा तराणि प्राक्प्ररूपिता नि तेषुच वादरावायव. सतीति तत् प्ररूपणायाह ॥ सत्तविहावायरेत्यादि ॥ सूक्ष्माणां नभेदोस्ति ततो बादरग्रहण भेदश्च दिग्विदिग्भेदा प्रतीतएवेति वायवो छाद्दश्या स्तथापि सस्थानवंतो भयवंतश्चेति संस्थानभयसूत्रे संस्थानानिच प्रतीतानि तद्विशेषा. प्रतरघनादयो ऽन्यतो ज्ञेया ॥ सत्तभयठाणेत्यादि॥ भयं मोहनीयप्रकृतिसमुत्थआत्मपरिणाम स्तस्यस्थाना न्याश्रया भयस्थानानि तत्र मनुष्यादिकस्य सजातीया दन्यस्मा न्मनुष्यादेरेव सकाशा द्यद्भयं भवति तदि

रिठा मघा माघवई। एयासिणं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त गोत्ता पन्नत्ता तंजहा रयणप्पन्ना सक्करप्पन्ना वालुय प्पन्ना पंकप्पन्ना धूमप्पन्ना तमा तमतमा। सत्तविहा वायरवाउकाइया पन्नत्ता तंजहा पाईणवाए पडीण वाए दाहिणवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहेवाए विदिसिवाए। सत्त संठाणा पन्नत्ता तंजहा दीहे रहस्से वट्टे तंसे चउरसे पिहुले परिमंडले। सत्त भयठाणा पन्नत्ता तंजहा इहलोगभए परलोगभए आदाणभए

ह सात नरक पृथ्वीनां सात नाम कह्या ते कहेछे घम्मा १। वंशा २। सेला ३। अंजना ४। रिष्टा ५। मघा ६। माघवती ७॥ सात पृथ्वीना सात गोत्र कह्या ते कहेछे रत्नप्रभा १। शर्करप्रभा २। वालुकप्रभा ३। पंकप्रभा ४। धूमप्रभा ५। तमा ६। तमतमप्रभा ७॥ सात प्रकारना वादर वायुकाय कह्या ते कहेछे पूर्ववायु १। पश्चिमवायु २। दक्षिणवायु ३। उत्तरवायु ४। ऊर्द्धवायु ५। अधोवायु ६। विदिशिवायु ७॥ सात संस्थान कह्या ते कहेछे दीर्घ १। लघु २। वाटलोगोल ३। त्रिखूणु ४। चौखूणु ५। पिहुलो ६। परिमंडल ७॥ सात भयना स्थान कह्या तेकहेछे इहलोक

हलोकभयं इहाधिकृतभीतिमतो जातौ लोक इहलोक स्ततो भयमिति व्युत्पत्ति स्तथा विजातीयादन्यस्मात् तिर्यग्देवादेः सकाशा न्मनुष्यादीना यद्भयं तत् परलोकभय २ आदीयत इत्यादानं धन तदर्थं चौरादिभ्यो यद्भय तदा दानभय अकस्मादेव बाह्यनिमित्तानपेक्ष गृहादिष्वेवस्थितस्य रात्र्यादौ भयम कस्माद्भय वेदना पीडा तद्भयं वेदनाभय मरणभय प्रतीत मश्लोकभय मकीर्त्तिभय एव हि क्रियमाणे महदयशोभवतीति तद्भयान्नप्रवर्त्ततइति भयच छद्मस्थस्यैवभवति सप्त यैः स्थानै र्ज्ञायतेतान्याह ॥ सत्तहिंठाणेहिंइत्यादि ॥ सप्तभिः स्थानै र्हेतुभूतैः छद्मस्थं जानीयात् तद्यथा प्राणानतिपातयिता तेषा कदाचित् व्यापादनशीलोभवति इहच प्राणातिपादनमिति वक्तव्येपि धर्मधर्मिणो रभेदा दतिपातयितेति धर्मो निर्दिष्टः प्राणातिपातनात् छद्मस्थो य मित्यवसीयते केवली हि क्षीणचारित्रावरणत्वा न्निरतिचारसंयमत्वा न्न कदाचिदपि प्राणाना मतिपातयिता भवती त्येव सर्वत्रभावना कार्या तथा

अकम्हाभए वेयणाभए मरणभए असिलोगभए। सत्तहिंठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा तंजहा पाणेअइवाएत्ता भवइ मुसंवदित्ताभवइ अदिन्नमाइत्ताभवइ सद्दफरिसरसरूवगंधेआसादेत्ताभवइ पूयासक्कारमणुवूहेत्ता भवइ इमंसावज्जंतिपण्णवेत्तापडिसेवेत्ताभवइ । णोजहावादीतहाकारीयाविभवइ । सत्तहिठाणेहिं केवली

भय पोतानी जातिनु १। परलोक भय सिंहादिकथी २। आदान लेवाथी भय ३। अकस्मात् भय रात्रिमा सूतां कारिमो भय सर्प प्रमुखनो ४। वेदनाभय ५। मरणभय ६। अपयशनो भय ७॥ सात थानके छदमस्थ जाणिये ते कहेछे प्राणातिपात करी १। मृषावादथी २। अदत्तना लेवा थी ३। शब्द स्पर्श रसरूप गंधना स्वादलेवाथी ४। भोगवाथी। पूजा सत्कारने वांछे ५। एह सावद्य व्यापारछे एहवो प्ररूपी पोते सेवे जेहवो

॥ मृषावादिता भवति अदत्त मादाता गृहीता भवति शब्दादीना स्वादयिता भवति पूजासत्कारं पुष्पार्चनवस्त्राद्यर्चने अनुवृंहयिता परेण स्वस्य क्रियमा णस्य तस्या नुमोदयिता तद्भावे हर्षकारीत्यर्थः तथे द माधाकर्मादि सावद्य सपापमित्येवं प्रज्ञाप्य तदेव प्रतिषेधिता भवति तथा सामान्यतो नो यथा वादी तथाकारो अन्यथा अभिधाया न्यथा कर्त्ताभवति वापोति समुच्चये एतान्येव विपर्यस्तानि केवलिगमकानि भवती त्येत व्प्रतिपादनपर केवलिसूत्र सुगममेव केवलिनश्च प्रायो गोत्रविशेषवंत एव भवंति प्रव्रज्यायोग्यत्वा न्नाभेयादिवदिति ॥ सत्तमूलगोत्तेत्यादिना ॥ ग्रन्थेन गोत्रविभागमाह सुगम श्चाय नवरं गोत्राणि तथाविधैकैकपुरुषप्रभवा मनुष्यसताना उत्तरगोत्रापेक्षया मूलभूता न्यादिभूतानि गोत्राणि मूलगोत्रा काशेभवः काश्यो रस स्तं पीतवानिति का श्यप स्तदपत्यानि काश्यपा मुनिसुव्रतनेमिवर्जा जिना श्चक्रवर्त्यादयश्च क्षत्रियाः सप्तमगणधरादयो द्विजा. जम्बूस्वाम्यादयो गृहपतयश्चेति इहव गोत्रस्य गोत्रवद्भ्यो भेदा देवं निर्देशो ऽन्यथा काश्यपमिति वाच्यंस्या देवं सर्वत्र तथा गोतमस्या पत्यानि गौतमाः क्षत्रियादयो यथा सुव्रतनेमो जिनो नारायण पद्मवर्जवासुदेवबलदेवा इद्रभूत्यादिगणनाथत्रय बैरस्वामीच तथा वत्सस्या पत्यानिवत्सा शय्यंभवादय एव कुत्सा. शिवभूत्यादय' कोच्छसिवभूइमपियइति

जाणेज्जा तंजहा णोपाणेच्छुइवाएत्तान्नवइ जाव जहा वाई तहाकारीयाविन्नवइ सत्तमूलगोत्ता पन्नत्ता तंजहा कासवा गोयमा वत्था कोत्था कोसिया मंऊवा वसिठा । जेकासवा तेसत्तविहा पन्नत्ता तजहा

कहे तेहवो नकरे एह सात प्रकारथी छद्मस्थ जाणिये ७ ॥ सात थानके केवली जाणिये तेकहेछे प्राणाति पातनो करनार नहोय १ । यावत् जे हवो कहे तेहवोकरे ॥ ७ ॥ सात मूल गोत्र कहिया ते कहेछे काश्यप १ । गौतम २ । वत्स ३ । कुत्स ४ । कौशिक ५ । मडप ६ । वासिष्ट ७ ॥ जे

वचनात् एव कौसिका' च उलूकादयः मडीरपत्यानिमडवा वसिष्टस्या पत्यानि वासिष्टाः षष्ठगणधरार्यसुहस्त्यादयः तथा ये ते काश्यपा स्ते सप्तविधाः ॥ एके काश्यपशब्दव्यपदेश्यत्वेन काश्यपा एवान्येतु काश्यपगोत्रविशेषभूतशंडिल्यादिपुरुषापत्यरूपा' शांडिल्यादयो ऽवगन्तव्या अयंच मूलगोत्रप्रतिगोत्रविभागो नयविशेषमता द्भवतीति नयविभाग माह ॥ सत्तमूलेत्यादि ॥ मूलभूता नयाः मूलनया स्तेच सप्त उत्तरनयाहि सप्तशतानि यदाह एक्केकोयसयविहो

तेकासवा तेसंडिल्ला तेगोला तेवाला तेमुंजतिणो तेपव्वतिणो तेवरिसकरहा । जेगोयमा ते सत्तविहा पन्नत्ता तंजहा ते गोयमा तेगग्गा तेभारद्दा तेअंगिरसा तेसक्कराभा तेभक्खराभा तेउदत्ताभा । जेवत्था ते सत्तविहा पन्नत्ता तंजहा तेवत्था तेअग्गिया तेमित्तिए सामलिणो तेसेलयया तेअट्ठसेणा तेवायकरहा । जेकोत्था ते सत्तविहा पन्नत्ता तंजहा तेकोत्था तेपोग्गलायणा तेपिंगायणा तेकोडीणा तेमंडलिणोतेहा रिया तेसोमया । जेकोसिया ते सत्तविहा पन्नत्ता तंजहा तेकोसिया तेकच्चायणा तेसालंकायणा तेगोलि

काश्यप ते सात प्रकारे ते कहेछे ते काश्यप १ । ते सांडिल्य २ । तेगोल ३ । तेवाल ४ । तेमुज ५ । ते पर्वत ६ । तेवरिसकक्का ७ ॥ जे गौतम ते सा तप्रकारे ते कहेछे ते गौतम १ । ते गर्ग २ । ते भारद्धाज ३ । ते अंगिरस ४ । ते शर्कराभ ५ । ते भास्कराभ ६ । ते उदत्ताभ ७ ॥ जे वत्स ते सात प्रकारे ते कहेछे ते वत्स १ । ते अंगिय २ । ते मित्तिय ३ । ते सामलीया ४ । ते सेलवय ५ । ते अस्थियसेन ६ । ते वायुकाभ ७ ॥ जे कुत्स ते सात प्र कारे कह्यो ते कहेछे तेकुत्स १ । ते मौद्गलायन २ । ते पिंगलण ३ । ते कोडिन्न ४ । ते मंडलीक ५ । तेहारित्त गोत्र ६ । ते सामञ्जेजी ७ ॥ कोसित ते

: ॥

सत्तनयसयाहवंतिएवंतु अन्नोवियर्याएसो पंचेवसय।नयाणतु ॥ १ ॥ तथा जावइयावयणपहा तावइयाचेवहोंतिनयवाया जावइयानयवाया तावइयाचे वपरसमयत्ति ॥ २ ॥ तत्रा नन्तधर्माध्यासिते वस्तु न्येकधर्मसमर्थनप्रवणो बोधिविशेषो नयइति तत्र ॥णेगमत्ति॥ नैकैर्मानै र्महासत्तासामान्यविशेषज्ञानै र्मिमीते मिनोतिवा नैकमः आहच णेगाइंमाणाइं सामन्नोभयविसेसनाणाइं जंतिहिंमिणइतोणे गमोणओणेगमाणोत्ति ॥ १ ॥ निगमेषुवा र्थबोधेषु कुशलो भवोवा नैगमः'अथवा नैकेगमाः पथानो यस्य सनैकगम आहच नेगत्थनिबोहोवा निगमोतेसुकुसलोभवोवायं अहवाजंणेगगमो णेगपहाणेगमोते णति ॥ १ ॥ तत्रायं सर्वत्र सदित्येव मनुगताकारावबोधहेतुभूतां महासत्ता मिच्छति अनुवृत्तव्यावृत्तावबोधहेतुभूतंच सामान्यविशेषं द्रव्यत्वादिव्यावृत्ता

कायणा ते पारिकिकायणा तेअग्गिच्चा तेलोहिच्चा । जेमंडवा ते सत्तविहा पन्नत्ता तंजहा तेमंडवा तेआरि ट्ठा तेसंमुता तेहेरा तेएलावच्चा तेकंडिल्ला तेखारायणा । जे वासिठा ते सत्तविहा पन्नत्ता तंजहा तेवा सिठा तेउंजायणा तेजारुकरहा तेवग्घावच्चा तेकोडिन्ना तेसन्नी तेपारासरा। सत्त मूलणया पन्नत्ता तंजहा

सात प्रकारे कह्यो ते कहेछे ते कौसिक १ । ते कात्यायन २ । ते शालकायन ३ । ते गोलिंकायन ४ । ते परिकिकायन ५ । ते अगिच्चा ६ । ते लौहि त्य ७ ॥ जे मंडप ते सात प्रकारे कह्यो तेकहेछे तेमडप १ । ते आरिष्ट २ । तेसमुत ३ । ते ज्ञेला ४ । ते एलापत्य ५ । ते कतेल्ल ६ । ते खायण ७ ॥ जे वासिष्ट ते सात प्रकारे ते वासिष्ट १ । ते उंजायण २ । ते जारुवन्ना ३ । ते वग्घावच्चस ४ । ते कोडिन्न ५ । ते सन्नि ६ । ते पारासर ७ ॥ एह सर्व उत्तर गोत्र 'कह्या ॥ सात मूलनय कह्या ते कहेछे नैगमनय १ । संग्रहनय २ । व्यवहारनय ३ । रिजुसूत्रनय ४ । शब्दनय ५ । समभिरूढ ६ ।

वबोधहेतुभूतंच नित्यद्रव्यवृत्तिमंत्यंविशेषमिति आहे त्थंतर्ह्ययं नैगमः सम्यग्दृष्टिरेवास्तु सामान्यविशेषाभ्युपगमपरत्वा त्साधुवदिति नैतदेवं सामान्यविशेष वस्तूना मत्यतभेदाभ्युपगमपरत्वा त्तस्ये त्याहच भाष्यकारः जंसामण्णविसेसे परोप्परवत्थुओयसोभिण्णो मण्णइअच्चंतमओ मिच्छादिट्ठिकणादोव्व ॥ १ ॥ दोहिंविनएहिंनाय सत्थमुलूएणतहविमिच्छत्तं जंसविसयप्पहाण त्तणेणअन्नोन्ननिरवेक्खत्ति ॥ १ ॥ तथा सग्रहण भेदाना संगृह्यंतेवा भेदा न्संगृह्णन्ति वा भेदा येन स संग्रहः उक्तंच संगहणसंगिण्हइ संगिज्झंतेवतेणजंभेया तोसंगहोत्ति ॥ एतदुक्तंभवति सामान्यप्रतिपादनपरः खल्वयं सदित्युक्ते सामा न्यमेव प्रतिपद्यते न विशेषं तथाच मन्यते विशेषाः सामान्यतो ऽर्थान्तरभूता स्युरनर्थान्तरभूतावा यद्यर्थान्तरभूता न संति ते सामान्या दर्थान्तरत्वा त्ख पुष्पवत् अथा नर्थान्तरभूताः सामान्यमात्र तेतद्व्यतिरिक्तत्वा त्तत्स्वरूपवदिति आहच सदितिभणियमिजम्हा सव्वत्थाणुप्पवत्तएवुद्धी तोसव्वंतम्मत्त न त्थितदत्थतरकिंचि ॥ १ ॥ कुंभोवावाणणो जइतोभावोअहणन्नाभावो एवंपडादओविहु भावानन्नत्तितंमत्तंति ॥ २ ॥ तथा व्यवहरण व्यवहरतीतिवा व्यव ह्रियतेवा अपलप्यते सामान्य मनेन विशेषान्वा श्रित्य व्यवहारपरो व्यवहार आहच ववहरणंववहरए सतेणववहारएवसामण्णं ववहारपरोयजओ विसेसओतेणववहारोत्ति ॥ १ ॥ अयंहि विशेषप्रतिपादनपरः सदित्युक्ते विशेषानेव घटादीन् प्रतिपद्यते तेषामेव व्यवहारहेतुत्वा न्न तदतिरिक्तं सा मान्यं तस्य व्यवहारापेतत्वा त्तथाच सामान्य विशेषेभ्यो भिन्न मभिन्नवा स्या द्यदि भिन्नं विशेषव्यतिरेकेणो पलभ्येत नचो पलभ्यते अथाभिन्नं विशेषमात्रं त त्तदव्यतिरिक्तत्वा त्तत्स्वरूपवदिति आहच उवलंभव्ववहारा भावाओतव्विसेसभावाओ तन्नत्थिखपुप्फंपिव संतिविसेसासपच्चक्खंति ॥ १ ॥ तथा लोकसं व्यवहारपरो व्यवहार स्तथा ह्यसौ पचवर्णेपि भ्रमरादिवस्तुनि बहुनिबहुतरत्वात् कृष्णत्वमेव मन्यते आहच बहुतरउत्त्वियतच्चिय गमेइसंतेविसेसएसु यइ समववहारपरतया ववहारंलोगमिच्छंतित्ति ॥ १ ॥ तथा ऋजु वक्रविपर्यया दभिमुख श्रुतं ज्ञानं यस्या सौ ऋजुश्रुतः ऋजुवा वर्त्तमान मतीतानागत

वक्रपरित्यागात् वस्तु सूत्रयति गमयतीति ऋजुसूत्र उक्तञ्च उज्जुंरिउसुयनाणं उज्जुसुयमस्ससोयमुज्जुसुओ सुत्तयइत्ताजसुज्जुं वत्थुतेणुज्जुसुत्तोत्ति ॥ १ ॥ अयहि वर्त्तमान निजकं लिंगवचननामादिभिन्न मप्येक वस्तु प्रतिपद्यते शेष मवस्त्विति तथा ह्यतीत मेष्यद्वा न भावो विनष्टा नुत्पन्नत्वा दृष्टखत्वा त्खपुष्पव त्तथा परकीय मप्यवस्तु निष्फलत्वात् खकुसुमवत् तस्मा द्वर्त्तमान स्वंवस्तु तच्च न लिगादि वस्तुभिन्नमपि स्वरूपमुज्झति लिंगभिन्नं तटस्तटीत टमितिवचनभिन्न आपोजल नामादिभिन्नं नामस्थापनाद्रव्यभावभिन्न आहच तम्हानिजगंसंपय कालीयं लिगवयणभिन्नपि नामादिभिदविहियं पडिवज्ज इवत्थुमुज्जुसुओत्ति ॥१॥ तथा शपन शपतिवा सौ शप्यतेवा तेन वस्त्विति शब्द स्तस्या र्थपरिगृह्या दभेदोपचारा न्नयोपि शब्दएव यथा कृतत्वादिलचणहेत्वर्थ प्रतिपादकपद हेतुरेवोच्यतइति आहच सवणसवइसतेण वसप्पएवत्थुजंतओसद्दो तस्सत्थपरिगहओ नओविसद्दोत्तिहेउव्वत्ति ॥१॥ अयचनामस्थापनाद्रव्य कुम्भा न संत्येवेति मन्यते तत्कार्याकरणात् खपुष्पवत् नचभिन्नलिगवचन मेकलिंगवचनभेदादेव स्त्रीपुरुषवत् कुटाद्वच इत्यादिवत् अतो घटः कुटः कुम्भ इति स्वपर्यायध्वनिवाच्य मेकमेवेति आहच तचियरिउसुत्तमय पच्चुप्पणविसेसियतरसो इच्छइभावघडविय जतउनामादओतिस्थि ॥ १ ॥ तथा नानार्थेषु नानासंज्ञासमभिरोहणा त्समभिरूढ उक्तञ्च जजसणभासइ ततवियसमभिरोहएजम्हा सणतरत्थविमुहो तओकओसमभिरूढोत्ति ॥ १ ॥ अयहि मन्य ते घटकुटादयः शब्दा भिन्नप्रवृत्तिनिमित्तत्वात् भिन्नार्थगोचरा घटपटादिशब्दवत् तथाच घटनात् घटो विशिष्टचेष्टावा नर्थो घटइति तथा कुट कौटि ल्ये कुटनात् कुटः कौटिल्ययोगात् कुटइति घटो ऽन्यः कुटो प्यन्यएवेति ६ तथा यथा शब्दार्थ एव पदार्थोभूतः स न्नित्यर्थो ऽन्यथाभूतो ऽसन्निति प्र तिपत्तिपर एवंभूतो नय आहच एवजहसद्दत्थो सतोभूओतहणहाभूओ तेणेवंभूयनओ सद्दत्थपरोविसेसेणंति ॥ १ ॥ अयहि योषिन्मस्तकव्यवस्थितं चेष्टा वत मेवार्थ घटशब्दवाच्य मन्यते न स्थानभरणादिक्रियान्तरापन्नमिति भवतिचात्रश्लोकाः शुद्धद्रव्यसमाश्रित्य सगृहस्तदशुद्धितः नैगमव्यवहारौस्तः शेषाः

पर्यायमाश्रिताः ॥ १ ॥ अन्यदेवहिसामान्य मभिन्नज्ञानकारण विशेषोप्यन्यएवेति मन्यतेनैगमोनयः ॥ २ ॥ सद्रूपतानतिक्रान्त स्वस्वभावमिदंजगत् स त्तारूपतयासर्वं संगृह्णन्संग्रहोमतः ॥ ३ ॥ व्यवहारस्तुतामेव प्रतिवस्तुव्यवस्थितं तथैवदृश्यमानत्वा द्व्यवहारयतिदेहिनः ॥ ४ ॥ तत्रर्जुसूत्रनीतिःस्यात् शुद्धप र्यायसंश्रिता नश्वरस्यैवभावस्य भावात्स्थितिवियोगतः ॥५॥ अतीतानागताकार कालसंस्पर्शवर्जित वर्त्तमानतयासर्वं मृजुसूत्रेणसूत्र्यते ॥६॥ विरोधिलिंगसं ख्यादि भेदाद्भिन्नस्वभावतां तस्यैवमन्यमानोयं शब्दःप्रत्यवतिष्ठते ॥७॥ तथाविधस्यतस्यापि वस्तुनःक्षणवृत्तिनः ब्रूतेसमभिरूढस्तु संज्ञाभेदेनभिन्नता ॥८॥ एक स्यापिध्वनेर्वाच्यं सदातन्नोपपद्यते क्रियाभेदेनभिन्नत्वा देवंभूतोऽभिमन्यत इति ॥९॥ अथ कथं सप्तनयशतान्यसंख्याता वा नयाः सप्तसु नयेष्वतर्भवंती त्युच्यते यथा वर्णविशेषादसंख्येया अपिस्वराः सप्तसु स्वरेष्विति स्वराणामेवस्वरूपप्रतिपादनाय ॥ सत्तसरेत्यादि ॥ स्वरप्रकरणमाह सुगमं चेदं नवरं स्वराणां निस्वराः शब्दविशेषाः ॥ सज्जेत्यादि ॥ श्लोकः षड्भ्यो जातः षड्जः उक्तंहि नासाकंठमुरस्तालु जिह्वादंतांश्चसंश्रितः षड्भिःसजायतेयस्मा त्तस्मात्षड्जइतिस्मृतः ॥१॥ तथा ऋषभो वृषभ स्तद्वद्यो वर्त्तते स ऋषभ इति आहच वायुःसमुत्थितोनाभेः कंठशीर्षसमाहतः नर्दन्वृषभवद्यस्मा त्तस्मादृषभउच्यते ॥२॥ तथा गन्धो विद्यते यत्र सगन्धारः सएव गान्धारो गन्धवाहविशेष इत्यर्थः अभाणीह वायुःसमुत्थितोनाभेः कण्ठशीर्षसमाहतः नानागन्धावहःपुण्यो गान्धारस्तेनहेतुना ॥ ३ ॥

नेगमे संगहे ववहारे उज्जुसुए सद्दे समभिरूढे एवंभूते । सत्त सरा पण्णत्ता तंजहा सज्जेरिसभेगंधारे मज्झि मेपंचमेसरे । धेवतेचेवणेसादे सरासत्तवियाहिया ॥ १ ॥ एएसिणं सत्तण्ह सराण सत्त सरठाणा प० तंजहा

एवं भूत ७ ॥ सात स्वर कह्या ते कहेछे सड्ज १ । रिषभ २ । गांधार ३ । मध्यम ४ । पचम ५ । धैवत ६ । निषध ७ ॥ १ ॥ ए सात स्वरना

तथा मध्ये कायस्य भवो मध्यमः यद्वाचि वायुःसमुत्थितोनाभे रुरोहृदिसमाहतः नाभिप्राप्तोमहानादो मध्यमत्वंसमश्नुते ॥४॥ तथा पंचानां षड्जादिस्व राणा निर्देशक्रम माश्रित्य पूरणः पंचमः अथवा पचसु नाभ्यादिस्थानेषु मातीति पचमः स्वरो यदभ्यधायि वायुःसमुत्थितोनाभे रुरोहृत्कण्ठशिरोहतः पच स्थानोत्थितस्यास्य पचमत्वविधीयते ॥५॥ तथा अतिसधयते अनुसधयति शेषस्वरानिति निरुक्तिवशा द्धैवतः यदुक्तं अतिसंधयतेयस्मा देतान्पूर्वोत्थितान् स्वरान् तस्मादस्यस्वरस्यापि धैवतत्वंविधीयते ॥१॥ पाठांतरेण रैवतश्चैवेति तथा निषादति स्वरा यस्मा त्स निषादः यतोभिहित निषीदतिस्वरायस्मा न्निषा दस्तेनहेतुना सर्वांश्चाभिभवत्येष यदादित्योऽस्यदैवतमिति ॥ २ ॥ तदेवं स्वराः सप्त ॥ वियाहियत्ति ॥ व्याख्याताः नतुकार्यहि कारणायत्तं जिह्वा च स्वर स्य कारणं सा चा सख्येयरूपा ततः कथ स्वराणा संख्यातत्वमिति उच्यते असंख्याता अपि विशेषतः स्वराः सामान्यतः सर्वेपि सप्तस्वंतर्भवं त्यथवा स्थूरस्व रान् गीतं चा श्रित्य सप्त उक्ताः आहच कज्जकरणायत्त जीहायसरस्सताअसंखेज्जा सरसखमसखेज्जा करणस्सासंखयत्ताओ ॥ १ ॥ सत्तयसुत्तनिवडा कहनविरोहोतओगुरूआहसत्तणुवाईसव्वे वायरगहणचगेयव्वंति ॥ २ ॥ स्वरा न्नामतो भिधाय कारणत स्तन्निरूपणायो पक्रम्यते ॥ एएसिणमित्यादि ॥ तत्र नाभिसमुत्थस्वरोऽधिकारी आभोगेन अनाभोगेन वा यत्प्रदेश प्राप्य विशेष मासादयति तत् स्वरस्यो पकारकमिति स्वरस्थान मुच्यते ॥ सज्जमित्यादि ॥

सज्जंतुअग्गजिब्भाए उरेणरिसभंसरं कंठुग्गएणगंधारं मज्झजिब्भाएमज्झिमं ॥ १ ॥ णासाएपंचमंबूया दंतोठे

स्थान कह्या ते कहेछे सड्जनोस्थान जीभनो अग्रभाग १ । रिषभनो हृदय २ । गंधारनो स्थान कंठाग्र ३ । मध्यमनो जीभनो मध्य ४ । नासिकाये पचम स्वर वोलाय ५ । दात ओठथी धैवतस्वर वोलाय ६ । कपाले निषदस्वर वोलाय ७ ॥ एह स्वरना स्थान जाणवा ॥ सात स्वर

श्लोकद्वयं ब्रूयादिति सर्वत्रक्रिया षड्जंतु प्रथमस्वरमेव अग्रभूता जिह्वा अग्रजिह्वा जिह्वाग्रमित्यर्थः तया इह यद्यपि षड्जभणने स्थानातराण्यपि व्याप्रियते अग्रजिह्वावा स्वरान्तरेषु व्याप्रियते तथापि सा तत्र बहुतरव्यापारवतीति कृत्वा तया तमेव ब्रूयादित्यभिहितं उरो वक्ष स्तेन ऋषभस्वरं ॥ कठुगएणंति ॥ कठग्रा सा वुग्रकचोत्कटः कण्ठोग्रक स्तेन कण्ठस्यचो ग्रत्व य स्तेन कण्ठोग्रत्वेन कण्ठाद्वा य दुद्गतिमुद्गतिः स्वरोद्गमलचणा क्रिया तेन कण्ठोद्गतेन गान्धार जिह्वाया मध्योभागो मध्यजिह्वा तया मध्यम तथा दन्ताश्च ओष्ठौच दन्तोष्ठ तेन धैवतं रैवत वेति ॥ जीवनिस्सियत्ति ॥ जीवाश्रिता जीवेभ्योवा निःसृता निर्गताः ॥ सज्जमित्यादिश्लोक ॥ नदति रौति ॥ गवेलगत्ति ॥ गावश्च एलका श्चौरणिका गवेलका ऊरणिकाएवेति ॥ अहकुसुमदृत्यादि ॥ रूपक गाथाभिधान विषमाचरपादवा पादैरसमदृग्रधर्मवत् तंत्रेस्मिन्पदसिद्ध गाथेतितत्पण्डितैर्ज्ञेयं ॥ १ ॥ इतिवचनात् अथेति विशेषार्थो विशेषार्थताचैव यथा गवेलका अविशेषेण मध्यमस्वर नदन्ति तथा कोकिला पञ्चम मपितु कुसुमसभवेकालइति कुसुमानां बाहुल्यतो वनस्पतिषु सभवो यस्मिन् स तथा तत्र मधावित्यर्थः अजीवनिश्रितादृति तथैव नवर जीवप्रयोगा देतेइति ॥ सज्जमित्यादि ॥ श्लोकः मृदङ्गो मर्द्दलः गोमुखी काहना यत स्तस्या

णयधेवयं मुहाणेणयणेसायं सरठाणावियाहिया ॥ २ ॥ सत्त सरा जीवनिस्सिया पसत्ता तजहा सज्जंरव इमयूरो कुक्कुडोरिसन्नसर। हसोणदइगधार मज्झिमंतुगवेलगा ॥ १ ॥ ग्रह कुसुमसंभवेकाले कोइलापंचमंसरं।

जीवनिश्रित कह्या ते कहेछे षड्जस्वर मोर बोले। कूकडो रिषभस्वर बोले। हस गंधारस्वर बोले। मध्यमस्वर बोकडो बोले ॥ ४ ॥ अथ बसत काले कोइल पचमस्वर बोले। धैवतस्वर सारस क्रौच बोले। निषदस्वर हाथी बोले ॥ ५ ॥ सात स्वर अजीवनिश्रित कह्या ते कहेछे षड्जस्वरे माद

मुखे गोशृङ्ग मन्यद्वा क्रियतइति ॥ चउइत्यादि ॥ श्लोकः चतुर्भि स्चरणै प्रतिष्ठान भुवि यस्या सा तथा गोधा चर्मणा अवनद्धेति गोधिका वाद्यविशेषो द र्दरिकेति यत्पर्यायः आडम्बरः पटहः सप्तममिति निषाद ॥ एएसिणमित्यादि ॥ सत्तन्ति ॥ स्वरभेदान् सप्तस्वरलचणानि यथास्व फलप्रति प्रापणाव्य भिचारीणि स्वरस्वरूपाणि भवंति तान्येव फलतश्राह ॥ सज्जेणेत्यादि॥ श्लोकाः सप्त षड्जेन लभते वृत्ति अयमर्थः षड्जस्येद लचण स्वरूपमस्ति येन वृत्ति लभते षड्जस्वरयुक्तः प्राणी एतच्च मनुष्यापेचया लच्यते मनुष्यलचणत्वा दस्येति कृतञ्च नविनश्यति तस्येतिशेषः निष्फलारम्भो न भवतीत्यर्थः गावो मित्रा णिच पुत्राश्च भवतीति शेषः ॥ एसज्जंति ॥ ऐश्वर्यं गन्धारे गीतियुक्तिज्ञाः वर्य्यवृत्तयः प्रधानजीविका कलाभि रधिकाः कवयः काव्यकारिणः प्राज्ञाः स

ढठंचसारसाकोंचा णेसायंसत्तमंगज ॥ २ ॥ सत्त सरा ञ्जीवनिस्सिया पसत्ता तंजहा सज्जंरवइमुत्तिंगो गोमुहीरिसन्नसरं । संखोणदइगंधारं मज्झिमपुणझल्लरी ॥ १ ॥ चउचलणपइठाणा गोहियापंचमंसरं । ञ्जा ङवरोयधेवययं महान्नेरीयसत्तमं ॥ २ ॥ एएसिण सत्तराहं सराण सत्त सरलरकणा पसत्ता तंजहा सज्जेणलन्नइ विंत्तिं कयचनविणस्सइ गावोमित्तायपुत्ताय णारीणचेत्रवल्लहो ॥ १ ॥ रिसन्नेणउएसज्ज सेणावच्चंधणाणिय

ल बोले । गोमुही रिषभस्वरे बोले । सख गधारस्वरे बोले । मध्यमस्वरे झालर बोले ॥ ६ ॥ च्यार पगथी प्रतिष्ठित रही गोहिश्रा पचमस्वरेदर्दुरी बोले । ढोल धैवतस्वरे । महाभेरी सप्तमस्वरे बोले ॥ ७ ॥ सात स्वरना सात स्वर लचण कह्या तेकहेछे पड्जस्वरे लदमी पामे काई विणसे नथी गाय मित्र पुत्र पामे स्त्रीने वल्लभ होय ॥ ८ ॥ रिषभस्वर नो धणी राज्य सेनापति थाय धनपामे वस्त्र गध अलकार स्त्रीशय्या आसन पामे ॥ ९ ॥

द्दोधा येच उत्तोभ्यो गीतियुक्तिशादिभ्यो अन्ये शास्त्रपारगा धनुर्वेदादिपारगामिन स्ते भवंतीति शकुनेन श्येनलक्षणेन चरति पापर्द्धिं कुर्वंति शकुनान्वा घ्नन्तीति शाकुनिकाः वागुराः मृगबन्धनतया चरन्तीति वागुरिकाः शूकरेण शूकरवधार्थं चरन्ति शूकरान्वा घ्नन्तीति सौकरिकाः मौष्टिका मल्लाइति एतेषा मित्यादि तत्र व्याख्यानगाथा सज्जाइतिहागामो ससमूहोमुच्छणाणविण्णेभ्रों तासत्तएक्कमिक्के तोसत्तसराणइगवीसा ॥ १ ॥ अणणासरविसेसे उ

वत्थगंधमलंकारं इत्थीउसयणाणिय ॥ २ ॥ गधारेगीयजुत्तिण्णा वज्जवित्तिकलाहिया । भवंतिकविणोपन्ना जेअन्नेसत्थपारगा ॥ ३ ॥ मज्झिमसरसंपन्ना भवतिसुहजीविणो खोयतीपियतीदेती मज्झिमंसरमस्सिउ ॥ ४ ॥ पचमसरसंपन्ना भवतिपुढवीवई सूरासंगहकत्तारो अणेगगणणायगा ॥ ५ ॥ धेवयसरसंपन्ना भवंतिकलह प्पिया साउणित्तावगुरिया सोयरियामच्छबंधाय ॥ ६ ॥ चण्डालामुठियामेया जेअन्नेपावकम्मिणो गोधाय

गधारे गधनीयुक्ति वर्या भली वृत्तिकला हवंति कहिये होय कविप्रज्ञा वीजाये धनुर्विद्यादि सास्त्रनो पारगामी थाय ॥ १० ॥ मध्यमस्वर संपन्न थयाथी सुखथी आजीविका होय खाय पीवे देवे मध्यमस्वरे आश्रित ॥ ११ ॥ पंचमस्वर सपन्न पुरुष पृथ्वीपति होय सूरसग्रहनो करनहार होय अनेक समुदायनो नायक होय ॥ १२ ॥ धैवत स्वर सपन्न पुरुष कलहप्रिय होय जीवहिंसा करनहार होय आहेडी होय सूअरनो मारणहार होय ॥ १३ ॥ चाडाल मौष्टिकमल्ल अन्य बीजा जे पापकर्म कारी घातनो करणहार चौर निषधस्वर आश्रित ॥ १४ ॥ ए सात स्वरना त्रण ग्राम कहिया तेकहेछे ग्राम ते ठाम विशेष षड्जस्वर ग्राम १ । मध्यमस्वर ग्राम २ । गाधार ग्राम ३ । षड्ज ग्रामनी सात मूर्च्छना कही मूर्च्छना ते अ

॥ प्पायंतस्समुच्छणाभणिया कत्तावमुच्छिओइव कुणइमुच्छंवसोवत्ति ॥ २ ॥ कर्त्ता वा मूर्च्छितइव करोति मूर्च्छन्निवत्वा स कर्त्तव्यर्थः इह च मङ्गीप्रभृतीनां ॥
मेकविंशते र्मूर्च्छनाना स्वरविशेषाः पूर्वगते स्वरप्राभृते भणिता अधुनातु तद्विनिर्गतेभ्यो भरतवैशाखिलादिशास्त्रेभ्यो विज्ञेया इति ॥ सत्तसराकओगा

गायेजेचोरा णेसायंसरमस्सिता ॥ ७ ॥ एएसिणं सत्तण्ह सराण तयो गामा पन्नत्ता तंजहा सज्जगामे मज्झिम ॥
गामे गंधारगामे । सज्जगामस्सणं सत्त मुच्छणाउ पन्नत्ताउ तंजहा मंगीकोरव्वीया हरीयरयणीयसीरकंताय
छठीयसारसीणाम सुद्धसज्जायसत्तमा ॥ १ ॥ मज्झिमगामस्सग सत्त मुच्छणाउ प० तंजहा उत्तरमंदारय
णी उत्तराउत्तरासमाअस्सो कंतायसोवीराअ अभीरूहवइसत्तमा ॥ २ ॥ गंधारगामस्सणं सत्तमुच्छणाउ प०
तंजहा णंदीयखुद्दिमापू रिमाचउत्थीयसुद्धगधारा उत्तरगधाराविय पचमियाहवइमुच्छाउ ॥ ३ ॥ सुठुत्तरमा
यामा साछठीणियमसाउनायव्वा अहउत्तरायकोडी मायसासत्तमीमुच्छा ॥ ४ ॥ सत्तसराकउसं भवतिगेय

न्यस्वरनो नीपजाविवो ते कहेछे मगी १ । कौरवी २ । हरीत ३ । रजनी ४ । सारकांता ५ । सारशासी ६ । श्रुतसज्जा ७ ॥ १५ ॥ मध्यम ग्रामनी ॥
सात मूर्च्छना कही ते कहेछे उत्तरमदा १ । रजनी २ । उत्तरा ३ । उत्तरसमा ४ । अश्वकाता ५ । सौवीरा ६ । अभिरूपवती ७ ॥ १६ ॥ गाधार ग्रा
मनी सात मूर्च्छना कही तेकहेछे नदिता १ । खुद्रिमा २ । पूरिमाय ३ । शुद्धगंधारा ४ । उत्तरगधारा ५ ॥ १७ ॥ सुष्टुत्तरआयमा ६ । छठी निश्चयथी
जाणवी अथ उत्तराकोडी ७ ॥ मूर्च्छना स्वर विशेष ॥ १८ ॥ सात स्वर किहाथी ऊपजेछे । गावानी कोण जोनिछे । केतला समयना सासोस्वासा

॥ त्रा ॥ इह चत्वारः प्रश्ना' तेत्र कुत इति स्थाना त्कायोनि रिति काजातिः तथा कतिसमया येषु ते कतिसमया उच्छ्वासा' किम्परिमाणकाला इत्यर्थ स्त
॥ थाकारा आकृतयः स्वरूपाणीत्यर्थ ॥ सत्तसरागाहा॥ प्रश्ननिर्वचनार्था स्पष्टा नवर रुदितं योनि र्जातिः समानरूपतया यस्य तत् रुदितयोनिकं पादसमा
उच्छ्वासा यावन्ति समये. पादो वृत्तस्य गीयते तावत्समया उच्छ्वासा गीते भवतो त्यर्थ' आकारानाह ॥ आइगाह॥ आदौ प्राथम्ये मृदुकोमल सादि
मृदुगीत मितिगम्यते आरभमाणा इह समुदितत्रयापेक्षं बहुवचन मन्यथा एकएव आकारो इय मन्यद्वक्ष्यमाणलक्षण मिति तथा समुद्वहतश्च महत्ता ॥
गीतध्वने रितिगम्यते मध्यकारे मध्यभागे तथा अवसानेच क्षपयंतो गीतध्वनिं मन्द्रीकुर्वन् त्रयो गीतस्या कारा भवति आदिमध्यावसानेषु गानध्वनि र्मृदु

ससकान्नवइजोणी कइसमयाउस्सासा कइवागेयस्सआगारा ॥ १ ॥ सत्तसराणाभीओ भवतिगीतंचरुन्नजोणी यं पादसमाउस्सासा तिन्नियगीयस्सआगारा ॥ २ ॥ आइमिउआरभंता समुव्वहंतायमज्झगारम्मि अवसाणेतज्झवितो तिन्नियगेयस्सआगारा ॥ ३ ॥ छद्दोसेअट्ठगुणे तिन्नियविताइदोयभणियाओ जोणाहिइसोगा

एतले केतलोकाल ॥ केतला गीतना आगार ते आकार रूप ॥ १८ ॥ सात स्वर नाभिमंडलथी ऊपजे गीत रोदन रोवानी योनि रोवो गावो एक
॥ जातिछे श्लोकनो पद ऊचरी तेतला समय उच्छ्वास त्रण गीतना आगार ॥ १९ ॥ प्रथम मृदु कोमल आरभते मध्यमभागे मोटी गीतध्वनि ऊचरे ता
रस्वरे छेहडे क्षय पामती हलकी गीतध्वनि त्रण गीतना आगार ॥ २० ॥ गीतना छ दोषछे आठ गुणछे त्रण वृत्त पदरना प्रकार जेजाणे ते गावे भ
लो सीख्यो रंग मध्यने विषे ॥ २१ ॥ बीहतो डरतो गावे १ । उतावलो गावे २ । लघुतया गावे ३ । गातोगातो प्रबलपणे गावे ताल साचवे नथी

तारमंद्रस्वभाव: क्रमेण भवतीतिभाव: किंचान्यत् ॥ छद्दोसेदारगाहा ॥ षड्दोषा वर्जनीया स्तानाह ॥ भीयंगाहा ॥ भीत मुत्त्रस्तमानस द्रुतं त्वरित ॥ रह स्वंति ॥ ह्रस्वस्वरं लघुशब्दमित्यर्थ: पाठातरेण ॥उप्पित्यं॥ श्वासयुक्तं त्वरितचेति ॥ ३ ॥ उत्ताल उत्प्रावल्यार्थे इत्यतिताल मस्थानतालवा तानस्तु कंसिकादि शब्दविशेषइति ॥ ४ ॥ काकस्वर श्लक्ष्णा श्रव्यस्वरं ॥ ५ ॥ अनुनासच सानुनासिक नासिकाकृतस्वरमित्यर्थ: ॥ ६ ॥ किमित्याह गायन् गानप्रवृत्त स्त्व हे गायन मागासी: किमिति यत: एते गेयस्य षड् दोषा इति अष्टौ गुणानाह ॥ पुन्नंगाहा ॥ पूर्णं स्वरकलाभि: ॥ १ ॥ रक्त गेयरागेणा नुरक्तस्य अलङ्कृत मन्यान्यस्वरविशेषाणां स्फुटशुभानां करणात् व्यक्तमचरस्वरस्फुटकरणत्वात् ॥ ४ ॥ अविघुट्ठं ॥ विक्रोशनमिव यत्रविस्वर ॥ ५ ॥ मधुरं मधुरस्वर कोकिला रुतवत् ॥ ६ ॥ सम तालवंशस्वरादिसमनुगत ॥ ७ सुकुमार ललित ललतीयवत् स्वरघोलनाप्रकारेण शब्दस्पर्शनेन श्रोत्रेन्द्रियस्य सुखोत्पादनाद्वेति ए भि रष्टाभि र्गुणै र्युक्तं गेय भवति अन्यथा विडंबना किञ्चान्यत् ॥ उरगाहा ॥ उर:कण्ठशिर:सुप्रशस्त विशुद्ध अयमर्थो यद्युरसि स्वरो विशाल स्तत उ रोविशुद्ध कंठे यदिस्वरो वर्त्तितो अस्फुटितश्च तत: कंठविशुद्ध शिरसि प्राप्तो यदि सानुनासिक स्तत: शिरोविशुद्ध अथवा उर:कण्ठशिर:सुश्लेषणा अ व्याकुलेषु विशुद्धेषु प्रशस्तेषु य त्त त्तयेति चकारो गेयगुणातरसमुच्चये गीयते उच्चार्यते गेयमिति सबध्यते कि विशिष्ट मित्याह मृदुक मधुरस्वरं रिभितं

हिइ सुसिक्खिज्जरंगमज्झम्मि ॥ ४ ॥ भीतंदुतंरहस्सं गायंतोमायगाहिउत्तालं काकस्सरमणुणासं चहोंतिगेयस्स
छद्दोसा ॥५॥ पुन्नंरत्तचअलं कियववत्ततहायअविघुठ मधुरंसमसुकुमालं अठगुणाहोंतिगेयस्स ॥६॥ उरकंठसि

४। काकस्वरे आकरो गावे ५। नाकमा गावे ६ ॥ यह गीतना दोषछे ॥ २२ ॥ पूर्ण कला सहित गावे १। रागमां रक्तथई अलंकृत २। अन्य स्वर

यत्राक्षरेषु घोलनया संचरन् स्वरो रंगतीव घोलनाबहुल मित्यर्थः पदवद्धं गेयपदै निबद्धमिति पदत्रयस्य कर्मधारयः ॥ समतालपडुक्खेवंति ॥ समशब्दः प्रत्येकं सबध्यते तेन समा स्तालाः हस्ततालाः उपचारा त्तद्रवो यस्मिं स्त त्समतालं तथा समः प्रत्युत्क्षेपः प्रतिक्षेपोवा मुरजकसिकाद्यातोद्यानां यो ध्वनि स्तत्प्रक्षणो नृत्यत्पादक्षेपलक्षणोवा यस्मिं स्तत् समप्रत्युत्क्षेप समप्रतिक्षेपचेति तथा ॥ सत्तसरसीहरति ॥ समस्वराः ॥ सीहरन्ति ॥ अक्षरादिभिः समा यत्र तत्सप्तस्वरसीहरं तेचामी अक्खरसम १ पदसमं २ तालसम ३ लयसम ४ गहसमच ५ नीससिउससियसम ६ संचारसमं ७ ॥ सरासत्तत्ति ॥ १ ॥ इयंच गाथा स्वरप्रकरणोपाति ॥ तंतिसममित्यादि ॥ रधीतापि इह अक्षरसम मित्यादिकत्ला व्याख्यायते अनुयोगद्वारटीकाया मेव मेव दर्शनादिति यत्र अक्षरे दीर्घे दीर्घस्वरः क्रियते ह्रस्वे ह्रस्वः प्लुते प्लुतः सानुनासिके सानुनासिक स्तदक्षरसम १ तथा यन्नेयपद नासिकादिक मन्यतरबन्धनेन बद्धं यत्र स्वरे अनुयाति भवति त त्तनैव यत्र गीते गीयते त त्पदसममिति यत्पदस्वराहतहस्ततालस्वरानुवर्त्तिभवति त त्तालसम शृङ्गदार्वाद्यन्यतरमये नागुलिकोशकेनाहताया स्तन्त्र्याः स्वरप्रकारो लय स्त मनुसारतो गातु र्यन्नेयं त ल्लयसम प्रथमतो वंशतन्त्र्यादिभि र्यः स्वरो गृह्णीत स्तत्सम गीयमानं ग्रहसमं निःश्वसितोच्छ्वसितमान मनतिक्रामतो य द्गेय त न्निःश्वसितोच्छ्वसितसम तैरेव वंशतन्त्र्यादिभि र्य दंगुले संचारसम गीयते त त्संचारसम गेयच सप्तस्वरा स्तदात्मकमित्यर्थ. योगेये

रपसत्यं चगिज्जएमउच्चारिज्जियपदंवद्धं समतालपदुक्खेवं सत्तसरसीहरगेय ॥ ७ ॥ निद्दोसंसारवंतंच हेतुजुत्त

विशेष ३ । स्पष्टता ४ । तिम वे स्वर मथी माठो स्वर नथी ५ । मीठो कोकिलवत् ६ । उर कंठ शिरथी शुद्ध ७ । सुकुमाल गावे ८ ॥ यह आठ गायाना गुणछे ॥ २३ ॥ उर कठ मस्तकथी प्रशस्त शुद्ध गावे मधुर घोलनासहित पदबद्ध गेयपदसहित ताल समान पदनो उचरवो सात स्वर अ

सूत्रबंधः सएव मष्टगुण एव कार्य इत्याह ॥ निद्दोससिलोगो ॥ तत्र निर्दोष अलियमुवघायजणियमित्यादि द्वात्रिंशत्सूत्रदोषरहितंसारव दर्थेन युक्तं २ हेतु युक्त २ मर्थगमककारणयुक्त ३ अलङ्कृतं काव्यालङ्कारयुक्तं ४ उपनीत मुपसंहारयुक्तं ५ सोपचार मनिष्ठुराविरुद्धालज्जनीयाभिधान सोत्प्रासंवा ६ मितं पदपदाक्षरे नांपरिमितमित्यर्थः ७ मधुर त्रिधा शब्दार्थाभिधानतो ८ गेय भवतीतिशेषः ॥ तिस्रियवित्ताइति ॥ यदुक्त तद्व्याख्यासम॥ सिलोगो ॥ तत्रसम पादैरक्षरेश्च तत्र पादे श्चतुर्भि रक्षरैस्तु गुरुलघुभि रर्द्धसमंत्वेकतरसम विषमतु सर्वत्र पादाक्षरापेक्षयेत्यर्थः अन्येतु व्याचक्षते सम यत्र चतुर्ष्वपि पादेषु समा न्यक्षराणि अर्द्धसम यत्र प्रथमतृतीययो र्द्वितीयचतुर्थयोश्च समत्वं तथा सर्वत्र सर्वपादेषु विषमञ्च मिषमाक्षर यद्यस्मात् वृत्तम्भवति ततस्त्रीणिवृत्तप्रजातानि पद्यप्रकारा अतएव चतुर्थं नोपलभ्यतइति ॥ दोणियभणिईओत्ति ॥ अस्य व्याख्या ॥ सक्कयासिलोगो ॥ भणिति भाषा आहिया आख्याता स्वरमण्डले षड्जादिस्व रसमूहे शेषं कण्ठ्य कीदृशी स्त्री कीदृशं गायतीति प्रश्नमाह ॥ केसीगाहा ॥ केसित्ति॥ कीदृशी खरन्ति खरस्थान रुक्षं प्रसिद्धं चतुरं दक्षं विलवं परिमन्थर

मलंकिय उवणीयसोवयारंच मितंमहुरमेवय ॥ ८ ॥ सममद्धसमंचेव सव्वत्थविसमंचजं तिन्निवित्तपयायाइं

क्षरें सम ते गीत कहियें ॥ २४ ॥ दोषरहित अर्थयुक्त हेतुयुक्त काव्यना अलकारयुक्त उपसहार युक्त उपचार सहित अनिष्ठुर पद पदाक्षरे प्रमाण सहित मधुर शब्दार्थसहित गीत होय ॥ २५ ॥ सरखा अक्षर ते समवृत्त पहिलो तीजो पद सम बीजोपद चौथोपद ते सम ते अर्द्ध समवृत्त च्यार पदे अक्षर सरखा नथी ते विषमपद वृत्त ए त्रण वृत्तपद गीतना चौथुं वृत्तळे नथी ॥ २६ ॥ सस्कृतना अथवा प्राकृतना श्लोक भणे एह बे प्रकारे ज्ञ णावो कह्यो स्वरमडलने विषे प्रशस्त कहिया ॥ २७ ॥ केहवी स्त्री मधुरो गावे केहवी स्त्री खर अने लूखो गावे केहवी स्त्री चतुर अने डाहो गावे

द्रुत शीघ्रमिति ॥ विस्सरपुणकेरिसित्ति ॥ गाथाधिकमिति उत्तरमाह ॥ सामागाहा ॥ करणा ॥ पिंगलत्ति ॥ कपिला ॥ तंतिगाहा ॥ तन्त्री सम वीणादि तंत्री शब्देन तुल्य मिलितच शेषप्राग्व श्रवर पादो वृत्तपाद स्तंत्रीसमं इत्यादिषु गेयं सम्बन्धनीय तथा गेयस्य स्वरानर्थान्तरत्वा दुक्तम् ॥ सचारसमासरासत्तत्ति ॥ अन्यथा सचारसममिति वाच्यंस्यात् ॥ ततिसमालयसमेत्यादि्चेति ॥ अथच स्वरमंडलसचेपार्थ ॥ सत्तसरासिलोगो ॥ ततो तन्त्रीतानो भख्यते तत्र षड्जादि स्वर: प्रत्येक सप्तभि: स्थाने र्गीयतइत्येव मेकोनपचाशत्ताना: सप्ततंत्रीकाया वीणाया भवंतीति एव मेकतन्त्रीकाया त्रितंत्रीकायाच कठेनापि गीयमाना

चउत्थंनोवलब्भई ॥ ९ ॥ सक्कयापागयाचेव दुविहाभणिउआहिया सरमंडलमिगिज्जते पसत्थाइसिभासिया ॥ १० ॥ केसीगायइमहुर केसीगायइखरचरुक्कच केसीगायइचउर केसिविलबंदुतकेसी ॥ ११ ॥ विस्सरंपुण केरिसी ॥ सामागायइमहुरं कालीगायइखरचरुक्कच गोरीगायइचउरं काणविलबंदुतंअंधा ॥ १२ ॥ विस्सरं पुणपिंगला ॥ ततिसमंतालसमं पादसमंलयसमंगहसमंच नीससिऊससियसमं संचारसमासरासत्त ॥ १३ ॥

केहवी स्त्री विलंबथी गावे केहवी स्त्री उतावलो गावे ॥ २८ ॥ केहवी स्त्री वेस्वर माठा स्वरथी गावे ॥ श्यामा स्त्री सोलह वरसनी ते मीठो गावे काली स्त्री स्वरथी लूखो गावे गोरीस्त्री चतुर गावे काणी स्त्री विलंबथी गावे आंधी स्त्री उतावलो गावे पिंगला कपिला स्त्री वेस्वरे गावे ॥ २९ ॥ वीणाना शब्द सरिखो गावे तालसमान पादसमान लयसमान गाथासमान नि:श्वास उत्स्वास समान सचार समान स्वरातर तुल्य ॥ ३० ॥ सात स्वरळे त्रणग्रामळे एकवीस मूर्च्छनाळे उगुणपचास तानळे ॥ एतले स्वरमंडल पूरो थयो ॥ ३१ ॥ सात प्रकारे काय कलेश कह्यो ते कहेंळे एक स्थानके

॥ टी

॥ मू

॥ भ

एकोनपचाशद्देवेति अनन्तरं गानतो लौकिकः कायक्लेश उक्तो ऽधुना लोकोत्तरं तमेवाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ प्रायः प्रागेव व्याख्यातमिदं तथापि किञ्चि
ल्लिख्यते कायस्य शरीरस्य क्लेशः खेदः पीडा कायक्लेशो बाह्यतपोविशेषः स्थानायतिकः स्थानातिग. स्थानातिदोवा कायोत्सर्गकारी इत्हच धर्म्मधर्म्मिणो रभे
दा देवमुपन्यासो ऽन्यथा कायक्लेशस्य प्रक्रान्तत्वा त्सएववाच्यः स्या स तद्वानिहतु तद्वान्निर्दिष्टइति एव सर्वत्र उत्कटकासनिकः प्रतीत स्तथा प्रतिमास्था
योति भिचुप्रतिमाकारी वीरासनिको यः सिंहासने निविष्टइवा स्ते नैषद्यिकः समपदपुतादिनिषद्योपव देशो डायनिकः प्रसारितदेहो लगडसायी
भूम्यलग्नपृष्ट इदंच कायक्लेशरूपं तपो मनुष्यलोक एवा स्तीति तत्प्रतिपादनपरं॥ जंबूद्दीवेत्यादि॥ प्रकरणंगतार्थं चैतत् मनुष्यक्षेत्राधिकारा त्तद्गतकुलकरक

सत्तसरातजगामा मुच्छणाएगविंसती ताणाएकूणपन्नासा संमत्तंसरमंडलं ॥ १४ ॥ सत्तविहे कायकिलेसे
पन्नत्ते तजहा ठाणाइए उकुडुयासणिए पडिमठाई वीरासणिए णेसज्जिए दडायइए लगंडसाई। जंबुद्दीवेदीवे
सत्त वासा पन्नत्ता तंजहा भरहे एरवए हेमवए हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे । जंबुद्दीवेदीवे

कायोत्सर्ग करे १ । ऊकडु आसन वैसे २ । भिक्षु प्रतिमानो करणहार ३ । वीरासने वैसे ४ । निविष्टे सीहनी परे वैसे ५।दडनी परे देहपसारे ६।
लाकडानी परे सोई भूये वासो नलागे ७ ॥ जंबूद्वीपमा सात वर्ष कह्यिा तेकहेछे भरत १ । ऐरवत २ । हिमवंत ३ । हेरण्यवत ४ । हरिवर्ष ५ ।
रम्यकवर्ष ६ । महाविदेह ७ ॥ जंबूद्वीपमां सात वर्षधर पर्वत कह्यिा ते कहेछे चुल्लहिमवत १ । महाहिमवंत २ । निषध ३ । नीलवत ४ । रूपी ५ ।
शिखरी ६ । मेरुपर्वत ७ ॥ जंबूद्वीपमा सात महानदी पूर्वदिशि साहमी लवणसमुद्रमा भलेछे ते कहेछे गगा १ । रोहिता २ । हरी ३ । सीता ४ ।

सत्त वासहरपव्वया पसत्ता तंजहा चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसहे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे। जंबुद्दीवे दीवे सत्त महानदीउ पुरत्थाभिमुहीउ लवणसमुद्द समप्पेंति तजहा गंगा रोहिया हरी सीता णरकंता सुव न्नकूला रत्ता। जंबुद्दीवेदीवे सत्त महानदीउ पच्चत्थाभिमुहीउ लवणसमुद्दं समप्पेंति सिंधू रोहियंसा हरि कता सीतोदा णारिकता रुप्पकूला रत्तवई। धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धेणं सत्त वासा पसत्ता तजहा भरहे जाव महाविदेहे। धायइखंडदीवपुरच्छिमेण सत्त वासहरपव्वया पसत्ता तंजहा चुल्लहिमवंते जाव मंदरे। धायइखंडदीवपुरत्थिमद्धेण सत्त महानदीउ पुरत्थाभिमुहीउ कालोदसमुद्द समप्पेंति तजहा गगा जाव रत्ता धायइखंडदीवपुरत्थिमद्धेणं सत्त महानदीउ पच्चत्थाभिमुहीउ लवणसमुद्द समप्पेंति तंजहा सिंधू जाव रत्त

नरकाता ५। सुवर्णकूला ६। रक्ता ७॥ जबूद्वीपमा सात मोटी नदी पश्चिमदिशि साहमी लवण समुद्रमा भलळे तेकहेळे सिधु १। रोहितांसा २। हरिकाता ३। सीतोदा ४। नारिकाता ५। रूप्यकूला ६। रक्तवती ७॥ धातकी खण्डद्वीप पूर्वार्द्धमा सात वर्ष ते कहेळे भरत यावत् महाविदेह॥ धातकी खण्ड द्वीपार्द्धे सात वर्षधर कह्या ते कहेळे चुल्लहिमवंत यावत् मेरु॥ धातकी खण्डद्वीप पूर्वार्द्धे सातमोटी नदी कही पूर्वदिशि साहमी कालोद समुद्रप्रते आवेळें ते कहेळे गंगा यावत् रक्ता॥ धातकी खंडद्वीपे सात मोटीनदी कही पश्चिम साहमी लवणसमुद्रप्रते भलेळे सिधु यावत् रक्ताव ती॥ धातकी खण्डद्वीप पश्चिमार्द्धमा सात वर्ष क्षेत्रळे इमज एतलो विशेष पूर्वदिशि साहमी लवणसमुद्र प्रति आवेळे॥ पश्चिम साहमी कालोदधि

ल्लाहचनीतिरबदुःखमादिलिङ्गसूत्राणि पाठसिद्धानि चैतानि नवरं ॥ आगमिस्सेणहोक्खइत्ति ॥ आगमिष्यता कालेन हेतुना भविष्यतीत्यर्थः तथा विमल

वई । धायइखण्डदीवपच्चत्थिमद्धेणं सत्त वासा एवंचेव णवरं पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समं पच्चत्थाभिमुहीओ कालोद सेसंतंचेव । पुक्करवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धेणं सत्त वासा तहेव णवरं पुरत्थाभिमुहीओ पुक्करोदं समुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समं सेसंतचेव । एव पच्चत्थिमद्धेवि णवरं पुरत्थाभिमुहीओ कालोदसमुद्दं समं पच्चत्थाभिमुहीओ पुक्करोद समुद्द समप्पेंति सव्वत्थवासा वासहरपव्वया णईओय भाणिव्वा णि । जंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे तीयाए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा होत्था तजहा मित्तदामेसुदामेय सुपा सेयसयपभे विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥ जबूद्दीवेदीवे भारहेवासे इमीसेओसप्पिणीए सत्त

समुद्रप्रति आवेळे शेष तिमज ॥ पुष्करवर द्वीप पूर्वार्द्धमां सात वर्ष क्षेत्र कहिया शेष तिमज ॥ पूर्व साहमी पुष्करोदधि समुद्रमा आवेळे पश्चिमा भिमुखी पुष्करोदधि समुद्र प्रति आवेळे ॥ पश्चिम साहमी पुष्करोदधि समुद्र प्रति आवेळे शेष तिमज इम पश्चिमार्द्धमा पणि कहवो पूर्व साहमी कालोद समुद्रप्रति आवेळे पुष्करोदधि समुद्रप्रति आवेळे सघले वर्षधर पर्वत नदी जाणवी ॥ जबूद्वीपना भरत क्षेत्रमां गई उत्सर्पिणीय सात कु लकर थया ते कहेळे मित्रदाम १ । सुपास २ । सुदाम ३ । स्वयंप्रभु ४ । विमलघोष ५ । सुघोस ६ । महाघोस ७ ॥ जबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आवर्त्तमा न अवसर्पिणीये सात कुलकर थया ते कहेळे पहलो विमलवाहन १ । चक्षुष्मा २ । जसम ३ । चौथो अभिचंद्र ४ । प्रसेनवई ५ । मरुदेव ६ । ना

वाहने ग्रथमकुलकरे संति सप्तविधाइति पूर्वंदशविधा अभूवन् ॥ रुक्खत्ति ॥ कल्पहुचा ॥ उवभोगत्ताएत्ति ॥ उपभोग्यतया ॥ हव्वं ॥ शीघ्र मागतवंतोभोज नादिसपादने नोपभोगं तत्कालीनमनुष्याणा मागताइत्यर्थः ॥ मत्तगयायगाहा ॥ मत्तंगयाइति मत्तं मद स्तस्य कारणत्वात् मद्य मिह मत्तशब्दे नोच्य ते तस्याङ्गभूताः कारणभूता स्तदेव वाङ्गमवयवो येषां ते मत्तांगकाः सुखपेयमद्यदायिनइत्यर्थः चकारःपूरणे ॥ भिंगत्ति ॥ सज्ञा शब्दत्वात् भृङ्गारादि विविधभाजनसपादका भृङ्गाः ॥ चित्तगत्ति ॥ चित्रस्यानेकविधस्य माल्यस्य कारणत्वा च्चित्रांगाः ॥ चित्तरसत्ति ॥ चित्रा विचित्रा रसा मधुराद्यो म नोहारिणो येभ्यः सकाशा त्सपद्यन्ते तेचित्ररसाः ॥ मणियगत्ति ॥ मणीना माभरणभूताना मगभूताः कारणभूता मणयोवां गा न्यवयवा येषां ते

कुलगरा होत्या तंजहा पढमित्थविमलवाहण चक्खुमजसमंचउत्थमभिचंदे तत्तोपसेणईपुण मरुदेवेचेवनाभी य ॥ १ ॥ एएसिणं सत्तण्ह कुलकराणं सत्त भारियाहोत्था तं० चदजसचंदकंता सुरूवपडिरूवचक्खुकताय सिरि कतामरुदेवी कुलकरइत्थीणणामाइं ॥ १ ॥ जबुद्दीवेदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुल करा भविस्संति तंजहा मित्तवाहणसुभोमेय सुप्पभेयसयंपभे दत्तेसुहुमेसुबंधूय आगमिस्सेणहोक्खई ॥ १ ॥

भि ७ ॥ सात कुलकरनी सात स्त्री थई तेकहेछे चद्रयशा १ । चंद्रकाता २ । सुरूपा ३ । प्रतिरूपा ४ । चक्षुकाता ५ । श्रीकाता ६ । मरुदेवा ७ ॥ यह सात कुलकरनी स्त्रीना नाम कह्या ॥ २ ॥ जबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आवती उत्सर्प्पिणी काले सात कुलकर थास्ये ते कहेछे मित्रवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ । सुक्ष्म ६ । सुबधु ७ ॥ यह आवती उत्सर्प्पिणीये थास्ये ॥ १ ॥ विमलवाहन कुलकरने सात प्रकारना कल्पवृक्ष भो

॥

मत्त्यंगा भूषणसंपादका इत्यर्थः ॥ अगियणत्ति ॥ अनग्नकारकत्वा दनग्ना विशिष्टवस्त्रदायिनः संज्ञाशब्दोवायमिति ॥ कप्परुक्खत्ति ॥ उक्तव्यतिरिक्तसामा न्यकल्पितफलदायित्वेन कल्पना कल्प स्तत्प्रधाना वृत्ताः कल्पवृत्ताइति ॥ दडनीइत्ति ॥ दडन दंडो परिधिनामनुशासनं तत्र तस्यवा सएववा नीति र्नयो दडनीति. ॥ हक्कारेत्ति ॥ ह इत्यधिचेपार्थ स्तस्य करण हक्कारो य मर्थप्रथमद्वितीयकुलकरकाले अपराधिनो दडो हक्कारमात्रं तेनैवासौ हृतसर्व्वस्वमि वा त्मानमन्यमानः पुन रपराधस्थाने न प्रवर्त्ततइति तस्य दडनीतिता एव मा इत्यस्य निषेधार्थस्य करण मभिधानं माकार. तृतीयचतुर्थकुलकरकाले मह त्यपराधे माकारो दड इतरत्रतु पूर्वएवेति तथाधिगधिचेपार्थएव तस्य करण मुच्चारणं धिक्कारः पञ्चमषष्ठसप्तमकुलकरकाले महापराधे धिक्कारो दण्डो जघन्यमध्यमापराधयोस्तु क्रमेणहक्कारमाकाराविति आहच पढमवीयाणपढमा तइयचउत्थाणअभिनवावीया पंचमछट्ठस्सयस त्तमस्सतइयाअभिणवा ओत्ति ॥ तथा परिभाषण परिभाषा ऽपराधिनप्रति कोपाविष्कारेण मायासी रित्यभिधान तथा मडलबन्धो मडल मिगित चेत्र तत्र बन्धो ना स्मात्प्रदेशा

विमलवाहणेणं कुलकरे सत्तविहा रुक्खा उवत्तेगत्ताए हव्वमागच्छिंसु तंजहा मत्तंगयायत्तिंगा चित्तंगाचेव होंतिचित्तरसा मणियंगायत्तणित्तणा सत्तमगाकप्परुक्खाय ॥ १ ॥ सत्तविहा दंडणीई पसत्ता तंजहा हक्कारे मक्कारे धिक्कारे परिन्नासे मंडलिबंधे चारए छविच्छेदे । एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त एगेंदि

गने अर्थ आवता हुआ तेकहेछे मत्तंग १ । त्रुटिताग २ । भृगांग ३ । चित्रांग ४ । चित्ररस ५ । मणियांग ६ । अनीयक ७ ॥ यह सात कल्पवृक्ष क हिया ॥ १ ॥ सात प्रकारे दडनीति कही ते कहेछे हकार १ । मकार २ । धिक्कार ३ । परिन्नासा ४ । नरबंध ५ । हाडमां घात ६ । अंगच्छेद ७॥

न्तव्य मित्येवंवचनलक्षणः पुरुषमंडलपरिचारणलक्षणोवा चारक गुप्तिगृहं छविच्छेदो हस्तपादनासिकादिच्छेदः इय मनन्तरा चतुर्विधा भरतकाले ब भून्न चतस्रणा मन्याना माद्याद्वय मृषभकाले अन्येतु भरतकाल इत्यन्ये आहच परिभाषणाउपढमा मंडलिबंधमिहोइवीयाओ चारगछविछेदाई भरह स्सचउव्विहानीइत्ति ॥ १ ॥ चक्करयणेत्यादि ॥ रत्ननिगद्यतेतत् जातौजातौयदुत्कृष्टमितिवचनात् चक्रादिजातिषु यानि वीर्यंत उत्कृष्टानि तानि चक्र रत्नादीनि मन्तव्यानि तत्र चक्रादीनि सप्त केन्द्रियाणि पृथिवीरूपाणि तेषाञ्च प्रमाणं चक्कछत्तंदंडो तिण्णिविएयाइंवामतुल्लाइ चम्मंदुहत्थदीह बत्तीसअंगु लाइअसी ॥ १ ॥ चउरंगुलोमणीपुण तस्सद्धचेवहोइविच्छिण्णो चउरंगुलप्पमाणा सुवण्णवरकागणीनेया ॥ २ ॥ सेनापतिः सैन्यनायको गृहपतिः कोष्टा गारनियुक्तः वर्द्धकि. सूत्रधारः पुरोहितः शान्तिकर्म्मकारीति चतुर्दशा प्येतानि प्रत्येक यक्षसहस्राधिष्ठितानीति ॥ ओगाढति ॥ अवतीर्णा मवगाढावा

यरयणा पण्णत्ता तंजहा चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे दंडरयणे असिरयणे मणिरयणे काकणिरयणे । एग मेगस्सण रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पचेंदिय रयणा पण्णत्ता तंजहा सेणावइरयणे गाहावइरयणे वड्ढ इरयणे पुरोहियरयणे इत्थिरयणे आसरयणे हत्थिरयणे । सत्तहिठाणेहि ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा तंजहा

एकेक राजा चातुरंत चक्रवर्तीने सात एकेंद्री रत्न कहिया ते कहेछे चक्ररत्न १ । छत्ररत्न २ । चमर रत्न ३ । दंडरत्न ४ । खड्गरत्न ५ । मणिरत्न ६ । काकिणी रत्न ७ ॥ एकेक राजा चातुरंत चक्रवर्त्तने सात पचेंद्रीरत्न कह्या ते कहेछे सेनापतिरत्न १ । गाथापतिरत्न २ । वार्द्धकिरत्न ३ । पुरोहितरत्न ४ । स्त्रीरत्न ५ । अश्वरत्न ६ । हस्तीरत्न ७ ॥ सात थानके ओगाढ आकरो दुखमाकाल जाणवो ते कहेछे अकाले मेघ वरसे १ । काले न वरसे २ ।

॥ प्रकर्षप्राप्तामिति अकालो ऽवर्षा असाधवो ऽसंयता गुरुषु मातापितृधर्माचार्येषु ॥ मिच्छ ॥ मिथ्याभाव विनयभ्रंशमित्यर्थः प्रतिपन्न आश्रितः ॥ मणोदुहयंति ॥ मनसो मनसावा दुःखिता दुःखितत्व दुःखकारित्वंवा द्रोहकत्ववा एव वयदुहयेत्यपि व्याख्येयमिति ॥ सम्मति ॥ सम्यग्भावं विनयमित्यर्थः एतेच दुःख मासुखमे संसारिणां दुखाय सुखायचेति संसारिप्ररूपणायाह ॥ सत्तेत्यादि ॥ कण्ठ्य ससारिणाञ्च संसरण मायुर्भेदेसति भवतीति तद्दर्शनायाह ॥ स त्तेत्यादि ॥ तत्र ॥ आउयभेदेत्ति ॥ आयुषो जोवितव्यस्य भेदः उपक्रमः आयुर्भेदः सच सप्तविधनिमित्तप्रापितत्वा त्सप्तविधएवेति ॥ अज्झवसाणगाहा ॥

अकालेवरिसइ कालेणवरिसइ असाधूपुज्जंति साधूणपुज्जंति गुरुहिंजणोमिच्छंपडिवन्नो मणोदुहया वइ दुहया । सत्तहि ठाणेहि मोगाढं सुसम जाणेज्जा तंजहा अकालेणवरिसइ कालेवरिसइ असाधूणपुज्जंति साधूपुज्जंति गुरूहिंजणोसंमपडिवन्नो मणोसुहया वइसुहया । सत्तविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा नेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणीउ मणुस्सा मणुस्सीउ देवा देवीउ । सत्तविहे आउभेदे प०

असाधुनी पूजा थाय ३ । साधुनी पूजा नथाय ४ । गुरु साथे लोक मिथ्यात्व प्रतिपन्नछे खोटा चालेछे ५ । मनमा दुखघणां ६ । वचनना दुख घ णा ७ ॥ सात थानके अवगाढ सुखमाकाल जाणवो तेकहेछे अकाले मेघ नवरसे १ । काले मेघवरसें २ । असाधुनी पूजा नथाय ३ । साधुनी पूजा थाय ४ । गुरुसाथे लोक सम्यक् सेवा प्रतिपन्नहोय ५ । मननुं सुखहोय ६ । वचननो सुख होय ७ ॥ सात प्रकारे ससार समापन्न जीव कह्या ते कहेछे नारकी १ । तिर्यंच २ । तिर्यंचणी ३ । मनुष्य ४ । मनुष्यणी ५ । देव ६ । देवी ७ ॥ सात प्रकारे आउखाना भेद कहिया एतले आयु बांधे

अध्यवसान रागस्नेहभयात्मको ध्यवसायो निमित्तं दंडकशाशस्त्रादीति समाहारद्वंद्व स्तत्र सति आयुर्भिद्यतइति संबंध: तथा आहारे भोजने धिकेसति तथा वेदना नयनादिपीडा पराघातो गर्त्तपातादिसमुत्थ इहापि समाहारद्वंद्वएव तत्र सति तथा स्पर्शे तथाविधभुजङ्गादिसंबधिनि सति तथा ॥ आ णापाणुत्ति ॥ उच्छ्वासनि:श्वासौ निरुद्धा वाध्रियेतेति एवंच सप्तविधं यथा भवति तथा भिद्यते आयुरिति अथवा अध्यवसान मायु रुपक्रमकारणमि तिशेष: एवं निमित्तमित्यादि यावदाणापाणुत्तिव्याख्येय प्रथमैकवचनान्तत्वा दध्यवसानादि पदाना मेव सप्तविधत्वा दायुर्भेदहेतूनां सप्तविधं यथा भव ति तथा भिद्यते आयुरिति अयचा युर्भेद: सोपक्रमायुषामेव नेतरेषामिति आह यद्येवं भिद्यते आयु स्तत क्तनासो क्तताभ्यागमश्च स्या त्कथ सब त्सरशत मुपनिबद्ध मायु स्तस्या पान्तराल एव व्यपगमात् क्तनाशो येनष कर्मणा तद्भिद्यते तस्या क्तस्यै वा भ्यागम एवंच मोचानाश्वास' तत श्चा रित्र प्रवज्यादयो दोषाइति आहच कमोवक्कामिज्जइ अपत्तकालपिजइतओपत्ता अकयागमकयनासो मोक्खानासासओदोसा ॥ १ ॥ अत्रोच्यते यथा वर्षशतभोग्यभक्त मप्यग्निकव्याधितस्या ल्पेनापि कालेनो पभुञ्जानस्य न कृतनाशो ना प्यकृताभ्यागम स्तद्द दिहापीत्याहच णहिदीहकालियस्सवि णा सोतस्साणुभूइओखिप्पं बहुकालाहारस्सव दुअमगियरोगिणोभोगो ॥ सव्वचपएसतया भुञ्जइकम्ममणुभागओभइयं तेणावस्साणुभवे कोकइनासादओत स्स ॥ २ ॥ किंचिदकालेविफल पाइज्जइपच्चएयकालेण तहकम्मपाइज्जइ कालेणविपच्चएअण्णं ॥ ३ ॥ जहवादीहारज्जू उज्झइकालेणपुंजियाखिप्पं वित ओपडोउसुस्सइ पिंडोभूओउकालेणेत्यादि ॥ ४ ॥ अयस्त्रा युर्भेद: कथञ्चि त्सर्वजीवाना मस्तीति तानाह ॥ सत्तेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं कण्ठ्यं नवरं सर्वेच ते जीवाश्चेति सर्वजीवा: संसारिमुक्ताइत्यर्थ. तथा ॥ अकाइयत्ति ॥ सिद्धा: षड्विधकायाव्यपदेश्यत्वादिति अलेश्या: सिद्धा अयोगिनोवेति अनन्तरं कृष्ण लेश्यादयो जीवभेदा उक्ता स्तत्रच कृष्णलेश्य: स मारकोप्युत्पद्यते ब्रह्मदत्तवदिति ब्रह्मदत्तस्वरूपाभिधानायाह॥ बंभदत्तेत्यादि ॥ सुगम ब्रह्मदत्त उत्तमपुरुष

॥ इति तदधिकारा दुत्तमपुरुषविशेषस्था नोत्पन्नमल्लिवक्तव्यतामाह ॥ मल्लीणमित्यादि मल्लि रर्हन् ॥ अप्पसत्तमेत्ति ॥ आत्मना सप्तम' सप्तानां पूरण आ

तंजहा अज्झवसाणनिमित्ते आहारेवेयणापराघाए फासेआणापाणू सत्तविधंभिज्जएआउ ॥ १ ॥ सत्तविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा पुढविकाइया आउतेउवाउवणस्सइतसकाइया अकाइया । अहवा सत्तविहा सव्व जीवा पन्नत्ता तंजहा कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा अलेसा । बंभदत्तेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्तधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं । सत्तयवाससयाइ परमाउ पालइत्ता कालमासेकाल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने । मल्लीणअरहा अप्पसत्तमे मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारिय पव्वइए तजहा मल्लीवि

छे तेकहेछे सरागस्नेह भयात्मक अध्यवसाय १ । दंड शस्त्रादि निमित्ते २ । घणो आहार करवाथी ३ । शूलादि वेदनाथी ४ । पराघात देखीने घात पामे ५ । सर्पादिना स्पर्शथी ६ । सासोस्वासथी स्वासना रोगथी ७ ॥ १ ॥ सात प्रकारे सर्वजीव कह्या ते कहेछे पृथ्वीकाय १ । अप्काय २ । तेउकाय ३ । वायुकाय ४ । वनस्पतिकाय ५ । त्रसकाय ६ । अकाय कायारहित सिद्धना जीव ७ ॥ अथवा सात प्रकारे सर्वजीव कहिवा तेकहेछे कृ ष्णलेश्याना यावत् शुक्ललेश्याना ७ अलेश्य लेश्यारहित तेसिद्धना जीव ७ ॥ ब्रह्मदत्त राजा चातुरंत चक्रवर्त्त सात धनुष ऊचा ऊचपणे थया ॥ सातसे ७०० वरसनु मोटो आऊखो पालीने कालमासे कालकरीने हेठे सातमी नरक पृथ्वीये अप्पइठाण नामें नरकावासे नारकी पणे ऊपनो ॥ म ल्लिनाथ अरिहत पोते सातमा मुडथई गृहस्थपणो मूकी साधुपणो प्रव्रज्या लीधी तेकहेछे मल्ली विदेह राजवर कन्या १ । प्रतिबुद्ध इक्ष्वाकुराजा २ ।

त्मावा सप्तमी यस्या सा वात्मसप्तमी मल्लिशब्दस्य स्त्रीलिङ्गत्वेपि पर्हच्छब्दापेक्षया पुनिर्देश: विदेहजनपदराजस्य वरकन्या विदेहराजवरकन्या तथा प्र
तिबुद्धि र्नाम्ना इक्ष्वाकुराज: साकेतनिवासी २ चन्द्रच्छायोनाम अंगजनपदराज श्चम्पानिवासी ३ रुक्मीनाम कुणालजनपदाधिपति: श्रावस्तीवास्तव्य: ४
शङ्खनाम काशीजनपदराजो वाराणसीनिवासी ५ अदीनशत्रुर्नाम्ना कुरुदेशनाथो हस्तिनागपुरवास्तव्य: ६ जितशत्रुर्नाम पंचालजनपदराज: कांपि
ल्यनगरनायकइति आत्मसप्तमत्वञ्च भगवत: प्रव्रज्याया मभिहितप्रधानपुरुषप्रव्रज्याग्रहणाभ्युपगमापेक्षया वगन्तव्यं यत: प्रव्रजितेन तेप्रव्राजिता: तथा
त्रिभि पुरुषशतै र्बाह्यपर्षदा त्रिभिश्च स्त्रीशतै रभ्यतरपर्षदासौ परिवृत: प्रव्रजितइति ज्ञातेषु श्रूयतइति उक्तञ्च पासीमल्लीयतिहितिहिंसएहिंति एव
मन्येष्वपि विरोधाभासेषु विषयविभागा: सम्भवन्तीति निपुणै र्गवेषणीया' शेषं सुगममिति इत्थचेत च्चरित्त मल्लिज्ञाताध्ययने श्रूयते जम्बूद्वीपे अपरवि
देहे सलिलावतीविजये वीतशोकाया राजधान्या महाबलाभिधानो राजा षड्भिर्बालवयस्यै: सह प्रव्रज्या प्रतिपेदे तत्र महाबल स्ते वैयस्यानगारै रूचे
यद्भवा स्तप स्तपस्यति तदय मपीत्येव प्रतिपन्नेषु तेषु यदा ते तमनुसरन्त श्चतुर्थादि विदधु: तदा सा वष्टमादिग्यधासो देवच स्त्रीनामगोत्रकर्मा शौचव
धाईद्दिवात्सल्यादिभिश्च हेतुभि स्तीर्थकरनामेति ततस्ते जीवितक्षया ज्जांताभिधान विमाने प्रत्युत्तरसुरत्वेनो त्पेदिरे तत श्चुत्वा महाबली विदेहेषु
जनपदेषु मिथिलाया राजधान्या कुम्भकराजस्य प्रभावत्या देव्या स्तीर्थंकरत्वेन समजनि मल्लिरितिनामच पितरौ चक्रतु रादन्येतु यथोक्तसाकेतादिषु

देहरायवरकन्नगा पडिबुद्धीइक्खागराया चदच्छाएअंगराया रुप्पीकुणालाहिवई संखेकासीराया अदीणसत्तु

चद्रच्छाय अंगदेशनो राजा ३ । रूपी कुणालानो राजा ४ । शंख कासी देशनो राजा ५ । अदीनशत्रु कुरुदेशनो राजा ६ । जितशत्रु पाचालदेशनुं

संजज्ञिरे ततोमल्लीदेशोनवर्षशतजाता अवधिना तानाभोगयांचकार तत्प्रतिबोधनार्थंच गृहोपवने प्रभंगृहोपेत भवन तन्मध्यभागेच कनकमयीं सुषिरां मस्तकच्छिद्रा पद्मपिधाना स्वप्रतिमा कारयामास तस्यांचा नुदिवस स्वकीयभोजनकवल प्रक्षेपयामास इतश्च साकेते प्रतिबुद्धराजः पद्मावत्यादेव्याकारिते नागयज्ञेजलजादिभास्वरपंचवर्णकुसुमनिर्मित श्रीदामगण्डक दृष्ट्वा अहो अपूर्व्वभक्तिक मिद मिति विस्मया दमात्य मुवाच दृष्ट क्वापीद्दशमीदृश मिति सोवोचत् मल्लिविदेहवरराजकन्यासत्कश्रीदामगण्डापेचये दं लक्षांशेपि शोभया नवर्त्तते ततो राज्ञावाचि सापुनः कीदृशी मनोजगाद अन्या नास्ति तादृशी त्युपश्रुत्य सञ्जातानुरागोसौ मल्लिवरणार्थं दूतं विससर्ज ॥ १ ॥ तथा चम्पाया चन्द्रच्छायराजः कदाचि दर्हन्नकाभिधानेन श्रावकेन पोतवणिजा चम्पावास्तव्येन यात्राप्रतिनिवृत्तेन दिव्यकुण्डलयुग्मे कौशलिकतयो पनीते सति पप्रच्छ यदुत यूय बहुश समुद्रं लंघयथ तत्रच किंचिदाश्चर्य्यं मपश्यता ऽसा ववोचत् स्वामि न्नस्या यात्राया समुद्रमध्ये ऽस्माक धर्मचालनार्थं देव कश्चि दुपसर्गंचकार ऽविचलने चास्माकं तुष्टेन तेन कुण्डलयुगलद्वितय मदायि तदेकं कुम्भकस्या स्वामि रुपनिन्ये तेनापि मल्लिकन्यायाः कर्णयो. स्वकरेण विन्यासि साच कन्या त्रिभुवनाश्चर्यभूता दृष्टेति श्रुत्वा तथैव दूतं प्रेषयामास ॥ तथा श्रावस्त्या रुक्मिराजः सुबाहुभिधानायाः स्वदुहितु श्चातुर्मासिकमज्जनमहोत्सवे नगरीचतुष्पथनिवेशितमहामण्डपे विभूत्या मज्जिता तां तत्रैवोपविष्टस्य पितुःपादवन्दनार्थ मागता मङ्केनिवेश्य तल्लावण्य मवलोकयन् व्याजहार यदुत भोवर्षधर दृष्ट ईदृशोग्यास्याः कस्याचिदपि कन्याया. मज्जनकमहोत्सवः सोवोचत् देव विदेहवरराजकन्यासत्कमज्जनोत्सवापेक्षया लक्षांशेपि रमणीयतया नवर्त्तत इत्युपश्रुत्य तथैव दूत प्रेषयतिस्मेति ॥ २ ॥ तथा अन्यदा मल्लिसत्ककुण्डलयुग्मसंधि विजघटे तत्संघटनार्थं कुम्भकेन सुवर्णकाराः समादिष्टा स्तथैव कर्त्तु तमशक्नुवतश्च नगर्या निष्कासिता वाराणस्या शंखराज माश्रिता भणिताश्च ते तेन केनकारणेन कुम्भेन निष्कासिताः यूयते ऽभिदधु र्मल्लिकन्यासत्कविघटितकर्णकुण्डलसंधानाशक्तनेनेति

तत: कीदृशी सेतिपृष्टेश्च स्तेभ्यो मल्लिरूप मुपश्रुत्य तथैव दूतं प्राहिणोत् ॥ ४ ॥ तथा कदाचि न्मल्लया मल्लदिन्नाभिधानोनुजो भ्राता सभा चित्रकरै श्चि
त्रयामास तत्रैकेन चित्रकरयूना लब्धिविशेषवता यमनिकान्तरितायाः मल्लिकन्यायाः पादांगुष्ठ मुपलभ्य तदनुसारेण मल्लिसदृशमिव तद्रूप निवर्त्तित त
तश्च मल्लदिन्नकुमारः सांत:पुर श्चित्रसभायां प्रविवेश विचित्राणिच चित्ररूपा ण्यवलोकयन् मल्लिरूप ददर्श साचा न्मजीयमिति मन्यमानो ज्येष्ठायाः भ
गिन्या गुरुदेवभूतायाः अह मग्रतो ऽविनयेना यातइति भावयन् परमव्रीडां जगाम तत स्तत्राचोचित्र मिति न्यवेदय त्ततो सा वस्थाने तेनेदं लिखि
तमिति कुपित स्तं वध्यमाज्ञापितवान् चित्रकरश्रेणीनुतं ततो मोचयामास तथापि कुमारः सदंशक छेदयित्वा त निर्विषयमादिदेश सच हस्तिनागपुरे
ऽदीनशत्रुराज मुपाश्रितः ततो राजा तन्निर्गमकारण मप्रछ तेनच तथैव कथिते दूत प्रहिणोतिस्मेति ॥ ५ तथा कदाचि चोचाभिधाना परिव्राजिकासल्लि
भवनं प्रविवेश ताच दान धर्मं शौचधर्मं चोद्ग्राहयन्तीं मल्लिस्वामिनो निर्जगा यनिर्जिताचसती सा कुपिता कापिल्यपुरे जितशत्रु मुपाश्रिता भणितच नरप
तिना चोचे बहुत्र त्व सचरिस्यतो ऽद्राचोः काचित् क्वचि दस्म दंत:पुरपुरंध्रिसदृशी सा व्याजहार विदेहवरराजकन्यापेक्षया युष्मत्पुरंध्रयो लक्षांशेपिरूप
सौभाग्यादिभि र्गुणै र्न वर्त्तन्तइतिश्रुत्वा तथैव दूतं विसर्जितवानिति ६ एव मेते षडपि दूताः कुम्भककन्या याचितवंतः सच ता नपद्वारेण निष्काषितवा
न् दूतवचनाकर्णना ज्जातकोपाः षड प्यविक्षेपेण मिथिलां प्रति प्रतस्थुः आगच्छतस्तथा नुपश्रुत्य कुंभकः सवलवाहनोदेशसीमांगत्वा रणरंगरसिकतया
तान् प्रतीक्षमाण स्तस्थौ आयातेषु तेषु लग्न मायोधनं बहुत्वा त्परबलस्य निहतकतिपयप्रधानपुरुष मतिनिशितसरशतजर्जरितजयकुञ्जरमतिखरचु
रप्रप्रहारोत्प्लुतवाजिविसरविनिशाश्ववार मुत्तुगमत्तमतंगजचूर्णितचक्रिचक्र मुल्लूनछत्र पतत्पताक कादिशीककातर कुम्भकसैन्य भग मगम त्ततो सौ
निवृत्य रोधक सज्ज. स न्नासामासे तत स्तज्जयोपाय मलभमान माकुलमानस जनक मवलोक्य मल्लो समाश्वासयती समादिदेश यदुत भवते दीयते का

न्ये वं प्रतिपादनपरस्परप्रच्छन्नपुरुषप्रत्येकप्रेक्षणोपायेन पुरिपार्थिवाः षडपि प्रवेश्यंता न्तथैव कृतं प्रवेशितास्ते पूर्वरचितगर्भगृहेषु मल्लिप्रतिमा मवलो क्यच तेसेय मल्लीति मन्यमाना स्तद्रूपयौवनलावण्येषु मूर्च्छिता निर्निमेषदृष्ट्या तामेवा वलोकयंत स्तिष्ठतिस्म ततो मल्ली तत्रा जगाम प्रतिमायाः पिधानंचा पससार तत स्तस्याः गंधं सर्पादि मृतकगन्धातिरिक्त उद्धाव तत स्ते नासिकां पिदधुः पराङ्मुखाश्च तस्थु र्मल्लीच तानेव मवादीत् किन्तु भोयूय मेवं पिहितनासिकाः पराङ्मुखीभूता स्त ऊचुः गन्धेनाभिभूतत्वात् पुनः सा वोचत् यदि भोदेवानाम्प्रियाःप्र तिदिनमनोज्ञाहारकवलक्षेपेणै वंरूपः पुद्गल परिणामः प्रवर्त्तते कीदृशः पुनरस्यौ दारिकस्य शरीरस्य खेलवांतपित्तशुक्रशोणितपूयाश्रवस्य दुरंतोच्छ्वासनिःश्वासस्य पूतिपूरीषपूर्णस्य चयापचयिकस्य शटनपतनविध्वंसनधर्मकस्य परिणामो भविष्यतीति ततो मा यूयं मानुष्यककामेषु सजत किच किंचतयपम्हठ्ठं जंचतयाभोजयंतपवरंमि वुच्छासमयनिवद्ध देवातसभरहजाइंति ॥ १ ॥ भणिते सर्वेषा मुत्पन्नं जातिस्मरणं अथ मल्लि रवादीत् अहं भो ससारभया त्प्रव्रजिष्यामि यूय किं करिष्यथ तऊचु र्वय म प्येव ततो मल्लि रवोचत् यद्येवं ततो गच्छत स्वनगरेषु स्थापयतः पुत्रान् राज्येषु ततः प्रादुर्भवतममांतिक मिति तेपि तत्तथैव प्रतिपेदिरे तत स्तान्म ल्लीगृहीत्वा कुम्भकाराजांतिक माजगाम तस्यतान् पादयोः पातयामास कुम्भकराजोपि तान् महता प्रमोदेना पूपुजत् स्वस्थानेषुच विससर्जेति मल्ली च सावत्सरिकमहादानानन्तरं पौषशुद्धैकादश्या मष्टमभक्तेना श्विनीनक्षत्रे ष्टभिर्नंदनंदिमित्रादिभि र्नागवंश्यकुमारै स्तथा बाह्यपर्षदा पुरुषाणां त्रिभिः शतै रभ्यंतरपर्षदाच स्त्रीणा त्रिभिः शतैः सह प्रवव्राज उत्पन्नकेवलश्च तान् प्रव्राजितवानिति एतेच सम्यग्दर्शने सति प्रव्रजिताइति सामान्यतो दर्शन निरूपणायाह ॥ दंसणेत्यादि ॥ सुगमं नवरं सम्यग्दर्शन सम्यक्त्वं मिथ्यादर्शनं मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यादर्शनं मिश्रमिति एतच्च त्रिविधमपि दर्शनमोहनीयभेदा नां चयचयोपशमोदयेभ्यो जायते तथाविधरुचिस्वभावचेति चक्षुदर्शनादितु दर्शनावरणीयभेदचतुष्टयस्य यथासम्भवं चयोपशमक्षयाभ्या जायते सामा

ग्ययहणस्वभावंचेति तदेवं अधानसामान्यग्रहणयो दर्शनशब्दवाच्यता दर्शनं सप्तधी त्तामिति अनन्तरं केवलदर्शन मुक्तं तच्च छद्मस्थावस्थाया अनन्तरं भव तीति छद्मस्थप्रनिबद्धं सूत्रद्वयं विपर्ययसूत्रच ॥ छउमत्थेत्यादि॥ सुगम नवर छद्मनि आवरणद्वयरूपे अन्तरायेच कर्म्मणि तिष्टतीति छद्मस्थो नुत्पन्नकेवलज्ञा नदर्शनः सचासौ वीतरागश्च उपशांतमोहत्वात् चीणमोहत्वाद्वा विगतरागोदयइत्यर्थ. ॥ सत्तेत्ति॥ मोहस्य चया दुपशमाद्दा नाष्टावित्यर्थः अतएवाह ॥मोहणिज्जवज्जाओत्ति॥ एतान्येवच जिनो जानातीत्युक्त सच वर्त्तमानतीर्थे महावीरइति तत्स्वरूप तत्प्रतिबद्धविकथाभेदांश्चाह ॥ समणेइत्यादि ॥ सूत्र

कुरुराया जियसत्तूपचालराया। सत्तविहे दंसणे पन्नत्ते तजहा सम्मदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छादंसणे चक्खुदसणे अचक्खुदसणे ओहिदंसणे केवलदसणे। छउमत्थवीयरागेणं मोहणिज्जवज्जाओ सत्तकम्मपयडीओ वेएइ तंजहा नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्ज वेयणियं आउय नामं गोय मंतराइय। सत्तठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं नजाणइ नपासइ तंजहा धम्मत्थिकाय अहमत्थि० आगास० जीवंअसरीरं परमाणुपुग्गल सद्दं

राजा ७ ॥ सात प्रकारे दर्शन कह्यो ते कहेछे समकितदर्शन १। मिथ्यात्वदर्शन २। सम्यक्तमिथ्यात्व एतले मिश्रदर्शन ३। चक्षुदर्शन ४। अचक्षु दर्शन ५। अवधिदर्शन ६। केवलदर्शन ७॥ छदमस्थ वीतराग मोहनी वर्जीने सात कर्मनी प्रकृति वेदे ज्ञानावरणी कर्म १। दर्शनावरणी कर्म २। वेदनी कर्म ३। आयुकर्म ४। नाम ५। गोत्रकर्म ६। अतराय कर्म ७॥ सात थानके छदमस्थ सर्व भावेकरी न जाणे नदेखे ते कहेछे धर्मास्तिका य १। अधर्मास्तिकाय २॥ आकाशास्तिकाय ३॥ जीव शरीर रहित ४॥ परमाणु पुद्गल ५॥ शब्द ६॥ गध ७॥ ए सात ऊपनुछे केवलज्ञान जे

हयं सुगम नवरं ॥ विकहाओत्ति ॥ चतस्रः प्रसिद्धा व्याख्यातास्चेति ॥ मिउकालुणियत्ति ॥ श्रोतृहृदयमार्दवजननात् मृद्वी साचासौ कारुणिकीच कारु ण्यवती मृदुकारुणिकी पुत्रादिवियोगदुःखदुःखितमात्रादिकृतकारुण्यरसगर्भप्रलापप्रधानेत्यर्थः तद्यथा हापुत्तपुत्तहावत्थ मुक्कामिकहमणाहाह एवंकलु णाविलावा जलतजलणिज्जपडियत्ति ॥ दर्शनभेदिनी ज्ञानाद्यतिशयतः कुतीर्थिकप्रशंसादिरूपा तद्यथा सूक्ष्मयुक्तिशतोपेत सूक्ष्मबुद्धिकरंपर सूक्ष्मार्थदर्शि भिदृष्ट श्रोतश्यंगोवशासन इत्यादि ॥ १ ॥ एवंहि श्रोतृणां तदनुरागात् सम्यग्दर्शनभेद. स्यादिति चारित्रभेदिनी न सम्भवती दानींमहाव्रतानि साधूनां प्रमादबहुलत्वा दतिचारप्रचुरत्वा दतिचारशोधकाचार्यतत्कारकसाधुशुद्धीना मभावादिति ज्ञानदर्शनाभ्या तीर्थं प्रवर्त्ततइति ज्ञानदर्शनकर्त्तव्येष्वेव यत्नोवि धेयइति भणितच सांहीयनत्थिनशिदि तकरेंतानवियकेइदोसत्ति तित्थचणाणदंसण निज्जवगाचेववोच्छिन्नत्ति ॥ १ ॥ इत्यादि श्रमयाहि प्रतिपन्नचारित्रस्या

गधं । एयाणिचेव उप्पन्ननाणे जाव जाणइ पासइ तंजहा धम्मत्थिकायं जाव गधं समणेभगवंमहावीरे वइ रोसभनारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिए सत्तरयणीउ उड्ढउच्चत्तेणहोत्था । सत्तविकहाउ पण्णत्ताउ तंजहा इत्थिकहा भत्तकहा देसकहा रायकहा मिउकालणिया दंसणभेयणी चरित्तभेयणी । आयरियउवज्झायस्सणं

हने यावत् ते जाणे देखे ते कहेछे धर्मास्तिकाय यावत् गंध ॥ श्रमण भगवंत महावीरस्वामी वज्रऋषभनाराच संघयणी समचतुरस्र संस्थान स हित सात हाथ ऊंचा ऊंचपणे थया ॥ सात विकथा कही ते कहेछे स्त्री कथा १ ॥ भक्तकथा २ ॥ देशकथा ३ ॥ राजकथा ४ ॥ मृदु कारुणी स्त्री पु त्रादि वियोगे हा पुत्र हा वत्स ५ ॥ समकितनी भेदनहारी ६ ॥ चारित्रना भेदनी करणहारी ७ ॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे सात अति

पितद्देमुख्य मपजायते किंपुन स्तदभिमुखस्येति चारित्रभेदिनीति विकथासुच वर्त्तमाना न्साधू नाचार्या निषेधयंति सातिशयत्वा त्तेषामिति तदतिशय प्रतिपादनायाह ॥ आयरिएत्यादि ॥ पंचस्थानके व्याख्यातप्रायं तथापि किञ्चिदुच्यते आचार्योपाध्यायस्य निश्रया निश्रा तद्भूतकारितार्थत्वेनपादधूल्याः प्रसरत्व्या निगद्दं कारयित्वा प्रस्फोटयन् पादप्रोंछनेन वैयावृत्त्या करादिना प्रस्फोटनं कारयन् प्रमार्जयन् प्रमार्जन कारय न्नाज्ञामतिक्रामतीति शेषसाधव उपाश्रया दहि रिदं कुर्व्वंतो त्याचार्यादे रतिशय एवमित्यादिने दंसूचितं आयरियउवज्झाए अंतोउवस्सयस्स पासवणं विगिंचेमाणेवा विसोहेमाणेवा णाइक्कमइ २। आयरियउवज्झाए पभू इच्छावेयावडियं करेज्जा इच्छा नोकरेज्जा ३ आयरियउवज्झाए अंतोउवस्सयस्स एगरायवा दुरायवा सवसमाणेनाइ क्कमइ ४। आयरियउवज्झाए बाहिंउवस्सयस्स एगरायंवा दुरायंवा सवसमाणे नाइक्कमइ ५। एत द्व्याख्यातमेवेति इद मधिकं उपकरणातिशेषः शेषसाधुभ्यः सकाशात् प्रधानोज्वलवस्त्रादुपकरणतः उक्तंच आयरियगिलाणाण मइला २ पुणोविधोयंति माहुगुरूणअवण्णो लोगंमिअजीरणंइयरेत्ति ॥१॥ ग्लानेद्रत्यर्थः भक्तपानातिशेषः पूज्यतरभक्तपानतेति उक्तंच कलमोयणाउपयसा परिहाणीजायकोइयज्झाज्जो तत्थउमिउप्पतर जत्थयजंपभ्यियंदोस ॥ १ ॥ कोइवइज्जा

गणंसि सत्त श्रइसेसा पण्णत्ता तंजहा आयरियउवज्झाए अंतोउवस्सगस्स पाए निगज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणेवा नाइक्कमइ एवंजहा पंचठाणे जाव वाहिउवस्सगस्स एगरायंवा दुरायवा वसमाणे नाइ

शेष कह्या तेकहेछे आचार्य उपाध्यायना गच्छमा उपासरा माहि गुरुना पग ग्रहीने ग्रहीने पखोडे पुंजे ते आज्ञा अतिक्रमे नही एम जिम पांच मे ठाणे यावत् बाहिर उपासराथी एकरात्रि अथवा बेरात्रि बसतो अतिक्रमे नथी ॥ गुरुना उपकरण धोतो अतिशेष घणो साचवतो जात पाणी

जित्ति कोद्दवजाउलयदोसुत्ति ॥ क्षेत्रकालयोरिति गुणाश्चैते सुत्तत्थथिरीकरणं विणओ गुरुपूयसेयबहुमाणो दाणवइसद्धबुद्धी बुद्धीबलवद्धणंचेवत्ति ॥ १ ॥ एतेचा चार्यातिशयाः संयमोपकारायैव विधीयंते न रागादिनेति संयम तद्विपक्षभूत मसंयमंचा संयमभेदभूतारभादिंश्च सविपक्षं प्रतिपादयन् सूत्रा ष्टक सातिदेशमाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ सुगम नवरं संयमः पृथिव्यादिविषयेभ्य. संघट्टपरितापोपद्रवणेभ्य उपरमः ॥ अजीवकायसंयमेत्ति ॥ अजीवकाया ना पुस्तकादीना ग्रहणपरिभोगोपरमो संयमस्तु अनुपरमआरंभादयो ऽसंयमभेदा स्तल्लक्षणमिदं प्रागभिहित आरंभोउद्दवओ परितावकरोभवेस मारंभो सरंभोसकप्पो सुद्धनयाणंतुसव्वेसिंति ॥ १ ॥ नत्वारम्भादयो ऽपद्रावनपरितापादिरूपा उक्ता स्तेचा जीवकायाना मचेतनतया न युक्ता स्तदयो

क्कमइ उवगरणाइसेसे भत्तपाणाइसेसे । सत्तविहे संयमे पण्णत्ते तंजहा पुढविकाइयसंयमे जाव तसकाइय संयमे अजीवकायसंयमे । सत्तविहे असंयमे पण्णत्ते तंजहा पुढविकाइयअसंयमे जाव तसकाइयअसंयमे अजीवकायअसंयमे । सत्तविहे आरंभे पण्णत्ते तंजहा पुढविकाइयआरंभे जाव अजीवकायआरंभे । एवमणा रंभेवि । एवसारंभेवि । एवमसारंभेवि । एवसमारंभेवि । एवअसमारंभेवि । जाव अजीवकायअसमारंभेवि

अतिशेष घणा आणी देतो ॥ सात प्रकारे संयम कह्यो ते कहेछे पृथ्वीकायनो संयम यावत् त्रसकायनो संयम अजीव कायनो संयम ॥ सात प्र कारे असंयम कह्यो तेकहेछे पृथ्वीकायनो असंयम यावत् त्रसकायनो असंयम अजीवकायनो असंयम ॥ सात प्रकारे आरंभ कह्यो ते कहेछे पृथ्वी कायनो आरंभ यावत् अजीवकायनो आरंभ ॥ इम अणारंभ । एम समारंभ । एम असमारंभ । यावत् अजीवकाय असमारंभ ॥ अथ भगवंत अत

गा दजीवकायानारम्भादयो यौ त्यत्रोच्यते अजीवेषु पुस्तकादिषु ये समाश्रिताः जीवा स्तदपेक्षया अजीवकायप्राधान्या दजीवकायारम्भादयो न विरु द्धास्तदिति अनन्तरं संयमादय उक्ता स्तेच जीवविषयाइति जीवविशेषान् स्थितितः प्रतिपादयन् सूत्रचतुष्टयमाह ॥ अहेत्यादि ॥ सूत्रसिद्ध नवरं अथेति प रिप्रश्नार्थ' भदन्तेति गुर्वामन्त्रणं ॥ अयसीति ॥ अतसीकुसुभोलट्टारालकः कगूविशेषः सनस्त्वकप्रधानो धान्यविशेषः सर्षपः: सिद्धार्थका मूलक शाकविशेष स्तस्य वीजानि ककारलोपसंधिभ्यां ॥ मूलावीयस्ति ॥ प्रतिपादितमिति शेषाणां पर्याया लोकरूढितो ज्ञेयाइति यावद्ग्रहणात् ॥ सचाउत्ताण मास्त्राउ त्ताण उल्लित्ताण लठियाणं मुद्दियाणति ॥ द्रष्टव्य व्याख्या ऽस्य प्रागिवेति पुन र्यावत्कारणात् पविड सइभिइ सइसेवीए अबीए भवइ तेण परंति दृश्य ॥ वा दरआउकाइयाणति ॥ सूक्ष्माणां त्वतर्मुहूर्त्तमेवेति एवमुत्तरत्रापि विशेषणफल यथासभव स्वधिया योजनीयं अनन्तरं नारका उक्ताः इति स्थितिशरीरादि

अहन्नंते अयसिकुसुभकोद्दवकगुरालगवराकोद्दसग्गासणसरिसवमूलगवीयाणं एएसिणं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं जाव पिहियाणं केवइयकालं जोणी संचिट्ठइ जहन्नेण मंतोमुहुत्तं मुक्कोसेणं सत्तसंवच्छराइं तेणपरं जोणी पमिलायइ जाव जोणीवुच्छेए पन्नत्ते । वायरआउकाइयाण सत्तवाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता तच्चाएण वालु

सी धान कुसुभ कोद्रव कांग राल सण सरिसव मूलक शाकविशेष तेहना वीज एह धान्यने कोठारमा उतास्या पालामांघात्या यावत् ढांक्या के तला काल लगे योनि रहे जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट सात वरस तिवारपछी योनि म्लान थाय यावत् योनि विच्छेद थाय ॥ वादर अप्कायने उत्कृ ष्टी सातहजार वरसनी स्थिति कही ॥ त्रीजी वालुकप्रभा पृथ्वीने विषे उत्कृष्टी नारकीनो सात सागरोपमनो आऊखो कह्यो ॥ चौथी पंकप्रभा

भि स्तत्साधर्म्यां देवानां वक्तव्यता मभिधित्सुः सूत्रपंचकमाह ॥ सक्कस्सेत्यादि ॥ सुगमश्चायं नवरं ॥ वरुणस्समहारस्रोत्ति ॥ लोकपालस्य पश्चिमदिग्वर्त्तिनः सोमस्य पूर्वदिग्लोकपालस्य यमस्य दक्षिणदिग्लोकपालस्य अनन्तरदेवाना मधिकार उक्तो देवावासाश्च द्वीपसमुद्राइति तदर्थ ॥ नंदीसरेत्यादि ॥ सूत्र द्वयं

यप्पन्नाएपुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । चउत्थीएणं पंकप्पन्नाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाण सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । सक्कस्सण देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो सत्तग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ । ईसाणस्सण देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नोसत्तग्गमहिसीउ प० । ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो सत्तग्गमहिषीउ पन्नत्ताउ । ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो अभितरपरिसाए देवाण सत्त पलिउवमाइं ठिई प० सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो अग्गमहिसीणं देवीण सत्तपलिउवमाइ ठिई प० । सोहम्मेकप्पे परिग्गहियाणं देवीणं उक्कोसेण सत्तपलिउवमाइ ठिई पन्नत्ता । सारस्सयमाइच्चाण सत्त

पृथ्वीने विषे जघन्य नारकीनुं सात सागरोपमनुं आउखो कह्यो ॥ शक्रदेवेंद्र देवतानो राजा वरुण महाराजाने सात अग्रमहिषी कही ॥ ईशानेंद्र देवतानो राजा तेहना सोम महाराजाने सात अग्रमहिषी कही ॥ ईशानेद्र देवेंद्र देवताना राजा यम महाराजाने सात अग्रमहिषी कही ॥ ईशानेद्र देवेंद्र देवताना राजानी अभ्यंतर पर्षदाना देवताने सात पल्योपमनी स्थिति कही ॥ शक्र देवेंद्र देवतानो राजानी अग्रमहिषी देवीनी सात पल्योपमनी स्थिति कही ॥ सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीनी उत्कृष्टी सात पल्योपमनी स्थिति कही ॥ सारस्वत आदित्य देवने सात दे

देवा देवसया पन्नत्ता । गद्दतोयतुसियाणंदेवाणं सत्तदेवा सत्तदेवसहस्सा पन्नत्ता । सणंकुमारेकप्पे उक्को
सेण देवाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । माहिंदेकप्पे उक्कोसेणं देवाणं साइरेगाइं सत्तसागरोवमाइं ठिई प०
बंभलोएकप्पे जहन्नेणं देवाण सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । बंभलोयलंतएसुणकप्पेसु विमाणा सत्तजोयण
सयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० । भवणवासीणदेवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं सत्तरयणीउ उड्ढउच्चत्तेण ।
एवंवाणमंतराणं । एवजोइसियाणं । सोहम्मीसाणेसुणंकप्पेसु देवाण भवधारणिज्जगा सरीरा सत्तरयणीउ
उड्ढंउच्चत्तेण पन्नत्ता । नदीसरवरदीवस्सणं दीवस्स अतोसत्तदीवा पन्नत्ता तंजहा जंबुद्दीवे धायइखंडे पुक्क

वता सातसे देवता कह्या ॥ गर्द्दतोय तुषित देवताने सातदेवता सातहजार देवतानु परिवार कह्यो ॥ सनत्कुमार देवलोके उत्कृष्टो देवतानुं सात सागरोपमनुं आऊखो कह्यो ॥ माहेंद्र चोथे देवलोके उत्कृष्टी झाझेरो सात सागरोपमनी स्थिति कही ॥ ब्रह्म पांचमे देवलोके जघन्य देवतानी सात सागरोपमनी स्थिति कही ॥ ब्रह्म लातक देवलोके विमान सातसे योजन उचा उंचपणे कह्या ॥ भवनपती देवतानो भवधारणीय शरीरउ त्कृष्टो सातहात ऊचा ऊंचपणे कह्या ॥ तेमजवाणव्यंतरना । ज्योतिषीना ॥ सौधर्मईशानदेवलोके भवधारणीयशरीर सातहात उचो उचपणे कह्यो ॥ नंदीश्वर वर नामा द्वीपने माहि सात द्वीप कह्या ते कहेछे जंबूद्वीप १ । धातकीखंड २ । पुष्करवर द्वीप ३ । वरुणवर द्वीप ४ । क्षीरवरद्वीप ५ । घृतवरद्वीप ६ । क्षोदवरद्वीप ७ ॥ नंदीश्वर द्वीपमाहि उरा सात समुद्र कहिया ते कहेछे लवणसमुद्र १ । कालोदधि २ । पुष्करोदधि ३ । वरुणो

कपल्यं एतेच प्रदेशश्रेणिसमूहात्मकचेत्राधारा: श्रेण्याच स्थिताइति श्रेणिप्ररूपणायाह ॥ सत्तसेढीत्यादि ॥ श्रेणय: प्रदेशपंक्तय: ऋज्वी सरला सा चासा वाय ताच दीर्घा ऋज्वायता स्थापना ॥—॥ एगश्रो वंका ॥ एकस्या दिशि वक्रा स्थापना ॥ ॥ दुहश्रोवंका ॥ उभयतोवक्रा स्थापना ॥—॥ एगश्रोखहा एकस्यां दिश्यकुशाकारा ॥ दुहश्रोखहा ॥ उभयतों कुशाकारा ॥ ८ ॥ चक्रवाला वलयाकृति ॥ ० ॥ अर्द्धचक्रवाला अर्द्धवलयाकारेति एताश्चे कतो वक्राद्या लोकपर्यन्त प्रदेशापेचा: सभाव्यन्ते चक्रवालार्द्धचक्रवालादिना गतिविशेषेणभ्रमणयुक्तानि दर्पितत्वात् देवसैन्यानि भवतीति तत्प्रतिपादनाय ॥ चमरेत्यादि ॥ प्रकरण सुगम त्नवरपीठानीक मश्वसैन्य न्नाट्यानीकनत्तकसमूहो गन्धर्वानीकं गायनसमूह. ॥ एवजहापचठाणर्एत्त॥ अतिदेशात् सोमे आसरायां पीठाणियाहि

रवरे वारुणिवरे खीरवरे घयवरे रवोयवरे। नंदीसरवरस्सणदीवस्स श्रुतो सत्तसमुद्दा पन्नत्ता तंजहा लवणे कालोए पुरकरोदे वरुणोदे खीरोदे घतदे खोए। सत्तसेढीन प० तं० उज्जुश्रायया एगतवंका दुहतवंका एगतखहा दुहतखहा चक्कवाला श्रद्धचक्कवाला। चमरस्सणं श्रसुरिंदस्स श्रसुरकुमाररन्नो सत्त श्रणिया सत्त श्रणियाहिवई पन्नत्ता तजहा पायत्ताणिए पीढाणिए कुंजराणिए महिसाणिए रहाणिए नट्टाणिए गंध

दधि ४। क्षीरोदधि ५। घृतोदधि ६। इक्षोदधि ७॥ सात श्रेणि कही ते कहेछे आकाशनी श्रेणि ऋजु सरलालाबी श्रेणि १। एक पासे वांकी श्रेणि २। बेपासें वाकी श्रेणि ३। एकपासे अकुशने आकारें ४। बेपासेअंकुशनेआकारे ५। चक्रवाल ते वलयनेआकारे ६। अर्द्ध वलयाकार श्रेणि ७॥ चमर असुरेंद्र असुरकुमारना राजाने सात अनीक कटक सात अनीकना स्वामी कह्या ते कहेछे पदात्यनीक १। पीठानीक २। कुंजरानीक ३।

१० ॥ वई २ वेकुंठूहत्थिरोया कुंजराणियाहिवई २ लोहियक्खे महिसाणियाहिवई ४ इतिद्रष्टव्यं एव मुत्तरसूत्रेष्वपि तथा धरणस्येव सकलदाक्षिणात्यानां भव

४॥ ह्याणिए । दुमेपायत्ताणियाहिवई एवं जहा पंचठाणे जाव किन्नरे रहाणियाहिवई रिठे नट्टाणियाहिवई गीयरई गंधव्वाणियाहिवई । वलिस्सण वइरोयणिदस्स वइरोयणरन्नो सत्त ऋणिया सत्त ऋणियाहिवई पन्नत्ता तजहा पायत्ताणिय जाव गधव्वाणिय । महदुमे पायत्ताणियाहिवई जाव किंपुरिसे रहाणियाहि वई महारिठे णट्टाणियाहिवई गीयजसे गधव्वाणियाहिवई । धरणस्सण नागकुमारिदस्स नागकुमाररन्नो सत्त ऋणिया सत्त ऋणियाहिवई पन्नत्ता तजहा पायत्ताणिए जाव गधव्वाणिए । रुद्दसेणे पायत्ताणियाहि वई जाव ऋाणदे रहाणियाहिवई गहणे नट्टाणियाहिवई तेतले गधव्वाणियाहिवई । भूयाणदस्स सत्त ऋ

महिषानीक ४ । रथानीक ५ । नाटकनो अनीक ६ । गंधर्वानीक ७ ॥ द्रुम पदात्यनीकाधिपती १ । एम जिम पाचमा ठाणामा कह्यो तिम यावत् किन्नर रथानीकनो स्वामी ॥ रिष्ट नाट्यानीकनो स्वामी ॥ गीतरति गधर्वानीकनो स्वामी ॥ वलि वैरोचनेंद्र ने सात अनीक कहिया ते कहेछे पादात्यनीक यावत् गधर्वानीक ७ ॥ महाद्रुम पदात्यनीकनो स्वामी यावत् किंपुरिस रथानीकनो स्वामी ॥ महारिष्ट नाट्यानीकनो स्वामी ॥ गी तयश गधर्वानीकनो स्वामी ७ ॥ धरण नागकुमारनो इंद्र तेहने सात अनीक सात अनीकना स्वामी कह्या ते कहेछे पदात्यनीक यावत् गधर्वानीक ॥ रुद्र पदात्यनीकनो स्वामी यावत् आनद रथानीकनो स्वामी ॥ नंद नाट्यानीकनो स्वामी ६ ॥ तेतलि गधर्वानीकनो स्वामीछे ७ ॥ भूतानंदने सात

णिया सत्त ऋणियाहिवई पन्नत्ता तंजहा पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए । दक्खे पायत्ताणियाहिवई जाव णदुत्तरे रहाणियाहिवई रई नट्टाणियाहिवई माणसे गंधव्वाणियाहिवई । एवं जाव घोस महाघोसाणं नेयव्वं सक्कस्सण देविंदस्स देवरन्नो सत्त ऋणिया सत्त ऋणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए । हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई जाव माढरे रहाणियाहिवई सेए नट्टाणियाहिवई तुंबरु गंधव्वाणियाहिवई ईसाणस्सण देविंदस्स देवरन्नो सत्त अणिया सत्त ऋणियाहिवई पन्नत्ता तंजहा पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए । लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई जाव महासेए नट्टाणियाहिवई णारए गंधव्वाणियाहिवई । सेसंजहा

अनीक सात अनीकना राजा कह्या तेकहेछे पदात्यनीक यावत् गंधर्वानीक ॥ दत्त पदात्यनीकनो स्वामी १ । यावत् दुस्तर रथानीकनो स्वामी ५ । रती नाट्यानीकनो स्वामी ६ । मानस गंधर्वानीकनो स्वामी ७ ॥ एम यावत् घोष महाघोषने जाणवो ॥ शक्र देवेंद्र देवताना राजाने सात अनीक सात अनीकना स्वामी कहिया तेकहेछे पदात्यनीक यावत् गंधर्वानीक ७ ॥ हरिणेगमेषी पदात्यनीकनो स्वामी १ । यावत् माढर रथानीकनो स्वामी ५ । स्वेत नाट्यानीकनो स्वामी ६ । तुबरू गंधर्वानीकनो स्वामी ७ ॥ ईशानेंद्र देवेंद्र देवताना राजाने सात अनीक सात अनीकना अधिपती कह्या तेकहेछे पदात्यनीक १ । यावत् गंधर्वानीक गायन समूह ७ ॥ लघुपराक्रम पदात्यनीकाधिपती १। यावत् महासेन नाट्यानीक स्वामी ६ । रत गंधर्वानीकनो स्वामी ७ ॥ शेष जिम पांचमें ठाणे कह्यो तिमज एम जिम अच्युतेंद्रने ॥ चमर असुरेंद्र असुर राजाने द्रुम पदात्यनीकाधिपती

नपतींद्राणां सेनासेनाधिपतयः औदीच्यानान्तु भूतानन्दस्येवेति ॥ कच्छत्ति ॥ समूहो यथा धरणस्य तथा सर्वेषां भवनपतीन्द्राणां महाघोषान्तानां केव

पचठाणे एवं जाव अच्चुअस्सेति नेयव्वं । चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो दुमस्स पायत्ताणियाहि वइस्स सत्त कच्छाउ पन्नत्ताउ तजहा पढमाकच्छा जाव सत्तमाकच्छा । चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकु माररन्नो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स पढमाए कच्छाए चउसठ्ठिदेवसहस्सा पन्नत्ता । जावइया पढमाकच्छा तव्विगुणा दुच्चा कच्छा तव्विगुणा तच्चाकच्छा एव जाव जावइया छठाकच्छा तव्विगुणा सत्तमाकच्छा। एवं वलिस्सवि नवर महद्दुमे सठ्ठिदेवसाहस्सिउ सेसं तचेव। धरणस्सएवंचेव नवर मठावीसं देवसहस्सा सेस तचेव। जहाधरणस्स एवं जाव महाघोसस्स नवरं पायत्ताणियाहिवई अन्नेते पुव्वभणिया। सक्कस्सणदेवि

तेहने सात कच्छ कटकना जुदाजुदा समुदाय टोला तेकहेले प्रथम कच्छ १ । यावत्सातमी कच्छ ॥ चमर असुरेंद्र असुरकुमारना राजाने दुम नामा पदात्यनीकनो स्वामी तेहने पहिली कच्छने विषे चौसठहजार देवता कह्या जेवडी पहली कच्छछे तेहथी द्विगुणा बीजी कच्छछे । जेवडी वीजी क च्छछे तेहथी त्रिगुणी त्रीजीकच्छ । इम जेवडी छठी कच्छछे तेहथी वेगुणी सातमी कच्छछे ॥ एम वलिने पिण विशेष महाद्रुमने साठहजार देवता शेष तिमज धरणने इमज एतलो विशेष अठावीस हजार देवता शेष तिमज । जिम धरणने तिम यावत् घोस महाघोसने एतलो विशेष पदा त्यनीक स्वामी अन्यते पूर्वं कह्यो तिमज ॥ शक्र देवेंद्र देवताना राजाने हरिणेगमेसी पदात्यनीक तेहने सात कच्छछे ते कहेले प्रथम कच्छ यावत्

लं पादातानीकाधिपतयो ये ज्ञेया स्तेच पूर्व मनंतरसूत्रे भणिता ॥ नाणत्तंति ॥ शक्रादीना मानतप्राणतेंद्रांताना मेकांतरितानां हरिणेगमेषी पादाता नीकाधिपति रीशानादीना मारणा च्युतेन्द्रान्ताना मेकांतरितानां लघुपराक्रमइति ॥ देवेत्यादि ॥ देवा: प्रथमकच्छासबंधिनो ऽनया गाथया ऽवगत व्या' ॥ चउरासीगाहा ॥ चतुरसीत्यादीनि पदानि सौधर्मादिषु क्रमेण योजनीयानि नवरं विंशतिपद मानतप्राणतयो र्योजनीयं तयोर्हि प्राणताभिधा नस्यें द्रस्यैकत्वात् ॥ दसेति ॥ पद त्वारणाच्युतयो र्योजनीय अच्युताभिधानस्यें द्रस्यै कत्वादिति सकलमिद मनन्तरोदित वचनप्रतिपाद्य मिति वचनभेदा

दस्स देवरस्सो हरिणेगमेसिस्स सत्तकच्छाउ पन्नत्ताउ तंजहा पढमाकच्छा एवं जहा चमरस्स तहा जाव अच्चु यस्स नाणत्त पायत्ताणियाहिवईण तेपुव्वभणिया। देवपरिमाण मिमं सक्कस्स चउरासीइदेवसहस्सा। ईसाणस्स असीइदेवसहस्साइ देवा इमाए गाहाए अणुगतव्वा । चउरासीइअसीई बावत्तरिसत्तरीयसठीय पन्नाचत्ता लीसा तीसावीसादससहस्सा॥ १ ॥ जाव अच्चुयस्स लहुपरक्कमस्स दस देवसहस्सा जावइया छठाकच्छा

सातमी कच्छ ॥ एम यावत् चमरने तिम यावत् अच्युतने ॥ विशेष पदात्यनीकनो स्वामी तेहने पूर्वे कह्यो तिम । देवतानो प्रमाण शक्रने चौरा सी हजार देवता । ईशानेंद्रने अस्सी हजार देवता । एम सर्वने एह गाथाथी कहवो शक्रेद्रने चौरासी हजार । ईशानेद्रने अस्सीहजार । सनत्कु मारने बहत्तरहजार । माहेद्रने सत्तरहजार । ब्रह्मेंद्रने साठहजार । लातकेद्रने पचासहजार । शुक्रेद्रने चालीसहजार । सहस्रारेद्रने तीसहजार देव ता । आनतप्राणत बे लोकनो एक इंद्र तेहने वीसहजार देवता । आरण अच्युतनो एक इंद्र तेहने दसहजार देवता ॥ १ ॥ यावत् अच्युतेंद्र लगे

नाम ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ सप्तविधो वचनस्यभाषणस्य विकल्पो भेदो वचनविकल्पः प्रज्ञप्त स्तद्यथा आङ्ईषदर्थेला दीषल्लपन मालापो नञः कुत्सार्थेला दशीलेत्यादिवत् कुत्सितआलापो ऽनालापइति उल्लापः काक्कावर्णेन मुल्लापइतिवचनात् सएव कुत्सितो ऽनुल्लापः क्वचित् पुनरनुल्लापइति पाठ स्तत्रा नु लापः पौन पुन्यभाषण अनुलापामुहुर्भाषितिवचनात् संलापः परस्परभाषण सलापोभाषणमिथइतिवचनात् प्रलावो निरर्थकवचन प्रलापोऽनर्थकवचइति वचनात् सएव विविधो विप्रलापइति एतेषाच वचनविकल्पाना मध्ये केचि द्विकल्पा विनयार्था अपिस्यु रिति विनयभेदप्रतिपादनाय आह ॥ सत्तविहे त्यादि ॥ सप्तविधो विनीयते अष्टप्रकारकर्मानेनेति विनयः प्रज्ञप्त स्तद्यथा ज्ञान आभिनिबोधिकादिपचधा तदेवविनयो ज्ञानविनयो ज्ञानस्यवा विनयो भक्त्यादि करणं ज्ञानविनय' उक्तंच भत्ती १ तहबहुमाणो २ तद्दिठ्ठत्थाणसम्मभावणया ३ विहिगहण ४ भासोविय ५ एसोविणओजिणाभिहिओ

तब्बिगुणा सत्तमाकच्छा । सत्तविहे वयणविकप्पे पन्नत्ते तंजहा आलावे अणालावे उल्लावे अणुल्लावे संलावे पलावे विप्पलावे । सत्तविहे विणए प० त० नाणविणए दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वइविणए

कह्यो ॥ लघुपराक्रमने दशहजार देवता ॥ यावत् जेतली छठी कच्छा तेहथी बेगुणी सातमी कच्छा ॥ सात प्रकारे वचननो विकल्प कह्यो तेकहेछे थोडो बोलवो ते आलाप १ । कुत्सित बोलवो ते अनालाप २ । काकुवचन ते उल्लाप ३ । तेज माठो उल्लाप ते अनुल्लाप ४ । माहोमाहि बोलवो ते सलाप ५ । प्रलाप जे निरर्थक वचन ६ । विरुद्ध बोलवो ते विप्रलाप ७ ॥ सात प्रकारे विनय कह्यो तेकहेछे ज्ञाननो विनय १ । दर्शन नो विनय २ । चारित्रनो विनय ३ । मनविनय भलोमन ४ । वचननो विनय भलोवचन ५ । कायविनय ६ । लोकोपचार विनय ते राजा ब्राह्मणा

॥ १ ॥ दर्शनं सम्यक्तं तदेव विनयो दर्शनविनयो दर्शनस्यवा तदव्यतिरेकात् ददर्शनं गुणाधिकानां शुश्रूषणा अनाशातनारूपो विनयो दर्शनविनय उक्तंच सुस्सूसणाअणासा यणायविणओउदंसणेदुविहो दंसणगुणाहिएसु कज्जइसुस्सूसणाविणओ ॥ १ ॥ सक्कार १ भुट्ठाणे २ समाणा ३ सणअभिग्गहोतहय ४ आसणमणुप्पयाणं ५ कीकम्म ६ अंजलिगहोय ७ ॥ २ इतस्सणुगच्छणया ८ ठियस्सतहपज्जुवासणाभणिया ९ गच्छताणुव्वयण १० एसोसूस्सूसणाविणओ ॥ ३ ॥ इहच सत्कारः स्तवनवंदनादि. अभ्युत्थानं विनयार्हस्य दर्शना देवा सनत्यजनं सन्मानो वस्त्रपात्रादिपूजन आसनाभिग्रहः पुनस्तिष्ठत आदरेण आसनानयनपूर्वक मुपविशता त्वेति भणन आसनानुप्रदानतु आसनस्य स्थानात् स्थानान्तरसचारण कृतिकर्म द्वादशावर्त्तवंदनक शेष प्रकटमिति उचितक्रियाकरणरूपो य दर्शने शुश्रूषाविनयो ऽनाशातनाविनय स्त्वनुचितक्रियाविनिवृत्तिरूपो यं पचदशविधः आहच तित्थगर १ धम्म २ आयरिय ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ सघे ८ संभोगिय ९ किरियाए १० मइनाणाईणयतहेव १५ ॥ १ ॥ संभोगिका एकसमाचारीका. क्रिया आस्तिकता अत्रभावना तीर्थंकराणा मनाशातनाया तीर्थंकरप्रज्ञप्तधर्मस्या नाशातनाया वर्त्तितव्य मित्येव सवत्र द्रष्टव्यमिति कायव्वापुणभत्ती बहुमाणो तहयवण्णवाओय अरहंतमाइयाण केवलनाणावसाणाण ॥ १ ॥ उक्तो दर्शनविनयः साम्प्रतं चारित्रविनय उच्यते तत्र चारित्रमेव विनय श्चारित्रस्यवा श्रद्धानादिरूपो विनय श्चारित्रविनयः आहच सामाइयादिचरण स्ससद्दहणयातहेवकायेण सफासण १ परूवण महपरओभव्वसत्ताणति ॥ १ ॥ मनोवाकायविनयस्तु मनः प्रभृतीनां विनयार्हेषु कुशलप्रवृत्यादि रुक्तंच मणवइकाइयविणओ आयरियाईणसव्वकालंपि अकुसलाणनिरोहो कुसलाणमुदीरणं तहय ॥ १ ॥ लोकाना मुपचारो व्यवहार स्तेन सएववा विनयो लोकोपचारविनयो मनोवाकायविनयान् प्रशस्ताप्रशस्तभेदान् प्रत्येक सप्तप्रकारान् लोकोपचारविनयच सप्तधैवाह ॥ पसत्थमणेत्यादि ॥ सूत्रसप्तकं सुगम नवरं प्रशस्तः शुभो मनसो विनयन विनयः प्रवर्त्तनमित्यर्थः प्रशस्तमनोविनय स्तत्र

अपापकः शुभचिन्तारूप असावद्य चौर्यादिगर्हितकर्मानालबनो ऽक्रिय. कायिक्याधिकरणिक्यादिक्रियावर्जितो निरुपक्लेश. शोकादिबाधावर्जितस्तु प्रथ वणद्रतिवचनात् आश्रव: कर्मोपादान तत्कारणशील आश्रवकर स्तन्निषेधा दनाश्रवकार: प्राणातिपाताद्याश्रववर्जितइत्यर्थः अक्षपिकर. प्राणिनां नक्षपे व्यथाविशेषस्य कारक: अभूताभिशंकती न भूता न्यभिशजते विभ्यति यस्मा त्त तथा अभयंकरइत्यर्थ एतेषाच प्राय: सदृशार्थत्वेपि शब्दनयाभिप्रायेण

कायविणए लोगोवयारविणए । पसत्थमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते तंजहा अपावए असावज्जे अकिरिए निरुवक्केसे अणण्हकरे अच्छविकरे अभूयाभिसंकमणे । अपसत्थमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते तंजहा पावए सावज्जे सकिरिए सउवक्केसे अण्हकरे च्छविकरे भूयाभिसकमणे । पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते त० अपावए असावज्जे जाव अभूयाभिसंकमणे । अपसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते तंजहा पावए जाव भू

दिकनेनमस्कार करवो ७ ॥ प्रशस्त मननो विनय सात प्रकारे पापरहित मननी चिंतना १ । सावद्य न चिंतवे घात चोरी प्रमुख निंदितकर्म न चिंतवे २ । क्रियारहित ३ । शोकादि क्लेश रहित ४ । प्राणाति पातादि आश्रवरहित ५ । कोई जीवने पीडा नथी चितवे ६ । कोई भूत प्राणीने शंका नथी उपजावे ७ ॥ अप्रशस्त मननो विननो विनय सात प्रकारे कह्यो तेकहेछे अशुभ चितना १ । सावद्य चोरी प्रमुखनी चितवना २ । क्रियाकायिकी प्रमुख ३ । शोकादिवत ४ । आश्रवसहित ५ । प्राणीने पीडाकरे ६ । प्राणीने भय उपजावे ७ ॥ प्रशस्त वचननो विनय सात प्रकारे ते कहेछे । शुभवचन १ । असावद्य वचन २ । एम यावत् भूत प्राणीने शंका उपजावे एहवो वचन नबोले ७ ॥ अप्रशस्त वचननो विनय सात प्रकारे

भेदो वगंतव्यो ऽन्यथावेत्येवं शेषमपि आयुत्तं गमनं आयुक्तस्यो पयुक्तस्य सलीनयोगस्य यदिति एव सर्वत्र नवरं स्थान मूर्ध्वस्थान कायोत्सर्गादि ॥ निसीयण ति ॥ निषीदन मुपवेशन ॥ तुयट्टण ॥ शयनं उल्लङ्घन उत्प्लवनं देहल्यादेः प्रलघन मर्गलादेः सर्वेषा मिन्द्रियाणा योगा व्यापाराः सर्वेवाय इन्द्रिययोगा स्ते षां योजनता करण सर्वेन्द्रिययोगयोजनता ॥ अभासवत्तियंति ॥ प्रत्यासत्तिवर्त्तित्वं श्रुतार्थिनाहि आचार्यादेः समीपे आसितव्यमित्यर्थः ॥ परच्छंदा णुवत्तियति॥ पराभिप्रायानुवर्त्तित्व ॥ कज्जहेऊत्ति ॥ कार्यहेतो रयमर्थः कार्य श्रुतप्रापणादिकहेतुक्कत्वा श्रुत प्रापितो ह मनेने तिहेतोरित्यर्थो विशेषे

याभिसंकमणे। पसत्थकायविणए सत्तविहे पन्नत्ते तंजहा आउत्तंगमणं आउत्तंठाणं आउत्तंनिसीयणं आउत्तं तुयट्टणं आउत्तंउल्लघणं आउत्तपलंघण सव्विंदियजोगजुंजणया । अपसत्थकायविणए सत्तविहे पन्नत्ते त० अणाउत्तगमणं जाव अणाउत्तंसव्विंदियजोगजुंजणया । लोगोवयारविणए सत्तविहे पन्नत्ते तंजहा अब्भा सवत्तियं परच्छंदाणुवत्तिय कज्जहेउ कयपडिकइया अत्तगवेसणया देसकालणया सव्वत्थेसुयपडिलोमया ।

तेकहेछे अशुभ यावत् भूताभिशंकी ७ ॥ प्रशस्त कायानो विनय सात प्रकारे ते कहेछे जयणाथी चालवो १ । जयणाये स्थित रहवो २ जयणाथी बेसवो ३ जयणाथी सूतवो ४ । जयणाथी उबरा प्रमुखनो उलघवो ५ जयणाथी घणुं उलंघवो ६ । जयणाथी सर्व इंद्रियना योगनो प्रयुंजवो ७ ॥ अप्रशस्तकाय विनय सात प्रकारे तेकहेछे अजयणाये चालवो यावत् अजयणाथी सर्व इंद्रियना योगनो प्रयुंजवो ७ ॥ आचार्यादिकने समीपे बेस वो १ । परने मने प्रवर्त्तवो २ । कार्यने अर्थ विनय करवो ३ । उपकारना करणहारने पाछो उपकार करवो ४ । दुखियानो उपकार करवो ५ । दे

य विनये तस्य वर्त्तितव्यं तदनुष्ठानंच कर्त्तव्यमिति तथा कृतप्रतिकृतिता कृते भक्तादिनोपचारे प्रसन्ना गुरवः प्रतिकृतिं प्रत्युपकारं सूत्रादिदानतः क रिष्यतीति भक्तादिदानमति यतितव्यमिति आर्त्तस्य दुःखार्त्तस्य गवेषण मौषधादे रित्यार्त्तगवेषण तदेवार्त्तगवेषणतेति पीडितस्यो पकारइत्यर्थः अथवा आत्मना आत्मनेवा भूत्वा गवेषण सुखदुःखतयो रन्वेषणं कार्यमिति देशकालज्ञता अवसरज्ञता सर्व्वार्थे ष्वप्रतिलोमता आनुकूल्यमिति विनया त्कर्मघातो भवति सच समुद्घाते विशिष्टतरइति समुद्घातप्ररूपणायाह ॥ सत्तसमुग्घाएत्यादि ॥ हन् हिंसागत्यो र्हननं घात. समित्येकीभावे उत्प्राबल्ये तत एकीभा वेन प्राबल्येनच घातो निर्जरा समुद्घातः कस्य केन सहै कीभावगमन मुच्यते आत्मनो वेदनाकषायाद्यनुभवपरिणामेन यदा ह्यात्मा वेदनाद्यनुभवज्ञानप रिणतोभवति तदा नान्यज्ञानपरिणतइति उत्प्राबल्येन घात. कथं यस्मा द्वेदनादिसमुद्घातपरिणतो बहू न्वेदनीयादि कर्मप्रदेशान् कालान्तरानुभवयोग्या नुदीरणाकरणेना कृष्या नुभूय निर्जरयति आत्मप्रदेशैः सह सक्लिष्टान् शातयतीत्यर्थः उक्तंच पुव्वकयकम्मसडणंतुनिर्जराइति ॥ सच वेदनादिभेदेन स प्तधा भवतीत्याह सत्त समुद्घाताः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा वेदनासमुद्घात इत्यादि तत्र वेदनासमुद्घातो ऽसद्वेद्यकर्माश्रयः कषायसमुद्घातः कषायाख्यचारित्र मोहनीयकर्माश्रयो मारणांतिकसमुद्घातो तर्मुहूर्त्तशेषायुष्ककर्म्माश्रयः वैकुर्व्विकतेजसाहारकसमुद्घाताः शरीरनामकर्माश्रयाः केवलिसमुद्घातस्तु सदसद्वेद्य शुभाशुभनामोच्चनीचै र्गोत्रकर्माश्रयइति तत्र वेदनासमुद्घातसमुद्धत आत्मा वेदनीयकर्मपुद्गलशातं करोति कषायसमुद्घातसमुद्धतः कषायपुद्गलशातं मारणां

सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तजहा वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेजस

शकालनो जाणवो ६ । सर्व अर्थने विषे अनुकूलपणु राखवो ७ ॥ सात समुद्घात कहिया ते कहेछे वेदनासमुद्घात १ । कषायसमुद्घात २ । मारणां

तिकसमुद्घातसमुद्दत आयुष्कर्मपुद्गलघातं वैकुर्विकसमुद्घातसमुद्दतस्तु जीवप्रदेशान्शरीराद्वहिर्निष्काश्य शरीरविष्कम्भवाहल्यमात्र मायामतश्च संख्येया नियोजनानि दंडं निसृजति निसृज्यच यथा स्थूला न्वैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान् शातयति यथोक्तं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता संखि ज्जाइ जोयणाइ दंडनिस्सरइ निस्सरित्ता अहावायरे पोग्गले परिसाडेइत्ति ॥ एवतैजसाहारकसमुद्घातावपि व्याख्येयौ केवलिसमुद्घातेन समुद्दतः केवली वेदनीयादिकर्मपुद्गलान् शातयतीति इहांत्यो ऽष्टसामयिकः शेषा स्त्वसंख्यातसामयिकाइति चतुर्विंशतिदंडकचिन्तायां सप्तापि समुद्घाता मनुष्याणामेव भवतीत्याह ॥ मणुस्साणसत्तेत्यादि ॥ एवचेवत्ति ॥ सामान्यसूत्रइव सप्तापि समुच्चारणीया एतच्च समुद्घातादिकं जिनाभिहितं वस्त्व न्यथा प्ररूपयन् प्रवच नबाह्यो भवति यथा निह्नवाइति तद्वक्तव्यतां सूत्रत्रयेणाह ॥ समणेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर प्रवचन मागम निन्हुवते ऽपलप त्यन्यथा प्ररूपयतीति प्रवचननिह्न वाः प्रज्ञप्ताः जिनै स्तत्र ॥ बहुरयत्ति ॥ एकेन समयेन क्रियाध्यासितरूपेण वस्तुनो ऽनुत्पत्तेः प्रभूतसमयै श्चोत्पत्ते र्वहुषु समयेषु रताः शक्ता बहुरता दीर्घ कालद्रव्यप्रसूतिप्ररूपिणइत्यर्थः तथा जीवः प्रदेशएव येषाते जीवप्रदेशा स्तएव जीवप्रादेशिका अथवा जीवप्रदेशोजीवाभ्युपगमतो विद्यते येषाते तथा

समुग्घाए आहारकसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए । मणुस्साणं सत्त समुग्घाया पन्नत्ता एवंचेव । समणस्सणं भगवउ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवयणनिण्हगा पन्नत्ता तंजहा बहुरया जीवपएसिया अव्वत्तिया सा

तिकसमुद्घात ३ । वैक्रियसमुद्घात ४ । तैजससमुद्घात ५ । अहारक समुद्घात ६ । केवलिसमुद्घात ७ ॥ मनुष्यने सात समुद्घात कह्या ते कहेले ते एम पूर्वोक्त प्रकारे जाणवा ७ ॥ श्रमण भगवत महावीरना तीर्थने विषे सात प्रवचनना निह्नव थया तेकहेले बहुर जमालीनो मत १ । जीवनो छेहलो

चरमप्रदेशजीवारूपिण इतिह्रदय २ तथा अव्यक्त मस्फुट वस्तु अभ्युपगमतो विद्यते येषाते अव्यक्तिका: संयताद्यवगमे संदिग्धबुध्य इतिभावना ३ तथा स मुच्छेद: प्रसूत्यनन्तरं सामस्त्येन प्रकर्षेणच च्छेद: समुच्छेदो विनाश: समुच्चेद ब्रुवतइति सामुच्छेदिका: चणचयिकभावप्ररूपकाइत्यर्थ. ४ तथा द्वेक्रिये समुदिते द्विक्रिय तदधीयते तद्विदिनोवा द्वैक्रिया: कालाभेदेन क्रियाद्वयानुभवप्ररूपिण इत्यर्थ: ५ तथा जीवाजीवनोजीवभेदा स्त्रयो राशय: समाहृता: त्रिराशि स्तत्प्रयोजनं येषांते त्रैराशिका: राशित्रयाख्यापकाइत्यर्थ: ६ तथा स्पृष्ट ज्जीवेन कर्म नस्कान्धबन्धवद्धमवद्ध तदेषा मस्ती त्यबद्धिका' स्पृष्टकर्म विपाकप्ररूपका इतिह्रदय ७॥ धम्मायरियत्ति ॥ धर्म उक्तप्ररूपणादिलचण: श्रुतधर्म स्तत्प्रधाना: प्रणायकत्वेना चार्या धर्माचार्या स्तन्मतोपदेष्टार इत्यर्थ स्तत्र जमाली चत्रियकुमारोहि श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य भागिनेयो ऽभवत् दुहितु: सुदर्शनाभिधानाया भर्त्ता पचपुरुषशतीपरिवारो भगवत्प्रव्रा जित आचार्यत्व प्राप्त: श्रावस्त्यां नगर्या त्तिन्दुके चैत्ये विहर न्ननुचिताहारा दुत्पनरोगो वेदनाभिभूततया शयनार्थं समादिष्टसंस्तारकसंस्तरण: क्षत: संस्तारक इतिविहितपरिप्रश्न: संस्तारककारिसाधुना सस्तियमाणत्वेपि सस्तृतइति दत्तप्रतिवचनो गत्वाच दृष्टक्रियमाणसस्तारक: कर्मोदया द्विपर्यस्त

मुच्छेइया दोकिरिया तेएसिया अबद्धिया । एएसिण सत्तएहं पवयणनिराहगाण सत्त धम्मायरिया होत्था

प्रदेशहीज जीवछे तिष्यगुप्तनो मतछे २। अव्यक्त सर्व वस्तुछे ए आसाढाचार्यनो मतछे ३ । चणक्षयीभावनो प्ररूपक ४। एक समयमा बेक्रिया वे दियेछे ५। त्रैरासिकमत जीव १ अजीव २ नोजीव ३ एवं ३ राशिमानेछे ६ । जीव कर्मस्पर्शने वेदेछे जीवने कर्मनो बधनथी एह गोष्ठामाहिलनो मतछे ७॥ ए सात प्रवचन निह्नवना सात धर्माचार्यछे ते कहेछे॥

॥ टीका ॥ मूल ॥ भा

बुद्धिः प्ररूपयामास यत् क्रियमाणं कृतमिति भगवान् दिदेश तदस प्रत्यक्षविरुद्धत्वा दश्रावणशब्दवत् प्रत्यक्षविरुद्धताचास्या ईसंस्तृतसंस्तारकासंस्तृतत्व दर्शना त्ततश्च क्रियमाणत्वेन प्रत्यक्षसिद्धेन कृतत्वधर्मो पनीयतइति भावना आहच सक्खवियसथारो नकज्जमाणोकडेत्तिमेजम्हा वेइजमालीसच्च नकज्ज माणकयंतम्हत्ति ॥ १ ॥ यश्चैव प्ररूपयन् स्थविरै रेवमुक्तो हेआचार्य क्रियमाण कृतमिति नाध्यक्षविरुद्धं यदिहि क्रियमाण क्रियाविष्टं कृत नेष्यते ततः क्रि यानारम्भसमयइव पश्चादपि क्रियाभावे कथं तदिष्यतइति सदाप्रसगा त्क्रियाऽभावस्या विशिष्टत्वात् यदप्युक्त मर्द्धसंस्तृतसंस्तारकासंस्तृतत्वदर्शना त्तदप्य युक्त यतो यद्यदा यत्राकाशदेशे वस्त्रमास्तीर्यते तत्तदा तत्रा स्तीर्णमेव एव पाश्चात्यवस्त्रास्तरणसमये खल्वसा वास्तीर्णएवेति आहच जजत्थनभोदेसे अ त्थव्वइजत्थजत्थममयमि तंतत्थतत्थमत्थुय मत्थुव्वतंपितंचेवत्ति ॥ १ ॥ तदेवं विशिष्टसमयापेक्षोणि भगवद्वचनानीति एवमपि प्रत्युक्तो यो नतत्प्रतिपन्नवान् सोय वहुरधर्माचार्य स्तथा तिष्यगुप्तो वसुनामधेयाचार्यस्य चतुर्दशपूर्वधरस्य शिष्यो योहि राजगृहे विहर न्नात्मप्रवादाभिधानपूर्वस्य एगे भते जीवप्पदेसे जोवेत्ति वत्तव्वसिया नो इणठ्ठे समठ्ठे एव दो तिन्नि संखेज्जा असंखेज्जावा जाव एक्केणवि पएसेण ऊणो नो जीवेत्ति वत्तव्वसिया जम्हा कसिणे पडिपुन्ने लोगागासप्पएसतुल्लप्पएसे जीवेत्ति वत्तव्वसिये त्येवमादिकमालापक मधीयानः कर्मोदया द्व्युत्थितः सन्निथ मभिहितवान् यदेकादयो जीवप्रदेशा. खल्वे कप्रदेशहीना अपि न जीवाख्यां लभते किंतु चरमप्रदेशयुक्ताएव लभतइति ततः सएवैकः प्रदेशो जीवइति तद्भावभावित्वा ज्जीवत्वस्येति आहच एगा

जमाली तीसगुत्ते

जमाली १ । तिष्यगुप्त २ ।

दप्पोपएसा नयजोगेनयपएसहीणोवि जंतोसजेणपुण्णो सएवजीवोपएसोत्ति ॥ १ ॥ यश्चैव मभिदधानो गुरुणो क्तो नतदेवं जीवाभावप्रसङ्गात् कथं भवदभिमतो ह्यप्रदेशो प्यजीव आद्यप्रदेशतुल्यपरिणामत्वात् प्रथमादिप्रदेशवत् प्रथमादिप्रदेशोवा जीवः शेषप्रदेशतुल्यपरिणामत्वा दंत्यप्रदेशव न्नच पूरणइति कृत्वा तस्य जीवत्वं युज्यते एकैकस्य पूरणत्वाविशेषा देकमपि विना तस्या संपूर्णत्वमिति प्राहच गुरुणाभिहितोजइते पढमपदेसोनसम ओजीवो तोतप्परिणामोविय जोवोकहमंतिमपएसो ॥ १ ॥ इत्यादि एवमुक्तोपि न प्रतिपन्नया स्ततः संघाद्बहिः कृतः पश्चा दामलकल्पाया मित्रश्रीनाम्ना श्रमणोपासकेन सवज्ञा भक्तादिग्रहणार्थं स्वगृहमानीता सतश्च विविधानि खाद्यकादिद्रव्या ण्युपनिधाय ततएकैक मवयव दत्वा पादेषु निपत्य अहोधन्यो हं मया साधव प्रतिलभिता इत्यभिदधानेन अहो भवा भवता धर्षित इतिवदन् भवत्सिद्धांतेन भवान् प्रतिलभितो मया यदि पर वर्द्धमानस्वामिसिद्धा तेन ने ति प्रतिभणता प्रतिबोधितः सोय जोवप्रादेशिकानां धर्माचार्यइति तथा आषाढो येनहि श्वेताव्या नगर्यांपोलासउद्याने स्वशिष्याणां प्रतिपन्नागा ढयोगानां रात्रौ हृदयशूलेन मरण मासाद्य देवेन भूत्वा तदनुकंपया स्वकीय मेव कलेवरमधिष्ठाय सर्वां समाचारो मनुप्रवर्त्तयता योगसमाप्तिं शीघ्रं कृ त्वा वंदित्वा तानभिहितंच क्षमणोय भदंता यत् मया यूय वदन कारिताः यस्मच शिष्या इत्र चिरमसंयतो वंदितो ऽस्माभिरिति विचिंत्या व्यक्तमत मा श्रिता स्तथाहि कोजाणइकिसाधू देवोवातोनवंदणिज्जोत्ति होज्जासजयनमण होज्जमुसवाअयममुगोत्ति ॥ १ ॥ [यच्छिष्यांश्च प्रति] थेरवयणंजइपरे

आसाढे

आसाढाचार्यं ३ ।

संदेहोकिमुरोत्तिसाहुत्ति देवेकहंनसका किंसीदेवोअदेवोत्ति ॥ २ ॥ तेणकहियंतिवमई देवोहंदेवदरिसणाश्रोय साहुत्तिअहंकहिए समाणरूवंमिकिं सका ॥ २ ॥ देवस्सवकिंवयण सच्चंतिनसाहुरूवधारिस्स नपरोप्परपिवंदह जंजाणताजिजयश्रोत्ति ॥ ३ ॥ एवंचो च्यमाना अप्यप्रतिपद्यमाना यद्विनेयाः संघा हहिष्कृता विहरतश्च राजगृहे बलभद्राभिधानराजेन कटकमर्दन मारण मादिश्य कथ मस्मान्यतीन् श्रावक त्व मारयसीति ब्रुवाणा नवय जानी मः केयूय चौरावा चारिकावेति प्रत्युत्तरदानतः प्रतिबोधिताः सोयमव्यक्तमतधर्माचार्यो नचाय तन्मतप्ररूपकत्वेन किन्तु प्रागवस्थायामिति २ तथा अ श्वमित्रो योहि महागिरिशिष्यस्य कोडिन्याभिधानस्य शिष्यो मिथिलाया नगर्यां लक्ष्मीगृहे चैत्ये अनुप्रवादाभिधाने पूर्वे नैपुणिके वस्तुनि च्छिन्नच्छेदन यवक्तव्यतायां ॥ पडुप्पन्नसमया नेरइया वोच्छिज्जिस्संति एव जाव वेमाणियत्ति एव त्रितियाइसमएस् वत्तव्वमित्येव ॥ रूप मालापक मधीयानो मिथ्या त्व मुपगतो बभाणच यदिसर्वेएव वर्त्तमानसमयसजाता व्यवच्छेस्यन्ति तदा कुतः कर्मणा वेदन मित्याहच एवंचकश्रोकम्मा णवेयणंसुकयदुक्कयाणति उप्पायाणतरश्रो सव्वस्सविणाससब्भाश्रो ॥ १ ॥ यस्यैवं प्ररूपयन् गुरुणा भणित एगनयमएणमिद सुत्तवच्चाहिमाहमिच्छत्त निरवेक्खोसेसाणवि णयाणहि ययत्रियारेहि ॥ १ ॥ नहिसव्वहाविणासो श्रद्धापज्जायमित्तनासंमि [अद्धापर्यायाः कालकृतधर्माः] सपरप्पज्जायाए तधम्मिणोवत्थुणोजुत्तो ॥ २ ॥ अह सुत्ताश्रोत्तिमई नणुसुत्तेसासयंपिनिदिट्ठ वत्थदव्वट्ठाए असासयपज्जायट्ठाए ॥ ३ ॥ तत्थविनसव्वनासो समयादिविसेसणजश्रोभिहियं इहरानसव्वनासे स

श्रासमित्ते

श्रासमित्र ४ ।

मयादिविसेसणजुत्तंति ॥ ४ ॥ इदंचा प्रतिपद्यमान उद्घाटितो यथ कांपिल्ये शल्कपालश्रावकै मार्यमाणो ऽस्माभि र्यूयं श्रावकाः श्रुता स्तत्कथं साधू न्मारयथेति वदन् युष्मत्प्रिडातेन प्रव्रजिता' श्रावकाश्च येते व्यवच्छिन्ना यूय वय चान्य इति दत्तप्रत्युत्तरः सम्यक्त्व प्रतिपन्नः सोय सामुच्छेदिकाना धर्माचा र्यइति ४ तथा गगइति योहि आर्यमहागिरिशिष्यस्य धनगुप्तस्य उल्लुकाभिधाननगरात् शरदि आचार्यवन्दनार्थं प्रस्थित उल्लुका न्नदी मुत्तरन् खलतिना शि रसा दिनकरनिकरसपातसजात मुष्ण पादाभ्याञ्च शीतलजलजनितनितान्तशैत्यं वेदय श्चितयामास सूत्रेऽभिहितं एकाक्रिये कदा वेद्यते शीताद्यो ष्णा वा अहच द्वेक्रियेवेदया म्यतो द्वेक्रिये समये नैकेन वेद्यतइति गत्वाच गुर्व्वन्तिकेवदित्वा भिदधा वभिप्राय मात्मीय माचार्याय तेनचा वाचि मेवमवोचा यतो नास्ये कदा क्रियाद्वयवेदन केवलं समयमनसो रतिसूक्ष्मतया भेदो नलक्ष्यते उत्पलपत्रशतव्यतिभेदवत् एवच प्रतिपादित' स न्न प्रतिपद्यमानो वहि. कृतो ऽन्यदा राजगृहे महातपस्तोरप्रभाभिधाने नदविशेषे मणिनागनाम्नो नागस्य चैत्यपरिषन्मध्ये स्वमत मावेदयन् मणिनागेन विसर्प्पद्दर्प्पगर्भया भारत्या भिहतो रेरेदुष्ट शैच कस्मा दस्मासु सत्स्वेव मप्रज्ञापनीय प्रज्ञापयसि यत इहैव स्थानेस्थितेन भगवता वर्द्धमानस्वामिना प्रणिन्ये यथै कदै कैव क्रिया वेद्यत इति तत स्त्वन्ततोपि लष्टतरोजातः छद्मैन वाद माते दोषा न्नाशयिष्यामीति भयमापन्न' प्रतिबुद्धः सोय द्वैक्रियाणा धर्माचार्यइति ॥ ५ ॥ तथा ॥ छलुएरित्ति ॥ द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायलक्षणषट्पदार्थप्ररूपकत्वात् गोत्रेणच कौशिकत्वात् षडुलूको योहि नामान्तरेण रोहगुप्तो यश्चा

तरञ्ज्यां पुर्यां भूतगुहाभिधानव्यंतरायतने व्यवस्थितानां श्रीगुप्ताभिधानाना माचार्याणां वन्दनार्थं गामान्तरा दागच्छन् प्रवादिप्रदापितपटहकध्वनि माकर्ण्य सदर्पंच तन्निषिध्या चार्यस्य तन्निवेद्य ततो मायूर्यादिविद्या मुपादाय राजकुलमतिगत्य बलश्रीनाम्नो नरनायकस्या ग्रतः पोट्टशालाभिधानं परिव्राजकप्रवादिन माहूय तेनच जीवाजीवलक्षणे राशिद्वये स्थापिते तत्प्रतिभाप्रतिघाताय नोजीवलक्षणं तृतीयराशिं व्यवस्थाप्य तद्विद्याना स्वविद्याभिः प्रतिघातकरणेन त न्निगृह्य गुरुसमीप मागत्य त न्निवेदितवान् यत्र गुरुणा भिहितो यथा गच्छ राजसभा मनुप्रविश्य ब्रूहि राशित्रयप्ररूपण मप सिद्धान्तरूपं वादिपरिभवाय मयाकृतमिति ततो यो भिमाना दाचार्यं प्रत्यवादीत् यथा राशित्रयमेवास्ति तथाहि जीवा. ससारस्थादय. अजीवा' घटादयो नोजीवास्तु दृष्टान्तसिद्धा' यथाहि दण्डस्यादिमध्याग्राणि भवंतीत्येव सर्वभावाना त्रैविध्यमिति यत्र राजसमक्ष माचार्येण कुत्रिकापणे जीवयाचने पृथिव्यादिजीवलाभात् अजीवयाचने अचेतनलेष्ट्वादिलाभात् नोजीवयाचने ऽचेतनलेष्ट्वादिलाभाच्च निगृहीतः सोऽय त्रैराशिकधर्माचार्यइति तथा गोष्टामाहिलइति योहि दशपुरनगरे आर्यरक्षितस्वामिनि दिवगते आचार्यश्रीदुर्वलिकापुष्पमित्रे गण परिपालयति विध्याभिधानसाधो रष्टमकर्मप्रवादाभिधान पूर्वं माचार्या दुपश्रुत्य प्रत्युच्चारयतः कर्मबन्धाधिकारे किञ्चि त्कर्म जीवप्रदेशै. स्पृष्टमात्र कालान्तरे स्थिति मप्राप्य विघटते शुष्ककुड्यपतितचूर्णमुष्टिवत् किञ्चि त्पुनः स्पृष्ट बद्धंच कालान्तरेण विघटते आर्द्रलेपकुड्ये सस्नेहचूर्णवत् किंचित्पुनः स्पृष्ट बद्ध निकाचित जीवेन सह एकत्वमापन्न कालान्तरे

छलुए गोठामाहिले ।

षडुलूक ६ ।

ण वेयत इत्येव माकर्ण्य क्षत्रान् नत्वेवं मोक्षाभावः प्रसजति कथं जीवा त्कर्म न वियुज्यते अन्योन्याविभागबद्धत्वात् स्वप्रदेशवत् इत्यंच सोश्रोभणइसदो संवक्खाणमिणंतिपावइजओसे मोक्खाभावोजीव प्पएसकम्माविभागाओ ॥ १ ॥ नहिकम्मंजीवाओ अवेइअविभागओपएसव्व तदनवगमादमोक्खो जुत्त मिणंतेणवक्खाणति ॥ १ ॥ तथा जीवः कर्मणा स्पृष्टो नतु बध्यते वियुज्यमानत्वात् कञ्चुकेनेव तद्वानिति ततो विन्ध्यसाधुना एतस्मि न्नाचार्यार्थे निवे दिते य स्तेनाभिहितो भद्र यदुक्तं त्वया जीवा त्कर्म न वियुज्यतइति तत्र प्रत्यक्षबाधिता प्रतिज्ञा युष्कर्मवियोगात्मकस्य मरणस्य प्रत्यक्षत्वात् हेतुर प्यनैका तिको ऽन्योन्याविभागसंबन्धानामपि क्षीरोदकादीना मुपायतो वियोगदर्शनात् दृष्टांतोपि न साधनधर्मानुगत. स्वप्रदेशस्य वियुक्तत्वासिद्धे स्तद्रूपेणा ना दिरूपत्वा द्भिन्नंच जीवा त्कर्मेति यच्चोक्तं ज्जीवः कर्मणा स्पृष्टो नबध्यतइत्यादि तत्र किं प्रतिप्रदेशं स्पृष्टो नभसे वोत त्वङ्मात्रे कञ्चुकेनेव यद्याद्यः पक्षस्तदा दृष्टांतदार्ष्टान्तिकयो वैषम्य कंचुकेन प्रतिप्रदेश मस्पृष्टत्वा दथद्वितीयः ततो नापान्तरालगत्यनुयायि कर्म पर्यंतवर्त्तित्वा द्बाह्याङ्गमलवदेवं सर्वोमोक्षभाक् कर्माननुगमरहितत्वान्मुक्त वदित्यादि प्रतिपद्यमानो नेत प्रतिपन्नवान् उद्घाटितशेति सोय मबद्धिकधर्मावार्यइति उत्पत्तिनगराणि सप्तानां क्रमेण सप्तैव ॥ होत्थत्ति ॥ सामान्येन वर्त्तमानत्वेपि नगराणां तद्विशेषगुणातीतत्वेना तीतनिर्देशः ॥ सावत्थीगाहा ॥ ऋषभपुर राजगृह उल्लुकानदी तत्तीरवर्त्ति नगरमुल्लुकातीर पुरीति नगरी अतरं जातितन्नाम इहच मकारो लाक्षणिकः ॥ दशपुरत्ति ॥ अनुस्वारलोपादिति एतेच निह्नवा. ससारे पर्यटंतः सातास॥

एएसिणं सत्तरह पवयणनिराहगाणं सत्त उप्पत्तिनगरे होत्था तंजहा सावत्थीउसभपुर सेयावियामिहलउल्लु

गोष्ठामाहिल ७ ॥ ए सात प्रवचननिह्नवना उपजवाना सात नगर कह्या ते कहेछे सावत्थी नगरी १ । रिषभपुर २ । श्वेतांबिका ३ । मिथिलानग

तभोगिनो भविष्यंतीति तत्स्वरूपं सूत्रद्वयेनाह ॥ साएत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं ॥ अणुभावेत्ति ॥ विपाकउदयो रसइत्यर्थः मनोज्ञाः शब्दादयः सातोदयकार णत्वा दनुभावा एवो च्यन्ते तथा मनसः शुभता मन'शुभता सापि सातानुभावकारणत्वा त्सातानुभाव उच्यते एवं वच.शुभतापि मनसःसुखतावा साता नुभाव स्तत्स्वरूपत्वा त्तस्या एव वाक्सुखतापीति एव मसातानुभावोपि सातासाताधिकारा त्तद्वता देवविशेषाणा प्ररूपणाय सूत्रपचकमाह ॥ महेत्यादि ॥ सु ाम नवरं पूर्व द्वारं येषा मस्ति तानि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वस्यांदिशि गम्यतेयेभ्विल्यर्थ. एव शेषाण्यपि सत्त सप्तेति इहचा र्थे पच मतानि संति यत आ ह चन्द्रप्रज्ञप्त्या तत्थखलु इमाओ पंचपडिवत्तीओ पसत्ताओ तत्थेगे एवमाहंसु कत्तियाइया सत्तनक्खत्ता पुव्वदारिया पसत्ता ॥ एव मन्ये मघादी न्यपरे धनिष्टादीनि इतरे अश्विन्यादीनि अपरे भरण्यादीनि दक्षिणापरोत्तरद्वाराणिच सप्त सप्त यथामतं क्रमेणैव समवसेयानीति वय पुण एव वया

गातीर पुरिमंततंजिदसपुर निरहगउप्पत्तिनगराइं ॥ १ ॥ सायावेयणिज्जस्सणं कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे पसत्ते तजहा मणुन्नासद्दा मणुन्नारूवा जाव मणुन्नाफासा मणोसुहया वइसुहया । असायावेयणिज्जस्स कंम्मस्स सत्तविहे अणुभावे पन्नत्ते तजहा अमणुन्नासद्दा जाव वइदुहया । महानक्खत्ते सत्ततारे पन्नत्ते ।

री ४ । उलुकातीर ५ । पुरिमताल ६ । दशपुर ७ ॥ ए निह्नव उपजवाना नगर कह्या ॥ १ ॥ साता वेदिनी कर्मनो सात प्रकारे अनुभाव कह्यो ते कहेछे मनोग्यरूप पामे १ । यावत् मनोज्ञस्पर्श पावे ५ । मननु सुख ६ । वचननो सुख पावे ७ ॥ अशाता वेदनी कर्मनो सात प्रकारे अनुभावछे तेकहेछे अमनोज्ञ शब्द यावत् वचनसुं सुख ॥ मघा नक्षत्रना सात तारा कह्या ॥ अभिजिनक्षत्र आदिदेई सात नक्षत्र पूर्वद्वारिक कह्या ते कहेछे अ

मो अनियामो अभियादयाण सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पणत्ता ॥ एवं दक्षिणद्वारिकादी न्यपि क्रमेणैवेति तदिह षष्ठं मत माश्रित्य सूत्राणि प्रवृ त्तानि लौकिकेतु प्रथम मत माश्रित्ये तदभिधीयते यदुत दहनाद्यमृचसप्तक मैंद्रान्तु मघादिकच याम्याया अपरस्या मैत्र्यादिक मथसौम्यादिश्रि धनिष्ठा दि ॥ १ ॥ भवतिगमनेनराणा मभिमुखमपसर्प्पताशुभप्राप्तिः अथपूर्वमृचसप्तक सुद्दिष्टमध्यममुदीच्या ॥ २ ॥ पूर्वायामीदीच्या प्रातीच्यादचिणाभिधाना या याम्यान्तुभवतिमध्यम मपरस्यायातराशया ॥ ३ ॥ येतौल्ययान्तिमूढाः परिघाख्यामनिलदहनदिग्रेखा निपततितेचिरादपि दुर्व्यसनेनिष्फल्लारभाइति ॥ ४ ॥ देवाधिकारा देवनिवासकूटसूत्रद्वय ॥ जंबूद्दत्यादि ॥ कण्ठ्यं केवल ॥ ४ ॥ सोमणसेत्ति ॥ सोमनसे गजदतके देवकुरूणा प्राचीने कूटानि शिखराणि

अभिईयाइया सत्तनक्खत्ता पुव्वदारिया पन्नत्ता तजहा अभिई सवणो धनिठा सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया रेवई । अस्सिणियाइया सत्तनक्खत्ता दाहिणदारिया पन्नत्ता तजहा अस्सिणी भरिणी कत्ति या रोहिणी मिगसिर अद्दा पुणव्वसू । पुस्साइयाणं सत्तनक्खत्ता अवरदारिया पन्नत्ता तजहा पुस्सो असि लेसा मघा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता । साइयाण सत्तनक्खत्ता उत्तरदारिया पन्नत्ता तजहा

भिजित् १ ॥ श्रवण २ ॥ धनिष्ठा ३ ॥ शतभिषा ४ ॥ पूर्वभाद्रपद ५ ॥ उत्तराभाद्रपद ६ ॥ रेवती ७ ॥ अश्विनी आदिदेई सात नक्षत्र दक्षिण द्वारिया कह्या ते कहेछे अश्विनी १ । भरणी २ । कृतिका ३ । रोहिणी ४ । मृगशिर ५ । आर्द्रा ६ । पुनर्वसु ७ ॥ पुष्य आदिदेई सात नक्षत्र पश्चिम द्वारिया कहिया ते कहेछे पुष्य १ । अश्लेषा २ । मघा ३ । पूर्वाफाल्गुनी ४ । उत्तराफाल्गुनी ५ । हस्त ६ । चित्रा ७ ॥ स्वाति नक्षत्र आदिदेई सात नक्षत्र उ

॥ सिद्धेगाहा ॥ सिद्धायतनोपलक्षितं कूटं मेरुप्रत्यासन्न मेवं सर्वगजदंतकेषु सिद्धायतनानि शेषाणि ततःपरंपरयेति ॥ सोमनसेत्ति ॥ सोमणसकूटं तत्स माननामकतदधिष्टातृदेवभवनोपलक्षितं मंगलावतीविजयसमनामदेवस्य मंगलावतीकूट एवं देवकुरुदेवनिवासो देवकुरुकूटमिति विमलकांचनकूटे य थार्थे क्रमेणच वत्सवत्समित्राभिधानाधोलोकनिवासिदिक्कुमारीद्वयनिवासभूते विशिष्टकूट तन्नामदेवनिवास एवमुत्तरत्रापि गन्धमादनो गजदन्तकएवो त्तरकुरूणा प्रतीचीनसूत्र ॥ सिद्धेगाहा ॥ कणव्वा नवरं स्फटिककूटलोहिताख्यकूटे अधोलोकनिवासिभोगंकराभोगवत्यभिधानदिक्कुमारीद्वयनिवासभूते इति कूटेष्वपि पुष्करिणीजले द्वीन्द्रियाः सतीति द्वीन्द्रियसूत्र ॥ वेइंदियाणमित्यादि ॥ जातौ द्वीन्द्रियजातौ याः कुलकोटयस्ता स्तथा ताश्च ता योनि प्रमुखाश्च विलचसख्यद्वीन्द्रियोत्पत्तिस्थानद्वारिका स्ता जातिकुलकोटियोनिप्रमुखा इहच विशेषणपरं पदप्राकृतत्वा त्तासा शतसहस्राणि लक्षाणीति इ

साइ विसाहा अणुराहा जिठा मुलो पुव्वाआसाढा उत्तराआसाढा । जंबुद्दीवेदीवे सोमणसे वक्खारपव्वए सत्तकूडा प० त० सिद्धेसोमणसेया बोधव्वेमंगलावईकूडे देवकुरुविमलकंचण विसिठकूडेयबोधव्वे ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेदीवे गंधमायणे वक्खारपव्वए सत्तकूडा पन्नत्ता तंजहा सिद्धेयगंधमायणे बोधव्वेगंधिलावईकूडे उत्त

हार द्वारिया कह्या ते कहेंछे स्वाति १ । विसाखा २ । अनुराधा ३ । ज्येष्ठा ४ । मूल ५ । पूर्वाषाढा ६ । उत्तराषाढा ७ ॥ जंबूद्वीपे सोमनस वक्षस्का र पर्वतने ऊपर सात कूट कहिया तेकहेंछे सिद्ध १ । सोमनस २ । मंगलावती कूट ३ । देवकुरु ४ । विमल ५ । कांचन ६ । विशिष्ट ७ ॥ जंबूद्वीपे गंधमादन वक्षस्कार पर्वते सात कूट कह्या ते कहेंछे सिद्ध १ । गंधमादन २ । गंधिलावती ३ । उत्तरकुरु ४ । स्फटिक ५ । लोहित ६ । नंदकूट ७ ॥

टमुक्त भवति द्वीन्द्रियजातौ या योनय स्तत्प्रभवायाः कुलकोटय स्तासा लचाणि सप्त प्रज्ञप्तानीति तत्र योनि र्यथा गोमय स्तत्र चैकस्यामपि कुलानि विचित्राकारा. कृम्यादयइति शेषा धूयगंडिका ससबधा पूर्ववद्याख्येयेति ॥ इतिश्रीमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानाख्यकृतोयागविवरणे सप्तस्थानकाभिधान सप्तममध्ययन परिसमाप्त मिति ॥ ७ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ व्याख्यात सप्तम मध्ययन मधुना संख्याक्रमसबद्धमेवा ष्टस्थानकाख्य मष्टम मध्ययन मारभ्यते तस्य चेद मादिसूत्रं ॥ अठ्ठहीत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण स

रकुरुफलिहेलो हियरकञ्चाणंदणेचेव ॥ २ ॥ बेंदियाणं सत्त जाइकुलकोफ्रिजोणीपमुहसत्तसहस्सा पन्नत्ता जीवाण सत्तठाणनिव्वत्तिए पुग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणतिवा चिणिस्संतिवा तजहा नेरइयनिव्वत्तिए जाव देवनिव्वत्तिए एवचिण जाव निज्जराचेव । सत्तपएसियाखधाञ्चणता पन्नत्ता । सत्तपएसोगाढापुग्गला जाव सत्तगुणलुरका पुग्गला ञ्चणंता पन्नत्ता ॥ सत्तमठाण सम्मत्त ॥ ७ ॥

बेइंद्रीनी सात जाति कुलकोफ्रि योनि प्रमुख सातहजार कही ॥ जीवने सात स्थानके निर्वर्त्तित पुद्गल पापकर्मपणे चिएया एकठा कस्या करेछे करस्ये तेकहेछे नारकी निर्वर्त्तित यावत् देव निर्वर्त्तित ॥ इम चिएया यावत् निर्जराव्या ॥ सात प्रदेशना खध अनताछे ॥ सात प्रदेशावगाढ पुद्गल यावत् सात गुणलूखा पुद्गल अनंता कह्या ॥ इति सातमो ठाणो पूरो थयो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

आठ थानके सहित अनगार योग्य होय एकलविहारनी प्रतिमा अगीकारकरी विचरवाने ते कहेछे श्रद्धावत पुरुष १ । सत्यवादी २ । बुद्धिवत ३ ।

हायं सबधो ऽनन्तरं पुद्गला उक्ता स्तेच कार्मणाः प्रतिमाविशेषप्रतिपत्तिमन्तो विशेषेण निर्णीयन्त इत्येकाकिविहारप्रतिमायोग्यः पुरुषो निरूप्यत इत्येवं सम्बन्धस्या स्य व्याख्या संहितादिचर्चस्तु प्रसिद्धएव नवर अष्टाभिः स्थाने र्गुणविशेषैः सम्पन्ना युक्तो ऽनगारः साधु रहैति योग्यो भवति ॥ एगल्लत्ति ॥ एकाकिनो विहारो ग्रामादिचर्या सएव प्रतिमा ऽभिग्रहः एकाकिविहारप्रतिमा जिनकल्पप्रतिमा मासिक्यादिकावा भिक्षुप्रतिमा ता मुपसपद्या भ्यि त्य णमित्यलंकारे विहर्तु ग्रामादिषु चरितुं तद्यथा ॥ सड्ढित्ति ॥ श्रद्धावान् आस्तिक्य मित्यर्थो ऽनुष्ठानेषुवा निजो भिलाष स्तद्व त्सकलनाकिनायकै रप्यचलनीयसम्यक्त्वचारित्रमित्यर्थः पुरुषजात पुरुषप्रकारः १ तथा सत्य सत्यवादी प्रतिज्ञाशूरत्वा त्सद्भ्योहितत्वाद्वा सत्यं २ तथा मेधा श्रुतग्रहणशक्ति स्तद्व न्मेधावि अथवा ॥ मेहावइत्ति ॥ मेधाविमर्यादावर्त्तिति ३ तथा मेधाविवा बहुप्रचुर श्रुत मागमः सूत्रतो ऽर्थतश्च यस्य तद्बहुश्रुतं तच्चो त्कृष्टतो ऽसंपूर्णदश पूर्वधर जघन्यतो नवमस्य तृतीयवस्तुवेदीति ४ तथा शक्तिम त्समर्थं पचविधकृततुलनमित्यर्थः तथाहि ॥ तवेण सत्तेण सुत्तेण एगत्तेण बलेणय तुलणा पचहा वुत्ता जिणकप्प पडिवज्जओत्ति ५ अल्पाधिकरणं निष्कलह ६ धृतिमत् चित्तस्वास्थ्ययुक्त मरतिरत्यनुलोमप्रतिलोमोपसर्गसहमित्यर्थः ७ वीर्यं मु त्साहातिरेक स्तेन सम्पन्नमिति इहा चानामेव चतुर्णांपदानां प्रत्येक मन्ते पुरुषजातशब्दो दृश्यते ततो न्याना मप्यय सम्बन्धनीयइति अय चैवंविधो

अठहिंठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए तं० सड्ढीपुरिसजाए सच्चेपुरिसजाए मेहावीपुरिसजाए बहुस्सुएपुरिसजाए सत्तिमं अप्पाहिगरणे धिइमं वीरियसंपन्ने। अठविहे

बहुश्रुत ४। शक्तिवत ५। अल्पाधिकरणी क्रोधादिरहित ६। संतोषवंत ७। वीर्यवंत ८॥ आठप्रकारे योनिसग्रह कह्यो ते कहेछे अंडज १। पोतज २। यावत्

१० ॥

१५ ॥

ऽनगारः सर्वप्राणिनां रक्षणक्षमो भवतीति तेषामेव योग्याः संगतं गत्यागतीचाह ॥ अट्ठविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टयं सुगमं नवर मौपपातिका देवनारका ॥ सेसाणंति ॥ अण्डजपोतजजरायुजवर्जितानां रसजादीनां गतिरागतिश्च नास्तीत्यष्टप्रकारेति शेषः यतो रसजादयो नौपपातिकेषु सर्वेषूत्पद्यते पंचेन्द्रियाणामेव ततो व्युत्तेः ना प्यौपपातिका रसजादिषु सर्वेषु प्युत्पद्यते पंचेंद्रियैकेंद्रियेषु तेषा मुत्पत्तेरिति अण्डजपोतजजरायुजसूत्राणि नोक्तानि भवन्तीति अण्डजादयश्च जीवा अष्टविधकर्मचयादि भवंतीति चयादीन् षट्स्थानविशेषान् सामान्यतो नारकादिपदेषुच प्रतिपादयन्नाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ प्राणिन व्याख्येयं नवरं चयनं व्याख्यानांतरेण चालनं उपचयनं परिपोषण बंधन निर्मापण उदीरणं करणेन कृष्य दलिकस्यो दये दानं वेदन मनुभव

जोणिसंगहे पन्नत्ते तंजहा अंडया पोयया जाव उब्भिया उववाइया । अंडया अट्ठगइया अट्ठागइया प० तंजहा अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतोवा पोयएहिंतोवा जाव उववाइएहिंतोवा उववज्जिज्जा सेचेवणमंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताएवा पोयगत्ताएवा जाव उववाइयत्ताएवा गच्छज्जा । एव पोययावि । जराउयावि । सेसाणं गइरागई नत्थि । जीवाण मट्ठकम्मपयडीउ चिणसुवा चिणंतिवा चिणिस्सं

उद्भिद उपपातिक देवता नारकी ॥ अंडजनी आठगति आठआगति कही तेकहेछे अंडज अंडजमाथी उपजतो अंडजमांथी पोतजमांथी यावत् उपपातमाथीउपजे तेजते अंडज अंडजपणो मूकतो अंडजपणों पोतजपणो यावत् उपपातपणो जाय॥ इम पोतज जरायुज पणिबीजानीगति आगति नथी॥ जीवने आठकर्मनी प्रकृति चिणीछेपूर्वे चिणेछे चिणस्ये तेकहेछे ज्ञानावरणी १। दर्शनावरणी २। वेदनी ३। मोहनी ४। आयु ५। नाम ६। गोत्र ७। अंतराय ८॥

उदयइत्यर्थः निर्जरा प्रदेशेभ्यः शटनमिति लाघवार्थमतिदिशन्नाह ॥ एवंचेवत्ति ॥ यथा चयनार्थः कालत्रयविशेषितः सामान्येन नारकादिषु चो क्त एव मुपचयार्थोपोतिभावः ॥ एवचिणेत्यादि ॥ गाथोत्तरार्द्धं प्राग्वत् ॥ एएक्केयादि ॥ यत श्चयनादिपदानि षडतः सामान्यसूत्रपूर्वकाः षडेवदडकादइति अष्टविधं कर्मणः पुनश्चयादिहेतु मासेव्य तद्विपाकं जानन्नपि कर्म्मगुरुत्वा त्कश्चिन्नालोचयतीति दर्शयन्नाह ॥ अठ्ठहीत्यादि ॥ मायीति ॥ मायावान् ॥ मायति ॥ गुप्तत्वेन मायाप्रधानो ऽतिचारो मायैवताङ्कृत्वा विधाय नो आलोचयेत् गुरवे न निवेदयेन् नो प्रतिक्रामे न्नमिथ्यादुष्कृत दद्यात् यावत्करणात्

तिवा तंजहा नाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं वेयणिज्जं मोहणिज्जं आउयं नामं गोय अंतराइयं। नेर इयाणं अठकम्मपयडीत चिणसुवा चिणंतिवा चिणिस्संतिवा तजहा नाणावरणिज्ज दरिसणावरणिज्ज वेय णिज्जं मोहणिज्जं आउयं नामं गोयं अतराइयं। एव निरतर जाव वेमाणियाणं जीवाणं अठकम्मपयडीत उवचिणिंसुवा एवं चिणउवचिणवधउदी रवेयतहनिज्जराचेव। एए ब चउवीसादंडगा नाणियव्वा। अठहिं ठाणेहिं माई मायकट्टु नोआलोइज्जा नोपडिक्कमेज्जा जाव नोपडिवज्जेज्जा तजहा करिसुवाहं करेमिवाहं

नारकी आठकर्मनी प्रकृति चिणी चिणेछे चिणस्ये इमज इम निरंतर यावत् वैमानिक २४ दडके। जीवने आठकर्मप्रकृति उपचिणी उपचिणेछे उपचि णस्ये इमज चिणी उपचिणी वध उदीरणा वेदवा निर्जरा जाणवी एणेप्रकारे २४ दडकजाणवा ॥ आठथानके मायी माया करीने आलोवे नही पडिकमे नही यावत् तप पडिवजे नही तेकहेछे हुकरतो हवो हुंकरीस एहवूंबोले अपराध करीने स्यु आलोवु पापकरूजछुंतो निवर्त्योविना स्यु आलोवुं आगलि

नोनिंदेज्जा ॥ स्वसमक्षं ॥ नो गरहेज्जा ॥ गुरुसमक्षं ॥ नोविउट्टेज्जा ॥ नव्यावर्त्तता तिचारान् ॥ नोविसोहेज्जा ॥ नविशोधयेद तिचारकलंकं शुभभावज लेन नो प्रकरणतया अपुनः करणेना भ्युत्तिष्ठे दभ्युत्थानं कुर्यान् नो यथार्हं तपःकर्म्म प्रायश्चित्तं प्रतिपद्येतेति तद्यथा ॥ करिंसुवाहंति ॥ कृतवाना ह मपराध कृतत्वाच्च कथं तस्य निन्दादि युज्यते १ तथा ॥ करेमिवाहंति ॥ साम्प्रतमपि तमह मतिचारं करोमीति कोदृशनिवृत्तस्या लोचनादिभि त्या २ तथा ॥ करिस्सामिवाहमिति ॥ न युक्त मालोचनादीति ३ शेषं स्पष्टं नवरं अकीर्त्ति रेकदिग्गामिनी प्रसिद्धि र्वर्णो ऽयशः सर्वदिग्गामिनी प्रसि द्धिरेत एतान्य मविद्यमानं मेभविष्यतीति अपनयेद्वा पूजासत्कारादे रपनयन मेवादिति तथा कीर्त्ति र्यशोवा विद्यमानं मेपरिहास्यतीति उक्तार्थ विपर्ययमाह ॥ अट्ठहीत्यादि ॥ सुगमं नवरं मायी कृतमायस्सन्नेव मालोचनादावसरे पि मायिन आलोचनाद्याग्रहणे मायां मपराधलक्षणां कृत्वा आलोच दित्यादि मायिनो ह्यनालोचनादावय मनर्थो यदुत ॥ अस्सिलोए ॥ अयं लोको जन्म गर्हितो भवति सातिचारतया निन्दितत्वा दित्युक्तं च भीउव्वि ग्गनिलुक्को पायडएच्छन्नदोससयकारो अप्पच्चयंजणंतो जडसाधीजोविअंजियइत्ति ॥ १ ॥ इत्येकं तथा उपपातो जन्म गर्हितः किल्बिषिकादित्वेने त्युक्तं च

करिस्सामिवाहं अकित्तीवामेसिया अवन्नेवामेसिया अवणएवामेसिया कित्तीवामेपरिहायइस्सइ जसेवामे परिहाइस्सइ । अठहिंठाणेहिं माई मायकट्टु अलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तंजहा माइस्सणं अस्सिंलोगे

करीस तो स्यु आलोवुं आलोवे नही माहरी अकीर्तिथास्ये अवर्णवाद माहरोथास्ये अजस माहरी पूजा सत्कारनो नासथाय माहरी कीर्तिके तेहाणा पाम स्ये माहरो जश देशपरदेशमा तेहीन पामस्ये ॥ आठ थानके मायी अनाचारी आलोवे यावत् तप पडिवजे तेकहेछे माया सहितने इहलोके गर्हानिंदा

तवतेणेवयतेणे रूवतेणेयजोनरे आयारभावतेणेय कुव्वईदेवकिव्विसंति ॥ १ ॥ द्वितीयं आज।ति स्तत श्युतस्य मनुष्यजन्मगर्हितजात्यैश्वर्यरूपादिरहित तयेति उक्तंच तत्तोविसेवइत्ताणं लभ्भतीएलमूयगं नरगंतिरिक्खजोणिंवा वोहीजत्थसुदुल्लहत्ति ॥ १ ॥ तृतीय तथा एकामपि मायी माया मतिचाररूपाकृ त्वा यो नालोचये दित्यादि नास्ति तस्या राधना ज्ञानादिमोक्षमार्गस्ये त्यनर्थइति उक्तच लज्जाएगारवेयण वहुस्सुयमएणवाविदुश्चरियं जेणकहिंतिगु रूण नहुतेआराहगाहीति ॥ १ ॥ तथा नवितंसत्थंवविस वदुप्पउत्तोयकुणइवेयालो जतंचदुप्पउत्त सप्पोव्वपमाइओकुडो ॥ १ ॥ जकुणइभावसल्लं अ णुद्धियउत्तमट्टकालंमि दुल्लहवोहीयत्त अणंतसंसारियत्तचेत्ति ॥ २ ॥ चतुर्थं तथा एकामपीत्यादिना अर्थप्राप्तिरुक्तेति यदाह उद्धरियसव्वसल्लो भत्तप रिन्नाएधणियमाउत्तो मरणाराहणजुत्तो चंदगवेज्झंसमाणेइत्ति ॥ १ ॥ पचममिति एव वहुत्वेनापि अनालोचनादा वालोचनादौवा नर्थो ऽर्थश्च षष्ठसप्तमेत

गरहिए भवइ उववाएगरहिएभवइ आयाईगरहियाभवइ एगामवि । माई मायंकट्टु नोआलोइज्जा जाव नोपडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा एगामवि । माईमायकट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा। अत्थि तस्स आराहणा वज्जवि। माईमायंकट्टु नोआलोएज्जा जाव नोपडिवज्जेज्जा नत्थितस्स आराहणावज्जवि माई

होय इम जाणी आलोवे यावत् तप पडिवजे नही तिहांथी पणि त्रीजेभवे नर तिर्यंचमां जाय तिहा गर्हा पामे एके। मायी माया अतीचाररूप करीने आलोवे नही यावत् तप पडिवजे नथी तेहने आराधना एके पणि । मायी मायावी अतीचाररूप माया करीने आलोवे तप पडिवजे तेहने आराधना छे तेआराधक घणो। मायी माया करीने आलोवे नही यावत् तप पडिवजे नहीतेहने आराधना घणी पणि मायाकरीने आलोवे यावत् तेहने आराध

था चार्योपाध्यायस्ता मे प्रतिशेष ज्ञानदर्शनं समुत्पद्येत सच सामालोकयेत् ॥ माईण ॥ मेपद्रत्युल्लेखेन त्वेव भया दालोचयतीति अष्टमं ८ शेषं सूत्रं पर्यन्तलो क उपपात आजातिय गर्हितेत्यस्य पदाग्रस्य विवरणतया अवगतव्य तत्र मायो मायाद्युलेतीह कौदृशो भवे दुच्यते इति वाक्यशेषो दृश्यः ॥ सेद्रति ॥ यो भवतीपि प्रसिद्ध: ॥ यथेति ॥ दृष्टांतोपन्यासे ॥ नामएत्ति ॥ सभावनाया मलकारेवा अय आकरो लोहाकारो यत्र लोह धायतइति रूपप्रदर्शने वा विकल्पे तिला धान्यविशेषा स्तेषामययवाश्रपितिला स्तेषा मग्नि स्तद्दहनप्रवृत्तो वह्नि स्तिलाग्नि रेव शेषा अप्यग्निविशेषा नवर तुषा: कोद्रवादीना ॥ वुसं ॥ यवादीनां कडंगरो नल: शुषिरशराकार: दलानि पत्राणि शुण्डिका पिटिकाकाराणि सुरापिष्टस्वेदनभाजनानि कांवग्योपा सभाव्यंते तासां ॥ लिं

मायकट्टु आलोएज्जा जाव अत्थि तस्स आराहणा । आयरियउवज्झायस्स वामेअइसेरो नाणदसणेसमुप्पज्जि ज्जा सेय ममं आलोएज्जा । माईणएसे माईण मायंकट्टु सेजहानामए आयागरेइवा तवागरेइवा तउआगरे इवा सीसागरेइवा रुप्पागरेइवा सुवणागरेइवा तिलागणीइवा तुसागणीइवा वुसागणीइवा नलागणीइवा दलागणीइवा सुंडियालिंछाणिवा भंडियालिंछाणिवा गोलियालिंछाणिवा कुंभारावाएइवा कवेल्लुयावाएइवा

नाळे आचार्य उपाध्यायने मुझथी अतिशेष ज्ञान दर्शन उपने थके तेमुझने देखसे जे एमायीछे एम जाणी आलोवे ॥ ८ ॥ मायाकरीने तिहा जिम दृष्टांत लोहार लोह धमे त्राम्रोगाले सोनार तरुआनो धमनार सीसानो धमनार रूपानो धमनार सुवर्णनो धमनार जेहवी तिलनी अगनि जेहवी होय तुस शालिना फोतरानो अगनि बूस बूसं तेहनी अगनि नल पोलासराकार तेहनी अगनि पानडानी अगनि मदिराने लोट स्वेदकारे तेहना

रङ्गाणि ॥ चुल्लोस्थानानि समाख्यंते उक्तञ्च वृद्धैः गोलियसोंडियभंडियलिंछाणि ॥ अग्ने रात्रयया अन्यैस्तु देशभेदरूढ्या एते पिष्टपाचकाद्यादिभेदादृति उक्त म्मया प्येतदुपजीव्यैव सभावितमिति तथा भंडिकाः स्थाल्य ताएव महंत्यो गोलिकाः प्रतीत चैत च्छब्दद्वय ॥ लिछाणि ॥ तान्येवेति कुम्भकारस्यापाको भांडपचनस्थान कवेल्लकानि प्रतोतानि तेश्र मापाकः प्रतीतएव ॥ जतवाडचुल्लो ॥ इक्षुयन्त्रवाटकचुल्ली ॥ लोहारबसाणवत्ति ॥ लोहकारस्या बरीषा भ्राष्ट्रा ॥ आकरणीति ॥ लोहकारांबरीषादृति तप्ता न्युष्णानि समानि तुल्यानि जाज्वल्यमानत्वात् ज्योतिषा वह्निना भूतानि जातानि यानि तानि समज्योतिर्भूतानि किंशुकफुल्लं पलासकुसुमं तत्समानानि रक्ततया उल्का अग्निपिंडा स्तत्सहस्राणीति प्राचुर्यंख्यापकं विनिमुंचंतीति भृशार्थे द्विर्वचनं। अंगारा लघुतरा अग्निकणा स्तत्सहस्राणि प्रविकिरंति २ ॥ अतोअतोज्झियायतित्ति ॥ अतरतःक्रियया ध्मायंति इंधनैर्दीप्यतइति दृष्टा

इहावाएइवा जंतवाडचुल्लइवा लोहारंवरीसाणिवा तत्ताणिसमजोइभूयाणि किंसुयफुल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइं विणिंमुयमाणाइ २ जालासहस्साइ पमुंचमाणाइं २ इंगालसहस्साइं पविकिरमाणाइं २ अतो २ झियायंति एवामेव मायी मायंकट्टु अतो २ झियाइ। जइवियणं अन्ने केइवदंति तंपियणं माई जाणइ

भाजन ते लोटनी अगनि मोटी हांडीलीमदिराकरनी अगनि तेहनी कुंभारना भाडानी अगनि कुंवेलूका चूनानी तानी भाठीनी अगनि ईटवानी अगनि सेलडीना वाडनी चूल्हि गोलकरनी अगनि लोहारना चरीखा भाठी तेहनी अगनि ए सर्व तप्या जाज्वल्यमान ज्योति अगनि रूपथया केसूडानी फूलसमान राता थया अगनिना पिंडयी हजारेगमें उलका मोटा अग्निकण मूंकता २ ज्वालासहस्रने मूकता २ अंगारा लघुतर अग्निकण

न्तो दार्ष्टान्तिकस्त्वेव मेवेत्यादि यथा तापाग्निना ध्मायति जाज्वल्यते ॥ अहमेसेत्ति ॥ अह मेषो ऽभिशंके ऽहमेषो भिशंकेदिति एभि रहं दोषका रितया आशंके सभाव्येइति उक्तंहि निससकियभीओ गमोसव्वस्सखलियचारित्तो साहुजणस्सअवमओ मओविपुणदोग्गइंजाइ ॥ २ ॥ अनेना नालो चकस्या य लोको गर्हितो भवतीति निदर्शित ॥ सेणततरसेत्यादिना ॥ पाठांतरेण ॥ माईणमायकट्टुइत्यादिनावा ॥ उपपातो गर्हितो भवतीति द र्श्यते ॥ कालमासेत्ति ॥ मरणमासे उपलक्षणत्वा न्मरणदिवसे मरणमुहूर्त्ते ॥ कालकिच्चा ॥ मरणकृत्वा अन्यतरेषु व्यन्तरादीना लोकेषु देवजनेषु मध्ये ॥ उववत्तारोत्ति ॥ वचनव्यत्यया दुपपत्ताभवतीति नो महर्द्धिकेषु परिवारादिऋद्ध्या नो महाद्युतिषु शरीराभरणादिदीप्त्या नो महानुभागेषु विक्रिया दिशक्तितः नो महाबलेषु प्राणवत्सु नो महासौख्येषु नो महेशाख्येषु वा नोदूरगतिकेषु न सौधर्मादिगतिकेषु नो चिरस्थितिके ष्वेकद्वादिसागरोपम स्थितिकेषु गापिच ॥ से ॥ तत्र देवलोकेषु बाह्या अप्रत्यासन्ना दासादिवत् अभ्यन्तरा प्रत्यासन्ना पुत्रकलत्रादिवत् परिष त्परिवारो भवति सोपि नो आद्रि

अहमेसे अभिसंकिज्जामि २ माईणं मायकट्टु अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालकिच्चा अन्नतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति तं० नोमहड्ढिएसु जाव नोदूरगइएसु नोचिरठिईएसु सेण तत्थ देवे भवइ नोमहड्ढि

ते हजारने विखेरता विखेरता २ मांहि इंधनें दीपती अगनि होय ए दृष्टाते मायी मायाकरी पश्चात्तापनी अग्निमांहिं बलें बली चिंतवे जेवली कोई बीजाकहे परकहे तेमते पणि मायी जाणे हु ए मायासें पापनो करनार सभवीये नित्यसतोपरहे ॥ मायी मायाकरीनें आलोयांविना पडिकम्या विना कालमासे कालकरीने अन्यतर व्यतरादिदेवलोकनें विषे देवतापणे ऊपजे तेकहे छे । महर्द्धिकमांहि नहीं यावत् दूर सुधर्मादिदेवलोकमा

यते नादर करोति स्वामितया, नाभिमन्यते नो नैव मइच्च तदर्हं च योग्य महार्हं तेना सनेनो पनिमंत्रयते ॥ किंबहुना दौर्भाग्यातिशयात् ॥ से ॥ तस्य या वत् चतु पच देवाभाषणनिषेधाया भ्युत्तिष्ठति प्रयतते कथ ॥ माबहुमित्यादि ॥ अनेनो पपातगर्हीक्ता आजातिगर्हितत्वंतु ॥ सेणमित्यादिना ॥ च ष्टे ॥ सेत्ति ॥ सो नालोचक स्ततो व्यन्तरादिरूपा देवलोका दवधे रायुःक्षयेणा युःकर्मपुद्गलनिर्जरणेन भवक्षयेणा यु कर्मादिनिबंधना देव पर्यायनाशेन स्थितिक्षयेण आयुष. स्थितिबन्धनयेण देवभवनिबन्धनभेयकर्मणावा अनन्तरमायु. क्षयादेः समनन्तरमेव चव च्यवन च्युत्वा इहैव प्रत्यक्षे मानुष्यके भवे

ए जाव नोचिरठिइंए जावियसे तत्थ वाहिरप्रंतरिया परिसान्नवति सावियणं नोप्राढाइ नोपरियाणइ नोमहारिहेण प्रासणेण उवनिमंतेइ न्नासंपियसे न्नासमाणस्स जाव चत्तारि पच देवा प्रणुत्ताचेव प्रप्नुठि ति मावज्जदेवेन्नासज सेणतउ देवलोगाउ प्राउरकएणं न्नवक्रकएण ठिइरकएण प्रणतरं चयचइत्ताण इहेव माणुस्सएन्नवे जाइ इमाइ कुलाइ न्नवंति तजहा प्रंतकुलाणिवा पंतकु० तुच्छकुलाणिवा दरिद्दकुलाणिवा

नहीं घणा आउखानी थिति नही से तिहां देवथाय केहवो मोटी ऋद्धिनो धणी नहीं यावत् चिरस्थितिनो धणी नही जेवली तिहा बाह्य अनें अ भ्यतर देवतानी परषदाछे ते पणि तेहनें आदर नकरे आव्यो जाणे पणि नही मोटानें योग्य आसने करी निमंत्रणा करे जे आवो आसने बेसो वचनपणि तेहने नबोलतो यावत् च्यार पाच देवता अणकहेज उठे अरे देवता घणु बोलमा छानोरहे इमकहें ॥२॥ ते देवलोकथी आयुक्षय पामें भवनो क्षयथयो थितिनो क्षयथयो अतररहित चवे चवीने आहीज मनुष्यभवने विषे जे एहवा कुलहोय ते कहैछे अतकुल चरट छीपाना प्रांतकुल

पुंस्तया प्रत्याजायतइतिसंबंधः केषु कुलेषु कुटंबकेषु अन्वयेषु वा किंविधेषु यानी मानि वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षाणि भवंति तद्यथा अंतकुलानि वरुगट छिम्पकादीनां प्रान्तकुलानि चण्डालादीनां तुच्छकुलानि अल्पमानुषाणि अगम्भीराशयानि वा दरिद्रकुलानि अनीश्वराणि कृपणकुलानि तर्कणवृत्ती नि नटनग्नाचार्यादीनां भिक्षाककुलानि भिक्षणवृत्तीनि तथाविधलिङ्गिकानाञ्च तथाप्रकारेष्व न्तकुलादिष्वित्यर्थः प्रत्यायाति प्रत्याजायतेवा ॥ पुमेत्ति ॥ पुमान् ॥ अणिट्ठेत्यादि ॥ इष्यते स्म प्रयोजनवशा दितीष्टः कान्तः कान्तियोगात् प्रियः प्रेमविषयी मनोज्ञः शुभस्वभावः मनसा ऽम्यते गम्यते सौभाग्यतो नुस्मर्यतइति मनोम एतन्निषेधा गकृतविशेषणानि तथा हीनस्वरः ह्रस्वस्वर स्तथा दीनो दैन्यवान् पुरुष स्तत्सम्बन्धित्वात् स्वरोपिदीनः सस्वरो यस्यसतथा

किविणकु० भिरकागकु० तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइसेण तत्थ पुमेभवइ । दुरूवे दुवन्ने दुगंधे दुरसे दुफासे अणिठे अकंते अप्पिए अमणुन्ने अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिठस्सरे अकंतस्सरे अप्पि यस्सरे अमणोन्नस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणपच्चायाए जावियसे तत्थ बाहिरब्भतरिया परिसा भवइ

चांडालादिकनां तुच्छकुल अल्पमनुष्यना दरिद्रनाकुल भिखारीना कुल भिक्षाकुल भिक्षावृत्तिना कृपणना कुल तथाप्रकारना एहवा माटा कुलनेवि षे पुरुषपणे ऊपजे ते तिहा पुरुष होय दुष्टरूपनो दुष्ट मांठोवर्ण माठो गंध माठो रस मांठो फरस अनिष्ट अकांत अप्रिय अमनोज्ञ मनमां नगमे हीनस्वर दीनस्वर अनिष्टस्वर अकांतस्वर अप्रीतिकारी स्वर अमनोज्ञस्वर अननामस्वर हीनस्वर दीनस्वर अनिष्टस्वर अनादेयवचननो धणी ऊपजे ॥ जे वली ते तिहा बाह्य अन्यतरपर्षदा होय ते पणि तेहने आदर नकरे आव्यो पणि नजाणे मोटानें योग्य एहवे आसणेकरी निमंत्रे नहीं भापा

अनादेयवचनश्चासौ प्रत्या'जातश्चेति अथवा प्रथमैकवचनलोपा दनादेयवचनो भवति प्रत्याजातःसन्निति शेषं कण्ठ्यं यावत् ॥ भासओत्ति ॥ अनेन प्रत्याजाति गर्हितत्व मुक्तमिति मायोत्यादिना आलोचकस्ये हलोकादिस्थानत्रयागर्हितत्व मुक्तविपर्ययस्वरूपमाह हारेण विराजितं वच्च उरो यस्यस तथा कट कानि प्रतीतानि त्रुटितानि वाह्वाभरणविशेषा स्तैः स्तम्भितौ स्तब्धीकृतौ भुजौ वाहू यस्य स तथा ॥ अगदेत्यादि ॥ कर्णाविव पीठे आसने कुण्डलाधार त्वा त्कर्णपीठे मृष्टे घृष्टे गण्डतलेच कपोलतटे कर्णपीठेच यकाभ्यां ते मृष्टगंडतलकर्णपोठे तेच ते कुंडलेचेति विशेषणो त्तरपदः प्राकृतत्वात्कर्मधारय· अङ्गदेच केयूरे वाह्वाभरणविशेषावित्यर्थ' कुंडलमृष्टगण्डतलकर्णपीठेच धारयति यः स तथा अथवा अगदेच कुण्डलेच मृष्टगण्डतले कर्णपीठेच कर्णाभर णविशेषभूते धारयति यः स तथा तथा विचित्राणि विविधानि हस्ताभरणा न्यगुलीयकादीनि यस्य स तथा तथा विचित्राणि वस्त्राणिवा भरणानिच ॥ टी

सावियणं णोआढाइ नोपरियाणाइ नोमहरिहेणं आसणेणं उवनिमंतेइ भासंपियसे भासमाणस्स जाव चत्ता रि पंचजणा अवुत्ताचेव अब्भुठिति मावकं अजाउत्तो भासउ२ माईणं मायंकट्टु आलोइयपडिक्कते काले किच्चा अन्नतराएसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति तंजहा महिड्ढिएसु जाव चिरठिईएसु सेणं तत्थ देवे भवइ महिड्ढिए जाव चिरठिईए हारविराइयवत्थे कडकतुडियथंभियभुए अंगयकुंडलमठगडयलकन्न ॥ मू

पणि तेहनें बोलता यावत् च्यार पांचजण अणकहे ऊठे हेमांठापुन्यनाधणी घणुं मबोल २ मायी मायाकरीनें आलोई पडिकमीने कालमासें का लकरीने अन्यतर सुधर्मादिदेवलोके देवतापणें उपजे ते मोटी ऋद्धिना धणीमाहिं चिरस्थितीनो हारे विराजमान छें वद्य हृदय कटकत्रुटिते थस्या ॥ भा

यस्य वस्त्राण्येववा भरणानि भूषणानि अवस्थाभरणानि अवस्थोचितानीत्यर्थो यस्य स तथा विचित्रामालाश्च पुष्पमाला मौलिश्च शेखरो यस्य विचित्र मालानावा मौलि र्यस्य स तथा कल्याणकानि मङ्गल्यानि प्रचुराणि मूल्यादिना वस्त्राणि परिहितानि निवसितानि येन तान्येववा परिहितो निवसि तो य स तथा कल्याणकंच प्रवरच पाठान्तरेण प्रवरगन्धश्च माल्य मालाया साधुपुष्पमित्यर्थः अनुलेपनञ्च श्रीखण्डादिविलेपन यो धारयति स तथा भास्वरा दीप्रा वोदीशरीर यस्य स तथा प्रलत्रा या वनमाला आभरणविशेष स्ता न्धारयति य' स तथा दिव्येन स्वर्गसबन्धिना प्रधानेनेत्यर्थो वर्णादिना युक्तइति गम्यते सघातेन सहननेन वज्रर्षभनाराचलक्षणेन सस्थानेन समचतुरस्रलक्षणेन ऋद्ध्या विमानादिरूपया युक्त्या अन्यान्यभक्तिभि स्तथाविधद्र व्यप्रयोजनेन प्रभया प्रभावेन माहात्म्येनेत्यर्थ च्छायया प्रतिबिम्बरूपया अर्चिषा शरीरनिर्गततेजोज्वालया तेजसा शरीरस्य कान्त्या लेश्यया न्तःपरिणा

पीठधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउलीकल्लाणगपवरगंधमल्लाणुलेवणधरे भा सुरबोंदीपलबवणमालधरे दिव्वेणंवन्नेणं दिव्वेणंगधेणं दिव्वेणरसेण दिव्वेणफासेणं दिव्वेणसंघाएणं दिव्वेणसं ठाणेणं दिव्वाएइड्ढीए दिव्वाएजुत्तीए दिव्वाएपभाए दिव्वाएछायाए दिव्वाएअच्चीए दिव्वेणंतेएणं दिव्वाएलेसाए

ळे भुज जेहनी बहिरखा कुंडले घसाता गल्लस्थल कानपीठे धस्या विचित्र हस्तना आभरण विचित्र वस्त्रना आभरण विचित्र माला मुगटळे कल्याण कारी प्रधान वस्त्रपहिस्याळे कल्याणकारी प्रवर गध माला फूल विलेपननो धरनार देदीप्यमान शरीरप्रमाण लाबी वनमाला झूमणु धस्योळे दि व्यवर्णेकरी दिव्यगधेकरी दिव्यरसेकरी दिव्यफरसेकरी दिव्यसघयणेकरी दिव्यसस्थानेकरी दिव्यरिद्धिकरी दिव्यद्युतिकरी दिव्यप्रभाकरी दिव्यछाया

मरूपया शुक्लादिकया उद्योतयमानः स्थूलवस्तूपदर्शनतः प्रभासयमाम सु सूक्ष्मवस्तूपदर्शनतइति एकार्थिकत्वेपि चैतेषा नदोषः उत्कर्षप्रतिपादकत्वेना ॥
भिहितत्वादिति महता प्रवानेन हहतावा रवेणेतिसबंधः आहती नुबद्धो रवस्यै तद्विशेषण नाट्य नृत्य तेन युक्त गीत नाट्यगीत न्तस्व वादितानिच तानि
शब्दवन्ति क्षतानि तन्त्रीच वीणा तलीच हस्ती तालाश्च कांसिकाः ॥ तुडियत्ति ॥ तूर्याणि च पटहादीनिवादितन्त्रीतलतालतूर्याणि तानिच तथा घनोमेघ
स्तदाकारो यो मृदङ्गो ध्वनिगाम्भीर्यसाधर्म्यात्सचासौ पटुना दक्षेण प्रवादितश्च य' स घनमृदङ्गपटुप्रवादित' सचेति द्वंद्व स्तेषा रवः शब्द स्तेन करणभूतेन
अथवा ॥ आहयत्ति ॥ आख्यानकप्रतिबद्ध य न्नाट्य न्तेनयुक्तं यद्गीत शेष तथैव इहच मृदङ्गग्रहण तूर्येषु मध्ये तस्य प्रधानत्वा यतउच्यते ॥ मद्दलसाराइतूरा
इति ॥ भोगार्हाभोगा' शब्दादयो भोगभोगा स्तान् भुञ्जानो ऽनुभवन् विहरति क्रीडति निष्ठतिवेति भाषा मपिच ॥ से ॥ तस्य भाषमाणस्या स्ता मेको द्वौवा
सौभाग्यातिशयत्वात् याश्च चत्वारः पचवा देवा अनुक्ताएव केना प्यप्रेरिताएव भाषणप्रवर्त्तनाय बह्वोरपि भाषितस्य स्वबहुमतत्वख्यापनायवा भ्युत्तिष्ठंति

दसदिसाउ उज्जोएमाणे पभासेमाणे महयाहयणट्टगीयवाइयततीतलतालतुडियघणमुइंगपडुपवाइयरवेणं ॥
दिव्वाइंभोगाइं भुंजमाणे विहरइ । जावियसे तत्थ बाहिरभ्भतरिया परिसा भवइ सावियणं आढाइ परिया
णइ महरिहेणं आसणेणं उवनिमंतेइ भासपियसे भासमाणस्स जाव चत्तारि पच देवा अवुत्ताचेव अब्भु

कांतेकरी दिव्यअर्चियेकरी दिव्यकांतिविशेष तेजेंकरी दिव्यलेश्यायेकरी दशेदिशें उद्योतकरतो मोटो आहत नाटक गीत वादित्र तंत्री वीणा तल ॥
ताल त्रुटित घन मादल पटवडो पटहो इत्यादि रव शब्देकरी दिव्य भोग भोगवतो विचरे वली जे तिहा बाहिरनी अभ्यंतरनी पर्षदाछे तेपणि

व्रुयते च ॥ बहुमित्यादि ॥ अभिमत मिदं भवदीयभाषणमिति हृदय मनेना लोचकस्यो पपातागर्हितत्व मुक्त मेतद्गणना दिहलोकागर्हितत्वमपि सघुता ॥
ह्लादाद्य।लोचनागुणसद्भावेनवाच्य आलोचनागुणा येते लहुयाह्लाद्द्यजणण अप्पपरनियच्छिअज्जवसोही दुक्करकरणआढा निस्सल्लत्तचसोहिगुणा ॥ १ ॥
इदानीं तस्यैव प्रत्याजात्यगर्हितत्व माह ॥ सेणमित्यादि ॥ अड्ढाइति ॥ धनवंति यावत्करणात् दित्ताइ दीप्तानि प्रसिद्धानि दृप्तानिवा दर्प्पवति विच्छि
न्नविउल।यणसयणासणजाणवाहणाइ तत्र विस्तीर्णानि विस्तारवति विपुलानि बहूनि भवनानि गृहाणि शयनानि पर्यंकादीनि आसनानि
सिंहासनादीनि यानानि रथादीनि बाहनानिच वेगसरादीनि येषु कुलेषु तानि तथा क्वचिद्वाहणाइन्नाइ तिपाठ स्तत्र विस्तीर्णविपुलै र्भवनादिभि
राकीर्णानि संकीर्णानि युक्तानीत्यर्थ इतिव्याख्येय तथा बहुधणबहुजायरूवरययाइं बहुधनं गणिमधरिमादि येषु तानि तथा बहुजातरूपच
सुवर्णरजतञ्च रूप्य येषु तानि तथा पथा त्कर्मधारयः आओगपओगसपउत्ताइ आयोगेन द्विगुणादिलाभेन द्रव्यस्य प्रयोगो ऽधमर्णानां दान तत्र स
प्रयुक्तानि व्याप्तानि तेनवा सप्रयुक्तानि सगतानि यानितानि तथा विछडियपउरभत्तपाणाइं विच्छर्दिते त्यक्ते बहुजनभोजनावशेषतया विच्छर्दिवती वा
विभूतिमती विविधभक्ष्यभोज्यचूष्यलेह्यपेयाद्याहारभेदयुक्ततया प्रचुरे भक्तपाने येषु तानि तथा बहुदासीदासमहिसगवेलगप्पभूयाइं बहवो दासीदासा
येषु तानि तथा गावो महिष्यश्च प्रतीता गवेलका उरभ्राः स्तेप्रभूताः प्रचुरा येषु तानि तथा पश्चात्कर्मधारयः अथवा बहवो दास्यादयः प्रभूता जाता

ठेति बद्भदेवे नासव २ सेणं तव देवलोयाव व्याउरकएणं ३ जाव चइत्ता इहेव माणुस्सए नवे जाइं इमा ॥

तेहने आदरदे आव्यो जाणे मोटानेयोग्य आसने करी निमंत्रे भाषापणि भाषे यावत् च्यारपांचदेवता अणकहेज ऊठे घणु २ देव बोलो २ जेते ॥

येषु तानि तथा बहुजनस्या परिभूतानि अपरिभवनीयानीत्यर्थ स्तृतीयार्थेवा षष्ठी ततो बहुजनेना परिभूतानि अतिरस्कृतानि ॥ अज्जउत्तेत्ति ॥ आर्ययोः अपापकर्मवतोः पित्रोः पुत्रो यः स तथा अनेना लोचकस्या नालोचकप्रत्याजातिविपर्यय उक्तः कृतालोचनाद्यनुष्ठानाश्च सवरवन्तो भवतीति संवर तद्विपर्ययस्त मसवरंचाह ॥ अट्ठविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वय कण्ठ्य अनतर कायासवर उक्तः कायश्चा ष्टस्पर्शो भवतीति स्पर्शसूत्रं कण्ठ्यञ्चेति स्पर्शश्चाष्टाविवेति

इं कुलाइं भवंति आढाइं जाव बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पञ्चायाइ सेणं तत्थ पुमेभवइ सुरूवे सुवन्ने सुगंधे सुरसे सुफासे इठे कंते जाव मणामे अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे आदेज्ज वयणपञ्चायाए जावियसे तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ सावियं आढाइ जाव बहुअज्जउत्ते भास उ २ । अठविहे संवरे पन्नत्ते तंजहा सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे मणसंवरे वयसवरे कायसंवरे। अठविहे असंवरे पन्नत्ते तंजहा सोइंदियअसंवरे जाव कायअसंवरे। अठफासा पन्नत्ता तंजहा कक्खडे मा

देवलोकथी आउखाने क्षये ३ यावत् चवीने इहाज मनुष्यनेभवे जे एहवा कुल होय आढ्य यावत् घणा लोकनें अपरिभूत तथाप्रकारना कुलनेविषे पुरुषपणे ऊपजे ते तिहा पुरुष होय सुरूप सुवर्ण सुगध सुरपर्श इष्ट कात यावत् मनमान्यो अदीनस्वरनो यावत् मनोहरस्वर आदेयवचननो घणी उपजे जे वली तिहा बाहिर अभ्यतरनी पर्षदा होय तिहां तपणि ते आदरकरे यावत् घणु २ उत्तमसाहिब बोले ॥ आठप्रकारे सवर कह्यो तेकहे छे श्रोत्रेंद्रीनो सवर यावत् फरसनेद्रीनो सबर मननोसवर वचननोसवर कायानोसवर ॥ आठप्रकारे असवर कह्या ते० श्रोत्रेंद्रीनो असंवर यावत् ५

लोकस्थिति रिय मतो लोकस्थितिविशेषमाह । अट्ठविहेत्यादि । कण्ठ्य एव ॥ जहाठ्ठाणेत्यादि ॥ तत्र चैव ॥ उदधिपइट्ठियापुढवी ॥ घनोदधावि त्यर्थ ३ ॥ पुढविपइट्ठियातसाथावरापाणा ॥ मनुष्यादयइत्यर्थ ४ ॥ अजीवाजीवपइट्ठिया ॥ शरीरादिपुद्गलाइत्यर्थ ५ ॥ जीवाकम्मपइट्ठिया कार्मणवर्गणवर्त्ति त्वादिति ६ ॥ अजीवाः पुद्गलाकाशादयो जीवैः संगृहीताः स्वीकृता अजीवान्विना जीवानां सर्वव्यवहाराभावात् ७ ॥ जीवाः कर्मभिर्ज्ञानावरणादिभिः सगृहीता बद्धाः ८ षष्ठपदे जीवोपग्राहकत्वेन कर्मण आधारताविवक्षिते इतु तस्यैव जीवबन्धनतेतिविशेष इदंच लोकस्थित्यादि स्वसम्पदुपेतगणिवचनाद् ज्ञायतइति गणिसंपदमाह ॥ अट्ठविहागणिसंपयेत्यादि ॥ गणः समुदायो भूया नतिशयवान् वा गणाना साधूनावायस्यास्ति स गणी आचार्य स्तस्य सम्पत् समृद्धि भावरूपा गणिसम्पत् तत्रा चरण माचारो नुष्ठान सएव सप द्विभूति स्तस्यवा सम्पत् सम्पत्ति. प्राप्तिः राचारसम्पत् साच चतुर्धा संयमध्रुव योगयुक्तता चरणे नित्यं समाध्युपयुक्ततेत्यर्थः असम्प्रग्रह आत्मनो जात्याद्युत्सेकरूपग्राहवर्जनमितिभाव. २ अनियतवृत्ति रनियतविहारइत्यर्थ ३ वृद्धशीलता

उए गुरुए लहुए सीए उसिणे निद्धे लुक्खे । अट्ठविहा लोगठिई पण्णत्ता तंजहा आगासपइट्ठिएवाए वाय पइट्ठिए उदही एवं जहा छठाणे जाव जीवाकम्मपइट्ठिया अजीवाजीवसंगहिया जीवाकम्मसंगहिया । अ ठविहा गणिसंपया पण्णत्ता तंजहा आयारसंपया सुयसंपया सरीरसंपया वयणसंपया वायणासंपया मइ

कायानो असवर ॥ आठ फरश कह्या ते० कर्कश मृदु गुरू लघु शीत उष्ण स्निग्ध लूखो ॥ आठप्रकारे लोकस्थिति कही ते० आकाशप्रतिष्टित वायूछे वायूप्रतिष्टित उदधि समुद्र जिम छठाणे कह्योछे यावत् जीव कर्मप्रतिष्ठित अजीव जीवसंग्रहीतछे जीव कर्मग्रहियाछे ॥ आठप्रकारे आचार्यनी संपदा

वपुर्मनसो निर्विकारतेतियावत् ४ एवं श्रुतसम्पत् सापि चतुर्द्धा तद्यथा बहुश्रुतता युगप्रधानागमतेत्यर्थः १ परिचितसूत्रता २ विचित्रसूत्रता स्वसमया दिभेदात् ३ घोषविशुद्धिकरताच उदात्तादिविज्ञानादिति शरीरसम्पच्चतुर्द्धा आरोहपरिणाहयुक्तता उचितदैर्घ्यविस्तरताइत्यर्थः १ अनवत्रप्यता अलज्ज नीयागतेत्यर्थः २ परिपूर्णेन्द्रियता ३ स्थिरसहननताचेति ४ वचन सम्पच्चतुर्द्धा तद्यथा आदेयवचनता १ मधुरवचनता २ अनिश्रितवचनता मध्यस्थवच नतेत्यर्थः ३ असदिग्धवचनताचेति वाचनासंप चतुर्द्धा तद्यथा विदित्वोद्देशन विदित्वासमुद्देशन परिणामिकादिक शिष्यज्ञात्वेत्यर्थः २ परिनिर्वाप्यवा चना पूर्वदत्तालापका नधिगमय्य शिष्य पुनः सूत्रदानमित्यर्थ' अर्थनिर्यापणा अर्थस्य पूर्वापरसांगत्येन गमनिकेत्यर्थः ४ मतिसंप चतुर्द्धा अवग्रहेहापा यधारणाभेदादिति ४ प्रयोगसम्प चतुर्द्धा इहच प्रयोगो वादत्रिपयस्त्वात्मपरिज्ञान वादादिसामर्थ्यविषये पुरुषपरिज्ञानं किंनयोयं वाद्यादि २ चेत्रपरि ज्ञान ३ वस्तुपरिज्ञानं वस्त्विह वादकाले राजामात्यादि ४ संग्रहः स्वीकरण तत्र परिज्ञाज्ञान नामाभिधान मष्टमीसम्पत् साच चतुर्विधा तद्यथा वाला दियोग्यक्षेत्रविषया १ पीठफलकादिविषया २ यथासमयं स्वाध्यायभिक्षादिविषया ३ यथोचितविनयविषयाचेति ४ आचार्योहि गुणरत्ननिधानमिति निधानप्रस्तावा न्निधिव्यतिकरमाह ॥ एकेत्यादि ॥ एकैको महानिधि श्चक्रवर्त्तिसंबंधी अष्टचक्रवालप्रतिष्ठानो ऽष्टचक्रप्रतिष्ठितो मंजूषात्र तत्स्वरूपंचेदं

संपया पयोगसंपया संगहपरिन्नाणामअट्ठमा । एगमेगेणं महानिही अट्ठचक्कवालपइट्ठाणे अट्ठअट्ठजोय

कही ते कहेछे आचारनी संपदा १ श्रुतसंपदा २ शरीरनी संपदा ३ वचनसंपदा ४ वाचनानी संपदा ५ मतिसंपदा ६ प्रयोग वादकरवानी संपदा ७ संग्रहप्रतिज्ञा अंगीकारकरवो वस्त्र पात्र क्षेत्र पीठ विनयादिकनो संग्रहकरे ॥ एकेको महानिधान आठ २ चक्रपतिष्ठ तेणे प्रतिष्टित पेटीछे ते आठ

नवजोयणविच्छिन्ना बारसदीहासमूसियाअठ्ठ जक्खसहस्सपरिवुडा चक्कइपइठ्ठियानववी ॥ १ ॥ द्रव्यनिधानप्रक्रमात्तोता अथ भावनिधानभूतसमितिस्वरू पमाह ॥ अठ्ठसमिईत्यादि ॥ सम्यगितिः प्रवृत्तिः समितिः ईर्य्याया गमने समिति श्चतुर्व्यापारपूर्वतयेतो र्यासमितिः १ एवभाषायां निरवद्यभाषणात एष णायामुद्गमादिदोषवर्जनत आदाने ग्रहणे भांडमात्राया उपकरणमात्राया भाण्डस्य वा वस्त्राद्युपकरणस्य मृन्मयादिपात्रस्यवा साधुभाजनविशेषस्य निचे पणायाञ्च समितिः सुप्रत्युपेचितसुप्रमार्जितक्रमेणेति उच्चारप्रश्रवणखेलसिंघाणजल्लाना म्परिष्ठापनिकायां समितिः स्थण्डिलविशुद्धादिक्रमेण खेलो नि ष्ठीवनं सिंघाणोनासिकाश्लेषेति मनसः कुशलतायां समितिः वाचो ऽकुशलत्वनिरोधेसमितिः कायस्य स्थानादिषु समितिरिति समिति प्रतिचारा दा वा लोचना देये त्यालोचनाचार्यस्य लोचकसाधोः प्रायश्चित्तस्यच स्वरूपाभिधानाय सूत्रत्रयमाह ॥ अठ्ठहीत्यादि ॥ सुगम नवरं ॥ आयारवति ॥ ज्ञानादि

णाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० । अठ्ठ समिईओ पण्णत्ताओ तंजहा ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण भंडमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिठावणियासमिई वयसमिई कायसमिई । अठ्ठ हिंठाणेहिं संपन्ने अणगारेअरहइ आलोयणापडिच्छित्तए तंजहा आयारव आहारव ववहारव उव्वीलए

२ योजन पेटीउंची उंचपणें कही नवयोजन पोहली १२ योजन लाबीलें ॥ आठ समति कही ते कहेछे ईर्यासमिति १ भाषासमिति २ एषणासमिति ३ आदाननिक्षेपणासमिति ४ वडीनीति लघुनीतिपरठव्यानी समिति ५ मनसमिति ६ वचनसमिति ७ कायसमिति ८ ॥ जयणाये काया राखे ॥ आठ बोले संपन्न अणगार योग्यछे आलोयणदेवाने योग्य ते० आचारवत १ । अवधारें अतीचारकहे तेधारे २ । आगमश्रुतादिव्यवहारवत ३ आलोयण

पंचप्रकाराचारवान् ज्ञानासेवनाभ्या माहारवति अवधारणावान् आलोचकेना लोच्यमानाना मतीचाराणामिति आहच आयारवमायार पंचवि
मुणइजोयआयरइ आहारवमवहारे आलोइंतस्सतसव्वंति ॥ ववहारवंति आगमश्रुताज्ञाधारणाजीतलक्षणानां पचाना मुक्तरूपाणा व्यवहाराणां ज्ञाति
ति ॥ उव्वीलएत्ति ॥ अपव्रीडयति ॥ विलज्जीकरोति यो लज्जया सम्यगनालोचयन्त सर्वं यथा सम्यग्लोचयति तथा करोतीत्यपव्रीडिकः अभिहितंच वव
हारववहर आगममाइउसुणइपचविह ओवीलुवगूहंत जहआलोएइतंसव्वंति ॥ १ ॥ पकुव्वएत्ति ॥ आलोचिते सति यः शुद्धि प्रकर्षेण कारयति स प्रका
रीति भणितच आलोइयमिसोहि जोकारावेइसोपकुव्वीओत्ति ॥ अपरिस्साइत्ति ॥ न परिश्रवति ना लोचकदोषा नुपश्रुत्या न्यस्मै प्रतिपादयति य एवं
शील: सोऽपरिश्रावीति यदाह जोअन्नस्सउदोसे नकहेइअपरिसाइसोहोइत्ति ॥ निज्जवएत्ति ॥ निर्यापयति तथा करोति यथा गुर्वपि प्रायश्चित्त शिष्यो
निर्वाहयतीति निर्यापकइति न्यगादिच निज्जवओतहकुणइ निव्वहईजेणपच्छित्ततति ॥ अवायदंसित्ति ॥ अपाया ननर्थान् चित्तभगानिर्वाहादीन् दुर्भि
क्षदौर्बल्यादिकृतान् पश्यतीत्येवशील: सम्यगनालोचनायाच दुर्लभबोधिकत्वादी नपायान् शिष्यस्य दर्शयतीत्यपायदर्शीति भणितच दुब्भिक्खदुब्बलाई इ
हलोएजाणएअवाएओ दंसेइयपरलोए दुल्लहबोहित्तसंसारेत्ति ॥ १ ॥ अत्तदोसंति ॥ आत्मापराधमिति जातिकुले मातापितृपक्षौ तत्सम्पन्नः प्रायो ऽकृत्यन्न
करोति कृत्वापि पश्चात्तापा दालोचयतीति तद्ग्रहण यदाह जाईकुलसपन्नो पायमकिच्चंनसेवइकिंचि आसेविउंचपच्छा तग्गुणओसम्ममालोएत्ति ॥ १ ॥

पकुव्वए अपरिस्सावी णिज्जवए अवायदंसी। अठहिंठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरहइ अत्तदोसं आलोएत्तए

ना लेनारने लज्जारहितकरे ४। प्रकर्षसुद्धिकरावे ५। आलोचना दोष बीजानें नकहें ६। शिष्य मोटापापनो निर्वाह करेतिम ७। शिष्यने अणाआ

विनयसपन्नः सुखेनैवा लोचयति तथा ज्ञानसंपन्नो दोषविपाकं प्रायश्चित्तंवा वगच्छति यतोवाचि नाणेणउसंपन्नो दोसविवागंवियाणिओघोरं आलो एइसुत्तनिय पायच्छित्तचप्रबगच्छेत्ति ॥ १ ॥ दर्शनसपन्नः शुद्धोह मित्येव श्रद्धत्ते चरित्रसपन्नो भूय स्त मपराध नकरोति सम्य गालोचयति प्रायश्चित्तंच निर्वाहयतीति उक्तंच सुद्धोतहत्तिसम्म सद्दहईदंसणेणसंपन्नो चरणेणउसंपन्नो नकुणइभुज्जोतमवराहंति ॥ १ ॥ क्षांतः परुष भणितो प्याचार्यैर्न रुष्यती ति आहच खतीआयरिएहिं फरुसभणिओविनविरूसेत्ति ॥ दान्तः प्रायश्चित्त दत्तं वोढु समर्थो भवतीति आहच दंतोसमत्थोवोढुं पच्छित्तंजमिह दिज्जएतस्सत्ति ॥ आलोयणेत्यादि ॥ व्याख्यात प्रायः जात्यादिमदेषु सत्स्वा लोचनायां न प्रवर्त्ततइति मदस्थानसूत्रं गतार्थं नवर मदस्थानानि मदभेदा

तंजहा जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने विणयसंपन्ने नाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसपन्ने खते दते। अठविहे पाय च्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे। विउस्सग्गारिहे तवारिहे छेया रिहे मूलारिहे । अठ मयठाणे पण्णत्ते तंजहा जाइमदे कुलमदे बलमदे रूवमदे तवमदे सुयमदे लाभमदे

लोव्याना फल देखाडे ८ ॥ आठथानकें संपन्नअणगार ते योग्यथाय पोतानो दोष आलोवाने ते० जाते पूरा होयते कुले पूरो विनये संपन्न ज्ञानें संपन्न दर्शने सपन्न चारित्रे सपन्न ६ । क्षमा ७ । दमसहित ८ ॥ आठप्रकारे प्रायश्चित्त कह्यो ते० आलोअण योग्य१ । पडिकमणायोग्य २ । आलो अणापडिकमणा बे योग्य ३ । विवेकयोग्य ४ । काउसग्गयोग्य ५ । तपयोग्य ६ । पर्यायछेदवायोग्य ७ । मूलछेदयोग्य ८ ॥ आठ मदना थानक कह्या तेकहेछे जातिमद १ । कुलमद २ । बलमद ३ । रूप ४ । तव ५ । श्रुत ६ । लाभ ७ । ईश्वरमद ८॥ आठ क्रियावादी कह्या ते० एक आत्माछे घट २

इहच दोषा जात्यादिमदोन्मत्तः पिशाचव झ्रवति दुःखित श्चेह जात्यादिहीनतापरिभवेच निःसंशयं लभतइति वादिनांहि प्रायः श्रुतमदोभवतीति वादिविशेषान् दर्शयन्नाह ॥ अठ्ठकिरिण्यादि ॥ क्रियाऽस्तीतिरूपा सकलपदार्थसार्थव्यापिनी सैवा यथावस्तुविषयतया कुत्सिता अक्रिया नञः कुत्सार्थ त्वात् ता मक्रिया वदती त्येवंशीला अक्रियावादिनो यथा वस्थितहि वस्त्वनेकान्तात्मक त न्नास्त्येकान्तात्मकमेव वास्तीति प्रतिपत्तिमतइत्यर्थो नास्तिकाइ तिभावः एव वादित्वा च्चैते परलोकसाधकक्रियामपि परमार्थतो न वदंति तन्मतवस्तुसत्वेहि परलोकसाधकक्रियाया अयोगादित्यक्रियावादिनएव तइति तन्नेकएवा त्मादिरर्थ इत्येव वदती त्येकवादी दोषत्वच प्राक्तत्वादिति उक्त चैत न्मतानुसारिभिः एकएवहि भूतात्मा भूतेभूतेव्यवस्थितः एकधाबहुधाचैव दृश्यतेजलचन्द्रवदिति ॥१॥ अपर स्त्वात्मैवास्ति नान्यदिति प्रतिपन्न स्तदुक्तं पुरुषएवेदंसर्वयद्भूतयच्चभव्य उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥ १ ॥ य देज ति य न्नेजति य द्दूरे य दंतिके य दतरस्य सर्वस्या स्य वाह्यतइति तथा नित्यज्ञानविवर्त्तोय क्षितितेजोजलादिकः आत्मातदात्मकश्चेति संगिरतेपरेपुन रिति ॥१॥ शब्दाद्वैतवादीतु सर्वंशब्दात्मकमिद मित्येकत्व प्रतिपन्न उक्तञ्च अनादिनिधन ब्रह्म शब्दतत्त्वयदक्षर विवर्त्ततेर्थभावेन प्रक्रियाजगतोयतइति ॥१॥ अथवा सामान्यवादी सर्वमेवैक प्रतिपद्यते सामान्यस्यै कत्वादित्येव मनेकधैकवादी अक्रियावादिता चास्य सद्भूतस्यापि तदन्यस्य नास्तीति प्रतिपा दनात् आत्माद्वैतपुरुषाद्वैतशब्दाद्वैतादीना युक्तिभि रघटमानाना मस्तित्वाभ्युपगमा च्चैवमुत्तरत्रापीति तथा सत्यपि कथंचि देकत्वे भावाना सर्वथा ऽनेक

ईसरियामदे । श्रठ श्रकिरियावादी पन्नत्ता तंजहा एक्कावादी श्रणिक्कवाई

व्याप्योळे १ । अनेकावादी घणाआत्मामानें २ ।

त्व वदती त्यनेकवादी परस्परविलक्षणाएव भावा स्तथैव प्रमीयमाणत्वात् यथारूप रूपतयेति अभेदेतु भावानां जीवाजीवबद्धमुक्तसुखितदुःखिता दीनां मेकत्वप्रसगात् दीक्षादिवैयर्थ्यमिति किंच सामान्य मगीकृत्यै कत्व विवक्षित परैः सामान्यच भेदेभ्यो भिन्नाभिन्नतया चिन्त्यमान न युज्यते एव म वयवेभ्यो वयवी धर्मेभ्यश्चधर्मीत्येव मनेकवादी अस्या प्यक्रियावादित्व सामान्यादिरूपतयै कत्वे सत्यपि भावाना सामान्यादिनिषेधेन तन्निषेधनादिति न च सामान्यं सर्वथा नास्ति अभिन्नज्ञानाभिधानाभावप्रसगा त्सर्वथा वैलक्षण्ये चैकपरमाणु मन्तरेण सर्वेषा मपरमाणुत्वप्रसंगा त्तथा अवयविन धर्मि णच विना न प्रतिनियतावयवधर्मव्यवस्था स्या द्भेदाभेदविकल्पदूषणच कथचि द्वादाभ्युपगमेन निरवकाशमिति २ तथा नन्तानन्तत्वेपि जीवाना मि तान् परिमितान् वदति उत्सन्नभव्यक भविष्यतीति भुवन मित्यभ्युपगमात् मितचा जीव मंगुष्टपर्वमात्रं श्यामाकतदुलमात्रंवा वदति न त्वपरिमितसंख्ये यप्रदेशात्मकतया अगुलासंख्येयभागा दारभ्य यावल्लोक मापूरयती त्येव मनियतप्रमाणतयावा अथवा मितसप्तद्वीपसमुद्रात्मकतया लोक वद त्यन्यथाभू तमपोति मितवादीति तस्या प्यक्रियावादित्वं यस्तुतत्त्वनिषेधना देवेति ३ तथानिमित मीश्वरब्रह्म पुरुषादिना कृत लोक वदतीति निर्मितवादी तथा चाह आसीदिदतमोभूतमप्रज्ञ।तमलक्षण अप्रतर्क्यमविज्ञेय प्रसुप्तमिवसर्वतः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेकार्णवीभूते नष्टेस्थावरजंगमे नष्टामरनरेचैव प्रणष्टोरगराक्षसे ॥ २ ॥ केवलगह्वरीभूते महाभूतविवर्जिते अचिन्त्यात्माविभुस्तत्र शयानस्तप्यतेतपः ॥ ३ ॥ तत्रतस्यशयानस्य नाभेःपद्मन्विनिर्गत तरुणरविमण्डलनिभ

मितवादी निर्मितवादी

मितवादी कहें जीव अगुष्टपर्वसमानछे ३। निर्मित्तवादी एजगत ईश्वरे कीधोछे ४।

हृदयंकाञ्चनकर्णिकं ॥ ४ ॥ तस्मिन्पद्मेतुभगवान् दंडीयज्ञोपवीतसयुक्तः ब्रह्मातत्रोत्पन्न स्तेनजगन्मातरःसृष्टाः ॥ ५ ॥ अदितिःसुरसंघानान्दितिरसुराणामनु र्मनुष्याणा विनताविहंगमानां माताविश्वप्रकाराणा ॥ ६ ॥ कद्रु.सरीसृपाणा सुलसामातातुनागजातीनां सुरभिश्चतुष्पदानां इलापुनःसर्वजीवानामि ति ॥ ७ ॥ प्रमाणयति चासौ बुद्धिमत्कारणकृतभुवनं सस्थानवत्वात् घटवदित्यादि अक्रियवादिता चास्य नकदाचिदनीदृशजगदितिवचना दकृत्रिमभुव नस्या कृत्रिमतानिषेधा दचेश्वरादिकर्तृकत्व जगतो स्ति कुलालादिकारकवैयर्थ्यप्रसंगात् कुलालादिव चे श्वरादे र्बुद्धिमत्कारणस्यानीश्वरताप्रसगात् किंचे श्वरस्या शरीरतया कावणाभावात् क्रियास्वप्रवृत्तिः स्यात् सशरीरत्वे च तच्छरीरस्यापि कर्त्रन्तरेण भाव्यमेवचानवस्थाप्रसंगइति ॥ ४ ॥ तथा सातं सुखम भ्युपगमनीयमिति वदतीति सातवादी तथाहि भवत्येवंवादी कश्चित् सुख मेवानुशीलनीय सुखार्थिना नत्वशातरूपतपोनियमब्रह्मचर्यादि कारणानुरूपत्वा त्कार्यस्य नहि शुक्लै स्तन्तुभि रारब्ध पटो रक्तो भवत्यपितु शुक्लएव एव मसातासेवनात् सुखमेवेति उक्तंच मृद्वीशय्याप्रातरुत्थायपेया मध्येभक्तंपानकचाप राह्णे द्राक्षाखण्डशर्कराचार्द्धरात्रे मोक्षश्चान्ते शाक्यपुत्रेणदृष्टः ॥ १ ॥ अक्रियावादिता चास्य मशमतपसोः परमार्थिकप्रशमसुखरूपयो र्दुःखत्वेनाभ्युपगमात् कारणानुरूपकार्याभ्युपगमस्य च विषयसुखादननुरूपस्य निर्वाणसुखस्याभ्युपगमेन बाधितत्वादिति ॥ ५ ॥ तथा समुच्छेदं प्रतिक्षण निरन्वयनाशवदति यः स समुच्छेदवादी तथाहि वस्तुन. सत्व कार्यकारित्व कार्याकारिण्यपि वस्तुले खरविषाणस्यापि सत्वप्रसगात् कार्यञ्च नित्य वस्तु क्रमेण न करोति नि

सायवादी समुच्छेदवादी

सातावादी सुखभोगवतां सुखपामिये ५। क्षणे २ स्वभाव सर्ववस्तुना उच्छेद नवा २ ऊपनें ६।

॰ ॥ त्यस्यैतत्स्वभावतया कालान्तरभाविसकलकार्याभावप्रसंगा न्नचेदेवमतिचणं स्वभावान्तरोत्पत्त्या नित्यत्वहानिरिति यौगपद्येनापि न करोति अध्यक्षसिद्ध
त्वाद्यौगपद्या कारणस्य तस्मात् चणिकमेव वस्तु कार्यं करोतीत्येव चा र्थक्रियाकारित्वात्चणिक वस्त्विति अक्रियावादी वायमित्थमवसेयो निरन्वयना

६ ॥ शाभ्युपगमे हि परलोकाभावः प्रसजति फलाना च क्रियास्वप्रवृत्तिरिति तथा सकलक्रिय सु प्रवर्त्तकस्या सङ्ख्येयसमयसभाव्यनेकवर्णोल्लेखवतोविकल्पस्य
प्रतिसमयचयित्वेएकाभिसविप्रत्ययाभावात् सकलव्यवहारोच्छेद. स्यादतएवै कांतचणिकात् कुलालादेःसकाशादर्थक्रिया नघटतइति तस्मात्पर्यायतो व
स्तुसमुच्छेदवत् द्रव्यतस्तु न तथेति ६ तथानियत नित्य वस्तु वदति यः स तथाहि नित्यो लोक. आविर्भावतिरोभावमात्रत्वात् उत्पादविनाशयो स्तथा ऽसतो
ऽनुत्पादा च्छशविषाणस्येव सत शाविनाशात् घटव न्नहि सर्वथाघटोविनष्ट' कपालाद्यवस्थाभिः तस्यपरिणतत्वा त्तासा चापारमार्थिकत्वात् मृत्सामान्य
स्यैव पारमार्थिकत्वात् तस्य चाविनष्टत्वादिति अक्रियावादी चाय मेकांतनित्यस्य स्थिरैकरूपतया सकलक्रियाविलोपाभ्युपगमादिति ॥ ७ ॥ तथा ॥ न सति
परलोगवाइत्ति ॥ नेति न विद्यते शाति श मोचः परलोक श जन्मान्तरमित्येव यो वदति स तथा तथाहि नास्त्यात्मा प्रत्यचादिप्रमाणाविषयत्वात् खरविषा
णवत् तदभावान्नपुण्यपापलचण कर्म तदभावान्नपरलोको नापि मोचइति यचेत चैतन्य त द्भूतधर्मइति अस्याक्रियावादिता स्फुटैव न चेतस्य मतंसगच्छते
प्रत्यचाद्यप्रवृत्त्या आत्मादीनां निराकर्त्तुमशक्यत्वात् सत्यपि वस्तु प्रमाणाप्रवृत्तिदर्शना दागमविशेषसिद्धत्वाच भूतधर्मतापि नचैतन्यस्य विवचितभूताभावे

णियावादी णसातिपरलोगवादी ।

नियतवादी एकांते नित्यलोककहे ७ । नथी परलोक मोचादि पुण्यपाप नथी ८ ॥

पि जातिस्मरणादिदर्शनादिति एषां चेह वादिनामष्टाना मपि दिग्मात्रमुपदर्शितं विशेष स्त्वन्यतो ज्ञेय ऊह्यो वेति एते च वादिनः शास्त्राभिसंस्कृतबुद्धयो भवतीत्यष्टस्थानकावतारीणि शास्त्राण्याह ॥ अट्ठमहानिमित्तेत्यादि॥ अतीतानागतवर्त्तमानानामतीन्द्रियभावाना मधिगमेनिमित्त हेतुर्यद्वस्तुजातं तन्निमित्तं तदभिधायकशास्त्राण्यपि निमित्तानीत्युच्यते तानि च प्रत्येकं सूत्रवृत्तिवार्त्तिकात: क्रमेण सहस्रलक्षकोटीप्रमाणानी तिकृत्वा महांतिचतानि निमित्तानिचेति महानिमित्तानि तत्रभूमिविकारो भौमभूकम्पादि तदर्थं शास्त्रमपि भौम एव मन्यान्यपिवाच्यानि नवर सुदाहरण मिह शब्देनमहताभूमि यदारसतिक म्पते सेनाप तरमात्यश्च राजाराज्यचपोड्यते इत्यादि ॥१॥ उत्पात: सहज रुधिरवृष्ट्यादि: ॥ २ ॥ स्वप्नोयथा सूत्रंवाकुरुतेस्वप्ने परीषवातिवोहितं प्रतिबुद्धस्त दाकश्चि ल्लभतेसोर्थनाशनमिति ॥ ३ ॥ अंतरिक्ष माकाश तत्र भव मान्तरिक्षक गन्धर्व्वनगरादि: कपिलसस्यघाताय माजिष्टहरणगवा अव्यक्तवर्णकुरुते वलक्षोभनसंशय: ॥१॥ गन्धर्व्वनगरस्निग्ध सप्राकारंसतोरणं सौम्यादिशसमाश्रित्य राज्ञस्तद्विजयकरमित्यादि ॥ २ ॥ अंगशरीरावयव स्तद्विकारश्चांग शिरस्फु रणादियेशा दक्षिणपार्श्वस्पंदन मभिधास्येतत्फलस्त्रियावामे पृथिवीलाभं शिरसि स्थानविवृद्धिर्ललाटे स्यादित्यादि ॥ ५ ॥ स्वर: शब्द: षड्जादि:सच नि मित्तं यथा सज्जेणलहइविति कयचभविणस्सइ गावोमित्तायपुत्ताय नारीणचैववल्लहोइत्यादि ॥ १ ॥ शकुनरुतं यथा विविचिविसद्दोपुन्नो सामाएसूलि

अठविहे महानिमित्ते पन्नत्ते तंजहा भोमे उप्पाए सुविणए अंतलिक्खे अंगे सरे लक्खणे वंजणे। अठविहा

आठप्रकारें महानिमित्त कह्यो ते भूमिकंपादिफलशास्त्र १। उत्पात सहजें रुधिरवृष्ट्यादि २। स्वप्नशुभाशुभशास्त्र ३। आकाशनगरादिशास्त्र ४। अंगफरकवानां ५। स्वरदेवाना ६। लक्षणशरीरना सामुद्रादिकना ७। व्यंजनमसतिलकादि ८॥ आठप्रकारे वचननी विभक्ति कही ते निर्देशकता

सूलिधवीउ चेरीचेरीद्दित्ती विकृत्तिनाभहेश्रीत्तिइत्यादि ॥ ६ ॥ लक्षणस्तीपुरुपादीना यथा ॥ अस्थिष्वर्था सुखंमांसे त्वचिभोगा स्त्रियोक्षिषु गतीयानस्वरे चाज्ञा सर्व्वसत्वेप्रतिष्टित इत्यादि ॥ १ ॥ व्यञ्जन मषादि यथाललाटकेश प्रभुत्वायेत्यादि एतानि च शास्त्राणि वचनविभक्तियोगेना भिधेयप्रतिपादका नीतिवचनविभक्तिरूपमाह ॥ अठ्ठविहावयणविभत्तीत्यादि ॥ उच्यते एकत्वद्वित्वबहुत्वलक्षणोऽर्थोयैस्तानि वचनानि विभज्यन्ते कर्त्तृत्वकर्मत्वादिलक्षणोऽर्थो यया सा विभक्तिर्वचनात्मिका विभक्तिर्वचनविभक्ति ॥ सुग्रोजमित्यादि ॥ निद्देसेसिलोगो निर्देशन निर्देश' कर्मादिकारकशक्तिभिरनधिकस्य लिगार्थमा त्रस्य प्रतिपादन तत्र प्रथमाविभक्ति भवति यथा सवा अय वा आस्ते अहंवा आसे ॥ १ ॥ तथा उपदिश्यतइत्युपदेशनमुपदेशनक्रियाया यद्व्याप्य मुपलक्ष णत्वादस्या: क्रियाया यद्व्याप्यं तत्कर्मे त्यर्थ स्तत्र द्वितीया यथा भण इम स्लोक कुरुवा त ददाति त याति ग्राम ॥ २ ॥ तथा क्रियते येन तत्करण क्रियाम्प्र ति साधकतम करोतीति वा करण कर्त्ता कृत्यलुटोबहुलमितिवचनादिति तत्रकरणेतृतीया कृताभिहिता यथा नीत शस्य तेन शकटेन कृत कुडमये ति ॥ ३ ॥ तथासपदावर्णेत्ति ॥ सत्कृत्य प्रदाप्यते यस्मे उपलक्षणत्वा त्सप्रदीयते वा यस्मे तत्सम्प्रदापन सम्प्रदानं वा तत्र चतुर्थी यथा भिक्षवे भिक्षा दा पयति ददातिवेति सम्प्रदानस्योपलक्षणत्वादेव नम: स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषट्युक्ताच चतुर्थी भवति नम. शाखायैवैरादिकाये नम' प्रभृतियोगेपि केचि

वयणविभत्ती पसत्ता तजहा निद्देसेपढमाहोइ विइयाउवदेसणे तइयाकरणम्मिकया चउत्थीसपयावणे ॥ १ ॥

मात्रनुं बोलवुं तिहां प्रथमाविभक्ति १ । द्वितीया उपदेशे इद कुरुग्रामं याति घट ददाति २ । तृतीयाकरणे नेअर्थे निन्न शरेणरामेण रावण ३ । च तुर्थी सम्प्रदाने साधुने काजे दान आपेछे श्रीजिनायनम. ४ । अपादाने पचमी मूलकारणे पचमी बोलाय ग्रामात् आगता ५ । स्वामीनो अर्थबोले

त्सम्प्रदान मभ्युपगम्यतइति चतुर्थी ॥ ४ ॥ पंचमीति श्लोक' अपादीयते अपायतो विश्लेषत आमर्यादया दीयते दोअवखंडनइतिवचनात् खण्ड्यते भिद्यते आदीयतेवा गृह्यते यस्मात्तदपादानमवधिमात्रमित्यर्थः तत्र पचमी भवति यथा अपनयगृहाज्ञान्यमितो वा कुशूलात्गृहाणेति ॥ ५ ॥ छट्ठीसस्सामिवा यणेत्ति ॥ स्वस्य स्वामीच स्वस्वामिनो तयोर्वचनं प्रतिपादन तत्र स्वस्वामिसंबंधेइत्यर्थः षष्ठी भवति यथा तस्यास्यवा गतस्य चाय भृत्य. ॥ वायणेतीह प्राकृतत्वाद्दीर्घत्वं ॥ ६ ॥ सन्निधीयते क्रिया अस्मिन्निति सान्निधान माधारस्तदेवार्थ. सन्निधानार्थे स्तत्र सप्तमी विषयोपलक्षणत्वाद्यास्य काले भावेच क्रिया विशेषणे तत्र सन्निधाने तद्वतमिह पात्रे तत्समच्छदवनमिह शरदि पुष्यति पुष्पनक्रिया शरदा विशेषिता तत् कुटुम्बकमिह गवि दुह्यमानाया गतमिह गमनक्रिया गोदोहनभावेन विशेषितेति ॥ ७ ॥ अष्टम्यामंत्रणेभवेदिति ॥ सुत्रोजमिति ॥ प्रथमापीय विभक्तिरामंत्रणलक्षणस्यार्थस्य कर्मकरणादिवत् लिंगार्थमात्रातिरिक्तस्य प्रतिपादकत्वेनाष्टम्युक्ता यथा हेयुवन्निति श्लोकद्वयार्थ उदाहरणगाथास्तु व्याख्यातानुसारेण भावनीयाः ॥ तत्थमहा तइयागाहा ॥

पंचमीयअवायाणे छठीसस्सामिवायणे सत्तमीसन्निहाणत्थे अठमीआमंतणेभवे ॥ २ ॥ तत्थपढमाविभत्ती निद्देसेसोइमोअहवत्ती विइयाउणउवएसे भणकुणवइमंवतंवत्ती ॥ ३ ॥ तइयाकरणमिकया णीयंचकयचते

ते पष्टी राजानो पुत्र पुरुष सबंधे षष्ठी ६ । सप्तमीसन्निधाननेविषे वोलै पात्रने विषे देवुं इम ७ । अष्टमी आमंत्रणे कोईनेयादकरे ते हेगौतम तु सांभल वीरवाक्य २ । तिहांप्रथमा विभक्ती निर्द्देशे ते एहुलु १ । द्वितीया उपदेशें ते शास्त्रप्रते भणे कामप्रतें करें एहवूं वचन वोलवो २ । तृतीया करणे ते कीधो तेणे नमः स्वाहा स्वधा इतिवचने ३ ।-चतुर्थी आ थकी ग्रहे ४ । इहांथी लेपचमी अपादाने पष्ठीतेहने एहने अथवा स्वामिसंबंधे

॥ इह हदीति उपप्रदर्शने पयाणमिति संप्रदाने ॥ अवणेगाहा ॥ अवणेत्ति ॥ अपनयेत्यर्थः इदं चानुयोगदारानुसारेण व्याख्यात मादर्शेषुतु आमंतणेत्तिदृश्यते ॥
तत्र च स्यामंत्रणतया गमनीयं हेमनस्त्रिइत्यर्थः अथ वचनविभक्तियुक्तगास्तसंस्काराल्लिकिक्छमस्थासाचादृष्यार्थाविदति उच्यते नेत्याह ॥ अठ्ठाणेत्यादि ॥
व्याख्यात प्राक् नवरं यावत्करणात् अधम्मत्थिकाय जीवमसरीरपडिबद्ध परमाणुपग्गल सद्दमिति ॥ ६ ॥ द्रष्टव्यमिति एतान्येव जिनोजानातीत्या
हच ॥ एयाणीत्यादि ॥ सगम यथा धर्मास्तिकायादीन् जिनोजानाति तथा युर्वेदमपि जानाति सचाय ॥ अठविहेआओव्वेएत्यादि ॥ आयुर्जीवितं
तद्विदंति रचितु मनुभवन्ति चोपक्रमरक्षणेन विदन्ति वा लभन्ते यथाकाल तेन तस्मात्तस्मिन्वेत्यायुर्वेद श्चिकित्साशास्त्र तदष्टविध तद्यथा कुमाराणां

णवमएवा हंदिणमोसाहाए हवइचउत्थीपयाणंमि ॥ ४ ॥ अवणेगेरहसुतत्तो इतंतिवापंचमीअवादाणे छ
ठीतस्सइमस्सव गयस्सवासामिसबंधे ॥ ५ ॥ हवइपुणसत्तमीय इमंमिआधारकालभावेय आमंतणेभवेअ
ठमीयजहहेजुवाणत्ति ॥ ६ ॥ अठठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं नजाणइ नपासइ तजहा धम्मत्थिकाय
जाव गध वाय । एयाणिचेव उप्पन्ननाणदसणधरे अरहा जिणे केवली जाणइ पासइ जाव गंध वायं ।

होय ६ । वली सप्तमी तेहनेविषे एहनेविषे आधारे काले भावे एतलेठामे ७ । आमन्त्रणे होय अष्टमी जिम हेयुवान ८ ॥ आठथानके छद्मस्थ सर्व
भावेकरी नजाणे नदेखे ते कहेछे धर्मास्तिकाय यावत् गध वायरो ॥ एनिश्चे ऊपनाछे ज्ञानदर्शनना धणी जाणे देखे यावत् गध ॥ आठप्रकारे आयुर्वेद
कह्यो ते कहेछे बालकने स्तन्य दूधनोरोग तेहनाऔषध १ । ज्वरादिरोगग्रस्त कायानी चिकित्सा २ । शालाक्यशास्त्र ते कान नाक मुख आखना

बालकानां भृती पोषणे साधु: कुमारभृत्यं तद्धि तन्त्रंकुमारभरणक्षीरदोषसंशोधनार्थं दुष्टशून्यनिमित्तानां व्याधीनामुपशमनार्थं चेति ॥ १ ॥ कायस्य ज्वरादिरोगग्रस्तस्य चिकित्साप्रतिपादकं तन्त्र कायचिकित्सातन्त्र तद्धि मध्याङ्गसमाश्रितानां ज्वरातीसाररक्तशोषोन्मादप्रमेहकुष्टादीनां शमनार्थमिति ॥ २ ॥ शलाकाया: कर्म शालाक्य तत्प्रतिपादकं तन्त्र शालाक्य तद्धि ऊर्द्धयतुगतानारोगाणा श्रवणवदननयनघ्राणादिसंश्रितानामुपशमनार्थमिति ॥ ३ ॥ शल्यस्य हत्या हननमुद्धार. शल्यहत्या तत्प्रतिपादक तन्त्रमपि शल्यहत्येत्युच्यते तद्धि तृणकाष्टपाषाणपांशुलोहलोष्टास्थिनखप्रायोगान्तर्गतशल्योद्धरणार्थमिति ॥ ४ ॥ जागौलोति विषविघाततंत्रमगदतन्त्रमित्यर्थ तद्धि सर्पकीलादष्टविषविनाशार्थविविधविषसप्रयोगोपशमनार्थं वेति ॥ ५ ॥ भूतादीना निग्रहार्थं विद्यातन्त्रं भूतविद्या साहि देवासरगन्धर्व्वयक्षराक्षसपितृपिशाचनागग्रहाद्युपसृष्टचेतसा शान्तिकर्म बलिकरणादिग्रहोपशमनार्थमिति ॥ ६ ॥ क्षारतन्त्रमिति क्षरणं क्षार: शुक्रस्य तद्विषय तन्त्र यत् तत्तया इदहि सुश्रुतादिषु वाजीकरणतन्त्रमुच्यते अवाजिनोवाजीकरण रेतोवृद्धया अश्वस्येव करणमित्यनयो: शब्दार्थ: समएवेति तत्तत्र हि अल्पक्षीणविशुष्करेतसा आप्यायनप्रशादोपजननिमित्त प्रहर्षजननार्थमिति ॥ ७ ॥ रसोमृतरसस्तस्यायन प्राप्तीरसायन तद्विधाय

अट्ठविहे आउव्वेए पस्सत्ते तजहा कुमारभिच्चे कायतिगिच्छा सालाइ सल्लहत्ता जंगोली भूयविज्जा खारतंते रसायणे । सक्कस्सणंदेविंदस्सदेवरस्सो अट्ठअग्गमहिसीओ पस्सत्ताओ तजहा उत्रमा सिवा सूई अजू अमला

कीआना ३ । शल्यकाढवा अंतर्गतशल्यउधरवो ४ । विष टालवानांजपधशास्त्र ५ । भूतविद्या बलिप्रमुखदेवे भूतकाढवा ६ । क्षारसास्त्र ते लिंगवृद्ध्यादि वाजीकरण ७ । सोनु रूपु पारो मारवो रसायनकरवो ८ ॥ शक्र देवेंद्र देवताना राजाने आठ अग्रमहिषी कही ते कहेछे पदमा १ । शिवा २ । सू

स्थापनमायुर्मेधाकरणं रोगापहरणसमर्थं च तत्प्रतिपादकं शास्त्रं रसायनं तत्रमिति कृतरसायन स्य देववन्निरुपक्रमायुर्भवतीति देवप्रस्तावाद्देवानामष्टका न्याह तत्र ॥ सक्कस्सेत्यादि ॥ सूत्रपचक सुगम नवर महाग्रहा महार्थानर्थसाधकत्वादिति महाग्रहाश्च मनुष्यतिरश्चामुपघातानुग्रहकारिणो बादरवनस्प त्युपघातादिकारत्वेनेति बादरवनस्पतीनाह ॥ अठ्ठविहेत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ तणवणस्सइत्ति ॥ बादरवनस्पति कद. स्कन्धस्याध स्थुडमिति प्रतीतम्

अच्छरा णवमिया रोहिणी । ईसाणस्सणंदेविंदस्स देवरन्नो अठ्ठ अग्गमहिसीन पन्नत्ताउ तजहा कण्हा कण्हराई रामा रामरक्खिया वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुधरा । सक्कस्सणदेविंदस्स देवरन्नो सोमस्स म हारन्नो अठ्ठ अग्गमहिसीन पन्नत्ताउ । ईसाणस्सण देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो अठ्ठ अग्ग महिसीन पन्नत्ताउ । अठ्ठ महग्गहा पन्नत्ता चदे सूरे सुक्के बुहे वहस्सई अगारए सणिंचरे केऊ । अठ्ठवि हा तणवणस्सइकाइया पन्नत्ता तंजहा मूले कदे खधे तया साले पवाले पत्ते पुप्फे । चउरिंदियाणजीवा

चि ३ । अजू ४ । अप्सरा ६ । नवमिका ७ । रोहिणी ८ । ॥ ईशान देवेंद्र । देवताना राजाने आठ अग्रमहिषी कही तेकहेछे कृष्णा १ । कृष्णाराती २ । रामा ३ । रामरक्षिता ४ । वसु ५ । वसुगुप्ता ६ । वसुमित्रा ७ । वसुधरा ८ ॥ शक्रदेवेंद देवतानो राजा तेहना सोम महाराजाने आठ अग्रमहिषी कही तकहेछे ईशान देवेंद्र देवराजाना वैश्रमण महाराजाने आठ अग्रमहिषी कही । आठ मोटा ग्रहकह्या ते कहेछे चद्र १ । सूर २ । शुक्र ३ । बुध ४ । वृहस्पती ५ । मगल ६ । शनैश्चर ७ । केतु ८ ॥ आठ प्रकारे तृणवनस्पतिकाय कही तेकहेछे मूल १ । कद २ । खध ३ । छाल ४ । शाखा ५ ।

त्वक् छल्ली शाला शाखा प्रवाल मंकुरः पत्रपुष्पे प्रतीते एतदाश्रया श्चतुरिन्द्रियादयो जीवा भवंतीति चतुरिन्द्रिया नाश्रित्य सयमासंयमसूत्रे ते च प्रागिवे
ति सूक्ष्मा श्चय प्याश्रित्य संयमासयमौ स्तइति तान्याह ॥ अठ्ठमुहुमेत्यादि ॥ सूक्ष्माणि श्लक्ष्णचा दल्पाधारतयाच तत्र प्राणसूक्ष्म मनुद्धरिः कुंथु सहि चल
न्नेर विभाव्यते नस्थितः सूक्ष्मत्वादिति ॥ १ ॥ पनकसूक्ष्म पनकउल्ली सच प्रायः प्रावृट्काले भूमिकाष्ठादिषु पंचवर्ण स्तद्द्रव्यलीनो भवति सएव सूक्ष्ममि
ति एव सर्वत्र ॥ २ ॥ तथा बीजसूक्ष्म शाल्यादिबीजस्य मुखमूले कणिकालोकेयातुषमुखमित्युच्यते॥ ३ ॥ हरितसूक्ष्म मत्यन्ताभिनवोद्भिन्नं पृथिवीसमानवर्ण
हरितमेवेति ॥ ४ ॥ पुष्पसूक्ष्म च वटोदुम्बराणा पुष्पाणि तानि तद्वर्णानि सूक्ष्माणीति नलक्ष्यते ॥ ५ अंडसूक्ष्म मक्षिकाकीटिकाग्रहकोकिलाब्राह्मणीकक

असमारम्भमाणस्स अठविहे संजमे कज्जइ तजहा चक्कुमाउसोक्खाउ अववरोवेत्ता ज्ञवइ चक्कुमएणंदुक्केणं असंजोएत्ता ज्ञवइ एव जाव फासामाउसोक्खाउ अववरोवेत्ता ज्ञवइ फासामएणदुक्केणं असजोएत्ता ज्ञवइ चउरिदियाणंजीवा समारम्भमाणस्स अठविहे असजमे कज्जइ तजहा चक्कुमाउसोक्खाउ ववरोवेत्ता ज्ञवइ चक्कुमएणं दुक्केण सजोएत्ता ज्ञवइ एव जाव फासामाउसोक्खाउ॥ अठ सुहुमा पन्नत्ता तजहा पाणसुहुमे

प्रवाल ६ । पत्र ७ । फूल ८ ॥ चउरिंद्री जीव समारंभ नकरे तेहने आठप्रकारें संजम करे तेकहेछे आंखना सुखथी अलगो नकरे ते संजम १ । आं
खना दुखसाथे नजोडु नकरे २ । इम यावत् फरसना सुखथी मूकावे नही चक्षुइन्द्रीनादुखे जोडे नही । चउरिंद्रीना जीवनो समारंभ करे ते आ
ठप्रकारे असंजम करे आखना सुखथी मूकावे तहा आखना दुखसाथे युक्त करे इम यावत् फरसनेंद्रीना सुखथी ॥ आठ सूक्ष्म कह्या ते कहेछे प्रा

लाशावडकमिति ॥६॥ संयममूक्ष्मं लयन माश्रय. सत्वाना तच कोटिकानगरकादि तत्र कीटिकाद्यान्ये च सूक्ष्माः सत्वा भवन्तीति ॥ ७ ॥ स्नेहसूक्ष्ममव श्यायहिममिहिकाकरकहरतनुरूपमिति ॥८॥ अनन्तरोक्तसूक्ष्मविषयसंयममासेव्य येऽष्टकतया सिद्धा स्तानाह ॥ भरहस्सेत्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तु ॥ पुरिसजु गाइति ॥ पुरुषायुगानीव कालविशेषाइव क्रमप्रवृत्तित्वात् पुरुषयुगानि अनुबद्धं सततं यावत्कारणात् बुज्झइमुच्चइपरिनिव्वुडाइति एतेषा चादित्ययश प्र भृतीनामिहोक्तक्रमस्या न्यथात्व मप्युपलभ्यते तथाहि रायाआइच्चजसे महाजसेअइबलेयबलभद्दे बलविरियकत्तविरिये जलविरियेदंडविरियेयत्ति ॥ १ ॥ इह चान्यथात्व मेतस्यापि नामान्तरभावा द्वाथानुलोम्याच संभाव्यतइति संयमवदधिकारात्संयमवतामेवाष्टकान्तरमाह ॥ पासेत्यादि॥ व्यक्त किन्तु ॥ पुरि सादाणीयस्सत्ति ॥ पुरुषाणा मध्ये आदीयतइत्यादानीय उपादेयइत्यर्थं गणा एकक्रियायाचनाना साधूना समुदायाः गणधरा स्तन्नायका आचार्या. भ

पणगसुहुमे वीयसुहुमे हरियसुहुमे पुप्फसुहुमे अंडगसुहुमे लेणसुहुमे सिणेहसुहुमे । भरहस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठपुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइंजाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं तंजहा आइच्चजसे महाजसे अइबले महाबले तेयवीरिए कित्तवीरिए दंडवीरिए ॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठगणा अट्ठ

गसूक्ष्म १ । पनक नीलफूलि सूक्ष्म २ । बीजसूक्ष्म ३ । हरितकाय सूक्ष्म ४ । फूलसूक्ष्म उबरना ५ । अंडसूक्ष्म ६ । कीडीनगरा तेहमा कीडीसूक्ष्म ७ । स्नेह सूक्ष्म हिम धूअर हिमप्रमुख ८ ॥ भरतराजा चातुरंतचक्रवर्त्तिने आठ पुरुष पाटे संतान पुन सिद्ध थया यावत् सर्वदुखथी मूकाणा ते कहेछे आदित्ययस१ । महायस २ । अतिबल ३ । महाबल ४ । तजोवीर्य ५ । कीर्त्तिवीर्य ६ । दंडवीय ७ । जलवीर्य ८ ॥ पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादाणीने आठ

गवत: स।तिशयानन्तरशिष्या: आवश्यकेतूभयेपि दृश्यन्ते दसनवगगणाणम।णंजिणिंदाणमितिवचनात् जावइयाजस्सगणा तावइयागणहरातस्सेत्ति ॥ वचनाच्च तदिह त्वायुष्कत्वादिक कारणमपेक्ष्य द्वयो रविवक्षणमिति सभाव्यते नचाष्टस्थानकानुरोधइहसमाधानं वक्तु शक्यते पर्युषणाकल्पेप्यष्टानामेवा भिधानादिति गणधराद्यदर्शनवतइति दर्शननिरूपयन्नाह ॥ अट्ठविहेदंसणेत्यादि ॥ कण्ठ्य केवल स्वप्नदर्शनस्याचक्षुर्दर्शनातर्भावेपि सुप्तावस्थोपाधितोभेदो विवक्षितइति सम्यग्दर्शनादेश्च स्थितिप्रमाण मौपम्याद्वयाभवतीति तांप्ररूपयन्नाह ॥ अट्ठविहेअद्धोवमिएत्यादि ॥ सुगम नवर औपम्यमुपमा पल्यसागररूपा तत्प्रधाना श्रद्धा काल अद्धौपम्यं राजदन्तादिदर्शनात् पल्येनोपमायनकाले परिमाणत: सपल्योपम रूढितोनपुंसकलिंगता एवं सागरोपममवसर्पि ण्यादीनातु सागरोपमनिष्पन्नत्वादुपमाकालत्व भावनीय समयादिशीर्षप्रहेलिकात कालो ऽनुपमाकालइति कालाधिकारादिदमपरमाह ॥ अरहओइत्या

गणहरा होत्था तंजहा सुभे अज्जघोसे वसिट्ठे बंभचारी सोमे सिरिधरे वीरिए भद्दजसे । अट्ठविहे दंसणे पन्नत्ते तजहा सम्मद्दसणे मिच्छदसणे सम्मामिच्छदसणे चक्खुदसणे जाव केवलदंसणे सुविणदसणे । अट्ठ विहे अद्धोवमिए पन्नत्ते तंजहा पलिओवमे सागरोवमे ओसप्पिणीए उस्सप्पिणी पोग्गलपरियट्टे तद्धा अणा

गण तेगच्छ आठ गणधर थया तेकहेछे शुभ १ । आर्यघोष २ । वशिष्ठ ३ । ब्रह्मचारी ४ । सोम ५ । श्रीधर ६ । वीर्य ७ । भद्रयस ८ ॥ आठप्रकारे दर्शन कह्यो तेकहेछे समकितदर्शन १ । मिथ्यादर्शन २ । सम्माभिथ्यादर्शन ३ । चक्षुदर्शन ४ । यावत् केवलदर्शन ७ । स्वप्नदर्शन ८ ॥ आठप्रकारें कालनी उप मितउपमा पल्योपम १ । सागरोपम २ । उत्सर्पिणी ३ । अवसर्पिणी ४ । पुद्गलपरावर्त्त ५ । अतीतकाल ६ । अनागतकाल ७ । सर्वकाल ८ ॥ अरिहत

॥ टं

दि ॥ जावअट्ठमाओत्ति ॥ अष्टमं पुरुषयुगं अष्टमपुरुषकाल यावत् युगान्तकरभूमि' पुरुषलक्षणयुगापेक्षया ऽन्तकराणां भवक्षयकारिणां भूमि' काल' सा आसीदिति इदमुक्तंभवति नेमिनाथस्यशिष्यप्रतिशिष्यक्रमेणा ष्टौ पुरुषान् याव न्निर्वाणं गतवन्तो नपरत इति तथा पर्यायापेक्षयाप्यन्तकरभूमिप्रसगा दु च्यते ॥ दुवासेत्ति ॥ द्विवर्षमात्रे केवलिपर्याये नेमिनाथस्य जातेसति साधवो भवान्त मकार्षुरिति तीर्थंकरवक्तव्यताधिकारा दिदमाह ॥ समणेणमित्या दि ॥ सुगम नवर ॥ भवित्तत्ति ॥ अंतर्भूतकारितार्थत्वात् मुंडान्भावयित्वेतिदृश्य ॥ वीरंगएइत्यादि ॥ तहसखेकासिवद्धणए ॥ इत्येव चतुर्थपादे सति गाथा भवति नचैव दृश्यते पुस्तकेष्विति एतेच यथा प्रव्राजिता स्तथोच्यन्ते तत्र वीरागको वीरयशा' संजयइत्येते प्रतीता एणेयको गोत्रत: सच केतवर्धजनपद श्वेतवीनगरीराजस्य प्रदेशिनाम्न: श्रमणोपासकस्य निजक: कश्चिद्राजर्षि स्तथा सोय मामलकल्पा नगर्या: स्वामी यस्यांहि सूर्याभो देव सौधर्म्मादिवलो

॥ मू

गयच्छा सच्छा । अरहत्ताण अरिठ्ठनेमिस्स जाव अठ्ठमाउ पुरिसजुगाउ जुगतगरभूमी दुवासपरियाए अत मकासी । समणेण भगवया महावीरेण अठ्ठरायाणो मुंडाभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वाविया तजहा वीरगयवीरजसे संजयएणिज्जएयरायरिसी सेयसिवेउदायणे तहसंखेकासिवद्धणए ॥ १ ॥ अठ्ठविहे आहारे

॥ भा

अरिष्टनेमिने यावत् आठ पुरुष प्रधानलगे जुगतरभूमि थई मोक्षपोहता नेमनाथ केवली थया पछी १२ वरसे साधुमोक्षजाताथया । श्रमणभगवत माहावीरे आठराजा मुंडकरी गृहस्थावास मूंकावी दीक्षा दीधी ते कहेछे वीरगक १ । वीरजस २ । सजत ३ । प्रदेशीराजानो गोत्रियो नेयक राज ऋषि ४ । स्वेत ५ । शिव ६ । उदायन ७ । शख कासीदेशनो ८ ॥ आठप्रकारनो आहार कह्यो ते कहेछे मनोज्ञ अशन १ । पान २ । खादिम ३ ।

का भगवती महावीरस्य वदनार्थ मवततार नाट्यविधिञ्च उपदर्शयामास यत्रच प्रदेशिराजचरितं भगवता प्रत्यपादीति तथा शिवो हस्तिनागपुरराजो योऽन्येकदा चितयामास अहं मनुदिन हिरण्यादिना वृद्धिसुपगच्छामि यत स्तत: पुराकृतकर्म्मणा फलमतो ऽधुनापि तदर्थमुद्यच्छामीति ततो व्यवस्थाप्य राज्ये पुत्र कृत्वा उचितमखिलकर्त्तव्यं दिक्प्रोक्षकतापसतया प्रवव्राज तत: षष्ठं षष्ठेन तपस्यत स्तथोचितमातापयत: परिशटितपत्रादिना पारयतोविभंग ज्ञानमुत्पेदे तेनच विलोकयाचकार सप्त द्वीपा न्सप्तसमुद्रानिति उत्पन्नंच मे दिव्यज्ञानमित्यवष्टंभा दागत्य नगरे बहुजनस्य यथोपलब्ध तत्त्वसुपदिदेश तदा च तत्र भगवान् विजहार गौतमश्च भिक्षा भ्राम्यन् जनाच्छिवप्ररूपणा शुश्राव गत्वाच भगवन्त पप्रच्छ भगवा स्त्वसख्येयान् द्वीपससुद्रान् प्रज्ञापयामास भगवद्वचनच जना च्छ्रुत्वा शिव: शकित स्तत स्तस्य विभंग: प्रतिपपात ततो सौ भगवति जातभक्ति र्भगवत्समीप जगाम भगवता प्रकटितात्ततो जातसर्व ज्ञप्रत्यय: प्रवव्राज एकादश चांगानि पपाठ सिद्धश्चेति तथो दायन: सिंधुसौवीरादीनां षोडशानां जनपदाना वीतभयप्रमुखाणा नयाणा त्रिषष्ट्यधिकानां नगरशताना दशाना च मुकुटबद्धाना राज्ञा स्वामी श्रमणोपासक: येन चडप्रद्योतमहाराज उज्जयिनीं गत्वो भयबलसमक्ष रणांगणे रणकर्मकुशलेन करि वरगिरे र्निपात्य बद्धो मयूरपिच्छेन ललाटपट्टे ऽकित श्च तथा ऽभिजिन्नामानं स्नेहानुगतानुकंपया राज्यगृद्धोयं मादुर्गति यासीदिति भावयता स्वपुत्र राज्ये अव्यवस्थाप्य केशिनामानच भागिनेय राजानं विधाय महावीरसमीपे प्रवव्राज यश्चैकदा तत्रैव नगरे विजहार उत्पन्नरोगश्च वैद्योपदेशा द्दधि बुभुजे राज्यापहाराशकिनाच केशिराजेन विषमिश्रदधिदापनेन पचत्व गमित: यत् गुणपक्षपातिन्याच कुपितदेवतया पाषाणवर्षेण कुंभकारशय्यातरवर्ज सर्व तन्नगर न्यधानीति तथा शङ्ख: काशीवर्द्धनो वाराणसीनगरीसर्वविधिजनपदवृद्धिकरइत्यर्थ: अयच नप्रतीत: केवल मलकाभिधानो राजा वाराणस्यां भगवता प्रव्राजितो ऽतकृद्दशासु श्रूयते स यदि पर नामातरेणाय भवतीति एतेचा ष्टाराद्दीमनोज्ञामनोज्ञे समवृत्तय इतिप्रस्तावा दाहारस्वरूपमाह ॥ अट्ठविहे

त्यादि ॥ सुगमं आहारद्रव्याणि रसपरिणामविशेषवं त्यमनोज्ञा न्यमंतर मुक्ता न्यथ क्षेत्रविशेषान् पुद्गलगतवर्णपरिणामविशेषवलेना मनोज्ञान् कृष्णरा जाभिधानान् प्रतिपादयन् सूत्रपचकमाह ॥ उप्पिंइत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ उप्पिंति ॥ उपरि ॥ हव्विति ॥ अधस्ता ब्रह्मलोकस्य रिष्टाख्यो यो विमानप्रस्तट स्तस्येतिभाव: आखाटकव त्सम तुल्यं सर्वासु दिक्षु चतुरस्त्र चतुष्कोणं यत्सस्थाम माकारस्तेन सस्थिता आखाटकसमचतुरस्त्रसस्थानसस्थिता' कृष्णराजय: कालकपुद्गलपताय स्तद्युक्तक्षेत्रविशेषा अपि तथोच्यन्तइति यथाच ता व्यवस्थितास्तथा दर्श्यंते ॥पुरच्छिमेणंति॥ पुरस्ता त्पूर्वस्यांदिशीत्यर्थ: द्वेकृष्णराजी एव मन्यास्वपि द्वेद्वे तत्र प्राग्भनीयका अभ्यंतराकृष्णराजी सा दाक्षिणात्या बाह्यां ता स्पृष्टा स्पृष्टवती एव सर्वाअपि वाच्या स्तथा पौरस्त्यपाश्चात्ये द्वे बाह्ये कृ

पण्णत्ते तंजहा मणुण्णे असणे पाणे खाइमे साइमे अमणुण्णे असणे पाणे खाइमे साइमे । उप्पिं सणंकुमार माहिंदाण कप्पाण हेठि बंभलोएकप्पे रिठेविमाणपत्थडे एत्यण अक्खाडगसमचउरससठाणसंठियाउ अठ कण्हराईउ पण्णत्ताउ तजहा पुरच्छिमेण दोकण्हराईउ दाहिणेण दोकण्हराईउ पच्चत्थिमेणदोकण्हराईउ

स्वादिम ४ । अमनोज्ञअशन पान खादिम स्वादिम । उचु सनत्कुमार माहेंद्र देवलोकें हेठो ब्रह्मदेवलोकने रिष्टविमानने पाथडे प्रेक्षणा आखाडक समचतुरस्त्रसस्थानसस्थितथी आठ कृष्णराजी कही ते कहेछे पूर्वदिशे बेकृष्णराजीछे दक्षिणादिशेबे पश्चिमदिशे बे उत्तरदिशे बे कृष्णराजी पूर्वदिशि नी अभ्यतर कृष्णराजी दक्षिणनी बाहिरली कृष्णराजी प्रतिफरसीछे दक्षिणनी अभ्यतरनी कृष्णराजी पश्चिमनी बाहिरली कृष्णराजीप्रते फरसीछे प श्चिमनी अभ्यतरनी कृष्णराजी उत्तरनी बाहिरली कृष्णराजी प्रतेफरसीछे उत्तरनी अभ्यंतरकृष्णराजी पूर्वनीबाहिरलीकृष्णराजी फरसीछे पूर्वपश्चिमनी बा

ण्णराजी षडस्रे षट्कोटिके उत्तरादाक्षिणात्ये द्वे बाह्ये कृष्णराज्यौ ऽस्रे सर्वा अतस्रोपीलर्यौ ऽभ्यंतरा चतुरस्रा नामान्येव नामधेयानि कृष्णराजी कृष्णपुद्ग लपक्तिरूपत्वादिति रूपप्रदर्शने वा विकल्पे मेघराजीवया सा मेघराजीतिवा भिधीयते कृष्णत्वात् तथा मघा षष्टपृथिवी तद्वदिति कृष्णतया सा मेवेति मा घवती सप्तमपृथिवी तद्वत् या सा माववतीतिवा वातपरिघादीनितु तमस्कायसूत्रवत् व्याख्येयानीति एतासां मष्टानां कृष्णराजीनां मष्टस्ववकाशांतरेषु

उत्तरेणंदोकरहराईओ पुरच्छिमाअप्रांतराकरहराईदाहिणंबाहिरंकरहराइंपुठा । दाहिणाअप्रांतराकरहराईपच्च त्थिमंबाहिरकरहराइंपुठा । पच्चच्छिमाअप्रांतराकरहराइउत्तरांबाहिरकरहराइंपुठा । उत्तराअप्रांतराकरह राई पुरच्छिमंबाहिरकरहराइंपुठा पुरच्छिमिल्लाओबाहिराओदोकरहरातीओछलसाओ उत्तरदाहिणाओबाहिरा ओदोकरहराईओतसाओ सव्वाओविणं अप्रांतरकरहराईओचउरसाओ । एयासिणअठरहं करहराईणं अठ नाम धेज्जा पन्नत्ता तंजहा करहराईतिवा मेहराईतिवा मघातिवा माघवईतिवा वातफलिहेतिवा वातफलि खोभेतिवा देवफलिहेतिवा देवफलिखोभेतिवा । एयासिण अठरह करहराईणंअठसु उवासतरेसु अठ

हिरली बे कस्नराजी छ अंशानी छे उत्तरदक्षिणनी बाहिरली बेकस्नराजी त्र्यशछे सघलीथी माहिली कस्नराजी चोरंसछे ॥ एआठु कस्नराजीनां आठ नामछे तेकहेछे कस्नराजीकहीये १ । मेघराजीकहीये २ । मघा कहिये ३ । माघवती कहिये ४ । वातफलिहा कहिये ५ । वातफलिखोभा कहिये ६ । देवफलिहा कहिये ७ । देवफलिखोभा कहिये ८ ॥ एआठु कस्नराजीने आठ आतरे आठ लोकातिके आठ लोकांतिक विमान कह्या ते कहेछे

राजीद्वयमध्यलचणे ष्वष्टौ लोकांतिकविमानानि भवंति एतानि चैव प्रज्ञप्ता सुच्यन्ते अभ्यन्तरपूर्वाया अग्रे ऽर्चिर्विमानं तत्र सारस्वता देवाः पूर्वयोः कृष्णारा ज्यो र्मध्ये अर्चिमालीविमाने आदित्या देवा अभ्यंतरदचिणाया अग्रे वैरोचने विमाने वन्हयो दचिणयो र्मध्ये शुभङ्करे वरुणा अभ्यन्तरपश्चिमाया अग्रे चं द्राभे गर्द्दतोया अपरयो र्मध्ये सुराभे तुषिता अभ्यन्तरोत्तरा अग्रे ऽग्न्याभे अव्याबाधा उत्तरयो र्मध्ये सुप्रतिष्टाभे आग्नेया. बहुमध्यभागे रिष्टाभे विमाने रिष्टादेवा इतिस्थापना चैव ॥ अजहन्नमणुक्कोसेणंति ॥ जघन्यत्वोत्कर्षाभावेनेत्यर्थः ब्रह्मलोके हि जघन्यतः सप्तसागरोपमाणि उत्कर्षतस्तु दशेति लोकांति कानां त्वष्टाविति कृष्णराजयो र्ब्रह्मलोकस्य मध्यभागवृत्तयइति धर्मादीना मपि मध्यभागवृत्तिकस्याष्टकचतुष्टयस्याभिधानाय सूत्रचतुष्टय ॥ अठ्ठ

लोगंतियविमाणा पत्ता तंजहा अच्ची अच्चिमाली वइरोयणे पभंकरे चदाभे सुराभे सुपइठाभे अग्गि च्चाभे। एएसिणं अठसु लोगतियविमाणेसु अठविहा लोगतिया देवा पण्णत्ता तजहा सारस्सयमाइच्चा वण्हीवरुणायगद्दतोयाय तुसियाअव्वाबाहा अग्गिच्चाचेववोधव्वा ॥ १ ॥ एएसिण अठविहाण लोगति याणदेवाण अजहण्णमणुक्कोसेणं अठसागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता । अठ धम्मत्थिकायमज्झप्पएसा पण्णत्ता

अर्चि १। अर्चिमाली २। वैरोचन ३। प्रभंकर ४। चद्राभ ५। सूराभ ६। सुप्रतिष्टाभ ७। अग्गिच्चाभ ८ ॥ ए आठ लोकांतिकविमानने विषे आठ प्रकारना लोकांतिक देव कह्या तेकहेछे सारस्वत १। आदित्य २। वह्नि ३। वरुण ४। गर्द्दतोय ५। तुसित ६। अव्याबाध ७। अग्गिच्च ८। जाणवा ॥ १ ॥ ए आठ लोकांतिकदेवताने जघन्य उत्कृष्टो सरखोज आठ सागरोपमनो आउखो कह्यो ॥ आठ धर्मास्तिकायना मध्यप्रदेश कह्या

मेत्यादि ॥ स्फुटं नवरं धर्माधर्माकाशानां मध्यप्रदेशास्ते अष्ट येच रुचकरूपा इति जीवस्यापि केवलिसमुद्घाते रुचकस्थाएव ते अन्यथा त्वष्टावधिच तायें ते मध्यप्रदेशाः शेषा स्त्वावर्त्तमानजलमिवा नवरतमुद्वर्त्तनपरिवर्त्तनपरा स्तत्स्वभावत्वात् ये ते ऽमध्यमप्रदेशाइति जीवमध्यप्रदेशादिपदार्थप्रतिपादका स्तीर्थकरा भवतीति प्रकृताध्ययनावतारिणीं तीर्थकरवक्तव्यता सूत्रद्वयेनाह ॥ अरहाणमित्यादि ॥ सुगम नवर ॥ महापउमेत्ति ॥ महापद्मो भविष्यदुत्सः र्पिण्या प्रथमतीर्थकरः श्रेणिकराजजीवइति इहैव नवस्थानके वक्ष्यमाणव्यतिकरइति ॥ मुंडाभवित्तत्ति ॥ मुडान् भावयित्वेति कृष्णाग्रमहिषीवक्तव्यता त्वतकृद्दशाङ्गा दवसेया साचेय किल द्वारकावत्या कृष्णो वासुदेवो बभूव पद्मावत्यादिका स्तस्य भार्या अभूवन् अरिष्टनेमि स्तत्र विहरतिस्म कृष्णः सपरिवार

अठ अहम्मत्थिकायमज्झप्पएसा पन्नत्ता । अठ आगासत्थिकायमज्झप्पएसा एवंचेव । अठ जीवमज्झप्प एसा पन्नत्ता । अरहाणमहापउमे अठरायाणो मुंडाभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वावेइति तंजहा पउ मं पउमगुम्मं नलिन नलिनगुम्मं पउमद्धय धणुद्धय कणगरह भरह । कण्हस्सणवासुदेवस्स अठ अग्गमहि सीओ अरहओण अरिठनेमिस्स अंतियमुंडाभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता सिद्धाओ जाव सव्वदुक्ख

आठ अधर्मास्तिकायना इमज ॥ आठ आकाशास्तिकायना इमज ॥ आठ जीवना मध्यप्रदेश कह्या ॥ अरिहंत महापद्म आठ राजाने मुंडकरी गृ हस्थावास मूकावी अणगारपणे दीक्षादेशें तेकहेछे पद्म १ । पद्मगुलम २ । नलिन ३ । नलिनगुलम ४ । पद्मरथ ५ । धनुरथ ६ । कनकरथ ७ । शरत रथ ८ ॥ कृष्णवासुदेवनी आठ अग्रमहिषी अरिहंत अरिष्टनेमने पासे मुंडथई गृहस्थावासथी अणगारपणु लीधो लेईनें सिद्धगई यावत् सर्वदुखथी

पद्मावतीप्रमुखाश्च देव्यो भगवन्तं पर्युपासामासिरे भगवांश्च तेषां धर्ममाचख्यौ ततः कृष्णो वंदित्वाऽभ्यधात् अस्या भदंत द्वारिकायाः द्वादशनवयोजना यामविस्तारायाः धनपतिमतिनिर्मितायाः प्रत्यक्षदेवलोकभूतायाः किंमूलको विनाशो भविष्यति भगवान् त्रिभुवनगुरु र्जगाद सुराग्निद्वीपायनमुनिमूलको विनाशो भविष्यतीति निशम्य मधुमथनो मनस्येवं विभावितवान् धन्यास्ते प्रद्युम्नाद्यो ये निष्क्रान्ता अहं मधन्यो भोगमूर्च्छितो न शक्नोमि प्रव्रजितुमिति ततस्तन्मनो ऽवादीत् भो कृष्ण न भवत्ययमर्थो यद्वासुदेवाः प्रव्रजंति कृतनिदानत्वात्तेषां मयाहं भदंत कोत्पत्स्ये भगवान्विभु राह दग्धायां पुरि पांडुमथुरायां प्रतिचलितः कौशाम्बकानने न्यग्रोधस्याधःसुप्तो जराकुमाराभिधानभ्रात्रा काण्डेन पादे विद्धः कालं कृत्वा वालुकाप्रभायामुत्पत्स्यसे एव निशम्य यदुनंदनो दीनमनोवृत्ति रभवत्ततो जगद्गुरु रगादीन्मादैन्यं व्रज यतस्तत स्त्वमुद्वृत्य आगमिन्यामुत्सर्पिण्यां भारते वर्षे ऽममाभिधानो द्वादशो र्हन् भविष्यसी ति श्रुत्वा जहर्ष सिंहनादादिकं चकार ततो जनार्दनो नगरीं गत्वा घोषणां कारयांचकार यद्भगवताऽर्हता नेमिनाथेनास्या नगर्या विनाशः समादिष्टस्त तो यः कोपि तत्समीपे प्रव्रजति तस्याहं निष्क्रमणमहिमानं वितनोमीति निशम्य पद्मावती प्रभृतिका देव्यो ऽवादिषु र्वयं युष्माभि रनुज्ञाताः प्रव्रजामस्त तस्ताः महान्तं निष्क्रमणमहिमानं कृत्वा नेमिजिननायकस्य शिष्यिकात्वेन दत्तवान् भगवांस्ताः प्राव्राजितवान् ताश्चतुर्विंशतिवर्षाणि प्रव्रज्यापर्याय परिपाल्य मासिक्यासंलेखनया चरमोच्छ्वासनिश्वासाभ्यां सिद्धा इति एताश्च सिद्धा वीर्यादिति वीर्याभिधायिनः पूर्वस्य स्वरूपमाह ॥ वीरियपुव्वेत्यादि ॥

प्पहीणाउ तंजहा पउमावईयगोरी गधारीलक्खणासुसीमाय जबूवईसच्चभामा रुप्पिणीअग्गमहिसीउ ॥ १ ॥

मूंकांणी तेकहेछे पद्मावती १। गोरी २। गधारी ३। लक्ष्मणा ४। सुसीमा ५। जबूवती ६। सत्यभामा ७। रूपिणी ८। कृष्णनी आठ अग्रमहि

वीर्यप्रवादाख्यस्याष्टतीयपूर्वस्य वस्तूनि मूलवस्तूनि अध्ययनविशेषा आचारब्रह्मचर्याध्ययनवत् चूलावस्तूनित्वाचाराग्रवदिति वस्तुवीर्याद्येव गतयोपि भवती ति तान् दर्शयन्नाह ॥ अठ्ठगईओइत्यादि ॥ सुगमं नवर ॥ गुरुगइत्ति ॥ भावप्रधानत्वा न्निर्देशस्य गौरवेण जर्ध्वाधस्तिर्यग्गमनस्वभावेन या परमाण्वादीनां स्वभावतो गति' सा गुरुगतिरिति यातु परप्रेरणा त्सा प्रणोदनगति र्वाणादीनामिव यातु द्रव्यांतराक्रान्तस्य सा प्राग्भारगति र्यथा नावादेरधोगति रिति अनन्तर गति रुक्तेति गतिमतीना गंगादिनदीना अधिष्टातृदेवीद्वीपस्वरूपमाह ॥ गंगेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर गंगाद्या भरतैरवतनद्य स्तदधिष्ठात्र्य देवीनां निवासद्वीपा गंगादिप्रपातकुण्डमध्यवर्त्तिनो द्वीपाधिकारा दन्तरद्वीपसूत्र ततएव द्वीपपत: कालोदसमुद्रस्य प्रमाणसूत्रं तदनन्तरभाविन: पुष्करा भ्यन्तरार्द्धस्य बाह्यार्द्धस्यच सूत्रे सुगमानि चैतानि नवर मुल्कामुखमेघमुखविद्युन्मुखविद्युद्दन्तशब्देषु प्रत्येकं द्वीपशब्द: सम्बध्यते तत श्चोल्कामुखद्वीपाद

वीरियपुव्वस्सणं अठ्ठ वत्थू अठ्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता । अठ्ठ गईओ पण्णत्ताओ तंजहा निरियगई तिरियगई जाव सिद्धिगई गुरुगई पणोल्लणगई पब्भारगई । गंगासिंधुरत्तारत्तवईदेवीण दीवा अठ्ठजोयणाइं आया मविक्खंभेण पण्णत्ता उक्कामुह मेहमुह विज्जुमुह विज्जुदंतदीवाणदीवा अठ्ठअठ्ठजोयणसयाइं आयामवि

पी ॥ वीर्यपूर्वनी आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कही ॥ आठ गति कही तेकहेछे नरकगति यावत् सिद्धनी गति गुरुगति परमाणुनी प्रणोदनगति प्रे रणाथी चाले प्राग्भारगति द्रव्यने भारोनावनी अधोगति ॥ गंगा १ । सिंधु २ । रक्ता ३ । रक्तवती ४ । देवीना द्वीप आठ आठ योजन लांबा पोहला कहिआ ॥ उल्कामुख मेघमुख विद्युन्मुख विद्युद्दंत द्वीपना द्वीप आठ आठ से योजन लांबा पोहला कह्या कालोदधिसमुद्र आठलाख योजन चक्र

१० ॥
१५ ॥

यो णमित्यलङ्कारे द्वीपा हिमवत शिखरिणश्च वर्षधरपर्वतस्य पूर्वयो दंष्ट्रयो रपरयोश्च सप्तानां सप्ताना मंतरद्वीपाना मध्ये षष्ठों ऽतरद्वीपो ऽष्टाव ष्टौ योजनशतानि आयामविष्कम्भेण प्रज्ञप्तः॥ पुष्करार्द्धेच चक्रिणो भवतीति तत्सत्करत्नविशेषस्या ष्टस्थानके वतारं कुर्वन्नाह ॥ एगमेगेत्यादि ॥ एकैकस्य राज्ञ श्चतुरंतचक्रवर्त्तिन इत्यत्रान्यान्यकालोत्पन्नाना मपि तुल्यकाकिणीरत्नप्रतिपादनार्थं मेकैकग्रहण निरुपचरितराजशब्दविषयज्ञापनार्थं राजग्रहणं षट्खंडभरतादिभोक्तृत्वप्रतिपादनार्थं चतुरंतचक्रवर्त्तिग्रहणमिति अष्टसौवर्णिक काकिणिरत्नं सुवर्णमान तु चत्वारि मधुरतृणफला न्येकः श्वेतसर्षप षोड श श्वेतसर्षपा एक धान्यमाषफल द्वेधान्यमाषफले एकागुञ्जा पचगुञ्जा एक कर्ममाषक. षोडश कर्ममाषका एकःसुवर्ण एतानिच मधुरतृणफलादीनि भरतकालभावीनीति गृह्यंते यतः सर्वचक्रवर्त्तिना तुल्य मेव काकिणिरत्नमिति षट्तल द्वादशास्त्रि अष्टकर्णिक अधिकरणीसंस्थित प्रज्ञप्तमिति तत्र तलानि मध्यखंडानि अस्त्रयः कोटयः कर्णिकाः कोणविभागा अधिकरणिः सुवर्णकारोपकरणं प्रतीतमेवेति इदंच चतुरंगुलप्रमाण चउरंगुलप्पमा

खंभेणं पन्नत्ता । कालोदेणं समुद्दे अट्ठजोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते । अब्भिंतर पुक्खरद्धेण अट्ठजोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खंभेण पन्नत्ते । एववाहिरपुक्खरद्धेवि । एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्क वट्टिस्स अट्ठ सोवन्निए काकिणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकन्निए अधिकरणिसंठिए पन्नत्ते । माग

वालपिहुलपणे कह्यो ॥ माहिलो पुष्करार्द्ध द्वीप आठलाखयोजन चक्रवालपिहुलपणे कह्यो॥ इम बाहिरलो पुष्करार्द्धपणि ॥ एकएकराजा चातुरंत चक्रवर्त्तिने आठ सुवर्णनी जातिनु कागिणीरत्न छतल मध्यखंड बारकोटि पाखडीरूप आठकर्णिका खूणा अधिकरण ते सोनारनी निहाई होयछे तेहने

गासुवणवरकागिणीनेयत्ति ॥ बचना दित्यंगुलप्रमाणनिष्पन्नं योजनमान माह ॥ मागहेत्यादि ॥ मगधेषु भवं मागधं मगधदेशव्यवहृत तस्य योजनस्या ध्वमानविशेषस्याष्टधनुःसहस्राणि निहारो निर्गमः प्रमाणमिति यावत् ॥ निहत्तेत्ति ॥ क्वचित्पाठः तत्र निधत्तं निकाचित निश्चित प्रमाणमितिगम्यत द्रष्ट्व प्रमाण परमाण्वादिना क्रमेणावसेय तथाहि परमाणूतसरेणू रहरेणूअग्गयचवालस्स लिक्खाजूयायजवो अठगुणविवड्ढियाकमसो ॥ १ ॥ तत्र पर माणु रनन्तानानिश्चयपरमाणूनां समुदयरूप ऊर्द्धरेखादिभेदा अनुयोगद्वाराभिहिता अनेनैव संगृहीता दृश्या स्तथा पौरस्त्यादिवायुप्रेरित स्त्रस्यति गच्छ तीति त्रसरेणू रथगमनो त्खातारथरेणुरिति एवं चाष्टौ यवमध्या न्यगुलश्चतुर्विंशति रंगुलानिहस्त श्चत्वारो हस्ता धनु र्द्विसहस्रे धनुषां गव्यूत चत्वारि ग व्यूतानि योजनमिति मागधग्रहणात् क्वचि दन्यदपियोजनस्यादिति प्रतिपादितं तत्र यस्मिन् देशे षोडशभि र्द्धनुःशतै र्गव्यूतस्या त्तत्र षड्भिःसहस्रै श्चतु र्भिः शतै र्धनुषां योजन भवतीति योजनप्रमाण मभिधाया ष्टयोजनतो जम्ब्वादीना प्रमाणप्रतिपादनाय सूत्रचतुष्टयमाह ॥ जबूणमित्यादि ॥ जबूर्वृक्ष विशेष स्तदाकारा सर्व्वरत्नमयी यासा जम्बू र्यया य जंबूद्वीपो भिधीयते सुदर्शनेति तस्या नाम साचोत्तरकुरूणा पूर्वार्द्धे शीताया महानद्याः पूर्वेण जा बूनदमयस्य योजनशतपचकायामविष्कम्भस्य द्वादशयोजनमध्यभागपिण्डस्य क्रमपरिहाणितो द्विगव्यूतोच्छ्रितपचधनु'शतविस्तीर्णपद्मवरवेदिकयापरि

धस्सणं जोयणस्स अठधणुसहस्साइं निधत्ते पस्रत्ते । जंबूणं सुदंसणा अठजोयणाइं उढ्ढं उच्चत्तेणं बहुमज्झ देसभागे अठजोयणाइं विरकंभेणं साइरेगाइं अठजोयणाइ सव्वग्गेणं पस्रत्ता । कूडसामलीणं अठजोयणाइं

संस्थाने कह्यो ॥ मगधदेशनुं ते मागधनुं योजन तेहना आठहजार धनुषप्रमाण कह्यो ॥ जंबूसुदर्शन वृक्ष आठयोजन ऊंचो ऊचपणें घणुं मध्यदेश भागे

चिणस्य द्विगव्यूतोच्छ्रितसच्छत्रतोरणचतुर्द्वारस्य पीठस्य मध्यभागव्यवस्थितायां चतुर्योजनोच्छ्रिताया अष्टयोजनायामविष्कम्भायां मणिपीठिकायां प्रति ष्ठिता द्वादशवेदिका गुप्ता ॥ अट्ठजोयणाइमित्यादि ॥ अष्टयोजनान्यूर्द्ध्वत्वेन बहुमध्यदेशभागे शाखाविस्तारदेशे छयोजनानि विष्कम्भेण सातिरेका ण तिरेकयुता न्यूनद्विगव्यूतद्वयेनाधिकानीति भावः सर्व्वाग्रेण सर्वपरिमाणेनेति तस्या शतसः पूर्व्वादिदिक्षु शाखा स्तन पूर्वशाखाया भवणंकोसपमाणं सयणिज्जतत्थणाढियसुरस्स तिसुपासायासाले सुतेसुसीहासणारम्मा ॥ १ ॥ तेपासायाकोस समूसियाकोसमद्धविच्छिन्ना विडिमोवरिजिणभवणं कोसद्ध द्वविच्छिन्नं ॥ २ ॥ देसूणकोसमुच्च जंबूपढसएणजंबूण परिवारिआविरायइ तत्तोअउप्पमाणाहिं ॥ ३ ॥ तथा त्रिभिर्योजनशतप्रमाणैर्वनैः सम्परिक्षिप्ता जंबूओपन्नास दिसिविदिसिगतुपढमवणखंड चउरोदिसासुभवणा विदिसासुयहोतिपासाया ॥ १ ॥ कोसपमाणाभवणा चउवावीपरिगयायपासाया कोस द्धविच्छडाको समूसियाणाढियसुरस्स ॥ २ ॥ पचेवधणुसयाइं उव्वेहेणहवतिवावीओ कोसद्धविच्छडाओ कोसायामाउसव्वाओत्ति ॥ ३ ॥ पासायाणचउ गह भवणाणयअतरेकूडा॥ तानिचाष्टौ यदाह अट्ठसभकूडतुल्ला सव्वेजंबूणयामयाभणिया तेसुवरिजिणभवणा कोसपमाणापरमरम्मत्ति ॥ १ ॥ कूडशाल्म लीजंबूतुल्यवक्तव्यता यदाह देवकुरुपच्छिमद्धे गरुलावासस्ससामलिदुमस्स एसेयगमोनवरं पेढकूडायरययमयत्ति ॥ १ ॥ अतएव एवचेवेत्युक्तं गुहासूत्रे व्यक्तं जगत्यादीनिच वस्तूनि जंबूद्वीपे भवतीति जंबूद्वीपाधिकारात् तद्गतवस्तुप्ररूपणाय चेतत्साधर्म्यात् धातकीखंडपुष्करार्द्धगतवस्तुप्ररूपणाय च ॥ जंबूइत्यादि

एवंचेव । तिमिसगुहाणं अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं। खंडप्पवायगुहाणं अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं एवंचेव ।

आठयोजन पिहोलपणें भाजेरा आठयोजन सर्वाग्रे कह्यो॥ कूटसाल्मलीवृक्ष आठयोजन इमज ॥ तिमसगुफा आठयोजन ऊंची ऊंचपणे कही । खंड

क॥ सूत्रपंचकमाह सूत्रसिद्धार्थं नवरं सूत्राणां मयविभागो हे आद्येवत्तस्काराणां चत्वारिचप्रत्येकं विजयनगरीतीर्थंकरादिदीर्घवैताव्यादीनां १६ मेकं चूलिकाया १८ एव धातकीखडादौ धातक्यादिपूर्वसूत्राण्येतान्येव डिर्भवंतीति तथा मालनच्छेल मेरोः पूर्वोत्तरविदिग्व्यवस्थित लचणीकृत्य प्रदचिणया वचाराविजया स व्यवस्थाप्यस्तद्वति तत्रचक्रवर्त्तिनो विजयंते येषुयान्वा ते चक्रवर्त्तिविजयाः चेत्रविभागा इति ॥ जावपुक्खलावइत्ति ॥ अणनात् मगलाव

जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए उजयतटे अठ वक्खारपव्वया पन्नत्ता तजहा चित्तकूडे पम्हकूडे नलिणकूडे एगसेले तिकूडे वेसमणकूडे अजणे मायंजणे । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणई ए उजयकूले अठवक्खारपव्वया पन्नत्ता तंजहा अकावई पम्हावई आसोविसे सुहावहे चदप्पव्वए सूरपव्वए नागपव्वए देवपव्वए। जबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाएमहाणईए उत्तरेण अठचक्कवट्टिविजया पन्नत्ता तंजहा कच्छे सुकच्छे महाकच्छे कच्छगावई आवत्ते जाव पुक्खलावई । जबूमदरपुरच्छिमेण सीयाएमहाणईए दाहिणेण

प्रपातगुफा आठयोजन इमज ॥ जंबूद्वीपे मेरूपर्वतथी पूर्वदिशे सीता मोटीनदीने उजयतटे आठ वत्तस्कार पर्वत कह्या तेकहेछे चित्रकट १। पद्मकूट २। नलिनकूट ३। एकशैल ४। त्रिकूट ५। वैश्रमणकूट ६। अजन ७। मातजन ८॥ जबूद्वीपे पश्चिमदिशे सीतोदा महानदीने बेतटे आठ वत्तस्कार पर्वत कह्या तेकहेछे अकावती पद्मावती आशीविष सुखावह चंद्रपर्वत सूरपर्वत नागपर्वत देवपर्वत ॥ जबूद्वीपे मेरुथी पूर्वे सीतामोटीनदीनें उत्तरदिशे आठ चक्रवर्त्तिना विजय कह्या तेकहेछे कच्छ १। सुकच्छ २। महाकच्छ ३। कच्छगावती ४। आवर्त्त ५॥ यावत् पुष्कलावती ॥ जबूद्वी

सेपुक्खलेत्ति द्रष्टव्य ॥ जावमंगलावइत्ति ॥ करणात् महाकच्छेयकच्छावइरम्भोरमणरमणिज्जो इतिद्रष्टव्यं ॥ जाव सलिलावइत्ति करणात् सुपम्हेमहापम्हेपम्हगा
वईसखेनलिणीकुमुयत्तिद्रष्टव्यं ॥ जावगंधिलावइत्ति ॥ करणात् महावप्पेवप्पावईवग्गुसुवग्गुगंधिलेत्तिद्रष्टव्य ॥ खेमपुराचेव ॥ जावत्तिकरणात् अरिट्ठारिट्ठावई
खग्गीमंजूसाउसहपुरीतिद्रष्टव्य ॥ सुसीमाकुंडलाचेव जावत्ति ॥ करणात् अपराजियापभंकराअंकावईपम्हावईसुभत्तिद्रष्टव्य ॥ आसपुरा ॥ जावत्ति ॥ करणात्

अठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता तंजहा वच्छे सुवच्छे जाव मंगलावई । जंबूमंदरपच्चत्थिमेण सीओयाएमहाण
ईए दाहिणेणं अठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता तंजहा पम्हे जाव सलिलावई । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओया
महानईए उत्तरेणं अठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता तजहा वप्पे सुवप्पे जाव गंधिलावई । जंबूमंदरपुरच्छि
मेणं सीयाएमहानईए उत्तरेण अठरायहाणीओ पण्णत्ताओ तजहा खेमा खेमपुराचेव जाव पुंडरीगिणी ८ ।
जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीआएमहाणईए दाहिणेण अठरायहाणी पण्णत्ता तजहा सुसीमा कुंडलाचेव जाव

पें मेरुथी सीतामहानदीनें दक्षिणदिसे आठ चक्रवर्त्तिना विजय कह्या तेकहेछे वच्छ यावत् मंगलावती ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पश्चिमें सीतोदा महान
दीनें दक्षिणे आठ चक्रवर्त्तिना विजय कह्या ते कहेछे पद्म १ यावत् सलिलावती ॥ जंबूद्वीपें मेरूथी पश्चिमें सीतोदा महानदीनें उत्तरें आठ च
क्रवर्त्तिना विजय कह्या ते कहेछे वप्र १ सुवप्र २ यावत् गंधिलावती ॥ जंबूद्वीपें मेरुथी पूर्वे सीता महानदीथी उत्तरें आठ राजधानी कही ते
कहेछे क्षेमा १ क्षेमकरा यावत् पुंडरीकिणी ॥ जंबूद्वीपें मेरुथीपूर्वे सीतामोटीनदीने दक्षिणे आठ राजधानी कही त कहेछे सुसीमा कुंडला यावत्

सीहपुरामहापुराविजयपुराअवराजियाअवराअसोगत्तिद्दश्यं ॥ वैजयंती जावत्ति ॥ करणात् ॥ जयतीअवराजियाचक्रपुराखग्गपुराअवज्झत्तिद्दश्य एता
अ क्षेमादिराजधान्य' कच्छादिविजयाना शीतादिनदीसमासन्नखंडत्रयमध्यमखंडे भवति नवयोजनविस्तारा द्वादशयोजनायामा आसुचतीर्थंकरादयो
भवतीति ॥ अट्ठअरहतत्ति ॥ उत्कृष्टतो ऽष्टा वर्हंतो भवति प्रत्येक विजयेषु भावात् एवचक्रवर्त्यादयोपि एव चतुर्ष्वपि महानदीकूलेषु द्वात्रिंशत्तीर्थंकरा भवति
चक्रवर्त्तिनस्तु यद्यपि शीताशीतोदानद्यो रेकैकस्मिन् कूले अष्टा वष्टा वुत्पद्यत इत्युच्यते तथापि सर्वविजयापेक्षया नैकदा ते द्वात्रिंश द्भवति जघन्यतोपि
वासुदेवचतुष्टयाविरहितत्वा न्महाविदेहस्य यत्रच वासुदेव स्तत्र चक्रवर्त्तीनभवतीति तस्मा दुत्कृष्टतोपि अष्टाविंशति रेव चक्रवर्त्तिनो भवति एवं

रयणसंचया । जंबूमंदरपच्चच्छिमेण सीतोआए महाणईए दाहिणेणं अठरायहाणीओ प० तंजहा आसपुरा
जाव वीयसोगा । जंबूमंदरपच्चच्छिमेण सीतोआएमहाणईए उत्तरेण अठरायहाणीओ पन्नत्ता तंजहा विज
या वेजयती जाव अउज्झा । जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीतोयाए महाणईए उत्तरेण उक्कोसपदे अठ अरिहंता
अठ चक्कवट्टी अठ वलदेवा अठ वासुदेवा उप्पज्जिसुवा उप्पज्जतिवा उप्पज्जिस्संतिवा । जंबूमंदरपुरच्छि

रत्नसंचया ॥ जंबू द्वीपे मेरुथी पश्चिमे सीतोदा मोटीनदीथी दक्षिणें आठ राजधानी कही तेकहेछे आसपुरा यावत् विगतसोका ॥ जंबू द्वीपें मेरुथी
पश्चिमे सीतोदा महानदीथी उत्तरें आठ राजधानी कही तेकहेछे विजया वेजयती यावत् अयोध्या ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पूर्वे सीतामोटीनदीथीउत्तरे उ
त्कृष्ट आठ अरिहंत आठ चक्रवर्ति आठ वलदेव आठ वासुदेव उपना ऊपजेछे उपजस्यें ॥ जंबू द्वीपे मेरुथी पूर्वे सीताथी दक्षिणें उत्कृष्टपदे इनज

जघन्यतोऽपि चक्रवर्त्तिचतुष्टयसंभवा द्वासुदेवा अप्यष्टाविंशति रेव वासुदेवसहचरत्वा द्बलदेवा अप्येवमिति ॥ दीहवेयद्धत्ति ॥ दीर्घग्रहणं वत्तुलवैताढ्य व्यवच्छेदार्थं गुहाष्टकयो र्यथाक्रमं देवाष्टके इति गंगाकुंडानि नीलवदर्षधरपर्व्वतदक्षिणनितंबस्थितानि षष्टियोजनायामविष्कंभाणि मध्यवर्त्तिगंगादेवी सभवनद्वीपानि त्रिदिक्मतोरणद्वाराणि येभ्यः प्रत्येक दक्षिणतोरणेन गंगा विनिर्गत्य विजयानि बिभजन्ती भरतगंगावच्छीता मनुप्रविशतीति एवं सिंधु कुंडान्यपि ॥ अट्ठउसभकूडत्ति ॥ अष्टौ ऋषभकूटपर्व्वता अष्टास्वपि विजयेषु तद्भावात् तेच वर्षधरपर्व्वतप्रत्यासन्ना म्लेच्छखंडत्रयमध्यखंडवर्त्तिनः सर्व्वविज यभरतैरवतेषु भवति तत्प्रमाणचेदं सव्वेविउसभकूडा उव्विद्धाअट्ठजोयणाईति बारसअट्ठयचउरो मूलेमज्झावरिविच्छिन्नत्ति ॥ १ ॥ देवा स्तन्निवासिन ए

मेणं सीआए महाणईए दाहिणेणं उक्कोसपए एवचेव । जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओआए महाणईए दाहिणेणं उक्कोसपए एवचेव । एव उत्तरेणवि । जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीआए महाणईए उत्तरेणं अट्ठदीहवेयड्ढा अट्ठ तिमिसगुहाओ अट्ठ खंडगप्पवायगुहाओ अट्ठ कयमालगादेवा अट्ठ णट्टमालगादेवा अट्ठ गंगाओ अट्ठ सिं धूओ अट्ठ गंगाकुंडा अट्ठ सिंधुकुंडा अट्ठ उसभकूडा पन्नत्ता । अट्ठ उसभकूडादेवा पन्नत्ता । जंबूमंदरपुर

॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पश्चिमे सीता मोटीनदीने दक्षिणे उत्कृष्टपदे इमज ॥ उत्तरेंपणि ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पूर्वें सीताथी उत्तरे आठ दीर्घवैताढ्य आठ तिमिश्रागुफा आठ खंडप्रपातगुफा आठ कृतमालदेवता आठ नट्टमालदेवता आठ गंगाकूट आठसिंधुकूट आठ गंगा आठ सिंधू आठ ऋषभकूट पर्वत आठ ऋषभकूट देवता कह्या १७ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पूर्वं सीता महानदीथी दक्षिणे आठ दीर्घवैताढ्य इमज जावत् ऋषभकूट देवता कह्या

वेति॥ नवरं मेथरत्तारत्तावईओतासिंचेवकुंडत्ति॥ शीताया दक्षिणतोपि अष्टौ दीर्घवैताढ्या इत्यादि सर्वं समानं केवलं गंगासिन्धुस्थाने रक्तारक्तावत्यौ वाच्ये गगादिकुंडस्थानेपि रक्तादिकुंडानि वाच्यानीति तथाहि अठ्ठरत्ताकुंडापण्णत्ता अठ्ठरत्तवईकुंडापण्णत्ता अठ्ठरत्ताओअठ्ठरत्तवईओ तथा निषधवर्षधरपर्वतोत्तर नितंबवर्त्तीनि षष्ठियोजनप्रमाणानि रक्तारक्तावतीकुंडानि येभ्य. उत्तरतोरणेन विनिर्गत्य ताः शीता मनुपतति तथा धातकीमहाधातकीपद्ममहापद्मद्रुचाः

च्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं अठ दीहवेयड्ढा एवचेव जाव अठ उसभकूडादेवा प० । नवरमेत्थ रत्तारत्तवईउ तासिंचेव कुंडा । जंबूमंदरपञ्चच्छिमेण सीउयाए महाणईए दाहिणेणं अठ दीहवेयड्ढा जाव अठ नट्टमालगादेवा अठ गंगाकुंडा अठ सिधुकुंडा अठ गगाउ अठसिंधूउ अठ उसभकूडपव्वया अठउसभकूडा देवा प० । जबूमंदरपुरच्छिमेण सीउयाए महाणईए उत्तरेण अठ दीहवेयड्ढा जाव अठ णट्टमालगादेवा अठ रत्तकुंडा अठ रत्तावइकुंडा अठ रत्ताउ जाव अठ उसभकूडदेवा प० । मंदरचूलियाण बहुमज्झदेसभाए अठ

॥ इहा ए विशेष रक्ता रक्तवती तेहनां कूट ॥ जंबूद्वीपे मेरूथी पश्चिमें सीतोदा महानदीथी दक्षिणें आठ दीर्घवैताढ्य यावत् आठ नट्टमालदेवता आठ गगाकूट आठसिधुकूट आठ गगा आठ सिंधू आठ ऋषभकूट पर्वत आठ ऋषभकूटदेव कह्या ॥ जबूद्वीपे मेरुथी पश्चिमे सीतोदा महान दीथी उत्तरे आठ दीर्घवैताढ्य ४ ॥ इम यावत् आठ नट्टमालदेवता आठ रक्तवतीकूट ऋषभकूटदवता कह्या ॥ मेरूनी चूलिकानो घणु मध्य देशभाग आठ योजन विस्तारपणे कह्यो ॥ धातकीखण्डद्वीपपूर्वार्द्धे धातकीवृक्ष आठयोजने ऊचो ऊचपणे बहुमध्यभागे आठ योजन विस्तारपणें भ्रा

जम्बूवृक्षसमानतया' यदाह जाभणिओजंबूए बिहीसोचेवम्मोइणंसि देवकुरासुसामलि रुक्खाजहजंबुदीवंमित्ति ॥ क्षेत्राभिकारात् ॥ जंबूद्दीवेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय सुगम नवर ॥ भद्दसालवणेत्ति ॥ मेरुपरिक्षेपतोभूम्यां भद्रशालवन मस्ति तत्र ष्टौ शीताशीतोदयो रुभयकूलवर्त्तीनि पूर्वादिपु दिक्षु हस्त्याका

जोयणाइ विक्खंभेणं प० । धायइखण्डदीवपुरच्छिमद्धेण धायइरुक्खे अठ जोयणाइ उड्ढं उच्चत्तेण प० । बहुमज्झदेसभाए अठ जोयणाइ विक्खंभेण साइरेगाइं अठजोयणाइ सव्वग्गेण प० । धायइखण्डदीवपुरच्छिमद्धेण धायइरुक्खे अठ जोयणाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ते । बहुमज्झदेसभाए अठ जोयणाइं विक्खंभेण साइरेगाइं अठ जोयणाइ सव्वग्गेण पण्णत्ते । एव धायइरुक्खाउ आढवित्ता सच्चेव जंबूद्दीववत्तव्वया भाणियव्वा ॥ जाव मंदरचूलियत्ति । एव पच्चच्छिमद्धेवि । महाधायइरुक्खाउ आढवित्ता जाव मंदरचूलियत्ति । एव पुक्खरवरदीवद्धपुरच्छिमद्धेवि पउमरुक्खाउ आढवेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति । एव पुक्खरवरदीवपच्चच्छिम महापउमरुक्खाउ जाव मंदरचूलियत्ति । जंबुद्दीवेद्दीवे मंदरेपव्वए भद्दसालवणे अठ दिसाहत्थिकूडा पण्णत्ता

फेरो आठ योजन सर्वाग्रें कह्यो ॥ इम धातकीवृक्षथी माण्डीनें सघली जंबूद्वीपनी वक्तव्यता जाणवी यावत् मेरूचूलिकालगे ॥ इम पश्चिमार्द्धे पणि ॥ महाधातकीवृक्षथी माण्डीने यावत् मेरुचूलिकालगें ॥ पुष्करवरद्वीपार्द्धे पूर्वार्द्धे पणि पद्मवृक्षथी माण्डीने यावत् मेरुचूलिकालगे एणे प्रकारे पुष्करवरद्वीपार्द्धे पश्चिमे महापद्मवृक्षथी यावत् मेरुनी चूलिकालगे ॥ जंबूद्वीपें मेरुपर्वते भद्रसालवने आठ दिसाहस्ती कूट कह्या ते कहेछे पद्मोत्तर १ ।

राणि कूटानि दिग्राहस्तिकूटानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा ॥ पउमेसिलोगो । कण्ठ्यं नवर मस्यसप्रसंगी विभागोयं मेरूत्र्योपन्नासं दिगिविदिसिगंतुभद्दसालवण चउरोसिद्धायय‌णा दिसासुविदिसासुपासाया ॥ १ ॥ छत्तीसुच्चापणवी सविच्छंडादुगुणमायतायग्गा चउबावीपरिखित्ता पामायापचसयउच्चा ॥ २ ॥ ईसा णस्सोत्तरिमा पासायादाहिणायसक्कस्स अठ्ठयद्दवतिकूडा सीतासीतोदुभयकूले ॥ ३ ॥ दोदोचउद्दिसीम दरस्सहिमवतकूडसमकप्पा पउमोत्तरोचपढमो पच्चिमसीउत्तरेकूले॥ ४ ॥ तत्तोयनीलवंते मुहत्थितहञ्जणगिरीकुमुदे तहयपलासवडेसे अठ्ठमयेरोहणगिरीयत्ति ॥ ५ ॥ जगतीवेदिकाधारभूता पाली ॥ सिद्ध गाहा ॥ सिद्धायतनोपलचितं कूट सिद्धकूट तच्च प्राच्या ततः क्रमेण परतः शेषाणि महाहिमवत्कूट तद्गिरिनायकदेवभवनाधिष्ठित हैमवत्कूटं हैमवर्ष नायकदेववासभूत रोहितकूट रोहिताख्यनदीदेवतासत्कं ह्रीकूटं महापद्माख्यतत्ह्रदनिवासिह्रीनामकदेवतासत्कं हरिकातकूट तन्नामनदीदेवतासत्कं

तंजहा पउमुत्तरेनीलवते सुहत्थीञ्जणगिरी कुमुदेयपलासेय वडिंसेरोहणागिरी ॥ १ ॥ जंबुद्दीवस्सणं द्दीव स्स जगई अठ्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण बज्ञमज्झदेसभाए अठ्ठ जोयणाइं विक्खम्भेणं पन्नत्ते । जंबूद्दीवेद्दीवे मदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवते वासहरपव्वए अठ्ठकूडा प० त० सिद्धमहाहिमवंते हिमवतेरोहिया

नीलवंत २ । सुहस्ति ३ । अजनगिरी ४ । कुमुद ५ । पलास ६ । वतंस ७ । रोहिणगिरी पर्वत ८ ॥ जबूद्वीप नामा द्वीपनी जगती कोट आठ यो जन ऊची उंचपणे घणु मध्यदेशभाग आठ योजन पिहुलपणे ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वते दक्षिणे महाहिमवत वर्षधरपर्वते आठकूट कह्या तेकहेछे सिद्ध म हाहिमवत हेमवंत रोहित हरिकूट हरिकांत हरिवर्ष वेरुलिक कूट ८ ॥ जबूद्वीपे मेरुथी उत्तरे रूप्पिनामे वर्षधरपर्वते आठ कूट कह्या तेकहेछे

हरिवर्षकूटं हरिवर्षनायकदेवसत्कं वैडूर्यकूटं तद्रत्नमयत्वादिति अनेनैव क्रमेण रुक्मिकूटा न्यप्यूह्यानि तद्गाथा ॥ सिद्धेरूप्पीत्यादि ॥ कण्ठ्याम् ॥ जंबूद्दीवे त्यादि ॥ क्षेत्राधिकारात् रुचकाश्रिनसूत्राष्टकं कण्ठ्य नवरं जंबूद्दीपेयो मंदर स्तदपेक्षया प्राच्यांदिशि रुचकवरे रुचकद्वीपवर्त्तिनि प्रागवर्णितस्वरूपे चक्रवा लाकारे अष्टौ कूटानि तत्र ॥ रिठ्ठेत्यादि ॥ गाथा स्पष्टा तेषुच नदोत्तराद्याः दिक्कुमार्यो वसति भगवतो ऽर्हतो या जन्म न्यादर्शहस्ता गायत्य स्त पर्युपास

यहिरिकूडे हरिकंताहरिवासे वेरुलिएचेवकूडाउ ॥ १ ॥ जंबूमंदरउत्तरेणं रुप्पिम्मिवासहरपव्वए अठ कूडा पन्नत्ता तजहा सिद्धेरुप्पीरम्मग नरकंताबुद्धिरुप्पकूडेय हेरन्नवएमणिक चणेयरुप्पिम्मिकूडाय ॥ २ ॥ जंबू मंदरपुरच्छिमेणं रुयगवरेपव्वए अठ कूडा प० त० रिठतवणिज्जकचण रययदिसासोवच्छिएपलबेय अंजणे अंजणपुलए रुयगस्सपुरच्छिमेकूडा ॥ १ ॥ तत्थणं अठ दिसाकुमारिमहत्तरियाउ महिड्डियाउ जाव पलि उवमठिईयाउ परिवसंति तजहा णंदुत्तरायणंदाय आणंदाणंदिवद्धणा विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया

सिद्ध १ । रूप्पि २ । रम्पग ३ । नरकांत ४ । बुद्धि ५ । रूप्पकूट ६ । हेरणवंत ७ । मणिकाचन ८ । रूपीपर्वतें कूट ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पूर्वे रुचक पर्वते आठ कूट कह्या तेकहेछे रिष्ट १ । तपनीय २ । काचन ३ । रजत ४ । दिसास्वस्तिक ५ । प्रलम्ब ६ । अंजन ७ । अंजनपुलक ८ ॥ रुचकपर्वतें पूर्वे कूट कह्या तिहां आठदिशाकुमारी महत्तरिका मोटी ऋद्धिनी घणीआणी यावत् पल्योपमनीस्थितिनी वसेछे तेकहेछे नंदोत्तरा १ । नदा २ । आनदा ३ । नंदिवर्द्धणा ४ । विजया ५ । वैजयती ६ । जयती ७ । अपराजिता ८ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथीदक्षिणें रुचकपर्वते आठ कूट कह्या ते कहेछे कन

१ ॥ जबूमंदरदाहिणेणं रुयगवरेपव्वए अठ कूडा पसत्ता तंजहा कणएकंचणपउमे नलिणेससिदिवाकरेचेव वेसमणेवेरुलिए रुयगस्सयदाहिणेकूडा ॥ १ ॥ तत्यणं अठ दिसाकुमारिमहत्तरियाउ महिढ्ढियाउ जाव पलिउवमठिईयाउ परिवसंति तंजहा समाहारासुप्पइन्ना सुप्पवुद्धाजसोहरा लच्छिवईसेसवई चित्तगुत्ताव सुधरा ॥ १ ॥ जबूमंदरपच्चच्छिमेण रुयगवरेपव्वए अठ कूडा प० त० सोच्छिएयअमोहेय हिमवंमदरेतहा रुयगेरुयगुत्तमेचदे अठमेअसुदसणे ॥ १ ॥ तत्यण अठ दिसाकुमारिमहत्तरियाउ महिढ्ढियाउ जाव पलिउ वमठिईयाउ परिबसंति तजहा इलादेवीसुरादेवी पुढवीपउमावई एगनासाणवमिया सीयाअहायअठमा ॥ १ ॥ जबूमंदरउत्तररुयगवरे पव्वए अठ कूडा प० तजहा रयणेरयणुच्चएसव्व रयणेरयणसंचेए विजएवेजयं

क १ । कंचन २ । पद्म ३ । नलिन ४ । शशि ५ । दिवाकर ६ । वैश्रमण ७ । वेरुलिय ८ ॥ रुचकने दक्षिणे कूट तिहां आठ दिशाकुमारी मोटी मोटीऋद्धिनी यावत् पल्योपमनी स्थितिनी वसेछे तेकहेछे समाहारा १ । सुप्रतिज्ञा २ । सुपवुई ३ । यसोधरा ४ । लक्ष्मीवती ५ । शेषवती ६ । चित्रगुप्ता ७ । वसुंधरा ८ ॥ जबूद्वीपे मेरुपर्वतथी पश्चिमें रुचकवरपर्वते आठ कूट कह्या तेकहेछे स्वस्तिक १ । अमोघ २ । हिमवत ३ । मंदर ४ । रुचक ५ । रुचकोत्तम ६ । चद ७ । आठमोसुदर्शन ८ ॥ १ ॥ तिहां आठ दिशाकुमारी मोटी मोटीऋद्धिनीधणी यावत् पल्योपमनी स्थितिनी वसेछे ते कहेछे इलादेवी १ । सुरादेवी २ । पृथिवी ३ । पद्मावती ४ । एकनासा ५ । नवमिका ६ । सीता ७ । भद्रा आठमी ८ ॥ १ ॥ जबूद्वीपे मेरुथी उत्तरे रुचक

ठा० ॥
१०१ ॥

ते एव दाक्षिणात्या भृङ्गारहस्ता गायति एवं प्रातीच्या स्तालवृंतहस्ता एव मौदीच्या चामरहस्ता देवाधिकारादेव ॥ अठअहेत्यादि ॥ पंचसूत्री कणळ्या नवर ॥ अहेलोगवच्छव्वाओत्ति ॥ सोमणसगधमायणविज्जुप्पभमालवतवासीओ अठदिसिदेवयाओ वच्छव्वाओअहेलोएत्ति ॥ भोगकराद्या अष्टौ या

तेय जयतेअपराजिए ॥ १ ॥ तत्थण अठ दिसाकुमारिमहत्तरियाउ महिड्डियाउ जाव पलिउवमठिईयाउ परिवसंति तजहा अलंबुसामित्तकेसी पुंडरीगीयवारुणी आसायसव्वगाचेव उत्तराउसिरीहरी ॥ १ ॥ अठ अहोलोगवच्छव्वाउ दिसाकुमारिमहत्तरियाउ प० तजहा भोगकराभोगवती सुभोगाभोगमालिणी सुवच्छा वच्छमित्ताय वारिसेणावलाहगा ॥ १ ॥ अठ उड्ढलोगवच्छव्वाउ दिसाकुमारिमहत्तरियाउ पसत्ताउ तजहा मेहकरामेहवई सुमेघामेघमालिनी तोयधाराविचित्ताय पुप्फमालाअणिंदिया ॥ १ ॥ अठकप्पा तिरियमि

वरपर्वते आठ कूट कह्या तेकहेछे रत्न १ । रत्नोच्चय २ । सर्वरत्न ३ । रत्नसचय ४ । विजय ५ । वैजयत ६ । जयत ७ । अपराजित ८ ॥ तिहां आठ दिशाकुमारी मोटी मोटीऋद्धिनी यावत् पल्योपमनीथितिनी वसेछें तेकहेछे अलंबुसा १ । मित्रकेसी २ । पुंडरीकिणी ३ । वारुणी ४ । आसा ५ । सर्वगा ६ । श्री ७ । ह्री ८ ॥ उतरे ॥ १ ॥ आठ अधोलोकनी वसनारी दिशाकुमारी मोटी कही तेकहेछे भोगकरा १ । भोगवती २ । सुभोगा ३ । भोगमालिनी ४ । सुवच्छा ५ । वत्समित्रा ६ । वारिषेणा ७ । बलाहका ८ ॥ १ ॥ आठ उर्द्धलोकनी वसनारी दिसाकुमारी मोटी कही ते कहेछे मेघकरा १ । मेघवती २ । सुमेघा ३ । मेघमालिनी ४ । तोयधारा ५ । विचित्रा ६ । पुष्पमाला ७ । अनिंदिता ८ ॥ १ ॥ आठमा देवलोकलगे तीर्यच उपजे ॥

अर्हतो जन्मभवनसांवर्त्तकपवनादिविदधतीति ऊर्ध्वलोकवास्तव्या स्तथाच नंदणवणकूडेसु एयाओउड्ढलोयवच्छव्वाओत्ति या अभ्रवर्द्दलिकादिकुर्वंतीति ॥ तिरियि । स्सोववसगत्ति ॥ अष्टसुतिर्यंचो प्युत्पद्यतइति भूतभावापेक्षया तिर्यग्भिर्मिश्रा स्तिर्यङ्मिश्रा स्तेमनुष्या उपपन्ना देवतया जाता येषु ते तिर्यग्मिश्रापपन्नकाइति परियायते गम्यते यै स्तानि परियानानि तान्येव परियानिकानि परियामवा गमन प्रयोजनयेषांतानि पारियानिकानि यानकारकाभियोगिकपालकादिदेवकृतानि पालकादी न्यष्टौक्रमेण शक्रादीना मिंद्राणा मिति देयलच तपश्चरणा दिति तद्विशेषमाह ॥ अट्ठट्ठमिएत्यादि ॥ अष्टावष्टमानि दिनानि यस्यासा तथा याह्यष्टाभि र्दिनाना मष्टकैः पूर्यते तस्या मष्टा वष्टमदिनानि भवल्येव तत्र चाष्टा वष्टकानि चतुःषष्टि भवल्येव तथा प्रथमाष्टके एका दत्ति र्भोजनस्य पानकस्य चैव द्वितीये द्वे एवमष्टमे अष्टौ ततो द्वेशते ष्टासीत्यधिके भिक्षाणा सर्वाग्रतो भवतइति अहासुत्ता अ

ससोववन्नगा पन्नत्ता तंजहा सोहम्मे जाव सहस्सारे। एएसुणं अट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इंदा प० तं० सक्के जाव सहस्सारे। एएसिं अट्ठण्ह इंदाण अट्ठ परियाणिया विमाणा पन्नत्ता तंजहा पालए पुप्फए सोमणसे सिरिवच्छे णंदियावत्ते कामकमे पीइमणे विमले। अट्ठट्ठमियाणं भिक्खुपडिमाणं चउसट्ठीएहिं राइदिएहिं दोहियअट्ठासीएहि भिक्खासएहि अहासुत्ता जाव अणुपालिया विभवइ। अट्ठविहा ससारसमावन्नगा

आठ देवलोके आठ इंद्र कह्या तेकहेछे शक्र यावत् सहस्रार ॥ ए आठे इंद्रने आठ पारियान विमान कह्या तेकहेछे पालक १। पुष्पक २। सोमनस ३। श्रीवत्स ४। नंदियावर्त्त ५। कामकम ६। प्रीतिमन ७। विमल ८॥ आठ आठमिआ भिखुप्रतिमा चोसठिरात्रे बेसे अट्यासी भिक्षाये श्रुत

हाकप्पा अहामग्गा अहातच्चा संम काएण फासिया पालिया तीरिया किट्टिया आराहिया इति यावत्करणात् दृश्यं ॥ अनुपालियत्ति ॥ आत्मसंयमानु कूलतया पालितादृति तपश्च न सर्वेषामपि संसारिणामिति सवंधा त्संसारिणो जीवाधिकारा त्सर्वजीवाश्च प्रतिपादयन् ॥ अठविहेत्यादि ॥ सूत्रत्रय माह कण्ठ्यम् चेदं नवर् प्रथमसमयनैरयिका नरकायुःप्रथमसमयोदये इतरेत्वितरस्मि नेव सर्वेपि अनन्तर ज्ञानिन उक्ता स्वेच संयमिनोपि भवंतीति स बधा त्संयमसूत्र तत्र ॥ संयमेत्ति ॥ चारित्र सचेह तावत् द्विधा सरागवीतरागभेदा त्तत्र सरागोद्विधा सूक्ष्मबादरकषायभेदात् पुनस्तौ प्रथमाप्रथमसमय

जीवा पन्नत्ता तंजहा पढमसमयनेरइया एवं जाव अपढमसमयदेवा । अठविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा नेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणीउ मणुस्सा मणुस्सीउय देवा देवीउय सिद्धा । अहवा अठविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विब्भंगनाणी अठविहे संजमे पन्नत्ते तंजहा पढमसमयसुहुमसंपरायसंजमे अपढमसमयसुहुमसंपरायसंजमे पढमसमय

मा कही तिम यावत् अनुपाली कही ॥ आठप्रकारें संसारसमापन्न जीव कह्या तेकहेछे प्रथमसमयना नारकी इम यावत् अप्रथमसमयदेवता ॥ आठ प्रकारे सर्वजीव कह्या तेकहेछे नारकी १ । तिर्यंच योनिया १ । तीर्यंचनी स्त्री २ । मनुष्य मनुष्यनी स्त्री ४ । देवता देवी ७ । सिद्ध ८ ॥ अथवा आठ प्रकारे सर्वजीव कह्या तेकहेछे मतिज्ञानी १ । यावत केवलज्ञानी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी विभंगज्ञानी ८ ॥ आठ सिद्धिना नाम कह्या ते कहेछे ईष त् १ । इषत् प्राग्भारा २ । तनु ३ । तनुतनु ४ । सिद्धि ५ । सिद्धालय ६ । मुक्ति ७ । मुक्तालय ८ ॥ आठप्रकारे संजम कह्यो तेकहेछे प्रथमसमयनु

भेदाद्विधा एवं चतुर्द्धा सरागसंयमइति तत्रप्रथमसमयः प्राप्तो यस्यस तथा सूक्ष्मकिट्टीकृतः संपरायः कषायः सज्वलनलोभलक्षणो वेद्यमानो यस्मिन्स त
था सहरागेणा भिष्वगलक्षणेन यः स सरागः सएव संयमः सरागस्यवा साधोः सयमो यः स तथा कर्मधारय इत्येकः द्वितीयोयमेवा ऽप्रथमसमयवि
शेषितइति अयच द्विविधोपि श्रेणिद्वयापेक्षया पुनर्द्वैविध्यं लभमानोपि नविवक्षितइति चतुर्द्धा नोक्त स्तथा बादरा अकिट्टीकृता. सपरायाः संज्वलनक्रो
धाद्यो यस्मिन्स तथा बीतरागसयमस्तु श्रेणिद्वयाश्रयणा द्विविधः पुनः प्रथमाप्रथमसमयभेदेनैकैको द्विविधइति चतुर्द्धा सामस्त्येन चाष्टधेति सयमि

वादरसंपरायसंजमे अपढमसमयबादरसंपरायसंजमे पढमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे अपढमसमय उवसंतकसायवीयरागसंजमे पढमसमयखीणकसायवीयरागसंजमे अपढमसमयखीणकसायवीयरागसजमे अठ पुढवीउ प० त० रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ईसिप्पब्भारा। ईसिप्पब्भाराएण पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अठजोयणेखित्ते अठ जोयणाइं वाहल्लेण पन्नत्ते। ईसिप्पब्भाराएणं पुढवीए अठ नामधेज्जा पन्नत्ता तंजहा

सूक्ष्मसंपराय सरागसजम १। बीजासमयनुं सूक्ष्मसंपराय सरागसयम २। प्रथमसमयनुं वादरसंपराय सरागसंयम ३। अप्रथमसमयनुं बादरसंपराय सरागसंयम ४। प्रथमसमयनु उपसातकषाय वीतरागसयम ५। अप्रथमसमय उपसातकषाय वीतरागसंजम ६। प्रथमसमय क्षीणकषाय वीतरागसयम ७ अप्रथमसमयक्षीणकषायवीतरागसयम ८॥ आठ पृथ्वीकही तेकहेछे रत्नप्रभा यावत् अधोसातमी ईषत्प्राग्भारा ८॥ ईषत्प्राग्भारापृथ्वीनेविषें बहुमध्यभाग आठजोजननु क्षेत्र आठ योजन जाडपणे कह्यो। * इसनिशाणके वीचमे सिद्धिके आठनामका टब्बा पहले छपगयाहै पोथीकी अशुद्धतासे सो इहां जाणना *

नस्तु पृथिव्या भवतीति पृथिवीसूत्रनगं कण्ठ्यं नवरं मष्टयोजनिक चेत्त मायामविष्कम्भाभ्या मिति गम्यते ईषत्प्राग्भारायाः ईषदितिया नाम रत्नप्रभाद्यपे
क्षया ह्रस्वत्वा त्तस्या १ एवं प्राग्भारस्य ह्रस्वत्वा त्तस्या ईषत्प्राग्भारेतिवा २ अतएव तनुरितिवा तन्वोत्यर्थः ३ अतितनुत्वा त्तनुतनुरितिवा ४ सिद्धान्ति त
स्यामिति सिद्धिरितिवा ५ सिद्धानामाश्रयत्वा त्सिद्धालय इतिवा ६ मुच्यते सकलकर्मभि स्तस्यामिति मुक्तिरितिवा ७ मुक्ताना माश्रयत्वान्मुक्तालय इतिवे
ति ८ सिद्धिश्च शुभानुष्ठाने ष्वप्रमादतया भवतीति तद्विषयतया आह ॥ अट्ठहीत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं मष्टासु स्थानेषु वस्तुषु सम्यग्घटितव्य अप्राप्तेषु यो
गः कार्यः यतितव्य प्राप्तेषु तदवियोगार्थं यत्नः कार्यः पराक्रमितव्य शक्तिक्षयेपि तत्पालने पराक्रमउत्साहातिरेको विधेयः किंबहुने तस्मि न्नष्टस्थानकल
क्षणे वक्ष्यमाणेर्थे नप्रमादनीय नप्रमादः कार्यो भवति अश्रुताना मनाकर्णिताना धर्म्माणा श्रुतभेदाना सम्यक्श्रवणतायैवा भ्युत्थातव्य मभ्युपगतव्यं भवति
१ एवं श्रुतानां श्रोत्रेन्द्रियविषयीकृताना मवग्रहणताये मनोविषयीकरणायो पधारणताये अविच्युतिस्मृतिवासनाविषयीकरणायेत्यर्थः २ ॥ विविक्तिचणया
एत्ति ॥ विवेचना निर्जरेत्यर्थः तस्यै ३ अतएव आत्मनो विशुद्धि र्विशोधना अकलङ्कत्व तस्येइति ४ असङ्गृहीतस्या नाश्रितस्य परिजनस्य शिष्यवर्गस्येति

ईसीइवा ईसिप्पब्भाराइवा तणुइवा तणुतणुइवा सिद्धीइवा सिद्धालएइवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा अट्ठहि
ठाणेहि सम्मं सघडियव्वं जइयव्वं परक्कमियव्वं असिंचणं अट्ठेनोवमा एव नवइ असुयाणधम्माण सम्म

आठथानके सम्यक्प्रकारे घटवो उद्यमकरवोप राक्रमवु ए अर्थनेविषे प्रमाद नकरवो नथीसाभल्यो जे धर्म ते सम्यक् साभलवाने उद्यमकरवो १ । साभल्या
जे धर्म ते ग्रहवाने अर्थ धार वाने अर्थ उजमालथावु नवाजे कर्म ते सजमे करी अणकरवाने उजमालथावू जूनाजे कर्म ते तपेकरी विगचवा टालवाने

५ ॥ सेहंति ॥ विभक्तिपरिणामा च्छैचकस्या भिनवप्रव्रजितस्य ॥ आयारगोयरंति ॥ आचार. साधुसमाचार स्तस्य गोचरो विषयो व्रतषट्कादि राचार गोचरो ऽथवा आचारस्य ज्ञानादिविषयः पचधा गोचरस्य भिद्याचर्ये त्याचारगोचर मिह विभक्तिपरिणामा दाचारगोचरस्य ग्रहणतायां शिक्षणे शैक्षमा चारगोचर ग्राहयितु मित्यर्थः ६ ॥ अगिलाएत्ति ॥ अग्लान्या अखेदेने त्यर्थ वैयावृत्त्य प्रतीतिशेषः ७ ॥ अधिगरणसित्ति ॥ विरोधे तत्र साधर्म्मिकेषु निश्रित राग उपाश्रितं द्वेषो ऽथवा निश्रितमाहारादिलिप्सा उपाश्रित शिष्यकुलादपेक्षा तद्वर्जितो य. सो ऽनिश्रितोपाश्रित. नपक्ष शास्त्रबाधित ग्रह्णाती त्य पचग्राही अतएव मध्यस्थभावं भूतः प्राप्तो यः स तथा सभवे दितिशेष स्तैनच तथाभूतेन कथन्तु केनप्रकारेण साधर्म्मिका. साधवः अल्पशब्दा विगत

सुणणयाए अब्भुट्ठेयव्व सुयाणं धम्माणं उगिगहयाए उवहारणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ तवाणंकम्माणंसंजमेणं अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ पोराणाणं कम्माण तवसा विगिंचणयाए विसोहणत्ताए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ असगिहीयपरिजणस्स संगिगहयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ सेहंआयारगोयरं गहणयाए अब्भुट्ठेयव्व भवइ गि लाणस्सअगिलाए वेयावच्च करणयाए अब्भुट्ठेयव्व भवइ साहम्मियाणअहिगरणंसि उप्पन्नंसि तत्थ अणि स्सिउवस्सिए अपरक्कग्गाही मज्झत्थभावभूए कहन्नुसाहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमतुमा उवसा

शुद्धकरवाने उजमाल थावू अनाश्रितजे शिष्यादिपरिवार तेहना ग्रहवाने उजमालथावो ॥ नवदीक्षितशिष्यने आचारगोचर ग्रहवानें उजमालथावो ॥ ग्लाननु अग्लानपणे वेयावचकरवाने उजमालथावु ॥ साधर्मीनें विषे अधिकरण रागद्वेषउपने तिहा आहारना लालचे शिष्यादिकनी अपेक्षारहितपक्ष

राटीमहाध्वनयः अल्पझंझा विगततथाविधविप्रकीर्णवचनाः अल्पसमतमा विगतक्रोधमनोविकारविशेषाः भविष्यंतीति भावयतोपशमनाया धिकरण स्या भ्यासातच भवतीति ८ अप्रमादिनां देवलोकोपि भवतीति देवलोकगतिवक्त्त ष्टकमाह ॥ महासुक्केत्यादि ॥ कण्ठ्य अनन्तरोतविमानविवासिदेवै र पि वस्तुविचारे नजोयंते केचिदादिनइति तदष्टक माह ॥ अरहओइत्यादि॥ सुगम एतेषांच नेमिनाथ विनेयानामध्ये काश्चित् केवलो भूत्वा वेदनीयादिक मेस्थितीना मायुष्कस्थित्या समीकरणार्थं केवलिसमुद्घातं कृतवान् इति समुद्घातमाह ॥ अठेत्यादि ॥ तत्र समुद्घात प्रारभमाणः प्रथममेवा वर्जीकरण अ भ्येति आंतर्मोहूर्त्तिकं उदीरणावलिकायां कर्म प्रक्षेपव्यापाररूप मित्यर्थं स्ततः समुद्घात गच्छति तत्र च प्रथमसमये स्वदेहविष्कम्भ मूर्द्धमधश्चायत मुभ

मणयाए अप्पुठेयवं भवइ ॥ महासुक्कसहस्सारेसुणं कप्पेसु विमाणा अठजोयणसयाइ उड्ढउच्चत्तेणं प० । अरहओण अरिठनेमिस्स अठसयावाईणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वाएअपराजियाण उक्कोसिया वाइ संपयाहोत्था । अठसामइए केवलिसमुग्घाए पत्ते तजहा पढमेसमए दण्ड करेइ बीएसमए कवाडं करेइ

कोईनो ता शोनही मध्यस्थभावें रह्यो थको किम साधरमी रागरहित थाय घधरहित थाय क्रोधरहित थाय तिम समाववानें उजमालथावो ८ ॥ महा सुक्र सहस्त्रारदेवलोकनेंविषें विमान आठ योजन ऊचा ऊचपणे कह्या ॥ अरिहंत अरिष्टनेमने आठसे वादी देवता मनुष्य असुरनी पर्षदामाहिं अपरा जित जीतीनसके उत्कृष्टी वादीनी सपदा थई ॥ आठ समय केवलि समुद्घात कह्यो तेकहेछे पहिले समये दण्डकरे जीवप्रदेशनो १४ राज प्रमाणे १। बीजे समयें कपाटकरे २ । त्रीजेंसमये मथान करे ३ । चौथे समये लोकना आतरा पूरे १४ राज इम भरते ॥ ४ । पाचमे समये लोकातरा सहरे ५ । छठे सम

यतोपि लोकान्तगामिन जीवप्रदेशसंघातं दंडमिव दर्ड केवली ज्ञानाभोगत: करोति द्वितीयेतु तमेव दंडं पूर्वापरदिग्द्वयप्रसारणा त्पार्श्वतो लोकान्तगामि कपाटमिव कपाटं करोति तृतीयेतु तदेवच्च दक्षिणोत्तरदिग्द्वयप्रसारणान्मन्थान करोति लोकांतप्रापिणमेवेति एवच लोकस्य प्रायो बहुपूरितं भवति मन्थान्तरा ण्यपूरितानि भवत्यनुश्रेणिगमना ज्जीवप्रदेशानामिति चतुर्थेसमये मन्थातराण्यपि सकललोकनिष्कुटै: सह पूरयति ततश्च सकलो लोक: पूरितो भवतीति तदनन्तरमेव पचमे समये यथोक्तप्रतिलोम मन्थातराणि संहरति जीवप्रदेशान् सकर्मकान् सकोचयति षष्टे मन्थान मुपसहरति घनतरसकोचा त्सप्तमे कपाट मुपसहरति दडात्मनि सकोचात् अष्टमे दंड मुपसहृत्य शरीरस्थएव भवति तत्रच औदारिकप्रयोक्ता प्रथमाष्टमसमययो रसा विष्ट: मिश्री दारिकयोक्ता सप्तमषष्टद्वितीयेषु १ कार्मणशरीरयोगी चतुर्थके पचमे तृतीयेच समयत्रयेपिच तस्मिन् भव त्यनाहारको नियमादिति २ वाङ्मनसो स्त्वप्र योक्तैव प्रयोजनाभावादिति अतो भिहितं अष्टौ समया यस्मिन् सो ष्टसमय. सएवा ष्टसामयिक: केवलिन: समुद्घात:केवलिसमुद्घातो नशेषइति अन न्तर केवलिनां समुद्घातवक्तव्यतो क्ता अथा केवलिना गुणवतां देवत्व भवतीति देवाधिकारवत् ॥ समणस्सेत्यादि ॥ सूत्रपचक सुगम नवर अनुत्तरेषु विज

तइएसमए मंथं करेइ चउत्थेसमए लोगं पूरेइ पञ्चमेसमए लोगं पडिसाहरइ छठेसमए मंथं पडिसाहरइ सत्तमेसमए कवाड पडिसाहरइ अठमेसमए दंडं पडिसाहरइ । समणस्सणं भगवओ महावीरस्स अठसया

ये मंथानक संहरे ६ । सातमें समयें कपाटसंहरें ७ । आठमे समयं दडसहरे यथावस्थित थाय ८ ॥ श्रमणभगवंत महावीरने आठसे अनुतरोववा ई कल्याणगतिना जानार यावत् आगमनेविषे भद्रक उत्कृष्टीसंपदा थई ॥ आठ प्रकारे वाणव्यतर देवता कह्या ते कहैछे पिशाच १ । भूत २ । य

याद्विमानेषूपपातो येषामस्ति ते अनुत्तरोपपातिकास्तेषां साधूनामिति गम्यते तथा गति र्देवगतिलक्षणा कल्याणा येषां एव स्थितिरपि तथा आगमिष्यत् भद्रं निर्वाणलक्षणं येषांते तथा तेषां चैत्यवृक्षाः मणिपीठिकानामुपरिवर्त्तिनः सर्वरत्नमया उपरिच्छत्रध्वजादिभिरलङ्कृताः सुधर्मादिसभानामग्रतो येश्रूयंते ते एतप्रति संभाव्यन्ते येतु कलंबझए सुलसवडेतहयक्खोइखट्टंगे आसोयचंपएया नागेतहतुंबुरेचेवत्ति ॥ १ ॥ तेचिन्हभूताएतेभ्यो ऽन्य एवेति ॥ कालजोउइत्यादि ॥ झोकाद्वयं कण्ठ्यं नवर ॥ भुयगाणति ॥ महोरगाणमिति ॥ चारचरइत्ति ॥ चारकरोति चरतीत्यर्थः ॥ पमद्दति ॥ प्रमर्द चन्द्रेण स्र

अणुत्तरोववाइयाण गइकल्लाणाणं जाव आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइसंपया होत्था । अठ विहा वाणमंतरा देवा पन्नत्ता तंजहा पिसाया भूया जरका रस्कसा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा एएसिणं अठएह वाणमंतराणं देवाण अठ चेइयरुक्का पन्नत्ता तजहा कालबोउपिसायाण वडोजरकाणचे इयं तुलसीभूयाणभवे रस्कसाणचकंडउ ॥ १ ॥ असोगोकिन्नराणंच किंपुरिसाणचचंपउ नागरुक्कोतुयगाणं गंधव्वाणंतुतिंदुउ ॥ २ ॥ इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ अठ जोयणसए उड्ढ

क्ष ३ । राक्षस ४ । किन्नर ५ । किंपुरुष ६ । महोरग ७ । गंधर्व ८ ॥ एसर्व आठप्रकारे व्यंतरदेवताने आठ चैत्यवृक्ष कह्या ते कहेछे कलंबवृक्ष पिशाचनें १ । वडवृक्ष यक्षनें २ । तुलसी भूतनें ३ । राक्षसने कंडक ४ । असोकवृक्ष किन्नरने ५ । किंपुरुषने चंपकवृक्ष ६ । नागवृक्ष भूतनें ७ । गंधर्वने तिंदुकवृक्ष ८ ॥ आ रत्नप्रभा पृथ्वीनेविषे घणुसम रमणीक जे भूमिभाग तेथकी आठसें योजन ऊंचो सूर्यनु विमान चारचरेछे ॥ आठ नक्षत्र चंद्रमा

श्यमानता तल्लक्षण योग योजयति आत्मन श्चन्द्रेण सार्उं कदाचि न्नतु तमेव सदैवेति उक्तंच पुणवसुरोहिणिचित्ता महजेठ्ठणुराहकत्तियविसाहा चंद स्सउभयजोगत्ति ॥ यानिच दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्दयोगो न्यपि कदाचि द्भवन्ति यतो लोकश्रीटोकाकृतोक्तं एतानि नक्षत्रा ण्युभययोगीनि चंद्रस्य दक्षिणेनोत्तरेणच युज्यते कथचिच्चद्रेण भेद मप्युपयान्तीति एतत्फल चेद एतेषामुत्तरगा ग्रहाःसुभिक्षायचद्रमानितरामिति देवनिवासाधिकारा द्वेवनि वासभूतजबूद्वीपादिद्वारसूत्रदयं देवाधिकारा द्देवत्वभाविकर्म्मविशेषसूचत्रयं कर्माधिकारा त्तन्निबन्धनकुलकोटिसूत्र त्रीन्द्रियादिवेचिन्त्यहेतुकर्मपुद्गलसूत्राणिच

मवाहाए सूरविमाणं चारं चरइ । अठ्ठ नक्खत्ताणं चंदेणसद्धिं पमद्दं जोगंजोएइ तंजहा कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा जिठ्ठा । जंबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स दारा अठ्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता । पुरिसवेयणिज्जस्सणं कम्मस्स जहन्नेणं अठ्ठ संवच्छराइं बंधठिई पन्नत्ता । जसोकित्तिनामएणं कम्मस्स जहन्नेण अठ्ठमुहुत्ताइं बंधठिई पन्नत्ता । उच्चागोयस्सण कम्मस्स एवचेव । तेइंदियाणं अठ्ठजाइ

सघाते फरसीने योग जुडेले तेकहेछे कृत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसू ३ । मघा ४ । चित्रा ५ । विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा ८ ॥ जंबूद्वीप ना बारणा आठ योजन ऊचा ऊचपणे कह्या ॥ सघला द्वीप समुद्रना बारणा आठ योजन ऊचा ऊचपणे कह्या भगवते ॥ पुरुषवेदनी कर्मनी ज घन्य आठ वरसनी बधस्थिति कही ॥ जसकीर्त्ति नामकर्मनी जघन्य आठ मुहूर्त्त बधस्थिति कही ॥ उच्चगोत्रकर्मनी इमज ॥ तेरिद्रीने आठ जाति कुलकोडि जोनि प्रमुख लाख कही ।जीवने आठ थानके निवर्त्तित पुद्गल पापकर्मपणे चिण्या चिणेछे चिणस्ये जीव तेकहेछे प्रथमसमयनिवर्त्तित ना

सुगमानि नवरं ॥ जातीत्यादि ॥ जातौ त्रीन्द्रियजातौ कुलकोटीनां योनिप्रमुखाणां योनिद्वारिकाणां यानि शतसहस्राणि तानि तथेति ॥ इतिश्रीम दभ
यदेवसूरिविरचिते स्थानाख्यतृतीयांगविवरणे ऽष्टस्थानकाख्य मष्टममध्ययन समाप्त मिति ॥ श्लोक ७२० ॥ ८ ॥ ॥ ॥
व्याख्यात मष्टम मध्ययन मधुना सख्याक्रमसबद्धमेव नवमस्थानकाख्यं नवममध्ययन मारभ्यते अस्यच पूर्वेण सह सबंधः सख्याक्रमकृतएवै कः सम्बन्धान्तर
न्तु पूर्वस्मिन् जीवादिधर्मा उक्ता इहापि तएवे त्येव सम्बन्धस्या स्यादिसूत्र ॥ णवहिंठाणेहिंसमणइत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहायं सबधः पूर्वसूत्रे

कुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता । जीवाणमट्ठठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चि
णतिवा चिणिस्संतिवा । पढमसमए नेरइयनिव्वत्तिए जाव अपढमसमयदेवनिव्वत्तिए एव चिणउवचिणजाव
णिज्जराचेव । अट्ठपएसिया खधा अणता पण्णत्ता । अट्ठप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता । जाव
अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥ इइ अट्ठमं ठाणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥ ॥ ॥
नवहिंठाणेहिं समणेनिग्गथे संभोइयविसंभोइयं करेमाणे नाइक्कमइ तंजहा आयरियपडिणीय उवज्झाय

रकी यावत् अपढमसमयदेवनिवर्त्तित इम चिण्या उपचिण्या यावत् निर्जस्या निश्चे ॥ आठ प्रदेशना खंध अनंता कह्या ॥ आठ प्रदेशोगाढ पुद्गल
अनता कह्या ॥ यावत् आठ गुणलूखा पुद्गल अनता कह्या ॥ एणीप्रकारे आठमु ठाणू कह्यो टब्बार्थ ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥
नवथानके श्रमणनिग्रंथ एक माडलीनाने माडलबाहिरकरतो आज्ञा अतिक्रमे नही तेकहेछे आचार्यना प्रत्यनीकने १ ॥ उपाध्यायना प्रत्यनीकने २ ॥

पुद्गला वर्णिता स्तद्विशेषोदयाच्च कश्चित् श्रमणभाव मपगतोपि धर्माचार्यादीनां प्रत्यनीकतां करोति तञ्च विसम्भोगिकं कुर्वन्नपरःसुश्रमणो नाज्ञामतिक्रा मतीतीहा भिधीयत इत्येव सबधस्या स्य व्याख्या साच सबधतएवो क्तेति स्वय ब्रह्मचर्यव्यवस्थितएव चैवकरोतीति तदभिधायकाध्ययनानि दर्शयन्नाह ॥ नवबंभचेरेत्यादि ॥ ब्रह्मच कुशलानुष्टान तच्च त च्चर्य चा सेव्यमिति ब्रह्मचर्य सयमइत्यर्थ स्तत्प्रतिपादका न्यध्ययना न्याचारप्रथमश्रुतस्कन्धप्रतिबद्धानि ब्रह्मचर्याणि तत्र शस्त्र द्रव्यभावभेदा दनेकविधं तस्यजीवशसनहेतोः परिज्ञाज्ञानपूर्वकं प्रत्याख्यान यत्रो च्यते सा शस्त्रपरिज्ञा १ ॥ लोकविजयश्रोत्ति ॥ भावलोकस्य रागद्वेषलक्षणस्य विजयो निराकरण यत्रा भिधीयते स लोकविजयः २ ॥ सोश्रोसिणिज्जंति ॥ श्रोता अनुकूला. परीषहा उष्णाः प्रतिकू ला स्ता नाश्रित्य यत्र कृत त च्छोतोष्णीय ३ ॥ सम्मत्तति ॥ सम्यक्त्व मचलं विधेयं न तापसादीना कष्टतपःसेविना मष्टगुणैश्वर्य मुद्वीक्ष्य दृष्टिमोहः का र्यइति प्रतिपादनपरसम्यक्त्व ४ ॥ आवतीति ॥ आद्यपदेन नामातरेणतु लोकसार स्तत्रा ज्ञानाद्यसारत्यागेन लोकसाररत्नत्रयोद्युक्तेन भाव्य मित्येत म र्थ लोकसारः ५ ॥ धूयंति ॥ धूत सगानां त्यजन तत्प्रतिपादक धूतमिति ॥ विमोहत्ति ॥ मोहसमुत्थेषु परीषहोपसर्गेषु प्रादुर्भूतेषु विमोहो भवे त्तान्

पडिणीय थेरपडिणीयं कुलगणसंघनाणदंसणचरित्तपडिणीय । नवबंभचेरा प० तं० सत्थपरिन्ना लोगवि जनय जाव उवहाणसुयं महापरिन्ना । नव बंभचेरगुत्तीउ प० त० विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवइ नो

थविरना प्रत्यनीकने ३ ॥ कुल ४ ॥ गच्छ ५ ॥ सघ ६ ॥ ज्ञान ७ ॥ दर्शन ८ ॥ चारित्रना प्रत्यनीकने ९ ॥ नवब्रह्मचर्यना अध्ययन कह्या तेकहेछे शस्त्र परिज्ञा आचारागना १ ॥ लोकविजय २ ॥ यावत् उपधानश्रुत ८ ॥ महापरिज्ञा ९ ॥ नवब्रह्मचर्यनी गुप्ति कही ते कहेछे नपुसक पशू स्त्रीसहित वस

सम्य क्छेतेति यत्रा भिधीयते सविमोक्षः ७ महावीरासेवितस्यो पधानस्य तपसः प्रतिपादकं श्रुतं ग्रन्थ उपधानश्रुतमिति ८ महती परिज्ञा अन्तक्रि या लक्षणा सम्यग्विधेयेति प्रतिपादनपर महापरिज्ञेति ९ ब्रह्मचर्यशब्देन मैथुनविरति रप्यभिधीयतइति ब्रह्मचर्यगुप्तीः प्रतिपादयन्नाह ॥ नवेत्यादि ॥ ब्रह्मचर्यस्य मैथुनव्रतस्य गुप्तयो रक्षाप्रकाराः ब्रह्मचर्यगुप्तयः विविक्तानि स्त्रीपशुपंडकेभ्यः पृथग्वर्त्तीनि शयनासमानि संस्तारकपीठकादीनि उपलक्षण तया स्थानादीनिच सेविता तेषां सेवको भवति ब्रह्मचारी अन्यथा तद्बाधासंभवात् एतदेव सुखार्थं व्यतिरेकेणाह नोस्त्रीसंसक्तानि नो देवीनारीति रश्चीभिः समाकीर्णानि सेविता भवतीति संबध्यते एवं पशुभि र्गवादिभि स्तत्संसक्तेहि तत्कृतविकारदर्शनान् मनोविकारः सभाव्यतइति पडका नपुंसकानि तत्ससक्तो स्त्रीसमानो दोषः प्रतीतएवेत्येकः १ नोस्त्रीणां केवलाना मितिगम्यते कथां धर्मदेशनादिलक्षणवाक्यप्रतिबंधरूपां यदिवा कर्णाटी सुरतोपचारकुशलालाटीविदग्धप्रियाइत्यादिकां प्रागुक्तावा जात्यादिव स्तथारूपा कथयिता तत्कथको ब्रह्मचारीति द्वितीय २ ॥ नोइत्थिगणाइति ॥ इदं सूत्र दृश्यते केवल ॥ नोइत्थिठाणाइति ॥ संभाव्यते उत्तराध्ययनेषु तथा धीतत्वात् प्रक्रमानुसारित्वा च्चास्येती दमेव व्याख्यायते नोस्त्रीणां तिष्ठन्तियेषु स्थानानि निषद्याः स्त्रीस्थानानि तानि सेविता भवति ब्रह्मचारी कोर्थः स्त्रीभिः सहै कासने नो पविशे दुत्थिता स्वपिच्चितासु मुहूर्त्तंनोपविशेदिति दृश्यमानपाठाभ्युपगमे त्वेवं व्याख्या नोस्त्रीगणानां पर्युपासको भवेदिति ३ नोस्त्रीणा मिन्द्रियाणि नयननासिकादीनि मनो हरति दृष्टमानाणा चिपत

इत्थीसंसत्ताइं नोपसुसंसत्ताइं नोपंडगसंसत्ताइं १ नोइत्थीणंकहकहेत्ता २ नोइत्थिठाणाइं सेवित्ता भवइ ३ नो

तिमा नरहे १ ॥ स्त्रीनी कथा नकरें २ ॥ स्त्रीबेठाना स्थानके नबेसे ३ ॥ स्त्रीनी इंद्री मनोहर मनोरम दृष्टिमाण्डिये नही ४ ॥ प्रणीत स्निग्धरस न

ति मनोहराणि तथा मनोरमयंति दर्शनानन्तर मनुचिन्त्यमाना न्याह्लादयतीति मनोरमा ख्यालोक्यालोक्य निद्ध्याता दर्शनानन्तर मतिशयेन चिन्तयि
ता यथा हो सलवणत्व लोचनयो र्ऋजुत्व नासावंशस्ये त्यादि ब्रह्मचारीति ४ नो प्रणीतरसभोगी नो गलत्स्नेहविन्दुभोक्ता भवति ५ नो पानभोजनस्य
रूक्षस्या प्यतिमात्रं अद्धमसणस्ससव्वं जणस्सकुज्जाद्दवस्सदोभाए वाऊपवियारठ्ठा छब्भाएऊणयंकुज्जत्ति ॥ १ ॥ एवंविधप्रमाणातिक्रमेणा हारको ऽभ्यवह
र्त्ता सदा सर्वदा भवति खाद्यस्वाद्ययो रुत्सर्गतो यतीना मयोग्यत्वा त्पानभोजनयो ग्रहणमिति ६ नो पूर्वरत गृहस्थावस्थाया स्त्रीसंभोगानुभवन तथा पूर्व
क्रीडित तथैव द्यूतादिरमणलक्षण स्मर्त्ता चिन्तयिता भवति ७ नो शब्दानुपातीति शब्द मन्मनभाषितादिक मभिष्वंगहेतु मनुपत त्यनुसरती त्येवंशील. श

इत्थीणंइंदियाइंमणोहराइंमणोरमाइंआलोइत्तानिज्झाइत्ताभवइ ४ नोपणीयरसभोई ५ नोपाणभोयणस्सअ
इमायमाहारएसयाभवइ ६ नोपुव्वरयपुव्वकीलियसरित्ताभवइ ७ नोसद्दाणुवाई नोरूवाणुवाई नोसिलोगाणुवा
ई ८ नोसायासुक्खपडिबद्धेयाविभवइ ९ ॥ नव बंभचेरअगुत्तीउ प० त० नोविवित्ताइसयणासणाइसेवित्ता
भवइ नोइत्थीसंसत्ताइ पसुसंसत्ताइं पंडगसंसत्ताइ इत्थीणंकहकहेत्ताभवइ नोइत्थिठाणाइ सेवित्ताभवइ इत्थी

जीमे ५ ॥ पाणी भोजन अतिमात्रायेआहारनकरे ब्रह्मचारी ६ ॥ पूर्वनाभोग पूर्वनाविषयसुखसंभारे नही ७ ॥ सुमणास्त्रीना शब्दनें अनुसरेनही। ति
मरूपानुपातीनहोय यसख्यातिनें अनुसरेनहीं ८ ॥ सातासुखने विषें तत्परनथायब्रह्मचारी ९ ॥ नवब्रह्मचर्यनी अगुप्तिकही तेकहेछे विविक्तशय्या आ
सन सेवे स्त्रीसयुक्त पसुसंसक्त नपुंसकससक्त एहवा १ ॥ स्त्रीनी कथाकहे सरागपणे २ ॥ स्त्री बेठीहोय ते थानके बेसे स्त्रीनां इंद्रीजोवे सरागपणे

व्दानपाती एवं रूपानुपाती श्लोकं खयाति मनुपततीति श्लोकानुपातीति पदत्रयेण प्येकमेव स्थानकमिति ८ नो साता सौख्यप्रतिवद्धति साता त्वणग्र
कृते सातागा वा सौख्य सुख गन्धरसस्पर्शलक्षणविषयसपाद्य तत्र प्रतिवद्ध स्तत्परो ब्रह्मचारी सातग्रहणा दुपशमसौख्यप्रतिबद्धताया न निषेधः वापीति
समुच्चये भवतीति उक्तविपरीता प्रगुप्तयो प्येवमेवेति उक्तरूप नवगुप्तिसनाथ ब्रह्मचर्यं जिनै रभिहितं इति जिनविशेषौ, प्रक्तताध्ययनावतारेणाह ॥ अभि
नदणेत्यादि ॥ कण्ठ्य अभिनदनसुमतिजिनाभ्याञ्च सद्भूताः पदार्थाः प्ररूपिता स्तेच नवेति तान् दर्शयन्नाह ॥ नवसभावेत्यादि ॥ तद्भावेन परमार्थेना नुपचा
रेणे त्यर्थ. पदार्था : वस्तूनि सद्भावपदार्थां स्तद्यथा जीवाः सुखदुःखज्ञानोपयोगलक्षणा अजीवा स्तद्विपरीताः पुण्य शुभप्रकृतिरूपं कर्म पाप तद्विपरीत

णंइदियाइंमणोरमाइ जाव निज्काइत्ताभवइ पणीयरसभोई पाणभोयणस्सअइमायमाहारएसयाभवइ पुव्वरयं
पुव्वकीलियसरित्ताभवइ सद्दाणुवाई सिलोगाणुवाई जाव सायासुक्खपडिवद्धेयाविभवइ। अभिनंदणाउणअर
हाउ सुमईअरहा नवहिसागरोवमकोडिसयसहस्सेहिं वीइक्कतेहिं समुप्पन्ने। नव सब्भावपयत्था पन्नत्ता त०
जीवा अजीवा पुन्न पाव आसवो संवरो निज्जरा बंधो मोक्खो ९। नवविहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं

३ ॥ प्रणीतरस भोजनकरे ५ ॥ आहार अतिमानायेले प्रमाणथी अधिकले ६ ॥ शब्दानुपाती रूपानुपाती श्लोकानुपाती ॥ साता सुखने विषे तत्प
रहोय ८ ॥ अभिनदन अरिहतथी सुमतिनाथ अरिहत नवसागरोपम कोडाकोडि हज्जार गयापछी ऊपना ॥ नव छताभाव पदार्थ कह्या तेकहेछे
जीव १ ॥ अजीव २ ॥ पुन्य ३ ॥ पाप ४ ॥ आश्रव ५ ॥ सवर ६ ॥ निर्जरा ७ ॥ बध ८ ॥ मोक्ष ९ ॥ नवप्रकारना ससारसमापन्न जीव कह्या तेकहे

कर्मैव आश्रूयते स्टह्यते नेने त्याश्रव' शुभाशुभकर्मादानहेतुरितिभाव: संवर आश्रवनिरोधो गुप्त्यादिभि र्निर्जराविपाका त्तपसोवा कर्म्मणां देशत: चपणा
ह्यधआश्रवै रात्तस्य कर्मण आत्मना संयोगो मोच्त. कृत्स्नकर्मचया दात्मन' स्वात्म न्यवस्थानमिति ननु जीवाजीवव्यतिरिक्ता: पुण्यादयो न संति तथा
युज्यमानत्वा त्तथाहि पुण्यपापे कर्मणी बन्धोपि तदात्मकएव कर्मच पुद्गलपरिणाम: पुद्गलाश्चा जीवाइति आश्रवस्तु मिथ्यादर्शनादिरूप परिणामोजी
वस्य सचा त्मान पुद्गलाश्च विरहय्य कोन्य संवरो प्याश्रवनिरोधलच्चणो देशसर्वभेद आत्मन: परिणामो निवृत्तिरूपो निर्जरातु कर्मपरिशाटोजीव: कर्मणां
यत्पार्थक्य मापादयति स्वशक्त्या मोचो प्यात्मा समस्तकर्मविरहितइति तस्मा ज्जीवाजीवौ सद्भावपदार्थाविति वक्तव्य मतएवोक्त मिहैव जदत्थिचणं
लोए त सव्व दुप्पडयार तजहा जीवच्चेव अजीवच्चेवत्ति अन्नोच्यते सत्यमेतत् किंतु यावेव जीवाजीवपदार्थौ सामान्येनो क्तौ तावेवेह विशेषतो नवधोक्तौ
सामान्यविशेषात्मकत्वा द्वस्तुन स्तथेह मोचमार्गेशिष्य प्रवर्त्तनीयो न संग्रहाभिधानमात्रमेव कर्त्तव्य सच यदेव माख्यायते यदुता श्रवो बन्धो बन्धद्वारा
यातेच पुण्यपापे मुख्यानि तत्वानि संसारकारणानि संवरनिर्जरेच मोचस्य तदा संसारकारणत्यागे नेतरत्र प्रवर्त्तते नान्यथे त्यत: षट्कोपन्यास: मुख्यसा
ध्यख्यापनार्थंच्च मोचस्येति अत्रच पदार्थनवके प्रथमो जीवपदार्थो ऽत स्तद्भेदगत्यागत्यवगाहनासंसारनिर्वर्त्तनरोगोत्पत्तिकारणप्रतिपादनाय ॥ नवविहे

पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया बेंदिया जाव पचेंदिया । पुढविकाइया नवगइया नवआगइया प०

छे पृथिवीकाय यावत् वनस्पतीकाय बेंद्री यावत् पंचेंद्री ॥ पृथिवीकायना जीवनी नवगति नव आगति कही तेकहैछे पृथिवीकाय पृथ्वीकायमां उप
जतो पृथ्वीकायमाथी यावत् पचेंद्रीमाहिथी आवी उपजेछे तेहज पृथवीकाय पृथ्वीकायपणु छांडतो पृथ्वीकायपणें यावत् पंचेंद्रीपणे उपजे इम अ

त्यादि ॥ सूत्रपंचदशकमाह सुगम चेदं नवरं अवगाहते यस्यां सा अवगाहना शरीरमिति ॥ वत्तिसुवत्ति ॥ ससरण निर्वर्त्तितवंतो ऽनुभूतवंत एव मन्यद

तंजहा पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो जाव पचिंदिएहिंतोवा उववज्जेज्जा सेचे वणसे पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहयमाणे पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताएवा एव आउकाइ यावि जाव पंचिदियत्ति । नवविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा एगिंदिया वेंदिया तेइंदिया चउरिंदिया नेरइया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुया देवा सिद्धा । अहवानवविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तजहा पढमसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया जाव अपढमसमयदेवा सिद्धा । नव विहा जीवोवगाहणा पन्नत्ता तजहा पुढविकायत्तोगाहणा आउ० जाव वणस्सइकाइयत्तोगाहणा वेंदियोगाहणा तेइंदियोगाहणा चउरिंदियोगाहणा पचेंदियोगाहणा । जीवाण नवहिं ठाणेहि संसार वत्तिंसुवा ३ तजहा पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिदियका

प्कायपणें यावत् पंचेंद्रीय ॥ ८ ॥ नवप्रकारे सर्वजीव कह्या तेकहेछे एकेंद्री १ ॥ बेंद्री २ ॥ तेरिंद्री ३ ॥ चौरिंद्री ४ ॥ नारकी ५ ॥ पचेंद्री तीर्यंचयोनिआ ६ ॥ मनुष्य ७ ॥ देवता ८ ॥ सिद्ध ९ ॥ अथवा नवप्रकारे सर्वजीव ते कहेछे प्रथमसमयनारकी अप्रथमसमयनारकी यावत् अप्रथमसमयनादेवता सिद्ध ९ ॥ नवप्रकारे सर्वजीवनी अवगाहना कही ते कहेछे पृथ्वीकायनी अवगाहना शरीर अप्कायनी अवगाहना यावत् वनस्पतिकायनी अवगाहना बेंद्रीनीअवगाहना तेंद्रीनी अवगाहना चउरिंद्री अवगाहना पचेंद्रीनी अवगाहना ॥ जीव नवथानके ससारप्रते वर्त्या भम्या वर्तेछे वर्तस्ये तेक

पि ॥ अच्चासणयाएत्ति ॥ अत्यन्तमतत मासन मुपवेशन यस्य सोत्यासन स्तद्भाव स्तत्ता तया अर्शोविकारादयोहि रोगा एतया उत्पद्यंतइति अथवा अति मात्र मशन मत्यशन तदेवा ऽत्यशनता दौर्बल्यच प्राकृतत्वा त्तया साचा जीर्णकारणत्वा द्रोगोत्पत्तयइति ॥ अहितासणयाएत्ति ॥ अहित मननुकूल टोल पाषाणाद्यासन यस्य स तथा शेषतथैव तया अहिताशनतया वा अथवा साजीर्णेभुज्यतेयत्तु तदध्यशनमुच्यत इतिवचनात् अध्यसन मजीर्णेभोजनं तदेव तत्ता तयेति भोजनप्रतिकूलता प्रकृत्यनुचितभोजनता तया इद्रियार्थानां शब्दादिविषयानां विकोपन विपाक इन्द्रियार्थविकोपन कामविकारइत्यर्थं स्ततो हि स्त्र्यादिष्वभिलाषादुन्मादादिरोगोत्पत्ति यंतउक्त आदावभिलाषः १ स्या चितातदनन्तर २ ततःस्मरण ३ तदनुगुणानांकीर्त्तन ४ मुद्वेगो ५ ऽथप्रलापश्च ६ ॥ १ ॥ उन्मादस्तदनु ७ ततो व्याधि ८ र्जडता ९ ततस्ततोमरणमिति विषया प्राप्तौ रोगोत्पत्ति रत्यासक्तावपि राजयक्ष्मादिरोगोत्पत्तिः स्यादिति शारीररोगोत्पत्तिकारणा न्युक्ता न्यथान्तररोगोत्पत्तिकारणभूतकर्मविशेषभेदाभिधानायाह ॥ नवेत्यादि ॥ सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि सामान्यग्रह

इयत्ताए। नवहिंठाणेहि रोगुप्पत्तीसिया तं० अच्चासणयाए अहियासणयाए अइनिद्दाए अइजागरिएणं उच्चारनिरोहेणं पासवणनिरोहेण अद्धाणगमणेणं भोयणपडिकूलयाए इंदियत्थकोवणयाए। नवविहे दंसणावरणे

छेहे पृथ्वीकायपणे यावत् पंचेद्रिय ॥ नवथानके जीवनें रोग ऊपजे तेकहेछे अतिघणु अशन आहारकरवाथी १ ॥ अहितइद्रीने प्रतिकूलभोजनथी अजीर्णमा खाय २ ॥ घणी उघकरवाथी ३ ॥ घणु रात्रि जागवाथी ४ ॥ वडीनीति रोकवाथी ५ ॥ लघुनीत रोकवाथी ६ ॥ मार्गे घणुं चालता ७ ॥ प्रतिकूलभोजनकरवाथी नसदे तेखाय जीभस्वादे ८ ॥ इद्रीनाअर्थ विषयविपाकथी कामविकारथी ९ ॥ नवप्रकारें दर्शनावरणीकर्म कह्यो तेकहेछे

गात्मको बोधो दर्शनं तस्या वरणस्वभाव कर्म दर्शनावरणं तन्नवविध तत्र निद्रापंचकं तावत् द्राकुत्सायागतो नियत द्राति कुत्सितत्व मविस्पष्टत्व गच्छति चैतन्य मनयेति निद्रा सुखप्रबोधा स्वापावस्था नखच्छोटिकामात्रेणापि यत्र प्रबोधो भवति तद्विपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि निद्रेति कार्येण व्यपदिश्यते तथा निद्रातिशायिनो निद्रा निद्रानिद्रा शाकपार्थिवादित्वा न्मध्यपदलोपो समास सा पुनर्दुःखप्रबोधा स्वापावस्था तस्याहि अत्यर्थं मस्फुटतरीभूतचैतन्यत्वा दुःखेन बहुभि र्घोलनादिभिः प्रबोधो भवत्यतः सुखप्रबोधनिद्रापेक्षया अस्या अतिशायिनीत्व तद्विपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि कार्यद्वारेण निद्रानिद्रे त्युच्यते उपविष्ट ऊर्द्धस्थितो वा प्रचला त्यस्या स्वापावस्थायामिति प्रचल सा ह्युपविष्टस्यो र्द्धस्थितस्यवा घूर्णमानस्य खलु भवति तथाविधविपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि प्रचलेत्युच्यते तथैव प्रचलातिशायिनी प्रचलाप्रचला साहि चंक्रमणादि कुर्वतः खलु भवति अतःस्थानस्थितस्वपृभवा प्रचला मपेक्ष्या तिशायिनो तद्विपाका कर्मप्रकृतिरपि प्रचलाप्रचला स्त्यानाबहुत्वेन संघात मापन्ना गृद्धि रभिकाङ्क्षा जागृदवस्थाध्यवसितार्थसाधनविषया यस्या स्वापावस्थायां सा स्त्यानगृद्धि स्तस्याहि सत्यां जागृदवस्थाव्यवसित मर्थं मुत्थाय साधयति स्त्यानावा पिण्डीभूता ऋद्धि रात्मशक्तिरूपा यस्यामिति स्त्यानर्द्धि रित्यप्युच्यते तद्भावेहि खलुः केशवार्द्धबलसदृशी शक्ति र्भवति अथवा स्त्याना जडीभूता चैतन्यर्द्धि रस्या मिति स्त्यानर्द्धिरिति तादृशविपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि स्त्यानर्द्धिः स्त्यानगृद्धिरिति वा तदेव निद्रापंचकं दर्शनावरणक्षयोपशमा लब्ध्यात्मलाभाना दर्शनलब्धीना मावारकमुक्त मधुना यद्दर्शनलब्धीना मूलतएव

कम्मे पसत्ते तं० निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीणगिद्धी चक्खुदरिसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे

निद्रा १। निद्रानिद्रा २। प्रचला ३। प्रचलाप्रचला ४। थीणद्धी ५। चक्षुदर्शनावरणी ६। अचक्षुदर्शनावरणी ७। अवधिदर्शनावरणी ८। केवलद

लाभ माप्नोति तदिदं दर्शनावरणचतुष्क मुच्यते चक्षुषा दर्शनं सामान्यग्राही बोध श्चक्षुर्दर्शनं तस्यावरण चक्षुर्दर्शनावरण मचक्षुषा चक्षुर्वर्जेन्द्रियचतुष्टयेन मनसावा दर्शनंयत् त दचक्षुर्दर्शन तस्या वरण मचक्षुर्दर्शनावरण अवधिना रूपिमर्यादया ऽवधिरेववा कारणनिरपेक्षो बोधरूपोदर्शनं सामान्यार्थग्रहण मवधि दर्शन तस्या वरण मवधिदर्शनावरण तथा केवल मुक्तस्वरूपं तच्च तद्दर्शनञ्च तस्या वरणं केवलदर्शनावरण मित्युक्त नवविध दर्शनावरण जीवानां कर्मणः सकाशा न्नक्षत्रादिदेवत्व तिर्यक्त मानुषत्वच भवतीति नक्षत्रादियत्काव्यताप्रतिबद्धसूत्रद्वंद ॥ अभीत्यादिर्हंमीइतीसचक्रेति ॥ इत्येतदत माह सुगमच नवरं ॥ साइरेगेत्ति ॥ सातिरेका न्नवमुहूर्त्तान् याव च्चतुर्विंशत्या मुहूर्त्तस्य द्विषष्टिभागैः षट्षष्ठ्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्टिभागानामिति ॥ उत्तरेणजोगंति ॥ उत्तर स्या दिशि स्थितानि दक्षिणाशास्थितचन्द्रेण सह योग मनुभवतीतिभावः ॥ बहुसमरमणिज्जाओत्ति ॥ अत्यन्तसमो बहुसमो ऽतएव रमणीयो रम्य स्तस्मा द्भूमिभागान्नपर्वताद्यपेक्षया नापि श्वभ्रापेक्षयेतिभावः ॥ अबाधाएत्ति ॥ अतरे कृत्वेति वाक्यशेषः ॥ उवरिल्लेत्ति ॥ उपरितन ताराभूपं तारकजातीय चार भ्रम

ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे ॥ अभिईणनक्खत्तेसाइरेगे नवमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ ॥ अभिईआ इयाण नव नक्खत्ता चंदस्सउत्तरेणं जोगं जोएइ त० अभिई सवणो धणिठा जाव भरणी । इमीसेणं रयणप्प भाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ नवजोयणसए उड्ढ अबाहाए उवरिल्ले ताराभूवे चारंचरति ।

र्शनावरणी ९ ॥ अभीचिनक्षत्र झाझेरा नवमुहूर्त चंद्रमासंघाते जोग जुडेछें अभीचिआदिदेई नवनक्षत्र चंद्रनें उत्तरे जोग जुडेछें तेकहेछे अभिजित् श्रवण धनिष्टा यावत् भरणी ॥ आ रत्नप्रभा पृथ्वीनें विषे घणुसमो रमणीक जे भूमिभाग तेथकी नवसे ९०० योजन उचो अबाधाये आतरे उपरलूं

यं चरति पाचरति ॥ नवजोयणियत्ति ॥ नवयोजनायामा एव प्रविशंति लवणसमुद्रे यद्यपि पंचशतयोजनायामा मत्स्या भवंतीति तथापि नदीमुखेषु
जगतीरंध्रोचित्ये नेतावता मेव प्रवेशइति लोकानुभावोवा यमिति पयावइत्याद्यर्द्धं श्लोकस्तो त्तरंतु गाथापश्चार्द्धमिति संक्षेपाया तिदिग्दर्शनाय ॥ एत्तोत्ति ॥
पूत सूत्रा दारब्धं ॥ जहासमवाएत्ति ॥ समवाये चतुर्थाङ्गे यथा तथा निरवशेषं ज्ञेय तथार्थत इदं नववासुदेवबलदेवाना मातापितर स्तेषामेव नामानि
पूर्वभवनामानि धर्माचार्या निदानभूमयो निदानकारणानि प्रतिशत्रव गतयश्चेति किमत्र मेतदित्याह ॥ जावएगाइत्यादि ॥ गाथापश्चार्द्धं पूर्वार्द्धं त्विद मस्या
भरतंमिआराआएगोपुणजभवोयकप्पंमित्ति ॥ सिज्झिस्सइआगमिस्सेणति ॥ आगमिष्यति काले सेत्स्यति गमिति वाक्यालंकारे तृतीया चेयमिति तथा
जंबूद्वीपेत्यादा वागाम्युत्सर्पिणीसूत्रे एव जहासमवाएइत्याद्यतिदेशवचनमेव भावनीयं यावत् तातिवासुदेवसूत्र महाभीमसेन सुग्रीवश्चापश्चिमइत्येतदंतं तथा

जबूद्दीवेणंदीवे नवजोयणिया मच्छा पविसिंसुवा पविसंतिवा पविसिसंतिवा जंबुद्दीवेदीवे भरहेवासे इमीसे
उस्सप्पिणीए नवबलदेववासुदेवपियरोहोत्था पयावईयबंभेय रुद्देसोमेसिवेइय महासीहेअग्गसीहे दसरहन्न
वमेयवसुदेवे ॥ १ ॥ इत्तोआढत्तं जहा समवाए निरवसेसं जाव एगासे गब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्से

ताराऊप चारचरेलें भमेलें ॥ जबूद्वीपनेंविषे नवयोजनना माछला पैसेले पइसस्ये ॥ जबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आ उत्सर्पिणीये नव बलदेव वासुदेवना पि
ता थया तेकहैले प्रजापती १ । ब्रह्म २ । रुद्र ३ । सोम ४ । शिव ५ । महसिंह ६ । अग्निसिंह ७ ॥ दशरथ ८ ॥ नवमो वसुदेव ९ ॥ इहांथी माकी
जिम समवायांगमाहे तिम सर्व जाणवू यावत् एगासेगब्भजसहीए गाथाये मोक्षे जास्ये ॥ आवतीचोवीसीये जबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आवती उत्सर्पि

एते गाथा ॥ एते अनन्तरोदिता नवप्रतिशत्रव' ॥ कित्तीपुरिसाणंति॥ कीर्त्तिप्रधानाः पुरुषा. कीर्त्तिपुरुषा स्तेषां ॥ चक्कजोहित्ति ॥ चक्रेणयोद्धुं शील येषाते चक्रयोधिनः ॥ हम्मीहंतिति॥ हनिष्यति स्वचक्रैरिति इह महापुरुषाधिकारे महापुरुषाणां चक्रवर्त्तिनां संबंधि निधिप्रकरणमाह ॥ एगमेगेत्यादि॥ सुगम नवरं नेसप्प १ पंडुए २ पिं गलेय ३ सव्वरणेय ४ महापउमे ५ कालेय ६ महाकाले ७ माणवगमहानिही ८ संखे ९ ॥ १ ॥ नेसप्पमिगाहा ॥ इह निधान तन्नाय कदेवयो रभेदविवक्षया नैसर्प्योदेव स्तस्मि न्सति तत इत्यर्थः निवेशाः स्थापनानि अभिनवग्रामादीनामिति अथवा चक्रवर्त्तिराज्योपयोगिद्रव्याणि सर्वा

णं । जंबुद्दीवेदीवे भरहेवासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए नवबलदेववासुदेवपियरो भविस्सति नवबलदेव मायरोभविस्सति एवं जहा समवाए निरवसेसं जाव महाभीमसेणे सुग्गीवेयअपच्छिमे । एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं सव्वेचिचक्कजोही हमीहंतीसचक्केहि ॥ १ ॥ एगमेगेणं महानिही नवनवजोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ते । एगमेगस्सणं रन्नो चाउरतचक्कवट्टिस्स नव महानिहीउ पन्नत्ताउ तंजहा नेसप्पपंडुएपिं गलेयसव्वरयणेमहापउमे कालेयमहाकाले माणवगमहानिहीसंखे ॥ १ ॥ नेसप्पम्मिनिवेसा गामागरनगरपट्ट

णीये नव बलदेवना वासुदेवना पिताथास्यें एम जिम समवायागमां निर्विशेष जांणवु यावत् महाभीमसेन सुग्रीव छेहल्यो ए सर्वनें निश्चे प्रतिशत्रु कीर्त्तिवंत पुरुष वासुदेवने सघला ए चक्रयोधी हणाये पोताने चक्रे प्रतिवासुदेव १ ॥ एकेको महानिधान नव २ योजन पिहुलपणे कहिआ ॥ ए कएकराजा चातुरंत चक्रवर्तिने नव मोटानिधान कह्या ते कहेछे नैसर्प १ ॥ पंडुक २ ॥ पिंगल ३ ॥ सर्वरत्न ४ ॥ महापद्म ५ ॥ काल ६॥ महाकाल

ठा० ॥

१२ ॥

एष्वपि नवसु निधि ष्ववतरन्ति नवनिधानतया व्यवह्रियतइत्यर्थः तत्र ग्रामादीना मभिनवानां पुरातनानांच ये सन्निवेशा निवेशनानि ते नैसर्प्पनिधौ वर्त्तन्ते नैसर्प्पनिधितया व्यवह्रियन्त इतिभावः तत्र ग्रामोजनपदप्रायलोकाधिष्ठितः आकरो यत्र सन्निवेशे लवणाद्युत्पद्यते नकरो यत्रास्ति तन्नकर पत्तन देशी स्थानं द्रोणमुख जलपथस्थलपथयुक्त मडंब मविद्यमानप्रत्यासन्नवसिमं स्कन्धावारः कटकनिवेशो गृह भवनमिति १ ॥ गणितगाहा ॥ गणितस्य दीनारादि पूगफलादिलक्षणस्य चकारस्य व्यवहितसंबंधः सच दर्शयिष्यते तथा बीजाना तन्निबंधनभूतानां तथा मान ॥ सेटिकादि तद्विषय यत्तदपि मानमेव धान्यादि मर्यमितिभाव' तथो न्मानं तुलाकर्षादि तद्विषय य त्तद् प्यमान खडगुडादि धरिमिमित्यर्थः ततो द्वन्द्वसमाहारः कार्यं स्तत स्तस्यच किमित्याह यत्प्रमाण चकारो व्यवहितसंबंध एव तथैव दर्शयिष्यते तत्पाण्डुकौ भणितमिति लिङ्गपरिणामेन संबध' तथा धान्यस्य व्रीह्यादे र्बीजानाञ्च तद्विशेषाणा मुत्पत्तिश्च या सा पांडुके पांडुकनिधिविषया तद्व्यापारोयमितिभावो भणितो ता जिनादिभिरिति २ ॥ सव्वागाहा ॥ कणगा ३ ॥ रयणगाहा ॥ अश्वरवटनेवरत्नान्येकेंद्रिया

णाणच दोणमुहमडंबाणं खधाराणगिहाणंच ॥ २ ॥ गणियस्सयवीयाणं माणुम्माणस्सजपमाणंच धन्नस्सय वीयाणं उप्पत्तीपडुएभणिया ॥ ३ ॥ सव्वाआभरणविही पुरिसाणजायहोइमहिलाण आसाणयहत्थीणय पिं

७ ॥ माणवक ८ ॥ महानिधान शंख ९ ॥ नैसर्पनेंविषें थापना ग्राम आगर पाटण द्रोणमुख मटंब कटकनिवेश घरनानिवेश एतला वानालेवा ॥ ग णितनुं मान उन्मान बीजनु जे प्रमाण धान २४ बीजनी उत्पत्ति पडुक निधानमा छे ३ ॥ सर्वआभरणनीविध पुरुषनी वली जे स्त्रीयानी घोडा हा थीना लक्षणादि पिंगल निधानमा कह्या ॥ ४ ॥ रतन सर्वरतनमा चउदे वर प्रधान चक्रवर्त्तिने ऊपजे एकेंद्रीरतन ॥ ५ ॥ वस्त्र सर्वनी उत्पत्ति निष्पत्ति

॥ ८

॥ स

॥ भा

णि चक्रादीनि सप्त पचेंद्रियाणि सेनापत्यादीनि सप्त उत्पद्यन्ते भवंति यानि चक्रवर्त्तिन स्तानि सर्वाणि सर्वरत्नेसर्वरत्ननामनिनिधौ द्रष्टव्यानीतिभावः ॥ वत्था
णगाहा ॥ वस्त्राणा वाससा योत्पत्तिः सामान्यतो याच विशेषतो निष्पत्तिः सिद्धिः सर्वभक्तीना सर्ववस्त्रप्रकाराणा सर्वाभक्तयः प्रकारा येषां तानि तथा
तेषा किंभूताना वस्त्राणा मित्याह रंगाणांरगवता रक्ताना मित्यर्थः धौतानां शुद्धस्वरूपाणा सर्वेषा महापद्मे महापद्मनिधिविषया ॥ कालेगाहा ॥ काले
कालनाम्नि निधौ कालज्ञान कालस्य शुभाशुभरूपस्य ज्ञान वर्त्तते ततो ज्ञायतइत्यर्थः किंभूतमित्याह भाविवस्तुविषयं भव्य पुरातनवस्तुविषय पुराण चशब्दा
द्वर्त्तमानवस्तुविषयवर्त्तमान ॥ तीसुवासेसुत्ति ॥ अनागतवर्षत्रयविषयमतीतवर्षत्रयविषयचेति तथा शिल्पशतं कालनिधौ वर्त्तते शिल्पशतच घट १ लोह २
चित्र ३ वस्त्र ४ नापित ५ शिल्पाना प्रत्येक विंशतिभेदत्वादिति तथा कर्माणिच कृषिवाणिज्यादीनि कालनिधा वितिप्रक्रम. एतानिच त्रीणि कालज्ञा
नशिल्पकर्माणि प्रजाया लोकस्य हितकराणि निर्वाहाभ्युदयहेतुत्वेनेति ६ ॥ लोहगाहा ॥ लोहस्य चोत्पत्ति महाकाले निधौ भवति वर्त्तते तथा आकराण

गलणिहिम्मिसाज्ञाणिया ॥ ४ ॥ रयणाइंसव्वरयणे चउदसपवराइंचक्कवट्टिस्स उप्पज्जंतियएगिं दियाइंपंचिं
दियाइंच ॥ ५ ॥ वत्थाणयउप्पत्ती निप्फत्तीचेवसव्वभत्तीण रगाणयधोवाणय सव्वाएसामहापउमे ॥ ६ ॥ का
लेकालन्नाण नव्वपुराणंचतीसुवासेसु सिप्पसयकम्माण तिन्निपयाहियकराइं ॥ ७ ॥ लोहस्सयउप्पत्ती होइ

सर्वजात अन्नने रगवा धोवानीविधि एमहापद्मनेंविषें ॥ ६ ॥ कालनिधानमा कालनु शुभाशुभज्ञानछे भावीवस्तु पुरातनवस्तु वर्त्तमान त्रणिकाल
विषय शिल्पविज्ञान शतकर्म कृषिवाणिज्यादि ए सर्व प्रजालोकने हितना करनारछे लोहनी उत्पत्तिहोय महाकालनेविषें आगरना रूपुं सोनुं मो

च सोवर्णादिराकाना मुत्पत्ति रावरीकरणलक्षणा एवं रूप्यादीना मुत्पत्तिः सवन्मनीशा कोनल मणय चन्द्रकान्तादयो मुक्ता मुक्ताफलानि शिलाः स्फाटिकादि काः प्रवालानि विद्रुमाणीति ७ ॥ जोहागाहा ॥ योधाना शूरपुरुषाणां यो त्पत्ति रावरणाना संनाहानां प्रहरणाना खङ्गादीनां सा युद्धनीतिश्च व्यूह रचनादिलक्षणा माणवके निधौ निधिनायकोवा भवति ततः प्रवर्त्तत प्रतिभावः दण्डेनोपलक्षिता नीति र्दण्डनीतिश्च सामादि चतुर्विधा ऽतएवोक्त माणव्क को सेराउदूडनीईं माणवगमिलीषोदेइ ॥ भरूरसत्ति ॥ ८ ॥ नहगाहा ॥ नाट्यं नृत्य तद्विधि स्तत्करणप्रकारो नाटक चरितानुसारि नाटकलक्षणोपेत तद्वि धिश्च एवं पदद्वये तंत स्तथा काव्यस्य चतुर्विधस्य धर्मार्थकाममोक्षलक्षणपुरुषार्थप्रतिबद्धग्रन्थस्य था सस्कृतप्राकृतापभ्रंशसंकीर्णभाषानिबद्धस्य २ यद्वा समविषमार्द्धसमवृत्तबद्धतया गद्यतयाचेति २ अथवा गद्यपद्यगेयचौर्णपदभेदबद्धस्येति उत्पत्तिः प्रभवः शंखे महानिधौ भवति तथा तूर्याङ्गाणांच मृदंगादीनां सर्वेषामिति ॥ चक्कगाहा ॥ चक्रे ष्वष्टासु प्रतिष्ठानं प्रतिष्ठा अवस्थान येषाते तथा अष्टौ योजना न्युत्सेधउच्छ्रायो येषां ते तथा नवच यो

महाकालम्मिआगराणंच रूप्पस्ससुवस्सस्सय मणिमुत्तिसिलप्पवालाणं ॥ ८ ॥ जोहाणयउप्पत्ती आवरणाणंचप हरणाणंच सव्वायजुद्धनीई माणवएदंडनीईय ॥ ९ ॥ णट्टविहिणाडयविही कव्वस्सचउव्विहस्सउप्पत्ती संखे महानिहिम्मि तुडियगाणंचसव्वेसिं ॥ १० ॥ चक्कट्ठपइट्ठाणा अट्ठुस्सेहायनवयविक्खंभे बारसदीहामंजू सस

ती प्रवालानी उत्पत्ति ॥ ८ ॥ जोसुभटनी उत्पत्ति आवरण सन्नाह बगतर प्रहरणशस्त्र सर्वयुद्धनी नीति माणवकने दंडनीनीति कहीछे ॥ ९ ॥ नाटकनी विधि नाचवानीचरित्र नाटिकानी सर्व च्यारप्रकारनी उत्पत्ति धर्म अर्थ काम शंखमहानिधानने विषे त्रुटितवाजित्र सर्वनी ॥ १० ॥ आठ चक्रनेविषे र

जनानीति गम्यते विष्कम्भे विस्तरे निधयइतिशेषः द्वादशयोजनानि दीर्घा मजूषा प्रतीता तत्संस्थिता स्तत्संस्थाना जाह्नव्या गंगाया मुखे भवन्तीति ॥ वेरुलियगाहा ॥ वैडूर्यमणिमयानि कपाटानि येषा ते तथा मयशब्दस्य वृत्त्या उत्कर्षतेति कनकमयाः सौवर्णा. विविधरत्नप्रतिपूर्णाः प्रतीता शशिसूरच क्राकाराणि लक्षणानि चिह्नानि येषाते तथा अनुरूपा अविषमाः ॥ जुगत्ति ॥ यूप स्तदाकारा वृत्तत्वाद्दीर्घत्वाच्च बाहवो द्वारशाखा वदनेषु मुखेषु येषा ते तथा ततः पदत्रयस्य कर्म्मधारये शशिसूरचक्रलक्षणानुसमयुगबाहुवदनाइति चः समुच्चये १२ ॥ पलिगाहा ॥ निहिसरिनामत्ति ॥ निधिभिः सदृक् सदृ क्षं नामयेषां देवाना ते तथा येषां देवानां ते निधयः आवासाः आश्रयाः किंभूता अक्रेया अक्रयणीया सर्वदैव तत्सबधित्वात् आधिपत्यंच स्वामिताच ते षु येषा देवनाइति प्रक्रमः ॥ एएतेगाहा ॥ कण्ठ्या अनन्तरं चित्तविज्ञातिविर्गातिहेतवो निधयउक्ता अधुना तथाविधाएव विकृतीः प्रतिपादयन्नाह ॥ नववि

ठियाजाण्हवीइमुहे ॥ ११ ॥ वेरुलियमणिकवाडा कणगमयाविविहरयणपडिपुन्ना ससिसूरचक्कलक्खण अ णुसमजुगबाहुवयणाय ॥ १२ ॥ पलिओवमठिईया निहिसरिणामायतेसुखलुदेवा जेसितेआवासा अक्केया आहिवच्चंच ॥ १२ ॥ एएतेनवनिहिओ पभूयधणरयणसचयसमिद्धा जेवसमुवगच्छंती सव्वेसिंचक्कवट्टीणं १४

हिआछे आठयोजनउंचा नवयोजनपिहुला बारेयोजनदीर्घ मजूसमा रहिआ गंगानामुखें रह्याछें ॥ ११ ॥ वैडूर्य रतनना कपाटछे सुवर्णरत्नमय विविध रतने परिपूर्ण चद्रसूर्य चक्राकार लक्षणे चिह्नछें अनुसम अविषम समा युगधोसरा जेहवा आकारेबारसाखछे मुखे ॥ १२ ॥ पल्योपमनीस्थितिना निधिने नामे नाम तेहने विषे देवतारहेछे तेहना तिहा निवासछे अक्रेय क्रयनथी अधिपतिपणु करेछे सर्वदातिहा रहेछे ॥ १३ ॥ ए नवेनिधान घणां ध

गरैपोऽत्यादि ॥ गयार्थ तथा प्यते किंचित् ॥ विगईभोत्ति ॥ विकृतयो विकारकारित्वात्पत्तान्नंतु कदाचिदविकृतिरपि तेने ता नव अन्यथातु दशा पि भवति तथाहि एकेनचैवतत्पो पूरिजद्रपूनएणजोताप्रो वौचाजिरपुणतप्पद्र निन्निगद्दयलेवडोनवरमिति ॥ १ ॥ द्वितीयोपि विकृति नैभवतीति भाप ता पोरं पचवा अजेडकागोमहिष्यष्ट्रीभेदा इविनानीतद्घृतानि चतुर्द्धोशोणा तदभावात् तेल चतुर्धा तिलातसोकुसुंभसर्षपभेदात् गुडो द्विधा द्रव पिण्डभेदात् मधुत्रिधा माक्षिककोतिकभ्रामरकभेदात् मद्यद्विधा काष्टपिष्टभेदात् मासत्रिधा जलस्थलाकाशचरभेदादिति विकृतय शोपचयहेतवः शरीर स्येति तस्ये । स्वरूपमात्र ॥ नवेत्यादि ॥ नाभिः श्रोतोभि च्छिद्रे. परिश्रवति मल न्तरतीति नवश्रोतः परिस्रवा बोंदीशरीर मौदारिक मेवैव विधं तत्रोत्रे कर्णौ नेत्रे नयने घ्राणे नासिके मुख मास्य ॥ पोसएत्ति ॥ उपस्थापायुश्पानमिति एव निधे नापि शरीरेणपुण्य मुपादीयतइति पुण्यभेदानाह ॥ पुनेत्या दि ॥ पात्राया नदानाद स्तोर्थंकरनामादिपुण्यप्रकृतिबंध. तदन्नपुण्य मेवं सर्वत्र नार ॥लेणंति ॥ लयन गृह शयन सस्तारको मनसागुणिषु तोषात् वा

नव विगईओ पण्णत्ताओ तंजहा खीरं दहि णवणीय सप्पि तिल्लं गुलो मधु मज्जं मसं । नवसोयपरिस्सवा बोंदी पण्णत्ता तजहा दोसोया दोणित्ता दोघाणा मुह पोसए वायू । नवविहे पुण्णे प० तजहा अन्नपुन्ने

नरतनो संचय पणे सहितछे नस्यालें जे निधान सम्यक् प्रावेछे सर्वचक्रवर्तिने ॥ १४ ॥ नव विगयकही तेकहेछे दूध १ । दही २ । मांखण ३ । घृत ४ । तेल ५ । गोल ६ । मधु ७ । मद्य ८ । मास ९ ॥ नव छिद्रश्रवता शरीरमा तकहेछे बेकान २ । बेनेत्र ३ । बेनाक ६ । मुख ७ । उपस्थापायु २ । वडीनी ति लघुनीति थानक ॥ नवप्रकारे पुन्य कह्यो तेकहेछे अन्नपुन्य १ । पाणीनु पुन्य २ । वस्त्रपुन्य ३ । शय्या आसन पाटीप्रमुखनुदेवो ४ । संथारो

चा प्रशंसनात् कायेन पर्युपासनात् नमस्काराच्च यत्पुण्य तन्मनःपुण्यादीति उक्तंच अन्नपानवस्त्रंच आलयःशयनासनं शुश्रूषावंदनतुष्टिःपुण्यनवविधं स्मृतमिति ॥१॥ पुण्यविपर्यासरूपस्य पापस्य कारणान्याह ॥ नवपावस्सेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं पापस्या शुभप्रकृतिरूपस्या यतनानि वधहेतवइति पापहे त्वविकारा स्पापश्रुतसूत्र कण्ठ्य नवरं पापोपादानहेतुः श्रुत शास्त्र म्पापश्रुत तत्र प्रसंग स्तयासेवारूपो विस्तरोवा सूत्रवृत्तिकरूप. पापश्रुतप्रसंगः ॥ उप्पा एसिलोगो॥ तत्रोत्पात' प्रकृतिविकाररूपः सहजरुधिरवृष्ट्यादि तत्प्रतिपादनपर शास्त्रमपि तथा राष्ट्रोत्पातादि तथा निमित्त मतीतादिपरिज्ञानोपाय शास्त्र कूटपर्वतादि मंत्रो मन्त्रशास्त्रं जोवोद्धरणगारुडादि ॥ आइक्खिएत्ति ॥ मातंगविद्या यदुपदेशा दतीतादि कथयति डोम्बो वधिराइति लोकप्रतीता' ४ चैकित्सक मायुर्वेद' कला लेखाद्या गणितप्रधाना: शकुनरुतपर्यवसाना द्वासप्तति स्तच्छास्त्राण्यपि तथा आव्रियते आकाश मनेने त्यावरण भवनप्रासा

पाणपुन्ने लेणपुन्ने सयणपुन्ने मणपुन्ने वयपुन्ने कायपुन्ने नमोक्कारपुन्ने । नव पावस्सा ययणा प० तं० पाणाइवाए जाव परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे । नवविहे पावस्सुयपसंगे पन्नत्ते तंजहा उप्पाए नेमि त्तिए मंतेआइक्खएतिगिच्छिए कलाववरणअन्नाणे मिच्छापावयणेतिय ॥ १ ॥ नवनिउणियावत्थू पन्नत्ता

कंबलादिप्रमुख मनपुन्य गुणवंतनेविषे संतोष ववनेप्रसंसा ते वचनपुन्य कायाइंसेवा ते कायपुन्य नमस्कारकरवो ते नमस्कारपुन्य ९ ॥ नव पापना आयतन थान कह्या तेकहेछे प्राणातिपात १ । मृषावाद २ । यावत् परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ । लोभ ९ ॥ नवप्रकारे पापश्रुतनो प्रसंग सेवारूप कह्यो तेकहेछे उत्पात रुधिरवृष्टिप्रमुख १ । निमित्तशास्त्र २ । मन्त्रशास्त्र ३ । आइक्क मातंगविद्याथई वातकहे तेहना त्रिकारज्ञा

द्नगरादि तल्लक्षणशास्त्रमपि तथा वास्तुविद्येत्यर्थः अज्ञानं लौकिकश्रुतं भारतकाव्यनाटकादि ८ मिथ्याप्रवचनं शाक्यादितीर्थिकशासनमिति एतच्च सर्वम
पि पापश्रुत सयतेन पुष्टालंबनेना सेव्यमान मपापश्रुतमेवेति इति रेवंप्रकारे च: समुच्चये उत्पातादिश्रुतवत्तश्च निपुणा भवतीति निपुणपुरुषाभिधानायाह ॥
तओनिउणेत्यादि ॥ निपुण सूक्ष्मं ज्ञान तेन चरंतीति नैपुणिका निपुणाएयवानैपुणिकाः ॥ वत्थूति ॥ आचार्यादिपुरुषवस्तूनि पुरुषाइत्यर्थः ॥ संखाणेसिलोगो ॥
संख्यानगणितं तद्योगात् पुरुषोपितथा सख्यानेवा विषये निपुणइति एवमन्यत्रापि नवर निमित्तं चूडामणिप्रभृतिः कायिकं शारीरिकं इडापिंगलादिप्राण
तत्वमित्यर्थः पुराणो वृद्धः सच चिरजीवित्वात् दृष्टबहुविषव्यतिकरत्वा नैपुणिकइति पुराणंवा शास्त्रविशेष स्तज्ज्ञो निपुणप्रायो भवति ४ ॥ पारिहत्थिएत्ति ॥
प्रकृत्यैवदक्षः सर्वप्रयोजनाना मकालहीनतया कर्त्तेतिच ५ तथा पर प्रकृष्टः पंडितः प्रपंडितः परपंडितो बहुशास्त्रज्ञ. परोवा मित्रादिः पंडितो यस्य स तथा
सोपि निपुणसंसर्गा न्निपुणो भवति वैद्यकशास्त्रकर्यादिति वादो वादलब्धिसपन्नो यः परेण न जीयते मन्त्रवादी धातुवादीवेति ज्वरादिरक्षानिमित्तंभूतिदान भ
तिकर्म तत्र निपुण स्तथा चिकित्सते निपुणो ऽथवा ऽनुप्रवादाभिधानस्य नवमपूर्वस्य नैपुणिकानि वस्तूनि प्रध्ययनविशेषाएवेति एतेच नैपुणिका. साधवो

तंजहा संखाणेनिमित्तेकाईए पोराणेपारिहत्थिए परिपडिएयवाईय भूइकम्मेतिगिच्छिए ॥ २ ॥ समणस्सनंग

स्त्र ४ । वैदकशास्त्र ५ । ७२ कलाशास्त्र ६ । आवरण ते वास्तुकशास्त्र ७ । अज्ञान शास्त्र भरतादि ८ । मिथ्याप्रवचन शाक्यादि दर्शनशास्त्र ९ ॥ नव नि
पुणवस्तु ते आचार्यादिपुरुषवस्तु कह्या ते कहेछे गणितजाणे ते गणक नैमित्तिक ३ । कायानी नाडीजाणें वैद्य पौराणिक पुराणजाणे स्वभावेदक्ष अव
सरसर्वजाणे पारिहस्तिक प्रप्मपंडित बहुश्रुत वादी मनवादी धातुवादी भूतिकर्मनें विषें डाह्यो ते भूतकर्म चिकित्साथी निपुण साधीप्रमुख ९ ॥

गणांतर्भाविनो भवंतीति गणसूत्रं॥ समणस्सेत्यादि॥ कण्ठ्य नवरं गणा एकक्रियावाचनानां साधूनां समुदाया गोदासादीनिच तन्नामानीति उक्तगुणवत्ति
नाच साधूनां य झगवता प्रज्ञप्त तदाह ॥ समणेणमित्यादि ॥ नवभिः कोटिभिः विभागैः परिशुद्ध निर्दोषं नवकोटिपरिशुद्धंभिक्षाणां समूहो भैच प्रज्ञप्त न्त
थया न हंति साधुः स्वयमेव गोधूमादिदलनेन न घातयति परेण गृहस्थादिना घ्नंतनानुजानाति अनुमोदनेन तस्यवा दीयमानस्या प्रतिषेधनेना प्रतिषिद्ध
मनुमतमितिवचनाद्धननप्रसगजननाच्चेति आहच कामंसयनकुव्वइ जाणतोपुणतहाविगाही वट्टेइतप्पसंगअगिण्हमाणोउवारेइत्ति ॥ १ ॥ तथा हतपिष्टं
सत् गोधूमादि मुद्गादिवा अहतमपि सन्न पचति स्वय शेष प्राग्वत् सुगमञ्च इहवाद्याः षट्कोटयो ऽविशोधिकोव्या मवतरन्ति आधाकर्मादिरूपलादन्यास्तु
तिस्रोविशोधिकोव्यामिति उक्तंच सानवहादुहकोरइ उग्गमकोडोविसोहिकोडोय छसुपढमाओवरइ कीयतियंमीविसोहीओत्ति॥ १ ॥ नवकोटीशुद्धाहा

वर्त्नमहावीरस्स नवगणाहोत्था तंजहा गोदासगणे उत्तरबलियस्सयगणे उद्देहगणे चारणगणे उड्ढवाइयगणे
विस्सवाइगणे कामिड्ढियगणे माणवगणे कोडियगणे । समणेणन्नगवयामहावीरेणं समणाणंनिग्गंथाणं नव
कोडिपरिसुद्धे भिक्खे पन्नत्ते तंजहा णहणइ णहणावेइ हणंतनानुजाणइ नपयइ नपयावेइ पयतंनाणुजाणइ

श्रमण भगवत महावीरनें नव गच्छथया ते कहेछे गोदासगण १ । उत्तरबलियगण २ । उद्देहगण ३ । चारणगण ४ । ऊर्द्धवातिकगण ५ । विश्ववादीग
ण ६ । कामर्द्धिकगण ७ । मानवगण ८ । कोटिकगण ९ ॥ श्रमणभगवतमहावीरे श्रमणनिग्रंथने नवकोटिशुद्ध भिक्षाकही तेकहेछे हणेनही दलवे
खाण्डवे हणावेनही हणताने अनुमोदे नहीं ॥ ईशान देवेंद्र देवनोराजा वरुण महाराजानें नव अग्रमहिषी कही॥ ईशान देवेंद्रनी अग्रमहिषीनुं न

रग्राज्ञिणां कथचि न्निर्व्वाणाभावे देवगति र्भवत्येवेति देवगतिगतवस्तुस्तोम मभिधित्सुः ॥ ईसाणस्सेत्यादि॥ सूत्रनवकमाग्र सुगम चेदं नवरं ॥ नवपलिओव माइति ॥ नवैव तासा सपरिग्रहत्वा दुक्तच सपरिग्गहेयराण सोहम्मीसाणपल्लिय १ साहीय २ उक्कोससत्तवणा नयपणपणायदेवीणंति ॥ १ ॥ सारस्स गाहा ॥ सारस्वता १ आदित्या २ वह्नयो ३ वरुणा ४ गर्द्दतोया ५ सुषिता ६ अव्याबाधा ७ आग्नेया ८ एते कृष्णराज्यंतरे ष्वष्टासु परिवसंति रिष्टस्तु कृष्णराजिमध्यभागवर्त्तिनि रिष्टाभे विमानप्रस्तटे परिवसतीति अनन्तरं गैवेयकविमानानि उक्तानि तद्वासिनश्च शुभन्तो भवंती त्यायु परिणामभेदाना ह ॥ नवविहेइत्यादि ॥ आउयपरिणामेत्ति ॥ आयुषः कर्मप्रकृतिविशेषस्य परिणामः स्वभावः शक्ति र्धर्म्म इत्यायुः परिणाम स्तत्रगति र्देवादिका ता नि यता येन स्वभावेना यु र्जीव माप्यति स आयुषा गतिपरिणाम स्तथा येना यु स्वभावेन प्रतिनियतगतिकर्मबन्धो भवति यथा नारकायु. स्वभावेन मनु

नकिणइ नकिणावेइ किणंतंनाणुजाणइ ॥ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो नवऋग्गमहि सीउ पन्नत्ताउ । ईसाणस्सण देविंदस्स देवरन्नो ऋग्गमहिसीण नवपलिउवमाइ ठिई पन्नत्ता। ईसाणेकप्पे उक्कोसेणं देवीणंणवपलिउवमाइ ठिई प० । नव देवनिकाया पन्नत्ता तजहा सारस्सयमाइच्चा वर्ह्हीवरुणा यगद्दतोयाय तुसिताऋव्वावाहा ऋग्गिच्चाचेवरिठाय॥ १ ॥ ऋव्वाबाहाण देवाण नवदेवा नवदेवसया पन्नत्ता

वपल्योपमनु आयु कह्यो ॥ ईशानदेवलोके उत्कृष्टो देवीनु नवपल्योपमनु आयु कह्यो ॥ नवदेवनिकाय कह्या तेकहेछे सारस्वत १ । आदि त्य २ । वह्नि ३ । वरुण ४ । गर्द्दतोय ५ । तुषित ६ । अव्याबाध ७ । आग्नेय ८ । रिष्ट ९ ॥ १ ॥ अव्याबाधदेवताने नवसे देवछे ॥ इम आग्ने

एवं ञ्जग्गिच्चावि एवंरिठावि। नव गेविज्जविमाणपत्थमा पसत्ता तंजहा हिठिमगेविज्जविमाणपत्थमे हिठि ममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थमे हिठिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थमे मज्झिमहिठिमगेविज्जविमाणप० मज्झि ममज्झिमगेविज्जविमाणप० मज्झिमउवरिमगेविज्जविमाणप० उवरिमहिठिमगेवि० उवरिममज्झिमगे० उव रिम२ गेविज्जविमाणपत्थमे। एएसिणं नवरहं गेविज्जगाण विमाणपत्थमाणं नव नामधेज्जा पसत्ता तजहा नहेसुनहेसुजाए सोमणसेपियदसणे सुदसणेञ्जमोहेय सुप्पबुद्धेजसोहेरे ॥ १ ॥ नवविहे ञ्जाउपरिणामे प० तजहा गइपरिणामे गइबंधणपरिणामे ठिइपरिणामे ठिइबधणपरिणामे उड्ढगौरवपरिणामे ञ्जहेगौरवपरि

यने इम रिष्टने ॥ नव ग्रैवेयकना विमान पाथमा कह्या तेकहेले हेठिम हेठिम गेविज्जविमानपथमो १। हेठिममध्यमग्रैवेयक विमान पाथमो २। हेठिमउवरिमग्रैवेयक विमानपाथमो ३। मध्यमहेठिमगेविज्जविमान पाथमो ४। मध्यममध्यमग्रैवेयक विमानपाथमो ५। मध्यमउवरिमग्रेवेयकवि मानपाथमो ६। उवरिमहेठिमग्रैवेयकविमानपाथमो ७। उवरिममध्यमविमानपाथमो ८। उवरिमउवरिमग्रैवेयकविमानपाथमो ९॥ ए नव विमान पाथमाना नव नाम कह्या तेकहेले नद्र १। सुनद्र २। सुजात ३। सोमनम ४। प्रियदर्शन ५। सुदर्शन ६। अमोघ ७। सुप्रबुद्ध ८। यशोधर ९॥ नव प्रकारे आउखाना परिणाम कह्या तेकहेले गतिस्वभाव १। गतिबधन स्वनाव २। स्थितिस्वभाव ३। स्थितिबधनस्वनाव ४। ऊर्द्धगमनस्वना व ५। अधोगमनस्वनाव ६। तिरछा जावानु स्वभाव ७। दीर्घगमनस्वनाव लोकातथी लोकातलगेजाय ८। ह्रस्वगमनस्वनाव ९॥ नव नवमिकाय

ण्यतिर्यग्गतिनाम कर्म बध्नाति तदेव नारकगतिनामकर्मेति सगतिबंधनपरिणाम स्तथा आयुषो या ऽतर्मुहूर्त्तादित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमान्ता स्थिति र्भव ति स स्थितिपरिणाम स्तथा येन पूर्वभवायुः परिणामेन परभवायुषो नियतां स्थिति मबध्नाति सस्थितिबंधनपरिणामो यथा तिर्यगायुःपरिणामेन दे वायुष उत्कृष्टतो प्यष्टादशसागरोपमानीति तथा येन आयुःस्वभावेन जीवस्यो र्द्धदिशि गमनशक्तिलक्षणपरिणामो भवति स ऊर्द्धगौरवपरिणाम इह गौ रवशब्दो गमनपर्याय एव मितरौ द्वाविति तथा यत आयुः स्वभावात् जीवस्य दीर्घ दीर्घगमनतया लोकान्तात् लोकांत याव द्गमनशक्ति र्भवति स दी र्घगौरवपरिणाम एवंच यस्मात् ह्रस्व गमन स ह्रस्वगौरवपरिणामः सर्वंच प्राकृतत्वा दनुस्वार इत्य न्यथा प्यूह्यमेतदिति अनन्तर मायुः परिणाम उक्त स्तत्रैव चायुः परिणामविशेषे सति तपःशक्ति र्भवतीति तपोविशेषाभिधानायाह ॥ नवनवमिएत्यादि ॥ कण्ठ्या नवरं नवनवमानि दिनानि यस्यां सा न वनवमिका नवनवमानिच भवति नवसु नवकेष्विति तत्परिमाणे यमिति नवचनवका न्येकाशीति रितिकृत्वे काशीत्या रात्रिन्दिवै रहोरात्रै र्भवति त था प्रथमनवके प्रतिदिन मेकादत्तिः पानकस्य भोजनस्य चेत्येव मेकोत्तरया वृद्ध्या नवमे नवके नव दत्तय स्ततश्च सर्वसंकालनया चतुर्भि श्च पंचोत्तरै र्भि क्षाशतै र्यथासूत्र यथाकल्पं यथामार्गं यथातत्व सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्त्तिता आराधिताचापि भवतीति इयंच जन्मान्तरकृत

णामे तिरियगौरवपरिणामे दीहंगौरवपरिणामे रहस्संगौरवपरिणामे । नवनवमियाणं भिक्खुपडिमा एका सीएहिराइदिएहि चउहियपंचुत्तरेहिं भिक्खासएहि अहासुत्ता जाव आराहियायाविभवइ । नवविहे पाय

तिप्रतिमा एकाशी रात्रियेकरी च्यारसेपांच भिक्षाये करी यथासूत्रे कही तिम आराधी होय ॥ नव प्रकारे प्रायश्चित्त कह्यो तेकहेछे आलायणायो

पापकर्मप्रायश्चितमिति प्रायश्चितनिरूपणसूत्रं तच्च गतार्थमिति प्रायश्चित्तच भरतादिचेत्रेचेवेति तद्गतवस्तुविशेषप्रतिपादनाय ॥ जंबूद्दीवेत्यादि ॥ एरव एकुडनामाइंइत्येतदंतं ॥ सूत्रप्रपचमाह सुगमश्चायं नवरं भरतग्रहण विजयादिव्यवच्छेदार्थं दीर्घग्रहण वर्तलवैताढ्यव्यवच्छेदार्थमिति ॥ सिद्धेगाहा ॥ तत्र सिद्धायतनयुक्तं सिद्धकूटं सक्रोशयोजनषट्कोच्छ्रय मेतावदेव मूले विस्तोर्णं एतदर्द्धोपरिविस्तारं क्रोशायामेनार्द्धक्रोशविष्कम्भेन देशोनक्रोशोच्चेना परदिग्द्वार वर्गपचधनुःशतोच्छ्रय तदर्द्धविष्कम्भद्वारत्रयोपेतेन जिनप्रतिमाष्टोत्तरशतान्वितेन सिद्धायतनेन विभूषितोपरितनभागइति तच्च वैताढ्ये पूर्वस्यां दिशि शेषा णितु क्रमेण परत स्तस्मादेवेति भरतदेवप्रासादावतंसकोपलक्षितं भरतकूट ॥ खडगत्ति ॥ खण्डप्रपातानामवैताढ्यगुहा यया चक्रवर्त्ती अनार्यचेत्रा त्स्व चेत्र मागच्छति तदधिष्ठायकदेवसबंधित्वा त्खडप्रपातकूट मुच्यते ॥ माणीति ॥ मणिभद्राभिधानदेवावासत्वा न्माणिभद्रकूटं ॥ वेयड्ढत्ति ॥ वैताढ्यगिरिना थदेवनिवासा द्वैताढ्यकूटमिति ॥ पुणत्ति ॥ पूर्णभद्राभिधानदेवनिवासात् पूर्णभद्रकूट तिमिस्त्रगुहा यया स्वचेत्रा चक्रवर्त्ती विलातचेत्र याति तदधिष्ठा

च्छित्ते पन्नत्ते तंजहा आलोयणारिहे जाव मूलारिहे अणवठप्पारिहे । जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे दीहवेयड्ढे नव कूडा पन्नत्ता तंजहा सिद्धेभरहेखंडग माणीवेयड्ढपुन्नतिमिसगुहा भरहेवेसमणेय भरहेकूडाणनामाइं ॥ १ ॥ जंबूमंदरदाहिणेणं निसढवासहरे पव्वए नवकूडा पन्नत्ता तंजहा सिद्धेनिसहेहरिव स्सविदेहेहिरिधिईयसीओया

ग्य १ । यावत् मूलयोग्य अनवस्थ पारांचिक ९ ॥ जंबूद्वीपना दक्षिण भरते दीर्घवैताढ्ये नव कूट कह्या तेकहेछे सिद्ध १ । भरत २ । खंडग ३ । मा णिभद्र ४ । वैताढ्य ५ । पूर्णभद्र ६ । तिमिस्त्रकूट ७ । भरत ८ । वैश्रमण ९ ॥ कूटनाम ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे मेरूथी दक्षिणे निषधपर्वते नवकूट कह्या

यकटेयाासा तिमिसगुहाकूटमिति ॥ भरहेत्ति ॥ तथैव वैश्रमणलोकपालावासत्वा वैश्रमणकूटमिति ॥ सिद्धेगाहा ॥ सिद्धेत्ति ॥ सिद्धायतनकूटं तथा निषधपर्वताधिष्ठातृदेवनिवासोपेतं निषधकूटं हरिवर्षस्य चेत्रविशेषस्याधिष्ठातृदेवेन स्वीकृतं हरिवर्षकूटं एवंविदेहकूटमपि ह्रीदेवीनिवासो ह्रीकूट एव धृतिकूटं शीतोदानदी तद्देवीनिवासः शीतोदाकूटं अपरविदेहकूटवदिति रुचकश्चाग्यालपर्वतः तदधिष्ठातृदेवनिवासो रुचककूटमिति ॥ नदणेत्ति ॥ नदनवनं मेरोः प्रथममेखलायां तत्र कूटानि ॥ नदणगाहा ॥ तत्र नंदनवने पूर्वादिदिक्षु चत्वारि सिद्धायतनानि विदिक्षु चतुश्चतुःपुष्करिणीपरिक्षिप्ता चत्वारः प्रासादावतंसकाः तत्र पूर्वस्मात् सिद्धायतनादुत्तरत उत्तरपूर्वप्रासादाद्दक्षिणतो नंदनकूटं तत्र देवो मेघंकरा तथा पूर्वसिद्धायतनादेव दक्षिणतो दक्षिणपूर्वप्रासादादुत्तरतो मन्दरकूटं तत्र मेघवतीदेवी अनेनक्रमेण शेषाण्यपि वाच्यानि देव्यस्तु निषधकूटे सुमेघा हैमवतकूटे मेघमालिनी रजतकूटे सुवत्सा रुचककूटे वत्समित्रा सागरचित्रकूटे वैरसेना वैरकूटे बलाहकेति बलकूटं तु मेरोरुत्तरपूर्वस्यां नन्दनवने तत्र बलोदेव इति मालवतेइत्यादि ॥ सि

अवरविदेहेरुयगे निसहेकूडाणनामाइं ॥ १ ॥ जंबूमंदरपव्वए णंदणवणे नवकूडा पण्णत्ता तंजहा नंदणेमंदरे चेव निसहेहेमवयरयतरुयएय सागरचित्तेवइरे बलकूडेचेवबोधव्वे ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेदीवे मालवंतेवक्खारपव्वए

तेकहेछे सिद्ध १ । निषध २ । हरिवर्ष ३ । विदेह ४ । ह्री ५ । धृति ६ । सीतोदा ७ । अपर विदेह ८ । रुचक ९ ॥ यह निषधपर्वते कूटना नाम १॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वते नंदन वने नवकूट कह्या तेकहेछे नंदन १ । मंदरकूट २ । निषध ३ । हेमवत ४ । रजत ५ । रुयग ६ । सागर चित्र ७ । वज्र ८। बलकूट ९ ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे माल्यवान पर्वते नवकूट कह्या तेकहेछे सिद्ध १ । माल्यवत २ । उत्तरकुरु ३ । कच्छ ४ । सागर ५। रजत ६। सीतोदा ७।

डेगाहा ॥ माल्यवान् पूर्वोत्तरो गजदन्तपर्वत स्तत्र सिद्धायतनकूट मेरोरुत्तरप्र्वंत एवं शेषाण्यपि नवरं सिद्धकूटे भोगादेवी रजतकूटे भोगमालिनीदेवी शे षेषु स्वसमाननामानोदेवाः हरिसहकूट नीलवत्पर्वतस्य नीलवत्कूटा द्दक्षिणतः सहस्रप्रमाण विद्युत्प्रभवर्त्तिहरिकूटं नन्दनवनवर्त्तिबलकूटंच शेषाणितुप्रा यः पचयोजनशतिकानोति एव कच्छादिविजये वैताढ्यकूटान्यपि व्याख्यातानुसारेण ज्ञेयानि नवर एव जाव पुक्खलावइमीत्यादि यावत्करणात् महाक च्छाकच्छावतीश्रावर्त्तमंगलावर्तपुष्कलेषु सुकच्छवद्वैताढ्येषु सिद्धकूटादीनि नव नव कूटानि वाच्यानि नवरं द्वितीयाष्टमस्थाने ऽधिकृतविजयनामवाच्यमिति एव ॥ वच्छेत्ति ॥ शीतायादक्षिणे समुद्रासन्ने एव जाव ॥ मगलावइमीत्यत्र ॥ यावत्करणात् सुवच्छमहावच्छवच्छावतीरम्यरम्यकरमणीयेषु प्रागिवकूटनवक

नवकूडा पन्नत्ता तंजहा सिद्धेयमालवंते उत्तरकुरुकच्छसागरेरयए सीयायपुन्ननामे हरिस्सहकूडेयबोधव्वे ॥१॥ जंबू कच्छे दीहवेयड्ढे नवकूडा पन्नत्ता तंजहा सिद्धेकच्छेखंडग माणीवेयड्ढपुन्नतिमिसगुहा कच्छेवेसमणेय कच्छेकूडाणनामाइं ॥ १ ॥ जंबूसुकच्छे दीहवेयड्ढेण नवकूडा पन्नत्ता तंजहा सिद्धेसुकच्छखंडग माणीवेयड्ढपु न्नतिमिसगुहा सुकच्छेवेसमणेय सुकच्छकूडाणनामाइं ॥ १ ॥ एवं जाव पुक्खलावइंमि दीहवेयड्ढे ॥ एव वच्छे

पूर्ण ८ । हरिकूट ९ ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे कच्छ विजये दीर्घ वैताढ्यना नवकूट कह्या तेकहेछे । सिद्ध १ । कच्छ २ । खंडक ३ । माणिभद्र ४ । वैताढ्य ५ । पूर्णभद्र ६ । तिमिस्रगुफा ७ । कच्छ ८ । वैश्रमण ९ ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे सुकच्छविजये दीर्घवैताढ्ये नवकूट कह्या ते कहेछे सिद्ध सुकच्छ खंडग माणिभ द्र वैताढ्य पूर्णभद्र तिमिस्रगुफाकूट सुकच्छ वैश्रमण एम सुकच्छमा नवकूट कह्या ॥ १ ॥ एम यावत् पुकलावतीमां दीर्घवैताढ्ये इम वच्छविजये दी

ट्ठ्यमिति ॥ जंबूद्दीवेत्यादि ॥ विद्युत्प्रभो देवकुरुपश्चिमगजदंतकः तत्र नवकूटानि पूर्ववत् नवरं दिक्कुमार्यौ वारिसेनाबलाहकाभिधा नेक्रमेण कनककूटस्वस्तिककूटयोरिति ॥ पम्हेत्ति ॥ शीतोदाया दक्षिणेन विद्युत्प्रभाभिधानगजदंतकप्रत्यासन्नविजये जावसलिलावइमीत्यत्र यावत्करणात् सुपक्ष्ममहापक्ष्मपक्ष्मावतीशंखनलिनकुमुदेषु प्रागिव नवनवकूटानि वाच्यानि एवमित्युक्ताभिलापेन ॥ वप्पेत्ति ॥ शीतोदाया उत्तरेण समुद्रप्रत्यासन्नविजये जावगंधिलावइमीत्यत्र यावत्करणात् सुवप्रमहावप्रवप्रावतीवल्गुसुवल्गुगंधिलेषु नवनवकूटानि प्रागिव द्रष्टव्यानीति पुनः पक्ष्मादिविजयेषु षोडश स्वतिदिशति एव ॥ सव्वेसुइत्यादिना ॥

दीहवेयड्ढे एवं जाव मंगलावइमिदीहवेयड्ढे जंबूविज्जुप्पन्ने वक्खारपव्वए नवकूडा प० तं० सिद्धेयविज्जुनामे देवकुरापम्हकणगसोवत्थी सीओदाएसजले हरिकूडेचेवबोधव्वे ॥ १ ॥ जंबूपम्हे दीहवेयड्ढे नवकूडा प० तं० सिद्धेपम्हेखडग माणीवेयड्ढए । एवचेव जाव सलिलावइमि दीहवेयड्ढे एव वप्पेदीहवेयड्ढे एव जाव गंधिलावइमिदीहवेयड्ढे नवकूडा प० तंजहा सिद्धेगंधिलखडग माणीवेयड्ढपुन्नातिमिसगुहा गंधिलावइवेसमणे कूडाणं

घवैताढ्ये इम यावत् मंगलावतीमा दीर्घवैताढ्ये ॥ जबूद्वीपे विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वते नवकूट कह्या ते कहेछे सिद्ध १ । विद्युत्प्रभ २ । देवकुरु ३ । पद्म ४ । कनक ५ । सोवत्थी ६ । सीतोदा ७ । सतंजल ८ । हरिकूट ९ ॥ एम नव कूट जाणवा ॥ १ ॥ जबूद्वीपे पद्मदीर्घ वैताढ्ये नवकूट कह्या तेकहेछे सिद्ध पद्म खडग माणिभद्र वैताढ्य एम ५ ॥ यावत् सलिलावती विजये दीर्घवैताढ्ये ॥ इमज वप्रविजये दीर्घवेताढ्ये एम यावत् गंधिलावतीमा दीर्घवैताढ्ये नवकूट कह्या तेकहेछे सिद्ध १ गंधिल २ खडग ३ माणिभद्र ४ वैताढ्य ५ पूर्णभद्र ६ तिमिस्रगुफाकूट ७ गंधिलावती ८ वैश्रमण ९ ॥ १॥

कूटानां सामान्यलक्षणमुक्तमिति विशेषार्थिनातु जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति र्निरूपणीया एवं नीलवत् कूटानि ऐरवतकूटानिच व्याख्येयानीति इय कूटवक्तव्यता तीर्थं
करै रुक्तेति प्रकृतावतारिणीं जिनवक्तव्यतामाह ॥ पासेत्यादि ॥ सूत्रद्वय कण्ठ्य न्नवरं ॥ तित्थकरणामेत्ति॥ तीर्थकरत्वनिबन्धनंनाम तीर्थकरनाम तच्च गोत्रश्च
कर्मविशेष एवे त्येकवद्भावात् तीर्थकरनामगोत्रमिति अथवा तीर्थकरनामेति गोत्र मभिधान यस्य त त्तीर्थकरनामगोत्रमिति श्रेणिको राजा प्रसिद्ध स्तेन एव

होंतिनामाइं ॥ १ ॥ एवं सब्बेसु दीहवेयड्ढेसु दोकूडासरिसनामगा सेसातेचेव। जंबूमंदरउत्तरेणं नीलवते वासहर
पव्वए नवकूडा प० त० सिद्धेनीलवएविदेहे सीयाकित्तीयनारिकंताय अवरविदेहेरम्मग कूडेउवदंसणेचेव।
जंबूमंदरउत्तरेणं एरवए दीहवेयड्ढे नवकूडा प० त० सिद्धेरवएखंडग माणीवेयड्ढपुन्नतिमिसगुहा एरवएवेसमणे
एरवएकूडनामाइं॥ १ ॥ पासेण अरहा पुरिसादाणीए वज्जरिसहनारायसघयणे समचउरंससंठाणसंठिए नवर
यणीउ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था । समणस्सन्नगवउ महावीरस्स तित्थंसि नवहिं जीवेहिं तित्थकरनामगोयकम्मे

इम सर्व दीर्घ वैताढ्यने विषें वीजो आठमो कूट सरिखा नामनो शेष तिमज ॥ जंबू द्वीपे मेरुथी उत्तरे नीलवत वत्तस्कार पर्वते नवकूट कह्या तेकहे
छे सिद्ध १ नीलवंत २ विदेह ३ सीता ४ कीर्ति ५ नारिकाता ६ अपरविदेह ७ रम्यक ८ उपदर्शन ९ ॥ १ ॥ जंबू द्वीपे मेरुथी उत्तरे ऐरवते दीर्घवै
ताढ्ये नवकूट कह्या तेकहेछे सिद्ध १ रत्न २ खण्ड ३ माणिभद्र ४ वैताढ्य ५ पूर्णभद्र ६ तिमिस्र ७ ऐरवत ८ वैश्रमण ९ ऐरवते कूटनाम कह्या ॥ १॥
पार्श्वनाथ अरिहत पुरुषादाणी वज्रऋषभनाराच सघयणी समचतुरस्रसस्थानसस्थित नवहाथ ऊचा ऊचपणे थया ॥ श्रमण भगवान महावीर स्वा

सुपार्श्वो भगवतो वर्द्धमानस्य पितृव्य उदायी कोणिकपुत्रो यः कोणिके ऽपक्रान्ते पाडलिपुत्रं नगरं न्यवीविशत् यस्य स्वभवनस्य विविक्तदेशे पर्वदिने प्वाल्हय संविग्नगीतार्थसद्गुरु तत्पर्युपासनापरायणः परमसंवेगरसप्रकर्ष मनुस्मरन् सामायिकपौषधादिक सुश्रमणोपासकप्रायोग्य मनुष्ठान मन्वतिष्ठत् एकदाच निशि देशनिर्द्धाटितरिपुराजपुत्रेण द्वादशवार्षिकद्रव्यसाधुना कृतपौषधोपवासः सुखप्रसुप्तः कङ्काय: कर्त्तिकाकंठकर्त्तनेनविनाशितइति पोट्टिलोऽनगारो ऽनुत्तरोपपातिकाग्गे ऽधीतो हस्तिनागपुरवासी भद्राभिधानसार्थवाहीतनयो द्वात्रिंशद्भार्यात्यागी महावीरशिष्यो मासिक्या सलेखनया सर्वार्थसिद्धोपपन्नो महाविदेहा त्सिद्धिगामो ऽयत्विहभरतचेत्रात्सिद्धिगामीति गदित स्ततो य मन्यः सभाव्यतइति दृढायुरप्रतीतः शखशतकौ श्रावस्तीश्रावकौ ययो रीदृशो वक्तव्यता किलश्रावस्त्या कोष्टके चैत्ये भगवा नेकदा विहरतिस्म शखादिश्रमणोपासकाश्रागत भगवन्त विज्ञाय वंदितु मागता स्ततो निवर्त्तमाना स्तान् शखः खल्वाख्यातिस्म भोदेवानांप्रिया यथा विपुलमशनाद्युपस्कारयत ततस्तत्परिभुजानाः पाक्षिकपर्व कुर्वाणा विहरिष्याम स्तत स्तेतत्प्रतिपेदिरे पुनः शखो ऽचिन्तयत् न श्रेयो मेऽशनादि भुञ्जानस्य पाक्षिकपौषध प्रति जाग्रतो विहर्त्तुंश्रेयस्तुमे पौषधशालाया पौषधिकस्य मुक्ताभरणशस्त्रादेः शान्तवेषस्यविहर्त्तु मथ स्वगृहे गत्वा उत्पलाभिधानस्वभार्यायैवार्त्ता निवेद्य पौषधशालाया पौषध मकार्षी दितश्चते ऽशना द्युपस्कारयाचक्रु रेकत्रच

निब्बित्तिए तंजहा सेणिएणं सुपासेणं उदाइणा पुट्टलेण ऽणगारेणं दढाउणा संखेणं सयएणं

मीने तीर्थ नवजीव तीर्थंकरनामकर्म गोत्रकर्म निवर्त्यो नीपजाव्यो तेकहेछे श्रेणिकराजा १ सुपार्श्व महावीरनो काको २ उदाई ३ कूणिकनो बेटो श्रेणिकनोपोतो ॥ पोट्टिल अणगार ४ दृढायु ५ शख ६ शतक ७

समवेयुः शंखं प्रतीक्षमाणा स्तस्थुः सो नमच्छति शंखेपुष्कलीनाम श्रमणोपासकः शतक इत्यपरनामा शङ्खस्या कारणार्थंतद्गृहं जगाम आगतस्य चोत्पला श्रावकोचितप्रतिपत्ति चकार ततः पौषधशालायांसविवेशे र्यापथिकीं प्रतिचक्राम शंख मभ्युवाच यदुतो पस्कृत त दशनादि तद्गच्छामः श्रावकसमवाय भुंजामहे तदशनादि प्रतिजाग्रमः पाक्षिकपौषधं तत उवाच शखो ऽहहि पौषधिको नागमिष्यामीति तत.पुष्कली गत्वा श्रावकाणां तन्निविवेद तेतु बुभुजिरे शखस्तु प्रातः पौषध मपारयित्वैव पारगतपादपद्मप्रणिपतनार्थं शतस्थौ प्रणिपत्यच त मुचितदेश मुपविवेशे तरेपि भगवंत वन्दित्वा धर्मञ्च श्रुत्वा शंखान्तिकं गत्वा एवमूचुः सुष्टुत्व देवानांप्रिया स्मान् हीलयसि तत स्तान् भगवान् जगाद मामा यूयं शंखंहीलयत शङ्खोह्यहीलनीयो यतोयंप्रियधर्मादृढ धर्माच तथा सुदृष्टिजागरिकां जागरितइत्यादि सुलसाराजगृहे प्रसेनजितोराज्ञः सबधिनो नागाभिधानस्य रथिकस्य भार्याबभूव यस्या श्चरितमेव मनु श्रूयते किल या पुत्रार्थीस्वपति रिद्रादीनमस्य न्नभिहितो ऽन्या परिणयेति सच य स्तव पुत्र स्तेन मे प्रयोजनमिति भणित्वा नतत्प्रतिपन्नवान् इतश्च तस्याः शक्रालये सम्यक्त्वप्रशसा श्रुत्वा तत्परीक्षार्थं कोपि देवः साधू रूपेणागत स्त च वदित्वा बभाण किमागमन प्रयोजनं देवो ऽवादी त्तवगृहेलक्षपाक स्तैल मस्ति तच्चमे वैद्येनोपदिष्टमिति तद्दीयता ददामीत्यभिगता गृहमध्ये ऽवतारयत्याश्च भिन्न देवेन तद्भाजन मेवंद्वितीयत्तृतीय चेत्येव मखेदा दृष्ट्वा तुष्टो देवो द्वात्रिंशतच गुटिका ददा वेकैका खादे र्द्वात्रिंश त्ते सुता भविष्यति प्रयोजनातरेचाहं स्मर्त्तव्य इत्यभिधाय गतोसौ चिंतित ञ्चानया सर्वाभिरपि एकएव मे

सुलसाए सावियाए

सुलसा श्राविका ८

पुत्तोभयादिति सर्वाः पीता आहृता द्वात्रिंशत्पुत्रावयहंन्तेस्म जठर मरतिश ततः कायोत्सर्ग मकरो दागतो निवेदितो व्यतिकरो विहितो महोपकारो जातो लक्षणव त्पुत्रगणइत्यादि तथा रेवती भगवत औषधदाचो कथ किले कदा भगवतो मेंढिकग्रामनगरे विहरतः पित्तज्वरो दाहबहलो बभूव लोहितवर्चश्च प्रावर्त्तत चातुर्वर्ण्यंच व्याकरोतिस्म यदुत गोशालकस्य तप स्तेजसा दग्धशरीरो तःषण्मासस्य कालकरिष्यतीति तत्रच सिंहनामामुनि रातापनावसानएव ममन्यत मम धर्माचार्यस्य भगवतो महावीरस्य ज्वररोगो स्जति ततो हा वदिष्यन्ति अन्यतीर्थिका यथा छद्मस्थएव महावीरो गोशालकतेजोपहत कालंगतइति एवभूतभावमाजनितमानसमहाद् खखेदितशरीरो मालककच्छाभिधानं विजन वन मनुप्रविश्य कुहुकुहेत्येव महाध्वनिना प्रारोदीत् भग वाश स्थविरै स्त माकार्यो क्तवान् हेसिंह यत्त्वया व्यकल्पि न त द्भावि यत इतो ह देशोनानि षोडशवर्षाणि केवलिपर्याय पूरयिष्यामि ततोगच्छत्वं नगर मध्ये तत्र रेवत्यभिधानया गृहपतिपत्न्या मदर्थं द्वे कूष्माण्डफलशरीरे उपस्कृते नच ताभ्या प्रयोजनं तथा न्यदस्ति तद्गृहे परिवासित मार्जाराभिधानस्य वायो निवृत्तिकारक कुक्कुटमासक वीजपूरककटाहमित्यर्थ स्तदाहर ते नन. प्रयोजन मित्येव मुक्तो सौ तथैव कृतवान् रेवतीच सबहुमान कृता र्थ मात्मान मन्यमाना यथायाचित तत्पात्रे प्रक्षिप्तवती तेना प्यानीय तद्भगवतो हस्ते निसृष्ट भगवतापि वीतरागतयै वोदरकोष्ठेनिक्षिप्त तत स्तत्च णमेव क्षीणो रोगो जातो जातानंदो यतिवर्गो मुदितो निखिलो देवादिर्लोकइति अनतरोत्सर्पिण्या ये तीर्थकरा भविष्यन्ति तेप्रकृताध्ययनानुपातिनोक्ता

रेवईए

रेवती ९ ॥ हिवे जेजीव आवती चोवीसीये तीर्थंकर थई तथा केवली

अधुनातु ये जीवाः सेत्स्यन्ति तथैव तानाह ॥ एसणमित्यादि ॥ तत्र एषइति वासुदेवानां मध्येऽपश्चिमो ऽनतरकालातिक्रांतइति ॥ अज्जोत्ति ॥ आम नणवचनं भगवा न्महावीर' किल साधूना मंत्रयति हेआर्या ॥ उदएपेढालपुत्तेत्ति ॥ सूत्रकृतद्वितीयश्रुतस्कन्धे नालदीयाध्ययनाभिहित स्तद्यथा उदक नामा नगारःपेढालपुत्रः पार्श्वजिनशिष्यो यो सौ राजगृहनगरबाहिरिकाया नालन्दाभिधानाया उत्तरपूर्वस्या दिशि हस्तिद्वीपवनखण्डे व्यवस्थित स्तदेक देशस्थ गौतम संशयविशेष मापृच्छ्य विच्छिन्नसंशयः सन् चातुर्याम धर्मं विहाय पञ्चयामन्धर्मं म्प्रतिपेदेइति पोट्टिलशतका वनतरोक्ता क्वेव दारुको नगा रो वासुदेवस्य पुत्रो भगवतो ऽरिष्टनेमिनाथस्य शिष्यो ऽनुत्तरोपपातिकोक्तचरितइति तथा सत्यकि र्निर्ग्रन्थिपुत्रो यस्ये दृशी वक्तव्यता किल चेटकम हाराजदुहिता सुज्येष्टाभिधाना वैराग्येण प्रव्रजिता उपाश्रयस्या न्तरा तापयतिस्म इतश्च पेढालोनाम परिव्राजको विद्यासिद्धो विद्यां दातुकामो योग्य पुरुष गवेषयति यदि ब्रह्मचारिण्याः पुत्रो भवे त्ततः सुन्यस्ता विद्या भवेयुरिति भावय स्तांचा तापयन्ती दृष्ट्वा धूमिकाव्यामोहकृत्वा वीर्जनिक्षिप्तवान् गर्भ संभूतो दारको जातो निर्ग्रन्थिकासमेतो भगवत्समवसरणं गत स्तत्रच कालसंदीपनामा विद्याधरो वन्दित्वा भगवत पप्रच्छ कुतो मे भयं स्वामी व्याकार्षीत् एतस्मा त्सत्यकिन स्ततो सौ तत्समीप मुपागत्या वज्ञया त प्रति बभाण रे मा त्व मारयिष्यसीति भणित्वा पादयोः पातितः ततो ऽन्यदा

एसणंअज्जो कण्हेवासुदेवे रामेबलदेवे उदयेपेढालपुत्ते पुट्टिले सयएगाहावई दारुएनियंठे सच्चईयणियंठीपुत्ते

यई मोदजास्ये तेकहैछे आर्य कृष्ण वासुदेव रामबलदेव उदय पेढालविद्याधरनो पुत्र पोट्टिल शतक गाथापती दारुक श्रीनेमिशिष्य निग्रंथ वासु देव पुत्र अणुत्तरोववाईमां कह्यो ते सत्यकी सुज्येष्ठा साध्वीनो पुत्र पेढाले धूम्रकरी जोगवी तेहनोपुत्र

साध्वोभ्य: सकाशा दपहृत्य पितृविद्याधरेण विद्या ग्राहितो अथरोहिण्या विद्यया पंचसु पूर्वभवेषु मारित: षष्ठभवे षण्मासावशेषायुषा तेनासौ नेष्टा
इहतु सप्तमे भवे सिद्धा तस्याललाटे विवर विधाय तच्छरीर मभिगता ललाटच्छिद्रंच देवतया तृतीय मक्षिकृत तेनच स्वपिता सच कालसदीपो मारित'
विद्याधरचक्रवर्त्तित्वच प्रापि ततो ऽसौ सर्वांस्तीर्थंकरा न्वदित्वा नाट्यंचो पदर्श्या ऽभिरमतिस्मेति तथा श्राविका श्रमणोपासिका सुलसाभिधाना बुद्ध:
सर्वज्ञधर्मभावितेय मित्यवगतवान् श्राविकावा बुद्धा ज्ञाता येन सश्राविकाबुद्धो अमडो ऽम्मडाभिधान: परिव्राजकविद्याधरश्रमणोपासको ऽयचार्थ' कथा
नकादवसेय स्तच्चेदं चंपाया नगर्यां अमडो विद्याधरश्रावको महावीरसमीपे धर्ममुपश्रुत्य राजगृहं प्रस्थित: सचगच्छन् भगवता बहुसत्वोपकारायभणितो
यथा सुलसाश्राविकाया: कुशलवार्त्ता कथये. सच चिन्तयामास पुण्यवतीययस्या स्त्रिलोकनाथ स्वकीयकुशलवार्ता प्रेषयति क:पुन स्तस्यागुणइति तावत्त
स्यक्त परीक्षे तत: परिव्राजकवेषधारिणागत्वा तेन भणिता सा वायुष्मति धर्म्मो भवत्या भविष्यती त्यस्मभ्य भक्त्या भोजन देहि तया भणित येभ्यो दत्ते
भवत्य सौ ते विदिताएव ततो सा वाकाशविरचिततामरसासनासीनो जन विस्मापयतिस्म तत स्त जनोभोजनेननिमंत्रयामास सतु नैच्छत् लोक स्त
पप्रच्छ कस्य भगवन् भोजनेन भागधेयवत्ता मासक्षपणकपर्यंतं सवर्द्धयिष्यसि स प्रतिभणतिस्म सुलसाया स्ततो लोक स्तस्या वर्द्धनक न्यवेदयत् यथा
तव गेहे भिक्षु रय बुभुक्षु स्तया भ्यधायि किपाखंडिभि रस्माकमिति लोक स्तस्मै न्यवेदयत् तेनापि व्यज्ञापि परमसम्यक्दृष्टि रेषा या महातिशयदर्शन

सावियबुद्धे अम्मडे परिव्वाए

श्राविकाबुद्ध सुलसाये प्रतिबोध्यो अम्मड तापस

होति ॥ प्रत्याजनिष्यते ॥ बहुपडिपुणाणति ॥ अतिपरिपूर्णाना मद्ध्मष्टम येषु तान्यर्द्धाष्टमानि तेषु रात्रिंदिवे ष्वहोरात्रेषु व्यतिक्रान्ते ष्विह पष्ठी सप्त म्यर्थे सुकुमारौकोमलौ पाणीच पादौच यस्यस सुकुमारपाणिपाद स्त परिपूर्णानि स्वकीयस्वकीयप्रमाणतः प्रतिपुण्यानिवा पवित्राणि पञ्चेन्द्रियाणि क रणानि यस्मि स्तत्तथा अहीनमङ्गोपाङ्गप्रमाणतः परिपूर्णपचेन्द्रिय प्रतिपुण्यपचेंद्रियवा शरीर यस्यसो ऽहीनपरिपूर्णपचेंद्रियशरीरो ऽहीनप्रतिपुण्यप चेन्द्रियशरीरोवा ततथा लक्षण पुरुषलक्षण शास्त्राभिहितमखिष्वर्याः सुखमासदृत्यादि मानोन्मानादिकं व्यञ्जनं मषतिलकादिगुणाः सौभाग्यादयो ऽथवा लक्षणव्यञ्जनयो यें गुणा स्तै रुपेतो लक्षणव्यञ्जनगुणोपेतः ॥ उववेउत्तितु ॥ प्राकृतत्वा द्दर्णागमः अथवा उप अपेत इति स्थिते शकन्ध्वादिदर्शना दकारलोप इति उपपेतदति लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेत स्तं लक्षणव्यञ्जनस्वरूपमिदमुक्त माणुम्माणपमाणा दिलक्खणवंजणतुमसमाई सहजचलक्खणंव जणतुपच्छासमुप्प ज्ञति ॥ १ ॥ लक्षणमेत्राधिकृत्य विशेषणान्तरमाह ॥ माणुम्माणेत्यादि ॥ तत्र मान जलद्रोणप्रमाणता साह्येव जलभृते कुंडे प्रमातव्यपुरुषउपवेश्यते ततो यज्जल कुण्डा न्निर्गच्छति तद्यदि द्रोणप्रमाण भवति तदा सपुरुष. मानोपपन्न इत्युच्यते उन्मान तुलारोपितस्या र्द्धभारप्रमाणमात्माङ्गुलेना ष्टोत्तरशतांगुलो च्छ्रयता उक्तंच जलदोण १ अद्धभारं समुहाओसमुस्सिओवजोनवउ माणुम्माणपमाण तिविहखलुलक्खणएयति ॥ १ ॥ ततश्च मानोन्मानप्रमाणैः

एहं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणयराइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुन्नपंचिंदि यसरीरं लक्खणवंजण जाव सूरुवंदारगं पयाहिति जंरयणिंचणं से दारए पयाहिंति तंरयणिंचणं सयदुवारे

णस्यें तेरात्रिनेविषें शतद्वारनगरनेविषे माहिने बाहिर भारप्रमाण वीससें २० शतपलें भार १। कुंभप्रमाण साठिआठेकुंभ पदमनो वरसातवरसने

प्रतिपूर्णानि सुष्ठुजातानि सर्वाण्यंगानि शिरःप्रभृतीनि यस्मिंस्तत्तथाविधं सुन्दरमंगं शरीरं यस्य स तथा तं मानोन्मानप्रमाणप्रतिपूर्णसुजातसर्वाङ्ग सुन्दरांगं तथा शशिवत्सौम्याकारं कान्तं कमनीयं प्रियं प्रेमावहं दर्शनं यस्य स शशिसौम्याकारकान्तप्रियदर्शनस्तमतएव सुरूपमिति दारकं प्रजनिष्यते भद्रेति संबंधः ॥ जंरयणिंचणंति ॥ यस्यांच रजन्यां ॥ तंरयणिंचणंति ॥ तस्यां रजन्यां पुनरिति अर्धरात्रएवच तीर्थकरोत्पत्तिरिति रजनीग्रहणं ॥ सेदारए पयाहिएत्ति ॥ सदारकः प्रजनिष्यते उत्पत्स्यतइति॥ सभिंतरबाहिरएत्ति॥ सह अभ्यन्तरेणाग्रभागेनेन नगरभागेन य नगरं तत्र सर्वेन नगरप्रत्यर्थः विंशत्या पलशतै र्भारो भवति अथवा पुरुषोत्क्षेपणीयो भारो भारकइतिशः प्रसिद्धो ऽयं परिमाणं ततो भारएवाग्रं भाराग्रं तेन भाराग्रेण भाराग्रशोभारपरिमा णत एव कुंभाग्रशो नवरं नवरं कुम्भ आढकः पञ्चाशदाढकमानः पञ्चवर्षेण रत्नवर्षेण वर्षिष्यति भविष्यतीत्यर्थः जावत्तिकरणात् निव्वत्तेअसुइजायकम्मकरणेसंप त्तेत्तिद्रष्टव्यं तत्र निवृत्ते निर्वर्त्तितइत्यर्थः पाठान्तरतो निवृत्ते वा निवृत्ते उपरते अशुचीनां मध्यानां जातकर्मणां प्रसवव्यापाराणां करणे विधाने संप्राप्ते आगते ॥ बारसाहदिवसेत्ति ॥ द्वादशानां पूरणो द्वादशः सएवाख्या यस्य सद्वादशाख्यः सचासौ दिवसश्चेति विग्रहः अथवा द्वादशंच तदहश्च द्वादशा हस्तस्याख्यो दिवसो द्वादशाहदिवसइति ॥ अयंति ॥ इदंच वक्ष्यमाणतया प्रत्यासन्न ॥ एयारूवंति ॥ एतद्रूप रूपं स्वभावो यस्य न मात्रयापि यथा

नगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसोयकुंभग्गसोय पउमवासेय रयणवासेय वासिहितित्ति। तएणं तस्स दारय स्स अम्मापियरो इक्कारसमेदिवसे विइक्कंते जावबारिसाहदिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणनिष्फन्नं नामधि

रतननोवर्षा वरसस्ये तिवारपछी तेबालकनें माता पिता इग्यारेदिन गया पछी यावत् बारमें दिवसे एहवा स्वरूपनुं गुणवंत गुणेनीपनुं नामदे

न्तरापन्नमित्यर्थं. किन्तु नामधेयं प्रशस्तं नाम किंविध गौण नपारिभाषिकं गौणमि त्यमुख्यमपि स्यादित्याह ॥ गुणनिप्फणंति ॥ गुणा नाश्रित्य पद्मवर्षादि निष्पन्नं गुणनिष्पन्न मित्यक्षरघटना ॥ महापउमेमहापउमेत्ति ॥ तत्पित्रोः पर्यालोचनाभिलापानुकरण ॥ तएणंति ॥ पर्यालोचनानन्तरं ॥ महापउमइति ॥ हापद्मइत्येव रूप ॥ साइरेगठ्ठवासजायगति ॥ सातिरेकाणि साधिका न्यष्टौवर्षाणि जातानि यस्य स तथा त ॥ रायवणओत्ति ॥ राजवर्णको वक्तव्यः स

ज्जं काहिति । जम्हाणं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरिए भारग सोय कुंभग्गसोयपउमवासेय रयणवासेय वुठे तं होऊणं अम्ह इमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापउमे । त एण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिति महापउमे२ त्ति तएणं महापउमंदारग अम्मापियरो साइरेगठ्ठवासजायग जाणित्ता रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिति । सेणं तत्थ राया भविस्सइ । महयाहिम वतमलयमंदररायवन्नओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरिस्सइ । तएण तस्स महापउमस्स रन्नो अन्नयाकया

ये जेमाटें अमारे एबालक जणे थके शतद्वारनगरनेविषे माहि बाहिर भारप्रमाण कुंभप्रमाण पद्मनोवरसात रतननोवरसात वूठो तेमाटे हो अ मारे एबालकनु नाम महापद्म तिवारपछी ते बालकना मातापिता नामकरस्ये महापद्म एहवू २ ॥ तिवारपछी महापद्म बालक प्रतें मावाप काकेरा आठवरसनो थयो जाणीने मोटा २। राज्याभिषेकेकरी अभिषेककरस्ये तेतिहा राजाथास्ये मोटो हिमवंत मलय मेरुसरखा राजानु वर्ण न यावत् राज्यपालतो विचरस्ये तिवारे ते महापद्म राजाने एकदा समये बेदेवता मोटीऋद्धिना यावत् मोटासुखना सेवानुं कर्म काम करस्ये ते

चायं ॥ महताहिमवंतमहतमलयमंदरमहिंदसारे ॥ महता गुणसमूहेनां तद्भूतभावप्रत्ययत्वा द्दा महत्तया हिमवाश्च वर्षधरपर्वतविशेषो महां श्चासौ म लयश्च विन्ध्यइति चूर्णिकार महामलयः सच मन्दरश्च मेरु महेंद्रश्च शक्रादि स्तेद्दव सारः प्रधानो यः स तथा ॥ अच्चंतविसुद्धदीहरायकुलवसप्पसूए ॥ अ त्यतविशुद्ध' सर्वथा निर्दोषो दीर्घश्च पुरुषपरम्परापेक्षया यो राज्ञा भूपालाना कुललक्षणो वंश. सतान स्तत्र प्रसूतो जातो यः स तथा ॥ निरतररायल क्खणविराइयगुवगो ॥ नैरन्तर्येण राजलक्षणै श्चक्रास्वस्तिकादिभि र्विराजिता न्यगानि शिर'प्रभृती न्युपागानि चागुल्यादीनि यस्य स तथा ॥ बहुजणबहुमा णपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए समुदिएत्ति ॥ प्रतीतं ॥ मुद्धाभिसित्ते ॥ पितृपितामहादिभि र्मूर्द्धन्यभिषिक्तो यः स तथा ॥ माउपिउसुजाए ॥ सुपुत्रो विनीतत्वादिनेत्यर्थः ॥ दयपत्ते ॥ दयाप्राप्तो दयाकारीत्यर्थ' ॥ सीमकरे ॥ मर्यादाकारी ॥ सीमधरे ॥ मर्यादा पूर्वपुरुषकृता धारयति नात्मनापि लोपयति यः स तथा ॥ खेमकरे ॥ नोपद्रवकारो ॥ खेमधरे ॥ क्षेम धारय त्यन्यकृतमिति य. स तथा ॥ माणुस्सिंदे जणवयपिया ॥ लोकपिता वत्सलत्वात् ॥ ज णवयपुरोहिए ॥ जनपदस्य पुरोधा. पुरोहित' शान्तिकारीत्यर्थः ॥ सेउकरे ॥ सेतुंमार्ग मापन्नताना निस्तरणोपायं करोति यः स तथा ॥ केउकरे ॥ चिह्नकरो अद्भुतकारित्वादिति ॥ नरपवरे ॥ नरैः प्रवरो नरावा प्रवरा यस्य स तथा ॥ पुरिसवरेत्ति ॥ पुरुष. प्रधानः ॥ पुरिससीहे ॥ शौर्याद्यधिकतया ॥ पुरिसआसीविसे ॥ शापसमर्थत्वात् ॥ पुरिसपुंडरिए ॥ पूज्यत्वा त्सेव्यत्वाच्च ॥ पुरिसवरगंधहत्थी ॥ शेषराजगजविजयित्वात् ॥ अड्ढे ॥ धनेश्वरत्वात् ॥ दित्ते ॥ दर्प्यवत्वात् ॥ वित्ते ॥ प्रसिद्धत्वात् ॥ विच्छिण्णविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे ॥ पूर्ववत् ॥ बहुधणबहुजायरूवरयए आओगपओगसपउत्ते ॥ आयो गप्रयोगा द्रव्योपार्जनोपायविशेषाः सप्रयुक्ता. प्रवर्त्तिता येन स तथा ॥ विच्छड्डियपउरभत्तपाणे ॥ बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूए ॥ पडिपुण्णजंत कोसकोट्ठागारायुहागारे ॥ यन्त्राणि जलयन्त्रादीनि कोशः श्रीगृह कोष्टागारं धान्यागारं आयुधागार प्रहरणकोश. बलवहस्त्यादिसैन्ययुक्तः ॥ दुब्बलपच्चामि

नापि न दृष्टिव्यामीह भगमदिति ततो लोकेन सह सो तद्गेहेनैषेधिकीं कुर्वन्पंचनमस्कार मुच्चारयन् प्रविवेश सा प्यभ्युत्थानादिकां प्रतिपत्ति मकरोत्तेना
प्यसा वुपबृंहिते ति यशो पपातिकोपागे महाविदेहे सेत्स्यतो ऽभिधीयते सो ऽन्यइति सभाव्यतइति तथा आर्यापि आर्यिकापि सुपार्श्वा पार्श्वापत्यीया
पार्श्वनाथशिष्यशिष्या चत्वारो यामा महाव्रतानि यत्र स चतुर्याम स्तं प्रज्ञाप्य सेत्स्यति एतेषु च मध्ये मध्यमतीर्थंकरत्वेनो त्पत्स्यन्ते केचि त्केचित्तु केव
लित्वेन भवसिद्धिश्चोऽभयव सिज्झिस्सइकएहतितथमो तिवचनादितिभावः ॥ शेष स्पष्ट अनन्तरसूत्रोक्तस्य श्रेणिकस्य तीर्थंकरत्वाभिधानायाह ॥ एसणमि
त्यादि ॥ जस्सोलसमायारोइत्यादि ॥ गाथापर्यंत सूत्र सुगमं चैत नवरं एषो नन्तरोक्तआर्याइति श्रमणामंत्रण ॥ भिंभित्ति ॥ ढक्का सा सारो यस्य स तथा
किल तेन कुमारत्वे प्रदीपनके जयढक्का गेहा न्निष्काशिता ततः पित्रा भिम्भिसारउक्त इति सीमतके नरकेंद्रके प्रथमप्रस्तटवर्तिनि चतुरशीतिवर्षसह

अज्जाविणंसुपासा पासावच्चेज्जा आगमेस्साए उसप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पन्नवित्ता सिज्झिहिंति जाव
अंतकाहिंति । एसणं अज्जोसेणिएराया भिंभिसारे कालमासे कालकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सी
मतए नरए चउरासीइवाससहस्सेठिइयंसि नरगंसि नेरइत्ताए उववज्जेहिंति सेण तत्थ नेरइए तविस्संति

आर्या सुपार्श्वा पार्श्वनाथनी चेली ए आवती उत्सर्पिणीये च्यार धर्मकही सिद्ध थास्ये यावत् अंतकरस्ये मध्यतीर्थंकर थास्ये २ । ए हेआर्यो
साधो श्रेणिकराजा भंभसार बीजोनाम कालमासे कालकरीने आ रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे सीमंतनरकावासे चोरासीहज्जार वरसनी थिति नरक
नेविषे नारकीपणे ऊपजस्ये तिहां ते नारकीथास्ये कालो काली प्रभा काति यावत् घणुं कष्ट वर्णकरी ते तिहां वेदना वेदस्ये उजली आकरी या

गमिष्यति नारकेषु गच्छे नारकत्वेनोत्पत्स्यते कालः कृष्णेन कालावभासः कालतया अवभासते पश्यतां भयकारणात् गंभीरो महान् लोमहर्षो भवति त-
स्यामस्य तथा भीमो विकरालः ॥ उत्तासणए ॥ उद्वेगजनकः ॥ परमकण्हे वण्णेणं ति ॥ प्रतीतं सप्त तत्र नरके वेदनां वेदयिष्यति उज्ज्वलां विपक्षलेशेना-
प्यकलङ्कितां वायकारणात् त्रीणि मनोवाक्कायलक्षणानि उपरि मध्यमाधस्तनकायविभागलक्षणानि तुलयति जयतीति त्रितुलातां ताम् अपि विपुला मितिपाठस्तत्र
विपुलां शरीरव्यापिनी तां तथा प्रगाढां प्रकर्षवतीं कटु॥ कटुकरसोत्पादितां कर्कशां कर्कशस्पर्शसंपादितां अथवा कटुकद्रव्यमिव कटुकां गनिष्ठां एव
कर्कशामपि चण्डां वेगवती झटितीव मूर्च्छोत्पादिकां वेदनामित्यर्थः दुःखां दुःखरूपेति सुखासक्तविरहाणां दुःखां मित्यादि दुर्गां पर्वतादिदुर्गमिव गाढ-
मपि नाडिगिरा गच्छन्ति दिव्यां देवनिर्मिता विक्रिया दुरभिसहां सोढुमशक्यामिति इहेव जम्बूद्वीपे नासंख्येयतमे ॥ पुमत्ताए त्ति ॥ पुंस्तया ॥ पच्चाया

काले कालोभासे जाव परमकिण्हेवन्नेणं सेणं तत्थ वेयणं वेएहिंति उज्जलं जाव दुरहियासं सेणं तओ नर
गाओ उव्वट्टित्ता आगमिस्साए उस्सप्पिणीए इहेवजंबूद्दीवे भरहेवासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंढेसु सयदुवारे
नयरे संमुइयस्स कुलगरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिए तएणंसा भद्दा भारिया नव

वत् दुर्गे अनेंआसीदं ते तेनरगथी नीकलीने आवती उत्सर्पिणीकाले इहां जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे वैताढ्यगीरीपर्वतनेमूलें पुंढदेशनेविषें शतद्वारनगरें सं
मुइकुलगर तेहनी भद्राभार्यानी कूखिनेंविषें पुनपणें ऊपजस्यें तिवारपछी ते भद्राभार्या नवमासनां घणूं परिपूर्णथया उपरि साढेसातरात्रि अतिक्र
म सुकुमाल हाथ पगलें जेहना हीणा नथी परिपूर्ण पांचइंद्री शरीरलें १०००८ लक्षण व्यंजन मस तिलक यावत् सुरूप पुत्रजणस्ये जेरात्रे ते पुत्रज

त्ते॥ अबलप्रातिवेश्मिकराजः॥ ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकटयं उद्धियकंटयं अकंटयं॥ एवं॥ ओहयसत्तुं॥ उपहता राज्यापहारा न्निहता मारणा न्म लिता मानभंजना दुद्दृता देशनिष्काशना त्कण्टका दायादा यत्र राज्ये तत्तथा अतएव अकटकं एव शत्रवोपि नवरं शत्रव स्तेभ्यो ऽन्ये॥ पराइयसत्तुं॥ विज यवत्वादिति॥ ववगयदुभिक्खमारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसतडिंबडमरं॥ डिम्बानि विघ्ना डमराणि कुमाराद्युत्थानादीनि॥ रज्जपसासेमाणेत्ति ॥ पालयन्॥ बिहरिस्सइत्ति॥ दोदेवामहिड्ढियाइत्यत्र॥ यावत्करणात् महज्जुइया महानुभागा महायसा महाबलेत्ति दृश्यं॥ सेणाकम्मंत्ति॥ सेनायाः सैन्यस्य कर्म व्यापार' शत्रुसाधनलक्षणः सेनाविषयंत्रा कर्मेति वार्त्तव्यतालक्षण सेनाकर्म पूर्णभद्रश्च दक्षिणयक्षनिकायेन्द्रो माणिभद्रश्चोत्तरयक्षनिकायेन्द्रो बहवेराईसरेत्यादि॥ राजा महामांडलिकईश्वरो युवराजो माडलिको ऽमात्योवा अन्येतु व्याचक्षते अणिमाद्यष्टविधैश्वर्ययुक्त ईश्वरइति तलवरः परितु ष्टनरपतिप्रदत्त पट्टबधभूषितो माडबिक श्छिन्नमडंबाधिप' कौटुम्बिकः कतिपयकुटुम्बप्रभु रिभ्यो ऽर्थवान् सच किल यदीयपुञ्जीकृतद्रव्यराश्यतरितो ह स्त्यपि नो पलभ्यत इत्ये तावतार्थेनेतिभावः श्रेष्ठी श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टभूषितोत्तमागः पुरज्येष्ठा वणिक् सेनापति नृपतिनिरूपितो हस्त्यश्वरथपदा

इ दोदेवा महिड्ढिया जाव महेसक्का सेणाकम्मं काहिंति तंजहा पुन्नभद्दे य माणिभद्दे य तएणं सयदुवारे बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेठिसेणावइसत्थवाहप्पभिईउ अन्नमन्नं सद्दावेहिंति। एवं वइस्सं

कहेछे पूर्णभद्र १। माणिभद्र २। तिवारे ते शतद्वारनगरें घणा राजेश्वर तलार माडवीआ कोटुंबिक व्यवहारी सेठ सेनापती सार्थवाह प्रमुख मां होमांहि शब्दकरे एहवू कहस्ये जेमांटे देवानुप्रिया अमारो महापद्मराजाये बे देवता मोटीऋद्धिना यावत् मोटासुखना सेवानु काम करेछे तेक

तिसमुदायलक्षणायाः सेनायाः प्रभुरित्यर्थः सार्थवाह' सार्थनायक एतेषां द्वंद्व स्ततस्य राजादयः प्रभृति रादि र्येषाते तथा ॥ देवसेणेत्ति ॥ देवादेव सेना यस्य देवाधिष्ठितावा सेना यस्य स देवसेनइति ॥ देवसेणातीति ॥ देवसेनइत्येव रूप सेते त्यादि श्रेयानतिप्रश्नस्य' श्वतोवा कीदृगित्याह शखतलेन कंबुरूपेण विमलेन पङ्कादिरहितेन सन्निकाश. सकाश. सदृशो यः स शखतलविमलसनिकाशः ॥ दुरूढेत्ति ॥ आरूढ. ॥ समाणेत्ति ॥ सन् अतियास्यति प्रवे

ति । जम्हाणं देवाणुप्पिया अम्हं महापउमस्सरन्नो दोदेवा महिड्डिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं कारिंति त० पुन्नभद्देय माणिभद्देय । त० होऊण अम्ह देवाणुप्पिया महापउमस्स रन्नो दुच्चेवि नामधिज्जे देवसेणे तएणं तस्स महापउमस्स रन्नो दुच्चेवि नामधिज्जे भविस्सइ देवसेणेत्ति। तएण तस्स देवसेणस्स रन्नोअन्न या कयाइ सेयसखतलविमल संनिकासे चउद्दते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिति । तएणं सेदेवसेणे राया त से यसखतलविमलसन्निकास चउद्दत हत्थिरयण दुरूढेसमाणे सयदुवार नगर मज्झमज्झेण अभिक्खण २ अइ

हैले पूर्णभद्र १ । माणिभद्र २ । तिवारपछी शतद्वारनगरने विषे घणा राजेश्वर तलवर तेकहैले पूर्णभद्र १ । माणिभद्र २ । तेमाटें हो अम्हारा देवानुप्रिया महापद्मराजानु बीजूपणि नाम देवसेन एहवो तिवारपछी महापद्म राजानु बीजु नामथास्ये देवसेन एवो २ । तिवारपछी ते देवसेन राजाने एकदासमये स्वेतशखतलनी परे निर्मल तेसरिखो च्यारदतनो हस्तिरतउपजस्ये तिवारे ते देवसेन राजा ते स्वेत शखतलनिर्मल सरखो च्यारदतनो हस्तिरत्न ऊपरि चढेथके शतद्वार नगरमध्ये वारवार २ । आवे ने जाय तिवारे शतद्वारनगरनेविषे घणा राजेश्वर तलार यावत् मा

स्यति निर्यास्यति निर्गमिष्यतीति क्वचिद्वर्त्तमाननिर्देशो दृश्यते स च तत्कालापेक्षइति एव सर्वत्र ॥ गुरुमहत्तरएहिति ॥ गुर्वो मातापित्रो महत्तरा' पूज्या अथवा गोरवार्हत्वेन गुरवो महत्तराश्च वयसा वृद्धत्वा द्येते गुरुमहत्तरा ॥ पुणरविति ॥ महत्तराभ्यनुज्ञातानन्तरं लोकांते लोकाग्रलक्षणे सिद्धस्थाने भवा लोकांतिका भाविनि भूतवदुपचारन्यायेन चेव व्यपदेशो ऽन्यथा ते कृष्णराजीमध्यवासिनो लोकांतभाजित्वच तेषा मनन्तरभवएव सिद्धिगमना

ज्जाहि। पणिज्जाहि य। तएणं सयदुवारे नगरे बहवे ईसरतलवरजाव अन्नमन्नं सद्दाविहिंति ५ एवं वइस्सति। जम्हाणं देवाणुप्पिया अम्हं देवसेणरस रन्नो सेतसंखतलविमलसन्निकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पन्नेय होऊणं अम्हं देवाणुप्पिया देवसेणस्सरन्नो तच्चेवि नामधिज्जे विमलवाहणे तएणं तस्स देवसेणस्सरन्नो तच्चे नामधिज्जे भविस्सइ विमलवाहणे। तएणं सेविमलवाहणेराया तीसंवासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापीईहिं देवत्तगएहिं गुरुमहत्तरेहिं अब्भणुन्नाए समाणे उदुंमि सरए संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगंतिए जीयकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं धन्नाहिं

होमाहि शब्दकरस्ये करीने एहवू कहस्ये जेमाटे देवानुप्रिया अम्हारे देवसेनराजाने स्वेतशंखतलनिर्मल तेसरखो च्यारदंतनोहस्तिरत्न ऊपनो ते माटे हो अम्हारे देवानुप्रिय देवसेनराजानु त्रीजो पणि नाम विमलवाहन ३। तिवारे ते देवसेन राजानुं त्रीजो पणि नाम थास्ये विमलवाहन एहवो ३। तिवारे ते विमलवाहन राजा त्रीसवरस गृहस्थावास मा वसीने मातापिता देवलोकगयापछी गुरुवडेरा तेणे आज्ञादीधेथके एसमये

दिति जीतकल्प आचरितकल्पो जिनप्रतिबोधनलक्षणो विद्यते येषांते जीतकल्पिका आचरित मेव तेषा मिदं ननु ते स्तीर्थंकर प्रतिबोध्यते स्वयंबुद्धत्वा द्भगवतइति ॥ ताहिति ॥ ताभि र्विवक्षिताभिः ॥ वग्गूहिंति ॥ याभि र्वाकाभि रानन्द उत्पाद्यतइतिभावः इष्टाभि रिष्यते स्म याः कान्ताभिः कमनीयाभिः प्रियाभिः प्रेमोत्पादिकाभि र्विरूपा अपि कारणवशा त्प्रिया भवती त्यत उच्यते मनोज्ञाभिः शुभस्वरूपाभि र्मनोज्ञाअपि शब्दतो ऽर्थतो न हृदयगमा भवती त्यतआह ॥ मणामाहिंति ॥ मनो ऽमतिगच्छति या स्ता स्तथा ताभि रुदारेणो दात्तेन स्वरेण प्रयुक्तत्वा दर्थतवा युक्तत्वा दुदाराभिः कल्य मारोग्य मर्णति शब्दयतीति कल्याणा स्ताभिः शिवस्थो पद्रवाभावस्य सूचकत्वात् शिवाभि र्धनं लभते धनेवा साध्व्यो धन्या स्ताभि र्मंगले दुरितक्षये साध्व्यो मङ्गल्या स्ताभिः सश्रीकाभिः सच्छ्रिया वचनार्थशोभया या स्ताः सश्रीका स्ताभि र्वाग्भिरिति सद्ब्धनीयं प्रभिनन्द्यमानः सम्स्तूयमान ॥ वहियत्ति ॥ नगरा द्वहिस्ता दिति इतो वाचनातर मनसृत्य लिख्यते ॥ साइरेगाइंति ॥ अतिसमर्गे मांसे र्दादशवर्षाणि यावत् व्युत्सृष्टे काये परिकर्म वर्जनत स्त्यक्ते देहे परीस

सिवाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीआहि वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिथुव्वमाणेय बहियासुन्नूभिन्नागे उज्जाणे एगं देवदूसमादाय मुंडेभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वहित्ति । तस्सणं भगवतस्स साइरेगाइं दुवालसवासाइं

संबुद्धथया उत्कृष्ट मोक्षमार्गने विषे वली लोकांतिकदेव जीतमर्यादालें जेहनी एहवा देव ते इष्ट कांत प्रीतकारी मनोज्ञ मनोहर उदार कल्याणकारी निरुपद्रव धन्यकारी मंगलकारी सश्रीक एहवे वचनें अभिनंदता प्रशंसता अभिस्तवता संबोधनेकरी प्रतिबोधें सुन्नूभिन्नाग उद्याने एक देवदूष्य वस्त्रलेई मुंडथई लोचकरी गृहस्थावासमूंकी दीक्षालीधी तेभगवत जेदिवसें मुंडथया प्रव्रज्यालीधी तेजदिवस सेपथाकतें एहवारूपनो अभिग्रह प्र

हादि सहनत स्तथा सहिष्यति उत्पत्स्यमानेषू पसर्गेषु तथा भावत. क्षमिष्य त्युत्पन्नेषु क्रोधाभावत: तितिक्षिष्यति दैन्याभावतो ऽध्यासिष्यते अविच लतयेति ॥ जावगुत्तेत्ति ॥ करणा दिदं दृश्य ॥ एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए ॥ भांडमात्राया आदाने निक्षेपेच समितइत्यर्थ ॥ उच्चार पासवणखेलसिंघाणजल्लपारिठ्ठावणासमिए ॥ खेलो निष्ठीवन सिंघाणोनासिकाश्लेष्मा जल्लो मल: ॥ मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते ॥ त्रिगुप्तत्वात् गुप्तात्मे त्यर्थ: ॥ गुत्तिंदिए ॥ स्वविषयेषु रागादिनें द्रियाणा मप्रवृत्ते. ॥ गुत्तबंभचारी ॥ गुप्त नवभि ब्रंह्मचर्यगुप्तिभी रचित ब्रह्म मैथुनविरमण चरतीति विग्र ह स्तया ॥ अममे ॥ अविद्यमानममेत्यभिलापो निरभिष्वंगत्वात् ॥ अकिंचणे ॥ नास्ति किंचन द्रव्यं यस्य स तथा ॥ च्छिन्नगंथे ॥ छिन्नो ग्रंथो धनधान्या दि स्तत्प्रतिबन्धोवा येन यथा क्वचित् किन्नगंथे इतिपाठ स्तत्र कीर्ण. विस: ॥ निरुवलेवे ॥ द्रव्यतो निर्मलदेहत्वा द्भावतो बन्धहेतुभावा न्निर्गत उपलेपो यस्मादिति निरुपलेप एतदेवो पमाने रभिधीयते ॥ कंसपातीवमुक्कतोये ॥ कांस्यपात्रीव कांस्यभाजनविशेष इव मुक्त त्यक्त नलग्न मित्यर्थ स्तोयमिव बध

निच्चं वोसठ्ठकाए वियत्तदेहे जेकेइउवसग्गा उप्पज्जंति ते उप्पन्ने संमं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ तएणं से भगवं इरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे च्छिन्नगंथे निरुवलेवे कंसपाईवमुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेतिवतेयसाजलंते ॥ कंसेसंखेजीवे गगणे

ते ग्रहें जेकोई उपसर्ग उपजें तेकहैळे देवताना मनुष्यना तिर्यंचनां ते सघला ए सम्यक् प्रकारें सहवा खमवा तितिक्षवा अहियासवा तिवारपछी ते भगवत अणगारथास्ये ईर्यासमितिवंत भाषासमितिवंत इम जिम श्रीवर्द्धमान तिमज सर्वं जाणवूं शेष अव्यापारपणें काउसगना योगयुक्त ते भग

हेतुत्वा त्तीयं स्नेहो येन स मुक्ततोयो यथा भावनाया माचारांग द्वितीयश्रुतस्कन्धपंचदशाध्ययने तथा ऽयं वर्णको वाच्यइतिभाव' कियद्दूरं यावदित्याह
॥ जावसुहुएइत्यादि ॥ सुट्ठु हुतं चिप्त घृतादीति गम्यते यस्मिन् स सुहुत सचासौ हुताशनश्च वह्निरिति सुहुतहुताशन स्तद्वत्तेजसा ज्ञानरूपेण तपोरू
पेणवा ज्वलन् दीप्यमानः अतिदिष्टपदाना सग्रहं गाथाभ्या माह ॥ कसेगाहा ॥ कुजरगाहा ॥ कसेत्ति कंसपाईवमुक्ततोये ॥ संखेत्ति ॥ सङ्खोइव निरज
ण ॥ रागाद्युपरजन तस्मा न्निर्गतइत्यर्थः ॥ जीवत्ति ॥ जोवइव ॥ अप्पडिहयगई ॥ सयमेगति' प्रवृत्ति र्न हन्यते ऽस्य कथचिदितिभाव' ॥ गगणेत्ति ॥ ग
यणमिव निरालवणे ॥ गगनमिव निरालबनो न कुलग्रामा द्यालवनइतिभाव ॥ वायेयत्ति ॥ वायुरिव ॥ अप्पडिबद्धो ॥ ग्रामादि ष्वेकरात्रादिवासात्
॥ सायरसलिलत्ति ॥ सायरसलिलव्वसुद्धहियये ॥ अकालुषमनस्त्वात् ॥ पुक्खरपत्तेत्ति ॥ पुक्खरपत्तंपिवनिरुवलेवे ॥ प्रतीत ॥ कुम्मोइवगुत्तिंदिए ॥ कच्छपोहि
कदाचि दवयवपचकेन गुप्तो भवत्येव मसावपोन्द्रियपचकेनेति ॥ विहगेत्ति ॥ विहगइव विप्पमुक्के ॥ मुक्तपरिच्छदत्वा दनियतवासाच्चेति ॥ खग्गेयत्ति ॥
खग्गविसाणवएगजाए ॥ खड्ग आटव्योजीवविशेष स्तस्य विषाण मृग तदेकमेव भवति तद्वदेकजात एकभूतो रागादिसहाय वेकल्यादिति ॥ भारडेत्ति ॥
भारडपक्खीवअप्पमत्ते ॥ भारडपक्षिणो किल एक शरीरपृथग्ग्रीव त्रिपादश्च भवति तौचा त्यन्त मप्रमत्ततयेव निर्वाह लभेतेइति तेनोपमेति १ ॥ कुजरे
त्ति ॥ कुजरोइव सोडीरे ॥ हस्तीव शूरः कषायादिरिपून्प्रति ॥ वसहेत्ति ॥ वसभोइव जायथामे ॥ गौरिवो त्पन्नबल प्रतिज्ञातवस्तुभरनिर्वाहकइत्यर्थः ॥ सी

वावेयसारएसलिले पुक्करपत्तेकुंमे विहगेखग्गेयभारंडे ॥ १ ॥ कुंजरवसहेसीहे नगरायाचेवसागरमखोभे चंदे
सूरेकणगे वसुंधराचेवसुहुयहुयए ॥ २ ॥ नत्थिण तस्स भगवतस्स कत्थइ पडिबधे भवइ सेयपडिबधे चउ

॥ टीक

हेत्ति ॥ सीहोइव दुद्धरिसे ॥ परीसहादिभि रनभिभवनीयइत्यर्थ. ॥ नगरायाचेवत्ति ॥ मदरोइव अप्पकंपे ॥ मेरुरिवा नुकूलाद्युपसर्गै रविचलितसत्व' ॥ सागरमखोहित्ति ॥ मकारोलाचणिक: सागरवदचोभ: सागराचोभइति सूत्रसूचा सूत्रव सागरो इव गंभीरे हर्षशोकादिभि रचोभितत्वादिति ॥ चदेत्ति ॥ चदेइव सोमलेसे ॥ अनुपतापकारिपरिणाम: ॥ सूरेत्ति ॥ सूरेइव दित्ततेए ॥ दीप्ततेजा द्रव्यत शरीरदीप्त्या भावतो ज्ञानेन ॥ कणगेत्ति ॥ जचकणगपिव जायरूवे ॥ जातं रूप लब्ध रूप स्वरूप रागादिकुद्रव्यविरहावेन स तथा ॥ वसुधराचेवत्ति ॥ वसुधराइव सव्वफासविसहे ॥ स्पर्शा: शीतोष्णादयो ऽनुकूलेतरा: ॥ सुहुयहुयत्ति ॥ व्याख्यातमेवेति ॥ नत्थीत्यादि ॥ नास्ति तस्यभगवतो महापद्मस्याय पचो यदुत कुत्रापि प्रतिबध.स्नेहो भविष्यतीति ॥ अंडएइवत्ति ॥ अडजो हसादि ममाय मित्युल्लेखेनवा प्रतिबधो भवति अथवा अंडक मयूर्यादीना मिद रमणक मयूरादे: कारणमिति प्रतिबध' स्यादि त्यय वा डज पट्टसूत्रजमिति वा पोतजो हस्त्यादि रयमितिवा प्रतिबंध स्यात् अथवा पोतको बालकइतिवा अथवा पोतक वस्त्रमितिवा प्रतिबध: स्यात् आ। हारेपिच विशुद्धे सरागसयमवत प्रतिबध स्यादिति दर्शयति ॥ उग्गहिएवत्ति ॥ अवग्टहीत परिवेषणार्थ मुत्पाटित प्रग्टहीत भोजनार्थ मुत्पाटित मिति अथवा अवग्रहिक मित्यवग्रहो स्य.स्तोति वसतिपोठफलकादि औपग्रहिक वा दडकादिक मुपविजात तथा प्रकर्षेण गृह्यतेस्येति प्रगृहिक मौघिक मुपकरण पात्रादीति अथवा अडजेत्रा पोतजेत्यादि व्याख्येय मिकारस्त्वागमिकइति ॥ जजति ॥ या या दिश णमिति वाक्यालकारे तुशब्दो वा यं

छिहे पं० त० अंडएइवा पोयएइवा उग्गहेइवा पग्गहिएइवा जणजंणदिसं इच्छइ तंणं तंण दिसं अपडिबद्धे

वतने एहवे विहारे करीने विचरतें बारेवरस गयापछी अव्यापारपणे काउसगना योगयुक्त तेरमूं वरस वर्त्ततं उत्कृष्टे ज्ञाने करी तेयथाभावे केवल

॥ टीका ॥

तदर्थ एव इच्छति तदा विहर्तुमिति शेषः ता ता दिश विहरिष्यतीति संबंधः सप्तम्यर्थे चेयं द्वितीया तस्यां तस्या मित्यर्थः शुचिभूतो भावशुद्धितो लघुभू तो नपधित्वेन गौरवत्यागेन च ॥ अणुप्पगथेत्ति ॥ अनुरूपतयो चित्येन विरते नं त्वपुण्योदया दणुरपिवा सूक्ष्मो प्य ल्पोपि प्रगतो ग्रथो धनादिर्यस्य यस्मा द्वासावनुप्रग्रन्थो पेद्वत्यंतर्भूतत्वा दणुगग्रन्थोवा अथवा ॥ अणुप्पत्ति ॥ अनर्घ्यो नर्घणीयो ऽढौकनीयः परेषा माध्यात्मिकत्वात् गंथवत् द्रव्यवत् ग्रन्थोज्ञानादि र्यस्य सोऽनर्घ्यग्रन्थइति ॥ भावेमाणेत्ति ॥ वासयन्नित्यर्थ ॥ अणुत्तरेणाति ॥ नास्त्यु त्तर प्रधान मस्मादिति अनुत्तर स्तेन एव मिति ॥ अणुत्तरेणंति ॥ वि शेषण मुत्तरत्रापि सबधनोयमित्यर्थः आलयेन वसत्या विहारेण कारान्नादिना आर्जवादय' क्रमेण मायामानगौरवक्रोधलोभनिग्रहा गुप्ति र्मनःप्रभृतीनां तथा सत्यंच द्वितीय महाव्रतं सयमश्च प्रथम तपोगुणाश्च नशनादयः सुचरित सुष्टु सेवित ॥ सोयवियति ॥ प्राकृतत्वात् शौचच तृतीय महाव्रत अथवा ॥ वियत्ति ॥ विज्ञ विज्ञानमितिद्वद्वः तत सैतान्ये वेताण्व वा ॥ फलत्ति ॥ फलप्रधान परिनिर्वाण मार्गो निर्वृतिनगरीपथः सत्यादिपरिनिर्वाणमार्ग

॥ मूल ॥

सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ तस्सणं भगवंतस्स अणुत्तरेण नाणेण अ णुत्तरेण दसणेण अणुपचरिएणं एव आलएण विहारेण अज्जवे मद्दवे लाघवे खती मुत्ती गुत्ती सच्चसंजमत वगुणसुचरियसोअवियफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाण भावेमाणस्स ज्झाणतरियाए वट्टमाणस्स अणते अणु त्तरनिव्वाघाए जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिहिति तएणं से भगव अरहा जिणे भविस्सइ केवली सव्व

॥ भाषा

वरज्ञान दर्शन उपजस्ये जिनथास्ये केवलीसर्वज्ञ सर्वदर्शी ते यावत् पचमहाव्रत भावनासहित छकायजीवनी रक्षवा धर्मप्रते देखाडता विचरेछे ते

स्तेन ध्यानयोः शुक्लध्यानद्वितीयतृतीयभेदलक्षणयो रतर मध्यं ध्यानान्तरं तदेव ध्यानान्तरिका तस्यां वर्त्तमानस्य शुक्लस्य द्वितीयाद्भेदादुत्तीर्णस्य तृतीय म प्राप्तस्येत्यर्थः अनन्तमनन्तविषयत्वा दनुत्तर सर्वोत्तमत्वा न्निर्व्याघात धरणीधरादिभि रप्रतिहतत्वात् निरावरण सर्वावरणापगमात् क्षत्स्न सर्वार्थविषयत्वात् प्रतिपूर्ण स्वरूपतः पौर्णमासोचद्रवत् केवल महसायमतएव वरज्ञानदर्शन प्रतोत केवलवरज्ञानदर्शनमिति ॥ अरहत्ति ॥ अर्हन् अष्टविधमहाप्रातिहा र्यरूपपूजायोगात् जिनो रागादिजेतृत्वात् केवली परिपूर्णज्ञानादित्रययोगात् सर्वज्ञः सर्वविशेषार्थबोधात् सर्वदर्शी सकलसामान्यार्थावबोधात्ततश्च सहदे वैश्च वैमानिकज्योतिष्कलक्षणै र्मर्त्यैश्च मनुजै रसुरैश्च भवनपतिव्यंतरलक्षणै र्यः स सदेवमर्त्यासुर स्तस्य लोकः पचास्तिकायात्मक स्तस्य ॥ परियागंति ॥ जाता वेकवचनमिति पर्यायान् विविचपरिणामान् ॥ जाणइपासइत्ति ॥ ज्ञास्यति ईक्ष्यतिचेत्यर्थ. एतच्च देवादिग्रहण प्रधानापेक्ष मन्यथा सर्वजीवानां सर्वपर्यायान् ज्ञास्यति अतएवाह ॥ सव्वलोएइत्यादि ॥ वयणति ॥ वैमानिकज्योतिष्कमरण उपपात नारकदेवाना जन्म तर्क विमर्श मन श्चित्त मनसि भव मानसिक चिन्तितं वस्तु भुक्त मोदनादिकृत घटादि प्रतिषेवित मासेवित प्राणिवधादि आविष्कर्म प्रकटक्रियां रहःकर्म विजनव्यापार ज्ञास्यती त्य नुवर्त्तते तथा अरहा न विद्यते रहो विजन यस्य सर्वज्ञत्वा दसा वरहा अतएव रहस्यस्य प्रच्छन्नस्या भावोऽ रहस्य तद्भजत इत्यरहस्सभागी त त काल

न्नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइगतिठ्ठियच यण उववायं तक्क मणोमाणसियं भुत्तकडं परिसेविय आवीकम्मं रहोकम्म अरहा अरहस्सभागी त त कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाण सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ । तएणं से

ठा० ॥ ५२० ॥

माश्रित्येतिशेषः सामोमेच मत स्तस्मिंस्तस्मिन् काले इत्यर्थः ॥ मणसवनसकाइएत्ति ॥ मानसश्च वाचसश्च कायिकश्च मानसवाचसकायिक तत्र योगे व्यापारे कृतत्वच ग्राह्यतत्वादिति वर्त्तमानाना व्यवस्थिताना सर्वभावान् सर्वपरिणामान् जानन् पश्य न्विहरिष्यति ॥ अभिसमेच्चत्ति ॥ अभिसमेत्य अत्र गम्य ॥ सभावणाइति। ।सह भावनाभिः प्रतिव्रत पञ्चभि रीर्यासमित्यादिभि र्याभि तानि सभावनानि तासां च स्वरूप मावश्यका न्मन्तव्य पट्च जीव निकायान् रक्षणीयतया ॥ धम्मति ॥ एव रूप चारित्रात्मक सुगतौ जीवस्य धरणा द्धर्म्मं च देशयेत् य त्ता प्रपयन्निति अथ महापद्मस्या मनत्र सर्वज्ञत्वा त्स वैज्ञ्राध मताभेदात् भेदे चेकस्या यथा जसुदर्शनेना ऽसर्वज्ञता प्रसगादि त्युभयो र्भगवान् समा वस्तुप्ररूपणा दर्शयन्नाह ॥ सेजहेत्यादि ॥ स इत्यथार्थो ऽथशब्दश्च वाक्योपन्यासार्थो यथे त्युपमार्थः ॥ नामएत्ति ॥ वाकालकारे ॥ अज्जोत्ति ॥ शिष्यामत्रण ॥ एगेआरभट्ठाणेत्ति ॥ आरभएव स्थान वस्तु आरम्भ स्थान मेतमेव तत्तत् प्रमत्तयोगलक्षणत्वा त्तस्य यदाह सव्वोपमत्तजोगो समणस्सउहोइआरभोत्ति ॥ इत शेष मावश्यके प्रायः प्रसिद्धमिति नलिखित

भगव तेण अणुत्तरेण केवलवरनाणदसणेण सदेव मणुयासुरलोग अभिसमिच्चा समणाण निग्गथाण पंचमह व्वइयाइ सभावणाइ छज्जीवनिकाए धम्म देसमाणे विहरिस्सइ। सेजहानामए अज्जोमए समणाणनिग्गंथाण एगेआरम्भठाणे प० एवामेव महापउमेवि अरहा समणाण निग्गथाण एग आरम्भठाण पन्नवेहिति। सेजहा

जिम दृष्टाते हेआर्यो मे श्रमणनिग्रथने ए आरम्भनु थानक कह्यो इमज महापद्मपणि अरिहत श्रमण निग्रथने एक आरम्भनु थानक कहस्ये ते जिम दृष्टाते आर्यो में श्रमणनिग्रथने बेप्रकारे बधन कह्यो तकहेछे प्रेमबधन १। द्वेषबधन २। इमज महापद्म पणि अरिहत श्रमणनिग्रथने बेप्रका

हानामए अज्जोमए समणाणंनिग्गंथाणं दुविहे बंधणे प० तंजहा पेज्जबंधणेय दोसबंधणेय एवामेव महापउ
मेवि अरहा समणाणंणिग्गथाण दुविहं बधणपन्नवेहिति तजहा पेज्जबधणंच दोसबधणच । सेजहानामए
अज्जोमए समणाणं निग्गंथाणं तउ दंडा प० त० मणदंडे३ एवामेव महापउमेवि समणाणंनिग्गंथाणं तउ
दंडे पन्नवेहिति तजहा मणोदंडं३ । सेजहानामए एएण अभिलावेण चत्तारि कसाया प० तं० कोहकसाए ४ ।
पचकामगुणा प० त० सद्दा ५ । छ जीवनिकाया प० तजहा पुढविकाइया जाव तसकाइया एवामेव जाव
तसकाइया सेजहाणामए एएण अभिलावेग सत्त भयठाणा पन्नत्ता एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं नि
ग्गथाग सत्तभयठाणे पन्नवेहिति॥ एव मठमयठाणे णव बंभचेरगुत्तीउ दसविहे समणधम्मे एव जाव तेत्तीस

रे बंधनप्रते प्ररूपस्यं प्रेमबधन १ । द्वेषबधन २ । ते मे आर्यो श्रमणनिग्रथने त्रणि दंडकह्या ते कहेले मनोदंड ३ । इमज महापद्म पणि श्रमणनि
ग्रथने त्रणि दंड कहस्ये तेकहेले मनोदंड ३ ॥ ते जिम दृष्टाते इम एहज दृष्टाते च्यार कषाय कह्या ते कहेले क्रोधकषाय ४ ॥ पाच कामना गुण
कह्या तेकहेले शब्द रूप ५ ॥ छ जीवनिकाय कहिया ते कहेले पृथ्वीकाय यावत् त्रसकाय इमज तेजिम दृष्टाते ते यथार्थ सात भयना थान कहिआ
तेकहेले इमज महापद्म पणि श्रमण निग्रथने सातभयना थानक प्ररूपस्ये इम आठमदना थानक ॥ नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति ॥ दशप्रकारे यतीधर्म क
हस्ये इम यावत् तेत्रीस आशातना ते जिम दृष्टाते आर्यो मे श्रीवीरकहेले श्रमणनिग्रथने नग्नभाव वस्त्ररहितपणु मुडभाव स्नाननही दातणनकर

तथा फलक प्रतल मायत काष्ठं स्थूल मायतमेव लब्धानिच सन्मानादिना पलब्धानिच न्यक्कारपूर्वकतया यानि भक्तादीनि ते वृत्तयो निर्वाहा लब्धाप लब्धवृत्तय' ॥ आहाकम्मिएत्ति ॥ आधाया प्रणिधानेन साधून् कर्म सचेतनस्या चेतनीकरणलक्षणा अचेतनस्यवा पाकलक्षणा क्रिया यत्र भक्तादौ त दाधाकर्म तदेवा धाकर्मिक उक्तंच सच्चित्तजमचित्त साहणट्ठाएकीरणजंच अच्चित्तमेवपच्चइ आहाकम्मतयभणियंति ॥ १ ॥ इहच इकार' सर्वत्रागमिक इति शब्दो वा य मुपप्रदर्शनार्थपरो वा विकल्पार्थः ॥ उद्देसियति ॥ अर्थिन' पाखण्डिन श्रमणा न्निर्ग्रन्थान्वोद्दिश्य दुर्भिक्षाद्यवसरादौ यद्भक्तं वितीर्यते तद्दौ देशिकमि

मासातणाउत्ति सेजहानामए अज्जोमए समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणे अच्छ त्तए अणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरप्पवेसे लद्धावलद्धवित्तीउ जाव पन्नत्ताउ एवामेव महापउमेविअरहा समणाण निग्गथाण णग्गभावे जाव लद्धावलद्धवित्तीउ जाव पन्नवेहिति । सेजहाणामए अज्जो मए समणाण निग्गथाण आहाकम्मिएइवा उद्देसिएइवा मीसजाएइवा

वु छत्ररहितपणु पगरखीरहितपणु धरतीइसोवो पाटेसूवू काष्टशय्या केसनोलोच ब्रह्मचर्यपालवो परघरे पेसवु जिवाने अर्थे लाधे आहारनी वृ त्ति कही इमज महापद्मपणि श्रमण निग्रथने नग्नभाव प्रते यावत् लब्धालब्धवृत्तिप्ररूपस्ये अलब्धेतपसोवृद्धि लब्धेदेहस्यधारणा ॥ ते जिम नाम आर्यो मे श्रमणने आधाकरमी उद्देसिकपिड मिश्रजातिनो यतीगृहस्यने अर्थे नीपनोसाधुने अर्थे माह अधिकेरु घाती राधे शुद्धले पणि अपवित्रचो थायु आण्यु साधुने अर्थउळीनु लीधु जेचाटुप्रमुखे लागु आच्छेदाआपे घणानु साधारण एकेने पणि अपूछ्याआपे साहमू आणी आपे अटवीनु भ

ति उद्देशे भव मौद्देशिकमिति शब्दार्थ' यदा तथैव यद्वरित स दध्यादिभि र्विमिश्य दीयते तापयित्वावा तदपि तथैवेति इहा भिहित उद्दिसियसा हुमाई ओमच्चयभिक्खवियरणजच उव्वरिअंमीसेउ ततियउद्देशियतंतुत्ति ॥ १ ॥ मोसजावएत्ति ॥ गृहिसयतार्थं मुपस्कृततया मिश्र जात मुत्पन्न मिश्र जात यदाह पढमच्चियगिहिसजय मीसउवखडइमीसगततुत्ति ॥ अज्भोयरएत्ति ॥ स्वार्थमूलाद्ग्रहणे साध्वाद्यर्थं करणप्रक्षेपण मध्यवपूरकश्चाहच सट्ठा मूलइहणे अज्झोयरहोइपक्खेवोत्ति ॥ पूइएत्ति ॥ शुद्धमपि कर्माद्यवयवै रपवित्रीकृत पूतिक उक्तंच कम्मावयवसमेय संभाविज्जइजयतुतपूइ ॥ १ ॥ की यत्ति ॥ द्रव्येण भावेनवा क्रीत स्वीकृतं य त्तत् क्रीतमिति यतोभ्यधायि दव्वाइएहिकिणण साहुणट्ठाएकीयतुत्ति ॥ पामिच्चं ॥ प्रामित्यक साध्वर्थं मुद्धा रगृहीत यतोभिहित पामिच्चसाहुण अट्ठाओच्छिदिउवियावेइत्ति ॥ आच्छिद्य स्वलात् भृत्यादिसत्क माच्छिद्य यत् स्वामी साधवे ददाति भणितच अच्छिज्जवाच्छिदिय जसामीभिच्चमाईणति ॥ अनिसृष्ट साधारण बहूनामेकादिना मननुज्ञात दीयमान माहच अणिसिट्ठसामन्नं गोट्ठियमाईणदयउ एगस्सत्ति ॥ अभ्याहृत स्वग्रामादिभ्य आहृत्य य द्ददाति यतो ऽवाचि सग्गामपरग्गामा जमाणियअभिहडतयहोइत्ति ॥ एषा शब्दार्थः प्राय' प्रकटए

अज्झोयरएइवा पूइए कीए पामिच्चे अच्छिज्जे अणिस्से अभिहडेइवा कतारभत्तेइवा दुब्भिक्खभत्तेइवा गि लाणभत्तेइवा वद्दलियभत्तेइवा पाहुणगभत्तेइवा मूलभोयणेइवा कदभोयणेइवा फलभोयणेइवा बीयभोय

भजे अटवीमा आपे दान दुकालनुभक्त राकनेनिमित्ते कीधो रोगीआनेअर्थे नीपनु ते वादल भक्त मेहमां दानदीये ते परोंहणाने अर्थे नीपनु ते भक्त मूलनुभोजन सूरणादि कद भोजन फलनु भोजन दाडिमादि बीज भोजन हरितभोजन मधुरतृणादि एतला वानां निषेध्याछे इमज महाप

वेति कान्तारभक्तादय आधाकर्मादिभेदाएव तत्र कान्तार मटवी तत्र भक्तं भोजनं यत् साध्वाद्यर्थं त त्तथा एवं शेषाख्यपि नवरं ग्लानो रोगोपशान्तये य द्ददाति ग्लानेभ्योवा यद्दीयते तथा वर्द्दलिका मेघाडंबरं तत्रहि वृष्ट्याभिचाभ्रमणाचनो भिक्षुकलोको भवतीति गृहीत मर्थं विशेषतो भक्त दानाय निरू पयतीति प्राघूर्णका आगन्तुका भिक्षुकाएव तदर्थं यद्भक्त तत्तथा प्राघूर्णकोवा गृही स यद्दापयति तदर्थं संस्क्रत्य त त्तथा तथामूल पुनर्नवादीनां तस्य भोजन तदेववा भोजन भुज्यतइति भोजनमितिकृत्वा कदः सूरणादि फल त्रपुष्यादि वीजं दाडिमादीना हरितं मधुरतृणादिविशेषः जीववधनिमित्त त्वा च्चैषा प्रतिषेधइति ॥ पचमहव्वइएइत्यादि ॥ प्रथमपश्चिमतीर्थंकराणाहि पचमहाव्रतानि शेषाणा महाविदेहजानाच चत्वारीति पचमहाव्रतिक एव सहप्रतिक्रमणेनो भयसध्य मावश्यकेनय स तथा अन्येषान्तु कारणजातप्रतिक्रमणमिति उक्तंच सपडिक्कमणोधम्मो पुरिमस्सयपच्छिमस्सयजिणस्स

णेइवा हरियन्नोयणेइवा पडिसिद्धे एवामेव महापउमेविअरहासमणाण आहाकम्मियंवा जाव हरियन्नोय णंवा पडिसेहिस्सइ । सेजहानामए अज्जो मए समणाण पचमहव्वइए सपडिक्कमणे अचेलएधम्मे पन्नत्ते एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं निग्गथाण पचमहव्वइय जाव अचेलगधम्म पन्नवेहित्ति । सेजहा

द्म पणि श्रमणने आधाकरमी यावत् हरितकायनोभोजन निषेधकरस्ये ते जिम दृष्टाते आर्यो मे श्रमणने पाचमहाव्रत पडिक्कमणासहित अचेलकध र्म कह्यो इमज महापद्म पणि श्रमणनिग्रथने पाचमहाव्रत यावत् अचेलकधर्मप्रते कहस्यें ते जिम दृष्टाते में पाच अणुव्रत सात शिक्षाव्रत बारेभेदे श्रावकनो धर्म प्ररूप्यो इमज महापद्मपणि ॥ पाच अणुव्रत यावत् श्रावकनो धर्म कहस्ये ॥ ते जिम नामे आर्यो मे श्रमणनें सय्यातरपिंड राजपिं

मज्झिमगाणजिणाए कारणजाएपडिक्कमण ॥ १ ॥ तथा अविद्यमानानि जिनकल्पिकविशेषापेक्षया असत्वा देव स्थविरकल्पिकापेक्षयातु जीर्णमलिनख
ण्डितश्वेताल्पत्वादिना चेलानि वस्त्राणि यस्मिन् स तथा धर्म्म श्चारित्र नच सति चेले अचेलता न लोकेप्रतीता यत उक्तं जहजलमवगाहंतो बहुचेलोवि
सिरवेढियकडिल्लो भन्नइनरोअचेलो तहमुणओसंतचेलोवि ॥ १ ॥ अत. परिसुद्धजुन्नकुत्थिय थोवानिययन्नभोगभोगेहिं मुणओमुच्छारहिया सतेहिंअचे
लयाहोति॥२॥ अनियतै रन्यभोगैच सति भोग्यै रित्यर्थ नच वस्त्र ससक्तिरागादिनिमित्ततया चारित्रविघातायाध्यात्मशुद्धे. शरीराहारादिवदिति नहि
शरीरात् यूकादि संसक्ति र्नभवति रागोवा नोत्पद्यते उक्तञ्च अहकुणसियुत्तवत्था इएसुमुच्छधुवसरीरेवि अक्केज्जदुलभतरे काहिसिसुच्छविसेसेणति ॥ १ ॥
अक्रयणीयेत्यर्थ' अध्यात्मशुद्धभावे चेलकत्वमपि न चारित्राय,यथोक्तं अपरिग्गहाविपरस तिएसुमुच्छाकसायदोसेहिं अविणिग्गहियप्पाणो कम्ममलम
णतमेज्जंति ॥ १ ॥ अथ जिनोदाहरणा दचेलकत्वमेव श्रेयइति न वक्तव्यमेतत् यतो ऽभ्यधायि नपरोवएसविसया नयछउमत्थापरोवएसंपि देंतिनयसीस
वग्ग दिक्खतिजहाजिणासव्वे ॥ १ ॥ तहसेसेहियसव्व कज्जजइतेहिसव्वसाहम्म एवचकओतित्थ नचेदचेलत्तिकाणाहोत्ति ॥ १ ॥ अपिच उचितचेलसद्भावे
चारित्रधर्मो भवत्येव तदुपकारित्वा च्छरीराहारादिवदिति अथ कथं चेलस्य चारित्रोपकारितेतिचे दुच्यते शीतादित्राणतो जीवससक्तिनिमित्तत्रणपरि
हारादिहेतुत्वा दुक्तञ्च तणगहणानलसेवा निवारणाधम्मसुक्कज्झाणट्ठा दिट्ठंकप्पग्गहण गिलाणमरणट्ठयाचेवत्ति ॥ १ ॥ तथा ॥ सेज्जायरेति ॥ शेरते यस्यां

नामए अज्जो मए पचाणुव्वइए सत्त सिक्खावइए दुवालसविहे सावगधम्मे पण्णत्ते एवामेव महापउमेवि अ

ड प्रतिषेध्यो इमज महापद्मपणि श्रमणने शय्यातरपिंड राजपिंड निषेधस्ये ॥ तेजिम नामे आर्यो माहरे नवगच्छ इग्यारे गणधर इमज महापद्म ॥

साधवः सा शय्या तया तरति भवसागरमिति शय्यातरो वसतिदाता तस्य पिंडो भक्तादि शय्यातरपिण्ड' सच असनादि वस्त्रादि सूच्यादिश्चेति तद्ग्रहणे दोषा स्वमी तित्थकरपडिकुट्ठो अन्नायउग्गमोवियनमुज्झे अविमुत्तिअलाघवया दुल्लहसेज्जाविउच्छेउत्ति ॥ १ ॥ राज्ञ चक्रवर्त्तिवासुदेवादेः पिण्डो

रहा पचाणुव्वइय जाव सावगधम्म पन्नविस्सति । सेजहानामए अज्जो मए समणाणं सिज्जायरपिंडेइवा रायपिंडेइवा पडिसिद्धे एवामेव महापउमेविअरहा समणाण सिज्जायरपिंडेइवा रायपिंडेइवा पडिसेहिंति । सेजहानामए अज्जो मए नवगणा इक्कारसगणहरा एवामेव महापउमस्सवि अरहओ नवगणा इक्कारसगणहरा भविस्सति । सेजहानामए अज्जो अह तीसंवासाइ अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ता जाव पव्वइए दुवालससंवच्छराइं तेरसपक्खा छउमत्थपरियाग पाउणित्ता तेरसहि पक्खेहिं ऊणगाइ तीसंवासाइ केवलिपरियागं पाउणित्ता बायालीसं सवच्छराइ सामन्नपरियाग पाउणित्ता बावत्तरिवासाइ सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिस्स जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेस्सं एवामेव महापउमेवि अरहा तीसंवासाइं अगारवासमज्झेवसित्ता

ने पणि अरिहंतने नवगच्छ इग्यारेगणधर थास्ये ॥ तेजिम दृष्टाते आर्यो हु त्रीसवरस गृहस्थावासमा वसीने मुण्डथयो यावत् दीक्षालीधी बारेवरस तेरेपखवाडा छद्मस्थनो पर्याय पालीने तेरेपखवाडा उणा त्रीसवरस केवलीनो पर्याय पालीनें बेतालीस वरसताई चारित्रनो पर्याय पालीने बहोत्तरिवरसनु सर्वायु पालीने सीझस्यु यावत् सर्वदुखनो अतकरस्यु इमज महापद्मपणि अरिहंत त्रीसवरसताईं घरेरही यावत् दीक्षालेस्ये बारेवरस

राजपिण्ड इदानी मुभयोरपि जिनयो: समानतानिगमनार्थमाह ॥ जस्सीलगाहा ॥ यो शीलसमाचारो स्वभावानुष्ठाने यस्य स यच्छीलसमाचार स्ता
वेव शीलसमाचारो यस्य स तथेति महापद्मजिनोहि महावीरव दुत्तरफाल्गुनीनक्षत्रजन्मादिव्यतिकरइति नक्षत्रसबंधा नक्षत्रसूत्र कण्ठ्य नवर ॥ पच्छ
भागत्ति ॥ पश्चा द्भाग श्चन्द्रेण भागो येषा तानि पश्चाद्भागानि चन्द्रो तिक्रम्य यानि भुंक्ते पृष्टं दत्वेत्यर्थ: ॥ अभिईगाहा ॥ अस्सोइत्ति ॥ अश्विनी मतान्तर पु
नरेव अस्सिणिभरणीसवणो अणुराहधणिठ्ठरेवईपूसो मिगसिरहत्थोचित्ता पच्छिमजोगामुणेयव्वत्ति ॥ १ ॥ नक्षत्रविमानव्यतिकरउक्तइति विमानविशेष

जाव पव्वइहिति दुवालससंवच्छराइ बावत्तरिवासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिज्झिहिहि । जाव सव्वदुक्खाणमंतं
काहिति । जस्सीलसमायारो अरहातित्थकरोमहावीरो तस्सीलसमायारो होइउअरहामहापउमे ॥ १ ॥
नवनरक्खत्ता चदस्स पच्छभागा पसत्ता तजहा अभिईसमणधणिठा यरेवईअस्सिणीमिगसिरपूसो हत्थोचि
त्तायतहा पच्छभागानवनवति ॥ १ ॥ आणयपाणयआरणअच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयणसयाइ उड्ढं

यावत् बहोत्तरिवरसताईं सर्व आउखुं पालीने सीझस्ये यावत् सर्वदुखनो अंत करस्ये ॥ जे शील आचार अरिहत तीर्थकर श्रीमहावीरनो ते शी
ल आचार होस्यें अरिहत महापद्मनों १ ॥ नव नक्षत्र पश्चिमभागे कहिआ ते कहेछे अभीचि १ । श्रवण २ । धनिष्टा ३ । रेवती ४ । अश्विनी ५ मृ
गसिर ६ । पुष्य ७ । हस्त ८ । चित्रा ९ ॥ पश्चिमभागे नव चद्रमाथी ॥ १ ॥ आनत १ । प्राणत १० । आरण ११ । अच्युत १२ । मु ए देवलोके वि
मान नवसे जोजन ऊचा ऊचपणे कहिआ ॥ विमलवाहन कुलगर नवसे धनुष ऊचा ऊचपणे थया ॥ ऋषभदेव अरिहत कोसलिक आ उत्सर्प्पिणी

अतिचारसूत्रं कण्ठ्यं अनंतरं विमानानामुच्चत्व मुक्तमिति कालचारविशेषस्यो च्चत्वसूत्रं कुलकरसंबंधाद्दृषभकुलकरसूत्रं ऋषभमनुष्यप्रत्यन्तरद्वीपजमनुष्यक्षेत्र विशेषप्रमाणसूत्रं च सुगमानि चैतानि नवरं घनदंतादयः सप्तमा अन्तरद्वीपा नवयोजनशतानी त्युक्तमिति समधरणीतला दुपरिष्टा न्नवयोजनशताभ्यंतर चारिणो ग्रहविशेषस्य चारमाह ॥ सुक्कस्सेत्यादि ॥ शुक्रस्य महाग्रहस्य नववीथयः क्षेत्रभागा याम स्तिभि र्नक्षत्रै र्भवन्ति ता हयगजसज्जावीथी हयवीथी त्येव सर्वत्र सज्ञाच व्यवहारविशेषार्थं याचेह एरावणीथो सा त्वत्र नागवीथीति रूढा नागवीथीचे रावणपद मित्येतासांच लक्षणं भद्रबाहुप्रसिद्धाभि रार्याभिः क्रमेण लिख्यते भरण्यास्वात्याग्नेयं नागाख्यावीथिरुत्तरेमार्गे रोहिण्यादिरिभाख्या चादित्याद्यासुरगजाख्या ॥ १ ॥ आग्नेय कृत्तिका आदित्य पुनर्वसुरिति हयभाख्याप्येषादिः श्रवणादिर्मध्यमेजरद्गवाख्याः प्रोष्ठपदादिचतुष्को गोवीथि स्तासमध्यफल्गुनेष्वग ॥ २ ॥ अथा मध्यमेदक्षिमार्गे प्रोष्ठ

उच्चत्तेण पण्णत्ता । विमलवाहणेणं कुलगरे नवधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था । उसभेणं अरहा कोसलिएणं इमीसेउस्सप्पिणीए नवहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं वीइक्कंताहिं तित्थेपवत्तिए । घणदंतलट्ठदंतगूढदंत सुद्धदंतदीवाणदीवा णव जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० सुक्कस्सणंमहग्गहस्स नववीहीओ पण्णत्ताओ

नें विषे नवकोडाकोडि सागरोपम व्यतिक्रमे तीर्थप्रवर्त्ताव्यो ॥ घनदंत लष्टदंत गूढदंत शुद्धदंत अंतरद्वीपना द्वीप नवसेयोजन लांबा पिहुला कहिआ ॥ शुक्र मोटाग्रहनें नव वीथिकहि २ । नक्षत्रनीवीथि चारविशेष अश्वनीवीथीनें चारविशेषे शुभाशुभफल ते कहेले अश्ववीथी १ । गजवीथी २ । नागवीथी ३ । वृषभवीथी ४ । गोवीथी ५ । उरगवीथी ६ । अजवीथी ७ । मृगवीथी ८ । वैश्वानरवीथी ९ ॥ नवप्रकारे नोकषायमोहनी कर्म कह्यो ते

पदा पूर्वभद्रपदा अजवीथीहस्तादि मृगवीथी चैद्रदेवतादि स्वात् दक्षिणा मार्गे यैवा नयीषाढद्वयमोज्ञां ॥ ३ ॥ इन्द्रदेवता ज्येष्ठा ब्राह्मामभिजिदिति एतासु भृगुर्विचरति नागगजैरावतीषुवीथीषु चेद्बहुवर्षं दर्ज न्य.सुलभौषधयोरर्वंवृद्धिय ॥ ४ ॥ पशुसन्नासुचमध्यम सस्यफलादियेदाचरेद्भृगुज. अजमृगवैश्वानरवी थिष्व र्थभयादिं तोलोकइति ॥५॥ वीथिविशेषचारेण शुक्रादयोमहाग्रहा मनुजादीना मनुगहोपघातकारिणो भवति द्रव्यादिसामग्रया कर्मणा मुदयादिसद्भावा दिति सबधात् प्रस्तुताध्ययनावतारिकमस्वरुपमाह ॥ नवविहेत्यादि ॥ इह नो शब्दः साहचर्यार्थ. कषायैः क्रोधादिभि. सहचरानो कषाया: केवलाना नैषा प्राधान्य किन्तु ये ग्नन्तानुबन्ध्यादिभि सहो दग यान्ति तद्विपाक सदृशमेव विपाक मादर्शयन्तोति बुधग्रहव दन्यससर्ग मनुवर्त्तन्ते एवंच नोकषायतया वेद्यते य त्कमेत नोकषायवेदनोयमिति तत्र य दुदयेन स्त्रियाः पुन्य भिलाष पित्तोदयेन मधुराभिलाषव त्स फुंफुकाग्निसमान. स्त्रीवेदो यदुदये पुसः स्त्रिया

हयवीही गयवीही नागवीही वसहवीही गोवीही उरगवीही अयवीही मियवीही वेसाणवीही । नवविहे नोकसायवेयणिज्जे कम्मे पन्नत्ते तंजहा इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसगवेए हासे रइ अरई भए सोगे दुगंछा। चउ रिंदियाण नव जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा पन्नत्ता । भुयगपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणि याण नवजाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा पन्नत्ता । जीवाण नवठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए

कहेछे स्त्रीवेद १ । पुरुषवेद २ । नपुंसकवेद ३ । हास्य ४ । रती ५ । अरति ६ । भय ७ । सोक ८ । दुगंछा ९ ॥ चोरिंद्रीने नवजाति कुलकोडि यो निप्रमुख लाख कहिआ ॥ भुजपरिसर्प थलचर पचेंद्री तीर्यंच योनिआनी नवजातिकुलकोडि योनिप्रमुख लाख कहिआ ॥ जीवनें नवथानकनिवर्त्ति

मभिलाप: श्लेष्मोदयात् दम्लाभिलाषवत् दावाग्निज्वालासमान एवेन्द्री यदुदये नपुंसकस्य स्त्रीपुंसयो रुभयो रभिलाष: पित्तश्लेष्मणोरुदये मज्जिताभिलाषवत् समहानगरदाहाग्निसमानो नपुंसकवेदइति यदुदयेन सनिमित्त मनिमित्तवा हसति तत्कर्महास्य यदुदयेन सचित्ताचित्तेषु बाह्यद्रव्येषु जीवस्य रति रुत्पद्यते तद्रतिकर्म यदुदयेन तेष्वेवा रति रुत्पद्यते तदरतिकर्म यदुदयेन भयवर्जितस्यापि जीवस्य इहलोकादिसप्तप्रकारं भय मुत्पद्यते तद्भयकर्म यदुदयेन शोक रहितस्यापि जीवस्या क्रन्दनादि शोको जायते तच्छोककर्मेति यदुदयेनच विष्टादिवीभत्सपदार्थेभ्यो जुगुप्सते तज्जुगुप्साकर्मेति अनन्तरं कर्मोक्तं तदशव र्त्तिनश्च नानाकुलकोटीभाजो भवतीति कुलकोटिसूत्रे तद्वताश्च कर्मचिन्वन्तीति चयादिसूत्रषट्कं कर्मपुद्गलप्रस्तावात् पुद्गलसूत्राणि सुगमानि चैतानि नवर॥ नवजाईत्यादि ॥ चतुरिन्द्रियाणा जातौ यानि कुलकोटीनां योनि प्रमुखाना योनिद्वाराणां शतसहस्राणि तानि तथा भुजै गच्छन्तीति भुजगा गोधादय इति ॥ इतिश्रीमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानाख्यतृतीयांगविवरणे नवस्थानकाख्य नवममध्ययनं समाप्तमिति ॥ श्लोका ७०७ ॥ ९ ॥

चिणिसुवा चिणतिवा चिणिस्संतिवा ३ ॥ पुढविकाइयनिव्वत्तिए जाव पंचिंदियनिव्वत्तिए एवं चिण उवचिण जाव निज्जराचेव । नवपएसिया खंधा अणंता पन्नत्ता । नवपदेसोगाढा पुग्गला अणंता पन्नत्ता । नवगुण लुक्खा पुग्गला अणंता पन्नत्ता ॥ इइ नवमठाणं सम्मत्तं ॥ ९ ॥ ॥ ॥

त पुद्गल पापकर्मपणे चिण्या चिणेछे चिणस्ये पृथिवीकायनिवर्त्तित यावत् पंचेंद्रीनिर्वर्त्तित ॥ इम चिण्या उपचिण्या यावत् निर्जराव्या ॥ नवप्रदेशि यास्कंध अनंता कह्या यावत् नवगुणा लूखापुद्गल अनंता कह्या ॥ इति श्रीनवमु ठाणु टब्बार्थ संपूर्ण थयो ॥ ९ ॥ ॥ ॥

अथ सख्याविशेषसंबद्धमेव दशस्थानकाध्ययन मारभ्यते अस्यच पूर्वेण सहाय मभिसंवन्धो ऽनन्तराध्ययने जीवाजीवानवलेन निरूपिता इहतु तएव दशत्वे न निरूप्यन्तइत्येवसम्बन्धस्य चतुरनुयोगद्वारस्या स्येद मादिसूत्रं ॥ दसविहालोगेत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहाय सवन्धः पूर्वं नवगुणरूचा' पुद्गला अनन्ता इत्युक्तं तेचा संख्येयप्रदेशे लोके समान्तीति लोकस्थिति रत' सेवे होचत इत्येव सवन्धस्या स्य व्याख्या इहापि संहितादिचर्चः प्रथमाध्ययनव त्केवलं लो कस्य पचास्तिकायात्मकस्य स्थिति स्वभावोलोकस्थितिर्यद्दि त्युद्देशे णमिति वाक्यालङ्कारे ॥ उद्दाइत्तत्ति ॥ अपद्राय मृत्वेत्यर्थ ॥ तत्थेवत्ति ॥ लोकदेशे ग तौ योनौ कुलेवा सातर निरन्तर वौचित्येन भूयो भूय. पुनःपुन: प्रत्याजायते प्रत्युत्पद्यन्त इत्येव मप्येकालोकस्थितिरिति अपिशब्द उत्तरवाक्यापेचया

दसविहा लोगठिई पस्रत्ता तंजहा जस्रं जीवा उद्दाइत्ता२ तत्थेव२ भुज्जो २ पच्चायंति एवं एगा लोगठि ई पस्रत्ता १ जस्रं जीवाणं सयासमिते पावेकम्मे कज्जति एवंएगा लोगठिई पस्रत्ता २ जस्र जीवाणं सया समिय मोहिणिज्जे पावेकम्मे कज्जइ एवपेगालोगठिई पस्रत्ता ३ । णयएय भूयंवा भव्वंवा भविस्सइवा ज जीवा अजीवा भविस्सति अजीवा जीवा भविस्संति एव पेगालोगठिई पस्रत्ता । नएयंभूयंवा ज तसा

दशप्रकारे लोकस्थिति कही तेकहेंछे जेजीव उदवाई २ मरी २ तिहाज २ तिहां फरी २ ऊपजेछें इम एक लोकस्थिति कही १ । जेजीवने सदा सर्वदा पापकर्म करेछें इम एक लोकस्थिति कही २ । जेजीवनें सदा सर्वदा मोहनी पापकर्म करेछे इम एक लोकस्थिति कही ३ । ए थयुनथी यातुनथी थास्येनही जेजीव अजीव थास्ये अजीव जीवथास्ये इम एक लोकस्थिति कही ४ । ए थयूंनथी ३ । जे त्रसप्राण विच्छेदजास्ये थावरप्राणज हणस्ये

ऽपि: क्वचि न्न दृश्यते अथ द्वितीया ॥ अब्भमित्यादि ॥ सदा प्रवाहतो ऽनाद्यपर्यवसितं कालं ॥ समियंति ॥ निरन्तरं पापं कर्म ज्ञानावरणादिकं सवमपि मीचमिवन्सकालेन सर्वस्यापि पापत्वादिति क्रियते वध्यत इत्येव मप्येका ऽन्येत्यर्थ. सतत कर्म बधनमिति द्वितीया ॥ मोहणिज्जेत्ति ॥ मोहनीयं प्रधान तया भेदेन निर्दिष्टमिति सतत मोहनीयबन्धन तृतीया जीवाजीवाना मजीवजीवत्वाभाव चतुर्थी चसाना स्थावराणाचा व्यवच्छेद: पचमी लोकालोकयो रलोकलोकत्वेन भवन षष्ठी तयोरेवा न्योन्याप्रवेश' सप्तमी ॥ जावतावलोएतावतावजीवत्ति ॥ याव ल्लोक स्ताव ज्जीवा यावति क्षेत्रे लोकव्यपदेश स्तावति जीवाइत्यर्थ: ॥ जावजावजीवातावलोएत्ति ॥ इह यावद्याव ज्जीवा स्तावत्ताव ल्लोको यावति२ क्षेत्रे जीवा स्तावत्तावत् क्षेत्रं लोकइतिभावार्थ: ॥ जावता

पाणा बुच्छिज्जिस्सति थावरापाणा ज्ञविस्संति थावरापाणा बुच्छिज्जिस्संति तसापाणा ज्ञविस्संति एवंपेगा लोगठिई पन्नत्ता ५ । नयएयंभूयं ३ ज लोए ञ्चलोगे ज्ञविस्सइ ञ्चलोए लोए ज्ञविस्सइ एवपेगालोगठिई पन्नत्ता ६ । नएयज्ञूयवा ३ ज लोए ञ्चलोए पविस्सइ ञ्चलोएवा लोएपविस्सइ एवं पेगालोगठिई ७ । जावताव लोए तावताव जीवा जावजावजीवा ताव लोए एवपेगालोगठिई ८ । जावताव जीवाणय पुग्ग

थावरप्राण विच्छेदजास्ये अने त्रसप्राण होस्ये इम पणि एक लोकस्थिति कही ५ । एहवू नथीथयु ३ । जे लोकते अलोक थास्ये इम पणि एक लोकस्थिति कही ६ । एहवू थयूनथी ३ । जे लोक अलोकमा पेसस्ये अलोक लोकमा पेसे इम एक लोकस्थिति ७ । जिहां ताइ लोकछे तिहा ताई जीवछे जिहा लगे जीवछे तिहाताई लोकछे एम एक लोकस्थिति कही ८ । जिहाताई जीवनी पुद्गलनी गति गतिपर्यायछे तिहाताई लोक

वेत्यादि वाक्यरचनातु भाषामात्र मित्यष्टमी याव ज्जीवादीनां गतिपर्याय स्ताव ल्लोकइति नवमी सर्वेषु लोकान्तेषु ॥ अबद्धपासपुट्ठत्ति ॥ बद्धा गाढश्ले षाः पार्श्वस्पृष्टा स्पृष्टमात्रा येन तथा ते अबद्धपार्श्वस्पृष्टा रूक्षा द्रव्यान्तरेणेति गम्यते तत्सम्पर्का दजातरूक्षपरिणामाः सतइतिभावः लोकान्तस्वभावान् पुद्ग लान् रूक्षतया क्रियते रूक्षतया परिणमति अथवा लोकान्तस्वभावा यारूक्षता भवति तया ते पुद्गला अबद्धपार्श्वस्पृष्टा. परस्पर मसबद्धाः क्रियते किं सर्वे था नैवमपि तु तेनेत्यस्य गम्यमानत्वात् तेन रूपेण क्रियते येन जीवा सकर्मपुद्गला पुद्गलाश्च परमाणवो दयो ॥ नोसंचायतित्ति ॥ नशक्नुवंति वहिस्ता ल्लोकाता द्गमनतायै गन्तुमिति छान्दसत्वेन तुमर्थे युट्प्रत्ययविधानादिति एव मप्य न्यालोकस्थिति र्दशमो शेष कण्ठ्यमिति लोकस्थितिरेव विशिष्टव त्वनिस्पृष्टाअपि शब्द पुद्गलालोकान्तएवगच्छतीति प्रस्तावा च्छब्दभेदानाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ निर्हारीसिलोगो ॥ निर्हारी घोषवान् शब्दोयं घण्टा

लाणय गइपरियाए ताव ताव लोए जावताव लोए ताव ताव जीवाणयपुग्गलाणय गइपरियाए एव पेगा लोगठिई ९ । सव्वेसुविणलोगतेसु अवद्धपासपुठा पुग्गला लुक्खत्ताए कज्जति जेण जीवाय पुग्गलाय नोसं चायति वहिया लोगतागमणताए एव पेगालोगठिई पन्नत्ता १० । दसविहे सद्दे पन्नत्ते तजहा नीहारि

छे जिहालगे लोकछे तिहातांई जीवनी पुद्गलनी गतिपर्यायछे इम एक लोकस्थितिकही ९ । सघलाई लोकातनेविषे अबद्धपार्श्वस्पृष्ट परस्परे फरस्या पुद्गल लूषापणु करस्ये जेणे जीव अने पुद्गल नथीसमर्थ याता बाहिर लोकातने विषे जावाने इम एक लोकस्थिति कही १० ॥ दशप्रकारे शब्द कह्या ते कहेछे नीहारिम घटाशब्द १ । पिंडनोशब्द २ । ढक्कानेरीनो लूखोशब्द ३ । भिन्नशब्द ४ । झर्झरितशब्द झालरिवीणादि ५ । दीर्घशब्द मे

शब्दादिति पिण्डेन निर्वृत्तः पिण्डिमो घोषवर्जितः ढक्कादिशब्दवद्रूक्षः काकादिशब्दवत् भिन्नः कुष्ठाद्युपहतशब्दवत् झर्झरितो जर्जरितोवा सतं त्रीककरटिकादिवाद्यशब्दवत् दीर्घो दीर्घवर्णाश्रितो दूरशब्दोवा मेघादिशब्दवत् ह्रस्वो ह्रस्ववर्णाश्रयो विवक्षया लघुर्वा वीणादिशब्दवत् ॥ पुहत्तेयत्ति ॥ पृथक्त्वेनैकत्वे कोऽर्थो नानातूर्यादिद्रव्ययोगे यः स्वरो यमलशङ्खादिशब्दवत् स पृथक्त्वइति काकलीति सूक्ष्मकण्ठगीतध्वनिः काकलीति यो रूढः ॥ खिखिणीति ॥ किंकिणी क्षुद्रघटिका तस्याः स्वरोध्वनि. किङ्किणीस्वरः अनन्तर शब्दउक्ता सचेन्द्रियार्थइति कालभेदेने न्द्रियार्थान् प्ररूपयन् सूत्रत्रयमाह ॥ दसइंदियेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं ॥ देसेणविति ॥ विवक्षितशब्दसमूहापेक्षया देशेन देशतः काश्चिदित्यर्थः एक. कश्चित् श्रुतवानिति ॥ सव्वेणविति ॥

पिंडिमेलुक्खे भिन्नेजज्झरिएइय दीहेरहस्सेपुहत्तेय काकणीखिखणिस्सरे॥ १ ॥ दस इंदियत्था तीता पन्नत्ता तंजहा देसेणवि एगे सद्दाइ सुणिंसु सव्वेणवि एगे सद्दाइ सुणिंसु देसेणवि एगे रूवाइ पासिंसु सव्वेणवि एगे रूवाइ पासिंसु एवं गंधाइं रसाइं फासाइं जाव सव्वेणवि एगे फासाइ पडिसंवेदिइंसु। दस इंदियत्था पडुप्पन्ना पन्नत्ता तंजहा देसेणवि एगे सद्दाइ सुणेंति सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति एवं जाव फासाइं।

घनो ६। लघुस्वर हलूको ७। पृथक्त्वशब्द घणाएकठा ८। झीणोशब्द स्वर कोकिलादिकनो ९। घूघरीनोस्वर १०॥ दश इंद्रीना अर्थ विषय कह्या तेकहेछे देशथकी एक शब्द साभले घणामाथी सर्वथी एक शब्द प्रतें साभलें देशथकी एकरूपप्रतें देखे सर्वथकी एकरूपप्रते देखे इम गंध रस स्पर्श यावत् सर्वथकी एक फरशप्रते सवेदतो हवो इहा सघले अतीतकाललेवो ॥ दश इंद्रीयना अर्थ वर्त्तमान कहिया तेकहेछे देशथकी एक शब्दप्रति

सर्वतया सर्वानित्यर्थ इन्द्रियापेक्षयावा श्रोत्रेन्द्रियेण देशत: संभिन्नश्रोतोलब्धियुक्तावस्थायां सर्वेन्द्रियै: सर्वतो ऽथवै कवर्णेन देशत उभाभ्यां सर्वत एव स र्वत्र ॥ पइयणत्ति ॥ प्रत्युपन्ना वर्त्तमाना इन्द्रियार्थाश्च पुद्गलधर्माइति पुद्गलस्वरूपमाह ॥ दसहीत्यादि ॥ स्पष्टं नवर ॥ अच्छिणेत्ति ॥ अच्छिन्नो ऽपृथग्भू त' शरीरे विवचितस्कन्धेवा सद्दइएव चलेत् स्थानातर गच्छेत् ॥ आहारिज्जमाणेत्ति ॥ आक्रियमाण. खाद्यमान: पुद्गल आहारेवा अभ्यवक्रियमाणेसति पुद्गल चलेत् परिणम्यमान पुद्गलएवो दराग्निना खलरसभावेन परिणम्यमानेवा भोजने उच्छास्यमान उच्छासवायुपुद्गल उच्छास्यमानेवा उच्छसिते क्रियमाणेव नि श्वस्यमानो नि श्वस्यमानेवा वेद्यमानो निर्जीर्यमाणश्च कर्मपुद्गलो ऽथवावेद्यमाने निर्जीर्यमाणेच कर्म्मणि वैक्रियमाणो वैक्रियशरीरतया परिणम्यमानो वैक्रियमाणेवा शरीरे परिचार्यमाणो मैथुनसज्ञया विषयीक्रियमाण: शुक्रपुद्गलादि परिचार्यमाणेवा भुज्यमाने स्त्रीशरीरादौ शुक्रादिरेव

दस इंदियत्था अणागया पन्नत्ता तंजहा देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्सइ सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्सइ एव जाव सव्वेणवि एगे फासाइ पडिसंवेदिस्सइ । दसहि ठाणेहि अच्छिन्नेपुग्गले चलेज्जा आहारिज्जमा णेवा चलेज्जा परिणामिज्जमाणेवा चलेज्जा उस्ससिज्जमाणेवा चलेज्जा परियाएज्जमाणेवा चलेज्जा निस

सांभलस्ये सर्वथकी एकशब्दप्रति सांभलस्ये इम यावत् स्पर्श ॥ दश इंद्रीना अर्थ अनागत कह्या ते कहेछे देशथी एकशब्दप्रते सांभलस्ये सर्वथकी ए कशब्दप्रते सांभलसे इम यावत् शरवथी एकफरसप्रते सवदसे ॥ दशथानके अच्छिन्न शरीरे तथा स्कधथी सवङ्ग चले ते कहेछे आहारतोखाईतो पुद्गलचले उदरेपरिणामावतो चले उस्वासलेता पुद्गल चले मैथुनसज्ञाये परिगमावता चले स्त्रीना शरीरमा वीर्यनापुद्गल निश्वासलेता पुद्गलचले वे

ठा० ४ ॥ १३८ ॥

यत्नाविष्टो भूतादधिष्ठितो यक्षाविष्टेवा सति पुरुषे यक्षावेशेना सति तच्छरीरलक्षणः पुद्गलो वातपरिगतो देहगतवायुप्रेरितो वातपरिगतेवा देहे स ति यान्मवातेन चोहित्तसदृति पुद्गलाविकारादेव पुद्गलधर्मा निष्क्रियार्था नाश्रित्य यद्भवति तदाह ॥ दसहीत्यादि ॥ गतार्थं नवरं स्थानविभागोय तत्रम नोज्ञान् शब्दादोन् मे अपहृतवा नित्येव भावयत क्रोधोत्पत्ति स्या दित्येकमेव ममनोज्ञानुपहृतवा नुपनीतया निहचे कवचनबहुवचनयो नै विशेष' प्राकृत्वादिति रितोय एव वर्त्तमाननिर्देशेनापि हय भविष्यतापि हयमित्येव षट् तथा मनोज्ञाना मपहारत. कालत्रयनिर्देशेन सप्तम एव ममनोज्ञा

सिज्जमाणेवा चलेज्जा वेढिज्जमाणेवाचलेज्जा निज्जरिज्जमाणेवा चलेज्जा विउव्विज्जमाणेवा चलेज्जा जक्खा इठेवा चलेज्जा वातपरिगएवा चलेज्जा । दसहि ठाणेहिंकोहुप्पत्ती सिया तंजहा मणुन्नाइ मे सद्द जाव गं धाइ अवहरिसु ॥ १ ॥ अमणुन्नाइ मे सद्दाइ जाव उवहरिसु ॥ २ ॥ मणुन्नाइ मे सद्दफरिसरसरूवगधाइं अवहरइ ॥ ३ ॥ अमणुन्नाइ मे सद्दफरिसरसरूवगधाइ उवहरइ ॥ ४ ॥ मणुन्नाइ मे सद्दफरिसरसरूवगधाइं अवहरिस्सइ ॥ ५ ॥ अमणुन्नाइ मे सद्दाइ जाव उवहरिस्सइ ॥६॥ मणुन्नाइ मे सद्द जाव गधाइ अवहरिसु अवहरइ अवहरिस्सइ ॥ ७ ॥ अमणुन्नाइं मे सद्दजाव उवहरिसु उवहरइ उवहरिस्सइ ॥ ८ ॥ मणुन्नामणुन्नाइ

दता पुद्गल चले निर्जराता पुद्गलचले वैक्रियशरीरपणे परिणमाता चले यक्षाधिष्ठितळे तेहना शरीरमा पुद्गलचले वायुना परिगमवाथी चले ॥ दशथानक क्रोधनी उत्पत्ति कही तेकहेछे मनोज्ञ मनोहर शब्द स्पर्श रूप तेप्रते ए अपहरतो हवो इम चितवे अमनोज्ञ माहरे शब्द स्पर्श रस रू

नामुपहारतो ऽष्टम मनोज्ञामनोज्ञाना मपहारोपहारतः कालत्रयनिर्देशेन नवम॥ अहंचेत्यादि ॥ दशम ॥ मिच्छंति ॥ वैपरीत्यं विशेषेण प्रतिपन्नो विप्रतिपन्नाविति क्रोधोत्पत्ति' सयमिना नास्तोति सयमसूत्र सयमविपक्षश्चा सयम इत्यसयमसूत्र असयमविपच: सवरइति सवरसूत्रं सवरविपरीतो ऽसंवर इत्यसवरसूत्र सुगमानि चैतानि नवर सुपकारणसवरो ऽप्रतिनियताकल्पनीयवस्त्राद्यग्रहणरूपो ऽथवा विप्रकीर्णस्य वस्त्राद्युपकरणस्य सवरण मुप

मे सद्दाइं जाव अवहरिसु अवहरइ अवहरिस्सइ ॥ ९ ॥ उवहरिंसुउवहरइ उवहरिस्सइ ॥ १० ॥ अहंचणं आयरियउवज्झायाण सम्म वट्टामि ममचणं आयरियउवज्झाया मिच्छं विपडिवन्ना। दसविहे संजमे पन्नत्ते तंजहा पुढविकायसंजमे आउतेउवाउवणस्सइबेइंदियसंजमे तेइंदियचउरिंदियसजमे पचेंदियसंजमे अजी वकायसजमे। दसविहे असंजमे पन्नत्ते तजहा पुढविकाइयअसजमे जाव अजीवकाइयअसंजमे। दसविहे

प गधप्रते देतोहवो २। मनोज्ञशब्द फर्श रस रूप गध प्रते परिहरे छे ३। अमनोज्ञ सुझने शब्द फर्श यावत् गध प्रते दीये छे ४। मनोज्ञ माहरा शब्द अपहरतो हवो अपहरेछे अपहरसे ७। अमनोज्ञ मुझप्रते शब्द यावत् देतोहवो देछे देसे ८। मनोज्ञ अमनोज्ञ मुझने शब्द यावत् अपहस्या अ पहरेछे अपहरसे देदेयेछे देसे ९। हु आचार्य उपाध्यायने सम्यक् वर्त्तूंछु विनयकरूछु पणि मुझने आचार्य उपाध्याय विपरीतपणे पडिवज्याछे ॥ १०॥ दशप्रकारे संयमकह्यु तेकहैछे पृथ्वीकाय सजम १। अप २। तेउ ३। वाउ ४। वनस्पती ५। बेइंद्रियसंजम ६। तेंद्रीसंयम ७। चउरिंद्रियसं जम ८। पंचेंद्रीसजम ९। अजीवकायसजम १०॥ दसप्रकारे असंयम कह्यो तेकहैछे पृथ्वीकाय असयम यावत् अजीवकायअसयम॥ दशप्रकारे सवर

मरणसंवरो ऽसंवृतोपकरणापेक्षया सूच्याः कुशाग्रस्य च शरीरोपघातकत्वात् संवरणं संगोपनं सूचीकुशाग्रसंवर एतदुपलक्षणत्वात् सामस्त्यो पकरणोपकरणापेक्षो द्रष्टव्य इत्येषां विपर्ययेण दश असंवरा इत्याह असंवरेत्यादि निगदसिद्धं ॥ दशहीत्यादि व्यक्तं नवरं ॥ अहमंतीति ॥ अहमंतीत्युक्ति मनो जात्यादिमदस्थानैस्तो ऽस्मानो जात्यो ऽहमेव जात्यादिभिः उत्तमतया पर्युत्सवमति मानात् तस्याः जात्यादिगुणेति अहं अति अतिशयेनाहमिति हीनेन ॥ थंभेज्जत्ति ॥ स्तम्भीयात् स्तब्धो भवेत् मानोद्धतशीर्षः जातिमदेन कुलमदेन बलमदेन रूपमदेन तपोमदेन श्रुतमदेन लाभमदेन ऐश्वर्यमदेनेति तथा ॥ नागसुवर्णा ति ॥ नागकुमाराः सुपर्णकुमाराश्च मां अन्तिकं मे मम अन्तिकं समीपं ॥ हव्वं ॥ शीघ्रं आगच्छन्तीति पुरुषाणां प्राकृतपुरुषाणां धर्मो ज्ञानपरिच्छेदा स्वभावातिशयात्मा उत्तरः प्रधानः सर्वोत्तरिकः ॥ अहोवहियत्ति ॥ नियतक्षेत्रविषयो ऽवधि स्वरूप ज्ञानदर्शनं प्रतीतमिति छद्मस्थानिवारणः समाधिरि

संवरे पण्णत्ते तंजहा सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे । मणवइकायउवगरणसंवरे सूईकुसग्गसंवरे । दसविहे असंवरे पण्णत्ते तंजहा सोइंदियअसंवरे जाव सूईकुसग्गअसंवरे । दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभेज्जा तंजहा जाइमएणवा कुलमएणवा जाव इस्सरियमएणवा नागसुवन्नावा मे अंतिअं हव्वमागच्छंति पुरिस

कह्यो ते कहेछे श्रोतेंद्रीसंवर यावत् फरसनेंद्री संवर मन वचन काया उपकरण संवर सोइकुशाग्रनो संवर शरीर घातमाटे दशप्रकारे असंवर कह्यो तेकहेछे श्रोतेंद्री असंवर १ । यावत् सूचीकुशाग्रनो असंवर १० ॥ दशथानके हूंज अधिकछुं एम मद करे ते कहेछे जातिमदे करी कुलमदे करी याव त् ऐश्वर्यने मदेकरी ८ । नागदेवता सुवर्णदेवता माहरे पासे आवे पुरुषनो धर्म जे ज्ञान तेथकी मुझने उत्कृष्ट अवधिज्ञान दर्शन उपनुंछे ॥ द

ति तत्सूत्र मेतद्विपच्चो ऽसमाधिरिति तत्सूत्र समाधीतरयो राश्रयः प्रव्रज्येति तत्सूत्र प्रव्रज्यावतश्च श्रमणधर्म स्तद्विशेषश्च वैयावृत्त्यमिति तत्सूत्रे जीवधर्मा ॥
श्च तद्वति जीवपरिणामसूत्र मेतद्विलचणत्वा च्चा जीवपरिणामसूत्र सुगमानि चैतानि नवरं ॥ समाहित्ति ॥ समाधानं समाधिः समता सामान्यतो रा
गाद्यभावइत्यर्थः सचो पाधिभेदा द्दशधेति ॥ छंदागाहा ॥ छंदत्ति ॥ छंदात् स्वकीया दभिप्रायविशेषा द्गोविन्दवाचकस्येव सुन्दरीनन्दस्येव वा परकीया
द्वा भ्रातृवशभवदत्तस्येव यासा ॥ छंदरोसायत्ति ॥ रोषात् शिवभूतेरिव या सा रोषा ॥ परिजुणत्ति ॥ परिद्यूना द्दारिद्र्यात्काष्ठाहारकस्येव या सा प

धम्माउवा मे उत्तरिए अहोवहिए नाणदंसणे समुप्पन्ने । दसविहा समाही पन्नत्ता तंजहा पाणाइवायवेर
मणे मुसाअदिन्नामेहुणपरिग्गहवेरमणे ईरियासमिईए भासासमिईए एसणासमिए आयाणउच्चारपासवण
खेलसिंघाणगपारिठावणियासमिए । दसविहा असमाही पन्नत्ता पाणाइवाए जाव परिग्गहे रियाअसमिई
जाव उच्चारपासवणखेलसिंघाणगपारिठावणियाअसमिई । दसविहा पव्वज्जा पन्नत्ता तंजहा छंदारोसापरिजु

दशप्रकारे समाधि कही तेकहेंछे प्राणातिपातवेरमण १ । मृषा २ । अदत्तादान ३ । मैथुन ४ । परिग्रहविरमण ५ । ईर्यासमिति ६ । भाषासमिति ७ । ॥
एषणासमिति ८ । आदाननिक्षेपणा समिति ९ । वडीनीति लघुनीति श्लेष्मा नाकनो मल ते परठववानी समिति १० ॥ दशप्रकारे असमाधि कही ते
कहेंछे प्राणातिपात यावत् परिग्रह ईर्यासमिति १ । यावत् उच्चारपासवण खेलसिंघाण परठववानी समिति एहवा १० ॥ दशप्रकारे प्रव्रज्या कही
तेकहेंछे लाजे दीक्षा भवदत्त रोषथी शिवभूतिवत् दरिद्रथकी स्वप्नथकी पुष्पचूलावत् प्रतिज्ञाथीलेईस इमकह्याथी संज्ञास्यांथी माळल्पोभव मल्ली

॥ टीका ॥

रिधूना ॥ सुविणेत्ति ॥ स्वप्नात् पुष्पचूलायाइव या स्वप्नेवा या प्रतिपद्यते सा स्वप्ना ॥ पडिसुयाचेवत्ति ॥ प्रतिश्रुतात् प्रतिज्ञाता यासा प्रतिश्रुता शालिभ द्रभगिनीपतिधन्यकस्येव ॥ सारिणियत्ति ॥ सारणा या सा सारणिका मल्लिनाथस्मारितजन्मान्तराणा प्रतिवुद्ध्यादिराजानामिव ॥ रोगिणियत्ति ॥ रोग आलम्बनतया विद्यते यस्या सा रोगिणी सैवरोगिणिका सनत्कुमारस्येव ॥ अणाढियत्ति ॥ अनादृता दनादरा या सा अनादृता नन्दिषेणस्येव अनादृत स्यवा शिथिलस्य या सा तथा ॥ देवसन्नइत्ति ॥ देवसज्ञप्ते देवप्रतिबोधना या सा तथा मेतार्यादेरिवेति ॥ वत्थाणुबधीयत्ति गाथातिरिक्तं वत्स पुत्र स्तद नुबन्धो यस्या मस्ति सा वत्सानुबन्धिका वैरस्वामिमातुरिवेति श्रमणधर्मो व्याख्यातएव नवर ॥ वियाएत्ति ॥ त्यागो दानधर्मइति व्यावृतो व्यापृतोवा व्यापार स्तत्कर्म वैयावृत्त्यंवा भक्तपानादिभि रुपष्टम्भइत्यर्थः ॥ साहमियत्ति ॥ समानोधर्म सधर्मस्तेन चरतीति साधर्मिकाः साधवइति ॥ परिणामेत्यादि ॥

॥ मूल ॥

न्नासुविणापडिस्सुयाचेव सारणियारोगिणिया ऋणाढियादेवसन्नत्ती ॥७॥ वच्छानुबंधिया ॥ दसविहे समण धम्मे पन्नत्ते तंजहा खती मुत्ती ऋज्जवे मद्दवे लाघवे सच्चे सजमे तवे वियाए बंभचेरवासे। दसविहे वेयावच्चे पन्नत्ते तजहा ऋायरियवेयावच्चे उवज्झायवेयावच्चे थेरवेयावच्चे तवस्सिवेयावच्चे गिलाणवेयावच्चे सेहवेयावच्चे

॥ भाषा ॥

नाथे जन्मातरसंज्ञास्याथी ६। राजा दीक्षालीधी रोगथी सनत्कुमारवत् अनादरथी नदिषेणवसुदेवजीव देवताना प्रतिबोधथी मेतार्यवत् वत्सपुत्रा दिसबधथी वैरस्वामीनीमाता। दशप्रकारे साधूनो धर्म कह्यो तेकहेछे क्षमा १। निर्लोभता २। आर्जव भद्रक ३। मार्दव मानरहित ४। लाघव हलकाई ५। सत्य ६। सजम ७। तप ८। द्रव्यरहित ९। ब्रह्मचर्य १०॥ दशप्रकारे वेयावच कह्यो तेकहेछे आचार्यनु वेयावच १। उपाध्यायनु वेयावच २। थ

परिणमन परिणाम स्तत्तद्भावगमनमित्यर्थः यदाह परिणामोह्यर्थान्तर गमनंनचसर्वथाव्यवस्थानं नचसर्वथाविनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टः ॥ १ ॥ द्रव्यार्थनयस्येति सत्पर्ययेण नाशः प्रादुर्भावो ऽसताच पर्ययतो द्रव्याणां परिणामः प्रोक्त' खलु पर्ययनयस्येति जीवस्य परिणामइति विग्रहः सच प्रायोगिक स्तत्र गतिरेव परिणामो गतिपरिणाम एव सर्वत्र गतिश्चेह गतिनामकर्मोदया न्नारकादिव्यपदेशहेतु स्तत्परिणामश्च भवक्षयादिति सच नरकगत्यादि श्चतुर्विधो गतिपरिणामे च सत्ये वेन्द्रियपरिणामो भवति तमाह ॥ इंदियपरिणामेत्ति ॥ सच श्रोत्रादिभेदा त्पचधेति इन्द्रियपरिणतौ चेष्टानिष्टविषयसबधाद्रागद्वेषपरिणतिरिति तदनन्तर कषायपरिणाम उक्तः सच क्रोधादिभेदा च्चतुर्विधः कषायपरिणामेच सति लेश्यापरिणति नंतुलेश्यापरिणतौ कषायपरिणति यैनक्षीणकषायस्यापि शुक्ललेश्यापरिणति र्देशोनपूर्वकोटी याव द्भवति यत उक्त मुहुत्तद्धंतुजहन्ना उक्कोसाहोइपुव्वकोडीओ नवहिवरिसेहिऊणा णायव्वासुक्कलेसाएत्ति ॥ १ ॥ अतोलेश्यापरिणाम उक्त' सच कृष्णादिभेदात् षोढेति अयच्च योगपरिणामेसति भवति यस्मा न्निरुद्धयोगस्य लेश्यापरिणामो नेति यत समुच्छिन्नक्रिय ध्यान मलेश्यस्य भवतीति लेश्यापरिणामानन्तर योगपरिणाम उक्तः सच मनोवाक्कायभेदा त्त्रिधेति ससारिणांच योगप

कुलवेयावच्चे गणवेयावच्चे सघवेयावच्चे साहम्मियवेयावच्चे । दसविहे जीवपरिणामे प० तंजहा गइपरिणामे इंदियपरिणामे कसायपरिणामे लेस्सापरिणामे जोगपरिणामे उवओगपरिणामे नाणपरिणामे दंसणपरिणामे

विरनु वेयावच ३ । तपस्वीनु वेयावच ४ । ग्लाननुं वेयावच ५ । शिष्यनुं वेयावच ६ । कुलनु वेयावच ७ । गच्छनुं वेयावच ८ । संघनुं वेयावच ९ । साधर्मीनु वेयावच १० ॥ दशप्रकारे जीवनो परिणाम कह्यो तेकहैछे जीवपरिणाम १ । गतिपरिणाम चाले २ । इद्रियपरिणाम ३ । लेश्या ४ । योग ५ । उप

रिणतो उपयोगपरिणति र्भवतीति तदनन्तरंउपयोगपरिणाम उक्तः सच साकारानाकारभेदात् द्विधा सतिचो पयोगपरिणामे ज्ञानपरिणामो ऽत स्तदन न्तर मसा वुक्तः सचा भिनिर्बोधिकादिभेदा त्पञ्चधा तथा मिथ्यादृष्टे र्ज्ञान मप्यज्ञानपरिणामो मत्यज्ञानश्रुताज्ञानविभङ्गज्ञानलक्षण स्त्रिविधोपि विशेष ग्रहणसाधर्म्यात् ज्ञानपरिणामग्रहणेन गृहीतो द्रष्टव्य इति ज्ञानाज्ञानपरिणामेच सति सम्यक्त्वादिपरिणतिरिति ततो दर्शनपरिणामउक्तः सच त्रिधा स म्यक्त्वमिथ्यात्वमिश्रभेदात् सम्यक्त्वे सतिचारित्रमिति तत श्चारित्रपरिणाम उक्तः सच सामायिकादिभेदा त्पञ्चधेति स्त्र्यादिवेदपरिणामे चारित्रपरिणामो न तु परिणामे वेदपरिणति र्यस्मादवेदकस्यापि यथाख्यातचारित्रपरिणति र्दृष्टेति चारित्रपरिणामानन्तरं वेदपरिणाम उक्तः सच स्त्र्यादिभेदात् त्रिधेति ॥ अजीवेत्यादि ॥ अजीवाना पुद्गलानां परिणामो जीवपरिणामस्तत्र बन्धन पुद्गलाना परस्परं सम्बन्धः संश्लेषइत्यर्थः सएव परिणामो बन्धनपरिणामएवं सर्वत्र बन्धनपरिणामलक्षणं चैतत् समणिद्धयाएबधो नहोइसमलुक्खयायपिनहोइ वेमायनिद्धलुक्ख त्तणेणबधोउखधाण ॥ १ ॥ एतदुक्तंभवति ॥ समगुण स्निग्धस्य समगुणस्निग्धेन परमाण्वादिना बधो नभवति समगुणरूक्षस्यापि समगुणरूक्षेणेति यदा विषममात्रा तदा भवति बन्धो विषममात्रानिरूपणा र्थं मुच्यते निद्धस्सनिद्धेणदुयाहियेण लुक्खस्सलुक्खेणदुयाहियेण निद्धस्सलुक्खेणउवेइबंधो जहन्नवज्जोविसमोसमोवेत्ति ॥ १ ॥ गतिपरिणामो द्विविधः स्पृश द्गतिपरिणाम इतरश तत्राद्यो येन प्रयत्नविशेषात् क्षेत्रप्रदेशान् स्पृशन् गच्छति द्वितीयस्तु येना स्पृशन्नेव तान् गच्छति नचायं न सभाव्यते गतिमद्द्रव्याणां

चरित्तपरिणामे वेदपरिणामे । दसविहे अजीवपरिणामे पण्णत्ते तंजहा बंधणपरिणामे गइयपरिणामे ठाण

योग ६। ज्ञान ७। दर्शन ८। चारित्र ९। वेदपरिणाम १०॥ दशप्रकारे अजीवपरिणाम कह्यो तेकहेछे बंधनपरिणाम १। गति २। संस्थान ३। भेद ४।

पयतभेदोपलब्धे स्तया ह्यभ्रंकषहर्म्यतलगतविमुक्ताश्मपातकालभेद उपलभ्यते अनवरतगतिप्रवृत्तानाञ्च देशान्तरप्राप्तिः कालभेदश्चेत्यतः सभाव्यते अस्त्यग्रद्गति परिणामद्गति अथवा दीर्घ ह्रस्वभेदात् द्विविधोयमिति सस्थानपरिणामः परिमण्डलवृत्तत्र्यस्रचतुरस्रायतभेदा त्पचविधो भेदपरिणाम. पचधा तत्रखडभेद' चिप्तमृत्पिण्डस्येव १ प्रतरभेदो ऽभ्रपटलस्येव २ अनुतटभेदो वशस्येव ३ चूर्णभेद श्चूर्णन ४ उत्करिकाभेदः समुत्कीर्यमाणप्रस्थकस्येवेति वर्णपरिणाम पंचधा गन्धपरिणामो द्विधा रसपरिणाम' पचधा स्पर्श परिणामो ऽष्टधा न गुरुक मधोगमनस्वभावं न लघुक मूर्द्धगमनस्वभाव यत् द्रव्य तदगुरुकलघुकमत्यंतसूक्ष्म भाषा मनः कर्मद्रव्यादि तदेव परिणामः परिणामतद्वतो रभेदा दगुरुकलघुकपरिणाम एतद्ग्रहणेन तद्विपचोपि गृहीतो द्रष्टव्य स्तत्र गुरुकञ्च विवचया लघुकञ्च विवचयैव यद्द्रव्य त दगुरुकलघुक मौदारिकादिस्थूलतरमित्यर्थः इद मुक्तस्वरूप द्विविध वस्तु निश्चयनयमतेन व्यवहारतस्तु चतुर्द्धा तत्र गुरुक मधोगमनस्वभाव वज्रादि लघक मूर्द्धगमनस्वभाव धूमादि गुरुलघुक तिर्यग्गामि वायुज्योतिष्कविमानादि अगुरुलघुक माकाशादीनि आह च भाष्यकारः निच्छयओसव्वगुरु सव्वलहुवानविज्जईदव्व वायरमिहगुरुलहुय अगुरुलहुसेसयदव्व ॥ १ ॥ गुरुयलहुयउभय नोभयमितिवावहारियनयस्स दव्व लेट्ठु १ दीवो २ वाउ ३ वोम ४ जहासखति ॥ २ ॥ शब्दपरिणाम शुभाशुभभेदा द्विधेति अजीवपरिणामाधिकारात् पुद्गललचणाजीवपरिणाम मन्तरिचलचणा जीवपरिणामोपाधिक मस्वाध्यायिकव्यपदेश्य ॥ दसविहेत्यादिना ॥ सूत्रेणाह तत्र ॥ अतलिक्खएत्ति ॥ अतरिच माकाश तत्रभव मांतरिक्ष

परिणामे ७ वन्नरसपरिणामे गंधएफासपरिणामे अगरुयलहुयसद्दपरिणामे। दसविहे अंतलिक्खिए असज्झा

वर्ण ५। गध ६। रस ७। फरस ८। अगुरुलघू ९। शब्दपरिणाम १०॥ दशप्रकारे आकाशनी असिज्झाई कही ते कहेछे उल्कापात १। दिशिनादा

कं साध्यायो वाचनादि पंचविधो यथा सभव यस्मि न्नस्ति तत् स्वाध्यायिकं तदभावो ऽस्वाध्यायिकं तत्रो ल्काकाशजा तस्याः पात उल्कापात स्तथा दिशो दिशिवा दाहो दिग्दाह एदमुक्त भव त्येकतरदिग्विभागे महानगरप्रदीपनकमिव यउद्योतो भूमा वप्रतिष्ठितो गगनतलवर्त्ती स दिग्दाहइति गर्जित जीमूतध्वनि विद्यु त्तडिन्निर्घात. साभ्रे निरभ्रेवा गगने व्यन्तरकृतो महागर्जितध्वनिः ॥ जूयएत्ति ॥ सध्याप्रभा चन्द्रप्रभाच यत् युगपत् भवत स्तत् ॥ जूयगोत्ति ॥ भणित सध्याप्रभाचन्द्रप्रभयो र्मिश्रत्वमितिभावः तत्र चन्द्रप्रभावृता सध्या अपगच्छन्ती न ज्ञायते शुक्लपक्षप्र तिपदादिषु दिनेषु संध्याच्छेदे वा ज्ञायमाने कालवेला नजानन्त्यत स्त्रीणि दिनानि प्रादोषिक कालं न गृह्णन्ति ततः कालिकस्या स्वाध्यायः स्यादिति उल्कादीना चेदं स्वरूप दिसिदाहो छिन्नमूलो उक्कसरेहापयासजुत्तावा सझाछेयावरणो उजूयओसुक्कदिणतिणित्ति ॥ १ ॥ जक्खालित्तत्ति ॥ यक्षादीप्त माकाशे भवति एतेषु स्वाध्याय कुर्वता च्छद्रदेवताछलनाद्भवति धूमिका मिहिकाभेदो वर्णतो धूमिका धूम्राकारा धूमेत्यर्थः. मिहिका प्रतीता एतच्च द्वयमपि कार्त्तिकादिषु गर्भमासेषु भवति तच्च पतनानन्तरमेव सूक्ष्मत्वा त्सर्वमप्कायभावित करोतीति ॥ रयउग्घाएत्ति ॥ विस्रसापरिणामतः समता द्रेणुपतन रजउद्घातो भण्यते अस्वाध्यायाधिकारा देवेदमाह ॥ दसविहे ओरालिएइत्यादि ॥ औदारिकस्य मनुष्यतिर्यक्शरीरस्ये दमौदारिक मस्वाध्यायिकं तत्रा स्थिमासशोणितानि प्रतीता

इए पण्णत्ते तंजहा उक्कावाए दिसिदाहे गज्जिए विज्जुए निग्घाए जूयए जक्खालित्तए धूमिए महिया रज्जुग्घाए । दसविहे उरालिए असज्झाइए पण्णत्ते तजहा अट्ठि मसे सोणिए असुइसामतं मसाणसामत चंदोवराए

ह २ । गाज ३ । वीज ४ । निर्घात ५ । सध्याकाल ६ । यक्षालिप्त आकाशदेवता आकाशे ७ । धूअरोदीसे ८ । धूअरि ९ । रजोवृष्टि थाते १० ॥ दशप्र

नि तत्र च पचेन्द्रियतिरिश्चा मस्वाध्यायिकं द्रव्यतो ऽस्थिमांसशोणितानि ग्रथान्तरे चर्माप्यधीयते यदाह सोणियमंसंचम्मं अट्ठीवियहोंतिचत्तारित्ति ॥ चेत्रतः षष्टि हस्ताभ्यन्तरे कालत. सम्भवकालाद्यावत् तृतीयापौरुषी मार्जारादिभि र्मूषकादिव्यापादने अहोरात्रचेति भावतः सूत्र नन्द्यादिक ना ध्येतव्य मिति मनुष्यसवध्यप्येवमेव नवरं चेत्रतो हस्तशतमध्ये कालतो ऽहोरात्र यावत् आर्त्तव दिनत्रयं स्त्रीजन्मनि दिनाष्टकं पुरुषजन्मनि दिनसप्तक मस्थीनि तु जीवविमोचदिना दारभ्य हस्तशताभ्यन्तरस्थितानि द्वादशवर्षाणि याव दस्वाध्यायिक भवति चिताग्निनादग्धा न्युदकवाहेनवा व्यूढा न्यस्वाध्यायिकंनभ वति भूमिनिखाता न्यस्वाध्यायिकमिति तथा अशुची न्यमेध्यानि मूत्रपुरीषादीनि तेषां सामन्तं समीप अशुचिसामन्त मस्वाध्यायिक भ्भवति उक्तञ्च काल ग्रहणमाश्रित्य सोणियमुत्तपुरीसे घाणालोयपरिहरेज्जत्ति ॥ श्मशान सामन्तं शवस्थानसमीप चन्द्रस्य चन्द्रविमानस्यो परागो राहुविमानतेनसोपरं जन चन्द्रोपरागो ग्रहणमित्यर्थः एव सूरोपरागोपि इहचेद् कालमानं यदि चन्द्रः सूर्योवा ग्रहणेसति स ग्रहो ऽन्यथावा निमज्जति तदा ग्रहणकालं तद्रा त्रिशेष तदहोरात्रशेषञ्च ततः पर महोरात्रञ्च वर्जयन्ति आहच चदिमसूरुवरागे निग्घाएगुजिएअहोरत्तंत्ति ॥ आचरितन्तु यदि तत्रैव रात्रौ दिनेवा मुक्त स्तदा चन्द्रग्रहणे तस्याएव रात्रेः शेष परिहरन्ति सूर्यग्रहणेतु तद्दिनशेष परिहृत्या नन्तरं रात्रिमपि परिहरन्तीति आहच आइन्नंदिणमुक्को सोच्चि यदिवसोवराईवत्ति ॥ चन्द्रसूर्योपरागयो श्चौदारिकत्वं तद्विमानपृथिवीकायिकापेचया वसेय मातरिच्चकत्वतु सदपि नविवचित मांतरिच्चकत्वेनो क्तोस्य

सूरोवराए पडणे रायवुग्गहे उवस्सयस्सअ्तो उरालिए सरीरे पचिंदियाणं जीवाणं असमारम्भमाणस्स दस

कारे औदारिकशरीरनी असिज्झाई कही तेकहेछे हाड १। मास २। लोही ३। मलमूत्रनो समीप स्मशाननो समीप चंद्रग्रहण सूर्यनु ग्रहण राजा

शाकाशिकेभ्य उल्कादिभ्य श्चन्द्रादिविमानानां शाश्वतत्वेन विलक्षणत्वादिति ॥ पडणेत्ति ॥ पतनं मरणं राजामात्यसेनापतिग्रामभोगिकादीनां तत्र यदा दण्डिकः कालगतो भवति राजा वान्यो यावन्न भवति तदा सभये निर्भये वा स्वाध्यायं वर्जयन्ति निर्भयश्रवणानन्तरमप्यहोरात्रं वर्जयन्तीति ग्राममहत्तरेऽधिकारनियुक्ते बहुस्वजने वा शय्यातरे वा पुरुषान्तरे वा सप्तगृहाभ्यन्तरे मृते अहोरात्रं स्वाध्यायं वर्जयन्तीति शनैर्वा पठन्ति निर्दुःखा एव इति गर्हा लोको मा कार्षीदिति आह च मयहरपगएबहुप खिअएवसत्तघरअंतरमयम्मि निद्दुक्खत्तियगरहा नपढंतिसणीयगं वावित्ति ॥ १ ॥ तथा ॥ रायवुग्गहेत्ति ॥ राज्ञां संग्राम उपलक्षणत्वात्सेनापतिग्रामभोगिकमहत्तरपुरुषस्त्रीमल्लयुद्धान्यस्वाध्यायिकं एव पांशुपिष्टादिभण्डनान्यपि यत एते प्रायो व्यन्तरबहुला स्तेषु प्रमत्तं देवता छलयेत् निर्दुःखा एते इत्युड्डाहो वा ऽप्रीतिकं वा भवेदित्यतो यद्विग्रहादिकं यच्चिरकालं यस्मिन् क्षेत्रे भवति तत्र विग्रहादिके तावत्कालं तत्र क्षेत्रे स्वाध्यायं परिहरन्तीति उक्तञ्च सेणाहिवभोइयमयहरपुंसित्थिमल्लजुद्धे य लोट्टाइभंडणे वा गुज्झगउड्डाहमवियत्तंति ॥ १ ॥ तथो पाश्रयस्य वसतेरन्तर्मध्ये वर्त्तमानमौदारिकं मनुष्यादिसत्कं शरीरकं यदाच्छिन्नं भवति तदा हस्तशताभ्यन्तरे स्वाध्यायिकं भवति अथ नुच्छिन्नं तथापि कुत्सितत्वादाचरितत्वाच्च हस्तगतं वर्ज्यते परिष्ठापिते तु तत्र तत्स्थानं शुद्धं भवतीति पञ्चेन्द्रियशरीरमस्वाध्यायिकमित्यनन्तरमुक्तमिति पञ्चेन्द्रियाधिकारात्तदाश्रितसंयमासंयमसूत्रे गतार्थे संयमाधिकारात्तद्विषयभूतानि सूक्ष्माणि प्ररूपयन्नाह ॥ दससुहुमेत्यादि ॥ प्राणसूक्ष्ममनुद्धरिकुन्थुः पनकसूक्ष्मं पुल्ली यावत्ला

विहे संजमे कज्जइ तंजहा सोयामयाओ सुक्खाओ अववरोवित्ता भवइ सोयामएणं दुक्खेणं असंजोइत्ता भवइ

दिमरणे राजानो संग्राम उपाश्रयमांहि औदारिकशरीर जीवरहित ॥ पचेंद्रीजीवनो समारंभ नकरे ते दशप्रकारे संयम करें तेकहेछे काननासुखथी

रणा दिदं द्रष्टव्यं वीजसूक्ष्म व्रीह्यादीनां नखिका हरितसूक्ष्म भूमिसमवर्णतृण पुष्पसूक्ष्म वटादिपुष्पाणि अंडसूक्ष्म कीटिकाद्यण्डका निलयनसूक्ष्म कीटिका नगरादि स्नेहसूक्ष्म अवश्यायादी त्यष्टस्थानकभणित मेवेद मपर गणितसूक्ष्म गणितंकीटिकासङ्कलनादि तदेवसूक्ष्म सूक्ष्मबुद्धिगम्यत्वात् श्रूयतेच वज्रांत गणितमिति भगसूक्ष्म भङ्गा भङ्गका वस्तुविकल्पा स्तेचद्विधा स्थानभङ्गका: क्रमभङ्गकाश्च तत्रा द्या यथा द्रव्यतो नामैका हिंसा न भावत: १ अन्याभावतो न द्रव्यतश्च अन्यानभावतो नापि द्रव्यतइति ४ इतरेतु द्रव्यतो हिंसाभावतश्च १ द्रव्यतो ऽन्यानभावत: २ न द्रव्यतो न्याभावत: १ अन्या न द्रव्यतो न भावतइति तल्लक्षण सूक्ष्म भङ्गसूक्ष्म मूक्ष्मता चास्य भजनीयपदबहुत्वे गहनभावेन सूक्ष्मबुद्धिगम्यत्वादिति पूर्वंगणितसूक्ष्ममुक्तमिति तद्विषयविशेषभूतं प्रकृता ध्ययनावतारितया ॥ जबूद्दीवेत्यादि ॥ गङ्गासूत्रादिक कुंडलसूत्रावसान चेत्प्रकरणमाह करण्य चेद नवर गगां समुपयाति दृशानामाद्या: पच इतरा. सि

एवं जाव फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ । एवं असंजमोवि भाणियव्वो दससुहुमा पण्णत्ता तंजहा पाणसुहुमे पणगसुहुमे जाव सिणेहसुहुमे गणियसुहुमे भगसुहुमे । जंबूमंदरदाहिणेणं गगासिंधूओ महा णईओ दसमहाणईओ समप्पिंति तजहा जउणा सरऊ आदी कोसी मही सयदू विवच्छा विभासा एरावई

अलगो नकरे श्रोत्रेद्रीना दुखथी जोडें नही इम यावत् फरसनेद्रीना दुखथी जोडे नही॥इम असंयम पणि जांणवो ॥ दश सूक्ष्म कह्या तेकहेछे प्राण सूक्ष्म १ । पनकसूक्ष्म २ । यावत् स्नेहसूक्ष्म ३ । गणितसूक्ष्म वज्रातलगे गणितछे भंगसूक्ष्म भंगजालसूक्ष्मछे ॥ जबूद्वीपे मेरुथी दक्षिणें गगासिधु मो टी-नदी प्रते दश मोटीनदी भलेछे तेकहेछे जतु १ । सरजू २ । आदी ३ । कोशी ४ । मही ५ । सतद्रू ६ । वितस्ता ७ । विवासा ८ । ऐरावती ९ ।

न्धुमिति एवं रक्तासूत्रमपि नवरं यावत्करणात् ॥ इंदसेणावारिसेणत्ति ॥ द्रष्टव्यमिति ॥ रायहाणीओत्ति ॥ राजा धीयते विधीयते ऽभिषिच्यते यासु ता राजधान्यो जनपदानां मध्ये प्रधाननगर्यः ॥ चंपागाहा ॥ चपानगरी अंगजनपदेषु मथुरा सूरसेनदेशे वाराणसी काश्यां श्रावस्ती कुणालायां साकेत मयो ध्येत्यर्थः कोशलेषु जनपदेषु ॥ हत्थिणपुरंति ॥ नागपुरं कुरुजनपदे काम्पिल्य पंचालेषु मिथिला विदेहेषु कौशांबी वत्सेषु राजगृहं मगधेष्विति एतासु किल साधव उत्सर्गतो नप्रविशन्ति तरुणरमणीयपण्यरमण्यादिदर्शनेन मनःक्षोभादिसम्भवा न्मासस्यात र्द्धिस्त्रिर्वा प्रविशतां त्वाज्ञादयो दोषा इति एताश्च दश दशस्थानकानुसारेणा भिहिता ननदशैवैता अर्धषड्विंशता वार्यजनपदेषु षड्विंशते र्नगरीणा मुक्तत्वादिति अयश्च न्यायो ऽत्रग्रंथेतेषु प्रायश्चित्तादिविचारेषु प्रसिद्धएवेति व्याख्यातश्च दशराजधानीग्रहणे शेषाणामपि ग्रहणं निशीथभाष्ये यदाह दसरायहाणिगहणा सेसाणंसूयणाकया

चंदभागा । जंबूमंदरउत्तरेणं रत्तारत्तवईउ महाणईउ दसमहाणईउ समप्पेंति तजहा किण्हा महाकिण्हा नीला महानीला तारा महातारा इंदा जाव महाभागा । जबूद्दीवेदीवे भरहेवासे दस रायहाणीउ पण्णत्ताउ तंजहा चपामहुरावाणा रसीयसावत्थितहयसाएयं हत्थिणपुरकपिल्ल महिलाकोसंबिरायगिह ॥ १ ॥ एयासुण दससु

चंद्रभागा १० ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरें रक्ता रक्तवती मोटीनदीप्रतें दश मोटीनदी भलेछे ते कहेछे कृष्णा १ । महाकृष्णा २ । नीला ३ । महानी ला ४ । नीरा ५ । महानीरा ६ । इंद्रा ७ । यावत् भोगा १० ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे दश राजधानी कही ते कहेछे चपा १ । मथुरा २ । वाणारसी ३ । सावत्थी ४ । तिम साकेता ५ । हस्तिनागपुर ६ । कपिलपुर ७ । मिथिला ८ । कोशबी ९ । राजगृह १० ॥ ए दश राजधानीने विषें दश राजा मुं

होइ मासस्संतोदुगतिग ताओअइतम्मिआणाई ॥ १ ॥ दोषाखेह तरुणावेसित्थिविवा हरायमाइंकुहोइसइकरणं आउज्जगोयसद्दे इत्थीसद्दियसवियारेत्ति ॥ एतास्विति अनन्तरोदितासु दश स्वार्यनगरीषु मध्ये ऽन्यतरासु कासुचि दशराजान श्चक्रवर्त्तिन' प्रव्रजिता इत्येव दशस्थानके ऽवतार स्तेषा कृतः होच सुभूमब्रह्मदत्ताभिधानौ न प्रव्रजितौ नरकंच गताविति तत्र भरतसगरौ प्रथमद्वितीयौ चक्रवर्त्तिराजौ साकेते नगरे विनीता योध्यापर्याये जातौ प्रव्रजि तौच मघवान् श्रावस्त्या सनत्कुमाराढय श्चत्वारो हस्तिनागपुरे महापद्मो वाराणस्या हरिषेण' कापिल्ये जयनामा राजगृहइति नचैतासु नगरीषु क्रमेणै ते राजानो व्याख्येया ग्रन्थविरोधा दुक्तच जम्मणविणीअउज्झा सावत्थीपंचहत्थिणपुरंमि वाणारसिकंपिल्ले रायगिहेचेवकंपिल्लेत्ति ॥ १ ॥ अप्रव्र जितचक्रवर्त्तिनौतु हस्तिनागपुरकांपिल्ययो रुत्पन्नाविति येचयत्रो त्पन्ना स्तेतत्रैव प्रव्रजिताइति इद मावश्यकप्रायेण व्याख्यात निशीथभाष्याभिप्रायेण तुदश स्वेतास् नगरीषु द्वादशचक्रिणो जाता स्तत्र नव स्वेकैक' एकस्यातुत्रयइति आहच चपामहुरावाणा रसीयसावत्थिमेवसाकेयं हत्थिणपुरकपिल्लं मिहिलाकोसंबिरायगिह ॥ १ ॥ संतीकुथूयअरो तिन्निविजिणचक्किएक्कर्णहिजाया तेणदसहोंतिजत्थव केसवजायाजणाइन्नत्ति ॥ २ ॥ मंदरो मेरुः ॥ उव्वे

रायहाणीसु दस रायाणो मुंडाभवित्ता जाव पव्वइया तंजहा भरहे सगरे मघवंसणंकुमारे संती कुंथू अरे महापउमे हरिसेणे जयनामे। जंबूद्दीवेदीवे मंदरेपव्वए दसजोयणसयाइ उव्वेहेणं धरणीतले दसजोयणसहस्साइं

मुंडथई यावत् प्रव्रज्या दीक्षा लीधी ते कहेछे भरत १। सगर २। मघवा ३ ॥ सनत्कुमार ४ ॥ शांतिनाथ ५ ॥ कुंथुनाथ ६ ॥ अर ७ ॥ महापद्म ८ ॥ हरिषेण ९ ॥ जयनाम १० ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वत दशसेयोजन ऊंडो धरतीनेविषे दशहज्जारयोजन पिहुलो उपरे दश दश गुणा योजन हजार एत

हेर्गांति ॥ भूमा ववगाहतो विष्कभेन पृथुत्वेन उपरि पण्डकवनप्रदेशे दशशतानि सहस्रमित्यर्थ. दशदशकानि शतमित्यर्थः केषां योजनसहस्राणां लक्ष मित्यर्थं ईहृशोच भणिति दंशस्थानकानुरोधात् सर्वाग्रेण सर्वपरिमाणतइति ॥ उवरिमहेठ्ठिल्लेसुत्ति ॥ उपरितनाधस्तनयोः क्षुल्लकप्रतरयोः सर्वेषामध्ये त यो रेव लघुत्वात्तयो २४ कपरिच प्रदेशोत्तरहडा वर्द्धमानतरत्वाल्लोकस्येति ॥ अठ्ठपएसिएत्ति ॥ अष्टौ प्रदेशा यस्मि न्नित्यष्टप्रदेशिक स्वार्थिकप्रत्ययविधा नादिति तत्र चोपरितने प्रतरे चत्वार प्रदेशा गोस्तनव दितरस्यापिच त्वार स्तथैवेति ॥ इमाओत्ति ॥ वक्ष्यमाणा ॥ दसत्ति ॥ चतस्रो द्विप्रदेशादयो द्युत्त राः शकटो दिस स्थाना महादिश स्वतस्रएवै कप्रदेशादयो ऽनुत्तरा मुक्तावलीकल्पा. प्रदेशा विदिश स्तथा द्वे चतुः प्रदेशादिके अनुत्तरे ऊर्द्धाधोदिशावि ति ॥ पवहतित्ति ॥ प्रवहति प्रभवन्तीत्यर्थः ॥ इटागाहा ॥ इन्द्रो देवता यस्याः सा ऐंद्री एव माग्नेयी याम्येत्यादि विमला त्रितिमिरत्वा दूर्द्धदिशो नामधेय

विक्खंभेण उवरिं दसजोयणसयाइ विक्खंभेण दसदसाइ जोयणसहस्साइ सव्वग्गेणं पन्नत्ता । जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु एत्थण अ ठपएसिए रुयगे प० जओणं इमाउ दसदिसाउ पवहति तं० पुरच्छिमा पुरच्छिमदाहिणा दाहिणा दाहिणाप च्चत्थिमा पच्चत्थिमा पच्चत्थिमुत्तरा उत्तरा उत्तरपुरच्छिमा उढ्ढा अहो । एएसिणं दस नामधिज्जा प० तं० इंदा

ले लाख सर्वागे ऊंचो कह्यो ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वते बहुमध्यदेशभागे आ रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे उपरि हेठले नाहना प्रतरनेविषे इहां आठ प्रदेश नो रुचक कह्यो तेकहेछे जिहांथी आ दशदिशा नीकलीछे तेकहेछे पूर्व १ ॥ पूर्वदक्षिणे अगनि २ ॥ दक्षिण ३ ॥ दक्षिणपश्चिमे नैऋति ४ ॥ पश्चि

तमा अंधकारयुक्तत्वेन रात्रितुल्यत्वा दशोदिग्रखेति ॥ लवणेत्यादि ॥ गवां तीर्थं तडागादा ववतारमार्गो गोतीर्थं ततो गोतीर्थमिव गोतीर्थं मवतारवती भूमि स्तद्विरहित समभिलत्यर्थ एतच्च पचनवतियोजनसहस्राणय र्वाग्भागत परभागतश्च गोतीर्थरूपां भूमि विहाय मध्ये भवतीति उदकमाला उदकशिखा वेलेत्यर्थ दशयोजनसहस्राणि विष्कम्भत उच्चैस्त्वेनतु षोडशसहस्राणीति समुद्रमध्यभागा देवोत्थितेति ॥ सव्वेवीत्यादि ॥ सर्व्वेपीति पूर्वादिदिक्षुतद्भावा च्चत्वार वोपि महापातालाः पातालकलशा वलयामुखकेगूरयूपकेश्वरनामान चतु स्थानकाभिहिता. क्षुल्लकपातालकलशव्यवच्छेदार्थंमहाग्रहण दशदशकानि शतं

अग्गेइजमा णेरईवारुणीयवायव्वा सोमाईसाणावि विमलायतमायवोधव्वा । १ । लवणस्सण समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविरहिए खित्ते पन्नत्ते लवणस्सण समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं उदगमाले पन्नत्ते सव्वेविण महापायाला दसदसाइं जोयणसहस्साइं उव्वेहेण पन्नत्ता । मूले दसजोयणसहस्साइं विक्खम्भेणं पन्नत्ता । बहुमज्झदेसभाए एगपएसियाए सेढीए दसदसाइं जोयणसहस्साइं विक्खम्भेण पन्नत्ता उवरिमुहमूले

म ५ ॥ पश्चिमउत्तरे वायु ६ ॥ उत्तर ७ ॥ उत्तरपूर्व ईशान ८ ॥ ऊर्द्ध ९ ॥ अधो १० ॥ ए दशदिशना दशनाम कह्या ते कहेछे इंद्रा १ ॥ अगनि २ ॥ यमा ३ ॥ नैऋति ४ ॥ वारुणी ५ ॥ वायव्या ६ ॥ सोमा ७ ॥ ईशान ८ ॥ विमला ९ ॥ तमा १० ॥ जाणवी ॥ १ ॥ लवणसमुद्रने दशहज्जार योजन गोतीर्थ विरहित क्षेत्र कह्यो सरखो ऊंचो तेकहेछे लवणसमुद्रने दशहजार योजन दगमाला कही ॥ सघला इमही पातालकलस दशदशगुणा योजन हज्जार ऊंडपणे कह्या मूले दशहज्जार योजन पिहुलपणे कह्या बहुमध्यदेशभागे एकप्रदेशनी श्रेणिथी एक २ प्रदेश वधतो पोहलपणे दशदशगुणां

योजनसहस्राणा लक्षमित्यर्थः उद्वेधेना गाधेनेत्यर्थः मूले बुध्ने दशसहस्राणि मध्ये लक्षं कथं मूलविष्कम्भा दुभयत एकैकप्रदेशसद्या विस्तरं गच्छतां या एक प्रदेशिका श्रेणी भाविततया अनेन प्रदेशवृद्धि रुपदर्शिता अथवा एकप्रादेशिकायां श्रेण्या मध्यतमध्ये ततोध उपरिच प्रदेशेन लक्षमित्यर्थः तथा ॥ उवरि॥ मुहमूले भवति अत आह मुखप्रदेशे ॥ कुड्डत्ति ॥ कुड्यानि भित्तयइत्यर्थः सर्वाणिच तानि वज्रमयानिचेति वाक्यं सर्वत्रापीति सहस्रसहस्रा ण्यष्टशतानि चतु रशीत्यधिकानो लोकसङ्ख्याः क्षुल्लका महदपेक्षया उद्वेधेन मध्यविष्कम्भेणच सहस्रं मूले मुखेच विष्कम्भेण शत कुड्यवाहल्येन च दश ॥ धायईत्यादि ॥ मदर

दसजोयणसहस्साइ विक्खंभेणं प० तेसिणं महापायालाण कुड्डा सव्ववयरामया सव्वत्थसमा दसजोयणसयाइं वाहल्लेण प० सव्वेविण खुड्डा पायाला दसजोयणसयाइ उव्वेहेण प० मूलेदराइसाइ जोयणाइ विक्खंभेणं प० वज्झमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दसजोयणसयाइं विक्खंभेण प० उवरि मुहमूले दसदसाइ जोयणाइं विक्खंभेण प० तेसिणं खुड्डा पायालाण कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थसमा दसजोयणाइ वाहल्लेणं प० धाइय

योजन पोहलपणें कह्या एतले विचे लाखयोजन पोहला पेटाले उपरिमुखमूले दशहजार योजन पिहुलपणें कह्या ते महापातालकलस कुम्भा ते ठीकरी सर्व वज्ररतमय सघली सरखी दशसेयोजन जाडपणे कही सघलाई नाह्ना पातालकलश दशदशसे योजन ऊंडपणें कह्या मूलें दशसेंयोजन एक हजार योजन पिहुलपणे कह्या ॥ बहुमध्यभागे एकप्रदेशनी श्रेणिथी पिहुलपणे वधतां २ दशहज्जार योजन पिहुलपणे ऊपर मुखमूलें दशसे योजन पिहुलपणे कह्या ॥ तेह न्हा पातालकलशनी भीते सर्व वज्रमय सघलाई समा दशयोजन जाडपणें कह्या दशयोजन जाडालें । धातकीखंड

त्ति ॥ पूर्वापरौ मेरू तत्स्वरूप सूत्रतः सिद्ध विशेष उच्यते धायइखडेमेरू चुलसीइसहस्साऊसियादोवि ओगाढायसहस्सं होतियसिहरमिविच्छिन्ना ॥ १ ॥ मूलेपणनउइसया चउणवइसयायहुतिधरणियलेत्ति ॥ सर्वेपि वृत्तवैताढ्यपर्वता विंशति प्रत्येक पचसु हैमवतैरण्यवतहरिवर्षरम्यके ष्वेषा शब्दावती विक टावती गन्धावती माल्यवत्पर्यायाख्याना भावादिति वृत्तग्रहण दीर्घवैताढ्यव्यवच्छेदार्थमिति मानुषोत्तर चक्रवालपर्वत' प्रतीतोऽञ्जनका श्चत्वारो नन्दी

खड्गाण मंदरा दसजोयणसयाइ उव्वेहेण धरणितले देसूणाइ दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेण पन्नत्ता पुक्खरवरदीवड्ढगाण मंदरा दसजोयणा एवचेव। सव्वेविण वट्टवेयड्ढ पव्वया दसजोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेणं दसगाउयसयाइ उव्वेहेण सव्वत्थसमा पल्लगसंठाणसठिया दसजोयणसयाइ विक्खंभेणं प०। जबूद्दीवे दीवे दसक्खेत्ता पन्नत्ता तजहा भरहे एरवए हेमवए हेरण्णवए हरिवस्से रम्मगवस्से पुव्वविदेह अवरविदहे देवकुरा उत्तरकुरा । माणुसुत्तरेण पव्वए मूल दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं

द्वीपे मेरुपर्वत दशसे योजन ऊडपणे धरतीमा देसेऊणा दशहजार योजन पिहुलपणे ऊपरि दशसे योजन पिहुलपणे कह्या चोरासीहजार योजन ऊचा ॥ पुष्करवरद्वीपे मेरुपर्वत दशसेयोजन इमज सघलाइ वृत्तवैताढ्य पर्वत दशसे योजन उचपणे दससे गाऊ ऊडपणे सघले समा पालाने आ कारे दशसें योजन विष्कभपणे कह्या ॥ जबूद्वीपे २ दशक्षेत्र कह्या तेकहेछे भरत १ ऐरवत २ हेमवत ३ हिरण्यवत ४ हरिवर्ष ५ रम्यकवर्ष ६ पूर्व विदेह ७ अवरविदेह ८ देवकुरु ९ उत्तरकुरु १० ॥ मानुषोत्तरपर्वत मूले दशबावीससेयोजन पोहलपणे कह्यो एतले बत्रीससे योजन सघलाई अज

गरदीपवर्त्तिनो दधिमुखाः प्रत्येकं मंजनकानां दिक्चतुष्टयव्यवस्थितपुष्करिणीमध्यवर्त्तिनः षाडशेति रतिकरानन्दीश्वरसमीपे विदिग्व्यवस्थिता श्वत्वार स्तु:स्थानकाभिहितस्वरूपा रुचकोरुचकाभिधान स्त्रयोदशद्वीपवर्त्ती चक्रवालपर्वतः कुंडलः कुण्डलाभिधान एकादशद्वीपवर्त्ती चक्रवालपर्वत एव ॥ एव कुंडलवरेवि ॥ इत्यनेनेदं कुंडवलयर उद्वेधमूलविष्कम्भोपरि विष्कम्भै रुचकवरपर्वतसमानवक्तो द्वीपसागरप्रज्ञप्त्यांलिनमुक्तो दसचेवजोयणसए बावीसेविच्छ डोउमूलंमि चत्तारिजोयणसए चउवीसेवित्थडोसिहरेत्ति ॥ १ ॥ रुचकस्यापि तत्राय विशेष उक्तो मूलविष्कम्भो दशसहस्राणि द्वाविंशत्यधिकानि शिखरेतु

पन्नत्ते। सव्वेविणं अंजणगपव्वया दसजोयणसयाइं उव्वेहेणं मूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता । सव्वेविण दधिमुहपव्वया दसजोयणसयाइं उव्वेहेण सव्वत्थसमा पल्लग संठा णसंठिया दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेण पन्नत्ता । सव्वेविणं रइकरपव्वया दसजोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं दसगाउयसयाइ उव्वेहेणं सव्वत्थसमा झल्लरिसंठिया दस जोयणसहस्साइ विक्खंभेण प० । रुयगवरेण पव्वए दसजोयणसयाइ उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेण उवरि दस जोयणसयाइं विक्खंभेण पन्नत्ता ।

नगिरीपर्वत दशसेयोजन ऊंडपणे मूलें दशहजार योजन पिहुलपणे उपरि दशसेयोजन पोहोलपणे कह्या ॥ सघलाई दधिमुखपर्वत दससे योजन ऊंडा सघले समा पालानेंसंस्थाने दशहजारयोजन पोहलपणे सघलाई रतिकरपर्वत दशसेयोजन ऊंचा ऊचपणे दशसेगाऊ ऊंडपणे सघले समा झा लरनेंसस्थाने दशहज्जार योजन पोहलपणें कह्या ॥ इम कुंडलवरपणि ॥ दशप्रकारे द्रव्यानुयोग सूत्रनु अर्थसाथे संबधन ते अनुयोग कह्यो तेकहेछे

चत्वारि सहस्राणि चतुर्विंशत्यधिकानीति अनन्तरं गणितानुयोग उक्तो ऽथ द्रव्यानुयोगस्वरूप भेदत आह ॥ दसविहेदविएत्यादि ॥ अनुयोजनं सूत्रस्यार्थेन संबधन अनुरूपो ऽनुकूलोवा योग: सूत्रस्या भिधेयार्थं प्रति व्यापारो ऽनुयोग: व्याख्यानमितिभाव: सच चतुर्द्धा व्याख्येयभेदा त्तद्यथा चरणकरणानुयोगो धर्मकथानुयोगो गणितानुयोगो द्रव्यानुयोगश्च तत्र द्रव्यस्य जीवादे रनुयोगो विचारो द्रव्यानुयोग. सच दशधा तत्र ॥ दवियाणुओगेत्ति ॥ यज्जीवादे र्द्रव्यत्व विचार्यते सद्रव्यानुयोगो यथा द्रवतिगच्छतिता स्ता न्पर्यायान् द्रूयतेवा तै स्तै: पर्यायैरिति द्रव्यं गुणपर्यायवानर्थ स्तत्र सतिजीवे ज्ञानादय: सहभाविलक्षणा गुणा नहि तद्वियुक्तो जीव: कदाचनापि संभवति जीवत्वहाने स्तथा पर्याया अपि मानुषत्व बाल्यादय. कालकृतावस्थालक्षणा स्तत्र सत्ये वेत्यतो भव त्यसौ गुणपर्यायवत्वा द्रव्यमित्यादि द्रव्यानुयोग' १ तथा ॥ माउयाणुओगेत्ति ॥ इह मातृकेव मातृका प्रवचनपुरुषस्यो त्पादव्ययध्रौव्यलक्षणा पदत्रयी तस्या अनुयोगो यथा उत्पादव ज्जीवद्रव्यं बाल्यादिपर्यायाणामनुक्षण मुत्पत्तिदर्शना दनुत्पादेच वृद्धाद्यवस्थाना मप्राप्तिप्रसंगा दसमंजसापत्ति: तथा व्ययवज्जीवद्रव्य प्रतिक्षण बाल्या.द्यवस्थाना व्ययदर्शना दव्ययवत्वेच सर्वदा बाल्यादिप्राप्ते रसमंजसमेव तथा यदि सर्वथा प्युत्पादव्ययवदेव तन्नकेनापि प्रकारेण ध्रुव स्या त्तदा अकृताभ्यागमकृतविप्रणाशप्राप्त्या पूर्वदृष्टानुस्मरणाभिलापादि भावाना मभावप्रसगेनच सकलेहलोकपरलोकालबनानुष्ठानाना मभावतो ऽसमंजसमेव ततो द्रव्यतया ऽस्यध्रौव्यमिति उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त मात्मद्रव्य मित्यादि मातृकापदानुयोग: २ तथा ॥ एकट्ठियाणुओगे

एवं कुंफलवरेवि । दसविहे दवियाणुजोगे पन्नत्ते तंजहा दवियाणुजोगे माउयाणुजोगे एगट्ठियाणुजोगे

गुणपर्यायवत जीवादिद्रव्यनो अनुयोग ॥ मातृकानुयोग ते त्रणेना ५२ अक्षरनो अनुयोग एकार्थनो अनुयोग ते जीवप्राणी भूतसत्व एकार्थछे कर

त्ति ॥ एक शासा वर्थश्चा भिधेयो जीवादिः स येषा मस्ति त एकार्थिकाः शब्दा स्तै रनुयोग स्तत्कथनमित्यर्थः एकार्थिकानुयोगो यथा जीवद्रव्यंप्रतिजी वः प्राणी भूतः सत्व एकार्थिकानावा नुयोगो यथा जीवना त्प्राणधारणा ज्जीवः प्राणाना मुच्छ्वासादीना मस्तित्वात् प्राणी सर्वदा भवना द्भूतः सदासत्त्वा त्सत्त्वइत्यादि तथा ॥ करणाणुजोगेत्ति ॥ क्रियत एभिरिति करणानि तेषा मनुयोगः करणानुयोग स्तथाहि जीवद्रव्यस्य कर्तु र्विचित्रक्रियासु साधक तमानि कालस्वभावनियतिपूर्वकृतानि ने काको जीव. किंचन कर्तु मलमिति मृद्द्रव्यच कुलालचक्रचीवरदण्डादिक करणकलाप मतरेण न घटलक्षण का र्यं प्रतिघटतइति तस्यतानि करणानीति द्रव्यस्य करणानुयोगइति ४ तथा ॥ अप्पियाणप्पिएत्ति ॥ द्रव्य ह्यर्पित विशेषितं यथा जीवद्रव्य किंविध ससारीति ससार्यपि त्रसरूपं त्रसरूपमपि पंचेन्द्रिय न्तदापि नररूपमित्यादि अनर्पित मविशेषितमेव यथा जीवद्रव्यमिति ततश्चा र्पितच तदनर्पि तचे त्यर्पितानर्पित द्रव्य भवतीति द्रव्यानुयोगः ५ तथा ॥ भावियाभाविएत्ति ॥ भावित वासितद्रव्यान्तरससर्गतो ऽभावित मन्यथैव यथा जीवद्रव्य भावित किंश्चि त्तत्र प्रशस्तभावित मितरभावितञ्च तत्र प्रशस्तभावित मविग्नभावित मप्रशस्तभावितचे तरभावितं तद्विविध मपि वामनीय मवामनीय च तत्र वामनीयं यत्ससर्गज गुणं दोषवा ससर्गान्तरेण वमति अवामनीय त्वन्यथा अभावितं त्वससर्गप्राप्त मात्रससर्गवा वज्रतंदुलकल्पन वासयितु म्श क्यमिति एव घटादिद्रव्यमपि ततश्च भावित चा भावितंच भावितभावित एवंभूतो विचारो द्रव्यानुयोग इति ६ तथा ॥ बाहिराबाहिरेत्ति ॥ बाह्यावा

करणाणुजोगे अप्पियाणप्पिए भावियाभाविए बाहिराबाहिरे सासयासासए तहनाणे अतहनाणे। चमरस्सणं

णानुयोग काल स्वभाव नियति पूर्वकृतनो उपयोग जीव एपाच कारणनो योगविना कांई करी नसके ४ अर्पितानर्पितानुयोग जिम जीवद्रव्य सं

ह्य तत्र जीवद्रव्यं बाह्य चैतन्यधर्म्मेणा काशास्तिकायादिभ्यो विलक्षणत्वा त्तदेवा बाह्य ममूर्त्तत्वादिना धर्मेंणामूर्त्तत्वा दुभयेषा मपि चैतन्येनवा ऽबाह्यं जो वास्तिकाया चैतन्यलक्षणत्व, दुभयो रप्यथवा घटादिद्रव्य बाह्य कर्म्म चैतन्यादित्व ऽबाह्य माध्यात्मिकमिति यावदित्येव मन्यो द्रव्यानुयोगइति ७ तथा ॥ सासयासासएत्ति ॥ शाश्वताशाश्वतं तत्र जीवद्रव्य मनादिनिधनत्वात् शाश्वत तदेवा परापरपर्यायप्राप्तितो ऽशाश्वतमित्येव मन्योद्रव्यानुयोगइति ८ त था ॥ तहणाणेत्ति ॥ यथा वस्तु तथा ज्ञान यस्य त त्तथाज्ञान सम्यगदृष्टिजीवद्रव्य न्तस्यैवा वितथज्ञानत्वात् अथवा यथैव य द्वस्तु तथैव ज्ञान मववोध प्र तीति र्यस्मि न्त त्तथा ज्ञान घटादिद्रव्यं घटादितयेव प्रतिभासमान जैनाभ्युपगतवा परिणामि परिणामितयैव प्रतिभासमान मित्येव मन्यो द्रव्यानुयोग इति ९ ॥ अतहणाणेत्ति ॥ अतथाज्ञान मिथ्यादृष्टिजीवद्रव्य मलातद्रव्य वा वक्रतया वभास मेकान्तवाद्यभ्युपगतवा वस्तु तथा ह्येकान्ते न नित्य मनि त्यना वस्तु तै रभ्युपगत प्रतिभातिच तत् परिणामितयेति तदतथाज्ञान मित्येव मन्यो द्रव्यानुयोगइति १० पुन र्गणितानुयोग मेवाधिकृत्यो त्पातपर्वता धिकार मच्युतसूत्र यावदाह ॥ चमरस्सेत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ तिगिच्छिकूडेत्ति ॥ तिगिच्छि किंजल्क स्तत्प्रधानकूटत्वा त्तिगिच्छिकूट स्तत्प्रधानत्वच क

असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तिगिच्छिकूडे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खन्नेणं पन्नत्ता ।

सारी मानवी पचेंद्रीपणि एकजळे सर्वससारने भावे ज्ञावित जीवद्रव्यछे अने अज्ञावितपणाछे ते ज्ञाविताज्ञावितानुयोग बाह्याबाह्यानुयोग जीवद्र व्य चैतन्यवतमाटे आकाशास्तिकाय बाह्य अमूर्त्तमाटे जीव सास्वतो अने अशास्वतो अपर्यायपामवाथी ॥ तथा ज्ञानानुयोग साचु जाणवु ॥ अतथ्य ज्ञानानुयोग खोटुमिथ्याज्ञान ॥ चमर असुरेंद्र असुरकुमारना राजानो तिगिच्छिकूट उत्पातपर्वत मूले दश अने बावीससे योजन पिहुलपणे कह्यु ॥ च

मत्तबहुमत्वात् सन्नाचेयं ॥ उप्पायपव्वएत्ति ॥ उत्पतन मूर्द्धगमन मुत्पात स्तेनो पलचित. पर्वत उत्पातपर्व्वत: सच रुचकवराभिधानात् त्रयोदशा त्समुद्रात् दचिणतो ऽसंख्येयान् द्वीपसमुद्रा नतिलङ्घ्य याव दरुणवरद्वीपारुणवरसमुद्रौ तयो रुणवरं समुद्र दचिणतो द्विचत्वारिंशतं योजनसहस्राण्य वगाह्य भवति तत्प्रमाणंच सत्तरसएकवीसाइं जोयणसयाइसोइसोसमुव्विद्धो दसचेवजोयणसए बावीसेवित्थडोहेट्ठा ॥ १ ॥ चत्तारिजोयणसए चउवीसे विच्छडोउमज्झम्मि सत्तेवयतेवीसे सिहरतलेवित्थडाहोइत्ति ॥ २ ॥ सच रत्नमय: पद्मवरवेदिकया वनखण्डेनच परिचिप्त स्तस्यच मध्ये ऽशोकावतंसको देवप्रासादइति ॥ चमरस्सेत्यादि ॥ महारण्णोत्ति ॥ लोकपालस्य सोमप्रभ उत्पातपर्वतो ऽरुणोदसमुद्रएव भवति एव यमवरुणवैश्रमणसूत्राणि नेयानीति ॥ बलिस्सेत्यादि ॥ रुचकेन्द्र उत्पातपर्वतो ऽरुणोदसमुद्र एव भवति यथोक्त अरुणस्सउत्तरेणं बायालीसभवेसहस्साइं ओगा हिऊणउदहि

चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो सोमप्पन्ने उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उढ्ढं उच्च त्तेणं दस गाउयसयाइ उव्वेहेण मूले दसजोयणसयाइ विक्खन्नेण पन्नत्ता। चमरस्सण असुरिंदस्स जमस्स महारन्नो जमप्पन्ने उप्पायपव्वए एवंचेव। एववरुणस्सवि एवंवेसमणस्सवि। बलिस्सण वइरोयणिंदस्स वइ रोयणरन्नो रुयगिंदेउप्पायपव्वए मूले दसवावीसे जोयणसए विक्खन्नेण पन्नत्ते। बलिस्सण वइरोयणरन्नो

चमरेंद्र असुरेंद्र असुरकुमारनो राजा सोममहाराजाने सोमप्रभ उत्पातपर्वत दससेयोजन ऊचोऊचपणे दशसे गाऊ ऊण्डपणे मूले दशसे योजन पोमें हलपणे कह्यो ॥ चमरेंद्र असुरेंद्र असुरकुमारनो जममहाराजाने यमप्रभ उत्पातपर्वत इमज ॥ इम वरुणनें पणि ॥ इम वैश्रमणने पणि ॥ बलिना

सिलणिचयोरायहाणोत्ति ॥ १ ॥ बलिस्सेत्यादि ॥ वईत्यादि ॥ सूत्रसूचा एव च दृश्यं ॥ वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो सोमस्स महारन्नोएवचेवत्ति ॥ अतिदेश एतद्भावना ॥ जहेत्यादि ॥ यथा यत्प्रकार चमरस्य लोकपालाना मुत्पातपर्वतप्रमाणं प्रत्येक चतुर्भि. सूत्रै रुक्तं ॥ तचेवत्ति ॥ तत्प्रकारमेव चतुर्भिः सूत्रै र्बलिनोपि वैरोचनेन्द्रस्यापि वक्तव्यं समानत्वादिति ॥ वरुणस्सेत्यादि ॥ वरुणस्यो त्पातपर्वतो ऽरुणोद एव समुद्रे भवति वरुणस्येत्यादि प्रथमलोकपालसूत्रे ॥ एवंचेवत्ति ॥ करणात् ॥ उच्चत्तेणदसगाउयसयाइं उव्वेहेणमित्यादि ॥ सूत्र मतिदिष्ट एव ॥ जावसंखवालस्सत्ति ॥ करणाच्छेषाणा त्रयाणां लोकपालानां कालवालसेलवालसखवालाभिधानाना मुत्पातपर्वताभिधायीनि त्रीण्यन्यानि सूत्राणि दर्शयति ॥ एवंभूयाणदस्सवित्ति ॥ भूतानन्द

सोमस्स एवचेव जहा चमरस्स लोगपालाणं तचेव बलिस्सवि। धरणस्सणं नागकुमारिदस्स नागकुमाररन्नो धरणप्पन्ने उप्पायपव्वए दसजोयणसयाइं उहुं उच्चत्तेणं दसगाउयसयाइ उव्वेहेणं मूले दसजोयणसयाइ विक्ख म्भेण। धरणस्सण जाव नागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो कालप्पन्ने उप्पायपव्वए दसजोयणसयाइ उहुं उच्चत्तेणं एवचेव। एव जाव संखवालस्स एवं भूयाणदस्सवि एव लोगपालाणपि सेजहा धरणस्स एवं जाव

वैरोयणेंद्रने वइरोयणराजाने रुचकेंद्र उत्पातपर्वत मूले दश बावीससे योजन विकभपणे कह्यो ॥ बलि वइरोयणेंद्रनो सोममहाराजानें इमज जिम चमरने लोकपालने ॥ तिमज वलेद्रनेपणि ॥ धरणनागकुमारनो इंद्र नागकुमारनाराजानो धरणप्रभ उत्पातपर्वत दससेयोजन ऊचा ऊचपणे ए दशगाऊशत दशसे ऊडपणे मूले दशसे योजन पोहलपणे कह्यु ॥ वरुणनागकुमार कालवालीने महाकालप्रभ उत्पातपर्वत दससे योजन ऊचो इमज ए

स्यापि औदीच्यनागराजस्यापि उत्पातपर्वतस्तस्य नामप्रमाणंच वाच्य यथा धरणस्येत्यर्थः भूतानन्दप्रभश्चो त्पातपर्वतो रुणोदएव भवति केवल मुत्तरत एव ॥ लोगपालाणविसेत्ति ॥ से ॥ तस्य भूतानन्दस्य लोकपालानामपि एव मुत्पातपर्वतप्रमाण यथा धरणलोकपालाना मितिभाव. नवर त्तविमानि चतु स्थानकानसारेण ज्ञातव्यानीति ॥ जहाधरणस्सत्ति ॥ यथाधरणस्य एवमिति तथा सुपणविज्जुकुमारादीना ये इन्द्रा स्तेषा मुत्पातपर्वतप्रमाण भणितव्यं किंपर्यन्ताना तेषा मित्यतआह ॥ जावथणियकुमाराणत्ति ॥ प्रकट किं इन्द्राणामेव नेत्याह ॥ सलोगपालाणत्ति ॥ तल्लोकपालानपीत्यर्थ ॥ सव्वेसिमि त्यादि ॥ सर्वेषा मिन्द्राणा तल्लोकपालाना चोत्पातपर्वता सदृशनामानो भणितव्या यथा धरणस्य धरणप्रभ' प्रथमतल्लोकपालस्यकालवालस्य कालवालप्रभ इत्येव सर्वत्र तेच पर्वता स्थान मौक्तल्ये वभ्भरन्ति असुराणनागाण उदहिकुमाराणहोतिआवासा अरुणोदएसमुद्दे तत्थेवयतेसिउप्पाया ॥ १ ॥ दीवदि साअग्गीण थणियकुमाराणहोतिआवासा अरुणवरेदीवमिउ तत्थेवयतेमिउप्पायत्ति ॥ २ ॥ सक्कस्सेत्यादि ॥ कुडलवरेद्वीपे कुडलपर्व्वतस्याभ्यन्तरे दक्षिणत, षोडशराजधान्य सन्ति तासा चतसृणामध्ये सोमप्रभयमप्रभवरुणप्रभवैश्रवणप्रभाख्या उत्पातपर्व्वता सोमादीना शक्रलोकपालाना सन्ति उत्तरपार्श्वेतु

थणियकुमाराण सलोगपालाण भाणियव्वं । सव्वेसि उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसनामगा । सक्कस्सणं देवि दस्स देवरण्णोसक्कप्पभे उप्पायपव्वए दसजोयणसहस्साइं उढ्ढ उच्चत्तेण दस गाउयसहस्साइं उव्वेहेण मूले दस

णे प्रकारे यावत् सरपालने इम भूतानदने पणि इम लोकपालने पणि तिमज जिम धरणने इम यावत् स्तनित कुमारने पणि लोकपालसहित जाणवू ॥ सर्वने उत्पातपवत जाणवा सरखे नामे ॥ शक्रदेवेंद्र देवराजाने शक्रप्रभ उत्पातपर्वत दशहज्जारयोजन ऊचो ऊचपणे दशहज्जार गाऊ

एवमेवेशानलोकपालानामिति यथा शक्रस्य तथा चुतान्तानां मिन्द्राणां लोकपालानां चोत्पातपर्वता वाच्या यत. सर्वेषा मेकं प्रमाणं नवरं स्थानविशे
षो विशेषमन्त्रा दवगन्तव्य' योजनसहस्राधिकारा देव योजनसाहस्रिकावगाहनासूत्रनय ॥ वायरेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं ॥ वायरत्ति ॥ वादराणामेव न
सूक्ष्माणा तेषा मगुलासंख्येयभागमात्रावगाहनत्वात् एव जघन्यतोपि माभूदतः ॥ उक्कोसेणति ॥ अभिन्नितं दशयोजनशतानि उत्सेधयोजनेन नतु प्रमाण
योजनेन उस्सेहपमाणओमिणेदेहति ॥ वचनात् शरीरस्या वगाहना येषु प्रदेशेषु शरीर मवगाढ सा शरोरावगाहना साच तथाविधनद्यापि पद्मनाल
विषया द्रष्टव्येति ॥ जलयरेत्यादि ॥ इह जलचरा मत्स्या गर्भजा इतरेच दृश्या मच्छजुयलसहस्स ॥ इतिवचनात् एतेच किल स्वयभूरमणएव भवतीति ॥
उरगेत्यादि ॥ उरःपरिसर्पा इह गर्भजा महोरगा दृश्या उरगेसुयगभजाइसत्ति ॥ वचनात् एते किल वाह्यद्वोपेषु जलनिश्रिता भवति ॥ एवचेवत्ति ॥ दस

जोयणसहस्साइ विख्कन्नेणं पन्नत्ते । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरस्रो जहा सक्कस्स तहा सव्वेसि लोगपाला
ण सव्वेसिच इंदाग जाव अच्चुयत्ति ॥ सव्वेसिपमाण इक्कत्रायरवणस्सइकाइयाण उक्कोसेणं दसजोयणसया
इं सरीरोगाहणा पन्नत्ता । जलयरपंचिंदियतिरिख्कजोणियाण उक्कोसेग दसजोयगसयाइं सरीरोगाहणा
पन्नत्ता । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिख्कजोणियाणं उक्कोसेण एवंचेव । संन्नपत्तणं अरहाउ अन्निणंद

जडो मूले दशहजार योजन पोहलपणे कह्यो ॥ शक्र देवेंद्र देवराजानो सोममहाराजाने जिम शक्रने तिम सर्वेलोकपालने सर्वेइंद्रनें यावत् अच्यु
तेंद्रने सर्वनु प्रमाण एकज ॥ बादरवनस्पतीकायने उत्कृष्टी दशसे योजननी शरीरअवगाहना कही ॥ उरपरसर्प्प थलचर पंचेंद्रीतिर्यंच योनिनानु श

॥ टी

ठा० ॥

॥५१ ॥

जीय नसगाइ सरोरीगाहणापणत्ति ॥ सूच पाथमित्यर्थः एवं विधाशा र्शी जिने र्दर्शितादति प्रकृताध्ययनावतारिजिनांतरसूत्रं ॥ सभवेत्यादि ॥ सुगम
षभिज्ञितप्रमाणाशा वगाहनादयो न्येपि पदार्था जिनै रनन्ता दृष्टा इत्यनन्तका भेदत प्राह ॥ दसविहेत्यादि ॥ नामानन्तक मनन्तक मित्येषा नामभूता
नर्णानुपूर्वी यस्यवा सचेननादे र्वस्तुनो नन्तकमिति नाम तथाप्रानन्तका स्थापनानंतकं यदक्षादा वनन्तकमिति स्थाप्यते द्रव्यानन्तक जीवद्रव्याणा पुद्ग
लद्रव्याणा वा यदनन्तका गणनानन्तक य देको द्वौ त्रय इत्येव मख्याता असंख्याता अनन्ताइति सख्यानमात्रपेच्च सख्यामाचतया सख्यातमात्र व्यपदिश्यत
इति प्रदेशानन्तक माकाशप्रदेशानां यदानन्त्यमिति एकतो ऽनन्तक मतीताद्वा ऽनागताद्वा वा द्विधा नन्तक सर्वाद्वा देशविस्तारानन्तक एक आकाशप्र
तर: सर्वविस्तारानन्तक सर्वाकाशास्तिकायइति शाश्वतानतक मचय जीवादिद्रव्यमिति एवंविधार्थाभिधायकमूवंगतश्रुतमिति पूर्वश्रुतविशेष मिहा
वतारयन् सूत्रचयमाह ॥ उप्पाएइत्यादि ॥ उत्पातपूर्वं प्रथमं तस्य दशवस्तू न्यजायविशेषा अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वं चतुर्थं तस्य मूलवस्तूना मुपरि चू

णे अरहा दसहि सागरोवमकोडिसयसहस्सेहि वीइक्कंतेहि समुप्पन्ने ॥ दसविहे अणतए पन्नत्ते तंजहा ॥
णामाणंतए ठवणाणतए दव्वाणंतए गणणाणतए पएसाणतए एगयोगाणतए दुहओणंतए देसवित्थाराणंतए ॥

रीर उत्कृष्टो इमज ॥ संभवनाथ अरिहंतथी अभिनंदन अरिहंत दशलाखकोडि सागरोपम गयापछी ऊपना ॥ दशप्रकारे अनतो कह्यो तेकहेछे व
स्तुना अनता नाम ते नामानतो१ थापनाअनतो जे कोईक वस्तुविषे अनतानी स्थापना२ जीवपुद्गल नु ते द्रव्यानतो ३ गणनानतो एक द्वि सख्या
तो असख्यातो ते गणनानतो ४ प्रदेशानतो अतीतकाल प्रदेसनु अनतो ५ एकथी अनतो अतीतकाल अनतो गयो इम सर्वकालनुं ते द्विधानतो ६ एक

लारूपाणि वस्तूनि चूलावस्तूनि पूर्वगतादिश्रुतनिषिद्धवस्तूनां साधो र्येद्विधा प्रतिषेवा भवति तद्विधांतां दर्शयन्नाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ प्रतिषेवणा प्राणा
तिपाताद्या सेवना ॥ दप्पसिलोगो ॥ दर्पो वल्गनादिः दप्पोपुणङ्गोइवग्गणाईत्ति ॥ वचना त्तस्मादागमप्रतिषिद्धप्राणातिपाता द्या सेवा सा दर्पप्रतिषे
वणेत्येव मुत्तरपदान्यपि नेयानि नवरं प्रमाद परिहासविकथादि' कदप्पाइपमाओत्ति ॥ वचना द्विधेये ष्वप्रयत्नोवा अनाभोगो विस्मृति रेषा समाहार
द्वद्व स्तत्र तथा आतुरे ग्लाने सति तत्प्रतिजागरणार्थमितिभावो ऽथवा आत्मन एवा तुरत्वे सति लुप्तभावप्रत्ययत्वा दयमर्थ. क्षुत्पिपासाव्याधिभि रभि
भूतः सन् या ङ्करोति उक्तंच पढमबोङ्हदुहवा हिओवजसेवआउराणसत्ति ॥ तथा आपत्सु द्रव्यादिभेदेन चतुर्विधासु तत्र द्रव्यतः प्रासुकद्रव्य दुर्लभ त्वेत्र
तो ऽध्वप्रतिपन्नता कालतो दुर्भिक्ष भावतो ग्लानत्वमिति उक्तंच दव्वादअलभेपुण चउव्विहाआवयाङ्गोइत्ति ॥ तथा शंकिते एषणीयेप्य नेषणीयतया ज
संकित समावज्जे ॥ इतिवचनात् सहसाकारे ऽकस्मात्करणे सति सहसाकारलक्षण चेद् पुव्वमपासिऊण पाएवूढमिजपुणोपासे नचयइमियत्तेउ पायसह

सव्वत्थिआराणंतए सासयाणंतए। उप्पायपुव्वस्सण दस वत्थू प० अत्थिणत्थिप्पवायपुव्वस्सणं दस चूलावत्थू प० दसविहा पडिसेवणा प०। दप्पपमायाणाभोगे आउरेआवईसुय संकिएसहसागारे भयप्पयोसवीमसा ॥१॥

आकाशप्रदेश ते देशविस्तारानतो सर्वविस्तारानते ते सर्वाकाशास्तिकाय सास्वतानतो ते जीवादिषट्द्रव्य सास्वताछे उत्पादपूर्वना दशवस्तु क
ह्या वस्तुते अध्ययन ॥ अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्वनी दशचूलिकावस्तु कही ॥ दशप्रकारे प्रतिषिद्धसेवना प्राणातिपातादि असेवा ना वारीछे तेकहेछे
दर्प्पप्रतिषेवणा १। प्रमादसेवादि वारीछे २।'अनाभोगविस्मृत ३। आतुर ग्लानथको सेवें ४। आपदाआव्यां सेवे ५। सुद्धमांनछे पणि असुद्धनी

साकरणमेयंति ॥ १ ॥ भयंच भीति नृपचौरादिभ्यः प्रद्वेषम मात्सर्यं भयप्रद्वेषं तस्मा च प्रतिषेवा भवति यथा राजाद्यभियोगा मार्गादिदर्शयति सिंहा
द्भिभयाद्वा वृक्षमारोहति उक्तंच भयमभिओगेणसीहमाईओत्ति ॥ इह प्रद्वेषग्रहणेन कषायादिविवर्जिता ग्राह्य कोहाईउपओसोत्ति ॥ तथा विम
र्श. शिष्यकादिपरीक्षा आह च योमसासेहमाईणंति ॥ ततोपि प्रतिषेवा पृथिव्यादिसंघट्टादिरूपा भवति प्रतिषेवायाचा लोचनाविधेया तत्रच ये दोषा
स्ते परिहार्या इतिदर्शनायाह ॥ दसेत्यादि ॥ आकंपगाहा ॥ आकंप्य आवर्ज्येत्यर्थः यदुक्तं वेयावच्चाईहि पुव्वआगंपइत्तुआयरिणं आलोएइकहंमे थोव
यं दाहित्ति ॥ अनुमान कृत्वा किमयं मृदुदण्ड उता गडदंड इति ज्ञात्वेत्यर्थो ऽयमभिप्रायोस्य यद्यत्र मृदुदंड स्ततो दास्याम्यालो
चयिरेज्जपच्छित्तंति ॥ १ ॥ अणुमाणइत्ता ॥ अनुमान कृत्वा किमय मृदुदंड उता गडदंड इति ज्ञात्वेत्यर्थो ऽयमभिप्रायोस्य यद्यत्र मृदुदंड स्ततो दास्याम्यालो
चना मन्यथा नेति उक्तंच किंएसउग्गदंडो मिउदंडोवत्तिएयमणुमाणे अणीयलितियोव पच्छित्तमजाइज्जाहित्ति ॥ १ ॥ जंदिट्ठंति ॥ यदेव दृष्टं माचार्यादिना
दोषजात तदेवा लोचयति नान्यद्दोष साय माचार्य रञ्जनमात्रपरत्वेना संविग्नत्वा दस्येति उक्तंच दिट्ठावजेपरेण दोसाचियडेयतेसियणअणे सोहिभया
जाणतुय एसोण्यावदोमोउत्ति ॥ १ ॥ बायरवत्ति ॥ बादरमेवा तिचारजात मालोचयति नसूक्ष्ममिति ॥ सुहुमवत्ति ॥ सूक्ष्ममेव वा तिचार मालोचयति
यः किल सूक्ष्म मालोचयति स कथं बादरं सतं नालोचय त्येवंरूपभावसंपादनाया चार्यस्येति आह च बायरवहुवराहे जोआलोएइसुहुमनालोए अह

दस आलोयणादोसा पन्नत्ता । आकंपइत्तुअणुमा णइत्तुजंदिट्ठंबायरंचसुहुमंवा छन्नंसद्दाउलगं बहुजण

परे सकाये ६ । सहसात्कारे करें ७ । भयथी नृपादि ८ । प्रद्वेष मत्सर थकी ९ । विमर्श शिष्यादि १० ॥ परिक्षा ॥ १ ॥ ए सर्वनी आलोअणआवे
दशप्रकारे आलोयण कही तेकहेछे प्रथमवेयावचादिके आ वर्जीने आलोवे अनुमानकरीने जे ए पापनो दंड थोडोहोसे ते ज आलोये जे दोष आ

वासुहमालोए वरमणतोउएवतु ॥ १ ॥ जोसुहुमेआलोए सोकिहनालोयवायरेदोसेत्ति ॥ छन्नत्ति ॥ प्रछन्न मालोचयति यथात्मनैव शृणोति ना चार्यभणितं छण्णतहआलोए जहनवरअप्पणासुणइत्ति ॥ सद्दाउलयति॥ शब्देना कुल शब्दाकुल वृहच्छब्देना लोचयति यथा न्येप्यगीतार्था स्तच्छृण्वन्ती त्यभाणिच सद्दा उलबद्देणं सद्देणालोयजहअगियाविवोहेइत्ति॥ बहुजणति ॥ बहवोजना आलोचनाचार्या यस्मि न्नालोचने त द्वहुजनं अयमभिप्राय. एगस्सालोइत्ता जो आलोएपुणोविअणस्स तेचेवयअवराहे तहाइबहुजणनामेत्ति ॥ १ ॥ अव्वत्तति ॥ अव्यक्तस्या गीतार्थस्य गुरो सकाशे यदालोचन तत्तत्संबधा द्व्यक्त मु च्यते उक्तञ्च जोयअगीयत्थस्स आलोएततहोइअव्वत्तमिति ॥ तस्सेवित्ति ॥ ये दोषा आलोचयितव्या स्तत्सेवी यो गुरु स्तस्य पुरतो यदालोचन स तत्से वित्तण आलोचनादोष स्तत्र वायमभिप्राय आलोचयितु जहएसामत्तुल्लो नोदाहीगुरुगमेवपच्छित्त इयजोकिलिट्ठचित्तो टिसाआलोयणातेणति ॥ १ ॥ एतद्दोषपरिहारिणापि गुणवतैवा लोचना देयेति तद्गुणानाह ॥ दसहिठाणेहीत्यादि ॥ एवति ॥ अनेन क्रमेण यथा अष्टस्थानके तथेद सूत्र पठनीयमित्य र्थ. कियद्दूर यावत् ॥ खतेदतेत्ति ॥ पदे तथाहि ॥ विणयसपन्ने नाणसपन्ने दसणसपन्ने चारगसंपन्नेत्ति ॥ अमाईअपच्छ.णुतावीति ॥ पदद्वय मिहाधिक

अव्वत्तसेवी ॥ १ ॥ दसहि ठाणेहि सपन्ने अणगारे अरिहइ अत्तदोसं आलोइत्तए तंजहा जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने एव जहा अठ्ठाणे खते दते अमाई अपच्छाणुतावी । दसहि ठाणेहि सपन्ने अणगारे अरि

चार्यनो दीठो होय ते आलोवे ॥ मोटा २ । आलोई न सूक्ष्म सूक्ष्मआलोवे सूक्ष्मआलोवेछे ते वादर छानु आलोवे पोतेज साभले गुरु नसाभले मो टेशब्दे आलोवे घणा ज नसाथे २ आलोअण अव्यक्त अगतार्थपासे आलोवे तेज आलोवे जे गुरुइसेव्योहोय ॥ १ ॥ दशथानके सहित अणगार यो

प्रकटश्च नवरं गम्भीतरोऽम्ना तत्स्वरूपमिदं नोपलिउंचेऽमाइ श्रपच्छन्नावीनपरितप्येत्ति ॥ एवम्भूतगुणवतापि दीयमाना लोचना गुणवतैव प्रत्येष्टव्येतिता
गुणानाह ॥ दसहीत्यादि ॥ आयारवंति ॥ ज्ञानाद्याचारवान् ॥ अवहारवंति ॥ अवधारणावान् यावत्करणात् ॥ ववहारव ॥ आगमनादिपञ्चप्रकारव्यवह
रवान् ॥ उव्वीलए ॥ अपव्रीडकः लज्जापनोदको यथा परः सुख मालोचयतीति ॥ पकुव्वी ॥ आलोचिते शुद्धिकरणसमर्थः ॥ निज्जवए ॥ य स्तथा प्रायश्चित्त
दत्ते यथा परो निर्वोढु मलं भवतीति ॥ अपरिस्सावी ॥ आलोचकदोषा नपरश्रुत्य यो नोद्गिरति ॥ अवायदंसी ॥ सातिचारस्य पारलौकिकापायदर्शीति
पूर्वोक्तमेव ॥ पियधम्मेदढधम्मत्ति ॥ अधिक मिह प्रियधर्माधर्मप्रियो दृढधर्माय आपद्यपि धर्मा न चलतीति आलोचितदोषाय प्रायश्चित्त देय मत स्तत्
रूपणसूत्र ॥ दसविहेत्यादि ॥ आलोचनागुरुनिवेदन तदेव यदर्हति प्रतिचारजात तत्तदर्हत्वा दालोचनार्हं तच्छुद्ध्यर्थं य त्प्रायश्चित्त तद प्यालोचनार्हं
तथा लोचनैवे त्येवं सर्वत्र जावकरणात् । पडिक्कमणारिहे ॥ प्रतिक्रमण मिथ्यादुष्कृतन्तदर्हं ॥ तदुभयारिहे ॥ आलोचना प्रतिक्रमणार्हमित्यर्थः ॥ विवेगारिहे ॥
परित्यागशोध्य ॥ विउसग्गारिहे ॥ कायोत्सर्गार्हं ॥ तवारिहे ॥ निर्विकृतिकादितपःशोध्य ॥ छेदारिहे ॥ पर्यायच्छेदयोग्य ॥ मूलारिहे ॥ व्रतोपस्थापनार्हं ॥

हइ आलोयणं पडिच्छित्तए तंजहा आयारव आहारव जाव अवायदंसी पियधम्मे दढधम्मे । दसविहे
पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे जाव अणवठप्पारिहे पारंचियारिहे । दसविहे मिच्छत्ते प० तं० अध

ग्यहोय आत्मदोष आलोवाने तेकहेछे जातेंपूरो कुलेंपूरो इम जिम आठमे ठाणे यावत् क्षमावत दमवंत मायारहित पछे परितपे नही ॥ दशथा
नके सहित अणगार योग्यहोय आलोअवाने आलोअणतप अंगीकार करवाने ते कहेछे आचारवंत १ । धारणावत २ । यावत् परलोकें कष्टनो देख

अ णवठ्ठप.ि्हे ॥ यस्मि न्नासेविते कचन काल व्रते ष्वनवस्थाप्य कत्वा पश्चा च्चीर्णतया तद्दोषोपरतो व्रतेषु स्थाप्यते तदनवस्थाप्यार्हं ॥ पारचियारिहे ॥ एतद
धिक मिह्न तत्र यस्मिन् प्रतिषेविते लिङ्ग नेचकालतपोभि. पारचिको वहिर्भूत: क्रियते तत्पाराञ्चिकं तदर्हमिति पारांचिकोमिथ्यात्वमप्यनुभवे दतो मिथ्यात्व
निरूपणाय सूत्र तत्रा धर्म्मे श्रुतलक्षणविज्ञीनत्वा दनागमे ऽपौरुषेयादौ धर्मसज्ञा आगमबुद्धि र्मिथ्यात्व विपर्यस्तत्वादिति धर्मे कषच्छेदादिशुद्धे सम्यगश्रुते
आप्तवचनलक्षणे ऽधर्मसज्ञा सर्वएव पुरुषा रागादिमन्तो ऽसर्वज्ञाश्च पुरुषत्वा दर्हन्नवेत्यादि प्रमाणतो नाप्ता स्तदभावा न तदुपदिष्टं शास्त्र धर्मइत्यादि
कुविकल्पवशा दनागमबुद्धिरिति २ तथा उन्मार्गो निर्वृतिपुरो मति अपथा वस्तुतत्वापेक्षया विपरीतश्रद्धानज्ञानानुष्ठानरूप स्तत्र मार्गसंज्ञाकुवासनातो
मार्गबुद्धि: ३ तथा मार्गे उन्मागमज्ञेति प्रतीत ४ तथा अजीवे ष्व काशपरमाण्वादिषु जीवसज्ञा पुरुषवेदमित्यादि अभ्युपगमादिति तथा क्षितिजल
पवनहुताशन यजमानाकाशचद्रसूर्याख्या इतिमूर्त्तयोमहेश्वर सबधिन्योभवत्यष्टाविति ५ ॥ १ ॥ तथा जीवेषु पृथिव्यादि ष्वजीवसंज्ञा यथा न भवन्ति
पृथिव्यादयो जीवा उच्छ्वासादीना प्राणिधर्माणा मनुपलम्भात् घटवदिति ६ तथा असाधुषु षड्जीवनिकायवधानिवृत्ते ष्वौद्देशिकादिभोजि ष्वब्रह्मचारि

म्मेधम्मसन्ना धम्मेअधम्मसन्ना उम्मग्गेमग्गसन्ना मग्गेउम्मग्गसन्ना अजीवेसुजीवसन्ना जीवेसुअजीवसन्ना

नार धर्मने विषे प्रीतिछे दृढधर्मी धर्मथी नचूके ॥ दशप्रकारे प्रायश्चित्त कह्यो तेकहेछे आलोअणायोग्य गुरुनिवेदन यावत् अनवस्थाप्ययोग्य केतलो
काल व्रतथी अलगोकरी दोषटालो पछे व्रतमा थापवो पारचितथी अलगोकरे ॥ दशप्रकारे मिथ्यात्व कह्यो ते कहेछे अधर्मनेविषे धर्मनीसज्ञा धर्मने
विषे अधर्मनीबुद्धि मार्गनेविषे उन्मार्गनीबुद्धि ३ । उन्मार्गनेविषे मार्गनी बुद्धि अजीवने जीवकरी जाणे आकाशनापरमाणुप्रमुखने जीव पृथ्व्यादि

पु साधुसंज्ञा यथा साधव एते सर्वपापप्रवृत्ता अपि ब्रह्ममुद्राधारित्वा दित्यादिविकल्परूपेति ७ तथा साधुषु ब्रह्मचर्यादिगुणान्विते ष्वसाधुसंज्ञा एतेहि कुमारप्रव्रजिता नास्त्ये षा गति रपुत्रत्वात् स्नानादिविरहितत्वाद्वे त्याटिविकल्पात्मिकेति ८ तथा अमुक्तेषु सकर्मसुलोकव्यापारप्रवृत्तेषु मुक्तसंज्ञा यथा अ णिमाद्यष्टविधं प्राप्यैश्वर्यं कृतिन. सदा मोदन्ते निर्वृतात्मान स्तीर्णाः परमदुस्तरमित्यादि विकल्पात्मिकेति ९ तथा मुक्तेषु सकलकर्मकृतविकारविरहिते ष्वनन्तज्ञानदर्शनसुखवीर्ययुक्तेषु अमुक्तसंज्ञा न सत्येवे दृशा मुक्ता अनादिकर्मसंयोगस्य निवर्त्तयितु मशक्यत्वा दनादित्वा देव आकाशात्मयोगस्येवेति न सन्तिवा मुक्ता मुक्तस्य विध्यातदीपकल्पत्वा दात्मनएव वा नास्तित्वादित्यादि विकल्परूपेति १० अनन्तर मिथ्यात्वविषयतया मुक्ता उक्ता इदानी तदधि कारा त्तीर्थकरत्रयस्य दशस्थानकानुपातेन मुक्तत्व मभिधीयते ॥ चदप्पहेणइत्यादि ॥ सूत्रत्रयमपि कण्ठ्य नवर ॥ सिद्धे जावत्ति ॥ यावत्करणात् ॥ सिद्धेबुद्धे मुत्तेअन्तकडेसव्वदुक्खप्पहीणेत्ति ॥ सूत्र न्द्रष्टव्यमिति उक्ततीर्थकराद्य महापुरुषाइति तत्सम्बन्धि ॥ पुरिससीहेत्यादि ॥ सूत्रत्रय कण्ठ्य नैरयिकतयेति प्रागुक्त

असाहूसुसाहुसन्ना साहूसुअसाहुसन्ना अमुत्तेसुमुत्तसन्ना मुत्तेअमुत्तसन्ना। चदप्पहेणं अरहा दसपुव्वस तसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। धम्मेणं अरहा दसवाससयसहस्साइं सव्वाउयंपालइत्ता

कने विषे अजीवनी बुद्धि साधुनेविषे असाधुनीबुद्धि असाधुने साधुनीबुद्धि साधुकरीजाणे कर्मथीनथीमुकाणा तेह ने मुक्तकरी जाणे हरिहरादिक ने सकलकर्मथी मूकाणा अनतज्ञानी तेहने अमुक्तजाणे ॥ चद्रप्रभ अरिहत दशलाखपूर्व सर्वआउखू पालीने सिद्धथया यावत् प्रहीणसर्वदुखथी॥ ध र्मनाथ अरिहत दशलाखवरस यावत् प्रहीणथया नमिनाथ अरिहत दशहज्जार सवआउषु पालीने सिद्धा यावत् प्रहीणथया पुरुषसीह पाचमो

नारकासन्नाय चेत्रतो भवनवासिनइति तन्नतसूत्तद्दयं कण्ठ्यञ्च नवरं असुरानागसुवण्णा विज्जूअग्गीयदीवउदहीय दिसिपवणथणियनामा दसहाएएभवण वासीति ॥ १ ॥ अनेन क्रमेण श्वत्थादय चैत्यवृत्ताः ये सिद्धायतनादिद्वारेषु श्रूयन्तइति प्राग्भवनवासिनो देवा उक्ता स्तेषाच किल सुख भवतीति सुख

सिद्धे जाव प्पहीणे । नमीणं अरहा दसवाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे । पुरिससी हेण वासुदेवे दसवाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववन्ने । नेमीण अरहा दसधणूइं उड्ढ उच्चत्तेण दसवाससयाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे । कण्हेणं वासुदेवे दस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण दसवाससयाइं सव्वाउय पालइत्ता तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववन्ने । दसविहा भवणवासी देवा पण्णत्ता तंजहा असुरकुमारा जाव थणियकुमारा एएसिणं दसविहाणं भवणवा सीणं देवाण दस चेइयरुक्खा पण्णत्ता तंजहा अस्सोठसत्तिवन्ने सामलिउंबरसिरीसदहिवन्ने वंजुलपलास

वासुदेव दशहज्जार वरस सर्व आउखो पालीने छठी तमापृथ्वीने विषे नारकीपणें ऊपनो ॥ नमिनाथ अरिहत दशधनुष ऊचा ऊंचपणे दशसेंवर सनु सर्व आउखो पालीने सीधा यावत् प्रहीण॥ कृष्णवासुदेव दसधनुष उचा उंचपणें दशसेवरसनु सर्व आयू पालीने त्रीजीवालुकप्रभा पृथ्वीने नार कीपणे ऊपना ॥ दशप्रकारे भवनवासी देव कह्या तेकहेछे असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार ॥ ए दशप्रकारना भवनवासी देवताने दश चैत्यवृक्ष कह्या तेकहेछे अश्वत्थ १ । सत्तिवन्न २ । सामली ३ । उंबर ४ । सरसडो ५ । दधिपर्ण ६ । वंजुल ७ । पलास ८ । वड ९ । कणयर १० ॥ १ ॥ दशप्र

सामान्यतस्त्राह ॥ दसविहेइत्यादि ॥ आरोग्गगाहा ॥ आरोग्यं नीरोगता दीर्घमायु चिरंजीवित शुभमितीह विशेषणं द्रष्टव्यमिति ॥ अड्ढेज्जति ॥ आढ्यत्वं धन पतित्व सुखकारणत्वा त्सुख अथवा आढ्यै क्रियमाणा ईज्या पूजा आढ्येज्या प्राकृतत्वा दड्ढेज्जति ३ ॥ कामेत्ति ॥ कामौ शब्दरूपे सुखकारणत्वात् सुखं ४ ॥ एवभोगत्ति ॥ भोगा गंधरसस्पर्शाः ५ तथा सन्तोषो ऽल्पेच्छता तत्सुखमेवा नन्दरूपत्वा त्सतोषस्य उक्तञ्च आरोग्गसारियंमा णुसत्तणसव्वसारिओधम्मो भिज्जामिच्छियसारा सुहाइसतोससाराइति ॥ १ ॥ ६ ॥ अत्थित्ति ॥ येन येन यदा यदा प्रयोजन त त्तत्तदा तदा स्ति भवति जायतइति सुख मानन्दहे तुत्वादिति ७ ॥ सुहभोगत्ति ॥ शुभो ऽनिन्दितो भोगो विषयेषु भोगक्रियेति स सुखमेव सातोदयसपाद्यत्वा त्तस्येति ८ तथा ॥ निक्खममेवेत्ति ॥ निष्क्रमणं निष्क्रमो ऽविरतिजवालादितिगम्यते प्रव्रज्येत्यर्थ इहच द्विर्भावो नपुंसकताच प्राकृतत्वात् एवकारो ऽवधारणे ऽयमर्थ निष्क्रमणमेव भवस्थाना सुख नि राबाध स्वायत्तानन्दरूपत्वात् अतएवो च्यते ॥ दुवालसमासपरियाये समणे निग्गथे अणुत्तराण देवाण तेउलेस विइवइत्ति ॥ तथा नैवास्तिराजराज स्यतत्सुखनैवदेवराजस्य यत्सुखमिहैवसाधो र्लोकव्यवहाररहितस्येति ॥ १ ॥ शेषसुखानिहि दुःखप्रतीकारमात्रत्वा त्सुखाभिमानमात्रजनकत्वाच्च तत्वतो न सुखभवतीति ९ ॥ तत्तोअणावाहेत्ति ॥ ततो निष्क्रमणसुखानन्तर मनाबाध न विद्यते आबाधा जन्मजरामरणक्षुत्पिपासादिका यत्र तदनाबाधं मो

वप्पा यएयकखियारुक्खेय ॥ १ ॥ दसविहे सुक्खे प० तं० आरोग्गदीहमाउ अड्ढेज्जंकामभोगसंतोसो अत्थि

कारना सुख कह्या तेकहेछे नीरोगपणु १ । मोटुआयु २ । धनाढ्यपणुं ३ । कामभोग स्त्रीआदिकनो सुख ४ । सतोष ५ । अस्तिसुख सुखकारी भो गजिवारे जेजोईये तिवारे ते मले ६ । ७ निष्क्रम ते दीक्षासर्वसुखनुं कारण ८ । अनाबाध ते मोक्षसुख १० ॥ १ ॥ दशप्रकारे उपघात कह्या चारि

त्तसुखमित्यर्थं एतदेवच सर्वोत्तमं यतउक्तं नविअत्थिमाणुसाण तंसोक्खंनवियसव्वदेवाण जसिद्धाणसोक्ख अव्वाबाहउवगयाणति ॥ १ ॥ १० निष्क्रमणसु
ख चारित्रसुख मुक्त तत्वा नुपहत मनाबांधसुखाये त्यत श्चारित्रस्ये तत् साधनस्य भक्तादे र्ज्ञानादेर्यो पघातनिरूपणाय सूत्रं तत्र यदुद्गमेना धाकर्मादिना
षोडशविधेनो पहनन विराधन चारित्रस्या कल्प्यतावा भक्तादेः स उद्गमोपघात एवमुत्पादनाया धात्यादिदोषलक्षणया यःस उत्पादनोपघातः ॥ जहाप
चट्ठाणेत्ति ॥ भणना त्तत्सूत्र मिह दृश्यं कियदृत आह जावपरीत्यादि तच्चेद ॥ एसणोवघाए ॥ एषणया शङ्कितादिभेदया यः सएषणोपघातः ॥ परिकम्मो
वघाए ॥ परिकर्म वस्त्रपात्रादिसमारचन तेनो पघातः स्वाध्यायस्यप्रमादिना शरीरस्य संयमस्य वो पघातः परिकर्मोपघातः ॥ परिहरणोवघाए ॥ परि
हरणा अलाक्षणिकस्या कल्प्यस्य वोपकरणस्य सेया तयायः सपरिहरणोपघात स्तथा ज्ञानोपघात' श्रुतज्ञानापेक्षया प्रमादतो दर्शनोपघातः शङ्का
दिभि श्चारित्रोपघातः समितिभङ्गादिभिः ॥ अवियत्तोवघाएत्ति ॥ अवियत्त मप्रीतिक तेनो पघातो विनयादेः ॥ सारक्खणोवघाएत्ति ॥ संरक्षणेन शरी
रादिविषये मूर्च्छयो पघात. परिग्रहविरतेरिति सरक्षणोपघातइति उपघातविपक्षीभूतविशुद्धे र्निरूपणाय सूत्र तत्रो द्गमादिविशुद्धि र्भक्तादे र्निरवद्य

सुहजोगनिरुक्कं समेवतत्तोच्चुणावाहे ॥ १ ॥ दसविहे उवघाए पन्नत्ते तंजहा उग्गमोवघाए उप्पायणोवघाए जहापंचठाणे जाव परिहरणोवघाए णाणोवघाए दंसणोवघाए चरित्तोवघाए अवियत्तोवघाए सारक्खणोव

अविराधना तेकहेछे उद्गमदोष ते आधाकर्मादि उत्पादना धात्रदोष जिम पांचमेंठाणें यावत् अकल्प उपगरणनी सेवा ज्ञाननी आशातना दर्श
नोपघात शंकाआणे चारित्रोपघात सुमतिभांजे विनयादिक नकरे ते अवियत्तोपघात शरीरादिकविषे मूर्छा ॥ दशप्रकारे विशुद्धि कही ते कहेछे

ता ॥ जावत्ति ॥ करणात् ॥ एसणेत्यादि ॥ बाध्यमित्यर्थ स्तत्र परिकर्मणा वसत्यादि सारक्खणलक्षणेन क्रियमाणेन विशुद्धि र्या सा संयमस्य सा परिकर्म विशुद्धिः परिहरणया वस्त्रादेः शास्त्रीयया सेवनया विशुद्धिः परिहरणाविशुद्धिः ज्ञानादित्रयविशुद्धय स्तदाचारपरिपालनतः भवियत्तस्या प्रीतिकस्य विशोधि स्तन्निवर्त्तना. इतियत्तिविशोधिः सरक्षण संयमार्थ मुपध्यादे स्तेन विशुद्धि शारिकस्येति सरक्षणविशुद्धि रथवो ह्रमाद्युपाधिका दशप्रकारापीयं चेतसो विशुद्धि विंशुद्ध्यमानता भणितेति इदानीं चित्तस्येव विशुद्धिविपक्षभूत मुपध्याद्युपाधिकं संक्लेश मभिधातु मुपक्रमते तत्र सूत्र ॥ दसेत्यादि ॥ संक्लेशो ऽसमाधि रुपधीयत उपष्टभ्यते सयमः सगभिशरीरेण येन स उपधि र्वस्त्रादि स्तद्विषय. संक्लेश उपधिसंक्लेश एव मन्यनापि नवरं ॥ उवस्सयत्ति ॥ उपाश्रयो वसति स्तथा कषाया एव कषायेर्वा संक्लेशः कषायसंक्लेश स्तथा भक्तपानाश्रितः संक्लेशो भक्तपानसंक्लेश स्तथा मनसो मनसिवा संक्लेशो वाचा संक्लेशः काय माश्रित्य संक्लेशइति विग्रह स्तथा ज्ञानस्य संक्लेशो ऽविशुद्ध्यमानता स ज्ञानसंक्लेश एव दर्शनचारित्रयोरपीति एतद्विपक्षो ऽसं क्लेश स्तमधुनाह ॥ दसेत्यादि ॥ कायस्य मसंक्लेशश्च विशिष्टे जीवस्य वीर्यबले सति भवतीति सामान्यतो बलनिरूपणायाह ॥ दसेत्यादि ॥ श्रोत्रेन्द्रिया

घाए । दसविहा विसोही पन्नत्ता तंजहा उग्गमविसोही उप्पायणविसोही जाव सारक्खणविसोही। दसवि हेसंकिलेसे प० तं० उवहिसंकिलेसे उवस्सयसंकिलेसे कसायसंकिलेसे भत्तपाणसंकिलेसे मणसंकिलेसे वय

उद्गमविशोधि उत्पादनाविशोधि यावत् सारक्खणविशोधि ॥ दशप्रकारें संकिलेसकह्यो ते असमाधि ते कहेछे उपगरणसंकिलेस उपाश्रयसंकिलेस कषाय संकिलेस भक्तपानसंकिलेस मननो संकिलेस वचननो संकिलेस कायानो संकिलेस ज्ञाननो संकिलेस दर्शनने संकिलेस चारित्रसंकिलेस ॥

दीना पचानां बलं स्वार्थग्रहणसामर्थ्यं ॥ आवत्ति ॥ चक्षुरिन्द्रियबलादिवाच्यमित्यर्थः ज्ञानबल मतीतादिवस्तुपरिच्छेदसामर्थ्यं चारित्रसाधनतया मोक्षसा धनसामर्थ्यं वा दर्शनबलं सर्ववेदिवचनप्रामाण्या दतीन्द्रियादियुक्तिगम्यपदार्थरोचनलक्षण चारित्रबलं यद्दुष्करमपि सकलसंगवियोग करो त्यात्मा वचान त मव्याबाध मेकान्तिक मात्यंतिक मात्मायत्त मानन्द माप्नोति तपोबलं यदनेकभवार्जित मनेकादु:खकारण निकाचितकर्मग्रंथि क्षपयति वीर्य मेव बलं वीर्यबल गमनागमनादिकासु विचित्रासु क्रियासु वर्त्तते यच्चापनीयमकलकलुषपटल मनवरतानंदभाजन भवतीति चारित्रबलयुक्त' सत्यमेव भाषतइ ति तन्निरूपणायाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ संत' प्राणिन: पदार्था मुनयोवा तेभ्यो हित सत्यं दशविध तत्प्रज्ञप्त तद्यथा ॥ जणवयगाहा ॥ जणवयत्ति ॥ सत्यशब्द. प्रत्येक मभिसंबध्यनीय स्ततश्च जनपदेषु देशेषु यदाद र्थवाचकतया रूढ देशातरेपि तत्तदर्थवाचकतया प्रयुज्यमान सत्य मवितथमिति जनपदसत्य यथा कौंक

संकिलेसे कायसंकिलेसे नाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्तसकिलेसे । दसविहे असंकिलेसे प० तं० उव हिअसंकिलेस जाव चरित्तअसकिलेसे । दसविहेवले प० त० सोइंदियबले जाव फासिंदियबले नाणबले दसणबले चरित्तबले तवबले वीरियबले दसविहे सच्चे प० तं० जणवयसम्मयठवणा नामेरूवेपडुच्चसच्चेय

दशप्रकारे असंकिलेस कह्या तेकहेछे उपधिअसकिलेस यावत् चारित्रअसकिलेस॥ दश प्रकारे बल कह्या ते कहेछे श्रोतेंद्रीनुं बल यावत् फरसेंद्रीनुं ब ल ५ । ज्ञानबल ६ । दर्शनबल ७ । चारित्रनुं बल ८ । तपबल ९ । वीर्यबल १० ॥ दशप्रकारे सत्य कह्यो ते कहेछे जनपद कुलमा पाणीनेपिच्चकहे स म्मत अरविंद तेज पकज थापना प्रतिमादि नामकुलवर्द्धन देवदत्तादि रूपवेषमांटे यती प्रत्ययसत्य घणोगलेछे व्यवहार डुंगरबलेछे भावसत्य जो

णादिषु पयः पिच्चं नीरमुदकमित्यादि सत्यत्वञ्चास्यादुष्टविवक्षाहेतुत्वात् नानाजनपदेष्विष्टार्थप्रतिपत्तिजनकत्वाद् व्यवहारप्रवृत्तेरेवं शेषेष्वपि भावना कार्येति ॥ सम्मयत्ति ॥ संमतञ्च तत्सत्यञ्चेति संमतसत्यं तथाहि कुमुदकुवलयोत्पलतामरसानां समाने पङ्कसम्भवे गोपालादीनामपि संमतमरविन्दमेव पङ्कजमिति अतः तत्र संमततया पङ्कजमिति सत्यं कुवलयादावसत्यो ऽसंमतत्वादिति ॥ ठवणत्ति ॥ स्थाप्यत इति स्थापना या लेप्यादिकर्माक्षनिक्षेपादिविन्यासेन स्थाप्यते तद्विषये सत्यं स्थापनासत्यं यथा अजिनोऽपि जिनोऽयमनाचार्योऽप्याचार्योऽयमिति ॥ णामेत्ति ॥ नाम अभिधानं तत् सत्यं नामसत्यं यथा कुलमवर्धयन्नपि कुलवर्धन उच्यते एवं धनवर्धन इति ॥ रूवेत्ति ॥ रूपापेक्षया सत्यं रूपसत्यं यथा प्रपञ्चयति प्रव्रजितरूपं धारयन् प्रव्रजित उच्यते न चासत्यतास्येति ॥ पडुच्चसच्चेयत्ति ॥ प्रतीत्य आश्रित्य वस्त्वन्तरं सत्यं प्रतीत्यसत्यं यथा अनामिकाया ह्रस्वत्वं दीर्घत्वं चेति तथाहि तस्या अनन्तपरिणामस्य द्रव्यस्य तत्तत्सहकारि-
१ कारणसन्निधाने तत्तद्रूपमभिव्यज्यत इति सत्यता ॥ ववहारत्ति ॥ व्यवहारेण सत्यं व्यवहारसत्यं यथा दह्यते गिरिः गलति भाजनं अत्र च गिरिगततृणादि-
दाहे व्यवहारः प्रवर्त्तते उदके च गलति सतीति ॥ भावत्ति ॥ भावं भूयिष्ठशुक्लादिपर्यायमाश्रित्य सत्यं भावसत्यं यथा शुक्ला बलाकेति सत्यपि हि पञ्चवर्णसं-
भवे शुक्लवर्णोत्कटत्वात् शुक्लेति ॥ जोगेत्ति ॥ योगतः संबन्धतः सत्यं योगसत्यं यथा दण्डयोगाद्दण्डः छत्रयोगाच्छत्र एव उच्यत इति इगम ओपम्यसत्यमिति
उपमा औपम्यं तेन सत्यमौपम्यसत्यं यथा समुद्रवत्तडागः देवोऽयं सिंहस्त्वमिति सर्वत्रैवकारः प्रथमैकवचनार्थो द्रष्टव्य इहेति सत्यविपक्षं मृषाह ॥ दसेत्यादि ॥
मोसेत्ति ॥ प्राकृतत्वात् मृषा अनृतमित्यर्थः ॥ कोहेगाहा ॥ कोहेत्ति ॥ क्रोधे निःसृतमिति संबन्धः क्रोधाश्रितं मृषेत्यर्थः तत्र यथा क्रोधाभिभूतो ऽदासमपि
दासमभिधत्त इति माने निःसृतं यथा मानध्मातः कश्चित्स्वल्पधनोऽपि पृष्टः सन्नाह महाधनोऽहमिति ॥ मायत्ति ॥ मायायां निःसृतं यथा माया-
कारप्रभृतय आहुः नष्टो गोलक इति ॥ लोहेत्ति ॥ लोभनिःसृतं वणिक्प्रभृतीनामन्यथा क्रीतमेवं एव क्रीतमित्यादि ॥ पिज्जत्ति ॥ प्रेमणि निःसृतं अति

रक्षानां दासोह तवेत्यादि ॥ तहेवदोसियत्ति ॥ द्वेषे निःश्रितं मत्सरिणां गुणवत्यपि निर्गुणोय मित्यादि ॥ हासेत्ति ॥ हासे निश्रित यथा कदर्पिकाणां कस्मि
श्चि त्कस्यचि त्सम्बन्धिनि गृहीते पृष्टाना दृष्ट मित्यादि ॥ भयेत्ति ॥ भयनिश्रितं तस्करादिगृहीताना तथा तथा असमंजसाभिधान ॥ अक्खाइयत्ति ॥
आख्यायिकानिश्रित तत्प्रतिबद्धो ऽसत्प्रलाप ॥ उवघायनिस्सियत्ति ॥ उपघ ते प्राणिवधे निश्रित माश्रित दशम मृषा अचौरे चौरोयमित्यभ्याख्यानवचन
मृषाशब्द स्त्वत्रयो ऽलिङ्गश्चेति सत्यासत्ययोगे मिश्र वचन भवतीति तदाह ॥ दसेत्यादि ॥ सत्यंच तन्मृषाचेति प्राकृतत्वा त्सच्चामोसति ॥ उप्पन्नमीसएत्ति ॥
उत्पन्नविषय मिश्र सत्यमृषा उत्पन्नमिश्र तदेवो त्पन्नमिश्रक यथैक नगर अधिकृत्या स्मि न्नद्य दशदारका उत्पन्ना इत्यभिदधतस्तन्न्यूनाधिकभावे व्यव
हारतो स्य सत्यमृषात्वात् श्व स्ते शत दास्यामी त्यभिधाय पचाश त्यतिदत्तायां लोके मृषात्वादर्शना दनुत्पन्नेष्वेवा दत्तेष्वेववा मृषात्वसिद्धेः सर्वथा

वयहारभावजोगे दसमेउवम्मसच्चेय ॥ १ ॥ दसविहे मोसे प० तजहा कोहेमाणेमाया लोभेपिज्जेतहेवदोसेय
हासभयेअखाइय उवघाएनिस्सिएदसमे ॥ १ ॥ दसविहे सच्चामोसे प० तंजहा उप्पन्नमीसए विगयमीसए

गसत्य दश दसमो उपमासत्य समुद्रसरखुंतलावळे । एउपमासत्य ॥ १ ॥ दशप्रकारे मृषासत्य कह्या ते कहेछे क्रोधाश्रित १ । मानाश्रित २ । जिम
अनामिका आश्रीने दीर्घ अने नाहनीआंगुली मायाश्रित ३ । लोभाश्रित ४ । प्रेमथी ५ । तिमद्वेषथी ६ । हास्याश्रित ७ । भयाश्रित ८ । आख्यायि
विकथाश्रित ९ । उपघात ते प्राणीवधने आश्री ते खोटु आलदेई हणवो अचौरचौरोयं ॥ १ ॥ दशप्रकारें सत्यामृषा कह्युं ते कहेछे उपन्नमिश्रित ।
यथा आ नगरमा सोबालक ऊपना अधिकाओछा माटे ते सत्यामृषा विगतमिश्रित आ नगरमा दश वृद्धमूआ आनगरमां दश बालक उपना दशवृद्ध

ाियाभावेनसर्वथा व्यत्यया द्देव विगतादिष्वपि भावनीयमिति १ ॥ विगतमीसएत्ति ॥ विगतविषयं मिश्रकं विगतमिश्रकं ग्राम मधिकृत्या स्मि न्नद्य दश वृद्धाविगता इत्यभिदधतो न्यूनाधिकभावे मिश्रमिति २ ॥ उप्पण्णविगयमीसएत्ति ॥ उत्पन्नश्च विगतंचे त्युत्पन्नविगते तद्विषय मिश्रक मुत्पन्नविगतमिश्रक यथै क पत्तन मधिकृत्या स्मि न्नद्य दश दारका जाता दशच वृद्धा विगता इत्यभिदधत स्तन्न्यूनाधिकभावइति ३ जीवमीसएत्ति ॥ जीवविषय मिश्रं सत्या सत्यं जीवमिश्र यथा जीवन्मृतकृमिराशौ जीवराशिरिति ४ ॥ अजीवमीसएत्ति ॥ अजीवाना शिल्प मिश्र मजीवमिश्र यथा तस्मिन्नेव प्रभूतकृमिराशा वजीवराशिरिति ५ ॥ जीवाजीवमीसएत्ति ॥ जीवाजीवविषय मिश्रकं जीवाजीवमिश्रक यथा तस्मिन्नेव जीवन्मृतकृमिराशौ प्रमाणनियमे नेतावतो जी वन्ये तावंतश्च मृताइत्यभिदधत स्तन्न्यूनाधिकत्वे ६ ॥ अणतमीसएति ॥ अनतविषयं मिश्रक मनन्तमिश्रकं यथा मूलकदादौ परीत्तपत्रादिम त्यनन्तकायोय मित्यभिदधतः ७ ॥ परित्तमीसएत्ति ॥ परीत्तविषय मिश्रका परीत्तमिश्रकं यथा अनन्तकायलेशवति परीत्ते परीत्तोय मित्यभिदधतः ८ ॥ अद्धामीसएत्ति ॥ कालविषय सत्यासत्यं यथा कश्चित् कस्मिंश्चि त्प्रयोजने सहाया स्त्वरय न्परिणतप्राये वासर एव रजनीवर्त्ततइति ब्रवीतीति ९ ॥ अद्धाद्धामीसएत्ति ॥ अ द्धादिवसो रजनीया तदेकदेशः प्रहरादिः अद्धाद्धा तद्विषय मिश्रक सत्यासत्यं अद्धाद्धामिश्रकं यथा कश्चि त्कस्मिंश्चित् प्रयोजने प्रहरमात्रएव मध्याह्न इत्याह १० भाषाधिकारा त्सकलभाषणीयार्थव्यापक सत्यभाषारूप दृष्टिवाद पर्यायतो दशधाह ॥ दिठ्ठिइत्यादि ॥ दृष्टयो दर्शनानि वदन वादो दृष्टीना वा

जीवमीसए अजीवमीसए जीवाजीवमीसए अणतमीसए परित्तमीसए अद्धामीसए अद्धद्धामीसए । दिठि

मूआ जीवमिश्रित जीवतामूआ कृमिदेखीजीवराशिकहे ॥ घणाकृमि मृतदेखीअजीवराशिकहे जीवता मूआ कृमदेखी प्रमाणकहीये आतलामूआ आ

दो दृष्टिवादो दृष्टीनां वा पातो यस्मिन्नसौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय इहाख्यायंतइत्यर्थः स्तस्य दशनामधेयानि नामानीत्यर्थः स्तद्यथा दृष्टिवादइति प्रति पादितमेव इतिशब्द उपदर्शने वाशब्दो विकल्पे तथा हिनोति गमयति जिज्ञासित मर्थमिति हेतु रनुमानोत्थापकं लिङ्ग मुपचारा दनुमानमेववा तद्वादो हेतुवाद स्तथा भूताः सद्भूताः पदार्था स्तेषा वादो भूतवाद स्तथा तत्वानि वस्तूना मैदपर्याणि तेषा वाद स्तत्ववाद स्तथ्योवा सत्योवाद स्तथ्य वाद स्तथा सम्यग्विपरीतोवादः सम्यग्वाद स्तथा धर्म्माणा वस्तुपर्यायाणा धर्मस्य वा चारित्रस्य वादो धर्मवाद स्तथा भाषासत्यादिका तस्याः विचयो नि र्णयो भाषाविचय भाषायावा वाचो विजय' समृद्धि र्यस्मिन् सभाषाविजय स्तथा सर्वश्रुता त्पूर्वं क्रियन्तइति पूर्वाणि उत्पादपूर्वादीनि चतुर्दश तेषु गतो ऽभ्यंतरीभूत स्तत्स्वभावइत्यर्थः इति पूर्वगत स्तथानुयोगः प्रथमानुयोग स्तीर्थकरादिपूर्वभवादिव्याख्यानग्रन्थो गण्डिकानुयोगश्च भरतनरपतिवंशजातानां निर्वाणगमनानुत्तरविमानगमनवक्तव्यताव्याख्यानग्रन्थइति द्विरूपे ऽनुयोगे गतो ऽनुयोगत एतौच पूर्वगतानुयोगगतौ दृष्टिवादांशावपि दृष्टिवादतयो क्ता ववयवे समुदायोपचारादिति तथा सर्वे विश्वे तेच ते प्राणाश्च द्वीन्द्रियादयो भूताश्च तरवो जीवाश्च पञ्चेन्द्रियाः सत्वाश्च पृथिव्यादयइति द्वन्द्वे सति

वायस्सणं दस नामधिज्जा प० तजहा दिट्ठिवाएइवा हेतुवाएइवा भूयवाएइवा तच्चावाएइवा सम्मावाएइवा धम्मावाएइवा भासाविजयेइवा पुव्वगएइवा अणुजगएइवा सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहेइवा। दसविहे सत्थे

तला जीवछे कंदादिकनेविषें प्रत्येक पत्रादिछतें अनंतकाय कहे थोऊ अनतकायछते प्रत्येककहे वादलनु अंधारुं देखीदिवसछतें रातिपडी कहे को ईकप्रयोजने प्रहर १ थये मध्यान्हथयो कहे ॥ दृष्टिवादना दश नाम कह्याछे ते कहेछे दृष्टिवाद १। हेतुवाद २। भूतवाद ३। तथ्यवाद ४। स

धर्मवादस्य स्यात् सोऽयं सूक्ष्मभंगा भावग्रतीति सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहः सुखावहत्वञ्च संयमप्रतिपादकत्वात् सत्त्वानां निर्वाणहेतुत्वाचेति प्राणादी ॥
मा सुखावहो दृष्टिवादोऽशस्त्ररूपत्वात् शस्त्रमेव हि दुःखावहमिति शस्त्रप्ररूपणायाह ॥ दसेत्यादि ॥ शस्यते हिंस्यतेऽनेनेति शस्त्रं ॥ सत्थमग्गीगाहा ॥ शस्त्रं
हिंसकं वस्तु तच्च द्विधा द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतः स्वायमाह अग्निरनलः स च विसदृशानलापेक्षया स्वकायशस्त्रं भवति पृथिव्याद्यपेक्षया तु परकाय
शस्त्रं १ विषं स्थावरजंगमभेदं २ लवणं प्रतीतं ३ स्नेहः तैलघृतादिः ४ क्षारो भस्मादिः ५ अम्लं काञ्जिकं ६ ॥ भावांशत्ति ॥ इह द्रष्टव्य तेना भावो भावरूपं
शस्त्रं किल हित्वाङ्ग दुःप्रयुक्तं अकुशलं मनो मानसं ७ वाग्वचनं दुःप्रयुक्ता ८ कायश्च शरीरं दुःप्रयुक्त एव ९ एवं कायस्य हिंसाप्रवृत्तौ खड्गादेरुपकारणत्वा
त्वायमरणोनैव तद्ग्रहणं द्रष्टव्यमिति अविरतिश्च प्रत्याख्यानमथवा अविरतिरूपो भावः शस्त्रमिति १० अविरत्यादयो दोषाः शस्त्रमित्युक्तमिति दोषप्र
स्तावात् दोषविशेषनिरूपणायाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ तज्जाएत्यादि वृत्तं ॥ एतेहि गुरुशिष्ययोः वादिप्रतिवादिनोर्वा वादाश्रया एव लभ्यते तत्र तस्य गुर्वादे
र्जातं जातिः प्रकारो वा जन्ममर्मकर्मादिलक्षणं तज्जातं तद्दोषदूषणमितिकृत्वा दोषः स्तज्जातदोषः स्याथाविधकुलादिना दूषणमित्यर्थोऽथवा तस्मात् प्रति

पण्णत्ते तंजहा सत्थमग्गीविसंलोणं सिणंहोखारमंबिलं दुप्पउत्तोमणोवाया काओभावोयअविरई ॥ १ ॥ दसविहे ॥

स्यक्तवाद ५ । धर्मवाद ६ । भाषाविजय ७ । पूर्वगत ८ । अनुजोगगत ९ । सर्वप्राण भूत जीव सत्व सुखावह १० ॥ दशप्रकारे शस्त्र कह्या ते कहेछे ॥
अग्निशस्त्र १ । विष २ । लूण ३ । स्नेह तैल घृत ४ । खार भस्मादि ५ । काजी प्रमुख खाटु ६ । माठाराते प्रवर्त्तांव्या मन ७ । वचन ८ । काया ९ ।
एता शस्त्र अविरति १० ॥ १ ॥ दशप्रकारे दोष कह्यो तेकहेछे तज्जातदोष जातिकुलनुं दूषण देवूं १ । मतिभंग बुद्धिनो नाशविस्मृतलक्षण २ । प्र

वाद्यादेः सकाशाज्जातःक्षोभा स्मुखस्तम्भादिलक्षणो दोष स्तज्जातदोष १ स्तथा स्वस्यैव मते बुद्धे भंङ्गो विनाशो मतिभङ्गोविस्मृत्यादिलक्षणो दोषो मति भगदोष २ स्तथा प्रशास्ता ऽनुशासको मर्यादाकारी सभानायकः सभ्योवा तस्मा द्विष्टा दुपेक्षका द्वा दोषः प्रतिवादिनो जयदानलक्षणो विस्मृतप्रमेय प्रतिवादिनः प्रमेयस्मारणादिलक्षणोवा प्रशास्तृदोषः ३ इह शाशब्दो लघुश्रुतिरिति तथा परिहरण मासेवा स्वदर्शनस्थित्या लोकरूढ्यावा ऽनासेव्यस्य तदेवदोषः परिहरणदोषो ऽथवा परिहरण मनासेवन समारूढ्या सेव्यस्य वस्तुन स्तदेव तस्मा द्वा दोषः परिहरणदोषो ऽथ वादिनोपन्यस्तस्य दूषणस्या स म्यग्परिहारो जात्युत्तरपरिहरणदोषइति यथा बौद्धेनो क्त मनित्यः शब्दः कृतकत्वात् घटवदिति अत्रमीमांसक. परिहारमाह ननु? घटगत कृतकत्वं शब्दस्या नित्यत्वसाधनायो पन्यस्यते शब्दगतवा यदि घटगत तदातच्छब्दे नास्ती त्यसिद्धताहेतो रथ शब्दगत तत्रा नित्यत्वेन व्याप्त मुपलब्ध मित्यसाधारणा नैकान्ति कोहेतु रित्ययं न सम्यक्परिहार एवंहि सर्वानुमानोच्छेदप्रसगः अनुमानहि साधनधर्ममात्रा त्साध्यधर्ममात्रनिर्णयात्मक मन्यथा धूमा दनलानुमानमपि न सिध्येत् तथाह्यग्नि रत्र धूमा द्यथा महानसे अत्र विकल्पति किमत्रेति शब्दनिर्दिष्टपर्वतैकप्रदेशादिगतधूमो ऽग्निसाधनायो पात्त उत ॥ महानसगतो यदि पर्व तादिगतः सो ऽग्निना न व्याप्तः सिद्ध इत्यसाधारणानैकान्तिकोहेतु रथ महानसगत स्तदा नासौपर्वतैकदेशे वर्त्तत इत्यसिद्धोहेतुरिति अय परिहरणदोष इति ४ तथा लक्ष्यते तदन्यव्यपोहेना वधार्यते वस्त्व नेनेति लक्षण स्वञ्चतल्लक्षणञ्च स्वलक्षणं यथा जीवस्योपयोगो यथावा प्रमाणस्य स्वपरावभासकज्ञानत्व तथा करोतीति कारण परोक्षार्थनिर्णयनिमित्त मुपपत्तिमात्रं यथा निरुपमसुखः सिद्धो ज्ञानानाबाधप्रकर्षात् नात्र किल सकललोकप्रतीतः साध्यसाधन धर्मानुगतो दृष्टान्तो स्ती त्युपपत्तिमात्रता दृष्टान्तसद्भावे ऽस्यैव हेतुव्यपदेशः स्या त्तथा हिनोति गमयतीति हेतुः साध्यसद्भावभावतदभावाभावलक्षण स्तत. स्वलक्षणादीना द्वंद्व स्तेषां दोषः स्वलक्षणकारणदोष इह काशब्दो छन्दोर्थ दिर्वृद्धो ध्येयो ऽथवा सहलक्षणेन यौ कारणहेतू तयो र्दोषइति विग्रह स्तत्र लक्षण

दोषो ऽव्याप्ति रतिव्याप्तिर्वा तत्रा व्याप्ति र्यथायस्यार्थस्य सन्निधानासन्निधानाभ्यां ज्ञानप्रतिभासभेद स्तत् स्वलक्षणमिती दं स्वलक्षणलक्षणमिदमिं द्रिय प्र त्यक्षमेवा श्रित्य स्या न्न योगिज्ञानं योगिज्ञानेहि न सन्निधानासन्निधानाभ्यां प्रतिभासभेदो स्ती त्यत स्तदपेक्षया निकिंचन स्वलक्षण स्यादिति अतिव्याप्ति र्यथा अर्थोपलब्धिहेतुः प्रमाण मितिप्रमाणलक्षण मिह चार्थोपलब्धिहेतूनां चक्षु र्दध्योदनभोजनादीना मानत्वेन प्रमाणेयत्ता न स्या दथवा दार्ष्टान्तिको ऽर्थो लक्ष्यते ऽनेनेति लक्षण दृष्टान्त स्तद्दोषः साध्यविकलत्वादि स्तत्र साध्यविकलता यथा नित्य.शब्दो मूर्त्तत्वात् घटव दिह घटे नित्यत्वं नास्तीति कार णदोषः साध्यम्प्रति तद्व्यभिचारो यथा अपौरुषेयो वेदो वेदकारणस्या श्रूयमाणत्वा दित्यश्रूयमाणत्वंहि कारणान्तरादपि सम्भवतीतिहेतुदोषो सिद्धविरुद्धा नैकान्तिकत्वलक्षण स्तत्रा सिद्धो यथा ऽनित्य. शब्द श्चाक्षुषत्वात् घटव दित्यत्रहि चाक्षुषत्व शब्देन सिद्धं विरुद्धो यथा नित्यः शब्द' कृतकत्वात् घटव दिह घटे कृतकत्वं नित्यत्वविरुद्धमनित्यत्वमेव साधयतीति अनैकान्तिको यथा नित्यः शब्द' प्रमेयत्वा दिहहि प्रमेयत्व मनित्येष्वपि वर्त्तते ततः संशय एवेति तथा सङ्क्रामण प्रस्तुतप्रमेये प्रस्तुतप्रमेयस्य प्रवेशन प्रमेयान्तरगमनमित्यर्थः अथवा प्रतिवादिमते आत्मनः सङ्क्रामण परमताभ्यनुज्ञानमित्यर्थ स्तदेव दोषइति तथा निग्रहस्थलादिना पराजयस्थान सएव दोषो निगहदोषइति तथा वसत' साध्यधर्मसाधनधर्मा यत्रेति वस्तु प्रकरणात् पक्ष स्तस्य दोषः प्रत्यक्षनिराकृतत्वादि र्यथा ऽश्रावणः शब्दः शब्दे ह्यश्रावणत्व प्रत्यक्षनिराकृतमिति एतेषामेव तज्जातादिदोषाणा सामान्यतो भिहितानां तदन्येषा

दोसे पण्णत्ते तंजहा तज्जायदोसेमइभंगदोसे पसथारदोसेपरिहरणदोसे सलक्खणक्कारणहेउदोसे संकामणं

शास्ता मर्यादाकारी सज्ञानायकनो दोष ३। परिहरणदोष वादिप्रतिवादिनो मुखस्तभादि अनासेव्यवस्तुनुं सेववु ४। स्वलक्षणदोष उपयोगलक्षण

चार्थानां सामान्यविशेषरूपाणां सतां विशेषाभिधानायाह ॥ दसेत्यादि ॥ विशेषो भेदो व्यक्तिरित्य नर्थान्तर ॥ वत्थुइत्यादि ॥ सार्द्धः श्लोकः वस्त्विति प्रा क्तसूत्रस्यां तोक्तो यः पक्ष स्तज्जातमिति तस्यैवा दा वुक्त प्रतिवाद्यादे र्जात्यादि तद्विषयो दोषो वस्तु तज्जातदोष स्तत्र वस्तुदोषः पक्षदोष स्तज्जातदोषश्च जात्यादिद्दोलन मेतौच विशेषो दोषसामान्यापेक्षया अथवा वस्तुदोषे वस्तुदोषविषये विशेषो भेदः प्रत्यक्षनिराकृतत्वा दि स्तत्र प्रत्यक्षनिराकृतो यथा अ श्रावणः शब्दो ऽनुमाननिराकृतो यथा नित्यः शब्दः प्रतीतिनिराकृतोयथा अचन्द्र शशी स्ववचननिराकृतो यथा य दहं वच्मि त न्मिथ्येति लोकरू ढिनिराकृतो यथा शुचिनरशिरःकपालमिति तज्जात दोषविषयेपि भेदो जन्ममर्मकर्मादिभि र्जन्मदोषो यथा कच्छोल्लुयाएघोडी एजाओजोगहरहेणक्क डेण तस्समहायणमज्झे आयारापायडाहीति ॥ १ ॥ त्यादि रनेकविध २ चकारः समुच्चये तथा ॥ दोसेत्ति ॥ पूर्वोक्तसूत्रे ये शेषामतिभङ्गादयो ष्टावुक्ता स्ते दो षशब्देनेह सगृहीता स्तेच दोषसामान्यापेक्षया विशेषाभवत्येवेति दोषो विशेषो ऽथवा ॥ दोसेत्ति ॥ दोषेषु शेषदोषविषये विशेषो भेदः सचा नेकविधः स्व य मप्यूह्य ३ ॥ एगट्ठिएइयत्ति ॥ एकश्चासावर्थश्चाभिधेय एकार्थ स यस्या स्ति स एकार्थिक एकार्थवाचकइत्यर्थं इति रूपप्रदर्शने चः समुच्चयेसच शब्द सामान्यापेक्षये कार्थिको नामशब्दविशेषो भवति यथा घटइति तथा अनेकार्थिको यथा गौ र्यथाक्त दिग्दिष्टिश्वाचिजलेभुवि दिविवज्रेशीपशौचगोशब्द

निग्गहवत्थुदोसे । दसविहे विसेसे पन्नत्ते तंजहा वत्थुतज्जायदोसेय ।

जीव ते यवप्रमाण ५ । कारणदोष ६ । हेतुदोष ७ । संक्रामणदोप ८ । निग्रहदोप ९ । वस्तुदोप १० ॥ दशप्रकारे विशेषदोष कह्यो ते कहेछे वस्तुत कारे थाय ते पोतेजकहवो ३ । तथा एकार्थिकदोप जिमघटइति ४ । कारणदोप ते अनेकप्रकारे ५ । प्रत्युत्पन्न वर्त्तमानकालिक वस्तुमां गुणेतर

इति इहै कार्थिकविशेषग्रहणेना नेकार्थिकोपि गृहीत स्तद्विपरीतत्वा न्नचेत्वासौ गण्यते दशस्थानकानुरोधा दथवा कथंचि देकार्थिके शब्दग्रामे यः कथ ञ्चिद्भेदः स विशेष. स्या दिति प्रक्रमः ॥ इयत्तिपूरणे ॥ यथा शक्रः पुरन्दर इत्येकार्थे शब्दद्वये शकनकालएव शक्रः पूर्दारणकालएव पुरन्दर एवभूतनया देशादिति अथवा दोषशब्द इहापि सम्बध्यते ततश्च न्यायोद्धरणे शब्दान्तरापेक्षयै कार्थिक. शब्दो नाम यो दोषइति अयमपिच दोषसामान्यापेक्षया वि शेषइति ४ तथा कार्यकारणात्मके वस्तुसमूहे कारणमिति विशेषः कार्यमपि विशेषो भवति नचे होक्तो दशस्थानकानुवृत्ते स्तथा कारणे कारणविषये वि शेषो भेदो यथा परिणामि कारण मृत्पिण्डो ऽपेक्षाकारण दिग्देशकालाकाशपुरुषचक्रादि अथवो पादानकारण मृदादिनिमित्तकारण कुलालादि स हकारिकारण चक्रचीवरादौ त्यनेकधा कारण मथवा दोषशब्दसबन्धात् पूर्वव्याख्यातः कारणदोषो दोषसामान्यापेक्षया विशेषइति च' समुच्चये ५ त था प्रत्युत्पन्नो वार्त्तमानिको ऽभूतपूर्व इत्यर्थो दोषो गुणेतर सचा तीतादिदोषसामान्यापेक्षया विशेषो ऽथवा प्रत्युत्पन्ने सर्वथा वस्तु न्यभ्युपगते विशेषो यो दोषे ऽकृताभ्यागमकृतविप्रणाशादिः स दोषसामान्यापेक्षया विशेषइति ६ तथा नित्यो यो दोषो ऽभव्याना मिथ्यात्वादि रनाद्यपर्यवसितत्वात् स दो षसामान्यापेक्षया विशेषो ऽथवा सर्वथा नित्ये वस्तुनि अभ्युपगते यो दोषो बालकुमाराद्यवस्थाभावापत्तिलक्षणः स दोषसामान्यापेक्षया दोषविशेषइति

दोसेएगट्ठिएइय । कारणेयपडुप्पन्ने ।

ते अतीतादिकालनी अपेक्षाथीविशेष अथवा सर्वथा अगीकृतवस्तुमा विशेष दोष अकृताभ्यागमकृतविप्रणाशादि ते प्रत्युत्पन्नदोष ६। नित्यदोष जे ज्जातदोष १। दोषपूर्वोक्त मतिभगादिक आठ ग्रहण करवा दोष सामान्यकी अपेक्षाथी विशेषथाय २। अथवा शेषदोषमा विशेष भेद अनेक प्र

७ तथा ॥ हियट्ठमेत्ति ॥ अकारप्रश्लेषा दधिकं वादकाले यत् परप्रत्यायन प्रत्यातिरिक्तं दृष्टान्तनिगमनादि स्तद्दोष स्तदन्तरेणैव प्रतिपाद्य प्रतीते स्तदभि धानस्या नर्थकत्वादिति आहच जिणवयणसिद्धचे वभणएकत्थईउदाहरणं आसज्जउसोयारं हेऊविकहिचिभणेज्जा ॥ १ ॥ तथा कल्यद्दपचावयव दस हावासव्वहानपडिकुट्ठमिति ॥ ततथा धिको दोषो दोषविशेषत्व। इविशेषइति अथवा धिके दृष्टान्तादौ सति यो दोषो दूषण वादिनः सोपि दोषविशेष एवाय चाष्टम आदितो गख्यमानइति ८ ॥ अत्तणत्ति ॥ आत्मना कृतमिति शेष स्तथो पनोत प्रापितं परेणेति शेषो वस्तुसामान्यापेक्षया त्मकृतच विशे ष. परोपनीतञ्चा परोविशेष इतिभाव चकारयो र्विशेषशब्दस्यच प्रयोगो भावनावाक्येन दर्शितो ऽथवा दोषशब्दानुवृत्ते रात्मना कृतो दोषः परोपनी तश्च दोषइति दोषसामान्यापेक्षया विशेषा वेता विति एव त्वे विशेषा दशभवन्तीति इहा दर्शपुस्तकेषु ॥ निच्चेहियट्ठमेत्ति ॥ दृष्ट न्नच तथा ष्टौपूर्वन्तइति निच्चइति व्याख्यात इहो तद्रूपाविशेषादयो भावा अनुयोगगम्या अनुयोगञ्चा र्थतो वचनतश्च तत्रा र्थतोयथा अहिंसासंजमोतवो ॥ इत्यत्रा हिंसादीना स्वरूपभेदप्रतिपादन वचनानुयोग स्त्वनामेव शब्दाश्रितोविचारइति तदिहवचनानुयोग भेदतआह ॥ दसेत्यादि ॥ शुद्धा अनपेक्षितवाक्यार्था यावाक् वचनं सूत्रमित्यर्थं स्तस्या अनुयोगो विचार शुद्धवागनुयोग सूत्रेचा ऽपुंवद्भाव' प्राकृतत्वा त्तत्र चकारादिकाया. शुद्धवाचो यो नुयोगः स चकारादिरेव व्यपदे श्य स्तत्र ॥ चकारेत्ति ॥ अत्रा नुस्वारो लाक्षणिको यथा ॥ सुक्केसणिचरेइत्यादौ ॥ तत्र चकारइत्यर्थ स्तस्यचा नुयोगो यथा चशब्दः समाहारेतरेतरयोगसमु

दोसेनिच्चहियट्ठमे ॥ ७ ॥ अत्तणाउवणीएय विसेसेनीयतेदस ।

अभव्य पुरुषोने मिथ्यात्व अनाद्यपर्यवसितपणा माटे नित्यछे ७ । वादकालमां परप्रत्यायनार्थं जे दृष्टांत निगमनादि कहवा तेनोदोष ८ । आत्म

थयान्वाचयावधारणपादपूरणाधिकवचनादिष्विति तत्र ॥ इत्थीओसयणाणियत्ति ॥ इहसूत्रे चकारः समुच्चयार्थः स्त्रीणां शयनानां चापरिभोग्यतातुल्य त्वप्रतिपादनार्थः ॥ मकारेत्ति ॥ मकारानुयोगो यथा ॥ समणवामाहणवत्ति ॥ सूत्रे मा शब्दो निषेधे अथवा ॥ जेणामेव समणे भगव महावीरे तेणामेवे ति ॥ अत्र सूत्रे आगमिक एव येनैवे त्यनेनेव विवक्षितप्रतीतेरिति २ ॥ पिकारेत्ति ॥ अकारलोपदर्शनेना नुस्वारागमेनचा पि शब्द उक्त स्तदनुयोगो य था अपि सम्भावनानिवृत्त्यपेक्षासमुच्चयगर्हाशिष्यामर्षणभूषणप्रश्नेष्विति तत्र ॥ एवपिएगेआसासारे ॥ इत्यत्र सूत्रे एवमपि अन्यथापीति प्रकारान्तरसमुच्चया र्थो ऽपिशब्दइति ३ ॥ सेयकारेत्ति ॥ इहा थकारो ऽलाक्षणिक स्तेन सेकारइति तदनुयोगो यथा ॥ सेभिक्खवे ॥ त्यत्र से शब्दो ऽथार्थो ऽथशब्दश्च प्रक्रि याप्रश्नानन्तर्यमङ्गलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयेष्वि त्यानन्तर्यार्थ' से शब्दइति क्वचि दसावित्यर्थ. क्वचित् तस्येत्यर्थो ॥ ऽथवा सेयंकारइति ॥ श्रेय इत्येतस्य करणं श्रेयस्कारः श्रेयस उच्चारणमित्यर्थ स्तदनुयोगो यथा ॥ सेयमेयाहिज्जिओअज्झयणं ॥ मित्यत्र सूत्रे श्रेयोऽतिशयेन प्रशस्यं कल्याणमित्यर्थो ऽथवा ॥ सेयकाले अकम्मंवावि भवइ ॥ इत्यत्र सेयशब्दो भविष्यदर्थः ४ ॥ सायंकारेत्ति ॥ सायमिति निपातः सत्यार्थे स्तस्मा दर्णात्कारइत्यनेन छान्दसत्वा त्कारप्रत्यय. कर णकार स्ततः सायकार इति तदनुयोगो यथा सत्य तथा वचनसद्भावप्रश्नेष्विति एतेच चकारादयो निपाता स्तेषा मनुयोगभणनं शेषनिपातादिशब्दा नुयोगोपलक्षणार्थमिति ॥ एगत्तेत्ति ॥ एकत्व मेकवचन तदनुयोगो यथा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग इत्यत्रै कवचन सम्यग्दर्शनादीना समुदि

दसविहे सुद्धावायाणुजोगे पन्नत्ते तजहा ।

कृतदोष ९ । परोपनीत जे परप्रापितदोष १० ॥ दशप्रकारे शुद्धवचनानुयोग कह्यो ते कहेछे चंयूय समास ८ । सक्रामित ९ । भिन्नतेक्रमकालभेदा

लानामेवे क्रमोक्षमार्गत्वख्यापनार्थं मसमुदितत्वेत्वमोचमार्गतेति प्रतिपादनार्थमिति ६॥ पुहत्तेत्ति॥ पृथक्त्वं भेदो द्विवचनबहुवचनेद्रत्यर्थं स्तदनुयोगो यथा॥ धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायदेसे धम्मत्थिकायप्पदेसा॥ इह सूत्रे धर्मास्तिकायप्रदेशा इत्येत बहुवचन तेषा मसख्यातत्वख्यापनार्थमिति ७॥ संजूहेत्ति॥ संगतं युक्तार्थं यूथ पदानां पदयो र्वा समूहः सयूथ समास इत्यर्थं स्तदनुयोगो यथा सम्यग्दर्शनशुद्ध सम्यग्दर्शनेन सम्यग्दर्शनाय सम्यग्दर्शनाद्वा शुद्धसम्यग्दर्शनशुद्ध मित्यादि रनेकधेति ८ ॥ संकामियत्ति॥ संक्रामित विभक्तिवचनाद्यन्तरतयापरिणामित तदनुयोगो यथा साहूणवन्दणेणं नासइपावअसंकियाभावा॥ इहसाधूना मित्येतस्याः षष्ठ्याः साधुभ्यः सकाशादित्येवलक्षण पञ्चमीत्वेन विपरिणामं कृत्वाशङ्कितभावा भवतीत्येतत्पद सम्बन्धनीयं तथा अच्छंदाजे नभुजति नसेचाइत्तिवुच्चइ॥ इत्यत्र सूत्रे न सत्यागो त्युच्यत इत्येकवचनस्य बहुवचनतया परिणामं कृत्वा नते त्यागिन उच्यत इत्येवं पदघटना कार्येति ९ भिन्न मिति क्रमकालभेदादिभिर्भिन्नं विसदृशं तदनुयोगो यथा तिविहंतिविहेणमिति॥ सग्रह मुक्त्वा पुन मणेण मित्यादिना तिविहेणति विवृतमिति क्रमभिन्न क्रमेणहि तिविहमित्येत न्न करोमी त्यादिना विवृत्य तत स्त्रिविधेनेति विवरणीय भवतीति अस्यच क्रमभिन्नस्या नुयोगोय यथा क्रमविवरणे हि यथासंख्यदोषः स्यादिति तत्परिहारार्थं क्रमो भेद स्तथाहि नकरोमि मनसा नकारयामि वाचा कुर्व्वंतं नानुजानामि कायेनेति प्रसज्यते अनिष्टश्चै तप्रत्येक पक्षस्यै वेष्टत्वा त्तथाहि मनःप्रभृतिभि र्न करोमि तैरेव न कारयामि तैरेव ना नुजानामीति तथा कालतो भेदो तीतादिनिर्देशे प्राप्ते वर्त्तमानादिनिर्देशो

चकारे मंकारे पिंकारे सेयंकारे सायंकारे एगत्ते पुहत्ते संजूहे संकामिए भिन्ने। दसविहे दाणे प० तंजहा

चकार १। मकार २। अपिकार ३। श्रेयस्कार ४। सायंकार ५। एकत्व ६। पृथक्त्व ७। संयूथ समास ८। संक्रामित ९। भिन्नतेक्रमकालभेदादि १०॥

यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यादिषु ऋषभस्वामिन माश्रित्य ॥ सर्वेष्वेविदेशेष्वेवराशार्वदृश्नमसङ्गन्ति ॥ सूत्रे तदनुयोगशायं वर्त्तमाननिर्देश स्त्रिकालभाविष्वपि तीर्थकरे ष्वेतस्यायमदर्शनार्थमिति इदंच दीपादिसूत्रचय मन्यत्रापि विमर्शनीय गभीरत्वा दसेति वागनुयोगत स्त्वर्थानुयोगः प्रात्तंतदिति दानलक्षणस्यार्थस्य भेदाना मनुयोगमाह ॥ दसेत्यादि ॥ अणुकंपेत्यादि श्लोकः सार्द्धः ॥ गणुकंपेत्ति ॥ दानशब्दसंबंधा दनुकपया कृपया दानं दीनानाथविषय मनुकम्पादान मथवा ऽनुकंपातो यद्दान न्तदनुकंपे योपचारा दुक्तंच वाचकमुख्यै रुमास्वातिपूज्यपादैः कृपणेऽनाथदरिद्रे व्यसनप्राप्ते चरोगशोकहते यद्दीयतेकृपार्था दनुकंपा तद्भवेद्दान ॥ १ ॥ संग्रहणं संग्रहो व्यसनादौ सहायकरण तदर्थं दानं सग्रहदान मथवा ऽभेदा द्दानमपिसंग्रह उच्यते आहच अभ्युदयेव्यसनेवा यत्किंचिद्दी यतेसहायार्थं तत्संग्रहतोभिमत मुनिभिर्दानमर्मोक्षायेति ॥ २ ॥ तथा भया च्च दान न्तद्भयदान भयनिमित्तत्वाद्वा दानमपि भय मुपचारादिति उक्तंच राजारक्षपुरोहित मधुमुखमावल्लदंडपाशिषुच यद्दीयतेभयार्था त्तद्भयदानंचविज्ञेयमिति ॥ ३ ॥ कालुणिएइयत्ति ॥ कारुण्यं शोक स्तेन पुत्रवि योगादिजनितेन तदीयस्यैव तल्पादेः स जन्मान्तरेसुखितोभवत्विति वासनातो ऽन्यस्मैवा यद्दान तत्कारुण्यदान कारुण्यजन्यत्वाद्वा दानमपि कारुण्य मुक्त मुपचारादिति ॥ ४ ॥ तथा लज्जया ह्रिया दान य त्त ल्लज्जादान मुच्यते उक्तंच अभ्यर्थित.परेणतु यद्दानजनसमूहमध्यगतः परचित्तरक्षणार्थं लज्जाया स्तद्भवेद्दानमिति ॥ ५ ॥ गारवेणचत्ति ॥ गौरवेण गर्वेण य द्दीयते त द्गौरवदानमिति उक्तं न नटनर्त्तमुष्टिकेभ्यो दानसंबंधिवन्धुमित्रेभ्यः यद्दीयतेयशोर्थं

अणुकपासंगहेचेव भयाकालुणिएतिय लज्जाएगारवेणंच अधम्मेपुणसत्तमे ॥ १ ॥ धम्मेयअठमे वुत्ते काहि

दशप्रकारे दान कह्यो तेकहेछे अनुकंपादान १। संग्रहदान कष्टआवे सखाईकरे ते दीये भयथी दीजे राजादिने शोकथीदीजे ते पुत्रमरणादिके शय्या

गर्वेणतुतद्भवेद्दानं ॥ ६ ॥ अधर्म्मपोषक दान मधर्मदान मधर्मकारणत्वा द्वा धर्मएवेति उक्तञ्च हिंसानृतचौर्योद्यत परदारपरिग्रहप्रसक्तेभ्यः यद्दीयतेह्वितेषा तज्जानीयादधर्मायेति ॥ ७ ॥ धर्मकारण यद्धर्मदान धर्मएववा उक्तञ्च समतृणमणिमुक्तेभ्यो यद्दानदीयतेसुपात्रेभ्यः अचयमतुलमनन्तं तद्दानभवतिधर्मायेति ॥ ८ ॥ काहीइयत्ति ॥ करिष्यति कचनो पकारं ममायमिति बुद्ध्या यद्दान तत्करिष्यतीति दान मुच्यते ॥ ९ ॥ तथा कृत ममानेन तत्प्रयोजनमिति प्रत्युपकारार्थं यद्दान तत् कृतमिति दानमुच्यते उक्तञ्च शतशःकृतोपकारो दत्तंचसहस्रशोममानेन अहमपिददामिकिंचि त्प्रत्युपकारायतद्दानमिति ॥१०॥ उक्तलचणा द्दानाच्छुभाशुभागति र्भवतीति सामान्यतो गतिनिरूपणायाह ॥ दसेत्यादि ॥ निरयगतित्ति ॥ निर्गता अयाच्छुभादिति निरया नारकास्तेषा गति र्गम्यमानत्वान्नरक स्त द्गतिनामकर्मोदयसपाद्यो नारकत्वलचणः पर्यायविशेषो वेति निरयगति स्तथा निरयाणा नारकाणा विग्रहात् चेत्रविभागानतिक्रम्य गति र्गमन निरयविग्रहगतिः स्थितिनिवृत्तिलचणा ऋजुवक्ररूपा विहायोगतिकर्मापाद्यावेति एव तिर्यग्नरनाकिनामपीति ॥ सिद्धिगइत्ति ॥ सिद्ध्यन्ति निष्ठितार्था भवति यस्यां सा सिद्धिः सा चासौ गम्यमानत्वा द्गतिश्चेति सिद्धिगति लोकाग्रलचणा तथा ॥ सिद्धविग्गहगइत्ति ॥ सिद्धस्य मुक्तस्य विग्रहस्या काशविभागस्या तिक्रमेण गतिर्लोकान्तप्राप्ति. सिद्धविग्रहगतिरिति विग्रहगति र्वक्रगति रप्युच्यते परं सिद्धस्य सा नास्तीति तत्सा

ईयकयतिय । दसविहा गई प० त० निरयगई निरयविग्गहगई तिरियगई तिरियविग्गहगई एवं जावसि

दिदान लाजे माणसमां दीजे गर्व अहंकारे दीजे अधर्मदान पापीने देवूं ॥ १ ॥ धर्मदान आठमूं कह्युं ते सुपात्रे देवूं ८ । क्रोधेदीइं ९ । उपगारकस्यो तेहनें दीये १० ॥ दशप्रकारे गति कही तेकहेछे नरकगति १ । नरकविग्रहगति तीर्यंचगति इम यावत् सिद्धगति सिद्धविग्रहगति ॥ दश मुण्डकह्या ते

हचर्या मारकादीना मप्यसी न व्याख्यातेति अथवा द्वितीयपदे नारकादीनां वक्रगति रुक्ताप्रथमैस्तु निर्विशेषणतया पारिशेष्या हजुगतिः ॥ सिद्धिग इत्ति ॥ सिद्धौ गमन निर्विशेषणत्वाच्चा नेन सामान्या सिद्धिगति रुक्ता ॥ सिद्धविग्गहगइत्ति ॥ सिद्धा वविग्रहेणा वक्रेण गमनं सिद्धविग्रहगति रनेनच विशेषापेक्षायां विशिष्टा सिद्धिगति रुक्ता सामान्यविशेषविवक्षया वा नयो भेद इति सिद्धिगति मुंडानामेव भवतीति मुडनिरूपणायाह ॥ दसेत्यादि ॥ मुण्डय त्यपनयतीति मुण्डः श्रोत्रेन्द्रियादिभेदा इत्यर्थेति शेष सुगमं मुण्डा दशेति सख्यान मत स्तद्विधय उच्यते ॥ दसेत्यादि ॥ परिकम्मगाहा ॥ परिकर्म सक लितात्यनेकविध गणितप्रसिद्ध तेन य त्सख्येयस्य सख्यान परिगणन तदपि परिकर्मे त्युच्यते १ एव सर्वत्रेति व्यवहारः श्रेणीव्यवहारादिः पाटीगणि तप्रसिद्धो ऽनेकधा २ ॥ रज्जुत्ति ॥ रज्वा यत्सख्यान तद्रज्जुरभिधीयते तच्च क्षेत्रगणित ३ ॥ रासित्ति ॥ धान्यादे रुत्कार स्तद्विषयसख्यान राशि' सच पाट्य राशिव्यवहार इति प्रसिद्धः ४ ॥ कलासवण्णेयत्ति ॥ कलाना मशाना सवर्णन सवर्णसदृशीकरणं यस्मिन् सख्याने तत्कलासवर्ण ॥ जावंतावइत्ति ॥ जावताव त्तिवा ॥ गुणकारोत्तिवा ॥ एगट्ठमिति वचनात् गुणकार स्तेन यत्सख्यान तत्तथै वोच्यते तच्च प्रत्युत्पन्नमिति लोकरूढ मथवा यावत कुतोपि तावतए

द्धगई सिद्धविग्गहगई। दस मुंडा प० तजहा सोइंदियमुंडे जाव फासिंदियमुंडे कोहे जाव लोभमुंडे सिरमुंडे दसविहे सखाणे प० त० परिकमंववहारे रज्जुरासीकलासवन्नेय जावतावतिवग्गो घणोयतहवग्गवग्गोवि

कहेंछे श्रोत्रेंद्रीमुंड यावत् फरसनेंद्री मुंड क्रोधमुंड यावत् लोभमुंड मस्तकमुंड ॥ दशप्रकारे सख्या कही ते कहेंछे संकलनादिअनेक गणित तेपरिकर्म व्यवहार पाटीगणित राजनुगणित राशीगणित धाननोढिगनु कला सवर्ण गणित अशनुं एकठु करवू जावताव गणित जेतलु गणितछे वर्ग बेनो।

व गुणकारा याहच्छिकादित्यर्थ' यत्र विवक्षित संकलनादिक मानीयते तथावत्तावत्संख्यानमिति तत्रो दाहरण गच्छोवाञ्छाभ्यस्तो वाञ्छयुतोग च्छसगुण.कार्य द्विगुणीकृतवांछहृते वदंतिसंकलितमाचार्याः ॥ १ ॥ अत्र किलगच्छोदश १० तेच वाञ्छया याहच्छिकगुणकारेण ष्टकेना भ्यस्ता जाता ऽशीति ८० ततो वाञ्छायुता स्ते अष्टाशीति ८८ पुनर्गच्छेनदशभिः संगुणिता अष्टौ शता न्यशीत्यधिकानि जातानि ततो द्विगुणीकृतेन याहच्छिकगुण कारेण षोडशभि र्भागे हृते स लभ्यते त दशाना सकलितमिति ५५ इदंच पाटीगणित सूत्रतेइति ६ तथा वर्गः सख्यान यथा द्वयोर्वर्ग श्चत्वारः सदृश द्विराशिघातइतिवचनात् ७ ॥ घणोयत्ति ॥ घन' सख्यान यथा द्वयो र्घनो ऽष्टौ समत्रिराशिहतिरितिवचनात् ८ ॥ वग्गावग्गोत्ति ॥ वर्गस्य वर्गो वर्गवर्गः सच संख्यानं यथा द्वयोवर्ग श्चत्वार स्तेषां वर्ग षोडशेति अपिशब्द. समुच्चये ९ ॥ कप्पोयत्ति ॥ गाथात्रिक तत्र कल्पश्छेद. क्रकचेन काष्टस्य तद्विषयं सख्या न कल्पएव यत् पाव्या क्रकचव्यवहारइति प्रसिद्धमिति इहच परिकर्माद्टीनां केषाचि दुदाहरणानि मन्दबुद्धीना दुरवगमानि भविष्य त्यतो नप्रदर्शि तानीति १० दशसुखा उक्ता स्तेच प्रत्याख्यानतो भवतीति प्रत्याख्याननिरूपणायाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ प्रतिकूलतया आमर्यादया ख्यान प्रकथनं प्रत्या ख्यान निवृत्तिरित्यर्थ ॥ अणागयगाहा ॥ सार्द्धा ॥ अणागयति ॥ अनागतकरणा दनागत पर्युषणादा वाचार्यादि वैयावृत्त्यकरणान्तरायसद्भावा द्वारत एव त त्तप करणमित्यर्थ' उक्तंच होहीपज्जोसवणा ममयतया अन्तराइयं होज्जा गुरुवेयावच्चेण तवस्सिगेलनयाएव ॥ १ ॥ सोदाइतवोकम्म पडिवज्जइत

॥७॥ कप्पोय ॥ दसविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते तजहा अणागयमइक्कंतं कोडीसहियनियंटियंचेव सागारमणागारं

घनसख्या वर्ग च्यार तद्गुणोवर्ग तिम नोवर्ग नोवर्ग वेवेनो कल्पसंख्या पदकरवा ॥ १ ॥ दशप्रकारे पचखाण कह्या ते कहेछे अनागतजे आगलथीतप

अणागएकाले एसपञ्चक्खाणं अणागयहोइनायव्वंति ॥ २ ॥ अइक्कतंति ॥ एव मेवातीते पर्युषणादौ करणा दतिक्रांतं आह च पज्जोसवणाएतव जोखलु नकरेइकारणज्जाए गुरुवेयावच्चेणं तवस्सिगेलन्नयाएवं ॥ १ ॥ सोदाइतवोकम्मं पडिवज्जइतंअइच्छिएकाले एवंपञ्चक्खाणं अइक्कतंहोइनायव्वंति ॥ २ ॥ कोडीसहियंति ॥ कोटीभ्यां मीलस्य चतुर्थादि रन्त्यविभागो ऽपरस्य चतुर्थादे रेवा रंभविभागइत्येवं लक्षणाभ्यां सहितं मिलितं युतं कोटीसहितं मिलितो भयप्रत्याख्यानकोटि चतुर्थादिः करणमित्यर्थः भणितंच पट्ठवणओउदिवसो पञ्चक्खाणस्सनिट्ठवणओय जहियंसमेतिदोंणिउ तंभणइकोडिसहियंतुत्ति ॥ १ ॥ ॥ नियंट्ठियंति ॥ नितरां यन्त्रितं प्रतिज्ञातदिनादौ ग्लानत्वाद्यन्तरायभावेपि नियमात् कर्तव्यमिति हृदय एतच्च प्रथमसंहनननामेवे त्यभिधायिच्च मा सेमासेयतवो अमुगोअमुगदिवसेएवइओ हट्ठेणगिलाणेणच कायव्वोजावऊसासो ॥ १ ॥ एयपञ्चक्खाणं नियंट्ठियंधीरपुरिसपण्णत्तं जगिण्हंतिणगारा अणिस्सियप्पाअपडिबद्धा ॥ २ ॥ चउदसपुव्वोजिणकप्पिएसुपढमम्मिचेवसंघयणे एयंवोच्छिन्नंखलु थेराविनयाकरेसीयत्ति ॥ ३ ॥ सागारंति ॥ आक्रियत इत्याकाराः प्रत्याख्यानापवादहेतवो नाभोगाद्या स्तै राकारैः सहेति साकारं ॥ अणागारंति ॥ अविद्यमाना आकारा महत्तराकारादयो निश्छिन्न प्रयोजनत्वात् यस्मिं स्तदनाकारं तत्राप्यनाभोगसहसाकारावाकार्यौ स्याता मुखे ऽङ्गुल्यादिप्रक्षेपसंभवादिति ॥ परिमाणकडंति ॥ परिमाणं संख्यानं दत्तिकवलगृहभिक्षादीनां कृतं यस्मिं स्तत्परिमाणकृतमिति यदाह दत्तीहिंकवलेहिं घरेहिंभिक्खाहिंअहवदव्वेहिं जोभत्तपरिच्चायं करेइ परिमाणकडमेयंति ॥ १ ॥ निरवसेसंति ॥ निर्गत मशेष मपि अन्पान म प्यशनाद्याहारजातं यस्मा त्तन्निरवशेषंवा सर्वमशनादि तद्विषयत्वा न्निर वशेषमिति अभिहितंच सव्वंअसणंसव्वं चपाणगंसव्वखज्जपेज्जविहिं परिहरइसव्वभावे एयंभणियंनिरवसेसंति ॥ १ ॥ सकेयचेवत्ति ॥ केतनं केतश्चिह्न मगुष्टमुष्टिग्रन्थिगृहादिकं सएव केतकः सहकेतकेन सकेतकं ग्रन्थ्यादिसहितमित्यर्थो भणितंच अंगुट्ठमुट्ठिगंठी घरसेउस्सासथिबुगजोइक्खे भणियंसंके

यमेयं धीरेहिंअणंतनाणीहिति ॥ १ ॥ अद्धाएत्ति ॥ अद्धायाः कालस्य पौरुष्यादिकालमान माश्रित्येत्यर्थो न्यगादिच अद्धापच्चक्खाण जंतंकालप्पमाणछे
एण पुरिमड्ढपोरिसीहिं मुहुत्तमासद्धमासेहिंति ॥ १ ॥ पच्चक्खाणदशविहंतुत्ति ॥ प्रत्याख्यानशब्द. सर्वत्रा नागतादौ सम्बध्यते तुशब्द एवकारार्थ स्ततो
दशविधमेवेति इहो पाधिभेदा त्सप्टएव भेदइति न पौनरुक्त्य माशंकनीयमिति प्रत्याख्यानहि साधुसमाचारीति तदधिकारा दन्यामपि सामाचारीं
निरूपयन्नाह ॥ दसेत्यादि ॥ समाचरण समाचार स्तद्भाव समाचार्य तदेव सामाचारी सव्यवहारइत्यर्थः ॥ इच्छेत्यादि ॥ सार्द्धश्लोकः ॥ इच्छत्ति ॥ एषण मिच्छा
करण कार स्तत्कारशब्दः प्रत्येक मभिसंबन्धनीय इच्छया बलाभियोगमन्तरेण कार इच्छाकारः इच्छाक्रियेत्यर्थ स्तथा चेच्छाकारेण ममेद कुरु
इच्छाप्रधानया क्रियया नबलाभियोगपूर्विकयेति भावार्थो ऽस्यच प्रयोगः स्वार्थं परार्थंवा चिकीर्ष न्यदापर मभ्यर्थयते उक्तंच जइअभत्थेज्जपर कार
णजाएकरेज्जसेकोइ तत्थउइच्छाकारो नकप्पइबलाभिओगोत्ति ॥ १ ॥ तथा मिथ्या वितथ मनृत मिति पर्याया मिथ्याकरण मिथ्याकारः मिथ्याक्रियेत्य
र्थ स्तथाच सयमयोगवितथाचरणे विदितजिनवचनसारा साधव स्तत्क्रिया वैतथ्या प्रदर्शनाय मिथ्याकारं कुर्वते मिथ्याक्रियेयमिति हृदय भणितच स
जमजोगेअभु ट्ठियस्सजकिंचिवितहमायरियं मिच्छाएयतिविया णिऊणमिच्छतिकायव्वति ॥ १ ॥ तथाकरण तथाकारः सच सूत्र प्रश्नादिगोचरो यथा

परिमाणकड निरवसेस ॥ १ ॥ सकेयंचेवअद्धाए पच्चक्खाणंदसविहंतु ॥ दसविहा सामायारी प० तं० इच्छामि

करवो अतिक्रात पजूसणथयापछी कोटिसहिततप नियमित जे निश्चयकरवुं । आगारसहित अणाभोगादि आगाररहित जे एकपचखाण पूरूं
थये बीजूं सधाऊवूं चोथप्रमुख निरंतरकरवो परिणामकृत दातिनू पचखाण निर्विशेष पचखाण ते चोविहार ॥१॥ संकेत पचखाणमुंठसीप्रमुख ॥

भवद्भिरुक्त तथैव चेद मित्येवं स्वरूपं गदितच चायणपडिसुणणाए उवएसेसुतग्रथकहणाए अवितहमेयंतितहा पडिसुणणाएतहक्कारोत्ति ॥ १ ॥ अयश्च
पुरुषविशेषविषयएव प्रयोक्तव्य इत्यगादिच कप्पाकप्पेपरिणि ठियस्सठाणेसुपचसुठियस्स सजमतववड्डगस्सउ अविकप्पेणतहक्कारोत्ति ॥ १ ॥ ३ आवस्सि
यायत्ति ॥ अवश्य कर्तव्यैर्योगे निष्पन्ना वश्यिको च: समुच्चये एतत्प्रयोग आश्रया न्निर्गच्छन आवश्यकयोगयुक्तस्य साधो र्भवति आहहि कज्जेगच्छतस्स
गुरुनिद्देसेणसुत्तनीईए आवस्सियत्तिनेया सुद्धाभणत्थजोगाओ ॥ १ ॥ अन्वर्थयोगादित्यर्थ ४ तथा निषेधेन निर्वृत्ता नैषेधिकी व्यापारान्तरनिषेधरूपा प्र
योग श्चास्या आश्रये प्रविशतइति यतआह एवोग्गहप्पवेसे निसीहियातहनिसिद्धजोगस्स इयरस्सेसाउचिया इयरस्सऽभिसिद्धजोगस्स ॥ १ ॥ नचेवनत्थि
त्ति ॥ अन्वर्थोनास्तीतिकृत्वेत्यर्थ स्तथा आपृच्छन मापृच्छा सा विहारभूमिगमनादिषु प्रयोजनेषु गुरो: कार्या च शब्द' पूर्ववत् इहोक्त आपुच्छणाउक
ज्जे गुरुणोतस्सम्मयस्सवानियमा एवखुनयसेय जायइसइनिज्जराहेउत्ति ॥ १ ॥ तथा प्रतिप्रच्छा प्रतिप्रश्न: साच. प्राग्नियुक्तेनापि करणकाले कार्या पूर्वं
निषिद्धेनवा प्रयोजनत स्तदेव कर्तुकामेनेति यदाह पडिपुच्छणाउकज्जे पुव्वनिउत्तस्सकरणकालम्मि कज्जंतराइहेउ निद्दिट्ठासमयकेऊहिति ॥ १ ॥ ता
था छन्दनाच प्राग्गृहीतेना शनादिना कार्या इहावाचि पुव्वगहिएणछन्दण गुरुआणाएजहारिहहोइ असणाइणाउएसा णेएहविसेसविसयत्ति ॥ १ ॥

इच्छातहक्कारो आवस्सियानिसीहिया आपुच्छणायपडिपुच्छा छंदणायनिमंतणा ॥ १ ॥ उवसंपयायकाले

अर्था कालपचखाण पोरसीप्रमुखनु एदशप्रकारे ॥ दशप्रकारे सामाचारी कही तेकहेछे इच्छासामाचारी १ । गुरुना वेयावच्चादि कारणे मिच्छादुक्कड
पापनु २ । तथाकार तहत्ति कहवो ३ । जाता आवस्सही कहवी ४ । पेसता निस्सहीकहे आपुच्छणा गुरूनेपूछी करवू जएयु ते फरीफरी पूछवू आ

तथा निमंत्रणा अग्टहीतेनैना अशनादिना भवदर्थं मह मशन।दिक मानया स्येवंभूता इहार्थे व्यधायि सज्झायाउच्चाग्रो [श्रांत.] गुरुकिच्चेसेसगेप्रसंतमि तपुच्छि जगाकज्जे सेसाणणिमंतणकुज्जत्ति ॥ १ ॥ तथा ॥ उवसपयत्ति ॥ उपसपत् इतो भवदीयोह मित्यभ्युपगमः साच ज्ञानदर्शनचारित्रार्थत्वात् त्रिधा तत्र ज्ञानोपसपत् सूत्रार्थयोः पूर्वंग्टहीतयो. स्थिरीकरणार्थं तथा विकुटितसधानार्थं तथा प्रथमतो ग्रहणार्थं मुपसपद्यते दर्शनोपसपदप्येव नवर दर्शनप्रभावकस म्मत्यादिशास्त्रविषया चारित्रोपसपच्च वैयावृत्त्यकरणार्थं चपणार्थंवो पसपद्यमानस्येति भणितच्चि उवसपयायतिविहा नाणेतहदसणेचरित्तेय दंसणना णेतिविहा दुविहायचरित्तअट्ठाए ॥ १ ॥ वत्तणसधणागहणे सुत्तत्थोभयगयाउएसत्ति वेयावच्चेखमणे कालेपुणआवकहियायत्ति ॥ २ ॥ कालेत्ति ॥ उपक्रम णकाले आवश्यकोपोद्घातनिर्युक्त्यभिहिते सामाचारी दशविधा भवति इयत्र सामाचारो महावीरेणेह प्रज्ञापिता इतो भगवंत मेवोररोकृत्य दशस्थानक माह ॥ समणेत्यादि ॥ सुगम नवरं ॥ छउमत्थकालियाएत्ति ॥ प्राकृतत्वा च्छद्मस्थकाले यदा किल स भगवान् त्रिकचतुष्कचत्वरचतुर्मुखमहापथादिषु पटु पटहप्रतिरवोद्घोषणापूर्वं यथा काम मपहृतसकलजनदारिद्र्य मनवच्छिन्न मब्द याव न्महादान दत्वा सदेवमनुजासुरपरिषदा परिवृतः कुंडपुरा न्निर्गत्य ज्ञातखंडवने मार्गशीर्षकृष्णदशम्या मेतन्न प्रव्रज्य मन पर्यायज्ञान मुत्पाद्या ष्टौ मासान् विहृत्य मगूरकाभिधानसन्निवेशबहिःस्थानां दूयमाना भिधानाना पाखण्डिना सवधि न्येकास्मिन् उटजे तदनुज्ञया वर्षावास मारभ्य अविधीयमानरचतया पशुभि रुपद्रूयमाणे उटजे अप्रीतिक कुर्वाण माक

सामायारीजवेदसहा। समणेत्रगवमहावीरे छउमत्थकालियाए ऋतिमराइयंसि इमे दस महासुमिणे पासित्ताणं

हारत्यावी कहे जे आलोकनिस्तारो हु तमारे अर्थ ल्यावीस आहार ॥ १ ॥ हुतुमारो छु इमकहवूं ए दशप्रकारे सामाचारी कही ॥ श्रमण जगवंतमहा

ठा० ॥

१६७ ॥

लय कुटीरकनायक मुनिकुमारकं ततो वर्षाणा मर्द्धमासे गते अकालएव निर्गत्या स्थिग्रामाभिधान सन्निवेशा द्वहिः शूलपाणिनामकयचायतने शेष
वर्षायास मारेभे तत्र च यदारात्री शूलपाणि र्भगवतः चोभणाय झटिनिटालितादृालक मट्टहासं मुञ्चन् लोकमुत्त्रासयामास तथा विनाश्यते स भगवान्
देवेनेति भगवद्दालबना जनस्या धृतिञ्जनितवान् पुनरिहा स्ति पिशाचनागरूपै र्भगवत चोभ कर्त्तु मशक्नुवन् शिरःकर्णनासादन्तनखाचिपृष्ठिवेदनाः
प्राकृतपुरुषस्य प्रत्येक प्राणापहारप्रवणाः सपदि सपादितवान् तथापि प्रचण्डपवनप्रहतसुरगिरिशिखरमिवा विचलङ्गाव वर्द्धमानस्वामिन मवलोक्य
श्रान्तः स न्त्रऽसौ जिनपतिपादपद्मवन्दनपुरस्सरमाचचचे चमस्व चमाश्रमणेति तथा सिद्धार्थाभिधानो व्यन्तरदेव स्तन्निग्रहार्थमुद्दधार बभाणच अरेरे
शूलपाणे अप्रार्थितप्रार्थक हीनपुण्य चतुर्दशीक श्रीह्रीधृतिकीर्त्तिवर्जित दुरन्त प्रान्तलचण न जानासि सिद्धार्थराजपुत्र पुत्रीयितनिखिलजगज्जीवं
जीवितसम मशेषसुरासुरनरनिकायनायकाना मेतञ्च भवदपराध यदिजानाति त्रिदशपति स्तत स्त्वा निर्विषय करोतीति श्रुत्वा चासौ भीतो द्विगुण
तर चमयतिस्म तथा सिद्धार्थश्च तस्य धर्म मचकथत् सचो पशान्तो भगवंत भक्तिभरनिर्भरमानसो गीतनृत्योपदर्शनपूर्वक मपूपुजत् लोकश्च चिन्तयाञ्चकार
देवार्यक विनाश्ये दानीन्देवः क्रीडतीति स्वामीच देशोना श्चतुरीयामा नतीव तेन परितापितः प्रभातसमये मुहूर्त्तमात्र निद्राप्रमाद मुपगतवास्तत्रावसर
इत्यर्थो ऽथवा छद्मस्थकाले भवा अवस्था च्छाद्मस्थकालिकी तस्या ॥ अंतिमराइयसिक्ति ॥ अन्तिमा ऽन्तिमभागरूपा ऽवयवे समुदायोपचारात् सा चासौ
रात्रिका चान्तिमरात्रिका तस्या रात्रे रवसान इत्यर्थो महान्त प्रशस्ता स्वप्ना निद्राविकृतविज्ञानप्रतिभासार्थविशेषा स्तेच तेचेति महास्वप्ना स्तान् स्वप्ने
स्वापक्रियाया ॥ एगचत्ति ॥ चकार उत्तरस्वप्नापेचया समुच्चयार्थ ॥ महाघोर ॥ अतिरौद्ररूप माकार दीप्त ज्वलित दृप्त वा दर्पवं द्धारयतीति महाघोररूप
दीप्तधर स्तत् दृप्तवरीवा प्राकृतत्वा दुत्तरत्र विशेषणन्यास स्तालोद्दलविशेष स्तदाकारो दीर्घत्वादिसाधर्म्या त्पिशाचो राचस स्तालपिशाच स्त पराजित

निराकृत मात्मना १ ॥ एगंचत्ति ॥ अन्यच्च ॥ पुमकोइलगति ॥ पुमां श्चासौ कोकिलश्च परपुष्ट: पुंस्कोकिल: सच किलक्षणोभवतीति शुक्लपक्षइति विशेषित: २ ॥ चित्तविचित्तपक्खति ॥ चित्रेणेव चित्रकर्मणा विचित्रौ त्रिविधवर्णविशेषवती पक्षौ यस्य स तथा ३ ॥ दामदुगति ॥ मालाद्वयं ४ ॥ गोवग्गति ॥ गोरूपाणि ५ ॥ पउमसरति ॥ पद्मानि यत्रो त्पद्यन्ते सरसि तत्पद्मसर. सर्वासु दिक्षु समंता द्विदिक्षुच कुसुमानि पद्मलक्षणानि जातानि यत्र तत् कुसुमित ६ ॥ उम्मीवीईसहस्सकलियति ॥ ऊर्मय: कल्लोला स्तल्लक्षणा या वोचय स्ता ऊर्मिवीचयो वीचिशब्दोहि लोकेत्तरार्थोपि रूढो ऽथवो र्मिवीच्यो विंशेषो गुरुल्व

पडिबुद्धे तं० एगंचणं महाघोररूव दित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराइय पासित्ताणं पडिबुद्धे ॥१॥ एगंचणं महं सुक्किल्लपरक्रगं पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ॥ २ ॥ एगंचणं महं चित्तविचित्तपरक्रग पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ताण पडिबुद्धे ॥ ३ ॥ एगंचणं मह दामदुग सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ॥ ४ ॥ एगचणं मह सेयं गोवग्ग पासित्ताण पडिबुद्धे ॥५॥ एगंचणं महं पउमसर सव्वउसमंता कुसुमिय सुमिणे पासित्ताण पडिबुद्धे ॥ ६ ॥ एगंचणं महसागर उम्मीवीईसहस्सकलियं भुयाहि तिन्नं सुमिणेपा

वीरे छदमस्थावस्थाये पाछलीरातनेविषें ए दश मोटा सुपन देखीने जाग्या काउसगमांज तेकहेछे एक मोटो घोररूप दीप्तिवंतनो धरनार तालपिशाच ताडसमान सुपनमा जीत्यो देखीने जाग्या १ । एक वली मोटो उजलीपाखनो पुंस्कोकिल पुरुष कोईलो सुपनमा देखीने जाग्या २ । एक वली मोटो विविधप्रकारना वर्णनीपाखछे एहवो पुरुषकोकिल सुपनमा देखीने जाग्या ३ । एक वली बेमोटीफूलनी माला सर्वरत्नमय सुपनमा देखीने

लघुखलवण: कचि क्वचिच्छब्दो न पठ्यत एवेति ऊर्मिवीचीनां सहस्रै: कलितो युक्तो य: स तथा तं भुजाभ्यां बाहुभ्यामिति ७ तथा दिनकरं ८ एकोनत्व णमित्यलकारे ॥ महंति ॥ महता छान्दसत्वात् ॥ एगंचणमहंति ॥ पाठे मानुषोत्तरस्यैते विशेषणे ॥ हरिवेरुलियवण्णाभेणति ॥ हरि: पिंगो वर्णो वैडूर्य मणिविशेष स्तस्य वर्णो नीलो वैडूर्यवर्ण स्ताभ्यां स्तद दाभाति यत्त हरिवैडूर्यवर्णाभं तेना थवा हरि नील तथ त वैडूर्यचेति शेष तथैव निजकेना त्मीयेना चेणोदरमध्यावयवविशेषेण ॥ आवेढियति ॥ सकृ दावेष्टित ॥ परिवेढियति ॥ असकृदिति ९ ॥ एगंचणमहंति ॥ आत्मनो विशेषणं ॥ सीहा सणवरगयंति ॥ सिंहासनाना मध्ये य द्वर तत्सिंहासनवर तत्रागतो व्यवस्थितो य स्तमिति १० एतेषामो दशाना महास्वप्नाना फलप्रतिपादनायाह

सित्ताणं पडिबुद्धे ॥ ७ ॥ एगंचण महंदिणकरं तेयसाजलंतं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ॥ ८ ॥ एगंचण महं हरिवेरुलियवण्णाभेणं नियएण अतेण माणुसुत्तरं पव्वय सव्वउसमंता आवेढियपरिवेढियं सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ॥ ९ ॥ एगंचण महं मंदरेपव्वए मंदरचूलियाए उवरि सीहासणवरगय अत्ताणं सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ॥ १० ॥ जन्नं समणेभगव महावीरे एगं महं घोररूव दित्तधर तालपिसाय सुविणे पराजियं

जाग्या ४। एक वली मोटो उजलो गायनीवर्ग सुपनमा देखीने जाग्या ५। एक वली मोटु पद्मसरोवर च्यारे दिसे कुसुमित फूल्यो सुपनमा देखीनें जाग्या ६। एक वली मोटो समुद्र हजारेंगमे लहरेंसहित भुजाये तर्यो सुपनमा देखी जाग्या ७। एक तेजे करी जाज्वल्यमान सूर्य सुपनमा देखीने जाग्या ८। एक वली मोटो पीला वेरुलियरत्नना वर्णसरिखो पोताने आंतरडे करीने मानुषोत्तरपर्वत च्यारेदिशे वींट्यो सुपनमा देखीने जाग्या ९। एक मो

॥ जणमित्यादि ॥ सुगम नवरं ॥ मूलश्रोत्ति ॥ आदितः सर्वथैवेत्यर्थ. ॥ उग्घाइए ॥ उद्घातित विनाशयिष्यमाणत्वेनो पचारात् सूत्रकारापेक्षया त्वयम तीतनिर्देशएवं त्वेव मन्यत्रापि ॥ ससमयपरसमइयति ॥ स्वसिद्धान्तपरसिद्धान्तौ यत्र स्त इत्यर्थो गणिन आचार्यस्य पिटकमिव पिटक वणिजइव सर्वस्व स्थान गणिपिटक ॥ आघवेइत्ति ॥ आख्यापयति ॥ सामान्यविशेषरूपत. प्रज्ञापयति सामान्यतः प्ररूपयति प्रतिसूत्र मर्थकथनेन दर्शयति तदभिप्राय प्रत्युपेक्षणादिक्रियादर्शनेन इय क्रियै भिरवरै रुपात्ता इत्थ क्रियतइतिभावना ॥ निदसेइत्ति ॥ कथञ्चि त्तृह्तः परानुकम्पया निश्चयेन पुनः पुनर्दर्शय

पासित्ताण पडिबुद्धे तस्सं समणेण जगवया महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलउ जग्घाइए ॥ १ ॥ जन्नं समणे जगवमहावीरे एग मह सुक्किलपरकग जाव पडिबुद्धे तस्स समणे जगवमहावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ ॥ २ ॥ जस्स समणेजगव महावीर एगंमह चित्तविचित्तपरकग जाव पडिबुद्धे तस्स समणेजगव महावीरे ससमयपरसमयं चित्तविचित्त डुवालसंग गणिपिडग आघवेइ पन्नवेइ परूवेइ दसेइ निदसेइ उवदसेइ त०

टो मेरुपर्वते मेरुपर्वतनीचूलिका ऊपरे सिंहासनने विषे बेठो सुपनमा देखीने जाग्या १० ॥ जे श्रमण जगवत महावीर एक मोटो घोररूप दीप तो धरतो तालपिशाच सुपनमा दीठो ते देखीने जाग्या तेमाटे श्रमणजगवत श्रीमहावीरे मोहनीकर्म मूलथी घातकर्यो १ । जे श्रमण जगवत म हावीर एक मोटो उजलीपाखनो पुरुष कोईलो देखीने जाग्या तेमाटे श्रमणजगवत महावीर सुक्लध्यानसहित विचर्या २ । जेमाटे श्रमण भगवत म हावीर विचित्रपाखनो यावत् जाग्या तेमाटे श्रमण भगवत महावीर पोतानो समय सिद्धात परना समयनो विविधप्रकारनो अर्थछेजेहमा एहवी

ठा० ॥

५६९ ॥

ति निदर्शयति ॥ उवदसेइत्ति ॥ सकलनययुक्तिभिरिति ॥ चाउवगाइन्नेत्ति ॥ चत्वारोवर्णाः श्रमणादयः समाहृतादति चतुर्वर्णं तदेव चातुर्वर्ण्यं तेना कीर्णः आकुल शातुर्वर्ण्याकीर्णो ऽथवा चत्वारोवर्णाः प्रकाराः यस्मिन् स तथा दीर्घत्व प्राकृतत्वा चतुर्वर्णः शासा वाकीर्णश्च ज्ञानादिभि र्महागुणैरिति चतु र्वर्णाकीर्णः ॥ चउव्विहेदेवेपणवेइत्ति ॥ वन्दनकुतूहलादिनायोजनेना गतान् प्रज्ञापयति जीवाजीवादी न्पदार्थान् बोधयति सम्यक्तं ग्राहयति शिष्यीक

आयारं जाव दिठिवाय ॥ ३ ॥ जन्न समणेन्नगवमहावीरे एगं महं दामदुग सव्वरयणामय जाव पडि बुद्धे तस्स समणेन्नगवमहावीरे दुविह धम्म पन्नवेइ तं० आगारधम्म अणगारधम्मंच ॥ ४ ॥ जन्न समणे न्नगवमहावीरे एगमह सेय गोवग्ग सुमिणे जावपडिबुद्धे तस्स समणस्सन्नगवन्नमहावीरस्स चाउवन्नाइन्ने सघे तं० समणा समणीन सावगा सावियान ॥ ५ ॥ जस्स समणेन्नगवमहावीरे एगमहापउमसर जाव पडि बुद्धे तस्स समणेण न्नगवयामहावीरेणं चउव्विहे देवे पन्नवेइ तं० न्नवणवासी वाणमंतरे जोइसिए वेमाणिए

द्वादशागी रूप गणिपिटक सामान्यविशेषकड्डे प्रज्ञापयति सामान्यथी प्ररूपे सूत्रार्थकाउवेकरी देखाडे क्रिया इमकरीये निश्चे फरी २। देखाडे सर्वनय नी युक्तेकरीदेखाडे तेकहेछे आचाराग यावत् दृष्टिवाद ३। जे श्रमणन्नगवत एक मोटी फूलमाला ये सर्वरतनी यावत् देखीने जाग्या ते एक मोटो स्वेत बेप्रकारे धर्म कहस्ये ते केम श्रावकधर्म यतीनोधर्म ४। जे श्रमण न्नगवत महावीर एक मोटो स्वेत गायनो वर्ग सुपनमा देखीने जाग्या ते माटे श्रमण न्नगवत महावीरने चतुर्विधसघथयो तेकहेछे साधु १। साधवी २। श्रावक ३। श्राविका ४।५॥ जे श्रमण न्नगवत महावीर एक मोटु प

रीतीतियावत् लोकेभ्यो वा ता नरक।ग्रयतिश्रणतेइत्यादौ सूत्रे यावत्करणात् ॥ निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणेत्ति ॥ इग्रमिति ॥ सदेवेत्यादि ॥ सह देवे वैंमानिकज्योतिष्कै र्मनुजै र्नरै रसुरै र्भवनपतिव्यन्तरैश्च वर्त्ततइति सदेवमनुजासुर स्तत्र लोके त्रिलोकरूपे ॥ श्रोरालेत्ति ॥ प्रध नाकीर्त्तिः सर्वदिग्व्यापी साधुवादो वर्ण एकदिग्व्यापी शब्दो ऽर्द्धदिगव्यापी श्लोक स्तत्र स्थानएव श्लाघा एषां द्वंद स्तत एते ॥ परिगुवति ॥ परिगुप्यन्ति व्याकुलीभवति सतत भ्रमन्तोत्यर्थो ऽथवा परिगूयति गुड् धातोः शब्दार्थत्वात् सशब्दान्तइत्यर्थः पाठान्तरत. परिभ्राम्यंति ॥ कयमित्याह ॥ इइखल्वित्वा

६ ॥ जसं समणेन्नगवमहावीरे महं उम्मीवीईसहस्सकलिय जाव पडिबुद्धे तन्न समणेन्नगवमहावीरे च्रणा इएन्नणवयग्गे दीहमद्धे चाउरतसंसारकतारे तिस्स जस्स समणेन्नगवमहावीरे एग मह दिणकर जाव पडिबु द्धे तस्स समणस्स न्नगवन्नमहावीरस्स च्रणते च्रणुत्तरे जाव समुप्पन्ने जसं समणेन्नगवमहावीरे एगेणं महंह रिवेरुलिए जाव पडिबुद्धे तस्ससमणस्स न्नगवन्नमहावीरस्स सदेवमणुयासुरलोए उरालकित्तिवन्नसद्दसिलोगा परिगुवति इइ खलु समणेन्नगवमहावीरे इति ॥ ९ ॥ जस्स समणेन्नगवमहावीरे मंदरेपव्वए मंदरचूलियाए उ

व्नसरोवर देखीजाग्या ते श्रमण भगवत महावीर च्यारप्रकारना देवता कह्या ते कहेछे भवनपती १। व्यतर २। ज्योतिषी ३। वैमानिक ४। ६ जे श्रमण न्नगवत महावीर एक मोटो कल्लोलसहित समुद्रतस्या ते देखीने जाग्या तेमाटे श्रमण भगवत महावीरें अनादि अनत दीर्घकालनो च्यारग तिरूप संसारतस्यो ७। जेमाटे श्रमण न्नगवत महावीर एक मोटो सूर्य देखीयावत् जाग्या तेमाटे श्रमण न्नगवंत महावीरने अनंतो उत्कृष्टु यावत्

त्यादि ॥ इति एव प्रकारार्थः स्वल्पाभिलालंकारे तत्रशेषप्रकारोभगवान् सर्वज्ञानी सर्वदर्शी सर्वसंशयव्यवच्छेदी सर्वबोधकभाषी सर्वजगज्जीववत्सलः सर्वगुणिगणचक्रवर्ती सर्वनरनाथनायकनिकायसेवितचरणयुगलत्वर्थः महावीरइतिनाम एतदेवा वक्ष्ये आघाकारिणामादरस्थापनार्थ मनेकत्वख्याप नार्थवेति ॥ आघवेत्यादि ॥ पूर्ववत् स्वप्नदर्शनकाले भगवान् सरागसम्यग्दर्श नीति सरागसम्यग्दर्शन निरूपयन्नाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ सरागस्या नुपशां तमोगमोहस्य य सम्यग्दर्शन तत्त्वार्थश्रद्धान न्तत्तथा अथवा सरागश्च तत्सम्यग्दर्शनचेतिविग्रह. सराग सम्यग्दर्शनचेति ॥ निस्सग्गगाहा ॥ रुचिशब्दः प्रत्येक सम्बध्यते योज्यते ततो निसर्गः स्वभाव स्तेन रुचि स्तत्त्वाभिलापरूपा यस्येति निसर्गरुचि निसर्गेणावा रुचिरिति निसर्गरुचि योहि जातिस्मरणप्रतिभादि रूपया स्वमत्या वगतान् सद्भूतान् जीवादीन् पदार्थान् श्रद्धधाति स निसर्गरुचिरितिभावः यदाह जोजिणदिट्ठेभावे चउव्विहे [द्रव्यादिभि.] सद्दहा

वरिं जाव पडिबुद्धे तण्ण समणेभगवंमहावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवलिपन्नत्तं धम्मं आ घवेइ पन्नवेइ जाव उवदंसेइ ॥ १० ॥ दसविहे सरागसंमद्दंसणे प० तंजहा निस्सग्गुवएसरुई आणारुइसु

केवलज्ञान ऊपनु ८। जे श्रमण भगवत एक मोटो पीला वैडूर्यरत्नो यावत् मानुषोत्तर देरीनें जाग्या तेमाटे श्रमण भगवत महावीरने देवलोकने विषें मनुष्य असुरलोकनेविषें उदार मोटी कीर्त्ति वर्ण शब्द श्लोक यश सघले व्याप्योछे एहवा निश्चे श्रमण भगवत महावीरछे ९। जे श्रमण भगवत महावीर मेरुपर्वते मेरूनीचूलिका ऊपरे बठ्या यावत् देखी जाग्या तेमाटे श्रमण भगवत महावीर देवता मनुष्य असुरकुमारनी पर्षदामाहे वेसी केवली प्रणीत धर्म आघवे परूपे यावत् देखाडेछे १० ॥ दशप्रकारे सरागसम्यक्त दर्शन कह्यो ते कहेछे निसर्गरुचि १। उपदेशरुचि २। आज्ञारुचि

इसयमेव एमेवणसहत्तिय निस्सग्गरुइत्तिनायव्वोत्ति ॥ १ ॥ तथो पदेशो गुर्वादिकथनं तेन रुचि र्यस्य त्युपदेशरुचि स्तत्पुरुषपचः स्वयमूह्यः सर्वत्रेति योहि जिनोक्तानेव जीवादीनर्थान् तीर्थकरतच्छिष्यादिनोपदिष्टान् श्रद्धत्ते स उपदेशरुचिरितिभाव यतआह एएचेवउभावे उवइट्ठेजोपरेणसद्दहइ छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुईमुणेयव्वोत्ति ॥ १ ॥ तथा आज्ञा सर्वज्ञवचनात्मिका तया रुचि र्यस्य स तथा योहि प्रतनुरागद्वेषमिथ्याज्ञानतया चार्यादी ना माज्ञैव कुग्रहाभावा ज्जीवादि तथेति रोचते मानुषादिवत् स आज्ञारुचिरितिभाव. भणितच रागोदोषोमोहो अन्नाणजस्सअवगयहोइ आणाएरो यतो सोखलुआणारुईनोईत्ति ॥ सुत्तवीयरुईमेवत्ति ॥ इहापि रुचिशब्दस्य प्रत्येक मभिसंबधात् सूत्रेणा गमेन रुचि र्यस्य स सूत्ररुचि र्योहि सूत्रागममधीया न स्तेनैवा गप्रविष्टादिना सम्यक्त्व लभते गोविन्दवाचकवत् स सूत्ररुचि रितिभाव' अभिहितच जोसुत्तमहिज्जतो सुएणओगाहईउसमत्तं अगेणबाहिरे णव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वोत्ति ॥ १ ॥ तथा बीजमिव बीज यदेक मप्यनेकार्थप्रतिबोधोत्पादक वच स्तेन रुचि र्यस्य स्त्वेकेनापि जीवादिनापदेनावगतेना नेकेषु पदार्थेषु रुचि रुपैति सबीजरुचि रितिभाव उक्तंच एगपएणेगाइ पयाइजोपसरईउसम्मत्ते उदएव्वतेल्लबिंदू सोवीयरुयत्तिनायव्वोत्ति ॥ १ ॥ ए वेति समुच्चये तथा ॥ अभिगमवित्थाररुइत्ति ॥ इहापि प्रत्येक रुचिशब्दः सबधनीय स्तत्रा भिगमो ज्ञान ततो रुचि र्यस्य सो भिगमरुचि र्येन ह्याचारा दिक श्रुत मर्थतो ऽधिगत भवति सोभिगमरुचि रभिगमपूर्वकत्वा द्रुचेरितिभाव गाथात्र सोहोइअभिगमरुई सुअनाणजस्सअत्थओदिट्ठ एक्कारसअंगा इ पइण्णया दिट्ठिवाओयत्ति ॥ १ ॥ तथा विस्तारो व्यास स्ततो रुचि र्यस्य सतथेति येन हि धर्मास्तिकायादिद्रव्याणा सर्वपर्याया' सर्वै र्नयैः प्रमाणैर्ज्ञाता भवति स विस्ताररुचि र्ज्ञानानुसारिरुचित्वादिति न्यगादिच दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहि जस्सउवलद्धा सव्वाहिनयविहीहि वित्थाररुईमुणेयव्वोत्ति ॥ १ ॥ तथा क्रिया नुष्ठान रुचिशब्दयोगा त्तत्र रुचि र्यस्य स क्रियारुचि रिदमुक्तंभवति दर्शना द्याचारानुष्ठाने यस्य भावतो रुचि रस्ति स क्रियारुचिरिति

उक्तञ्च गाथे ॥ दंसणणाणचरित्ते तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु जो किरियाभावरुई सो खलु किरियारुई नामेत्ति ॥ १ ॥ तथा सङ्क्षेपः संग्रहस्तत्र रुचिर्यस्येति सङ्क्षेपरुचिर्यो ह्यनभिगृहीतकुदृष्टिरनभिज्ञश्च प्रवचनेऽनभिज्ञश्च सङ्क्षेपेणैव चिलातीपुत्रवदुपशमादिपदत्रयेण तत्त्वरुचिमवाप्नोति स सङ्क्षेपरुचिरिति भावः आह च अणभिग्गहियकुदिट्ठी संखेवरुइत्ति होइ नायव्वो अविसारओ पवयणे अणभिग्गहिओ य सेसेसुत्ति ॥ १ ॥ तथा धर्मे श्रुतादौ रुचिर्यस्य स तथा यो हि धर्मास्तिकायं श्रुतधर्मं चारित्रधर्मं च जिनोक्तं श्रद्धत्ते स धर्मरुचिरिति ज्ञेयः यदाह जो अत्थिकायधम्मं सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च सद्दहइ जिणाभिहियं सो धम्मरुइत्ति नायव्वोत्ति ॥ १ ॥ अयञ्च सम्यग्दृष्टिर्दशानामपि संज्ञानां क्रमेण व्यवच्छेदं करोतीति ता आह ॥ दसेत्यादि ॥ संज्ञानं संज्ञा आभोग इत्यर्थः मनोविज्ञानमित्यन्ये संज्ञायते वा आहारादार्थी जीवो नयेति संज्ञा वेदनीयमोहनीयोदयाश्रया ज्ञानदर्शनावरणक्षयोपशमाश्रया च विचित्राहारादिप्राप्तये क्रियैवेत्यर्थः सा चोपाधिभेदाद्भिद्यमाना दशप्रकारा भवतीति तत्र क्षुद्वेदनीयोदयात् कवलाद्याहारार्थं पुद्गलोपादानक्रियैव संज्ञायते नयेत्याहारसंज्ञा तथा भयवेदनीयोदयाद्भयोद्भ्रान्तस्य दृष्टिवदनविकाररोमाञ्चोद्भेदादिक्रियैव संज्ञायते नयेति भयसंज्ञा तथा पुंवेदोदयात् मैथुनाय स्त्र्यङ्गालोकनप्रसन्नवदनसंस्तम्भितोरुवेपथुप्रभृतिलक्षणा च क्रियैव संज्ञायते नयेति मैथुनसंज्ञा तथा लोभोदयात् प्रधानभवकारणाभिष्वङ्गपूर्विका सचित्तेतरद्रव्योपादानक्रियैव संज्ञायते नयेति परिग्रहसंज्ञा तथा क्रोधोदयात् तदावेशगर्भा प्ररूक्षमुखनयनदन्तच्छदचेष्टैव संज्ञायते ऽनयेति क्रोधसंज्ञा तथा मानोदयादहङ्कारात्मिकोत्से

तवीयरुइमेव अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवधम्मरुई ॥ १ ॥ दस सन्नाओ प० तंजहा आहारसन्ना जाव

३ । सूत्ररुचि ४ । बीजरुचि ५ । अभिगमरुचि ६ । विस्ताररुचि ७ । क्रियारुचि ८ । संक्षेपरुचि ९ । धर्मनीरुचि १० ॥ १ ॥ भगवते दश संज्ञा कही

कादि परिणतिरेव संज्ञायते नयेति मानसंज्ञा तथा मायोदयेना शुभसंक्लेशा दनृतसभासणादिक्रियैव संज्ञायते ऽनयेति मायासंज्ञा तथा लोभोदया त्लो भसत्वान्विता सचित्तेतरद्रव्यप्रार्थनैव संज्ञायते नयेति लोभसंज्ञा तथा मतिज्ञानाद्यावरणक्षयोपशमा च्छब्दाद्यर्थगोचरा सामान्यावबक्रियैवधो संज्ञायते नये त्योघसंज्ञा तथा तद्विशेषावबोधक्रियैव संज्ञायते नयेति लोकसंज्ञा १० तत ओघसंज्ञा दर्शनोपयोगो लोकसंज्ञा ज्ञानोपयोग इतिव्यत्यय मन्ये पुन रित्थ मभिदधति सामान्यप्रवृत्तिरोघसंज्ञा लोकदृष्टि र्लौकसंज्ञा एताश्च सुखप्रतिपत्तये स्पष्टरूपाः पञ्चेन्द्रिया नधिकृत्योक्ता एकेन्द्रियादीनान्तु प्रायोयथोक्तक्रिया निबन्धनकर्मोदयादिपरिणामरूपा एवा वगन्तव्या यावच्छब्दौ व्याख्यातार्थौ एता एव सर्वजीवेषु चतुर्विंशतिदण्डकेन निरूपयति ॥ नेरइयेत्यादि ॥ एव चेवत्ति ॥ यथा सामान्यसूत्रे एवमेव नारकसूत्रेपीत्यर्थ एव निरंतरमिति यथा नारकसूत्रे संज्ञा स्तथा शेषेष्वपि वैमानिकान्तेष्वित्यर्थौ ऽनन्तरसूत्रे वैमा निका उक्ता स्तेच सुखवेदना अनुभवतीति तद्विपर्यस्तास्तु नारका या वेदना अनुभवती तादर्शयति ॥ नेरइयाइत्यादि ॥ कण्ठ्यं नवर वेदना म्पीडा न्त च शीतस्पर्शजनिता शीता तां साच चतुर्थ्यादिनरकपृथिवीष्विति एव मुष्णा म्प्रथमादिषु क्षुध बुभुक्षा म्पिपासां तृषं कण्डुं खर्जूं ॥ परज्झंति ॥ परतंत्र

परिग्गहसन्ना कोहसन्ना जाव लोभसन्ना उहसन्ना लोयसन्ना ॥१०॥ नेरइयाणं दस सन्ना एवचेव। एवंनिरं तरं जाव वेमाणियाण। नेरइयाणं दसविहं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति तंजहा सीयं उसिण खुह पिवासं

तेकहेछे आहारसंज्ञा १। यावत् परिग्रहसंज्ञा भय मैथुन ५। क्रोधसंज्ञा यावत् लोभसंज्ञा ८। लोकसंज्ञा ९। उघसंज्ञा १०॥ नारकीने दससंज्ञा होय इमज इम निरंतर यावत् वैमानिकनें २४ दण्डके॥ नारकीदशप्रकारनी वेदना प्रते भोगवता विचरें रहेछे ते कहेछे टांढि १। उस्न २। भूख३

ता भय भीति' शोकं दैन्यं जरां हउत्वं व्याधिं ज्वरकुष्टादिकमिति अमुञ्च वेदनादिक ममूर्त्तं मर्थं जिनएव जानाति नछद्मस्थो यतआह ॥ दसेत्यादि ॥
गतार्थं नवर छद्मस्थ इह निरतिशयएव द्रष्टव्यो ऽन्यथा वधिज्ञानी परमाण्वादि जानात्येव ॥ सव्वभावेणति ॥ सर्व्वप्रकारेण स्पर्शरसगन्धरूपज्ञानेन घट
मिवेत्यर्थो धर्मास्तिकाय यावत्करणा दधर्मास्तिकाय माकाशास्तिकाय जीव मशरीरप्रतिबद्धं परमाणुपुद्गल शब्दंगन्धमिति ॥ अयमित्यादि ॥ अयमधिक
मिह तत्रायमिति प्रत्यक्षज्ञानसाक्षात्कृतो जिनः केवलीभविष्यति नवाभविष्यतीति नयम तथायं ॥ सव्वेत्यादि ॥ प्रकट दशममिति एतान्येव छद्मस्था
नववोध्यानि सातिशयज्ञानादित्वा ज्जिनो जानातीति आहच ॥ एयाइंइत्यादि ॥ यावत्करणात् जिणे अरहा केवली सव्वण्णू सव्वभावेण जाणइ पा
सइ तजहा धम्मत्थिकायमित्यादि याव इशम स्थानं तच्चोक्त मेवेति सर्व्वज्ञत्वा देव या ज्जिनो ऽतीन्द्रियार्थप्रदर्शकान् श्रुतविशेषान् प्रणीतवा स्तान् दश

कम्मुं परज्ञं भयं सोगं जर वाहि । दस ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेण नयाणइ नपासइ तजहा धम्मत्थिकायं
जाव वाय । अयंजिणेभविस्सइ वानभविस्सइ अयं सव्वदुक्खाणमंत करिस्सइवा णवाकरिस्सइ एयाणिचेव
उप्पन्ननाणदंसणधरे जाणइ जाव अयं सव्वदुक्खाणमंत करिस्सइवा नकरिस्सइ । दसदसाउ पन्नत्ताउ तंजहा

तृषा ४ । खाज ५ । परवसपणुं ६ । भय ७ । शोक ८ । ज्वर ९ । व्याधि १० ॥ दश थानक छदमस्थ सर्वभावेकरी नजाणे नपासे नदेखे ते कहेछे ध
र्मास्तिकाय यावत् वायु आ जीव जिन थास्ये के अथवा नही थाय आ जीव सर्व दुखनो अत करस्ये अथवा नही करे ए उपना ए दश थाना ऊ
पना ज्ञानदर्शनना धरनार अरिहत जाणे यावत् सर्वदुखनो अत करस्ये अथवा नहीकरे ॥ दश दशा कही अधिकारविशेष ते कहेछे कर्मविपाकद

स्थानकानुपातिनो दर्शयन्नाह ॥ दसदसेति ॥ दशसूत्राणि तत्र ॥ दसत्ति ॥ दशसंख्याः ॥ दसाओत्ति ॥ दशाधिकाराभिधायकत्वा द्दशाइति वहुवचनां त्वं स्त्रीलिङ्गं शास्त्रस्या भिधानइति कर्मणो शुभस्य विपाकः फल कर्मविपाक स्तत्प्रतिपादिका दशा ध्ययनात्मकत्वा द्दशा कर्मविपाकदशाः विपाकश्रुता ख्यस्यै कादशाङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धो द्वितीयश्रुतस्कन्धो प्यस्य दशाध्ययनात्मकएव नचा सा विहाभिमत उत्तरत्र विवरिष्यमाणत्वादिति तथा साधू नुपा सते सेवत इत्युपासकाः श्रावका स्तद्गतक्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशाध्ययनोपलक्षिता उपाशकदशा. सप्तम मङ्गमिति तथा अंतो विनाश. सच कर्म ण स्तत्फलभूतस्यवा समारम्य कृतो यै स्तें ऽतकृत स्तेच तीर्थकरादय स्तेषा न्दशा अन्तकृद्दशा इह चाष्टमाङ्गस्य प्रथमवर्गे दशाध्ययनानीति तत्संख्य योपलक्षितत्वा दन्तकृतदशा इत्यभिधानेना ष्टममङ्ग मभिहित तथो त्तर. प्रधानो नास्योत्तरो विद्यत इत्यनुत्तर उपपतन मुपपातो जन्मेत्यर्थो ऽनुत्तर श्वासा वुपपात श्चेयनुत्तरोपपातः सोस्ति येशाते ऽनुत्तरोपपातिकाः सर्वार्थसिद्धादिविमानपञ्चकोपपातिनइत्यर्थ स्तद्वक्तव्यताप्रतिबद्धा दशा दशाध्यय नोपलक्षिता अनुत्तरोपपातिकदशा नवम मङ्गमिति तथा चरण माचारो ज्ञानादिविषयः पचधा आचारप्रतिपादनपरा दशा दशाध्ययनात्मिका आचारदशा दशाश्रुतस्कंधइति या रूढा स्तथा प्रश्नस्य पृच्छा व्याकरणानिच निर्वचनानि प्रश्नव्याकरणानि तत्प्रतिपादिका दशा दशाध्ययनात्मिकाः प्रश्नव्याकरणदशा दशम मङ्गमिति तथा बन्धदशा द्विगृद्धिदशा दीर्घदशा संक्षेपिकदशा श्चास्माक मप्रतीताइति कर्मविपाकदशाना मध्ययनविभाग माह

कम्मविवागदसाउं उवासगदसाउं अंतगडदसाउं अणुत्तरोववाइयदसाउं आयारदसाउं पराहावागरणदसाउं

शा उपासकदशा अतगडदशा अनुत्तरोववाईदशा प्रश्नव्याकरणदशा आचारांगदशा बधदशा दोगिद्धिदशा दीर्घदशा संक्षेपदशा ए सर्व सूत्र १० ॥

कम्मेत्यादि ॥ मियेत्यादि ॥ श्लोकः सार्द्धः मृगा मृगग्रामाभिधाननगरराजस्य विजयनाम्नो भार्या तस्याः पुत्रो मृगापुत्र स्तत्र किल नगरे महावीरो गौतमे न समवसरणागतंजात्यन्धं नर मवलोक्य पृष्टो भदन्ता न्योपीहास्ति जात्यंधो भगवा स्तं मृगापुत्रं जात्यन्ध मनाकृति मुपदिदेश गौतमस्तु कुतूहलेन तद्द र्शनार्थं तद्गृह जगाम मृगादेवीच वन्दित्वा गमनकारण पप्रच्छ गौतमस्तु त्वत्पुत्रदर्शनार्थ मित्युवाच ततः सा भूमिगृहस्य द्वारोद्घाटनेन त्वं गौतमस्य दर्शि तवती गौतमस्तु त मतिघृणास्पद दृष्ट्वा गत्वच भगवत पप्रच्छ कोयं जन्मान्तरेऽभवत् भगवा नुवाच पयसि विजयवर्द्धमानकाभिधाने खेटे मकाकयित्वभिधा नो नवशोपचारादिभि र्लोकोपतापकारी राष्ट्रकूटो बभूव ततः षोडशरोगातङ्काभिभूतो मृतो नरकगत स्ततः पापकर्मविपाकेन मृगापुत्रो लोष्टाकारो ऽव्यक्ते न्द्रियो दुर्गन्धो जात स्तंतो मृत्वा नरकंगत इत्यादि तदर्थाव्यताप्रतिपादक प्रथम मध्ययनं मृगापुत्र सूत्रमिति ॥ गोत्तासेत्ति ॥ गास्त्रासितवानिति गो त्रासो यदि हस्तिनागपुरे भीमाभिधानकूटग्राहस्यो त्पलाभिधानाया भार्यायाः पुत्रो ऽभूत् प्रसवकाले चानेन महापापसत्वेना राज्यागाव स्त्रासिता गो त्रनेचाय गोमांसा न्यनेकधा भक्षितवान् ततो नारको जात स्ततो वाणिजग्रामनगरे विजयसार्थवाहभद्राभार्ययो रुज्झितकाभिधानः पुत्रोजातः सच का मध्वजगणिकार्थं राज्ञा तिलशो मांसच्छेदनेन तत्खादनेनच चतुष्पथे विडंब्य व्यापादितो नरकं जगामेति गोत्रासवक्तव्यताप्रतिबद्ध द्वितीय मध्ययन

बधदसाउ दोगिद्धिदसाउ दीहदसाउ संखेवियदसाउ । कम्मविवागदसाणं दसज्झयणा पण्णत्ता तंजहा । मियापुत्तेय गुत्तासे अंडेसगडेइयावरे

कर्मविपाकदशाना दश अध्ययनकह्या ते कहैछे मृगापुत्रनुं १ । गोत्रासनुं २ । अंडनुं ३ ।

गोत्रासमुच्यते इदमेव चोज्झितकनाम्ना विपाकश्रुते उज्झितक मुच्यतइति २ ॥ अडेत्ति ॥ पुरिमतालनगरवास्तव्यस्य कुक्कुटाद्यनेकविधाण्डजभाण्डव्यवहा रिणो वाणिजकस्य निन्नकाभिधानस्य पापविपाकप्रतिपादकमण्डमिति सच निन्नको नरकङ्गत स्तत उद्धृत्तो ऽभग्नसेननामा पल्लीपति र्जातः सच पु रिमतालनगरवास्तव्येन निरन्तरं देशलूषणातिकोपितेन विश्वास्या नीय प्रत्येकं नगरचत्वरेषु तदग्रत' पितृव्यपितृव्यानीप्रभृतिक स्वजनवर्गं विनाश्य तिलशो मासच्छेदनरुधिरमांसभोजनादिना कदर्थयित्वा निपातितइति विपाकश्रुतेवा भग्नसेन इतीद मध्ययन मुच्यते ३ ॥ सगडित्तियावरे ॥ शकट मिति चापर मध्ययन तत्र शाखाञ्जन्या न्नगर्यां सुभद्राख्यसार्थवाहभद्राभिधानतद्भार्ययोः पुत्र. शकट. सच सुसेनाभिधाना मात्येन सुदर्शनाभिधानगणि काव्यतिकरे सगणिको मांसच्छेदादिना ऽत्यत कदर्थयित्वा विनाशित: सच जन्मान्तरे छगलपुरे नगरे छन्निकाभिधानच्छागलिको मासप्रिय आसी दित्ये तदर्थप्रतिबद्धं चतुर्थमिति ४ ॥ माहणेत्ति ॥ कौशाम्ब्या वृहस्पतिदत्तनामा व्राह्मण' सचान्त. पुरव्यतिकरे उदायनेन राज्ञा तथैव कदर्थयित्वा मारितो ज मान्तरे चासा वासीत् महेश्वरदत्तनामा पुरोहित. सच जितशत्रो राज्ञः शत्रुजयार्थं व्राह्मणादिभि र्होम चकार तत्र प्रतिदिन मेकैक चातुर्वर्ण्य दारक मष्टम्य।दिषु द्वौ चतुर्मास्य। चतुर श्चतुरः षण्मास्या मष्टा वष्टौ सम्वत्सरे षोडश २ परचक्रागमे ऽष्टशत २ परचक्र चजीयते तदेव मृत्वा ऽसौ नरक जगा मे त्येव व्राह्मणवक्तव्यतानिबद्ध पञ्चममिति ५ ॥ नदिसेणयत्ति ॥ मथुराया श्रीदामराजसुतो दन्दिषेणो युवराजो विपाकश्रुते च नन्दिवर्द्धन. श्रूयते स

माहणेनंदिसेणेय सूरिएयउदुंबरे ॥ ७ ॥

शकटनुं ४। ब्राह्मणनु ५। नदिषेणनु ६। सौरिकनुं ७। उदंबरदत्तनूं ८।

च राजद्रोहप्रवृत्ति तरे राज्ञा नगरचत्वरे तप्तस्वलोहस्यद्रवेण स्नान तप्तविधसिंहासनोपवेशन क्षारतैलभृतकलशै राज्याभिषेकश्च कारयित्वा कष्टमारेण परा मृ॥ षष्ठीं नरक मगम त्सच जन्मान्तरे सिंहपुरनगरराजस्य सिंहरथाभिधानस्य दुर्योधननामा गुप्तिपालो बभूवा नेकविषयातनाभि र्जन क्ष्दर्थयित्वा मृतो नरक गतवा निर्त्येव मर्थ षष्ठमिति ६ सोरियत्ति ॥ सौरिकदत्तो नाम मत्स्यबन्धपुत्रः सच मत्स्यमांसप्रियो गलविलग्नमत्स्यकण्टको महाकष्ट मनुभूय मृत्वा नरक गतः सच जन्मान्तरे नन्दिपुरनगरराजस्य मित्राभिधानस्य श्रीकोनाम महानसिको भूज्जीवघातरति मांसप्रियश्च मृत्वा षष्ठीं नरकगतवानिति सप्तम ७ ॥ इद घाध्ययनविपाकश्रुते ष्टम मवीत॥ उदुंबरेत्ति ॥ पाटलीखण्डेनगरे सागरदत्तसार्थवाहसुत उदुम्बरदत्तो नाम्ना ऽभूत् सच षोडशभीरोगै रेकाद्या ऽभिभूतो महाकष्ट मनुभूय मृतः सच जन्मान्तरे विजयपुरराजस्य कनकरथनाम्नो धन्वन्तरिनामा वैद्यआसीन् मांसप्रियो मांसोपदेष्टा चेति कृत्वा नरकङ्गतवा नि त्यष्टम ८॥ सहस्सुद्दाहेति ॥ सह ।। ऽवासा दाहः प्रकृष्टोदाहः सहसोदाह. सहस्राणा या लोकस्योदाहः सहस्रोदाहः ॥ आमलएति ॥ रघुतेर्लुप्तिरित्यामरका. सामलकेन मारियि मर्थातिबद्ध नवम तम किल सुप्रतिष्ठे नगरे सिंहसेनो राजा श्यामाभिधानदेव्या मनुरक्त स्तद्धचना देवे कोनानि पञ्चशतानि देवीना ता मिमारणिषूणि ज्ञात्वा कुपितः सन् तन्मातॄणा मेकोनपञ्चशता न्युपनिमंत्र्य महत्यगारे आवास दत्वा भक्तादिभिः सम्पूज्य विश्वस्थानि सदेवीकानि सपरिवाराणि सर्वतो द्वारबन्धनपूर्वक मग्निप्रदानेन दग्धवा न्सतो सो राजा मृत्वा षष्ठ्याम् गत्वा रोहीतके नग

सहसुद्दाहेञ्चामलए कुमारेलेच्छईतिय ।

सहस्रोदाह आमलकनू ९ । कुमारलच्छीनू १० ॥

रे दत्तसार्थवाहस्य दुहिता देवदत्ताभिधानाऽभवत् साच पुष्पनन्दिना राज्ञा परिणीता सच मातुर्भक्तिपरतया तत्कृत्यानि कुर्वन्नासामास तयाच भोगविघ्नकारिणीति तन्मात् ज्वलल्लोहदण्डस्या पानप्रक्षेपात्सहसा दाहनवधो व्यधायि राज्ञा चासौ विविधविडंबनाभिर्विडंब्य विनाशितेति विपाक श्रुते देवदत्ताभिधान नवममिति ९ तर्या ॥ कुमारेलेच्छईइयत्ति ॥ कुमाराः राज्यार्हा अथवा कुमाराः प्रथमवयस्था स्तान् ॥ लेच्छईइयत्ति ॥ लिप्सुश्च वणि जश्चाश्रित्य दशम मध्ययनमिति शब्दस्य परिसमाप्तो भिन्नक्रमश्चेति अथ मत्तभावार्थौ यदुत इन्द्रपुरे नगरे पृथिवी श्रीनामगणिका ऽभूत्साच वह्नन् राज कुमारवणिक्पुत्रादीन् मन्त्रचूर्णादिभिर्वशीकृत्यो दारान् भोगान् भुक्तवती षष्ठ्यांच गत्वा वर्द्धमाननगरे धनदेवसार्थवाहदुहिता अञ्जूरित्यभिधाना जाते ति साच विजयराजपरिणीता योनिशूलेनकृच्छ्र जीवित्वा नरक गतेति अतएव विपाकश्रुते अञ्जूइति दशम मध्ययन मुच्यतइति उपाशकदशाविहृत्त न्नाह ॥ दसेत्यादि ॥ आनन्दे सार्द्धश्लोक' ॥ आणंदेत्ति ॥ आनन्दो वाणिजग्रामाभिधाननगरवासी महर्द्धिको गृहपति र्महावीरेण बोधित एकादशोपाश कप्रतिमाकृत्वोत्पन्नावधिज्ञानो मासिक्यासंलेखनया सौधर्ममगम दितिवक्तव्यताप्रतिबद्ध प्रथममध्ययन मानंदएवोच्यतइति १ ॥ कामदेवेत्ति ॥ कामदेव श्च म्पानगरीवास्तव्य स्तथैव प्रतिबुद्धः परीक्षाकारिदेवकृतोपसर्गनिचलितप्रतिज्ञ स्तथैव द्विवमगम दित्येव मर्थ द्वितीयं कामदेव इति २ ॥ गाहावइचुलणी पियत्ति ॥ चुलनीपितृनामा गृहपति र्वाराणसीनिवासी तथैव प्रतिबुद्धः प्रतिपन्नप्रतिमो विमर्शकदेवेन मातर र्निखंडा क्रियमाणा दृष्ट्वा क्षुभित श्चलित

उवासगदसाणं दस अज्झयणा पणत्ता तजहा आणंदेकामदेवेय गाहावइचुलणीपिया सुरादेवे

उपासकदशागना दश अध्ययन कह्या ते कहेछे आणंदनूं १। कामदेव

प्रतिज्ञो देवनिग्रहार्थमुद्यतः पुनः कृतालोचनस्तथैव दिवंगतः इतिवक्तव्यताप्रतिबद्धं चुलनीपितेत्युच्यते ३ ॥ सुरादेवेत्ति ॥ सुरादेवो गृहपति वाराण सीनिवासी परोपकृतदेवस्य षोडशरोगातङ्कानुभवतः शरीरे शमना मुपनयामि यदि धर्मं न त्यजसीति वचन मुपश्रुत्य चलितप्रतिज्ञः पुनरालोचितप्रतिक्रान्त स्तथैव दिवङ्गत इतिवक्तव्यताभिधायका सुरादेव इति ४ ॥ चुल्लसयएत्ति ॥ महाशतकापेक्षया लघुः शतका चुल्लशतका. सचालभिकाभिधाननगरनिवासी देवेनोपसर्गकारिणा द्रव्यमुपह्रियमाण मुपलभ्य चलितप्रतिज्ञः पुनर्निरतिचारःसन् दिव मगम यथा तथा यत्रा भिधीयते तच्चुल्लशतकइति ५ ॥ गाहा. वइकुंडकोलियत्ति ॥ कुंडकोलिको गृहपतिः काम्पिल्यवासी धर्मध्यानस्थो यथादेवस्य गोशालमत मुद्ग्राहयत उत्तरं ददौ दिवं च ययौ यथा यत्राभिधीयते तत्तथेति ६ ॥ सद्दालपुत्तेत्ति ॥ सद्दालपुत्र पोलासपुरवासी कुम्भकारजातीयो गोशालको भगवताबोधितः पुनः समतग्राहणोद्यतेन गोशालकेना क्षोभितान्तःकरणः प्रतिपन्नप्रतिमस्य परोक्षकदेवेन भार्यामरणदर्शनतो भग्नप्रतिज्ञः पुनरपिकृतालोचन स्तथैव दिवङ्गत इतिवक्तव्यताप्रतिबद्ध सद्दालपुत्र इति ७ ॥ महासयएत्ति ॥ महाशतकनाम्नो गृहपते राजगृहनगरवसते स्त्रयोदशभार्यापते रुपासकप्रतिमाक्षातमते रुत्पन्नावधि. संजाताधिगते रेवत्यभिधानस्वभार्याकृतानुकूलोपसर्गाचलमतेः सल्लेखनाजातदिवि गते वक्तव्यतानिबद्ध महाशतक इति ८ ॥ नदिणीपियत्ति ॥ नन्दिनीपितृनामकस्य श्रावस्तीवास्तव्यस्य भगवता बोधितस्य सल्लेखनाद्दिवगतस्य वक्तव्यतानिबन्धना नन्दिनीपितृनामक इति ९ ॥ सालेइयापियत्ति ॥ सालेयिकापितृनाम्नः श्रावस्तीनि

चुल्लसयए गाहावइकुंडकोलिए ॥ १ ॥ सद्दालपुत्तेमहासयए णंदिणीपियसालेइयापिया । अंतगडदसाणं दस

नू २। गाथापती चुलनीपितानूं ३। सुरादेवीनूं ४। चुल्लशतकनू ५। गाथापती कुंडकोलिकनू ६। सद्दालपुत्रनू ७। महाशतकनूं ८। नंदिनीपिता

वासिनो गृहमेधिनो भगवतो बोविलाभिनो नन्तरं तथैव सौधर्मगामिनो वक्तव्यतानिबद्धं सालेयिकापिटनामकं दशममिति १० ॥ दशाप्यमी विंशति वर्षपर्यायाः सौधर्मगता श्चतु.पल्योपमस्थितयो देवा जाता महाविदेहेच सेत्स्यन्तीति अथान्तकृद्दशाना मध्ययनविवरणमाह ॥ अंतगडेत्यादि ॥ इह चाष्टौ वर्गा स्तत्र प्रथमवर्गे दशाध्ययनानि तानिचा मूनि ॥ नमीत्यादि ॥ सार्द्ध रूपक एतानिच नमीत्यादिका न्यतकृत्साधुनामानि अंतकृद्दशांगप्रथमवर्गे अ ध्ययनसंग्रहे नोपलभ्यते यत स्तत्रा भिधीयते गोयमसमुद्दसागर गंभीरेचेवहोइथिमिएय । अयलेकपिल्लेखलु अक्खोभपसेणईविण्हुत्ति ॥ १ ॥ ततो वाच नान्तरापेक्षाणी मानीतिसम्भावयामो नच जन्मान्तरनामापेक्षयै तानि भविष्यतीति वाच्य जन्मान्तराणा तत्रा नभिधीयमानत्वादिति अधुना नुत्तरोप पातिकदशाना मध्ययनविभागमाह ॥ अणुत्तरोइत्यादि ॥ इहच त्रयो वर्गा स्तत्र तृतीयवर्गे दृश्यमानाध्ययनैः कैश्चि त्सह साम्य मस्ति न सर्वै र्यत इहो क्त ॥ इसिदासेइत्यादि ॥ तत्रतुदृश्यते धन्नेयसुनक्खत्ते इसिदासेयआहिए पेल्लएरामपुत्तेय चंदिमापुट्ठिकेइय ॥ १ ॥ पेढालपुत्तेअणगारे अणगारेपोट्टिलेइ य वेहल्लेदसमेवुत्ते एमेएदसआहिएत्ति ॥ २ ॥ तदेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षया ऽध्ययनविभाग उक्तो न पुन रुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति तत्र धन्यकसु

अज्झयणा पन्नत्ता तजहा नमीमयंगेसोमिल्ले रामगुत्तेसुदंसणे जमालीयन्नगालीय किंकंमेपल्लएइय ॥ १ ॥ फालेअअठपुत्तेय एमेतेदसआहिया । अणुत्तरोववाइयदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता तजहा इसिदासेयधन्नेय

नूं ९ । शालिकापुत्रनूं १० ॥ अंतगडदशांगनां दश अध्ययन कह्या तेकहेछे नमीनूं १ । मातंगनूं २ । सोमिलनूं ३ । रामगुप्तनूं ४ । सुदर्शननूं ५ । ज मालीनु ६ । जगालीनु ७ । किंकर्मपल्लेतिनुं अध्ययन ८ । फालितनुं ९ । मङ्कितपुत्रनूं १० ॥ ए दश अध्ययन कह्या॥ अनुत्तरोववाईना दश अध्ययन कह्या

नक्षत्रकथानक एवं काकन्द्यां नगर्यांभद्रासार्थवाहीसुतो धन्यकोनाम महावीरसमीपे धर्म मनुश्रुत्य महाविभूत्याप्रव्रजितः षष्ठोपवासी उज्झमानलब्धा वा म्लपारणीविशिष्टतपसा चीणमांसशोणितो राजगृहे श्रेणिकमहाराजस्य चतुर्दशाना श्रमणसहस्त्राणामध्ये अतिदुष्करकारकइति महावीरेण व्याहृत स्त्रि नच राज्ञा सभक्तिकं वंदित उपबृंहितश्च कालचकृत्वा सर्वार्थसिद्धिविमाने उत्पन्नइति एवसुनक्षत्रोपीति कार्त्तिकइति हस्तिनागपुरे श्रेष्ठी इभ्यसहस्रप्रथ मासनिक' श्रमणोपासको जितशत्रुराजस्या भियोगात् परिव्राजकस्य मासक्षपणपारणके भोजन परिवेषितवान् तमेव निर्वेद कृत्वा मुनिसुव्रतस्वामिसमी पे प्रव्रज्या प्रतिपन्नवान् द्वादशाङ्गधरा भूत्वा शक्रत्वेनो त्पन्न इत्येव यो भगवत्या श्रूयते सो न्यएवान पुन रन्यो ऽनुत्तरसुरेषू पपन्नइति शालिभद्रइति यः पू र्वभवे सगमनामावत्सपालो ऽभवत् सबहुमानश्च साधवे पायसमदात् राजगृहे गोभद्रः श्रेष्टिन. पुत्रत्वेनो त्पन्नो देवीभूतगोभद्रश्रेष्ठिससुपनीतदिव्यभोजन वसनकुसुमविलेपनभूषणादिभि र्भोयाङ्गै रङ्गनाना द्वात्रिंशता सह सप्तभूमिकरम्यहर्म्यतलगतो ललतिस्म वाणिजकोपनीतलक्षमूल्यबहुरत्नकवला गृहीता भद्रया सालिभद्रमात्रा वधूनापादप्रोंच्छनीकृता शेति श्रवणा ज्जातकुतूहले दर्शनार्थ गृहमागते श्रेणिकमहाराजे जनन्याभिहितो यथा त्वा स्वामी द्रष्टु मिच्छतो त्यवतर प्रासादश्शृगा त्स्वामिन पश्येति वचनश्रवणा दस्माक मप्यन्य' स्वामीति भावयन् वैराग्य मुपजगाम वर्द्धमानस्वामिसमीपेच प्रवव्राज विकृष्टतपसा चीणदेह. शिलातले पादपोपगमनविधिना नुत्तरसुरेषू त्पन्नवानिति सोय मिह सभाव्यते केवलम नुत्तरोपपातिकाङ्गे नाधीतइति ॥ तेतली

सुनक्खत्तेयक्कित्तिये सठाणेसालिभद्देय आणंदेतेयलीइय ॥ १ ॥ दसन्नभद्देअइमुत्ते एमेतेदसआहिया । छाया

भगवते तेकहैठे इशिदासनु १ । धन्नानु २ । सुनक्षत्रनो ३ । कार्तिकनो ४ । सस्थाननो ५ । शालिभद्रनो ६ । आणंदनो ७ । तेतलीनो ८ ॥ १ ॥ दशार्ण

इयत्ति ॥ तेतलिसुतइति यो ज्ञाताध्ययनेषु श्रूयते सनाय तस्य सिद्धिगमनश्रवणात् तथा दशार्णभद्रो दशार्णपुरनगरनिवासी विश्वम्भराविभु र्यो भगवत महावीरं दशार्णकूटनगरनिकटसमवसृत मुद्यानपालवचना दुपलभ्य यथा न केनापि वंदितो भगवां स्तथा मया वंदनीयइति राज्यसंपदवलेपा द्भ क्तितश्च चिन्तयामास ततः प्रातः सविशेषकृतस्नानविलेपनाभरणादिविभूषः प्रकल्पितप्रधानद्विपपतिपृष्ठारूढो वरवानादिविविधक्रियाकारिसदृश्यसर्य्यं श्वतुरगसैन्यसमन्वितः पुष्यमाणवकसमुद्घुष्यमाणागणितगुणगणः सामन्तामात्यमन्त्रिराजदौवारिकदूतादिपरिवृतः सातःपुरपौरजनपरिवृत आनंदमयमि व संपादयन्महीमंडल माखंडलइवा मरावत्या नगरा न्निर्जगाम निर्गत्यच समवसरण मभिगम्य यथाविधि भगवंतं भव्यजननलिनवनविबोधनाभिनवभा नुमंत महावीरं वंदित्वा पविविश श्रवगतदशार्णभद्रभूपाभिप्रायच तन्मानविनोदनोद्यत कृताष्टमुखे प्रतिमुख विहिताष्टदंते प्रतिदंतं कृताष्टपुष्करणीके प्रतिपुष्करणिनिरूपिताष्टपुष्करे प्रतिपुष्कर विरचिताष्टदले प्रतिदल विरचितद्वात्रिंशद्बद्धनाटके वारणेन्द्रे सारूढ स्वश्रिया निखिल गगनमण्डल मापूरय न्त ममरपतिमवलोक्य कुतो ऽस्मादृशा मीदृशी विभूतिः कृतो ऽनेन निरवद्यो धर्म इति ततो ऽहमपि त करोमीति विभाव्य प्रवव्राज जितोऽह मधुना त्वयेति भणित्वा यमिन्द्र प्रणिपपातेति सोय दशार्णभद्र सभाव्यते पर मनुत्तरोपपातिकाङ्गे ना धीतः क्वचित्सिद्धश्च श्रूयतइति तथा अतिमुक्तक एवश्र यते अंतकृद्दशागे पोलासपुरे नगरे विजयस्य राज्ञ. श्रीनाम्न्या देव्या अतिमुक्तको नाम पुत्र षड्वार्षिको गौतम गोचरगत दृष्ट्वा एव मवादीत्के यूयं किंप र्यटत ततो गौतमो ऽवादीत् श्रमणा वय भिक्षार्थञ्च पर्यटाम स्ताहि भदंता आगच्छत तुभ्य भिक्षा न्दापयामो तिभणित्वा ङ्गुल्या भगवन्त गृहीत्वा स्व गृह मानैषी त्तत. श्रीदेवी दृष्ट्वा भगवत प्रतिलम्भयामास अतिमुक्तक पुन रवोचत् यूय क्व वसथ भगवा नुवाच भद्र मम धर्माचार्यः श्रीवर्द्धमानस्वामिन उद्याने वसति तत्र वय परिवसामो भदंता गच्छाम्यह भवद्भिः सार्द्धं भगवतो महावीरस्य पादान् वंदितु गौतमो ऽवादीत् यथा सुख देवाना प्रिय त

तो गोतमेन सहागत्या तिमुक्तक: कुमारो भगवतं वदतेस्म धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धो गृहमागत्य पितरा वब्रवोत्यथास सारान्निर्विंणोह प्रव्रजामी त्वनुजानो
त युवा ता वूचतु बाल त्व कि ज्जानासि ततो ति मुक्तको ऽवादोत् अम तात यदेवाह जानामि·तदेव न जानामि तदेवजानामीति तत स्तौ तमवादि
ष्टा कथमेतत् सोऽब्रवोत् अम तात जानाम्यह यदुत जातेना वश्य मर्त्तव्य न जानामि तु कदावा कस्मिन्वा कथवा किय च्चिरा द्वा तथा न जानामि
कै कर्मभि र्निरयादिषु जोवा उपद्यन्ते एत त्पुन र्जानामि यथा स्वय कृतै कर्मभिरिति तदेव म्मातापितरौ प्रतिवोध्य प्रवव्राज तप कृत्वाच सिद्धइति
इहत्वय मनुत्तरोपपातिकेषु दशमाध्ययनतयोक्त स्त दपर एवाय भविष्यतीति ॥ दसआहियत्ति ॥ दशाध्ययना न्याख्यातानीत्यर्थ आचारदशाना मध्यय
नविभागमाह ॥ आयारेत्यादि । असमाधि र्ज्ञानादिभावप्रतिषेधो ऽप्रशस्तो भावइत्यर्थ स्तस्य स्थानानि पदानि असमाधिस्थानानि यै रासेवितै रात्म
परोभयाना मिह परत्रो भयत्रवा असमाधि रुत्पद्यते तानीतिभाव स्तानिच विंशति र्द्रुतचारित्वादीनि तत एवा वगम्यानीति तत्प्रतिपादक मध्ययन म
समाधिस्थानानीति प्रथम तथा एकविंशति' शबला' शबल कर्बुर द्रव्यत' पटादि भावत सातिचार चारित्र मिह च शबल चारित्रयोगात् शबला. सा
धव स्तेच करकर्मप्रकारान्तरमैथुनादो न्येकविंशतिपदानि तत्रै वोक्तरूपाणि सेवमाना उपाधित एकविंशति र्भवति तदर्थ मध्ययन मेकविंशतिशबला
इत्यभिधोयते २ ॥ तेत्तोसमासायणाओत्ति ॥ ज्ञानादिगुणा आसामस्त्येन शात्यन्ते अपध्वस्यन्ते यकाभि स्ता आशातना रत्नाधिकविषया अविनयरूपा:

एदसाणं दस अज्झयणा पसत्ता तंजहा वीसं असमाहिठाणा इक्कवीस सबला तित्तीसआसायणाउ अठ

न्नद्रनो ९ । अयमतानो १०॥ ए दश कह्या १० ॥ आचारागदशाना दश अध्ययन कह्या ते कहैछे वीसअसमाधि स्थानकअध्ययन १ । एकवीस

पुरतो गमनादिका स्तत्प्रसिद्धा स्तास्त्रिंशदेन्ना यत्रा भिधीयन्ते तदध्ययनमपि तथैवोच्यतइति ३ ॥ अट्ठेत्यादि ॥ अष्टविधा गणिसंपत् आचारश्रुतशरीर वचनादिका आचार्यगुणर्द्धि रष्टस्थानकोक्तरूपा यत्रा भिधीयते तदध्ययनमपि तथैवोच्यतइति ४ ॥ दसेत्यादि ॥ दशचित्तसमाधिस्थानानि येषु सत्सु चि त्तस्य प्रशस्तपरिणति र्जायते तानि तथा असमुत्पन्नपूर्वकधर्मचित्तोत्पादादीनि तत्रैव प्रसिद्धा न्यभिधीयन्ते यत्र त त्तथैवोच्यत इति ५ ॥ एक्कारेत्यादि ॥ एकादशोपासकाना श्रावकाणा प्रतिमा. प्रतिपत्तिविशेषा: दर्शनव्रतसामायिकादिविषया' प्रतिपाद्यन्ते यत्र त त्तथैवोच्यतइति ६ ॥ वारसेत्यादि ॥ द्वाद शभिक्षूणा प्रतिमा अभिग्रहा मासिकीद्विमासिकीप्रभृतयो यत्रा भिधीयन्ते त त्तथोच्यतइति ७ ॥ पज्जोइत्यादि ॥ पर्याया ऋतुबद्धिका द्रव्यक्षेत्रकालभा वसम्बन्धिन उत्सृज्यन्ते उज्झान्ते यस्या सा निरुक्तविधिना पर्योसवना अथवा परीति सर्वत' क्रोधादिभावेभ्य उपशम्यते यस्या सापर्युपशमना अथवा प रि. सर्वथा एकक्षेत्रे जघन्यत. सप्ततिदिनानि उत्कृष्टत षण्मासान् वसन निरुक्तादेव पर्युषणा तस्या: कल्प आचारो मर्यादेत्यर्थ: पर्योसवनाकल्प: पर्युपश मनाकल्प पर्युषणाकल्पोवेति सच सक्कोसजोयणविगईनवयमित्यादिक स्तत्रैव प्रसिद्ध स्तदर्थ मध्ययन सएवोच्यत इति ८ ॥ तीसमित्यादि ॥ त्रिंशन्मोहनी यकर्मणो बन्धस्थानानि बन्धनकारणानि वारिमज्झेवगाहित्तात सेपाणेविहिसईत्यादिकानि तत्रैव प्रसिद्धानि मोहनीयस्थानानि तत्प्रतिपादक मध्ययन तथैवोच्यतइति ९ ॥ आयाइट्ठाणमिति ॥ आजनन माजाति: सम्मूर्च्छनगर्भोपपाततो जन्म तस्या: स्थानं ससार स्तत्तनिदानस्य भवतीत्येव मर्थप्रतिपाद

विहागणिसंपया दसचित्तसमाहिठाणा इक्कारसउवासगपडिमाउ वारसभिक्खुपडिमाउ पज्जोसवणाकप्पे

सबलानो २ ॥ तेत्रीस आशातनानो ३ ॥ आठ आचार्यनी संपदानो ४ ॥ दश चित्तना समाधिना थानक कह्या ५ । इग्यारे श्रावकनी प्रतिमानो ६ ॥

नपर माजातिस्थान मुच्यतइति १० ॥ प्रश्नव्याकरणदशा इचोक्तरूपा न दृश्यमानास्तु पञ्चाश्रवपञ्चसवरात्मिका इती होक्ताना तूपमादीना मध्ययनाना मन्तरार्थ प्रतीयमानएवेति नवर ॥ पसिणाइति ॥ प्रश्नविद्या यकाभिः चौमकादिषु देवतावतार' क्रियतइति तत्र चौमक वस्त्र ॥ अद्दागो ॥ आदर्शो ऽङ्गुष्ठो हस्तावयवो बाहवो भुजाइति बन्धदशानामपि बन्धादाध्ययनानि श्रौतेनार्थेन व्याख्यातव्यानि द्विगृद्धिदशाश्च स्वरूपतोप्यनवसिता दीर्घदशा' स्वरू पतोऽसवगताएव तदध्ययनानितु कानिचि न्नरकावलिकाश्रुतस्कन्धे उपलभ्यते तत्र चन्द्रवक्तव्यताप्रतिबद्ध चन्द्र मध्ययन तथाहि राजगृहे महावीरस्य

तीसमोहणिज्जठाणा । पराहावागरणदसाण दसज्जयणा प० तजहा उवमा संखा इसिभासियाइ आयरि यभासियाइ महावीरभासियाइ खोमगपसिणाइ कोमलपसिणाइ अद्दागपसिणाइ अंगुठपसिणाइ बाहुपसि णाइ । बधदसाण दस अज्झयणा प० त० वंधेमुक्केयदेवद्धी दसारेमण्डलेइय आयरियविप्पडिवत्ती उवज्झाय विप्पडिवत्ती भावणा विमुत्ती सातोकम्मे ॥ दोगिद्धिदसाण दस अज्झयणा प० त० वाए विघाए उववाए

वारेसाधुनी प्रतिमानो ७ ॥ पजूसणाकल्पनो ८ ॥ त्रीश मोहनीकर्मनो ९ ॥ समूर्च्छिम गर्भजना जन्मना थानकनो ॥ १० ॥ प्रश्नव्याकरणदशाना दश अध्ययन कह्या तेकहेछे उपमाअध्ययन १ ॥ सख्याअध्ययन २ ॥ ऋषिभाषितअध्ययन ३ ॥ आचार्यभाषित ४ ॥ महावीरभाषित ५ ॥ चोमक वस्त्र ते हना प्रश्न ६ ॥ कोमलप्रश्ननो ७ ॥ अद्दग ते आदेश तेहना प्रश्नन् ८ ॥ अगूठाना प्रश्ननो ९ ॥ भुजानाप्रश्न १० ॥ बधदशाना दश अध्ययन कह्या तेक हेछे बध १ ॥ मोक्ष २ ॥ देवर्द्धि ३ ॥ दसारमण्डल ४ ॥ आचार्यविप्रतिपत्ती ५ ॥ उपाध्यायविप्रतिपत्ती ६ ॥ भावना ७ ॥ विमुक्ती ८ ॥ सास्वत ९ ॥

चन्द्रो ज्योतिष्कराजो वन्दनं कृत्वा नाट्यविधिं चोपदर्श्य प्रतिगतो गौतमश्च भगवन्तं तद्वक्तव्यतां पप्रच्छ भगवांश्चोवाच श्रावस्त्यां मङ्गजिन्नामाय गृहपतिः रभूत्पार्श्वनाथसमीपे प्रव्रजितो विराध्यच मनाक् श्रामण्यं चन्द्रतया त्पन्नो महाविदेहेच सेत्स्यतीति तथा सूरवक्तव्यताप्रतिबद्ध सूरः सूरवक्तव्यता चन्द्रव न्नवरं सुप्रतिष्ठो नाम्नागभूवेति एको गद्र. स्तद्वक्तव्यता चैव राजगृहेभगवन्तं वन्दित्वा शुक्रे प्रतिगते गौतमस्य तथैव भगवानुवाच वाराणस्यां सोमिलना मा ब्राह्मणो यमभवत् पार्श्वनाथञ्चा पृच्छत् तं भतेजवणिज्जं तथा सरिसवयामासाकुलत्थायते भोज्जा तथा एगेभवन्दुवेभवमित्यादि भगवता चैतेषु विभक्ते ष्वाचितः श्रावकोभूत्वा पुनः र्विपर्यासा द्वारामादिलौकिकधर्मस्थानानि कारित्वा दिक्पोचकतापसत्वेन प्रव्रज्य प्रतिषष्ठपारणके क्रमेण पूर्वादिदिग्भ्य श्रा नीय कन्दादिकं मभ्यवजहारा न्यदा सौ यत्र क्वचन गर्त्तादौ पतिष्यामि तत्रैव प्राणा स्त्यक्ष्यामो त्यभिग्रहं मभिगृह्य काष्ठमुद्रया मुखं बध्वा उत्तराभिमुखः प्रतस्थौ तत्र प्रथमदिवसे पराह्नसमये ऽशोकतरो रधो होमादिकर्मकृत्वा वास तत्र देवेन केनाप्युक्तो ऽहो सोमिलब्राह्मण महर्षे दुःप्रव्रजितं ते पुनः द्वितीये ऽहनि तथैव सप्तपर्णस्याध उषित उक्ततृतीयादिषु दिनेषु अश्वत्थवटोदुम्बराणा मध उषितो भणितो देवेन ततः पञ्चमदिने वादो दसौ कथन्नाम मे दुःप्रव्रजितं देवो ऽवोचत् त्वं पार्श्वनाथस्य भगवतः समीपे अणुव्रतादिकं श्रावकधर्मं प्रतिपद्या धुना ऽन्यथा वर्त्तमद्रति दुःप्रव्रजितं तव ततो द्यापि तमेवा णुव्रतादिकं धर्मं प्रतिपद्यस्व येन सुप्रव्रजितं तव भवतीत्येवं मुक्त स्तयेव चकार ततः श्रावकत्वं प्रतिपाल्या नालोचितप्रतिक्रान्त. कालङ्कृत्वा शुक्रावतसके

सुखित्ते कसिणे बायालीसंसुविणा तीसंमहासुविणा बावत्तरिसव्वसुमिणा हारे रामगुत्ते एमेएदसञ्झाहिया ।

कर्म १० ॥ दोगिद्धि दशाना दश अध्ययन कह्या ते कहेछे वात १ ॥ विवात २ ॥ उपपात ३ । सुक्षेत्र । कृष्ण । बेतालीससुपन ॥ त्रीसमहास्वप्न ॥

विमाने शुक्रत्वेनो त्पन्नइति तथा श्रीदेवीसमाश्रय मध्ययन श्रीदेवीति तथाहि सा राजगृहे महावीरवन्दनाय सौधर्मादाजगाम नाट्यं दर्शयित्वा प्रतिजगामच गौतम स्तत्पूर्वभव पप्रच्छ भगवां स्त ज्जगाद राजगृहे सुदर्शनश्रेष्ठी बभूव प्रियाभिधानाच तद्भार्या तयो सुता भूतानाम वृहत्कुमारिका पार्श्वनाथसमीपे प्रव्रजिता शरीरवकुशा जाता सातिचाराच मृत्वा दिवङ्गता महाविदेहेच सेत्स्यतीति तथा प्रभावती चेटकदुहिता वीतभयनगरना यकोदायनमहाराजभार्या यया जिनबिंबपूजार्थं स्नानानन्तर चेट्या सितवसनार्प्पणेपि विभ्रमा द्रक्तवसनमुपनीत मनवसर मनगेति मन्यमानया म न्युना दर्प्पणेन चेटिका हता मृताच सा ततो वैराग्या दनशन प्रतिपद्य देवतया ययाचो ज्जयनो राजानं प्रति विक्षेपेण प्रस्थितस्य ग्रीष्मे मासि पिपा साभिभूतसमस्तसैन्यस्योदायनमहाराजस्य स्वच्छशीतलजलपरिपूर्णत्रिपुष्करकारणेनो पकारो ऽकारी त्येव लक्षणप्रभावतीचरितयुक्त मध्ययन प्रभाव तीति सम्भाव्यते नचेव निरयावलिकाश्रुतस्कन्धे दृश्यतइति पंचम तथा बहुपुत्रिका देवी प्रतिबद्ध सेवाध्ययन मुच्यते तथाहि राजगृहे महावीरवन्दना र्थं सौधर्मा द्बहुपुत्रिकाभिधाना देवी समवततार वन्दित्वाच प्रतिजगाम केय मिति पृष्टे गौतमेन भगवा नवादीत् वाराणस्यां नगर्यां भद्राभिधानस्य सार्थवाहस्य सुभद्राभिधाना भार्येय बभूव साच वन्ध्या पुत्रार्थिनो भिक्षार्थं मागत मार्यासघाटक पुत्रलाभ पप्रच्छ सचधर्म मचीकथत् प्राव्राजीच सा बहु

दीहदसाणं दस अज्झयणा प० तंजहा चंदेसूरेयसुक्केय सिरिदेवीपहावई दीवसमुद्दोववत्ती बहुपुत्तीमंदरेइय।

बिहोत्तरि सर्व स्वप्न ॥ हार ९ ॥ रामगुप्त १० ॥ इम ए दश कह्या प्राये ए अध्ययननां स्वरूप नथीजाण्या इम टीकामा कह्योछे ॥ दीर्घदशाना दश अध्ययन कह्या ते कहेछे चद्राध्ययन १ ॥ सूर्याध्ययन २ ॥ शुक्राध्ययन ३ ॥ श्रीदेवी ४ ॥ प्रभावतीनो ५ ॥ द्वीपसमुद्रविज्ञप्ति ६ ॥ बहुपुत्रिकानो ७ ॥ मे

जनापत्येषु प्रीत्या भ्यङ्गोद्वर्त्तनापरायणा सातिचारा मृत्वा सौधर्ममगमत् तत श्युत्वा च विभेलसनिवेशे ब्राह्मणीत्वे नोत्पत्स्यते ततः पितृभागिनेयभार्या भविष्यति युगलप्रसवाच सा षोडशभि र्वर्षैर्द्वात्रिंशदपत्यानि जनयिष्यति ततो सौ तन्निर्वेदा दार्याः प्रव्यति ताश्च धर्मं कथयिष्यन्ति श्रावकालश्च सा प्रतिप त्स्यते कालान्तरे प्रव्रजिष्यति सौधर्मेचन्द्रसामानिकतयो त्पद्य महाविदेहे सेत्स्यतीति तथा स्थविरः सम्भूतविजयो भद्रबाहुस्वामिनो गुरुभ्राता स्थूलभद्रस्य सगडालपुत्रस्य दीचा दाता तद्वक्तव्यता प्रतिबद्ध मध्ययन सएवोच्यतइति नवम शेषाणि चौण्यप्रतीतानि सत्तेपिकादशा अप्यनवगतस्वरूपाएव तदध्ययना ना पुन रय मर्थः ॥ खुड्डिरत्यादि ॥ इहावलिकाप्रविष्टेतरविमानप्रविभजन यत्रा ध्ययने तद्विमानप्रविभक्ति स्तच्चैक मल्पग्रन्थार्थं तथा न्यन्महाग्रन्थार्थ मतः चुल्लिकाविमानप्रविभक्ति र्महतीविमानप्रविभक्तिरिति अंगस्या चारादे श्चूलिका ऽगचूलिका यथा चारस्या नेकविधा इहोक्तानुक्तार्थसंग्राहिका चूलिका ॥ वग्गचूलियत्ति ॥ इह वर्गो ऽध्ययनादिसमूहो यथा न्तकृद्दशा स्वष्टौ वर्गा स्तस्यचूलिका वर्गचूलिका ॥ विवाहचूलियत्ति ॥ व्याख्या भगवतीतस्या श्चूलिका व्याख्याचूलिका अरुणोपपातइति इहारुणोनाम देव स्तत्समयनिबद्धो ग्रन्थ स्तदुपपातहेतु ररुणोपपातो यदा तदध्ययन मुपयुक्त' सन् श्रमणः

थेरेसंभूयविजए पम्हउस्सासनिस्ससे ॥ संखेवियदसाणं दस अज्झयणा प० तजहा खुड्डियाविमाणपविभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिया वग्गचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए

रुनो ८ ॥ १ ॥ थविर संभूतविजय थूलभद्रना गुरुनो अध्ययन ९ ॥ थविरपद्मउत्स्वासनों १० ॥ संक्षेपिका दशानां दश अध्ययन कह्या तेकहैछे क्षुद्रि काविमानप्रविभक्ति १ ॥ महल्लिकाविमानप्रविभक्ति २ ॥ अंगचूलिका ३ ॥ वर्गचूलिका ४ ॥ विवाहचूलिका ५ ॥ अरुणोपपात ६ ॥ वरुणोपपात ७ ॥

परिवर्त्तयति तदा सा वरुणोदेवः स्वसमयनिमद्भत्वा चलितासनः सम्भ्रमोद्भ्रान्तलोचनः प्रयुक्तावधि स्त द्विज्ञाय हृष्टप्रहृष्ट चलचपलकुण्डलधरो दिव्यया द्यु त्या दिव्यया विभूत्या दिव्यया गत्या यत्रै वासौ भगवान् श्रमण स्तत्रै वोपागच्छति उपागत्यच भक्तिभरावनतवदनो विमुक्तवरकुसुमवृष्टि रवपतति प्रव पतत्यच तदा तस्य श्रमणस्य पुरतः स्थित्वा ऽतर्हितः कृताञ्जलिका उपयुक्तः सवेगविशुद्ध्यमानाध्यवसान' श्रृण्व स्तिष्ठति समासेच भणति सुस्वाध्यायित सु स्वाध्यायितमिति वर वृणिष्वेति ततो सा विहलोकनिष्पिपास समतृणमणिमुक्तालोष्टकाञ्चन सिद्धिवधूनिर्भरानुगतचित्तः श्रमणः प्रतिभणति नमे वरेणा र्थइति ततोसा वरुणो देवो धिकतरजातसवेग. प्रदक्षिणा कृत्वा वन्दित्वा नमसित्वा प्रतिगच्छति एव वरुणोपपातादिष्वपि भणितव्यमिति एवभूतच श्रुतं कालविशेषएव भवतीति दशस्थानकावतारि तत्स्वरूपमाह ॥ दसेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं सुगम यथोपाधिवशा त्कालद्रव्य भेदव त्तथा नारकादिजीवद्रव्याण्यपी त्याह ॥ दसविहेत्यादि ॥ सूत्राणि चतुर्विंशति र्नविद्यते ऽन्तर व्यवधान मस्ये त्यनन्तरो वर्त्तमान. समय स्तत्रो पपन्नका अनन्तरोपपन्नका येषा मुत्पन्ना ना मेकोपि समयो नातिक्रात स्तण्तइति येषा तू पपन्नाना द्व्यादय समया जाता स्ते परम्परोपपन्नका परम्परसमयेषू पपन्नत्वा त्तेषा मित्येवं कालवि

वेलधरोववाए वेसमणोववाए ॥ दससागरोवमकोडाकोडीउ कालोउस्सप्पिणीए ॥ दससागरोवमकोडाको डीउकालोउसप्पिणीए ॥ दसविहा नेरइया प० तजहा अणतरोववन्ना परपरोववन्ना अणतरोवगाढा पर

गरूलोपपात ८ ॥ वैश्रमणोपपात ९ ॥ वेलधरोपपात १० ॥ दशकोडाकोडि सागरोपमनो काल उत्सर्प्पिणी ॥ दशकोडाकोडि सागरोपमनो का ल अवसर्प्पिणी ॥ दशप्रकारना नारकी कह्या तेकहेछे अतरारहितउपना १ ॥ परपरानाउपना २ ॥ अनतरक्षेत्रे रह्या ३ ॥ परपराये क्षेत्रे रह्या ५ ॥

शेषोपाधिकृतो भेद स्तथा विवक्षितप्रदेशापेक्षया ऽनन्तरप्रदेशे ष्ववगाढा अवस्थिता अनन्तरावगाढा अथवा प्रथमसमयावगाढा अनन्तरावगाढा एतद्वि लक्षणाः परम्परावगाढा अयं क्षेत्रतो भेद स्तथा अनन्तराव्यवहिता जीवप्रदेशे राक्रान्ततया स्पृष्टतयावा पुद्गलानाहारयन्ती त्यनन्तराहारकाः येतु पूर्वं व्य वहितान् सत' पुद्गलान् स्वक्षेत्र मागतानाहारयति ते परम्पराहारका अथवा प्रथमसमयाहारका अनन्तराहारका इतरे त्वितरे अयन्तु द्रव्यकृतो भेद इति नविद्यते पर्याप्तत्वें ऽतर येषा ते ऽनन्तरा स्तेचते पर्याप्तका श्चे त्यनन्तरपर्याप्तकाः प्रथमसमयपर्याप्तकाइत्यर्थ इतरेतु परम्परपर्याप्तका अयं भावक्ष तो भेदः पर्याप्ते भावत्वादिति चरमनारकभवयुक्तत्वा च्चरमा नपुन र्नारकाभविष्यति यइतिभाव स्तद्विपरीता अचरमा अयमपि भावकृतएव भेद श्चरमा चरमत्वयो र्जीवपर्यायत्वादिति एवमित्यादि नारकव द्दशप्रकारत्व भेद नैरन्तर्येण चतुर्विंशतिदण्डकोक्तानां वैमानिकान्तानामपि योजनीयमिति द ण्डकस्या द्दौ दशधा नारकाउक्ता अथ तदाधारा न्नारकादिस्थितिच दशस्थानकानुपाततो निरूपयन् ॥ चउत्थीएइत्यादि ॥ सूत्राष्टादशकमाह सुगम चैतद्दि ति अनन्तर लान्तकदेवाउक्ता स्तेच लब्धभद्राइति भद्रकारिकर्मकारणान्याह ॥ दसहीत्यादि ॥ आगमिष्य दागामि भवान्तरभावि भद्र कल्याण सुदेवत्व

परोवगाढा अणंतराहारगा परंपराहारगा अणंतरपज्जत्ता परंपरपज्जत्ता चरिमा अचरिमा । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥ चउत्थीएण पकप्पभाए पुढवीए दस नरयावाससयसहस्सा प० । रयणप्पभाए पुढवीए

अनतरा रहिआ पुद्गलना आहारी ६ ॥ परंपरा आहारी ६ ॥ अनंतरपर्याप्ता ७ ॥ परंपरा पर्याप्ता ८ ॥ चरिमजे फरी नारकी नही थाय ९ ॥ अच रिम १० ॥ इम निरंतर यावत् वैमानिक २४ ॥ चोथी पंकप्रभा पृथिवीने विषे दशलाख नरकावाशा कह्या ॥ रतनप्रभा पृथिवीनेंविषे जघन्य आ

लक्षण मनन्तर सुमानुगत्वप्राप्त्या मोक्षप्राप्तिलक्षणांच येषांते आगमिष्यद्भद्रा स्तेषा भाव आगमिष्यद्भद्रता तस्यै आगमिष्यद्भद्रतायै तदर्थमित्यर्थ. आगमिष्य

जहन्नेणं नेरइयाण दसवाससहस्साइं ठिई प० । चउत्थीएणं पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेण नेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिई प० । पंचमीए धूमप्पभाए पुढवीए जहन्नेण नेरइयाणं दससागरोवमाइ ठिई प० ॥ असुरकुमाराणं जहन्नेण दसवाससहस्साइ ठिई पन्नत्ता । एव जाव थणियकुमाराण ॥ वायरवणस्सइकाइ याणं उक्कोसेण दसवाससहस्साइं ठिई प० । वाणमंतराण देवाण जहन्नेण दसवाससहस्साइ ठिई प० । बंभ लोएकप्पे उक्कोसेण देवाण दससागरोवमाइं ठिई प० । लंतएकप्पे देवाण जहन्नेण दससागरोवमाइं ठिई प० दसहिठाणेहि जीवा आगमेसिभद्दत्ताए कम्मं पगरेंति त० अनिदाणयाए दिठिसंपन्नयाए जोगवाहियत्ताए

ऊखु नारकीनु दशहज्जार वरसनु कह्यो ॥ रत्नप्रभा पृथ्वीनेविषे जघन्य नारकीनी दशहज्जारवरसनी थिति कही ॥ चोथी पंकप्रभा पृथ्वीने विषें उत्कृष्टी नारकीने दश सागरोपमनी थिति कही भगवते। पांचमी धूमप्रभा पृथ्वीनेविषे जघन्य नारकीनी दशसागरोपमनी थिति कही। असुरकुमा रनें जघन्य दशहज्जारवरसनी थिति कही ॥ इम यावत् स्तनितकुमारने। वादरवनस्पतिकायनी उत्कृष्टी दशहज्जारवरसनी आऊखानी थिति कही॥ वाणव्यंतरदेवतानी जघन्य दशहज्जार वरसनी थिति कही भगवते। ब्रह्मदेवलोके उत्कृष्टी देवतानी दशसागरोंपमनी थिति कही ॥ लांतक ६। देव लोके देवतानी जघन्य दशसागरोपमनी थिति कही ॥ दश थानके जीव आगमोक्त धर्मने विषें भद्रकपणानु कर्म बांधे ते कहेछे नीआणुनकरे १।

इद्रतयावा कर्मं शुभप्रकृतिरूप प्रकुर्वन्ति बध्नन्ति तद्यथा निदायते लूयते ज्ञानाद्याराधनालता आनन्दरसोपेतमोक्षफला येन परशुनेव देवेन्द्रादिगुणर्द्धि प्रार्थनाध्यवसानेन तन्निदान मविद्यमानं तद्यस्य सो ऽनिदान स्तद्भाव स्तत्ता तया हेतुभूत या निरुत्सुकतयेत्यर्थः १ दृष्टिसम्पन्नतया सम्यग्दृष्टितया २ योगवाहितया श्रुतोपधानकारितया योगेनवा समाधिना सर्वत्रानुत्सुकत्वलक्षणेन वहतो त्येवशीलो योगवाही तद्भाव स्तत्ता तया ३ क्षान्त्या क्षमत इति क्षान्तिक्षमणः क्षातिग्रहण मसमर्थताव्यवच्छेदार्थं यतो ऽसमर्थोपि क्षमतइति क्षान्तिक्षमणस्य भाव स्तत्ता तया ४ जितेन्द्रियतया करणनिगृहे ण ५ ॥ अमाइल्लयाएत्ति ॥ माइल्लो मायावा स्तत्प्रतिषेधेना मायावा स्तद्भाव स्तत्ता तया ६ तथा पार्श्वे बहि र्ज्ञानादीना न्देशतः सर्वतोवा तिष्ठतीति पा र्श्वस्थ उक्तच सोपासत्थोदुविहो देसेसव्वेयहोइनायव्वो सव्वमिनाणदंसणचरणाणजोउपासत्थो ॥ १ ॥ देसंमिउपासत्थो सिज्जायरभिहडनियतंपिडच । नी यचअग्गपिंड भुजइनिक्कारणेचेवत्ति ॥ २ ॥ नियतपिण्डो यथामयैताव द्दातव्यं भवतातु नित्यमेव ग्राह्यमित्येव नियततया यो गृह्यते नीयमिति नित्य सदा ग्रपिण्डो ऽप्रवृत्ते परिवेषणे आदावेव यो गृह्यत इति पार्श्वस्थस्य भावः पार्श्वस्थता तया ७ तथा शोभनः पार्श्वस्थादिदोषवर्जिततया मूलोत्तरगुण सम्पन्नतयाच सचासौ श्रमणश्च साधुश्रमण स्तद्भाव स्तत्ता तया ८ तथा प्रकृष्ट प्रशस्त प्रगतवा वचन मागमः प्रवचन द्वादशांगं तदाधारोवा सघ स्तस्य वत्सलता हितकारिता प्रत्यनीकत्वादिनिरासेनेति प्रवचनवत्सलता तया ९ तथा प्रवचनस्य द्वादशाङ्गस्यो द्भावन प्रभावनं प्रावचनिकत्वधर्मकथावादादि

खंतिखमणयाए जीइंदियाए अमाइल्लयाए अपासत्थयाए सुसामन्नयाए पवयणवच्छल्लयाए पवयणउज्झावणया

समकितसहित २ । योग उपधान वहतो ३ । क्षमा आणी खमते पाचइंद्रीनें जीतवे माया कपटरहित पणे पासत्थापणूं मूंकते सुसाधुपणे जिन सा

:१० ॥
१२ ॥

लब्धिभि र्वर्णवादजनन प्रवचनोद्भावन तदेव प्रवचनोद्भावनता तयेति १० एतानि चागमिष्यद्भद्रताकारणानि कुर्वता आशंसाप्रयोगो न विधेयइति तत्स्वरूप माह ॥ दसेत्यादि ॥ आशसन माशसा इच्छा तस्याः प्रयोगो व्यापारण करण माशंसैव प्रयोगो व्यापार' आशसाप्रयोग सूत्रेच प्राकृतत्वात् ॥ आससप्पओगे त्ति ॥ भणितं तत्र इहास्मिन् प्रज्ञापक मनुष्यापेक्षया मानुषत्वपर्याये यो वर्त्तते लोक प्राणिवर्ग स इह लोक स्तद्व्यतिरिक्तस्तु परलोक स्तत्रे हलोकं प्रति प्राशंसाप्रयोगो यथा भवेय मह मित स्तपश्चरणा च्चक्रवर्त्यादिरिती इहलोकाशसाप्रयोग एव मन्यत्रापि विग्रहः कार्यः परलोकाशसाप्रयोगोयथा भवेय मह मितस्तपश्चरणा दिन्द्र इन्द्रसामानिकोवा २ द्विधा लोकाशसाप्रयोगो यथा भवेय मिन्द्र स्तत श्चक्रवर्त्ती ३ अथवा इहलोके इहजन्मनि किंचि दाशास्त एव परजन्म न्युभयत्रवेति एतत्त्रय सामान्य मतो न्ये तद्विशेषाएवा स्त्विच सामान्यविशेषयो र्विवक्षापेक्षो भेद इत्या शसाप्रयोगाणा दशधात्वं न विरुध्यते त था जीवित प्रत्याशसा चिरमहंजीवित भवत्विति जीविताशसाप्रयोग ४ तथा मरण प्रत्याशसा शीघ्र मेमरण मस्त्विति मरणाशसाप्रयोगः ५ तथा का मौशब्दरूपे तौ मनोज्ञौ मे भूयास्तामिति कामाशसाप्रयोगः ६ तथा भोगा गन्धरसस्पर्शा स्ते मनोज्ञामे भूयासुरिति भोगाशसाप्रयोगः ७ तथा कीर्त्तिः श्रुता

ए। दसविहे आसंसप्पओगे प० तजहा इहलोगासंसप्पओगे परलोगाससप्पओगे दुहओलोगासंसप्पओगे जीवियासं सप्पओगे मरणासंसप्पओगे कामासंसप्पओगे भोगाससप्पओगे लाभाससप्पओगे पूयासंसप्पओगे सक्कारासंसप्पओगे

धु सर्वनु हितकरते प्रवचन प्रभावनाये धर्मकथादिक करते ॥ दशप्रकारे इच्छा वाछानो प्रयोग कह्यो ते कहेछे इहलोगासप्रयोग १ । परलोकास प्रयोग २ । इहलोकपरलोकसप्रयोग ३ । जीवितसप्रयोग ४ । दुखआवे मरवानीवाछा कामनीवाछा भोगनी वाछानो प्रयोग लाभनी वाछानो प्रयो

दिलाभो भूयादिति लाभाशंसाप्रयोगः ८ तथा पूजा पुष्पादिपूजन मे स्यादिति पूजाशंसाप्रयोग' ९ सत्कारः प्रवरवस्त्रादिभिः पूजनं तन्मे स्यादिति सत्कारा शंसाप्रयोगइति १० उक्तलक्षणा दशाशंसाप्रयोगा स्तैश्चि धर्म माचरन्तीति धर्मं सामान्येन निरूपयन्नाह ॥ दसेत्यादि ॥ ग्रामा जनपदाश्रयास्तेषा तेषुवा धर्म समाचारो व्यवस्थेति ग्रामधर्मः सच प्रतिग्राम भिन्नइति अथवा गाम इन्द्रियग्रामो रूढे स्तद्धर्मो विषयाभिलाषः १ नगरधर्मो नगराचारः सोपि प्रति नगर प्रायोभिन्नएव २ राष्ट्रधर्मो देशाचारः ३ पाखण्डधर्म पाखण्डिना माचार. ४ कुलधर्म उग्रादिकुलाचारो ऽथवा कुल चान्द्रादिक मार्हतानागच्छसमू हात्मकं तस्य धर्म सामाचारी ५ गणधर्मो मल्लादिगणव्यवस्था जैनानावा कुलसमुदायोगणः कोटिकादि स्तद्धर्म स्तत्सामाचारी ६ संघधर्मो गोष्ठीसमाचार आर्हतानावा गुणसमुदायरूप श्चतुर्वर्णोवा संघ स्तद्धर्म स्तत्समाचारः ७ श्रुतमेवा चारादिक दुर्गतिप्रपतज्जीवधारणा द्धर्मः श्रुतधर्मः ८ चयरिक्तीकरणा च्चारित्र तदेव धर्म श्चरित्रधर्म. ९ अस्तयः प्रदेशा स्तेषा कायो राशि रस्तिकाय. सएव धर्मोगतिपर्याये जीवपुद्गलयो र्धारणा दित्यस्तिकायधर्मः १० अयञ्च ग्रामधर्मादिधर्म' स्थिरै कृतो भवतीति स्थविरा न्निरूपयति ॥ दसेत्यादि ॥ स्थापयति दुर्व्यवस्थितं जनं सन्मार्गे स्थिरो कुर्वतीति स्थविरा स्तत्र ये ग्राम नगरराष्ट्रेषु व्यवस्थाकारिणो बुद्धिमन्त आदेयाः प्रभविष्णव स्ते तत्तत्स्थविराइति ३ प्रशासति शिक्षयन्ति येते प्रशास्तारो धर्मोपदेशका स्तेचते स्थिरीक रणा त्स्थविराश्चेति प्रशास्तृस्थविराः ४ ये कुलस्य गणस्य संघस्यच लौकिकस्य लोकोत्तरस्यच व्यवस्थाकारिण स्तद्भङ्क्तुश्च निग्राहका स्ते तथोच्यते ७ जाति

दसविहे धम्मे प० तंजहा गामधम्मे नगरधम्मे रठ्ठधम्मे पाखंडधम्मे कुलधम्मे गणधम्मे संघधम्मे सुयधम्मे

ग पूजानी वाछानो प्रयोग सत्कारनी वाछानो प्रयोग ॥ दशप्रकारे धर्म कह्यो तेकहेछे ग्रामधर्म विषयाभिलाष १ । नगरधर्म नगराचार २ । राष्ट्र

स्थविराः षष्टिवर्षप्रमाणजन्मपर्यायाः ८ श्रुतस्थविराः समवायाद्यङ्गधारिणः ९ पर्यायस्थविरा विंशतिवर्षप्रमाणप्रव्रज्यापर्यायवंतइति १० स्थविराश्च
पुत्रवदाश्रितान् परिपालयंतीति पुत्रनिरूपणायाह ॥ दसपुत्तेत्यादि ॥ पुनाति पितरं पातिवा पितृमर्यादामिति पुत्रः सूनुः सचात्मनः पितृशरीरा
ज्जात आत्मजो यथा भरतस्यादित्ययशाः १ क्षेत्रं भार्या तस्या जातः क्षेत्रजो यथा पंडोः पाण्डवा लोकरूढ्या तद्भार्यायाः कुन्त्याएव तेषां पुत्रत्वात्तत्पाण्डो
रनुत्पादितत्वादिति २ ॥ दिण्णएत्ति ॥ दत्तकः पुत्रतया वितीर्णो यथा बाहुबलिना ऽनिलवेगः श्रूयते सच पुत्रवत् पुत्र एव सर्वत्र ३ ॥ विण्णएत्ति ॥
विनयितः शिक्षां ग्राहितः ४ ॥ उरसेत्ति ॥ उपगतो जातो रसः पुत्रस्नेहलक्षणो यस्मिन् पितृस्नेहलक्षणोवा यस्य सा वुपरसः उरसिवा हृदये स्नेहात् वर्त्तते
यः सऔरसः ५ मुखरएव मौखरो मुखरतया चाटुकरणतो य आत्मानं पुत्रतया ऽभ्युपगमयति स मौखर इतिभावः ६ शौण्डीर्य शौर्यवता शूरएव

चरित्तधम्मे अत्थिकायधम्मे । दस थेरा प० तंजहा गामथेरा नगरथेरा रट्ठथेरा पसत्थारथेरा कुलथेरा गणथेरा संघथेरा जाइथेरा सुयथेरा परियायथेरा । दसपुत्ता पं० तंजहा अत्तए खित्तए दिन्नए विन्नए उरसे मोहरे

धर्म देशाचार ३ । पाखण्डधर्म पाखण्डीनो आचार ४ । कुलधर्म कुलाचार गच्छधर्म गच्छाचार संघधर्म चतुर्विध संघ अथवा गोष्टीपांचनी श्रुतधर्म
द्वादशांगी चारित्रधर्म पांचमहाव्रत अस्तिकायधर्म धर्मास्तिकायादि १० ॥ दश थविर कहिआ सन्मार्गेस्थिराकुर्वंतितेस्थविरा ते कहेछे ग्राममांथ
विर बुद्धिवंत १ । नगरमां थविर राष्ट्रमां थविर देशमांथविर प्रशास्तारथविर धर्मोपदेशक कुलमांथविर गच्छमांथविर संघमांथविर जातिथवि
र मोटीजाति श्रुतथविर पर्यायथविर २० वरसनीदीक्षानो १० ॥ दशप्रकारे पुत्र कह्या तेकहेछे आत्मज जे पिताना शरीरथी उपजे ते आत्मज

रणकरणेन वशीकृतः पुत्रतया प्रतिपद्यते यथा कुवलयमालाकथाया महेन्द्रसिंहाभिधानो राजसुतः श्रूयते ७ अथवा त्मजएव गुणभेदा द्भिद्यते तत्र विश्व
एत्ति विन्नकः पडितो ऽभयकुमारवत् उरसेत्ति उरसा वर्त्तत्इति ऊरसो बलवान् बाहुबली वशौण्डीरः शूरो वासुदेववत् गर्वितोवा शौण्डीरःशौंडगर्वइति
वचनात् ॥ सवड्ढेत्ति ॥ संवर्द्धितो भोजनदानादिना ऽनाथपुत्रकः ८ ॥ उववाइयत्ति ॥ उपयाचिते देवताराधने भवः औपयाचितको ऽथवा ऽवपातः सेवा
सा प्रयोजन मस्येति आवपातिक.सेवकइति हृदय तथा अते समीपे वस्तु शील मस्ये त्यन्तेवासी धर्मार्थं मन्तेवासी धर्मान्तिवासी शिष्यइत्यर्थो धर्मान्तेवा
सित्वञ्च छद्मस्थस्यैव नकेवलिनो ऽनुत्तरज्ञानादित्वात् कानि कियन्तिच तस्या नुत्तराणी त्याह ॥ दसेत्यादि ॥ नास्त्युत्तरं प्रधानतर येभ्यस्ता न्यनुत्तराणि

जेम भरतने आदित्ययश १ । क्षेत्रज स्त्रीथी थाय तेक्षेत्रज जेम लौकिक दृष्टांत भारतमां लख्योछे जे पांडुराजाये कोइ ऋषीनुं शापहतो जे तूं मैं
थुन करसे तोमरसे तेथी पांडुराजा अपुत्र पुत्रवान् थावानेअर्थे मंत्रथी धर्म १ । वायु २ । इंद्र ३ । अश्विनीकुमार ५ । एनो आराधन कुंती तथा
माद्रीथी कराव्यो तेहोना वीर्यथी युधिष्ठिर ’ भीम ’ अर्जुन ’ नकुल सहदेव ’ एपांच पाण्डवथया पणि तेमा पाडुराजानो अंशनथी पांडुराजाना
क्षेत्र स्त्रीथी थया तेमाटे क्षेत्रजपुत्र कहाया २ । दत्तक अपुत्र माणसने पुत्रवान होवाने अर्थे दीधो ते दत्तक ते लौकिक मनुस्मृत्यादिकमां पणि प्रसि
द्धछे जेम बाहुबलीये अनिल वेगदीधोहतो ३ । विनयित जेहने शिक्षादीये ते लौकिकमे येप्रसिद्ध नथी ४ । उपरस ’ अथवा ’ औरस ’ पुत्रसमान
स्नेह जेहने ऊपरे होय ते उपरस । जेहने स्नेहथी पुत्रसमान हृदयमा राखिये ते औरस लौकिक मन्वादिकोये आत्मज अने औरस एकहीज मा
न्योछे ५ । मौखर जे मीठा वचनथी पोतेज आवी पुत्रसमान आचरे जेहुं तुमारोपुत्रजछु ते मौखर एहने लौकिकमां स्वयमुपागत कहेछे ६ । शौं
डीर शूरवीर शूरवीरने जीतीने पुत्र वणावे पोताने वशकरीने जेम कुवलयमालानी कथामां महेद्रसिंह राजपुत्र शौंडीर पुत्र प्रसिद्धछे ७ । संवर्द्धित
जे अन्न वस्त्रादि देईने अनाथपुत्रने वणो करिये अने पुत्रवत्राखीये ते संवर्द्धितपुत्र एतले पोष्यपुत्र ८ । उपयाचित देवताना आराधवाथी मल्यो अ

तत्र ज्ञानावरणक्षयात् ज्ञान मनुत्तर मेवं दर्शनावरणक्षया द्दर्शनमोहनीयक्षयाद्वा दर्शनं चारित्रमोहनीयक्षया च्चारित्र चारित्रमोहक्षया द्दनन्तवीर्य मनन्त वीर्यत्वाच्च तपः शुक्लध्यानादिरूप वीर्यान्तरायक्षया द्वीर्य मिहच तपः क्षान्तिमुक्त्यार्जवमार्दवलाघवानि चारित्र भेदाएवेति चारित्रमोहनीय क्षया द्देव भवति सामान्यविशेषयोश्च कथ चिद्भेदा द्भेदेनो पात्तानीति केवलीच मनुष्यक्षेत्रएव भवतीति दशस्थानकानुपातिपदार्थं ॥ समयेत्यादिपुक्खरवरदीवड्ढपच्चच्छिमेण द्वेत्रीत्येतदृत ॥ समयक्षेत्रप्रकरणमाह कण्ठ्य चेत नवर ॥ मत्तंगेत्यादि ॥ गाथा मत्तं मद स्तस्या ग कारण मदिरा तद्ददतीति मत्ताङ्गदा श्चः समुच्चये ॥ भिंगत्ति ॥ भृत भरण पूरण तत्रा ङ्गानि कारणानि भृताङ्गानि भाजनानि नहि भरणक्रिया भरणीय भाजन विना भवतीति तत्सम्माद्कलात् वृक्षाअपि भृ

सोमीरे संवद्धे उववाइए धम्मतेवासी । केवलिस्सणं दस अणुत्तरा प० तजहा अणुत्तरेनाणे अणुत्तरेदंसणे अणुत्तरेचरित्ते अणुत्तरेतवे अणुत्तरेवीरिए अणुत्तराखती अणुत्तरामुत्ती अणुत्तरेअज्जवे अणुत्तरेमद्दवे अणुत्तरेलाघवे । समयखित्तेण दस कुराउ प० तजहा पचदेवकुराउ पंचउत्तरकुराउ । तत्थणं दसमहइमहालया महादु

थवा अवपातक सेवकने पुत्रकरी राखे ते उपयाचित अथवा अवपात पुत्र ८ । धर्मातेवासी जेने प्रव्रज्या दीक्षादीये ते धर्मातेवासी १० ॥ एह दस प्रकारना पुत्र कह्या ॥ केवलीने दश उतकृष्टा कह्या ते कहेछे उत्कृष्टज्ञान १ । उत्कृष्टदर्शन २ । उत्कृष्टचारित्र ३ । उत्कृष्टतप ४ । उत्कृष्टवीर्य ५ । उत्कृष्ट क्षाती ६ । उत्कृष्ट मुक्ति निर्लोभता ७ । उत्कृष्टआर्जव ८ । उत्कृष्ट मार्दव कोमलता ९ । उत्कृष्ट लाघव लघुता १० ॥ समय मनुष्यक्षेत्रने विषे दश कुरु कह्या तेकहेछे पाचदेवकुरु पाच उत्तरकुरु ॥ तिहा दश मोटामोटा आलय मोटावृक्ष कहिआ तेकहेछे जंबू सुदर्शन १ । धातकीवृक्ष २ ।

ताङ्गाः प्राकृतत्वा च्च भिंगाउच्यंते त्रुटितानि तूर्याणि तत्कारणत्वा त्तुटिताङ्गा स्यूर्यदायिन उक्तंच मत्तंगेसुयमज्जा सुहपेज्जं १ भायणाणिभिंगेसु २ तुडियंगे

मा प० तजहा । जबूसुदंसणे धायइरुक्खे महाधायइरुक्खे पउमरुक्खे महापउमरुक्खे पंचकूडसामलीउ । त त्थण दसदेवा महिड्ढिया जाव परिवसंति तं० अणाढिए जबूद्दीवाहिवई सुदसणे पियदंसणे पोंडरीए महा पोंडरीए पचगरुला वेणुदेवा । दसहिं ठाणेहिं उगाढं दुस्सम जाणिज्जा तजहा अकालेवरिसइ कालेनवरिस इ असाहूपूइज्जंति साहूनपूइज्जंति गुरूसुजणोमिच्छपडिवन्नो अमणुन्नासद्दा जाव फासा । दसहिं ठाणेहि उगाढ सुसमं जाणिज्जा तजहा अकालेनवरिसइ तचेव विवरीय जाव मणुन्ना फासा । सुसमसुसमाएणं स माए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति तंजहा मत्तंगयायभिंगा तुडियगादीवजोइचित्तंगा चित्त

महाधातकी वृक्ष ३ । पद्मवृक्ष ४ । महापद्मवृक्ष ५ । पाच कूटसामलीवृक्ष १० ॥ तिहा दश देवता महर्द्धिक रहेछे वसेछे ते कहेछे अनाढीय जबू द्वीपनो अधिपती १ । सुदर्शन २ । प्रियदर्शन ३ । पौंडरीक ४ । महापौंडरीक ५ ॥ पाच गरुल वेणुदेवता १० ॥ दशथानके आकरो दुखमाकाल जा णवो तेकहेछे अकालेवरसे काले नवरसे असाधुपूजाये साधुनपूजाये गुरुने मिथ्याभावे पडिवज्या अविनयी अमनोज्ञशब्द यावत् फर्श १० ॥ दशथा नके आकरो सुसमाकाल जाणवो तेकहेछे अकाले नवरसे तेहज बोल विपरीत यावत् मनोज्ञशब्द ॥ सुखमसुखमा समयनेविषे दशप्रकारना वृक्ष उपभोगपणे आवेछे तेकहेछे मातगमदिरादिआपे १ । भृग भाजनआपे २ । त्रुटिताग वाजित्रआपे ३ । दीपाग दीवा ४ । ज्योति ५ । चित्राग मा

सुगसंगत तुडियाईअट्टप्पगाराइ३ ॥ १ ॥ दीवजोइचित्तगत्ति ॥ दूहा गमग्द: प्रत्येक मभिसंबंध्यते तत्रोदीप: प्रकाशकांयखु तत्कारणत्वाद्दीपाङ्गा: ज्योति रग्नि
स्तत्रच सुखमसुखमाया मग्ने रभावात् ज्योति रवयवखु सोम्याकाशमिति भाव स्तत्कारणत्वा ज्ज्योतिरंगा स्तथा चित्रस्या नेकविधस्य विवचाप्राधान्या
माल्यस्य कारणत्वाच्चित्राङ्गा स्तथा चित्रा विविधा मनोज्ञा रसा मधुराद्यो येभ्य स्ते चित्ररसा भोजनाङ्गा इतिभाव उक्तच दीवसिहा ४ जोइसमा म
याय ५ एएकरेंतिउज्जोयं चित्तगेसुरमम्म चित्तरसा ७ भोयणङ्गाए ॥ १ ॥ मणीनां मणिमयाभरणाना कारणत्वा नमणङ्गा आभरणत्तितवोगेहे रुहा तदद्दा
कारो येषान्ते गेहाकारा: ॥ अणियत्ति ॥ वस्त्रदायिन उक्तच मणिगगेसुय ८ भूसण वराइभयणाइंभवणरुक्खेसु आइणेसुय १० धणियं वत्थाइअट्टप्पगा
राइति ॥ १ ॥ काम्ताधिकारादेव कालविशेषभाविकुलकरवतव्यतामाह ॥ जंबूद्दीवेत्यादि ॥ सूत्रद्वय कण्ठ्य नवर ॥ तीयाएत्ति ॥ अतीतायां ॥ उस्सप्पि
णीएत्ति ॥ उत्सर्पिण्यां कुलकरणशीला: कुलकरा विशिष्टबुद्धयो लोकव्यवस्थाकारिण: पुरुषविशेषा: ॥ आगामिस्साएत्ति ॥ आगमिष्यत्यां वर्तमानात्
अवसर्पिणी साच नोक्ता तत्रापि सप्तैव कुलकरा: क्वचि त्पचदशापि द्दृश्यन्तइति पुष्पारार्थंपमस्तरूपमभिहितं प्रागत:चैमाधिकारादेव कल्पा नाम्नित्य

रसामणियंगा गेहागाराअणियणाय ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे तीताए उस्सप्पिणीए दसकुलगरा हो
त्था तजहा सयजलेसयाऊय अणंतसेणेयअजियसेणेय कक्कसेणेभीमसेणेय महाभीमसेणेयसत्तमे दढरहे दस

ल्यआपे ६ । चित्ररस भलारस आपे ७ । मणयग आभरणादिआपे ८ । गृहनेआकारेहोय अनिआगा वस्त्रदाता १० ॥ १ ॥ जबूद्दीपें भरतक्षेत्रें अतीत
गईउत्सर्पिणीने विषे दश कुलगर थया तेकहेछे शतजल १ । शतायु २ । अनतसेन ३ । अजितसेन ४ । कर्कशेन ५ । भीमसेन ६ । महाभीमसेन ७ ।

दशकमाह ॥ दसेत्यादि ॥ सौधर्मादौना मिन्द्राधिष्ठितत्व मेते ष्विन्द्राणा निवासा दानतारणयोस्तु तदनधिष्ठितत्वं तन्निवासाभावात् स्वामितयात् तावप्यधिष्ठितावेवेति मन्तव्य यावत्करणात् ईसाणे २ सणंकुमारे ३ माहिंदे ४ बंभलोए ५ लंतगे ६ सुक्केत्ति ७ दृश्यमिति यत एवैते इन्द्राधिष्ठिता अतएवै तेषु दशे न्द्राभवन्तोति दर्शयितु माह ॥ एएसुइत्यादि ॥ शक्र सौधर्मेन्द्रः शेषा देवलोकसमाननामान. शेष सुगममिति इन्द्राधिकारादेव तद्विमानान्याह ॥

रहे सत्तरहे । जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे आगमिस्साए उसप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति तंजहा सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे विमलवाहणे समुत्ती पडिसुए दढधणू सयधणू दसधणू । जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेण सीयाए महानईए उभयोकूले दसवक्खारपव्वया प० तंजहा मालवते चित्तकूडे विचित्त कूडे जाव सोमणसे । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाए महानईए उभओकूले दसवक्खारपव्वया प० तंजहा विज्जु प्पभे जाव गंधमायणे । एव धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धेवि वक्खारा भाणियव्वा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिम

सातमो ॥ १ ॥ दृढरथ ८ । दशरथ ९ । शतरथ १० ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आवतीउत्सर्पिणीये दशकुलगर थास्ये ते कहेछे सीमकर १ । सीमधर २ । खेमधर ३ । खेमकर ४ । विमलवाहन ५ । सुमुक्ति ६ । प्रतिश्रुत ७ । दृढधनू ८ । शतधनू ९ । दशधनू १० ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वते पूर्वदिसे सीतोदामो टीनदीने बेतटे दश वक्षस्कारपर्वत कह्या मालवत १ । चित्रकूट २ । ब्रह्मकूट ३ । यावत् सोमनस ॥ जंबूद्वीपमा पश्चिमे सीतामोटीनदीने तटे बे तटे दश वक्षस्कार पर्वत कह्या तेकहेछे विद्युत्प्रभ १ । यावत् गधमादन १० ॥ एम धातकीखण्डपूर्वार्द्धे पणि वक्षस्कारपर्वत जाणवा ॥ यावत् पुष्कर

एतेइत्यादि ॥ परिगान न्देशान्तरगमन तत्प्रयोजनं येषां तानि पारियानिकानि गमनप्रयोजनानीत्यर्थोयानं शिविकादि तदाकाराणि विमानानि देवा श्रया यानविमानानि नतुशाश्वतानि नगराकाराणीत्यर्थः पुस्तकान्तरे यानशब्दो न दृश्यते पालकइत्यादीनि शक्रादीना क्रमेणा वगन्तव्यानि यावत्करणात् सोमणसे ३ सिरिवच्छे ४ नंदियावत्ते ५ कामकमे ६ पीइगमे ७ मणोरमे ८ इतिद्रष्टव्यमिति आभियोगिका येते देवा विमानीभवतीति एवविधविमान याथिन येन्द्रा प्रतिमादिका तपसो भवन्तीति दशकानुपातिनी प्रतिमा स्वरूपतश्चाह ॥ दसेत्यादि ॥ दशदशमानि दिनानि यस्यां सा दशदशमिका दशदशकनिष्पन्नेत्यर्थो भिक्षूणा प्रतिमा प्रतिज्ञा भिक्षुप्रतिमा ॥ एकेनेत्यादि ॥ दशदशकानि दिनाना शत भवतीति प्रथमे दशदशभिक्षा द्वितीये विंशतिरेवं दशमेशत सर्वमीलने पचशतानि पचाशदधिकानि भवन्तीति ॥ अहासुत्तेत्यादि ॥ अहासुत्त सूत्रानतिक्रमेण यावत्करणात् ॥ अहाअत्थं ॥ अर्थस्य

होवि । दस कप्पा इंदाहिठिया प० तंजहा सोहम्मे जावसहस्सारे पाणए अच्चुए । एएसुण दसकप्पेसु दसइं दा प० तंजहा सक्के ईसाणे जाव अच्चुए । एएसिण दसण्हं इंदाणं दस परियाणिया विमाणा प० तंजहा पालए पुप्फए जाव विमलवरे सव्वओभद्दे । दसदसमियाणं भिक्खुपडिमाणं राइंदियसएणं अद्धछट्ठेहियभि

द्वीपपश्चिमार्द्धपणि ॥ दशदेवलोक इंद्रसहित कह्या तेकहेछे सौधर्म १ । यावत् सहस्रार प्राणत अच्युत १० ॥ ए दश देवलोकनेविषें दश इंद्र कह्या तेकहेछे शक्र १ । ईशान यावत् अच्युत १० ॥ एदशइंद्रने दश परियानविमान ते जावाआववाना कह्या ते कहेछे पालक १ । पुष्पक २ । यावत् वि मलवर २ । सर्वतोभद्र ३ ॥ दशदशमिश्रा भिक्षुप्रतिमा शतरात्रि साढापांचसे भिक्षाये करी जिम सूत्रमां कहीछे तिम आराधवी होय ॥ दशप्रका

देव शरीरक मुपसर्गकारि नवधि शेत स्त्रानिर्गत त मनुदहन् निसर्गानन्तर मुपतापयन् किभूत शरीरकं सहतेजसा वर्त्तमानं तेजोलब्धिमत् भस्म कु र्यादिति अथ सर्कोपस्यापि वीतरागस्य प्रभावा यत्परतेजो न प्रभवति अत्रार्थे दृष्टान्तमाह ॥ जहावा ॥ यथैव गोशालकस्य भगवत' शिष्याभासस्य म

समुच्छति ते फोडा भिज्जति तत्थ पुलासमुच्छति ते पुलाभिज्जति ते पुलाभिन्नासमाणा तामेव सहतेयसा भासकुज्जा एएतिन्नि आलावगा भाणियव्वा ९ केइ तहारूवं समणवा २ अच्चासाएमाणे तेयंनिसिरिज्जा सेयं तत्थ नोकमइ नोपक्कमइ अचिअचिकरेइ करित्ता आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता २ उढ्ढ वेहासं उप्प यइ २ सेणं तत्तो पडिहए पडिणियत्ते २ तामेव सरीरग अणदहमाणे २ सहतेयसा भासकुज्जा १० जहेव गो

धु माहनने अत्याशातनाकरे अत्याशातनाकीधे परिकोपे तेउपरि तेज कोपे मूके तेउपरि तेज तिहा उपसर्गना करनारने झीले अग्निदग्धवत् फो टक थाय ते फोडा भेदाये फूटे तिहा नाहनी २। फोडली थाय ते फोडली भेदाय फूटे ते फोडली भेदाणीथकी ते अनार्य तेजूलेश्यासहितने पणि तेजे भस्मकरे साधुनुं तेज बलवतळे ए त्रिण आलावा इमज जाणवा ९। कोई तथारूप श्रमणमाहननें अत्याशातना करवाने तेजोलेश्या अनार्य मूके ते तज ते साधुने आक्रमे तयाहीपरिभवनकरे विशेष पराभव करी नसके उचुउत्पती नीचुआव इम करीने प्रदक्षिणाकरे प्रदक्षिणाकरीने २। उचु वली आकाशे उत्पते उत्पतीने ते तेज साधुना शरीरने हणाणूथको पाछु निवर्त्ते ते साधु ना महातमथी निवर्त्तिने ते अनार्यनाज शरीरमां पेसे शरीरने तेहज तेज तेहने भस्मसात् करे १० ॥ जिम गोसालाने मखलीपुत्रने ते तेज बाल्यो ॥ दश अच्छेरा थया ते कहेछे उपसर्ग १।

निर्युक्त्यादे रनतिक्रमेण ॥ अहातच्च ॥ शब्दार्थानतिक्रमेण ॥ अहामग्ग ॥ चायोपशमिकाभावानतिक्रमेण ॥ अहाकप्पं ॥ तदाचारानतिक्रमेण सम्यक्कायेन न मनोरथमात्रेण ॥ फासिया ॥ विशुद्धपरिणामप्रतिपत्त्या ॥ पालिया ॥ सीमा याव त्तत्परिणामाहान्त्या शोधिता निरतिचारतया शोभितावा तत्समाप्ता वुषितानुष्ठानकरणतः ॥ तोरिता ॥ तीरनीता प्रतिज्ञातकालोपर्यप्यनुष्ठानात् कीर्त्तिता नामत इद चेदच कर्त्तव्य मस्यां तत्कृत मयेत्येवमिति आराधिता सर्वपदमीलनात् भवति जायतइति प्रतिमाभ्यासः ससारचगार्थंससारिभि. क्रियतइति ससारिणो जीवा ञ्जीवाधिकारात् सर्वजीवाश्च ॥ दसेत्यादिना ॥ सूत्रत्रयेणाह ॥ तत्र सुगमं नवरं प्रथमः समयो येषा मेकेन्द्रियत्वस्य ते प्रथमसमया स्ते च ते एकेंद्रियाश्चेतिविगृह्य विपरीता स्त्वितर एव द्विचिचतु.पञ्चेन्द्रया वाच्या आहच ॥ एवजावेत्यादि ॥ अणिंदियत्ति ॥ अनिन्द्रिया. सिद्धा अपर्याप्तका उपयोगत. केवलिनश्चेति ससारिपर्यायविशेषप्रतिपादनायैवाह वासेत्यादि ॥ वर्षशत मायु र्यत्र काले मनुष्याणा स वर्षशतायुष्क. काल स्तत्र यः पुरुषः सोप्युपचारात् वर्षशतायुष्को मुख्यवृत्त्याच वर्षशतायुषि पुरु

एगिंदिया अपढमसमयएगिंदिया एवजाव अपढमसमयपचिंदिया । दसविहा सव्वजीवा प० तंजहा पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया बेइंदिया जाव पचिंदिया अणिंदिया । अहवा दसविहा सव्वजीवा प० तंजहा

रकासएहि अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ । दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तंजहा पढमसमयए

रें ससारना जीव कह्या तेकहेछे प्रथमसमयनाउपना एकेंद्री अप्रथम बीजा त्रीजा समयना ऊपना एकेंद्री २ । इम यावत् अप्रथमसमयना पचेंद्री ॥ दशप्रकारे सर्वजीव कह्या तेकहेछे पृथवी काइया १ । यावत् वनस्पतिकायना बेंद्री यावत् पचेंद्री अनिंद्री ॥ अथवा दशप्रकारे सर्वजीव कह्या तेक

खल्यभिधानमङ्खपुत्रस्य मंखश्चित्रफलकप्रधानो भिक्षुकविशेषः ॥ तवतेएत्ति ॥ तपोजनितत्वात्तपः क्किन्नत्तेज स्तेजोलेश्येति तत्र किलैकदा भगवान्म
हावीरः श्रावस्त्यां विहरतिस्म गोशालकश्च तत्रच गौतमो गोचरगतो बहुजनशब्द मश्रौषी द्यथा इहश्रावस्त्यां द्वौजिनौ सर्वज्ञौ महावीरो गोशालकश्चेति
श्रुत्वा भगवदंतिक मागम्य गोशालकोत्थानं पृष्टवान् भगवांश्चोवाच यथायं शरवणग्रामे गोबहुलब्राह्मणगोशालायां जातो मङ्खलिनाम्नो मङ्खस्य सुभद्राभि
धानतद्भार्यायाश्च पुत्रः षड्वर्षाणि यावत् छद्मस्थेन मया सार्द्धं विहृतो स्मत्तएव बहुश्रुतीभूतइति नायं जिनो नच सर्वज्ञ इदंच भगवद्वचन मनुश्रुत्य बहुजनो
नगर्यास्त्रिकचतुष्कादिषु परस्पर कथयामास गोशालको मङ्खलिपुत्रो न जिनो न सर्वज्ञ इदंच लोकवचन मनुश्रुत्य गोशालकः कुपित आनन्दाभिधानंच
भगवदंतेवासिनं गोचरगत मपश्य त्तमवादीच्च भोआनन्द एहि तावदेकमौपम्यं निशामय यथा केचन वणिजो ऽर्थार्थिनो विविधपण्यभृतशकटा देशांतरं
गच्छंतो महाटवीप्रविष्टाः पिपासिता स्तत्र जलं गवेषयंत श्चत्वारि वल्मीकशिखराणि शाद्वलवृक्षकच्छस्यांतरमद्राक्षुः क्षिप्रं चैकं विचिक्षिपु स्ततो ऽतिवि
पुल ममलजल मवापु स्तत्पयो यावत्पिपास मापीतवंतः पयः पात्राणिच पयसा परिपूरयामासुः एपायसभाविना वृद्धेन निवार्यमाणा अप्यतिलोभाद्द्वितीय
तृतीयशिखरे विभिंदु स्तयोः क्रमेण सुवर्णंच रत्नानिच समासादयामासुः पुनस्तथैव चतुर्थं भिन्दाना घोरविष मतिकायं सज्जनपुञ्जतेजस मतिचपलजि
ह्वायुगल मगणितकोपप्रसरं महोरगं संघट्टितवंत स्ततो सौ कोपा द्वल्मीकशिखर मारुह्य मार्त्तण्डमण्डल मवलोक्य निर्निमेषया दृष्ट्या समंता दवलो
कय स्तान् भस्मसा च्चकार तन्निवारकवृद्धवणिजकं न्यायदर्शी त्यनुकम्पया वनदेवता स्वस्थानं संजहारेति एवंत्वदीयधर्माचार्य मात्मीयसम्पदपरितुष्ट
मस्मदवर्णवादविधायिनं मह स्वकीयेन तपस्तेजसा द्येव भस्मसा त्करिष्यामो त्वेषप्रचलितो ह त्वंतु तस्येम मर्थं मावेदय भवतंच वृद्धवणिजमिव न्यायवादि
त्वा द्रक्षियामोति श्रुत्वा सावानन्दमुनि र्भीतो भगवदंतिक मुपागत्य तत्सर्वं मावेदयत् भगवता प्यसावभिहित एष आगच्छति गोशालकः स्ततः साधवः

शीघ्र मितो ऽपसरन्तु श्रेरणाश्च तस्मै कश्चिदपि माद‍ादिति गौतमादीना निवेदयेति तथैव कृते गोशालक आगत्य भगवंत मभिसमभिदधे सुष्टु आयुष्म न् काश्यप साधु आयुष्मन् काश्यप मामेव वदसि गोशालको मंखलिपुत्रो यमित्यादि योसौ गोशालक स्तवान्तेवासो सदेवभूयगतः अह त्वन्यएव तच्छरीरक परीषहसहनसमर्थमास्थाय यत्तद्रत्यादिका कलित वस्तू न्नाहयत् तयोरणाप्रवृत्तयो र्हयोः साध्वोः सर्वानुभूतिसुनक्षत्रनाम्नो स्तेजसा तेन दग्धयो भगवता भिहितो गोशालक. कश्चि च्चोरो ग्रामेयकैः प्रारभ्यमाण स्तथाविध दुर्ग मलभमानो ऽङ्गुल्या तृणेन शूकेनवा त्मान मावृत्य मावृतः किम्भवति अनावृतण्वा सौ त्वमप्येव मन्यथा जल्पनेना त्मान माच्छादयन् किमाच्छादितो भवसि सएव त्व गोशालको यो मया बहुश्रुतीकृत स्तदेव मावोच एव भगवतः समभावतया यथावद् ब्रुवाणस्य तप स्तेजो सौ कोपा न्निससर्ज उच्चावचाकाशे शाकाशयामास तत्तेजश्च भगव त्यप्रभव त्त प्रदक्षिणीकृत्य गोशाल कशरीरमेव परितापय दनुप्रविवेश तेनचा दग्धशरीरो सौ दर्शितानेकविधविक्रियः सप्तमरात्रौ कालमकार्षीदिति महावीरस्य भगवतो नम न्निखिलन रनाकिनिकायनायकस्यापि जघन्यतोपि कोटोसख्यभक्तिभरनिर्भरामरषट्पदपटलजुष्टपदपद्मस्यापि विविधर्द्धिलब्धिमद्वरविनेयसहस्रपरिवृतस्यापि स्वप्र भावप्रशमितयोजनशतमध्यगतवैरमारिविड्वरदुर्भिक्षाद्युपद्रवस्या प्यनुत्तरपुण्यसम्भारस्यापि यद्गोशालकेन मनुष्यमात्रेणापि चिरपरिचितेनापि शिष्यक ल्पेना प्युपसर्ग. क्रियते तदाश्चर्य मित्याश्चर्याधिकारादिदमाह ॥ दसेत्यादि ॥ आ। विस्मयत सर्वन्ते अवगम्यन्त इत्याश्चर्या ण्यद्भुतानि द्रहच सकारः कार

सालस्स मंखलिपुत्तस्स तवे तेए। दस अच्छेरगा पन्नत्ता तंजहा उवसग्गगब्भहरणं इत्थीतित्थअभाविया प

श्रीवीरने गर्भापहार २। स्त्रीतीर्थंकरमल्ली ३। अभावितपर्षदा पचखाणकोईये नकीधु ४। कृष्ण अमरकंकाये गया ५। चद्रमासू र्य पोताने विमाने

स्कारादित्वादिति ॥ उवसग्गेत्यादि ॥ गाथाद्वयं उपसृज्यते क्षिप्यते च्याव्यते प्राणी धर्मादेरित्युपसर्गा देवादिकृतोपद्रवा स्तेच भगवतो महावीरस्य छद्मस्थ
काले केवलिकालेच नरामरतिर्यक्कृता अभूवन् इदंच किल नकदाचिद्भूतपूर्वं तीर्थकराहि अनुत्तरपुण्यसंभारतया नोपसर्गभाजन मपितु सकलनरामर
तिरश्चां सत्कारादिस्थान मेवे त्यनन्तकालभाव्यय मर्थो लोके ऽद्भुतभूतइति१ तथा गर्भस्य उदरसत्वस्य हरण मुदरान्तरसंक्रामण गर्भहरण मेतदपि तीर्थक
रापेक्षया ऽभूतपूर्वं स ह्नगवतो महावीरस्य जात पुरन्दरादिष्टेन हरिनैगमेषिदेवेन देवानन्दाभिधानब्राह्मण्युदरात् त्रिशलाभिधानाया राजपत्न्या उद
र संक्रामणा देतद् प्यनन्तकालभावित्वा दाश्चर्यमेवेति २ तथा स्त्री योषि त्तस्या स्तीर्थकरत्वेनो त्पन्नाया स्तीर्थं द्वादशाङ्ग संघोवा स्त्रीतीर्थं हि पुरुषसिंहाः
पुरुषवरगन्धहस्तिन स्त्रिभुवने प्यव्याहतप्रभुभावाः प्रवर्त्तयति इह त्ववसर्प्पिण्यां मिथिलानगरीपतेः कुम्भकमहाराजस्य दुहिता मल्ल्यभिधाना एकोन
विंशतितमतीर्थंकरस्थानोत्पन्ना तीर्थं प्रवर्त्तितवती त्यनन्तकालजातत्वा दस्य भावस्या श्चर्यतेति ३ तथा अभव्या अयोग्या श्चारित्रधर्मस्य पर्षत्तीर्थङ्करसम
वसरणश्रोतृलोकः श्रूयतेहि भगवतो वर्द्धमानस्य जृम्भिकग्रामनगरा द्वहिरुत्पन्नकेवलस्य तदनन्तरमिलितचतुर्विधदेवनिकायविरचितसमवसरणस्य भक्ति
कुतूहलाकृष्टसमायातानेकनरामरविशिष्टतिरश्चा स्वस्वभाषानुसारिणा ऽतिमनोहारिणा महाध्वनिना कल्पपरिपालनयैव धर्मकथा बभूव यतो नकेनापि
तत्रविरतिः प्रतिपन्ना नचैतत्तोर्थंकृतः कस्यापि भूतपूर्वं मितीद माश्चर्यमिति ४ तथा कृष्णस्य नवमवासुदेवस्य अपरकङ्काराजधानी गतिविषया जाते
त्यप्यजातपूर्वत्वा दाश्चर्यं श्रूयतेहि पाण्डवभार्या द्रौपदी धातकीखण्डभरतक्षेत्रापरकङ्काराजधानीनिवासिना पद्मराजेन देवसामर्थ्येना पहृता द्वारकावती
वास्तव्यश्च कृष्णो वासुदेवो नारदा दुपलब्धतद्व्यतिकरः समाराधितसुस्थिताभिधानलवणसमुद्राधिपतिदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सह द्वियोजनलक्षप्रमाणं ज
लधि मतिक्रम्य पद्मराजरणविमर्दन विजित्य द्रौपदी मानीतवान् तत्रच कपिलवासुदेवो मुनिसुव्रतजिनात् कृष्णवासुदेवागमनवार्त्ता मुपलभ्य सबहुमा

ठा० ॥

८९ ॥

नं कृष्णदर्शनार्थ मागतः कृष्णश्च तदा समुद्र मुल्लंघयतिस्म तत स्तेन पांचजन्य' पूरितः कृष्णेनापि तथैव ततः परस्परं शंखशब्दश्रवण मजायतेति ५ त

था भगवतो महावीरस्य वन्दनार्थं मवतरण माकाशा त्समवसरणभूम्या चन्द्रसूर्ययोः शाश्वतविमानोपेतयो र्बभूवेद मप्याश्चर्यमेवेति ६ ६ तथा हरेः पु

रुषविशेषस्य वंशः पुत्रपौत्रादिपरंपरा हरिवंश स्तल्लक्षण यत् कुलं तस्योत्पत्ति कुलं ह्यनेकधा ततो हरिवंशेन विशेष्यते एतद प्याश्चर्यमेवेति श्रूयतेहि भरत

क्षेत्रापेक्षया यत्तृतीयं हरिवर्षाख्य मिथुनकक्षेत्रं ततः केनापि पूर्ववैरिणा व्यंतरसुरेण मिथुनक मेक भरतक्षेत्रे क्षिप्त तत्पुण्यानुभावा द्राज्यं प्राप्तं त

तो हरिवर्षजातहरिनाम्नः पुरुषा द्यो वंश. सतथेति ७ तथा चमरस्य सुरकुमारराजस्यो त्पतन मूर्द्धगमनश्च चमरोत्पात' सोप्याकस्मिकत्वा दाश्चर्यमि

ति श्रूयतेहि चमरचंचाराजधानीनिवासी चमरेन्द्रो भिनवोत्पन्नः सन् ऊर्द्धमवधिना लोकयामास ततः स्वशीर्षोपरि सौधर्मव्यवस्थितशक्र न्ददर्श ततो

मत्सराधातः शक्रतिरस्काराहितमति रिहागत्य भगवंतं महावीरं छद्मस्थावस्थ मेकरात्रि कीं प्रतिमा मापन्नं सुंसुमारनगरोद्यानवर्त्तिनं सबहुमान

प्रणम्य भगव स्त्वत्पादपंकजवन मे शरणं मरिपराजितस्येति विकृत्यनिरचितघोररूपो लक्षयोजनमानशरीरः परिघरत्नप्रहरणं परितो भ्रमयन् गर्ज

न्नास्फोटयन् देवा स्त्रासय न्नुत्पपात सौधर्मावतंसकविमानवेदिकाया पादन्यास कृत्वा शक्र माक्रोशयामास शक्रोपि कोपा ज्ज्वलज्ज्वालमानस्फारस्फुलिंगशत

समाकुलं कुलिशं त प्रतिमुमोच सच भयाद्गतिनिवृत्य भगवत्पादौ शरणं प्रपेदे शक्रो प्यवधिज्ञानावगततद्व्यतिकार स्तीर्थंकराशातनाभया च्छीघ्र मागत्य

॥

॥

रिसा करहस्सअवरकंका उत्तरणचंदसूराण ॥ १ ॥ हरिवंसकुलुप्पत्ती चमरुप्पाओयअट्ठसयसिद्धा अस्संजएसु

ऊतरया ६। हरिवंशकुल उपन्नुं युगलिया नरके गया ७। चमरोत्पात ८। एकसोआठ १०८ एकसमये सिद्धा ऋषभदेव ९। असजतीनी पूजाय ॥

वज्र मुपसजहार बभाणच मुक्तो स्यहो भगवत' प्रसादा न्नान्ति मत्त स्ते भयमिति ८ तथा ष्टाभि रधिक शत मष्टशत अष्टशतच ते सिद्वाय निर्वृता अ ष्टशतसिद्वा इदम प्यनन्तकालजात मित्याश्चर्यमिति ६ तथा असयता असयमवत आरभपरिग्रहप्रमक्ता अब्रह्मचारिण स्तेषु पूजासत्कारो सयतपूजा सर्वदाहि किल सयताएव पूजार्हा अस्याम्त्ववसर्पिण्या विपरीत जातमित्याश्चर्य १० मतएवाह दशाप्येतानि अनन्तेन कालेना नन्तकाला इसवृत्ता न्य स्या मवसर्पिण्यामिति अनन्तरसूत्रे चमरोत्पात उक्त सच रत्नप्रभाया सजातइति रत्नप्रभावक्तव्यतामाह ॥ इमीसेणमित्यादि ॥ येय रज्जुरायामविष्क भाभ्या मशीतिसहस्राधिक योजनशत बाहल्यत उपरि मध्ये ऽधस्ताच्च यस्या खरकाण्डपङ्कबहुलकाण्डजलबहुलकाण्डाभिधाना: क्रमेण षोडशचतुर शीत्यशीतियोजनसहस्रबाहल्या स्त्रिभागा सति ॥ इमीसेत्ति ॥ एतस्या: प्रत्यचासन्नाया. रत्नाना प्रभा यस्या रत्नैर्वा प्रभाति शोभते या सा रत्नप्रभा त स्या पृथिव्या भूमेर्य त्तत्र खरकाण्ड तत्षोडशविधरत्नात्मकत्वा त्षोडशविध तत्र य: प्रथमो भागो रत्नकाण्ड नाम तद्दशयोजनशतानि बाहल्येन सहस्र मेक स्यूनायेयथे एवमन्याऽनि पञ्चदशापि सूत्राणि वाच्यानि नवर प्रथम सामान्यरत्नात्मक शेषाणि तद्विशेषमयानि चतुर्दशाना मतिदेशमाह ॥ एवमि

पूया दसविऽणतेणकालेणं ॥ २॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणेकण्डे दसजोयणसयाइं बाहल्लेणं पस्मत्ते इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए वइरेकण्डे दसजोयणसयाइ बाहल्लेण पस्मत्ते। एवं वेरुलिए लोहियस्के मसा

इं १०॥ ए दश अनतेकाले ऊपजे १०॥ आ रतनप्रभा पृथिवीने विषे रतनोनाकाण्ड दशत्येयोजन जाडपणे कह्यो ॥ आ रतनप्रभा पृथिवीनेविषे वज्रकाण्ड दससे योजन जाडपणे कहियो ॥ इम वेरुलियकाण्ड १। लोहिताच रतननोकाण्ड २। मसारगल्ल ३। हसगर्भ ४। पुलक ५। सौगंधिक ६।

त्वादि ॥ एवमिति पूर्वाभिलापेनसर्वाणि वाच्यानि ॥ वेरुलिएत्ति ॥ वैडूर्यकाण्ड एवं लोहिताक्षकांड मसारगल्लकांडं हंसगर्भकाण्ड मेव सर्वाणि नवरं रजत रूप्य जातरूप सुवर्ण मेते अपि रत्नेएवेति रत्नप्रभाप्रस्तावा त्तदाधेयद्वीपादिवक्तव्यता सूत्रचतुष्टयेनाह ॥ सव्वेत्यादि ॥ सुगम नवर मुव्वेध ॥ ओं डत्तिभणियहोई ॥ द्वीपाना ॥ ओंडत्तणाभावेवि ॥ अधोदिशि सहस्र यावत् द्वीपप्रदेशो जम्बूद्वीपेतु पश्चिमविदेहे जगतीप्रत्यासत्तौ ॥ ओंडत्तमवि ॥ अवश्यत्ति ॥ महाह्रदा हिमवदादिषु पद्मादयः ॥ सलिलकुंडत्ति ॥ सलिलानां गङ्गादिनदीना कुण्डानि प्रपातकुण्डानि प्रभवकुण्डानिच सलिलकुण्डा नीति ॥ मुहमूलेत्ति ॥ समुद्रप्रदेशे द्वीपसमुद्राधिकारा त्तद्वर्त्तिनक्षत्रसूत्रमाह ॥ कत्तिएत्यादि ॥ इह किल सूर्यस्य चतुरशीत्यधिक मण्डलशत भवति

रगल्ले हंसगब्भे पुलए सोगंधिए जोइरसे अंजणे अंजणपुलए रयए जायरूवे अंके फलिहे रिट्ठे जहा सोल सविधा भाणियव्वा । सव्वेविण दीवसमुद्दा दसजोयणसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ता । सव्वेविणं महद्दहा दसजोय णाइं उव्वेहेण पन्नत्ता । सव्वेविणं सलिलकुंडा दसजोयणाइं उव्वेहेण पन्नत्ता । सीयासीओयाण महानदीउ मुह मूले दसजोयणाइं उव्वेहेण पन्नत्ताउ । कत्तियानक्खत्ते सव्वबाहिराउ मंडलाउ दसमे मंडले चारचरइ । अणु

ज्योतिरस ७ । अंजन ८ । अंजनपुलक ९ । रजत १० । जातरूप ११ । अंक १२ । स्फटिक १३ । रिष्ट १४ । जिम रतनकांड तिम सोलप्र कार ना जाणवा ॥ सर्व द्वीपसमुद्र दशसे योजन उंडपणे कहिआ ॥ सघलाई महाद्रह दशसेयोजन उंडपणे कह्या ॥ सघलाई सलिलकूट दशसेयोजन उंड पणे कहिआ ॥ सीतासीतोदा मोटीनदी मुखमूले दशयोजन उंडपणे कही ॥ कृत्तिकानक्षत्र सर्वमांडलाथी बाहिरले दशमेमांडले आवी चार चरे

चन्द्रस्य पचदश नक्षत्राणा त्वष्टौ मण्डलञ्च मार्ग उच्यते तत्र यथास्व सूर्यादिविमानतुल्यविष्कम्भ तत्र जवूद्वीपस्या शीत्यधिके योजनशते पंचपष्टिः सूर्यस्य मण्डलानि भवन्ति चन्द्रस्य पञ्च नक्षत्राणा द्वे तथा लवणसमुद्र त्रीणि त्रिंशदधिकानि योजनशता न्यवगाह्य एकोनविंशत्यधिक सूर्यस्य मण्डलशत भवति चन्द्रस्य दश नक्षत्राणाच षट् एतेषाञ्च सर्वबाह्य सुमेरोः पचचत्वारिंशतियोजनाना सहस्रेषुच त्रिंशदधिकेषुच त्रिषुशतेषु भवति सर्वाभ्यन्तरञ्च चतुश्चत्वारिंशतिसहस्रेषु अष्टासुच विंशत्यधिकेषु शतेषु भवतीति एवच कृत्तिकानक्षत्र सर्वबाह्यात् ॥ मडलाश्रोत्ति ॥ चन्द्रमडला दशमे चन्द्रस्य मण्डले सर्वाभ्यन्तरा तपष्ठइत्यर्थ ॥ चारचरइत्ति ॥ भ्रमण माचरति अनुराधानक्षत्र सर्वाभ्यन्तरा चन्द्रस्य मण्डला दशमे चन्द्रस्य मडले सर्वबाह्यात्षष्ठइत्यर्थ चारंचरतीति व्याख्यातमेवेति ॥ विद्धिकराइति ॥ एतन्न नक्षयुक्ते चन्द्रमसि मति ज्ञानस्य श्रुतज्ञानस्यो द्देशादि यदाक्रियते तदाज्ञान समृद्धिमुपयाति अविघ्नेना धीयते श्रयते व्याख्यायते धार्यतेचेति भवतिच कालविशेष स्तथाविधकार्येषु कारण क्षयोपशमादिहेतुत्वा त्तस्य यदाह उदयक्खयखओवसमो वसमाजंचकमुणो भणिया दव्वखेत्तकाल भवचभावचसंपप्पत्ति ॥ १ ॥ तद्यथा ॥ मिगसिरगाहा ॥ कण्ठ्या द्वीपसमुद्राधिकारा देव द्वीपचारिजोववक्तव्यता सूत्रद्वयेनाह

राहा नक्खत्ते सव्वब्भंतराउ मंडलाउ दसमे मंडले चारचरइ। दस नक्खत्ता णाणस्स विद्धिकरा पसत्ता तंजहा मिगसिरअद्दापूसो तिन्नियपुव्वाइमूलमस्सेसा हत्थोचित्तायतहा दसविद्धिकराइंनाणस्स ॥ १ ॥ चउप्पयथल

ले ॥ अनुराधानक्षत्र सर्वमांहिला मण्डलथी दशमे मण्डले चार चरेछे ॥ दशनक्षत्र ज्ञाननी वृद्धिना करनार कहिया ते कहेछे मृगशिर १ । आर्द्रा २ । पुष्य ३ । त्रणिपूर्वा ६ । मूल ७ । अश्लेषा ८ । हस्त ९ । चित्रा १० । तिम ए दश नक्षत्र ज्ञाननी वृद्धिकरे १ । चतुष्पद थलचर पचेंद्री तीर्यंच योनि

॥ चउप्पयथलादि ॥ चत्वारि पदानि पादा येषां ते चतुष्पदास्ते च ते स्थले चरन्तीति स्थलचराश्चेति चतुष्पदस्थलचरास्ते च ते पंचेन्द्रियाश्चेति विग्रहः पुन स्तिर्यग्योनिकाश्चेति कर्मधारयस्तेषां दशेति दशैव जातौ पंचेन्द्रियजातौ यानि कुलकोटीनां जातिविशेषलक्षणानां योनिप्रमुखानि उत्पत्तिस्थानद्वार काणि शतसहस्राणि लक्षाणि तानि तथा प्रज्ञप्तानि सर्वविदा तत्र योनिर्यथा गोमयः कृमिकुलानां मुत्पत्तिस्थानं कुलानि तत्रैकस्यापि कृमीन्द्रियाणां स्था नान्यनेकाकाराणि प्रतीतानीति तथा उरसा वक्षसा परिसर्पन्ति संचरन्तीत्युरपरिसर्पास्ते च ते स्थलचरा श्चेत्यादि तथैव जीवविषय दशस्थानका स निभागः पुनः जायमानरूप पुद्गलविषय तदाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ अथवा जातियोनिकुलादिविशेषा जीवानां कर्मण क्षयोपचयादिभ्यो भवन्तीति नि बन्धभाजिना दशस्थानकानुपातेन कर्मण समादोनाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ जीवा जो त्ति षष्ठीलोपो न सिध्यइति भावी णमिति वाक्यालङ्कारे दशभिः स्था नैः प्रथमसमयैकेन्द्रियत्वादिभिः पर्यायै रेतैर्भि र्ये निर्वर्त्तिता बन्धयोग्यतया निष्पादिता स्ते तथा दशभिः स्थानै निर्वृत्ति र्वा येषां ते तथा तान् पुद्गलान् कर्मयोग्यरूपान् पाप घातिकर्म सर्वमेव वा कर्म तत्र तत्क्रियमाणत्वात् कर्मच पापकर्म तद्भाव स्तत्ता तया पापकर्मतया ॥ चिणिंसुत्ति ॥ चितवन्तो गृह

थरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दसजाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा प० । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय
तिरिक्खजोणियाणं दसजाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा प० जीवाण दसठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावक

आनी दश जातिकुलकोडि योनिप्रमुख लाख कही । उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्री तीर्यंच योनियाने दश जाति कुलकोडि योनिप्रमुख लाखकही भ गवते ॥ जीव दशथानकें बांध्या पुद्गल पापकर्मपणे चिण्या संचयकर्या करेछे करसे ३ । प्रथमसमय एकेंद्री निवर्त्तित पाप यावत् फरसनेंद्री पणें

हीतवंत श्चिन्वन्ति गृह्णन्ति चेष्यति गृहीष्यं त्यनेना ऽनंतां त्रिकालान्वयित्वमाह सर्वथा अनन्वयित्वे अकृतागमकृतविप्रणाशप्रसंगादिति वाशब्दा विक ल्पार्थाः स्तयथा प्रथमः समयो येषा मेकेंद्रियत्वस्य ते तथा तेच ते एकेंद्रियाश्चेति प्रथमसमयैकेंद्रिया स्तैः सद्भि र्ये निर्वर्त्तिताः कर्मतया पादिता अविशे षतो गृहीता स्ते तथा तान् एव तद्विपरीते रप्रथमसमयैकेंद्रियै र्निर्वर्त्तिता ये ते तथा तान् एव द्विभेदता द्वित्रिचतुःपंचेंद्रियाणां प्रत्येकं वाच्ये त्येतदेवाति देशेनाह ॥ जावेत्यादि ॥ यथ ाचितवन्त इत्यादिकालत्रयनिर्देशेन सूत्र मुक्त मेव मुपचितवन्तइत्यादीन्यपि पंच वक्तव्यानी त्येतदेवाह ॥ एवंचिणेत्यादि ॥ इहचेव मक्षरघटना ॥ चियत्ति ॥ यथा चयनं कालत्रयविशेषित मुक्त मेव मुपचयो बंध उदीरणा वेदना निर्जरा चवाच्याः ॥ चेवत्ति ॥ समुच्चये नवरं चय नादीना मय विशेष श्चयननाम कषायादिपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्र उपचयन गृहीताना ज्ञानावरणादिभावेन निषेचनबन्धन निकाचनं उदीर णाकरणेन उदयेप्रवेशन वेदन मनुभवन निर्जराजीवप्रदेशेभ्यः परिशटनमिति पुद्गलाधिकारएवेदमाह ॥ दसेत्यादि ॥ सूत्रवृन्द सुगमच नवर दशप्रदेशा येषाते तथा तएव दशप्रदेशिका दशाणुकाः स्कन्धाः समुच्चयाइति द्रव्यतः पुद्गलचिन्ता तथा दशप्रदेशे ष्वाकाशस्या वगाढा आश्रिता दशप्रदेशावगाढा

त्ताए चिणिसुवा चिणिंतिवा चिणिस्संतिवा तं० पढमसमयएगिंदियनिव्वत्तिए जाव फासिंदियनिव्वत्तिए एवं चिणउवचिणबंधउदी रवेयतहणिज्जराचेव । दसपदेसिया खधा अणंता पन्नत्ता । दसपएसोगाढापोग्ग

निवर्त्तित इम चिण्या उपचिण्या बांध्या उदीर्या वेद्या निर्जराव्या निश्चे ॥ दश प्रदेशना खध अनंता कहिआ ॥ दश प्रदेशोवगाढ पुद्गल अनंता कह्या ॥ दश समयनीस्थितिना पुद्गल अनता कह्या ॥ दशगुणा काला पुद्गल अनंता कहिआ ॥ इम वर्णथी गंधे रसे फरसे ॥ दशगुणा लूखा पुद्गल

इति चेनत स्तथा दशसमयान् स्थिति येषांते तथेति कालत स्तथा दशगुण एकगुणकालापेक्षया दशाभ्यस्त. कालो वर्णविशेषो येषांते दशगुणकालका एव मन्ये शतुभि र्वर्णैर्दशभ्या गन्धाभ्या पंचभी रसै रष्टाभिः स्पर्शै विशेषिताः पुद्गला अनंता वाच्या अतएवाह ॥ एवमित्यादि ॥ जावदसगुणलुक्खापोग्गला अणंतापण्णत्ता ॥ इत्यनेनभावतः पुद्गलचिन्तायां विंशतितम आलापको दर्शित इहचा नंतशब्दो पादानेन वृद्धादिशब्देन चांतमङ्गल मभिहित मयचा नंतशब्द इहसर्वाध्ययनाना मंते पठितइति सर्वेष्व प्यंतमङ्गलतया अोपव्यइति तदेव निगमित मनुगमद्वाराश्रभूत सूत्रस्पर्शकनिर्युक्तिद्वाराणितु सर्वाध्ययनेषु प्रथमाध्ययनां दनुगमनीयानि ॥ इतिश्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाख्यतृतीयाङ्गविवरणे दशस्थानकाख्य न्दशममध्ययनं समाप्तमिति ॥ १० ॥ तत्समाप्तौच समाप्त स्थानाङ्गविवरणं तथाच यदादावभिहित स्थानाङ्गस्य महानिधानस्ये वोन्मुद्रणमिवा नुयोगः प्रारभ्यतइति तच्चन्द्रकुलीनप्रवचनप्रणीताप्रतिबद्धविहारहारिचरितश्रीवर्द्धमानाभिधानमुनिपतिपादोपसेविनः प्रमाणादिव्युत्पादनप्रवणप्रकरणप्रबन्धप्रणायिनः प्रबुद्धप्रतिबन्धकप्रवक्तृप्रवीणाप्रतिहतप्रवचनार्थप्रधानवाक्प्रसरस्य सुविहितमुनिजनमुख्यस्य श्रीजिनेश्वराचार्यस्य तदनुजस्यच व्याकरणादिशास्त्रकर्तुः श्रीबुद्धिसागराचार्यस्य चरणकमलचं

ला अणंता पण्णत्ता । दससमयठिईया पोग्गला अणंता पण्णत्ता । दसगुणकालगापोग्गला अणंता पण्णत्ता । एवं वण्णेहि गंधेहि रसेहिं फासेहि जाव दसगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥ इइ दसमठाण सम्मत्तं ॥

॥ दसस्थानकसमाप्तौ स्थानांगाख्य तृतीयांगस्य सूत्र समाप्तम् ॥

अनंता कहिआ ॥ इति दशमू ठाणु समाप्त ॥ दशम अध्ययनं संपूर्णं ॥ १० ॥ इति श्री ठाणागसूत्रटबार्थथी संपूर्ण ॥ ॥ ॥

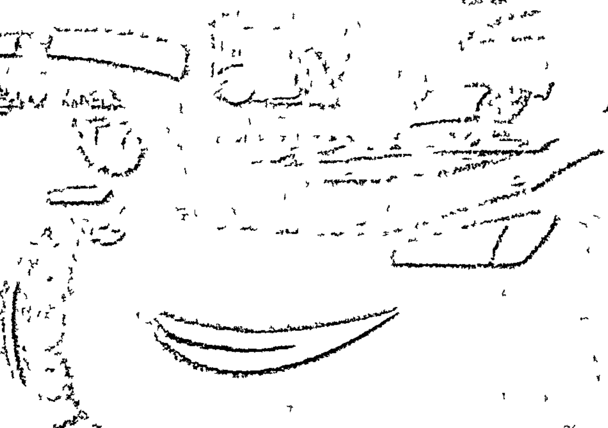
चरीकक्लेन श्रीमदभयदेवसूरिनाम्ना मया महावीरजिनराजसंतानवर्त्तिना महाराजवंशजन्मनेव संविग्नमुनिवर्गप्रवरश्रीमज्जिनचन्द्राचार्यान्तेवासिय
श्रीद्रोणगणिनामधेयसाधो रुत्तरसाधकस्येव विद्याक्रियाप्रधानस्य साहाय्येन समर्थितं तदेव सिद्धमहानिधानस्येव समापिताधिकृतानुयोगस्य ममङ्गला
र्थं पूज्यपूजा नमो भवते वर्त्तमानतीर्थनाथाय श्रीमन्महावीराय नमःप्रतिपंथिसार्थप्रमथनाय श्रीपार्श्वनाथाय नमःप्रवचनप्रबोधिकायै श्रीप्रवचनदेवता
यै नमःप्रस्तुतानुयोगशोधिकायै श्रीद्रोणाचार्यप्रमुखपण्डितपर्षदे नमश्चतुर्वर्णाय श्रीश्रमणसंघभट्टारकायेति एवंच निजवंशवत्सलराजसंतानिकस्येव ममा
समान मिममायासमतिसफलतां नयन्तो राजवंश्याइव वर्द्धमानजिनसंतानवर्त्तिनः स्वीकुर्वंतु यथोचित मितोर्थजात मनुतिष्ठन्तु सुष्ठूचितपुरुषार्थसिद्धि
मुपयुजतांच योग्येभ्यइति किंच सत्संप्रदायहीनत्वा त्सदूहस्यवियोगतः सर्वस्वपरशास्त्राणा मदृष्टे रस्मृतेश्चमे ॥ १ ॥ वाचनाना मनेकत्वा त्पुस्तकानामशुद्धितः
सूत्राणामतिगाम्भीर्या न्मतिभेदाच्चकुत्रचित् ॥ २ ॥ क्षुण्णानिसंभवंतीह केवलंसुविवेकिभिः सिद्धान्तानुगतोयोर्थः सोस्माद्ग्राह्योनचेतरः ॥ ३ ॥ शोध्यंचैतज्जिनेभक्तै
र्मामवद्भिर्दयापरैः संसारकारणात्घोरा दपसिद्धान्तदेशनात् ॥ ४ ॥ कार्यानवाज्ञमास्मासु यतोस्माभिरनाग्रहैः ॥ एतद्गमनिकामात्र मुपकारीतिचर्चितं ॥ ५ ॥
तथासभाष्यसिद्धान्ता च्छोध्यमध्यक्षयाधिया द्रोणाचार्यादिभिः प्राज्ञैरनेकैरादृतं यतः ॥ ६ ॥ जैनग्रंथविशालदुर्गमवनादुच्चित्यगाढश्रमं सद्व्याख्यानफलान्यमू
निमयकास्थानाङ्गवद्धाजने संस्थाप्योपहितानिदुर्गतनरप्रायेण लब्ध्वार्थिना श्रीमत्संघविभोरतःपरमसावेवप्रमाणक्षतो ॥ ७ ॥ श्रीविक्रमादित्यनरेंद्रका
लातेनविंशत्यधिकेनयुक्ते समासहस्रेतिगतेविदृब्धा स्थानाङ्गटीकाऽल्पधियोपिगम्या ॥ ८ ॥ अत्रदशमाध्ययने श्लोकाः १७१४ ॥ प्रत्यचरनिरूप्यास्याग्रंथ
मानंविनिश्चितं अनुष्टुभांसपादानि सहस्राणिचतुर्दश ॥ १ ॥ सर्वाध्ययनेषु ग्रन्थाद्धतो १४२५० ॥ सूत्रग्रंथाग्रतः ३७५० ॥ टीका १४२५० ॥ उभय
मीलने १८००० ॥

* ॥ * ॥ * ॥

मुद्रासहस्रकिरणैर्ग्रन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी पुस्त
ककमलविकाशीद्युमणिर्जैनप्रभाकरोजयतु ॥ ३ ॥

VidHyAR

Regd No 117



THE CHALLENGE IS